

# सहस्ररजनी चरित्र

अर्थात्

# * अलफ़लैला *

जिसमें

रसिकपुरुषों के चित्ताह्लादक सर्वरसानुवर्द्धित सहस्र इतिहास सहस्र रात्रिप्रति एक दूसरेके परस्परालाप में वर्णन किये गये हैं

जिसको

सर्वैश्वर्यसम्पन्नसर्वगुणप्रपन्न श्रीमान्मुंशीनवलकिशोरजीने प्रथम अरबी से उर्दूमें उल्थाकरायाथा पुनःउक्तमहाशयकी आज्ञानुसार नागरी भाषानुरागियों के अवलोकनार्थ पण्डित प्यारेलाल कश्मीरीब्राह्मण वैकुण्ठवासी ने लालित्य शब्दों से व्रजभाषा में उल्थाकिया

आठवीबार

Lucknow


लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गवके प्रबन्ध में

मुन्शी नवलकिशोर ( सी, आई, ई, ) के छापेखाने में छपा

मई सन् १९०९ ई० 1909

# विज्ञापन ॥

सहस्रशः धन्यवाद उस परब्रह्म परमेश्वर करुणावरुणालयका है जिसकी सृष्टि में अनेक साहसी बुद्धिमान् विद्या चातुर्य्य व धीर वीर पुरुष उत्पन्न हुये और उन्होंने ऐसे २ चातुर्य्यताके कार्य्य किये जिनसे मनुष्यों के बहुतसे लाभ हुये और होजाते हैं—

विशेषकैर धन्यवाद उस श्रीमती महाराणी इङ्गलेण्डेश्वरी श्रीविक्टोरियाका है जिसकी राज्य मे अनेक प्रकार नवीन २ रचना रचीगई हैं और उनसे बहुत से लाभ मनुष्यों के प्रत्यक्ष दृष्टि आते हैं अर्थात् रेल, जिसमें थोड़ा व्यय करने आनन्दपूर्वक सबसामान अपना साथ लिये हुये मनुष्य सैकड़ों कोस बातकी बातमें पहुँच जाते है जहां महीनों में पहुंचना कठिनथा—तारबर्की जिससे हजारों कोसका हाल एकदमभरमें बैठे बैठे मँगालीजिये— मदरसा जिनमें हजारों विद्यार्थियों ने परीक्षापाकर अच्छे २ ओहदेपाये और पाते जाते हैं—यन्त्रालय अर्थात् छापाखाना जिसमें ऐसे २ अपूर्व व अदृष्ट ग्रन्थ छापेगये और छापेजाते हैं जो हरएक पुरुष को देखने में न आसक्ते वर्षों लिखपाते थे वह सहजही में थोड़े से रुपये में उत्तम से उत्तम लेलीजिये—

सहस्ररजनीचरित्र अर्थात् अलिफलैला ग्रन्थ जो प्रथम अरबीजबान में था उसको सिवाय अरबी भाषा के जाननेवालों के और कोई न पढ़सक्ताथा न उसके वृत्तको जानसक्ता था—

उसी ग्रन्थ का उर्दूभाषा के अनुरागियों के पठन पाठनार्थ अरबी से उर्दूभाषा में उल्थाकर के मुद्रित किया उर्दूभाषावालों ने अच्छी तरह आदर के साथ लिया और पढ़ा और उसकी रोचकता व मनोहरता को उसके बाद वही ग्रन्थ यह नागरीभाषा रसिकपुरुषों के अवलोकनार्थ व पठन पाठनार्थ श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धन व्ययकर नागरीभाषा अर्थात् सुन्दर ब्रजकी बोली में लालित्यपदों से उसका उल्था कराकर अपनेही यन्त्रालय में मुद्रितकराय चारोंओर प्रकट किया—जिन महाशयों ने इसे दृष्टिगोचर कियाहोगा व इसके अभ्यन्तर व.. अच्छेप्रकार जानगये होंगे तथापि मैं कुछ इसकी प्रशंसा लिखताहूं—

इस अपूर्व ग्रन्थ में सहस्रइतिहास एकरात्रिप्रति एकइतिहास परस्पर एक दूसरे के वादाविवाद में सहस्ररात्रि में कहे गये इतिहास ऐसे मनोहर व रोचक हैं जो देखनेही से विदितहोंगे ऐसी उत्तम वार्तायें व चातुर्य्यता की रीतोंसे पूरे हैं कि जिनके पढ़ने से मनुष्यों को सहज में चातुर्य्यता प्राप्त होसक्ती है—

स्त्रियों के पातिव्रत धर्म करने के ढंग व मित्रता के रंग व बुरे आदमियों के फंदपड़ने व संग होने में उसकी बुरी दशाओं का परिणामादि बहुतसी वार्त्तायें कहांतक लिखें देखने ही से विदित होजायगा—

इसके सिवाय इस यन्त्रालय में और भी बहुतसे विषयके ग्रन्थ संस्कृत से नागरी भाषा में उल्थाकराकर मुद्रित किये गयेहैं उनमें से कुछ २ निम्न लिखित हैं—

धर्मशास्त्र में मिताक्षरा व मनुस्मृति मूलश्लोकों सहित सरलभाषा मे तिलक मुद्रित कियागया है जिसे भाषामात्र पढ़नेवाले भी अच्छेप्रकार समझ सक्ते हैं—

वेदान्त में—भगवद्गीता शङ्करभाष्य व आनन्दगिरि तिलकसहित योगवाशिष्ठ व रामायणअध्यात्मविचारादि कठिन २ ग्रन्थ साधारण भाषा में उल्था कराकर मुद्रित कियेगये हैं—

पुराणों में—श्रीमद्भागवत, महाभारत, भविष्यपुराण, गणेशपुराण, लिङ्गपुराण, शिवपुराण, विष्णुपुराण, वाराहपुराण, ब्रह्म पुराण, नृसिंहपुराण, स्कन्दपुराणादि सुन्दर ब्रजभाषा में प्रति श्लोक का उल्थाकराकर मुद्रित कियेगये हैं—

वैद्यक में—भावप्रकाश, रसरत्नाकर, निघण्टरत्नाकर, भैषज्यरत्नावली और सुश्रुतादि ग्रन्थ अति सरलभाषा में उल्थाकराकर मुद्रित कियेगये है जिन ग्रन्थों के अवलोकन करने से सहज में वैद्यकविद्या की रीति आसक्ती है—

जिन महाशयों को इन पुस्तकों के अवलोकन करने की इच्छा होवै वे नीचे लिखे हुये स्थान से पत्रद्वारा मूल्य भेज मँगालेवैं—आशा है कि जो विद्वद्वर इन ग्रन्थों को देखैंगे वह अतीव प्रसन्न होकर ग्रन्थकर्त्ता तथा यन्त्रालयाध्यक्ष को आशीर्वाद देंगे—

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस
हज़रतगंज लखनऊ

# सहस्ररजनीचरित्रका सूचीपत्र ।



इति ॥

नम्बर ७ सुतमुनिकी पृ० ३५ काओ

चित्र तीन योगियों का जो आते थे॥



# सहस्ररजनीचरित्र के चित्रों की सूची।

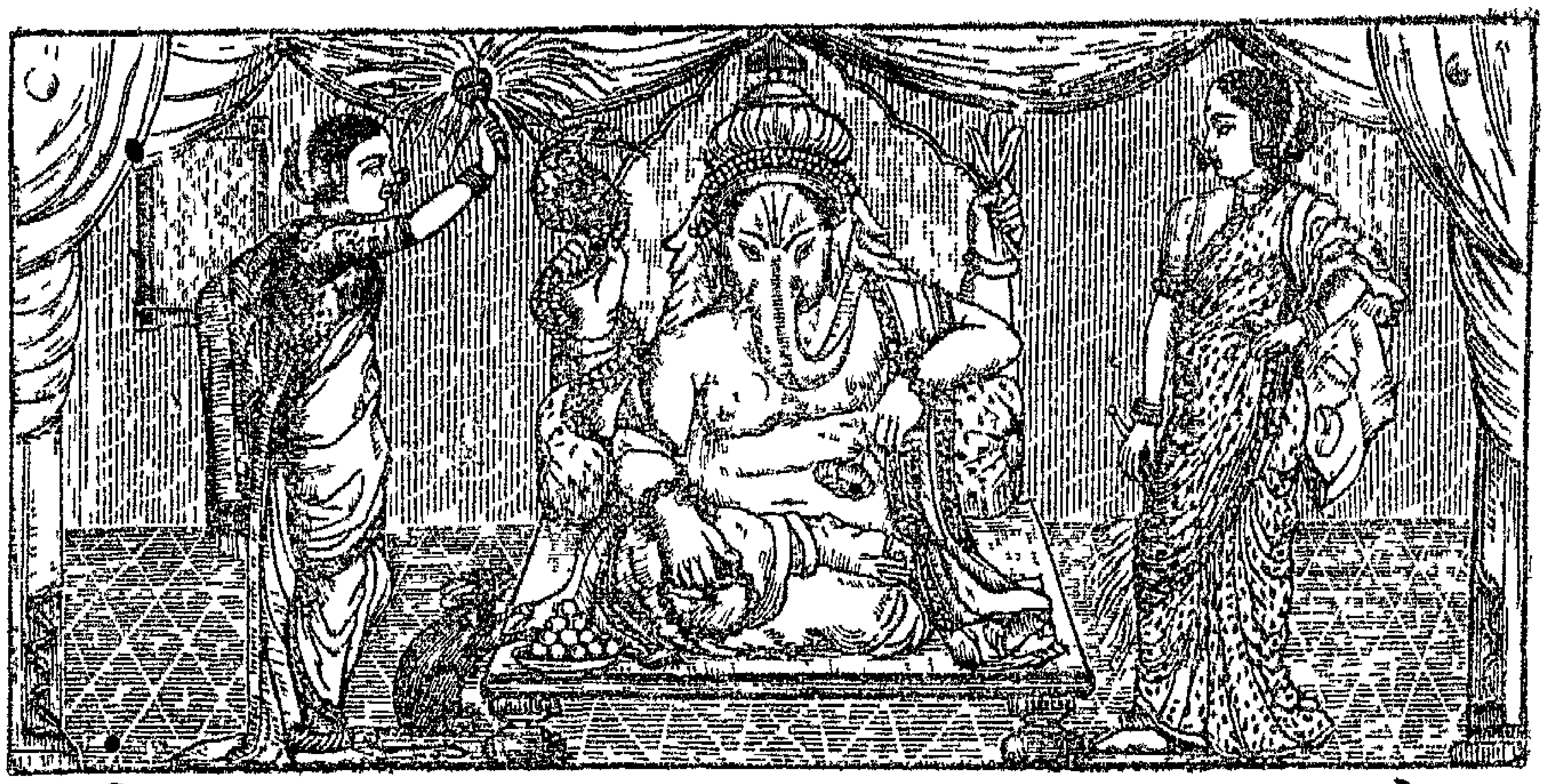
सन् १२६५ हिजरी में मुन्शी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेख़ानेकी अनुमति से निज़ामी छापेख़ाने में अलिफ़लैला छपीथी इनदिनों लण्डनकी छपीहुई अलिफ़लैला अँगरेज़ी दृष्टिगोचरहुई उसमें उत्तमोत्तमचित्र जगह २ युक्त थे जिनको अपने भारतवर्षके सज्जन मित्रों के आनन्द और प्रसन्नता के लिये छापना पसन्द किया तथाच चे लिखहुई सूचीके अनुसार इस पुस्तक में संयुक्तहुये निश्चय है कि अब यह पुस्तक अधिकतर मनोरम और नेवालों को आनन्ददायी हो ॥

| त्रों ा नम्बर | किस सफ़े से मुतअल्लिक़ है | चित्रों का सम्बन्धी विषय | चित्रों का नम्बर | किस सफ़े से मुतअल्लिक़ है | चित्रोंका सम्बन्धी विषय |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | शाहजमांका हब्शी को बध करके अपनी रानी के मारनेका इरादा करना प्रथम भाग | १६ | २०० | सिन्दबाद जहाज़ीका तीर कमानसमेत बैठना और एक हाथी का उसे उखाड़ना प्र० |
| २ | ९ | देवका सुन्दरी स्त्रीको सन्दूक़ से निकाल उसके घुटनेपर सोरहना प्र० | १७ | २२८ | चित्र पिशाचका बदरुद्दीन को परीके साथ लेजातेहुये प्र० |
| ३ | २० | चित्रव्यापारी का जिन्नकी ख़ुशामद करतेहुये जो मारनेपर तय्यारथा प्र० | १८ | २३० | पिशाच का डरावनी सूरतबनाना प्र० |
| ४ | ३४ | तीन वृद्धोंका व्यापारी और पिशाचसे विदा होना प्र० | १९ | २४८ | बदरुद्दीनका कि वह अपने मकान और उसकी सामग्री को घबराके देखताहै प्र० |
| ५ | ४४ | हकीम दूबां और बादशाह ग्रीकका गेंद खेलते हुये प्र० | २० | २७० | एक स्त्रीका खचर पर सवार और व्यापारीसे बार्त्ताकरना द्वितीयभाग |
| ६ | ५२ | स्त्रीका बादशाही रसोईख़ाने की दीवार से फटकर निकलना और मछलियों का जीना और पकानेवालेका आश्चर्य प्र० | २१ | २८६ | यहूदीका पकड़जाना और पुलिस के लोगोंकी मारपीट, द्वि० |
| ७ | ७४ | चित्रतीन योगियों का जो काने थे प्र० | २२ | २९६ | चित्र नाईका द्वितीयभाग |
| ८ | ७५ | चित्र अमीना ज़ुबैदा साक़ी मज़दूर आदि का गाना सुनतेहुये प्र० | २३ | ३२२ | अलकूज़ चौथे भाईका ऊंटपर सवार करके देशसे निकलवादेना द्वि० |
| ९ | १०० | पिशाचका सुन्दरी स्त्री को मारकर पुरुष से बात करना प्र० | २४ | ३३६ | चित्रकबकका लुटेरोंमें घिरजानेका |
| १० | १११ | बादशाह की लड़की और पिशाच प्र० | २५ | ३४४ | बादशाही मकान को अबुलहसन और असार देखरहे हैं द्वि० |
| ११ | १२३ | शाहज़ादे के हाथ से छूरी का गिरना और सौदागर बच्चे के हृदय से पार होना प्र० | २६ | ३६२ | चित्रशम्सुन्निहार और इब्नताहिर [illegible] कज़ाकोंमें घिरेहुये द्वि० |
| १२ | १४६ | ज़ुबैदा का अमीना और साक़ीको फटेहालों देखना प्र० | २७ | ३७६ | चित्रअरसराका सोतेहुये कमरुज्जमांको देख मुख चूमाचाहतीहै द्वि० |
| १३ | १५४ | चित्र अमीना के पति का अपनी स्त्री को मारतेहुये और बुढ्ढाका बिनय करके उसे छुड़ाना प्र० | २८ | ३७८ | चित्रकसकसपिशाचका बदौरा को उड़ालेजाते हुये द्वि० |
| १४ | १७२ | हीरेकी खानि से सिन्दबाद जहाज़ीका बुद्धिमानी से छुट्टीपाना प्र० | २९ | ३९६ | शाहज़ादी बदौराका अपने पतिके वेष में द्वितीयभाग |
| १५ | १७४ | राक्षसका अन्य व्यापारियों समेत प्र० | ३० | ४०८ | चित्रजिन्दर और शेरका द्वि० |
| | | | ३१ | ४२८ | चित्रख़ाकान वज़ीर के अर्थीका द्वि० |
| | | | ३२ | ४५६ | चित्रख़लीफ़ा और जाफ़रका द्वि० |
| | | | ३३ | ४६६ | चित्र शाहज़ादी गुलअनारका मन्त्र पढ़ते हुये और उसके भाईका नदीसे बाहर |

# सहस्ररजनीचरित्र के चित्रों की सूची



इति ॥



# अलिफ़लैला ॥

अर्थात् ॥

# सहस्त्ररजनीचरित्र ॥

## पहिला भाग ॥

## मंगलाचरण ॥

विघ्नहरण सुधि बुधि करण नमो नमो गणराज ।
सिद्धिकरण संशयहरण पुरवहु यह मम काज ॥
घन० दुष्ट संहारिणी भक्तजन तारिणी परम सिधि धारिणी जगत माता ।
खलन विदारिणी महिषासुरमारिणी शुम्भदैत्यदारिणी सिद्धिदाता ॥
अति परम सुन्दरी सर्व्वगुण आगरी अखिल लोकेश्वरी देवत्राता ।
दीनजन प्यारेलाल करतहै बिनय हाल देहु बरमोहिं ह्वजाव ज्ञाता ॥
सो० श्वेतहंस आरूढ़ भ्रमण करति जो गगन में ।
रचत ग्रन्थ यह गूढ़ माता होहु सहाय मम ॥
क०. परमसुधीर बुद्धिउदधि गँभीर वर नवलकिशोर वीर अतिही सुजान हैं ।
अतिगुणवान शीलवानरूपवान गुणियनसुखदानदयावानसुमहान हैं ॥
परमप्रतापवान कृपावान ज्ञानवान अतिहि अचारवान शुभधर्मखानहैं ।
कहै प्यारेलालबुध जाकेगुणसागरको पावतजोपार ऐसेकविनजहानहैं ॥
दो० अतिहि दया करि मोहिंपर आज्ञा दीन्हीं आन ।
अलिफ़लैल भाषा रचो सो मैं कियो सुजान ॥
भूल चूक जो होय सो क्षमियो हे बुधराय ।
उर्दू पुस्तक देखि के भाषा करों बनाय ॥

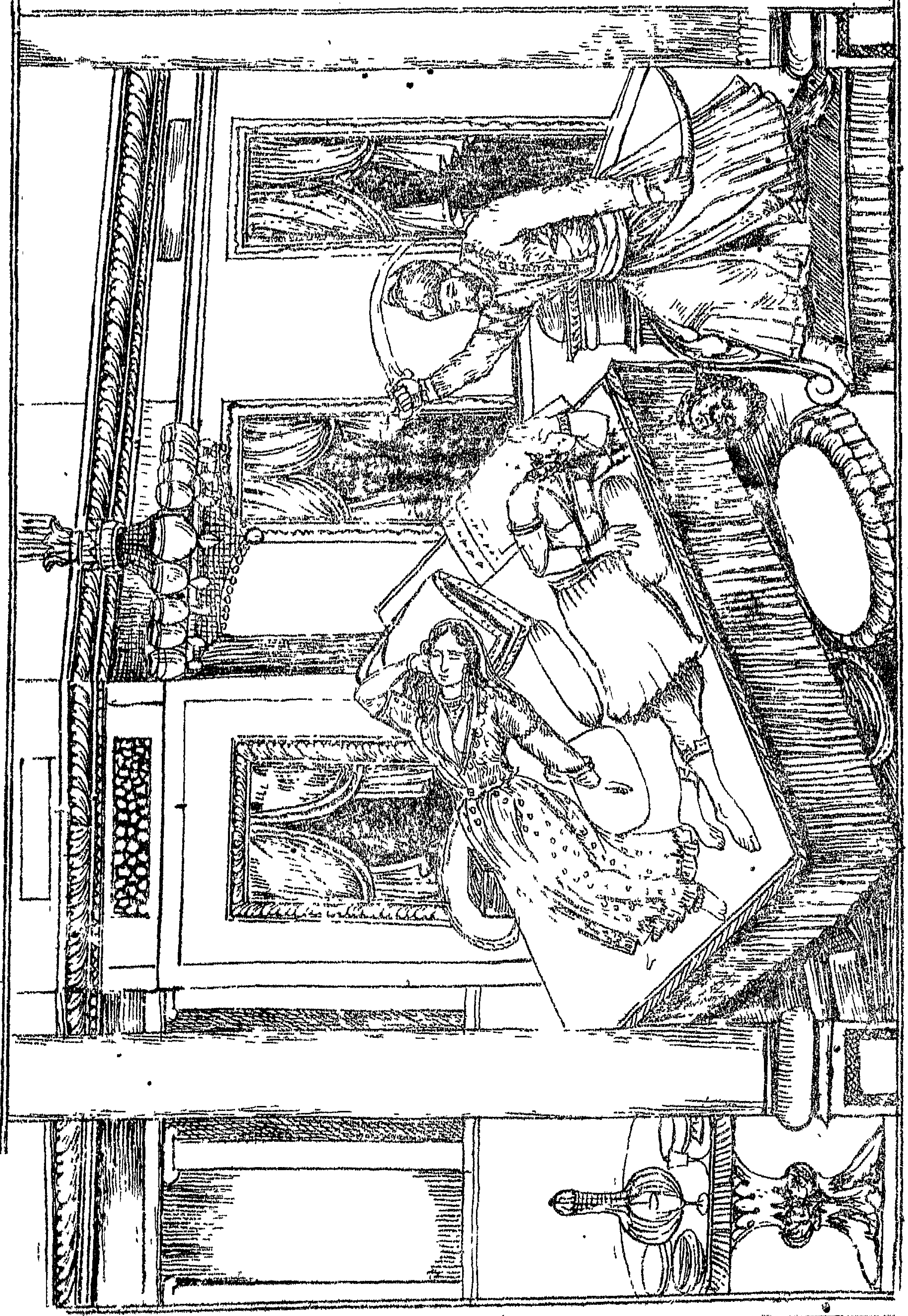
## शहरयार और शाहज़मां की कहानी ॥

पहिले पारसदेश भी हिन्दुस्तान और चीनके समान था, और दूरदूर के द्वीप उसके आधीन थे । वहां का राजा महाप्रतापी और

अतितेजस्वी था और न्यायके कारण प्रजा उससे अतिप्रसन्न थी। उस राजाके दोपुत्र थे जिनमें से बड़ेका नाम शहरयार और छोटेका नाम शाहज़मां था और दोनों राजकुँवर अपने पिताके सदृश गुण और शीलवान् थे। जब राजा कालवश हुआ तो उसका बड़ा पुत्र शहरयार गद्दी पर बैठा और उसने अपने भाई शाहज़मां को जो उससे अति प्रीति रखता था तातार का देश, बहुतसी सेना और खज़ाना दिया। शाहज़मां अपने बड़े भाईका कृतज्ञ होकर बिदा हुआ और देश प्रबन्धके लिये समरक़ंद को जो उस समय सब शहरों से उत्तम और बड़ाथा अपनी राजधानी बना अतिआनन्द से रहनेलगा। जब उनको न्यारेहुये दश वर्ष बीतगये तो शहरयारको अपने छोटे भाईके मिलनेकी अतिलालसा हुई और उसने इच्छाकी कि किसी को भेजकर उसे अपने पास बुलाऊं। निदान उसने अपने मंत्री को उसे बुलाने की आज्ञादी और मंत्री राजाकी आज्ञा पाय बड़ी धूमधामसे बिदाहुआ। जब वह उसकी राजधानीके निकट पहुँचा तो शाहज़मां यह समाचार सुनतेही अगवानी करने को सेना समेत अपनी राजधानी से रवानाहुआ और दो तीन कोश पहुँचकर मन्त्री से मिला। वह उसे देखनेसे अतिप्रसन्न हुआ और अपने भाई शहरयारकी कुशल पूँछनेलगा मन्त्री ने नियमानुसार दण्डवत् कर उसके भाईका हालकहा तब शाहज़मां जो अपने भाई का परम आज्ञापालक था और उससे प्रीति रखताथा मंत्रीसे बोला कि; भाई! मेरे बड़े भ्राता ने तुम्हें मेरे लेनेकेलिये भेजा है इससे मुझको अत्यन्त हर्षहुआ। उनकीआज्ञा मेरे शिर आंखोंपर है, परमेश्वर चाहेगा तो दशदिनमें सफ़रकी बस्तु तैयार करके और किसीको अपनाप्रतिनिधि नियतकर तुम्हारेसाथ चलूंगा पर तुम्हारी सेनाके लिये खाने पीनेका सब प्रबन्ध यहीं होजायगा इसलिये तुम यहींठहरो। निदान उसीजगह खानेपीने आदिकी सब बस्तु तैयारहोगईं और वे वहांरहे। इस अवसरमें राजाने यात्राकी संपूर्ण बस्तुमँगाईं और अपनी जगहपर अपने विश्वासपात्र मंत्रीको नियतकर दशवें दिन सायंकाल अपनी रानी से जो उसे अतिप्यारी थी बिदाहोकर

नम्बर१ सुतअल्लिके सफ़े ३५ भा.

चित्र शाहज़मा का हब्शी को बध करके अपनी रानी के मारने का इरादा करना।।



अपने सेवकों और मुसाहिबों समेत समरक़न्द से चला और अपने डेरे में जो मंत्री के डेरे के निकट था पहुँचकर मंत्री के साथ वार्त्ता करनेलगा। जब आधीरात बीती तो उसने बिचारा कि एक बार रानीसे फिर मिलआऊँ निदान वह अकेला वहां सबसे छिपकर गया पर रानीको राजाके लौट आनेका कुछ भी संदेह न था; वह एक नीच और कुरूप अनुचर को बुलवाकर उसके साथ सोरही थी। शाहज़मां तो इस विचारमें था कि, रानी मेरी अन्तिम भेंटसे अतिहर्षित होगी पर दूसरे मनुष्य को उसके साथ सोते देखकर वह अतिविस्मतहो एक घड़ी तक मूर्च्छितरहा। जब होश आया तो विचारनेलगा कि, कदाचित् मुझे भ्रम न होगयाहो। फिर अच्छीतरह देखकर निश्चय किया और पछितानेलगा कि, बड़ा अनर्थ है कि, अभी मैं समरक़न्दकी शहरपनाह से बाहर भी नहीं निकला और ऐसे कुकर्म होनेलगे। यह शोच वह अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसी कोपाग्नि से खांड़ा हाथमें ले एक हाथ ऐसा मारा कि, दोनों के शिर धड़से अलग होकर शय्यासे नीचे गिरपड़े। फिर उन दोनों की लोथों को पिछवाड़े की खिड़की से गढ़े में फेंक अपने डेरे को लौटा और किसी से रात्रि का यह समाचार न कहा। दूसरे दिन भोर होतेही वहांसे यात्राकी मार्ग्ग में सेनाके सब लोग तो प्रसन्न थे परन्तु शाहज़मां रानीके उस अनुचितकर्म्मकी सुधि करके अतिदुःखित और उदासथा और दिनप्रतिदिन उसका मुँहपीला होताजाता था इसीतरह उसको सम्पूर्णमार्ग बड़े कष्टसे कटा। जब वह हिन्दुस्तानकी राजधानी के निकट पहुँचा तब शहरयार उसके पहुँचने का समाचार सुन सम्पूर्ण दरबारियोंको साथले अगवानी के वास्ते आया। जब दोनों की सवारी निकट पहुँची तो दोनों राजा अपने घोड़ों से उतरकर परस्पर मिले और एक दूसरे की भेंटसे प्रसन्न होकर देरतक कुशलक्षेम पूँछ फिर बड़ी धूमधाम से रवाना हुये। शहरयार ने उसे उस मकानमें जो उसने पहिले से बनवाकर सजवा रक्खाथा और जहांसे फुलवाड़ी देखपड़तीथी लेजाकर उतारा। वह मकान ऐसा बड़ा और सजा हुआथा कि, उसमें राजाओंकी पहुनई

अच्छीतरह से होसक्तीथी। फिर शहरयारने अपने भाई को स्नान कर कपड़े बदलने की आज्ञादी और जब वह स्नान करचुका तब वे दोनोंभाई महलके चौबारे में बैठकर परस्पर वार्त्तालाप करते रहे और दरबारीलोग दोनों राजाओं के सम्मुख अपने २ यथोचित स्थानों पर खड़े थे। निदान वे दोनों भाई भोजनकर फिर वार्त्ता करनेलगे। जब शहरयार ने देखा कि, बहुत रात्रि आगई तो वह उसे सोनेके लिये अकेला छोड़कर बिदाहुआ। शाहज़मां अत्यन्त शोकमें रोता हुआ अपनी शय्यापर लेटरहा और अपने कष्ट को भाई के सामने छिपाये था। उसके उठने के उपरान्त वही चिन्ता उसपर फिर सवार हुई और उसके जीमें ऐसी पीड़ा थी कि, मानों प्राणान्त होता है। अपनी रानी का अनुचित कर्म्म उसके हृदय से कभी न भूलता था। वह बहुधा हा! हा! खाता और ठंढी सांसें लिया करता था और रातों में उसे निद्रा न आती थी। इसी शोक और क्रोध में वह घुला जाता था; यहांतक कि, धीरे धीरे दुर्बल होनेलगा। शहरयारने उसका यह हाल देखकर बिचार किया कि, मैं तो शाहज़मां से बड़ी प्रीति रखता और उसका भलीभांति सन्मान करताहूं तौभी सदैव इसे शोकमेंही मग्न देखताहूं। नहीं मालूम कि वह निजदेशकी चिन्ता में पड़ा है अथवा अपनी प्रियरानी के बियोगमें दुःखित रहताहै। मैंने इसको बुलाकर बृथा शोक समुद्र में डाला। अब यही उचित है कि इसको अच्छी २ सौगात देकर और समझा बुझाकर यहां से समरक़न्द को भेजें जिससे इसका दुःख मिटे। यह शोचकर उसने उत्तम २ बहुमूल्य बस्तु हिन्दुस्तान की किश्तियोंमें लगाकर भेजीं और उसकी प्रसन्नताके लिये नाना प्रकारके नाच तमाशे कराये परन्तु वे सब उसके शोक को अधिक बढ़ानेवालेहुये और उसकामन कभी प्रसन्न न हुआ। इसी अवसर में शहरयारने दरबारियों को आज्ञादी कि, मैंने सुनां है यहां से दो दिनकी राहपर एक बन है जिसमें बहुत से मृगआदि पशुहैं इसलिये मैं वहां शिकारको जाऊँगा, तुमभी शीघ्रही तैयारहो और मेरे भाईसे भी कहो कि, वहभी मेरे साथ चलें शिकारमें उनकाजी लगेगा

और प्रसन्नता प्राप्तहोगी। शाहज़मांने निवेदन किया कि, महाराज मेरा चित्त अच्छा नहीं है इस कारण मैं न जाऊंगा। शहरयार ने कहा कि, अच्छा यदि तुम यहीं रहनेमें प्रसन्नहो तो रहो पर मैं तो अपने सेवकों समेत शिकार को जाताहूं। शाहज़मां ने उसे बिदाकर अपने मकान के भीतर के किवाड़ बन्दकर लिये और एक खिड़कीमें जहांसे राजाकी फुलवाड़ी देखपड़ती थी जाबैठा कि, पक्षियोंकी मधुरबाणी और सुन्दरपुष्पोंकी सुगन्धसे अपनेहृदयका शोक दूरकरे। कभी उस मकान की सजधज और बनावट को देखकर अपने जी को बहलाता और कभी रानी के अनुचित कर्मका स्मरण कर नखरूपी शोकसे हृदय को चीरता। जब सन्ध्या हुई तो क्या देखताहै कि, राजमन्दिरका चोरदरवाज़ा खुलगया और उससे २० स्त्रियां जिनके बीचमें इक्कीसवीं रानी थी दिव्यबस्त्र और आभूषण पहिने निकलकर बाग़ में आईं। उन सब को निश्चय था कि राजा शिकार खेलनेगये हैं। शाहज़मां इस युक्तिसे खिड़की में बैठा था कि, छिपकर उन सब को देखे कि, वे क्या करती हैं। लौंड़ियों ने अपने बड़े और लम्बेकपड़ों को जो वे पहिनकर महल से निकलीथीं उतारडाला और उनकी सूरत स्पष्ट मालूम होनेलगी। शाहज़मां यहहाल देखकर बड़ा आश्चर्य्यवान् हुआ कि, उनबीसों में जिनको वह स्त्री जानताथा दशहब्शी थे। हरएकने पहिचान २ कर एक २ स्त्री का हाथ पकड़लिया; केवल रानी बिना पुरुष के रहगई तब उसने मसऊद २ कहके पुकारा और एक अति हृष्ट पुष्ट महातरुण सीदी जो उसके शब्दके ताकपरथा पेड़से उतर कर उसकी ओर दौड़ा और रानीका हाथ पकड़लिया। अब मुझे उनका हाल वर्णनकरते लज्जाआती है कि; उन ११ हब्शियोंने उन दशों स्त्रियों और ग्यारहवीं रानीके साथ क्या किया। इसीतरह वे अर्द्धरात्रि तक उस बाग़में रहे और फ़िर तालाब में स्नानकर और अपने २ बस्त्रपहिन उसी चोरदरवाज़े से राजमन्दिर में चलीगईं और मसऊदभी बाग़की दीवार फांदकर चलागया। शाहज़मां को यह घटना देखकर कुछ धैर्य्यहुआ और शोचा कि, मुझको तो दुःख

थाही परन्तु मेरे भ्राताको मुझ से भी अधिक दुःख है। यदि वह अत्यन्त तेजस्वी और प्रतापवान् है परन्तु उससे इस बुरेकाम की रक्षा न होसकी—अब मुझे इतनाशोक न रखना चाहिये। अब मुझे अच्छी तरह बिदित होगया कि, ऐसा कुत्सितकर्म्म संसार में बहुधाहोता है तो अपनेको शोकसमुद्र में डुबाना बृथा है। यह शोच उसने सब चिन्ता त्यागदी और पूर्व्वमें जो उसे भूख और प्यास न लगतीथी सो फिर क्षुधालगनेलगी और नानाप्रकार के भोजन मँगवाकर रुचिपूर्वक खाने और गाना बजाना सुननेलगा। भाई के लौटआने के समाचार पाकर अतिहर्षितहुआ और उससे भेंट की राजा ने शिकार कियेहुये बहुत से मृग आदि उसे दिये और कहा कि, पश्चात्ताप है जो तुम शिकार को न चले वहां अत्यन्त आश्चर्य था। शाहज़मां राजा को हर प्रश्नका उत्तर हर्ष सहित देताथा। शहरयार जानता था कि अबभी शाहज़मां को उसीशोक में पाऊँगा पर अपने बिचार के बिपरीति उस को हर्षित और प्रसन्नतायुक्त पाकर बोला, हे भाई! परमेश्वर का धन्यवाद है कि, मैंने तुझे थोड़ीही अवधि में नीरोग और प्रसन्न पाया। अब मैं तुमसे एकबात सौगन्द देकर पूछताहूं उसको तुम अवश्य बताना शाहज़मांने कहा कि, जो बात आप मुझसे पूँछेंगे ज़रूर बताऊंगा। शहरयार ने कहा कि, जब तुम अपनी राजधानी से यहां आये थे तो मैंने तुमको शोकसमुद्र में डूबाहुआ पायाथा और मैंने तुम्हारे दुःख के निवारणार्थ बहुत उपायकिये और तमाशे दिखाये परन्तु तुम उसी अवस्था में रहे। मैंने कितनाही विचार किया कि, इस शोकका कारण मालूमकरूं परन्तु केवल प्रियरानी और निजदेश के वियोगके विशेष कोई कारण मेरे विचार में न आया। अब क्या हुआ जो एकाकी तुम्हाराहाल बदलागया? शाहज़मां ये बातें सुनकर चुपहोरहा और जब शहरयारने बहुतही ज़िदकी तो बोला कि, आप मेरे बड़े और स्वामी हैं, इसका उत्तर मैं आपको नहीं देसक्ता क्योंकि, इसमें अति ढिठाई और निर्लज्जता है। शहरयार ने कहा कि, इसबात के बिना मालूमकिये मेरेमनको धीरज न होगा निदान

शाहज़मानै लाचारहो प्रथम तो अपनी रानी का अनुचित कर्म्म बिस्तारसहित वर्णनकिया और कहा कि, यहीहेतु मेरेदुःखकाथा। शहरयारनेकहा, हे भ्राता! तुमने तो बड़े आश्चर्य्य और अचम्भेकीबात सुनाई अच्छाकिया कि तुमने ऐसी कुकर्मिणी को उसके जारसमेत मारडाला। इस विषयमें तुमको कोई अन्यायी न कहेगा। यदिमैं होता तो बिना सहस्र स्त्रियोंके मारे एक स्त्री के मारने से मुझे संतोष न होता। अब मुझको तुम्हारे शोकका हाल अच्छी तरह बिदित हुआ वास्तव में इस विषय में तुम जितना शोक करते उचित था। अब यह बतलाओ कि मेरे पश्चात् यह शोक निवृत्त क्योंकरहुआ उसने कहा कि उसका कारण वर्णन करते मैं भयभीत होताहूं कि; ऐसा न हो जो कहीं तुमको मुझ से भी अधिक कष्टहो! शहरयार ने कहा कि, हे भ्राता! तुमने ऐसी बात कही है कि, जिसके सुनने से मैं अत्यंत विह्वल और व्याकुल हूं। ईश्वरके लिये यह हाल मुझसे बिस्तार पूर्वक कहो। शाहज़मांने लाचारहो मसऊद, दशों स्त्रियों, हब्शियों और रानी का सब भेद बर्णन किया और कहा कि यह घटना मैंने अपने नेत्रों से देखी है और यह समझा है कि, सम्पूर्ण स्त्रियोंकी प्रकृति बुराइयों से सम्पन्न है इसलिये मनुष्यको चाहिये कि, उनका भरोसा न रक्खे। मुझे इसी हालके देखने से तसल्लीहुई है और उससमयसे मैं प्रसन्न और नीरोगहूं शहरयारको यहहाल सुनकर भी अपने भाई के कहने का बिश्वास न आया और क्रोधित होकर बोला कि, क्या हिंदुस्तान की सब रानी व्यभिचारिणी हैं; मुझको तुम्हारे कहने का निश्चय नहीं आता जब तक मैं आप अपने नेत्रोंसे न देखलूं क्योंकि कदाचित् तुमको भ्रम हुआहो? शाहज़मांने कहा कि, हे भाई! यदि तुम यह अपनेनेत्रोंसे देखा चाहतेहो तो फिर मृगयाकेवास्ते आज्ञाकरो और हम तुम दोनों शहर से सेना समेत कूचकरके बाहरको चलें दिनभर तो डेरों में रहें और रात्रिको चुपकेसे इस मंदिर में आकर बैठें तो निश्चय है कि, आपभी वह सम्पूर्णवृत्तांत जो मैंने कहाहै अपने नेत्रोंसेदेखेंगे। शहरयारने यह बात मान दरबारियों को आज्ञादी कि, कल मैं फिर

शिकार को जाऊँगा। निदान दूसरे दिन भोर होतेही दोनों भाई शिकार को चले और शहर के बाहर पहुँचकर डेरों में ठहरे। जब रात्रि हुई तो शहरयारने अपने मन्त्री को बुलाकर आज्ञादी कि, मैं किसी कार्य्य के निमित्त जाताहूं तुम मेरे किसी मनुष्यको सेना से बाहर न जाने दीजियो। निदान वह दोनों घोड़ों पर सवार होकर छिपे २ नगर में आये और शाहज़मां के महल में जाकर प्रभात होनेके पहिलेही उसी खिड़की में जाबैठे जहां से शाहज़मां ने उन हब्शियों और बांदियोंको रानीसमेत देखा था। सूर्य्य न निकले थे कि, एकबारगी महल का चोरदरवाज़ह खुला और थोड़ी देर पीछे रानी उन्हीं अपने हब्शियों समेत जो स्त्री बनेथे निकलकर बाग में आई और मसऊद को पुकारा शहरयार वह सब समाचार जो कहने और सुनने के योग्य न था देखकर मनमें कहनेलगा कि, हे परमेश्वर! यह क्या अनर्थ है कि; इतने बड़े बादशाहकी स्त्री ऐसा व्यभिचार करै! फिर शाहज़मां से बोला कि, उत्तमहै कि; हम इस अनित्यसंसारको जो एकक्षणमें प्रसन्न करता और दूसरेक्षण दुःख में डालताहै परित्यागकरें और अपने देश और सेनासे अलग होकर दूसरे देशों में अपना जन्मकाटें और इस निर्लज्जता को किसीसे न कहैं। यदि शाहज़मांको यहबात अंगीकार न थी परंतु अपने भाईको अत्यन्त अधीर देखकर अन्यथा उत्तरदेना उचित न समझ बोला; भाई! मैं तुम्हारा अनुचरहूं और आपकी आज्ञा को मन वच से मानूंगा परंतु एकशर्त्तसे तुम्हारा साथ दूंगा कि; जब तुम किसी और मनुष्यको अपनेसे अधिक इस व्यथामेंपाना तो अपने देशको लौटआना शहरयार ने कहा मुझे आपकी यह प्रतिज्ञा अंगीकारहै परंतु मैं अनुमान करताहूं कि, संसारमें कोई मनुष्य हमारे समान इस दुःखमें ग्रसित न होगा। शाहज़मांनेकहा कि; थोड़ेही सफ़रकरनेमें आपको इसका हाल अच्छीतरह विदित होगा। निदान वे दोनों छिपकर अप्रसिद्ध रास्ते से एकओर को चले और दिनभर चलकर रातको पेड़ के नीचे सो रहे। दूसरे दिन प्रभातको वहांसे भी आगे चले और चलते २ एक शोभाय-

नम्बर २ सुलआम्मिके सफ़े ८ प्रथमभाग

चित्र नम्बर ८। सुन्दर स्त्री को सन्दूक से निकालना और उसके घुटने पर सो रहना



मान फुलवाड़ी में पहुँचे जो अति उत्तम और नदीके तटपर थी और जिसमें दूर तक बड़े २ और उत्तम २ सघनवृक्ष लगे थे। वहां वे एक तरु के नीचे सुस्ताने को बैठगये और आपस में बात चीत करनेलगे पर थोड़ीदेर न बीतीथी कि, एक भयानक शब्द सुन दोनों अति भयभीत और कम्पायमान हुये। इतने में नदीका जल फटा और उसमें से एक कालाखम्भा निकलने लगा जो इतना ऊंचा हुआ कि; बादलमें पहुँचकर गुप्त होगया। उसे देखकर वे दोनों बहुत डरे और वहां से भागकर एक ऊंचेवृक्षकी डाली और पत्तियोंमें जाछिपे तो क्या देखते हैं कि; वही कालाखम्भा उस स्थान से नदीके कूलपर आया और तुरन्त एकमहाबिकट पिशाच होगया और शिरपर एक सीसेका अत्यन्तदृढ़ संदूक धरेहुये जिसमें पीतल के चारताले लगेहुये थे उसी वृक्षकेनीचे आया और उस संदूक को उतारकर चारों कुंजियों से जो उसकी कमर में लटकती थीं खोला तो उस में से एक अतिसुन्दरी स्त्री उत्तम भूषणों और बस्त्रों से अलंकृत निकलकर बाहर आई। फिर उस जिन्नने उस स्त्री को अपनेपास बैठाकर प्रीतिकी दृष्टि से देखा और कहा कि, हे प्यारी! तू अपनी सुन्दरतामें एकही है। बहुत दिनहुये कि, मैं तुझको बरात की राति को लायाथा और तेरी अनूप छबिको देख मोहित हुआ उस दिन से तुझे निष्पाप पाताहूं। इस समय मुझको निद्राका अति ही वेग है इसलिये चाहताहूँ कि, तेरेपास सोरहूँ। यह कहके वह महाकुरूप पिशाच उसकी जांघपर अपना शिर रखकर सोरहा। उसके पांव इतने बड़े थे कि नदीतक पहुँचे और उसके श्वासका शब्द बादल के शब्द के समान सारी नदी में गूंजरहा था दैवयोग से उस स्त्रीने जो ऊपरकी ओर देखा तो उसकी दृष्टि उन दोनोंपर पड़ी और उसने उनको सैनसे बुलाया कि, चुपके से नीचे उतर आओ। वे उसके अभिप्रायको समझकर भयभीत हुये और उस से सैनसे कहा कि कृपाकर हमें यहीं बैठेरहने दो। उसने धीरेसे उस पिशाचका शिर अपनी गोदसे उतार पृथ्वीपर रखदिया और उठ के उनको धीरज देकर बोली कि तुम दोनों शीघ्रही पेड़से उतर कर

मेरे समीप आओ यदि तुम मेराकहना न मानोगे तो मैं पिशाच को जगादूंगी और वह उसी समय तुम दोनोंको मारडालेगा। इस बातको सुनकर वे बहुत डरे और चुपकेसे वृक्षपरसे उतर आये। वह सुन्दरी मुसकराती हुई उन दोनों का हाथ पकड़कर थोड़ी दूर वृक्षके नीचे लेगई और अपने साथ भोग करनेकी इच्छा प्रकटकी प्रथम तो उन्होंने इनकार किया पर पीछेसे डरकर उसकी इच्छा पूर्णकी। फिर उस स्त्रीने उनसे दो अंगूठी मांगलीं और एक छोटासा सन्दूक निकाल जिसमें बहुत तरहकी अंगूठियांथीं उन दोनों को दिखलाया और पूछा कि तुम जानतेहो यह क्या बस्तु है और किसवास्तेहैं? उन्होंने कहा कि, हम नहीं जानते, हमको बतलादो उस मृगनयनीने कहा कि, यह उनलोगों के चिह्न हैं कि, जिनको मैंने तुम्हारे समान उस कार्य्य में उद्यतकिया था। यह ९८ अंगूठी हैं और अब तुम्हारी २ मिलने से सौहोगईं। जिन्नकी इतनीरच्छा और प्रबन्धसेभी मैंने सौबेर अपना मन प्रसन्नकिया है। यह दुराचारी जिन्न जो मुझपर मोहित है और अपने तीरसे क्षणमात्र भी अलग नहीं करता, एवम् अतिप्रबन्ध से इस सन्दूक में बन्दकर समुद्र में छिपाकर रहताहै पर इतनी चातुर्यता और रक्षासेभी मेरा जो मन चाहता है मैं करती हूं और उसकी रक्षा कुछ काम नहीं आती। मेरे हालसे तुम समझलो कि, जब स्त्री पुंश्चली होती है तो उसको कोई भी दुष्टकर्म्म से नहीं बचासक्ता। बहुधा मनुष्य स्त्रियों के निष्पाप होनेपर विश्वास रखते हैं पर उनके विचारके बिपरीत वे कुकर्मिणी होती हैं। निदान वह उनकी अंगूठी ले वहीं जा बैठी और जिन्नके शिरको उठा अपने घुटनेपर रख सैनसे कहाकि, तुम यहांसे चलेजाओ। वह दोनों वहांसे चले और जब बहुत दूर निकलगये तो शाहज़मांने अपने भाई शहरयार से कहा कि, देखो इतनी रक्षा और प्रबन्ध करनेपर भी वह स्त्री मनमानता काम करती है पर जिन्नको उसपर कितना बिश्वास है और उसके निष्पाप होनेकी कितनी प्रशंसा करता था। अब आप न्यायसे कहिये कि, इस जिन्नपर हमसे अधिक कष्ट है वा नहीं हम जिस बातकी खोज

में थे उसको पाया और अब हमें उचितहै कि, अपनेदेशोंको चलें और कभी किसी स्त्रीसे बिवाहही न करें क्योंकि, इस समयमें निष्पाप स्त्रीका मिलना कठिन है निदान शहरयारने अपने भ्राता के कहने अनुसार किया और वहांसे अपने नगरकी ओर चला। तीनरात्रि पीछे वे दोनों अपनी सेनामें पहुँचे। शहरयारने फिर आगे जाने की इच्छा न की और अपनी राजधानी को फिर आया। महल में जाकर मंत्रीको आज्ञादी कि, इसीसमय रानीको मारनेकेवास्ते लेजा और मंत्रीने आज्ञानुसार उसको मारडाला। फिर राजाने रानीकी दासियोंको अपने हाथसे मार विचार किया कि; ऐसा उपाय कियाजाय कि; बिवाहकरने के पीछे स्त्री बुरेकर्म्म करनेका समय न पासके। इसलिये उसने यह ठहराया कि, रातको बिवाह कियाकरूं और भोरहोतेही उसे मरवाडालूं। इसके उपरान्त उसने अपने भाई शाहज़मां को बिदाकिया और वह उत्तम २ बस्तु, सेनाआदि साथ लेकर अपनी राजधानी समरक़न्दको चलागया। शाहज़मां के चलेजाने के पीछे शहरयारने अपने बड़ेमन्त्रीको आज्ञाकी कि, किसी बड़ेसरदार की बेटी मेरेसाथ बिवाहके वास्तेला। मन्त्री ने बादशाहकी आज्ञानुसार एक बड़े अमीरकी पुत्री लादी और बादशाह उसकेसाथ बिवाहकर रातभर उसके साथरह भोरहोतेही मन्त्री को आज्ञादी कि इसीसमय इससे मारडाल और रातको दूसरी नवीन सुन्दर कन्या लाइयो। मन्त्रीने उस दुलहिन को मारडाला और रात के वास्ते और किसी अमीरकी लड़की लाया और बादशाह ने भोरहोतेही उसेभी मरवाडाला। इसीतरह उसने बहुत दिनोंतक सैकड़ों अमीरों और बादशाहोंकी लड़कियां बिवाहीं और मरवाडालीं। जब नगरकी लड़कियोंकी पारी आई और इस अन्यायका समाचार सारे संसार में फैलगया तो नगरभर में अत्यन्त भय, कोलाहल और रोना पीटनापड़ा। कहीं तो पिता अपनी पुत्रीके वास्ते आठ आठ आंसू रोताथा और कहीं माता अपनी प्यारी पुत्रीके वास्ते हाहाखा बिलापकरतीथी जो कन्या बचरहीथीं उनके माता, पिता और सम्बन्धी अत्यन्त भयमें रहतेथे दुःखितहो देश छोड़ अन्य देशमें जा

बसे निदान वहांके मन्त्रीकी दो पुत्रियां अनब्याहीथीं बड़ीका नाम शहरज़ाद और छोटीकानाम दुनियांज़ाद था शहरज़ाद अपनी छोटी बहन और बराबर वालियोंसे समझ और बुद्धि में अधिक थी। जिस बातको वह श्रवण करती वा पुस्तकमें देखती फिर कभी विस्मरण न करती और बाचालतामें भी अतिप्रवीण थी। उसे बहुत से प्राचीन महात्माओं के काव्य और अपूर्व्व दृष्टान्त यादथे और आपभी रचनेकी शक्तिमें अत्यन्त निपुणथी, सिवा इसके सुन्दरतामें भी अद्वितीयथी। एकदिन उसने अपने पितासे कहा कि, मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूं उसे अङ्गीकार कीजिये। मन्त्रीने कहा कि, यदि तेरी बात माननेयोग्य होगी तो मैं अवश्य मानूंगा। शहरज़ादने कहा कि, मेरा बिचारहै कि, मैं बादशाहको इस अन्याय से हटाऊं और जो लड़कियां उसके मारनेसे बचरहीहैं उनके माता पिताको निश्चिन्त करदूं। मन्त्री ने कहा, हे पुत्री! तुम इस विषय को किसतरह रोंकसक्तीहो और उसके बन्द करने के लिये कौन सा उपाय शोचाहै? शहरज़ादने कहा कि, इसका उपाय तुम्हारे हाथ है। तुमको मेरी सौगन्द है कि, मेरा बिवाह बादशाह के साथ करो। मन्त्री यह बात सुनकर कम्पायमानहो बोला, हे बेटी! तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है कि, मुझसे ऐसी अनुचित इच्छा करती है। क्या तुझे बादशाह का प्रण बिदित नहीं है? बिचारपूर्व्वक मुखसे बात निकाल; तू क्यों वृथा अपनी जानदेगी और किसप्रकार उसे रोकेगी। लड़की ने कहा कि; मैं बादशाह का वृत्तान्त भलीभांति जानतीहूं पर इस इच्छा को न छोड़ूंगी। यदि और लड़कियों के सदृश मैं भी मारीगई तो इस असार संसारसे छूटूंगी और जो मैंने बादशाहको इस अन्याय से हटादिया तो अपने नगरवालों का बड़ास्वार्थ करूंगी। मन्त्री ने कहा कि, मैं किसीतरह तेरी इच्छा अङ्गीकार नहीं करसक्ता और तुझको जानबूझकर ऐसी बला में न डालूंगा। बड़े आश्चर्य की बात है कि, मैं ऐसा खड्ग तेरे हृदय में मारूं; किसी पितासे अपने प्रियसन्तान के निमित्त ऐसा कर्म न होगा। चाहे तू अपने प्राणको प्यारा न समझ परन्तु मुझसे यह

न होगा कि, अपने हाथोंको तेरे रुधिर से भरूं। शहरज़ाद ने कहा कि, हे पिता! किसी तरह तो मेरी प्रार्थना को अंगीकार कर। मंत्रीने उत्तर दिया कि, तेरा बाद इस विषय में मेरे क्रोधको अधिक करता है; तू क्यों अपनी मृत्यु चाहती है और क्यों अपने प्राण से अप्रसन्न है? जो कोई किसी कार्य्य को बिनाबिचारे करता है वह पीछे लज्जा उठाताहै। मैं डरता हूं कि, तेरा हाल उस गर्दभके समान न हो जो सुखसे रहता था पर अज्ञानबश दुःखमें पड़ा शहरज़ादने कहा कि, यह कथा क्योंकर है? मन्त्री गधेका हाल कहनेलगा॥

## गधे बैल और उनके पालक की कहानी॥

एक बड़ा ब्यापारी था जिसके गांव में अनेक घर और कारखाने थे जिन में नाना प्रकार के पशु रहते थे। दैवयोग से वह एक दिन कारखानों के देखनेको अपने कुटुम्बसहित गांव में गया और पशुशालामें जहां वह गधा और बैल बांधा था जाकर देखा कि, वे दोनों पशु परस्पर बार्त्ता करते हैं। वह ब्यापारी जो हरएक पशु पक्षी की बोली समझता था ध्यान देकर उनकी बार्त्ता सुननेलगा। बैलने गधे से कहा कि, तू बड़ा भाग्यवान् है कि, सदा सुख से रहता है। पालक सदा तेरी खबर लेता है; मलदल के दोनों समय तुझे यव खिलाता और नवीनजल पिलाता है। इस पालन के सिवा तेराकाम केवल इतनाहीहै कि, जब कभी काम पड़ताहै तो तेरा मालिक तुझ पर सवार होके थोड़ी दूरतक जाता है और तू सदैव दानाघास खाता और चैन करता है। निदान जितना तू भाग्यवान् है उतनाही मैं प्रारब्धहीन हूं। भोरसेही मेरी पीठपर हल रखकर दिनभर पृथ्वी जोतते हैं हरवाहा चाबुक से मारकर हांकता है और हलकेभार और रगड़से मेराकन्धा छिलगयाहै। प्रभात से राततक ऐसा कठिन श्रम लेकर सूखा और सड़ा भूसा मेरे आगे डालते हैं जिसको मैं खा नहीं सक्ता और रातभर भूखा प्यासा अपने मूत और गोबरमें पड़ारहता और तेरी चैनपर ईर्षा करताहूं गधेने यह सुन उत्तर दिया कि भाई जो कुछ तूने कहा सो सचहै और वास्तव में तुझपर ऐसाही कष्टहै परन्तु तूतो इसीमें प्रसन्न है और आपही नहीं चाहता कि अपने को

सुखमें रक्खे । यदि तू श्रम करते २ मरभीजाय तौभी यह लोग तेरे हालपर कभी तरस न करेंगे इसलिये एक उपायकर तो वे तुझ से इतनी मेहनत न लेंगे और तूभी सुखपूर्व्वक रहेगा बैलने पूछा कि; वह कौनसा उपाय है ? गधेने कहा कि; तू अपने को रोगी बनाकर रातको दाना भूसा न खा और थानपर चुपचाप पड़ारह । बैलने यह सब बातें सुनकर कहा कि; अच्छा ऐसाही करूँगा । तूने यह उपाय बहुत अच्छा बताया है परमेश्वर तुझे आनन्द में रक्खे । इतनाकह वे दोनों चुपहोरहे । दूसरेदिन भोरहोतेही हरवाहेने चाहा कि; बैल को और दिनोंकी तरह हलमें जोतके खेतकी ओर लेजावें तो क्या देखा कि; रात्रिकी सानी वैसीही रक्खी है बैल पृथ्वीपरपड़ा हँफरहा है; नेत्र उसके बन्दहैं और पेट फूलरहा है । हरवाहे ने उसको रोगी जानकर हलमें न जोता और व्यापारी से जाकहा कि, आज बैल रोगी होगया है । व्यापारी यह सुनकर समझगया कि, बैलने गधेकी शिक्षापर अपने को रोगीबनाया है इसलिये हरवाहेसे कहा कि, आज गधेसे हलका कामलो । निदान हरवाहेने गधेकोजोत सारेदिन काम लिया । गधा जिसे उस कामका अभ्यास न था बहुत थकगया और उसके हाथपांव ठंढे होगये । सिवाय श्रमके उसने इतनी मार खाई कि, सन्ध्याको लौटती समय चल न सक्ताथा । इधर बैल उस दिन बहुत सुखसे रहा और जो कुछ नांदमें था आनन्दसे खा गधे को आशीर्वाद देतारहा जब गधा थकितहो खेतसे आया तो बैलने कहा भाई तुम्हारे उपदेशसे मैं आज बहुत अच्छीतरह रहा । गधा मांदगी के कारण उत्तर न देसका और आतेही अपने थानपर गिरपड़ा । वह मन में अपने को बुरा भला कहनेलगा कि; हे अभागे ! तूतो बहुत सुखसे रहा करता था तूने वृथा बैलको ऐसी शिक्षादेकर अपने को कष्ट में डाला । मंत्रीने इतनी कहानी अपनी बेटी को सुनाकर कहा कि;हे पुत्री ! इस सुख और आराम में तू क्यों चाहती है कि; अपने को गधे के समान कष्टमें डाले । शहरज़ादने अपने पिता से कहा कि; इस दृष्टांत पर अपनी इच्छा से न हटूंगी और जबतक तुम मेरा विवाह बादशाह से न करोगे इसी प्रकार प्रार्थना करती रहूंगी । मंत्री ने

कहा कि; जो तू हठबश इस बातका पीछा नहीं छोड़ती तो मैं तुझे वही दण्ड दूंगा जो उस व्यापारी ने अपनी स्त्रीको दियाथा। शहरज़ादने पूंछा कि उसने क्यों अपनी स्त्रीको दण्ड दिया था? और उस बिचारे गधे और बैलका क्या हुआ? मन्त्रीने कहा दूसरे दिन वह व्यापारी रात्रिको भोजन से निश्चिन्तहो अपनी स्त्री समेत उन दोनों पशुओं के पास जाबैठा और सुना कि, गधा उस बैलसे पूंछता है कि; कहो भाई कल भोरको जब हरवाहा तुम्हारे वास्ते दाना घास लावेगा तब तुम क्या करोगे? बैलने कहा जैसा तुमने मुझे उपदेश कियाहै वैसाही करूंगा। गधेने कहा कहीं ऐसा काम भी न कीजियो नहीं तो जानसे मारेजावगे कल सन्ध्याको फिरते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने रसोई बनानेवाले से कहता था कि भोर होतेही क़साई और चर्मकारको बुलालाना और बैल जो कल से बीमार है उसे मारकर उसका चर्म और मांस उनके हाथ बेच डालना मैंने जो सुनाथा मित्रता की राहमे तुझसे कहा अब मेरे विचारमें तेरेलिये यही उत्तम होगा कि, सबेरे जब चारा तेरे आगे डालाजाय तो शीघ्र उठकर खाना और नीरोग बनजाना; बस स्वामी तुझे नीरोग जानकर तेरे मारनेका उपाय न करेगा। यहबात सुन बैल भयभीतहो बोला कि; भाई। परमेश्वर तुझे आनन्द रक्खे, तूंने मेरे प्राणबचाये। अब मैं वही करूंगा जो तूने शिक्षाकी है व्यापारी गधे और बैलकी बार्त्ता सुन ठट्ठामारके हँसा और उसकी स्त्री उसके एकाएकी हँसनेपर आश्चर्य्यवान् हुई और पूछनेलगी कि; बिना प्रयोजन तुम क्यों हँसे उसने कहा वह बात बतानेकी नहीं है पर इतना कहसक्ताहूं कि; मैं गधा और बैल की बात सुनकर हँसा। स्त्रीने कहा कि; यह भेद बताओ तो मैं भी पशुओं की बार्त्ता समझूं पर जब व्यापारीने न बताया तो स्त्रीने कहा कि; तुझे इस विद्या के बताने में क्या शोच है? व्यापारी ने कहा कि; इस भेदके बताने से मैं न जीऊँगा वह बोली कि; तू मुझे धोखा देताहै; क्या जिसने तुझे सिखायाथा वह मरगयाथा जो तू भी कालबश होगा? यह तेरा कहना असत्यहै; जिसतरह होसके मुझे इस भेदको सिखा

और यदि तू मुझे न बतायेगा तो मैं अपने प्राण तजदूंगी ।यह कह वह स्त्री अपने घरको चलीगई और कोठरी का किवाँड़ मूंदकर बैठी और रातभर क्रोधितहो चिल्लातीरही । ब्यापारी रात को तो सोरहा पर दूसरे दिनभी उसे उसी दशामें देख समझाने लगा कि तू किस शोचमें पड़ीहै वह बात तेरे सीखनेयोग्य नहीं । स्त्रीने कहा कि; जबतक तू मुझे यह भेद न बतावेगा मैं अन्न पानी न करूंगी और इसीबिधि चिल्लाती और रोती रहूंगी । ब्यापारी ने कहा कि; यदि मैं तेरी मूढ़तापर चलूं तो अपने प्राणसे हाथधोऊं वह बोली मेरीबलासे तू जी या मर पर मुझको यह विद्या बता कि मैं पशुओं की बोली समझूं । ब्यापारी ने उस महामूर्ख स्त्रीको उसी हठमें देख कर-अपने और उसके नातेदारों को बुलाया और कहा कि; तुम इस मूर्खाको समझाओ कि; इस बिचारमें न पड़े निदान कितनाही उन सबोंने उसे समझाया परन्तु वह अपनी हठसे न हटी और अपने पतिके मरनेपर प्रसन्न हुई । छोटे लड़के उसकी बिह्वलता और ब्याकुलता देख रोने और हाहाकार करनेलगे । ब्यापारी से कोई उपाय न बनपड़ताथा कि; अपनी स्त्रीको समझाये और उसको इस विद्याके पूछनेसे हटारक्खे । निदान वह बड़े संशयमें पड़ा कि; यदि मैं यह भेद बताताहूं तो मेरीजानजातीहै और जो नहीं बताता तो स्त्री मरतीहै । इसी शोच बिचारमें वह अपनेघरके बाहर जाबैठा तो क्या देखताहै कि उसका कुत्ता मुर्गेको मुर्गियों से भोगकरते देख भूंका और क्रोधितहोकर कहनेलगा कि, तुझे धिक्कारहै जो आजदिन बिशेषकर ऐसे समयमें भी तू इस कार्यसे अलग नहीं रहता मुर्गेने पूँछा कि क्या कारणहै जो मैं अपनी प्रसन्नतासे हटूं ? कुत्तेने कहा कि; क्या तुझे मालूम नहीं कि; आज हमारा स्वामी अति चिन्तावान् और ब्याकुल है; उसकी महामूर्ख स्त्री ऐसे भेदको पूछती है कि; जिसके बताने से वह तुरन्तही मरजावे और यदि न बतावे तो स्त्री मरजावेगी । इसकारण उसके घरके सम्पूर्ण स्त्री पुरुष रोदन करते हैं और तेरे सिवा हम सब भी अपनी स्त्रियोंसे शोकवान् हैं मुर्गेने उत्तरदिया कि; हमारा स्वामी मूर्ख है जो केवल एक स्त्री

रखताहै सो भी उसके आधीननहीं। मैं पचासमुर्गियां रखताहूं और सब मेरे आधीन हैं यदि वह एक उपायकरे तो अभी उसका शोक दूरहोजावे। कुत्तेने पूँछा कि वह कौनसा यत्नकरे कि जिससे उसकी स्त्री हठछोड़े ? मुर्गने कहा कि; वह उसमकानमें जाय जहां उसकी स्त्रीहै और उस कोठेका किवाड़बन्दकर उसे एक लकड़ी से अच्छी-तरह मारे तो इसदण्डसे वह उसी समय हठ छोड़देगी और फिर कभी उसबातका नाम न लेगी। व्यापारी मुर्गेकी यह बात सुनकर उठा और एक लकड़ी लेकर जिसस्थानपर उसकी स्त्री रुदनकरती थी जा उसे मारनेलगा और यहांतक मारा कि; उस स्त्रीको अपनी हठ छोड़ने के सिवा कुछ न बन आया वह घबराकर अपने पति के चरणोंपर पड़ी और कहनेलगी कि; बस अब न मार मैंने अपनी हठ छोड़ी और फिर कभी ऐसी हठ न करूंगी। मन्त्री ने यह कहानी कह शहरजादसे कहा कि; यदि तू अपनी हठ न छोड़ेगी तो मैंभी तुझे वैसाही दण्डदूंगा जैसा कि; सौदागर ने अपनी स्त्री को दियाथा। शहरज़ादने उत्तर दिया कि जो कुछ आपने कहा सो ठीकहै परन्तु मैं यह हाल सुनकर अपनी चाहना को न छोडूंगी। मुझको अपने अभिप्रायकी सिद्धिके बहुतसे इतिहास और दृष्टान्त मालूमहैं पर उनका कहना निष्फलहै यदि तुम मेरी इच्छा पूर्ण न करोगे तो मैं तुम्हारी आज्ञाके बिनाही राजाकी शरण जाऊंगी। निदान मन्त्रीने लाचारहो उसके कहने को अङ्गीकार किया और अत्यन्त शोकवान् हो बादशाहकेपास जा बिनयकी कि; मेरी पुत्री आपसे बिवाह किया चाहती है। बादशाह को मन्त्री के इस कहनेपर बड़ा आश्चर्य हुआ उसने पूँछा कि तूने अपनी पुत्री के वास्ते जानबूझकर क्यों यह बात ठहराई ? मंत्रीने बिनय की कि; उस लड़की ने आपही मुझ से इसबातको चाहा है और उसे इस बात में अत्यन्तहर्ष और प्रसन्नता है कि; एकरात आपकी दुलहिन होकर भोरको मारीजावै। बादशाहने कहा कि, तू यह बिचार न करना कि, मैं तेरा पक्षकरके अपने प्रणको छोडूँगा; भोरहोतेही शहरज़ाद मारीजाने के लिये तुझे सौंपीजावैगी। यदि तू उसके मारने

में अपने प्यार से बिलम्बकरेगा तो तूभी उसकेसाथ माराजावेगा मन्त्रीने बिनयकी कि, मैं आपका आज्ञापालक हूँ; यद्यपि वह मेरी पुत्री है और उसके मारने में मुझे क्लेश होगा तदपि आपकी आज्ञा को अवश्य पालन करूंगा। बादशाह ने मन्त्री से यह सुनकर उसकी चाहना अंगीकार की और कहा कि, इसदशा में कुछ हर्ज नहीं; आजही की रातको अपनी बेटीकोलाकर मेरेसाथ बिवाहदे। मन्त्री ने बादशाहसे बिदामांग इस वृत्तान्तको शहरज़ाद से जाकरकहा। वह सुनकर प्रसन्नहुई और अपने पिताकी कृतज्ञता प्रकाश करने लगी धैर्य्य देकर वह अपने पिता से कहनेलगी कि, तुम मेरा बि- वाह करके पश्चात्ताप न करना परमेश्वर चाहेगा तो यह शुभकार्य तुमको जीवनपर्य्यन्त हर्षका देनेवालाहोगा। फिर उसने कपड़ेपहिने और अपनी छोटी बहन दुनियाज़ाद को बुलाकर अलग लेगई और कहा कि बहन मैं तुझसे एकबात में सहायता चाहती हूँ मुझे निश्चयहै कि तू उस बातसे इन्कार न करेगी पिता मुझे बादशाह के साथ बिवाह करनेको अब लियेजाताहै तू इसकाममें शोकवान् न हूजियो और मैं जो कहूँ सो तू अवश्य करना जिससमय कि बाद- शाहके पास मैं जाऊंगी और कहूँगी कि तुझे बुलवाके मेरे पास बिवाहके मकान में सुलवाये कि मैं तुझसे बातचीत करके बिदाहूँ तू तुरन्तआइयो और तू अच्छीतरह स्मरणरख कि जब भोरहोने को एकघड़ी रहजावे तो मुझे नींदसे जगाके कहना कि बहन तुम जागतीहो तो कोई कहानी अच्छी जो तुम्हें यादहो सो कहो कि जिसमें मेराजीलगे मैं उसीसमय कहानी कहने लगूँगी मुझे बिश्वास है कि इसउपाय से मेरी जानबचजावेगी दुनियाज़ादने यहबात अं- गीकारकी और कहा बहन तुम धीरजरक्खो मैं बादशाह के बुलातेही उसी समय आजाऊँगी और तेरी आज्ञानुसार करूंगी फिर मन्त्री शहरज़ाद को राजमहल में लेगया और रीत्यनुसार बिवाहकर उसे राजमहल में छोड़कर आप बिदा हुआ एकान्त में बादशाह ने शहर- ज़ादको आज्ञाकी कि अपने मुखपर से वस्त्र उठा ज्योंहीं उसने मुख पर से परदा उठाया त्योंहीं उसके रूप मनहरणको देखकर मोहित

हुआ और उसके नेत्रों से अश्रुबहते देखकर पूछा कि तू रुदन क्योंकरतीहै शहरज़ादने बिनयकी कि एकमेरी छोटीबहनहै जिसको मैं बहुतचाहतीहूँ और वहभी मुझसे प्रीति करती है चाहतीहूँ कि वहभी आजकी रात इसी कमरे में आकररहे कि सूर्योदयपर हम दोनोंपरस्पर अखीरी भेंटकरलें जो आपकी आज्ञाहो तो मैं बुलवालूं और उसकी प्यारकरके धीर्य्यदूं शहरयार ने उसे अङ्गीकार किया और उसके बुलानेकी आज्ञादी दुनियाज़ाद बादशाह के बुलाने के अनुसार राजमहल में आई शहरयार शहरज़ाद को लेकर एक बड़ीऊँची शय्यापर कि उससमय के बादशाहों की यही रीति थी सोया और दुनियाज़ाद शय्याके निकटही सोई दुनियाज़ाद एक घड़ी प्रभातके पहिले जागकर कहा हे मेरी प्रिय बहन! मुझे इस समय चिन्ताके कारण कि तुम्हारीतरफ़ से मेरेचित्तमें है निद्रा नहीं आती मैं बहुत बेचैनहूँ जो तुम जागती हो तो जो कोई कहानी अच्छी यादहो सो कहो तो मैं तुमसे इस पिछले समयमें सुनूँ कि यह मेरे चिन्ता की निवृत्तिका कारणहो शहरज़ादने इसके उत्तर देने के पूर्व बादशाहसे बिनयकी कि जो आपकी आज्ञा हो तो मैं अपनी बहन को प्रसन्नकरूं और उसकी चाहना के अनुसार कोई कहानी कहूँ बादशाह ने उसे प्रसन्नहो कहनेकी आज्ञादी॥

## व्यापारी और पिशाचकी कहानी॥

शहरज़ादने कहा अगले समयमें एक अतिधनी व्यापारी व्यापारकी बहुत बस्तु रखताथा। यद्यपि कारबारी कोठियां गुमाश्ते और सेवक जगह.२ पर नियत थे तदपि आपभी प्रायःव्यापार के वास्ते देश बिदेश जायाकरता। एकबेर उसे किसी बड़ेकार्य्य के निमित्त एक दूरदेशको जानापड़ा तो अकेलाही घोड़ेपर सवार होकर चला। जहां उसे जानाथा वहां किसीभांति की खानेकी बस्तु न मिलती थी इस वास्ते उसने एक खुरजी में कुलचे और छुहारे भरलिये और वहांपहुँचकर कामकरचुकनेके पीछे लौटा और चौथे दिन भोरकेसमय अपनी रास्ता छोड़कर किसी पेड़की छायामें ठहर विश्रामकी इच्छाकी। निदान दूरसे रमणीय सघन वृक्षों के नीचे

एक सुन्दर निर्म्मल नीरमयी कुण्डदेख घोड़ेसे उतरा और उसे एक वृक्षसेबांध उसी कुण्ड के कूलपर जा बैठा और कुलचे और छुहारे थैली से निकालकर खानेलगा । जब पेट भरगया तो छुहारे की गुठलियां इधर उधर फेंकदी और अपने परमेश्वर की बन्दना करनेलगा कि इतने में उसने एक बड़ा बिकट पिशाच देखा जो हाथ में खड्ग लिये उसकी ओर झपटकर आया और अत्यन्त क्रोध से ललकार बोला इधरआ कि; तुझे मारूं । व्यापारी उसका बिकरालरूप और भयमान बातें सुनकर भयभीतहुआ और कम्पायमानहोकर बोला; हे स्वामी ! मैंने आपका कौनसा अपराधकिया कि, जिससे आप मुझे मारते हैं ? पिशाचने कहा, तूने मेरे पुत्रको मारा है उसके बदले मैं तुझे मारताहूँ । व्यापारी ने कहा कि, मैंने तुम्हारे पुत्रको क्योंकर मारा; मैंने तो उसे देखाभी नहीं ? पिशाच ने कहा कि, क्या तू अपना रास्ता छोड़कर नहीं बैठा ? अपनी झोली से छुहारे निकालकर तूने भोजन नहीं किये और उनकी गुठलियां चारोंओर नहीं फेंकी ? व्यापारी ने कहा, यह सब सचहै; मैं इन बातों को झूठ नहीं मानता । पिशाचने कहा कि, जब तू छुहारेकी गुठलियां चारों ओर फेंकता था तब एक गुठली मेरे पुत्र की आंखमें इस बेगसे लगी कि, वह उसीसमय कालबशहुआ इस लिये अब मैं तुझे उसके बदले बधकरताहूँ । व्यापारी ने कहा कि, हे स्वामी ! प्रथम तो मैंने तुम्हारे पुत्रको जानबूझकर नहीं मारा और जो मुझसे अज्ञानता में अपराधभी हुआ तो आप कृपाकरके क्षमाकीजिये । पिशाचने कहा; न तो मैं क्षमाकरना चाहताहूँ और न तरसकरना; क्या तुम्हारे धर्मशास्त्र में बधके बदले बध नहीं लिखाहै ? मैं तुझे अवश्य मारूंगा । यह कह के उस व्यापारी की बांहपकड़ उसे पृथ्वीपर गिरादिया और मारडालनेपर उद्यतहुआ व्यापारी अपने स्त्री पुत्रोंको स्मरणकर रुदनकरनेलगा और परमेश्वर और देवताओंकी सौगन्द दिलानेलगा कि, मुझे छोड़दे । पिशाचने उसका रोनापीटना सुनकर अपना हाथ रोकलिया और चाहा कि, जब यह चुपहो तो उसे मारें पर व्यापारी ने रोनापीटना

चित्र व्यापारी का [illegible] की खुशामद करतेहुये जो मारने पर तैयार था ॥



न छोड़ा और हाहा करके महाबिलाप करतारहा। पिशाचने कहा जो तू अश्रुके बदले रुधिर भी अपने नेत्रोंसे बहावेगा तौभी मैं तुझे न छोड़ूँगा? व्यापारी ने कहा कि पश्चात्ताप है जो; तुमको किसी तरह दया नहीं आती अन्याय से एक दीन निष्पाप मनुष्य को मारतेहो और मेरे रोनेपर बिचार नहीं करते। क्या वास्तव में मुझे मारहीडालोगे? पिशाच ने कहा, हां; मेरी यही इच्छा है। इतने में भोरहोगया, शहरज़ाद इस कहानीको यहांतक कहके चुपहोरही और बिचारकिया कि; अब बादशाह के निमाज़ पढ़ने का समय है और उसकेबाद दरबार में जावेगा। दुनियाज़ादने कहा कि, बहन यह क्याही अच्छी कहानी थी? शहरज़ादने कहा कि, क्या तुमको यह कहानी पसन्द आई? जो आगे सुनोगी तो तुमको और भी हर्ष प्राप्त होगा और आश्चर्य करोगी। जो महाराजने आज मुझे प्राण दानदिये और फिर कहने की आज्ञादी तो कलरात्रि को मैं बाकी कहानी वर्णन करूंगी। शहरयार भी इस कहानी को सुनके अति प्रसन्न हुआ था, अपने चित्तमें बिचारने लगा कि; सम्पूर्ण कहानी के पूरेहोने तक शहरज़ाद को न मारना चाहिये। निदान उस दिन उसने उसे न मारा और शय्यासे भोरकी निमाज़ पढ़ने के वास्ते उठा। निमाज़के उपरांत सभामें गया। मन्त्री जो अपनी पुत्रीके शोकमें रात्रिभर सोया न था और लाचारीसे अपनी लड़की का मारनेवाला बनाथा भोरको राजाकी अनीति की आज्ञा न पाकर अतिआश्चर्यवान् हुआ। बादशाह दिनभर तो राजकाज में तत्पररहा और रातको फिरशहरज़ादके साथ कमरे में जाके सोरहा। भोरहोने के पहिले फिर दुनियाज़ादने जागकर कहा कि; हे मेरी प्रिय बहन! जो तुम जागती हो तो उस कहानी को सबेरेतक कहो और उसे पूराकरो। इतने में शहरयार ने भी आज्ञादी कि, पिशाच और व्यापारी की कहानी पूर्णकर मैं उसके सुननें की अतिलालसा रखता हूँ। शहरज़ाद ने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि, हे स्वामी! जब व्यापारी ने देखा कि, यह पिशाच मुझे अवश्यही मारेगा तो कहनेलगा कि, हे दयालु! यदि मैं तुम्हारे हाथ से

मारने योग्य हूँ और तुम मुझे किसी प्रकार बेमारे न छोड़ोगे तो मैं इच्छा करता हूँ कि, आप इतना अवसर मुझे दीजिये कि, मैं अपने स्त्री पुत्रों से बिदा होआऊँ और अपना माल मता अपने परिवार के नाम लिख बांटिआऊँ कि; मेरे मरने के पीछे परस्पर विरोध और झगड़ा न हो। मैं प्रण करताहूं कि; इन सब कामों के करचुकने के पश्चात् मैं इसी स्थानपर फिर आके मिलूंगा उस समय जो चाहिये कीजियेगा पिशाचने कहा कि, जो मैं तुझको इतना अवकाशदूं और तू न आवे? व्यापारी ने कहा कि, जो मेरे कहने पर तुझको विश्वास न हो तो मैं उस परमेश्वर की जिसने आकाशादि सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डल को रचा है सौगन्द खाकर कहताहूं कि; अपने सम्पूर्ण कामों के करने के उपरान्त मैं शीघ्रही आजाऊंगा। पिशाच ने कहा कि, तुझे कितना समय चाहिये? व्यापारी ने कहा केवल एक बर्ष कि; जिसमें मैं अपने सर्व्व कामोंको सुधारकर आसकूं और कोई वाञ्छा मेरे चित्तमें न रहै। आपसे मैं यह प्रतिज्ञा करताहूं कि, एक बर्ष के उपरान्त इसी दिन मैं अपने को तुम्हारे शरण में अर्पण करूंगा पिशाचने कहा कि; अपने इस प्रणपर परमेश्वर को साक्षीदे और व्यापारीने शपथ खाकर परमेश्वरको साक्षी किया। इस परस्पर प्रणपर वह पिशाच व्यापारी को उसी कुण्ड के निकट छोड़ अन्तर्द्धान होगया और व्यापारी उस अकस्मात् दुःख से छूट घोड़ेपर सवारहो अपने घरकी ओर चला। रास्ते में कभी वह अपने छूटजाने से प्रसन्न और कभी उस पिशाच के कठिन प्रणको स्मरणकर शोकवान् होता। निदान वह अपने घर पहुँचा और उसकी स्त्री और नातेदार उसे देख अति प्रसन्न हुये और उसकी भेंट को दौड़े पर व्यापारी किसीसे न मिला और रुदनकरने लगा उसकी यह दशा देख वे समझे कि, व्यापार में कुछ टोटाहुआ अथवा किसी और प्रकार की हानि हुई कि, जिसे कारण यह इतना रुदन करता है। जब उसका रोना बन्दहुआ तो उसकी स्त्री ने पूछा कि; हम सब तो तुम्हारे आने से प्रसन्न हुये परन्तु तू क्यों रोता है? व्यापारी ने उत्तर दिया कि, मैं रुदन क्यों न करूं? केवल

एकवर्ष में जीऊंगा। फिर उसने सम्पूर्ण अपना और पिशाच का वृत्तान्त वर्णन किया तो वे इस हालको सुन बहुत रोये विशेषकर उसकी स्त्री शिरपीटने और बाल खसोटनेलगी और लड़केबाले बड़े शब्द से रुदन करनेलगे। वह दिन तो उनकोरोने पीटनेमेंकटा और दूसरे दिन संसारी कार्य्य में लगा। सब कामोंके प्रथम उसने अपना सब ऋण चुकाया, फिर अपने मित्रोंको अच्छी २ वस्तुयें दीं; याचकोंको बहुतसा धनदिया; दासी-दासोंको बंधनसे छुड़ाया; समस्त धन अपनी सन्तानको बांटदिया; असमर्थ सन्तानों के हेतु रक्षक नियत किये और अपनी स्त्री को भी बहुतसा धन दिया। इस समयान्तर में एक वर्ष भी पूरा होगया और लाचार होकर वह चलने को उद्यत हुआ। बिदा होने के समय उसने क़फ़न के वास्ते कुछ द्रव्य अपनी खुरजी में धरलिया। उस समय सम्पूर्ण परिवार में महाविलाप मचा और सब उसको लिपटकर चाहते थे कि उसके साथ जानकर अपना प्राणदें परन्तु उसने अपने चित्तको स्थिरकर और उन्हें धीर्य्यदे बिदा किया और कहा कि; मैं परमेश्वरकी इच्छा पर प्रसन्नहूं; तुम सब भी धीर्य्य रक्खो और समझो कि, एक दिन मरना अवश्य है; मृत्यु से किसीका बस नहीं चलता निदान व्यापारी अपने को उन सब से छुड़ाकर चला और उसी स्थान पर पहुंच जहां पिशाच से भेंट हुई थी घोड़े से उतरा और उसी कुंडके निकट जा अत्यन्त शोकयुक्तहो पिशाचकी राह देखनेलगा। इतने में एक वृद्ध पुरुष एक हरिणी लिये उसके पास आया और पूछने लगा कि ऐसे निर्जन बनमें जहां बिकट पिशाच रहते हैं तुम्हारा आना क्योंकर हुआ? बहुधा मनुष्य इस वृक्ष के तले जाने से धोखा-खाकर जानते हैं कि; यह बिश्राम का स्थान है; यही समझकर वे इसकी छाया में आ बैठते हैं और पिशाचों के हाथ से दुःख पाते हैं। व्यापारीने उस वृद्ध मनुष्यको उत्तर दिया कि, तुम सत्य कहते हो; मैं इसी धोखे में पड़कर पिशाच के हाथ से दुःखितहूं। फिर उसने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे वर्णन किया और उस वृद्धने उसे सुन बड़ा आश्चर्य्य किया। उसने कहा कि, संसार में

इससे विचित्र कोई वृत्तान्त न होगा; तूने जो परमेश्वरकी सौगन्द खाई थी उसे पूरीकी । तू बड़ा सत्यवान् है और तेरी सत्यता पर धन्यहै । अब मैं बिना यहदेखे कि, वह पिशाच तेरेसाथ क्याकरता है यहांसे न जाऊंगा । यह कहकर वह वृद्ध उस व्यापारी के निकट बैठगया और दोनों परस्पर वार्त्ताकरनेलगे । इतने में एक दूसरा वृद्ध मनुष्य जिसके साथ दो काले कुत्ते रस्सी में बँधेहुये थे आया और उन दोनों का समाचार पूछनेलगा । पहले बूढ़ेने व्यापारी का सम्पूर्ण समाचार वर्णन किया और कहा कि, मैं भी यहहाल देखने के लिये यहां बैठाहूं । वह दूसरा वृद्ध भी इस वृत्तान्तको आश्चर्य मान उनदोनों के पास यह घटना देखने के लिये बैठगया और बातें करनेलगा । उसे थोड़ीदेरहुई थी कि, एक तीसराबूढ़ा खच्चर लियेहुये आया और उनदोनों बूढ़ोंसे पूछनेलगा कि, यह व्यापारी क्यों इतना शोकयुक्त तुम्हारे ढिग बैठाहै? उनदोनोंने उस व्यापारी का सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया तब तीसरे वृद्धनेभी इच्छाकी कि, वहां ठहरकर देखे कि, उस पिशाच और व्यापारी में क्याहोता है। निदान वह भी वहां बैठगया पर अभी उसने दमभी न लिया था कि, उन सबने अपने सन्मुख बनमें एकबड़ा धुन्धकार धुवां उठता हुआ देखा जो उनके निकट पहुँचकर एकबारगी दृष्टि से छिपगया और आंखोंकी झिलमिलाहट में उन्होंने देखा कि, एक अतिउग्र स्वरूप पिशाच हाथमें खड्ग लिये व्यापारी के निकट आया और उससे बोला उठ । तुझे मैं बधकरूं; तूने मेरे पुत्रको माराहै । पिशाच की यह बात सुनकर व्यापारी और तीनोंवृद्ध कम्पायमानहुये और रुदन करने लगे; यहां तक कि, उनके रोनेसे उस बनमें अतिशब्द हुआ । उस वृद्धने जिसके पास हरिणी थी क्या देखा कि, पिशाच व्यापारीका हाथपकड़कर एकओरको लेगया और उसको निर्दय-तासे मारडालता है । वह उठा पिशाच के चरणों पर गिरपड़ा और अति अधीनता से बोला कि, हे पिशाच ! मैं कुछ बिनय करता हूँ आप क्रोध थांभकर श्रवणकीजिये । मैं इच्छा करताहूँ कि, अपना और इस हरिणी का समाचार कहूँ; जो यह वृत्तान्त व्यापारी की

दशा से अद्भुत हो तो आशावान् हूं कि, इसके तिहाई अपराधका क्षमाहो । पिशाचने कुछबिचारकर कहा कि, मैंने अंगीकार किया ॥

## वृद्ध मनुष्य और उसकी हरिणी की कहानी ॥

वृद्धने कहा हे पिशाचाधिपति ! ध्यान देकर मेरा वृत्तान्त सुनो यह हरिणी मेरे चचाकीलड़की और मेरी स्त्री है जब इसकेसाथ मेरा बिवाहहुआ यह द्वादशवर्ष की थी मेरी अत्यन्त आज्ञापालक और पतिव्रता थी जब बिवाह हुये ३० वर्ष व्यतीतहुये और सन्तान इस से न हुई मैं सन्तान की कामना अत्यन्त रखताथा इसकारण मैंने एकबांदी मोलली उससे बहुत दिनोंके पश्चात् एकपुत्र उत्पन्नहुआ तब मेरी स्त्री उस लड़के और उसकी माता से गुप्तडाह और बैर करनेलगी अति पश्चात्ताप है कि उसके डाहका हाल मुझे बहुत दिनों के पीछे विदितहुआ संयोगवश मुझे किसी देशको जाना अवश्यपड़ा तो मैंने उस दासी और उसके पुत्र के हेतु अपनी स्त्री से ताकीदकर कहा जबतक मैं लौट न आऊं इन दोनों की रक्षाकरना और अच्छी तरह से रखना परमेश्वर चाहे तो एकवर्ष के पश्चात् मैं लौट आऊँगा और तभी से उसने अधिक बैर करना आरम्भ किया जादू भी सीखती थी इससमय तक वह जादू की विद्या में अतिनिपुण होगई उस अभागी ने मेरेजाने के उपरान्त लड़के को जादूका बछड़ा बनाडाला और अहीर को जो मेरा नौकर था बुलाकर कहा कि इस बछड़े को मैंने मोललिया है अपने घर लेजाकर रख और इसको खिला पिलाकर हृष्टपुष्टकर और बांदी को भी गौ बनाकर अहीर के घर भेजदिया मैंने आकर अपनी स्त्रीसे अपने पुत्र और उसकी माताका समाचार पूछा कि दोनों कहां हैं उसने कहा कि बांदी तुम्हारी मरगई और तुम्हारे पुत्र को दो मास से मैं नहीं देखती मालूम नहीं कि वह क्या हुआ मैं यह वृत्तान्त सुनकर लौंडी से तो निराशहुआ और पुत्र के खोजाने पर आशाकी कि कभी न कभी वह मेरे हाथ लगेगा इसको आठमास व्यतीत हुये कि मैंने उस पुत्रको न पाया यहांतक कि ईदका दिन आया मैंने इच्छा की किसी पशुका बलिदान करूं अहीरको बुलाकर कहा कि एक गौ

रुष्टपुष्ट लेआ । संयोगवश वह मेरीही बांदीको लेआयां और मैंने जो भेंटके वास्ते उसके हाथ पांव बांधे तो वह अत्यन्त दीनता से बोलनेलगी और उसके नेत्रों से आंसूकी धारा बहनेलगी । उसका यहहाल देखकर मुझे दया आई और मुझसे उसके गलेपर छुरी न चलसकी तब मैंने अपने नौकर से कहा कि, इसे लेजा और दूसरी गौ मेरेवास्तेला । इस बातको सुन मेरी स्त्री अति क्रोधित हुई और दुर्व्वचन कहके बोली कि, तू इसी गौको भेंटदे, इससे उत्तम और कोई रुष्टपुष्ट और भेंट के योग्य तेरे अहीर के निकट नहीं । उसके कहने सुनने से फिर मैं छुरी हाथ में लेकर मारने को उद्यत हुआ और वह गाय और भी रोने और चिल्लाने लगी । उस समय मैंने निरुपाय हो अहीरको छुरी देकर कहा कि; तूही इस गौको मार । उसके चिल्लाने और रोनेसे मेराहाथ उसपर नहीं चलता । अहीर निर्दयीथा गौको उसने बधकरडाला और जब उसकी खाल उधेड़ी गई तब हड्डियों के सिवा उसके शरीर में मांस कुछ भी न पाया क्योंकि, वह तो माया के कारण दृष्टि में अत्यन्त रुष्टपुष्ट विदित होतीथी । मैं उस रखवालेपर क्रोधितहुआ और उस मरीहुई गौको उसेदेके बोला कि, इसको तूही लेजाकर अपने खर्चमें लाया जिसे तेरा जीचाहे देदे पर जो तेरे पास कोई रुष्टपुष्ट बछड़ाहो तो इस गौके बदले भेंटदेनेकेलिये शीघ्रहीलेआ। वह शीघ्रही एकबहुत मोटा और ताजा बछड़ा जो देखने में भी अतिसुन्दरथा ले आया।मुझको उस बछड़ेका कुछ वृत्तान्त मालूम न था कि, यह मेराहीपुत्रहै तौभी मेरे चित्तमें उसकी ओर देखतेही अतिप्रीति उत्पन्नहुई और वह भी मुझे देखतेही बड़ीप्रीतिसे रस्सीतोड़ मेरे चरणोंपर आगिरा । इस घटनासे मेरे हृदयमें और भी अधिक प्रीतिहुई और प्रेमके कारण मैंने विचारा कि, क्या इसको मारूं । इस प्रीति से मैं अत्यन्त शोकवान् हुआ और उस बछड़े के नेत्रों से आंसू बहनेलगे इससे मेरी प्रीति और अधिक उमँगी । फिर मैंने उस अहीर से कहा कि इस बछड़े को लेजाकर रक्षापूर्व्वक रख और इसके बदले दूसरा पशु भेंट के वास्ते लेआ । इस बातको फिर मेरी स्त्रीने सुनकर कहा कि,

हे पति! ऐसे मोटे बछड़ेको भेंट क्यों नहीं देते ? मैंने कहा कि, यह बछड़ा मुझे अच्छा मालूम होता है और मेरा मन नहीं चाहता है कि, मैं इसको मारूं; तू इस बातमें कुछ न कह। उस कर्कशा स्त्री ने इस विषयमें बहुत तकरार की और डाहसे बेर २ उसके मारने को कहतीथी। मैं फिर निरुपायहो पैनीछुरीले अपनेपुत्रका गला काटनेचला पर उसने फिर मेरीओर देखा और मैं उसके नेत्रों से आंसू बहते देखकर दया और प्रीति से विह्वल होगया और छुरी हाथसे गिरपड़ी। तब मैंने स्त्रीसे कहा कि; दूसरा बछड़ा मेरे पासहै उसे मैं भेंट देताहूं पर वह अभागी डाहसे उसीके मारने के हेतु हठकिये गई। मैंने उसके बकनेपर विचार न किया पर उसके धीरज के वास्ते प्रणकिया कि, मैं इस बछड़ेको ईदुज्जुहा के दिन भेंट करूंगा। अहीर उसे अपने घर लेगया और भोरहोतेही आकर एकान्त में मुझ से बोला कि, मैं कुछ कहा चाहताहूँ और मुझे विश्वास है कि, तुम सुनकर प्रसन्नहोगे। मेरी लड़की जादूकी विद्या में अति प्रवीण है, कल जो मैं उस बछड़ेको लौटाकर लेगया तो वह उसे देखकर हँसी और रोई। मैंने उससे दोनों विपरीत बातों का कारण पूँछा तो उसने उत्तर दिया कि; हे पिता! यह बछड़ा जिसको तुम लौटाकर लाये हो हमारे स्वामीका पुत्रहै इसलिये मैं इसे जीता देखकर प्रसन्नहुई और मुसकराई और कलके दिन जो उसकी गौरूपी माता मारीगई उसे स्मरणकर रोई। इनदोनों मा बेटोंको हमारेस्वामी की स्त्रीने सवतियाडाह के कारण जादू से गौ और बछड़े के शरीर में बनादियाथा। मैंने जो यहबात अपनी पुत्री से सुनीथी तुमसे यथार्थ कहदी। हे पिशाचपति! मेरी उस समय की दशाको समझो कि;इनबातों को सुनकर कितना शोक और दुःख मेरे चित्तमें हुआ होगा। इतनी कहानी कहकर उस वृद्धने पिशाच से कहा कि, फिर मैं उस रखवाले के साथहुआ और उसकी लड़कीके निकटगया कि, इसबातको उसके मुखसे सुनूं। पहले मैं उसके गृहमें पहुँचकर पशुशाला में जहां मेरा पुत्रथा गया। अभी मैंने उसके निकट जाकर उसे प्यार भी नहीं किया था कि, उसने मुझसे इतनी प्रीति की

कि, मैंनेजाना कि; वह वास्तव में मेराही पुत्रहै । फिर मैंने उसहाल को जो सुनाथा उसकी लड़की से भी श्रवणकर पूँछा कि; किसी प्रकार तू इस बछड़े को मनुष्य के शरीर में लासक्ती है ? उसने कहा निस्सन्देह ला सक्तीहूँ । मैंने कहा जो तू ऐसाकरे तो मैं तुझे अपना सबधन और वस्तुदेदूँ ? उस लड़की ने मुसकराके उत्तर दिया कि, तुम हमारे स्वामी हो और हम तुम्हारे सेवक हैं इसलिये दो शर्तों पर मैं तुम्हारे पुत्रको उसके पहले स्वरूपमें लासक्तीहूँ—एक तो यह कि, तुम उसका विवाह मेरे साथकरो और दूसरे यह कि; जिसने इसका बछड़ेका स्वरूप बनाया है उसको थोड़ासा दण्डदो । मैंने उत्तर दिया कि; पहली शर्त्तको तो मैंने अङ्गीकार किया कि; तेरा विवाह उसकेसाथ करदूँगा और तुम दोनोंको इतना कुछ दूँगा कि; फिर कभी तुमको द्रव्यकी कांक्षा न रहेगी और दूसरी शर्त्त में तेरी इच्छाहै जो दण्डचाहेदे वह दुष्टा निश्शङ्क दण्डके योग्यहै पर उसे मार न डालियो । उस लड़की ने उत्तरदिया कि, जैसा उसने तेरे पुत्रकेसाथ कियाहै वैसाही मैंभी उसको दण्डदूँगी । यह प्रतिज्ञाकर उसने एकप्याला जलसेभरकर उसपर कुछपढ़ उस बछड़े के सम्मुख हो कहा, हे परमेश्वरके जीव ! जो तू वास्तव में मनुष्यहै और जादूके कारण बछड़ा बनाहै तो उस परमेश्वर की अनुग्रह से फिर जैसाथा वैसाही बन । इतनाकह ज्योंही उसने उस मन्त्रित जलको उसपर छिड़का कि, उसके पड़तेही वह तुरन्त मनुष्य बनगया । मैंने उसे प्रीतिपूर्व्वक हृदयसेलगाया और अत्यन्त प्रसन्नहो उससे कहा कि, परमेश्वरने इस लड़की के द्वारा तुझे इस कष्टसे छुड़ाया, तू इसका कृतज्ञहो और इसके साथ अपना विवाहकर क्योंकि; मैंने इसके साथ प्रण किया है । मेरे पुत्रने इस बातको हर्ष से अङ्गीकार किया और उस लड़की ने मेरी स्त्रीको जादूसे हरिणी बनाडाला । निदान मेरे पुत्रने उस लड़की के साथ विवाहकिया पर थोड़े दिन पीछे वह कालवश हुई इससे मेरा पुत्र कहीं देशान्तर को चलागया और बहुत दिनहुये मुझे उसका कुछ समाचार नहीं मिला इसलिये मैं उसे ढूँढ़ता फिरता हूं । मुझे किसीपर भरोसा न था कि; हरिणी

रूपी अपनी स्त्रीको उसकेपास छोड़ अपने पुत्रको ढूंढ़ने जाता इस लिये मैं उसे अपने साथलिये फिरताहूं। यही मेरी और इस हरिणीकी कहानी है। इस कहानी को बिचार कीजिये कि, यह अद्भुत है वा नहीं। पिशाच ने कहा कि, यह कहानी निस्सन्देह विचित्र है मैंने इस व्यापारी के अपराध का तृतीयांशक्षमाकिया। फिर शहरज़ादने शहरयार से विनयकी कि, हे स्वामी! जब पहिला वृद्ध अपनी कहानी कहिचुका तो दूसरा वृद्धमनुष्य जो अपने साथ दो कालेश्वान लिये फिरताथा पिशाचसे कहनेलगा कि, मैं भी अपनी और इन दोनों कुत्तोंका इतिहास आपसे बिनय करताहूं जो वह पहली कहानी से अधिक उत्तमहो तो आशाकरताहूं कि, उसे श्रवण कर व्यापारीके अपराधका तीसराभाग क्षमाकीजिये। पिशाच ने कहा कि, जो तेराहाल इस हरिणीकी कहानी से सुन्दर होगा तो मैं इसके अपराध का तीसरा हिस्सा अवश्य क्षमाकरूंगा॥

## दूसरे वृद्धकी कहानी जिसके साथ दो कालेश्वान थे॥

दूसरे वृद्ध ने कहा कि; हे पिशाचाधीस! यह दोनों कालेश्वान मेरे सहोदरभाई हैं। हमारे पिता ने मरने के समय तीनहज़ार मुद्रा हम तीनों भाइयों को दिये थे और हमतीनों उन्हींमुद्राओंसे व्यापार करने लगे। मेरे बड़ेभाई को देशान्तरों के व्यापारकी इच्छाहुई इसहेतु उसने अपनी सम्पूर्ण बस्तु बेचडाली और जो बस्तु अन्य देशों में महँगी बिकती थीं मोललेचला। उसे गये जब अनुमान एकबर्षके व्यतीत हुआ तब एक भिक्षुक मेरी दूकानपर आकर बोला परमेश्वर तेरा भलाकरे। मैंने कहा ईश्वर तेरा भी भलाकरे। वह बोला क्या तुम मुझे नहीं जानते? तब मैंने उसे ध्यानपूर्वक देखके पहिंचाना और गलेमिल अतिपश्चात्ताप किया। मैंने बिनय किया कि, हे भाई! मैं तुझे इस हालतमें क्योंकर पहिंचानता? फिर मैंने परदेश का समाचार पूछा तो उसने कहा कि, मुझे इस हाल में देखकर भी क्या पूछते हो? निदान मेरे फिर बिनय करने से उसने सम्पूर्ण दुःख जो उस बर्षमें उसपर पड़े थे संक्षेप में कहसुनाये और बोला कि; इससे अधिक कहना दोनों के दुःखका कारण है। उसका हाल सुनकर मुझे सब

कार्य्य बिस्मरण होगये और शीघ्रही उसे स्नानकरा और उत्तम उत्तम वस्त्र मँगाकर पहिनाये । फिर मैंने अपने हिसाब किताब को देख मालूम किया कि, मेरेपास अबतक छः हज़ार रुपये हैं इसलिये मैंने तीन हज़ार रुपये अपने भाई को दिये और कहा कि, हे भाई ! अपनी पहिले की हानिको भुलादो और अब इस तीन हज़ार रुपये से अपना व्यापारादि करो । उसने अतिहर्ष से वह रुपये लेलिये और नये सिरसे व्यापार करनेलगा । निदान हम दोनों आगे की तरह रहनेलगे । इसके बाद मेरे छोटे भाईकी भी इच्छाहुई कि, अपने बड़े भाई के समान अन्यदेशों में जा व्यापारकरे । मैंने उसे बहुत मनाकिया पर उसने न माना और अपनी सम्पूर्ण बस्तु बेच करे वह बस्तु मोललली जो दूसरे देशों में महँगी बिकती थीं । फिर मुझसे बिदाहोकर वह एक गोलके साथ जो उधर को जाताथा चलागया और एकबर्ष के उपरांत वहभी बड़े भाई के समान अपनी सम्पूर्ण मालमता खोकर योगीरूप से मेरेपास आया । मैंने भी उसी प्रकार उसका हाथ पकड़ा और तीनहज़ार रुपये जो मुझे उस साल लाभ हुये थे उसे दिये और वह एक दूकान मोलले उसी नगर में व्यापारादिक करनेलगा । थोड़ेदिनों के पश्चात् मेरे दोनों भाइयों ने आकर मुझे यह सम्मत दिया कि, मैं भी उनके साथ किसी अन्य देशमें व्यापारके वास्ते जाऊं । पहिले मैंने न माना और कहा कि, तुम्हें सफ़र करने से क्या प्राप्तहुआ जो मुझे चलने को कहते हो तब तो उन दोनों ने मुझे इसप्रकार उपदेश करना आरम्भ किया कि, क्या जाने तेरेही प्रताप और उपाय से हमारे चित्तकी अभिलाषा के अनुसार सर्वकार्य सिद्धहों । उनको इसी अभिलाषा में कहते कहते पांच बर्ष ब्यतीत हुये और उन्हों ने इस समयअन्तर में बहुत कुछ कहा तब लाचार हो मैं सफ़र के वास्ते उद्यत हुआ और व्यापार की सम्पूर्ण बस्तु मोललली । उसी समय मुझे यह बिदित हुआ कि, वह सम्पूर्ण धन जो मैंने उनको दिया था उन्हों ने ख़र्च करडाला परन्तु मैंने उस विषय में उनसे कुछ भी न कहा और उस समय मेरे पास जो १२००० रुपये थे उनमें से आधे उनको देकर

कहा कि, भाइयो! अग्रसोची और बुद्धिमानी यह है कि; हम अपने आधे धनको ब्यापार में लगावें और आधा घर में रक्खें क्योंकि, परमेश्वर न करे जो तुम्हारे समान सफ़र में किसी प्रकार की हानि होगी तो उस समय वह अर्द्धधन हमारे काम आवेगा और उन से हम फिर ब्यापार कर अपना काम चलावेंगे। निदान मैंने उसको तीन तीन हज़ार रुपये दे उतनेही आपभी लिये और तीन हज़ार अपने कुयें में गाड़ दिये। तदनन्तर हमने ब्यापारकी सम्पूर्ण बस्तु मोललीं और जहाज़ पर सवार होकर किसी देशको सिधारे। एक महीने में हम क्षेम कुशलसे एक ऐसे नगरमें पहुँचे कि, जहां हमारे ब्यापार में अत्यन्त लाभ हुआ और हमने उस स्थान की बहुत सी बस्तु अपने शहर के वास्ते मोललीं। जब हम उस स्थानपर लेनदेन करचुके और जहाज़ पर सवार होने की तैयारी करनेलगे कि, एक अतिरूपवती स्त्री बहुत मलिन बस्त्र पहिने मेरे सन्मुख आई और समीप आ, दण्डवत् कर और मेरे हाथको चूंब मुझसे बिवाह करने की इच्छा करनेलगी मैं इस बातको अनुचित समझ उसके सन्मुख न हुआ पर जब उसने अत्यन्त दीनता से मेरी बिनती की तोमुझे उसकी ग़रीबी पर दया उपजी और मैंने उसकी अभिलाषा स्वीकारकर उसके साथ बिवाह किया और उसे जहाज़ पर चढ़ाया जब वहांसे आगे चले तो रास्ते में उसे चतुर और बुद्धिमान् पाकर मैं उससे अधिक प्रीति करनेलगा पर मेरे दोनोंभाई डाहकर मुझ से गुप्तबैर करनेलगे, यहांतक कि; एक रात्रिको उन दोनों ने हम दोनों को निद्राबश देखकर समुद्र में डाल दिया। मेरी स्त्री जो वास्तव में अप्सरा थी उसको किसी प्रकार का दुःख न पहुँचा और उसने मुझे डूबने से बचालिया अर्थात् गिरतेही वह मुझे एकद्वीप में लेगई। जब भोरहुआ तो उसने मुझसे कहा कि; मैंने तेरे प्राण बचाये। मैं अप्सराहूं, उस दिन जब तू जहाज़पर चढ़नेलगाथा तो मैं तुझे तरुण और सुन्दर देख तुझपर मोहित हुई और तेरेसाथ बिवाह करने की इच्छा की पर मैंने बिचारा कि, तेरी परीक्षा लूं इस हेतु ग़रीबों का वेषधर और मलिनबस्त्र पहिन तेरेसन्मुखहुई और

तूने मेरी इच्छा पूर्णकी इससे मैं अतिप्रसन्नहुई । अब मेरी इच्छा है कि, तेरे उस उपकारसे उऋण होजाऊं परन्तु तेरे भाइयों से मैं अप्रसन्नहूं और मेरा बिचार है कि उनको मारडालूं मैं उसकी बातें सुनकर आश्चर्यित हुआ और उसका अतिउपकृतहो दीनता से बोला कि, " मेरे भाइयोंको प्राणसे न मार। यदि उनकेहाथों मेरे प्राणोंको कष्टपहुँचा है पर मैं उनको इतना कठिन दण्ड नहीं दिया चाहता परन्तु जितना मैं अपने भाइयों के वास्ते सिफ़ारिश करता था उतनाही उसे क्रोध चढ़ता जाता था। फिर उसने कहा कि, मैं यहां से उड़कर उन दुष्टोंको जहाज़समेत डुबादूंगी"। मैंने उसे परमेश्वरकी सौगन्ददी और कहा कि, ऐसा न क़रना; बुराई के बदले भलाई करना अच्छा है । अपने क्रोधको ठण्ढाकरो और मारडालनेके सिवाय दूसरा जौन दण्ड तुम्हारे बिचारमेंहो दो । निदान मैंने ऐसी २ बातें कह उसे ठंढा किया पर मैं यह बातें कररहा था कि; उसने मुझे वहां से लेजाकर मेरे घरकी छतपर बैठा दिया और आप गुप्त होगई । मैं कोठे से उतर घरमें आया और कोठरी का दरवाज़ा खोल और तीन हज़ार रुपये कुयें से निकाल अपनी दूकानपर जा बैठा और कारबार करने लगा । जब मैं दूकानसे घर आया तो दो काले कुत्तोंको अपने भवन में देखकर बड़ा आश्चर्यित हुआ वह कुत्ते मुझे देख अपनी पूंछ हिलाकर मेरी ओर दौड़े और अपना शिर मेरे चरणों पर रखनेलगे कि, उसी समय वह अप्सराभी मेरे भवन में आई और मुझसे कहने लगी कि, हे पति ! इन दोनों कुत्तोंको अपने घरमें देख मत घबराना यह दोनों तेरे भाई हैं यह सुन मेरा रुधिर सूखगया और घबराकर मैंने उस अप्सरासे पूछा कि यह दोनों कुत्ते क्योंकर बनगये ? उसने कहा, मेरी एक बहन है जिसने मेरे कहनेसे तुम्हारे जहाज़परकी सम्पूर्ण वस्तुको समुद्रमें डुबादिया और तुम्हारे भाइयोंको दशवर्षके वास्ते कुत्ता बना डाला । यह कह वह तो अन्तर्द्धान होगई और जब दशवर्ष बीतगये तब मैं उसको ढूंढ़ते २ इस ओर आ निकला और इस व्यापारी और उस वृद्ध मनुष्य को जिसके पास हरिणी है यहां

चित्र स्त्री का बादशाही रसोईखाने की दीवार से फटकर निकलना और मछलियों का जाना और पकाने वाले का आश्चर्य



देखकर ठहरगया। हे पिशाचाधिपति! यही मेरी कहानी है जिसे आपने सुना—विचित्र है वा नहीं? पिशाचने कहा कि, सचमुच तेराप्रसङ्ग अद्भुतहै मैंने उसके अपराधका तीसराभाग क्षमाकिया। इतने में तीसरे ने औरों के सदृश पिशाच से कहा कि, अब मैं अपना वृत्तान्त आपसे कहताहूँ जो तुम उसे और कहानियों से अद्भुतपाओ तो कृपाकरके व्यापारी के अपराध का तिहाईभाग भी क्षमा करना। पिशाच ने अंगीकार किया तब तीसरावृद्ध अपना वृत्तांत कहनेलगा॥

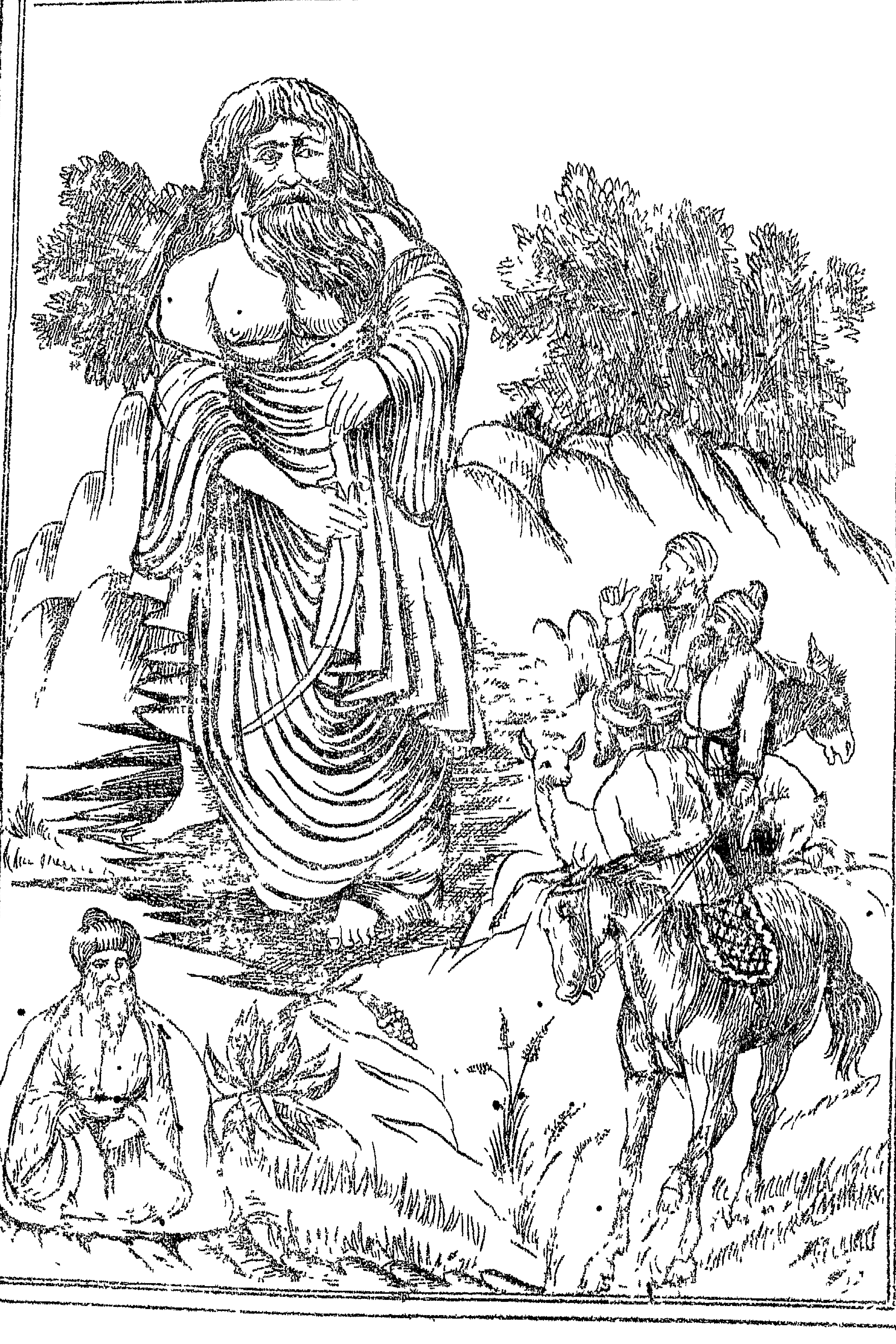
## तीसरे वृद्धका वृत्तांत जिसकेसाथ एक खच्चरथा॥

हे पिशाचों के बादशाह! यह खच्चर मेरी स्त्रीहै; संयोगवश मैं परदेशकोगया और वहां से एकवर्ष पीछे लौटकर रात्रिमें घरमें आया तो क्या देखताहूँ कि, मेरी स्त्री एक हब्शीगुलाम के पास बैठीहुई हास्यकररही है और अपने प्यारे से प्रीतिकी बातें करती है। यह देख मैं अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और चाहा कि, उसे दण्डदूं कि, इतने में वह एकपात्र जलका उठालाई और किसी मन्त्र से उसे मन्त्रित कर मुझपर छिड़कदिया जिससे मैं कुत्ता बनगया; फिर उसने मुझे घर से निकाल दिया और चित्त में अति प्रसन्न हुई। मैं फिरते फिरते व्याकुल हो एक क़साई की दूकान पर पहुँचा और उसदूकानकी हड्डियां उठा खानेलगा। एकदिन मैं उस क़साई के घर जानिकला तो क्या देखा कि, उसकी पुत्री मुझे देखते ही परदे में जा बैठी और देरतक न निकली; तब क़साई ने आश्चर्य-वान् हो पूँछा कि, तू बाहर क्यों नहीं आती? उसने कहा कि, क्या मैं पर पुरुष के सम्मुख आऊं? तब क़साई इधर उधर देख बोला कि, यहां तो कोई भी दूसरा मनुष्य नहीं है? पुत्री ने कहा कि, हे पिता! यह कुत्ता जो घर में आया है इसका वृत्तांत तुझे विदित नहीं है; यह पुरुष है और उसकी स्त्री जादूकी विद्या में अति प्रवीणहै। यह उसीकी मन्त्रविद्या से कुत्ता बनगयाहै पर जो तुझे विश्वास न हो तो मैं इसीसमय इसको मनुष्य बनासक्ती हूँ। क़साई ने कहा कि, परमेश्वर के वास्ते तू इसको शीघ्रही इस कष्ट से छुड़ा

कि, जिसमें इसके लोक और परलोक का धर्म्मरहे । यह बात सुन उसने थोड़ासाजल मन्त्रितकर और मुझपर छिड़क कहा कि, "यह चोलाछोड़ और अपनी निज जोनिको प्राप्त होजा" । यह कहतेही मैं मनुष्यरूप बनगया और वह स्त्री फिर परदे में चलीगई । तब मैंने उसकी कृतज्ञताकर यह आशीर्व्वाद दिया कि, हे भाग्यमती ! तुझे दोनोंलोकों की प्रसन्नता प्राप्तहो । मैं इच्छा करताहूं कि, मेरी स्त्री को भी दण्ड दियाजावे । यह सुन उसने थोड़ाजल मन्त्रितकर एकपात्र में अपने पिताके हाथ बाहर भिजवादिया और कहा कि; इस जलको उसके ऊपर छिड़क जिस रूप में उसे रखने की इच्छा हो उसका नाम अपने मुखसे उच्चारणकरना कि; "तू अपना स्वरूप छोड़ अमुक स्वरूपमें आ;" परमेश्वरचाहेगा तो उसका वैसाहीरूप होजावेगा । मैं उसजलको हर्षसेउठा घरले आया और अपनी स्त्री को सोताहुआ पाकर उसजल के कई छींटे उसपर मारे और खच्चर के रूपमें उसे ले आया । हे राजन् ! जब तीसरावृद्ध अपना वृत्तांत कहचुका तब पिशाचने आश्चर्य्यवान् हो खच्चर से पूँछा कि; क्या यह बात यथार्थहै ? उसने शिरहिलाकर कहा कि; हां ! यथार्थहै । तब पिशाचने ब्यापारीके अपराधके अंतिम तिहाई भागकोभी क्षमाकिया और छोड़नेके पीछे ब्यापारी से कहाकि; तुझे उचितहै कि; इनतीनों वृद्धोंका जिनके कारण तेरे प्राणबचे हैं कृतज्ञहो । यदि वे तेरी सहायता न करते तो कदाचित् तेरेप्राण न बचते । यह कह वह पिशाच गुप्त होगया और ब्यापारी उनतीनों का अत्यन्तकृतज्ञ हुआ वे तीनों वृद्ध ब्यापारी के प्राणबचने से अति प्रसन्नहोकर अपने २ गृहको सिधारे और वह ब्यापारी वहां से अपने घर में आ अपने स्त्री पुत्रोंसेमिला और शेषआयु अतिहर्षसे अपने कुटुम्बमें ब्यतीत की । शहरज़ादने ब्यापारी और पिशाचका यह वृत्तान्त कहकर शहरयारसे विनयकी कि; जो कहानी मैं कहचुकी वह धीमरकी कहानी से उत्तम नहीं है । इतनी कहानी सुन दुनियाज़ाद ने बादशाह को चुपदेखकर कहा कि; हे बहिन ! अभी कुछ रात्रि शेषहै धीमरकी कहानी भी आरम्भकर, मुझे विश्वासहै कि; बादशाह उस कहानीको

नम्बर ४ मुतअल्लिके सफ़े २४ प.भा.

चित्र तीन वृद्धों का व्यापारी और पिशाच से विदा होना ।।



चित्र हकीम दूबाँ और बादशाह ग्रीक का गेंद खेलते हुये



सुन प्रसन्नहोंगे। शहरयार उसके सुनने पर राज़ीहुआ और शहर-ज़ादने धीमरकी कहानी इसप्रकार बर्णन करनी आरम्भकी॥

धीमरकी कहानी॥

हे स्वामी! एक अति धर्मनिष्ठ और वृद्ध मुसल्मान धीमर बड़े श्रमसे अपने स्त्री पुत्रोंका पालनकरताथा। वह प्रतिदिन नियमसे भोरको उठ नदीपर जाता और चारबेर अपना जाल नदी में डालता। एकदिन बड़े सबेरे उसने उठ और नदी के तटपर जा जाल को नदी में डाला और निकालते समय उसे भारी पाकर अति प्रसन्न हुआ कि, इसमें कोई बड़ा मत्स्य फँसआया है परन्तु जब उसे बाहर निकाला तो मछली के बदले एक मरा गधा पाया और उसे देख अति अप्रसन्न हुआ। फिर उसने अपने जालको जो गधे की लाशके बोझेसे कई जगह फटगया था सम्हालकर दूसरीबार नदी में फेंका पर इसबार उसमें कीचड़ और मिट्टी फँस आई; तब वह अत्यन्त शोकित हो अपने भाग्य की निन्दाकर कहनेलगा कि; मैं अपने स्थानसे जीविकाके वास्ते निकला था और दो बेर जाल में कुछ न आया। मैं तो इस उद्यमके सिवाय और कोई काम भी नहीं करता कि, जिससे जीविका प्राप्तकरूं। निदान उसने फिर जाल को कीचड़ से धो तीसरी बेर नदी में फेंका और इसबेर भी जालमें कंकर गुठलियां आदि निकसीं जिसे देख वह अत्यन्त अप्रसन्न और शोकवान् हुआ। इतने में भोरभी होगया तब धीमरने परमेश्वर का आराधन कर इसप्रकार प्रार्थना की कि, हे सर्व्वज्ञ! और दीनदयाल! तुझे विदित है कि, मैं प्रतिदिन केवल चारबेर नदी में जाल फेंकताहूँ और आज तीनबेर फेंकचुकाहूँ पर अबतक उसमें कुछ न आया मेरा सम्पूर्ण श्रम व्यर्थ हुआ; अब एकबेर फेंकना और रहगया है इसलिये तू इस नदीको मुझपर ऐसा सन्तुष्ट कर जैसी कृपा तूने पहिले समय में मूसापर कीथी। यह कह उसने फिर चौथी बेर जालको नदी में डाला और उसे बहुत भारीपा समझा कि, अबकी बेर तो अवश्य मछलियां आई हैं। निदान अति कष्ट से उसे खींचा तो इस बेर पीतल के लोटे के सिवाय और कुछ न

आया। लोटेको भारी देख वह समझा कि, इसमें कोई वस्तु भरी हुई है। उसका मुख सीसेसे अति दृढ़ता से बन्दथा और उस पर मोहरथी। फिर धीमरने विचारा कि, यदि इस में से कुछ भी न निकला तो इस लोटेको बेंचकर थोड़ा बहुत अन्नले आजका दिन व्यतीत करूंगा। फिर उसने उस लोटेको चारों ओर से उलट पुलट कर अच्छेप्रकार से देखा कि; इसमें कौनसी वस्तु है पर उसमें से तनक भी शब्द न आया तब उसने छुरीसे उसका मुख खोल शिर नीचेको कर देखनेलगा पर जब उसमें से कुछ भी न निकला तो बहुत आश्चर्य्य में आ उस लोटेकोहाथमें से फेंक दिया फेंकतेही क्या देखा कि; उसमेंसे धुन्धाकारधुवां निकलताहै; वह यह देख भयभीत हो कुछ पीछे हटकर खड़ाहुआ और वह धुवां आकाशतक पहुँच कर नदीपर फैलगया। फिर थोड़ीदेर में एकजगह सिमटगया और एक अति बिकटस्वरूप पिशाच देखपड़ा। धीमरने ऐसा बिकरालरूप कभी न देखा था इसलिये वहांसे भागने की इच्छा की परन्तु भयसे भाग न सका। इतनेमें उसने सुना कि, वह पिशाच कहताहै कि, हे सुलेमान! मेरा अपराध क्षमाकर, फिर कभी मैं आपकी आज्ञा भंग न करूंगा और तुम्हारा सदैव आज्ञापालक और भक्त रहूंगा। धीमरने पिशाचसे यह बात सुन और अपने चित्तको दृढ़ कर पिशाचसे कहा कि;हे पिशाच! तू क्या झूठ बकताहै; सुलेमान को तो मरे १८०० बर्ष से अधिकहुये। तू अपना वृत्तांत कह कि, तू कौनहै और किस कारण इस पीतलके लोटेमें बन्दथा? पिशाच ने घृणाकी दृष्टिसे धीमरकी ओर देख कहा कि; तू ढिठाई से बात करताहै और मुझे भूत पिशाच कह पुकारता है। धीमर ने कहा तो क्या मैं तुझे गधा कहके पुकारता तो उचितथा? पिशाच ने कहा चौकस रह कि; जबतक मैं तुझे मार न डालूं, मुझसे मुखसम्हाल बात चीतकर धीमरने कहा तू मुझे क्यों मारेगा? तू क्या इस बातको भूलगया कि, अभी तुझे मैंने इस बन्धन से छुड़ाया? पिशाच ने उत्तर दिया कि, यह बात मुझे अच्छेप्रकार स्मरणहै परंतु उससे तू बच नहीं सका पर एक उपकार तेरे साथ करता हूँ कि;

जिसप्रकार तू मरने पर प्रसन्नहो उसीप्रकार तुझे मैं मारूं। धीमर बोला, हे अन्यायी! मैंने कौनसा तेरा ऐसा अपराध किया है जिसके कारण तू मुझे बध करना चाहता है; क्या बन्धन छुड़ाने का बदला यही है? पिशाचने कहा कि; तेरे मारनेका दूसरा कारण है सो भी मैं वर्णन करताहूँ। तू उसे ध्यान देके सुन। मैं उन पिशाचोंमें से हूँ जो नास्तिकथे; पिशाच प्रथम समझते थे कि; सुलेमान परमेश्वरका पैगम्बर है और सब उसकी आज्ञा में रहते थे परन्तु मैं और साकरनामक पिशाचने उसकी आज्ञा न मानी तब उस बादशाहने क्रोधितहोकर अपने बड़े मन्त्री आसफबनबरहया को आज्ञाकी कि, इसे पकड़कर मेरे निकट ला। मंत्री यह आज्ञापा मुझे उसके सम्मुख पकड़ लेगया तब सुलेमानने चाहा कि, मैं मुसल्मान होकर उसको पैगम्बर कहूं और उसकी आज्ञापर चलूं; परन्तु मैंने अहंकारसे इसबातको अंगीकार न किया और उसने मुझे दण्ड देने के वास्ते इसपीतल के लोटे में मुझे बन्दकर इसके मुख को सीसेसे बन्दकर मंत्रितकिया और फिर एक पिशाचको आज्ञा की कि; इसे नदी में डालदो सो वह मुझे नदी में डालगया। तब मैंने प्रण किया कि, जो कोई मुझे पहिली सौवर्ष की अवधि में नदी से निकालेगा तो मैं उसे इतना धन दूँगा कि, वह जन्मभर आनन्द में रहेगा और उसके मरने के पीछे बहुतसा धन उसकी सन्तान के वास्ते रहजावेगा। परन्तु हे मनुष्य! किसी ने मुझे इस अवधि तक न निकाला तब मैंने यह प्रतिज्ञाकी जो मनुष्य दूसरी सौवर्ष की अवधि में मुझे निकालेगा उसे मैं सम्पूर्ण पृथ्वी के कोष दिखा दूँगा पर फिर भी मुझे किसी ने न निकाला। फिर मैंने प्रण किया कि, जो मुझे तीसरे सौवर्षमें निकालेगा उसे मैं बहुत बड़ा बादशाह बनादूँगा और उसके पास जाकर हरदिन उसकी तीन इच्छा पूर्ण किया करूँगा। इस अवधि में भी जब किसी ने मुझे न निकाला तब मैंने अति झुँझलाकर प्रणकिया कि जो मुझे इस चौथी सौ वर्ष की अवधि में निकालेगा उसे मैं बड़ी निर्दयता से बधकरूँगा परन्तु इतना सलूक उस से करूँगा कि; जिसप्रकार वह अपनी

मृत्यु चाहेगा उसीप्रकार मारूँगा। निदान इतनी अवधि के पीछे आज तू यहां आ निकला और मुझे निकाला इस से अब तू बता किसप्रकार तुझे बधकरूँ? धीमर यह बात सुन और अति आश्चर्यितहो शोचनेलगा कि, मैं कैसा अभागाहूँ कि, ऐसे उपकार के बदले मरने के दण्डयोग्य हुआ और पिशाच से विनयपूर्वक बोला कि; तू अपनी प्रतिज्ञाको छोड़ मेरे परिवार पर दयाकर और मेरा अपराध जो तेरे बिचार में है क्षमाकर तो परमेश्वर तेरा भी अपराध क्षमा करेगा। पिशाच ने कहा कि, मैं तुझे जीता न छोड़ूँगा; अब तू यह बता कि, किसप्रकार तुझे मारूँ। धीमर पिशाच को अपने मारने पर उद्यतदेख बहुतडरा और अपने मारे जाने और स्त्री पुत्रों को स्मरणकर बहुत ब्याकुलहुआ। उसने पिशाचके क्रोध शान्ति के लिये बिनयपूर्वक कहा कि, हे पिशाचोंके बादशाह! इस उपकारके बदले जो मैंने तेरेसाथ कियाहै मुझपर दयाकर। पिशाच ने उत्तर दिया कि; यही उपकार तेरे मारने का कारणहुआ। धीमर ने कहा कि; यह बड़े आश्चर्य्य की बात है कि; भलाई के बदले तू बुराई करताहै। यह दृष्टांत जो विख्यातहै कि; जोकोई बुरेंसे भलाई करताहै उसका बदला बुराई पाता है सो मैं इसे तुझपर ठीकपाता हूँ। पिशाच ने कहा कि, इन प्रश्नोत्तर और दृष्टान्तों को छोड़ मैं तेरे मारने से न हटूँगा। धीमर ने एक यत्न अपने चित्त में शोच पिशाचसे कहा कि, अब मैं किसीप्रकार तेरेहाथसे बच नहीं सक्ता और परमेश्वरकी यही इच्छाहै तो मैं प्रसन्नहूँ; परन्तु मैं जब तक अपने मरनेका उपाय न बिचारलूं तुझे उसी पवित्र नामकी सौगन्द है कि, जिसको सुलेमानने अपनी मुहरमें खोदाथा मेरेएक प्रश्नका उत्तरदे। पिशाच ऐसी बड़ी सौगन्दसे निरुपायहो, कम्पायमान हुआ और धीमरसे बोला कि, तू प्रश्नकर मैं उसका उत्तर दूँगा। धीमरने कहा मुझे बड़ा आश्चर्य्य है कि; तू इतना लम्बा चौड़ा डील रखकर इतने छोटेसे लोटेमें क्योंकर समाया? पिशाचने उत्तरदिया कि; मैं उसी पवित्रनामकी सौगन्दखाकर कहता हूँ कि; मैं उसी में था। धीमरनेकहा मुझको तेरी बातका विश्वासनहींआता; इस लोटेमें तो

तेरा एक पाँवभी नहीं समासका फिर तू किसप्रकार अपने सम्पूर्ण डीलसे इसमें समायाहोगा ? पिशाच ने कहा कि; ऐसी सौगन्द खानेसे भी तुमको बिश्वास नहींआता ? धीमरने कहा कि, मुझको तो कभी विश्वास न आवेगा जबतक कि; मैं तुमको इसलोटे के भीतर अपनी आंखोंसे न देखूं और बातें करतेहुये न सुनूँ। इतना सुन वह पिशाच धुवां होगया और सम्पूर्ण नदी और उसके कूलों पर फैलगया; फिर एक स्थानपर इकट्ठाहो उसलोटे में प्रवेश करने लगा और धीरेधीरे उसमें भरगया। जबकुछ भी शेष न रहगया तो उसमें से एकशब्द निकला कि; हे धीमर! अब तो तुझको विश्वास हुआ कि; मैं सम्पूर्ण इसलोटेके अन्दरहूँ? धीमरने उत्तर देनेके बदले उसलोटेका ढकना उठाकर लोटेके मुखमें रक्खा और अच्छीतरह बंद करके बोला कि, हे पिशाच! अब तेरी पारी है कि तू मुझसे अपना अपराध क्षमाकरा और अपनी मृत्युका उपाय बिचार कि; तुझे मैं किसप्रकारमारूं। अब मुझे उचित है कि; मैं तुझको फिर इसी नदी में डालूं और कूलपर घरबनाकर रहाकरूं कि; जो धीमर इसस्थान में जालडालनेको आवे उसको बतलादियाकरूं कि, इस स्थानपर एक बिकराल पिशाच है उसे न निकालियो क्योंकि, उसने यह सौगन्द खाई है कि, जो मुझे निकालेगा मैं उसे बध करडालूंगा पिशाच इसबातको सुन अतिब्याकुल हुआ और किसीप्रकार अपने को उस लोटेसे फिर निकालाचाहताथा परन्तु उसमेंसे निकलना अति कठिनथा क्योंकि सुलेमान की मुहर उसे निकलने न देती थी। निदान वह अपना निकलना कठिन समझकर अपने क्रोधको पीगया और बड़ी अधीनता से बोला कि हे धीमर! चैतन्य रह ऐसा काम न कीजियो कि, कहीं मुझे फिर नदीमें डालदे। मैं तुझ से हँसताथा और यह बातें केवल तुझसे छेड़ने और हास्य के लिये करता था मर पश्चात्ताप है कि; तूने वह बातें सत्य समझीं। धीमरने कहा, ऐ पिशाच! तू इसलोटे के बाहर बहुत बड़ा पिशाचों का सरदार मालूम होता था और अब तू इसके भीतर अपने को अत्यन्त अधीन और तुच्छ बताता है। अब तू अवश्य इस नदी में

फेंकाजायगा और प्रलयतक इस बन्धनसे तेराछुटकारा न होगा। पिशाचने कहा, परमेश्वर के वास्ते मुझपर दयाकरके नदी में फेंकने का इरादा न कर । इसी प्रकार पिशाचने अति दीनहो और बहुत बिनयकर चाहा कि, धीमरको अपने ऊपर प्रसन्नकरे परन्तु धीमर प्रसन्न न हुआ तब उसने कहा कि; यदि तू मुझे इस बन्धन से छुड़ायेगा तो मैं इसके बदले तेरे साथ बड़ामलूक करूंगा। धीमरने उत्तर दिया कि, तू बड़ा धूर्त्तहै मैं क्योंकर तेरीबातपर विश्वासकरूं। यदि मैं तुझे छोड़ूं तो दूसरीबेर फिर तुझे अपने मारने पर उद्यतकरूं और तू मेरेसाथ अपकारकरे जैसा ग्रीकके बादशाहने दूबांवैद्यकेसाथ कियाथा इसलिये अब तू उसकहानीको सुन मैं कहताहूं ॥

## बादशाहग्रीक और दूबांवैद्यकी कहानी ॥

पारसदेश में एक रूमा नगर था और ग्रीक नाम उस नगरका बादशाह था भाग्यवश उस के शरीर में कुष्ठ रोग होगया इस कारण वह रात्रि दिन व्याकुल रहा करता था यद्यपि वहां के वैद्यों ने सब प्रकार की औषध और उपाय किये तथापि वह आरोग्य न हुआ संयोगवश एक बड़ा बुद्धिमान् वैद्यक विद्या में अद्वितीय प्रत्येक देश अर्थात्, ग्रीक, फ़ारसी, अरबी आदि भाषाओं का जाननेवाला व जड़ी बूटी आदिका अच्छे प्रकार पहिंचानने वाला दूबांनामी वैद्य उस नगर में आकर उतरा तो उसको यह विदित हुआ कि यहां के बादशाह के शरीर में कुष्ठरोग है जिसकी औषध यहां के सब वैद्य करचुके परन्तु वह किसी से अच्छा न हुआ तब तो उस ने अपने आगमनकी खबर बादशाहको दी और स्वेच्छा-नुसार उसकी आज्ञापाय उस के पासजाय प्रणामकर विनयकी कि मैंने सुनाहै कि इस नगरके समस्तवैद्य औषधकरके हारगये परन्तु आपके रोगकी उपयोगिक न हुई । इस कारण मैं यह चाहताहूं कि यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं खिलाने व मर्दन करने के बिनाही परमेश्वरकी कृपासे आपको अच्छाकरदूं । बादशाहने यह सुनकर वैद्य से कहा कि जो तू मुझे इसीतरह से चंगा करदेगा तो मैं तेरे साथ बड़ा उपकार करूंगा । दूबांवैद्य ने विनयकी कि ईश्वरकी कृपा

से मैं आपको इसी प्रकार से नीरोग करूंगा और कलमें अवश्य आपकी औषध करूंगा यह कह फिर वह वैद्य बादशाह से बिदाहोकर अपने स्थानपर आया और उसी समय कुष्ठरोगनाशक ओषधियोंका एक गेंद और लकड़ीकी थपकी बनवाई और दूसरे दिवस उन्हें लेकर बादशाहके पासगया और रीत्यनुसार दण्डवत्कर विनयकी कि आप अपने घोड़ेपर सवार हूजिये और गेंदखेलनेके लिये गेंदघर चलिये बादशाह वैद्यके कहने के अनुसार घोड़ेपर सवार होकर गेंदघरमें गया वैद्यने वह गेंद और थपकी बादशाहके हाथमें देकर कहा कि इस गेंद और थपकी से आप गेंदखेलिये खेलते २ जब आपका शरीर पसीनेसे भरजाय तो यह सम्पूर्ण औषधें जोकि इन दोनोंमें भरी हैं वह आपके सर्व्वशरीरमें प्रवेशकरजायँगी और फिर जब सब शरीर में अच्छे प्रकार से पसीना आजावे तब उष्ण जलसे स्नानकरना तत्पश्चात् आपके शरीर में अच्छे प्रकारसे नानाभांतिके दिव्य २ औषधमयी तैलमर्दन किये जावेंगे फिर उसके पीछे आप सोरहें तो आशा है कि दूसरे दिन अवश्य नीरोग होजावेंगे यह सुन बादशाह उस गेंद को हाथ में ले घोड़ेपर चढ़ा हृदय में उत्साह बढ़ाकर अपने सेवकों के साथ गेंद खेलने लगा इधर से बादशाह गेंदको थपकी से मारता था और उधर से वह सब गेंदको बादशाहकी ओर फेंकते इसीप्रकार बड़ी देरतक गेंदका खेलरहा यहांतक हुआ कि गरमी के कारण बादशाह के शरीर से पसीना टपकने लगा और ओषधियों का गुण सम्पूर्ण शरीर में प्रवेश करगया उसके बाद बादशाहने उत्साह के साथ गरम जल से मलमलकर भली भांति स्नान किया फिर जो जो विधान और भी स्नानआदि करनेके वैद्यने बतायेथे सो सब किये दूसरे दिवस बादशाहने अपने शरीरकोदेखा तो नीरोगपाया और ऐसा उज्ज्वल देखा कि मानो कदापि रोग न हुआथा बादशाह इस उपाय और औषध से अतिआश्चर्यवान् हुआ और अत्यन्त हर्ष से उत्तम २ वस्त्र पहनकर बड़ीसजधजसे अपनी सभामें आनकर बैठा कि इतनेही में सभासद्लोगभी आकर उपस्थितहुये और दूबांवैद्य भी उसीसमय

बादशाहके सन्मुख आनकरप्राप्तहुआ और बादशाह के सब अंग अनंगकसे चमचमातेहुये देख उमंगमें आकर और राजसिंहासन को चूमनेलगा बादशाह ने उसको अपने समीप सिंहासनपर बैठा कर उसी सभामें जहां कि नानाप्रकारके सभासद लोग वर्तमान थे उसकी बहुत प्रशंसाकी और यहांतक उसके नेहरूपी मेह से भीजा कि भोजन के समय भी दुबांवैद्य को अपने साथही खिलाया जब संध्याको सब सभासद और दरबारी बिदा होकर चले गये तो उसने एक बड़ा उत्तम जड़ाऊ बस्त्र जैसे कि बड़े २ सरदार पहनकर बादशाह के दरबार में जाया करते थे वह और ६०००० हज़ाररुपया उसे पारितोषिक दिये और प्रतिदिन उसकी अधिक से अधिक प्रतिष्ठा करनेलगा परन्तु तिसपर भी हर समय यही बिचारता रहता था कि ऐसे कामकी अपेक्षा वैद्यको मैंने कुछ नहीं दिया और उसके गुणके आगे मुझसे उसका आदर न बनपड़ा कुछ दिनतक इसीप्रकार बादशाह सोच २ कर पारितोषिक आदि से उस का सन्मान करतारहा कि इतने में बादशाह का मंत्री बादशाह का ऐसाप्रेम उस वैद्यके ऊपर देखकर उससे डाह और बैर रखनेलगा और यह इच्छा की कि किसीप्रकार इस वैद्यको बादशाह की दृष्टि से गिरादें और बादशाहका चित्त उससे अप्रसन्नकरें यह मन में ठान ठानकर एकदिन बादशाह से एकांत में बिनय की कि मुझे कुछ आपसे कहनाहै बादशाह ने कहा कहो मंत्री ने कहा कि ऐसे दूसरे शहर के मनुष्य को कि जिसका हाल कुछ भी बिदित नहीं उसका ऐसा बिश्वास करना नीति के बिपरीतहै आपने जो इतनी कृपा दूबांवैद्यपर की है यह सभासदों का सम्मत नहीं काहे से कि वह वैद्य महाधूर्त है चाहता है कि आपके बैरियों को मारडालें इसी वास्ते उसने आपके मन में जगहकी है बादशाह ने उत्तर दिया कि हे मंत्री! तुझे क्या हुआ जो तू ऐसी बातें उसके वास्ते कहता है और उसको अपराधी बनाताहै मंत्रीने बिनयकी कि हे स्वामिन्! मैंने इस बातको अच्छे प्रकार से निश्चय करलियाहै तब आपसे बिनय की है अवश्य वह मनुष्य बिश्वास योग्य नहीं यदि आप सोतेहों

तो चैतन्य होजायँ क्योंकि मैं फिर कुछ बिनय करताहूँ यह कि दूबांवैद्य अपने ग्रीक देशसे यहां यही इच्छा करके आया है जो कि मैंने आपसे बर्णन किया बादशाहने कहा वह कदापि ऐसा मनुष्य नहीं जैसा कि तू बताता है मैंने तो उसको बुद्धिमान् और गुणवान् पाया उसके समान दूसरा मनुष्य नहीं क्या तूने नहीं देखा कि मेरे रोगको उस ने किस उपाय से नाश किया यदि इस औषध और उपायको आश्चर्य्य कर्म कहें तो उचित है और जो कदाचित् उसकी इच्छा मेरे मारनेकी होती तो ऐसे कठिनरोगको क्यों बिनाश करता उसके वास्ते ऐसा बिचार न करना चाहिये अब मैं तीनहज़ार रुपये उसका मासिक नियंत करताहूँ काहे से कि सज्जन मनुष्यों का यही धर्म है कि जो कोई किञ्चित्मात्र भी अपने साथ उपकार करे उसको जन्मभर न भूलै जैसे कि केवल जानकीजीका संदेशही लानेसे श्रीरामचन्द्रजी ने हनुमानजीको अयोध्याकी राज्यभी देना तुच्छ समझी और नम्रीभूत होकर यह कहा कि इस तुम्हारे ऋण से हम कदापि उऋण न होंगे ऐसेही जो मैं अपना सम्पूर्ण धन भी उसे देडालूं तो वह भी थोड़ा है उसके केवल इतनेही सत्कार और पारितोषिकपर तू क्यों डाह करता है यह बिचार मतकर तेरे इस निन्दा करने से मैं उसके साथ अपकार नहीं करूंगा मुझको वह कहानी स्मरण है कि बादशाह सिन्दबादको उसके मंत्रीने बेटे के मारने से मना किया था मन्त्रीने पूंछा कि वह कहानी क्योंकरहै बादशाह ग्रीकने कहा कि बादशाह सिंदबादकी सासने इस इच्छा से उसके पुत्रको किसी प्रकारका अपराध लगाया कि जिसमें बादशाह अपने पुत्रको मारडाले और उसी प्रकार बादशाह ने बे समझे बूझे उसके छलमें पड़कर अपने पुत्रके बध करनेकी आज्ञा दी उसके मन्त्रीने बिनय की कि हे बादशाह! इस आज्ञाके देने में शीघ्रता न कीजिये और यह सोच लीजिये कि किसी काम में शीघ्रता करना अच्छा नहीं इसके विषय में शास्त्रों ने भी प्रमाण दी है कहीं ऐसा न हो कि शीघ्रता के कारण फिर आपको पश्चात्तापहो जैसा कि एक सत्पुरुषको शीघ्रता के करने में दुःख

हुआथा बादशाह सिन्दबाद ने पूंछा कि किस तरह तब मन्त्री ने उस पुरुषकी कहानी इस प्रकार वर्णन की ॥

स० अद्भुतते अतिरोचक है यह शोच सगोचक लौमकहानी ।
है इकसज्जन औशुकको शुभवृत्त जो बोलतथोनरबानी ॥
नारिछिनारिके कर्मनते पुनिजाबिधि नाशभयोशुकज्ञानी ।
बंदिअनंदित भाषतसो भजिकै भवभंजन शंभुभवानी ॥

## सत्पुरुष और तोतेकी कहानी ॥

पूर्व्व समय में एकबड़ा नेकमर्द्द मनुष्य किसी ग्राम में रहताथा उसकी स्त्रीभी परम सुन्दरी थी उससे वह अत्यन्त प्रीति करता था यदि एकघड़ीभी वह स्त्री उसकी दृष्टिसे बिलग होतीथी तो वह ब्याकुल होजाताथा दैवयोगसे एकदिन वह किसी आवश्यक कार्य्य के निमित्त एक नगरको गया तो वहांपर एक जगह नानाप्रकार के चित्र बिचित्र पक्षी बिकरहे थे उसने भी एक बोलता हुआ तोता मोल लिया जोकि बातचीत करनेपर हरएक प्रश्नका उत्तर मनुष्यों की भांति देताथा और बार्त्ता के बिशेष उस में एक यह गुण और भी था कि जिसके घर में वह रहता तो उसके जानेके पश्चात् जो कोई बात उसके घरमें होती वह अपने स्वामीको बता देताथा संयोगबश थोड़ेदिनोंके पीछे वह मनुष्य परदेश जानेको उद्यतहुआ तो उसने शुकका पिंजरा अपनी स्त्रीको सौंपकर कहा कि जबतक मैं परदेशसे लौटकर न आऊं इसकीरक्षा तू करना इतनाकह वह फिर परदेशको चलागया और कुछदिन बीतनेकेबाद जब वह परदेशसे लौटकर आया तो उसने एकान्तमें बैठकर तोतेसे पूछा कि मेरे पीछे घरमें क्याहालहुआथा तोतेने सम्पूर्ण बृत्तान्त जो उसके पीछे हुआथा वर्णन करदिया तो उसने अपने जी में अपनी स्त्रीको किसी २ बात में ताड़नाकी स्त्रीने सोचा कि मेरे इस भेदको इससे किसी बांदी ने कहाहोगा यह सोच उनको ताड़नाकरनेलगी उन्होंने सौगन्दखाकर कहा कि हमने तुम्हारा भेद किसी से नहीं कहा तब तो वह स्त्री बांदियोंको निर्दोषसमझकर यह जानगई कि बस इस तोतेनेही मेरी चुगली की है यह बिचारकर उस स्त्रीने अपने जी में यह सोचा कि

किसी प्रकार इस तोते को झूठा करना चाहिये जिसमें मेराभर्त्ता आगेको उसपर बिश्वास न करे और वह संदेह जोकि उसके मनमें है मेरी ओरसे निवृत्तहो इतने में उसका पति एक दिनके वास्ते कहींको गया तो उसने अपनी बांदियों को आज्ञादी कि तुममें से एक इस तोते के पिंजरेकेनीचे सारीरात चक्कीपीसे और एक उसके ऊपर बर्षाकीभांति जलडाले और तीसरी बांदी दर्पण को हाथ में लेकर दियेके प्रकाशमें उस तोतेकेमुखके आगे घुमावे स्त्रीकी यह आज्ञासुन वह बांदियांरात्रिभर इन सबकार्य्योंको करतीरहीं और प्रातःकाल होतेही बंदकरदिया दूसरेदिन जब वह मनुष्य घरमें आया तो पूर्ववत् उसतोतेसे एकान्तमें पूँछा कि आज रातमें क्याहुआथा तोतेने कहा कि हे स्वामिन्! आजरातभर मुझपर जलबर्षतारहा और बिजली चमकतीरही बादलगर्जतारहा इससे मैं अत्यन्तदुःखितरहा उसने बिचारा कि रातको न बादलथा और न मेहबरसा यह असत्य कहता है और मुझसे सदैव इसीप्रकार झूठीबातें कहा करताहै और जो कुछ मेरी स्त्रीका हालकहा सो सब झूठथा फिर तोते से अप्रसन्न होकर पिंजरेसे निकाल पृथ्वीपर पटकमारडाला फिर कितने दिनके पश्चात् उस पुरुष ने अपने परोसियों से अपनी स्त्रीकी वही बुरीबातें सुनीं और उनकी बातें तोतेके कहनेके अनुकूलपाकर उसके मारडालने से अतिलज्जितहुआ इतना कह धीमरने पिशाचसे कहा कि बादशाह यीकने इस कहानीको कह अपने मंत्रीसेकहा कि तू डाहसे चाहताहै कि दूबांवैद्य जिसने तेरेसाथ किसीप्रकारकी बुराई न की मेरेहाथसे निरपराध मारवाडालें सो मैं उक्तमनुष्यके समान बेसमझ नहीं कि तोतेको बिना अपराधमारा मंत्रीने बादशाह से कहा कि हे स्वामिन्! उस तोतेका निर्दोषमाराजाना तो कुछ बड़ीबात न थी और यह जो मैंने आपसे बिनयकी है बहुत बड़ीबातहै इसका सोच बिचार और उपाय अवश्यहै यदि आपकेजीवनकेलिये एकमनुष्य बिनाअपराध भी माराजावे तो कुछ पश्चात्तापकी जगहनहीं और क्या यह उसका अपराध थोड़ासा है कि सब यही कहते हैं कि यह भेदिया तुम्हारे मारनेके निमित्त आयाहै मुझे कुछ उससे डाह व बैर नहीं कि जैसा

आपके विचारमें है मैंनेतो केवल आपका हितही कहाहै मुझको उसके बुरे व भलेहोनेसे कुछ कामनहीं आपकी आयु चाहताहूं यदि यह बात असत्यहो तो मैं वही दण्डपाऊं जैसे उस मन्त्री ने दण्डपायाथा और मारागयाथा बादशाहग्रीकने पूछा उस मन्त्री ने कौनसा कर्म कियाथा कि जिसकारण वह मारागयाथा मन्त्रीने बिनयकी जो आप ध्यानधर सुनें तो इस कहानीको बर्णनकरूं बादशाहने कहा कह ॥

## मन्त्री की कहानी ॥

कोई समय में किसी शाहज़ादे को आखेट का व्यसनथा और उसका पिता उससे प्रीतिकरता और जिस बातमें उसकी प्रसन्नता होती उसे कभी न टुलकता इसीहेतु मंत्री से ताकीदकरके कहा कि आखेट में कभी उससे न्यारा न हूजियो एक दिन भोरहोतेही वह शाहज़ादा शिकार को गया बहेलियों और शिकार खिलानेवालों ने जो उसके साथथे एक बारासिंहा उस बनसे निकाला शाहज़ादे ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया कईकोसतक उसका पीछाकिया फिर थकितहो ठहरगया और इच्छा की कि वहांसे लौट उसी स्थानपर आजावे जहां से उसने घोड़ा दौड़ायाथा और मंत्री से कि उसने उसे अकेला छोड़ दियाथा आनकर मिले परन्तु राहभूल वहां न पहुँचा कितनाही उसने चारोंतरफ़ देख रास्ताढूंढ़ा परन्तु न पाया दैवयोगसे उसने क्या देखा कि एक स्त्री अतिसुन्दरी रुदन कररही है उसने अपने घोड़ेको थांभ उससे पूंछा कि तू कौनहै और क्यों बैठी रोरही है स्त्रीने उत्तर दिया कि मैं हिन्दुस्तान के बादशाह की पुत्रीहूं मैं घोड़ेपर सवार होकर जातीथी कि मुझे नींद परगई और अकस्मात् घोड़ेपर से गिरपड़ी और घोड़ा मेरा बनमें किसी ओर भागगया मुझे नहीं मालूम कि वह किस ओरको चलागया कुँवर को उसका वृत्तान्त सुन अतिदया उपजी और अपने आगे घोड़े पर चढ़ालिया और वहां से चला जब एक उजाड़ बन के निकट पहुँचा उस स्त्रीने बहाने से उतरनेकी इच्छाकी शाहज़ादेने उसे उतारदिया और आपभी उतर उस बनकी ओर चला परन्तु स्त्री की इस बातको सुन अतिआश्चर्य किया कि वह स्त्री एक मकानकी चार-

दीवारों के बीचमें जा पुकारकर कहनेलगी कि हे बच्चो! प्रसन्नहो मैं तुम्हारे वास्ते एक यह तरुण रुष्ट पुष्ट मनुष्य शिकारकर लाई हूं प्रति उत्तर में एकशब्द सुनाईदिया कि हे मातः! वह कहां है उसे शीघ्रही हमें खानेकोदे हम बहुतभूखे हैं शाहज़ादा इसबार्त्ताकोसुन अति भयभीतहुआ और समझा कि यह स्त्री बनबासियोंमेंसे है जो इस उजाड़में परदेशियों को पकड़ धोखादे मारकर खाजातीहै इस भयसे वह कम्पायमानहो शीघ्रही अपने अश्वपर सवारहुआ फिर उस स्त्रीने बाहर आ देखा तो वह शिकार हाथसे जातारहा शाहज़ादे से कहा तू भयमान न हो तू मुझे बता कि तू कौन है और किस को ढूंढ़ता है शाहज़ादेने कहा कि मैं अपनीराह ढूंढ़ताहूं स्त्रीनेकहा कि जो तू राह भूलगयाहै तो तू परमेश्वरपर भरोसा रख वह तेरी कठिनता दूरकरेगा शाहज़ादेको बिश्वास न हुआ कि स्त्री प्रीति से यह बात कहती है ऐसा न हो कि इसमें धोखाहो फिर उसने अपने दोनों हाथोंको उठा परमेश्वर से बिनयकी कि हे ईश्वर! जो तू सबपर बलवान्है तो मुझे बचा और कठिन बैरी से छुड़ा इस प्रार्थना के करतेही वह मनुष्यभक्षिणी उजाड़ बनकी ओर चलीगई और शाहज़ादे को मार्ग दिखलाई दिया जिससे वह निज स्थानको शीघ्रही पहुँचगया और अपने पिता से रास्ते का सम्पूर्ण समाचार उस मनुष्यभक्षिणी आदि का कि मन्त्री के अलग होने से हुआथा कह सुनाया बादशाह यह सुन मन्त्रीसे अतिअप्रसन्नहुआ उसे प्राणसे मरवाडाला शहरज़ाद इतनीबात कह बोली हे स्वामिन्! मंत्री इसको कहकर फिर वैद्य दूबांकी बातें बादशाह ग्रीकसे कहनेलगा कि मैंने यह अच्छेप्रकार सुना है कि वह भेदियाहै आपके किसी बैरीने इसे भेजा है यदि आपको इसने उपायसे नीरोग कियाहै परन्तु उस औषध के गुण से ऐसा दुःख पहुँचेगा कि आपके प्राणपर आबनेगी बादशाह निर्बुद्धिथा मंत्री के बैर और डाहका कारण यथार्थ प्रतीत न करसका और मंत्रीके बहकानेसे उसका चित्त दूबांवैद्यसे फिरगया और कहनेलगा कि हे मन्त्री! तू सत्य कहता है वह वैद्य मेरे मारनेको आया है किसीसमय मुझे कोई ऐसी औषध सुंघावेगा कि जिससे

मेरे प्राणान्त होजावेंगे मेरेचित्तमें भी यहबात दृढ़होगई जब मन्त्री ने यह देखा कि मेरामन्त्र चलगया बादशाह से कहा कि अपने बचाव के वास्ते शीघ्रही दूबांवैद्यको बुलवाकर मारने की आज्ञा दो बादशाहने कहा कि अच्छा मैं अभी मरवाडालताहूं यह कह किसी सरदारको आज्ञादी कि शीघ्रही दूबांको बुलवाभेजो उसने बुलवा भेजा जब दूबां आया तब बादशाहने कहा कि तू जानताहै कि मैंने तुझे क्यों बुलवायाहै उसने बिनयकिया मुझे मालूम नहीं आप मुझे आज्ञाकीजिये बादशाहने कहा कि मैंने तुझे इसवास्ते बुलायाहै कि तुझे मारकर तेरे मक्करसे छूटूं वैद्य इस बातको सुन अतिआश्चर्यित हुआ और बादशाह से बिनयकिया कि हे स्वामिन्! मेरे बध करनेका क्याकारण है बादशाहने कहा कि तू जासूस अर्थात् भेदियाहै और मेरे मारनेकेवास्ते आयाहै यदि तू मुझे सायङ्कालको मारनेकी इच्छा करे मुझे उचितहै कि मैं तुझे भोरहीको मारूं यह कह बादशाह ने उसी सरदारको आज्ञादी कि तू इसे अभीमार कि मैं इसके हाथसे बचूं कि मेरे मारने के वास्ते यह आयाहै दूबां बादशाह के चित्तको एकही दिनमें ऐसा फिराहुआ देख सोचा कि बादशाहको लोगों ने डाहसे बहकाकर मेराबैरी किया अत्यन्त पश्चात्ताप करनेलगा कि मैंने क्यों बादशाहको आरोग्यकिया और चिरकालतक अपनी निर्दोषताको बादशाहसे कहतारहा बादशाहने कुछ न सुनकर दूसरीबेर उसके बध करनेकी आज्ञाकी फिर उस वैद्यने बादशाहसे बिनय की कि हे स्वामिन्! यदि निर्दोष मारोगे तो परमेश्वरसे बदला पाओगे इतनाकह धीमरने पिशाचसे कहा जोग्रीक और वैद्यमेंहुई वही बात तेरे और मेरेमें है जिस समय बधिक अपने स्वामी की आज्ञानुसार नेत्रों में पट्टी बांध मारनेलगा सभासदों ने उसे निरपराध समझ बादशाह से बहुतसी प्रार्थना की बादशाहने उन सबको झिड़क ऐसा उत्तर दिया कि फिर उनको इस बिषयमें कहने की शक्ति न रही वैद्य दूबांने जब देखा कि मैं बिना अपराध जान से माराजाताहूं बादशाहसे बिनयकी कि हे स्वामिन्! मुझे इतना अवकाश दीजिये कि अपने घरपर जाकर अन्तिम शिक्षाकर आऊं

और अपनी पुस्तकें किसी अधिकारी मनुष्य को दे आऊं और उन पुस्तकों में से एक पुस्तक जो अपूर्व्व है आपके पुस्तकालय के वास्ते लेआऊं बादशाह ने कहा कि वह कौनसी पुस्तक है कि जिस की तू इतनी प्रशंसा करताहै वैद्यने कहा उसमें बहुत भेदकी बातें हैं उसमेंसे एक यहबातहै कि जब मेराशिर काटाजावे और पुस्तक को खोल छठे पृष्ठके बाईं सफेकी तीसरी पंक्तिको पढ़कर जो प्रश्न आप करैंगे उसी समय शिर मेरा उत्तरदेगा बादशाह यह बातसुन अति आश्चर्य्य में हुआ और विचारा कि ऐसी अपूर्व्व वस्तु को देखना अवश्य है यह विचार आज्ञाकी कि आज इसे रक्षापूर्व्वक पहरेमें करके घरलेजावो जब वैद्यको उसके घर लेगये उसने एकही दिन में सब कार्य्यकर एक बड़ी पुस्तक वस्त्रमें बँधीहुई बादशाहको दे विनय की जब मेरा शिर काटाजावे उसे तस्तरी में इस पुस्तक के बँधनेपर रखना रखतेही रुधिर बन्द होजायगा इसके उपरान्त जो तुम उस शीशसे पूँछोगे ऊत्तर ठीकपाओगे फिर उससमय भी बादशाहसे कहा कि हे स्वामिन् ! मैं निर्दोष मारा जाताहूं क्षमा कीजिये बादशाहनेकहा अबमैं तेरीबात नहीं सुनता तेरे मारेजाने के पश्चात् तेरे शिरसे सुनूंगा यहकह बादशाहने उसके हाथसे वह पोथीलेली और बधिकको उसकेमारने की आज्ञादी हिंसक ने दूबांवैद्यका शिर कांट उसी तस्तरीमें रक्खा और शिरको उस पुस्तकके बँधने के वस्त्र पर रक्खा उसीसमय रुधिर शिरसे निकलना बन्दहोगया बादशाह और सभासदों ने यहदेख बड़ा आश्चर्य्य किया फिर उसशिरने नेत्र खोल बादशाहसे कहा अब इस पुस्तकको खोल बादशाहने छठेपृष्ठ को गिनकर उलटनाचाहा कि दूसरे सफेकी तीसरी पंक्ति को बांचैं परन्तु वहपत्रे एक दूसरेसे ऐसे चिपकेथे कि बादशाह उनको सुगमता से उलट न सका सो वह थूंकलगा लगाकर पत्रे उलटनेलगा जब छठेपृष्ठपर पहुंचा बादशाहने उसस्थानपर कि जहां वैद्यने पढ़ने को कहाथा कुछ न पाया तो उसने वैद्यके शिरसे कहा कि यहां तो कुछभी नहीं लिखा है शिर ने उत्तर दिया कि और पत्रों को उलटकर देखो बादशाह प्रतिक्षण अपनी अंगुली में मुंहसे पानी लगा उलटनेलगा

यहांतक कि विष जो पुस्तक के प्रतिपृष्ठपर लगाथा मुख में प्रवेश करगया इसीवास्ते कि कई बेर मुखमें अंगुली लगाने को लेगया था और इसीप्रकार क्षण क्षण में उसका हाल बदलता गया और दृष्टिभी उसकी जाती रही निदान व्याकुलहो सिंहासन के नीचे पृथ्वीपर गिरपड़ा जब वैद्य के शिरने देखा कि बादशाह को बिष की ज्वाला अच्छे प्रकार व्यापगई और पलमात्रही जीता रहेगा बड़े शब्द से कहा कि हे अन्यायी और निर्दयी ! निर्दोष के मारने का यह फल तूने देखा इतना सुनतेही बादशाह मरगया और अपने दण्ड को पहुंचा इतना कह रानी शह्वरज़ाद ने शहरयार से विनयकी कि यह कहानी बादशाह ग्रीक और दूबां वैद्यकी थी सो तूने सुनी अब मैं फिर धीमर और पिशाच की कहानी कहतीहूँ जब वह धीमर यह कहानी कहचुका तो पिशाच से कहने लगा कि हे पिशाच ! यदि बादशाह ग्रीक दूबांवैद्यको न मारता तो परमेश्वर उसका भला करता परन्तु जब उसके रोने पीटने पर दृष्टि न की परमेश्वर ने उसे वैसाही दण्ड दिया हे पिशाच ! तेरा भी ऐसाही हालहै यदि तूभी मेरे मारने की इच्छा न करता तो इस बन्धन में न पड़ता तूने तो बन्धन से छूटतेही मेरे मारने की इच्छा की अब मैं तुझे क्योंकर इस बन्धन से छुड़ाऊं और तुझपर दयाकरूं अब अवश्य है कि तुझे इसलोटे समेत इस नदी में डालदूं कि तू प्रलय पर्य्यन्त इसीबन्धनमें पड़ारहै पिशाचने कहा कि मेरेमित्र फिर मुझ से ऐसा अपराध न होगा यह समझो कि बुराई के बदले भलाई करना अच्छीबात है तू मेरे साथ ऐसी भलाई कर कि जैसा कि इम्मा ने अतीकाके साथ की थी धीमरने पूछा उसकी कहानी किस प्रकार पर है पिशाच ने कहा जो तुम इस कहानी को सुना-चाहते हो तो मुझे छोड़दो मैं सुगमता से इस लोटे में से वार्त्ता नहीं करसक्ता और यह कहानी क्यावस्तु मैं बहुत उत्तम वृत्तान्त और कहानियां तुमको सुनाऊंगा कि जिसमे तुम प्रसन्नहोगे धीमर ने कहा मैं तेरी कहानी को नहीं सुनाचाहता हूं मुझे तेरा विश्वास नहीं यही उत्तम है कि फिर तुझे इस नदी में डालदूं पिशाच ने कहा

हे धीमर ! तू मुझे छोड़दे मैं तुझे एकबात ऐसी बताऊंगा जिससे तू अतिधनी होजायगा धीमरने कहा कि मुझको तेरे कहने का कुछ भी विश्वास नहीं यदि तू इस्मआज़म की सौगन्द खाये कि तेरे साथ अपने छुटने के पीछे धोखा न करके अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करूंगा तो छोड़दूं पिशाच ने सौगन्द खाई धीमरने लोटेके मुखसे ढकने को उठालिया और उस लोटे में से धुवां निकला और फैल कर पिशाच का स्वरूप होगया और लोटे को ठोकरमार नदी में फेंकदिया धीमर इसबातको देख अत्यन्त भयभीत हुआ और कहा हे पिशाच ! तूने यह क्या किया तू अपनी प्रतिज्ञापर स्थिर नहीं और वह प्रण जो तूने मेरे साथ किया है पूरा नहीं करेगा मैंने तो तेरेसाथ वही भलाई की है कि जो दूबांवैद्य ने बादशाह ग्रीक के साथ कीथी धीमरके डरनेसे पिशाच हँसा और कहा धैर्य्यरख कि मैं अपनी उसी प्रतिज्ञा पर हूं अब तू अपना जाल ले मेरे पीछे चला आ फिर दोनों नगर के अन्दर से होकर एकपहाड़की चोटी पर चढ़गये और वहांसे उतर एक बड़े लम्बे चौड़े मकान में गये जिसमें उनको एकतालाब जिसके चारोंओर चार टीलेथे देखपड़ा जब उस तालाब के तटपर पहुँचे पिशाच ने धीमर से कहा कि इस तालाब में जालडाल मछलियां पकड़ वह मछुआ बहुत से मत्स्य उसमें देख प्रसन्नहुआ कि बहुतसी मछलियां पकडूंगा और उन मछलियों को रंग बरंगी देख आश्चर्य्यित हुआ और अपना जाल उसमें डाल खींचा तो उसमें से केवल चार मछलियां चाररङ्ग की श्वेत, लाल, पीली और काली आईं पिशाच ने कहा कि इनको तू बादशाह के पास लेजा वह तुझे इतना द्रव्य देवेगा कि तुझे जन्मभर इतना न मिलाहोगा इस तालाब में केवल एकबेर जाल डालना इसके विपरीत न करना नहीं तो दण्ड पावेगा इतनी बात उस पिशाच ने उसे बुझा पृथ्वी में ठोकर मारी धरती फटगई और आप उसमें समागया फिर वह पृथ्वी बराबर होगई धीमर मछलियां बादशाह के निकट लेगया इतना कह शहरज़ादने शहरयार से कहा कि मैं कुछ वर्णन नहीं करसक्ती कि वह उन मछलियों

को देखके कितना प्रसन्नहुआ मन्त्रीसे कहा कि इन मछलियोंको लेजा उस रसोइनको जिसे ग्रीक बादशाहने मेरेलिये सौगात समझकर भेजाथा जाकरदे मैं जानताहूं कि वो इनको अच्छेप्रकार से बनावेगी मन्त्री ने चारों मछलियां लेजाकर उस चेरी को दीं और कहा कि इनको अच्छेप्रकार से तय्यार बादशाह ने तुमको वास्ते तैयार करनेके आज्ञादीहै जब मन्त्री उन मछलियोंको देकर बादशाह के निकटगया तब तो बादशाहने उससे चारसौ ४०० मोहरैं उस धीमर को पारितोषिक दिलवाईं धीमर उन अशरफियों को पाकर इतना प्रसन्नहुआ कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता फिर शहरज़ाद ने शहरयार से कहा अब उस रसोईदारिन का हाल सुनिये कि उसका क्या हाल हुआ कि जिसके कारण वह महाब्याकुलहुई जिससमय उसने उन मछलियों को काट और साफकरके गर्म तैल में भूननेके लिये छोड़ा और एकओरसे वह मछलियां पकके लाल होगईं तो ज्योंहीं दूसरी ओर उलटा त्योंहीं एक अद्भुत बात देखपड़ी तत्काल पाकागार की दीवार फटगई उसमें से एक स्त्री अतिरूपवती और बड़े टीमटाम और तमक से निकल आई और वस्त्र आभूषणादिक से बहुत सजीहुई थी मानों मिश्रदेशहीसे आई थी और कानमें बाले और गलेमें बड़े २ मोतियों की माला और सोनहरे बाजूबन्द जिसमें लाल जड़ेहुयेथे बिशेष इसके नानाभांतिके बहुमोल गहना पहनेहुये एक उत्तमछड़ी हाथमें लेकर उस पात्रके समीप कि जिसमें मछलियां तलीजाती थीं आयखड़ी हुई और एकमछली को छड़ीसे मारबोली हे मछली! हे मछली! तू अपने प्रण पर स्थिर है वह कुछ न बोली उस स्त्रीने फिर उसबात को दुहरा के कहा तब वह चारों मछलियां उठकर एकहीबार बोलीं कि सत्य है जो तुम हमें मानोगी तो हम तुम्हें मानैंगे जो तुम अपनाऋण दो तो हम अपना ऋणदेंगे यह कहतेही उस स्त्रीने उसपात्र को कि जिसमें मछलियां तलीजातीथीं उलटदिया और आप उसफटीहुई दीवारमें चलीगई फिर वो दीवार वैसीकी वैसीही होगई रसोईदारिन इस अद्भुत दशाको देख मूर्च्छित होगई जब सुधि सम्हाली तो

अत्यन्त आश्चर्य्यवान् हुई और उन मछलियों के उठाने को जो चूल्हेकी गर्मराखपर गिरीथीं गई तो उन्हें जलेहुये कोयलेके समान कालापाया व्याकुलहोकर रुदनकरनेलगी और सोचनेलगी यदि यह बात जो मैंने अपने नेत्रोंसेदेखीहै बादशाहसेकहूं तो उसे बिश्वास न आवैगा इसीचिन्तामेंथी कि मन्त्रीने आकर उससे पूंछा कि वहमछलियां पकचुकीं रसोईदारिनने उसहालको मन्त्रीसे वर्णनकिया मन्त्री यह सुनकर अतिअचम्भितहुआ और उस समाचारको बादशाहसे न कहकर कोई दूसरीबात बनाकर उससेकही और शीघ्रही उस धीमर को बुलवाया जब वह आया उससे कहा कि तू शीघ्रही उसी भांतिकी चारमछलियां कि जैसी पहिले लायाथा लेआ धीमर ने वह बार्त्ता किजो पिशाचसे हुईथी न कह दूसरी बातकही कि आज वैसी मछलियां नहीं लासक्ता कल अवश्य लाऊंगा दूसरेदिन धीमर उसी तालाबपरगया और जालडालकर वही चाररंग की मछलियां कि जैसी पहिले दिन जाल में आईथीं पकड़ीं और शीघ्रही मन्त्री के सन्मुख लेआया मंत्री उनको पाकागार में लेगया किवाड़को भीतर से बन्द करलिया और रसोईदारिन को आज्ञादी कि मेरे सन्मुख इनको पका उसने मछलियों को साफ़कर पहिले दिवस के सदृश तैल में डाला फिर उसीप्रकार उलटती समय दीवार वहांकी तड़क गई और वही स्त्री छड़ी हाथमें लियेहुये दीवार से प्रकट हुई और उसी मछलीतवेके निकटआकर एकमछलीको छूकर वही बातकही कि जो पहिलेकहीथी फिर उन सब मछलियोंने अपने शिरोंको उठा और पूंछकेबल खड़ीहोकर वही उत्तरदिया फिर उस स्त्रीने उसीपात्र को उलट वह मछलियां फेंकदीं और आप उसी फटीहुई दीवारमें गुप्तहोगई मंत्री इस सारे समाचार को अपने नेत्रोंसे देख चित्त में बिचारा यह तो अतिअद्भुत चरित्रहै और इसे बादशाहसे अवश्य कहनाचाहिये तदनन्तर बादशाहके निकटजाय-इसबातको ज्योंका त्योंही कहसुनाया बादशाहसुन अतिआश्चर्यित हुआ उसने इस बिचित्र चरित्रको निजनयनों से देखनाचाहा और धीमरको बुलवाकर कहा कि हे मित्र! वैसेही चार रंगकी मछलियां फिरभीलासक्ते

हो धीमर ने बिनयकी कि मैं तीनदिनके पश्चात् लासक्ताहूं तीन दिनकेपीछे धीमर मछलियां पकड़ बादशाहके सन्मुखलेगया बादशाह उनको देख अतिआनन्दित हुआ और चारसौ अशरफियां उसी धीमरको अपनेकोषसे दिलवादीं और एकान्तस्थान में जाय सबसामग्री पकानेकी मँगवाय मंत्रीको आज्ञाकी कि तू मेरेसन्मुख इन मछलियोंको भून मंत्रीने किवाड़ उस मकानके बन्दकर आपही उन मछलियोंको पकाना आरम्भकिया जब तलनेके पात्रमें उन मछलियोंको डाला और वह एक ओरसे लालहोगईं उसने उनको दूसरी ओरपलटा पलटतेही दीवार उस एकांतस्थलकी फटगई और उस में से उस सुन्दरी की जगह एक हब्शी सेवकों के समान और हरी भरी छड़ी लेकर उस दीवारसे निकला और उस पात्रके पास कि जिसमें मछलियां तलीजातीथीं उसी छड़ीसे छूकर बड़ेभयवान्शब्द से कहा हे मछलियो! २ तुम अपने बचनपर स्थिरहो उन मछलियोंने अपने शिरोंको उठाकर कहा कि हम तो उसी बातपरहैं इतनी बात कहतेही उस हब्शीने उस पात्रको उलट मछलियांफेंकदीं और नष्टकरदीं और आप उसी फटीदीवार में जाय गुप्तहुआ बादशाह ने यह समाचारदेख मंत्रीसे कहा कि यह अपूर्वहाल जो मैंने अपने नेत्रों से देखा बिनाभेदके नहीं है और मछलियांभी कुछ चिह्नजान पड़ती हैं मैं चाहताहूं कि इस भेदको बिदितकरूं फिर उस धीमरको बुलवाकर पूँछा कि उन मछलियों का तो मैंने अद्भुत चरित्र देखा मुझे बता तू यह रंगीन मछलियां कहां से लाया था उसने उत्तर दिया मैं उनको उस तालाब से जो चारोंओर टेकड़ों से घिरा है पकड़ लाया था बादशाह ने उस मन्त्री से पूँछा कि तूने वह तालाब देखा है मंत्री ने कहा कि मैंने तो सुना भी नहीं यद्यपि मैं पहाड़के चारोंओर साठबर्ष से शिकारखेलने को जायाकरताहूं परन्तु मैंने वहां कोई भी तालाब नहींदेखा फिर बादशाहने धीमरसे पूंछा कि वह तालाब यहांसे कितनी दूरपरहै उसने उत्तरदिया कि यहांसे तीनघड़ीके रास्तेपरहै बादशाहने यह बातसुन उसीसमय कि थोड़ा दिन शेषरहगयाथा अपने सभासदोंको आज्ञादी कि शीघ्र तैयार

हो तदनन्तर वह सवारहो धीमरके पीछे होलिया और उन्हीं पहाड़ों पर चढ़गया जब दूसरीओर उस पहाड़के उतरा तो वहां एक बहुत बड़ा बन दृष्टिमें पड़ा कि कभी उसको किसीने न देखाथा फिर बादशाह अपनीसेना और सभासदों सहित दूसरीओर उस बनकेजाय एक तालाब जिसमें चारोंओर चारटेकड़े कि जैसा धीमरने कहा था देखा और जल उसका ऐसा निर्मलथा कि जिसमें से चाररङ्गकी मछलियां उसी प्रकारकी कि जैसी धीमर बादशाहके निकटलेगयाथा बहुतसी देखीं बादशाह उसी तालाब के तटपर उतरा और उन मछलियोंको देख अतिबिस्मितहुआ और अपने सभासदों औरसरदारों से पूँछा तुमने औरभी कभी यह तालाब देखाथा उन सबोंने विनय की कि हमने तो कभी भी इस तालाबको नहीं देखा और न सुना बादशाहने कहा कि जबतक मैं इस तालाब और चाररङ्ग की मछलियों का वृत्तांत अच्छेप्रकार से न जानूंगा यहां से न जाऊंगा यह कह आज्ञाकी कि सब मनुष्य इस तालाब के चारोंओर उतरें सो डेरा उस तालाब के तटपर खड़ा कियागया जब सायंकाल हुआ बादशाह अपने डेरे में आया और मन्त्रीको आज्ञाकी कि मैं इस विषय में अतिबिस्मित हूं कि एकही बेर यह तालाब किस प्रकार देखपड़ा और उस हब्शी का मेरे एकान्त स्थल में आना और मछलियोंका बोलना किस वास्ते था अतिआश्चर्य की बात है चित्त मेरा इसबातसे अतिव्याकुल है इसलिये मैंने यह सोचाहै कि अपनी सेनाको छोड़ अकेलाजाऊं और तू डेरों में रह मेरेजाने को किसी से न कहना भोर होतेही जब सब सभासद और दरबारी मेरी सभा में आवे तू उनसे कहियो कि बादशाह कुछ रोगी हैं यह कह उन सबको बिदा करदीजियो और जबतक मैं इस स्थानपर लौटे न आऊं तू यहीं ठहरारहियो यहां रह मेरेकहनेको कीजियो मन्त्री ने बादशाहको बहुत समझाया कि इस विषय में अत्यन्त भयहै क्या आश्चर्य्य है कि श्रम के पश्चात्भी यह भेद आप को विदित न हो क्योंकि इतने श्रम और भयमें पड़तेहो परन्तु बादशाहने कुछ उसकी बात न मानी और राजसीवस्त्र उतार शिकार के बसन पहन खड्ग हाथ में ले रातको ऐसे

समयमें कि सम्पूर्ण सेनाके मनुष्य बेसुधसोरहेथे डेरेसे निकल एक पहाड़की ओर चला और अत्यन्त सुगमता से उसपर चढ़ दूसरी ओर उतरगया और एकओर जिधर एकबड़ावन कि जिसका वारा-पार न था चला इतनेमें भोरहुआ सूर्यके प्रकाशमें उसने दूरसे एक घर अतिउत्तम और बहुत बड़ा देखा बहुत प्रसन्न हुआ कि वहां के जानेसे इस बातका भेद अवश्य मिलेगा जब उसके निकटपहुँचा तो उसे बड़ाभारी राजमन्दिरके समान अतिबिशाल काले पत्थर से बनाहुआ पाया और नीचे ऊपरतक उसके लोहे के पत्तर अति उत्तम और साफ़ ऐसे सिकल कियेहुये जड़ेथे कि दर्पणके समान चमकतेथे उसे देख बादशाह को कुछ धैर्य्यहुआ कि यहां से मेरी अभिलाषा अवश्य सिद्धहोगी फिर बहुत बेरतक देखा किया फिर उस गढ़के पासजाय खड़ाहुआ यद्यपि उसे विदितथा कि उस गृह का दरवाज़ा अन्दरसे खुलाहुआ है परन्तु फिरभी उसने ताली बजाई और बहुत बेरतक राह देखतारहा कि कोई ताली सुनकर आवेगा जब कोई भी बाहर न आया तो उसने बिचारकिया कि किसी ने न सुनाहोगा फिर उसने किवाड़को बलसे खटखटाया तौभी किसी ने उत्तर न दिया अतिविस्मित और आश्चर्य में हुआ चित्त में बि-चारा कि बड़ा पश्चात्ताप है कि ऐसा उत्तम भवन बनाहुआ निर्जन रहे इस में तो एक भी जीव नहीं जो बाहरआय मुझे उत्तरदेवै और उससे कुछ इस स्थानका समाचार विदितहो अबतू कबतक ठहरा रहेगा बिना सोचबिचार चल जो कोई तेरेसन्मुखआवे अपने को ब-चाना फिर वह उसमन्दिरके बीच चलागया और ड्योढ़ीमें पहुँचबड़े शब्दसे कहा कि इसके भीतर कोई मनुष्य है कि अतिथिको रहने के वास्ते कोई स्थानदे उसके उत्तर में कोई शब्द न सुनपड़ा अधिक आश्चर्यित हुआ ड्योढ़ी के अन्दर जादेखा तो बड़ाभारी गृह है परन्तु उजाड़ और निर्जनहै फिर वह बड़े चौगानको लांघकर दाला-नमें गया जिसमें रेशमी क़ालीन बिछाहुआ था और चारोंओर से वह मकान कालेवस्त्र से मढ़ाहुआ था और दरवाज़ोंके परदे जड़ाऊ मखमल के कि जिसमें सुनहरी और रुपहरी बूटे कढ़ेहुये लटकरहे थे

और उसकी बारहदरी में एककुण्डथा जिसके चारोंकोनोंमें चार शेर सुनहले बनेहुयेथे और उनके मुख से फुहारे छूटते थे जब उनका जल संगमरमरके फरशपर गिरता था तो सहस्रोंटुकड़े हीरे के और असंख्य मणिमाणिक दृष्टि पड़ते थे और उस कुण्ड के बीचमें एक फव्वारह इतनाऊँचा उठताथा कि बारहदरी के छततक पहुंचताथा और उसमें कुछ अरबी अक्षरों में खुदाहुआथा और उस स्वच्छ भवन में तीन उत्तमबाग़ कि जिसमें नानप्रकार के उत्तमफल और सुगंधितपुष्प और अनेकउत्तमबस्तु अपने उचित २ स्थानोंपर रक्खेहुयेथे कि जिससे वह बाग़ अत्यन्त शोभायमान और चित्तके आनन्द देने वाला विदित होतांथा और नानाप्रकारके पक्षी वृक्षोंपर प्रियबाणी बोलरहेथे और उन्हीं में रात्रिदिन रहतेथे क्योंकि उन वृक्षोंपर चारों ओर जालपड़ेहुये थे कि जिससे कोई भी पक्षी बाहर न जा सक्ताथा बादशाह एक मकान से दूसरे में जाता और सैरकरता और हरएक उत्तमबस्तुको देखकर प्रसन्नहोता इतना उन मकानों में फिरा कि थकितहुआ तदनन्तर एक मकानमें बैठ बाग़का तमाशा देखनेलगा दैवयोग से एक दुःखित शब्द सुनपड़ा कई बेर उसने ध्यानधर सुना कि कोई मनुष्य अति दुःखसे अपनी व्यथाका हाल कह रहा है और अपने बुरे भाग्यपर धिक्कार देरहा है बादशाह ने उस के क्लेशका वृत्तान्तसुन उस मकान का परदा उठाया और देखा कि एकजवान रूपवान् बादशाही वस्त्र पहिनेहुये एकऊंची चीज़पर जो सिंहासन के समान विदित होती है बैठाहुआ अतिविलाप करताहै बादशाहने उसके निकटजाकर प्रणाम किया उसने कहा मुझे क्षमा कीजिये कि मैंने उठके तुम्हारा आगतस्वागत न किया मैं लाचार हूं तुम कुछ बुरा न मानना बादशाहनेकहा कि मैं तुम्हारे इसशीलसे अत्यन्त प्रसन्नहुआ कोई ऐसा कारण होगा कि आप नहीं उठसके परन्तु तुम्हारे क्लेशका हाल सुन मुझे अति दुःख हुआ मैं केवल तुम्हारी सहायता के वास्ते यहां आयाहूं अपने दुःखसे मुझे शीघ्र ही विदित कीजिये कि मैं उसका उपायकरूं मुझेविश्वास है कि तुम अपना वृत्तान्त अवश्य कहोगे पहिले तुम उस तालाबका हाल जो

यहां से समीपहै और उसमें चाररंगकी मछलियांहैं वर्णनकरो फिर इस मन्दिरका वृत्तान्त कि किसने बनाया है और तुम इसहाल से अकेले इसस्थानपर क्यों हो वह यहबात सुन रोया और कहने लगा कि अपने वृत्तान्तको क्या वर्णन करूं अपना वस्त्र ऊपर उठाया बादशाहने देखा कि वह शिर से नाभितक आदमी है और कमरसे चरणतक कालेपत्थरका बनाहुआहै यह देख अतिबिस्मित हुआ और उस मनुष्य से कहा कि मैं तो यहां की बहुतसी वस्तु देख चिन्ता करता था परन्तु तुमने मुझे यह हाल दिखलाकर अति बिस्मित और विह्वल किया परमेश्वर के वास्ते अपना वृत्तान्त शीघ्रही कहो मालूम होताहै वह रंगबरंगी मछलियां इसी वृत्तान्त से सम्बन्धित हैं आप मुझसे अवश्य कहिये कि जब कोई दुःखित मनुष्य अपने क्लेशको वर्णन करता है उससमय उसे धैर्य्य प्राप्तहोताहै उसनेकहा यद्यपि मुझे अपने वृत्तान्त कहनेकी सामर्थ्य नहीं परन्तु आपकी आज्ञानुसार कहताहूं ॥

## कालेद्वीपों के बादशाह की कहानी ॥

उस पुरुष ने अपना वृत्तान्त इसप्रकार कहना आरम्भ किया कि पितामेरा महमूदशाह कालेद्वीपों का बादशाहथा जो विख्यात चार पहाड़हैं और राजधानी उस स्थानपर थी कि जहां अब वह तालाब है अब जो मैं कहता हूं इस वृत्तांत से तुमको इन सबका हाल ब्यौरेवार विदित होजावेगा हे बादशाह! जब मेरा पिता ७० वर्षका होकर मरगया उसकी जगह मैं सिंहासनपर बैठा मैंने अपने चाचाकी पुत्री के साथ बिवाह किया वह स्त्री मुझसे बहुत प्रीति करती थी उसीप्रकार मैं भी उसे चाहता था पांचवर्षतक हम प्रीतिपूर्वक रहे इसके पश्चात् मैंने प्रीति में कुछ अन्तर पाया एक दिन भोरके भोजन के पश्चात् वह स्नान करनेगई मैं जाकर एक कमरे में लेटरहा और दो बांदियां जो उस रानी के पंखा हिलाने के वास्ते नियतथीं मेरेपास आकर एक शिरकी ओर एक पांव के निकट बैठगईं और मेरे आनन्दके हेतु पंखा करनेलगीं और मुझे सोता जान परस्पर वार्त्ता करनेलगीं और मैं भी कि जागताथा अपनेको

सोयाहुआ बनाकर उनकी बातें सुनने लगा एक ने दूसरीसे कहा कि हमारी रानी अति निर्दयी है कि ऐसे रूपवान् और कोमल बादशाह को प्यार नहीं करती दूसरी ने यहसुनकर उत्तरदिया कि तू सत्यकहती है नहीं जान पड़ता कि रानी इसे अकेलाछोड़ रात्रि को कहांजाती है और इसको यहबात मालूम नहीं पहिलीचेरी ने कहा इस गरीबको उसके जानेकाहाल किसप्रकार विदित हो रानी तो प्रतिरात्रि उसे शर्बत में नशा मिलाकर पिलातीहै उसके नशेमें वह ऐसा बेसुरत होजाताहै कि उसे कुछभी सुधिनहीं रहती और वह यह अवकाश पा जहां चाहती है चली जाती है और भोर को बादशाहको कोई सुगन्धित वस्तु सुंघा चैतन्य करती है हे प्रिय-मित्र! मुझे यहबात सुन इतना खेदहुआ जिस का वर्णननहीं करसक्ता उससमय तो मैंने अपने क्रोधको थांभा और इस उपाय से उठा कि मानों सचमुच सोताही था फिर वह रानी स्नानकरके आई और रात्रिको भोजनकर मैंने शयन करने की इच्छाकी वह रानी प्याला कि सदैव ला पिलातीथी मेरे पिलानेको लाई मैंने उसे उसके हाथ से ले और उसकी दृष्टि बचा खिड़की से पृथ्वीपर फेंक दिया और खाली प्याला उसकेहाथ दिया कि वह जानले कि मैंने वह पी-लिया तदनन्तर हम दोनों शय्यापर सोगये रानी मुझे सोताजान शय्यापरसे उठी उसने एकमंत्र ऊंचे शब्द से पढ़ा और मेरे ओर मुखकर कहा कि ऐसा बेसुध सो कि कभी न जागे फिर शीघ्रही वस्त्र पहिन उसकमरे से बाहर आई उसके बाहर निकलतेही मैं भी उठा और तत्कालही वस्त्रपहिन खड्गहाथमें ले पीछे उसकेचला इतना पास और मिलाहुआ उसके साथ जाताथा कि उसके पैरोंका शब्द मुझे सुनपड़ता था और मैं उसके पैरोंके चिह्नपर पैर रखताहुआ बड़े बिचारसे उसके पीछे दबेपैरों जाता था कि उसे मेरे चलने का शब्द न सुनपड़े वह कई दरवाज़ों से कि जिनमें ताला दियाहुआ था होकर निकली और वह दरवाज़े उसकी जादूसे आपही आप खुलते जाते थे जब वह सबसे पिछले दरवाज़ेपर कि उसओर बाग़ था और उसमेंसे होकर अन्दरकोचली मैं उसदरवाज़े में लगके खड़ा

होरहा कि मुझे वह देख न ले और वहांसे उसीको देखतारहा वह एकपुष्पवाटिका से आगेबढ़ी जाते २ एकछोटेसे बनमें कि जिसका रास्ता चारोंओरसे घिराहुआ और सघनवृक्षों से बन्दथा चलीगई मैं भी और रास्ते से वहांपहुंचकर एकझाड़ीके अन्दर छिपकरखड़ा रहा और वहांसे उसकोदेखा कि एक पुरुषके साथ टहलतीहुई वार्त्ता करतीजातीहै मैंने ध्यानधर उन बातोंको सुना कि कहतीथी कि मैं तुमको प्राणसे अधिक प्यार करतीहूं और रात्रिदिन तुमपर मोहित रहतीहूं परन्तु तुम मुझे सदैव बुराभलाकहते और धिक्कारदियाकरते हो इसका कारण मुझे जाननहीं पड़ता यदि तुमको मेरीपरीक्षालेनी स्वीकारहो कि तुम्हारी प्रीति मैं कितनी रखती हूं तो अभी उद्यत हूं और तुमको मेरी सामर्थ्य भी अच्छेप्रकार विदित है कि मैं क्या कामकरसक्तीहूं यदि तुम्हारी इच्छाहो तो मैं सूर्य्योदयके पहिले इस बड़े और सुन्दर नगर और उत्तम २ गृहों को मैदान करडालूं कि जिसमें भेड़िये और उलूक रहने लगें और पत्थरों को कि जिनसे दीवारें अतिदृढ़ बनी हुई हैं कोहकाफ पहाड़के ओर फेंकदूं और बिनाशकरडालूं केवल तुम्हारी आज्ञा चाहतीहूं रानी यह बात कहतीहुई अपने प्यारे के हाथ में हाथ दियेहुये टहलती थी उसझाड़ी के निकट कि जिसमें मैं छिपाहुआ खड़ाथा आई और वह वहांसे न लौटे और जब उसका प्यारा मेरे निकट से होके निकला मैंने खड्ग मियानसे निकाल ऐसा उसके गर्दनपर मारा कि वह लगतेही लड़खड़ाय गिरपड़ा और मुझे विश्वासहुआ कि वह कालबश हुआ और रानी जो मेरे चचाकी पुत्रीथी इसी वास्ते मैंने उसेछोड़दिया और तत्काल वहांसे दबेपैरों लौटा कि रानीको यहबात न मालूमहुई यदि उसके प्यारेको बहुत भारीघाव लगाथा परन्तु इसरानीने मंत्रविद्याकी सामर्थ्यसे सम्हाला फिरभी वह खड्ग लगनेके कारण ऐसा होगया था कि न तो जीतों में गिनाजाता था और न मृतकों में मैंने लौटती समय रानी को सुना कि अपने प्यारेके घायल होनेसे रोती और पीटतीहै मैंने उसके रुदनकरनेपर कुछ विचार न कर उसे अकेला वहीं छोड़ निजगृह में आया और कमरे में शय्यापर जा लेटा

उसके मारने से अत्यन्त धैर्य हुआ और मैं सोरहा और निश्चिन्त हो भोरहोतेही रानीको अपने समीप सोतादेखा परन्तु अच्छेप्रकार जान न पड़ा कि वह सोती न थी बहाना कियेहुयेथी मैं उसे इसीदशा में छोड़के उठखड़ाहुआ और राजसीवस्त्र पहिनलिये फिर राजसभामें गया जब दरबारसे निजमन्दिर में आया रानीको गमीके काले बस्त्र पहिने देखा कि उसने शिरकेबाल नोच खसोट मुझसे कहा कि हे पति! मुझे शोककी दशामें देखके अप्रसन्न न होना मैंने तीन बुरे समाचार बराबर सुने हैं इसीकारण मेरी यह दशा है मैंने पूछा हे प्रिया! वह तीन कौनसे बुरे समाचारहैं उसने कहा एक तो यह कि मेरी प्यारीमाता मरगई दूसरा यह कि मेरापिता युद्धमें मारागया तीसरा यह कि मेरा भाई ऊंचेपर से गिर कालवश हुआ मैंने यह सब सुन कुछ शोक न किया किसवास्ते कि मैं सब भेद उसका जानंताथा उसके वर्णनसे मुझे सूचितहुआ कि उसे उसके यारके मेरे हांथ से मारेजाने का हाल बिदित नहीं उससे कहा यह बात कुछ अप्रसन्नताकी नहीं, किन्तु जो तुम ऐसे अशुभ समाचार को सुन शोक न करती तो निस्सन्देह मैं बिलगमानता तदनन्तर वह अपने कमरे में जाकर रोने पीटनेलगी और एक वर्षतक इसीप्रकार रात्रि दिन अपने प्यारे के दुःख में रोती पीटतीरही इसके पश्चात् उसने मुझसे कहा कि मैं एक मक़बरा बनवाकर उसमें रहा करूंगी मैंने उसको इस बिषयमें भी न रोका फिर उसने एक बड़ाभारी मन्दिर गुम्मजदार बनवाया जो यहां से दिखाई देताहै और उसका नाम शोकागार रक्खा जब वह गृह बनचुका तब वह अपने प्यारे सहित उस में आकर रहनेलगी और कोई ऐसी औषध अपने विचार से उसे खिलाती कि इतना घायलहोने परभी वह न मरा और वह प्रति दिवस एक नियत समय में उस शोकागार में अवश्य औषध खिलाने जाती परन्तु वह इतने मन्त्र और उपाय करनेपर भी न खड़ा होसक्ताथा और न उसमें चलनेकी सामर्थ्यथी और बातेंभी न करसक्ता केवल देखाकरताथा रानीको उसके देखने से धैर्यहोताथा और उससे प्यार और प्रीति की बातेंकर अपने चित्तको धैर्यदिया

करती। दिनमें दोबेर उसके समीपजाती और बहुतदेरतक वहांरहती थी यदि रानी का यह वृत्तान्त मुझे अच्छेप्रकार विदितथा परन्तु मैं अनजान बनारहा और प्रति कार्य में जानबूझ अनजान रहता एकदिन उस शोकागार में जाय ऐसे स्थानपर छिपकरबैठा कि जहां सबकुछ मैंनेसुना और रानीने मुझे न देखा वह अपने प्यारेसेकहती थी कि बड़ा अनर्थ है कि मैं तुझे ऐसी दुःखितदशामें देखूं और तुझे देख मुझेइतना क्लेश होताहै कि तेरेसे मेरी अधिक बुरीदशा होजाती है हे मेरेप्राण ! हे मेरेप्यारे ! मैं प्रतिदिन तेरेनिकट आकर घड़ियों वार्त्ता करतीहूं तूनेतो कभीभी मेरीएकबातका उत्तर न दिया इसीचिन्तामें मरतीहूं कि कबतक चुपरहोगे यदिमुझसे एकभी बातकरो तो मुझे अत्यन्त धैर्यहो जबतकमैं तेरेनिकट बैठीरहतीहूं मेरेचित्तमें धैर्य रहताहै और केवल तेरेदेखनेहीसे मैं प्रसन्नरहतीहूं इसीप्रकार अपने प्यारेसे कहती और रुदन करतीथी मैं इतनी विह्वलता और व्याकुलता देख धैर्य न रखसका जब वहांसे अपने पहिले गृह में कि जहां मैं रहाकरताथा वह आई मैंने कहा कि हे सुन्दरी ! तुमने अति चिन्ता और शोककिया तुमको उचितहै कि अब तुम उसे त्यागदो सदैव इस शोक में रहना तुमको उचित नहीं रानी ने कहा कि हे स्वामी ! तुम इस विषयमें कुछ न बोलो मुझे इसीदशा में रहने दो मेरे चित्त से अभीतक शोक नहीं गया और न कुछ कमहुआ मैंने कितनाही उसे समझाया परन्तु न माना और मेरा समझाना उसके शोक के अधिक करनेवाला हुआ फिर मैंने उसे कुछ न कहा और उसको उसी दशामें छोड़दिया यहांतक कि उसे इसी दशामें दो बर्ष व्यतीतहुये फिर मैं दूसरी बेर उसी शोकागार में गया और छिपके ऐसे स्थानमें बैठा कि जहांसेउसकी सब बातें सुनाईदें रानी अपने प्यारेके निकट बैठीहुई कहती थी कि अब तीसराबर्ष आरंभ हुआ तूने मुझसे एकबात भी न की और रुदन करने चिल्लाने और हाहाकरने और अधीरता तुझे थोड़ा भी बिचार नहीं तू अबलता व असमर्थता के कारण वा मुझे तुच्छ समझ मुझसे नहीं बोलता हे प्यारे ! बड़ा पश्चात्ताप है कि मेरी प्रीति तेरे चित्त में

किंचित् प्रवेश नहीं करती सदैव अपने नेत्रोंसे कि मैं जिससे निहाल होतीहूं और मेरे जीवनका कारणहै बन्दकिये रहताहै परमेश्वर के वास्ते इनको खोल मेरी ओर देख मैं रानीकी यहबातें सुन अति अप्रसन्नहुआ और क्रोधमें आकर उसस्थानसे बाहर निकलआया और पुकार के गुम्मजकी ओर कहाकि हे गुम्मज! तू किस वास्ते इस स्त्री सहित देवको जो मनुष्यके वेषमें है निगलनहींजाता इतना कहतेही रानी कि उस अपने हब्शी प्यारे के निकट बैठी थी वहां से क्रोध में बावरे के समान झपटकर मेरे निकटआई और कहने लगी कि हे दुष्ट! भाग्यहीन तूही मेरे इसदुःख और शोकका कारण है और तेरेही अन्यायसे मेरे प्यारेकी यह दशाहुई कि जिससे वह अबतक घायलहै मैंनेकहा हां मैंने इसदेवको माराहै और वह इसी दण्डकेयोग्यथा और तूभी इसीदण्डके योग्यहै किसवास्ते कि तूनेही मेरी प्रतिष्ठा भंगकी यह कह मैंने खड्ग निकाल चाहा कि उसे बध करूं परन्तु उसकी जादूकीसामर्थ्य से मेराहाथ ऐसाबन्दहोगयाकि मैं खड्ग न चलासका उसने तत्कालही कुछमंत्रपढ़ना आरम्भकिया जिसको मैं कुछभी न समझताथा जब वह मंत्रपढ़चुकी तब उसने यहकहा कि मैं मंत्रके बलसे कहतीहूं कि तू नीचेके धड़से पत्थरहोजा और ऊपर के धड़ से मनुष्य बनारह उसके इतना कहतेही जैसा कि देखतेहो बनगया तब से न तो मैं जीतोंमें हूं न मृतकों में फिर उसने मुझे उस शोकागार से उठाय इस गृहमें लारक्खा और मेरे नगरको झील और तालाब बनादिया और निर्जन करदिया कि जैसा तुमने देखा सब मेरे दरबारियों और सभासदों और प्रजाको चाररंगकी मछलियांबना उस तालाबमें कैदकररक्खाहै सफेदमछलियां मुसल्मान हैं लालरंगकी अग्निपूजक काली अंगरेज पीली यहूदी और चार बड़े द्वीप कि मेरे राजधानीसे सम्बन्धितथे उनको चार पहाड़ियां बना तालाब के चारों ओर रक्खा और मुझे आधे धड़से पत्थरका बनारक्खा है और सम्पूर्ण देश निर्जन और उजाड़ करदिया फिरभी उसकाक्रोध और अन्याय कमनहीं हुआ यहां प्रति दिवस आकर सौ कोड़े मेरेकन्धों और पीठपर मारतीहै कि हरएक

कोड़े की चोटसे मेरे शरीरसे रुधिर निकलता है फिर मारपीटकर एक मोटीकाली बकरी के बालोंकी बुनीहुई कमरी मेरेऊपरडाल और उस के ऊपर बहुतभारी सुनहला बस्त्र पहनाती है वहभी मेरीप्रतिष्ठा के हेतु नहीं बिशेषकर मेरी अप्रतिष्ठा के निमित्त है और कहती है कि यहदुष्ट कि बहुत बड़ा कालेद्वीपोंका बादशाह है अपने को इसे मार पीट और अनादर से बचा नहींसक्ता इतनाकह शहरजाद ने कहा फिर वह अपने नेत्रोंको ऊपर की ओर कर परमेश्वर से इसप्रकार से प्रार्थना करनेलगा कि हे सामर्थ्यवान् परमेश्वर ! और हे सबके उत्पन्न करनेवाले ! तेरेही न्यायसे आशा रखताहूं यदि तेरी इच्छा और प्रसन्नता इसी में है कि मुझपर इसीप्रकार अन्याय और अनर्थ हुआ करें तो मैं भी इसपर राज़ी हूं और धन्यवाद करता हूं मुझे तेरेही पूर्णकृपापर बिश्वास है कि एक न एकदिन अवश्यही मुझे इसदुःखसे छुड़ावेगा जब उस बादशाह ने यह अद्भुत वृत्तांत सुना तो अत्यन्त चिन्ता करनेलगा और चाहा कि इस बादशाह का कि जिसपर अन्याय हुआ है रानी से बदलाले तब पूछा कि वह निर्लज्ज जादूगरनी कहां रहती है और वह अभागा प्यारा उसका कहां रहताहै कि जिसकेपास वह प्रतिदिन जाया करती है बादशाह ने कहा कि मैंने पहिले आपसे नहीं कहा कि वह शोकागारमें जिसे गुम्मज़ के रूप बनाया है पड़ा रहता है और वह शोकागार इसी भवन से सम्बन्ध रखता है कि उसकी राहभी इसी मकानमें आई है और उस जादूगरनी के रहनेका स्थान मुझे बिदित नहीं परन्तु वह भोरके समय प्रतिदिवस मेरे दण्ड देने के उपरान्त अपने प्यारे के समीप जाय किसीप्रकार का अरक़ पिलाती है जिससे वह अबतक जीतारहा बादशाहनेकहा कि कोई मनुष्य तुमसे अधिकदयाके योग्य न होगा और यह अद्भुत वृत्तांत इतिहास और समाचारकी तरह लिखाजावे फिर उस बादशाहने उस दुःखित बादशाहको अपनी इच्छा जतलाकर धैर्य दिया और रात्रिहोजाने के हेतु वहीं सोरहा वह बेचारा बादशाह उसीप्रकार बैठा जगा किया कि वह जादू के असरसे लेटने और सोनेके योग्य न था फिर दूसरेदिन वह बादशाह

छिपकर उस शोकागारमें गया कि जहां उत्तम सैकड़ों सुनहरेदीपक जलते थे और उस गृहको सजाहुआ देखकर अतिआश्चर्य्यित हुआ फिर जहां वह हब्शी पड़ाहुआथा गया और एकहाथ खांडे का ऐसामारा कि वह हब्शी अर्द्धमृतक मरगया और लोथ उसकी खैंचकर कुयें में डालदी और आप उसजगहपर जहां वह हब्शी पड़ारहताथा खड्गले लेटरहा इस बिचार से कि समयपाय उस जादूगरनीको बध करडाले जब वह जादूगरनी उस मकानमें आई पहले वह वहींगई जहां कालेद्वीपोंका बादशाहथा और उस बेचारेको बहुतही मारना आरम्भ किया यहांतक कि उसके चिल्लाने और रुदनकरनेसे साराभकान कँपनेलगा वह बेचारा कितनाही उसे सौगन्ददे कहताथा कि मुझपर दयाकर परन्तु वह दुष्टा और अभागी बिना सौ चाबुक मारे न रही फिर उसपर कम्मलडाल सुनहरा बस्त्र पहनाय फिर शोकागार में गई और अपनीप्रीति और बिरह का हाल बर्णन करना आरम्भ किया और उस मकानके समीप जिसमें उसका प्यारा पड़ारहताथा जाकर कहनेलगी क्या अनर्थ है कि तूने अपनी अप्रीतिसे मेरा चैन खोदिया हे मेरे प्यारे! इतने अन्याय होनेपरभी मुझे बुरा भला कहाकरता है कि मैं अत्यन्त निर्दयीहूं जब मैं तुझे इस दशामें देखतीहूं मुझे क्रोध बहुत होता है और चाहतीहूं कि इससे अधिक तेरा बदलालूं और तेरे बैरीको इससे अधिक माराकरूं और बादशाहके आगे कि हब्शीकी जगह में था जाय कहा अब तू इस चुप और न बोलने से चाहता है कि मैं तड़पकर मरजाऊं परमेश्वर के वास्ते एकबात तो मुझसे कर कि मुझे धैर्य्यहो बादशाह ने अपनेको ऐसा बनाया कि जैसे कोई निद्रासे जगे फिर हब्शियोंके शब्दके समान उस रानीको उत्तरदिया कि सिवाय परमेश्वरके जो सर्व्वोपरिहै किसीको सामर्थ्य और बल नहीं जादूगरनी इसबातको कि जिसकी उसे आशा न थी सुनकर अत्यन्तप्रसन्न और हर्षयुक्तहुई और बोली कि हे स्वामिन्! यह तुमने जो उत्तर दिया कुछ मुझे धोखापड़ा बादशाह ने कहा कि हे दुष्ट स्त्री! क्या तू इस योग्यहै कि तेरे प्रश्नका कोई उत्तरदे रानीने कहा

कि हे मेरे प्रिय पीतम ! मुझसे ऐसा कौन अपराधहुआ जो तुम ऐसा कहतेहो उसने कहा कि तेरे भर्त्ताके चिल्लानेसे कि जिसको तू प्रतिदिन माराकरतीहै मेरा सोना और आरामकरना बन्दहोगया है मैंतो बहुतदिनोंसे अच्छा और नीरोग होगयाहोता और बार्त्ता करने कीभी सामर्थ्य अच्छेप्रकार आजाती परंतु तूने उसपर जादू कररक्खा है और उसे प्रतिदिन माराकरती है उस तेरे अन्याय से मेरा जी नहीं चाहता कि तुझसे बोलूं और तेरी बात का उत्तरदूं जादूगरनीने कहा जो तुम्हारी प्रसन्नता इसीमें है कि मैं उसे दण्ड देना छोड़दूं और उसे पहिले स्वरूप में लाऊं तो मैं अभी ऐसा करसक्ती हूं बादशाह ने कहा हां मैं यही चाहताहूं कि अभी तू जाकर उसे दुःखसे छुड़ादे कि मेरे आनन्द में उसके रोने पीटने से बिघ्न न हो रानी तत्कालही उसी शोकागार में गई और एक प्यालेमें जलभर कुछपढ़ा जिससे वह पानी उबलनेलगा फिर उस दालान में कि जहां उसका पतिथा गई और उसपर वही जलडाल कहा यदि परमेश्वर ने तेरास्वरूप ऐसाही बनायाहै और वह तुझ से अप्रसन्नहै तो तू इसीदशामें रह जो तेरा यह स्वरूप नहीं तो तू मेरे जादूसे जैसा कि पहिले था वैसाही होजा इतना कहतेही वह बादशाह अपने पहिले स्वरूप में आगया और अतिप्रसन्नता से उठखड़ाहुआ और परमेश्वर का धन्यबादकिया जादूगरनी ने उस से कहा कि इस भवनसे शीघ्रही निकलजा फिर यहां कभी न आइयो नहीं तो माराजायगा वह इसका उत्तरदियेबिना चुपके वहांसे चल दिया और किसी मकानमें जाय छिपके बैठरहा और इस अद्भुत चरित्रके देखनेकी लालसारख परमेश्वरका स्मरण करनेलगा उसे बिश्वासथा कि बादशाह सबकार्योंकोकर मेरेढूंढ़नेको अवश्य आवेगा फिर वह जादूगरनी वहांसे शोकागारमें आई और बादशाह से कि जिसको हब्शी जानतीथी कहा कि मैंने तुम्हारी आज्ञानुसार उसको अच्छा करदिया अब तुम उठो जिससे मुझको भरोसाहो बादशाहने फिर हब्शियोंके समान ऊंचेस्वरसे कहा कि यह जो तूने किया मेरेआनन्द और नीरोगहोनेकेवास्ते पूरानहीं है अभीतक तेरा

अन्यायपन दूरनहीं हुआ उसने कहा हे मेरेप्रिय हब्शी! आपका क्या प्रयोजन है बादशाहने कहा कि तू सम्पूर्ण नगरको रहनेवालों समेत कि जिसे तूने अपने जादूसे उजाड़कर रक्खा है उनको अपनी २ योनिमेंला प्रतिदिन अर्द्धरात्रि को सब मछलियां शिर निकाल हम दोनोंको शापदेती हैं इसीकारण मैं नीरोग नहीं होता शीघ्रजा और सबको उनके पहिले स्वरूप में ला जब ये कामकर आवेगी तो मैं अपना हाथ तुझकोदूंगा उससमय तू मुझे सहारादे के उठाइयो रानीने अपने प्यारेसे यहबातेंसुन अत्यन्त प्रसन्न होकर कहा बहुत अच्छा ऐसाहीकरूंगी फिर उसने तत्कालही तालाब के तटपर जाकर थोड़ाजलले मन्त्रपढ़ तालाबपर छिड़का जल छिड़कतेही वह सम्पूर्ण मछलियां अपने मुख्य स्वरूपमें आगईं और सब उसके जादू से छूटे गृह दूकानें आदमियों से पूर्ववत् बसगये उन्होंने अपनी वस्तु जहां छोड़ीथी ज्योंकीत्यों पाई बादशाह की सभा और सरदार कि जो नगरके निकट उतरेथे बहुत दूरहोगये अपने को बस्तीकेबीच देखके अत्यन्त आश्चर्य्यित हुये फिर वह जादूगरनी सबको अपने २ स्वरूप में लाकरके शीघ्रही शोकागार को गई कि इस परिश्रम के बदले अपने प्यारे से मिल हर्षको प्राप्तहो जातेही बड़ेशब्दसे कहनेलगी कि हे प्राणप्यारे! मैंने तेरी आरोग्यता और जीवन के निमित्त सबको अपने पहिले स्वरूप में करदिया अब उठो और अपना हाथ मुझको दो बादशाह ने उससे हब्शियोंकी बाणी से कहा आगे आ वह आगेगई फिर उसने कहा कि और आगे आ रानी और आगे गई फिर उस बादशाह ने एकही बेरउठ शीघ्रता से उसकी बांह पकड़ इतना अवकाश उस जादूगरनीको न लेनेदिया कि यहबचे बड़ेबलसे खांड़ामारा कि दो टुकड़े होकर गिरपड़ी फिर उसकी लोथ उसी कुयें में डालदी और कालेद्वीपों के बादशाह के ढूंढ़ने में कि वहभी उसकीराह देखताथा गया और उसे धैर्यदिया कि अब अपने शत्रुका डरमतकरो कालेद्वीपों के बादशाहने उसको धन्यबाददिया और सहस्रों आशीर्बाददिये बादशाह ने कहा क्या तुम अपने नगरको जाओगे उसने कहा हां तुमभी

हमारे साथ चलो कुछ थोड़ासा भोजनकरो फिर अपने नगर में चलेजाना कालेद्वीपों के बादशाहने कहा कि तुम अपने नगरको यहां से निकट समझतेहो उसने कहा निस्सन्देह निकट समझताहूं मैं अपनेदेशसे यहां चारपांच घड़ी के समयान्तर में आयाथा द्वीपों के बादशाह ने कहा आपका देश यहां से पूरे एक बर्ष के मार्ग्गपर है यहां इतनी देर में इसकारण आयेहोगे कि उस जादूगरनी ने मेरे देशको मन्त्र के बलसे तुम्हारे देशके निकट कर दियाथा निश्चय वह एकही बर्ष की राहपर है और हे भाई ! दूर और पासपर कुछ बात नहीं मैं आपके साथहूं तुम मेरे उपकारी हो और तुमने मेरे साथ इतना बड़ा उपकार किया है कि मैं सम्पूर्ण आयुमें भी उसका धन्यबाद न करसकूंगा वह बादशाह अपने देशको इतनी दूर सुन अतिआश्चर्य्य में हुआ और कुछ न समझसका कि क्यों इतनी दूर होगया द्वीपोंके बादशाहने कहा इस विषय में कुछ अचम्भा न समझिये बादशाह ने कहा कि यदि इन दोनों देशों में इतनी दूरी है तो आपको चलना अवश्य नहीं परन्तु मैं अपुत्रहूं इसवास्ते मैंने तुमको अपना पुत्र और युवराज नियतकिया कि पीछे मेरे सिंहासनपर बैठियो इतना परस्पर प्रणकर द्वीपों के बादशाह ने प्रवेशकी सामग्री लाय इकट्ठाकी तीनसप्ताह के पीछे अपनी सेना कोश धन ले बादशाहके साथहुआ और उनदोनों बादशाहों ने धनआदि से सौ ऊंट भर और बहुमूल्य बस्तु कि जो कालेद्वीप के बादशाह के कोशमें थी अपने साथ लिये और ५० सरदार अति बीर अपने साथ इस यात्रा के लिये नियत किये फिर बादशाह ने आगे से हरकारों को अपने देश भेज अपने चलने का समाचार कहला भेजा जब वह अपने शहर के निकट पहुँचा सम्पूर्ण नगर के सरदार और सभासद अगवानी के लिये आये और बादशाह से बिनय की कि आपके प्रताप और परमेश्वर की अनुग्रह से अबतक सारेनगर में कुशलक्षेम है और प्रजा भी आनन्द से है फिर जब नगर में पहुँचा सब नगरकेबासी उसकी अगवानीको आये और बड़े शब्दसे उसके आनेका धन्यबाद किया दूसरे दिवस सब दरबारियों को इकट्ठाकर

काले द्वीपों के बादशाह का अद्भुत वृत्तान्त विस्तारपूर्वक वर्णन किया और कहा इसीकारण मेरे आनेमें देरहुई फिर कालेद्वीपोंके बादशाह को अपना पुत्रबनाया और थोड़ेदिनों के पीछे उस को अपना युवराज कर सम्पूर्ण राज्य अपना उसके सुपुर्द कर दिया और सब सरदारों ने आकर कालेद्वीपों के बादशाहोंको भेटैं दीं और राज्य के प्रबन्ध में उद्यत रहनेलगे फिर बादशाह ने उस धीमरको जो पहले सबके उस कालेद्वीपों के बादशाहको छुड़ानेका कारणहुआ था बुलाभेजा और उसको पारितोषिकआदि से धनी बनादिया॥

## तीनयोगीरूपराजकुंवर और पांचस्त्रियोंकीकहानी॥

खलीफ़ा हारूंरशीदके राज्याधिकारमें एकमज़दूर बगदादका बासीथा वह बड़ाठठोल और वाचालथा एकदिन भोरको वह बाज़ार में अपने सम्मुख बड़ाटोकरारक्खे इस आशापर खड़ाथा कि कोई उसे भारउठानेके लिये बुलाये संयोगवश एक स्त्री परमसुन्दरी जाली का वस्त्र अपने मुखपर डालेआई और उसने उससे मुसकराय कहा अपनाटोकरा उठा और मेरेसाथचल वह मज़दूर उस स्त्रीकी मीठी मीठीबातें सुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और टोकरेको अपने शिरपर रख उसके पीछे होलिया और चित्तमें यह कहताहुआ चला आज का दिन क्याउत्तमहै कि ऐसी अच्छी स्त्रीसे कामपड़ा उसस्त्रीने आगे बढ़ एकबन्ददरवाज़े पर जाकर ताली बजाई थोड़ी देर पश्चात् एकवृद्ध लम्बी और श्वेत दाढ़ीवाले नसरानी ने आकर दरवाज़ा खोला उसस्त्रीने कुछरुपये उसके हाथमें रखदिये नसरानी ने उसका अभिप्राय समझ घरसे एकबड़ी ठिलिया उत्तम मदिराकी लादी स्त्रीने मज़दूरसे कहा कि इसेले अपने टोकरेमें रख उसने रखली फिर वहां से मज़दूरकेसाथ बाज़ारमें आई और उत्तम २ फल,सेब,नाशपातीआदि और नानाप्रकार के रङ्गके अतिसुगन्धित पुष्प, अतर, स्वादिष्ठ अ-चार, मुरब्बा, मांस और सूखाहुआ मसाला हरएक दूकान्दार से इतनी सामग्री मोललली कि मज़दूर के टोकरेमें जगह न रही मज़दूर ने कहा जो मुझे मालूमहोता कि आप इतनी बस्तुलेंगी तो मैं एकघोड़ा या ऊंट अपने साथलेआता निदान वह मज़दूर टोकरा उठाकर उसके

साथहुआ जाते २ एकबड़े मन्दिर के दरवाज़े पर कि जिसका शिरा पीलपाओं से सजाहुआथा और किवाड़े हाथीदांत से जटितथे वह दोनों पहुँचे स्त्रीने ठहरकर तालीबजाई जबतक कि दरवाज़ाखुला मज़दूर बड़े बिचारमें रहा कि यह स्त्री सौदासुलफ लेनेवाली बांदी है या घरकी मालिकहै परन्तु उसकी सजधज देखने से बांदी बिदित न होतीथी इतनेमें एकस्त्रीने आकर द्वारखोला मज़दूर उसके अनूपरूप और हावभाव को देख बिह्वलहोगया और उस बिह्वलतामें उसके शिरपर से भार गिरनेलगा वह स्त्री जो अपने साथ उसे लाईथी उसकी बेसुधिका तमाशा देखनेलगी दूसरी स्त्री ने कहा कि यह बेचारा मज़दूर भारसे दबाजाताहै घरमें शीघ्रलेजा उतरवाले तदनन्तर मज़दूर के घुसने के पीछे पहली स्त्री ने किवाड़ अन्दरसे बन्दकरालिये फिर वह दोनों स्त्रियां मज़दूर सहित एक बड़े मकान में गईं जिसके चारों ओर बरामदे पीलपाओं के बने हुये थे और उसके बीच में बड़ाभारी दालान था इस के विशेष एक ओर बैठने का उत्तमस्थान उत्तम २ बस्तु और बर्तनों से सजाहुआ था उस में एक सुन्दर सिंहासन सन्दल व ऊद की लकड़ीका बिछाथा और बिछौना अतिसुन्दरतासे कि जिसके चारों ओर उत्तम २ मणि माणिक जटितथे बिछाथा और हौज़ संगमरमरका जिसमें फव्वारे छूटरहेथे यदि मज़दूर भार उठाने के कारण थकितहोगयाथा परन्तु उत्तममकान और सामग्री बर्तन जो उचित उचित स्थानपर रक्खेहुये थे देख अतिप्रसन्न हुआ मुख्य तीसरी स्त्रीको कि उस सिंहासनपर बड़े सजधज से बैठीहुईथी देख अपना श्रम भूलगया फिर उसको बिदितहुआ कि इस तीसरी स्त्रीकानाम ज़ुबैदा है और इस घरकी स्वामिनी यही है और दूसरी स्त्रीकानाम साफ़ी और वह स्त्री कि सब सामग्री ख़रीद करलाई उसका नाम अमीना है ज़ुबैदाने कहा हे बीबियो ! इस बेचारे मज़दूर के शिरसे शीघ्रही भारउतारो कि वह दमलेकर हलकाहो उसके कहनेसे साफ़ी और अमीनाने टोकरेको थांभ भारउसके शिरसे उतारा और टोकरा बस्तुओं से ख़ाली करनेलगी ज़ुबैदाने द्रब्य कि उसकी मज़दूरी से

कहीं अधिकथा मज़दूरकोदिया उसने वह द्रव्यपाय अत्यन्तप्रसन्न हो जानेकी इच्छाकी परन्तु उन सुन्दरस्त्रियोंके देखनेसे उसकाचित्त न अघाताथा अबतक वहांसे चला न था कि अमीना ने अपने मुखसे वस्त्र उतारा मज़दूर तो केवल उसकी छबीली चाल और कोमल अङ्गपर मोहित था अब वह उसके रूप छबि अनूपको देख कर वहीं खड़ारहगया और आश्चर्य यह था कि इस गृह में तीन स्त्रियोंके सिवाय चौथा नथा परन्तु खानेपीनेकी सामग्री इतनी खरीदी थी कि ३० मनुष्यों को पूर्णहो जुबैदा उसके खड़ेरहने से समझी कि थकगयाहोगा सुस्तानेकेवास्ते ठहरगया जब वह चिरकालतक ठहरारहा उसकी ओर देखकर कहा क्या तू कुछ और चाहताहै क्या तूने मज़दूरी अपनी इच्छानुसार नहींपाई फिर उसने अमीना से कहा कि इसको कुछ औरदे बिदाकरो मज़दूरने कहा हे स्वामिनि! मैंने मज़दूरी अधिक पाईहै परन्तु कुछ बिनय किया चाहताहूं यदि तुम्हारे सन्मुख ऐसी बिनय करनी अतिढिठाई और अपराध का कारणहै आशारखताहूं कि उसे क्षमाकीजियेगा यह कहकर कहा कि किसी स्त्रीको तुम्हारेसमान रूपवान् और सुन्दर नहींपाता इससे मैं अत्यन्त आश्चर्य्यितहूं और स्त्रियोंके बीचमें पुरुषका न होना यहभी आश्चर्यहै जैसा मर्दोंमें स्त्रीका न होना इसबिषयमें मज़दूरने उत्तम२ दृष्टान्तकहे और वह दृष्टान्तभी जो बग़दाद नगर में ख्यात थे कहे अर्थात् जबतक चारमनुष्य इकट्ठे होकर भोजन न करें वह भोजन बेस्वादहै तबतक खानेवाले अघातेभी नहीं ऐसे दृष्टान्तों से उसका अभिप्राय यहथा कि उन तीन स्त्रियोंमें भोजनके समय चौथे पुरुष का होना अवश्य है जुबैदा मज़दूर की ये बातें सुन बहुत हँसी और कहा मज़दूर तू अपनी निर्बुद्धिताकी बातें अपने पास रख केवल हम तीन बहिनें हैं हम तीनों अपने कार्य्य को अच्छे प्रकार सिद्ध करलेती हैं कि कोई दूसरा मनुष्य उसे न जाने और बिचार रखती हैं कि कोई हमारा भेद न जाने मज़दूर ने कहा कि हे स्वामिनि! तुम बड़ी बुद्धिमती हो मुझे बहुत कुछ स्मरण और मालूम है परन्तु अपनी दुर्भाग्यतासे लाचारहूं कि मज़दूरी करताहूं यदि

मेराकार्य अतितुच्छ है परन्तु चैतन्यहूं और मैंने बहुतसी पुस्तकें इतिहास आदि की देखी हैं यदि आज्ञाहो तो कोई कहानी सुनाऊं बुद्धिमान् अपने भेदको चतुर से गुप्त न रक्खे क्योंकि वह भेद गुप्तरखना भलीभांति जानता है मुझसे भेद कहना इसप्रकार है कि जैसे किसी बस्तुको किसी गृह में बन्दकर दिया और उसकी कुंजी खोगई है ज़ुबैदाको मालूम हुआ कि यह मज़दूर बड़ायोग्य और समझदार और सत्संग करने के योग्य है इसको अपने साथ भोजन कराना अवश्यहै हास्यसे कहा कि तू जानता है कि हमने अपने हाथों इस भोजनको अत्यन्तश्रम और द्रव्यख़र्चकर बनाया है तू ने तो ख़र्च नहीं किया इसवास्ते हम तुझे अपने साथ खिला नहीं सक्तीं साक़ी ने भी मज़दूर से कहा यह दृष्टान्त नहीं सुना ( छूछाकन पूछामज़दूर ) वह बिचारा उत्तर उसका न दे सका और वहां से चलेजानेकी इच्छाकी अमीनाने उसकी ओरसे ज़ुबैदा और साक़ी अपनी बहिनों से कहा कि इसको यहां रहने दो यह हमको अपनी वाचालतासे बहुत प्रसन्न करेगा और हँसायेगा तुम जानतीहो कि यह बड़ाहँसोड़ा और प्रसन्नचित्त है राहभर अपनी हँसीमुख और मसख़रहपनसे मुझे हँसाता खिलाता आयाहै मज़दूर अमीना के पक्षसे बहुत प्रसन्नहुआ और नम्रहोकर उन तीनों स्त्रियों से बिनय की कि मैं ऐसा मनुष्य नहीं कि तुम सबके उपकार को भूल तुम्हारी इच्छा के बिपरीत करूं यह कह उसने वही द्रव्य जो मज़दूरी में पायाथा उनको देदिया ज़ुबैदाने मुसकराय वह द्रव्य फेरदिया और कहा कि एकशर्त से तू हमारे साथरह सक्ताहै जो बात हम तेरे सन्मुखकरें उसको न पूछियो जबतक कि ज़ुबैदा मज़दूर से यह बातें कहरही थी अमीनाने चलने फिरने के बस्त्र उतार अपने बस्त्रका दामन बांधलिया और मांस, क़ीमा, कलिया, क़ोरमा, कोफ़्तः और भुनाहुआ मांस और सबप्रकारके मांस और नानाप्रकारके भोजन और मदिराके शीशेलाय उचित २ स्थानोंपर रखदिये. और वह स्त्रियां उस भोजनके चारोंओर आय बैठीं और मज़दूरको भी एकओर बैठनेकी आज्ञादी मज़दूर इसबातकी

आशा न रखताथा अत्यन्त प्रसन्नहोय फूला न समाया कुछ थोड़ासा भोजन कियाथा कि अमीना ने मदिराकी बोतल को उठा एक गिलास भरा और अपने देशकी रीत्यनुसार सबके पहिले आप पिया फिर अपनी बहिनों को दिया फिर चौथा गिलास मज़दूरको दिया उसने उसके हाथ चूंब पीने के पहिले इस विषय का एकगीतगाया अर्थात् ( कि जिस प्रकार अतर वायु से सुगन्ध पहुंचाती है उसी बिधि उत्तमशराब पिलानेवाले के द्वारा यह स्वच्छमद्य सुगंध देती है ) इसरागके सुनलेसे वह सब स्त्रियां अत्यन्त प्रसन्नहुईं और उन्हों ने शराबके नशे में पारी २ से गीत और रागगाये इसमें बहुतसमय व्यतीत हुआ रात्रि होगई साफ़ी ने अपनी बहिनोंसे कहा कि अब मज़दूरका कुछकाम नहीं इससे कहो कि अपने घरजावे मज़दूरको ऐसासंग छोड़ने से अप्रसन्नता हुई सबसे विनयकी बड़ा पश्चात्ताप है कि ऐसे समय में मुझको निकालतेहो इस शराबके नशेमें अपने घरतक किसप्रकार पहुंचूंगा यहीं पर किसी कोने में पड़ा रहूंगा अमीना ने फिर उसका पक्षकर कहा यह बेचारा सत्य कहता है अँधेरे में कहां ठोकरें खाता जायगा पहिले उसको हम सब रहने की आज्ञा देचुकी हैं अब इसको निराश न करो कृपाकर रहने दो जुबैदा ने अमीना के कहने के अनुसार मज़दूरको रहने की आज्ञा दी और कहा तू एकशर्त से यहां रहसक्ताहै कि जो हम तेरे सम्मुख अच्छा वा बुराकरें पूछियो नहीं मज़दूर ने कहा कि मैं अपना मुख बन्द रक्खूंगा और नेत्रों से दर्पणके समान कि उनका काम केवल देखना है देखाकरूंगा जुबैदा ने कहा कि यह बात जो हम तुझ से चाहती हैं नई नहीं देखो क्या लिखाहै मज़दूरने दरवाज़ेकी ओर उसके भीतर जाकर पढ़ा कि उसमें सुनहली मोटीक़लम से लिखा था कि जो मनुष्य भीतर जायगा उस विषय में जिसमें उसको सम्बन्ध नहीं पूछेगा तो वह अनुचित शब्द सुनैगा और अत्यन्त व्यथाको प्राप्तहोगा कि जिससे वह पछितावेगा मज़दूरने उसको पढ़ कहा कि मैं तुम्हारी किसी बात में न बोलूंगा तुम धैर्य रक्खो फिर अमीना रातको भोजन लाई और उस जगह सुगन्ध और

दीपक जलाये कि जिससे सम्पूर्णगृह सुगन्धित होगया फिर वह स्त्री अपनी बहिनों और मज़दूरसहित भोजनपर बैठे और सबने कुछ खा पी अपने भाषाकी काव्य और विचित्र राग गाये कि इतने में उन स्त्रियोंने सुना कि कोई मनुष्य दरवाज़ह खुलवाताहै खड़ी होगई सो साक़ी कि जिसका यही कार्य्य था दौड़ के सबके आगे बढ़गई और किवाड़ खोलके फिर आई और ज़ुबैदा से आकरकहा कि तीनयोगी एकही स्वरूपके दरवाज़ेपर खड़ेहैं और तीनोंदाहिनी आंखोंसे काने हैं तुम उनको देख बहुत हँसोगी उनके शिर, डाढ़ी, मूछें, भवें सबमुड़ीहैं और इसीसमय बग़दाद नगरमें उतरा चाहते हैं और कहते हैं कि एक रात्रिके निमित्त हमको स्थानदो कि जहां पड़कर सोरहें भोरको चलेजावेंगे हे बहिन! उनको आनेदो वह हम सबको रातभर प्रसन्नकरेंगे और हमको किसीप्रकारका कष्ट न देंगे ज़ुबैदाने साक़ीके कहने के अनुसार कहा कि यदि तेरीइच्छा यहीहै तो उनको जा लेआ परन्तु सबबातें उनको समझादीजियो कि हमारे कार्य्यमें न बोलें और जो किवाड़के पाटपर लिखाहै पढ़लें साक़ीउस बातको सुन प्रसन्नहोकर किवाड़ खोलनें दौड़ीगई और शीघ्रही उन तीनों योगियों को अपनेसाथ लिवालाई योगियों ने ज़ुबैदा और अमीनाको झुककर प्रणाम किया उन्होंने प्रणामका उत्तरदे कुशल क्षेम पूंछी और भोजनकरने में अपने साथ बैठाया योगियों ने मज़-दूरको देख पूंछा कि यह मनुष्य अरबका रहनेवाला जान पड़ताहै परन्तु धर्म के विपरीत मदिरा पान करता है मज़दूरने इस बात में अत्यन्त अप्रसन्नहो उत्तरदिया कि तुम आपही अधर्मीहो कि डाढ़ी और मूछ मुड़वाकर अन्यों को उपदेश करतेहो इसीप्रकार जब मज़दूर और योगियोंकी इसप्रकारकी बातें स्त्रियों ने सुनीं तो उस परस्पर के झगड़ा दूरकरनेको योगियोंको बैठा मदिरा पिलाई जब वह मदिरामें उन्मत्तहुये तो उन्होंने कहा कि यदि कोई बाजाहोता तो हम बजाते साक़ीने बाजा और बांसुरी आदि लादिये योगी लोग उनबाजोंको प्रसन्नहोकर बजानेलगे और उनतीनों स्त्रियोंने बाजोंसे अपना स्वर मिलाकर मीठेस्वरोंसे गाना आरम्भ किया और कभी

चित्र अमीना ज़ुबैदा साफ़ी मज़दूर आदि का गाना सुनते हुये ॥



परस्पर हँसते और कभी वाह२ करते उस बाजेके बजने और गाने और ठट्ठेका बड़ाशब्दहुआ सम्पूर्ण भवन गूंजउठा इसीसमयान्तर में उन्होंने सुना कि कोई मनुष्य दरवाज़ेपर ताली बजाताहै साफ़ी गाना छोड़ दौड़ीगई कि मालूमकरै कि दरवाज़ेपर कौन है रानी शहरज़ादने शहरयारसे कहा कि इस स्थानपर मुझे अवश्य है कि मैं तुम्हें यह बात बतलाऊं कि किस मनुष्यने दरवाज़ेपर आकर ताली बजाई ख़लीफ़ा हारूंरशीदका सदैव यह नियमथा कि रात्रि को अपनावेष बदलकर सम्पूर्ण नगरमें अपनी प्रजाकाहाल मालूम करने के हेतु फिराकरता सो वह अपने बड़े मन्त्री जाफ़र और खोजियोंके सरदार मंसरूर नामक सहित नगरमें निकलाथा वह तीनों व्योपारियों का वेष बनाय दैवयोग से कि जिसस्थानपर वह तीनों स्त्रियां रहतीथीं होकर निकले ख़लीफ़ाने रागोंका शब्द और हास्य ठठोलका शोरसुन जाफ़रसे कहा कि इस गृहका किवाड़ खुलवा मैं इसके अंदर जाकर इसशब्दका वृत्तांत मालूमकरूं मंत्रीने ख़लीफ़ा से कहा कि यहां तो स्त्रियोंका गाना सुनाई पड़ता है कि उन्हों ने भोजनकर मदिरापीहै उसकेनशेमें गायबजायरहीहैं आपको उचित नहीं कि उनके हास्यमें कुछ विघ्नकरो ऐसा न हो कि वह कुछबुरा भला कहउठें ख़लीफ़ाने मंत्रीकी यह बात स्वीकार न की और आज्ञाकी कि तू शीघ्र जाकर उन के किवाड़ खुलवा यह आज्ञा पाय जाफ़रने उस दरवाज़े पर तालीबजाई साफ़ीने किवाड़ खोला मन्त्री उसके रूपको दीपकके प्रकाशमें कि वह अपने हाथमें लेकरगई थी देख आश्चर्यित हुआ और एक उपाय अपने चित्तमें ठहरा कहा कि हे मृगनयनी! हम तीन व्यापारी नगर मवस्सलके बासी हैं तीन दिन व्यतीतहुये कि बहुमूल्य बस्तु ब्यापारकी ले इसनगरमें आये हैं और एकसरायमें उतरे हैं आजकी रात इसनगरके एकव्यापारीने हमको न्योतादियाथा सो हम उसके गृहगये उसने उत्तमब्यञ्जन खिलाये और मदिरापिलाई जबहम मतवालेहुये तबउसनेनृत्यकेवास्ते आज्ञाकी इसमें रात्रि बहुतव्यतीतहुई और सभामें बाजे और नृत्य आदि से बड़ा शब्द होनेलगा संयोग वश कोतवालने अपनी रौंद

साथ लेकर वहांआ उसगृहका किवाड़ खुलवाया उससभाके बहुतसे मनुष्योंको क़ैदकरलिया हमभाग्यवश बचगये कि दीवारचढ़ बाहर कूदपड़े इतनाकह फिर मंत्रीने कहा कि हम इसनगरमें अजानकार भयभीत हैं ऐसा न हो कि हम फिर कहीं राह में दूसरी रौंद या उसी कोतवाल के हाथसे पकड़ेजावें और उससरायतक कि जिसमें हम उतरे थे पहुंचने न पावें यदि वहां पहुंचे भी तो सरायके किवाड़ बन्द पावेंगे जो बिना भोरहुये नहीं खुलता तो भोर होनेतक हम इधर उधर फिरते रहें सो हे सुन्दरी ! यहां हमने गाने बजाने का शब्द सुन जाना कि इस गृहके मनुष्य अभी नहीं सोये सबजागते हैं किवाड़को खड़काया अब हम आशा रखतेहैं कि कोई मकान हमको बतादो कि हम उसमें पड़रहैं यदि हमको संगति के योग्य जानो तो इसगीत नृत्यमेंभी मिलाओ क्योंकि तुम सब अच्छेप्रकार गाते बजातेहो और हमभी तुम्हारी इस विषयमें सहायताकरसक्तेहैं उसने उत्तर दिया कि मैं इसगृहकी स्वामिनी नहींहूं यदि थोड़ीदेर ठहरो तोमैं तुम्हारी बातका उत्तरलादूं साक़ीने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त जो मन्त्रीसे सुनाथा अपनी बहनोंके सम्मुखजाय वर्णनकिया उन्हों ने कुछ शोचबिचार अतिथिपोषणकी राहसे साक़ीको आज्ञादी कि तू जा उन तीनों ब्यापारियों को भी अन्दरलेआ सो खलीफ़ा और मंत्री जाफ़र और मसरूर सहित अंदर आये और बड़ी अधीनता से उन स्त्रियों और योगियोंको प्रणामकिया उन्होंने उनको व्यापारी समझ उसीप्रकार से उनके प्रमाण का उत्तर दिया ज़ुबैदा ने कि सबसे बड़ी और बुद्धिमान् थी उनसे कुशलक्षेम पूँछी और कहा जो हम तुमसे प्रश्नकरें तुम बुरा न मानना मन्त्री ने कहा वह कौन सी बातहै कि तुम ऐसी सुन्दरियोंके कहने से बुरी जानपड़े ज़ुबैदाने, कहा जो यही बातहै तो जोकुछ तुमदेखो किसीबातमें प्रश्न न करना और और जो विषय तुमसे सम्बन्धित नहीं उसका बृत्तान्त न पूंछना नहीं तो तुम्हारी अप्रसन्नताका कारणहोगा मन्त्रीने कहा हे सुन्दरी ! हम तुम्हारी आज्ञानुसार करेंगे हमैं किसी ब्यर्थ विषयको पूंछना अवश्य नहीं यह परस्पर प्रतिज्ञाकर हर मनुष्यको भोजनकराये और

मदिरा पिलाई जबतक मंत्री जुबैदासे बार्त्ता करतारहा खलीफ़ा उन स्त्रियोंके रूप छबि अनूप और बुद्धिमानी को देख अति आश्चर्यित हुआ बिशेषकर उन तीन योगियों को कि तीनों दाहिनी आंख से काणेथे बहुत चाहताथा कि इस अद्भुत चरित्रको उनसे पूंछैं परन्तु उसके साथियों ने पूंछने न दिया इसके बिशेष रुपहरी और सुनहरी सामग्री और गृहकी सजधज देख चित्त में कहताथा यह सब बस्तु जादू और मंत्रविद्या से अवश्य सम्बन्ध रखती है इतने में एक योगीने अपने देशकी रीतिपर नृत्य करना आरम्भ किया स्त्रियों ने उसका नाच अत्यन्त प्रसन्न किया और उन सब योगियोंसे अधिक प्रसन्न हुई खलीफ़ा और उसके साथियों ने भी अत्यन्त प्रशंसाकर धन्यबाद किया जब योगियों का नृत्य होचुका जुबैदा अपने स्थान से उठी और अमीना का हाथ पकड़ कहा कि हे बहिन! तुमजानती हो कि ये सम्पूर्ण सभासद हमारे अधीन हैं इनका होना हमारे कार्य्य में बिघ्न नहीं करसक्ता हम अपने कार्य्य को न करैं अमीना इस बात के सुनतेही उसके अभिप्राय को समझ गई फिर उसने शीघ्रही मदिरा की बोतलैं और भोजन के पात्र और गाने बजाने की सामग्री जिनको योगी बजाते थे उठाई साक़ीने भी अपनी अमीना बहिन के साथहो उस कमरे को साफ़ किया और प्रति बस्तु को सँवार के रख दियों के गुलकाटे और चन्दन और सुगन्धित तेल की बत्तियां जलाईं और फिर तीनों योगियों और खलीफ़ा आदिको एकओर दालानमें बिठलाया और मज़दूरसे कहा उठकर कामकर तुझ ऐसे बलवान् को उचित नहीं कि निकम्मा बैठारहे मज़दूर ऊँघताथा और विवेकके कारण से उस हास्य ठट्ठेमें उद्यत न था-तत्काल उठखड़ाहुआ और पहिरने के बस्त्रको कमरमें लपेट कहा मैं तत्परहूं क्या आज्ञाहै साक़ी ने उत्तर दिया कि आस्तीन भी ऊपर चढ़ालो फिर थोड़ी देरके पश्चात् अमीनाने एक चौकी दालानमें बिछाई और मज़दूरको अपने साथ लेजाकर एककोठरी से दो काली कुतियां निकाललाई प्रत्येक कुतिया के गलेमें पट्टेबँधेहुये थे फिर मज़दूर उन दोनों को खींच दालान में लेगया जुबैदा कि

वहीं बैठीथी उन्हे देख बड़ी तमकसे उठी और उस मज़दूरके समीप गई और ठंढी सांसें भर आस्तीन ऊपर को चढ़ाई और चाबुकको साक़ी के हाथसे ले मज़दूरसे कहा एक कुतिया मेरी बहिन अमीना को दे और दूसरी मेरे पासला मज़दूरने उसकी आज्ञानुसार किया कुतिया लातेही चिल्लाने और मुंह फेरके ज़ुबैदाकी ओर देखने और उसके चरणोंपर शिर रखके मलनेलगी ज़ुबैदाने उसके रुदनकरने और चिल्लाने पर बिचार न कर चाबुक मारना आरम्भ किया और यहां तक कि मारते मारते उसका श्वास चढ़गया और जब थकगई तो मारना छोड़दिया और जंजीर मज़दूर के हाथ से ले उसके अगले पंजे पकड़ खड़ा किया और अति पश्चात्तापकर एक दूसरेको देख रोई फिर रुमालसे उस कुतिया के आंसूपोंछ प्यारकिया और मुखचूमा और मज़दूरको देकर कहा इसको लेजा और दूसरीको ला मज़दूरने उस कुतियाको जो मारीगई थी मकानमें लेजा बांधा और दूसरी अमीना के हाथ से ले ज़ुबैदा के निकटलाया ज़ुबैदा ने कहा इसे तू पकड़े रह फिर उसको भी उसीप्रकार मारा जैसे पहिली कुतियाको माराथा फिर उसके आंसू पोंछ मुखचूम मज़दूरको दिया मज़दूर उसको भी मकान में लेजा बांधआया वह तीनोंयोगी और ख़लीफ़ा और उसके साथी इस वृत्तान्त को देख अति बिस्मित हुये और अपने २ चित्तमें कहनेलगे ज़ुबैदा क्यों इतने कठोरपनसे उन कुतियोंको मार उनके साथरोई ये पशु मुसल्मानों के बिचारमें अपवित्रहैं उनके आंसू पोंछ और मुंहचूमा इसीप्रकार वह सब परस्पर हौले २ इसकी वार्त्ता करते थे बिशेषकर ख़लीफ़ा इस अद्भुतचरित्र के मालूम करने की अतिलालसा रखताथा मन्त्री से सैनकी मन्त्री सुनी अनसुनी बातकर दूसरी ओर देखनेलगा फिर राजाने सैनसे पूछा उसने सैनसे बिनयकी कि ये समय पूछनेका नहीं फिर ज़ुबैदा उन दोनों कुतियोंको मारने के पश्चात् थोड़ी देर सुस्तानेको बैठी जब सुस्ता चुकी साक़ी ने उस से कहा हे मेरी प्यारी बहिन! तुम अपने स्थानपर आबैठो तो हम अपना कार्य्य करें ज़ुबैदा ने कहा अच्छा फिर वह सभामें आय इसप्रकारसे आबैठी कि ख़लीफ़ा और

उसके साथी दाहिनी ओर और तीनोंयोगी और मज़दूरबाईंओर बैठे एकघड़ी तक वह चुपकीथी कि साक़ी उस चौकीपर जो दालानमें बिछीहुई थी आय बैठगई और अमीनासे कहा बहिन उठो तुम हमारे अभिप्रायको जानतीहो इस बातको सुन अमीना उठी और दूसरी कोठरी में गई और वहांसे एक संदूक़ उठालाई जो पीली साठिन से मढ़ाहुआथा और गिलाफ़ उसकी हरी कारचोबीका था उसने उसे खोल एक नली निकाल अपनी बहिनको दी साक़ी ने उसके शब्दमें बियोग और बिरहमयी राग गाना आरम्भ किया जिसको ख़लीफ़ाआदि सभासद सुन अतिहर्षयुक्त हुये जब उसने देरतक गाय बजाय सबको प्रसन्न किया बांसुरी अमीनाको देकर कहा हे बहिन! मैं थकगई अब तुम इसे ले बजावो और सभा को अपने गानेसे प्रसन्नकरो अमीनाने उस नलीको लेकर थोड़ी देरतक उसका स्वर मिलाया फिर एक उत्तम रागबजाया निदान उस अपूर्व रागमें मूर्च्छित होगई और जुबैदाने उसके गानेबजानेकी अत्यन्त प्रशंसाकी और कहा अब तुम्हारी दशा चिन्ता से बदलीहुई मालूम होती है अमीना बिह्वलता से उसके प्रश्नका उत्तर न देसकी और उसकी ऐसी दशा होगई कि बेसुध होय गिरपड़ी और उसने उसी दशामें अपने पहिरने के बस्त्रको उतार फेंकदिया और उसके कन्धे जो दागोंसे कालेहोगये थे सब लोगों को दिखाई पड़े जैसा किसीने उसे माराहै और दागपड़गये हैं सब देख अतिआश्चर्यित हुयेकि ऐसी सुन्दरी कोमलांगी को किसने मारा है उसके कन्धे और बाहें दागों से कालेहोगयेहैं और क्यों इस दशाको प्राप्तहुई जब अमीना बेसुधहोय गिरपड़नेपर हुई जुबैदा और साक़ी ने दौड़कर थांभा तब एक योगी ने कहा यदि हम बनमें पड़ेरहते और रात्रिको वृक्ष के नीचे व्यतीत करते तो इससे बहुत उत्तम था कि हम इस वृत्तान्तको देखते और उसका कारण पूंछ नहींसक्ते ख़लीफ़ा ने इस बात को सुन उसके समीप आके पूंछा कि तुमको इस स्त्रीका और कुतियों के मारेजाने का वृत्तान्त मालूम है योगी ने उत्तर दिया हम इस वृत्तांतको नहीं जानते और पहिले कभी इस घरमें नहींआये केवल

आजहीकी रातको तुम्हारे आनेके दोचारघड़ी पहिले आये हैं इस बातके सुनतेही ख़लीफ़ा और भी अधिक आश्चर्यित हुआ और उस योगीसे कहा कि यह जो मनुष्य तुम्हारे साथहै कुछ इसे हाल मालूम हुआहोगा उस योगीने मज़दूरको सैनसे अपने निकट बुलाय पूंछा तू कुछ जानता है किसवास्ते वे दोनों कुतियां मारीगईं और अमीना के कन्धोंपर क्यों दागहैं मज़दूर ने सौगन्द खाकर कहा कि मैं इस वृत्तांतको नहीं जानता आजके दिनके सिवाय कभी इस घरमें नहीं आया और मैं इस घरके रहनेवालों से जैसा कि तुम समझते हो नहीं इस घरमें केवल तीन स्त्रियां हैं वह सब जानते थे कि मज़दूर इन स्त्रियों का सेवक होगा जब बिदितहुआ कि मज़दूर भी हमारे समान बेगानाहै तब ख़लीफ़ाने कहा हम सात पुरुष हैं और वे केवल तीन स्त्रियां हैं सब मिलके उनसे इस भेद को पूंछें यदि उन्हों ने प्रसन्न होकर बताया तो उत्तम है नहीं तो हम ज़ोर से पूछेंगे जाफ़र मन्त्री ने जो इस सलाह में न था सुन ख़लीफ़ा के कानमें कहा कि हम सबको इस सभा से अतिप्रसन्नता हुई और अबतक बड़े आनन्दमें हैं और आपको अच्छी तरह मालूम है कि इन स्त्रियोंने किस प्रतिज्ञा से हमको अपना अतिथि बनाया है और हमने उस प्रतिज्ञा को स्वीकार किया है इस पूंछने से वे क्या कहेंगी जो परमेश्वर न चाहै इस प्रण के तोड़नेसे किसीप्रकार का दुःख पहुँचे तो अत्यन्त लज्जा प्राप्तहोगी और इसकोभी बिचारिये कि उन्होंने जो हम सब से ऐसा दृढ़ प्रण किया है तो हम सब मनुष्यों को अच्छी तरह दण्ड न दे सकेंगी उन्होंने भी तो कुछ समझाहोगा जो हमसे ऐसा प्रण किया फिर जाफ़र मंत्री ने यहांतक ख़लीफ़ासे कहा कि रात बहुत थोड़ी है जो आप इस समय चुपरहैं तो भोरको मैं इन तीनों स्त्रियोंको आपके सम्मुख ले आऊंगा उस समय जो आपको पूंछनाहै उनसे पूंछ लीजियेगा यद्यपि यह बात बहुत अच्छी थी परन्तु बादशाहने उसे न माना और मन्त्री से कहा कि चुपरह मैं प्रभात पर्य्यन्त ठहर नहीं सक्ता इसी समय इस बात को सूचित किया चाहता हूं पहिले उसने योगियों

से कहा कि तुम जाकर उनसे पूंछो उन्होंने न माना फिर सबने मज़-
दूर को पूंछनेके लिये तैयार किया जुबैदाने उन सम्पूर्ण मनुष्यों को
बातचीत करते सुन पूंछा तुम परस्पर क्याबार्त्ता कररहेहो मज़दूर
ने कहा कि हे सुन्दरी! सब यही चाहते हैं कि आप कृपाकरके इस
बातको बतलाइये कि तुम कुतियोंको निर्दयतासे मारकर क्यों रोईं
और जिसस्त्रीने मूर्च्छाखाई उसके कंधोंपर कालेदाग़ कैसेहैं जुबैदा
अत्यन्त क्रोधितहोकर खलीफ़ा आदिक से कहनेलगी क्या यहबात
सत्यहै कि तुमने इसबात के पूंछने को इसमनुष्य से कहाथा सबने
एकमत होकर कहा कि सत्य है केवल जाफ़र मन्त्री नहीं पूंछना
चाहता जुबैदा ने अत्यन्त कोपित होकर कहा कि तुमने अपनी
प्रतिज्ञा अच्छी निबाही हमने दया से तुम को अपने घर में रहने
को जगहदी और तुम्हारा यथा विधि सन्मान किया और पहिले
प्रतिज्ञा करली थी कि तुम किसी हमारी बातको न पूंछना परन्तु
तुमने अपना प्रण भंगकिया और इसमें कुछभी भय न किया अब
तुम्हारी प्रतिष्ठा हमारी दृष्टि में नहीं इतना कह जुबैदाने पांव
धरतीपर मारे और तीनबेर ताली बजाकरकहा तुरन्तआवो इतना
कहतेही एक किवाड़ खुलगया उसमें से सातहबशी अति बल-
वान् और हृष्टपुष्ट नंगीतलवारें लियेहुये निकले और हर एक ने
एक २ को पृथ्वीपर पछाड़ा और उसी दालानके भीतर मारडाल-
नाचाहा अब समझनाचाहिये कि खलीफ़ाको कितनीलज्जा और
व्याकुलता मंत्रीके उपदेश न सुननेसे हुईहोगी इतनेमें एकहबशीने
जुबैदा आदिकसे पूंछा हे सुंदरियो! तुम्हारी आज्ञाहै कि हम इनको
मारडालें जुबैदाने उत्तरदिया ज़रा ठहरजाओ पहिले इनसे इतना
हाल पूंछलें फिर हरएकसे हाल पूंछनेलगी सबके पहिले मज़दूरने
कहा ईश्वरके वास्ते मुझनिर्दोषको न मारो मैं निपटनिर्दोषहूं येसब
अपराधी हैं और रोकर कहनेलगा कि बड़ापछतावा है कि मैं किस
चैनमें था इनयोगियों के कारण इस दुःखमेंपड़ा इनकेकुरूप और
कुशकुनचरणों से बहुतसे नगर निर्जन होगयेहोंगे मुझपर दया
कीजिये जुबैदा उसका रोनापीटना सुन हँसपड़ी और कहा कि हर

एकमनुष्य अपना ठीक२ हालकहे अर्थात् कौनहै और कहांसे आया है और क्या २ गुणरखताहै और यहां आनेका क्या कारण है यदि थोड़ाभी झूठ बोलेगा तो निस्संदेह उसकीगर्दनमारीजावेगी बादशाह औरों से अधिक ब्याकुल हुआ कि उस कुपित स्त्री से बचना कठिनहै इसी ब्याकुलता में शोचा यदि यहमेरी पदवी मालूमकरेगी तो निश्चय मुझको छोड़ देवेगी तदनन्तर उसने मंत्रीसे जो उसके समीपथा उससे पूंछा परंतु उस बुद्धिमान् मंत्री ने चाहा कि अपने स्वामीकी प्रतिष्ठा न खोवे कोई और बहानाकरे इतने में जुबैदा ने उन तीनों योगियोंको जो एकआंख से कानेथे पूंछा क्यातुम तीनों भाई २ हो उनमें से एकनेकहा नहीं एक बेष अवश्य हैं और इसी बिधि अपनाजन्म काटते हैं फिर उसने योगियों से पूछा कि क्या अपनी माताके उदरसे काने उत्पन्न हुयेथे एकने कहा नहीं एकदुःख के कारण हमारेनेत्र जातेरहे कि वह लिखनेके योग्यहै और उससे हर मनुष्यको उपदेशहो उस आपत्तिके उपरांत हमने अपनीडाढ़ी मूछें और भवें मुड़वा डालीं और योगी बन गये जुबैदा ने दूसरे योगीसे भी पूछा उसनेभी वही उत्तरदिया और तीसरे ने भी यही कहा किन्तु उसने अधिक हाल वर्णन किया यदि आप हमपर दया करें तो हम अपने २ वृत्तान्तको वर्णन करें हमतीनों शाहज़ादे हैं आज सन्ध्या को हम में परस्पर भेंटहुई थी हम परदेशी हैं और विश्वासकर जानिये कि वे बादशाह जिनके हम तीनों पुत्र हैं बड़े नामवर इस संसार में हैं और हममें से प्रति मनुष्य अपने अपने दुःखका वृत्तान्त जो हमपर पड़ाहै विस्तार पूर्वक वर्णनकरेगा जुबैदाका क्रोध इन बातोंको सुन कुछ शांतहुआ और उन हब्शी गुलामों को आज्ञादी कि इनके हाथ पैर छोड़दो कि वह अपनी २ जगहपर बैठकर अपना २ वृत्तान्त और इस घरमें आनेका कारण वर्णन करें जब अपना वृत्तान्त कहचुकें तब उनको छोड़ दो जिधर को चाहें उधर चले जायँ और जो अपना वृत्तान्त न कहे उसको बध करडालो फिर तीनों योगी और खलीफ़ा अपने साथियों और मज़दूरों सहित दालान में क़ालीनपर आ बैठे और

प्रतिमनुष्यके शिरपर एक २ हब्शी तलवार नंगी लिये खड़ाहुआ था कि जुबैदा का हुक्म पाय उनको बधकरे सबके पहिले मज़दूर ने अपना इसप्रकार से वृत्तान्त कहना शुरूकिया॥

## मज़दूरकी कहानी जो उसने संक्षेप में वर्णन की॥

मज़दूर ने कहा हे सुन्दरी! तुम्हारे घरमें आने का कारण यह हुआ कि आजभोर को मैं बाज़ारमें अपना टोकड़ा लियेहुये इस आशापर खड़ाथा कि कोई मुझे मज़दूरी के निमित्त बुलाये कि मैं उसकाकार्यकर अपने निमित्त जीविका प्राप्तकरूं इतने में तुम्हारी बहिन ने मुझे बुलाया और अपने साथ लियेहुये कलवारकीदुकान पर गई और वहांसे कुँजड़े की दुकान से तरकारी मोललै फिर वहां से फल बेंचनेवाले के निकटगई और वहां से उत्तम २ वस्तु ख़रीद और टोकड़े में भर मेरे शिरपररख घरमें लाई और तुमने कृपाकर मुझको अबतक यहां रहने दिया इसतुम्हारे उपकारको विस्मरण न करूंगा मेरा यह वृत्तान्त है जिसको मैंने विनय किया जब मज़-दूरने अपनी कहानी को शीघ्र छूटजाने के हेतु पूराकिया जुबैदाने उससे कहा अपने घरचलाजा फिर मेरे सम्मुख कभी मत आइयो मज़दूरने विनयकी यदि मुझे आज्ञाहो तो मैं ठहरके इनलोगों की भी कहानी सुनूं जैसा कि इन्होंने मेरा वृत्तान्त सुना है फिर वह जु-बैदा की आज्ञानुसार दालान के एक कोने में जाखड़ाहोरहा फिर जुबैदा ने उनतीनों योगियों से कहा कि अब तुमभी अपना २ वृ-त्तान्त वर्णन करो सो एकने अपनी कहानी को इसप्रकार कहना आरम्भ किया॥

## पहिले योगीकी कहानी॥

पहिले योगीने घुटने के बल खड़े हो जुबैदा से कहा कि हे सुन्दरी! मैं यह वर्णन करता हूं कि मेरीदाहनीआंख क्योंगई और क्यों मैंने अपनेको योगियों के समान बनाया मैं एक बड़े बादशा-हका पुत्र था और उसका एक बड़ा भाई भी उसी बादशाह के समान ऐश्वर्य्यवान् उसके नगर के समीप रहता था उसके दो सन्तान थे एकपुत्र मेरे बराबर का था और दूसरी पुत्रीथी मैं प्रति

वर्ष में एकबेर अपने पिताकी आज्ञानुसार अपने चचाकी भेंट को जाता वहां एक दो मास रह फिर अपने देश में लौट आता इस आने जाने से मुझ में और चचाके लड़के में अत्यन्त प्रीति होगई एक दिनकी भेंट में मैंने उसे अधिक प्रसन्न पाया और उसने पहिले से अधिक मुझ से प्रीति की और अत्यन्त प्रतिष्ठाकर मुझे भोजनकराया और अद्भुत तमाशे दिखलाये और बहुत देरतक वे तमाशे देखाकिये फिर मैंने और उसनेमिलकर भोजनकिया उसके पश्चात् उसने मुझसे कहा मैंने कितना अच्छा और कितनी जल्दी तुम्हारे जानेके पीछे बहुतसे कारीगर लगाकर एकमकान बनवाया सो वह घर बनचुका है अब मेरी इच्छा रात्रि के शयन करने की है जो उस घरको देखोगे तो बहुत प्रसन्न होगे परन्तु प्रथमतुमको क़समखाना अवश्य है कि इस भेदको किसी से वर्णन न करना यह केवल दोबातें तुमसे मित्रता और पुरातन प्रीति के कारण कहताहूं मैं उससे इन्कार न करसका तुरन्त मैंने उससे सौगन्दखाई फिर उसने मुझसे कहा कि तुम ठहरो मैं अभी आताहूं फिर थोड़ीदेर के पीछे एक स्त्री परमसुन्दरी अपने साथ लेकर आया न तो उसने मुझसे बताया कि वह स्त्री कौन है और न मैंने उस स्त्रीका वृत्तान्त पूछना उचित समझा तदनन्तर हम दोनोंभाई और वह स्त्री बैठकर इधर उधरकी वार्त्ता करनेलगे और गिलास भर २ मदिरा पीते रहे यहांतक कि शाहज़ादेनेकहा अबयहां अधिक न ठहरनाचाहिये यहकह उठा और मुझसे कहाकि तुम इस सुन्दरी को अपने साथले इसमार्ग से उसश्मशानमें जाओ और जहांकहीं नवीनक़बर गुम्बद के समान देखना तो जानना कि यही दरवाज़ा उसघरकाहै जिसको कि मैंने अभी तुमसे वर्णन किया था तुमदोनों उसघरके भीतरजाय मेरे आनेकीराह देखना मैं तुरन्त वहां आऊंगा फिरमुझसे कहा हे भाई ! परमेश्वरके वास्ते इस भेदको किसीसे वर्णन न करना फिर मैंने अपना हाथ उसस्त्री के हाथ में दे उसी चिह्न और पतेपर कि जिसे मेरेचचेरे भाईने बतायाथा चला और मार्ग के भूलने बिना चन्द्रमाकी चांदनीमें बहुत आनन्दसे उसीसुंदरीको लेकेपहुँचा क्या

देखा कि वह शाहाज़ादाभी पानी का लोटा भराहुआ और चूनेकी टोकड़ी लियेहुये वहां पहिले पहुंचा और फड़हे से मिट्टी भरी हुई निकाली और पत्थरों को वहां से उठाय एकओर लगाया जब सब पत्थर उससे निकालचुका पृथ्वीमें छिद्रकिया कि वहां हमें एकदरवाज़ा देखपड़ा उसने उसे खोला कि उसमें एकसीढ़ी लकड़ी कीथी उस समय मेरे चचेरे भाईने उस सुन्दरी से कहा कि यहीमार्ग उस द्वारकाहै जिसका कि मैंने तुमसे वर्णन कियाथा वह सुन्दरी इसबात के सुनतेही वहां आई और सीढ़ी के मार्ग से नीचे उतरगई और शाहज़ादाभी उसी के पीछे चलागया और उस मकानमें उतरने के पहिले मुझसेकहा कि मैं इसबड़ेश्रमसे जो मेरे कारण तुमने उठाये हैं तुम्हारा धन्यवाद करताहूं अब मैं तुमसे बिदाहोता हूं तुम्हें परमेश्वरको सौंपा कितनाही मैंने उससे पूछा कि तुम कहांजातेहो और यह सब कार्य्य क्या है उसने कुछ न बताया परन्तु इतना कहा कि दरवाज़े पर मिट्टीडाल बराबर करदेना और जिसमार्ग से आये थे उसीमार्ग से चलेजाओ मैं लाचार होकर दरवाज़े पर मिट्टी डाल और वहां से बिदा होकर अपने चचाके मन्दिर पर आया और शिरकी पीड़ा के कारण कि मदिरा के नशेसे होतीथी अपने मकान परजाय सोयरहा जब प्रभातको उठा रात्रिकी बात को स्मरणकर चिन्तायुक्त हुआ फिर मैंने उनसब बातोंको बिचारा कि स्वप्नथा या सचमुच फिर मैंने अपने सेवकसेकहा कि तू तुरन्तजा मेरे भाई शाहज़ादेका समाचार ला कि उसने जगकर वस्त्र बदले हैं या शयन करते हैं उसने वहांसे लौटकर कहा कि रात्रि में वह अपने स्थान पर न थे और यह भी कोई नहीं जानता किवह कहां हैं और किधर गये इसकारण सब उनके सेवक चाकर और घरके मनुष्य अति बिस्मित और चिन्ता में हैं मैंने बिचार किया अवश्य उसी घर में होगा मुझको उसके न होने और न देखनेसे अति चिन्ताहुई फिर छिपकर उसीश्मशानमें गया और सम्पूर्णदिवस उसगृहके ढूंढ़ने में ब्यतीत किया परंतु उस घरका कुछ भी चिह्न न पाया इसी प्रकार चारदिन तक उसकी ढूंढ़में भटकतारहा परन्तु कहीं ठिकाना और

पता उसका न लगा हे सुंदरियो ! मुझे उचित है कि इसबातको तुम्हें बतादूं कि उन्हीं दिनों में मेराचचा आखेटको कई दिन से बाहरगया हुआ था और मैं उसके आगमनकी देरी में अति दुःखित हुआ निदान अपने पिताके पास जानेकी इच्छाकी और मंत्रीसे यह कहा कि मैं अबकी बेर आगेसे अधिकरहा मेरा पिता मेरी ओरसे चिन्ता युक्तहोगा जब चचाजी आखेटसे लौट आवें मेरी ओर से प्रणाम कहने के पश्चात् वहीबात कहदेना परन्तु मैंने मंत्रीको शाहज़ादेके खोजानेसे अत्यन्त व्याकुल और चिंतायुक्तपाया और मैं शाहज़ादे का वृत्तान्त उसी सौगन्द के कारण न कहसक्ताथा फिर मैं वहांसे अपने पिताकी राजधानीमें आया और वहां तो मैंने घरके दरवाज़े पर बहुतसी सेनाका पहरादेखा उन्होंने मुझे देखतेही क़ैदकरलिया मैंने कारण पूछा तो एक सेनापतिने उत्तरदिया कि हे शाहज़ादे ! यह सेना बड़ेमन्त्रीकीहै उसने तुम्हारे पिता के स्वर्गबास के पश्चात् इस मंत्री को अपनी जगह बादशाह किया है अब उसनवीन बादशाह ने तुम्हारे पकड़ने के निमित्त हमें आज्ञादी थी कि जहां कहीं पावो शाहज़ादेको पकड़लावो सो तुम्हारे ढूँढ़ने को सेना चारोंओर गईहै आज तुम हमारी भाग्यसे आपही यहांआगये इसवास्ते तुमको पकड़लिया यह कहतेही एक सेनापति मुझे उस अन्यायीके निकटले गया हे सुन्दरी ! उस समयके मेरेकष्ट और दुःखको समझनाचाहिये वहदुष्ट पहिले से अपने चित्तमें बैररखताथा उसके बैरका यह कारण था मुझको बालकपनमें गुलेलखेलनेका बड़ाव्यसनथा सो एकदिन मैं गुलेल लियेहुये अपने घरकी छतपर खड़ा था कि एक चिड़िया उड़तीहुई मेरे सम्मुख आई मैंने एकगुलेल उसकी ओरचलाई संयोग वश वह उस मन्त्री के नेत्रपर कि अपने घरके कोठेपर टहलता था लगी उससे उसकी आंख फूट गई मैं इस हालको जानकर आप उसके निकटगया और बिनतीकी फिर भी उसके चित्तमें मेरी ओर से बैररहा और चाहता था कि समय पाय उसका बदला मुझसे ले जो कि अब उसने मुझे दीन और असहाय पाया मेरे उस विषय को कि भूल से हुआ था स्मरणकर मुझे देखतेही दौड़ा और अ-

त्यन्त क्रोधसे अपनी अंगुली डाल मेरी दाहिनी आंख निकाल डाली यही मेरी दाहिनी आंख फूटने का कारण हुआ और उस अन्यायी ने एक पिंजरे में मुझे कैद किया और बधिक को आज्ञादी कि इसको नगर के बाहर लेजाके बधकर और इसका मांस काट पशु पक्षियों को खिलादे बधिक घोड़ेपर चढ़ और बहुत से मनुष्य अपने साथले मुझे नगर के बाहर लेगया जब मेरे बध करनेकी इच्छाकी मैंने बहुत रोदनकर बधिक से बिनती की तब उसको मुझपर दया आई और मुझको छोड़दिया और कहा कि इसदेशसे निकलजा और चैतन्यरह फिर कभी इधरमुख न करना और जो आवेगा तो हम और तू दोनों मारेजायँगे यहसुन मैंने अत्यन्त धन्यबाद किया और प्राण के बचने से आंख का जाना अच्छा मालूम हुआ कि आंखही के जानेसे परमेश्वर ने भलाई की भला प्राण तो बचे आंखगई तो गई उसदिन तो मैंने चलने की सामर्थ्य थोड़ी भी न पाई दिनभर छिपारहा रात्रि को गुप्तमार्गों से अपने बलके अनुसार थोड़ा २ चल चचाके नगर में पहुँचा और उसके निकट जाकर सम्पूर्ण वृत्तांत अपने दुःख और तुरन्त लौट-आनेका वर्णन किया चचाने हाहाखा कहा बड़ा पश्चात्तापहै कि बुरे समयने मेरे पुत्रके खोजानेपर भी मुझे अपने भाई के मरने का समाचार सुनाया कि जिसको मैं अपने प्राणसेभी अधिक रखताथा और मुझको इसदुःखमेंपाया कितनाहीउसने अपनेपुत्रको ढूंढ़ापरंतु उसका कहीं चिह्न न पाया निदान अपने पुत्रको यादकर रोयाकर-ताथा मैं अपने चचाको ऐसी बुरीदशा में न देखसका और उसके रोने पीटने पर और भी अधिक दुःखित हुआ धैर्य न करसका और उस वाक्य के प्रतिपालन की मुझ में शक्ति न रही निदान मैंने वह सम्पूर्ण वृत्तान्त जो मेरे नेत्रों के सम्मुख हुआथा अपने चचासे कहा इसहालको सुन उसे धैर्य हुआ और मुझ से कहा भतीजे तूने सत्य कहा तेरे कहने से मुझे उसके मिलने की आशाहै मुझे आगे से विदितहै कि उसने एकक़बर यहां से समीप बनवाईहै उस में अवश्य होगा फिर मैं और चचा दोनों बेष बदल कि कोई

अन्य मनुष्य उस शाहज़ादे का भेद न जाने बाग़के दरवाज़े से कि बनकी ओर था निकलकर चले थोड़ीदूर गयेथे कि वह क़बरामिल-गई मैंने तुरन्त उसे पहिचान लिया जब हम उसगुम्मज़के अन्दर गये तो उस लोहे के किवाड़को जिसकेसाथ सीढ़ी लगीहुईथी बड़ी कठिनतासे खोला क्योंकि शाहज़ादेने उसको भीतरकी ओरसे गच और चूना लगा बन्दकिया था जब हमने उस किवाड़को खोला तो प्रथम चचा उसघरमें उतरे उनके पीछे मैंने जाकरदेखा तो उस घर की डेवढ़ी धुयेंकी बुरी सुगन्ध से भरीहै वहां फिर बैठने की जगह में गये जहां अतिस्वच्छ दीपक जलते थे वहां एक छोटा तालाब दृष्टपड़ा कि जिसके चारोंओर खानेपीने की सामग्री बहुत रक्खी थी हम किसी मनुष्य को वहां न देख अत्यन्त विस्मित हुये फिर अपने सम्मुख कुछ ऊँचेपर बैठने का स्थान और देखा कि जिसके किवाड़ों में पर्दे पड़ेहुये थे चचा सीढ़ी के द्वारा उस बैठने की जं-गह पर चढ़गये और पर्दाउठा अपने पुत्र और एक स्त्रीको एक शय्यापर इकट्ठे देखा परन्तु वह दोनों परमेश्वर की क्रोधरूपी अ-ग्नि से दग्धहो कोयले के समान काले होगये थे कि जैसा कोई उनको ज्वलित अग्नि में डाले और राखहोने के पहिले निकाले इस वृत्तान्त को देख मैं अत्यन्त भयभीत हुआ और पश्चात्ताप किया परन्तु मेरा चचा कुछ भी विस्मित न हुआ और न इस बिषयको देख कुछ पश्चात्ताप किया उसने उस जलेहुये शाहज़ादे के मुखपर थूक दिया और क्रोधितहो कहा देख इस लोक में तूने कितना दुःख पाया और परलोक में इस से भी अधिक पा-वेगा इस थूकने और कहने से भी उसका बोध न हुआ फिर उसने पांव से जूती उतार उसके मुखपर कईमारीं इसबात से मैं अत्यन्त शोकवान् और विस्मितहुआ कि उसने क्यों अपने मृतक पुत्र से ऐसा अनुचित किया मैंने क्रोधकर उससे कहा एक तो मुझे शाहज़ादे की यह दशा देखने से शोकहुआ उससे अधिक आपके इस कर्मपर पश्चात्ताप है आप मुझसे यहकहिये कि इसमृतक शा-हज़ादे से ऐसा बड़ा कौनसा अपराध हुआ कि जो आपके ऐसे

क्रोधका कारणहुआ चचाने उत्तरदिया कि हे भतीजे! तू इसवृत्तान्त को नहींजानता ये अधिक धिक्कार और दण्डके योग्य हैं क्योंकि यह शाहज़ादा बाल्यावस्था से अपनी बहिनको प्यार कियाकरता था मैंने बाल्यावस्था के कारण कुछ अनुचित कर्म्म का विचार न किया जब वह दोनों बड़ेहुये और बुरा भला समझने लगे और दोनों में प्रीतिभी अधिक बढ़ी तब मैंने इनकी बहुत रक्षाकी और घरमें आज्ञादी कि ये दोनों बहिनभाई सम्मुख न होवें परन्तु वह अभागी लड़कीभी उससे बड़ीप्रीति रखतीथी यदि मेरे मनाकरने के कारण परस्पर भेंट न करसके और सम्मुख न होतेथे परन्तु हृदयमें एक दूसरेपर मोहित रहते यहांतक कि मेरेपुत्रने उसको अपनी ओर पा यह घर मुझसे छिपा इस आशासे बनवाया कि समयपाय उसके समेत इस घरमें रहै निदान जब मैं आखेटको गया तब शाहज़ादा उसको किसी प्रकार राजभवन से निकाल इस घरमें लाया और आपभी उसके साथ रह इस महल का बन्दरक्खा और पहिले से उसने नानाप्रकार के खाने पीने आदिकी वस्तु यहां ला रक्खीथी एक अवधितक उसकेसाथ आनन्दपूर्वक यहांरहा परन्तु परमेश्वर ने शीघ्रही उन दोनोंको ऐसे बड़े पापका दण्डदिया जब बादशाह इस वृत्तान्त को कह चुका तब हाहाकर बहुत रोया और मैंभी उस के साथ रोया फिर उसने रोधोकर मेरी ओर देखा और मुझे हृदय से लगाय कहा कि परमेश्वर की इच्छा योंही थी जो दुष्टमरगया तो कुछ परवाह नहीं परमेश्वर तुझे जीतारक्खे अब तूही उसके बदले मेरापुत्र और युवराजहै उसके पश्चात् मैं और वह बादशाह शाहज़ादे और उसकी बहिनके वास्ते बहुत रोये और वह उसीसीढ़ी से ऊपरको चढ़आये और वह किवाड़बन्दकर ऊपर उसके मट्टीआदि डाल छिपादिया फिर हम दोनों वहांसे राजमहलकी ओर चले वहां के पहुँचने के पहिले युद्धके ढोलआदि सुनाई दिये और धूर आकाशकी ओर चढ़ीहुई देखी कि वही राजमन्त्री जो मेरे पिताका राज्य छीन सिंहासनपर बैठाथा अबमेरे चचाके राज्यलेने के लिये बड़ी सेनाको साथ लेआयाहै मेरा चचा कि थोड़ी सेना रखताथा उसका

सामना न करसका निदान उसने शहरको लेलिया और सेना उस की सुगमता से राजभवन पर चली आई मेरे चचाने कुछ देरतक उनका सामना किया फिर अपने बैरी के हाथ से मारागया उसके पश्चात् एक दो घड़ी मैंने भी उनका सामना किया और बैरी से लड़तारहा जब चारोंओर से घिरगया और बदलालेनेकी सामर्थ्य न पाकर वहांसे भागा तब उस मन्त्रीके एक सरदारने मुझपर दया कर उस नगरसे जीताजागता निकालदिया मैं अपने प्राणकी रक्षा के लिये कि मुझे कोई न पहिचाने भौंह दाढ़ी मूछमुड़वा योगियोंके स्वरूप बनगया और बड़ी कठिनतासे गुप्तमार्गों से होकर अपने चचाके देश से निकला और बहुत से नगरों में भटकता हुआ फिरा अब अतिप्रतापवान् धीमान् अतिदयालु कृपालु दीनपोषक ख़लीफ़ाहारूंरशीद के राज्य में आ बुग़दाद में पहुँचा और इच्छा की कि उसी उदार बादशाहके चरण शरण में पड़ूं वह मेरी आपत्ति को सुन अवश्य कृपाकरेगा सो कई मास के पश्चात् इस नगर के दरवाज़ेपर पहुँचाथा कि सूर्य्य अस्त होगये चाहा कि किसी स्थान पर जाय रात्रि व्यतीतकरूं कि जिसमें कुछ सावधानता प्राप्तहो यह इच्छाकर थोड़ी दूर चलाथा कि इतने में दूसरा योगी जो मेरे निकट बैठाहै आया और मुझे प्रणामकिया मैंने उसे प्रणाम का उत्तर दे कहा तुमभी मेरे समान अन्यदेश के बासी जानपड़ते हो उसने उत्तरदिया कि तुम सत्यकहतेहो मैं इस नगरमें अभी पहुँचाहूं यह बार्त्तापूरी न होचुकी थी कि इतने में तीसरा योगी आय पहुँचा और प्रणामकररहा मैं भी अन्यदेश का बासीहूं फिर हम तीनोंने एकहीरूप और प्रकारके कारण भाइयोंके समान परस्पर मिल अलग होने की इच्छा न की हम सब इसी बिचारमेंथे कि रातको कहांरहेंगे क्योंकि पहिले कभी इस नगर में न आये थे और न किसी स्थान और नगर के बासीको जानते थे कि जहांजाय रात्रि व्यतीत करें निदान अपने अच्छे भाग्य से हम तुम्हारे दरवाज़े पर आये तुमने आतिथ्य के भांति पालनकर हमको अपने स्थानपररख अति आनन्द दिया कि हम उसका धन्यवाद नहीं करसक्ते हे सुन्दरी! यह

मेरा वृत्तान्त है जो मैं आपकी आज्ञानुसार वर्णन करचुका जुबैदा ने कहा तेरा अपराध क्षमाकिया यह सुन उस योगीने बिनतीकी कि यदि मुझे आज्ञाहो तो यहां ठहर दोनों अपने साथियों और तीन उन मनुष्यों का वृत्तान्त जो वर्त्तमान हैं सुनूं फिर मैं चलाजाऊंगा जुबैदाने उसको आज्ञादी वह एक ओर जा बैठा यह पहिले योगी की कथा सबको अद्भुत अपूर्व्व जानपड़ी फिर दूसरे योगीने जुबैदासे अपने वृत्तान्त को इस प्रकार कहना आरम्भ किया॥

## दूसरे योगीकी कहानी॥

दूसरे योगीने पहिले योगीके समान जुबैदाकेसम्मुख अपनेवृत्तांत को इसप्रकार पर कहना आरम्भकिया कि हे सुन्दरी! आपकी आज्ञानुसार अपनी आंखका फूटना और उस कहानीमें अपनासम्पूर्ण वृत्तान्त आपके सम्मुख बर्णन करताहूं सुनिये बाल्यावस्थासे मेरे पिताने मुझको विद्यामें आरूढ़पाय बहुत दूर २ के देशों से विद्यावान् और शिल्पकर्म के जाननेवाले मेरे पढ़ानेके वास्ते इकट्ठाकिये कुछ समय में मैंने लिखना पढ़ना सीख कलामुल्ला याद करलिया और सिवाय इसके स्मृति शास्त्रादिक अपने गुरुओं से पढ़लिये और प्रत्येक शिल्पविद्या और इतिहास पहेली और काव्य और सरसवार्तिक अच्छेप्रकार सीखलिये और काव्यादिक विद्या और गणितविद्या आदि पढ़ अद्वितीय होगया और सिपाहगरी कि जो शाहज़ादे को अवश्य चाहिये प्राप्तकी और सातप्रकार का लिखना सीखा कि मेरेसमान उस समय में दूसरा कोई न लिखताथा इस विद्या और गुणके होनेपरभी ईश्वरने मेरे प्रारब्धकीचिट्ठी ऐसी बुरी लिखी कि मेरी विद्या कुछ काम न आई और इस दशाको पहुँचाया कि जो वर्त्तमानहै हे सुन्दरी! मैं अपने पिताके सम्पूर्णराज्यमें बहुत विद्याहोनेके कारण विख्यातथा इसमें हिन्दुस्तानका बादशाह मेरे देखनेकी इच्छा करनेलगा और एक दूतको बहुमोल्य उत्तम २ वस्तु सहित भेज मुझे बुलवाया मेरे पिता इन बातसे अत्यन्त प्रसन्न हुये और समझे कि शाहज़ादे को देशोंकी सैर करना और देखना और बड़े २ बादशाहोंकी सभामें जानाभी अवश्य है और

इसका जाना हिंदुस्तान और हमारे में अधिक प्रीति और मित्रता का कारण होगा सो मैं अपने पिताकी आज्ञानुसार कुछ सेवक और बस्तु साथले दूतके साथ चला क्योंकि इतने दूर सफ़र में अधिक बस्तु और आदमियों का लेजाना कठिनताका कारण था चलते चलते ५० सवार शस्त्रसहित राहलूटनेवाले दिखलाई दिये और हम सबको घेर लिया मेरेसाथ दशघोड़े कि जिनपर उत्तम २ बस्तु और सामग्री लदीथी जो अपने पिताके नामसे हिन्दुस्तान के बादशाह के निमित्त लिये जाताथा यदि मेरे सेवकों ने प्रथम उनका सामना किया परन्तु पराजितहुये तब हमने उन ठगोंसे कहा कि हम बादशाह हिंदके दूतहैं हमें बिश्वास था कि ऐसे बड़ेभारी बादशाहका नामसुन तुम हमसे कुछ न कहोगे और इसी कारणसे हमारेप्राण और धनकीहानि न होगी यह सुन मार्ग लूटनेवालों ने बड़ी ढिठाईसे उत्तरदिया कि हम हिन्दके बादशाह को क्या समझतेहैं न तो हम उसके नौकर और न उसके देशमें रहतेहैं इतना कह उन्होंने हमको चारों ओरसे घेरलिया यदि मैंने अपनी सामर्थ्य भर अपनी रक्षाकी निदान घायलहुआ और देखा कि वह दूत और सब मेरेसंगी मारेगये तब मैं अपने घोड़े समेत कि वह भी घायल होचुकाथा वहांसे अपने प्राणकी रक्षाके हेतु भागा और घोड़ा दौड़ा कर लुटेरोंसे बहुत दूर निकलगया घोड़ा कि वहभी घायलथा और दौड़ने के कारण थकगयाथा गिरकर मरगया उससमय मैंने बहुत ढाढ़स किया और समझा कि ठगोंने इतना द्रव्य लूटकर पाया है उसकोछोड़ मेरा पीछा न करेंगे हे सुन्दरी! उससमय मेरे अकेलेपन और दीनतापर ध्यान कीजिये कि एकतो मैं कई दिनोंका थकाथा दूसरे घायल तीसरे अकेला और उस ग्राममें मुझे कोई नहीं जानताथा कि मेरी सहायता करता इसके बिशेष यह भयथा कि फिर मुझे ठगदेख पहिंचान न लें और मारडालें सो मैं अपनाघाव बांध एक ओरको चला सायङ्कालको एकपहाड़के नीचेपहुँचा और उस की कन्दरा में सोरहा भोरको उस गढ़ेसे बाहरनिकला और क्षुधासे दुःखित हो बनके फल जो दिखाई पड़े तोड़कर खाये जब मेरे श-

रीरमें सामर्थ्य आई तब वहांसे आगे चला इसीप्रकार भटकते २ कई मंज़िलें इस आशापर पूरीकीं कि कहीं बस्ती देखाईदे कि वहां जा श्रमदूरकरूं निदान कई एक मासके पश्चात् एक बहुत बड़े नगरमें पहुँचा कि बहुत बसाहुआथा और उसका जल और वायु अति उत्तम था और खेती बाड़ी भी अच्छीथी और उसके चारों ओर बहुतसी नदी थीं इस कारण वह सदैव हरा और उत्तम रहताथा उसकी उत्तम वायु और जल देख मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और सम्पूर्ण दुःख और क्लेश कि मुझपर पड़े थे भूलगया तब हे सुन्दरी! उससमय मेरी यह दशाथी कि वस्त्रफटे नङ्गेपांव और धूपसे जलकर कालाहोगयाथा इसी दशामें मैं उस नगरके बीचमें गया कि मालूमकरूं इस नगरमें कौनसी भाषाहै और मेरादेश इस स्थान से कितनीदूरहै यह विचार एकसूचीकारके निकटगया उसने मुझे देख अपने समीप बैठाया और पूछा कि तुम कौनहो और कहांसे आये मैंने उससे अपनासम्पूर्ण वृत्तान्तबताया सूचीकारने मेरे वृत्तान्तको चित्तदे सुना और जबमैं सब अपनावृत्तान्त कहचुका तब उसने धीरज देनेके विपरीत और मुझेअधिक डराकर कहा कि यह अपनी कहानी यहांके किसी रहनेवाले से न कहना और उससे भलाईका विश्वास न रखना क्योंकि यहांका बादशाह तेरे पिताका बैरी है जो वह तेरे आनेका वृत्तान्तसुनेगा तो तेरेसाथ अवश्य अनुचित करेगा सूचीकारसे मैंने यह वृत्तान्तसुन जाना कि इसने मेरे साथ बड़ाउपकार कियाहै धन्यवाद किया और कहा कि तुमने मुझको इस बातसे चैतन्य किया मैं किसीसे अपना वृत्तान्त वर्णन न करूंगा हे सुन्दरी! फिर मैंने वहांके वासियों से अपना वृत्तान्त और अपना और अपने पिताका नाम न कहा फिर वह सूचीकार मुझे भूखा जान मेरेलिये खानेको लाया और अपने घरमें लेजाय रहने के वास्ते स्थान दिया मैं उसमें रहनेलगा जब सूचीकारनें देखा कि इसकी थकावट दूरहोगई पूछा कि तुम्हें कोई विद्या ऐसी आतीहै कि जिस से तुम अपनी जीविका प्राप्त करो मैंने कहा मैं अपनी विद्या और व्याकरण और लेखकी और काव्य आदिमें अद्वितीयहूं सूचीकार

ने कहा इन सबसे कि जिनका तुमने नाम लिया इस नगर में एक ग्रासभी न प्राप्त करसकोगे इस नगरमें विद्याकी कुछ पूंछ नहीं जो मेराकहना मानो तो तुम बलवान् और सामर्थ्यवान् विदित होते हो एक जांघिया बनवाकर पहिनलो और बनसे जलाने के वास्ते काष्ठलाके इस शहरके बाज़ार में बेंचाकरो तुम्हें इतना होगा कि दूसरे मनुष्य की सहायता बिना अपनी जीविका प्राप्त होगी थोड़े दिन इसी श्रमसे अपना कालक्षेप करो परमेश्वर तुमपर दया करेगा और ये दुःख जो तुमपर छाय रहाहै निवृत्त होगा तुमको मैं एक कुल्हाड़ी और एक रस्सी मँगवादूँगा हे सुंदरी! मैंने जीविकाके हेतु इस नीचकर्म्मको अङ्गीकार किया सूचीकारने दूसरे दिन मेरे वास्ते कुल्हाड़ी और रस्सी और घुटन्ना मोल लेदिया और मुझे उन मनुष्योंकोसौंपा जिनकी जीविका लकड़ी बेंचनेपर थी और उनसे कहा कि इस मनुष्यको अपने साथ लकड़ी काटनेको वनमें लेजाया करो मैं उन लकड़िहारोंके साथ बनमें जाता और बड़ा गट्ठा काष्ठका काटलाता और उसे बाज़ार में लेजाकर एक सोनेके टुकड़ेको कि चलन उस शहरका यही था बेंचता यदि काष्ठकावन उस नगर से बहुत दूर न था परंतु लकड़ी वहां बहुत महँगी बिकती थीं क्योंकि वहांके वासी आलस्यसे इस कार्य्यको न करते थे कि जंगल में जावें और लकड़ियोंको काटें और अपने शिरपर लावें थोड़े दिनोंमें मैंने बहुतसा सुवर्ण इकट्ठाकिया और उसमें से थोड़ासा उस सूचीकार के उपकारके बदले में जो मेरे साथ किया था उसको दिया इसी प्रकार मुझे एक पूरा वर्ष व्यतीत हुआ एक दिन उस वन से मैं और आगे बढ़गया और वह स्थान मुझे बहुत अच्छा मालूम हुआ मैं काष्ठकाटने में लगा जब एक वृक्ष ऊपर से काटचुका और जड़ उसकी काटनेलगा तो दैवयोगसे उस जड़के नीचे मुझे एककड़ा जो लोहेके दरवाज़े में लगाथा देखपड़ा मैं तुरन्त वहांकी मट्टीहटा कुल्हाड़ी और रस्सीसहित नीचेउतरगया तो अपनेको एक बड़ेभारी घरमें पाया और उसमें पृथ्वीके सदृश प्रकाशथा फिर मैं आगे गया वहां एक बड़ा लम्बा दालान पाया जिसके पाये मूसापत्थरके और

खम्भे ऊपरसे नीचेतक सुवर्णके बनेहुये थे उसमें एकसुन्दरी परम रूपवती मेरी दृष्टिपड़ी कि जिसके देखतेही मैंने दूसरीओर न देखा मैं उसके सम्मुखगया और प्रणामकिया उस सुन्दरीने मुझसे पूछा तू कौनहै मनुष्यहै वा पिशाचहै मैंने अपना शिर उठाके कहा हे सुन्दरी ! मैं मनुष्यहूं पिशाचनहीं उसस्त्रीने ठंढीश्वासले कहा तू यहां क्योंकर आया मुझे पच्चीसवर्ष से अधिक व्यतीतहुये कि यहां रहतीहूं परन्तु सिवाय तेरे अन्य मनुष्यको नहीं देखा उस स्त्रीके रूप अनूप और नम्रता और उसकी छवि और कोमल बचन पर मैं ऐसा मोहितहुआ कि मुझे बोलनेकी सामर्थ्य न रही निदान उसकी प्रियवाणीसे थोड़ीदेरके पश्चात् मुझे बात कहने की सामर्थ्य हुई तब मैंने बिनती की कि वृत्तान्त मालूम होजाने के पहिले केवल तुम्हारे देखनेही से मैं प्रसन्न और हर्षयुक्त हुआ और अपने सब दुःख और क्लेशको भूलगया और चाहताहूं कि तुम्हें इस बुरीदशा से छुड़ादूं फिर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णन किया और कहा मैं तुमको इस दशामें देखनहींसक्ता उसस्त्रीने उश्वासभरकहा हे शाहज़ादे! तू सत्य कहताहै इस धन और बस्तुके होने पर भी मुझे इस जादू के स्थान में भी रहना अच्छा नहीं लगता तुमने सुनाहोगा कि अबूतैसरसनाम बड़ा बादशाह आबोनी द्वीपोंकाहै जहां आबनूसकी लकड़ी पैदा होती है मैं उसी बादशाहकी पुत्रीहूं मेरे पिता ने मुझको अपने भतीजे के साथ कि वहभी शाहज़ादाथा बिवाह करादिया जबकि अपने पति के घर जानेलगी तब एक दुष्ट पिशाच मुझको लेकर वहांसे उड़ा मैं उसी समयमें बेसुधि होगई तीनपहर के पश्चात् जब मैंने सुधि सँभाली तो अपने को इस घरमें पाया तभीसे मैं इस घरमें रहतीहूं और इस पिशाचके निकट मेरा उठना बैठनाहै इस धन और बस्तुसे जो यहां वर्त्तमानहै मुझे कुछहर्षनहीं केवल सामग्री और सजधजसे धैर्य्य नहीं होता दशवें दिन वह पिशाच यहां आता और केवल एक रात मेरे पास रहता है उस का बिबाह किसी और स्त्री के साथ हुआ है इसलिये अपनी स्त्री के भय से सदैव नहीं रहसक्ता और यदि दश दिनके मध्यमें कभी

मुझे उस पिशाच का बुलाना स्वीकार हो तो केवल जादूकी बस्तुके छूनेसे कि वह मेरे शयनस्थानके समीप बनाहुआहै उसके स्पर्श से वह आजाताहै उसको यहां से गये चारदिन व्यतीतहुयेहैं छः दिन के पश्चात् वह फिर यहां आवेगा जो तुम्हें मेरा संग और यहांका रहना अंगीकार हो तो पांचदिवसतक यहां रहो मैं तुम्हारी भली भांति प्रतिष्ठाकरूंगी यह बचन सुन मैं अत्यन्त प्रसन्न हुआ और इच्छारखताथा कि किसीप्रकार उस घरमें ऐसी स्वरूपवान्स्त्रीके निकटरहूं मुझे अंगीकार करतेही वह मुझे एकसुन्दर स्नानागार में लेगई जब मैं स्नानकर बाहर आया तो उत्तम २ सोनहरी पहिरने के बस्त्र दिये उनको मैंने पहिना कि जिनके पहिनने से और भी उसकी दृष्टि में अच्छा विदित होने लगा तदनन्तर हम दोनों एक बड़े सुन्दर दालान में मसनदपर जो कि सुनहली कीमखाब से सजाहुआथा बैठे उसने मेरे आगे नानाप्रकार के स्वादिष्ठव्यञ्जन लायधरे और मेरेसाथ बैठ भोजनकिया जब रात्रिहुई मुझे अपने शयनस्थानपर लेजाय सुलाया दूसरे दिन भोरको उत्तम २ पाक बनाये और भोजन के विशेष मेरी प्रसन्नता के अर्थ पुराने मदिराकी बोतललाई और कई गिलास मुझको पिलाये जिसके पीतेही मैं मस्तहुआ उसी दशामें मैंने उससे कहा हे प्यारी! तुम बहुत बर्षोंसे इस पृथ्वीमें बन्दहो मानों जीतेही क़बरमेंहो अबतुम मेरेसाथ चलो और संसारकी हवा खाओ कि जिससे तुमको प्रसन्नताहो और इस थोड़े उजियाले को जो केवल जादूसेही है परित्याग करो यह सुन उस सुन्दरी ने कहा ऐसी अनुचित बार्त्ता मतकरो मुझे सूर्य्य का उजियाला जो तुम कहतेहो न चाहिये मुझको यहीं रहनेदो नवदिन तुम यहीं रहाकरो दशवां दिन उस पिशाच को छोड़दो मैंने कहा तुम पिशाचसे बहुत डरतीहो मैं अपने प्राणके वास्ते कुछभी नहीं डरता उसकी जादूकी बस्तुको तोड़ और जादू जो कि उसपर कुछ लिखी है बिनाश करदूंगा उसको आनेदो देखूं वह कैसा बलवान् और बिकराल स्वरूप है उसके लिये एकहाथ मेरा बहुत है मैंने प्रण किया है कि सब पिशाचों को संसार से नष्ट करदूं और

सब के प्रथम इस पिशाचको मारूं वह स्त्री इस अनुचितकर्म के फल को अच्छीतरह जानती थी मुझको सौगन्द देकर कहनेलगी कि चैतन्यरह इसमें हाथ न लगाना नहीं तो हम तुमदोनों मारेजायँगे मैं पिशाचों के हाल और सामर्थ्य को अच्छीतरह जानतीहूं मैंने म-दिराके नशे में उसका उपदेश कुछ न सुना और उस जादूकी वस्तु को तोड़डाला इतने में बड़े ज़ोर से वह महल हिलनेलगा और उसके साथ एक भयानक शब्द बादलके गर्जने के समानहुआ और चारों ओर अँधेराहोगया बिजली के समान प्रकाश होनेलगा इस अद्भुत और भयानक दशाको देख नशामेरा जातारहा और सुधिसँभाल शोचा तूने बड़ा अनर्थ किया फिर मैंने उसस्त्री से पूंछा अब क्याकिया चाहिये उसने अपने प्राणका डर न कर मेरेवास्ते बहुत कुढ़ी और पश्चात्तापकर उत्तरदिया कि तुम इस आफ़तको आपही अपने शिर परलाये अब यहांसे भागो और अपने को बचाओ यहसुन मैं वहां से ऐसा घबड़ाकर भागा कि अपनी कुल्हाड़ी और रस्सी को वहीं छोड़-दिया और शीघ्रही उठते बैठते उसी सीढ़ीतक कि जिससे उस मकान में उतराथा पहुँचा इतने में वह भी क्रोधितहो वहां आनपहुँचा और उस सुन्दरी से अति क्रोधितहो पूंछा तूने मुझको क्यों बुलाया उसने भययुक्त और कम्पायमान होकरकहा मैंने इस बोतलसे थोड़ीसी म-दिरापीथी जिसको तू देखताहै सो नशेमें मेरापांव इसपर अनजाने से लगा सो यह टूटगया इससे तुझको ख़बरहुई मैंने तुमको नहीं बुलाया यह सुनतेही पिशाचने आगबबूलाहो उस सुन्दरी से कहा तू कुक-र्मिणी और दुष्टहै इस कुल्हाड़ी और रस्सीको यहां कौन लाया स्त्रीने कहा मैंने अबतक इसे नहीं देखा जल्दीसे तुम आयेहो तुम्हारेहाथसे लगीहुई चलीआई होगी तुम ने मार्गमें इसे न देखाहोगा पिशाच ने उस स्त्रीको बुराभलाकह बहुतमारा जिससे वह तड़पने और रोनेलगी उसके रोनेके शब्द न सुनेजाते थे और वह मारधाड़ कि जो उसपर पड़तीथी और चिल्लाना उसका सुनकर वह मेरी दशाहुई कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता निदान मैंने वह वस्त्र जो कलके दिन स्नान कर पहिने थे उतारे और निजवस्त्र पहिन उस सीढ़ी से ऊपर चढ़आया

और अपनेको बुराभला कहनेलगा बड़ापश्चात्तापहै कि मेरे अज्ञान-
'पन और निर्बुद्धितासे यह दुःख उस स्त्रीपर होरहा है यदि वह २५ वर्ष
से उस घरमें बन्दहै परंतु कभी ऐसादुःखइस पिशाच के हाथसे न हुआ
होगा फिर मैंने उसलोहेके किवाड़को मट्टीसे बन्दकराछिपादिया और
बोझा लकड़ियों का कि आगे से इकट्ठाकर रक्खाथा शिरपर रख उस
नगरमें आया और विचारताथा कि देखिये इस कर्म से मुझे क्यादुःख
पहुँचताहै अत्यन्त क्लेशितथा जब मैं अपने स्थानपर आया वह
सूचीकार मुझे देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ और कहनेलगा कि तुम्हारे
कलके न आनेसे मुझे अत्यन्त चिन्ताथी कि ऐसा नहो तुम्हारा पुरा-
ना वृत्तान्तसुन यहांके अधिपतिने क़ैद न कियाहो परमेश्वरका धन्य-
वादहै कि तुमजीने जागते फिरआये मैंने उसकी प्रीतिपर धन्यवाद
किया परंतु वहकर्म कि जो मुझसे हुआथा उससे न कहा और अपने
मकानमें जाकर अपनी अज्ञानता पर धिक्कार देतारहा कि जो मैं उस
जादूकी बस्तुको न तोड़ता तो वह राजपुत्री इसदुःखमें न पड़ती और
मैं नौ दिनतक अच्छेप्रकार रहता इसीचिन्तामें था कि उस सूचीकार
ने मेरे निकट आय कहा कि एकवृद्ध जिसे मैं नहीं जानता तुम्हारी
कुल्हाड़ी और रस्सी हाथमें लेकर आयाहै और कहता कि मैंने इन
दोनों बस्तुओं को मार्गमें पायाहै कोई तुम्हारे साथियोंसे कि जिनके
साथ तुम लकड़ी काटने जाया करतेहो उनकी जानपड़ती है चलके
अपनी बस्तुको पहिचानकर लेआओ वह बिना तुम्हारे न देगा इस
बातके सुनतेही मेरामुख बदलगया और शिरसे पैरतक कांपनेलगा
सूचीकार मुझसे भयका कारण पूछनेलगा अभी मैंने उसे उत्तर न
दियाथा कि एकहीबेर मेरे कोठेकी धरती फटगई और वह पिशाच
मेरे आनेतक की राह न देखकर कुल्हाड़ी और रस्सीलिये प्रकटहुआ
और सचमुच वह वृद्धपिशाचथा फिर उसने कहा मैं पिशाचहूं नवा-
सा इबलीसका जो पिशाचोंका बादशाहहै और उस कुल्हाड़ी और
रस्सीको दिखलाकर कहा यह तेरीहै या नहीं उसने मुझे उत्तर देनेका
अवकाश न दिया यदि मुझको उस बिकराल स्वरूप देखनेसे उत्तर
देनेकी सामर्थ्य नहींथी और बेसुध होगयाथा कमरसे मुझे पकड़ बाहर

खींचलाया और एकहीबेर आकाशकी ओर एकपलमें इतने ऊंचेले उड़ा कि जिसके चढ़नेमें कईमास व्यतीतहोते फिर उसने धरतीपर उतर एक ठोकर मारी जिससे धरती फटगई वह मुझको लियेहुये समागया एक घड़ीकेपीछे मैंने अपनेको उस जादूके घरमें उसी राजपुत्री के सम्मुख पाया परंतु बड़ा पश्चात्तापहै कि उसको नग्न लोहूलुहान अधमरी तड़पतीहुई पृथ्वीपर लोटती देखा फिर उस पिशाचने मुझको उस राजपुत्रीका हाल दिखलाकर कहा कि निर्लज्ज यही तुझ पर मोहितहै उसने ढीलीदृष्टि देख कहा मैं इसको नहीं जानती इस समय के सिवाय और कभी मैंने इसको नहीं देखा पिशाचने कहा क्या तू सत्य कहती है कि इसको कभी नहीं देखा यही मनुष्य तेरेवध करनेका कारणहुआ राजपुत्रीने कहा तू चाहताहै कि मैं असत्य कहूं कि मैंने देखाहै कि तू उसे मारडाले फिर पिशाचने खड्ग राजपुत्रीको दे कहा जो तूने इसको आगेनहीं देखाहै तो इसखड्गसे इसका शिरकाट राजपुत्रीने कहा मुझमें इतनी सामर्थ्य कहांहै कि खड्गको उठासकूं और इसके सिवाय मैं एक निर्दोष मनुष्यको क्योंमारूं पिशाचने कहा तेरे इन्कारसे पाप स्पष्ट जान पड़ताहै फिर पिशाचने मुझसे कहा तू इसको जानताहै और इसको आगे देखाहै मैंने बिचारा जब इस राजपुत्रीने कि वह स्त्री होकर इतना और पास मेराकिया यदि मैं उस बातको प्रकटकरूं तो अत्यन्त अशीलताहै मैंने भी इन्कार किया कि केवल मैंने इसी समय देखाहै उसने कहा जो तू सत्य कहता है तो खड्गसे उसका शिर काटडाल मैं तुझको छोड़दूंगा और जानूंगा तू सच्चाहै मैंने खड्गको पिशाचके हाथसे लेकर अपने मन में बिचारा कि बड़ा शोचहै कि इस निर्दोष सुन्दरीको जो मेरेही अपराधसे अपराधी हुई और इस दुःखमें पड़ी है उसे मैं मारूं और अपने प्राण बचाऊं यह मुझसे कभी न होगा और उस स्त्रीने मेरी ओर देख और मेरी चेष्टासे मेरे मनकी बात मालूमकर सैनसे कहा कि मैं तो मरनेके निकटहूं अपने प्राण बचानेवास्ते मुझको मारडाल मैं इसमें प्रसन्नहूं तदनन्तर मैंने पीछेको हट और खड्गको हाथसे फेंक पिशाचसे कहा मैं नपुंसक नहीं कि उसको जिसे नहीं जानता मारूं

इसके सिवाय ऐसी सुन्दरी कि घड़ी पलकी होरहीहै अब जो तेरामन चाहे वह कर मैं तेरे आधीनहूं परन्तु यह काम मुझसे कदाचित् न होगा पिशाचने कहा तुम दोनोंने मेरेक्रोधको बढ़ाया और तू जानता है कि मुझमें कितनी सामर्थ्य है इतना कह उस दुष्टने दोनोंहाथ उस स्त्रीके काटडाले सो उसने उसीसमय देह त्यागदी क्योंकि पहिले घावों से सम्पूर्ण रुधिर उसके शरीरसे निकल गयाथा इस दशाको देख मुझे मूर्च्छा आगई जब चैतन्यहुआ तो महा ब्याकुल हुआ और पिशाचसे कहा अब तुरन्त मुझेभी बधकर यह सुन उसने कहा हमारी यह रीति है कि जब किसी स्त्रीपर ब्यभिचार का संदेह होताहै तो उसे प्राणसे मारडालते हैं तुझको कि केवल संदेह है और तू परदेशी है इसलिये मार नहीं सक्ता तुझे यही दण्ड है कि कुत्ता वा गधा वा सुअर अथवा कोई पशु पत्नी बनाकर छोड़दूं अब जिसकी योनि चाहे उसी शरीरमें तुझे बनादूं मैंने इन बातोंसे तनक उसको ठंढापाकर कहा हे बलवान् पिशाच ! जैसे तूने मुझे प्राण दान दिये हैं आशावान् हूं कि मुझको इसी योनिमें रहनेदे यदि तू मेरा अपराध क्षमा करेगा तो मैं तेरा कृतज्ञहूंगा जैसा कि एक सत्पुरुषने अपने पड़ोसी का कि उसने उसकेसाथ बुराईकीथी अपराध क्षमा करके उसकेसाथ बड़ा उपकार किया था पिशाचने पूंछा उन दोनों पड़ोसियों में क्या हुआथा मैंने उससे कहा कि ध्यानधर के सुनिये ॥

## ईर्षा और सत्पुरुषकी कहानी ॥

एक बड़े नगरमें दो मनुष्य रहते थे और दरवाज़ा एकके घरका दूसरे के दरवाज़ासे समीप था उनमें एक मनुष्य अपने पड़ोसी से ईर्षा रखता था दूसरे सत्पुरुषको उसके बैर करने से इच्छाहुई कि इस घरको छोड़ अनत जायरहें कि यह बैर निकट रहने के कारण रखता है इससे दूसरे होजावें यदि यह ईर्षाकेसाथ सदैव उपकार करता परन्तु वह अपने बैरको न छोड़ता यहां तक कि उस सत्पुरुषने सम्पूर्ण निजवस्तु और घर बेंच दूसरे नगर में जो वहांसे डेढ़कोश दूर था एक उत्तम घर जिसमें एक उत्तम बाग़ और एक

चित्राजिन की औरत हसीना को क़तल करके मर्द से मुख़ातिब होना. ॥



अन्धा कुवां था मोल लिया और रहनेलगा फिर वह सांगोपांग योगियों के वस्त्र पहिन सन्त बनगया कि अवस्था हरिभजन से आनन्द में व्यतीतहो और कई मकान अपने घरमें बनवाये जिन में सन्तों को रख सदैव भण्डारा किया करता यह समाचार नगर में ख्यात होगया और बहुधा मनुष्य उसकी भेंटको आते और उसके सत्संग से प्रसन्नहोते इसीप्रकार उसका नाम सुन दूर २ से मनुष्य आनेलगे और उसे परमहंस समझ अपने अभिप्राय को कहना और उससे बरकी आशा रखनी आरम्भ की यहांतक कि उसकी बड़ाई और सिद्धता का समाचार उस नगर में जिसे छोड़-कर यहां आया था पहुँचा इससे उसके ख्यातका समाचार सुन ईर्षीको बड़ी दाह उत्पन्नहुई और उसके वध करने को सम्पूर्ण निजकाम छोड़ वहांगया और मन्दिरमें जाय उससे मिला तो वह सत्पुरुष अपने प्रथम के पड़ोसीको पहिचान प्रतिष्ठापूर्वक मिला ईर्षीने मक्कर और धोखा अपने चित्त में बिचार उससे कहा मुझे एक कठिन कार्य्य आय पहुँचा है जिस कारण इस नगरमें आयाहूं जो तुम कहो तो उसको तुमसे एकान्त स्थलमें प्रकटकरूं कि और कोई उसे न सुने और उससमय अपने सन्तों से कहदेना कि कोई अपने घरसे बाहर न निकले उस सिद्धने उसके अभिप्रायके अनु-सार किया जब उस ईर्षीने उस उत्तम मनुष्य को एकांत में पाया तो अपने आनेका कारण झूठमूठ चित्तसे बनाय उससे कहना आरम्भ किया और वार्त्ता में लगाय टहलताहुआ इधर उधर जाय उस कुयें के समीप लेगया और वहां पहुँचतेही सिद्धको कुयें में ढकेल दिया उस समय वहां कोई न था कि इस समाचारको देखता निदान ईर्षी अपना कार्य्यकर और मन्दिरका दरवाजा बन्दकर चुपके से भाग गया और इस कार्य्यके पूर्ण होनेसे अत्यन्त प्रसन्नहुआ और कहा कि अब इस मनुष्य की ओरसे जिसकी बढ़ती और भलाई को मैं न देखसक्ताथा मुझे धैर्य हुआ वह ईर्षी इस बिचार से धोखे में पड़ा वह सिद्ध तो भाग्यवान् था परियां जो उस कुयें में रहतीथीं हाथोंहाथ उसको लिया जिससे उसको किसीप्रकार का दुःख न

पहुँचा और कुयेंके अन्दर बैठादिया वह सिद्ध ईश्वर का धन्यवाद कर शोचा कि इस कुयेंके गिरने में भी मेरेवास्ते कुछ भलाई होगी फिर उसने चारोंओर दृष्टिकी तो कोई वहां दिखाई न दिया थोड़ी देरके पश्चात् उसने एक शब्द सुना कि कोई मनुष्य कहता है कि तुम इसको जानतेहो कि यह कौन है दूसरा शब्द सुनाई दिया कि हम इसको नहीं जानते फिर पहिले कहनेवाले ने कहा मैं तुझको इसका वृत्तान्त जनाताहूं यह मनुष्य अति शीलवान् और सिद्धहै अपना नगर छोंड़ यहां रहना अंगीकार किया कि अपने पड़ोसीके बैरसे अलगहो इस नगर में ईश्वरने उसकी सिद्धता बढ़ादी इस कारण उसकी सब प्रतिष्ठा करते हैं ईर्षी ने यह समाचार सुन अधिक बैरकिया और उसके मारडालने का बिचारकर इस नगर में आया और यहां आयके उसको इस कुयेंमें डालदिया यदि हम उसकी सहायता न करते तो मरजाता कल इस नगर का बादशाह इसके निकट आय अपनी पुत्री के अच्छे होने के आशीर्वाद की चाहना करैगा दूसरे ने पूंछा कि उस शाहज़ादी को कौनसारोग है पहिले शब्दके कहनेवाले ने उत्तर दिया कि शाहज़ादी पर मैमूं पिशाचका पुत्र डिमडिम मोहित हुआ है कि जिससे वह सदैव रोगी और बेसुध रहाकरती है और मुझे उस पिशाचके हटाने का उपाय बिदित है वह अतिसुगम है मैं उसे बताताहूं इस योगी के घरमें एक काली बिल्ली है कि जिसके पूंछके सिरेपर श्वेतचिह्न है उसी श्वेत चिह्न के स्थान से यह सिद्ध सात बाल उखाड़ अपने पास रक्खे और समयपर उन बालों को अग्नि में जला उसकी धूनी शाहज़ादी की नाकमें दे धुआं नासिकामें पहुँचतेही वह निरोग होजायगी और वह पिशाच उसके निकट कभी न आवेगा सत्पुरुष ने यह सब वार्ता जो परियों और जिन्दों में हुई थी अच्छेप्रकार स्मरण रक्खी जब भोर हुआ और उस कुयें में सूर्य्य के प्रकाश से देखा तो खन्दाने खुदेहुये पाये उनमें पांवरखताहुआ सुगमता से ऊपर आया सम्पूर्णसंत जो कि ढूंढ़ते फिरते थे सिद्ध को देख अत्यन्त प्रसन्नहुये सत्पुरुष भी सब हाल अपने चेलों से प्रकटकर

अपने घर में गया थोड़ीदेर न हुईथी कि काली बिल्ली जिसका परियों और जिन्नों ने बर्णन कियाथा आई उस सिद्ध ने उसको पकड़ सातबाल श्वेत उखाड़े और अपने पास रखछोंड़े सूर्य न उदयहुये थे कि उसनगरका बादशाह उससिद्ध के भवनपर आया और मन्दिर के दरवाज़ेपर निजसेनाछोड़ कुछ सरदारों सहित अन्दरगया वह सिद्ध उसकी अगवानीकर उसे अपने भवन में लेगया बादशाहने उससे कहा कि हे अन्तर्यामी! तुझको मेरे आगमन का हाल विदित हुआहोगा योगीनेकहा कि तुम शाहज़ादी के रोग युक्तहोनेकेकारण आयेहोगे और मुझअयोग्यको अपने चरणों से कृतार्थकिया बादशाहनेकहा सत्यहै मैं इसीवास्ते आयाहूं जो तुम्हारे आशीर्बादसे मेरीबेटी अच्छीहोजाय तो मेरा जीवन सफलहो उस सिद्धने उत्तरदिया जो आप शाहज़ादीको यहांपर बुलवाभेजें तो मैं परमेश्वरके अनुग्रह और अनुकम्पासे अच्छाकरदूं बादशाह यह सुन अतिप्रसन्नहुआ और अपनी बेटीको तुरन्तलौंडियोंसहित बुलवाया बांदियों ने उसकामुख इसतरह छिपाथाथा कि किसीकी दृष्टि उसपर न पड़े योगी ने एकचादरसे शाहज़ादीकाशिर इसतरह से घेरा कि जिससे धुआंबाहर न निकलसके फिर वे बाल तुरन्त अग्निपररख उसकीधूनी शाहज़ादीको दी इतनाकरतेही मैमूं पिशाच का पुत्र डिमडिम चिल्लाया और बड़ाशब्दकर उसने शाहज़ादीको छोड़दिया शाहज़ादी अच्छीहुई और सुधि सँभाली और शीघ्रही अपने हाथ से वस्त्रडाल मुखअपना छिपालिया और पूँछनेलगी कि मैं कहां और मुझे इस स्थानपर कौनलाया बादशाहने अत्यन्त हर्षयुक्तहो शाहज़ादी को अपने कण्ठसे लगालिया और नेत्र चूमे फिर योगी के हाथ चूमे और अपने सरदारों से पूँछा कि इस योगी के साथ कौनसाउपकार करूँ सरदारोंने एकमतहो कहा हमारे बिचार से यह उचित है कि इस शाहज़ादी का विवाह इस योगीकेसाथकरदों बादशाहने कहा कि मेरा भी यही बिचारथा फिर उसने उसका बिवाह उसयोगी के साथ करदिया थोड़े दिनोंके पश्चात् वहांका बड़ामन्त्री मरगया बादशाह ने उसयोगी को बड़ामन्त्री

नियतकिया फिर वह बादशाहभी मरगया और वह शाहज़ादी के सिवाय कोई युवराज न रखताथा सो वह योगी सेना और सरदारों के सम्मतसे अपने श्वशुरके स्थानपर बादशाहहोगया एकदिवस वह अपने सरदारों सहित सवारहोके जाताथा संयोगवश उसने अपने बैरीको बहुतसे मनुष्यों के यूथमें देखा उसयोगीने कि अब बादशाहहुआथा अपने मन्त्री के कानमेंकहा। कि उस मनुष्यको प्रतिष्ठापूर्वक सधैर्य्य जिसमें वह किसीप्रकारका भय न करै मेरेनिकट लेआ मंत्री तत्काल उसमनुष्यको बादशाहके सम्मुखलेआया बादशाहने उस अपने ईर्षीसे कहा हे मित्र! मैं तुझको देख अतिप्रसन्न हुआ फिर उसने एकहज़ार अशर्फी और बीसगठरी बस्त्रमँगाके उस ईर्षीकोदिये और एकपहरा सिपाहियों का उसकेसाथ किया कि वह उसको रक्षापूर्व्वक उसके घर पहुँचादे हे सुन्दरी! जब मैं इसकहानी को पूराकरचुका तो अपने छूटने के वास्ते पिशाचसे कहा हे पिशाच! देख तो उस शीलवान् बादशाह ने कैसासलूक अपने बैरी के साथ कियाथा और कितनाही मैंने उससे बिनतीकी कि अपनी इच्छासे हटजावे और मुझे दण्ड न दे परन्तु उसबिकरालरूप पिशाचनेमुझ परदया न कर कहा कि तुझे प्राणसे न मारूँगा परन्तु दण्ड दिये बिना न छोडूंगा अबदेख जादूसे तेरेसाथ क्याकरताहूँ यह कह उसने मुझेपकड़ा और उसभवनसे जो पृथ्वीके अन्दर उसके आनेसे खुल गयाथा लेकर ऊपरको इतनेऊँचे उड़ा कि जहां से धरती बादलके टुकड़ेके समान दीखतीथी फिर उसऊँचेसे शीघ्रही बिजलीके समान एकपहाड़की चोटीपर लैउतरा और वहांसे एकमुट्ठी मट्टीकीले कुछ उसपर मन्त्रपढ़े कि जिसका अर्थ मैंने कुछभी न समझा फिर उसको मेरेऊंपरडाल कहा कि मनुष्यका चोलाछोड़ बन्दरका स्वरूप बनजा यह जादू मुझपरकर वह पिशाच गुप्तहोगया और मैं अपने चोले को बन्दरके चोले में देख अत्यन्त दुःखित और चिन्तायुक्त हुआ और कुछ नहीं जानता कि मैं किसजगहहूँ और वहांसे मेरे पिता का देश किस ओर और कितनीदूरपर है और उसजगह से अनजानहूँ कहांजाऊँ और क्याकरूँ निदान उसपहाड़ से उतर एक

देशमें कि जिसकी पृथ्वी धरातलथी बराबर एक मासतक उसमें चलतारहा निदान एक समुद्रके तटपर कि जिसका जल कुछभी न हिलताथा गया और उसके कूलपर एक जहाज़ देखा चाहा कि किसीप्रकार वहांतक पहुँचूं इस वास्ते एकवृक्षसे टहनियां तोड़ घसीटताहुआ समुद्रके तटपर लेगया और उसको समुद्र में डाल उसपर चढ़बैठा और दोनों हाथों से दो टहनियां पकड़ तैरनेलगा और इसीप्रकार जहाज़की ओर चला जब उसके समीप पहुँचा तो जहाज़ के मनुष्य मुझको देख अतिबिस्मित हुये मैं जहाज़ की रस्सी पकड़ उसपर चढ़गया जहाज़ी मुझे बन्दर के रूप में देख अत्यन्त आश्चर्य्य में हुये यदि मुझमें बाचालशक्ति न थी इसकारण मैं अपनावृत्तान्त किसीसे कह न सका और आश्चर्य्य से सबकी ओर देखताथा और यह आपत्ति उस दुःखसे कि जिसके फन्दे में पड़ाथा न्यून न थी उस जहाज़के सम्पूर्णब्यापारी नानाप्रकार के विचार करते और मेराजहाज़ पर रहना कुलक्षण समझते इसहेतु मेरे निकालदेने का बिचार करनेलगे एकने कहा अभी एक लट्ठमार मारे डालताहूं दूसरे ने कहा रहजा इसे मैं तीरसे मारे डालताहूं तीसरा बोला मैं इसे समुद्र में डालेदेताहूं इसीप्रकार वो सब मेरेमारनेको उद्यत थे इतने में मैं दौड़कर जहाज़ के कप्तान के निकटगया और उसके चरणोंपर गिर उसका बस्त्र पकड़लिया और उसे सैनसे कहा मैं तुम्हारे शरणहूं मुझे बचावो और मेरे नेत्रोंसे आंसूचले कप्तानने मुझपर दयाकर मेरी ओरहो सबको मेरेदुःखदेने से हटादिया और कहा इस बानर से कोई न बोलैं और इसे कुछ दुःख न पहुँचावे फिर उसने मेरी ऐसी रक्षाकी कि मुझको कुछभी दुःख न पहुँचा यदि मैं बात न करसक्काथा परन्तु सैनसे उससे बात करताथा और वह मेरी सैन समझ अत्यन्त प्रसन्न और हर्षयुक्त रहता और उस समयसे अन्य मनुष्य भी मुझपर प्रसन्न होगये इसीप्रकार ५० दिन तक चला किये यहांतक कि वह जहाज़ बहुत बड़े ब्यापार स्थान में पहुँचा जिसमें बहुतसी बस्तीथी और उसमें घरभी उत्तम २ थे जहाज़ीलोगों ने जहाज़ को नगर के निकट ठहराया और वह नगर

बड़े ऐश्वर्य्यवान् बादशाह की राजधानीथी जहाज़ में लङ्गरकरतेही बहुत से मनुष्य जो उन व्यापारियों के मित्रथे नावोंपर सवारहो धन्यबाददेनेको आये और जहाज़ को चारोंदिशा से घेरलिया प्रत्येक मनुष्य अपने २ मित्रसे मिल सफ़र और समुद्रका वृत्तान्त पूंछता क्योंकि वह जहाज़ दूर २ के देशों और नगरोंमें गयाथा उस नगरके बासियोंमें कोई बादशाह के सरदारभीथे उन व्यापारियोंको बादशाह की ओर से कहते थे कि हमारा बादशाह तुम्हारे आने से अत्यन्त प्रसन्नहुआ और कहता है कि जो तुममें से कोई मनुष्य लिखने पढ़नेमें ऐसा योग्यहो कि इस काग़ज़पर कि मिस्तर कियाहुआ हमारे पासहै लिखै. कि उसकी इबारत और लिखने की परीक्षाकरे और कारण इसका यह है कि यहांका मन्त्री मरगया है और वह मन्त्री अन्य गुणोंके बिशेष इबारत अच्छी लिखता था और लिखने मे अद्वितीय था और यहां का बादशाह गुणग्राहक है उसके मरजाने से अत्यन्त शोकयुक्त रहता है और सौगंद खाई है कि जो मनुष्य पहिले मन्त्री के समान अच्छा लिखनेवाला मिलेगा उसीको मंत्री बनाऊंगा बहुत ढूंढ़ने पर भी अबतक अपने सम्पूर्ण देश में ऐसा कोई मनुष्य न पाया कि जिसे वह अपना मन्त्री बनावे सो इस काग़ज़ को तुम्हारे निकट भेजा है कि जो कोई तुम में से इनके योग्यहो और उसे मन्त्रीका स्थान लेनेकी इच्छाहो तो इस काग़ज़ पर पंक्तिलिखे जब सरदार इतना कहचुका तो मैंने आगे बढ़ उस काग़ज़ को उसके हाथ से लेलिया इससे सब जहाज़ के मनुष्य बिशेष वह व्यापारी जो लिखे पढ़ेथे चिल्लाने और बड़ा शब्द करने लगे कि अभी यह बन्दर इस काग़ज़ को चीरफार डालेगा वा समुद्र में फेंकदेगा. परन्तु जब उन्होंने देखा कि मैंने काग़ज़.को अच्छेप्रकार पकड़ा और सैन से पूंछा कि मैं इसपर लिखूं सबने चिल्लाना बन्दकिया क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण आयु में कभी किसी बन्दर को लिखते नहीं देखाथा और मेरी योग्यता'को नहीं जानते थे चाहा कि इस काग़ज़को मेरेहाथसे छीनलें परन्तु कप्तानने मेरी ओर हो कहा कि ठहरो इसकी परीक्षा लेने दो यदि उसने काग़ज़ को

ख़राब किया तो मैं तुमसे प्रण करताहूं कि उसको उचित दण्डदूंगा और जो उसने मेरे बिचारके अनुसार अच्छा लिखा तो उत्तम है मैं उसे अपने पुत्रके समान पालन करूंगा मुझको बिदितहै कि वह काग़ज़ को ख़राब न करेगा मैं और बन्दरोंकी अपेक्षा उसे अत्यन्त समझदार और बुद्धिमान् पाताहूं जब मैंने देखा कि मुझको अब कोई नहीं मना करता लेखनी ले चारप्रकार के चारकाव्य ऐसे लिखे कि न कोई व्यापारी और न कोई उस नगर का बासी लिखसक्ताथा जब मैं लिखचुका तो सरदारजाय उस काग़ज़को बादशाहके सन्मुख लेगया बादशाहने मेरे लिखने और काव्यको पसन्द किया व अपने सरदारोंसे कहा कि एक बड़ाभारी खिलतलेजाय उस मनुष्यको देव जिसने इस काग़ज़को लिखाहै पहिनाके और एक अश्व हमारे अश्व-शालासे लेजावो और उसे सवार कराय लेआवो यह आज्ञापातेही वह सरदार मुसुकराया जिससे कि बादशाह अत्यन्त क्रोधित हुआ और दण्ड देनेकी आज्ञाकी उसने बिनतीकी कि हे स्वामी! हमारा अपराध क्षमाकरो लिखनेवाला इसका मनुष्य नहीं किन्तु बानरहै बादशाहने कहा क्या ये पंक्ति मनुष्यकी लिखी नहीं एकने उन सरदारोंसे बिनयकी कि हे स्वामी! हमने अपनी आंखोंसे देखा कि इसको बन्दरने लिखाहै बादशाह इस बातसे आश्चर्य्यित और बिस्मित हुआ और मेरे देखनेकी अत्यन्त लालसाकी और उन सरदारोंसे कहा कि शीघ्रही ऐसे अपूर्व बन्दरको सवारकर मेरे सन्मुख लेआवो सरदार जहाज़ पर फिर गये और बादशाह की आज्ञा कप्तानसे कही उसने कहा बहुत अच्छा मैं इसे भेजताहूं फिर मुझे कारचोबी बस्त्र पहिना समुद्रके तटपर लेआये और घोड़ेपर मुझे सवारकिया इधर बादशाह अपने सभासदों सहित मेरे आगमनकी राह देखते रहे और मेरी अगवानीको सबप्रकारके मनुष्य इकट्ठा किये और नगरके छोटे बड़े मनुष्य और स्त्रियां मेरे देखने को कोठों और मार्ग्ग में इकट्ठा हुये क्योंकि यह वृत्तान्त अर्थात् बादशाहने एक बन्दरको अपना मंत्री बनाया है सम्पूर्ण नगरमें ख्यात होगया था लोग मुझे देख हँसते और चिल्लाते जब मैं बादशाही मकान में पहुँचा बादशाहको राज-

सिंहासनपर बैठेदेखा और उसके सिंहासनके चारोंओर मंत्री और उस बादशाहके सम्पूर्ण भृत्य इकट्ठा थे मैं तीनबार प्रणामकर हाथ जोड़ खड़ाहुआ और वहां जितने वर्त्तमानथे इस अपूर्व वृत्तान्तको देख आश्चर्य्यितहुये कि हमने आजतक ऐसा बन्दर नहीं देखा इसीप्रकार बादशाह भी इस बात से अत्यन्त विस्मितहुआ फिर बादशाहने सम्पूर्ण सभासदोंको बिदा किया केवल मैं और दारोगा जो अत्यन्त वृद्धथा बादशाहके पास रहगये फिर बादशाह ने सभा से घरमेंजाय नानाप्रकारके व्यंजन मँगाये और मुझे सैनसे खाने को बुलाया मैं प्रणामकर बैठगया और बड़ी तमीज़से खाना आरम्भ किया जब भोजन करचुके और बरतन वहांसे उठगये मैंने एक क़-लमदान देख उसे सैनसे मँगाया जब वह क़लमदान मेरे सन्मुख आया मैंने उसमें से एक बड़ा काग़ज़ले बादशाहके धन्यबाद का काव्य बनाय बादशाहके सन्मुख किया बादशाह उसे पढ़ अत्यन्त आश्चर्य्यित हुआ और पहिले से अत्यन्त प्रसन्नहुआ और इसके पश्चात् बादशाहने सेवकोंको सैनदी कि इसेभी मदिरा पिलाओ सो उन्होंने एक गिलासमुझेभी दिया मैंने उसे पी एक नयेप्रकारका काव्य इस विषयका अपने सम्पूर्ण आपत्ति और उस बादशाहकी गुणग्रा-हकतासे जो आनन्द और चैन प्राप्तहुआ लिखा बादशाहने उसे पढ़ चित्तमें कहा कि इस बन्दरके समान कोई भी संसारमें नहीं फिर उसने सतरंज मँगाई और मुझसे सैनसे पूंछा यह खेल जानते हो इससमय खेलनेका जी चाहताहै उसके उत्तरमें मैंने धरती को चूम अपना हाथ शिरपर रक्खा अर्थात् मैं खेलने को तत्परहूं प-हिली बाजी बादशाह जीता और दूसरी तीसरी मैं जीता बादशाह को दो बाजीके हारने से कुछ ग्लानताहुई इसके धीरजके वास्ते मैंने काव्य इस विषयका लिखकर दिया अर्थात् दो योद्धाओं ने परस्पर दिनभर युद्धकर सायङ्काल को मेल किया और रात्रिको उसी युद्ध स्थान में आनन्द से सोरहे बादशाह इसकी बुद्धिमत्ता को देख अतिआश्चर्य्यित हुआ और सभासदों से कहा कि मैंने किसी बंदर को ऐसा योग्य और हाज़िर जवाब न देखा और न सुना फिर चाहा

कि ऐसा अपूर्व्व और अद्वितीय बन्दर अपनी पुत्री मल्कै हुसन को दिखावे उसने ख्वाजेसराओं के दारोगा को आज्ञाकी कि तू अपनी बीबी को यहांपर बुलाला कि वह भी इस चरित्र को देखे दारोगा राजद्वार से राजपुत्री को बुलालाया शाहज़ादी वहां से बादशाह के सम्मुख मुख खोले गई और वहां मुझे देखतेही उसने तुरन्त अपने मुखको ढांपलिया और बादशाह से बिनयकी कि आपको क्या होगया कि आप मुझको बिराने मनुष्यके सम्मुख बुलाते हैं बादशाहने उत्तरदिया मुझको जानपड़ता है कि तुम बेहोशीसे बातें करतीहो इस स्थानपर मेरे व तुम्हारे ख्वाजेसराय के सिवाय और कोई नहीं तुम जो सदैव मुखखोले मेरे सम्मुख आया करतीहो इससमय क्यों अपने मुँहपर वस्त्रडाले आईहो और इस के बिपरीत तुम्हें मेरेभूलका बिचारहै शाहज़ादीने बादशाह से बिनयकी कि आप अच्छेप्रकार जानलें कि मेरी कुछभी भूल नहीं मैं सच कहतीहूं कि यह बन्दर सचमुच मनुष्य और बड़े बादशाहका पुत्रहै जादूकेकारण बन्दरहोगया इबलीसके पुत्रने बादशाह अबूत्तैमुरस अबोनीद्वीपकी शाहज़ादीके मारनेके पश्चात् इस शाहज़ादे को जादूसे बन्दर बनाडालाहै बादशाह यह बात सुन अत्यन्त बिस्मितहुआ और मुझसे पूँछा कि यह बात सचहै मैंने अपना हाथ शिरपररख सैनसे कहा जो इस शाहज़ादीने कहा सो ठीकहै फिर बादशाहने अपनी शाहज़ादी से पूँछा तुझे क्योंकर बिदित है कि यह शाहज़ादा बन्दरहोगया शाहज़ादी ने उत्तर दिया आपको स्मरण होगा कि जब दूधमेरा छुड़ायागयाथा मेरेपालन और उपदेशके अर्थ जो वृद्धाथी वह जादूकी विद्यामें अतिनिपुणथी उसने मुझको सत्तर पर्व मन्त्रविद्याके सिखलाये जिससे मुझमें इतनी शक्तिहै कि तुम्हारे सम्पूर्ण देश को यहांसे उठा समुद्र में डालदूं मुझको उन मनुष्यों का हाल जो जादूके कारण अन्ययोनिमें प्राप्तहों अच्छेप्रकार बिदित है देखतेही जानलेतीहूं कि इसमनुष्यपर किसीने जादू कियाहै और इसकारण उसपर जादूहुआ और जिस मनुष्यने इसपर जादू किया मैंने एकही बेरके देखनेमें पहिचानलिया जिसको आप बन्दर जा-

नतेहैं बादशाहने कहा हे शाहज़ादी! मैं तुझे ऐसीगुणवतीन जानता था शाहज़ादीने कहा हे पिता! यह भेदहै हरएक मनुष्यको सीखना उचित नहीं मैं कुछ इसमें झूठ नहीं कहती बादशाहने अपनी शाहज़ादीसे कहा तुम्हें इतनी सामर्थ्यहै इस शाहज़ादेकी जादू दूरकर फिर उसको अपने स्वरूपमें बना दो शाहज़ादी ने कहा निस्सन्देह मैं बनासक्तीहूँ बादशाह ने कहा कि तुम इसको पहिली सूरत में लाओ तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकारमानूंगा और इसको अपना मन्त्री कर तेरेसाथ बिवाहकरदूँगा शाहज़ादीने कहा बहुत अच्छा इतना कह मलकाहसन अपने भवनसे एक छड़ीलाई जिसमें इबरानी अक्षर लिखे थे और कहा कि आप ख़्वाजेसराय और बन्दरसहित एकभवन में रक्षापूर्व्वक छिपकर बैठें फिर हमतीनों बरामदे में कि चारोंओर उस मकानके बनाथा बैठे उसने उस बरामदेमें एक बड़ा घेरा पृथ्वीमें खैंचा और कुछ इबरी और कलपतरी शब्द पढ़नेका आरम्भ किया जब पढ़चुकी और बिचारानुसार घेराभी बनालिया तब उस घेरेके अन्दरजाय कुरानका पढ़ना आरम्भ किया इतने में चारोंओर रात्रिके समान अँधेराछागया और प्रलयके चिह्नदिखाई देनेलगे यह दशा देख हम सब भयभीत हुये और घड़ीघड़ीपर हम को डर अधिक होता जाताथा हमने क्या देखा दुख्तरइबलीस का पुत्र बड़े उग्र और भयंकर शेर के स्वरूप में प्रकटहुआ शाहज़ादी उसके सम्मुख कहनेलगी अय कूकर! तुझे चाहिये था कि तू मेरी बिनती करता बिपरीत इसके मेरेडराने को ऐसा भयवान् रूपधर आया तूनेबड़ी ढिठाईकी शेरने उत्तरदिया तूने उस प्रणको जो पिशाचों और मनुष्योंमें हुआथा तोड़दिया और उसपर कठिन २ सौगंदें दीगईथीं कि कोई एक दूसरेको दुःख न दे शाहज़ादी ने कहा अय मलिनरूप! तू प्रणभङ्गी है मुझे चाहिये कि इस बिषयमें तुझे बुराभला कहूं शेरने कहा तूने बड़ी ढिठाईकी मुझे यहां आनेका श्रमदिया यह कह उसने अपने मुखको फैलाया और इच्छाकी कि शाहज़ादी को निगलजायँ परन्तु वह अत्यन्त बुद्धिमती और चैतन्यथी पीछे की ओर कूदकर हटगई और अपने शिरका एकबाल उखाड़ के उस

## चित्र बादशाहकी लड़की और पिशाच की



पर दोचार अक्षर पढ़े वो बाल खड्ग के समान बनगये शाहज़ादी ने उस खड्ग से उस सिंहको दो फांककर उस दालान में डाल दिया और वह टुकड़े शेरके गुप्तहोगये जो शिर उसका रहगयाथा बिच्छू बनगया शाहज़ादी उससमय सर्प बनके उससे युद्ध करने लगी वह बिच्छू सामना करने की सामर्थ्य न रखकर उकाब बनके उड़गया फिर वह सर्पभी काला उकाब बन पहिले उकाबका पीछा किया यहांतक कि वे दोनों उकाब हमारी दृष्टि से छिपगये थोड़ी देर के पश्चात् हमारे सम्मुख पृथ्वी फटगई और उसमें से दो बिल्लियां श्वेत और काली निकलीं और दुमकेबाल खड़ेकर परस्पर चिल्लानेलगीं फिर वह काली बिल्ली काला भेड़िया बन दूसरी बिल्लीकी ओर दौड़ी व बिल्ली अवकाश न पाय निरुपाय हो कीड़ा बनगई और उस कीड़ेने एकअनार के बीचमें उसीसमय वृक्षसे नहरके किनारे गिरपड़ाथा अपने को छिपाया यह अनार बढ़नेलगा यहांतक कि बढ़ते २ बड़ेमटके के समान होगया और बायुपर उड़ा और बरामदेकी ऊँचाईतक जाय कभी आगेकी ओर कभी पीछेको हिलताथा इसीप्रकार इधर उधर जाय पृथ्वीपर गिर फटगया और बहुत टुकड़े उसके होगये वह भेड़िया तत्काल मुर्गा बन अनारके दाने चुननेलगा और शीघ्रही एक २ दाना निगलना आरम्भ किया जब सबदाने अनारके खाचुका तब वह पंखफैला हमारे निकट आया और बड़ाशब्दकिया अर्थात् वहपूछताहै किकोई दाना शेषतो नहींरहगया और चारोंओर ढूंढ़ता फिरताथा कि संयोगवश उसने एक दाना जो नहर के तटपर पड़ाहुआथा देख दौड़कर चाहा कि उसको भी खालें इतने में वह दाना लुढ़कता हुआ नहर में चलागया और छोटी मछली बनगया और वह मुर्गाभी मछली के खानेको नहर में गया वह मछली और मुर्गा दोघड़ीतक उस नहरके भीतर रहे हमें उनका वृत्तान्त कुछभी बिदित न हुआ कि वे दोनों क्याहोगये फिर थोड़ीदेर के पश्चात् हमने एक भयानक शब्द चिल्लाने का सुना कि जिसके सुनने से हमडरे फिर उस पिशाच और शाहज़ादीको देखा कि वे दोनों अग्नि होगये और प्रत्येक अपने मुख से लाटैं निकाल

दूसरेकी ओर फेंकता और निकट हो हो एक दूसरेपर चढ़ाई करता है यहांतक कि अग्निने सबको घेरलिया तो यह आश्चर्य्य देख हम कम्पितहुये कि इस अग्निसे सम्पूर्ण राज्य अभी जलजायगी इस समयान्तरमें हमारे भयका एक और कारण हुआ कि वह पिशाच शाहज़ादीके सम्मुखसे हट हमारी ओर आया जहां हम सब बैठेथे और अपने मुखसे लाटैं निकाल हमारी ओर फेंकनेलगा चाहता था कि यह जलकर भस्महोजावे इतने में शाहज़ादी दौड़कर आई और हमैं उसकेहाथसे बचाकर उसको वहांसे दूरभगाया शाहज़ादी के रक्षाकरनेपरभी बादशाहकामुख झुलसगया और ख़्वाजहसराय का दारोग़ा जलभुनकर भस्म का ढेर होगया और एक चिनगारी उड़कर मेरे दाहिने नेत्र में लगी कि जिससे मैं काना होगया और हमदोनों अर्थात् बादशाह और मैं इससे अति दुःखितथे इतने में जयका शब्द हमने सुना और वह मलकाहसन निजयोनि में बन हमारे निकट आई और वह पिशाच जलके भस्मका ढेर होगया फिर शाहज़ादी ने एक छोटे नौकरसे जल मँगवाया और उस पर कुछ मन्त्र पढ़ थोड़ा उसमें से मुझपर छिड़का और कहा जो तू जादू से बन्दर बनगया तो निजयोनिको प्राप्तकर और मनुष्य के स्वरूप में जैसा पहिले था वैसा बनजा इतना कहतेही मैं मनुष्य बनगया दाहिने नेत्र के सिवाय जो प्रथम से जातारहा था और किसी जोड़ में हानि न पहुँची मैंने चाहा कि उस शाहज़ादी का धन्यवाद करूं परन्तु उसने मुझको सावकाश न दिया बादशाह से कहा यदि मैंने पिशाच को पराजय किया परन्तु इसके साथ मेरा भी काम तमाम होगया अर्थात् इस पावकयुद्धने भी मेरे शरीर को जलादिया कोई क्षणमें मुझे भी भस्मकरडालेगी यदि एकदाना दाड़िमकाभी जिससमय कि मैं पक्षी बनीथी न छूटता और उसकोभी खाजाती तो फिर मुझको कुछभी दुःख न पहुँचता और यह पिशाच उसीसमय माराजाता परन्तु उस दाने के बचने से फिर उसे मेरे साथ युद्धकी सामर्थ्यहुई तब मैं लाचार होकर अग्निसंग्राम करनेलगी उस समय धरती से आकाशपर्य्यन्त अग्नि होगई तब उस

पिशाचको मालूमहुआ कि मैं जादूकी विद्या में अतिनिपुणहूँ और मेरी विद्या कहीं उससे अधिक है निदान मैंने उसको जलाकर भस्म करडाला परन्तु मैं भी उस आगसे बच नहीं सकी बादशाह ने शोचितहोय उत्तर दिया कि तुम अपने पिताकाभी हालदेखो यदि मैं जीताहूँ परन्तु मुख मेरा झुलसगया है और तुम्हारा ख्वाजह-सराय जलकर भस्म होगया और यह शाहज़ादा जिसका तुमने जादू दूर कियाहै दाहिने नेत्र से काना होगया है यह कहकर बाद-शाह और मैं इस हाल में रोतेपीटते और हाहाकरतेथे कि इतनेमें शाहज़ादी पुकारनेलगी कि जली २ फिर वह तत्कालही उस अग्नि में जलकर उस पिशाचके समान भस्मका ढेर होगई हे शाहरयार! उस स्थानमें उस दूसरेयोगीने हाहाखाय ज़ुबैदा से कहा कि उससमयकादुःखजो मुझपरहुआ कुछ बर्णन नहींकरसक्ता मैंने उस मलका-हसनको इस दशामें देख अपने चित्त में कहा कि यदि मैं बंदर किंतु श्वान सम्पूर्ण आयुभर बनारहता तो उत्तम था इससे कि शाह-ज़ादी जिसने कि मुझसे इतना उपकार कियाथा इसप्रकार बधहो-जाय और इधर बादशाह अपनीशाहज़ादीके मरजानेसे शोकवान् हो रोनेपीटनेलगा यहांतक कि वह मूर्च्छितहोगया और मुझे बाद-शाह की ओरसे अत्यन्त भय और डर हुआ कि ऐसा न हो वह अपनी शाहज़ादीके दुःखसे कहीं मर न जाय उससमय रोनेपीटने से प्रलय होगया बादशाही मकान में बादशाहकी यह दशा सुन सम्पूर्ण सरदार और नौकरदौड़े और बहुतउपायसे उसे फिर सुधि में लाये मैंने सम्पूर्णवृत्तान्त उनसे बर्णनकिया फिर वह लोग बाद-शाहको उठाय उसके निजकोठेमें लेगये यह वृत्तान्त सम्पूर्णनगरमें ख्यातहोगया और चारों ओर से शाहज़ादीके नामपर रोनेपीटनेका शब्द सुनाई देताथा सातदिनतक उन्होंने शाहज़ादीका शोक और रोना पीटना किया और अपनी रीत्यनुसार सम्पूर्ण शोककी रीतें भी कीं फिर पिशाचकी भस्मकाढेर उन्होंने बायुपर उड़ादिया और शाहज़ादीकी भस्मको एक बहुमूल्य बस्त्रकी थैली में भर वहीं गाड़दी और उसपर एक बड़ाभारी मक़बरा बनवाया बादशाह अपनी

शाहज़ादी के शोक में एकमासतक रोगयुक्तरहा अभी वह अच्छा हुआथा कि उसने मुझे बुलाकर कहा हे शाहज़ादे ! तेरे आगमनसे नानाप्रकारके दुःख और शोक मुझपरपड़े और मेरीशाहज़ादी तेरे हीकारण भस्महुई और दारोग़ाभी जलकर मरगया और मैं मरते २ बचा यह सब तेरी अभाग्यता है तू अशकुन है अब मैं तुझे देख नहीं सक्ता इससे तू यहां न रह तुरन्त यहां से चलाजा यदि तू यहां रहेगा तो तेरेवास्ते अच्छा न होगा और मैं तुझे दण्ड दूंगा इसीप्रकार बादशाह ने क्रोध में यह सब बातें कहीं कि जिनका मैं उत्तर न देसका और तत्काल बादशाहके सन्मुखसे चलागया और जिधर को जाताथा उधरको मनुष्य मेरे मारने का इरादा करते थे निदान मैं निरुपाय हो उस नगरके निकलने से पहिले भौंहें और मूछें और डाढ़ीमुड़वाय और योगियों के वस्त्रपहिन वहां से चला और अपनेजन्मभर बुराभलाकर कहताथा कि बड़ा पश्चात्तापहै कि तेरेकारणसे ऐसी स्वरूपवती दो शाहज़ादियां मारीगईं फिर बहुत दिनोंतक नगर २ और देश २ फिराकिया निदान सोचा कि बग़दाद नगरमें जाय अपनेदुःख और शोकको खलीफ़ाहारूंरशीद से बिनय करूं उक्तमहाशय मेरे वृत्तान्तको सुन मुझपर अवश्य दया करैंगे और इस दुःखसे छुड़ादेंगे आज सायंकाल के समय मैं वहांपहुँचा और पहिलेपहिल योगी से कि जिसने अभी अपना वृत्तांत वर्णन कियाहै भेंटहुई और मेरेयहां आनेकाकारण आपके सन्मुख पहिला योगी तो कहचुका उसका प्रकटकरना अवश्य नहीं इसप्रकार जब दूसरा योगी भी अपना वृत्तांत कहचुका तो ज़ुबैदाने उससे कहा कि तेराअपराध क्षमाकिया जिधरको तेरा जीचाहै चलाजा तब वह भी ज़ुबैदा से आज्ञाले पहिले योगी के निकट बैठगया फिर तीसरा योगी अपना वृत्तांत कहनेपर उद्यतहुआ और ज़ुबैदा के सन्मुख जाय इसप्रकार अपना वृत्तान्त कहना आरम्भ किया ॥

## तीसरे योगीकी कहानी ॥

हे दयावान्सुन्दरी ! मेरावृत्तांत अतिबिचित्रहै इनदोनोंशाहज़ादोंकीआंख तो बेबशीकेकारणसे गई और मेरी आंख अपनेही अप-

राध और निर्बुद्धितासेछूटी सो आपको मेरेबर्णनमें बिदितहोगा मेरा नाम अजब है और मैं महाऐश्वर्य्यवान् बादशाह कि सबका बेटाहूं जब मेरापिता स्वर्गबासीहुआ मैं तख़्तपर बैठा और उसी नगरमें जिसे मेरेपिताने राजधानी बनायाथा रहा वह नगर नदीकेतटपर बसा था और उसकीरक्षाकेनिमित्त डेढ़सौजहाज़ तैयाररहतेथे और पचासजहाज़ मुख्य व्यापारके हेतु रहतेथे और अनेकजहाज़ सैर और तमाशेके अर्थ प्रतिसमय समुद्रके तटपर लंगरकिये रहाकरते और इस राजधानीसे बहुत अच्छे२ नगर और बसेहुये द्वीप सम्बन्धित थे सबकामों से प्रथम मैंने यह इच्छाकी कि सम्पूर्ण नगरों और द्वीपोंको जो इस राजधानी से सम्बन्ध रखतेहैं जायकर देखूं और वहांके बासियों को कि जो मेरेपिताके मरनेकेकारण शोचयुक्तहैं धैर्य्य और भरोसा देआऊं कि वो अपने देशके सम्बन्धित कार्य्यों और व्यापारमें सावधानता से लगे रहें इसी समयान्तर में मुझे जहाज़ चलानेकी विद्याके सीखनेका व्यसन मेरेहृदयमें उत्पन्न हुआ सो मैं एकजहाज़पर सवारहुआ और दश जहाज़ अपनेसाथ लेकर चला चालीस दिवसतक बायु अनुकूलरही इकतालीसवें दिन बायु बड़े बेगसे चलने लगी और सम्पूर्ण जहाज़ तूफ़ानमें ऐसे पड़े कि हम अपने जीवनसे निराशहोगये परन्तु दूसरे दिन भोरको हवाकमहुई बादलखुला और सूर्य्य निकला आकाश निर्मल होगया हम सावधानहो एकद्वीपमें उतर दोदिनतक अन्नादि लेनेके हेतु ठहरे फिर हम जहाज़पर सवारहुये और बिचारतेथे कि दशदिनके अन्दरमें धरतीमें पहुँचजायँगे क्योंकि हम तूफ़ानके कारण मार्ग भूलगयेथे और न जानते थे कि तूफ़ान और अँधेरे के कारण हमारे जहाज़ किसओरको जातेहैं कप्तानने एक मनुष्यको मस्तूलपर चढ़ाया कि दिशाको मालूमकरे उसको दाहिने और बायें पानी और आकाश के सिवाय और कुछ न देखपड़ताथा परन्तु दाहिनीओर जब ध्यानसे देखा तो कुछ कालापन देखपड़ा यह समाचार सुनतेही उस कप्तानका मुख बदलगया पगड़ीउतारकर फेंकदी और शिर पीटने लगा और मुझसे कहा हे स्वामी! हम सब मराचाहते हैं इस बलासे

कोई नहींबचेगा अब हमारे बचनेका कोई उपायनहीं यह कह वह कप्तान इस प्रकार फूट २ रोनेलगा कि जैसे कोई किसीको प्राणसे मारताहो यह दशा उसकी देख जहाज़के मनुष्य अत्यन्त दुःखित और शोचयुक्त हुये मैंने उससे इसका कारण पूँछा तो उसने उत्तर दिया कि तूफ़ान हमारे जहाज़ोंको मुख्यमार्गसे हटाकर ऐसे स्थानपरलाया कि कलके दिन दोपहरको हमारा जहाज़ उसकाली बस्तुतक पहुँचेगा और वह काली वस्तु चुम्बकपहाड़है वह तत्काल हमारे को लोहेकी कीलों और लोहेके बस्तुओं के कारण जो जहाज़में लगी हैं अपनी ओर खींचेगा और जहाज़ जब उसके निकट जायगा तो उसके खींचनेसे यह सब लोहेकी कीलें और पत्तर जहाज़ोंके पाटों से अलगहो उस पहाड़से जायचिपटेंगे और जहाज़ टूटकर सब बस्तु और मनुष्योंसहित डूबजावेंगे चुम्बक पत्थर में यह गुणहै कि लोहेको चिपकाताहै और जितना लोहा उसके निकट जाताहै उसमें आकर्षणी शक्ति अधिकहोतीजातीहै और इस पहाड़ की ओर कि जो समुद्रकी ओरहै सहस्रों जहाज़ोंकी कीलें निकल२के नीचे और ऊपर तक जा चिपकीहैं इसीकारण वह पहाड़ काला दृष्टि पड़ताहै फिर उसने कहा वह पहाड़ बहुत ऊँचा और ढालवाहै और उसकी चोटीपर एक पीतलका वृत्त पीतलके पीलपायोंपर खड़ा है और उस वृत्तपर पीतलका घोड़ा और मनुष्यकी मूर्त्ति कि वहउसी अश्वपर सवारहै बनीहुई है और एक सीसेकी तख़्ती कि उसपर कुछ अक्षर जादू के खुदे हैं उसकी छातीसे लगीहुईहै लोग कहते हैं कि वही मूर्त्ति जहाज़ों और मनुष्यों के हानिहोने का कारण है इतनाकह फिर वह रुदन करनेलगा उसके रोनेसे सम्पूर्ण जहाज़के मनुष्यभी रोनेलगे और मुझेभी बिश्वासहुआ कि मेरीआयु इतनीहीथी और मृत्यु यहां लेआईहै और प्रत्येक मनुष्य अपने २ बचावके विचारमें पड़े कि किसीप्रकार अपने प्राणको उबारें परस्पर कहतेथे कि हममेंसे जो कोई सबके प्राणबचावै वह सबका स्वामीहै निदान दूसरेदिन भोरको हमाराजहाज़ उस कालेपहाड़के सन्मुख पहुँचा परन्तु जो उपाय कि हमने बिचारे थे भूलगये और रोनेपी-

टनेलगे दोपहरको जैसा कि उस बुद्धिमान् कप्तानने कहाथा वैसा ही हुआ अर्थात् पहाड़ने जहाज़को इसबेगसे खींचा कि सब कीलें और लोहेकी वस्तु जो जहाज़में थीं उड़के पहाड़से चिपटगईं तख़्तों के टूटने से बड़ा शब्द हुआ और तत्कालही वे ग्यारहों जहाज़ टुकड़े २ हो ऐसे गहिरेजलमें डूबगये कि किसीबस्तु और मनुष्यों का पता न लगा परन्तु परमेश्वरने मुझपर दयाकी कि केवल उन सब में एकमैं जीतारहा संयोगवश मेरेहाथ एकटुकड़ा जहाजका लगगया कि उसकेसहारेसे पहाड़के नीचे धरतीमें ऐसेस्थानपर जीताजागता पहुँचा कि जहां चरणोंके चिह्न सीढ़ीके समान बनेहुये थे वह मार्ग पहाड़पर जानेकाथा मैं उनपाँवों के चिह्नोंको देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ उन चिह्नों के सिवाय जो कहीं और जगह दाहिने बायें ऐसी न थी कि जहां पांव ठहरसके और गिरने से बचै मैंने परमेश्वरका धन्य-बाद कर और उसका नामले पहाड़पर चढ़ना आरम्भ किया मार्ग्ग बहुत सूक्ष्मथा और बायु ऐसी प्रचण्डथी कि मुझे नदीकी ओर उ-ड़ाये लिये जातीथी निदान मैं कुशलपूर्व्वक उस पहाड़पर चढ़गया और उसवृत्तके भीतरजाय और पृथ्वीपर पहुँच परमेश्वरका धन्य-बाद किया कि उसने अपनी पूर्णकृपासे मुझे कुशलपूर्व्वक यहां तक पहुँचाया रातको वहीं सोरहा और यह स्वप्नदेखा कि एकवृद्ध मनुष्य मुझसे कहताहै हे अजब! जब तू जगजावे तो श्रमकर अपने चरणों के नीचेकी धरती खोदियो और उसमें से एक पीतलका धनुष और सीसेके तीनशर कि उस घड़ीमें उस मनुष्य के दुःख पहुँचानेके हेतु बनाये गयेथे पावेगा और उन तीन शरोंसे मनुष्यकी मूर्त्तिको जो घो-ड़ेपर सवारहै मारियो तो वह मूर्त्ति समुद्रमें और अश्व तेरे चरणोंके निकट गिरपड़ैगा फिर तू उस घोड़े को उस स्थानपर जहांसे कि तू शर और धनुष पावेगा गाड़दीजियो जब यह कार्य्य करचुकेगा तो समुद्रमें ऐसातूफ़ान आवेगा कि इस वृत्तके निकटआय पहुँचेगा जब वह समुद्र ऐसा बढ़ेगा तो एकछोटी नाव समुद्रके तटपर तेरेनि-कट आय लगैगी और उस नाव में एक पीतलका केवट बैठाहुआ नावको तेरे निकटलावैगा तू शीघ्रही उस नावपर बैठजाइयो वह तुझे

दशदिन के समयान्तर में इस समुद्रसे दूसरे समुद्र में पहुँचावेगा वहांसे तुम्हें अपने देशका पहुँचना बहुतही सुगमहोगा परन्तु चैतन्यरह मार्ग में परमेश्वरका नाम न लेना जब वह वृद्धमनुष्य ये बातें कहचुका तो मेरी आंख खुलगई और मैं इस स्वप्नहोनेसे अत्यन्त प्रसन्नहुआ और उस वृद्धके कहने के अनुसार उस धरतीको खोदा तो वहांसे तीनशर और धनुषपाया उन शरोंसे उस मूर्त्तिको मारा तीसरे शरके लगनेसे वह सवार और मूर्त्ति समुद्रमें गिरी और घोड़ा मेरे चरणोंके निकट आयपड़ा उसको मैंने उसीस्थानपर कि जहांसे शर और धनुष पायाथा गाड़दिया फिर वह समुद्र बढ़नेलगा यहांतक कि उस वृक्षके निकट आयलगा और एकनाव दूरसे मेरी ओर चली आई और उसपर पीतलका एकमनुष्य बैठा देखा मैंने परमेश्वरका धन्यबाद किया कि मेरा स्वप्न सत्य और ठीकहुआ जब वह नाव तट पर आयपहुँची तो मैं उस नावपर सवार हुआ और उस वृद्ध मनुष्यके कहनेके अनुसार परमेश्वरका नाम न लिया किन्तु कोईभी बात अपने मुखसे न निकालताथा फिर वह पीतलका मनुष्य नौदिनके समयान्तरमें शीघ्रही उस नावको बहुतदूर लेगया और मैं बहुतसे द्वीप अपने दाहिनेबायें देख अतिप्रसन्न हुआ और समझा कि अब शीघ्रही इस आपदासे छूटजाऊँगा इसी प्रसन्नतामें ईश्वरका धन्यवाद किया नाम लेतेही वह नाव मनुष्यसमेत डूबगई और मैं जलपर पैरनेलगा शेषदिन तक एकद्वीपकी ओर जो निकट मालूम होताथा शीघ्रता कियेगया रात्रिको अँधियारे में जान न पड़ताथा कि किधर जाताहूँ बहता तैरता उसी ओर चलाजाता था निदान थकगया और मुझमें कुछभी हाथपांव हिलाने की सामर्थ्य न रही और अपने प्राणसे निराशहुआ सँयोगबश उसीदशामें प्रचण्ड बायुचली और समुद्रभी लहर मारनेलगा सो एक लहरतो पहाड़के समान बढ़ीहुई थी मुझे उठाय तटपर डालदिया मैं तुरन्त निकलआया कि फिर कोई लहर उस समुद्र में मुझे न फेंकदे फिर मैंने समुद्रसे निकलतेही बस्त्र निचोड़ सुखाये और उनको पहिन इधर उधर चलना आरम्भ किया उसमें बहुतसे सफलवृक्ष दृष्टि पड़े उससे मुझको बिदित

हुआ कि यहां कोईद्वीप निर्जनहै फिर बालू दूरतक देखी और मैंने जाना कि प्रथम यह द्वीप समुद्रथा अब सूखगया है यह बिचार में वह हर्ष जो समुद्रसे निकलने और सफल वृक्षोंके देखने से हुआथा भूलगया और अपने को परमेश्वर की इच्छापर छोड़ा कि जो वह चाहेगा करैगा थोड़ीदेर न हुईथी कि एक छोटासा जहाज़ देखा कि सबपालों को उड़ाये हुये इस द्वीपकी ओर चला आता है मुझे बिश्वासहुआ कि वह इसी टापूमें लंगर करेगा परन्तु न जानिये उसमें कैसे मनुष्यहैं मित्र हैं वा बैरी इस हेतु छिपरहना उचित है इस निमित्त मैं अतिसघन और लम्बे वृक्षपर चढ़गया और इच्छा की कि वहांसे छिपकर उन जहाज़ियों को देखूं कि उनका कैसा स्वरूपहै इसी विचारमें था कि जहाज़ने कूलपर आकर लंगर किया उसमें से दशअनुचर फडुवेआदि धरती खोदने के शस्त्र लेकर निकले तदनन्तर वह द्वीपके मध्यजाकर ठहरे और एक स्थान पर पृथ्वी खोदनेलगे यहांतक कि उन्हों ने एकदरवाज़ा पाया फिर वो जाके उस जहाज़में से नानाप्रकारके खानेकी बस्तु और बिछौने आदिका बस्त्र बोझबांधकर अपने शिरपर उठालाये और उस स्थान से कि जहां खोदाथा नीचे लेगये जिससे मैंने समझा कि इस के नीचे कोई बड़ामन्दिर है फिर जहाज़ में वो सम्पूर्ण अनुचर जाकर एकवृद्ध मनुष्य और बालक को जो अतिसुन्दर और चौदह या पन्द्रहबर्षकी अवस्थाका जानपड़ताथा अपने साथ लेआये और उस भवन में वो सबके सब उतरगये और वहांसे लौट किवाड़ बन्द किया और उसपर मट्टीडाल पृथ्वी के बराबर करदिया और वे सम्पूर्ण मनुष्य अपने जहाज़परगये परंतु मैंने देखा कि वह बालकनहीं फिरा तो मैं इस वृत्तान्त से अत्यन्त आश्चर्यित हुआ फिर वह मनुष्य उस द्वीपको छोड़ जिधरसे आयेथे उधरही चलेगये जब मैंने देखा कि वह जहाज़ बहुत दूर चलागया और वहां कोई मनुष्य नहीं दृष्टिपड़ता तो मैं तुरंत उस वृक्षसे नीचे उतरा और वहां गया कि जहां उन्होंने पृथ्वी खोदीथी मैंने उस स्थानकी मट्टीसरकाई तो उसके मुखपर दोहाथका एकचौकोण पत्थर रक्खा हुआ देखपड़ा जब मैंने

उसको उठाया तो वहां एकसीढ़ी दिखाईदी मैं उस सीढ़ीसेनीचे उतरा और देखा कि वह बहुत बड़ा घर है उसमें क़ालीनका फ़र्श बिछा हुआ और उसके दालानमें उत्तम २ उपधान कि जिनमें सोनहरी गिलाफें चढ़ीहुई रक्खेहैं और उसमें वह बालक बैठाहुआ पंखाझल रहाहै और दो मोमके दीपक वहां प्रज्वलितहैं और नाना प्रकार के खानेकी बस्तु बर्त्तमानहैं और सुगन्धित गुलदस्ते उसके निकट रक्खे हुयेहैं वह बालक मुझे देख डरगया तो मैंने उसको धैर्य्य देनेकेवास्ते कहा कि हे प्यारे! तुम मुझ ऐसे पुरुष से कि जो बादशाह और शाहज़ादाहै न डरो मैं कुछ दुःख और पीड़ा न दूंगा और तुम बड़े भाग्यवान् हो कि इस क़बरमें जीतेही जीते तुमको वे लोग गाड़गये हैं छुड़ाने आयाहूं परन्तु पहिले अवश्यहै कि इस पृथ्वी में अपने गाड़ेजानेका कारणकहो मुझसे कोई भेद गुप्त न रक्खो क्योंकि मैं सब कुछ देखचुकाहूं परन्तु मुझे इतना बिदित नहीं कि तुम अपनी इच्छा से क्यों इस स्थानपर गाड़ेगये उस बालकको इसबार्त्तासे कुछधैर्य्य हुआ और मुझे बैठनेको कहा जब मैं उसके समीप बैठगया तो उसने इसप्रकारपर कहना आरम्भकिया हे बादशाह! मेरावृत्तान्त अत्यन्त अपूर्व और अद्भुतहै उसको सुन तुम अत्यन्त बिस्मित होगे मेरा पिता जौहरी है उसने अपने श्रम और गुण से बहुतसा धन इकट्ठा किया उसके सैकड़ों भृत्य और कोठियां हैं वह अपने जहाज़ोंपर सवारहो दूर २ के नगरों और देशों में फिरताहै और स्थान २ पर गुमाश्तेहैं कि उसकी ओरसे रत्न मोललेते और बेंचते हैं इतना धन और रत्न रखनेपरभी उसके सन्तान न थी एकरात्रि उसने स्वप्नमें देखा कि मेरे घर पुत्रहोगा परन्तु उसकी स्वल्प आयुहोगी सो वह जागकर अत्यन्त शोचित और शोकयुक्त हुआ फिर कई दिन के पश्चात् मेरीमाताने उससे कहा कि मुझे गर्भहै तुम्हारा स्वप्नसत्य हुआ फिर नौमासके पश्चात् मैं उत्पन्न हुआ सम्पूर्ण नातेदारों को मेरे उत्पन्नहोने से बड़ी प्रसन्नता हुई मेरे पिताके बिशेष कि वह उस स्वप्नसे शोचितथा निदान उसने ज्योतिषियोंसे पूछा उन्होंने कहा इस बालकके चौदहवें वर्षमें प्राणका डरहै यदि उस वर्षमें बचगया

तो फिर आयु इसकी बड़ीहै और बहुत वर्षतक जियेगा फिर उन्होंने कहा कि हमको ग्रहोंसे बिदित होताहै कि सबके पुत्र अजबनाम बादशाह से एकपीतलका सवार जो चुम्बक पत्थरपर रक्खाहै समुद्रमें गिरैगा और पचास दिवसकेपीछे अजब बादशाहके हाथसे मारा जायगा एकतो मेरापिता उस स्वप्नसे चिन्तायुक्तथा दूसरे ज्योतिषियों की इसबातसे और अधिक शोकयुक्त हुआ और मेरी रक्षाकेनिमित्त रात्रिदिन उद्यत रहता जब चौदहवांवर्ष मुझको आरम्भहुआ तो दूसरे दिवस ज्योतिषियोंने आके विनयकी कि दशदिवस व्यतीत हुये बादशाह अजबने उस पीतलके सवारको जिसका पहिले हमने वर्णन कियाथा उसपहाड़की चोटीसे समुद्रमें डालदिया इसवृत्तान्त को सुन मेरा पिता अत्यन्त शोचित और शोकयुक्त हुआ और चाहताथा कि किसीभांति मेरे अरिष्टग्रहका फल दूरहो और मुझे मृत्युसे बचावे फिर उसने आगेसे शोच मेरी रक्षाके हेतु इसद्वीपमें कि जहां मनुष्यका नाममात्रभी नहीं पृथ्वीके नीचे इस घरको बनवा रक्खाथा कि उस मूर्तिके गिरनेके पीछे पचास दिवसतक मुझे इसघरमें छिपा रक्खा जब सुना कि दशदिवस व्यतीत हुये और वहबात प्रकट हुई इसवास्ते उसने चालीस दिवस के लिये यहां लायके मुझे रक्खा है चालीसदिवसके पश्चात् वह फिर मुझे लेजायगा और उसको बिश्वासहै कि कोई मनुष्य मुख्य बादशाह अजब ऐसेस्थानपर न जायगा और कोईमनुष्य मुझे इसचालीस दिवसके अन्तरमें न देखे और न मैंउसे देखूं मेरे आने और रहनेका इसघरमें यह कारणहै जो मैंने प्रकटकिया जब वह बालक अपना बृत्तान्त वर्णन करचुका तो मैं उन ज्योतिषियों के गुप्तहाल देनेपर हँसा और कहा कि मैं इस निर्दोष बालकको क्यों मारनेलगा और उसके धैर्य और दिलासेके लिये मैंने उससे कहा कि तुम कुछभी भय अपने चित्तमें न रक्खो और परमेश्वरपर भरोसा रक्खो तो तुम्हें किसीप्रकारका दुःख न होगा संयोग से परमेश्वर मुझे तुम्हारी रक्षाकेहेतु यहां लायाहै अब किसीप्रकारका भय और शोचनहीं इसीवास्ते मेराजहाजटूटा और मैं डूबतामरता यहां पहुंचा मैं तुमको उस अवधितक अकेला न छोडूंगा तुम्हें ज्यो-

तिषियोंने झूठकह डरारक्खा है रक्षा और सेवातुम्हारी मैं करूंगा और जब यह अवधि परमेश्वरकी पूर्णकृपासे क्षेमपूर्व्वक कटजायगी और जब तुम्हारापिता तुमको लेने आवेगा तो मैंभी सवारहो उसके साथ तुम्हारे नगरमें आऊंगा और वहांसे अपने देशको जाऊंगा और मैं यहतुम्हारी भलाईकभी न भूलूंगा ऐसी२ बार्त्ताकर मैंने उसके भयको दूरकिया और उसने अपने पिताकानाम न बताया कि ऐसा नहो कि नामसुननेसे उसे अधिकभयहो कि मैंही उसका मारनेवाला हूं और अनेक २ भांतिकीवार्त्ता और कहानीकह उसकाजी बहलातारहा और मुझे वह बालक अत्यन्त बुद्धिमान् और समझदार जानपड़ा जब रात्रिहुई तो उसने और मैंने मिलके भोजन किया और नानाप्रकारके व्यञ्जन वहां इतने रक्खे थे कि मेरेसिवाय और भी वहांकोई अतिथिहोता तो इकतालीस दिवसतक उनको बहुतहोता भोजनकर बहुत कालतक हम बार्त्ता करतेरहे फिर सोरहे जब वह दूसरे दिन भोरको जागा तो मैं जल उसके निकटलेगया और उसने अपने हाथ मुखधोया फिर नानाप्रकारके व्यञ्जन इकट्ठा बैठखाये फिर सतरंज और चौपड़ खेल उसका जी बहलाया और रात्रि को फिर भोजनकिया और खापीके सोरहे इसीभांति दिनरात्रि हमदोनों उसीघरमें रहतेथे इससे हमदोनोंमें अत्यन्त प्रीति उत्पन्नहुई यहां तक कि मैं उसको अपने प्राणसे अधिकप्यारा रखनेलगा तब मैंने बिचारा कि जो कुछ ज्योतिषियोंने उसके पितासे कहाथा कि यहबालक अजबके हाथसे माराजायगा झूंठहै मैंतो इसको प्याराजानता हूं बिनाकारण मैं इसे क्योंमारूंगा उनतालीस दिनतक अत्यन्तहर्ष और आनन्द से हमदोनों उसघरमें रहे चालीसवें दिन वह बालक भोरको जागतेही बड़ीखुशी और हर्षसे कहनेलगा कि देखो हे बादशाह! आजचालीसवां दिनहै परमेश्वरकी पूर्णकृपा और तुम्हारी अनुग्रहसे मैं जीताहूं मेरापिता तुम्हारे उपकार और सेवा जो तुमने इस अवधिमें मेरेसाथ किया है सुनकर अत्यन्त कृतज्ञहोगा और तुमको तुम्हारे नगरमें कुशलपूर्व्वक पहुँचादेगा फिर उसबालक ने मुझसे कहा कि थोड़ाजल गरम करदो तो मैं स्नानकरूं और

नम्बर ११ मूलप्रतिके सफे १२३४-३५.

चित्र शहज़ादे के हाथ से छुरी का गिरना और सौदागर बच्चे के हृदय में पार होना और उसका मरना



बस्त्र बदल तैयारहूं आज मेरापिता मुझको लेने आवेगा मैंने जल गरमकर उसे स्नानागार में लेजाय अच्छेप्रकार मलधुल नहला दिया फिर वह बिछौने पर जालेटा मैंने उसको लिहाफ़ ओढ़ादिया जब वह दोपहरकी निद्राकरचुका मुझसे उसने कहा हे बादशाह! मिराजी इससमय ख़रबूज़ा खाने को चाहताहै तुम एक ख़रबूज़ा और मिश्री लावो तो मैं खाऊं मैंने जाकर एकख़रबूज़ा बहुत से ख़रबूज़ों में से चुना और चीनीके पात्रमें रख उसके निकट लेगया और ख़रबूज़ा काटनेके लिये छूरी को पूछा कि कहां है उसने कहा मेरे शिरहाने की ओर ताख़ पर है मैं ताख़को ऊंचा देख उसके लेनेको उचका और छूरीको लेकर चाहता था कि सुगमतासे नीचेको आऊं परन्तु दैवयोगसे मेरापांव क़ालीनपर फैला और मैं उस रत्नपारखी के पुत्रपर बेबशहो इसभांति गिरा कि छूरी उसके हृदय में लगी कि वह तुरन्तमरगया इसदशाको देख मैंने रुदनकर और मुख और हृदय पीट और वस्त्र फाड़ अपने को पृथ्वी पर देदेमारना आरम्भ किया और कहा कि पश्चात्तापहै कि कईघड़ी शेषरहगईथी वहदिन उस परसे टरजाता केवल इतनेहीको इस दीन बालकने यहां आय अपना बचाव कियाथा और मैं अभागा सचमुचही इसका मारनेवाला हुआ और उन ज्योतिषियोंका कहनाठीकथा फिर मैंने मुखआकाशकी ओर कर दोनोंहाथ उठायकहा हे परमेश्वर! सर्वत्र तू सब कुछ देखता है मैंने इसे इच्छासे नहींमारा यदि कुछभी जानबूझकर मेरा अपराधहो तो इसीसमय मेरा प्राणले इसीभांति चिरकालतक रत्नपारखी के पुत्रकी लोथपर रोता रहा जब दिन थोड़ासा रहगया मैंनेबिचारा कि अब इसका पिता लेनेको आताहोगा क्योंकि आज चालीस दिवस व्यतीत होगये किस मुख से इसके पिता से इतनी अवधि की भेंटकरूं पश्चात्ताप है कि वह मेरी सेवा और श्रमव्यर्थ हुई किन्तु इसके बिपरीत उपकार के बदले अपराधी हुआ अब मेरा रहना यहां उचित नहीं यह बिचार उसकी लोथको वहींछोड़ उस घरसे निकल आया और दरवाज़े को बन्दकर उसके ऊपरसे भारी पत्थर रख मट्टीसे तोप धरती बराबर करदी ज्योंहीं मैंने वहांसे

निकल नदीकी ओर दृष्टिकरी तो क्या देखताहूं कि वही जहाज़उस बालक के लेनेको पाल उड़ाये हुये चला आता है मैंने शोचा जो तू यहां ठहरा रहताहै तो वृद्धमनुष्य जब अपने पुत्रको मुवा हुआ देखेगा तो मुझे अवश्य अपने भृत्यों से मरवा डालेगा और मैं उसके सेवकोंसे झूठ न बोलूंगा इससे उत्तम यहहै कि तू इनसे अलगरह फिर उस घरके ऊपर एक बहुत बड़ा सघन वृक्षथा उसके ऊपर चढ़के मैंने अपने को ऐसा छिपाया कि मैं उनसबको भलीभांति देखूं और उनकी वार्त्तासुनूं परन्तु वे मुझको न देखें फिर उस जहाज़ ने उसी कूलमें आय लंगर किया और वह वृद्धमनुष्य अपने भृत्यों सहित जहाज़ से उतर उसघरके समीप हर्षपूर्व्वक आया परन्तु जब उन्होंने ऊपरकी मट्टी पोलीपाई तो उनके मुखका रङ्ग भयसे बदल गया विशेषकर उस वृद्धमनुष्यका फिर जब उन्होंने पत्थरको सरकाके सीढ़ीके निकटजाय उसबालकको बुलाया और वह सब उत्तरके न पाने से अधिक दुःखित और शोकितहुये फिर उन्होंने उस घरके भीतरजाय चारोंओर उस गृहको ढूंढ़ा तो शय्यायुक्त हुये पर उस बालकको मुवाहुआ पाया और देखा कि छूरी उसके हृदयमें घुसीहुई है और मुझे उसके हृदयसे छूरी निकालनेका ध्यान न रहाथा निदान उस बालकको मुवाहुआ पाय सबरोने और चिल्लानेलगे और उसका गुणानुबादकर शिर पीटनेलगे उन सबके रोनेका शब्दसुननेसे मैंभी रोनेलगा और वह वृद्धमनुष्य अपनेपुत्रकी लोथ देखनेसे बेसुधि होगयाथा तो बांहपकड़कर हवाखानेको उसघरसे बाहरनिकाला और उस वृक्षकेनीचे जिसपर मैं छिपा बैठाथा बिठाया यह अभागा पिताकी इतनी रक्षा होनेपरभी फिर अपने पुत्रके शोकमें मग्नहोगया जब सुधि सँभाली तो सेवकोंने बालककी लोथको उस घरसे बाहर निकाल नहलाया और नये श्वेत वस्त्रों से ढक गाड़ दिया और उस बालक के पिताको जो कि बहुत रोताथा क़बरपर लाये उसने पहिले तीनबेर क़बरपर मट्टीदी फिर उन सेवकोंने उसक़बरको मट्टीसे तोप बराबर करदिया जब वे यह करचुके तो उसपरसे सब वस्त्र और भोजन की सामग्री जो शेषरही थीं जहाज़ पर लेगये और उस पर

सवार हो अपने देशको चले जब वह जहाज़ मेरीदृष्टि से लुप्तहुआ तो मैं उस वृत्तसे नीचे उतरा और अकेले होनेके कारण उसी घरमें कि उसका किवाड़ खुलारहता जायकर सो रहता और प्रातःकाल को उस द्वीप में मार्ग ढूंढ़ने के निमित्त इधर उधर फिराकरता और फल आदि खाय कालक्षेप करता निदान एक मासतक मैं इसी भांति शोकयुक्त उसी द्वीपमें रहा कि उस समुद्रका जल घटते २ पांव के बराबर होगया और वह द्वीप बड़ा बिदित होनेलगा इसीप्रकार हौले २ उस समुद्रका जल ऐसा घटगया कि एक नाले के समान केवल मेरी पिंडुलियोंतक जल रहगया फिर मैं उस बालूको कि उस समुद्र के जलके सूखजाने से निकल आया था बड़ी कठिनता और श्रम से लांघकर उसपार पहुँचा और वहां से बहुत दूरतक आगे को चलागया यहांतक कि दूर से एकवस्तु ऐसी दृष्टिपड़ी कि जैसे बहुतसी अग्नि प्रज्वलित होतीहै उसको देख मैं अत्यन्तप्रसन्नहुआ और शोचा कि वहां मनुष्य अवश्य होंगे क्योंकि अग्नि आपसे नहीं जलती फिर जब मैं उसके समीपगया तब मुझको बिदित हुआ कि अग्नि नहीं किन्तु लालतांबे का घरहै सूर्यकी किरण पड़नेसे वह घर प्रज्वलित अग्निके समान दृष्टिपड़ताहै मैं उस घरके निकटजाय सुस्तानेको बैठगया और बिचारा कि इस बड़ेभारी घरका हाल मालूम करना चाहिये इतने में दशजवान उस मकानसे निकले परन्तु मैं उन्हें देख आश्चर्यित और अचम्भितहुआ क्योंकि वे दशोंजवान दाहिने नेत्रसे काने थे और उनके साथ एक वृद्ध मनुष्य बहुत लम्बा जिसका स्वरूपभी बहुत उत्तमथा देखा मैं अभी इसी आश्चर्य में था कि इतने मनुष्य क्यों दाहिनी आंख से काने और एकही स्थानपर क्यों इकट्ठेहैं इतने में वह तुरन्त मेरीओर आये और अति प्रसन्नता से प्रणामकर पूछा कि तुम्हाराआना इस स्थानपर क्योंकरहुआ मैंने उनको उत्तर दिया कि मेरावृत्तान्त बहुत बड़ाहै यदि तुम दयाकर बैठजावो तो मैं तुम्हारी आज्ञानुसार अपने वृत्तान्तको प्रकट करूं वे सब बैठगये फिर मैंने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त जैसे कि अपने देशको छोड़ाथा और वहांके पहुंचनेतक उनसे प्रकट किया वह सुन अत्यन्त

विस्मितहुये तदनन्तर वह सब जवान मुझे उस घर में लेगये उसके भीतर मैंने दालान दरदालान बहुतलम्बे चौड़े देख उनके विशेष एकान्त स्थलको बारहदरी आदि अति उत्तम उत्तम सामग्री और वस्तुसे बड़ी सजमजकी थी और उस मकान के एकओर एकघर बहुतबड़ा और उत्तम और गोलदेखा जिसके घेरेमें दश नीलेघर कोठों के समान अलग अलग रात्रिके रहने और उनके बैठने को ऐसे बनेहुये थे कि प्रत्येक कोठेमें एकमनुष्य अच्छीतरह रहे और उसगोल के बीचमें एक और कालादालान उन दशकोठोंकी अपेक्षा कुछऊंचा था उस में वह वृद्धमनुष्य जिसका कि मैंने पहिले वर्णन किया बैठा और उन दशकोठोंमें जो उसगोलके चारोंओरथे वह दशजवान अलगअलग जायबैठे उनमें से एकजवानने मुझसे कहा कि हे मित्र! तू भी इस क़ालीनपर जो घरके बीच बिछाहुआ है जायकर बैठ परन्तु किसी बातको जो हमकरें न पूँछियो और यह भी न पूँछियो कि तुम दाहिनी आंखसे क्यों कानेहो प्रत्येक बिषयको देख चुपरहियो फिर वह वृद्ध कुछकालके पश्चात् वहां से उठा और उन दशों एकाक्ष मनुष्योंकेहेतु ब्यञ्जन लाया और प्रत्येकमनुष्यको अलग अलग भाग दिया और एकभाग मुझेभी दिया मैंने उसे अकेला खाया जब हम भोजन करचुके तो उस वृद्धने एक एक मदिराका गिलास हमसबको दिया फिर उन सब ने मेरे वृत्तान्तको अद्भुत और अपूर्वजान दोहराने को कहा मैंने अपने वृत्तान्त को फिर कह सुनाया फिर बहुत कालतक इधर उधरकी वार्त्ता करतेरहे जब रात्रि बहुत ब्यतीतहुई तो एकजवानने वृद्धसे कहा कि अब हमारे शयन करनेकासमय आपहुँचा अबतक तुम हमारे नियमकी वस्तु नहींलाये इस बातको सुन वह उठा और एककोठेसे दशथाल नीले कठरोंसे ढकेहुये लाया और एक एक थाल दीपसहित प्रत्येक मनुष्य के सम्मुख रक्खा उन्होंने उनथालियोंको खोला तो प्रत्येक थाली में राख और कोयलेकीस्याही और काजल दियाथा उन्होंने उस राख और स्याहीको मिलाकर अपने मुखपरमली तो उसकालक के मलने से अनोखे और भयानक विदित होनेलगे फिर सब चिल्लाय २ रोये और मुख व हृदयपीट २

कहनेलगे कि देखो हमारी निर्बुद्धिता और अज्ञानता का फल फिर इसीभांति बहुतकालतक रोने पीटते रहे जब चुपकेहुये तो वही वृद्ध प्रत्येक के निकट लोटिया चिलमची लेगया हरएक ने अपना हाथ मुख धोया और वस्त्र जो फारडाले थे बदलकर अपने मकानों में जाय सोरहे यह उन मनुष्यों की दशादेख मैं अत्यन्त अधैर्य्यहुआ और कईबार बराकर चाहा कि अपने प्रणको तोड़ उनका वृत्तान्त पूछूं और उसका कारण जानूं परन्तु मैंने अपने को बहुत ठहराया और भोरतक उसी शोच विचारमें मुझे निद्रा न आई दूसरे दिन भोरको जब हम उस घरसे हवाखाने को निकले तो मैंने उनसे कहा कि हे मित्रो! तुम मुझेज्ञानी और बुद्धिमान् विदितहोतेहो परन्तु रात्रि को जो मैंने तुम्हारी दशादेखी तो बड़ा अचम्भा किया कि ऐसा काम विक्षिप्तोंके सिवाय बुद्धिमानोंका न होगा और मैं बड़ा शोचितहूं यदि तुमसे इसका कारण पूंछताहूं तो प्रण भङ्गहोताहै जो नहीं पूंछता तो मुझसे नहीं रहाजाता अब मुझमें ठहरनेकी शक्तिनहीं इस वास्ते पूँछताहूं तुमने अपना मुखक्यों कालाकिया और दाहिनी आंखसे क्यों कानेहो उसने उत्तरदिया कि हम इसकाकारण नहीं कहसक्के अगर तुम्हें हमारेसाथरहना स्वीकारहो तो इनबातोंकेपीछे न पड़ो फिर वह दिन जब व्यतीतहुआ तो हमने रात्रिको अलग भोजनकिया और उस वृद्धने उसीभांति थालियोंको उनके सम्मुखरक्खा और उनजवानोंने नियमानुसार मुख अपनाकालाकर वही किया मैं इस दशा को दूसरी बेर देख महाअधैर्य्यहुआ और उनसे कहा हे मित्रो! तुम इस विषयको मुझे बतलादो और मुझे कोई ऐसा उपाय बतादो कि जिससेमैं अपने देशमें पहुँचूं क्योंकि मुझे इतनाधैर्य्य नहीं कि तुम्हारे साथरह तुम्हें इसदशा में देखाकरूं और उसकेकारणको न जानूं यह सुन उनमें से एक मनुष्य ने मुझे उत्तरदिया कि हमारी इस दशा को देख इतना न घबरा हम तेरी मित्रता और भलाईकेकारण इस विषय को नहीं प्रकटकरसक्के ऐसा न हो कि जो तुम्हारी भी हमारीसी दशा होजाय जो तू चाहताहै कि हमारी इस अभाग्यताको जानले तो हम से कह हम इसकाउपायकरें मैंने कहा निस्सन्देह मैं सुननेकी लालसा

रखताहूं मेरे इस कहने से उस जवानने कहा फिर हम तुझको समझाते हैं कि इसबात के पीछे न पड़ और हमारे उपदेशको मान नहीं तो हमारे समान तूभी दाहिनी आंखसे कानाहोजायगा मैंनेउत्तर दिया कि इस बिषय में मुझे कोई दुःखपहुँचे तो मुझे अंगीकार है उसमें तुम्हारा कुछदोष नहीं मैं उसे अपनी अभाग्यतासे समझूंगा फिर उसजवानने कहा जो किसीकारण तुम्हारा दाहिनानेत्र कानाहोजायगा और हमारेनिकट आवोगेतो हम तुमको अपनेसाथ यहां न रहनेदेंगे क्योंकि यहां केवल दशमनुष्यों के रहनेका स्थानहै सो यहां दशों वर्त्तमान हैं ग्यारहवें की यहां समाई नहीं मैंने कहा यह भी मुझे स्वीकारहै जो कुछहो सो हो मुझे इस भेदको जनादो जब उन दशोंजवानों ने देखा कि मैं अपनी प्रतिज्ञा में दृढ़हूं तब उन्होंने एक भेड़कोमारा और उस की खालनिकाली और उसी छूरीको जिससे भेड़की खालनिकाली थी मुझे देकर कहा कि इसको रक्षापूर्व्वक अपने निकटरख यह तेरे काम आवेगी अब हम तुझे इस भेड़की खालमें बन्दकर बन में रख कर चलेआवेंगे और एक बहुत बड़ापक्षी जिसको रुखकहते हैं वह आकर तुझे अपना भक्ष समझ यहांसे झपट्टामारा ऊपरकी ओरले उड़ेगा फिर तुझे एक पहाड़की चोटीपर रख तेरेखानेकी चाहनाकरैगा इसवास्ते पहिले से तुझे चैतन्य करते हैं कि जिस समय अपने को पृथ्वीपर पाइयो तुरन्त इस छूरी से भेड़की खालकोचीर शीघ्र बाहर निकल आइयो वहपक्षी तुझे देख डरैगा और वहांसे उड़जायगा फिरवहां न ठहरके निर्भय होय भागजाइयो फिर थोड़ी दूरपर तुझे एक अत्यन्त सुन्दर और अपूर्व्व मंदिर मिलैगा उसमकानके नीचे से ऊपरतक सुवर्णके पत्रलगेहैं और उसपर उचित २ स्थानों पर रत्न हीरे और बहुमोल्य मणि जटितहैं फिर तू उसके दरवाजे से वह सदैव खुला रहता है होकर उस मकानके भीतर निर्भय चले जाइयो हम सब उस मकानमें पारी २ से रहे हैं परन्तु जोकुछ हमने उस में देखाहै उसका बृत्तान्त हम तुमसे नहीं कहैंगे और जो दशा हमपर हुई वहभी वर्णनके योग्यनहीं क्योंकि वहांका बृत्तान्त तुझे आप से आप बिदित होजायगा परन्तु इतनीबात कहतेहैं कि हमारे समान

तूभी दाहिनी आंखसे कानाहोजायगा और हमारे समान पश्चात्ताप होगा यदि तू प्रत्येकके वृत्तान्तको जो अत्यन्त अपूर्व है सुने और लिखे तो बड़ीभारी एक पुस्तकहो परन्तु हम उसे प्रकटनहीं करसक्ते जब वह जवान इतनी बात कहचुका तो मैंने छुरीले भेड़की खालको अपने ऊपर लपेटा उन्होंने उसे चारोंओरसे इसभांति से सिया कि मेरे श्वास लेनेका बाधक न हो और बनमें रख अपने गृहको चले गये थोड़ीदेर न हुईथी कि रुखपक्षी आया और मुझको भेड़ समझ कूदा और अपने पंजों में पकड़ उस पहाड़की चोटीपर लेगया जब मैंनेदेखा कि उसने मुझे पृथ्वीपर रक्खा तत्काल छुरीसे उस खालको काटके बाहर निकलआया तो वह पक्षी मुझे देखतेही उड़गया मैं उस गढ़के देखनेकी चाहना रखताथा इससे उस पहाड़पर ठहर न सका और चलके दोपहरके पीछे उस मकानमें पहुंचा और उस मन्दिरको उन एकाक्ष जवानों के कहनेसे भी अधिक सुन्दर और अच्छा पाया दरवाज़ा उसका खुला देखा तो मैं वहांसे भीतरगया उसमें एकगृह चौकोना और बहुत बड़ा देखा जिसमें कि एक दरवाज़ा सुवर्ण का और निन्नानबे दरवाज़े चन्दन और आबनूस के थे और बहुतसी सीढ़ियां जिसमें से चढ़कर उन गृहों में जाते थे और वह सौ दरवाज़े कोश और बागों के थे उनमें असंख्य द्रव्य भराहुआ था फिर मेरे सन्मुख एक दरवाज़ा बारहदरीका दृष्टिपड़ा उसके भीतर जाकरदेखा कि चालीस नवयौवन सुन्दरी स्त्रियां उत्तम २ आभूषण और वस्त्रसे सजीहुई उस बारहदरी में बैठीथीं मुझे देखतेही उठ खड़ीहुईं और मेरे प्रणाम करनेके पहिलेही अत्यन्तहर्ष और प्रसन्नतासे बोलीं कि आइये क्षेमकुशल से हो और एकने उनमेंसे कहा हम सब बड़ी देरसे तुम्हारे आनेकी राह देखतीथीं परमेश्वरका धन्यवादहै कि तुममें सब गुण जैसा कि हम चाहतीथीं पाया और बिश्वासहै कि हमारा संगभी तुम प्रसन्नकरोगे और किसीभाँति अप्रसन्न न होगे फिर उन्होंने मुझे प्रतिष्ठापूर्वक एकउत्तम स्थानमें कि उनकीअपेक्षा कुछदूरथा बैठाया कितनाही मैंने वहां बैठनेका बड़ा बहानाकिया कि यह स्थान मेरे इस दशा और बैठनेके योग्य नहीं परन्तु उन सबने कहा तुम इस समयसे

हमारे पति और स्वामीहो और हम तुम्हारीबांदी और आज्ञापालक हैं उस कालकी प्रसन्नता और आनन्द जो उनके देखने और आज्ञा पालकता से मुझको प्राप्तहुआथा बर्णननहीं करसक्ता संसारमें इससे अधिक पदवी प्राप्त न होगी जो मुझे उस समय प्राप्तथी फिर एक गरमजल मेरेपांव धोनेकोलाई और सुगन्धितजल मेरेहाथपर डालने लगी और किसीने बस्त्रलाकर पहिनाये और किसी ने नानाप्रकार के ब्यंजन मेरे सन्मुखलायधरे और कोई सुराही और उत्तम मदिराका गिलास मेरे पिलानेको लेके खड़ीहुई निदान वह सब सेवा हर्षपूर्व्वक करतीथीं उनको देख मैं अत्यन्त मोहितहुआ कि अपने सम्पूर्ण शोच और आपत्तिको भूलगया और अपने को सर्व्वसंसारका बादशाह समझनेलगा फिर मैंने उन स्त्रियोंसहित भोजनकिया और मदिरापी जब भोजन करचुके तो उनसबने मेरेचारोंओर बैठ मुझसे राहका वृत्तान्तपूंछा मैंने उनसे अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त कहना आरम्भ किया यहांतक कि रात्रिहोगई जब मैं अपने वृत्तान्तका हाल उन से कह चुका तो कई स्त्रियोंने मुझसे बार्त्ताकरनी आरम्भकी और कइयों ने उस गृहमें रोशनी ऐसीकी कि दिन बिदित होनेलगा और ऐसी अच्छीभांति और बुद्धिमानता से दीप प्रज्वलित किये थे कि जिनको मैं देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ फिर उन्होंने भोजनकी थालियां उठाय फल और मिठाई आदि लाय मेजपर रक्खी और नानाप्रकार की उत्तम २ मदिरा और फालसे आदिका शर्ब्बत शीशों और अन्य पात्रों में लायधर दिये जब सम्पूर्ण बस्तु आचुकी तो उन्होंने प्रथम मुझको उसपर बैठाया और कई सुन्दरियां मेरे निकट बैठीं और कई गाने बजाने लगीं फिर चिरकालतक मदिरा पीतेरहे कोई तो बाजोंसे स्वर मिलाय गानेलगीं और कोई नाचनेलगीं यहांतक कि अर्द्धरात्रि ब्यतीतहुई अभी गानाबजाना बन्द न हुआथा कि एक स्त्री ने मुझसे कहा आज बहुत दूरसे आये और थकेहो अब शयनकरो आपके वास्ते शयन स्थान तैयारहै परन्तु जब आप सोनेको जायँ तो हममें से एकको पसन्दकरो तो वह रात्रिको आपके कोठेमें जाय सो रहे मैंने कहा यह अनुचितहै कि मैं एकको तुममें से कि रूप अनूप

समान और चित्तचोरहो चुनूं ये बिषय मेरी ढिठाई और परस्परके डाहका कारणहोगा उस सुन्दरी ने उत्तर दिया कि हम अपने चित्तसे तुम्हारी प्रसन्नतामें प्रसन्नहैं हमें डाहनहीं कि परस्परकी प्रसन्नताका कारणहो तुम आनन्द से एकको हम चालीसस्त्रियों में से हाथपकड़ अपनेस्थानलेजाव कोई बुरा न मानेंगी क्योंकि हम एकपारी२ से तुम्हारे भोगनेसे आनन्दको प्राप्तहोंगी कोई स्त्री आज और कोई कल इस में कुछ ढील और शोच बिचार न करो परन्तु एकको पसंदकरो मैंने लाचारहो अपना हाथ उस सुन्दरी की ओर बढ़ाया जो मुझ से उस समय बार्त्ता करती थी उसने तत्काल अपना हाथ मुझे दिया फिर वे सब एक उत्तम शयनागार में लेजाय उस स्त्रीसहित जिसका हाथ मैं पकड़े था छोड़कर अपने अपने स्थान में सोईं दूसरे दिन भोरको मैंने निद्रा से जग पहिले इसके कि वो सब स्त्रियां मेरे स्थान में आवें तुरन्त और प्रकार के बस्त्र और रत्न कि पहिले से उस स्थानमें लगेरक्खेथे पहिने फिर उन्तालीस स्त्रियोंने आय मुझे प्रणामकिया और कुशल क्षेम पूंछी और मुझे स्नानागारमें लेजाय नहलाया और नानाप्रकार की सेवाकी जब मैं स्नानागार से बाहर आया तो बस्त्र उससे भी उत्तम पहिनाये और चिरकालतक भोजन करता रहा फिर सुन्दर तमाशे अर्द्धरात्रितक पहिली रात्रिके समान दिखलाये जब शयन करनेका समय आया फिर उन्होंने मुझसे कहा कि जिसे आप हममें से पसन्द करें वह आपकेसाथ जाय सोरहे मैंने एकका हाथ उनमें से पकड़लिया और शयनागार में जाय सोरहा फिर भोरको स्नानकर और बस्त्र पहिनके भोजन किया और अद्भुत चरित्रों और तमाशोंके देखने में लगारहा निदान उस योगीने जुबेदासे कहा हे सुन्दरि! मैं अबतक तुमकोकहूं इसीभांति प्रत्येक निशा को उन चालीसों स्त्रियों में से एकको लेजाय सोता निदान अत्यन्त आनन्द और हर्ष से एक पूरा बर्ष उस गढ़ में रहा जब एक दिन उस बर्ष का शेषरहा तो सम्पूर्ण स्त्रियां प्रत्येक भोरको आय मुझे प्रणाम करतीं और हर्षसहित कुशल हमसे पूँछतीं उसदिन वो सबरोती हुईआईं और मुझे हृदयसे लगाय कहनेलगीं हे शाहजादे! अब हम

तुम से बिदा होती हैं तुम्हारा परमेश्वर रक्षकहो उनके रोनेसे मैं अत्यन्त शोचितहुआ और पूछा तुम्हारे रोने का क्या कारण है और मुझसे क्यों बिदाहोतीहो परमेश्वरके वास्ते यहभेद मुझसे कहो कि मैं इस विषय में तुम्हारी कुछ सहायता करसक्ताहूं वा नहीं उन्होंने कहा परमेश्वर की इच्छा योंहीं है कि हम तुमको कभी न देखें और न तुम हमको देखो क्योंकि बहुत से मनुष्य तुम्हारे समान यहां आये और रहे फिर अलग होगये अब हमको उनका हाल कुछभी बिदित नहीं कि वो क्याहुये जीते हैं या नहीं यहकह वो फिर रोनेलगीं मैंने घबराकर कहा तुम अपने शोकका कारण क्यों नहीं प्रकट करतीहो उन्होंने कहा हम तुमसे क्याकहें यह समय तुम्हारे और हमारे अलग होने का है और फिर आशा हमैं नहीं कि तुमको देखें परन्तु जो तुम चाहो और अपनी बातपर दृढ़हो तो फिर हमको आशाहै कि फिर तुम को देखें इसीप्रकार संग हमारे और तुम्हारे बीचमें रहे मैंने कहा इस बात्तसे तो कुछ न सूचितहुआ कि इस कहने से तुम्हारा अभिप्राय क्याहै तुमको परमेश्वरकी सौगन्द है इस विषयको स्पष्ट वर्णनकरो तब एकने कहा सब के पहिले हम तुम्हें जानती हैं कि हम चालीसों शाहज़ादी हैं वर्षभर हम इसद्वारमें जी बहलानेको रहती हैं फिर हम अवश्यकार्यों के हेतु चालीस दिवस के लिये यहांसे जाती हैं और चालीस दिवस के पश्चात् फिर इसमंदिर में आजाती हैं कलके दिन यहबर्ष पूराहुआ इसकारण आजके दिन हम सब तुमसे बिदाहोती हैं यही हमारे रोने का कारण है अपने जानेके पहिले सम्पूर्ण वस्तु और कोठोंकी कुंजियां मुख्य उन सौ दरवाज़ों की तुम्हें सौंपेंगी कि हमारे जाने पीछे प्रत्येक गृहमें फिरकर जी अपना बहलाना परंतु हम तुम्हारीही सौगन्द देती हैं कि इस सुवर्ण के किवाड़ को न खोलना यदि तुम उसे खोलोगे तो फिर हम तुमको कभी न देखसकेंगी पर तुमसे तो धैर्य न होसकेगा तुम उस किवाड़को अवश्य खोलोगे यही हमारे तुम्हारे वियोग का कारणहै इसीसे हम रुदन करती हैं यदि परमेश्वर तुमको यह बुद्धिदे कि हमारे पश्चात् उसे न खोलो तो किसीप्रकारकी हानि न होगी तुमको चैन होगा किन्तु सम्पूर्ण आयु

आनन्दसे व्यतीत करोगे चैतन्यरहो इस सुवर्ण के किवाड़को कभी न खोलना यदि तुम हमारे कहने के बिपरीत करोगे तो तुमको अवश्य दुःख प्राप्तहोगा और हमैं भी शोक और क्लेशहोगा फिर तुम्हैं दूसरीबेर सौगन्द देकर कहती हैं कि ऐसा काम न करना और हमैं धैर्य्य दो कि चालीस दिवसके पश्चात् फिर तुम्हैं आय यहां देखैं हम आप इस सुवर्ण के दरवाज़ेकी कुंजी को अपने निकट रखतीं परन्तु यह उचित नहीं कि तुम ऐसे शाहज़ादे के देनेको इन्कार करैं कि तुम्हारे अबिश्वास का कारणहो उनकी ये बातें सुन मुझे अत्यन्त शोच हुआ और कहा तुम्हारे अलग होने में मुझे बहुत दुःख होगा और तुम्हारे इस उपदेशमे मैं कृतज्ञहूं तुम्हारी आज्ञानुसार अवश्य करूंगा और तुम्हारे इस पीछे सोने के दरवाज़े को न खोलूंगा यह तो बहुतही सुगम है जो इससे अधिक कोई बात कठिन होती तो मैं उसे भी अंगीकार करता इसमें तो मेराही अर्थहै इसके बिशेष जो बात कि तुम्हारे हमारे अलग होनेका कारणहै तो मैं जानबूझकर क्योंकरूंगा निदान मैं एक २ के हृदयलग उन सबको बिदा किया फिर वो सब उस मकानमें से चलीगईं और मैं अकेला रहगया उनके जानेसे मुझको बहुतदुःखहुआ यद्यपि केवल चालीस दिवसकी बियोगथी परन्तु एकएक घरी मुझे बर्षके समानथी निदान मैंने अपने चित्तमें सोचा कि उनके उपदेशानुसार केवल सुवर्णका दरवाज़ा न खोल अन्य दरवाज़े जिनकी कि मुझे आज्ञाहै खोलकर उनकी कुंजियोंको जो रक्षापूर्व्वक रक्खीथीं ले पहिले दरवाज़ा खोला जब उसके भीतरगया तो उसमें एकफलोंका बाग़ देखा कि जिसके सरिस संसार में न होगा जिसमें हज़ारों सघन और शोभायमान वृक्ष उचित २ स्थानपर लगे हुये थे उसमें बहुत से नानाप्रकार के उत्तम २ अच्छे रंगके स्वादिष्ठ फल लगे हुये थे जिनको कि मैं बहुधा नहीं जानताथा लटकरहेथे और उन वृक्षोंमें जल इसभांति पहुंचताथा कि पक्की छोटी छोटी नहरैं चारों ओर एक बड़ी नहरसे काट इस कारीगरी से लायेथे कि बिना सहायता प्रत्येक वृक्षकी जड़ में जल पहुँचता कि जिससे नवीन पत्ते और फूल उत्पन्नहोते और

कोई कोई वृक्ष अधिक फल लगनेसे झुकगयेथे अन्योंमें केवल उनके पकनेको पानी पहुँचता बुद्धिमानोंने इसभांतिकी नहरें स्थान २ पर बनाईथीं कि प्रत्येक समय जल पहुँचनेसे उस बागमें सदैव हरियाली रहती और वृक्ष कभी न मुरझाते चिरकालतक मैं उस बागमें फिरतारहा और प्रत्येक बस्तुको जो अद्वितीय और अद्भुतथी ध्यान से देख आश्चर्यित होता फिर मैं उस दरवाज़े को बन्दकर दूसरा दरवाज़ा खोला उसमें केवल पुष्पबाटिकाथी और फूलोंके वृक्षों में जल बड़ी कारीगरीसे पहुँचता और ऐसा कोई पुष्प संसारभरमें न होगा जो उस बाटिका में न हो गुलाब, चँबेली, बिनपसा, नरगिस, सोसन, बेला आदि नानाप्रकारके रंगोंके फूल फूलेहुये थे कि जिनके सुगंधों से वहांकी बायु सुगंधित होरहीथी उनकी लपटों से मगज़ भरगया फिर मैं वहभी दरवाज़ा बन्दकर तीसरा दरवाज़ा खोला उसमें एक पक्षियोंका गृहथा जिसमें संगमर्मरका फर्शथा और पिंजड़े सन्दल और आबनूस के लटकते थे बुलबुल तोताआदि पक्षी अपनी मिष्ठवाणी और चहचहाने से चित्तको प्रसन्न और उभारते थे और उन पक्षियों के दाना पानीकी कुल्हियां बहुमौल्य पत्थरकीथीं और वह पक्षीघर इतना बड़ाथा कि सौ मनुष्यों से उनकी रक्षा न होसके परंतु उन बागों में एक भी मनुष्य दृष्टि न पड़ता था और विशेष इससे एकतिनुका भी वहां अधिक और अकार्थ न देखपड़ता कि जिसके देखने से जी हटजाय फिर जब सूर्य्यास्त हुआ तब वे पक्षी बसेरा लेने को अपने २ स्थानपर जा बैठे और मैं अपने मन्दिर में आय सोरहा दूसरे दिवस भोरको जाय एक और दरवाज़ा खोला उसमें बड़ाभारी महलपाया कि जिसके चारोंओर बड़ेबड़े घर बनेहुये थे और उसमें चालीस दरवाज़े बने देखे परंतु वह दरवाज़े खुलेहुयेथे और प्रत्येक दरवाज़ेसे कोठा में जानेके मार्ग थे उसमें उत्तम एककोठा केवल मोतियोंसे भराथा उसके एक ओर ढेरमें कबूतरके अण्डेसमान मोती थे और दूसरे ढेरमें कुछ उससे छोटेथे और इसीप्रकार कईढेरमें प्रत्येक भांतिके मोती अलग२थे और दूसरे कोठेमें हीरे और मणि और वो मणिभीथे जोरात्रिको दियेके समान चमकतेथे और तीसरे में नीलमणि

चौथे में सोनेकी ईंटें और पांचवेंमें अशर्फी छठेमें चांदीकी ईंटें सातवें में रुपये और शेषों में बिल्लौर लहसुनियां और नानाप्रकारके रत्न और खानिके पत्थर जैसे मूंगाआदि इन बहुमौल्य बस्तुसे सम्पूर्ण घरभरेहुयेथे इस अथाहद्रब्यको देख मैं आश्चर्य्यितहुआ और सोचा कि यदि सम्पूर्ण संसारकाद्रब्य और धन इकट्ठा कियाजाय तो भी इसद्रब्यके समान न होगा मैं कितनाभाग्यवान् और प्रारब्धीहूं कि इतनाधन और ऐसी सुंदर चालीस शाहज़ादियां भोगकरताहूं उस योगीने कहा हे सुन्दरी! उन अद्भुतबस्तुओंका कहांतकवर्णनकरूं कि जिनकेप्रकटकरनेमें जिह्वाअचलहै जब इसी भांतिदेखते २ उन्तालीस दिनब्यतीतहुये इससमयान्तर में मैंने निन्नानबेदरवाज़े खोले और हरएक बस्तुकोदेख मैंने अचम्भाकिया फिर वहां केवल एकदरवाज़ा रहगया जिसके खोलने को मुझे निषेध कियाथा चालीसवेंदिन कि उसकेभोर वे सब शाहज़ादियां उसमकानमें आतीं और मुझसे उनसे भेंट होती भोरको उठतेही शैतानने मुझे बहलाया तो मैंने उस दरवाज़ेको खोला उस किवाड़के खोलतेही उसमेंसे ऐसी अच्छीसुगन्ध आई जिससे मैं बेसुधहोगया फिर जब सुधिसँभाली तो बिचारा कि इसके भीतरजाय देखभाल बन्दकरदूंगा निदान उसके भीतर गया और थोड़ीदेरतक ठहरा कि यह सुंगधकी लपट बायुमें फैल कम होजावै इतनेमें उस किवाड़के भीतरजाय एक घर बहुत बड़ादेखा कि उसकी पृथ्वीपर केसर बिछाहुआथा और उसकेभीतर सुवर्णकी तिपाइयोंपर अगरआदिके तैलसे दीपप्रज्वलितथे इसीकारण बड़ी तीक्ष्ण सुगन्धकी लपटें वहांसे आतीथीं इसके सिवाय बहुतसे रूपेकेदीपक सुगन्धिततैलसे जलेहुये देखे इसके सिवाय एक और अद्भुत चरित्र देखा कि वहां एकबहुतसुंदर मुश्कीघोड़ा बँधाहुआथा मैं उसकेनिकट जाय उसे अच्छीभांति देखनेलगा उसकी लगाममें सोनेकेपत्र लगे हुयेथे और उस घोड़ेके सम्मुख एकपात्र में तिल और यव बहुत से रक्खे थे और एकपात्रमें गुलाब उसके पीनेके वास्ते धराथा मैंने उस घोड़ेको पकड़ बाहर चांदनी में निकाला कि उसे और भलीभांति देखलूं फिर उसपर सवारहोके मैंने चाहा कि वह चलै परन्तु वह

अपनेस्थान से न हिला तब मैंने उसको चाबुकमारा ज्योंहीं चाबुक लगा वह घोड़ा बड़े भयानक शब्द से हिनहिनाया तदनन्तर अपने परों को कि जिनको मैंने नहीं देखाथा फैलाया और आकाशकीओर इतनाऊंचा उड़ा कि पृथ्वी न दिखाई देती थी मैंने गिरने के भयसे उस घोड़े के गर्दनके बाल पकड़ उसकी गर्दन से लिपट गया फिर उस घोड़े ने पृथ्वीकी ओर उतरना आरम्भ किया निदान उसी तांबे के मकानकी छतके ऊपर उतरा और मुझे इतना अवकाश न दिया कि मैं उसके ऊपरसे सुगमता से उतरूं अपनी पीठको इस बेगसे हिलाया कि मैं चित्तगिरा और अपनी पूंछ मेरी दाहिनी आंखमें मारी कि वह फूटगई यही मेरे काने होनेका कारणहै उससमय मुझे कहना उन जवानोंका स्मरणआया फिर वह घोड़ा अपनेपरोंको फैलायउड़ा और मेरीदृष्टि से गुप्तहोगया मैं उसी आपत्तिकी दशामें उठा और आंखपर हाथ रक्खेहुये उस मकान की छतपर धीरे २ चला और नेत्रजानेकी पीड़ासे अतिदुःखितथा फिर मैं छतकेनीचेउतरा और बारहदरी में जाय उन दशकोठों को कि जो उस घरके चारों ओरथे और उसके बीचवाले को जो उन दशों से अलगथा पहिचाना कि यह वही गढ़है जिससे रुखपक्षी मुझे पहाड़पर उठालेगयाथा परन्तु उससमय दशोंजवान उस बारहदरी में न थे मैं वहां उनके आनेका मार्ग देखताथा इतने में वहभी उस वृद्ध मनुष्यसहित आये और मेरी तरफ़ कुछध्यान भी न किया और न मेरी आंख फूटनेका कुछ पश्चात्ताप किया और कहा हम इस तेरी आपत्ति के कारण नहीं हुये मैंनेकहा तुम सत्यकहतेहो जो कुछ कि मुझपरहुआ केवल अपनेही हाथों के कारणहुआ परन्तु इसके अच्छेहोने का उपायभी है उन्हों ने कहा कि यदि हमें इस दुःखकाउपाय विदितहोता तो हम अवश्यकरते और इसी आपत्तिमें कि जिसमें तुमपड़ेहो हमभी फँसे हुये हैं एक २ बर्षतक हम सब बड़े आनन्द और चैनसे उस मकान मेंरहे यदि सुवर्णका दरवाज़ा उन शहज़ादियोंके पश्चात् न खोलते तो हमारी ये दशा न होती और सदैव उसी आनन्द और चैन में रहते यदि तुम हम सबसे अधिक बुद्धिमान् और चैतन्य थे परन्तु

उस सुवर्णके दरवाजेके खोलने बिना न रहसके और अपने को इस दुःखमें डाला और इस दण्डको प्राप्तहुये हम तुम्हें भी अपने हाल में शामिलकरते परन्तु हम आगे तुमसे कहचुके हैं कि इस स्थानपर और मनुष्यकी समवाई नहीं है इससे तुम्हारे वास्ते यही उत्तम है कि यहांसे तुम बुग़दादनगर में जाओ वहांपर ऐसे मनुष्य से मिलाप होगा जो तुम्हारे दुःखको दूरकरैगा मैं उनके कहने के अनुसार बुग़दादको चला मार्गमें अपनी भौंह और डाढ़ीमुड़वा योगियोंके वस्त्र पहिन बहुतदिनों के पश्चात् चलते २ आज सायंकालको इस नगर में पहुँचा और शहरदिवालीपर इनदोनों योगियों से कि वो भी मेरे समान अभी आयेथे भेंटहुई फिर हम तीनों रात्रिके रहने के लिये घर ढूंढ़ने लगे संयोगबश अपने सुभाग्य से तुम्हारे द्वारपर आये तुमने आतिथ्य पालन की राह से अपने घर में जगह दी और भलीभांति आदरकिया कि जिससे कृतज्ञहैं जब तीसरा योगीभी अपना वृत्तांत कहचुका जुबैदाने उससे और उसके साथियों से कहा कि तुम तीनों का अपराध मैंने क्षमा किया अब तुम यहां से चलेजाओ तब उन में से एकने कहा कि हम आशारखते हैं कि हमें इतनी आज्ञाहो कि यहां ठहरकर इनतीनों मनुष्यों का वृत्तान्तभी जो हमारी सभामें हैं सुनलें जुबैदाने ख़लीफ़ाजाफ़र और मसरूरकी ओर देखा कि उनकी पदवी को न जानतीथी ध्यानदेकर कहा अब तुम तीनों भी अपना २ वृत्तान्त कहो जाफ़रमंत्री ने बिनयकी कि हे सुन्दरी! हम अपना वृत्तान्त इस महलमें पहुँच विस्तारपूर्वक कहचुके हैं और अबभी आप के सम्मुख कहते हैं हम तीनोंमनुष्य मवस्सल के ब्यापारी हैं अपने ब्यापार की बस्तु बेंचने को इसनगर में आयेथे और सराय में उतरे हैं इस रात्रिको यहां के एक ब्यापारी ने हमको न्योतादियाथा इस लिये उसने हमसबको अपनेघरमें लेजाय नानाप्रकारके उत्तम २ और स्वादिष्ठ ब्यञ्जन खिलाये और मदिरा पिलाई फिर देरतक उससभामें गीतनृत्य आदि रहा यहांतक कि गानका शब्द सुन रौंदके लोग दौड़आये और उस सभाके बहुत मनुष्यों को पकड़लिया हम अपने सुभाग्य से भागकर निकल आये परन्तु रात्रिब्यतीत होने से

सरायकादरवाज़ा बन्दहोगयाथा हम बिचारतेथे कि कहांजावें इतने में हम इसगली में पहुँचे और गानेबजाने और हँसने बोलनेका शब्द तुम्हारे घरसेसुन हमने दरवाज़ा खुलवाया और तुम्हारी आज्ञानुसार भीतरचलेआये जुबैदाने इतनी कथासुन जाना कि यह सचमुच मव-स्सलकेब्यापारीहोंगे जैसा कि वे प्रकटकरतेहैं सत्यहोगा फिर उनसब से कहा तुम्हारा अपराधक्षमाकिया अबतुम यहांसे चलेजाओ और इसभांति ललकारके आज्ञाकी कि जिसके सुनने से ख़लीफ़ाजाफ़र और मंत्रीमसरूर और तीनोंयोगी और वे मज़दूर सातों मनुष्य कहे सुनेबिनातुरन्त उसमहलसे निकलगये क्योंकि सातोंहब्शीनंगे खड्ग लियेहुये जुबैदाकी आज्ञाकेपालनेको खड़ेथे उनके निकलतेही उसघर काकिवाड़ बन्दहोगया और ख़लीफ़ाने अपने वृत्तान्त के प्रकटकरने बिना उनयोगियोंसे कहा तुमपरदेशी अभीआयेहो इसनगरकेमार्गों को नहींजानते निशाके अँधियारेमें कहांजावोगे उन्होंने उत्तरदिया कि हम इसीबिचार और शोचमें हैं ख़लीफ़ानेकहा हमारे पीछे चले आवो हम तुम्हारी सहायताकरैंगे और मंत्रीकेकानमें कहा कि तुम इनतीनोंयोगियोंको अपने घरलेजा भोरको मेरीसभामें मेरे सम्मुख लाइयो मंत्रीजाफ़र अपने स्वामीकी आज्ञानुसार उनतीनोंयोगियों को अपने घरलेगया और मज़दूर अपने घरगया ख़लीफ़ा मसरूर सहित अपने महलकोगया और अपनी शय्यापरजालेटा परन्तु भोरतकउसेनिद्रा न आई और उन्हींबातोंको कि उसनेदेखी और सुनी थीं स्मरणकर अचम्भितहोता और चाहताथा कि इसवृत्तान्तकोजा-नलें कि जुबैदाकौन है और उनकुतियोंको इतनाक्योंमारा और अमी-नाके बदनपर क्यों कालेचिह्नहैं इसीबिचार और शोचसे उठभोरको सभामें गया और सिंहासनपर जाबैठा इतने में जाफ़रमंत्रीभीआय दण्डवत्की ख़लीफ़ाने मंत्रीको आज्ञादी कि जबतक मैं उनतीनों स्त्रियों और उनदोनों कालीकुतियोंका वृत्तान्त जानलूंगा तबतक मुझे चैन न पड़ेगा हे जाफ़र! तूजा और तुरन्तही उनतीनोंस्त्रियों और तीनोंयोगियोंको मेरेसम्मुखला इतनी आज्ञा मंत्रीपाय उनतीनों स्त्रि-योंके घरगया और रात्रिके वृत्तान्तको कुछभी न प्रकटकर ख़लीफ़ा

की आज्ञा प्रकटकी यह आज्ञा पातेही वह तीनों स्त्रियां अपने२मुखपर बस्त्रडाल मंत्रीके साथचलीं और मार्गमें मंत्री उन तीनों योगियों को भी कुछकहे सुनेबिना अपनेसाथले खलीफ़ाके सम्मुखलाया खलीफ़ा उनके आतेही अत्यन्त हर्षितहुआ और उनतीनों स्त्रियोंको आड़में पीछे अपनेखड़े होनेकोकहा कि उनकी प्रतिष्ठा खलीफ़ा महलकेसेवकों पर सूचितहो और तीनों योगियोंको उनकी प्रतिष्ठा और पदवीके अनुसार अपने समीप बैठाया फिर जब वो तीनोंस्त्रियां खलीफ़ाकी आज्ञानुसार उसस्थानपर बैठगईं तबखलीफ़ाने उनकीओर फिरकेकहा कलकीरात्रि मैंनेब्यापारी के वेषसे तुम से मिलापकियाथा और हमसे तुम्हें कुछ दुःखहुआथा सो उसीकारण तुम मुझमे क्रोधितहुईथीं अब जो तुमको मैंने बुलायाहै तो यह न समझना कि उसीविषयके सूचनके लिये तुम्हेंबुलायाहै धैर्यरक्खो मैंने उस विषयको अपने चित्तसे विस्मरणकरदिया और तुम्हारे आनेसे अति हर्षितहुआ यदि यहबुद्धि जो परमेश्वरने तुम्हेंदीहै सम्पूर्ण बुग़दादकी स्त्रियोंमें होती तो बहुत अच्छा होता यदि हमसेतुमको महादुःख प्राप्तहुआ और हमने तुम्हारा बड़ा अपराधकिया परन्तु तुमने अपनी कृपासे हमसबको छोड़ दिया कल रात्रिको मैं मवस्सलका ब्यापारीथा और इससमयमें हारूंरशीद सातवां खलीफ़ा अब्बासके घरानेका और अपने बड़ेनबीका युवराज हूँ तुम्हारे बुलानेका कारण यहहै कि बतलाओ तुमकौनहो और तुम मेंसे एकस्त्रीने किसलिये उन दोनों कालीकुतियोंको मार अपने गलेलगाया और क्यों एकस्त्री के कन्धोंपर काले चिह्न हैं खलीफ़ाने इसवृत्तान्तको भलीभांति उनसेकहा और उन्होंने भी समझा परन्तु मन्त्री ने फिर उस प्रश्नको दुहराय समझादिया यहसुन जुबैदाने पहिले अपना वृत्तान्त इसप्रकार पर आरम्भ किया ॥

## जुबैदाका वृत्तान्त ॥

जुबैदाने खलीफ़ाकेसम्मुख अपनीकहानीको इसभांति वर्णनकिया कि हे बादशाहोंके बादशाह! मेरी कहानी अद्भुत और अपूर्व है कि उसकेसमान कभी आपने न सुनीहोगी ये दोनोंकाली कुतियां औरमैं तीन सगी बहिने हैं अब इसवृत्तान्तको आपसुनिये कि क्यों ये दोनों

कुतियांबनी और ये दोनोंस्त्रियां जोकि मेरेसाथहैं मेरीसौतेली बहिनें हैं और वह स्त्री कि जिसके कंधेमें काले चिह्नहैं अमीनाहै और दूसरी कानामसफ़ी और मेरानाम जुबैदाहै अपने पिताके मरने के पश्चात् हम पांचों बहिनोंने पिताके सम्पूर्णधनको परस्पर बांटलिया वे दोनों सौतेली बहिनें अपने २ भागको ले अपनी माता के निकट जाय रहीं और हमतीनों बहिनें अपनी माताके समीपरहीं कि माता उस समयतक जीतीथीं जब वो मरगईं तो तीन२हज़ार रुपये हम तीनों बहिनोंको उनके धनसे मिले उन दोनों बहिनोंने कि हमसेबड़ीथीं अपने भागोंकोपाय बिवाहकिया और अपने पतिके घरजायरहीं और उनके पश्चात् मैं अकेली रहनेलगी थोड़े दिनके पश्चात् मेरी बड़ी बहिनके पतिने अपना सम्पूर्णमाल और असबाब बेंच और वहभी जो मेरी बहिनके पासथा सबको इकट्ठाकर दोनों स्त्री पुरुष आफ्रिका की ओर चलेगये और वहां मेरे बहनोई ने अपना और मेरीबहिनका सम्पूर्णधन और आभूषणादि खा पी उड़ाडाला जब वह निर्धनहोगया तो उसने किसी बहानेसे मेरी बहिनको तलाकदे अपने घरसे निकालदिया वह फटेहालों और कठिनता और बड़ेबड़े दुःखोंको झेलते झेलते इतनीदूरसे बुग़दादमें पहुंची और इसनगरमें कहीं आसरा न पाय मेरेघरआई मैंने उसेप्रतिष्ठापूर्वक अपनेघरमेंरक्खा और पूँछा कि कौनसा ऐसा दुःख हुआ कि जिससे तुम्हारी यह दशाहुई उसनेरुदनकर अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रकट किया वह सुन मुझेबड़ा शोचहुआ और मैंभी बहुतरोई फिर उसको स्नानकराय और अपने बस्त्रागारसे बहुत उत्तमबसन पहिराये फिर मैंने उससे कहा हे बीबी! तुममेरी बड़ीबहिनहो मैं तुमको मातासमान समझतीहूँ और तुम्हारे जानेके पश्चात् परमेश्वरने मुझपर बड़ीदयाकी कि रेशमके वस्त्रोंमें से मुझे बहुतसा लाभहुआ अब जो कुछ मेरेपासहै वहसब तुम्हाराहै तुमभी इसीका व्यापारकरो जो मैं करतीहूँ उससमयसे मैं और वह दोनों एकही घरमें बहुत आनन्द और चैनसे रहनेलगीं और बहुधा हमदोनों अपनी दूसरी बहिनको स्मरण कियाकरतीं कि बहुतकालसे उसका समाचार न पाया कि वह कहांहै और उसकी क्या दशाहुई

थोड़े दिनके पश्चात् मेरीमँझलीबहिनभी अपनी बड़ीबहिनके समान उसी बुरीदशासे मेरे घरआई उसके पतिनेभी उसकी सम्पूर्ण बस्तु और धन खर्चकर अपने घरसे निकाल दियाथा निदान उसको भी मैंने अपने साथरक्खा और बहुतसा धैर्य्यदिया कुछकाल में उन दोनों बहिनोंने मुझसेइसबातका बहानाकिया कितुम्हारे पास हमारे रहनेसे तुमकोकष्ट औरहानि पहुँचतीहोगी सो हम फिर बिवाहकरेंगी मैंने उनसे कहा जो मेरी ज़ेरबारी से तुम्हारा यह बिचारहै तो ब्यर्थ है क्योंकि परमेश्वरकी पूर्णअनुग्रह और अनुकम्पासे इस ब्यापारमें मुझे इतना लाभ होताहै कि हम तीनों भलीभांति आनन्द करती हैं और सम्पूर्ण आयुभर इसीभांति प्राप्तहोगा और तुम्हें किसीप्रकार का कष्ट न पहुँचेगा यदि तुम्हारी इच्छा बिवाह करनेकी है तो मैं अत्यन्त आश्चर्यवान् हूं कि अपने पतियोंसे इतना दुःख और कष्टपाने परभी अभी तुमको यही इच्छा बनी है इससमयमें अच्छे पतिका मिलना अत्यन्त कठिनहै इसकारण इस बिचारको छोड़दो और पति बिना रहकर अपने घरमें प्रतिष्ठापूर्व्वक कालक्षेपकरो इसीभांति से मैंने बहुत कहा और समझाया परन्तु उन्होंने कुछभी न सुना और न मेरे कहनेको किया और बिवाह करने पर उद्यतहो मुझसे कहा तू हमारी छोटी बहिनहै और हमसे अधिक बुद्धिमान् है परन्तु हम इससे अधिक तेरे घरमें नहीं रहसक्तीं क्योंकि तू हमको बांदियों के समान अपने चित्तमें समझती होगी यह सुन मैंने कहा हे बहिनो! यह क्या कहतीहो मैं तुमको वैसाही अपनी बड़ीजानतीहूं जैसा कि पूर्व समझतीथी घरबार धन बस्तु आदि जो कुछ है वह सब तुम्हारा है फिर उनको अपने कण्ठसे लगाय धैर्य दिया और उसीप्रकार परस्पर मिलकर रहनेलगी फिर एकबर्ष के पश्चात् परमेश्वरने मेरे ब्यापारको ऐसाबढ़ाया कि मैंने प्रदेशमें ब्यापारके हेतु जानेकी इच्छाकी कि कुछ बस्तु को जहाज़पर लाद किसी नगर में ब्यापार के निमित्त जाना चाहिये इसबातको बिचार अपनी दोनों बहिनों समेत बुग़दाद से बुशहरको आई और वहांसे छोटासा जहाज़ मोललै अपनी सम्पूर्ण ब्यापार की बस्तुको कि बुग़दाद से

अपने साथ लाईथी उसपर लाददिया बायु अनुकूलथी इस कारण तुरन्त मुहानेसे नदी फारसमें पहुँची और वहांसे हिन्दुस्तानको चली बीस दिवस के पश्चात् हम एक द्वीपमें जो बुलन्द पहाड़के नीचे था पहुँची उसद्वीपमें एकनगर बहुतबड़ा और अतिसुन्दरथा उसके तटपर हमारे जहाजने लंगरकिया मैं तटपर उतरनेकी अतिलालसा रखतीथी इसकारण अपनी बहिनोंके पहिले उतर अकेली छोटीसी पंसोईपर सवारहोकर पृथ्वीपर उतरी और नगरके दरवाजेपर जाय क्यादेखा कि बहुतसीसेना रक्षाके निमित्त दरवाजेपर बैठी है और थोड़े सिपाही खड़ेहैं और सब के हाथोंमें सोंटे व लाठीहैं और उनके ऐसेबिकराल और डरावने स्वरूपथे कि जिनके देखने से मैं भयभीत हुई परन्तु उनका अंग कुछ भी न हिलताथा और न उनकी पलकें झपकतीथीं इससे मुझे आगेजानेका साहसहुआ जब मैं उस सेना के निकटपहुँची तो उन सबको शिरसे पाँवतक पत्थरका पाया फिर मैं नगरके भीतरगई और उसकी गलियोंमें चारोंओर जायफिरी तो सब पत्थरका बनाहुआ देखा चौककी दुकानें बन्ददेखीं धुंइहरों में से कुछभी धुआँ न निकलताथा इसलिये मैंने समझा कि घरों के लोगभी बाहरके मनुष्योंके समान पत्थरके होगयेहोंगे फिर नगरके उसीओर एक बड़ा मैदान देखा उसमें एकबड़ा फाटकथा कि जिस में सुवर्ण के पत्तर लगेथे और दरवाजे के बाहर खुलाथा उस में एकपरदा रेशमका पड़ाथा और एकहांडी प्रकाशके निमित्त लगी है उसबड़े और सुन्दर दरवाजे के देखनेसे बिदितहुआ कि यह अवश्य राजद्वार है मैंने किसी मनुष्यको वहां न देख अचम्भा किया और उस परदेके समीप इस इच्छासेगई कि किसीसे भेंटहोगी परन्तु जब परदे को उठाय अपना पांव आगेरक्खा तो और भी अधिक आश्चर्यहुआ कि उस घरकी ड्योढ़ी में बहुत से चोपदारों को देखा कि कुछ तो खड़े और कुछ बैठे पत्थर के बनेहुये थे फिर सब जगह जाकर यहीहालदेखा कि सब छोटेबड़े वहां पत्थरके बनेहैं फिर वहांसे मैं तीसरे घरमेंगई उसेभी निर्जनपाया फिर जब चौथे मकानमेंगई कि वह मकान बहुत बड़ा सुन्दर देखा उसके किवाड़ और जंजीर

सुवर्णकी थी मैंने समझा कि यह महल अवश्य रानी के रहने का है उसके भीतर जाय देखा कि एकबड़े दालानमें बहुतसे हब्शी बृहन्नल पत्थरके बनेहुये हैं और आगे उस दालानके एकमकान बहुमूल्य बस्तु से सजाहुआथा उसमें एक स्त्री पत्थरकी बनीहुई बैठी है और उसके शिरपर मणिजटित मुकुटधरा है मैंने समझा कि रानी यही है और उसके गलेमें नीलमणिकी मालाथी कि जिसका प्रत्येक दाना सुपारी के समानथा मैंने समीप जाय उनरत्नोंको देखा कि इतनेबड़े होनेसे भी बहुतसाफ़ और गोल और अतिस्वच्छ थे ऐसे उत्तम उत्तम रत्न और ऐसे बड़ेद्वारकी सम्पूर्ण सामां देख मुझे अचम्भाहुआ उसमें ग़ली-चोंका फ़र्शथा और मसनद उपधान आदि अतलस और कीनखाब के बनेहुये थे फिर वहांसे अन्य बहुतसे सुन्दर सुन्दर घरोंमें गई उन सबमेंसे एकबड़ाभारी मकान कि जिसमें सुवर्णका सिंहासन पृथ्वीसे बहुत ऊँचे बिछाहुआ था और उसके फ़र्शके चारों ओर मोतियों की झालरें लटकतीथीं उनसबमें से एक और बस्तु अद्भुत और अपूर्व यहथी कि उस फ़र्शसे चमक और लाटें निकलती थी मैंने चाहा कि उस चमकका बृत्तान्त जानलूं कि किस बस्तुसे निकलती है फिर मैंने उस सिंहासनपर चढ़के देखा कि एकछोटीसी तिपाईपर एकबड़ा हीरा शुतरमुर्ग के अण्डेके समानरक्खा है उसीसे वह चमक निकलती है कि जिससे आंखें चौंधातीथीं और बड़ी कठिनतासे उसपर दृष्टिठहर-तीथी और उस फ़र्शके चारोंओर तकिये रक्खेथे और वहां एक दी-पक प्रज्वलितथा जिससे मुझे बिदित हुआ कि यहां कोई मनुष्य जीता भी है क्योंकि दीपक बिना जलाये नहीं जलता और बहुतसी बस्तुओं को देख मुझे आश्चर्य हुआ परन्तु बिशेषकरके वह हीरा अद्भुत था उस राजद्वारके कोठे कुछतो बन्दथे और कुछखुलेथे कोई ढकेलनेसेही खुलजातेथे मैं हरएक मकानमें जाती और उसकी अमूल्य बस्तुको देखती निदान मैं घूमतेघूमतेवस्त्रागार और दफ्तरखानोंमें गई जिस में असंख्य द्रव्य और बहुमूल्य बस्तुरक्खी थी उनसबको देख मैं अ-पनेको भूलगई न तो कुछ जहाज़का और न अपनी दोनों बहिनों का शोचरहा केवल इसीबातके पीछे रही कि किसीप्रकार यहां का वृत्तान्त

विदितहो कि यह निर्जन क्योंहै और सम्पूर्ण मनुष्य पत्थरके क्यों बनगयेहैं इतनेमें रात्रिहुई मैं घबड़ाकर चाहतीथी कि जिस मार्गसे आईहूं उसी मार्गसे चलीजाऊं परन्तु रात्रिके अँधियारेके कारण न जासकी फिर उसी घरमें कि जिसमें वह सिंहासन और हीराथा और दीपकभी जलतेथे आई और बिचार किया कि रात्रिको इसीघरमें रहूं भोरको उठ अपने जहाजपर चलीजाऊंगी यह बिचारकर निर्भयहो लेटरही परन्तु अकेले होनेसे निद्रा न आई यहांतक कि अर्द्धरात्रि व्यतीत होगई उसीसमय एकशब्द सुनाई दिया कि कोई अतिस्पष्ट औरमीठीबाणीसे कुरानपढ़ताहै जिसके सुननेसे मुझे अतिहर्षहुआ और वहांसे उठ एकदीपक अपने हाथमें लियेहुये उसके प्रकाश में चली कई एक कोठोंके लांघने के पश्चात् वहां पहुँची कि जहांसे वह शब्द सुनाई देताथा वहांजाय मैंने एक छोटीसी मसजिद देखी उसके देखनेसे मुझे परमेश्वरके धन्यवादकी निमाजपढ़नी अवश्यहुई वहां दो बड़ेबड़े मोमके दीपक प्रज्वलितथे उनके समीप निमाजके स्थान पर क़ालीनपर एकजवान अतिरूपवान् बैठाहुआ एकाग्रचित्त और ध्यानपूर्वक पढ़ रहाथा उसको देख मैं अतिहर्षितहुई और आश्चर्य किया कि लाखों मनुष्यों में से केवल यही मनुष्य बचा है पत्थर नहीं होगया और समझी कि इसमें कुछ भेद अवश्य है मैंने उस मसजिदमें जाय बड़ेशब्दसे निमाजपढ़ी और परमेश्वरका धन्यवाद किया कि यह सफ़र हमारा अच्छा हुआ और कुशलपूर्व्वक यहां तक पहुँची और उसकी पूर्णकृपासे मुझे परिपूर्ण आशाहै कि कुशल पूर्वक अपने नगरमें पहुँचूं उस मनुष्यने यह शब्दसुन मेरी ओर देखा और कहा कि हे सुन्दरी! मुझे बताओ कि तुम कौनहो और क्यों ऐसे उजाड़नगरमें आई फिर मैं तुमको अपना वृत्तान्त सुनाऊंगा कि कौन हूं और इसनगर के बासी क्यों पत्थरके बनगये और किस कारण मैं केवल परमेश्वर के इसदण्ड और क्रोधसे बचरहा यह सुन मैंने उससे अपना वृत्तान्त इस प्रकार संक्षेप से वर्णन किया कि बीस दिन के समयान्तर में मेरा जहाज़ मेरेनगरसे यहांतक पहुँचा और यहांके आनेका वृत्तान्त विस्तारपूर्व्वक प्रकटकर उससे कहा आशारखतीहूं

कि अपने प्रणानुसार अपनावृत्तांत मुझे जनादो कि उन सबमनुष्यों को पत्थर का बनाहुआ देख मैं अत्यन्तभयभीतहूं यहसुन उसमनुष्यनेकहा कि थोड़ीदेर ठहरजा फिरउसनेपढ़ना बन्दकर और क़ुरान को सुवर्ण के वस्त्रमें लपेट ताखपररक्खा इससमयान्तर में मैंने अवकाशपा उस जवान को भलीभांति देखा देखतेही उसके रूप अनूप छबि पर मोहितहोगई फिर उसने मुझे अपने निकट बैठाया और कहा हे सुन्दरी! तुम्हारी निमाज़ और स्तुतिसे विदित हुआ कि परमेश्वरको सच्चाजानती हो और उसी को पूजतीहो यहकह कहा कि इस नगरका बादशाह मेरापिताथा और उसका दूर २ तकराज्यथा परन्तु वह बादशाह और सम्पूर्णराज्यकेबासी और सेना और सेवक आदि अग्नि के उपासक थे और नारदीनकी जो पूर्व्वकाल में देवों का बादशाह था पूजाकियाकरते थे यद्यपि मेरे माता पिता अग्निउपासकथे परन्तु मैं मुसल्मानहूं क्योंकि बाल्यावस्थासे मेरीदाईने कि वह मुसल्मानथी मुझे मुखाग्र क़ुरान उपदेश किया और समझाया कि परमेश्वरही उपासना के योग्य है तू किसी को न पूजियो और मुझको अरबीविद्या पढ़ाई और तफ़सील की विद्या जो क़ुरान से सम्बन्ध रखतीथी पढ़ाई सो थोड़ेही कालमें मुझे क़ुरानके अर्थ समझने की सामर्थ्यप्राप्तहुई निदान उसदाईने मुझे सबसे छिपाकर अपने सबऊंचनीच धर्मकोबतादिया उसके मरने पश्चात् मुझे मुसल्मानों का धर्म्म जैसा कि उसने मुझे उपदेशकियाथा दृढ़रहा और मैं सदैव अग्नि उपासक आदि से अप्रसन्न रहता कई मास के आगे तीनवर्ष तक बराबर इस नगरमें यह शब्दसुनाई देताथा कि हे इस नगरके बासियो! नारदीन और अग्निकी पूजाछोड़ परमेश्वर को जो सर्वोपरि और उपासनाकेयोग्यहै पूजो इनतीनबर्ष के समयान्तरमें प्रतिदिवस यह शब्द यहांके बासियोंको सुनाईदेतारहा परन्तु किसीने उसशब्द को न माना और न उस अधर्मको छोड़ा तीनवर्ष के पश्चात् यहांके सम्पूर्ण मनुष्यों पर परमेश्वर का कोपहुआ कि जो जिस स्थानमें जिसप्रकार से था वहीं पत्थरका बनगया और मेरा पिताभी काला पत्थरका बनगया कि जैसे तुमने महलमें देखाहोगा और यही मेरी

माताकी भी दशाहुई उनसबमें केवल मैं परमेश्वरकी पूर्णकृपा से इस कठिनदण्ड से बचाहूं उससमयसे मैं पहिलेकी अपेक्षा उसकी उपासना और पूजा अधिक चित्तलगाय करताहूं और हे भाग्यवती सुन्दरी! मैं जानताहूं कि परमेश्वर ने तुझे मेरे धैर्य देने को भेजा है इससे तेरी इस कृपाका मैं कृतज्ञहूं क्योंकि अकेले रहनेसे मैं अत्यन्त शोचयुक्त रहताथा उसका यह वृत्तान्त विशेषकर अन्तर का बचन सुन मुझको अधिक प्रीतिहुई और बेधड़क उससे कहा सत्यहै परमेश्वर मुझे इसीलिये तुम्हारे नगर में लाया कि तुमको इस भययुक्त स्थानसे निकाललेजाऊं मेरा जहाज़ यहां बर्तमान है और मैं बुग़दादकी रहनेवालीहूं जितना धन और बस्तु जहाज़पर लाईहूं उतनाही अपने घरमें छोड़आईहूं वहां तुमको भलीभांति रक्खूंगी बुग़दादके पहुँचतेही उस बादशाहको तुम्हारी ख़बर होगी और वह तुम्हारी पदवी अनुसार आतिथ्य सेवा और प्रतिष्ठा भलीभांति करेगा मेरा जहाज़ आपकी सेवा में बर्त्तमानहै उसपर चढ़के चलिये उस मनुष्य ने इस बातको हर्षसे अंगीकार किया फिर मैं रात्रिभर वहींरह उस पुरुष से अपने सफ़रका वृत्तांत कहतीरही दूसरे दिन भोरको उस जवानसहित उस महलसे समुद्र के तटपर पहुँची और उनदोनों बहिनोंको अपनें पहुँचने से शोकयुक्तपाय मैंने उनसे अपने न आनेका क़ारण प्रकट किया और उस पुरुषकी कहानी भी बर्णन की फिर मेरी आज्ञानुसार जहाज़ के भृत्योंने उस असबाब व बस्तु से जो मैं अपनी नगरीसे लाई थी जहाज़को ख़ालीकिया और जो द्रव्य और रत्न और बहुमूल्यबस्तु मैंने राजमहल में पाई थी उस जहाज़ पर लाददी और उस शाहज़ादेको अपने साथ लेजाय जहाज़ पर बैठाया और संपूर्णबस्तुके लेजानेका इरादा न किया क्योंकि उतने असबाबके वास्ते बहुत से जहाज़ चाहिये थे निदान जब आवश्यक बस्तु जहाज़पर लाद के अन्नजलआदि भी लाद लिया तब जहाज़ का लंगरउठाय वहांसे अपने नगरकी राहली मार्गमें मेरी बहिनें उस जवानको अतिसुन्दर और रूपवान्‌देख चित्तमें डाहरखनेलगीं और मेरी उसकी परस्परप्रीति उनके वैरको अधिक करनेवाली हुई नि-

दान एक दिन उन्होंने छलसे मुझसे पूँछा कि हे बहिन! अपनेनगर में पहुँचकर इस जवानको कहांरक्खोगी और इसके साथ क्या उपकारकरोगी मैंने हास्य से उत्तर दिया कि वहां पहुँचकर मैं इससे बिवाहकरूंगी फिर मैंने शाहजादेसे कहा कि मेरी यह इच्छाहै कि मैं तुम्हारी बांदियों में होऊँ और अपने चित्तानुसार तुम्हारी सेवा करूं उस शाहजादे ने भी हास्यसे उत्तर दिया कि जो तुम्हारा जी चाहे सो करो मैं तुम्हारी बहिनोंके सम्मुख यह प्रतिज्ञाकरताहूं कि मैं इस बिषयसे प्रसन्नहूं और तुम्हें अपनी स्त्रीके समान समझूंगा बांदीपनेका तो क्याबर्णनहै मैं आपही तुम्हारा कृतज्ञ हूं और रहूंगा इसबार्त्ताकोसुन मेरीबहिनों के मुखकारङ्गबदलगया और उसीसमय से मुझे बैरभावसे देखनेलगीं यहांतक कि जहाज़ हमारा नदीपारस के मुहानेपर पहुँचा और बुशहर हमसे इतना पास रहगया कि यदि बायुठीकरहे तो दूसरेदिन वहांपर पहुँचजाती निदान एक दिन रात्रि को मैं निद्राबश थी मेरी बहिनों ने मुझेउठाय समुद्रमें डालदिया और शाहज़ादेकी भी यही दशाकी बड़ापश्चात्तापहै कि वह शाहज़ादा गिरतेही डूबगया और मैं नदी में गिरतेही ऊपर को उछली और रात्रिके अँधेरे में पैरनेलगी आयु शेषथी इसकारण तटपरजा पहुँची और पृथ्वी बराबरपाके जलसे बाहर निकल आई इतने में भोरहुआ मैंने अपने को एकउजाड़द्वीपमेंपाया जहांसे बुशहरकाबंदर दशकोसकी दूरपरथा मैंने तुरन्त अपने कपड़े सुखाय पहिन लिये और इधरउधर फिरने से जो फल दृष्टिपड़े वह मैंनेखाये और एकसोतासे कि जिसमें अतिनिर्मल और मीठाजलथा पानी पिया उससमय मुझे सूचितहुआ कि मेरी आयु बहुत बड़ी है जो समुद्रसे डूबते बची और उत्तम उत्तम फल खानेको मिले निदान फिर मैं छाया में जाय लेटरही कुछकाल व्यतीत हुआ था कि बहुत बड़ा लम्बा सर्प सपक्षदृष्टिपड़ा और पहिले मेरी दाहिनी ओर आया फिर बाईं ओर आय अपने मुखसे जिह्वानिकाल मेरी ओर देखनेलगा जिससे मुझे बिदितहुआ कि इसको किसीप्रकारका दुःखपहुँचाहै मैं उठ चारोंओर देखनेलगी फिर दूसरा एकसर्पदेखा कि उससे बड़ाहै और पहिले

सर्पके पीछे आताहै और चाहताहै कि पूंछ पकड़ उसको निगलजायँ मुझे पहिले सर्पपर दयाउपजी और निर्भयहो एकबड़ा पत्थर उठाय इस वेग से दूसरे सर्पके शिरपर मारा कि शिर उसका टुकड़े टुकड़े होगया पहिलासर्प अपने बैरी से छुटकारा पाय तुरन्त ऊपरका पर खोलउड़ा मैं उसे देख आश्चर्यितहुई फिर दूसरेस्थानपरजाय सोय रही जब जगी तो एक हरेरङ्ग की सुन्दर स्त्रीको देखा कि दो काली कुतियों को पकड़ेहुये मेरे शिरहानेपर बैठीहै उसको देखतेही मैं खड़ी होगई और उस स्त्रीसे पूंछा कि तू कौनहै उसने कहा मैं वही सर्पहूं जिसको तुमने बैरी से बचाया अब मैं चाहतीहूं कि उस उपकारसे कि जो तुमने मेरेसाथ कियाहै उऋण होजाऊं और उस के बदले तुम्हारी सेवाकरूं इसवास्ते मैंने अपनी जातिकी अप्सराओं को इकट्ठा कर तुम्हारे जहाज़की राहली और तुम्हारी उन दोनों बहिनों को कि जिन्होंने भलाईके बदले बुराईकीहै कालीकुतिया बनाडाला और जितनी कि तुम्हारे जहाज़ में द्रव्यआदि वस्तु लदीहुई थी तुम्हारे कोशमें कि वह बग़दादनगरमें है रखआईहूं और वह जहाज़ समुद्र में डुबादिया यह कह उस अप्सरा ने एकहाथ से मुझे और दूसरेसे उन दोनों कुतियों को उठाय ठीक बग़दाद नगरमें मेरेघर पर पहुँचा दिया मैं अपने महलमें जाय सम्पूर्ण द्रव्य और रत्न आदि जो उस जहाज़पर लादलाई थी पाया और वहां पहुँच उस अप्सरा ने मुझ से कहा कि मैं तुझे उसकी आज्ञानुसार जो नदियों का बहना बन्द करसक्ता है कहतीहूं कि अभी यह दण्ड तेरी बहिनों को पूरा नहीं किंतु प्रतिरात्रि उनको सौसौ चाबुक माराकरना क्योंकि उनके अपराध का यही दण्डहै चैतन्यरह इस आज्ञामें विपरीतता न हो और हम सब अप्सरा तुम्हारे अधीनहैं जब स्मरण करोगी तब हम तुम्हारी सहायता करेंगी हे स्वामी ! उसीदिनसे मैं उस अप्सराकी आज्ञानुसार प्रतिनिशा उन दोनों कुतियोंको कि मेरी सगीबहिनें हैं मारतीहूं परंतु रुधिर के जोशसे मुझको क्लेशहोताहै इसकारण अपने कण्ठ से लगाय रोतीहूं और प्यारकर आंसू पोंछतीहूं यही कारण मेरेप्यारकरनेकाहै अब शेष वृत्तांत को मेरी बहिन अमीना आपके सम्मुख बि-

नय करेगी खलीफ़ाने इस अपूर्व और अद्भुत वृत्तान्तको सुन अपने मंत्री से कहा तू अमीनासे पूंछ कि तेरी छातीपर काले चिह्न क्या हैं यह सुन अमीनाने अपना वृत्तांत इसभांति कहना आरंभ किया॥

## अमीना का वृत्तान्त॥

अमीना ने खलीफ़ा के सन्मुख कहा कि जितनी कहानी जुबैदा ने बर्णनकी है उसका दोहराना कुछ अवश्य नहीं केवल मैं अपनाही वृत्तांत प्रकट करती हूं मेरी माता मुझे एकघरमें लेकरआई कि अपना रँड़ापाकाटे और मेराबिवाह एकबड़े आदमी के पुत्र के साथ कि वह इसी नगर का बासी था करदिया एकबर्ष पूरा ब्यतीत न हुआ होगा कि मेरा पति मरगया और मैं रांड़होगई परन्तु सम्पूर्ण द्रव्य उसका जो नब्बे सहस्ररियालों के लगभग था मेरे हाथलगा उसके नफ़े में मैं आनन्दपूर्वक कालक्षेप करती थी और उतना द्रव्य मेरी सम्पूर्ण आयुको बहुतथा जब मेरे पतिको मरे छः महीने ब्यतीतहुये तब मैंने दशजोड़े बस्त्र बहुत उत्तम और बहुमूल्य अपनेलिये सिलवाये सो वह एक २ जोड़ा सहस्र २ रियालमें बना फिर जब अपने पतिका शोककरते एकबर्ष ब्यतीतहुआ तब मैंने उन बस्त्रों को पहिनना आरम्भ किया एकदिन मैं अकेली अपनेघरमें बैठीथी कि एकमेरे सेवकनेआय मुझसेकहा कि एक वृद्धा कुछकहनेको आई है जो आज्ञा हो तो हम उसे भीतरलेआवें मैंने कहा आनेदो फिर उस वृद्धाने आय मुझे प्रणाम किया और धरती चूम खड़ीहो कहनेलगी कि मैंने आप की दयालुता और दीनपालकता ग़रीबनिवाजी और प्रशंसा बहुत सुनी है इसवास्ते आपके सन्मुख कुछ बिनय कियाचाहतीहूं मेरेपास एककन्या बिना माता पिताकी है आजकीरात्रिको उसकाबिवाहहोगा मैं और वह दोनों इस देशमें अनजानहूं न तो कोई हम को जानता पहिचानताहै और न हम किसीको और जिसकेसाथ उसका बिवाह होगा वह धनवान् मनुष्यकापुत्रहै उसके कुटुम्बकेलोगभी बहुतसे हैं और मैंने सुनाहै कि दूल्हेकेसाथ बहुतसी स्त्रियां बहुमूल्य भूषण और बस्त्रपहिनकर आवेंगी जो आप उस बिवाहमेंचलें तो मेरी प्रतिष्ठा समधियाने में हो और कोई हमको निर्द्धन और प्रदेशी न समुझे

तुम्हारे प्रतापके सामने किसी का भी उच्चपद नहीं और सब यही बिचारेंगे कि जिसकी ओर ऐसी धनवान् स्त्री है वह प्रतिष्ठित क्यों न होगी और परमेश्वर न चाहे जो तुम मेरी निर्द्धनता और दीनतापर दृष्टि न कर अपने चलने से नाहींकरोगी तो मेरी अप्रतिष्ठाहोगी और मेरा इस नगरमें कोई भी मुरब्बी नहीं और न कोई ऐसी शीलवान् और दयावान्स्त्रीहै जैसी कि तुम इस नगरमेंहो कि जिससे मैं जाय अपना दुःख कहूं और वह सुने और मेरी सहायता करे यह कह वह वृद्धा रोनेलगी मुझे उसके रोने और दीनता पर दया उपजी तो मैंने कहा कि हे माता! रुदनकर मुझे न कुढ़ा मैं तेरी पुत्री के बिवाह में अवश्यचलूंगी पता मकानका कि जिसमें बरात आवेगी बता कि मैं सायंकालको वहांजाऊं और तुझसे उसी स्थान पर मिलापहो फिर तू यहां आनेका श्रम न कीजियो वह वृद्धा इस भांतिका उत्तरसुन हर्षितहुई और आशीर्बाद दे कहनेलगी कि हे सुन्दरी! जैसा कि तूने इससमय मेरे चित्तको प्रसन्न किया है परमेश्वर तुम्हारे चित्तको सदैव हर्षयुक्तरक्खे परन्तु तुझे आवागमनमें कुछ श्रम न होगा मैं आजसायंकालको फिर आऊंगी मेरेही साथ चलना यह कह वह वृद्धा बिदाहो चलीगई फिर मैंने अच्छा जोड़ा पहिन और बड़ेबड़े मोतियोंकीमाला बाजूबन्द कर्णफूल अँगूठियां और चमकतेहुयेहीरे और बहुमूल्यरत्नपहिने इतनेमें सूर्य अस्तहुये वह वृद्धा मेरेलेनेको आई और मेरेहाथको चूम कहाकि दूल्हेके माता पिता और नातेदार तो मेरेघर आये हैं और बहुधा यहां के सरदार और धनवान् और उत्तमकुल की स्त्रियां भी उनके साथ आई हैं अब मैं तुम्हारे लेनेको आई हूं इतना बचन सुन मैं उसके साथहुई और मेरे पीछे बहुतसी दासियां उत्तम उत्तम आभूषण और बस्त्र से सजधज चलीं चलते चलते एक खुली और साफ़ छिड़की हुई गलीमें पहुँची फिर उस वृद्धाने हमको बड़े दरवाज़ेपर लेजाय खड़ा किया उस दरवाज़ेके ऊपर एक फाटकपर लकड़ीकी लेखनी से यह लिखाथा कि यह घर सदैव प्रसन्नताकाहै उसको मैंने दिये के प्रकाश से पढ़ा फिर उस वृद्धाके ताली बजाने से वह किवाड़ तत्काल खुल

गया और वह मुझे एकबड़ेभारी दालानके भीतरलेगई वहां मैंने एक अतिरूपवती स्त्रीको देखा उस स्त्रीने मेरी अगवानी की और मुझे कण्ठसेलगाया और प्रतिष्ठापूर्व्वक एककोठे में लेजाय बैठाया वहां मैंने एक जटित सिंहासन और उसपर उत्तम २ रत्नसेजटित छत्र देखा फिर उस सुन्दरी ने मुझसे पूंछा क्या तुम बरातके प्रबन्ध के निमित्त आईहो मैं जानतीहूं कि यह बिवाह तुमसेहोगा फिर उसने मेरी अत्यन्त प्रतिष्ठा की और मुझसे मिष्ट बचन और शीतलता पूर्व्वक उत्तम२ वार्त्ताकरके यह कहा कि बीबी इसब्याह का वृत्तांत जिसमें तुमको परिश्रम दियागयाहै इसप्रकारपरहै कि मेरा एकभाई अतिसुन्दर और युवा है वह तुम्हारी सुन्दरता और रूप अनूप की प्रशंसा सुन मोहितहुआ और तुम्हारेसाथ बिवाहकरने की अत्यन्त लालसारखताहै जो तुम इसमें नहीं करोगी तो उसके अत्यन्तदुःख और दिलटूटनेका कारणहोगा और मैं सौगन्दखाय कहती हूं कि वह सुन्दरजवान तुम्हारी संगतिके योग्यहै हरतरहसे भरोसारक्खो वह पुरुष अत्यन्त प्रसन्न चित्त है फिर उस सुन्दरी ने अपने भाई की बड़ी प्रशंसा की और इस बिषय में बहुतसा बादबिवाद किया और कहा जो तुम कुछभी इशाराकरो तो मैं इस बृत्तान्त को उस पुरुष से कहूं यद्यपि मेरे पतिके मरने के पीछे बिवाह करनेकी मेरी इच्छा नथी परन्तु ऐसेयुवापुरुषसे मैंने इन्कारकरना उचित न जाना यह सुन मैं मुसकराय चुपहोरही वह सुन्दरी मेरे चुपरहने और मुसकराने से जानगई कि मेरी भी इच्छाहै फिर उसने तुरन्त ताली बजाई तालीका शब्द सुनतेही एकपुरुष अतिरूपवान् बड़ी सजधज और भड़कसे एककोठे से बाहर निकलआया उसके देखनेसे मैं हर्षितहुई और चित्तमें कहनेलगी कि मैं बड़ी भाग्यवान् हूं कि मेराबिवाह ऐसे उत्तम मनुष्य से होगा फिर वह जवान मेरे निकट आबैठा और मुझसे और उससे बार्त्ता होनेलगी मैंने उसे अत्यन्त बुद्धिमान् और शीलवान् उसकी बहिनके कहने से भी अधिक पाया फिर उस सुन्दरी ने हमदोनोंको प्रसन्न और राजीपाय दूसरी बेर ताली बजाई उसके सुनतेही क़ाज़ीने रीत्यनुसार हम दोनोंका बिवाहकिया

और अपनी रीत्यनुसार बिवाहपत्र लिख चार मनुष्यों को कि अपने साथ लायाथा साक्षी किया फिर मेरे नवीन भर्त्ता ने मुझसे यह प्रतिज्ञाकराई कि तू किसी अन्य मनुष्यकी ओर न देखना और न किसी से बार्त्ता करना सदैव अपने पातिव्रत और आज्ञापालन से प्रसन्नरहना और कभी भी आज्ञाभंग न करना और उसनेभी यह प्रणकिया कि मैं कभी तुझे त्याग न करूंगा निदान जब यह परस्पर प्रतिज्ञाहोचुकी फिर मैं धनवानों के समान किन्तु रानियोंकी तरह अपने पतिके घरमें रहनेलगी एकमास के पश्चात् मैंने अपने पति से चौक जाने की आज्ञाली कि कुछ थान रेशमी मोललेने जाऊंगी कि सब अमीरोंकी स्त्रियां उससमय आप बाज़ारमें जाय वस्त्रमोल लेतीं और बेचाकरतीं और इसमें कुछ दोष न था उसने तुरन्त आज्ञा दी मैं दो बांदियां और उसी वृद्धाको कि जो मुझे बहाने से उसघर में लेगई थी और मेरेही समीप रहती थी अपने साथ लेकर बुग़दाद नकर की चौक में गई जब मैं उस बाज़ारमें जहां बड़े बड़े ब्यापारियों की दूकानें थीं पहुँची तो उस वृद्धाने मुझसे कहा हे सुन्दरी! यहां एक जवानब्यापारी की दूकानहै कि जिसे मैं जानती हूं उसकी दूकान में सब प्रकारके उत्तम २ बहुमूल्य थान हैं रेशमी वस्त्र जैसा तुम चाहोगे वहां मिलेगा तुम उसीकी दूकानपर चलो दूकान २ फिरना कुछ अवश्य नहीं मैंनेकहा इससे क्या उत्तमहै फिर मैं उसके साथ चली और उसी ब्यापारी की दूकानपर जो अतिरूपवान् था गई वृद्धानेकहा हे सुन्दरी! तुमइसब्यापारीसे जौनसावस्त्रचाहो मांगो कि वह तुमको लाकर दिखाये मैंने उत्तरदिया कि मैंने पति से बिवाहके समय यह प्रणकियाहै कि किसी अन्यमनुष्यसे बात न करूंगी इसलिये मैं इससे न बोलूंगी कि जिसमें मेराप्रण भंग न हो निदान उस ब्यापारीने मेरी चाहनाको वृद्धासे पूंछा और नानाभांति के थान दिखाये मैंने उनमें से एकको पसन्द किया और उस वृद्धाके द्वारा उस ब्यापारी से मोल पूंछा उसने उत्तरदिया कि अशरफियोंपर इस थानको न बेचूंगा किन्तु इस थानके बदले इस सुन्दरी से एक चूमा चाहताहूं यह सुन मैंने उस वृद्धा से अत्यन्त अप्रसन्न हो कहा कि

यहब्यापारी बड़ाढीठहै कि ऐसीबुरी बातकी चाहना करताहै बृद्धाने उत्तरदिया हे सुंदरी! इसब्यापारीने जोतुमसे चाहनाकीहै कुछबड़ी बात नहीं तुमसे तुम्हारेपतिने अन्यपुरुषसे बार्त्ताकरनेको मनाकियाहै यह तो केवल यही चाहता है कि ज़रा अपने गालका चूमादो यह बहुतही सुगमहै मुझे उसथानके लेनेकी अत्यन्त लालसा और इच्छाथी मूर्खतासे उस बृद्धाकी बातको माना फिर वहबृद्धा और वह दोनों बांदियां बराबरसे मेरेसम्मुख खड़ीहोगईं कि कोई चलनेवाला इस बिषयको न देखे तब मैंने अपनेगालसे बस्त्रहटा उस ब्यापारीकी ओरकिया उसने चूमाके बदले ऐसाकाटा कि लहूलुहान होगया और मैं तलमलागई और पीड़ासे बेसुधहो देरतकवहां उसी दशामें पड़ीरही और वह ब्यापारी अवकाशपाय अपनी दूकान बन्दकर वहांसे चलदिया बहुतदेर के पीछे जबमुझे सुधिहुई मैंने अपने गालको लहूलुहानपाया परंतु बुढ़िया और मेरीबांदियों ने मेरेगालको बस्त्रसेढांकदिया कि बहुतसेमनुष्य जो उसब्यापारीकी दूकानपर इकट्ठेहोगये थे उस दशाको न देखें उन्होंनेजाना केवलनिर्बलता से यह बेसुधहोगईहै मेरेसाथकी स्त्रियां यह दशादेख घबड़ाईं और मुझे धैर्यदेनेलगीं मुख्यकरके उस बृद्धा ने कहा कि हे सुन्दरी! अब मेराअपराध क्षमाकरो क्योंकि इसतुम्हारे दुःखकाकारण मैंहीं अभागीहुई और इस दुष्टब्यापारीकी दूकानपर तुम मेरेही कहनेमे आईं तुम अपने चित्तमें कुछशोच न करो अब तुरन्त अपने घरचलो तुम्हारे घावपर एकऐसी औषधलगाऊंगी कि वह तीन दिवस में अच्छा होजायगा और कुछभी चिह्न न रहैगा मैं बेसुध होनेकेकारण ऐसीसुस्त और निर्बल होगईथी कि बड़ी कठिनतासे अपनेघरतक पहुँची और अपने कोठेमेंजाय उस पीड़ासे फिर बेसुध होगई परन्तु उस बृद्धाने ऐसाउपाय किया कि जिससे फिर मैं सुधमें आई और तुरन्त जाय अपनी शय्यापर जालेटी रात्रिको जब मेरापतिआया और मुझे शिरलपेटे देख कारणपूंछा मैंनेउसकेभुलावे के लिये कहा कि मेरे शिरमें बड़ीपीड़ा है और यहसमझकर कहाथा कि यहसुन वह चुपहोरहैगा परन्तु उसने मेरे बिचारके बिपरीतदिया हाथमेंले उसगाल के घावको देख झुंझलाय पूछा कि यहघाव क्यों-

करलगा यद्यपि मैंने कुछ बुराकर्म्म न किया था परन्तु सच्चीबात न कहसकी इसवास्ते मैंने बहानाकर कहा कि आपकी आज्ञानुसार बाज़ारमेंगईथी दैवयोगसे एकमज़दूर काष्ठकागट्ठा लियेहुये मेरेपास से होकरगया चूंकि वह गली बहुतसूक्ष्मथी इस कारण एक खोंचा मेरेगालपरलगा यहसुन मेरेपति ने क्रोधित होय कहा कि यदि यह बात सत्यहै तो मैं कलभोरको आज्ञादूंगा कि सम्पूर्ण लकड़ी बेंचनेवालोंकोपकड़ फांसीदीजावे यहसुनकर मैं भयमानहुई और पश्चात्तापकिया कि इतने मज़दूर निर्दोष मेरी झूठीबातसे व्यर्थमारेजावें यह बिचार मैंने अपने पतिसे कहा कि ऐसा अन्याय कभी न करना मुझे अत्यन्त खेदहोगा कि तुम ऐसीआज्ञादोगे यदिमैंने कुछबुराकाम कियाहो तो उसकामुझे दण्डदो फिर मेरेभर्त्ताने कहा कि सत्यकह तेरे गाल में क्यों घाव है मैंनेकहा एक कुम्हार अपने बासनोंको गधेपर लादेहुये चलाजाता था दैवयोग से गर्द्दभकाधक्का ऐसालगा कि मैं पृथ्वीपर गिरपड़ी और एकटुकड़ा सीसेका मेरेगाल मेंचुभगया यह सुन फिर मेरेपतिने कहा यदि यह बचनसत्य है तो सूर्य्योदय के पहिले मैं जाकर मंत्री से इसबातको प्रकटकरूंगा कि वह जितने इसनगर में कुम्हाररहते हैं उनको निकालदेगा मैंने इसबचनकोसुन कहा परमेश्वर के वास्ते ऐसा काम न कीजियो वे सब निर्दोष हैं फिर उसने कहा तू सत्यकह तेरेगाल में घावलगनेका क्याकारणहै मैंनेकहा मार्गमेंमुझे घुमनी आई कि मैं पृथ्वीपर गिरपड़ी और मेरागाल छिलगया इसमें किसी दूसरेपर दोष नहीं यह सुन उसने अत्यन्त क्रोधितहो कहा तू बड़ी झूठी है कहांतक मैं तेरी असत्यबार्त्ता सुनूं यहकह उसने ताली बजाई इतनेमें तीन गुलाम कोठेके भीतरसे चलेआये उसने उनको आज्ञादी कि एक मेरा शिर और एकपांवपकड़े और तीसराखड्गले खड़ारहे जब उनतीनोंने आज्ञा उसकी पालनकी फिर मेरेपतिने उस गुलामसे जो खड्ग लिये खड़ाथा कहा कि इसको मारके दो टुकड़े करडालो और लोथ इसकी नदी में बहाया कि मछलियां खावें यह दण्ड उस मनुष्य का है जो मेरा प्याराहोय और अनुचित कर्म्म करे यह कह फिर उसने हब्शी से दृढ़ आज्ञाकी कि तू देर क्योंकरता

चित्र [illegible] अपनी स्त्री के तत्पर होना और
[illegible] उसके छुड़ाने के हेतु ॥



है इसे शीघ्रबधकर यह सुन उस गुलामने मुझसे कहा कि हे सुन्दरी! यह तुम्हारा अन्तसमय आया अपने इष्टको स्मरणकरो और जो कुछ तुम्हें कहना सुनना हो कह सुनलो मैंने उससे कहा कि मैं कुछ कहा चाहतीहूं जो मुझे एक पलका अवकाशमिले फिर मैं अपना शिर उठा चाहतीथी कि कुछ कहूं परन्तु रोने औरहिचकियोंके कारण शब्द मुखसे न निकलताथा मेरे पतिने मुझपर कुछ न दयाकी किन्तु इस भांति बुरा भला कहना आरम्भकिया कि जिसका मैं कुछभीउत्तर न देसकी फिर मैंने चाहा कि परमेश्वरकी बन्दनाकर अपने सम्पूर्ण आयु के पापों को क्षमाकराऊं परन्तु उसने मुझे इतना अवकाश न दिया और गुलाम को आज्ञा दी कि तू शीघ्रही इसे बधकर गुलाम चाहता था कि मारें इतने में वही बृद्धा जिसने मेरे पति को दुग्ध पिलाया था भीतर आई और उसके चरणों पर गिरपड़ी और चाहा कि उसका क्रोध शान्तकरे फिर बहुत दीनतापूर्व्वक प्रार्थना करके मेरे पतिसे कहा कि मेरे दूध पिलाने और पालन के बदले इसकाअ-पराध क्षमाकर तू इसेव्यर्थ मारताहै परमेश्वरके यहां क्या उत्तरदेगा और अपनी प्रतिष्ठा क्यों खोताहै और न्याय करनेवाले तुझे क्या कहेंगे निदान उसबृद्धाने देरतक उसे ऐसा ऊँचनीच समझाया और मेरा अपराधक्षमाकराने को बहुतसा बादबिबाद किया और वह ब-हुतही रोई यहांतक कि उसका क्रोध कुछ कमहुआ तब उसने कहाकि केवल तेरे कहनेसे मैंने इसके प्राणछोड़े परन्तु इसको कुछ दण्डदेना अवश्यहै कि इसे जन्मभर स्मरणरहे यहकह उसने गुलामको आज्ञा दी कि उसने मेरी छाती और भुजापर इतना मारा कि मैं बेसुधहो-गई और व्हांका चर्म्म और मांस उड़गया फिर वह गुलाम मेरेपति की आज्ञानुसार मुझको एक महलमें लेजाय छोड़ आया वहां चार मासतक मैं उसीभांति घायल पड़ीरही और उस बृद्धाने मेरीमल्हम पट्टी आदि औषध की और उस दशामें मेरी खबर लेतीरही फिर मैं अच्छी होगई परन्तु चिह्न जैसे आपने कलरात्रिको देखे थे रहगये फिर जब मुझमें चलने फिरने की सामर्थ्य हुई तो मैंने चाहा कि मैं अपने पहिले भर्त्ताके घरमें कि वह मेरे क़ाबूमें था जारहूं परन्तु वहां

जाय घरका चिह्नभी न पाया क्योंकि मेरे इसपतिने क्रोधसे उसे किन्तु गली को जिसमें वह घर था खुदवाकर पृथ्वी बराबर करदी मैं फ़रयाद इस अन्यायकी जो मेरे दूसरे पतिने कियाथा किसी से न करसकी कि ऐसा न हो कहीं फिर वह वैसाही करे इसलिये अपने चित्त को दृढ़कर और परमेश्वरका धन्यबादकर मैं अपनी प्यारी बहिनजुबैदाके निकटगई और उससे अपनी सम्पूर्ण आपत्ति और दुःख को प्रकट किया उसने मुझे धैर्य्यदिया और अपने निकट रक्खा और समझाया कि हमारा समय अच्छा नहीं किसीसे हमको वफ़ा नहीं न तो उनसे जो हमारेमित्र हैं और न उनसे जो हमपर मोहित हैं मेरे समीप बैठरह और फिर बिवाह न कर तबसे मैं अपनी बहिन जुबैदा के निकट रहतीहूं फिर मेरी बहिन जुबैदाने उस शाहज़ादे का बृत्तान्त जो उन दोनों बहिनों की डाहसे समुद्रमें डूबगया था मुझसे प्रकट किया और उन दोनों के कुतिया होने का कारणभी कहा और मेरी माताके मरनेके उपरान्त मेरी छोटी बहिन को भी जिसका नाम साफी है अपने साथरक्खा फिर कभी हमने अपनी बहिन जुबैदा से अलग होनेकी इच्छा न की और अबतक हम दोनों आनन्दपूर्व्वक उसकी सेवा में रहतीहैं और परमेश्वरका धन्यबाद करतीहैं और सब बहिनें अपने घरका कार्य्य मिलझुलके करलेती हैं कभी मैं बाजारमें जाकर सौदासुल्फ करतीहूं और कभी मेरी छोटी बहिन साफीजाती है सो मैं कलकेदिन बाज़ारसे बहुतसी बस्तु मोलले एक मज़दूर के शिरपर जो बड़ा हँसमुख और हाज़िर जवाब था रखकर लेआई थी और उसको रात्रिभर रहनेदिया कि अपने हँसमुख और मिष्टवचन से हमें प्रसन्नकरे फिर रात्रि को इन तीनों योगियों ने हमारे दरवाज़ेपर आय हम से रहने की चाहना की कि जिसमें रात्रि भर रहें हमने उनपर दयाकर उन्हें भीतर बुलाया और अपने साथ भोजन कराया और मदिरा पिलाई फिर उनके सम्मुख हमने गाया बजाया और वे भी हमारे सम्मुख अपनी रीति पर गातेरहे इतने में तीन व्यापारी मवस्सल के जो अतिप्रतिष्ठित जान पड़ते थे हमारे दरवाज़ेपर आये और हम से

योगियों के समान रात्रिको घरमें रहने की इच्छाकी वहभी हमने अंगीकार किया और उनको अपने घरमें रहने को स्थानदिया और अपनी सभामें मिलाया परन्तु कोईभी अपने प्रणपर स्थिर न रहा और हमें महादुःखी किया यदि हमें सामर्थ्यथी कि जिस प्रकार हम चाहतीं दण्डदेतीं परन्तु हमने कुछ भी न किया और प्रत्येक मनुष्य से कहा कि अपना २ वृत्तान्त हमसे कहो फिर हमने उनसे उनकी कहानीसुन सबको छोड़दिया और उनका अपराध क्षमाकर-दिया ख़लीफ़ा हारूंरसीद इस अपूर्व वृत्तान्तसे अत्यन्त आश्चर्यित और हर्षित हुआ जब इस ओरसे उसे भरोसा हुआ तो उस ने चाहा कि उन योगियों से कि सचमुच वह शाहज़ादे हैं कुछ न कुछ उपकार करूं फिर उसने बिचारा कि उन तीनों के साथ जो बिनापतिथीं योगियों का बिवाहकरे ज़ुबैदा से पूंछा कि हे सुन्दरी! तुझे उस अप्सराका बृत्तान्त भी बिदित है कि जो तुम्हें प्रथम पक्षदारसर्प दृष्टिपड़ा और वह यहभी कुछ कहतीथी कि कबतक यह तुम्हारी बहिनें कुतियों के शरीर में रहेंगी ज़ुबैदा ने उत्तरदिया कि मैं प्रथम आपके सम्मुख यह कहना भूलगई उस अप्सरा ने बिदा होते समय थोड़े से बालदेकर कहाथा कि जब तुम मुझेबुलाया चाहो तो एकबालको अग्निमें जलाना जो मैं क़ाफ़ पहाड़ के उस ओर भी रहूंगी तौभी तुम्हारे निकट पहुँच जाऊंगी ख़लीफ़ा ने कहा वह बाल कहां हैं ज़ुबैदा ने उत्तर दिया कि उन बालों को मैं सदैव अपने समीप रक्षापूर्वक रखती हूं फिर उसने अपने सन्दूक़चे को खोलकर उनबालोंकी पुड़िया निकाली और ख़लीफ़ाके सम्मुखलाई बादशाह ने कहा मैं चाहताहूं कि उस अप्सरा को भी देखूं उसको तुम बुलाओ ज़ुबैदानेकहा बहुत अच्छा फिर उसनेउस पुड़ियाको एकही बेर अग्निमें डालदिया ज्योंहीं उसमें से धुवांनिकला त्योंहीं वह राजद्वार हिलने लगा और साथही वह अप्सरा बहुत उत्तम २ वस्त्रपहिने ख़लीफ़ा के सम्मुख आई और ख़लीफ़ा से कहा मैं आपके सम्मुख आई हूं जो आज्ञा हो सो पालन करूं और इस स्त्री अर्थात् ज़ुबैदाने मुझसे बड़ी भलाईकी मैं इसकी कृतज्ञ

हूं और मैंने इसकी बहिनों को कि उन्होंने इसकेसाथ बुराइयांकी थीं कुतियाबनाडाला यदि आपकी इच्छाहोतो मैं फिर इनको उसीशरीर मेंलाऊं खलीफ़ाने कहा यदि तू इनको फिर अपने शरीरमेंलावे तो मैं तेरा बड़ाकृतज्ञहोऊंगा अब वे अपने अपराधका यथोचित दण्ड पाचुकी हैं इसके बिशेष एक और तुझसेइच्छारखताहूं वहयहहै कि एकमनुष्यने अपनीस्त्रीको बड़ाअन्यायकर इतनामाराहै कि उसकी छाती मारके चिह्नों से क़ालीहोगईहै और उसकाघर कि उसने पहिले पतिसे थातीपाई थी खुद्वाय धरती के बराबरकरादिया और उसके पतिकी सम्पूर्ण थाती लेली यहहालसुन मुझेबड़ा पश्चात्ताप हुआ कि मेरेअधिकार और राज्य में कौनऐसाअन्यायी है कि इसअन्याय करनेकाकारणहै तुमतो उसमनुष्यको अवश्यजानतीहोगी अप्सरा ने उत्तरदिया कि मैं अभी उनदोनों कुतियोंको उनकी मुष्ययोनिमें लायेदेतीहूं और उस बिचारी स्त्रीको इसतरह अच्छाकरदूंगी कि फिर कुछभी घावों का चिह्न न बिदितहोगा और उसमनुष्यकानाम भी जिसने उसेमाराहै बताऊंगी फिर खलीफ़ाने तुरन्त उनदोनों कुतियोंको जुबैदाके घरसे मँगवाया और परीकेसम्मुखकिया परीने एक जलकापात्र मँगवाया उसपर कुछशब्दपढ़े कि जो कुछभी समझाई न देतेथे फिर उसजलको अमीना और उनदोनोंकुतियोंपर छिड़का कि वे दोनों कुतियां तुरन्त निजयोनिको कि वे अत्यन्तसुन्दरी और रूपवान्थीं प्राप्तहुईं और अमीना के शरीरसे सम्पूर्ण चिह्न चलेगये और उसकी छाती दर्पण के समान साफ़होगई फिर उस अप्सरा ने कहा कि हे शाहजहां! अब इसके पतिकानाम कि जिसनेइसेमारा है वह मनुष्य रिश्ते में आपके बहुतक़रीब है अर्थात् वह आपका छोटापुत्रहै इसस्त्रीकी सुन्दरताकी प्रशंसासुन मोहितहुआथा और इसकोबहाने से अपनेघरमेंबुला और क़ाबूकर इसके साथ बिवाह किया फिर कईबेर बात के उलटाने में इसेमारा और यह सचमुच निर्दोषथी किसीभांतिकापाप इसने न कियाथा केवल इसने एक बात कईबेरकही यही इसकेपतिके भ्रांतिकाकारण हुआ यहीबात थी जो मैंने आपसे प्रकटकी यहकह वह अप्सरा गुप्तहोगई खलीफ़ा

यह वृत्तान्त सुन अत्यन्त आश्चर्यित हुआ और अपने पुत्र अमीन को कहला भेजा कि मुझे अमीना के साथ तेरे गुप्त बिवाहका और उसकेकपोलपर घावका हाल बिदितहुआ शाहज़ादा इस हाल को सुन लज्जा और भयसे ख़लीफ़ा के सम्मुख न होसका फिर ख़लीफ़ा ने उसे कहला भेजा कि इस सुन्दरीको जो बड़ी पतिव्रता और सुकर्म्मिणीहै लेजाय अपने महल में प्रतिष्ठापूर्व्वकरख सो वह शाहज़ादा अमीनाको बड़ी प्रतिष्ठा से अपने घरमें लेगया और दोनों सदैव प्रीतिपूर्व्वक रहनेलगे और ख़लीफ़ाने ज़ुबैदासे कि उसपर मोहित था बिवाह किया और शेष उनतीनों स्त्रियों अर्थात् साक़ी और ज़ुबैदा की सगी दो बहिनों का ब्याह उनतीनों योगियोंके साथकरदिया उन्होंने हर्षपूर्व्वक अंगीकार किया फिर ख़लीफ़ा ने हरएक के लिये अपने नगरमें बड़े २ और उत्तम २ घर बनवादिये और उन को अपने राज्यमें बड़े २ अधिकार दिये निदान उन तीनों योगियोंने उस दयावान् ख़लीफ़ाके साथ अपना सम्पूर्ण जन्म आनन्द पूर्व्वक व्यतीत किया॥

## सिन्दबाद जहाज़ी की कहानी॥

जब मलका शहरज़ाद बादशाह शहरयारसे तीन योगियों की कहानी कहचुकी तो बादशाहने उसे बहुत पसन्द किया फिर उसने कहा कि इसी हारूँरशीद के राज्य में एक निर्धन हिंदबाद नामी मज़दूर बग़दाद नगरमें रहता था एकदिन ग्रीष्मऋतुमें जिससमय कि बहुत गरमीथी भारी बोझा शिरपर उठाये नगरके एकओर से दूसरीओरको लियेजाताथा यदि बहुतदूर जानाथा मार्ग में थकित हुआ और श्रमसे थक एककूचे में अपने भारको कि वहां गुलाब छिड़का हुआथा और मन्द २ ठण्ढी २ बायुचलतीथी उतारा और एक बड़ेभारी महल के समीप कि उसमें से नानाभाँति के चोवे और अतरकी सुगन्ध आती थी बैठगया और उसद्वारके एक ओर से अच्छेराग और उत्तम २ बाजोंका शब्द सुनाई देताथा और दूसरी ओरसे बुलबुल और अन्य पक्षियोंकी जो वहांकी पैदायश थे मीठी बाणी सुनाई देतीथी और नानाप्रकारके सुगन्धित और स्वादिष्ठ

व्यञ्जनों की सुगन्ध पहुँची कि जिससे इसे बिदितहुआ कि इसस्थान पर न्योते का सामान होरहा है चाहा कि यहां का सम्पूर्ण वृत्तान्त जानूं कि यह द्वार किसका है और इसमें कौन धनवान् रहताहै उस दिवसके सिवाय वह मज़दूर कभी वहां न गयाथा कि उसद्वारकाहाऌजाने निदान उसने सेवकोंसे कि उत्तम २ वस्त्रपहिने हुये दरवाज़े पर खड़ेहुये थे पूंछा कि इसघरका स्वामी कौनहै उन्होंने उत्तरदिया आश्चर्य्य है कि तू बुग़दाद नगरका बासी होकर इतना नहींजानता कि यह द्वार सिंदबादका है उसने सम्पूर्ण नदियों का सफ़र किया है इससे वह बिख्यात जहाज़ीहै उसको परमेश्वर ने लाखों करोड़ों का द्रव्यदिया मज़दूरने यह सुन बड़ा आश्चर्य्य किया और आकाशकीओर देख बड़े ऊंचे शब्दसे कहा कि हे सामर्थ्यवान् संसार के उत्पन्न करनेवाले ईश्वर! सिंदबाद और मुझमें क्या अन्तरहै कि मैं हिंदबादहूं और सम्पूर्ण दिवस बड़े श्रमसे अपने और अपनी स्त्री पुत्रोंके निमित्त जौकी रोटी पैदाकरताहूं और सिंदबाद यह आनन्द करताहै उसने कौन ऐसा कार्य्यकिया कि जिससे वह ऐसा भाग्यवान् है और मैंने कौनऐसा पापकिया किजो मेरीऐसी अभाग्यताकाकारण हुआ फिर उसने झुंझलाय एक ठोकर पृथ्वीपर मारी और निराश हो शिर हिलाय अपनी दुर्भाग्यतापर पश्चात्ताप करनेलगा इतने में उस महल का एक सेवक उसके समीप आया और उसकी बांह पकड़ कहा मेरे साथचल हमारे स्वामी सिंदबाद ने तुझे बुलाया है हिंदबाद डरगया कि ऐसा न हो जो सिंदबाद मेरी इस बातकोसुन क्रोधितहुआहो और मुझे दण्डदेने को बुलाताहो घबड़ाकर इन्कार करनेलगा और कहनेलगा कि मेरा बोझा यहां गलीमेंपड़ाहै क्योंकर उसे छोड़केजाऊं उस सेवकने उसे धैर्य दिया कि तू भयभीत न हो अपने बोझसे भरोसारख हम उसकी रक्षाकरेंगे निदान बादविवाद से निरुपाय हो हिंदबाद उसके साथ हुआ सेवक उसे बड़ेभारी दालान में लेगया कि जहां बहुत से मनुष्य भोजन करनेको बैठे थे वहां नानाप्रकार के उत्तम उत्तम भोजन चुने थे और सब मनुष्योंके बीचमें एकअमीरबृद्ध दिव्यरूपसे जिसकी श्वेतदाढ़ी जो छातीतक

लटकती थी बैठाथा और उसके पीछे बहुत से सेवकों का समूह हाथ बांधे खड़ाथा मज़दूर इतनी बड़ीसभा और सेवकों और नानाप्रकार के व्यंजनों के देखने से डरगया और झुककर सिन्दबादको प्रणाम किया सिन्दबादने उसके फटे और मलिनवस्त्रका कुछभी शोच न कर प्रणामका उत्तरदिया और अपने निकट बुलाय अपनी दाहनी ओर बैठाया और उत्तम उत्तम भोजन अपने हाथसे उठाय उसके आगे रक्खे और बहुत अच्छीमदिरा जो वहां बहुतसीरक्खीथी उसे पिलाई सिंदबादने जबदेखा कि उसके सब सभावाले भोजनकरचुके हिंदबाद से अरबकी रीत्यनुसार कि मित्रतामें अरबीकह उपनाम करतेहैं कहा अरबी तुम्हारा क्यानाम है उसने कहा साहिब मेरानाम हिन्दबाद है सिंदबादने कहा कि मैं और यह सम्पूर्णसभा तुमको देख प्रसन्न हुई अब मैं चाहताहूं कि तुम्हारे मुखसे उस बातको जो तुमने गली में बैठकर कहीथी सुनूं और सिन्दबादकी इस चाहनासे यह इच्छा थी उसने दरवाज़े से उनबातोंको हिन्दबादसे सुना और इसीलिये उसे बुलवा भेजाथा हिंदबादने लज्जितहोय उत्तरदिया कि उससमय मैं थकने और भ्रमितहोनेके कारण अपने आपे में नथा मेरे मुखसे कोई अनुचित बचन निकलगयाहोगा अब उसका दुहराना सभामें ढिठाई है आशारखताहूं कि वहढिठाई और अनुचित मेरी क्षमाकरो सिंद-बादने कहा कि मैं ऐसा अन्यायी नहींहूं कि उनबातों से किसी प्रकार की हानि पहुँचाऊं किंतु मुझको तुमपर दया आई है और तेरारूप देख और बातें सुन मेरामनभरआयाहै परन्तु हे भाई! तुने बेसमझी से वह बात गली में कही क्योंकि तू जानता होगा कि बिना श्रम यह आनन्द और द्रव्य मुझेप्राप्तहुआ सो नहीं मैंने बहुतसी आपत्ति और दुःखों के समूह पृथ्वीके भोगे तब परमेश्वरने मुझे यह पदवींदी फिर सिंदबादने सब सभावालों से कहा कि मुझपर बर्षों बहुतही अद्भुत वृत्तांतहुये जिनको सुन तुम बिस्मितहोगे सात सफ़र मैंने धनप्राप्तहोनेके कारण किये और प्रत्येक सफ़र में बड़े २ दुःख और आपत्ति में ग्रसितहुआ कहो तो तुम्हारे सम्मुख प्रकटकरूं कि तुमको भी मेरी आपत्तियों का वृत्तांत विदितहो फिर उसने अपने सेवकों

से कहा कि हिंदबादके भारको जो कूचेमें पड़ा है जहांकहीं कि वह कहे पहुँचादो यह आज्ञापातेही उन्हों ने हिंदबाद के घर वह भार पहुँचादिया सिंदबादने अपने पहिले सफ़रका वृत्तान्त इस भांति वर्णन करना आरम्भ किया ॥

## सिन्दबादजहाज़ी के पहिलेसफ़र का वृत्तान्त ॥

सिंदबादने कहा मैंने अपने पिताकी थातीको यौवन अवस्था में भोगबिलास आदिकर खर्च करडाला जब अपनी निर्बुद्धितासे चैतन्यहुआ तो अत्यंत लज्जितहुआ और बहुतसी द्रव्य के खराब करने से अत्यंत पश्चात्तापकिये बुद्धिमानोंका यह बचनसत्यहै कि दरिद्रतासे क़बरमें जाना उत्तमहै स्मरणकरता और अपनीदशापर उसे ठीकपाता और मेरा पिताभी कहाकरता निदान शेषद्रव्य जो मेरेपास बचरहाथा ईकट्ठाकर सबको बेंचा और दरियाई व्यापारियों के निकट जाय अपने हाल के बिषयमें बार्त्ताकी उन्हों ने मुझे अच्छी सलाहदी मैंने तुरन्त व्यापारकी बस्तुमोललीं और वहां से उनसब व्यापारियों के समान जहाज़ किरायेकर चढ़ा और जहाज़ वहां से लङ्गरउठा पारसनदीकी दाहिनी ओर अरब के बाईं ओर फ़ारसदेश में जो हिन्दके पूर्व्व ओर है चले उसनदीका अनुमान सत्तरमील चौड़ाव और दो सहस्र पांचसौमील लम्बाव था और पूर्व्वकी ओर खारीनदी से और दूसरी ओर अबासीन से मिलाहुआ था मार्ग्गमें मैं कितने दिनोंतक नदीके रोगों में ग्रसितरहा फिर नीरोग हो भलीभाँति अच्छाहोगया मार्ग्ग में कई द्वीप मिले हमने अपनी बस्तुको स्थान २ पर बेंचा और अदल बदल किया एकदिन हमारा जहाज़ पालोंपर जाता था अकस्मात् एकद्वीप जलपर हराभरा और बहुतसुन्दर दृष्टिपड़ा कप्तानने उसे देख खलासियोंको आज्ञादी कि सबपालें जहाज़की उतारडालो और सबको आज्ञादी कि जिस के जी में आवे उसद्वीपमें जावे सो कईव्यापारी और मैं जो जहाज़ में बैठे २ उकतागयेथे उसद्वीपके देखनेकी इच्छाकी और अपनाखाना लेकरजहाज़से उतरे वहद्वीप कईबेर हिला यहदेख जहाज़ी मनुष्यों ने हमें बुलाया कि तुम तुरन्त जहाज़पर चढ़आओ यदि कुछ भी देरकी

तो तुमसब डूबजाओगे क्योंकिजिसे तुमने द्वीपसमझा है वह बड़ी मछलीकी पीठ है हम इसवृत्तान्त से शोचितहुये और जो हममेंसे चतुर और शीघ्रगामी थे वह तुरन्त पनसुइयोंपर कूदचढ़गये और कितने पैरकर चढ़गये परंतु मैं अकेला उसमछली की पीठपर रह गया यहांतक कि वह मछली डुबकीमार समुद्रकेभीतर चलीगई मैं उसमें उस लकड़ीको कि जिसे जलानेको लायाथा हाथमें पकड़ेहुये रहगया थोड़ीदेरके पीछे कप्तान वायु अनुकूलपाय उनमनुष्यों सहित जो जहाज़पर पहुँचगये थे वहांसे जहाज़का लंगर उठाचला मैं सम्पूर्णदिवस और रात्रिको उसअथाहजल में बहाकिया दूसरेदिन भोरको थकगया और हाथपांवों से निर्बल होगया चाहताथा कि डूबजाऊं कि अकस्मात् एकलहरने मुझे उठाय किनारेपर डालदिया परन्तु कनारा वहांका ढलुवा और ऊंचाथा वृक्षोंकी जड़पकड़ बड़ी कठिनता और श्रमसे खुश्की में पहुँचाऔर शलहो मृतककी समान गिरा तबतक सूर्य उदयहुआ कि मैं क्षुधासे पीड़ितहो फल और सागपातके ढूंढ़नेमें घुटनों से चला और सुभाग्यसे एकसोतेपर पहुँचा वृक्षों से मीठे फलतोड़ पेटभरखाये और उसी सोतेसे जललिया कईक्षणमें मुझमें चलनेकी सामर्थ्य आगई मैं उसद्वीपमें इधरउधर फिरनेलगा निदान मैंने चलते फिरते एक घोड़ाचरते देखा मैं उधरही चला परन्तु यह न जानताथा कि यह मेरे वास्ते अच्छाहोगा वा नहीं वहां पहुँचकर उसघोड़ेको खूँटेसे बँधादेख मैं उसकी सुन्दरता देख रहाथा पहले मनुष्यका शब्द पृथ्वी के भीतरसे सुनाई दिया फिर एकमनुष्य तुरन्त निकल मेरे निकटआया और पूंछा तू कौनहै मैंनेसम्पूर्ण अपनी आपत्ति और दुःखका वृत्तान्त प्रकट किया यह सुन वह मुझको खींचकर तहखानेमें कि जहांसे वहमनुष्य निकला था लेगया वहसब मुझेदेख विस्मितहुये और मैं भी उनको देखआश्चर्यितहुआ फिर मैंने वह भोजन जो उन्होंने मुझे दियाथा खाया और उनसे पूंछा कि तुम इसउजाड़ में क्यों आये और बैठे क्या करते हो उन्होंने उत्तरदिया कि हम अश्वपालक हैं बादशाह जो यहांके अधिपतिहैं वह प्रत्येक बर्ष इन्हीं दिनों घोड़ियां लेकर दरियाइघोड़ों

के वीर्यलेने को इस स्थानपर भेजते हैं और घोड़ियोंको नदीके तट पर जब दरियाई घोड़ा भोगकर चाहताहै कि घोड़ीको मारडालूं तब हम यहां निकल शोरकरतेहैं वह घोड़ा हमारा शब्द सुन डरकर फिर नदी में भागजाताहै और जब घोड़ी गाभिन होजातीहै तबहम उसे लेकर नगरमें चलेजाते हैं और उसके बच्चे दरियाई बछेड़े कहाते हैं और वह बछेड़ा केवल बादशाहकी सवारी के वास्ते रहताहै कलहम सब बस्ती में जावेंगे मैंने कहा मैंभी तुम्हारे साथ चलूंगा क्योंकि वह मनुष्य दूररहतेथे मेरा वहांतक पहुँचना मार्ग बताये बिना कठिनथा वह मनुष्य मुझसे यही बार्त्ता करतेथे कि इतनेमें घोड़ा नदीसे निकला और घोड़ीसे भोगकर चाहता था कि उसे मारडाले उन्होंने बड़ा शब्द किया फिर वह भागकर नदीमें होरहा दूसरे दिवस वह सब घोड़ियों को लेकर नगरमें आये मैंभी उनके साथ नगरको गया वह मुझको बादशाहके सम्मुखलेगये उसने मेराबृत्तान्त पूंछ कहाकि तू कौनहै और यहां क्योंकर आया है मैंने अपना सब हालकहा उस ने सुन बहुत पश्चात्ताप किया और अपने दरबार के नौकरों को अज्ञादी कि इसमनुष्यको अच्छीतरह रक्खो और इसे किसीभांति का दुःख न पहुँचे सो उन्होंने उसकी अज्ञानुसार मुझे बहुत आनंदसे रक्खा मैं कि व्यापारी था बहुधा व्यापारियों से संगति रखताथा और प्रत्येक मनुष्यसे जो इसगनर में आता बुगदाद नगर का हाल इसइच्छासे पूंछता कि किसी ऐसे मनुष्यसे मिलापहो कि जिसके द्वारा अपने नगरमें पहुँचू हुजूर का नगर बहुतबड़ा और सुन्दरता और प्रतिदिवस देशदेश के जहाज़ वहांपर आते बहुधा हिन्दू लोगोंसे मिलकर खुशहोता इसी समयान्तर में अन्यदेशों के बहुत सरदार हुजूर को कर देनेवाले मुझसे मिले वह सब हमारे देशकी रीति मुझसे पूंछते और मैं भी उनसे वहां की अद्भुत २ बातें पूंछता सो हुजूर के राज्य में एक सीलनामे द्वीपथा मैंने सुना कि वहां से रात्रि दिवस ढोलका शब्द सुनाई देता है जहाज़वाले मनुष्यों से विदितहुआ कि उसद्वीप में मुसलमानों में एक मनुष्य नास्तिक दज्जाल अन्तसमय में उत्पन्नहोगा कि जब प्रलय को

कुछ समय रहजावेगा तो कहेगा कि मैंहीं परमेश्वरहूं और उस की आंख कानी होगी और गर्दभपर सवार होगा मैं उसद्वीप को भी देखनेगया मार्ग्गमें मैंने सौहाथ किन्तु दो २ सौ हाथकी मछली देखीं कि जिनके देखने से भयमान होताथा परन्तु वे ऐसी डरपोंकथीं कि केवल तख्तेका शब्द सुनतेही भागजातीं एकप्रकारकी मछली और देखीथी कि उसका मुख उल्लूकासा और लम्बाई में एकहाथ से अधिक न थी एकदिन मैं उस नगरके किसी बन्दरमें खड़ाथा कि एक जहाज़का वहां लंगरहुआ और सम्पूर्ण ब्यापारी अपनी २ असबाब की गठरियां जहाज़से उतारकर नगरमें बेंचने को लेजाने लगे अकस्मात् एक गठरीपर मेरी दृष्टिपड़ी कि उसपर मेरानाम लिखाथा मैंने उसे पहिचाना कि यह वही गठरी है जिसको मैंने बांसरासे जहाज़पर लादा था फिर मैं कप्तान के निकट गया वह मुझे डूबा जानताथा और पूंछा कि यह गठरियां किसकी हैं उसने उत्तरदिया कि हमारे साथ बुग़दाद नगरका बासी सिन्दबादनामे ब्यापारी था जब हम एक द्वीपके समीप पहुँचे बहुतसे ब्यापारी उसे द्वीप समझ उसपरगये परन्तु वह वास्तवमें टापू न था वह समुद्रका बड़ा मत्स्य जलपर सोताथा जब उन्होंने रसोई बनानेके निमित्त उसकी पीठपर आग जलाई वह पहिले अग्निकी गरमीसे हिला फिर समुद्रमें चला गया बहुतसे मनुष्य उसकी पीठपरथे कुछ तो पनसुइयोंपर और कुछ पैरके जहाज़पर पहुँचे परन्तु एक ब्यापारी कि जिसका नाम सिन्दबाद था जहाज़पर पहुँच न सका और समुद्र में डूबगया यह गठरियां उसीकी हैं अब इनको इसद्वीपमें बेंचूंगा और असल नफ़ा जो कुछ कि प्राप्तहोगी बुग़दाद में पहुँचकर उसके परिवार को दूंगा मैंने कप्तान से कहा सिन्दबाद जिसको तुम मुवा जानतेहो मैंहींहूं और यह गठरियां मेरी हैं इस बचन को सुन कप्तानने कहा वाह मैं किसभांति तेरा विश्वासकरूं कि तू सिन्दबाद है क्योंकि मनुष्यों ने झूठ बोलना और छल करना बहुत सीखलिया है मैंने अपने नेत्रों से देखलिया था कि वह समुद्रमें डूबगया और बहुतसे मनुष्य इस जहाज़के साक्षीहैं अब तूने अपनेको सिन्दबाद बनायाहै तूतो बहुत

अच्छा और निश्छल जानपड़ता है परन्तु तुझे यह क्याहुआ कि छलसे दूसरे का धन अपना बनाता है मैंने कहा कुछ शोच बिचार के मेरी बात सुनो उसने कहा कि तू क्याकहता है फिर मैंने अपना संपूर्ण वृत्तान्त जिसभाति कि मैं जीता बचकर निकलाथा और जिस प्रकार इसद्वीप में आकर बादशाह से मिलाथा वर्णनकिया यह सुन पहिले तो आश्चर्यित हुआ फिर बड़े ध्यान और बिचार से मुझे देख पहिचाना और अन्य व्यापारियों ने भी मुझे पहिचान साक्षी दी कि सिन्दबाद यहीहै फिर मुझे जीतादेख सब धन्यबाद देनेलगे और कप्तानने कण्ठ से लगाय कहा परमेश्वरका धन्यबादहै कि ऐसे बड़े दुःख से तुम छूटे और तुमको कुशलपूर्व्वक देख मैं अत्यन्त प्रसन्नहुआ यह तेरा माल है अपनी गठरियोंको गिनले तुझे उनके बदलने और बेंचने का अधिकार है मैंने उस कप्तान की सत्यताकी बड़ी प्रशंसा करकर कहा कि इस धनमें से तुमभी थोड़ासालो परंतु उसने न लिया सबका सब मुझे देदिया फिर मैंने उन गठरियों में से कुछ वस्तु बहुमौल्य और अच्छी २ चुनकर बादशाहको दीं बादशाहने पूंछा तूने इस असबाबको कहां से पाया मैंने उससे अपनी गठरियोंके पानेका हाल विस्तारपूर्वक प्रकट किया यहसुन वह अत्यन्त हर्षितहुआ और मेरी वस्तु को कि भेंटकी तौरपर थी स्वीकार किया उसके बदले मुझे उन बस्तुओं से अधिक द्रव्य दिया फिर मैं उससे बिदाहो अपने जहाज़पर चढ़ा और शेषबस्तु को उसदेश की बस्तु अर्थात् सन्दल, आबनूस, काफ़ूर, जायफल, लौंग, कालीमिर्च आदि से बदला वहांसे चला और २ द्वीपों में गया निदान बन्दरबांसरामें पहुँच मैं जहाज़ से उतरा फिर वहांसे खुश्कीके मार्ग से यहां आया उस यात्रामें मुझे लक्षमुद्रा लाभहुये अपने नातेदारों और परिवार से मिल अत्यन्त प्रसन्नहुआ बहुतसी बांदियां और सेवक और बड़ा महल मोलले बड़े आनन्द और प्रसन्नतासे रहने लगा यहांतक कि परदेश के दुःखों को भूलगया सिन्दबादने यहां तक अपना वृत्तान्त प्रकटकर गाने बजानेवालों को गानेकी आज्ञा दी क्योंकि इस कहानीके पहले गाना बजाना होताथा फिर वह सब

भोजन करनेलगे इतनेमें रात्रिहोगई सिन्दबादने एक थैली ४००)
रु० की मँगवाय हिन्दबाद मज़दूरको दी और कहा इस समय में तुम
अपने घरपधारो कल फिर इसीसमय मेरे वृत्तान्त सुनने को यहां
आना हिन्दबाद इस प्रीति और द्रव्यके पानेसे जो कभी आंखमेंभी न
देखी थी अत्यन्त प्रसन्नहुआ और उसकी कृतज्ञताकर अपने घरमें
आया और यह वृत्तांत अपने स्त्रीपुत्रोंसे प्रकट किया वहभी परमेश्वर
का धन्यबाद करनेलगे कि ईश्वरने सिन्दबादकेद्वारा हमारी निर्धनता
पर कृपादृष्टिकी दूसरे दिन हिन्दबाद अच्छे अच्छे वस्त्र पहिन फिर
सिन्दबादके घरमें आया वह हिन्दबाद को देख हर्षित हुआ और
मुस्कराकर क्षेमकुशल पूंछी फिर जब सम्पूर्ण मित्र और अतिथि
सिन्दबाद के इकट्ठेहुये तब नियमानुसार नानाप्रकार के भोजन चुने
गये वह सब खानेलगे जब सब भोजन करचुके सिन्दबादने कहा हे
मित्रो! चित्त लगाय द्वितीय यात्राका वृत्तान्तसुनो यहभी पहिले के
समान सुनने के योग्यहै वह सब चुपहुये और उसकी ओर ध्यान
दिया सिन्दबाद ने अपनी दूसरी यात्राका हाल इसभांति वर्णनक-
रना आरम्भकिया॥

## सिन्दबादजहाज़ी की द्वितीययात्रा का वृत्तान्त॥

हे मित्रो! उनदुःखों और आपत्तियों के कारण जो मुझपर प्रथम
यात्रामें पड़ीथीं मैंने अपने चित्तमें प्रण कियाथा कि फिर कभीसफ़र
का नाम भी न लूं और अपने नगर में आनन्दपूर्वक चैनसे रहूं परन्तु
निकम्मा बैठेरहनेसे मैं उदासरहनेलगा निदान घबड़ाकर मैंने चाहा
कि फिर सफ़रकर नवीन नगरों और देशों को देखूं और नदियों
की उत्तम और अद्भुत चीजें अवलोकन करूं यह दृढ़ इच्छा चित्त
में ठहरायमैंनेबहुतसी नानाप्रकारकी लाभकारी ब्यापारी की बस्तुएँ
मोललीं और उन ब्यापारियों से मिल कि जिनकामुझे बिश्वासथा
साथ होलिया और एकअच्छे जहाज़पर सवारहुआ और हमसब
ने अपनेको सामर्थ्यवान् परमेश्वरकोसौंप जहाज़का लंगर उठाया
मार्गमें हमसबद्वीपोंको देखते२ और ब्यापार की वस्तुको बेंचते बद-
लतेथे एकदिन हम एकद्वीपमें कि बहुत उत्तम और सुन्दर और फल

युक्त वृक्षोंसे भराहुआ था जहाज़से उतरकर गये परन्तु वह स्थान उजाड़ और निर्जन था मनुष्य की तो क्या किन्तु पक्षी का भी चिह्न दृष्टि न पड़ता था मेरे साथके सम्पूर्ण लोग फल तोड़ तोड़ इकट्ठे करते थे और मैं एक छोटे से सोतेपर कि जहां बहुतसे सघन वृक्षलगे हुये थे छाया में बैठाया और भोजन जो अपने साथ लेगया था खाने लगा और कुछ मदिरापी उस सोतेपर अचेत सोगया इतनी देर तक वहां सोयारहा कि जिसकी संख्या मैं नहीं करसक्ता जब जगा जहाज़ वहांसे खुल बहुतदूर निकलगयाथा अपने साथियों से किसी को वहां न पाया वह सब जहाज़पर चढ़गयेथे जहाज़की सब पालें खुलीहुई थीं क्षणभरमें मेरीदृष्टि से गुप्त होगया मैं उस समयके दुःख का वृत्तान्त नहीं कहसक्ता कि उस उजाड़ खण्डमें मेरी क्या दशाहुई निकटथा कि इस दुःख में मेरेघट से प्राण निकलजावें हाहाकर रुदन करनेलगा और शिर पीटपीट पृथ्वीपर गिरा बहुत देरतक शोकरूपी समुद्र में डूबाहुआ अपने को सहस्रों धिक्कार देकर बुराभला कहनेलगा कि पहिली यात्राकी आपत्ति तुझे क्या कमथी कि दूसरा सफर तूने किया फिर नये सिरे से आपत्ति में पड़ा परन्तु वह सब व्यर्थ था निदान परमेश्वर को स्मरण करता करता वहांसे उठा और अत्यन्त आश्चर्यित था कि क्या करूं और कहां जाऊं फिर एक ऊंचे वृक्षपरचढ़ चारों ओर देखा कि कहीं रात्रिको रहनेका स्थान मिले परन्तु जलही जल और आकाश दृष्टिपड़ा थोड़ीदेरके पश्चात् खुश्की में एक बहुत बड़ी और श्वेत बस्तु दूरसे मुझे दृष्टिपड़ी मैं उसवृक्ष से उतर शेष भोजन जो मेरे पास बचरहा था लेकर उस श्वेत बस्तुकी ओर जो बहुत दूरथी और बिचार में न आती थी चला उसके समीप पहुँचदेखा कि वह गुम्मज़की तरहगोल और बड़ी है और छूनेसे बहुत चिकनी और फिसलती हुई जानपड़ती है फिर मैं उसके चारों ओर फिरा कि कोई दरवाज़ा देखपड़े परन्तु वह चारों ओरसे बन्दथी और उसका घेरा अनुमान पचास क़दम के देख पड़ा इतने में सूर्यास्तका समय हुआ और तत्काल चारों ओर अँधियारा सा बदली के समान घिरआया मैं उस अँधियारे को देख अत्यन्त

बिस्मितहुआ और एक बड़ीभारी चिड़ियाको देख अधिक त्रसित हुआ कि वह मेरी ओर उड़ीचलीआती है मुझे जहाज़ियोंकाबचन स्मरणहुआ कि एकरुखनामेपक्षी बहुतबड़ाहोता है जिसे हिन्दी में गरुड़कहते हैं मैंनेसमझा यह गोलश्वेतबस्तु उसका अंडाहै सो यही बिचार मेरा ठीकहुआ वहपक्षी अंडासेनेको वहांआताथा वहगोला उसका अण्डाथा एकपञ्जा आकर मेरे समीपपड़ा प्रत्येक नाखून उसका एक बड़ेवृक्षकी जड़केसमान था अपनेको उसके नाखून में पगड़ी से अच्छीभांति दृढ़बांधा और यह सोचा कि कल भोरको जब यह पक्षी यहां से उड़ेगा मुझे इसउजाड़द्वीप से निकाल किसी दूसरी ओर लेजायेगा निदान दूसरेदिन भोरको वहपक्षी वहां से उड़ा और इतनाऊंचेगया कि जहां से पृथ्वी किञ्चित् न दृष्टिपड़तीथी फिर क्षण भरमें किसी बनमें जायउतरा मैं तुरन्त अपनेको उसकेपांवसेखोल अलगहुआ मेरेअलगहोतेही वह एक अजदहेपर कि बहुतबड़ाथा जायगिरा और उसको अपनेचोंचमें पकड़लेउड़ा और वहस्थानजहां कि उसपक्षी ने मुझेछोड़ाथा बहुतगहरी और ढलमी एकपहाड़ की गुफाथी और चारोंओर उसके बड़े २ पहाड़थे ऊंचेनीचे होनेके कारण किसी मनुष्यकी शक्ति न थी कि उसपर चढ़सके यह स्थान प्रथमसे भी अधिकभयानक और बुराथा फिर मैंने उस चौपाट बनमें चारोंओर हीरेकेटुकड़े फैलेहुये देखे और कोई २ इतने बड़े थे कि जिनकोदेख मैं अचम्भितहुआ थोड़ेसे बड़े २ टुकड़ेइकट्ठेकर कपड़े में बांधलिये परन्तु बड़ेअजदहों के देखने से वह प्रसन्नता जो मुझे हीरों के मिलने से हुई थी बिस्मरणहोगई वह सर्प्प इतने बड़े थे कि उनमें से छोटासाभी हाथीको सुगमतासे निगललेवे दिनभर वह रुखपक्षी के भयसे कि वह उनके प्राणका बैरी है पहाड़ोंकी खोहमेंछिपे रहते केवल रात्रिको निकलकर फिरते मैं दिनभर उस उजाड़खण्ड में फिराकिया और जहां उत्तमस्थानपाया वहीं बैठके सुस्तानेलगा जब सूर्य्य अस्तहुये तब मैं एकछोटीसी खोहमें जायछिपा और उसके मुखकोपत्थरों से बन्दकिया कि कोई सर्प्प न आसके केवल प्रकाशआने को एक छोटासा छिद्र रहने दिया और भोजन निकाल के खानेलगा

इतने में सर्पोंने निकलना और शब्दकरना आरम्भ किया तो उनके भयानक शब्दसुन मैं डरके कम्पितहुआ निदान मुझको इस भय से निद्रा न आई जागकर यथावस्थित अपनी रक्षा करतारहा यहां तक कि भोरहुआ और वे सर्प्प कंदरों में घुसगये मैं उस स्थान से कि जहां छिपाहुआथा निकलआया उन सर्पोंसे मैं इतना भयभीतथा कि हीरोंको देख प्रसन्न न होता और रात्रिको कि मैं डरके मारे सोया न था थोड़ासा भोजनकर शयनके बिचारसे लेटरहा ज्योंहीं मेरी आंख लगी त्योंहीं एकबस्तु फुदककर मेरे निकटआय गिरी कि जिसके शब्दसे मैं जागपड़ा जब उसको ध्यानकर देखा तो एकबड़ासा नवीन मांसका लोथड़ा दृष्टिपड़ा क्षणभर में चारोंओर पहाड़ों से मांस के बड़े २खण्ड उस स्थानपर गिरनेलगे उन्हें देख मैं बिस्मितहुआ थोड़ी देर के पश्चात् मुझे जहाज़ियों का बचन स्मरण होआया कि एक स्थानपर हीरोंकी खानिहै और ब्यापारी पर्व्वतों पर जाय इस उपाय से हीरेलाते हैं मुझे इसबचन का बिश्वासहुआ वह उपाय यहहै कि ब्यापारी उन पहाड़ों पर जो उस पर्व्वतके चारोंओर हैं उसऋतु में जाते हैं जिनदिनों में गिद्ध अण्डे बच्चे देतेहैं और बड़े २ मांसके टुकड़े नीचे को फेंकतेहैं और उन टुकड़ों में लस होनेके कारण हीरेके टुकड़े लगजाते हैं बड़े २ गिद्ध वह टुकड़े मांस के कि अपने घोंसलोंमें जो पहाड़ोंकी चोटियों पर होतेहैं लेजाय अपने बच्चों को खिलातेहैं और ब्यापारी उन गिद्धोंके लातेही उनके घोसलों से डराकर वह खण्ड मांस को लेलिया करते हैं इस उपायसे उसपहाड़के दरसे वहहीरे हाथ लगतेहैं और वह पहाड़ का दरा ऐसा गहरा और बेढब था कि कितनाही मैंने बिचारा किसीभांति दूसरी ओर निकलूं परन्तु निकलने का मार्ग न मिला मैं उस पहाड़ की कन्दरा को क़बर समझे हुये था परन्तु वह मांसका लोथड़ा देखकर मुझे कुछ धैर्य्य हुआ और समझा कि इसी उपायसे यहांसे निकलूंगा फिर मैंने अपने चर्म के तोशेदानमें कि जिसमें रोटी और अन्य भोजन रक्खा करता था उसमें बड़े २ टुकड़े हीरेके चुनकर भरलिये और एक बड़े मांस के खण्डको अपने सम्पूर्ण शरीरसे लपेट पगड़ीसे उसे भलीभांति बांध

लिया और उसतोशेदानको जिसमें हीरेबँधेथे रक्षापूर्वक कमर में लपेटलिया और अपनेको पृथ्वीपरडालदिया एकक्षण व्यतीत न हुआथा कि गिद्धोंने पहाड़से उस स्थानपर उतरना आरम्भकिया और एकबड़ागिद्ध उस मांसके खण्डको जिसे मैंने अपने शरीर से लपेटाथा अपने पञ्जोंमें पकड़लेउड़ा और पहाड़कीचोटीपर लेजाय अपनेघोसले में रक्खा व्यापारी बहुत चिल्लाये वह गिद्ध वहां से डरके उड़गया उन व्यापारियों में से एक वहांआया और मुझे देख कुछ कहे सुने बिना कि तू कौनहै और क्यों यहां आयाहै क्रोधकरने लगा मैंने उससे कहा कि जब यह जानोगे कि मैं यहां क्यों आया और कौनहूं तब मुझपर दयाकरोगे तुम निश्चय मानो जितने कि मेरेपास हीरेहैं वह सब तुमको दूंगा उनके मोलको तुम्हारे हीरे कब पहुँचैंगे मैं उनको पर्व्वतकी कन्दरा से चुनकर लायाहूं वह सब इस चर्म्मकी थैली में वर्त्तमानहैं देखलो यह कह वह थैली मैंने उसे दिखाई इतने में सब व्यापारी आय मेरे चारोंओर इकट्ठेहुये उनसेभी मैंने उसीभांति अपना वृत्तांत उसयत्नसे कि मैं वहां पहुँचाथा वर्णन किया यह सुन उन्होंने अचम्भा किया फिर मुझे अपने साथलेकर वहांगये जहां वह सब रहते थे और मेरे हीरे देख आश्चर्य्यितहुये और कहनेलगे कि इतनेबड़े हीरे आजतक हमने न देखे थे निदान मैंने उसव्यापारी से कि जिसके डेरेमें मैं आयाथा कहा इसमें से जितने चाहो हीरे पसन्दकरके लेलो मुझको किंचित् पश्चात्ताप न होगा उसने कहा मुझे कुछ दरकार नहीं मैं न लूंगा परन्तु जब मैंने बहुत कुछ कहा तो उसने उनमें से एक बड़ाहीरा और कई छोटे २ लेलिये और कहा कि यह मेरी सम्पूर्ण आयुको बहुतहै फिर मुझे दूसरीबेर यात्राकी आवश्यकता न होगी यह नियम था कि प्रत्येक व्यापारी एक २ वा दो २ गिद्धोंके घोसले हीरे लेनेको नियत करलेता दूसरे घोसले में न जाता और उससें कुछ प्रयोजन न रखता फिर रात्रिको मैं उन व्यापारियों के साथ सोरहा अपने वृत्तांतको दूसरीबेर उनसे कहसुनाया और भयवान् स्थान से बचकर ऐसा हर्षितहुआ कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और बिचारता था कि यह प्रत्यक्षहै वा

स्वप्न है दूसरेदिन उन्हीं सब व्यापारियों सहित जहां बड़े २ सर्प्प थे रूहाद्वीपमें आया यदि भाग्य अच्छे थे मार्गमें सर्प्पोंसे हमें कुछभी दुःख न पहुँचा रूहाद्वीपमें एकवृक्षसे कपूर निकलताहै उसकी एक टहनी छुरीसे काटतेहैं उसमें से कुछ रससा बहकर एकपात्रमें इकट्ठा हो जमजाता है वही जमाहुआ कपूरकहलाता है फिर वह टहनीमुरझाकर सूखजाती है और वृक्ष इतनाबड़ाहै कि सौ मनुष्य उसकी छाया में भलीभांति बैठसक्तेहैं और उस द्वीपमें एकपशु गैंड़ा हाथी से छोटा और भैंसे से बड़ा उत्पन्नहोता है उसकी नाकपर एकसींग एकहाथके बराबर भीतरसे ठोसहोताहै और उस सींगकेऊपर श्वेत चित्र मनुष्यका दिखाईदेताहै वह गैंड़ा बहुधा हाथीके पेटमें सींग चुभाकर उसको अपने शिरपर उठालेता है परन्तु रुधिर और मज्जाकेकारण कि हाथी के पेटमें से बहकर उसकी आंखोंपर पड़ताहै तो अन्धा होजाता है उसी दशामें रुख़ आकर उस गैंड़ेको हाथी समेत पंजोंमें पकड़ लेजाताहै और अपने बच्चोंको उसकामांस खिलाता है फिर मैं वहांसे और बहुत से द्वीपोंमें गया और उन द्वीपों में अपने हीरेसे उत्तम २ बहुमूल्य वस्तु जो वहां पैदा होतीथीं बदलीं इसीभांति बहुतसे नगर और बन्दरों में होताहुआ बांसरा में और वहांसे बग़दादको पहुँचा और बहुतसे अभ्यागत और याचकों को अपना धन कि बड़े परिश्रमोंसे पैदाकियाथा दे अयाचक किया जब सिन्दबाद अपनी दूसरी यात्राका वृत्तान्त भी प्रकट करचुका उसने ४००) रु० हिन्दबादको दे बिदा किया और कहा कल फिर इसी समय आय मेरी तृतीय यात्रा का हाल सुनना सो हिन्दबाद और सब अतिथि और सभा सिन्दबाद से बिदाहुई और तृतीय दिवस फिर उसी नियत समयपर सब आये सबों ने सिन्दबाद के साथ दुपहरका भोजन किया जब खाचुके सिन्दबाद ने कहा हे मित्रो ! चित्त लगाय मेरी तृतीय यात्राका हाल सुनो फिर उसने इस भांति वर्णन किया ॥

सिंदबादजहाज़ीकी तीसरीयात्रा का वृत्तान्त ॥

मैं उनआपत्ति और दुःखोंको जो मैंने दो यात्राओंमें भोग किये

चित्र हीरे की कान से सिन्दबाद जहाज़ी का बुद्धिमानी से छुट्टी पाना.



थे आनन्द और मङ्गल के कारण भूलगया यहांतक कि फिर तय्यारी सफ़रकीकर बुग़दादमे चला और ब्यापारकी वस्तु वहां से मोल ले बांसराको लेचला और अन्य ब्यापारियों के सम्मत से जहाज़ पर सवारहुआ और एक बड़ा सफ़रकिया और कई द्वीपों में असबाब बेंच बड़ालाभ उठाया एक दिन परमेश्वर की इच्छा से हमारा जहाज़ तूफ़ान में पड़ा जिसमें ठीक रास्ता छूटगया कई दिवस के पश्चात् हम एक द्वीपमें पहुँचे वहां हमने किसी आवश्यकतापर जहाज़ को लंगरकिया और पालेंउतारडालीं कप्तान चारोंओर उस द्वीपके देखनेलगा और आंसूभर सब जहाज़ियों से कहनेलगा इस द्वीपके निकट बनबासियों के द्वीपहैं जिनके शरीरपर लाल बालहैं और वह मनुष्य जहाज़ियों के दुःखदेनेवाले हैं यद्यपि वह हमसे छोटे हैं परन्तु हम उनका सामना नहीं करसक्के क्योंकि वह बहुतसे हैं जो हम उनमें से एकको मारडालें तो वह चींटियोंकी तरह चारों ओर से इकट्ठेहोकर हम सबको मारडालेंगे हम सब जहाज़ी कप्तान के मुखसे इस बातको सुन बहुत डरे और घबड़ाये थोड़ीदेर के पीछे हमने वही देखा जो कप्तान ने कहाथा अर्थात् एक बनबासियों का समूह जिनका शरीर बालों से छिपाहुआ था और सवागज़ लम्बे थे हमारी ओर दौड़े और समुद्र में पैर पैरके जहाज़ को चारों ओर से घेरलिया और कुछ हमसे बोले परन्तु हम कुछ न समझतेथे फिर वह जहाज़ के किनारे और रस्सियोंपर इस चतुरता से चढ़आये कि उनके पांव रस्सियोंपर लगते न देखपड़तेथे उस समय के हमारे दुःख को बिचारना चाहिये कि किसीभांतिसे उनबनबासियों से हम अपनी रक्षा न करसक्के और न उनके हटाने की हममें शक्तिथी निदान उन्होंने पालोंको बांधदिया और लंगरकी रस्सीकाट जहाज़ को तटपर खैंचलाये और हम सबको जहाज़ से उतारा और उस द्वीपमें जहां से कि वे आये थे घेरके लेगये सब जहाज़ी उस द्वीप से बहुत डरते हैं उसके निकट नहीं आते परन्तु हम अभाग्यतासे उन के हाथ पकड़ेगये थे हमने उस द्वीपसे फल बहुतसे पाये उन्हींको हम खाकर जीतेथे और जानतेथे कि हम सब मारेजावेंगे फिर वह बन-

बासी हमको घेर एक बड़ेभारी घरमें कि जिसका किवाड़भिड़ाहुआ था लेगये वहां हमने मनुष्यों की अस्थियों का बड़ाभारीढेर और कई बड़ेबड़े लोहेके सीख़चे मांसभूनने के रक्खेहुये देखे ज्योंही हमने वह सीख़ेंदेखीं मूर्च्छितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े बहुत कालपर्य्यन्त भयसे वहांपड़ेरहे इतने में रात्रिभई और हम रोनेलगे अकस्मात् वह दरवाज़ाखुला जिससे बड़ा शब्दहुआ हमसब डरगये और उठ बैठे एक क्षणमें भीतरसे एक आदमीकाला और बिकरालरूप घुड़-मुहा ताड़के वृक्ष के समान बहुत लम्बा मनुष्य बाहर निकला जिस के ललाटपर केवल एक नेत्रथा जो अंगारे के समान लाल दहकता था और आगेके दांत उसके कटीले और मुखसे बाहर निकले थे और नीचेका होंठ उसका छातीतक लटकताथा कर्ण उसके हाथीके कानके बराबर चौड़े उसके कन्धों को ढांकेहुयेथे और नाखून उसके ऐसे गोल और टेढ़ेथे जैसे शिकारी पक्षियों के होते हैं हम सब उस राक्षस को देख फिर मूर्च्छावशहुये और बहुतकालतक मृतकों के स-मान पड़ेरहे जब होशमें आये तो उस राक्षसको देखा कि डेवढ़ी में आकर खड़ाहुआ हमें बिचारता है फिर अच्छीतरह देख आगेआया और हरएक को हममें से उठा और घुमाके देखनेलगा जैसे कसाई बकरी और भेड़ियों का शिरपकड़ उनकी मोटाई को देखता है सबके प्रथम उसने मुझे पकड़के देखा परन्तु मुझ में दुर्बलता से केवल अस्थि और चर्म्मपाया इस वास्ते मुझे छोड़दिया और इसी भांति प्रत्येक को देखता और टटोलतारहा फिर कप्तानतक पहुँचा वह औरों की अपेक्षा अधिक हृष्टपुष्ट था एकहाथ से पकड़ और दूसरे हाथसे लोहेकी सीख़ उठा उसके शरीर में ऐसी घुसाई कि दूसरी ओर से निकल आई फिर उसने बहुतसी आगजलाई तो उसे भून खाया और डेवढ़ी में जाय सोरहा इस ज़ोरसे वह खर्राटेभरताथा कि जैसे बादल गर्जता है भोरतक वह वहीं सोतारहा हम सब रात्रि भर भयसे कम्पितरहे फिर वह दिनचढ़े जगा और वहांसे उठ बाहर गया और हमें वहीं छोड़गया जब हमने जाना कि वह बहुत दूर वहां से निकलगया तो हम फिर उसी भांति रोदन करनेलगे जि-

चित्र राक्षस और अन्य व्योपारियों के समेत.



ससे वह घर हमारे रोनेके शब्दसे भरगया यद्यपि हम बहुतसे मनुष्यथे और वह अकेला राक्षस हमारा बैरी था परन्तु कोई उपाय न सूझता था कि उससे बचें निदान हम सबने अपनेको परमेश्वरको सौंपा और उसकी इच्छापर प्रसन्न रह दिनभर उस द्वीप में चल फिर व्यतीत किया और फल फूल घास पत्ती उस द्वीप से तोड़कर खाई जब रात्रिहुई हमने चाहा कि किसी दूसरे स्थानपर कि जहांसरदीका बचावहो रहें परन्तु उस घरके सिवाय और कोई स्थान न मिला निदान उसी घरमें आय बैठरहे रात्रिको वही राक्षस उसघर में आया और हमारे साथियों से एक मनुष्यको जो सबसे मोटाथा भूनके खागया और डेवढ़ी में सोरहा दूसरेदिन भोरको जब वह जग कर बाहरगया मेरेसाथियोंने चाहा कि समुद्रमें डूबमरें कि इसप्रकार की मृत्यु से डूबना उत्तमहै परन्तु एकने उससमूहमेंसे कहा मुसल्मानोंको न चाहिये कि अपने हाथसे अपनेकोमारें कोई ऐसाउपायकरो जिससे उस राक्षससेबचें उसके कहनेपर वह सब अपनी उसइच्छासे कि समुद्रमें डूबमरें हटगये कुछ अपने चित्तमें उपाय बिचारनेलगे यहांतक कि मैंने अपने चित्तमें एकयत्न ठहराके उनसे कहा कि भाइयो तुम देखतेहो कि इस खारी समुद्र के तटपर बहुतसी लकड़ियां और तख़्ते और रस्सियां पड़ी हैं हम सब पांच चार नाव छोटी छोटी बनाकर किसी गुप्तस्थान में रक्खें अवकाश पाकर उनपरचढ़ इस स्थान से किसी दूसरी ओरचलें जो परमेश्वरचाहे तो इसदुःख से छूटें यदि हम समुद्रमें डूबजावें तो उत्तम है कि हम इस राक्षस के भक्ष्य हों निदान मेरे इस उपाय को सबने पसन्दकिया और हम सबने मिलकर तुरन्त थोड़ीसी नावें इतनी बड़ी बनाईं कि जिनमें तीन २ मनुष्य सुगमतासे समासकें फिर संध्याको हमसब उसभवन में गये और उस राक्षसने हम सबमें से और एकको पकड़ पूर्व्ववत् भोजन किया और सोरहा जब हमने उसके खर्राटोंका शब्द सुना नव मनुष्य जो हममें से अत्यन्त प्रबीण और चतुर थे और दशवें मैंने एकएकसीख़ लोहेकी उठाकर अग्निपर रक्खी जब वह सीख़ें लाल होगईं तो हमने उनको उठाकर एक एककर उस राक्षसकी

आंखपर रखना आरम्भ किया यहांतक कि उसे अन्धा करडाला वह राक्षस पीड़ा से बहुत चिल्लाया और बड़ा शब्दकर दाहनेबायें अपने हाथों को फैलाया कि जो हममें से किसीको पावे तो उसक्रोध में उसे कच्चाही खाजावे परन्तु हम सब उससे दूरभागते फिरते थे और ऐसे स्थानपर जाकर ठहरते कि जहां वह न पहुँचसक्ता निदान जब उसने हमको न पाया तब दरवाज़े से निकलकर पीड़ा से बैल की भांति चिल्लानेलगा हम सब उसे वहीं छोड़ समुद्रके कूलपर भागआये और उन नावोंपर जिनको हमने पहिले से बनारक्खा था चढ़े और चाहते थे कि दिन होतेही वहांसे उन नावोंको समुद्र में लेजाय खेवेंगे भोर होतेही उस राक्षसको दोराक्षस हाथपकड़े समुद्र के तटपरलाये और उन दोराक्षसों के सिवाय और कई राक्षस उसके आगे आगे दौड़े दौड़े चलेआते थे उन्हें देखतेही हम सब उन नावों को समुद्र में डाल बड़े बेग से खेने और डांड़ेमारनेलगे वह राक्षस हमको अपनी सामर्थ्यसे बाहर पाकर बड़ीबड़ी शिला नावोंकी ओर फेंकनेलगे यहांतक कि शिला मार २ के सम्पूर्ण नावें डुबोदीं केवल एक नाव जिसपर कि मैं और दो मेरेसाथी सवार थे बचरहे हम उसको बड़ेबेगसे खेकर इतनी दूर निकाल लेगये कि जहां उनकी शिला न पहुँचसक्ती थी जब हमारी नावखुलीहुई समुद्रमें पहुँचगई बायुके बेग और लहरोंके कारण ऊपर नीचे होनेलगी इसी दशा में एकरात्रि दिवसरहे निदान दूसरे दिन प्रभात को एक द्वीप में पहुँचे फिर हम तीनों मनुष्य प्रसन्नता से उस द्वीपमें गये और वहांकेकुछ फलखाये तो कुछ हम में शक्ति और सामर्थ्यहुई और रात्रिको उस खारी समुद्र के तटपर सोरहे अकस्मात् सर्प्पकी खरखराहट सुनी जो वह नारियल बृक्षके समान लम्बा था मेरी आंख खुलगई वह आतेही एकको हमारे साथियों में से पकड़ इस तरह खानेलगा कि पहिले उसने उसको तोड़ा और मरोड़ा फिर उसको पृथ्वीपर गिराया फिर तोड़कर खागया मैं यह देख बहुतडरा और दूसरे साथी समेत वहांसे भाग बहुतदूर जाकर ठहरा उसपर भी उस मनुष्यकी हड्डियों का शब्द जिसका वह समूचा खागयाथा और फिर उगलता

था सुनाईपड़ताथा निदान वह रात बड़े भय और दुःखमेंकटी। दिनको मैंनेकहा हे परमेश्वर! कल हम राक्षसकेहाथसे छूटे और आजहम इस सर्पके चंगुलमें पड़े इसीभांति उसदिन को बड़ेशोचविचारमें व्यतीत किया और सन्ध्याको थोड़ेसे बनके फलखा एकऊंचे वृक्षपर जिसको हमने दिनमें देखरक्खा था चढ़गये एकक्षणके पश्चात् हमको उसी सर्पका शब्द उसी वृक्षकेनीचे सुनपड़ा। फिर देखा कि उसकी जड़पर पहुँच मेरेसाथीको कि वह बहुतऊंचे न चढ़सका था पकड़के निगल गया और वहां से चलदिया मैं उस वृक्षपर सूर्योदयतक रहा फिर दिनचढ़े वहांसे अधमुवा होके उतरा और मुझे बिश्वासहुआ कि आजकीरात अवश्य सर्पकाभक्ष्यहूंगा मैंभी उसकी दृष्टिपरचढ़चुका हूं वह मुझे अवश्य खाजावेगा फिर अपने जीवनसे निराशहो समुद्र की ओर जानेकी इच्छाकी कि वहां जाकर डूबमरूंगा परन्तु हरदशामें प्राणप्यारेहोते हैं न डूबा और अपनेको परमेश्वरको सौंप उससर्प से बचनेका उपायसोच बहुतसी लकड़ियां और कांटे इकट्ठे किये और बोझबांध २ कर उस वृक्षके चारोंओर रक्खे और कुछटट्टी के समान बनाय उसवृक्षके चारोंओरबांधा कि मैं टट्टियोंकी आड़में न देखपड़ूं जब रात्रिभई तो मैं उस वृक्षपर जाय छिपरहा और वह सर्प्प आय चारोंओर उस वृक्षकेफिरा परन्तु किसीओर कांटों के कारण जो मैंने गढ़की छारदीवारीकी तरह बनाई थी भीतर आनेका मार्ग न पाया रातभर वह मेरीघातमें लगारहा जैसे बिल्लीचूहेकीघातमें लगीरहती है निदान दिनहोतेही वहांसे चलागया और मैं सम्पूर्ण रात्रिके जागने और सर्प्प की गर्म्म फुंकारों से उससमय कुछ सुस्त और मुरझागयाथा इस जीने से मरना अच्छा समझता था निदान इस जीवनसे तंगहोकर समुद्रमें डूबमरनेको गया परन्तु परमेश्वरकीपूर्ण कृपा से समुद्रतकपहुँचतेही एकजहाज़दिखाईदिया कि चलाआता है मैंने बड़े शब्दसे पुकारा और अपनी पगड़ीको शिरपर से उतार घुमाया कि मुझे जहाज़के मनुष्यदेखें यहांतक कि कप्तानने मुझे देखा और मेराशब्दसुना नावको भेजा तो मैं उसपरचढ़ जहाज़पर गया कप्तान और जहाज़ी मुझेदेख आश्चर्य्यितहुये और पूछनेलगे कि

क्योंकर इस उजाड़द्वीपमें आया एकवृद्धने जो सबसे बड़ाथा मुझसे पूंछा कि लोग कहते हैं इसद्वीपमें मनुष्यभक्षी राक्षसरहते हैं कि वह मनुष्यकामांस कच्चाभूनकर खालेते हैं और उन राक्षसों के बिशेष बड़े २ सर्प इसके आगेपीछे हैं कि दिनको कन्दराओं में छिपे रहकर रात्रिको निकलते हैं और मनुष्यको भोजनकरते हैं निदान उन्हों ने मेरे उन द्वीपोंमें रहनेसे बड़ा अचम्भा किया और मुझे क्षुधासे अति पीड़ित और ब्याकुल पा भोजनकराया और कप्तान ने वस्त्रफटे देख एकजोड़ा अपने पहिनने के कपड़ोंका मुझेदिया मैंने कुछबलपा अपना सम्पूर्ण दुःख और आपत्ति का वृत्तांत जैसा कि उन राक्षसों और सर्पसे बचाथा बिस्तारपूर्वक प्रकटकिया फिर हम वहांसे कई द्वीपों में गये निदान सिलहटमें पहुँचे जहां चन्दन उत्पन्नहोता है जो बहुत सी ओषधियों में पड़के बहुधारोगखोताहै कप्तानने उसनगर में जहाज़को लंगरकिया और समस्त ब्यापारियों ने अपना २ असबाब बेंचने और बदलनेको जहाज़से नीचे उतारा एकदिन कप्तानने मुझ से कहा भाई एकब्यापारी का असबाब बहुतकालसे मेरे जहाज़पर लदाहुआ है और बहुतकाल ब्यतीतहुआ कि वह मरगया अबतक मैं उसके असबाबको स्थान २ पर बेंचता और बदलता आयाहूं और चाहताहूं कि उसके नगर में पहुँच असल और नफ़ा उसके स्त्रीपुत्रोंकोदूं अब उस धनकी गठरियां तुझे सौंपताहूं उस ब्यापारीके परिवारसे तेरा मिहनताना दिलादूंगा मैंने उसकी कृतज्ञताकर कहा तुमने मुझपर बड़ी दयाकी कि मेरेवास्ते एककार्य्य नियतकिया फिर उसने अपने आज्ञालेखकको आज्ञादी कि वह असबाब इसमनुष्यको सौंपदे उसनेकप्तानसेपूंछा उसब्यापारीका जिसका कि यहमालहै क्या नामथा कि उसके नामसे यहमाल लिखकर इसमनुष्यको सौंपूं कप्तान ने कहा कि यह माल सिन्दबाद जहाज़ी ब्यापारीकाहै मैं अपना नाम सुनतेही प्रसन्नतासे फूला न समाया और कप्तानका मुख देखनेलगा और मैंने उसे पहिचाना कि यहदूसरी यात्रामें मेरा कप्तान था उसने मुझे उस द्वीपमें कुंडपर सोताहुआ छोड़ जहाज़ वहांसे खोलदिया था मेरे आने का रास्ता न देखा और उस समय से मुझे मुवाहुआ

समझताहै यद्यपि बहुतकाल व्यतीत न हुआ था परन्तु मेरे मुखका रङ्ग बहुत से दुःख और आपत्तियों के भोगने से बदलगया था कुछ आश्चर्य्य नहीं जो उसने मुझे न पहिचाना मैंने कप्तान से कहा क्या यह असबाब उसीकाहै कि जिसका नाम सिन्दबाद जहाज़ी था उसने कहा हां उसीकाहै वह बुग़दादनगरका बासी था और बांसरा से हमारे जहाज़पर ब्यापारका असबाब लेचढ़ाथा एक दिन हमने एकद्वीप के तटपर नवीन और मिष्टजल लेनेके निमित्त अपने जहाज़ को लंगरकिया वह ब्यापारी औरोंकेसाथ उस द्वीपमेंगया सब ब्यापारी तो जहाज़पर सवारहोगये परन्तु न जानपड़ा कि क्या बातहुई कि वह ब्यापारी जहाज़पर न पहुँचसका मैं चारघड़ी उसकी राह देखा किया जब वह न आया और पवन अनुकूलचली तो मैं निरुपायहो जहाज़का लंगरउठा आगेकोचला मैंने उस कप्तानसे कहा कि तुम्हें दृढ़ बिश्वास है कि वह ब्यापारीमरगया कप्तानने कहा निस्संदेह मैं उसे मुवाजानताहूं तब मैंने कप्तानसे कहा कि आंखखोल ध्यानधर मेरीओर तो देखो मैं वही सिन्दबाद जहाज़ी हूं कि नहीं जो एकजलके कुण्ड के तटपर सोगयाथा मुझे किसी ने न जगाया जब आपहीजगा तो देखा कि जहाज़ वहां से चलागया इस बातको कप्तानने सुन सोच बिचार मेरी ओर देखा और मुझे भलीभांति पहिचान परमेश्वरका धन्यबाद किया और मुझे कण्ठसे लगाकर कहा कि भाई तुम अवश्य सिन्दबाद जहाज़ीहो और यहसब बस्तु तुम्हारी हैं जिसकी रक्षा मैंने आजतक की और प्रत्येक स्थान पर मैंने इसे बेंचा अब मैं तुझे नफ़ेसमेत सौंपताहूं मैंने वह सब पाया फिर सिलहट द्वीपसे अन्य द्वीपोंमें गये जहां से हमने लौंग दालचीनीआदि बस्तु मोललीं और वहांसे हमने दूरदूर तक यात्रा की एक स्थानपर हमने इतने बड़े कछुवे देखे कि जिन की लम्बाई चौड़ाई पचास हाथकी थी और अद्भुत२मत्स्यदेखीं कि गोके समान दुग्धदेती हैं कछुओं का चर्म्म ऐसा कठोर था कि जिनकी ढाल बनाते हैं और एक मत्स्यको ऊंटके स्वरूप और रंगका देखा फिर हम बांसरा में पहुँचे और वहांसे बुग़दाद में आये इस यात्रा में इतना

द्रव्य मुझे लाभ हुआ कि जिसकी संख्या नहीं और निज नगर में जीता जागता और लाभयुक्त पहुँच परमेश्वरका धन्यवाद किया और उसकी धन्यता में बहुतसा धन याचक और मंगनों को दिया और बहुतसे सुन्दर मन्दिर और आनन्ददायक वस्तु मोललीं सिन्दबाद ने अपने तीसरे सफ़र का वृत्तान्त कह हिन्दबादको ४००) रु० दिये और दूसरे दिन अपने नियमानुसार उसे निमंत्रण किया कि चौथे सफ़रका वृत्तान्तसुने सो हिन्दबाद और शेष सभा उसदिन भी सिन्दबादसे बिदाहो दूसरे दिन भोजन के समय आये जब खाचुके तो सिन्दबाद ने अपनी चौथी यात्रा का वृत्तान्त इसप्रकार वर्णन करना आरम्भ किया ॥

## सिन्दबाद जहाज़ीकी चतुर्थ यात्राका वृत्तान्त ॥

हे भाइयो ! आनन्द और मंगलसे वह तीनों सफ़रके सबभय और आपत्ति बिस्मरणहोगई और सांसारिक अद्भुतवस्तुओंके देखने और धन इकट्ठाकरनेकी लालसाहुई और चतुर्थयात्रा की तय्यारीकर उन वस्तुओंको कि जिनकी चाहना दूरदूरके देशों और नगरोंमेंथी इकट्ठा कर पारसकी ओर चला मार्गमें बहुतसे नगर लांघताहुआ एकबंदर में पहुँचा जहांसे फिर जहाज़पर चढ़ा और वहांसे जहाज़ हमारा तेरा फिर द्वीपआदि पूर्व के बंदरों की ओर जा निकला एकदिन अकस्मात् एक झोंका जहाज़को लगा कप्तान ने लाचारहो जहाज़ के बद्दवान नीचे करदिये और खलासियों से कहा कि यह तूफ़ान है चैतन्यरहना कितनाही उन्होंने रक्षाकी परन्तु सब व्यर्थहुआ जहाज़ की पालें तूफ़ानसे फटके टुकड़े२होगई और कप्तान की सामर्थ्य से वह जहाज़ जातारहा यहांतक कि बालूपर चढ़कर भारसे टुकड़े२ होगया जहाज़के मनुष्य समस्तधन और वस्तुसहित समुद्र में डूब गये परन्तु मैं और कुछ व्यापारी तख़्तेके सहारों से बहते२ एकद्वीप में जो समीपथा जालगे जलसे निकल उसद्वीपमें गये और बनके फलोंके खानेसे हममें कुछ शक्तिहुई रात्रिको फिर वहीं आकर कि जहां लहरोंने हमें डालदियाथा पड़कर सोरहे और अपनी अभाग्यतापर रोये दूसरेदिन भोरको वहांसे उठके उसद्वीपमें गये और इधर उधर

अति विस्मितहो फिरनेलगे कि अकस्मात् बहुतसे हबशियोंने आकर हम सबको घेरलिया और परस्पर हमें भेड़ों और बकरियोंके समान बांधकर अपने घरोंमें हांकलेगये मुझे और मेरेपांच साथियोंको एक बिलग घरमें रक्खा और हमारे सम्मुख कुछ तरकारी रखकर सैन से कहते थे कि हम उसेखावें मेरे साथियोंने बिना समझे बूझे उसे भली-भांति खाया उनके खातेही वह नशे में मतवाले और बेसुधि होगये फिर वे हबशी नारियल के तैलमें चावल पकाकर हमें खिलाने लगे कि हम मोटेहोजावें और हमें मारखावें इसकोभी मेरे साथी न समझे और बड़े स्वादु से पेटभर खातेथे और मैं उसेबहुत थोड़ा खाता कि जिसमें न मरूं और न मोटा होऊं पहिले वह हबशी उन मनुष्योंको कि जिनको वह पकड़ते ऐसी बस्तु खिलाते कि जिसमें वह उन्मत्त और मतवाले होजावें और अपने भलेबुरे का परिज्ञान न रहे और फिर पुष्ट करनेको नारियल के तैलमें चावल मिलाकर खिलाते फिर परस्पर जेवनारकर उन्हीं मनुष्यों को खाते सो मेरे साथियों को कि ऐसे भोजन खानेसे हृष्टपुष्ट और उन्मत्त होगयेथे सो उन्हें अपनेबुरे भलेका कुछभी बिचार न रहा और मैं इसबात का फल कि ये हबशी तैलसहित चावल खिलाते हैं भलीभांति जानताथा कुछ अपनी आपत्ति के शोचसे और कुछ अल्प भोजनसे अत्यन्तक्षीण और सूखगयाथा केवलचर्म और अस्थि शेष रहगईथी इसवास्ते उन्होंने मुझे छोड़दिया कि मैंभी हृष्टहोजाऊं यहांतक कि उसद्वीपमें स्वाधीन फिराकरताथा एकदिन अवकाशपा उसद्वीपसे चलदिया एकवृद्धनेमुझे जातेदेख मुझे बहुत बुलाया परन्तु मैं न गया और अपनेंप्राणले वहां से भागा केवल वह वृद्धही वहांपरथा और सब हबशी बाहर गयेहुये थे सन्ध्याको वहांआये क्योंकि उनको मेरी ढूंढ़में बड़ी देरहुई जबतक कि वह अपने २ बासेमें आवें तबतक मैं बहुत दूर निकलगया था क्षणमात्र में खाने व सुस्ताने के निमित्त बैठजाता और फिर भागता इसीप्रकार एक सप्ताहतक भागा जब क्षुधायुक्त होता तो नारियल तोड़कर उसका जल पी जाता उसके पीने से मुझे क्षुधा और तृषा न लगती निदान आठवें दिन मैं खारी समुद्र के तटपर पहुँचा

वहां मैंने श्वेत वर्णके मनुष्यों को अपने स्वरूप के समान देखा कि काली मिरचें जो वहां बहुतसी उगती हैं चुनरहे हैं उनको देख मैं हर्षित हुआ व अति प्रसन्नता से मैं उनकी ओर बेडर चलागया वह भी मेरे निकट पहुँचे और अरबी भाषा में मुझसे पूंछा कि तू कहांसे आताहै मैं अपने देशकी भाषा सुनकर अधिक हर्षित हुआ फिर उन से अपनावृत्तान्त जहाज़टूटने और हबशियोंकेद्वीपमें पकड़ेजाने का प्रकट किया उन्होंने कहा यह तो मनुष्यभक्षी हैं तू किस भांति बचा मैंने उनसे अपने भागने और भूंखे रहनेका हाल जैसा कितुम ने सुनाहै कह सुनाया उन्होंने मेरेजीता बचआनेसे अत्यन्त आश्चर्य्यकिया और जबतक कि वह उसद्वीपसे मिरच चुनाकिये तबतक मैं उनके साथरहा फिर वह सब मुझे अपने साथ लेकर जहाज़ पर सवार हुये और तुरन्त वह जहाज़ उसद्वीप में जहां से वह आये थे पहुँचा वह मनुष्य मुझे वहांके बादशाहके सम्मुख कि वह प्रसन्नचित्त और दयावान् था लेगये उसने मेरे दुःखोंका वृत्तान्त सुन अत्यन्त अचम्भाकिया और मुझे उत्तम२ वस्त्रदिये और मेरी ख़बर लेतारहा वह द्वीप बहुत बड़ा और बसाहुआथा उसमें बहुतसी बस्तु ब्यापार के योग्य उत्पन्न होतीथीं वहांसे ब्यापारी उन बस्तुओंको ब्यापारके निमित्त लेजाते और अन्य अन्य देशोंमें बेंचते और बदलनेकोलाते मैं ब्यापारियों के गतागतसे बहुत प्रसन्नहुआ और अपने देशमें पहुँचनेकी फिरमुझे आशाहुई वहांके बादशाहने धीरे २ मुझे अपनासभासद नियतकिया और मुझे बहुत आनन्द और कृपापूर्वक रखता था यहांतक कि मैं उनमें ऐसा मिलगया कि वहमुझे अपने देशहीका समझनेलगे मैं वहांके बादशाह और प्रजाको घोड़ेपर लगाम और ज़ीनबिना सवारहोते देख अत्यन्त आश्चर्यितहुआ एकदिन मैंने बादशाह से पूंछा कि यहां के मनुष्य घोड़ेपर ज़ीनलगाम बांधकर सवार क्योंनहीं होते उसने उत्तरदिया कि उन बस्तुओंको हम नहींजानते और न जानते हैं कि ज़ीनलगाम कैसी होतीहै फिर मैंने एक कारीगर को काष्ठका नमूना दिखा कहा कि तू इसीभांतिकी काठी बना दे सो वह मेरी आज्ञानुसार बनालाया फिर मैंने उसे चर्म से मढ़कर

उसपर बहुमूल्य कमख़ाब और अतलस लगाया फिर लोहार से रिकाबें बनानेको कहा जब वह सब मेरी इच्छानुसार बनचुका तो उसे एक अश्वपर लगाकर बादशाहके सम्मुखलेगया वह उसपरसवार होकर अत्यन्त प्रसन्न और मग्नहुआ और मुझे उससेवाके बदले पारितोषिक और उत्तम २ वस्तु और असंख्यद्रव्य दिया और प्रथमसेभी अधिक मुझसे प्रीतिकरनेलगा फिर मैंने बहुतसे ज़ीन और लगामें उसके परिवार और मंत्रियों और सभासदों को बनवादीं उन्होंने लेकर उसके बदले हज़ारों रुपये और बहुमूल्यवस्तु देकर मेरी कृतज्ञता की और उसनगरके मनुष्यभी मेरी बड़ी प्रतिष्ठाकरने लगे एकदिन बादशाहने मुझे एकान्तमें कहा मैं तुझसे बड़ीप्रीति और मित्रता रखता हूं और मेरी प्रजा और सभा तेरीबुद्धि से अत्यन्त प्रसन्नहै और सबको तुझसे प्रीतिहै एकबात तुझसे चाहताहूं उससे तू इन्कार न कीजियो मैंने बिनयकी जो कुछ आप मेरेवास्ते बिचारें वह अत्यन्त लाभकारी और उत्तमहै मैं क्यों आपकी आज्ञा भंगकरूं बादशाहने कहा मैं चाहताहूं कि तेराबिवाहकरूं कि जिससे तू आनन्द में रहे और इसनगरसे जानेकी इच्छा न करे मैंने अति हर्षसे बादशाहके कहनेको स्वीकार किया उसने अपने घरानेकी एक स्त्री के साथ जो अति सुन्दरी और रूपवती और कोमलांगीथी बिवाह करदिया मैं उस बिवाहकी रीतोंके पश्चात् उस सुन्दरी से आनन्द भोगनेलगा बग़दादनगरमें भी स्त्री और पुत्ररखताथा इस हेतु वहां जानेकी भी इच्छाबनीथी उस सुन्दरी के प्यार और प्रीतिमें ऐसा आसक्तरहा कि अपने पहलेके परिवार को भूलगया थोड़े दिनों के पश्चात् मेरेपड़ोसीकी स्त्री कि उसके साथ मुझे बड़ी प्रीतिथी बीमार होगई कईदिनों के उपरान्त वह कालबश हुई मैं मातमपुरसी को उस मित्रके निकटगया उसे अत्यन्त शोकयुक्तपा अपने देशरीति के अनुसार उसेधैर्य्य और भरोसा देनेलगा कि परमेश्वर तुम्हें जीता रक्खे तुम बहुत बर्ष पर्य्यंत जीतेरहो उसने उत्तरदिया कि जो तुम मुझे आशीर्ब्बाद देतेहो वह मेरी दशाके बिपरीतिहै कि मैं केवल एक घड़ी वा आधी घड़ीका अतिथिहूं मैंने उत्तरदिया क्या कहतेहो ऐसा

अशकुन शब्द अपने मुखसे न निकालो परमेश्वर तुमको चिरञ्जीव रक्खे मैं तुम्हारी मित्रतासे सदा लाभयुक्त रहाहूं उसने कहा कि मेरी आयु पूरीहोचुकी अब तुम्हें परमेश्वर जीतारक्खे आज मैं अपनी स्त्रीके साथ जीता गाड़ा जाऊंगा हमारे बड़ोंने ऐसी रीति उस द्वीपमें नियतकी है यदिस्त्रीमरे तो उसके साथ उसके पतिकोभी जीतागाड़दो तथा पहिले पतिमरे तो उसके साथ उसकीस्त्रीको गाड़ो अबमुझेकोई बचा नहींसक्ता यहांके बासी इसरीति पर दृढ़ और प्रसन्न हैं कोई इसरीतिके बिपरीति नहीं करसक्ता इस अनुचित रीतिको सुन मेरी सुधि जातीरही और नानाप्रकारके शोच बिचारमें पड़ा अभी मैं उस स्थानसे हिला न था उस पड़ोसीके सम्पूर्ण मित्र और नातेदार और पड़ोसी कफ़न डालनेको आये उन्होंने उसलोथको बहुत उत्तम बस्त्र और आभूषणादि पहिराये जैसे कि दुलहिनको सजाते हैं और उसे खुलीहुई अर्थीपर रक्खा और आगे उसके आपभी चले और उसके पीछे उसका पतिभी शोकके बस्त्र पहिनचला उसके पीछे सब मनुष्य चले एक बड़े पहाड़की राहली उस पर्वतके निकट पहुँचकर उन्होंने एक कन्दरासे एकशिला उठाई और उस लोथको उस बस्तु सहित उसमें डालदिया फिर वह पतिभी सबसे बिदा होकर एक घड़ापानी का और सात रोटियां लेकर अर्थीपर बैठा और उसेभी उसकी स्त्रीके समान उसी खोहमें अर्थी समेत डालदिया वह पहाड़ बहुत चौड़ाथा और दूसरी ओर खारी समुद्रसे मिलाहुआथा और वह खोह बहुत गहरी और लम्बीथी निदान जब रोपीट और क़फ़नाचुके तब उस पत्थर को फिर उस खोह के मुखपर रख सब मनुष्य वहांसे चलेआये हे मित्रो! मैंइसबुरी रीतिको देख बहुत घबराया और डरा परन्तु वहांके बासी इसरीतिको बहुत अच्छी जानतेथे एकदिन मैंने वहांके बादशाहसे कहा कि हे स्वामी! मैंने वहांकी इसरीति से बड़ा अचम्भा किया और घबड़ाया कि जीते आदमी को मुरदेके साथ गाड़ते हैं मैं बहुत से देशोंफिरा परन्तु किसीदेशमें ऐसी अन्यायकी रीति न देखी और न सुनी बादशाहने उत्तरदिया कि हे सिन्दबाद! यहांकी यही संप्रदायहै हम किसीभांति इसे बरज नहींसके मैं भी स्वतःइसी रीतिपर

स्थिरहूं परमेश्वर न चाहे जो यहांकी शाहजादी मरजावे तो मैं भी जीताही उसकेसाथ गाड़ाजाऊंगा मैंने कहा हे स्वामी! क्या यह आज्ञा परदेशियों परभी प्रचलित है बादशाहने मुसकरायकहा निस्संदेह उनपरभी है वह मनुष्य इसरीति से पृथक् नहीं होसक्के इसबचन को मैं सुन अत्यन्तघबड़ाया तबसे इसी भय और शोचमें रहताथा कि ऐसा न हो कि मेरी स्त्री भी मरजावे तो उसकेसाथ मैंभी जीताही गाड़ाजाऊं निदान धैर्य्यधर अपनेको परमेश्वरको सौंपा अकस्मात् थोड़ेदिनोंकेपश्चात् मेरीस्त्री बहुतबीमारहुई और कुछकालमें यमलोककोपधारी उससमय जो मुझपर शोकहुआ सो कहनेसे बाहरहै अपनेमनमें कहताथा इसजीतेजी गाड़ेजानेसे उत्तम था कि मुझे हब्शी लोगखाजाते इतनेमें बादशाह अपने भृत्यों और जलूससहित मेरे घरपर आया और नगरकेप्रतिष्ठित मनुष्य भी इकट्ठेहुये और मेरी स्त्रीको वस्त्रआभूषण पहनाकर अर्थीपररक्खा और गाड़नेचले और उस लोथके पीछे मैंभी वहांकी रीति के अनुसार रोताहुआ चला जब उस पहाड़पर जहां कि लाशें गाड़ीजातीथीं पहुँचे और अपने छूटनेके लिये विनयपूर्व्वक बादशाहसे कहा कि हे स्वामी! मैं परदेशी अन्यदेशका रहनेवालाहूं मुझपरदयाकरो मैं इसकठिनदण्ड के योग्यनहीं इसके विशेष मैं अपनेनगरमें स्त्री पुत्र रखताहूं हे मित्रो! उसने कुछभी मुझपर दया न की और तुरन्त उस लोथको उस कन्दरा में डालदिया और मुझे भी दूसरी अर्थीपररख एक जलका घड़ा और सातरोटियोंसहित उस खोह में उतार दिया फिर शिला खोहके मुखपररक्खी मैंने प्रकाश में कि इस कन्दराके ऊपरसे उस में पहुँचताथा देखा कि गहराव उसका अनुमान पचास हाथके था उस खोहमें जातेही मृतकोंकी गन्ध और सड़ाहट इतनी मेरेब्रह्माण्ड में पहुँची कि मैं व्याकुलहो वहां न ठहरसका अपनी अर्थी से उठ और नाकबन्दकर वहांसे दूरभागा और पृथ्वीपरगिर बहुतदेरतक अपनी अभाग्यतापर पश्चात्ताप करता और रोतारहा और मैंने कहा परमेश्वर मनुष्यके निमित्त जो करता है उत्तम जानके करताहै मेरेवास्ते यही अच्छाहुआ और अपनेको बहुतधिक्कार देताथा कि

तुझे तीन सफ़रके दुःख और आपत्ति उठाने पर भी बोध न हुआ तुझे चाहियेथा कि अपने पहिले धनको जो परमेश्वरने तुझे दिया था भोगकर अपने स्त्री पुत्रोंमें रहता और फिर सफ़र का नामभी न लेता इस दशामें कभी तो उठके रोता और कभी अपना मुँह और शिरपीटता फिर जब मुझे क्षुधालगी तब मैं नाक और स्वरबन्दकर अपनी अर्थीपरसे जलकाघड़ा और रोटियां उठालाया और कई दिवसतक उसेखाया जब वह रोटियां और पानी होचुका तब मरने पर तय्यारहुआ इतने में मैंने पत्थर उठाने का शब्द सुना उन्होंने एक मृतक पुरुषको एक मरी हुई स्त्री सहित डालदिया और वही पत्थर फिर उस खोह के मुखपर रखदिया मैंने आकर एक मृतक के पांवकी हड्डीउठाके इसबेगसे उसस्त्री के शिरपरमारी कि वह चकराकर गिरपड़ी केवल उसकीरोटियां और जललेनेको यह किया फिर कई दिनतक मैंने उन रोटियोंको खाया जब वहभी होचुकीं परमेश्वरकी माया से कोई मनुष्य एकमृतक स्त्रीको अपनेजीते पतिसहित फिर उस खोहमें डालगया उस पुरुषको भी मैंने उसी भांतिकर उसका भोजन और जलउठालिया फिर तो मेरीभाग्यसे उस नगरमें ऐसी मरीपड़ी कि प्रतिदिवस लोथें और उनके साथ जीते मनुष्य उस खोह में डालेजाते और मैं उन जीतोंको मार उनकी रोटियां और जललेता अकस्मात् एकशब्द कि जैसे कोई श्वास लेता है सुना मैं उसीओर अँधियारे में कि दिन और रात्रिसमान ज्ञानपड़ताथा चला और वह वस्तु दमलेतीहुई और धबधबकरतीहुई एकओरको दौड़ी उसकेशब्दपर मैं भी दौड़ता चलागया यहांतक कि मैंनेथोड़ा सा प्रकाशतारेकासा चमकताहुआ देखा कि कभी तो वह मेरीदृष्टि से गुप्त होजाताहै और कदापि दीखताहै निदान मैंने उस खोहकी दूसरी ओर से एक छिद्र इतना पाया कि जिस में सुगमतासे बाहर निकलगया और अपनेको समुद्रकेतटपरदेखा उससमय अत्यन्तहर्ष प्राप्तहुआ जब मैं अच्छेप्रकार होशमें आया तो मैंने विचारा वहवस्तु जो खोहमें सांसलेती थी और उसके पीछेलगाहुआ मैं यहांतकपहुँचा कोई जल जन्तु अवश्यहोगा कि उस छिद्रसेहोकर मृतकों के खानेको

उस कन्दरामें जायाकरताहै फिर मैंनेअच्छेप्रकारदेखा तो उस पहाड़ को नगर और एक समुद्र के बीचमें पाया परन्तुवह छिद्र किसी को विदित न था क्योंकि उस पहाड़का किनारा इतना ऊंचाथा कि कोई भी उसपर चढ़ नहीं सक्ताथा निदान उस कन्दरा से निकलकर उस समुद्र के तटपर पहुँच परमेश्वरकी बन्दनाकी कि उसने मुझपरकृपा और अनुग्रह किया फिर मैं उस खोहके भीतर जिसमें मुझे दुःख और निराशा में भूख न लगतीथी और थोड़ासा कि जिसमें न मरूं खा लिया करताथा गया हीरेआदि रत्न और वहबस्तु जो उस अँधियारे में मुझे हाथलगी उठाकर समुद्रके कूलपर लाया और उनको गठरियोंमें रख रस्सियों और मुर्दोंकी अर्थियों से जिनको उस खोह में उतारते थे अच्छी तरहबांधा और उससमुद्र के तटपर निर्भयरहने लगा क्योंकि वह वर्षाऋतुथी तीनदिनके पीछे ईश्वरकी पूर्णकृपा और अनुकंपासे एकजहाज़देखा कि उससमुद्रमें पास से होकरजाताहै मैंने अपनी पगड़ीको घुमाया और बड़े बेगसे पुकारा कप्तानने मेरा शब्द सुन नावको मेरे लेने को भेजा खलासी मुझे अपनी नावपर चढ़ा के लेगये और कहा तेरी क्या शामत आई थी कि तू इस स्थानपर आया मैंने उनको उत्तरदिया कि दो दिवस व्यतीतहुये कि मैं जिस जहाज़पर चढ़ाथा वह यहां पहुँच डूबगया केवल मैंही बचरहा वह मेरीबातको सत्यजान मुझे मेरी गठरियोंसहित जहाज़पर लेगये जब मैं जहाज़ में पहुँचा तो कप्तानसे भी वही कहा और कुछ बहुमूल्य रत्न देनेलगा परन्तु उसने न लिये फिर हम उस द्वीपसे आगे चलके और कईद्वीपों में गये यहांतक कि नीलद्वीपमें जो सरन्द्वीपसे दशदिनकी राहपर है पहुँचे और वहांसे कलीद्वीपमें जाकर जहाज़ से उतरे जिसमें शीशेकी खानिहै उसमें कपूर और हिन्दुस्तानकी बहुतसीवस्तु ईखआदि उत्पन्नहोती हैं कलीद्वीपका अधिपति बड़ाबादशाहथा जिसका अधिकार नीलद्वीपपर्यन्तथा उस द्वीपका चौड़ान अनुमान दो दिनकी यात्राके था और वहांके वासी सुन्दर मनुष्यका मांस खातेथे उस द्वीपमें अपनी बस्तुओं को बेंच और वहांकी चीजें मोललें चले और कई द्वीपों और बन्दरोंमें होतेहुये कुशलपूर्वक बुग़दादमें पहुँचे

इतना धन और रत्न मुझे लाभहुआ जिसका वर्णन नहीं करसक्ता फिर मैंने परमेश्वर का धन्यवादकर कि ऐसे मारक स्थानोंसे बचाथा बहुतसा द्रव्य और अशरफी याचकोंकोदिया और कईग़रीबख़ाने और मस्जिदें अभ्यागतों के निमित्त बनवाईं और अपने स्त्री पुत्रों और मित्रोंमें आनन्दपूर्व्वक रहनेलगा दिनरात नृत्य गीत और आनन्द मङ्गलमें व्यतीत होताथा फिर सिन्दबादने अपना इतना वृत्तान्तकह ४००) रु० हिन्दबादकोदे बिदाकिया और हिन्दबाद इस सफ़रका हालसुन और सफ़रोंकी अपेक्षा अधिक आश्चर्य्य में हुआ और उसके सभासद्भी अचम्भितहुये फिर वह सबभी उस दिन बिदाहो दूसरे दिवस सिन्दबादके घरमें आये उसकेसाथ भोजन किया फिर पांचवें सफ़रका वृत्तान्त सुननेलगे ॥

## सिन्दबाद जहाज़ीकी पंचमयात्राका वृत्तान्त ॥

सिन्दबादने कहा कि उस आनन्द और मंगलमें अपनी सम्पूर्ण आपत्ति और दुःख बिस्मरण होगये कुछदिन पीछे फिर मैंनेसफ़रकी तय्यारीकी और व्यापारकी बस्तुले गाड़ियोंपर लाद उस बन्दरकी ओर जो मेरे नगरके समीपथा चला परन्तु कोई कप्तान मेरी इच्छानुसार न मिला इस निमित्त मैंने एक जहाज़ बनवाया जब वह बन चुका मैं अपनी बस्तुको उसपर लाद सवारहुआ यदि मेरा असबाब इतना न था कि जहाज़को पूराहोता सो मैंने और व्यापारियों को कि सब सजाति और मिलनसार थे उनको असबाब समेत चढ़ालिया और वहांसे चला बायुके अनुकूल होनेमें हम तुरन्त खाड़ीसे निकलकर खारी समुद्र में पहुँचे कितने एक दिनोंमें हमारा जहाज़ पहिले पहिल एक उजाड़द्वीप में पहुँचा सम्पूर्ण व्यापारी उस टापूपर गये और वहां हमने रुख़पक्षीका अंडा कि जिसका पहिले बर्णनकरचुका हूं देखा उस अंडेसें बच्चानिकलनेकोथा सो चोंचकीओर अंडेसेखटकके कुछ निकलताथा उन व्यापारियोंने जो मेरे साथथे उस अंडे को कुल्हाड़ियों से तोड़ा मैंने उनको कितनाही बरजा कि तुम इस अंडेको न छुओ परन्तु उन्होंने मेराकहना न माना रुख़के बच्चेको काट भूनकर खागये उनके खानेही दोबड़े टुकड़े बादल के समान बायु में हमको

दूरसे दिखाई दिये कप्तान जिसे मैंने अपने जहाज़पर नियत कियाथा इस दशाकोदेख घबड़ाया और हम सबकोपुकारकेकहा तुरन्तजहाज़ पर चढ़ो उस बच्चेके माता पिता जिसे तुमने खायाहै आपहुँचे हमने तुरन्त सवारहो जहाजको वहांसे खोलदिया वह जोड़ा ऐसा शब्द और चिल्लातेहुये आया कि जिससे हम भयभीत हुये फिर वे अपने अंडेको टूटादेख और बच्चेको उसमें न पाय अत्यन्त क्रोधितहुये और उड़के जिधरसे आयेथे चलेगये थोड़ीदेरतक वह गुप्तरहे इस समयान्तर में हमने जहाज़को वहांसे खोल सब पालें उसकी खोलदीं कि बहुतदूर निकलजावें और रुखके दुःखके देनेसे बचें परन्तु उन्होंने हमेंपकड़लिया बड़ेबड़े पहाड़के टुकड़े अपने पंजों में पकड़वायुमें थर्रानेलगे सो एकने पत्थर हमारे जहाज़के ओरफेंका कप्तानने जहाज़को ठहराया फिर वहपत्थर उससमुद्रमें इसवेगसे गिरा कि सम्पूर्ण समुद्र का जल ऊपर नीचे होगया और उसके नीचेकी पृथ्वी दिखाई देने लगी परन्तु दूसरेने ऐसा ताकके पत्थर मारा कि जहाज़पर लगा उसपत्थरके गिरतेही जहाज़ टुकड़े टुकड़े होगया सम्पूर्ण व्यापारी और वस्तु और सेवक समुद्रमें डूबगये परन्तु मैं थोड़ी देरतक समुद्र के भीतररहा फिर जलपर उठा संयोगवश एकतख़्ता जो बहाजाता था मैंने पकड़लिया और एकहाथसे पैरनेलगा जब वह हाथ थकजाता तो मैं दूसरे हाथ से पैरता यहांतक कि बहुत थका और धारामें बहता बहता तटपर जालगा यद्यपि वह किनारा बहुत ऊंचा और फिसलता था परन्तु मैं बड़ी कठिनतासे उसपर चढ़ धरतीपर पहुँचा और घासपर सुस्तानेको बैठगया जबमुझे कुछसामर्थ्य और शक्तिहुई तो उठकर उसद्वीपमें फिरनेलगा वहां स्थानस्थानपर बहुतसे बाग़थे जिनमेंबहुतसे फलदार वृक्ष लगेहुये थे कुछ फल तो हरे और कच्चे थे और कुछ पक्के और रंगीन और स्थान स्थानपर अतिनिर्म्मल और मिष्टजलके कुण्डथे जिनसे उन वृक्षोंकी जड़ोंमें जलपहुँचताथा मैंने उत्तमउत्तम और पक्कफलखाये और कुण्डसे जलपिया यहांतक कि रात्रिहुई मैं एकस्थानपर सोगया परन्तु भयसे रातभर निद्रा न आई बहुत कालपर्य्यन्त अपने दुःख और आपत्तिको स्मरणकर रुदन

करता था और अपनेको धिक्कार देता कि क्यों अपने घरसे निकल फिर परदेशकिया परमेश्वरने तुझे बहुतकुछ दियाथा जिससे संम्पूर्ण आयु आनन्द और मंगलमें ब्यतीत होती कभी उस उजाड़ टापूमें अपने छुटकारेका उपाय सोचता इतनेमें भोरहुआ और दिननिकल आया तब मैं उन उपायोंको वहीं छोड़ उठखड़ाहुआ और उन सफल वृक्षोंकी सैर करनेलगा थोड़ीदूरगया था कि एकबृद्धको जिसके नीचे का धड़ झोलामारेहुये था देखा कि एकछोटे से कुण्डके तटपर बैठा हुआहै पहिले मैंने बिचारा कि इसकाभी मेरेसमान जहाज़ डूबगया होगा उसके समीपजाय मैंने उसको प्रणाम किया उसने उत्तर न दिया केवल शिरहिलाया फिर मैंने उससे पूछा कि तुम यहां बैठे क्याकरते हो उसने सैनसे बताया मुझे अपने कन्धेपरचढ़ा इसकुण्डसे उसपार उतारदे मैंने जाना कि यह चाहता है कि मुझपर सवारहो फलतोड़े या उसको यहस्वीकार है कि मैं उसे अपने कांधेपर चढ़ाकर उसपार उतारूं निदान मैंने कुछ ऐसा सोच उसे अपनी गर्दनपर चढ़ालिया और कुंडके दूसरी ओर लेजायठहरा और उसे अपने ऊपरसे उतारना चाहा जब मुझे यह बात स्मरण आतीहै तोमैं बहुत हँसताहूँ क्योंकि उस वृद्धने जिसे मैं शिथिल समझताथा बड़ी चतुरतासे अपने पांव को मेरेगर्दनपररख इसबेगसे मेरागलाघूंटा निकटथा कि प्राणनिकल जावे और पाँव उसका चर्मकी तरह लटकता था निदान इस दुःख से बेसुधहो गिरपड़ा तब उसने अपने पावोंको कुछ ढीलाकिया जिस से मुझमें श्वास आनेलगी और मैं सुधिमें आया फिर उसने एकचरण अपना मेरे पेटमें गड़ोकर दूसरे से मुझे लातमारी और मुझे बलसे उठाया और वृक्षोंके नीचे मुझे लिये फिरनेलगा और सैन करता था कि मैं उन फलोंको इकट्ठा करूं और खाऊं निदान वह समस्त दिवस मुझपर चढ़ारहा जब रात्रिहुई मैंने चाहा कि सोऊं वह पृथ्वीपर अपनेको रख अपने चरणों को मेरी गर्दनसे न्यारा न करताथा रातभर इसीप्रकार से रक्खा जब भोरहुआ मुझे जगाकर फिर मुझपर चढ़ा और प्रत्येक समय मुझे रोड़ेमार उस द्वीपमें लिये फिरताथा हे मित्रो! मेरे इस दुःख को विचारना चाहिये कि उस वृद्धसे मुझे एक क्षणभी

छुट्टी न मिलतीथी अकस्मात् एकदिन मैंने बहुतसे सूखेकद्दू भीतर से खाली धरतीपर पड़ेहुये देखे मैंने एकको कि बहुत अच्छा और बड़ाथा उठालिया और भीतरसे अच्छेप्रकार साफ़कर कई अंगूरके गुच्छे उसमें निचोड़े जब वह भरगया मैंने उसे एकस्थानपर रखदिया कई दिनके पश्चात् जब मैं उस वृद्धसहित उस स्थानपर गया उसे पिया तो बहुत उत्तम मदिरा बनीहुईथी उसको प्रतिदिन थोड़ीसी पीता और उसके नशेमें उस मेहनत और श्रमको जो बुड्ढा मुझसे लिया करताथा भूलजाता और मनभी प्रसन्न रहता और कभी २ आनन्दितहो गाता और नाचता जब उस वृद्धने देखा कि उस के पीनेसे मुझे प्रसन्नता और हर्ष प्राप्तहोनाहै तो सैनसे उस मदिराको मुझसे मांगा कि मैं उसे पिलाऊं सो मैंने वह कद्दू उसे दिया उसने पहिले थोड़ी पी फिर जब उसे कुछ प्रसन्नता प्राप्तहुई तब उस कद्दू को अपने मुखसेलगा सब पीगया इतनी मदिरा उसके बेसुधहोने को बहुतथी फिर तो वह उन्मत्तहो गाने और मेरी गर्दनपर डगमगाने और झूमनेलगा यहांतक कि मतवाला होगया और गर्दन उसकी झुकगई और पाँवभी ढीलेपड़गये और बेसुधहोगया तब मैंने अपनीगर्दनसे उसे पृथ्वीपर पटकदिया और एक बड़ापत्थर उठा इस बेगसे मारा कि वह मरगया मैं उससे छूटकर अतिहर्ष पूर्व्वक समुद्रके किनारेगया अकस्मात् कुछ मनुष्य मिष्टजलके लेने के वास्ते अपने जहाज़से उतरेथे और जहाज़ को समुद्र के तटपर लंगरकियाथा उन्होंने मुझेदेख और मेरावृत्तान्तसुन अचम्भाकिया और कहा क्या तू उस वृद्धके हाथसे पड़ाथा उसने बहुतसे मनुष्यों का गलाघूंटकर मारडालाहै कोई उसके हाथसे नहींबचा तू बड़ाप्रारब्धी है और यह टापू प्रसिद्धहै कोई इसमें नहींजाता फिर उन्होंने मुझे अपने जहाज़में चढ़ालिया उस जहाज़के कप्तानने भी मुझपर बड़ीदयाकी इससमयान्तरमें एकव्यापारीसे अत्यन्त मित्रता और प्रीतिहोगई वह मुझे अपने साथलेकर एकटापूमें उतरा फिर उसने मुझे एक टोकरादेकर एक समूह के साथ करादिया और कहा चैतन्य रह इन मनुष्यों से अलग न होना नहीं तो जीता न बचेगा

और जो कुछ कि यह सब लोग करें तुमभी करना और सब आद-
मियोंने एक २ टोकरा उठालिया वहमुझे अपने साथलेकर नारियल
लाने को बनमें गये वहां बहुतसे वृक्ष नारियलके इतने लम्बे और
चिकने थे कि चढ़ना उनपर कठिन था हम सब चाहते थे कि नारि-
यल टोकरोंमें भरें इतने में अनेक बानर देखे वह सब हमारे डरसे
वृक्षोंपर बड़ी फुरतीसे चढ़गये फिर मेरे साथी शिला इकट्ठीकर बड़े
बेगसे बानरों को मारनेलगे मैं भी उनके समान उन वृक्षोंपर पत्थर
फेंकनेलगा यहांतक कि वह सब बन्दर क्रोधितहो नारियल तोड़ २
कर हमको मारनेलगे थोड़ी देरमें वह स्थान नारियलसे भरगया ह-
मने उनको टोकरोंमें भरलिया और मैंने जो देखा तो बनमें बन्दरों
के बहुत होनेसे इससे कोई उत्तम उपाय न था जो वह ब्यापारी करते
थे फिर मैं उन सबके साथ नगरमें आया उस ब्यापारीके निकट जि-
सने मुझे बनमें भेजाथागया और सबनारियल उसेदिये उसने उनका
मोलदे कहा तुम प्रतिदिन नारियल लायाकरो और उसके मोलको
इकट्ठा करतेरहो कुछ कालमें तुम्हें इतना धन प्राप्तहोगा कि निज
नगरको पहुँचजाओगे मैंने उसकी आज्ञाकी कुछदिनों में नारियल
बेंचकर बहुतसाधन इकट्ठाकिया और जहाज़ जिसपर मैं और दूसरे
इस नगरके ब्यापारी नारियल मोललेनेके वास्ते आये थे खुलगया
इसवास्ते मैं दूसरे जहाज़की बाट देखता था इतने में और जहाज़
वहांपर पहुँचा मैंने किरायाकर अपने नारियलोंको कि वहांपर नहीं
बेंचेथे उसपर लादे मैं उसी ब्यापारीसे कि मेरा उपकारीथा बिदाहो
सवारहुआ वहांसे हम उस टापूमें आये जहां कालीमिर्च उगती है
फिर वहांसे कमरीटापूमें गये जहां आबनूस और चन्दन उगता है
वहांके मनुष्य मदिरापीना अशुद्ध समझतेथे और सम्पूर्ण कुकर्मसे
अलगरहते उनदोनोंद्वीपोंमें मैंने अपनेनारियलों से कालीमिर्च और
चन्दन बदला और वहांपर अन्यब्यापारियोंके सम्मत से समुद्र से
मोती निकलवानेमें तत्परहुआ और बहुतसेगोतेखोरों को नियतकर
मोती निकलवाये ईश्वरकी पूर्णकृपा और मेरेभाग्यसे अन्यब्यापारियों
की अपेक्षा मेरीपारी में बहुतबड़े और गोलमोती निकले फिर वहां

से बांसराबन्दर को और वहां से बग़दादमें आया वहां मैंने काली-मिर्च और चन्दन और मोतियों को बड़ामहँगा बेंचा और बहुतसा लाभहुआ और उसका दशांश दान दिया फिर नानाप्रकार के आनन्द भोगनेलगा सिन्दबादने इस कथाको पूराकर ४००) रुपये हिन्दबादको देकर उसे और सम्पूर्ण सभाको बिदाकिया दूसरे दिन सब सिन्दबाद के घर आये और भोजनकर छठीं यात्राका वृत्तान्त सुननेलगे ॥

## सिन्दबादजहाज़ी की छठींयात्रा का वृत्तान्त ॥

सिन्दबादने अपनी सभा और हिन्दबादसे कहा कि तुम बिचारो कि कितनाधन परमेश्वरने मुझे दिया और कैसी आपत्तियां निवारणकीं कईबेर अगले सफ़रों में मैं मरनेको पहुँचा परन्तु अपनी भाग्यसे रक्षापूर्वकरहा जब मुझे वह दशा स्मरण होतीहै बहुत अचम्भाकर परमेश्वरका धन्यबाद करताहूं एक वर्षके पश्चात् फिर मैंने परदेश गमनकी इच्छाकी यद्यपि नातेदार और मित्र मेरे बाधकथे परन्तु मैंने उनका कहना न माना और खुश्की सफ़र किया फिर मैं कईपारसके नगरोंमेंगया और वहां से एक बन्दरमें पहुँचकर एक अच्छे जहाज़पर सवारहुआ जिसके कप्तानकी इच्छा बहुतदूर जानेकीथी जब बहुत दूरतक गये अकस्मात् कप्तान राह भूलगया वह नहीं जानताथा कि जहाज़ किसओरको जाताहै एकदिनकप्तान एक हीबेर अपनी पुस्तक फेंककर रोनेलगा और पगड़ी शिरसे उतारपटकदी और कभी दाढ़ीनोचता और शिरपीटना हम सबने भयमानहो उससे पूंछा कि तेरे रोनेका क्याकारणहै उसने कहा क्याकहतेहो हम बड़ी आपत्तिमेंपड़े क्योंकि नदकी धारा हमको बेबशखींचे लिये जाती है पावघड़ीके समयान्तरमें हम सब मरजावैंगे फिर उसने आज्ञादी कि जहाज़कीपालें उतार दीजावें उनके उतारते २ तूफ़ानके बेग से जहाज़की रस्सियांटूटगईं और जहाज़ने पहाड़सेलग ऐसी ठोकर खाई कि शीशेकेसमान चकनाचूर होगया हमने केवल इतना अवकाशपाया कि खानेकी बस्तु को धरतीपर उतारा और असबाब वहीं छोड़ा कप्ताननने कहा जो होनाथा सो हुआ अब एक दूसरेसे बिदाहो

अपनी २ क़बर खोदो और मरनेपर तत्पर रहो क्योंकि कोई इस मारकस्थानसे जीता नहीं बचा इसबचनको कप्तानसे सुन एक दूसरेके कण्ठसेलग अपनी अपनी अभाग्यतापर बहुत रोनेलगे उस पहाड़ के नीचे चारोंओर बहुतसे जहाज़ टूटेपड़ेथे और स्थान २ पर मनुष्योंके अस्थिकेढेर जहांतक कि दृष्टि पहुँचतीथी दिखाई देतेथे उन के देखनेसे बिदित हुआ कि हज़ारों जहाज़ी इस स्थानपर रहगये और मरगये और उस पहाड़के ऊपर नानाप्रकारके व्यापारकी बस्तु पड़ीहुईथीं उनके देखनेसे हम अधिक अपने प्राणसे निराशहुये उस स्थानपर कई बड़ीनदियां मिलकर एक खोहमें कि बहुतउत्तुंग और अँधेरीथीं बहतीथीं और उस पहाड़पर बिल्लौर और लाल और बहुमौल्य रत्नोंकी खानिथी और उस पहाड़से रालटपककर समुद्रमेंपड़तीथी मछलियां उसे निगलकर थोड़ी देरके पीछे उस रालको उगलतीं फिर वह राल बहकर तटपर आलगती वही ठीक अबरक है इसके बिशेष बहुतसे चन्दनके वृक्ष जैसे कि कमरी द्वीपमें देखे थे दिखाई दिये और उस नदी में उसी पहाड़के समीप ऐसा बड़ा भँवरथा कि दूरसे जहाज़ों को वहां खींचलाता सिवाय इसके उस नदी की धारा का ऐसा बेगथा कि जहाज़ को बचना वहां से अत्यन्त कठिनथा और सामनेकी प्रचण्ड बायु पहाड़की उँचाई के कारण जहाज़ को न लगती कि उस धारासे उसे बचाकर लेजाती निदान जहाज़ बेबश पहाड़के समीप पहुँच खण्ड २ होजाता उँचाई पहाड़ की इतनी थी कि मनुष्य और पशु उसपर न चढ़सक्ता कि दूसरी ओर निकलजावे हम सब उस पहाड़ के नीचे अपने प्राणसे निराश पड़ेथे और सब भोजन की बस्तु जो हम जहाज़से उतारलाये थे परस्पर बराबर भाग कर लिये और जो कोई हममें से मरता हम सब वहां उसको गाड़ते विशेषकर गाड़ते की सेवा मैं किया करता जो कुछ कि भोजन उसका बचता वह सब मुझको मिलता इस कारण मेरे निकट खानेकी बस्तु बहुत रहतीं निदान मेरे सब साथी कालबशहुये और मैंने सबको गाड़ा और पहिले अपने लिये क़बर को खोदरक्खा कि मृत्यु के समय मैं भी उसमें पड़रहूंगा और अ-

केले रहजाने से मैं ऐसा दुःखितहुआ कि जिसका बर्णन नहीं हो-सक्ता और अपने को सहस्रों धिक्कार देता था कि इतने दुःख उठाने परभी तुझे बोध न हुआ लोभबश फिर तूने सफ़र किया और अब ऐसी बलामें पड़ा कि छुटकारा कठिन है अब तू यहां मरके रहजावेगा और वह द्रव्य जो तूने अपने पांचसफ़र में कमाई है कौन खावेगा और तेरे किसकाम आवेगी निदान रात्रिदिवसइसी शोच बिचारमें रहताथा ईश्वरकी अनुग्रहसे एक दिन मैंने ध्यान-पूर्वक और बड़े बिचार से देखा और शोचा कि सब नदी मिलकर इस खोहमें जाती हैं बिश्वास होता है कि यह जल कहीं न कहीं बहकर निकला है और वहांसे होकर अन्यदेशों में बहा है निदान इन सबबातों को भलीभांति बिचार अपने मन में कहने लगा कि अब तो क़िसीभांति अपने को इस जल में डालिये यदि कुशल-पूर्वक किसी ओर को निकलगया तो बहुत उत्तमहै नहीं तो यहांही पड़ा रहजाऊंगा अब भी मरना फिर भी मरना इस बातको दृढ़ अपने चित्त में ठहरा जहाज़ के पाट और रस्सियां कि असंख्य वहां पड़ीथीं उठाकर एक छोटीसी डोंगी बनाई और बड़ी२ मणि, बिल्लौर, रत्न और धन आदि वस्तु सुनहली रुपहली उस समुद्र के तटपर लाय गठरियों में बांधीं और उस नावके दोनोंओर बराबर भारकर गठरियों को रक्खा और दो डांड़ ले उसपर चढ़ा और परमेश्वर पर भरोसारख उस नावको खोहके बहाव में छोड़ा और वहांसे उसे खेनेलगा अँधियारे में धारा बेबश बहाये लियेजाती थी कभी मैं उसेखेता और कभी थकितहोय सुस्ताने लगता कहीं वह कन्दरा बहुतऊंची थी और कहीं ऐसी नीचीथी कि छत उसकी मेरे शिर में लगती और शेष भोजन जो मैंने रखलियाथा क्योंकि यह न जानता था कि क्याहोगा और कहांजाऊंगा बहुत थोड़ा२ खाता अर्थात् इतना खाता कि जिसमें जीतारहूं निदान मुझे निद्रा ने ऐसा बेबश किया कि उसनावपर सोगया और इतनीदेरतक सोया कि जिसका प्रमाणनहीं फिर जब मैं जगा तो अपनीनावको निर्म्मल नदीके तटपर एक नगर के नीचे बँधी हुई पाई और अपनेचारों

तो बादशाह से बिनयकी अब मुझे बिदाकरो उसने मुझे अनेक प्रकारकी उत्तम २ वस्तु और द्रव्यदे बिदाकिया जब मैं वहांसे चलने लगा तो उसने एकपत्र और बहुतसी वहांकी बहुमोल्य बस्तु और सौगात देकर कहा कि इनको मेरीओर से अपने ख़लीफ़ा हारूंरशीद्को देना मैंने आनन्दपूर्वक उसपत्र और बस्तुको लेकर उससे यह प्रतिज्ञाकी कि मैं यह सब ख़लीफ़ा के सम्मुखलेजाय आपकी कृपा जो आपने मुझपरकीहै वर्णन करूंगा मेरे जहाज़पर चढ़ने के पहिले बादशाह ने कप्तान और व्यापारियों से जो उस जहाज़ पर थे मेरेवास्ते बहुत कुछ कहा इस मनुष्यको आनन्द और रक्षापूर्वक इसके नगरमें पहुँचना सरनद्वीपके बादशाहका पत्र ख़लीफ़ाहारूंरशीद्केनाम किसी पशुके चर्म्मपर लिखा हुआथा क्योंकि उसदेश में वह बहुमोल्य बिकताथा इसवास्ते बहुत अच्छा और अलभ्यथा उसचर्म्म का पीतरंग था और उसपर लाजवर्द से लिखा हुआ था उसका विषय हिन्दीभाषा में इसभांति लिखवाया ॥

यह पत्र हिन्द के बादशाह की ओर से जिसकी सवारीके आगे सहस्र मतंग का समूह होताहै उसने अपना बासस्थान ऐसा बनवाया जिसकी छतमें एकलक्ष दिव्यमणिजटित प्रकाशितहैं और अपनेकोषमें बीससहस्रहीरों से जटितमुकुट रखताहै ख़लीफ़ाहारूंरशीद्केनाम तुमको यहसौगात इसप्रकारसे भेजतेहैं जैसे भाईभाई वा मित्रमित्रों को सौगातकी तौरपर भेजतेहैं हम चाहते हैं कि तुम हमपर प्रसन्नरहो और अपना परममित्र समझो तुमको प्रणाम भेजतेहैं और तुम्हारी कुशल पूछते हैं अधिक शुभ ॥

उन सौगातों में से एक यहथी कि एक प्याला पौनगिरह के दलका था और मणिसे बनाहुआ था और उसके चारों ओर बहुतसी मोतियोंकी झालरैंथीं और प्रत्येकमोती उस का ३ माशेकाथा दूसरा यह था कि एक सर्प्पकीखाल कि सिफुना उसका रुपये से चौड़ाथा उसमें यह गुण था जो कोई उसपर सोवे वा लोटे कभी रोगी न होवे तीसरी सौगात महासुन्दर और दिव्यचंदन की लकड़ी लक्षमुद्राके मोलकी थी चौथीसौगात तीसदाने काफ़ूरके पिस्तेके बराबर

थे पांचवीं सौगात एकबांदी अतिरूपवान् छबिधाम जिसके दिव्य वस्त्रों में बहुमौल्य रत्नजटित थे तदनन्तर मेरी भाग्यसे वह जहाज़ कुशलपूर्व्वक तुरन्त बन्दरबांसराको पहुँचा और वहां से बग़दाद में आया सबकार्य्यों के प्रथम वह पत्र और सौगात बादशाह सरनद्वीपकी लेकर ख़लीफ़ा हारूंरशीदकी ड्योढ़ीपर पहुँचा और उस लौंड़ीको भी निजपरिवारसे रक्षितलेगया अपने पहुँचनेकाहाल बादशाहको कहलाभेजा बादशाहने मुझेबुलवाया ड्योढ़ीदार मुझे हाथोहाथ बादशाहके सम्मुखलेगये मैंने पृथ्वीचूंब बादशाहको सरनद्वीपकी सौगात और पत्रदिया जब उसने उसपत्रको पढ़ा मुझसे पूछा क्या वह शाहनशाह इतनाहीं बड़ाहै जैसा किवह अपने पत्रमें लिखताहै मैंने विनयकी कि हे शाहनशाह! उसने कुछ अशुद्ध नहीं लिखा मैं उसकी बड़ाई और प्रताप अपने नेत्रों से देखआयाहूं सब से अपूर्व्व और अद्भुत उसका मन्दिरहै जब वह सवार होता है मंत्री और सरदार हाथियोंपर सवारहो पंक्ति बांधकर चलतेहैं और उसके सिंहासनके आगे प्रधान सुनहलेबरछे हाथों में लियेहुये और एकमनुष्य पीछे सुबर्णकी मुर्छल लियेहुये हवाकरता है और उस मुर्छलकी चोटीमें एक आधीगिरहका लम्बा और पौनगिरह का चौड़ा नीलमणि चमकताहुआ दृष्टिआता है और एक सहस्र मनुष्य रेशमी और सुनहली आदि बस्तु पहिनेहुये हाथियों पर सवार रहते हैं और हाथियों की सामग्री और हौदे ऐसे बहुमौल्य हैं कि जिनका मैं बर्णन नहीं करसक्ता जब उसकाहाथी चलताहै तो एकसरदार हाथीकेआगे बड़े ऊंचे शब्दसे बेर२ यह कहाकरताहै कि यह बड़ा ऐश्वर्य्यवान् हिन्दुस्तान का बादशाहहै जिसके अतिबिचित्र और दिव्य मन्दिरमें लक्षमणि जटित हैं और इसके निकट बीससहस्र मुकुटहैं सब मुसलमान और हिन्दूराजा इससे पदवी में न्यूनहैं जब अगलासरदार यह कहचुकता है तो दूसरा सरदार जो सिंहासन के पीछेहोताहै यह पुकारके कहताहै कि इतनाबड़ा बादशाहहोनेपर भी यह अवश्यमरेगा फिर अगला कहताहै इसे आशीर्वाद दो कि यह सदा जीता रहै यह बादशाह ऐसान्यायी है कि जिसके नगरमें

कोई भी न्यायाधीश नहीं और कोतवाल नहीं उसकी प्रजामें ऐसा सम्मतहै कि कोई किसीपर अन्याय और दुःख नहीं पहुँचासक्का प्रीति और मित्रतापूर्व्वक निर्बाह करते हैं इस निमित्त न्यायाधीश आदिकी कुछ आवश्यकता नहीं बादशाहने यहसुन कहा तेरे कहने और पत्रसे जानपड़ताहै कि वह बादशाह बड़ा बुद्धिमान् और चतुर है और बुद्धिमानी यही है कि वह ऐसान्यायी कहलाताहै फिर खलीफ़ाने मुझे खिलअ़तदे बिदाकिया सिन्दबाद ने अपनी इतनी कथा कहकर ४००) रु० हिन्दबादकोदिये दूसरेदिवस उसके सभासद और सिन्दबाद भोजन के समयआये जब सब खाचुके सिन्दबादने अपने सातवें सफ़र का वृत्तान्त कि वह अन्त का सफ़र था कहना आरम्भ किया ॥

## सिन्दबाद जहाज़ी की सप्तम यात्रा का वृत्तान्त ॥

मित्रो! मैंने यह प्रतिज्ञाकी थी कि फिर कभी जलकी यात्रा न करूं और आयुभी मेरी इतनी बड़ीहोगई थी कि जिसमें मैं चाहता था कि कहीं न जाऊं और आनंदपूर्व्वक अपने घर बैठारहूं निदान आनन्द और सुखपूर्व्वक अपनेघररहनेलगा एकदिन अपने मित्रोंसहित भोजनकरता था कि अकस्मात् एकसेवकने आयकहा कि खलीफ़ा का सरदार तुमसे कुछ कहने को आयाहै मैं वहांसेउठ सरदार के निकट गया उसनेकहा ख़लीफ़ाने तुझेबुलाया है मैं तुरन्त ख़लीफ़ाके सम्मुख गया और प्रणामकर धरतीचूंबी ख़लीफ़ानेकहा सिन्दबाद मैं चाहता हूं कि सरनद्वीपके बादशाहको उनसौगातों के बदले मैं भी कुछ भेजूं और उसकेपत्रों का उत्तरभेजूंसो यहसौगातें मेरीओरसे उसेजाकर दे यह बादशाहकी आज्ञामुझे अत्यन्त दुःखदायीहुई मैंने बिनय की कि हे स्वामी! जो मुझे आज्ञाहोगी उसका उल्लंघन कभी न करूंगा परन्तु यात्राकी आपत्तियों से ऐसा दुःखित हुआ कि इससे अधिक मुझे यात्राकरने की शक्तिनहीं और मैंने प्रणकिया है कि फिर यात्रा की इच्छासे बग़दादसे न निकलूं और छःयात्राकी आपत्तियां कह सुनाईं ख़लीफ़ाने उनको सुनकर अत्यन्त आश्चर्य्य किया और कहा वास्तवमें ये वृत्तान्त जो तूने वर्णन किये अत्यन्त अद्भुत और अ-

चित्र सिन्दबाद जहाजी का तीर कमान से मेरे नेटना और एक हाथी का उसे खाद ॥



पूर्व्व हैं परन्तु एकबेर मेरे वास्ते सरन्द्वीप टापूतक जाना अवश्य है फिर तू यात्रा न कीजियो जब मैंने देखा कि खलीफ़ा इस में बहुत वादानुवाद करताहै मैंने निरुपायहो सरन्द्वीप जाना स्वीकार किया ॥ उसने मुझे ४०००) रु० राहका खर्च देकर कहा कि तुरन्त अपनी यात्राकी तय्यारी करो मैंने कई दिनके समयान्तरमें तय्यारीकी और खलीफ़ाके सन्मुख बिदाहोनेको गया उसने उत्तरपत्र अपने हाथ से लिखकर सौगातसहित मुझे दिया मैं लेकर बंदरबाँसराको गया वहां जहाज़पर चढ़ कुछकालमें उन बस्तुओं सहित कुशलपूर्वक सरन्द्वीप में पहुँचा वहांके सरदारों से मिल उनके द्वारा बादशाह को अपने आनेकी ख़बर कहलाभेजी फिर वह सब बादशाहकी आज्ञानुसार मुझे बादशाहके सन्मुख लेगये मैंने प्रणामकर तख्त के आगे की धरती चूंबी उस बादशाह ने मुझे देखतेही पहिचाना और अत्यन्त प्रसन्न हुआ और पूंछा कि सिंदबाद तू कुशल से है मैंने बिनय की कि मैं आपका सदैव स्मरण करता था आजका दिन बहुत उत्तमहै कि मैंने आपके दर्शनकिये फिर मैंने उसकी बहुतसी स्तुति और प्रशंसा कर खलीफ़ाकी सौगात और पत्रको दिया उसने उसको बड़े हर्ष से लिया खलीफ़ा ने ४०००) रु० की तय्यारी का फ़र्श किरमिज़ीरंग का जिसपर अच्छा काम कियाहुआ था और एकप्याला माणिकका कि एक अँगुली के बराबर मोटा और उसके किनारेपर एक मनुष्य का चित्र इस भांति खुदाथा कि अपने ऊरूपर धनुष और शर चला कर सिंहको मारताहै भेजा था और इसके विशेष एक बहुमौल्य हज़रत सुलेमानका तख्तथा और उस पत्रमें यह विषय लिखाथा ॥

## खलीफ़ाके पत्रका विषय ॥

अब्दुल्लाहारूंरशीदकी ओरसे जो परमेश्वरकी पूर्णकृपासे अपने गुरुजनों का युवराज है प्रणामपहुँचै तुम्हारापत्र सौगातों सहित पहुँचा अब हम प्रसन्नतासे उसकाउत्तर सौगातोंसहित भेजते हैं निश्चयहै कि वहपत्र तुम्हारीशरणमें पहुँचेगा जिसके आशयसे प्रीति काहाल जो हमको तुमसेहै विदितहोगा सरन्द्वीप का बादशाह यहपढ़ अत्यन्त हर्षितहुआ फिर मैंने बिदामांगी वह कृपाके कारण शीघ्र

बिदा न करताथा निदान बड़े बिनयके पश्चात् उसने मुझे खिलअत आदिपारितोषिकदे बिदाकिया मैं जहाज़पर चढ़ सीधा बुग़दादको चला परन्तु और कष्टमेरे भाग्यमें लिखाथा क्योंकि बुग़दादमें जैसाकि शीघ्रमैं परमेश्वरसे पहुँचना चाहताथा न पहुँचसका वहांसेचले तीन वा चारदिवस ब्यतीतहुये होंगे कि एकाएक हमें लुटेरोंने आयघेर लिया हम उनसे सामना न करसके निदान उन्होंने हमारा जहाज़ लूट लिया और हमसबको पकड़के अपनागुलाम किया और जिन मनुष्योंने उनकासामना किया वहसब उनके हाथसेमारेगये फिर उन्हों ने हमारे बस्त्रउतार हमैं नग्नकर एकजोड़ा गजीका जैसाकि गुलामों को पहिनाते हैं दिया और बड़ीदूरके टापूमें लेजाय हम सबको बेंच डाला मुझेएक बड़ेधनाढ्य ब्यापारीने मोललिया और अपनेघर लेजाय सेवकोंके समान बस्त्रपहिनाये और खानेकोदिया वह धनाढ्य मेरेहालको क्या जानताथा एक दिन पूंछने लगा कि तुझे कुछकार्य्य आताहै मैं उत्तर दिया मैं ब्यापारियों का काम करताथा लुटेरों ने मुझे और मेरे साथियों को बस्तुसहित लूटलिया और सबको गुलामबनाकर बेंचडाला फिर उस ब्यापारी ने कहा तुझे तीर चलाना आता है मैंने कहा बाल्यावस्था में मुझे निस्सन्देह तीर चलाने का अभ्यास था और वह अबतक नहीं भूला ब्यापारी ने यह बचन सुन मुझे शर धनुष दे अपने साथ हाथीपर सवार किया और एक बड़े बनमें कि नगर से कई दिनकी राह परथा लेगया और बहुतदूर उस बनमेंजाय एकस्थान पर उतारा और एकबड़ा वृक्ष दिखाय कहा कि तू इसपर चढ़के बैठ और जो हाथी इधरसे जावे उसको तू बाणसे मारियो इस बनमें बहुतसे हाथी हैं यदि कोई मतंग तुझसे माराजावे तो मुझसेआय कहियो यहकह उसनेमुझे खानेको दिया और नगरकी ओर चलागया मैं उस वृक्षपरचढ़ रात भर देखतारहा परन्तु कोई हाथी मेरीदृष्टि न पड़ा दूसरे दिवस भोर को सूर्य्य उदयहोनेके समय बहुतसेहाथी वहांआये मैंने बहुत तीर उनकोमारे निदान एकहाथी घायलहोकर गिरा और शेष भागगये मैं उसबनको खालीपाकर नगरमें गया और उस ब्यापारी से कहा कि

एकहाथी मेरेहाथ से घायलहो गिराहै यहसुन वह मुझ से अत्यन्त प्रसन्नहुआ मुझको नानाप्रकार के भोजन प्रीतिपूर्वक खिलाये और मेरी बहुत प्रशंसाकी द्वितीय दिवस फिर हम दोनों उसी बनमेंगये मैंने उस हाथीको खोदकर गाड़दिया उस व्यापारी ने कहा जब यह मृतकहाथी पृथ्वी में सड़जावे तो दांत उसके निकालकर लेआइयो उससे बहुत लाभ होगा फिर दोमासतक मैं यहीकाम करतारहा एक हाथीको तीरसे मारता और उसके दांत निकालकर व्यापारीको देता कभी उस बृक्षसे उतरता और कभी किसी आवश्यकता से उसपर चढ़ता एकदिन भोरको मैं बृक्षपर चढ़ाहुआ था कि अकस्मात् एक हाथियोंका समूह उस बनमें आया और उसवृक्षको चारोंओरसे घेर बड़े भयानक शब्दसे चिल्लानेलगे उनकी आधिक्यता से वहां की धरती छिपगई और उनके पांवकी धमक से धरती हिलनेलगी वह मुझे देख अपनी शुंड उस वृक्षकी जड़में लपेट खींचनेलगे और उखाड़नेकी इच्छाकरते थे यह हाल देखमैं भयभीत हुआ और ऐसा डरा कि शर धनुष हाथसे धरतीपर गिरपड़ा मैं अपने जीवनसे निराशहो उस वृक्षकी टहनियों में लिपटरहा यहांतक कि बड़े हाथीने आकर अपनी शुण्डको उस वृक्षमें लपेट ऐसा बलकिया कि उसवृक्ष को जड़से उखाड़ पृथ्वीपरडालदिया जब मैं उसतरुकेसाथ धरतीपर आ गिरा तब उस बड़े हाथीने मुझेउठाय अपनी पृष्ठपर बैठालिया मैं भययुक्त मृतकों के समान उसकी पीठपर पड़गया फिर वह बड़ा हाथी सबके आगेहुआ और सब हाथी उसके पीछे पंक्तिबांधके चले चलते २ मुझे एक घरमें लेगये और अपनी पीठसे उतार बैठाया और वहांसे सब हाथियों सहित वह चलागया मैं बड़ीदेरतक वहां बैठारहा जब मैंने देखा कि वहां कोई भी हाथी नहींहै तब मैं धैर्य्य धरकरउठा इतनेमें एकबड़ा चौंड़ागढ़ा हाथियोंके अस्थि और दांतों से भराहुआ दृष्टिपड़ा मैंने अपने मनमें शोचा और अचम्भा किया कि यह हाथी बड़ेबुद्धिमान् हैं जब उन्हें यह सूचितहुआ कि केवल मैं दांतोंके हेतु उनको मारताहूं इसलिये उन्होंने मुझको एक गढ़ेपर लाय दिखलाया कि यह बहुतसे दांतहैं जितने चाहे ले और हमारे

मारनेकी इच्छा न कर परन्तु मैं वहां अधिक न ठहरा और नगर की ओर चला एकरात दिनमें अपने स्वामी के निकटजाय पहुँचा मार्गमें कहीं हाथी दृष्टि न पड़े इससे सूचितहुआ कि वह मुझे उस गढ़ेपर छोड़कर और किसी बनमें चलेगये कि दांतभी मैं लेलूं और आगेको उन्हें दुःख न पहुँचाऊं निदान जब मेरेस्वामी ने मुझे दूरसे देखा प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे कहनेलगा कि हे दीन सिन्दबाद! तू कहांथा मैं तेरेलिये बहुत शोचयुक्तहूं तुझे ढूंढताहुआ उस बन में गया वहां जाय उस वृक्षपर जहां तू रहाकरता था देखा कि मूलसे उखड़ापड़ाहै और तेरा शरधनुष पृथ्वीपर पड़ादेखा तुझे बहुतढूंढ़ा कहीं न पाया तुझसे निराशहोकर बैठरहा अब तू अपना वृत्तान्त कह कि तुझपर क्याहुआ और क्योंकर अबतक जीताबचा मैंने सब हाल अपना वर्णन किया यह व्यापारी उस गढ़े का हालसुन प्रसन्नहुआ और मेरेसाथ वहां जाकर हाथी दांत जितने कि उठा सका अपने हाथीपर लादलाया और मुझ से कहा भाई आज से तू मेरा गुलाम नहीं तूने मेरा बड़ा उपकार किया अब मैं बहुत धनाढ्यहोजाऊंगा परमेश्वर तुझे खुशरक्खे मैंने अबतक तुझसे इस विषयको गुप्तरक्खा था वह यहहै कि हाथियोंने उस बनमें मेरेबहुत गुलाम जो हाथीदांतके प्राप्तकरने के हेतु जातेथे मारे कोई तो तुरन्त और कोई दो तीन दिवस के पश्चात् उन हाथियों से मारेगये परन्तु परमेश्वरने तेरीरक्षाकी और तुझपर कृपा और दयाकी इससे बिदितहुआ कि तेरी आयु बड़ी होगी और आनन्दपूर्वक तू इस संसारमें रहेगा इससे पहिले मैं बहुतसे मनुष्योंके मरनेपरभी लाभवान् नहीं होताथा और मेरेबहुतसे आदमी उसकी ढूंढ़में कालबश हुये अब तेरेद्वारा मैं और इसनगरके सम्पूर्ण मनुष्य हाथीदांतकी खानि के पानेके कारण धनाढ्य और द्रव्ययुक्त होजावेंगे तू इतनाही न बिचारियो कि तेरा छुटकारा करूंगा किन्तु तेरेसाथ बड़ाउपकार करूंगा और इस नगरके बासियोंसे भी तुझेकुछ दिलादूंगा मैंनेयह सुन उससेकहा ईश्वरतुम्हें जीतारक्खे और तुम्हाराजीवन सुफलकरे कि तुमनेमुझे छुड़ादिया मैं इस विषयमें तुम्हाराकृतज्ञहूं मैं वास्तवमें

वहांरहने से प्रसन्नथा। कि इस नगर में तुमनेमुझे मोललिया अब मैं तुम्हारी और पुरबासियों की कृपासे आशा रखताहूं कि मुझे बिदा करो यहसुन उसब्यापारीने कहा तू धैर्य्यरख जहाजों के आनेकीऋतु में कि वह हाथीदांत लादने को आवैंगे हम तुझे बहुतसा खर्चदे उन पर चढ़ा तेरेनगरकी ओर बिदाकरेंगे मैं उसका अधिक कृतज्ञहुआ और आशीर्ब्बाद देनेलगा फिरमैं उस नगरमें जहाजआनेकी बाट देखतारहा और उसके घरमें रहनेलगा इस समयान्तर में मैंने कई बेर बनमेंजाय उस गढ़ेसे हाथीदांतलाय उसकाघर भरदिया जब उस ब्यापारी को हाथीदांतों से अत्यन्त लाभहुआ उसने और ब्यापारियोंको भी उसकी खबरदी वह भी जाय अपनी इच्छानुसार हाथीदांत उठालाये यहांतक कि जहाजके आनेकीऋतु आपहुँची और बहुत ओर के जहाज उस नगरमें आये मेरे स्वामीने जहाजपर मुझेचढ़ा जितने कि हाथीदांत उसके घरथे अर्द्धभाग मुझे दिये और मेरेनाम से उनको जहाजपरलादे और खानेपीनेकी बहुतसी बस्तु मेरेसाथ करदी और उसदेशकी बहुतसी सौगात और उत्तम २ बस्तुदे बिदा किया सो मैं इस कृपासे अधिक उसका कृतज्ञहुआ और जहाजपर उस नगरसेचला और अपनेमनमें उसब्यापारीके उपकारको न भूला मार्गमेंकईद्वीपोंसे होतेहुये तेरेसरंद्वीपमें पहुँचा वहांसे खुश्कीके रास्ते बाँसराबन्दरको पहुँचा और मार्गमें हाथीदांत बेंचकर देशों २ की बस्तु मोललली और ब्यापारियोंके समूहके साथ बहुतदिवसके पश्चात् बुग़दादनगर में पहुँचा यद्यपि मैंने खुश्की की यात्रामें बहुतसे दुःख और आपत्तियाँ उठाईं परन्तु तूफ़ान और लुटेरों और सर्पआदिसे रक्षापूर्व्वक रहा और नगर बुग़दाद में पहुँचतेही पहिले खलीफ़ाके सन्मुखगया और सम्पूर्ण वृत्तान्तपत्र और सौगातों के पहुँचानेका बादशाह सरन्द्वीप से प्रकटकिया खलीफ़ाने सुन कहा मुझे सदैव तेरे ओर ध्यानरहताथा और तेरेवास्ते परमेश्वरसे प्रार्थनाकरताथा कि तुझे कुशलपूर्व्वक यहां पहुँचावे जबमैंने उनहाथियोंकाहाल कहा उसने अत्यन्त आश्चर्य किया और इस यात्राको भी अद्भुतसमझ एक लेखकको आज्ञादी कि मेरे वृत्तान्तको सुवर्णके बर्णों में लिख मेरे

कोषमें रक्खे फिर उसने पारितोषिक खिलअत आदिदे बिदा किया हे मित्रो ! मैं तबसे अपने परिवारमें रहनेलगा सिन्दबादने अपनी अन्तिमयात्राका वृत्तान्तकह हिन्दबादसे कहा कि मित्र तूने ऐसा किसीको सुनाहै जैसी आपत्ति और दुःख मैंने उठाये हैं और संकट झेल आनन्द उठायाहो हिन्दबादने यह बचनसुन उसके हाथचूंबे और कहा सचतो यहहै कि जितना तुमने इन सातयात्राओंमें परिश्रमकर अपने प्राणपरखेलाहै किसी मनुष्यमें शक्तिनहीं कि करसके तुम्हारे इनकष्टों से जो तुमने उठाये हैं मुझे भलीभांति धैर्य्य हुआ अब मैं इस निर्द्धनताको उत्तमजानताहूं यद्यपि मुझे इतने परिश्रमसे केवलसूखीरोटी प्राप्तहोती हैं परन्तु अपने स्त्रीपुत्रोंमें रहकर उनकष्टों और बिपत्तियों से जो तुमने बर्णनकीं बचकर जन्मकाटताहूं वह आनन्द कि तुमभोगतेहो उस परिश्रम की अपेक्षा कुछ नहीं किन्तु तुम अधिक आनन्द करने के योग्यहो परमेश्वर तुम्हें इसीभांति सदैव खुश और आनन्दमेंरक्खे मेरीसमझ अशुद्धथी जो मैंने संसार की दशाका बर्णनकिया वहभीझूठहै फिर सिंदबादने ४०० )रु० हिन्दबादको देकरकहा अबतुम मज़दूरीकरना त्यागदो और मेरे सभासदरहो मैं तुम्हारे स्त्री पुत्रोंकी पालन अपनी आयुपर्य्यंत करूंगा सो हिन्दबादने शेषआयु सिन्दबाद की सभा में रह आनन्दपूर्व्वक ब्यतीत की ॥ सिन्दबाद जहाज़ीकी यात्रा सम्पूर्ण हुई ।

## एकस्त्री और तीनसेवकों की कहानी ॥

शहरज़ादरानीने बादशाह शहरयारसे बिनयकी कि उक्तख़लीफ़ा हारूंरशीद बहुधारात्रि को अकेला भेषबदलकर बग़दादनगर में फिराकरता सो उसने एकदिन जाफ़रमंत्री को आज्ञादी कि आज की रैन मैं इसनगरी में फिरूंगा जिससे बिदितहो कि मेरी प्रजाका क्याहालहै और थानेदार किसप्रकार नगरकी रक्षाकरते हैंयदि उनको अचेत पाऊंगा तो उन्हें छुड़ाकर दूसरों को नियतकरूंगा और यदि अपने आधीनीकार्य्यपर तत्पर पाऊंगा तो उन्हें पारितोषिक दूंगा जाफ़रमंत्री अपने स्वामी की आज्ञानुसार नियत समयपर आया ख़लीफ़ामंत्री और खोजियों के दारोगा मसरूर को अपने

साथले नगरकी ओरगया तीनोंने अपना ऐसाभेष किया कि जाने न जातेथे फिर कईबाजारों और गलियोंसे होतेहुये एकसूक्ष्मगली में पहुँचे वहां उन्होंने चन्द्रमाके प्रकाशमें एकबड़ेडील और श्वेत दाढ़ीके पुरुषको देखा कि जाल शिरपर और नारियलके पत्तोंका टोकरा कांधेपर धरे लाठी टेकता टेकता चलाजाता है ख़लीफ़ानेकहा यहमनुष्य बहुतनिर्धन जानपड़ता है इससे उसका बृत्तान्त चलके पूंछिये मंत्रीने आगेबढ़केपूंछा तू कौनहै उसने उत्तरदिया स्वामी मैं धीमरहूं इससमय मैं अत्यन्तपीड़ितहूं आज मध्याह्नसमय मैं मछलियां पकड़नेगया तबसे इससमय पर्य्यन्त एकमत्स्यभी मेरेहाथ न लगा खाली मैं अपने गृहको फिराजाताहूं एकस्त्री और कईछोटे २ पुत्रहैं मैं अत्यन्त बिस्मितहूं कि आज कहांसे उन्हेंभोजनदूंगा ख़लीफ़ाको उसपरदयाउपजी और उससे कहा नदीपर फिर चल एक बेर तू जालडार कुछनिकले वा न निकले परन्तु ४००) रु० तुझे मिलेंगे वह धीमर इस बचनकोसुन अपने दिनभरेका बृत्तान्त भूल गया ख़लीफ़ाके बचनपर बिश्वासकर उनतीनोंसहित टकरस नदी के किनारे पर जाकर जालखोला और अपने मनमें शोचनेलगा कि यह तीनों मनुष्य अत्यन्त बुद्धिमान् और भलेमनुष्य जानपड़ते हैं मुझसे असत्य न कहेंगे बिश्वास है अपने प्रणको पूरा करें और मुझे एकरुपयाभी बहुत है उन्होंने ४००) रु०केदेनेका प्रणकियाहै यह बिचार उसने अपनाजाल उसनदीमें डाला कुछकालके पश्चात् उस को खींचा अकस्मात् उसजालमेंएकसन्दूक़बन्द बहुत भारी निकला ख़लीफ़ाने धीमरको मंत्रीसे ४००) रु० दिलवा तुरन्त बिदा किया और मसरूर अपनेस्वामीकी आज्ञानुसार उस सन्दूक़ को अपने कन्धेपर रखलेचला ख़लीफ़ाको अत्यन्त लालसाहुई कि उसेखोल करदेखें कि उसमें कौनसीबस्तुहै तुरन्त उसे निजभवनमें लेगया वहां पहुँच उस संदूक़कोखोला उसमेंकोईबस्तु नारियलकी चटाईमें लाल डोरेसे सीहुई देखी ख़लीफ़ाकी शीघ्रताके कारण उन्हें टांके खोलने का अवकाश न मिला छुरीसे उन टांकों को खोला उसचटाई के भीतर से एक कोईबस्तु पुरानेबस्त्र में लपेटी हुई थी और उसपर एक

रस्सी बँधीहुई थी जब उसको खोला तो देखकर अत्यन्त आश्चर्यितहुआ उस वस्त्रमें एकस्त्रीकी लोथ जो बरफ़सेभी अधिक श्वेत थी टुकड़े २ हुई देखी खलीफ़ा उसेदेख अत्यन्त क्रोधितहुआ और मंत्रीसे कहनेलगा तू ऐसेही मेरी प्रजाकी रक्षाकरता है तेरेअधिकारमें ऐसे अन्यायी और दुष्टमनुष्यहैं जो मेरी प्रजाको इस निर्दयतासे मारकर नदीमें डालते हैं बड़ा आश्चर्य्य है प्रलयमें मैं इसका क्या उत्तरदूंगा यदि तू इसके बध करनेवालेको न लावेगा तो मैं सौगन्दखाकर कहताहूं इसखूनी के बदले तुझे और तेरेघराने के चालीसमनुष्यों को फांसी देकर मरवाडालूंगा मंत्री ने बिनय की हे स्वामी! इससेवकको कुछसावकाशमिले तो इस स्त्रीके मारनेवालेको ढूंढ़लावे खलीफ़ाने आज्ञाकी कि तीनदिनका सावकाश दियाजाता है इस समयान्तर में उसेढूंढ़ला जाफ़रमंत्री शोकयुक्त अपने गृह में आया और मनमें कहनेलगा कि इतने बड़े और बसेहुये नगर में मरनेवाले का मिलना अतिकठिन है और जो उसे मैंने पायाभी तो साक्षियों को कहांसे पाऊंगा और बिश्वास है कि इसका हिंसक कब काकब इसनगरसे चलागयाहोगा और जो अपनेछुटकारेको किसी अन्य हिंसक अपराधी को जो बंदीखानेमें कैदहो खलीफ़ाके सन्मुख लाके उसे उस स्त्रीका हिंसक प्रकटकरूं तो हो सक्ताहै परन्तु मेरामन नहीं चाहता कि ऐसाबुराकामकरूं और दूसरेमनुष्यका अपराध दूसरेपररक्खूं फिर उसने थानेदारों और सिपाहियोंको आज्ञादी कि उस स्त्रीके हिंसकको तीनदिनके समयान्तर में तुरन्त ढूंढ़केलावें जो न लायेंगे तो मेरेप्राण जावेंगे वह सब और मंत्री अपने प्राणके डरसे नगरके चारोंओर गये और घर २ उस हिंसकको ढूंढ़ने लगे बहुत ढूंढ़नेपरभी कहींउसकापता न लगा यहांतक कि तीनदिवस ब्यतीत हुये और बधिकमंत्रीको खलीफ़ाके निकट पकड़केलेगये खलीफ़ाने उससे पूंछा क्यों तू हिंसकपकड़लाया मंत्रीने रुदन करकहा हे स्वामी! बहुत ढूंढ़नेपरभी अबतक उसका ठिकाना नहींमिला खलीफ़ाने क्रोधितहोय आज्ञाकी कि राजमंत्री और उसके घराने के चालीस मनुष्योंको लेजा मेरे दरवाजेपर गर्दन मारो यह खलीफ़ाका हुक्म

पातेही तुरन्त इकतालीस लकड़ियां फांसियों की खड़ी होगईं और चालीस मनुष्य उसके कुटुम्बके पकड़आये और सारेनगरमें ढिंढोरा पिटने लगा कि खलीफ़ा की आज्ञानुसार जाफ़र मन्त्री और उसके चालीस नातेदार फांसीदिये जातेहैं जिसे देखना स्वीकारहो आकर देखे एक क्षणमें यह बात सम्पूर्ण नगर में विख्यातहोगई कि इस कारण मन्त्री माराजाता है फिर मन्त्रीको चालीसों नातेदारों समेत फांसी के नीचे बैठाया और उनकी गर्दनोंमे रस्सियां डालीं इतनेमें बहुत मनुष्य वहां इकट्ठे होगये और बुग़दादके बासी जो मन्त्रीकी शीलताके कारण बहुत प्रीति रखते थे इस दशा में उसे देख रुदन करनेलगे किन्तु सम्पूर्ण राज्यके मनुष्य उस मन्त्री के न्यायसे अत्यन्तकृतज्ञ और प्रसन्नथे परन्तु कोई खलीफ़ा को इस आज्ञाके देने से बर्ज न सक्ता निदान बधिक चाहते थे कि उन चालीसों मनुष्यों को फाँसीदें इतने में एक तरुण रूपवान् पुरुष भीड़को फाड़ चीर तुरन्त जाफ़र मन्त्रीके निकट पहुँचा और उसके हाथको चूम कहाकि उस स्त्रीका हिंसक मैंहूं मैंनेही उसेमाराहै यद्यपि मन्त्रीउस मनुष्यका बचनसुन कुछ प्रसन्नहुआ परन्तु उसकी तरुणावस्थापर बहुत कुढ़ा और पश्चात्ताप किया और उससे पूंछरहाथा कि एक बड़े डील के बृद्ध मनुष्यने आके मन्त्री से कहा जो कुछ कि यह मनुष्य कहताहै सब असत्यहै किन्तु मैंने उसस्त्रीको जो उस संदूकमें है माराहै मैंहीं दण्डके योग्यहूं यह मनुष्य निर्दोष है यहकह उस बृद्ध ने तरुण के सम्मुखहो कहा कि हे पुत्र ! तू क्यों घबराकर कुटुम्बियों के मारने का इक़रार करताहै और क्यों इस बधागारमें आया मैं तो बहुत इससंसारमें रहाहूं मुझे अपने पलटे माराजानेदे उस तरुण मनुष्यने मन्त्री से कहा यह बृद्ध झूठ कहताहै उसका मारनेवाला मैंहीहूं वह मन्त्री उनदोनोंके बादानुबादको सुन अत्यन्तबिस्मित हुआ और खलीफ़ा के सम्मुख लेगया और विनयकी कि हे स्वामी ! ये दोनों उस स्त्री के मारने का इक़रार करतेहैं उनदोनों ने खलीफ़ाके सम्मुख भी यही कहा खलीफ़ा ने यह सुन आज्ञादी कि मन्त्री आदिको छोड़दो और इनदोनों को मारो मन्त्री ने छूटकर खलीफ़ा से विनयकी कि हे स्वामी!

दो का मारना एक हिंसाके बदले न्यायके बिरुद्ध है इतने में तरुण ने सौगन्दखाकर कहा कि इसस्त्रीको मैंनेमाराहै चारदिन ब्यतीतहुये कि मैंने इसे बधकर और संदूकमें बंदकर नदी में डालदियाथा जो मैं इसबातको असत्य कहताहूं तो प्रलयमें अन्धा और कालामुख होके उठूं खलीफ़ाको इसबचन के कहने से बिश्वासहुआ कि स्त्रीका मारनेवाला यही है और बृद्धमनुष्य भी चुपहोरहा और कुछ न बोला खलीफा ने जवान से पूंछा कि तूने क्यों इस निर्दयता से उसस्त्रीको मारा और अब क्यों आपही उसके बदले मरनेको आया और तूने कुछ भी परमेश्वरका और मेरा भय न किया तरुण मनुष्य ने कहा हे स्वामी! जो कुछ मुझ और उस स्त्रीमें हुआ वह सब लिखाजावे कि जिस से सांसारिक मनुष्यों को उपदेश और बोधहो यदि आज्ञाहो तो मैं उसबृत्तांतको प्रकटकरूं खलीफ़ाने कहा अच्छा कह फिर उस तरुण मनुष्यने अपने और उस स्त्रीके बृत्तान्तको इसभांति बर्णन करना आरम्भ किया ॥

## उस मनुष्य और मरीहुई स्त्रीकी कहानी ॥

मनुष्यने कहा कि हे स्वामी! यह मृतक स्त्री मेरी स्त्री और इस बृद्ध मनुष्यकी पुत्रीथी यह बृद्ध मेरा चचाहै अभी यह द्वादशबर्षकी न हुई थी कि इसबृद्धने इसका मेरेसाथ बिवाह करदिया ११ बर्ष बिवाहको ब्यतीतहुयेहैं कि तीनपुत्र इससे उत्पन्नहुये सो वह तीनोंपुत्र अबतक जीतेहैं यह स्त्री अत्यन्त पतिब्रता और मेरी आज्ञापालक और सदैव मेरी प्रसन्नतापर हर्षित रहतीथी और मैं भी उससे अत्यन्त प्रीति रखताथा और प्रत्येक समय मनोरथ उसका पूराकरताथा एकमास ब्यतीतहुआ कि वह रोगयुक्तहुई मैंने यथोचित उसकी औषध की फिर वह अच्छीहोगई स्नानके निमित्त स्नानागारमें जानेकी इच्छाकी अपने जानेके पहले उसने मुझसेकहा मेराजी सेबखानेको चाहताहै कहींसे ढूंढ़के उसेला यदि सेब न मिला तो फिर मैं रोगी होजाऊंगी मैंने कहा हे सुन्दरी! धीर्यरख जिसभांति होसकेगा तेरेवास्ते ढूंढ़लाऊंगा यहबचन उससेकह मैं तुरन्त बाजारकोगया और सम्पूर्ण फल बेचनेवालों की दूकानपर ढूंढ़नेलगा और एक सेबके बदले ४)रु०

तक ढूंढ़नेलगा तौभी मुझे एकसेब हाथ न लगा निदान मैं घरआया जबयह सुन्दरी स्नानकर घरआई और उसने सेबको न पाया अत्यन्तशोकयुक्तहुई और रातभर उसे निद्रा न आई उसके शोकयुक्तहोने से मुझे शोकहुआ भोरको उसे इसीदशामें देख नगरकेबागोंमें जाय ढूंढ़ा वहांभी कहीं न पाया एकवृद्ध मालीने कहा इनदिनों बादशाही बागों के सिवाय जो बांसरानगरमें हैं कहीं सेब तुमको न मिलेगा मैंने बांसराको जानेकी इच्छाकी और इतनीदूरकीयात्रा स्वीकारकी वहां पहुँचा और ढूंढ़तेढूंढ़ते तीन सेब चारचार रुपये देकरमोललिये और दो सप्ताह के समयान्तर में अपने घरआया औरवह तीनों सेब अपनी पत्नी को दिये वहदेख प्रसन्नहुई और उनको सूंघनेलगी और अपनी शय्या के नीचे अपनेसमीप रखदिये और निर्बलता के कारण उसीभांति लेटीरही मैं अपनी दूकानपर कि चौककेबजाजेमेंथी जाय बैठा थोड़ीदेर में मैंने एकगुलाम हब्शीको कि बड़ेडीलकाथा क्या देखा कि वहदूकानके आगेसे एकसेब हाथमें लियेहुये उछालताजाताहै मैंने उससेबको पहिचाना कि यहतो उन्हीं सेबोंमेंसेहै जिनको मैं बन्दरबांसरा से लायाथा नहींतो इनदिनों अऋतुमें इसहब्शीने कहां पाया मुझेभलीभांति बिदितथा कि बग़दादनगर में कहीं सेबकानाम भीनहीं तो उस सेबको हब्शीके हाथ में देख ऐसी डाह उपजी कि अधीर होगया निदान उसहब्शी से बुलाकर पूंछा कि तूने इस सेबको कहांसेपाया उसनेमुस्कराय उत्तरदिया कि यह सौगात मेरीप्यारीकी है आज मैं उसेदेखने कोगयाथा उसके निकट तीनसेबथे मैंने उससे पूंछा कि यहसेब कहांसे आये उसनेकहा मेराभर्त्ता दोसप्ताहकीयात्रा करइन्हें मेरेवास्ते लायाहै फिर मैंने और उससुन्दरीने मिलके भोजन किया और बिदाहोते मैंने एकसेब वहांसे उठालिया इसबार्त्ता को हब्शीसेसुन मेरी सुधि जातीरही तुरन्त अपनी दूकानबन्दकर घर आया और अपनी स्त्रीके निकट जाय देखा केवल दोहीसेब उसके निकट रक्खेहुये थे मैंने उससे पूंछा तीसरा सेब क्याहुआ उस स्त्रीने अपने मुखको फेर उसओरको दृष्टिकी जहां वहतीनों सेबरक्खेथे दोही सेबको देख बेपरवाही से उत्तरदिया मैं नहीं जानती कि तीसरा सेब

यहांसे क्याहुआ इसभांति के उत्तरदेनेसे मुझेसूचितहुआ कि हब्शी ने सत्यकहा है इस विषयके समझनेही में लज्जा और क्रोधमें ऐसा बेबशहुआ कि छुरीनिकाल उसकेकण्ठमें फेर उसके शिरकोकाटलिया और उसके शरीरके चारखण्ड कर बस्त्रमें बांधके चटाई में लपेट ऊपर लालडोरेसेबांध रात्रिकेसमय उसे सन्दूकमें रख टिकरस नदी परलेगया और गहरेजलमें डूबोदिया घरमें आय देखा कि दो छोटे पुत्र मेरे सोतेहैं और बड़ा लड़का घरसेबाहर दरवाज़ेपर बैठा रोरहा है मैंने उससे पूंछा तू क्यों रोताहै उसने उत्तर दिया मैं भोरके समय एकसेबको कि उन तीनों सेबों में से जिनको तुम मेरी माताके वास्ते लाये थे बे पूंछे उठालाया और चिरकालपर्य्यन्त अपने छोटे भाइयों के साथ खेलतारहा एकगुलाम हब्शी कि उधरको जाताथा सेबको मेरेहाथसे छीनके लेभागा मैं उसके पीछे दौड़ा कितनाही सेबको मांगा और रुदनकर कहा कि मेरापिता दोसप्ताहकी यात्रा कर मेरी रोगी माताके वास्ते लाया है परन्तु उसने मुझे न दिया तब दौड़कर उसके पीछे गया उस गुलाम ने मुझे फिर कर मारा और तुरन्त दूसरे मार्गहो भागगया और मेरी दृष्टिसे गुप्त होगया तब से इस समय पर्य्यंत उसके ढूंढ़ने में फिरताथा अभी थकित होय दरवाजे पर बैठा था कि तुमको उधर से आते देखा और तुम्हारे भयसे रोनेलगा हे पिता ! सेबके खोजानेके कारण मेरीमाता को कुछ न कहना फिर मेरा पुत्र फूट२ कर रोनेलगा उसका बचन सुन मेरी ऐसीदशाहुई जिसका वर्णन नहीं होसक्ता बहुतकाल पर्यंत मूर्च्छाबश रहा जब चैतन्यहुआ अपनेको बुरा भला और धिक्कारें देनेलगा कि हे भाग्यहीन ! तूने ऐसी अपनी प्यारी और पतिब्रतास्त्री को निर्दोषमारा और उसदुष्टगुलाम के झूठेबचन सुन जो मुझसे छलकरके कहे थे सत्यजानकर इतनाक्रोध किया इसीरंज और शोकमें बैठा पश्चात्ताप करताथा कि मेरा चचा अपनी पुत्रीको देखनेको आया मैंने उससे इसवृत्तांतको प्रकटकिया वहभी मुझे कुछ कहने सुनने वा उसके मरने के बादानुबाद बिना मेरेसाथ रोनेपीटनेलगा तीन दिन पर्यंत मैंने और उसने शोक किया फिर यह बृद्ध अपनी

प्रियपुत्री के मारेजाने से शोकमें मग्नहुआ और इसीभाँति मैं अभागाभी उसदुष्ट गुलाम के बचन को स्मरणकर अपने घरके नष्टहोने और अपने अपराध से नानाप्रकार के शोकको प्राप्तहूं इसीसे मैंने आपके सम्मुख यह कहा और आशारखताहूं कि मेरे मारेजाने की आज्ञाहो कि उसके बदले मैं दण्डपाऊं अब मेरा जीना व्यर्थ है ऐसे जीने से मरने को उत्तम जानताहूं ख़लीफ़ा इस वृत्तान्तको उसमनुष्य के मुखसे सुन अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ और उसकी दीनता पर दयाकी और कहा जिस मनुष्य ने कि अनजाने अपराध किया वह परमेश्वर और मनुष्यों के बिचारमें क्षमायोग्य है और मारने के योग्य वह गुलामहै जो इस स्त्री के मारेजाने का कारणहुआ फिर ख़लीफ़ाने मंत्री से कहा तीन दिनंका सावकाश देताहूं इस समयान्तर में उस गुलाम हब्शीको ला नहीं तो तूही माराजावेगा मंत्री जो छूटा था फिर दूसरी बेर फँसा ख़लीफ़ासे बिदाहोकर रुदन करता हुआ अपने घरआया और समझा कि केवल तीनही दिनतक मैं जीऊंगा चौथेदिन अवश्य मारा जाऊंगा क्योंकि बग़दाद में हज़ारों और लाखों गुलाम हैं क्योंकर उसका ठिकाना मिलेगा परंतु परमेश्वर की दयासे निराश न होना चाहिये जिसभांति उसने स्त्री के मारने वाले को प्रकट किया क्या आश्चर्य है कि उस गुलामको भी मिलादे दो दिन उसको ढूंढ़ने में भी व्यतीतहुये तृतीय दिवस सब मनुष्य मंत्री के घराने के उसके चारोंओर इकट्ठे होय रोनेपीटनेलगे जाफ़र अपनेमारेजानेपर तत्परहो अपनी स्त्री और मित्रोंसे बिदा होनेलगा और वहभी उसके कण्ठसे लग २ बिदाहोते थे इतने में ख़लीफ़ा ने एकप्रधानको आज्ञादी कि तीनदिन व्यतीत हुये यदि मंत्रीने उस गुलाम हब्शीको प्रकट किया तो लेआवे नहीं तो उसको मेरेसम्मुख लाओ मंत्री ख़लीफ़ाकी आज्ञानुकूल घरसे बाहर उस पहरेके साथ जो उसे लेनेको आया था जब वहांसे चलने की इच्छाकी कि एक उसकी बालक खिलानेवाली उसकीपुत्री पांच छः वर्षकी थी जिसको मंत्री बहुत प्यार करता था लेकर सम्मुख आई मंत्री ने पहरे के मनुष्योंसे कहा कि यदि मुझे आज्ञाहो तो इसपुत्री का प्यार करलूं यह

कह उस लड़कीका प्यारकरने लगा अकस्मात् उसकी छातीमें एक बस्तु गोलसी उसके बस्त्रसे बँधी हुई देखी पूंछा हे पुत्री ! तुम्हारे पास यह क्या बस्तुहै उसनेकहा बाबा यह सेबहै जिसपर हमारे बादशाह का नाम लिखाहै मैंने अपने गुलाम हब्शीको जिसका नाम रैहानहै ४) रु० को मोललिया जाफ़रमंत्री उस सेब और गुलामकानाम सुन अचम्भित हुआ और तुरन्त अपना हाथ उसके बस्त्रमें डाल वह सेब निकाल लिया और उस गुलाम हब्शीको कि उसी के मन्दिरमें बर्त्तमान था बुलाकर पूंछा सत्य कह तूने यह सेब कहांसे पाया उसने कहा मैं आपकी सौगन्द खाकर बिनयकरताहूं न तो मैंने आपके घरसे चुराया और न बादशाहके घरसे—कईदिनहुये मैंने एकगली में तीनचार छोटेछोटे बालकों को खेलते देख एक बालक के हाथसे जो सबसे बड़ाथा और सेब हाथ में लिये था छीनकर लेभागा वह बालक रोताहुआ मेरेपीछे दौड़ा और कहनेलगा यह सेब मेरा नहीं मेरी माताका है मेरा पिता बहुतदूरकी यात्राकर तीन सेब लाया मैं उनमें से एक सेब अपनी माता के पूंछे बिना खेलने को ले आयाहूं वह बालक बहुत रोया परन्तु मैंने उसे न दिया अपने घरमें लाकर उसे अपनी छोटी लड़की के हाथ बेचा मंत्री जाफ़रने उसकी दुष्टतापर बहुत अचम्भा किया और उसे बादशाह के सम्मुख लाया उस गुलामने वही बार्त्ता बादशाह के सम्मुख भी प्रकट की बादशाहको उसीका यह अपराध सूचितहुआ और उसके बचन सुन बेबशहो हँसपड़ा फिर सँभल मंत्रीसे कहा कि तेरे गुलाम के कारण यह उपद्रव हुआ यही दण्ड योग्य है जिससे प्रजाको उपदेश हो मंत्रीने बिनयकी कि आप सत्य कहतेहैं मेरे बिचार में यही दण्ड योग्यहै और इसका अपराध क्षमा योग्य नहीं परन्तु मुझे नूरुद्दीन और बदरुद्दीनहसनकी कहानी जो मिस्रके बादशाहके मंत्रीथे स्मरणहै यदि आपकी इच्छाहो तो मैं उसे बर्णनकरूं वह कहानी अद्भुत और बिचित्रहै उसके सुननेसे आप प्रसन्नहों तो आशा रखताहूं कि मेरेगुलामका अपराध क्षमाहो राजा ने आज्ञाकी तू उसचरित्र को कह परन्तु मैं जानताहूं तेरी वह कथा सेबों के बृत्तान्त से अद्भुत न

होगी और तू अपने गुलामको दण्डपाने से बचा न सकेगा फिर मन्त्री वह कथा इसभांति कहनेलगा ॥

## नूरुद्दीनअली और बदरुद्दीनहसन का चरित्र ॥

जाफ़र मन्त्री ने अपने स्वामीके सम्मुख कहा पूर्वकालमें मिस्र का एक बादशाह अत्यन्त सामर्थ्यवान् दयावान् और दानी था जिसके भय से चारोंओरके बड़े२बादशाह डरते और वह नाना-प्रकारकी बिद्या और गुणका ग्राहकथा उस बादशाहका बड़ा प्रबीण और बुद्धिमान् एक मन्त्री था वह काव्य आदिक शास्त्रमें निपुणथा उस मन्त्री के दोपुत्र थे वह अत्यन्त सुन्दर और अपने पिताके समान गुणवान्थे बड़े पुत्रकानाम शमसुद्दीनमुहम्मदथा और छोटेकानाम नूरुद्दीनअली यह अत्यन्त बुद्धिमान् था जब वह मन्त्री कालबश हुआ तब बादशाह ने उसके दोनों पुत्रोंको बुलवाय मन्त्रीकी पदवी दी और कहा तुम्हारे पिताके मरने से मुझे अति शोक भया अब चाहिये कि तुम दोनों भ्राता अपने पिताकी जगह उसके कार्य्यको करो वह दोनों बिदाहोय अपने घरआये एक मास पर्य्यन्त अपने पिताके शोकमेंरहे फिर बादशाहके सम्मुख जाय राजसभाके न्याय आदि कार्य्यों में जो मन्त्रीके अधिकारमें होते हैं प्रबृत्तरहे जब बादशाह अहेरकी इच्छाकरता बारी२से एकभाईको अपनेसाथ लेजाता और दूसरेको राजकाजके देखभालमें छोड़जाता एकदिन सायङ्काल को कि भोरभये बादशाह बड़ेभाई को आखेट को लेजाने वाले थे वह दोनोंभ्राता भोजनकर रात्रिको परस्पर बातचीत और हास्यकर रहे थे बार्त्तान्तर में बड़ेभाईने छोटे से कहा मैं चाहताहूं जिस भांति कि हम और तुम एक सम्मतसे एक स्थानपर रहते हैं एकही दिन एक एक सुन्दर कन्यासे बिवाह करें कि जिनके माता पिता प्रतिष्ठा में समानहों इस बिषयमें तुम्हारा क्या सम्मतहै और क्या कहतेहो नूरुद्दीनने उत्तरदिया भाई मैं आपका सेवकहूं जो आपने आज्ञाकी मुझे स्वीकारहै और मेरेवास्ते उत्तमहै बड़ेभाईनेकहा इसके बिशेष मेरीकुछ और भी इच्छाहै वह यह है बिवाह करने के पश्चात् हम दोनोंकीस्त्रियां एकही रात्रिको सगर्भहों नवमासके पश्चात् एक

ही दिवस वह जनें और तुम्हारे घर पुत्रहो और मेरे घर पुत्री फिर जब वह तरुणहों हम दोनोंभाई उनका परस्पर बिवाह करें उसने कहा यह भी जो आपने बिचारा बहुत उत्तम हैमैं इसपर प्रसन्नहूं जो परमेश्वर इसे सत्यकरे और बिश्वास है कि मेरा पुत्र भी तुम्हारी कुँवरिसे प्रीतिकरेगा दूसरे ने कहा निस्संदेह परन्तु एक शर्तहै तू अपने पुत्रकीओरसे यह बचनदे कि नियमित दहेज़के बिशेष १०००) रु० और तीन उत्तम बसेहुये ग्राम जागीर और तीन बाँदियां दुलहिनकी सेवाकरने के अर्थ दे छोटेभाई ने कहा मुझे यह अङ्गीकार नहीं क्योंकि हम तुम दोनोंभाई पदवी में तुल्य हैं तुम जानतेहो कि पुरुषकी पदवी स्त्रीसे अधिक होतीहै तुमको चाहिये कि तुम अपनी पुत्री को बहुतसा दहेज़ दो न कि तुम हमसे लो जो कुछ कि तुम्हें करना उचित है दूसरे के शिर डालतेहो यद्यपि नूरुद्दीनने हास्य से यह कहाथा परन्तु बड़ाभाई उसका क्रूरप्रकृति था उसका बचन बहुत कटुलगा अतिरिस से उत्तर दिया कि तू अपने पुत्र को मेरी पुत्रीपर बड़ाई देताहै मैं तो जानताथा तू मेरीपुत्रीकी प्रतिष्ठा करेगा इसके बिरुद्ध तूने उसको अपने पुत्रकी अपेक्षा थोड़ी पदवीका समझा और तूने जो अपनेको मेरे अत्यन्त पदवी के बराबर समझा यह अनुचितहै मैं अपनी पुत्रीका बिबाह तेरे पुत्रके साथ कभी न करूंगा यहझगड़ा उनदोनोंका अपने बिबाहकरने और उनकी स्त्रियोंके गर्भ रहने और संतान उत्पन्नहोने के पहिलेथा इसमें बहुत बादानुबाद हुआ यहांतक कि बड़ेभाई ने छोटेको डराकरकहा भोरहोनेदे मैं बादशाहके सम्मुखजाकर तुझे इस ढिठाईका दण्ड दिलाऊंगा जिससे सब लोगोंको बोधहो और कोई छोटाभाई अपने बड़ेभ्राताकी इसभांतिसे ढिठाई जैसे कि तूनेकीहै न करे यहकह अपनेमकानमें चलागया और छोटाभाई अपने शयनालयमें जाय सोरहा शमसुद्दीनमुहम्मद दूसरे दिनके भोरकोउठ बादशाह के निकटगया और वहां से बादशाह के साथ अहेरखेलनेगया और छोटाभ्राता अपने बड़ेभाई के धिक्कार और बुराभला कहने से रात्रिको न सोया क्रोधमें तड़पता और तलमलातारहा और इच्छाकी कि अब भाई के साथ न रहूंगा उसने मुझे

बहुतबुरा कहा तबउसनेएक पुष्टखच्चरपर असंख्यरत्नद्रव्य और खाने पीने की बस्तु साथलाद चलतेसमय अपनेभृत्यों से बहानाकर कहा कि दोतीन दिनकेवास्ते कहीं जाताहूं फिर वहांसेचलाजबउसनगरकी सीमाओं से बाहरनिकला उसने अरबमेंजानेकीइच्छाकी मार्गमेंखच्चरउसकारोगीहुआ वह उसेछोड़ पैदलचला अकस्मात्‌हसनानगर से एकसवार बांसराको जाताथा उसने नूरुद्दीनको पैदलदेख अपने पीछेचढ़ालिया और जब वह बांसरामें पहुँचा तो नूरुद्दीनने उतरउस की कृतज्ञताकी और उसने बिदाहो रहनेको स्थानढूंढ़ता आगेबढ़ा मार्गमें बड़े अमीर और सुपात्रमनुष्यको देखाकि बड़ी सजधज और धूमधाम से उसकी सवारी जाती है और नगरकेलोगों ने झुककर उसे प्रणामकिया और पंक्तिबांध खड़े रहे यहांतक कि बाजारसे उस की सवारीचलीगई नूरुद्दीन ने भी उसको देख सबकेसाथ प्रणाम किया वह बांसराके राजमंत्रीकी सवारीथी प्रजाके भलेबुरे को देखने आयाथा नूरुद्दीन के सुन्दररूप और भलमंसी को देख विस्मित हुआ और जब सवारी उसके समीप पहुँची उसने मुसाफिरोंकी भांति उसे पाया उसके पास ठहर पूंछा कि तूकौन है और किधर से आताहै नूरुद्दीनअली ने कहा स्वामी मैं मिसरी हूं और कैरूदेशमें मेरानिवासहै किसी विषयमें अपने सम्बन्धीसेअप्रसन्नहो मैंने परदेश अङ्गीकारकिया अब यह इच्छारखताहूं कि निजनगरमेंकभी न जाऊं और शेषआयु नगर नगर देश देशमें फिर व्यतीतकरूं उस मंत्रीने जो वृद्ध और बुद्धिमान्‌था नूरुद्दीन के इसबचनकोसुन कहा हे पुत्र! इसइच्छाको अपने मनसे दूरकर यात्रामें दुःख और हानिके विशेष कदापि लाभनहीं तुम मेरेसाथचलो तुम्हारे साथ ऐसा उपकार करूंगा कि उस शोकको निपट बिस्मरणकरोगे नूरुद्दीनअलीमंत्रीके साथगया और उसके निकट रहनेलगा वह राजमंत्रीउस की बुद्धि और चतुरताको देख उसका बड़ासत्कार करता था यहांतक कि एकदिन उसने एकान्तमें कहा हे पुत्र! अब मैं बहुत शिथिल होगया हूं और जीनेकी कुछ आशानहीं परमेश्वरने मुझे केवल एक पुत्री अतिरूपवती दी है अब वह बिवाहने योग्यहै बहुतसे भलेमा-

नुस धनाढ्य और प्रधान उसकी चाहना करते हैं परन्तु मैंने स्वीकार नहींकिया अब तुझे अपने प्राणसे भी अधिक प्रिय जान्ताहूं वह तेरेयोग्यहै यदि तू इस बातको स्वीकारकरे तो मैं तुझे दूं और बादशाहकी आज्ञानुसार उसको तुझे बियाहदूं और अपने बदले इस देशका मंत्रीकरूं और अपनी सब बस्तु तुझेदूं नूरुद्दीनने उसकी कृतज्ञताकरकहा आपमेरेबड़े हैं आपकी आज्ञा मुझेस्वीकारहै मंत्री ने उसकी खुशीपाकर बिवाहकी तय्यारीकी और नगरके बासियों को इस विवाह के निमित्त न्योता जब सबलोगआये नूरुद्दीन ने मंत्रीसेकहा अबतक मैंने अपनी जातिपांतिको छिपाया अब मैं उसे प्रकटकरताहूं मेरा पिता मिस्रके बादशाहका राजमंत्रीथा मैं उसका छोटापुत्रहूं एक और मेरा बड़ाभाईहै मेरे पिताके मरने के पश्चात् बादशाहने हमदोनों भाइयोंको हमारे पिताके अधिकार पर नियत किया सो हम यथोचित उसकार्य्य को करतेरहे एक दिन हम दोनों भाइयों में कुछ बादानुबादहुआ मैं अप्रसन्नहो इधरको चलाआया बांसराकाराजमंत्री इसबचनको सुन अत्यन्तहर्षितहुआ कि यह भी मंत्रीसुवन है फिर उसने सभासदों से कहा एकबात में मैं सम्मत पूंछताहूं वह यह है कि एकभाई मेरा मिस्रके बादशाह का मंत्री है उसने अपने पुत्रको यहांभेजा है और मिस्र में बिवाह उसका न किया सिवाय उसके कोई सन्ताननहीं और उसकी इच्छाहै कि मैं उसके पुत्रका बिवाहकर अपने निकटरक्खूं मुझे तो यहबात परस्पर अधिक प्रीतिकाकारण जानपड़ती है तुम सब इसमें क्या कहते हो उनसबने एकमतहो कहा यहबहुत उचितहै परमेश्वर उनदोनों की आयुदीर्घकरे निदान जब वह सब इसबात में प्रसन्नहुये मंत्रीनेसब को नानाप्रकारके उत्तम उत्तम ब्यंजनखिलाये और उनका यथोचित सन्मान किया फिर प्रत्येक मनुष्यके सम्मुख मिठाई रक्खी कि यही वहांकी रीतिथी और क़ाज़ीने वहां आनकर बिवाहकिया फिरसम्पूर्ण मनुष्य उसराजमंत्री से बिदाहुये उक्तमंत्रीने अपने सेवकोंको आज्ञा दी कि नूरुद्दीनको स्नानागारमें ले जाय नहलाओ और उसनेनाना-प्रकारके बस्त्र और रत्न किश्तियों में लदाकर जैसे कि बिवाहके दिन

दूल्हे को पहिनाते हैं वहीं भेजे नूरुद्दीन ने स्नान करने के पश्चात् चहा कि अपनेवस्त्र पहिने परन्तु मन्त्रीके सेवकों ने वहीवस्त्र पहिना कर नानाप्रकारकी सुगन्धेंलगाईं नूरुद्दीन वस्त्रादि से अलंकृत होकर मंत्रीके निकट जो उसकाश्वशुरथा गया उसनेहर्षसेसमीपबैठायपूंछा कि तुमने सबहाल तो मुझसे कहा कि मिस्रके मंत्री के पुत्रहो और आपभी बादशाह के मंत्रीथे परन्तु एकबाततुमने अबतकनहीं प्रकट की कि क्यों तुम निजदेश और कुटुम्ब को छोड़कर यहांआये अब हमारा तुम्हारा एकवास्ता है और किसीभांतिका परस्पर में अन्तर नहीं नूरुद्दीन ने अपना वृत्तान्त विस्तारपूर्व्वक जैसा कि उन दोनों भाइयों में तकरारहुईथी मंत्री से कहा मंत्री यहसुन बहुतहँसा और कहा केवल इतनीही बातकेवास्ते तुमदोनों भाइयों में बादहुआ यह निपट बिचारहीथा कहां तुम्हारापुत्र और कहां तुम्हारे ज्येष्ठभ्राता की बेटी जिनका बिवाह उनप्रतिज्ञाओं पर होता तुमने निजदेश को छोड़ा परन्तु तुमने केवल हास्य में कहाथा इस बिषयमें तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राताकी अधिकता जानपड़ती है इसविषय में तुम्हें परदेश जाना उचित न था परन्तु मेरेप्रारब्ध में था कि तुमऐसा कुलीन और उच्च जातिका मनुष्य मेरादामादहो इसीकारण तुम्हारेमन में यह उपजी और इस नगरमेंआये अब देर न करो अपनी दुलहिनकेसमीपजाओ वह तुम्हारीराह देखतीहोगी कल मैं तुमको बादशाहके समीप लेजा-ऊंगा मुझे बिश्वास है कि तुम्हारी भेंट होतेही वह तुमपर प्रसन्नहोगा जिससे हमदोनोंको हर्षहो नूरुद्दीन अपनेश्वशुरसेबिदाहोकर अपनी दुलहिनकी शय्यापरगया अब शमसुद्दीन नूरुद्दीनके ज्येष्ठभ्राताका भी वर्णन कियाजाताहै जो शिकारको गयाथा एकमास पर्य्यन्त वह बादशाहके साथ अहेरखेलतारहा जब वहआया औरनूरुद्दीनकेभव-नमेंगया तो उसे उसके सेवकोंसे बिदितहुआ कि वह उसदिनदोदिन के वास्ते कहींगया शमसुद्दीनको बड़ाशोकहुआ और जानलिया कि मेरेकठोर बचन से वह अवश्य अप्रसन्नहोकर किसी ओर को निकल गया उसनेचारोंओर उसकेढूंढ़ने के लिये मनुष्य दौड़ाये वह दमिश्क और हलब पर्य्यन्त होआये कहीं उसका ठिकाना न लगा क्योंकि वह

बांसरामें था फिर दूरदूरके देशोंमें भी ढूंढ़हुई वहांपर भी न मिला निदान हारमान शमसुद्दीनने बिवाहका बिचार किया संयोग बश उसीदिन और उस मुहूर्त्त में कि जिसमें नूरुद्दीन का बिवाह हुआथा उसने अपनाबिवाह एकप्रतिष्ठितमनुष्यकी कन्याकेसाथ किया और अद्भुत यह कि नवमास ब्यतीत होनेके पश्चात् शमसुद्दीन के घरमें कन्या और नूरुद्दीनके घरमें पुत्रहुआ जिसकानाम उसने बदरुद्दीन हसन रक्खा बांसराकामंत्री नवासे के होनेसे अत्यन्त हर्षित हुआ छठी के दिन बड़ी धूमधाम की और अपने सेवकों आदि को पारितोषिक दिया कुछ कालके पश्चात् इच्छाकी कि अपने दामाद नूरुद्दीनको बादशाह के सम्मुख लेजाय उसे अपना अधिकार दिलाये जब वह उसे पहिले बादशाहके सम्मुख लेगया था बादशाहने उसे योग्य और बुद्धिमान् और गुणवान् पाके और बहुत से मनुष्यों से उसकी प्रशंसासुन बहुत खुशहुआ था सो निजपुराने मन्त्रीके चाहनानुसार राजमंत्रीका अधिकार नूरुद्दीनको दिया दूसरे दिन मन्त्री ने अपने दामादको देखा कि उसने निजसम्बन्धित न्यायके कार्य्य को भलीभांति किया अत्यन्त हर्षित हुआ और नूरुद्दीनअली राजसभामें सदैव प्रवृत्त रहनेलगा और प्रत्येक मनुष्यको अपनी शीलता और मिलनसारी से ऐसा प्रसन्नरखता कि सब छोटे बड़े उस को आशीर्वाद देतेथे जब इसी भांति उसे चार वर्ष ब्यतीतहुये खुसरो नूरुद्दीन शिथिलता और बृद्धताके कारण कालबश हुआ नूरुद्दीनअली ने रोना पीटना और शोक वहांकी रीत्यनुसार भली भांति किया जब बदरुद्दीनहसन सातवर्षका हुआ नूरुद्दीन ने उस के पढ़ाने और उपदेशार्थ बड़े २ गुणवानों को नियत किया जो बदरुद्दीन अतिकुशलबुद्धिथा कुछसमय में उसने कलामअल्लाहमुखाग्रकरली और द्वादशवर्ष की अवस्था में सम्पूर्ण विद्या पढ़ली और वह ऐसा सुन्दरथा कि उसे सबलोग देख प्रसन्नहोते और आशीर्बाद देते फिर जब वह राजदरबार तथा मंत्रीकार्य्य में निपुण हुआ नूरुद्दीन उसे बादशाह के सम्मुख लेगया उसने ऐसी सुबुद्धि से प्रणाम किया कि बादशाह प्रसन्नहुआ और उसपर परमअनुग्रहकी पिता

उसकी निपुणता और गुणवानता से अत्यन्त प्रसन्न रहता और सदैव उसे उपदेशकिया करता जब वह समय आया कि उसकेकार्य से कुछलाभ हो अकस्मात् नूरुद्दीनअली रोगीहुआ और धीरे धीरे मरने के निकट पहुँचा अन्तसमय अपनेपुत्र बदरुद्दीनहसन को बुलवाकर उपदेशकिया कि यह संसारअसार त्यागनेयोग्य है मेरे मरनेपर रुदन न करना और सन्तोषरखना जैसा कि तुम्हारी जातिमें है और तुमने अपने गुरुओं से भी पढ़ाहै और उन सबको भलीभांति जानतेहो अब मैं थोड़ीसीबातें तुमको बताताहूं और कुछ उपदेश करताहूं बिश्वास है तुम मेरे उपदेशानुसार मेरेपीछे करोगे प्रथम यह कि मैं मिस्रका बासीहूं मेरेपिता वहांके बादशाहका राजमंत्रीथा मैं और मेराभाई शमसुद्दीन मुहम्मद नामी जो अबतक जीताहै हमदोनों मंत्री उसी बादशाहके थे कोई ऐसा कारणहुआ कि मैं स्वतःअपनेभाई से अलग होकर यहां आया और यहींमंत्रीकी पदवीपाई फिर उसने जेबीकलमदानखोल एक कागज़को जिसको वह सदैव अपने समीप रखताथा निकालकर बदरुद्दीनहसन को दिया और कहा अवकाश पा इसको पढ़ना तुमको इसका बृत्तान्त भलीभांति बिदित होगा सबबातों के बिशेष तुम मेरे बिवाह और अपने उत्पन्नहोने की तिथि पाओगे तुम इस पत्रको रक्षापूर्व्वक रखना बदरुद्दीनसहन अपनेपिताको मृत्युके निकटदेख अत्यन्तशोकवान्‌हुआ और उसपत्रकोलेप्रणकिया कि इसेकभी अपनेपाससे अलग न करूंगा फिर नूरुद्दीनअली ऐसाबेसुधहोगया जिससे बिदितहुआ कि वह मरगया थोड़ीदेरके पश्चात् फिर उसने सुधिसम्हाली और अपनेपुत्र बदरुद्दीनको यह उपदेश किया प्रथम–यह कि तुम किसीसे मित्रता न करना और न किसी से अपनाभेद कहना द्वितीय–किसीमनुष्यपर अन्याय न करना कि वह तुमसे बैर और डाहरक्खे तुमसमझो कि यहसंसारदेनेलेनेकी जगहहै जैसा कि तुम किसीके साथबुराई व भलाई करोगे तुमको भी उसकाबदला भोगना पड़ेगा तृतीय–यह कि तुम ऐसाबचन न कहना जिससे लज्जा उठानीपड़े और बहुतबार्त्ता न करना कि बहुबाची सदैव लज्जाउठाता

है और गंभीर बहुधा अनेकदुःखों से बचतारहा है इनबातोंको सदा करना बुद्धिमानोंका बचन है कि गंभीरताप्रतिष्ठा की बचानेवाली और प्राणकी रक्षाकरनेवाली होतीहै जो मनुष्यथोड़ाबोलता है लज्जा कदापि नहीं उठाता और जो बहुत बकता है वह पीछे से कष्टपाता है चतुर्थ—यह कि मद्य न पीना कि बुद्धिकी नष्टताका कारणहै पंचम—यह कि सर्बदा किफ़ायतकरना क्योंकि जो तुम बहुत ख़र्चकरोगे तो तुरन्त निर्धन होजाओगे मेरा प्रयोजन यह है कि न तो इतना ख़र्चकरना कि निर्धनहोजावो न इतनान्यून कि तुम्हें लज्जा प्राप्तहो सर्बदा समरहना चाहिये क्योंकि जब तुम्हारे निकट द्रव्यरहेगा सब मित्र तुमको घेरे रहैंगे और जो खालीहोगे तो तुम्हैं कोईबातभी न पूछैगा न कोई तुम्हारे समीपआवेगा निदान श्वास निकलने पर्यन्त नूरुद्दीन अपने पुत्र बदरुद्दीन को उपदेशकरतारहा जब वह मरगया बदरुद्दीन ने बड़ीधूमधाम से उसके शोक की रीति की इतनी कथाकह रानीशहरज़ात ने बादशाह शहरयार से कहा कि ख़लीफ़ाहारूंरशीद यहांतक इसकहानी को सुन अतिप्रसन्न हुआ फिर जाफ़रमंत्री कहनेलगा कि नूरुद्दीन के मरने के पश्चात् सबलोग बदरुद्दीन को बांसराई कहनेलगे क्योंकि वह उसीनगर में उत्पन्न हुआ था बदरुद्दीनहसन उसदेशकी रीत्यनुसार एकमासपर्य्यन्त अपने पिताकेशोकमें ऐसाबैठा कि किसीसे न मिलताथा इसीकारण राजसभामें न गया किन्तु द्वितीयमासभी उशीदशामें ब्यतीतकिया इस बेपरवाहीसे बादशाह अप्रसन्नहुआ और उसकेस्थानपर किसी अन्य मनुष्यको अपना मंत्रीकर काम लियाकरता एकदिन अपने नबीन मंत्री को बुलाकर आज्ञादी कि प्रथम मंत्री का मन्दिर धन आदि छीनले और बदरुद्दीनहसन को क़ैदकर मेरेसम्मुख तुरन्त लावो नवीनमंत्री बादशाहकी आज्ञानुसार सेनासाथ ले चला एक बदरुद्दीनका सेवक मार्ग में यहदशा देख दौड़आया और बदरुद्दीनहसन के निकट घबरायाहुआ पहुँचकर उसकेचरणोंपर गिरपड़ा और उसकेबस्त्रको चूमकहा स्वामी शीघ्र यहांसेभागजावो बदरुद्दीनहसनने उसके शिरको अपने चरणों से उठाकर पूंछा कुशल तो है

उसने उत्तरदिया अब कहने सुननेका अवकाश नहीं बादशाह ने क्रोधितहो तुमको पकड़ने और सम्पूर्ण तुम्हारा द्रव्यहरने को सेना भेजी है बदरुद्दीन उस अपने हितैषी सेवककी बातसुन घबरागया और कहनेलगा इतनाअवकाशहै कि कुछ धन वा रत्न अपनेसाथलूं उसनेकहा इससमय किसी बस्तुका बिचार न कीजिये केवल यहां से बच भागजाइये मंत्रीआपके घरकेसमीप पहुँचचुका क्षणमात्र में यहां आया चाहता है बदरुद्दीन इसबातको सुन वहांसे उठा और जूतीपांवों में पहिनकर अपनेबस्त्रसे अपनामुख छिपाया कि कोई उसे न पहिचाने और परमेश्वरपर भरोसारख एकओरको चला परन्तु इतनी चतुराईकी कि भवनके दूसरे दरवाजेसे होकर तुरन्त क़बरिस्तानको चला जाते जाते सूर्यास्त होजाने से अँधियारा होगया था वह अपने पिताकी क़बरमें कि बहुतबड़ीथी और उसेनूरुद्दीनही बनवागयाथा पहुँचा अकस्मात् वहां एक यहूदी ब्यापारी से भेंट भई वह यहूदी बदरुद्दीन को पहिचानकर ठहरगया और बड़ी प्रतिष्ठा से उसे नम्रतापूर्वक प्रणामकिया और हाथचूमा फिर आश्चर्य्य कर कहनेलगा कि रात्रिको अकेले कहां जाते हो वह कौन सा ऐसाकार्यहै कि तुम ने इतनाश्रम किया बदरुद्दीनहसन ने उत्तरदिया मैंने अपने पिताको स्वप्नमें देखा कि मेरीओर अप्रसन्नता से दृष्टिकरताहै उसको मुझसे कुछ क्रोधहै यहांतक कि मैं जगकरउठ वहांसे अकेला दौड़कर यहांआया उस यहूदी ने उसके बचन का बिश्वास न कर कहा तुम्हारापिता बड़ाप्रतापवान् व शीलवान् और मेरास्वामीथा कईजहाज़ असबाबके लदेहुये स्थान २ परगये हैं और अभीकोई यहां नहीं पहुँचा अब तुम उस असबाबके स्वामीहो यदि जहाज़का असबाब जो प्रथमही इसनगरमें पहुँचे मेरे हाथ बेचो तो मैं इसीसमय आपको ६०००) रु० देताहूं और एक तोड़ाउसके सम्मुख रखदिया बदरुद्दीन ने उसदशा में कि केवल एक नाक और दोकान के सिवाय कुछ न रखताथा इतने रुपये को परमेश्वरके देनसे समझा हर्ष पूर्व्वक इसको अंगीकार किया फिर यहूदीने कहा आपने अपनामाल प्रथम जहाज़का जो इसनगरमें पहुँचे ६०००)

को बेचा बदरुद्दीनहसनने कहा उसको मैंने अपनी खुशी से तेरेहाथ बेचा यहूदीने तोड़ा उसके हाथमें देकरकहा हे स्वामी! यद्यपि मुझे आपके कहनेपर विश्वासहै परन्तु लिखतम लिखदीजिये कि औरों के निकट सनदहो बदरुद्दीनहसनने कहा बहुत अच्छा फिर उस यहूदीने अपनी कमरसे मसि और लेखनी और कागज़ निकालसा-मनेरखदी बदरुद्दीनहसनने उसमें लिखा बदरुद्दीनहसन बांसराई ने अपने प्रथम जहाज़की वस्तु को ६००० ) रु० पर इसहाक़ यहूदी के हाथ बेचा और नीचे अपने दस्तख़तकर यहूदी को दिया यहूदी वह ले चलागया और बदरुद्दीनहसन सीधा अपने पिताकी क़बरपर गया और रोकर कहने लगा अभी मेरे प्रिय पिताके मरने का शोक मेरे हृदय से न गया था कि इस अन्यायी बादशाह ने मेरे घरबारको छीन लिया और मेरे पकड़ने की आज्ञा की अब मैं भागकर यहां आयाहूं कि मैं उसके हाथ से छूटूं इसी भांति देरतक रोता और बातें करतारहा निदान उसी दशा में वहां सोगया एकक्षण न हुआथा एकपिशाच कि वहांपर रहता था और रात्रिको सैरके निमित्त वहां फिराकरता बदरुद्दीनहसनको वहांपड़े देख उसके रूप अनूप पर मोहितहुआ और कहनेलगा यह देवता जान पड़ता है कि अभी परमेश्वरने इसे स्वर्गसे संसारके प्रकाश के लिये भेजाहै क्योंकि मैंने अबतक और किसी मनुष्यको ऐसासुन्दर नहीं देखा फिर जब उसे मनभर के देखचुका वहां से उड़कर वायु में एकअप्सरा से मिला और परस्पर प्रणामकिया फिर उसपिशाच ने उस अप्सरासे कहा मेरे साथ पृथ्वीपर उतर मैं तुझे एक सुन्दर मनुष्यको कि उस क़बरपर सोताहै दिखाऊं उसके देखनेसे तू प्रसन्न होगी वह अप्सरा चलनेको तत्पर हुई फिर वह दोनों क्षणमात्र में वहां आ पहुँचे पिशाचने उसे बदरुद्दीनहसन को दिखाकर कहा सत्य कह तूने कहीं ऐसा रूपवान् मनुष्य देखाहै अप्सराने ध्यान धरदेख कहा वास्तवमें यह मनुष्य महास्वरूपवान्है परन्तु मैं केरू में एक अद्भुत चरित्र देख आईहूं यदि तू सुनाचाहे तो बर्णनकरूं पिशाचने उत्तर दिया जो तू उस कहानी को सुनावैगी तो मुझे

अत्यन्तहर्ष होगा अप्सराने उसवृत्तांतको इसभांति वर्णन किया कि मिसरके बादशाहका एकमंत्री है जिसका नाम शमसुद्दीन मुहम्मद है उसकी एक लड़की बीसबर्षकी अतिसुन्दरी है बादशाहने उसके रूप अनूपकी प्रशंसा सुन मंत्रीसे कहा कि अपनी पुत्रीका बिवाह मेरे साथकर मंत्रीने अंगीकार न किया और अत्यन्त शोचकर बादशाहको उत्तरदिया आपकी इच्छा मुझे स्वीकार नहीं क्योंकि आपकोभी बिदित होगा कि मेराएकभाई नूरुद्दीनअली नामक है प्रथम वहभी मेरे समान आपका मन्त्री था बहुत दिनसे वह कहीं चला गयाहै अबतक उसका समाचार बिदित नहीं परन्तु पांच चार दिन व्यतीत होते हैं मैंने सुना कि वह बांसराका मन्त्री होगयाथा अब वह पुत्रछोड़ मरगया और प्रथममें हम दोनों भाइयों में प्रण होचुका है कि हम दोनों की सन्तानमें परस्पर बिवाह होगा मुझे बिश्वासहै कि उसने अन्तसमय इसबिषयमें अपने पुत्रको उपदेशकिया होगाअब अवश्य है कि उसके अन्तकालके उपदेशको करैं परमेश्वरके वास्ते आप मुझे इस बातसे क्षमाकीजिये इस नगरमें बहुतसे मेरे समान प्रतिष्ठित सुन्दर लड़कियांरखते हैं उनसे आप बिवाह कीजिये बादशाह इस बातको सुन अत्यन्त अप्रसन्न हुआ और क्रोधित होकर कहा तूने मुझे बहुत तुच्छ समझा इस तेरी ढिठाईसे देख तुझे कैसा दण्ड देताहूं और मैंने प्रतिज्ञाकीहै कि तेरीकन्या महाकुरूप सेवक को ब्याहदूंगा यह कह मन्त्रीको बिदाकिया वह अत्यन्तशोचित होय अपने घरमें आया उसीदिन बादशाहने अश्वपालकोंमें से एक गुलामको जो बहुतही बदसूरत और कुबड़ा और पेट उसका बहुत बड़ा और पांवटेढ़े मिरगीवाले रोगीके समानथे बिवाहके निमित्त नियतकिया और मन्त्री को कहलाभेजा कि अपनीपुत्रीके बिवाह की सामग्री तय्यारकर और क़ाज़ीको साक्षियोंसहित बिवाह करने को बुला मन्त्री ने अतिग्लानि से बादशाहकी आज्ञापालनकी रात्रिको मिसरनगर के गुलाम इकट्ठेहुये और मशालें हाथों में ले स्नानागार के किवाड़पर उस कुबड़े के आनेकी बाट देखतेरहे कि उसे स्नानागारमें लेजाय नहलाधुला दूलह बनाकर मन्त्रीकेघर ब्याहने को ले

जावें इतनाकह उस अप्सराने कहा अब वह उसे दूलह बनारहे हैं मैंने जाकर देखा कि उस लड़कीको भी नहलाधुला उस कुबड़े के वास्ते दुलहिन बनायाहै परन्तु पश्चात्तापहै कि वह मन्त्रीकी कन्या ऐसी रूपवती ऐसे अयोग्य भयानकरूप मनुष्यके साथ बिवाही जावे जब वह अप्सरा इस बृत्तान्तको कहचुकी पिशाच ने कहा क्या अच्छी बातहै कि मन्त्रीकी लड़की ऐसी सुन्दरी रूपवती इस नव-किशोरके साथ बिवाही जावे अप्सराने कहा मैंभी यही चाहती हूं कि बादशाहके अन्यायसे बचाय और कुबड़ेको धोखादे उसी जगह इस मनुष्यको बिठाऊं और बादशाहके व्यर्थ क्रोधका बदलालूं कि उस दुलहिन और उसके पिताको लज्जा प्राप्त न हो और उस कुब-ड़े के बिवाह से उसकी जाति पांति में अप्रतिष्ठा न हो पिशाच ने अप्सरासे कहा यदि तूभी इस कार्य में मेरी सहायताकरे तो होसक्ता है मैं इसके जागने के पहिले इसे यहां से उठाय कैरू में लेजाताहूं तब पिशाच और अप्सरा दोनों इस कार्य्य में उद्यतहुये सो पि-शाच बदरुद्दीनहसन को धीरे से उठा उसी स्नानागार के समीप जहां वह कुबड़ा गुलामोंके साथ स्नानको आयाथा लेगया जब बद-रुद्दीनहसन जगा अपनेको एक समूहमें पा भयवान्हो इच्छा की कि चिल्लावें परन्तु पिशाचने कन्धेपर उसके हाथरख समझाया कि तू न बोलियो चुपकाहोरह और एक मशालको हाथमेंले इस समूहके साथ होले और मन्त्रीके भवनमें जाय जहां सब बिवाह करनेजाते हैं तूभी बेधड़कचलाचल और उसकुबड़ेके दाहिनीओर "जिसकाबृत्तांत तुझे अभी बिदित होगा" होकर निर्भयसभामेंजा और मुट्ठी २ रुपये अपनी थैलीसे निकाल गाने बजानेवालोंको जो दूलहेके साथ जावेंगे दीजियो और सभामें पहुँचकर उन बांदियोंको जो दुलहिनके चारों ओर होंगी बहुत द्रव्य दीजियो चैतन्यरह अपनी थैली में कुछ न रखियो और जो मैं कहता जाऊं वही कीजियो और किसीसे भयभीत न हूजियो बदरुद्दीन उस पिशाचसे यह बातें सुन और भले प्रकार स्मरणरख स्नानागारके दरवाजे परगया और पहिले उसने गुलामों के समान अपने हाथमें मशाल लेली और उस समूहमें ऐसा मिला

कि कैरूके बासियों में जान पड़नेलगा और उन सबके साथ कुबड़े के पीछे स्नानागारसेनहाकर बाहर निकला और बादशाहके घोड़ेपर सवारहोके चला जब गानेबजानेवालों के निकटपहुँचा तो एकमुट्ठी २ भर रुपये उनको देने लगा जिससे वह सब प्रसन्न हुये और उसके रूपअनूपको देख अत्यन्त आश्चर्य्य में हुये निदान इसी भांति देता लेता मंत्री शमसुद्दीन अपने चचाके द्वारपर पहुँचा तब चोबदारों ने सबको भीतर जाने न दिया तथा बदरुद्दीनको भी बर्जा परन्तु गाने बजानेवालोंने जिन्हें कोई न रोंकसक्ता था धनके लोभ से बदरुद्दीनहसनकी ओर सैनकर कहा इस मनुष्यको क्यों रोंकतेहो यह गुलाम नहीं किन्तु अन्य देशकाबासी है इसनगरमें बरात देखने आयाहै यहकह उन सबोंने बदरुद्दीनहसन का हाथ पकड़ अपनी ओर खींच लिया और अपने साथ महल में लेगये और मशाल उसके हाथ से ले और सभामें लेजाय दूल्हे के दाहिनी ओर जो तख़्तपर दुलहिनके बराबर बैठाथा बैठाया यद्यपि वह दुलहिन अतिसुन्दरी अप्सराके तुल्यथी परन्तु शोकके कारण मुरझाई हुई दिखाई देती थी उस समय मिसरकी स्त्रियां और बांदियां मोमी मशालें हाथों में लिये हुये आईं और उस कुबड़े का कुरूप देख एकमत होय कहने लगीं कि हम इस दुलहिनको इस मनुष्य अर्थात् बदरुद्दीनहसन को देंगी इसकुरूप कुबड़े को और बादशाह के इस बिचार को जिस ने चाहा था कि रूपवती स्त्री के साथ कुरूप मनुष्य बिवाहाजावे उस का कुछ न भयकिया इसीबार्त्ता में ऐसा शब्द किया कि गाना बजाना बन्द होगया क्षणमात्र में डोमनियां और गाने बजानेवालियां दुलहिनको वस्त्र पहिनानेलगीं अब यहां उलथक लिखताहै—बुद्धिमानोंको प्रकटहो कि मुख्य अरबीभाषाकी पुस्तकमें इस स्थानपर एकसौ दो रात्रि ब्यतीतहुईं और अन्तिम दोरात्रि इसी राग रंग की सामग्री के बर्णन में बीतीं सो अंगरेज़ी भाषाके उलथक ने उनको छोड़दिया इस वास्ते इस पुस्तकमें कि अंगरेज़ी भाषा से सलिस उर्दू में उल्था होकर भाषान्तर हुई है छोड़दियागया—निदान डोमनियों ने सात जोड़े सातप्रकार के शमसुद्दीन मंत्री की पुत्री को प्रत्येक रागपर पहि-

नाये जब उस देशकी रीत्यनुसार दुलहिन जोड़े बदलचुकी तब और स्त्रियों के सहित अपने स्थान अर्थात् कुबड़े दूलहेके निकटसे उठ और ग्लानिपूर्व्वक दृष्टि से उसे देख बदरुद्दीनहसनके निकट जाबैठी बदरुद्दीनहसन उस पिशाचके उपदेशानुसार उन बांदियों और गानेवालियों को अपनी थैली से निकाल मुट्ठी भर भर रुपये देता रहा वह प्रसन्नहोय एकदूसरीको झिड़क झिड़ककर चुनने में लगीं और आशीर्वाद देतीथीं और परस्पर यह सैनसे बतलातीथीं कि यह दूलहा मंत्रीकी पुत्रीके योग्यहै और यहकुबड़ाकुरूपमंत्री कुँवरिकेयोग्य नहीं और महलके सेवकोंमें भी यही बार्त्ताहोती थी वह कुबड़ा कुछतो उनकी बातें सुनता और कुछ नहीं क्योंकि हज़ारोंनक़लकर उसे रिझा रक्खाथा फिर जब यहरीति वस्त्रबदलनेकी होचुकी और गानाबजाना बन्दहुआ तब उन्होंने बदरुद्दीनहसनको सैनकी कि खड़ाहो उसके खड़ेहोनेसे सम्पूर्ण भवन के मनुष्य उसस्थानसे चलेगये और दुलहिन अपने मकानमेंगई तब बांदियोंने रात्रिकेवस्त्र दुलहिनको पहिराये उस स्थानपर केवल बदरुद्दीनहसन और कुबड़ा और बांदियां रहगईं कुबड़ेने क्रोधकीदृष्टिसे बदरुद्दीनकी ओर देखकर कहा तू क्यों यहां ठहरा है और यहां से चला नहीं जाता बदरुद्दीनहसन उसके क्रोधितबचनसुन घबराया और वहांसे चलेजानेकी इच्छाकी पिशाच और अप्सराने उससे कहा तू कहांजाता है ठहर कुबड़ेको हम यहां से निकालदेते हैं तू दुलहिन के निकटजा और उससे कह तेरा पतिमैं हूं बादशाहने हास्यसे कुबड़े को दूलहाबना यहांभेजाथा उसकेवास्ते कुछभोजन अश्वशालामें भेजो और दुलहिनको अपने साथमिलालो दुलहिन तुझे देख बहुत प्रसन्नहोगी तुम कुछ कुबड़ेका भय न करो उसको अभी दूरकरते हैं निदान जब अप्सरा ने बदरुद्दीन को इस भांतिकी शिक्षासेदृढ़किया तो वह उसी स्थानपरठहरा और वहकुबड़ा मलिन वहांसे भागा क्योंकि पिशाच बिल्ली बन ऐसी तीक्ष्ण दृष्टि से देखने और घुर्रानेलगा जैसे सिंह अपने भक्ष्यको देख नादकरताहै कुबड़ा उसे धमकाकर दोनोंहाथोंसे बड़ेबेगसे मारने लगा कि वहडरकर भागजावे परन्तु वह बिल्ली उसकी ओर घूरने लगी और नेत्र

चित्र पिशाच का बदरुद्दीन को परी के साथ ले आते हुये.



अंगारों के समान लालकिये और प्रथमसे अधिक शब्द करनेलगी और इतनी फूली और बड़ीहुई कि गंधेकेसमान होगई तब वह कुरूपदेखडरा और भागजानेकी इच्छाकी इतनेमें वह पिशाच बहुतबड़ा भैंसाबन डकारनेलगा और बड़ा शब्दकर कहा हे कुबड़े! कहांभाग जावेगा खड़ारह कुबड़ा भयसे पृथ्वीपर गिरपड़ा और अपना मुख बस्त्रमें छिपालिया कि उस बिकराल भैंसेका स्वरूप दृष्टि न पड़े और अतिनम्रहोय गिड़गिड़ाके कहनेलगा हे महिषराज! मुझे क्या आज्ञा है भैंसे ने उत्तरदिया तुझे इतनी शक्तिथी कि मेरीस्त्री के साथ बिवाह करनेकोआया कुबड़े ने उत्तरदिया हे स्वामी! मेरा अपराध क्षमा कीजिये मुझेबिदित न था कि यहसुन्दरी तुम्हारी प्यारी है महिषनेकहा तू यहांसे सूर्योदयपर्य्यन्त न जाइयो चुपका यहांपड़ारह दिनहोतेही इसस्थानसे चलेजाइयो और फिरके इसओर न देखियो नहींतो अपने दोनोंसींग तेरेउदरमें चुभोकर मारडालूंगा तदनन्तर महिष वह शरीरत्याग मनुष्यबनगया और उसकुबड़ेकी टांगेंउठा शिरनीचेकर दीवारकेसाथ खड़ाकरदिया और कहा जो तू भोरपर्य्यन्त हिला और इसीभांति खड़ा न रहा तो तुझे इसीदीवारकेसाथ रगड़डालूंगा फिर वह पिशाच और अप्सरा दोनों चलेगये और बदरुद्दीन अतिहर्ष से दुलहिनके मकानमें गया उससमय एकवृद्धा उसेकहीं एकान्तमेंले आई और दूल्हेसेकहा भैया इस दुलहिनकेसाथ संसारीब्यवहार वर्त्तना इतनाकह उसमकानका द्वारबन्दकर उसमें तालालगाचलीगई वह दुलहिन बदरुद्दीनको पाकर अत्यन्त प्रसन्नहुई और पूंछा तुम मेरे पतिके साथियोंमेंसेहो बदरुद्दीनहसनने उत्तरदिया मैं कुबड़ेकासाथी नहीं किंतु तेरापतिहूं प्रथम बादशाहने चाहाथा कि अपना बिवाह तुम्हारे साथकरे परन्तु तेरे पिताने उसे स्वीकार न किया बादशाह ने क्रोधितहो प्रकटमें हास्यसे कुबड़ेको नियत किया कि उसकेसाथ बिवाहहो परन्तु वास्तवमें मुझे कि मैं तुम्हारासजातीहूं बिवाहकेनिमित्त भेजाहै तुमने देखा कि सम्पूर्ण मनुष्य उससे हास्यकरते थे अब मैंने उसे फिर अश्वशालामें भेजदियाहै तुम धैर्य्यरक्खो वह तुम्हें दिखाई न देगा मन्त्रीकुँवरि जो चिन्तामेंथी इसबचनकोसुन और अपने भर्त्ता

को सुन्दरदेख अत्यन्त प्रसन्न और हर्षितहुई और कहनेलगी कि मैं अत्यन्त शोच बिचारमेंथी कि सम्पूर्ण आयु मेरीदुःखमें उस कुबड़ेके साथ कटेगी परन्तु परमेश्वरका धन्यबादहै कि उससे मुझे बचाकर तुम्हारेसाथ बिवाह किया यहकह वह बदरुद्दीनके साथ सोरही बद्रुद्दीन भी उसके रूप अनूपको देख हर्षितहुआ और अपने बस्त्र और थैली सहित जिसे असहाक़ यहूदी से पाया था एक चौकीपर उतार रखदिया इतनी दातव्यपर भी वह थैली उसीभांति द्रव्यसे भरीरही यह केवल पिशाचकी मन्त्रविद्याथी फिर पगड़ी भी शिरसे उतार रात्रिका मुकुट पहिनलिया और केवल एकतंग पायजामा और मिर्ज़ई पहिनकर अपनी दुलहिनकेसाथ सोरहा जब कुछरात्रि शेषरही तब वह पिशाच फिर उस अप्सरासे मिला पिशाच ने कहा भोर होनेके पहिले उस मनुष्य को सोतेहुये वहांसे उठाकर किसी अन्य देश में पहुँचादे सो अप्सराने धीरेसे दूल्हेको दुलहिनके समीपसे उठाय दमिश्कनगरकी जामामसजिदपरलेजा लिटादिया और आप पिशाचसहित वहांसे चलीगई जब वहांकेबासी भोरकेतड़केकी अजां सुनकर नमाज़पढ़नेआये इसको रात्रिके बस्त्रपहिनेदेख अत्यंत बिस्मित हुये किसीने कहा कि यह अपनीस्त्रीसे रूठके आयाहै इतना अवकाश न पाया कि कपड़े पहिनता दूसरेनेकहा कि यहपुरुष सम्पूर्णरात्रि अपने मित्रोंकेसाथ मदिरा पीतारहा अब मदमत्तहो यहां आपड़ाहै और निद्राबशहो अचेत पड़ाहै तीसरा और कुछ कहता परन्तु किसी कोठीकबिदित न हुआ कि वह क्योंकर यहां आया वहकुछमनुष्योंकी चिल्लाहट और कुछ ठंढीहवा चलने से जगा और मनुष्यों को अपने चारों ओर देख आश्चर्य्यमें हुआ और अपनेको एक मसजिदके निकट जिसे कभी न देखाथा पाया अत्यन्त बिस्मितहो नेत्र खोल उनसे पूंछा कि मुझे बताओ मैं कौनहूं और तुम क्यों मेरे चारोंओर इकट्ठे होकर क्या बार्त्ताकरते हो एक मनुष्यने उस समूहमें से कहा हे मित्र! हमने तो अभी तुझे देखाहै और क्यातू नहीं जानता यह दमिश्ककी मसजिदका दरवाज़ा है बदरुद्दीनहसन ने कहा वाह परमेश्वर की माया कल मैं कैरूमें सोयाथा भोरको क्योंकर दमिश्कमें पहुँचा इस

पिशाच का डरावनी सूरत बनाना.



बचनको सुन बहुधा मनुष्यों ने कहा यह मनुष्य दयाकरने के योग्य है कि ऐसा सुन्दर पुरुष सौदाईहो और ऐसी बहँकी बातेंकरे उनमें से एकवृद्धनेकहा हे पुत्र! तुम क्या कहतेहो ऐसा नहीं होसक्ता कि रात्रि को तुमकैरूमेंहो और भोरकोदमिश्कमें बदरुद्दीनहसननेकहा मैं सत्यकहताहूं कलभोरको मैं बांसरे में था इसबचनके सुनतेही सम्पूर्ण मनुष्य ठट्ठामार हँसने और बड़ा शब्दकर कहनेलगे क्या तू विक्षिप्त वा निर्बुद्धि है वा इसमेंकुछ गुप्तभेदहै बड़ा पश्चात्ताप इसकी तरुण अवस्थापरहै ऐसाउत्तम मनुष्य विक्षिप्तहोजावे फिर एकनेकहा यह बात क्योंकरहोसक्ती है कि तुमकहतेहो एकमनुष्य उसीरात्रिकोकैरू में और उसकेभोरको दमिश्कमें जानपड़ताहै अभीतक तुम सोतेहो यह स्वप्नअवस्था की तुम्हारी वार्त्ता है बदरुद्दीनहसनने उत्तर दिया कि यह बातसत्यहै कलरात्रिको मेराबिवाह कैरूमें हुआ यहसुन मनुष्य अधिकहँसनेलगे फिर उसीमनुष्यने कहा तूने अवश्य स्वप्नदेखा है अभीतक तेरा वही बिचार है बदरुद्दीनहसन ने कहा मैंने स्वप्न नहीं देखा कल रात्रिको मेरी दुलहिनको सात प्रकारके बस्त्र पहिनाये गये और उसस्थानपर एककुरूप कुबड़ाभी था उन्होंने चाहा कि उस का बिवाहउसी दुलहिनसे करें मैं अत्यन्त बिस्मितहूं कि मेरे बस्त्र-गड़ी और धनकीथैली कैरूमें मेरेसाथथी क्याहुई यद्यपि वह इन बातोंको ऐसा कहताथा कि बिश्वासहो परन्तु किसीको बिश्वास नहीं आताथा और हँसतेथे निदान जब बदरुद्दीन अपना बृत्तान्त कह चुका तब वहांसेउठ नगरकी ओरगया उसके पीछे मनुष्य कहते जातेथे कि यह मनुष्य विक्षिप्तहै इस शब्दकोसुन और बहुतसे मनुष्य चारों ओर द्वारोंपर खड़ेहोके उसको देखते और हँसतेथे और कोई २ चिल्लानेवालों के साथ होकर शब्द करते और कहतेथे कि यह सौदाई है परन्तु उसकी बिक्षिप्तताका बृत्तान्त किसीको बिदित न था यहां तककि वहबेचाराघबराकर एकहलवाईकी दूकानपरगया और दूकान के भीतर जाकर अपनापीछा उनसे छुड़ाया। बिदितहो कि यह हलवाई प्रथम पश्चिमके धाड़ियोंका प्रधानथा जो परदेशियों को लूटाकरतेथे अब वह उस निंद्यकर्म्म को छोड़ दमिश्क में बास करताथा यद्यपि

उसकी मिलनसारी और शीलसे उस नगरके बासी उससे प्रसन्न थे परन्तु अब भी बहुतसे मनुष्य उससेडरते इसलिये उसकेभयसे सब भागगये तब उसने बदरुद्दीनहसनसे पूंछा तू कौनहै और यहां क्यों कर आया उसने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त जन्म से बिवाह पर्यन्त बिस्तार पूर्व्वक बर्णनकिया और कहा इस भोरको मैंने अपनेको इस नगरकी मसजिद्के द्वारे पृथ्वीपर पड़ापाया यह अद्भुतचरित्र कुछ भी बिदित नहीं कि क्योंकर मैं इसथोड़ेसमयमें उननगरोंकोलांघता हुआ यहांपहुँचा उसहलवाईने उसका बृत्तान्तसुन कहा तेरी कहानी अद्भुतहै इसबृत्तान्तको किसी से न कहियो मेरेसंतान नहीं है मैं तुझे अपनापुत्रबनाया चाहताहूं जोतूभी प्रसन्नहोवे और इसबिषयमेंमनुष्योंकेसन्मुख प्रतिज्ञाकरे फिर तू हर्षपूर्व्वक इसनगरमें फिरियोमेरापुत्र जान तुझे कोई न टोकेगा यद्यपि हलवाई की गोदमें बैठना उसको अनुचित और जातिहीनताकाकारणथा परन्तु उसआपत्तिकीदशा में उसने इसे उत्तमजान स्वीकार किया फिर हलवाई ने उसे उत्तम२ बस्त्र पहिनाये और बहुतसे मनुष्योंको इकट्ठाकिया और बदरुद्दीनहसनने अपनेको उनके सामनेभी उसका पुत्रठहरा फिर वह हलवाई साक्षियों सहित न्यायाधीश के निकट लेगया बदरुद्दीनने भी यही उसके सन्मुख कहा कि मैं इसका गोद बैठालाहुआ पुत्रहूं फिर वह उसके घरमें आनन्दपूर्वक रहनेलगा और दमिश्क में हसननाम से ख्यात होकर हलवाई का कार्य्य सीखा अब उस दुलहिन अर्थात् मन्त्रीकुँवरि का भी बृत्तान्त सुना चाहिये भोरको जब शमसुद्दीनमुहम्मदकी पुत्री जगी तो उसने बदरुद्दीनको छपरखट में न पाया जाना कि वह लघुशंका आदिको उठ बाहर गया शीघ्र फिर आवेगा वह दुलहिन उसके आनेकी बाट देखतीथी इतनेमें मन्त्री शमसुद्दीन मुहम्मद अत्यन्त चिन्ता और लज्जापूर्व्वक वहां आया और मुरझाकर अपनी पुत्रीका नामलेकर पुकारा दुलहिनने तुरन्त उठ किवाड़ खोला और हर्षपूर्व्वक अपनेपिताके हाथको चूमा मन्त्री ने उसे प्रसन्नपा आश्चर्य किया वह जानताथा यहभी इस लज्जासे दुःखको प्राप्त हुईहोगी मन्त्रीने कहा अभागी तू मेरे सम्मुख अपनी

प्रसन्नता प्रकट करती है दुलहिनने उत्तरदिया यहांपर वह कुरूप कुबड़ा नहीं और मैं उसकेसाथ बिवाही नहींगई वह यहां से कभी का भागाहै और मेराबिवाह किसी रूपवान् मनुष्य से हुआहै और मुख्य वही मेरा पतिहै शमशुद्दीन मन्त्रीने कहा तू क्या कहरही है क्यों तेरेसाथ वह कुबड़ा नहीं सोया दुलहिन ने कहा नहीं वह मनुष्य है जिसकी भवेंकाली और बड़े २ नेत्र हैं मंत्री उसके बचन का विश्वास न कर क्रोधितहुआ और कहा तूने दुष्टता से यह बिरुद्ध बचन कहे तेरापति वही कुबड़ाहै उसनेकहा मैं कुबड़ेको धिक्कारदेती हूं मैं उसकेसाथ नहीं सोई मेरापति मलमूत्रत्यागने बाहर गया है अभी आताहोगा उसे तुम देखलेना कि वह कैसाहै शमसुद्दीन बाहर निकल उसे ढूंढ़नेलगा कहीं न पाया परंतु एकओरदेखा वहकुबड़ा दीवारके साथलगा उलटाखड़ाहै पांवऊपर शिरनीचे जैसा वह पिशाच उसे खड़ाकरगयाथा उसके भयसे वह अटलखड़ाथा मंत्री ने उसे इसदशामें देख पूंछा तुझे इसभांति किसने खड़ाकिया कुबड़ेने मंत्रीका शब्द पहिचान उत्तर दिया आपने मुझसे अच्छी हँसीकी कि महिषकी स्त्रीकेसाथ मेराबिवाह ठहराया वह सुन्दरी तो एककुरूप पिशाचकी प्यारीहै मंत्री समझा कि यह बड़बड़ारहा है उसकी बातोंको सुनी अनसुनीकर कहा सीधा होकर खड़ा रह उस कुबड़ेने उत्तरदिया सूर्य्यउदयपर्य्यन्त मैं हिलभी नहीसक्ता क्योंकि मैं रात्रि को बड़ेदुःखमें पड़ा प्रथम तो एक श्यामबर्ण बिल्ली मेरे सन्मुखआई और क्षणमात्र में एकबड़ा महिष बनगई और जो कुछ उसने मुझ से कहा मैं नहीं भूला तुम मुझे इसीदशामें छोड़ अपना कार्य्य करो मंत्रीने उस कुबड़ेको पकड़ सीधा करदिया सीधाहोतेही वह कुबड़ा ऐसा भागा कि तनकभी न ठहरा और न पीछे फिरके देखा दौड़ता हुआ बादशाहके सन्मुख गया और अपने सम्पूर्ण वृत्तान्तको प्रकट किया बादशाह इस कहानी को सुन बहुत हँसा और मंत्री अपनी पुत्रीके निकटआय कहनेलगा क्या तू यहबातें सत्य कहती है कुँवरि ने कहा इन सबके विशेष अपनी सत्यताकी एक और साक्षी देतीहूँ वह यहहै कि इसकुरसीपर मेरेपतिके वस्त्ररक्खे हैं उनको तुम भली

भांति देखो उनमेंसेही कोई ऐसी बस्तु प्रकटहोगी जिससे तुम्हारे हृदयका संदेह मिटजावे फिर उसने बदरुद्दीनहसनकी पगड़ी उठाय मंत्रीकोदी मंत्रीने जब उसे चारोंओर घुमाकर देखा तो बिदित हुआ कि यह मवस्सलके बासियोंके मंत्रीकी पगड़ी है उसमेंसे एक बस्तु बस्त्रमें लपेटी हुई पाई उसने उसे खोला तो उस में एक पत्र जो नूरुद्दीन मंत्रीने अन्तसमय बदरुद्दीनहसन को लिख दिया था पाया बदरुद्दीन अपने पिताकी निशानीको अपनी पगड़ी में रखता था मंत्रीने वह पत्र देखतेही अपने भ्राताका लेख पहिचान और एक द्रव्य से भरीहुई थैलीपाई और उस थैली के बीच में इसहाक़ यहूदीके हाथका लिखाहुआ पत्र दृष्टिपड़ा उसमें यह लिखाथा कि मैंने ६००० ) रु० पर बदरुद्दीन के हाथ जहाज़ मोललिया मंत्री शमसुद्दीन इसविषयको पढ़ मूर्च्छित होगया और पत्र उसके हाथसे गिरपड़ा जब सुधि सँभाली लड़कीसे कहा तुम्हारी प्रसन्नता बहुत ठीकहै पति तुम्हारा चचेराभाई है फिर उसने अपने भ्राताके पत्रको उठा कईबेरचूमा और रोया उसकालेख यहथा कि मैं अमुक तिथि को कैरूसे बासरामें आया अमुक तिथिको बिवाहहुआ और अमुक तिथिकी मुहूर्त्तमें मेरापुत्र बदरुद्दीन उत्पन्नहुआ शमसुद्दीनने जब उन तिथियोंका मिलान किया तो अपने और अपने भ्राताकी तिथि मुहूर्त्तबिवाह आदिककी एकहीपाई और जिस तिथि मुहूर्त्तपर बदरुद्दीन उत्पन्नहुआ उसपर मंत्रीके घर कन्याहुई इस से वह अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ कि क्योंकर यह संयोग ठीक मिलगया इनगुप्त बातोंके जाननेसे सबशोक और दुःखभूलकर प्रसन्नहुआ और वह पत्र और पगड़ी बादशाहके सन्मुख लेगया वहभीदेख अत्यंत हर्षित और अचम्भे में हुआ और आज्ञाकी कि यह बृत्तान्त हमारी इतिहासकी पुस्तकों में लिखाजावे और शमसुद्दीन एक सप्ताह पर्य्यन्त अपने भतीजे के आनेकी राह देखतारहा जब वह इस समयान्तरमें न आया तब उसने सम्पूर्ण कैरूनगर में उसकी ढूंढ़की कहीं उसे न पाया इस से अत्यन्त शोचितहुआ और बिचारने लगा कि वह कहांगया और उसे क्याहुआ जो नहीं मिलता फिर उसने बिवाहके

मकानको सब विवाहकी वस्तुसहित बंदकिया और बदरुद्दीन के वस्त्र और पगड़ी को गठरियों में रक्षापूर्व्वक बांध एक मकान में रक्खा और कुलुफ लगाया और कईदिवस के पश्चात् मंत्रीकी पुत्री ने अपने को गर्भयुक्त पायाऔर नौमासके पश्चात् पुत्र उत्पन्नहुआ उस सुन्दर पुत्रके पालन पोषणार्थ बहुत से मनुष्य नियत किये और नाना ने उसका नाम अजब रक्खा जब अजब सात बर्ष का हुआ मंत्री ने उस लड़केका पढ़ाना घरमें उचित न जान उसे पाठशाला में जिसका गुरु अत्यन्त गुणवान् और बुद्धिमान् था सौंपा और दो अनुचर सेवा के निमित्त नियत किये जो प्रतिसमय पाठशाला में उसकी सेवा के निमित्त उद्यत रहते बहुधा अजब पढ़ लिख कर अपनेसहपाठियों से खेलाकरता जोविद्यार्थी अजबसे पदवी में न्यून थे सो वह सब अपने गुरुकी आज्ञानुसार उसकी अत्यन्त प्रतिष्ठा और सत्कार करते इस कारण अजब को अत्यन्त गर्व हुआ और बालकोंको दुर्वाच्य कहाकरता बहुधा मारता इससे वह सब उस की संगत से दीन होगये और इस बात को अपने गुरु से कहा गुरु ने उन्हें समझाया कुछ तुम इसके दुर्वाच्य का बिलग न मानो क्षमा-कियाकरो मैं उसे समझाऊंगा और अजब को एकान्त में लेजाय बहुत बर्जा परन्तु उसने अधिक उनको दुःख देना आरम्भ किया तब गुरुने विद्यार्थियोंसे कहा अजब मेरे समझाने से नहीं समझता दिन प्रदिदिन ढीठ होताजाताहै तुमको अब मैं एकबात सिखाताहूं जिससे वह तुम्हें फिर दुःख न पहुँचावेगा और शाला में आना छोड़देगा वह यहहै कल जब तुम और वह खेलने को इकट्ठेहो तो तुम सब उसे घेरना एक तुममेंसे यहकहे आजहम यह खेल खेलतेहैं कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने माता पिताकानाम बतलावे जो न बतावे तो हम उसे जानेंगे कि वह बर्णसंकरहै हमारे साथ खेलने योग्य नहीं निदान जब वह सब विद्यार्थी खेलनेको इकट्ठे हुये उन्होंने अपने गुरु के उपदेशानुसार वही खेल खेलना आरम्भ किया और अजब के चारोंओर होय एकने कहा आवो हमसब अपनी अपनी पारीपारी से पिताकानाम बतातेजावें और जो न बतासके उससेहम न खेलें

करेंगे उनसब बालकों ने कहा बहुत उत्तम हमसब इस खेल में प्रसन्नहैं फिर एक एक ने प्रत्येक बिद्यार्थी से नाम पूंछना आरम्भ किया और तुरन्त उत्तर पाया सबोंने ठीक ठीक अपने माता पिता का नाम बताया जब यही प्रश्न अजबसे किया उसनेकहा मेरानाम अजब है और मेरीमाताका नाम हसना और पिताका नाम शमसुद्दीनहसन जो बादशाहका मंत्री है उसके बचनको सुन सबबालक बोलउठे अजब तू क्या कहताहै यह तेरे पिताका नाम नहीं किंतु तेरे नाना का नाम है अजबने उन्हें कुवाच्यदे कहा क्या शमसुद्दीनहसन मेरा पिता नहीं उन सबोंने ठट्ठामार कहा वह तेरा पिता नहीं नाना है जो तुझे अपने पिताका नाम बिदितनहीं और तू न बतासका तुझे उचितहै आज से तू हमारेसाथ न खेलाकर यहकह वह सब वहांसे उठखड़ेहुये और उसे दुर्वाच्य कहने और हँसनेलगे अजब अत्यन्त लज्जितहो रोने लगा गुरू जो वहां समीपही यह सबबार्त्ता सुनताथा तुरन्त अजब के निकट चलाआया और कहा अजब क्या यह सत्य है शमसुद्दीनमुहम्मद तो तेरा पिता नहीं तेरा मातामह अर्थात् तेरीमाताका पिताहै और तेरेपिताका नाम हमें भी बिदितनहीं इतना जानताहूं बादशाह ने चाहाथा तेरी माता का बिवाह एककुबड़े अश्वपालकसेकरे परन्तु किसीपिशाचने उसे निकाल दिया और आप तेरी माताके साथ भोगकिया अब तू विद्यार्थियोंको दुःख न दियाकर अजब इस वचनको सुन तुरंत रोताहुआ अपनी माताके समीपगया और मासे कहा परमेश्वरके वास्ते मुझेबता कि मेरापिता कौनहै उसकी माताने उत्तरदिया हे मेरे प्रिय पुत्र ! तेरापिता शमसुद्दीन है जो तुझे नित्यप्यार कियाकरताहै अजबने कहा तू मुझ से असत्य कहती है वह मेरा पितानहीं किंतु तेरापिताहै मेरेपिता का नामबता मैं किसकापुत्रहूं उसकीमाता प्रथमसंगकी रात्रि और अपने पति के खोजानेको स्मरणकर रुदनकरनेलगी यह दोनों मा बेटेरोरहे थे इतने में मंत्री शमसुद्दीन आया और उनसे रोनेकाकारण पूंछा अजबकी माताने विद्यार्थियों से लज्जितहोने का हाल बिस्तारपूर्वक कहा मंत्रीभी उनकेसाथ रोनेलगा और अत्यन्त शोचयुक्तहो अपने

मनमेंकहा बड़ापश्चात्तापहै कि मेरी पुत्री के लज्जाकाहाल सम्पूर्ण नगरमें ख्यातहै और सब छोटे बड़े जानते हैं इसीभांति रोताहुआ बादशाहके सन्मुख गया और उसके चरणोंपर गिर बिनयकरकहा कि थोड़ेदिनों की मुझे छुट्टीमिले तो मैं अपने भतीजे बदरुद्दीनहसनको मुख्य २ नगरों और बिशेष बांसरामें जायढूंढूं क्योंकि इस सेवकको इसकुवाच्य सुनने से धैर्य नहीं है कि नगरके बासी कहते हैं कि मेरी पुत्रीने पिशाचसे पुत्र उत्पन्नकिया बादशाहभी बहुतपछताया औरउसकी इच्छा स्वीकारकी और स्थान स्थानपर राहदारी के पत्र अपने भृत्यों और बादशाहों के नाम इस बिषयमें लिखवाकर उसके साथ किये कि जिसनगर वा देशमें बदरुद्दीन नामक मेरेमंत्री का भतीजाहो उचितहै कि उससे इसकी भेंटकरादें और उसकी यथावस्थित सहायता करें जो मेरी यह आज्ञापालनकरेगा मैं उससे अतिप्रसन्नहूंगा शमसुद्दीनमुहम्मद अपने स्वामीकी इसदयालुता पर कृतज्ञहुआ और फिर उसके चरणोंको चूम बिदाहुआ और अपनीपुत्री और नवासे को साथले वहांसे निकला और बीस दिवसके अन्तरमें दमिश्क पहुँचा और नदीके तटपर जो उस नगरके नीचे बहतीथी डेरेखड़ेकिये और अपने सेवकों को आज्ञादी कि इसनगर में जावो और जो कुछचाहो बेंचो और मोल लो बहुतसे मनुष्य जो मिसरसे बस्तुलायेथे उन्होंने बेंचा और वहांकी उत्तम उत्तम बस्तु मोललीं और मंत्री बदरुद्दीन को ढूंढ़नेलगा एक दिवस अजब भी अपने कई सेवकोंके साथ दमिश्क नगरमें गया उस नगरके मनुष्य उसके दिव्यस्वरूप को देख अत्यन्त प्रसन्नहुये और उसकेबाहनके चारोंओर इकट्ठहुये अकस्मात् फिरते २ बदरुद्दीन की दूकान पर गये और उसदूकानपर उन्होंने बिश्रामकिया क्योंकि मनुष्यों के एकत्रहोने से घबरागये थे और वह हलवाई जिसने कि बदरुद्दीन को गोद बैठायाथा सो मरगयाथा और अपनाधन बदरुद्दीनकोदेगयाथा और बदरुद्दीनकी हलवाइयों में बड़ीप्रतिष्ठाथी क्योंकि वह मिठाई बनाने में बहुत प्रबीणथा बदरुद्दीन ने अपनी दुकानपर भीड़देखी और उससमूह में उसकी दृष्टि अजबपर पड़ी देखतेही प्रीति उत्पन्न

हुई और बेबशहो उसे देखनेलगा परन्तु प्रीतिकाकारण न जानता था यद्यपि नगरके बासी भी उसे प्रीतिकीदृष्टिसे देखते परन्तु बदरुद्दीनको अपने रुधिर से उत्पन्न होने के कारण अधिक मोह उपजा यहांतक कि बदरुद्दीन अपनी दूकान के कार्य को भूल गया और अजबके निकटजाय नम्रता और बिनयपूर्वककहा आप मेरी दूकान पर आकर कुछ भोजन कीजिये कि मैं तुमको भलीभांति देख लूं यहकहकर उसकेनेत्रोंसे अश्रुकी धारा बह निकली अजबके मन में भी बदरुद्दीनके देखने और उसके साथ बार्त्ताकरनेसे प्रीति उत्पन्नहुई और बेबशहोय चाहा कि उसकी दूकानपर बैठ उससे बार्त्ताकरे परंतु इसके सेवकोंने कहा तुम मंत्रीके पुत्रहो तुम्हें उचित नहीं कि हलवाईकी दूकानपर बैठ कुछ भोजनकरो बदरुद्दीन ने अजबसे कहा आप इस अपने बेशील सेवक का कहना न मानिये और इस की बातको न सुनिये और उसने सेवककी भी बहुतसी बिनती की और ऐसा राग गाया कि वहसुन हर्षितहुआ और उसकीबातकोमानगया उस रागकाअर्थ यहहै यद्यपि तुम बाहरसे श्यामहो परन्तु भीतर से अतिउज्ज्वलहो और कहा मैं कविहूं तुम्हारी प्रशंसा ऐसी करूंगा कि तुम संसार में बिख्यात होगे और बहुत से गीत उसने हब्शियोंकी प्रशंसा में कहे जिन्हें वह हब्शीसुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और अजबको उसकी दूकानपर लेजाकर बैठाया बदरुद्दीनहसन उसे अपनी दूकानपर बैठादेख हर्षितहुआ और कहा मैं मलाई अच्छी जमाताहूं मेरी माताके सिवाय जिसने मुझे सिखाया है संसारमें मेरेसमान कोई नहीं जमासक्ता विश्वासहै कि तुम उसेखाकर प्रसन्नहोगे मुझसे बहुतदूर दूरसे मनुष्य मँगवातेहैं यह कह उसने कड़ाही से मलाई निकाल अनारका अरक और शक्करडाल अजब के सन्मुखरक्खी अजब उसे खाकर बहुत प्रसन्न हुआ फिर उस सेवकको खिलाई उसनेभी उसे भोजनकर प्रशंसाकी और प्रसन्नहुआ फिर जब वह दोनों मलाई खाचुके बदरुद्दीनहसन अजब को बेर बेर देखता और मनमें बिचारता कदाचित् उस रूपवान् छविधाम कोमलांगी स्त्री से जिससे शीघ्रही बियोग हुआ उससे ऐसा सुन्दर

पुत्र उत्पन्नहोता यह शोच रोता फिर बदरुद्दीनहसन ने अजब से पूछा तुम्हारा आना बस नगर दमिश्कमें क्योंकर हुआ अभी कुछ अजब ने उत्तर न दियाथा कि उस सेवकने कहा बड़ी देरहुई शीघ्र चलो यह सुन अजब उठचला बदरुद्दीन हसन जिसका अजब के देखनेसे मन न भराथा अपनी दूकान बन्दकर उनकेपीछे होलिया यहांतक कि उनकेसाथ दौड़ताहुआ नगरद्वारपर्य्यंत पहुँचा सेवक उसे साथ आते देख अत्यन्त बिस्मित हुआ और क्रोधकर पूंछा तू क्यों हमारेसाथलगा चलाआताहै बदरुद्दीनने बहानाकर कहा मेरा कुछ कामहै इस निमित्त इधरसे होकर वहां जाताहूं इस बचन से उस सेवकको बोध न हुआ और अजबसे कहा इसीवास्ते मैंने तुमको हलवाईकी दूकानपर नहीं बैठने दियाथा अब पश्चात्तापकरताहूं क्यों मैंने तुमको बैठनेकी आज्ञादी क्योंकि मुँहलगाया हलवाई हमारेपीछे चलाआताहै अजबने उसे उत्तरदिया वह अपनेकार्य्य को जाताहै मार्ग्गमें सभी चलतेहैं हम किसीको मना नहीं करसक्ते फिर पीछे न देखकर तुरन्त डेरोंकी ओरचले जब निजस्थानपर पहुँचे अजबने फिरकेदेखा कि हलवाई पीछे उसके लगा चलाआता है डरा ऐसा न हो कि कहीं मेरे नानाको बिदित हो कि अजबने उसकी दूकानपर मलाई खाई है तो यह बात उसकी अप्रसन्नता का कारणहोगी इसवास्ते उसने एकबड़ासा पत्थर उठा बदरुद्दीनहसन के माथेपर मारा कि उसका माथा लहूलुहान होगया और फिर तुरन्त अपने सेवकसहित डेरेमें घुसगया सेवकने बदरुद्दीनको समझा बुझाकर फेरा वह उसीदशा में नगरको लौटआया और अपने को धिक्कार देने लगा कि क्यों अपनी दूकान छोड़ ऐसोंकेपीछे गयाथा यदि मुझसे उसे शंका न होती तो कदापि मुझे इस निर्दयता से न मारता निदान वह अपने घरमें आया और घावपर पट्टी बांधी फिर दूकानपर गया उसका चचा अर्थात् मंत्री शमसुद्दीन तीन दिवस ठहर और नगरों में अर्थात् हलब, नारदीन, मवस्सल सरवर आदिमें गया और प्रत्येक नगरमें अपने भतीजे को ढूंढ़ता हुआ बांसरा में पहुँचा और वहां के बादशाहसे भेंटकी बादशाह ने

उसपर बहुत कृपाकर आगमन का कारण पूंछा शमसुद्दीनमुहम्मद ने बिनयकी मैं नूरुद्दीन अपने भाईके पुत्र बदरुद्दीनको ढूंढ़नेआ-याहूं यदि कुछ आपको उसका बृत्तान्त बिदितहो तो मुझेबतलाइये बादशाहनेकहा बहुत दिनहुये नूरुद्दीन कालबशहुआ और उसका पुत्र बदरुद्दीन अपने पिताके मरनेके दो मास पश्चात् यहांसे कहीं चलागया उसका कुछभी बृत्तान्त मुझे मालूमनहीं बहुत ढूंढ़नेपर भी उसका मुझे कुछ पतानहींमिला परन्तु उसकीमाता हमारे मंत्री की स्त्री अबतक जीतीहै शमसुद्दीनमुहम्मदने अपनी भावजसे भेंट करने और उसे अपनेसाथ मिसरमेंलेजानेकी आज्ञाली और दूसरे दिनतक उसकाबासस्थान पूंछकर अपनीपुत्री और नवासेसहित-गया वह एक बहुतअच्छेघरमें रहतीथी शमसुद्दीनमुहम्मदने प्रथम उसकेघरमें द्वारपरजाकर नूरुद्दीन का नाम जो एकपाटपर सुनहले बर्णोंमें लिखाथा चूंबा फिर उसने उनमनुष्योंसे जो उसघरमें रहते थे अपनी भावजको पूंछा कि वह कहांहै उन्होंने कहा कि वह बहुधा अपनेपतिकी क़बरपर रहती है और अपने पुत्रके चित्रको देखकर जो बहुतदिनोंसे गुप्तहोगयाहै प्रतिदिन रोती और नानाप्रकारकेकष्ट सहती है निदान शमसुद्दीनमुहम्मदने घरभीतर प्रवेशकर सम्पूर्ण बृत्तान्त बिवाहादिका अपनी भावजसे कहा और अपनीपुत्री और नवासे को दिखाया वहस्त्री कि बदरुद्दीनके मिलने से निराशथी इस बृत्तान्त और अपने बहूबेटेके देखनेसेहर्षितहुई उससमय उसेबिश्वास हुआ कि मेरापुत्र जीताहै फिर उठ अपनी बहू और अजबको कंठ से लगाया और प्यारकिया और अजबके रूप और मुखको अपने पुत्रके समानदेख अत्यन्तप्रसन्नहुई फिर उसे अपने हृदयसे लगाय बदरुद्दीनहसनको स्मरणकर रुदनकरनेलगी शमसुद्दीनमुहम्मद ने कहा हे सुन्दरी! यहरोनेका समय नहीं किंतु हर्षका है अब तुम इस शोकको अपने मनसे परित्यागकर मेरेसाथ मिस्रको चलो मैंने बाद-शाह से तुम्हें अपनेसाथ लेजाने की आज्ञा लेली है और मुझे परमे-श्वरसे परिपूर्ण आशाहै कि बदरुद्दीनहसन तुम्हारापुत्र अवश्य हम को मिलेगा और मेरी पुत्री के बिवाहका अद्भुतचरित्र इतिहास की

पुस्तकों में लिखनेकेयोग्यहै उसकीभावज इसवृत्तांतको बिस्तारपूर्वक सुनकर प्रसन्नहुई और तुरन्त यात्राकी तय्यारीकी चलते समय शमसुद्दीनमुहम्मद फिर वहांके बादशाहके पाससे बिदाहोने गया बांसराके बादशाहने मिसरके नरेशकी प्रसन्नता के लिये दिव्य सौगातें और उत्तम २ बस्त्र और पारितोषिकादि दे उसे बिदाकिया शमसुद्दीन मुहम्मद फिर अपने कुटुम्बसहित दमिश्ककी ओर चला और उस नगरमें पहुँचकर नगरके बाहर डेराकिया और बादशाह से भेंट करनेको वहांकी बहुत अच्छी २ बस्तुलेनेको तीनदिनतक ठहरा और बहुमूल्य और उत्तम २ बस्तु आदिके देखने में जो व्यापारी वहां के लाते थे प्रवृत्त हुआ अजब ने अपने नाना को उक्तकार्य्य में लगादेख अपने रक्षक सेवकों से कहा मुझे नगर में लेचलो कि मैं भलीभांति देखूं और उस हलवाई को जिसे पत्थरसे माराथा उसका हाल मालूमकरूं क्योंकि उस बेर मुझे इतना सावकाश न मिला था कि अच्छे प्रकार देखता वह सेवक स्वीकार कर उसकी माता की आज्ञालेने उपरांत नगरकी ओर गया और फिर दोसी नामक नगरके दरवाज़ेसे होकर चौकमें जहां बहुत उत्तम बस्तु बिकतीथी लाया और धीरे धीरे देखते भालते मध्याह्न समय में बदरुद्दीन हसन की दूकानपर पहुँचा और बदरुद्दीन हसन को अपने कार्य्यमें प्रबृत्त देख प्रणामकिया और कहा तुम मुझे पहिचानतेहो और कुछ तुमको स्मरणहै प्रथमभी तुमने मुझे देखाथा बदरुद्दीनहसनको अजब के इस बचन सुनने और उस की ओर देखतेही अति प्रीति उमँगी और पहलेकीसी उसकी दशाहुई और कुछ कहने सुनने बिना विह्वलहो खड़ारहगया थोड़ीदेर के पश्चात् नम्रता और विनयपूर्वक कहा हे स्वामिन्! अपने सेवकसहित एकक्षण मेरी दूकानपर ठहरो और थोड़ी सी मलाईखाओ पश्चात्तापहै कि मैंने आपको नहीं देखा नहीं तो मैं आपको अवश्य ठहराता अजबने कहा यदि तुम पहलीबेरकी भांति हमारापीछा न करो तो हम तुम्हारी दूकानपर बैठतेहैं और हम कल भी तुम्हारी दूकानपर आवेंगे किन्तु जबतक मेरानाना यहां ठहराहै हम प्रतिदिवस एकबेर तुम्हारे निकट आया करेंगे बदरुद्दीनने कहा

जैसा आपकहते हैं वैसाहीकरूंगा तुम्हारी आज्ञाका कदापि उल्लंघन न करूंगा फिर जब अजब अपने सेवकों सहित बैठगया बदरुद्दीन ने मलाई के प्याले उनके सम्मुख रक्खे अजबने बदरुद्दीन कोभी अपने साथ बैठाया उन्होंने परस्पर भलीभांति मलाई भोजनकी और भोजन के उपरान्त अजब ने प्रीतियुक्त बार्त्ताकर ताकीद कर कहा अपनी प्रीति कदापि प्रकट न करना और हमारेपीछे जानेकी इच्छा न करना बदरुद्दीनने कहा मैं आपके कहने के बिपरीत न करूंगा बदरुद्दीनने मलाई न खाई किन्तु अपने अतिथियोंका सत्कार करतारहा जब अजब भोजन करचुका बदरुद्दीन उसके हाथ धुलाकर एक अति उज्ज्वल वस्त्र हाथ पोंछने के लिये लेआया फिर उसने चीनी के पात्रमें शरबत बनाया और क़न्दके ओलेडाल अजबको दिया और कहा यह गुलाब का शरबत अत्यन्त मिष्ट और स्वादिष्ठहै केवल इस नगरमें ऐसा मेरी दूकानपर बनताहै अजब उसेपानकर अत्यन्त हर्षित हुआ फिर बदरुद्दीनने उसके रक्षककोभी दिया वह उसे एकहीबेर पीगया फिर अजब और उसका सेवक बदरुद्दीन की कृतज्ञता कर अपने डेरेकी ओर चले और शमसुद्दीन के डेरेमें पहुँचे अजब और उसका रक्षक अपनी दादीके डेरेमेंगये दादी उसे अपने कण्ठसेलगा रोई और कहा परमेश्वर मुझे वह दिन दिखाये कि मैं तुम्हारे पिता को देखूं और उसेभी अपने हृदयसे लगाऊं फिर उसकी दादी रात्रि को भोजनके हेतु मेज़पर बैठी और अजब कोभी अपने साथ बैठाया और उसने इधर उधर की बातें पूछीं और अजब नगर के सैर तमाशे आदि का वृत्तान्त जो अपने रक्षक सहित देखआयाथा उस से कहनेलगा फिर उसकी दादीने उसे खानेको कहा अजबने न खाया और कहा इस समय मुझे कुछ इच्छानहीं फिर उसने एक टुकड़ा मलाई का उसे और उसके रक्षक को दिया यद्यपि यह मलाई उसने आपही जमाई थी परन्तु वह पेटभर खाआये थे सेवक और अजब ने उसकीओर दृष्टिभी न की परन्तु दादीके कहनेसे उसे अपने सम्मुख रख लिया उसकी दादी ने उस के न खाने से अत्यन्त आश्चर्य किया और कहा इस उत्तम मलाईको जो मैंने अपने हाथसे बनाईहै

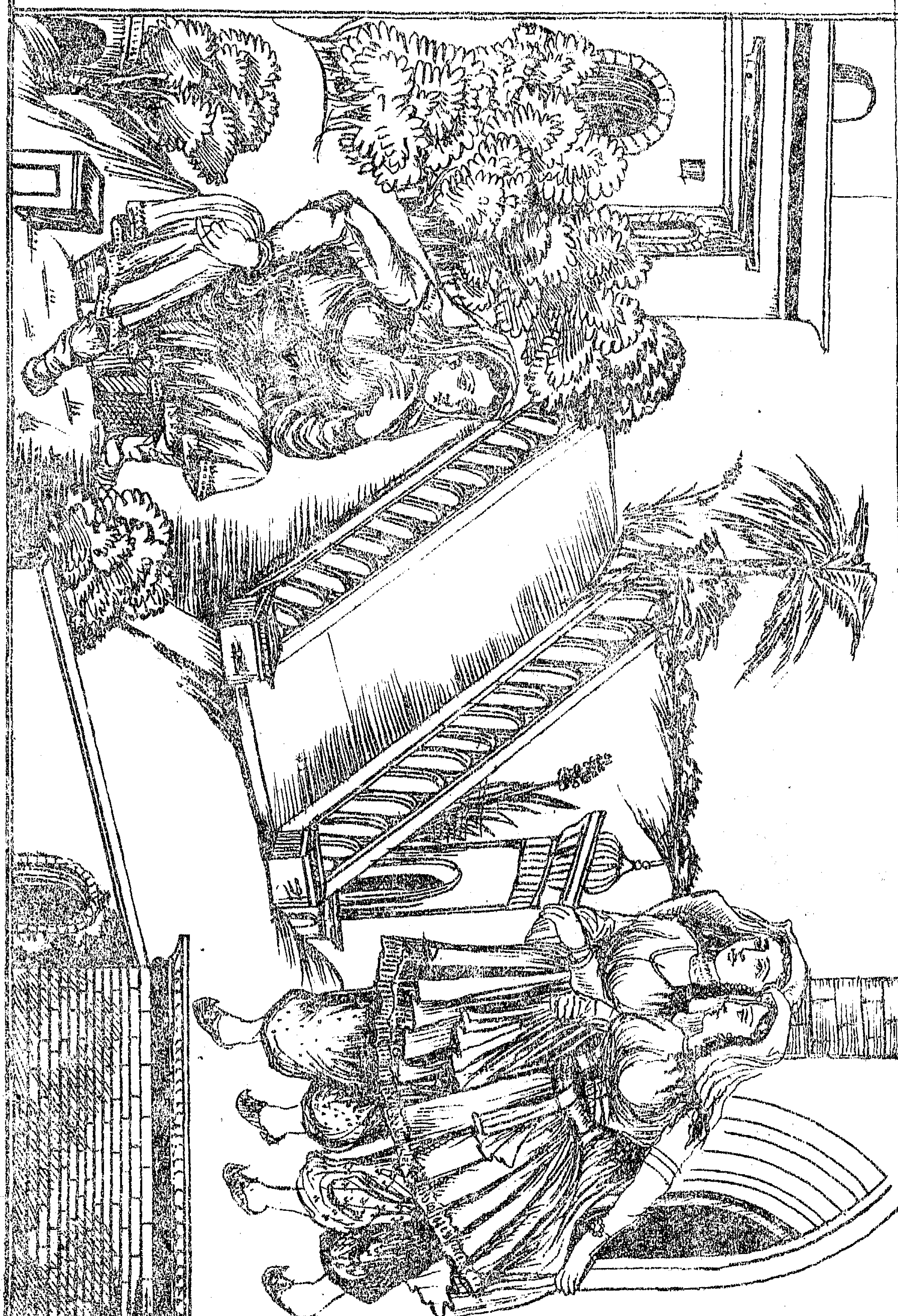
क्योंनहीं खाते इसभांतिकी मलाई केवल मैं और मेरापुत्र बदरुद्दीन जो तुम्हारा पिताहै और मैंनेही उसे बनाना सिखाया है संसार भरमें कोईनहीं बनासक्ता अजबने कहा यदि मेरा अपराध क्षमाहो तो बिनयकरूं इसनगरमें एक हलवाईहै मैंने उसकी दूकानपर बैठ-कर मलाई खाईहै उससे तुम्हारी मलाई उत्तम न होगी यह बचन सुन उसकीदादी उस रक्षकसे अत्यन्त अप्रसन्नहुई और कहा क्योंरे शाबान तू मेरे बच्चेकी कैसी रक्षा करताहै उसने हलवाईकी दूकान पर बैठ भिक्षुकोंकी भांति भोजन किया शाबान ने उत्तर दिया हम केवल उसकीदूकानपर सुस्तानेको बैठेथे हमने कुछखाया पिया नहीं अजबने उसके बिपरीतिकहा हम उसकी दूकानपरगयेथे और मलाई भी खाई यह सुन वह अधिक शाबान पर क्रोधित हुई और उसी कोप में शमसुद्दीनमुहम्मदके डेरेमेंजाकर उसने इस वृत्तान्तको कहा शमसुद्दीनमुहम्मद अपनी भावज के डेरेमें आया और शाबान पर अति कोपितहुआ और कहा क्या यहसत्यहै शाबानने इन्कार किया परन्तु अजबने अपनेनानासेकहा हमदोनोंनेउसकीदूकानपरबहुतसी मलाई खाई इससे हमें इससमय भोजनकरनेकी इच्छा अपनीदादी के साथ न हुई इसके बिशेष उसहलवाईने हमें शरबतभी पिलायाथा शमसुद्दीनमुहम्मदने शाबानसेकहा क्योंरे तू मुझसे असत्य कहता है उसकी दूकानपर नहींगये न वहांबैठ कुछ खाया शाबान फिर भी मन्त्री के भयसे इन्कार किया और झूठी सौगन्दखाई कि हमने उसकी दूकान पर कुछ नहीं खाया शमसुद्दीनमुहम्मदने कोपित हो उसे भलीभांति दण्डदिया यहांतक कि बेचारा शाबान मानगया और कहा उस हलवाईकी मलाई अजबकी दादीसे अधिक स्वादिष्ठ थी अजब की दादी ने अप्रसन्नहो कहा तू असत्य कहता है कभी उस की मलाई मेरी से उत्तम न होगी फिर उसने शाबान से कहा मेरेवास्ते तू वही मलाईला सो वह बदरुद्दीन की दूकान पर गया और उसे कुछ द्रव्यदे कहा मुझे मलाई दे मेरी स्वामिनीने मँगवाई है बदरुद्दीन ने उसे एक पात्र में मलाई दे कहा यह मलाई बहुत उत्तम बनी है इसको केवल मैं और मेरी माता बनासक्ते हैं शाबान

ने उसे लाकर अजब की दादी को दी वह खातेही मूर्च्छित होगई शामसुद्दीन मुहम्मद इस दशा को देख अत्यन्त दुःखित हुआ और उसके मुंहपर गुलाबनीर छिड़का जब वह चैतन्य हुई कहनेलगी यह मलाई अवश्य मेरेपुत्र बदरुद्दीनकी बनाई हुईहै शामसुद्दीनको जब भलीभांति बिदितहुआ कि इसका बनानेवाला बदरुद्दीन हसन है अत्यन्तहर्षित और प्रसन्न हुआ परन्तु प्रकट में अपनी भावजसे कहा क्या और कोई ऐसा संसारमें तुम्हारे पुत्रके सिवाय नहीं बना सक्ता उसकी भावजनेकहा निस्संदेह इसमलाईको सिवाय बदरुद्दीन के और किसीने नहींबनाया मंत्रीने कहा ज़रा ठहर मैं उसे बुलवाता हूं तुम और तुम्हारीबहू जिन्होंने उसेदेखाहै पहिचानलेना यदि वही है तो हम उसे तुरन्त अपने साथलेकर कैरूमेंचलें यहकह शामसुद्दीन मुहम्मद वहांसे अपने डेरेमें आया और पचास सिपाहियोंको आज्ञा दी तुमएकएक लाठी अपने हाथमेंलो और शाबानके साथ यहांके बासी हलवाईकी दूकानपर जाओ जब वहां पहुंचो तो जो बस्तु उस की दूकानपर पाओ उसे तोड़डालो जो वह तुमसे उसका कारणपूंछेतो कुछ न कहना किंतु उससे पूंछना तूनेही वह मलाई बनाईहै जो शाबान लेगयाहै और तुरन्त उसे बांध मेरेनिकट लेआना परंतु उसे न मारना और न किसी भांतिका दुःखदेना तुरंत जाओ देर न करो सो पचास सिपाही मंत्रीकी आज्ञानुसार शाबान के साथ बदरुद्दीन की दूकानपरगये और सब बरतन जो उसकी दूकान पर रक्खे थे तोड़फोड़ चूर्ण करदिये और मिठाई आदि फेंक फांकदी बदरुद्दीन इस दशाको देख अत्यन्त दुःखित हुआ और नम्रतापूर्वक उनसे पूंछा भाइयो मैंने कौनसा तुम्हारा अपराध किया जिससे दण्डदेतेहो उन्हों ने कहा वह मलाई जो तुमने शाबान के हाथ बेंचीथी तुम्हींने बनाई है वा नहीं बदरुद्दीन ने कहा हां मैंने उसे अपने हाथ बनाई थी और मैं प्रतिज्ञा करताहूं इस नगरमें सिवाय मेरे और कोईवैसी नहीं बना सक्ता इस बचनके सुनतेही उन्होंने चारों ओर से उसे घेरलिया और उसकी पगड़ी से उसके हाथपांव बांधलिये बाज़ारके मनुष्य यहदशा देख इकट्ठेहुये और चाहा कि शामसुद्दीन मुहम्मदके सेवकों से बदरु-

द्दीनको छीनलें परन्तु अशक्तथे निदानमंत्रीके डेरेमें लेगये शम्सुद्दीन उससमय दमिश्कके बादशाहके सम्मुख गयाथा कि उसे बिदितकरे कि जिसकी ढूंढ़में निकलाथा उसे मैंनेपाया परन्तु थानेदारों को आज्ञा हो कि मेरे काममें कोईबाधक न हो किन्तु यथोचित मेरी सहायता करें जब शम्सुद्दीन अपनेडेरे में आया सिपाहियोंने बद्रुद्दीनको मन्त्रीके सम्मुखला खड़ाकिया बद्रुद्दीनने रोकेमन्त्रीसे पूछा स्वामी मैंने आपका कौनसा अपराधकिया जिससे मेरी दूकान आपने लुटवाई और मुझे इसअप्रतिष्ठा और दुर्गतिसे पकड़ बुलाया मन्त्रीने उत्तर दिया तू वही है जिसने अपने हाथसे मिठाई बनाकर मेरेसेवकके हाथ बेंची बद्रुद्दीनहसन ने कहा निसन्देह मैं वही हूं शम्सुद्दीन मुहम्मदने कहा यहीतेरा अपराध है इसवास्ते मैंने तुझे पकड़वाय बुलवाया अभी तुझे कुछदण्ड नहीं मिला इससे अधिक तुझे दण्डदूंगा किन्तु तेरेप्राण लूंगा तूने ऐसी बुरीमलाई मेरेवास्ते भेजी बद्रुद्दीन ने कहा जोकोई बुरीमलाई जमावे वह अपराधी होताहै मन्त्री ने कहा निस्सन्देह सो इधर यहीवार्त्ता होरहीथी उसकी माता और स्त्री अपने डेरोंमेंसे उसेदेख पहिचानकर मूर्च्छित होगईं जब सुधिहुई तब उन्होंने दौड़कर बद्रुद्दीनसे लिपटनाचाहा परन्तु प्रथमसे शम्सुद्दीन ने उनसे यह प्रणकिया था जबतक मैं न कहूं तुम उसके निकट न जाना न उसको अपनादर्शनदेना निदान वह स्त्रियांसन्तोषरख चुप होरहीं मंत्री उसीदिन तैयारीकर भोरको वहांसे मिसरकी ओर चला और बद्रुद्दीन को सन्दूकमें बन्दकर ऊंटपरलाद अपनेसाथ लेचला सन्ध्या को उसे निकालते और फिर उसे बन्दकर रखतेइसी भांति मन्त्री नगरके निकट पहुँच एक स्थानपर उतरा और उसे अपने सम्मुख निकलवाकर बैठाया और उसके सम्मुख एक बढ़ई को आज्ञा दी एक लकड़ी शूलीकी तुरन्त बना बद्रुद्दीन ने मन्त्री से पूछा यह किसके निमित्त शूली बनती है मन्त्री ने उत्तर दिया कलरात्रि को नगरमें प्रवेश करूंगा और तुझे इस काष्ठपर बैठाय सम्पूर्ण नगरमें फिराऊंगा और तेरेआगे एक मनुष्य यह डौंड़ी पीटता जावेगा कि यह उस मनुष्यका दण्डहै जिसने मलाईमें काली मिरच नहीं

डाली बदरुद्दीन यह बचन सुन रोनेलगा और कहा मैं कल इस दुर्दशासे मलाई में काली मिरच के न डालने के कारण माराजाऊंगा इतना कह मलका शहरज़ादने शहरयार से कहा खलीफ़ा हारूंरशीद यद्यपि गम्भीर था मन्त्री जाफ़रसे यह वृत्तान्त सुन ठट्ठामार हँसा बदरुद्दीनहसनने कहा हे परमेश्वर! कहीं ऐसाभी होता है और किसीने सुनाहै कोई मनुष्य इतने अपराध के कारण लूटलिया जावे और पकड़कर शूली दियाजावे इतना अन्याय केवल इतनेही अपराधपर कि मलाई में कालीमिरच क्यों न डाली मुसल्मानों के न्यायके बिरुद्ध है इसीभांति की बातेंकर रुदन करता और कहता ऐसी मलाई बनाने पर धिक्कार है इससे मैं संसारमें उत्पन्न न होता इसीसमय परमेश्वर ऐसाकरे कि मैं मरजाऊं कि ऐसी अप्रतिष्ठा के मरने से छूटूं यह बिचारकर बदरुद्दीन रोताथा इतने में लकड़ी बना के मंत्रीके सम्मुख लाईगई और उसके शिरपर लोहेकी सलाख लगाई जिसे देख बदरुद्दीनहसन बहुत घबराया और कहनेलगा न तो मैंने किसीकी चोरीकी न किसीको मारा और न कुछ अपने धर्म्म में बिपरीतताकी केवल इतनीही बातके वास्ते कि मैंने मलाई में कालीमिरच न डाली मुझे शूलीदेंगे फिर जब सन्ध्याहुई मंत्री शम्सुद्दीनने आज्ञाकी कि इसे उसी संदूक़में बन्दकरो और उसकी ओर देख कहा तू आज रात्रिको इसीमें रहैगा कल मैं तुझे नगरमें लेजा बधकरूंगा सो उसे संदूक़में बन्दकिया और उसी ऊंटपर चढ़ाया और मन्त्री अपने बाहनपर चढ़ा और आज्ञादी कि इस ऊंटको मेरेआगे लेचलो सो वह बड़ी धूमधाम से कैरूमें पहुँचा और अपने घरमें प्रवेशकर आज्ञादी इस संदूक़को उतारो परन्तु खोलना नहीं जब सब असबाब उतारागया मन्त्री ने अपनी पुत्रीको एकांत में लेजाय कहा परमेश्वर का धन्यबाद है तुम्हारा पति मिला आज तुम उसीभांति अपना शयनस्थान अलंकृतकरो जैसाकि बिवाहके दिन सजाहुआ था और प्रत्येक बस्तुको उसी मकान में उसी भांति रक्खो जिसप्रकार उसरात्रिको रक्खीगईथीं जोकुछ तुम्हें भूलाहोगा मैं तुम्हें स्मरण करादूंगा निदान उस मंत्रीकी पुत्रीने अपने पिताकी आज्ञा

चित्र ज़ेबदा का अमीना और साक़ी को फटेहालों देखना ॥



पालनकी और प्रत्येक बस्तुको उसी स्थानपर रक्खा उसी भांति सिंहासनबिछायागया और मोमकीबत्तियांजलाईगईं जब वहमकान पूर्व कीभांति अलंकृतहुआ शम्सुद्दीनमुहम्मदने आपवहांजायबदरुद्दीन के वस्त्र जिसेवह बिवाहकीरात्रिको पहिनेथा उसीद्रव्यकी थैलीसहित रक्खे जैसा कि बदरुद्दीन रखकर अपनी स्त्रीके साथ सोयाथा तदनन्तर मन्त्रीने अपनी पुत्रीसे कहा तू रात्रिके चौथपहिर और उसी दिनके समान शय्यापररह जब बदरुद्दीनहसन इस मकानमें आवे और तुझे जगावे तू उसके आनेका आश्चर्य न करना किंतु अपने समीप उसे सुलाना और भोर को जो कुछ परस्परवार्त्ताहो अपनी सास और मुझसे कहना इतने में भोरहुआ मलका शहरज़ाद इस कहानी को यहीं तक छोड़ चुपहोरही फिर जब रात्रिहुई बादशाहको इस कहानी की लालसा से रात्रिभर निद्रा न आई और नियमित समय पिछले पहर आपने मलकाको जगाया और कहा उस चरित्रकी समाप्ति में क्या हुआ मलका इस भांति वर्णन करने लगी कि मंत्री शम्सुद्दीनने आज्ञादी कि केवल इस मकान में दो वा तीन बांदियांरहें जब रातहुई और अनुमान प्रहर रात्रि के व्यतीतहुई मंत्री ने बदरुद्दीनहसन को सन्दूकसहित उस मकान के समीप भिजवाया और सन्दूक से निकाल मिरज़ई आदिक वस्त्र पहिनाये और मकान के भीतर छोड़ बाहर से बन्द करने को आज्ञा दी बदरुद्दीनहसन दुःख के कारण ऐसा अचेत सोयाथा कि मंत्री के सेवकोंने उसे सन्दूक से निकाल नंगा किया और उसे मकान में लेगये तदनन्तर जब वह मकान में पहुँच कर जगा उसने अपने को एकांत उस कोठे में पाया और अपने चारों ओर बिवाह की सामग्री देख अपने बिवाह की रात्रि स्मरण करके उसे पहिंचाना कि यह वही मकान उसी स्त्रीका है जिसमें मैंने बादशाह के कुरूप अश्वपालक को देखा था अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और उसके भीतर अपने वस्त्र देखे कि उसी भांति रक्खे हैं इस से वह अधिक विस्मित हुआ कहने लगा हे परमेश्वर! यह क्या बातहै क्यामैं स्वप्न अवस्था में देखताहूं वा जाग्रत्में इतने में उसकीस्त्री ने मसहरीसे

शिर निकाल और मुख बदरुद्दीनहसनकी ओरकर बड़े प्यार से कहा हे मेरे प्रियपीतम! तुम किवाड़पर खड़े क्या करतेहो शय्यापर आय आनंदकरो जब मैंने जगकर तुम्हें शय्यापर न पाया अत्यन्त आश्चर्य में हुई और चिरकाल पर्य्यन्त जागती और तुम्हारे आगमन की बाट देखती रही बदरुद्दीन इस बचनको सुन अत्यन्त हर्षितहुआ वह शोक और भय जो उसे मन्त्री से प्राप्तहुआ था भूलगया और उसके मुखका वर्ण बदल गया और उस स्त्री को वैसाही रूपवान् मनहरण पाया जैसा कि बिवाहकी रात्रिको देखाथा फिर मकानके भीतर गया और मन में शोचनेलगा क्योंकर दशवर्ष की अवधि एकरात्रि में बीती तदनन्तर उस स्थान पर गया जहां उसके बसन और द्रव्यकी थैली रक्खीथी उसे वहीं और उसीभांति रक्खाहुआ पाया कि कुछभी अन्तर नहीं था बड़े शब्दसे कहनेलगा हे परमेश्वर! यह क्या बातहै जिसे न तो मैं कुछ समझसक्का और न बिचारसक्काहूं उस सुंदरीने दूसरीबेर कहा हे पते! शय्यापर आके शयनकरो खड़े क्या शोचतेहो इस बचन को सुन शय्याके समीप खड़ा हुआ और कहा हे सुन्दरी! सत्य कहो मुझे तुम से बिछुड़े कितना समयान्तर हुआ होगा उसने कहा मुझे तुम्हारे इस प्रश्न से अत्यन्त आश्चर्य हुआ अभी तो तुम सोते हुये शय्यापर से उठे बदरुद्दीनहसन ने कहा तुमक्या कहतीहो हां यह सत्य है कि एक रात्रि में तुम्हारे साथ सोया परन्तु इसे दशवर्ष का समयान्तर हुआ और तबसे मैं दमिश्क़ में था कुछ नहीं जानाजाता यह वहीरात्रि है जिसमें मेरा बिवाह तुम्हारे साथ हुआ वा नहीं जो वही रात है तो दशवर्ष पर्य्यन्त मैं क्यों तुम से बिछुड़ारहा अबतुम मुझे बताओ मैं कौनसी बातको सच जानूं दशवर्षसे बियोग को स्वप्न समझूं वा इस बात को उसकी पत्नीने उत्तरदिया क्यातुम विक्षिप्त होगयेहो कि तुम यहकहतेहो कि मैं दमिश्क़में था बदरुद्दीन इसबचनकोसुन हँसा और कहा यह बड़ी हँसी की बातहै क्योंकि दमिश्क़ के द्वारपर यही बसन पहिने पड़ाथा और वहांके वासी मुझे देखहँसते और ठट्ठामारते यहां तक कि मैं वहांसे भागा और एकहलवाईकी दूकानपरजाछिपा उसने

बदरुद्दीन का कि वह अपने मकान और उसकी सामग्री को देखता है .



मुझे गोद बैठाया और अपना जातिकार्य्य सिखाया और अन्तसमय मुझे अपनाधन सौंपा सोमैं उसीदूकानपर बैठ दशबर्षपर्य्यन्त काल-क्षेपकरतारहा एकमंत्री कहींसे उसनगरमें आया उसकापुत्र अत्यन्त स्वरूपवान् और सुकुमारथा जिसके देखने से मुझे प्रीति उत्पन्न हुई एकदिन वह अपने सेवकसहित मेरी दूकानपर आया और मलाई ले वहीं बैठखाई जब वह अपने पिताके डेरेमें गया तब उस मन्त्रीने बालकके रक्षक से थोड़ीसी मलाई मेरीदूकान से मँगवाई फिर मुझे पकड़वा मँगाया और कालीमिरचके न डालनेसे मेरी दूकान लुटवाई और मुझे सन्दूक में बन्दकिया और दमिश्क से ऊंटपर रख अपने घरमें लाया तदनन्तर मुझसे कहा तू कल फांसी दियाजावेगा यह बचनसुन शोकयुक्तहोय मैं सन्दूकमें बेसुधसोगया जब जगा अपनेको तुम्हारे निकटपाया यहसुन उसकी स्त्रीने कहा जानपड़ताहै तुमने कोई बड़ा अपराध कियाहोगा जिससे तुमपर यह आपत्तिपड़ी और यह कठिनदण्ड बिचारागया बदरुद्दीनने कहा सुन्दरी मैंने कोई ऐसा अप-राधनहीं किया यहदण्ड केवल इतनेहीके लिये मेरे वास्ते बिचारागया था कि मैंने कालीमिरच बिना क्यों मलाई जमाई और बेंची वह सुन्दरी इसबातको सुन बहुत हँसी और कहनेलगी नहीं तुमने कोई और बड़ा अपराध कियाहोगा बदरुद्दीनने कहा और तो कोईभी नहीं केवल इसीसे मेरी दूकान की सबवस्तु नष्टकी और मुश्कें बांध मुझे सन्दूक में बन्दकिया जिसमें मैं दिन रात रहताथा कल मुझे बाहर निकाल मेरे सम्मुख बढ़ई को आज्ञादी कि सूलीकी लकड़ी बना और उसपर लोहे की सलाख लगाकर शीघ्रला परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद है वह सब बातें स्वप्नथीं बादशाह शहरयार इस कहानी को सुन बहुत हँसा और कहा यह वृत्तान्त अत्यन्त अद्भुत है और मुझे बिश्वास है कि शमसुद्दीनमुहम्मद और उसकी भावज कलके दिन बदरुद्दीनकी यह बार्त्ता सुन अत्यन्त हर्षितहोंगे दूसरेदिन मलका शहरज़ाद ने रात्रिके अन्तमें बादशाह शहरयारसे कहा स्वामिन्! उस रात्रिको बद-रुद्दीन इसी भ्रममेंरहा कि मैं स्वप्नमें अपनी स्त्रीके समीपहूं वा जाग्रत्-अवस्था में कभी शय्यासे उठ मकानके चारोंओर घूमता और सब

बस्तुको पहिचान कहता यह मकान वहीहै जिसमें मेरा बिवाहहुआथा और यह वही स्त्रीहै जिसका बादशाहने उस कुरूप कुबड़ेके साथ बिवाह बिचाराथा अब मैं उसकेसाथ सोताहूं वह इसी बिचारमेंथा भोर होतेही मन्त्री शमसुद्दीनने आकर तालीबजाई और भीतरजाय प्रणामकिया बदरुद्दीनहसनने मन्त्रीको पहिचान कहा आपहीने मेरेवास्ते सूली बनाने को आज्ञादी जिसके भयसे मैं अबतक कांपताहूं और केवल इतनेही अपराध के लिये कि मैंने मलाई में कालीमिरच नहीं डाली यह दण्ड मेरे निमित्त नियतकिया मन्त्री ने मुसकराय उत्तर दिया मैंनेही तेरा बिवाह अपनी पुत्रीके साथ जिसका बिवाह बादशाहने एक कुबड़े के साथ बिचाराथा किया तू मेरा भतीजा है तदनन्तर उस पत्रको जो नूरुद्दीनके हाथसे लिखाथा उसको दिखाया कि केवल तेरे ढूंढ़नेको मैं कैरूसे बांसरा और दमिश्कको गया मन्त्री ने बदरुद्दीन को हृदयसे लगाय प्यारकिया और कहा यह सब बातें जो मैंने तुमसे की हैं क्षमाकरो इन बातोंसे मेरा यह प्रयोजनथा कि तुम को इस उपायसे कुशलपूर्व्वक अपने घरमें लाकर तुम्हारे परिवारसे मिलाऊं जो यह उपाय न करता तो सम्भवथा इस हर्षमें तुम्हारे शरीरमें किसीभांतिका दुःखपहुँचता वा आनन्द मृत्युहोजाती इसीहेतु तुम्हें इस भयमें मैंने रक्खा अब तुम अपने बस्त्र पहिनो कि मैं तुम्हारी माताको कि तुमसे बिछुड़ने के कारण दुःखित और अधैर्य्य होरही है भेंटकराऊं और तुम्हारे पुत्रको जिसे तुमने दमिश्क में अपनी दूकानपर बड़ी प्रीतिसे मलाई खिलाई थी लाऊं और जो बदरुद्दीन और उसकी मातासे भेंट करने में हर्ष हुआथा सो लिखनेमें नहीं आसक्ता निदान उसकी माता उसके कण्ठलग बहुत रोई जो कुछ आपत्ति और कष्ट उसके बिछुड़ने में उसपर पड़े थे अपने पुत्र बदरुद्दीन से कह सुनाये और एकओर से उसका पुत्र उसकी छातीसे लिपटगया और बदरुद्दीनहसन ने उसे पहिचान कहा यह वह बालक है जिसे मैंने दमिश्क में देखाथा और इसकी मुझे अत्यन्त प्रीति उपजीथी फिर कण्ठसे लगा बहुत प्यारकिया और शमसुद्दीन मन्त्री उन्हें वहीं छोड़ बादशाहके सम्मुख गया और अपनी यात्राका

वृत्तान्त विस्तारपूर्वक वर्णन किया बादशाह इस वृत्तान्त को सुन हर्षितहुआ और आज्ञादी कि यह सब कहानी हमारी पुस्तकों में लिखीजावे तदनन्तर मंत्री ने बादशाहसे बिदाहोय हर्षपूर्वक सकुटुम्ब नानाप्रकारके व्यञ्जन और पाकभोजनकिये वह दिवस तो बड़ी प्रसन्नतामेंकटा जाफर मंत्रीने इस कहानीको समाप्तकर बादशाह हारूंरशीद से बिनयकी कि आप हब्शी रैहांका भी अपराध क्षमाकीजिये बादशाह उसका अपराध क्षमाकर उस मनुष्यको जिसने धोखे से अपनी स्त्रीको माराथा धैर्य्य दे एक अपनी बांदी के साथ बिवाह करदिया और बहुतसा धन पारितोषिकादि देकर कुछ मासिक नियत किया सो वह उस बादशाह दीनपोषक प्रणतपाल की दया से जन्मभर आनन्द में रहा मलिकाशहरज़ाद ने बादशाह से बिनयकी हे स्वामिन्! दिन निकलआया यदि प्राणदान होंगे तो मैं इससे उत्तम कहानी कलकी रात्रि में कहूंगी बादशाह इस बातका कुछ उत्तर न दे शय्यासे उठ अपनी सभा में जाय राज्य के प्रबन्धादि कार्य्य में लगा परन्तु मनमें सोचा उसने मुझसे प्रण किया है कि कल इससे अच्छी कहानी सुनाऊँगी इससे उसे बध न किया चाहिये और उस कहानी को भी सुनना चाहिये ॥

इति काश्मीरिपण्डितप्यारेलालभाषाकृते सहस्र-
रजनीचरित्रे प्रथमोभागः समाप्तः ॥

दोहा ॥

श्रीजगदीश्वर की कृपा प्रथम भाग अभिराम।
सहसरजनिवरचरित यह उल्थाकियो सुनाम ॥
अतिबिचित्र मनहरण यह पढ़ै सुनै जो कोय।
लहै मुदित आनन्द अति बुद्धिवन्त वरहोय ॥
इक इक पद सानन्दमय शशिप्रकाशयुत सोय।
वर प्रबीणता देतअति पढ़िहैं सुनिहैं जोय ॥
सब के प्यारे मनन के प्यारो करन बिचारि।
प्यारेलाल सुभाग यह भाषा कियो सुधारि ॥

# सहस्त्ररजनीचरित्र ॥

## द्वितीयभागप्रारम्भः ॥

सोरठा ॥

नमोनमोगणदेव लम्बोदरछबिधामवर। ऋद्धिसिद्धिकोदेव ममइच्छा पूरणकरो॥

दोहा ॥

श्रीईश्वरकीकृपाते दूजोभागअनन्द। करतसुप्यारेलाल हैं बन्दिगौरिगोबिन्द॥

## काशग़री दरज़ी और बादशाहके सेवक कुबड़ेकी कहानी ॥

दूसरेदिन रानीशहरज़ादने बादशाह शहरयारसे रात्रिकेअन्तमें आज्ञालेकर अपनी छोटीबहिन दुनियाज़ादकी इच्छानुसार इस कहानी को इसभांति कहना आरम्भ किया पूर्व्वकाल में एक काशग़रका दरज़ी जो तातारदेशकेसमीपहै अपनी दूकानपर बैठकर वस्त्र सियाकरताथा एकदिन सन्ध्याको सीरहाथा दैवयोग से एककुबड़ा तबलालिये आया और दूकान के नीचे बैठकर मीठेस्वरों से गान करनेलगा वह दरज़ी उसका गानासुन प्रसन्नहुआ जब उसके घर जानेकासमय आया उसने कुबड़ेसेकहा जो तुम्हारा मनचाहे तो मेरा घर जो यहांसे अतिसमीप है चलकर गाओ बजाओ वह प्रसन्नहोकर उसके साथ उसके घरगया जब सूचीकार मुखहाथधो बैठा अपनी स्त्रीसे जो अत्यन्त रूपवतीथी और उसे बहुत प्यार कियाकरता था कहनेलगा आज मैं तुम्हें गाना सुनाने के लिये इस मनुष्यको लायाहूँ भोजन जो बनाहो तो ला उसकी पत्नीने नानाप्रकारके स्वादिष्ठ भोजन ला आगे रक्खे और वह स्त्री पुरुष परस्पर बैठ खानेलगे और उस कुबड़ेको भी साथ बैठाया उसदिन सूचीकारके घर मछली बनीथी सो मछली कुबड़े को खाने के लिये दी कुबड़ा कांटेनिकालने बिना खागया एककांटा उसके कण्ठमें ऐसाचुभा जिससे वह अत्यन्त दुःखितहुआ और उसका श्वास रुकगया उस दरज़ी और उसकी स्त्रीने बहुत से उपाय किये परन्तु उपयोगी न हुये इससे वह

सूचीकार अत्यन्त भयभीतहुआ और घबराया जो इस नगरके कोतवालको बिदितहोगा तो इसहिंसाके बदले आपत्ति में पडूंगा अवश्यहै कि प्रथमही से इसका उपाय करूं यहसोच उस कुबड़ेको यहूदी वैद्यके समीप लेगया वैद्यकाद्वार भिड़ाथा कुबड़ेको लिटा सीढ़ी के ऊपर चढ़गया और किवाड़पर तालीबजाई वैद्यकी अनुचरी शब्द सुन निकली सूचीकारने पांचरुपये उसे देकर कहा तू तुरंत अपनेस्वामीसे कह रोगीको आके देखे और उसका उपायकरे जब बांदी वैद्यको जो बालाखानेपर रहताथा कहनेगई सूचीकार कुबड़ेको मृतक समझ ऊपर लेगया और किवाड़के सहारे खड़ाकर आपचुपके चलदिया वैद्य यह बांदीसे सुन चिराग़ बिना लोभसे किवाड़की ओर दौड़ा कुंढीखोल चाहताथा कि नीचेउतरे और रोगीको देखे किवाड़ खोलतेही वह कुबड़ा सीढ़ीसे लुढ़कताहुआ नीचे आपड़ा वैद्य अँधेरे में शब्दसुन बिस्मित हुआ कि यह क्या बस्तुथी जो किवाड़ से नीचे गिरपड़ी फिर जब चिराग़ मँगवा नीचे उतरा कुबड़ेको मुवादेख रुदन करनेलगा यहसमझकर कि यह मुझसे मरा परमेश्वरको स्मरणकर अपराध क्षमा करानेलगा तदनन्तर यह सोचा जो कोई राह चलनेवाला इसगलीमें से चले और इसलोथको मेरेद्वारपर देखे तो वह बादशाहसे जायकहेगा और मैं बड़ेदुःखमें पडूंगा इससे उत्तम यहहै कि इस लोथको शीघ्र यहांसे उठाऊं निदान वह वैद्य उसे घरके भीतर लेगया और स्त्रीपुरुषोंने परस्पर सम्मतकर अपना पीछा छुड़ानेके लिये उस लोथके हांथपावोंको रस्सीसे कस एक मुसलमानके घरमें जो पिछवाड़े रहताथा डालदिया वह यवन बादशाहका मोदीथा अपनेघरमें बहुतसाघृत अन्नआदि संचित रक्खाकरता और चूहे चारों ओरसे उसके गृहमें इकट्ठेहो उसकी बस्तु खाजाते अकस्मात् वहमोदी अर्द्धरात्रिको जब अपने गृहमें आया लालटेनके प्रकाशसे कुबड़ेको बखारीमें खड़ादेख चोर समझा और कहनेलगा तूही मेरी बस्तुचुराया करताहै मैं अबतक धोखेमें था कि चूहे खाजाया करते हैं और उसे मारनेलगा दो चार लाठीके पड़ने से वह लोथ पृथ्वीपर गिरपड़ी मोदीने निकटजाय उसे मृतकदेखा इससे वह लज्जाको प्राप्तहुआ

और मनमें कहनेलगा तूने बड़ा अनर्थ किया कि चोरका बध किया भोरको तू अवश्य इसके पलटे मारा जावेगा कदाचित् मेरी सम्पूर्ण वस्तु नष्ट होजाती तो ऐसा बड़ा भारी पाप न करता इसी शोचबिचारमें मूर्च्छित होगया जब कुछ सुधिहुई अपनी रक्षाके हेतु उसे अपने कंधेपर रख बाज़ारमें लेगया और अँधियारे में एक दूकान से लगाकर खड़ाकिया और अपने गृहमें आय सोरहा कुछ कालके पश्चात् एक सौदागर फिरंगी बादशाह के द्वारोंका दारोग़ा किसी ब्यभिचारिणी स्त्रीके गृहसे निकल नहानेको स्नानागारमें जानेलगा बाज़ारमें उसी दूकान के समीप जिसमें वह लोथ खड़ी थी पहुँच अँधियारेमें ऐसा पासहोकर चला कि उसकी पीठसे कुबड़ेका शरीर लगगया फिरंगी उसे चोर समझ लात मुक्की मार चोर चोर कर पुकारा रौंदके सिपाही चोरका शब्द सुन दौड़ेआये उन्होंने यह देख कर कि एक फिरंगी मुसल्मानको मारताहै उससे कहा तू क्यों मारताहै फिरंगीने उत्तरदिया यहचोरहै चाहताथा कि मेरा गला दबावे निदान एक सिपाहीने फिरंगीका हाथ पकड़ कुबड़े से अलग किया और चाहा कि उसको पृथ्वीसे उठावें हाथलगातेही उसे मुवापाया रौंदके सिपाही उस फिरंगी को पकड़ नगरके कोतवालके निकट लेगये भोरको कोतवाल फिरंगीको लोथ समेत न्यायाधीश के निकट लेगया न्यायाधीश उनसे बृत्तांतपूछ अपराधी को मृतकसहित बादशाहके सन्मुख लेजाय बिनयकीइस फिरंगीने इसे चोरसमझ इतनामारा कि वह मरगया बादशाहने आज्ञादी कि हमारे धर्मशास्त्र की आज्ञाके अनुकूल तू यथोचित दण्डठहरा न्यायाधीशने आज्ञादी इसे चौराहे पर लेजाय फांसी दो यह आज्ञा पातेही फांसीकी लकड़ी चौराहेमें खड़ीकीगई और सम्पूर्ण नगरमें ढिंढोरापिटा कि एक कुबड़ेके बदले फिरंगी फांसी दियाजाताहै जिसे देखनाहो सो आय देखे जब अपराधीको बधिकने चाहा कि उसके गलेमें रस्सी डालखैंचे इतने में बादशाहका मोदी इस बृत्तान्तको सुन दौड़ा और भीड़को हटा उस स्थानपर पहुँचा और बड़ेशब्दसे कहा हे बधिक! उस कुबड़े का हिंसक मैं हूं यह मनुष्य नहीं जिसे तू मारा चाहताहै इसने कुछ

अपराध नहीं किया और मैं नहीं चाहता कि दूसरा अपराध मुझपर हो यह एक अपराध क्या थोड़ा है और सम्पूर्ण वृत्तान्त न्यायाधीशके सम्मुख कहसुनाया न्यायाधीश ने बधिक से कहा इसको छोड़ कर इसमोदीको फांसीदे बधिकने उसे छोड़ मोदीकेगले में रस्सीबांध चाहताथा कि खैंचें अकस्मात् यहूदी वैद्यका शब्द सुनपड़ा कि कहताहै हे बधिक! ठहर इसे बध न कर मैंने उस कुबड़ेको माराहै फिर उस वैद्यने भी रात्रिका सम्पूर्ण चरित्र न्यायाधीश के सम्मुख प्रकट किया कि उस कुबड़ेको औषधके अर्थ लायेथे वह बाहरकी ओर किवाड़से लगा बैठाथा ज्योंहीं मैंने किवाड़खोला त्योंहीं वह सीढ़ी से लुढ़ककर नीचेगिरा और मरगया इसका मारनेवाला मैंहूं मोदी नहीं न्यायाधीश ने बधिक से कहा मोदीको छोड़ इस वैद्यको फांसीदे बधिकने रस्सी उसकेगले में बांधी और खैंचने की इच्छाकी इतने में दरज़ीने वहां पहुंच बधिकसे कहा इसकुबड़ेका हिंसक मैंहूं वैद्यनिर्दोषहै यह कुबड़ा गानेबजानेकेलिये मेरेघरआया मैंने इसे मछलीखाने कोदी एककांटा उसके कण्ठमें चुभगया मैं उसे औषधके निमित्त इस वैद्यके गृह लेगया परन्तु मैं उसे मुरझायाहुआ देख इसे उसके किवाड़से खड़ाकर छोड़आया वास्तव में इसे मैंनेही माराहै यहवैद्य निपट निर्दोषहै न्यायाधीश और प्रजा मोदी और वैद्य उस दरजीका बचन सुन अत्यंत आश्चर्य में हुये निदान न्यायाधीशने कुछसोच बधिक से कहा उसकेबदले इसदरज़ीको जो अपने मुखसे हिंसक ठहरताहै फांसीदे एकमनुष्यको उसहिंसाके बदले बधकरना अवश्यहै बधिक चाहताथा कि दरज़ीको फांसीदें इतनेमें बादशाहकापहरा वहांआया और न्यायाधीशको लोथ और दरज़ी आदिसहित बादशाहके निकट लेगया इसका कारण यहथा कि वहकुबड़ा मुख्यबादशाहका मस्खराथा प्रतिदिन बादशाह के निकटजाकर अपने हास्य से बादशाह को प्रसन्नकरता उसदिन बादशाहने उसे न पाकर पूँछा क्याकारण है अभीतक वह कुबड़ा नहीं आया उसके सेवकोंने बिनयकी महाराज कल सायङ्काल को मदिरा पान कर नगरकी ओर गया भोरको उसकी लोथ देखी न्यायाधीशने उसके हिंसकको कि कोई फिरङ्गीथा

फाँसी की आज्ञा दी बधकरने के समय दूसरे मनुष्य ने अपने को अपराधी ठहराया इसीभांति तीसरा चौथा मनुष्य आया और उसके मारनेका करार किया अब अन्य न्यायाधीश ने चौथे मनुष्य के फाँसी देनेकी आज्ञाकीहै अब वह बध कियाजाताहै बादशाह ने इस अद्भुत वृत्तान्तको सुन आज्ञादी कि तुरन्तजाओ और न्यायाधीश से कहो उनचारों मनुष्योंको लोथसहितलावे कि उस दीनकुबड़े को अन्तसमय देखलूं निदान न्यायाधीशने उनसबोंकोलाकर बादशाह के सम्मुख किया और चारों के वृत्तान्त भी बिस्तारपूर्व्वक प्रकट किये बादशाह ने इस वृत्तान्तको लिखवाकर उन चारों मनुष्यों से कहा तुमने इस वृत्तान्तसे अधिक उत्तम कहानी सुनीहो वा देखीहो तो मेरे सम्मुख प्रकट करो यदि इससे अद्भुत होगी तो तुम्हें मैं छोड़दूंगा नहीं तो तुम चारोंकी गरदन मारूंगा सबसे प्रथम फिरंगी ने प्रणामकर बिनयकी मैं इससे उत्तम कहानी जानताहूं यदि प्राण-दानहो तो बर्णन करूं बादशाहने स्वीकार किया॥

## फिरंगीकेमुखसेकाशगरके बादशाहकेसम्मुख वर्णितकहानी॥

ब्यापारी ने उस वृत्तारम्भ के प्रथम बिनयकी यह सेवक मिसर देशान्तर्गत कैरूका बासी है मेरा पिता दलाली कर्म्म करता था इसी जीविका में उसने बहुत धन साञ्चित किया जब कालबश हुआ तब बहुत सी बस्तु द्रव्य मुझे मिली तदनन्तर मैंने वहीजीविकाकी एक दिन अन्न बेंचनेवालोंके बाजारमें जहां बहुतसे ब्यापारी इकट्ठे होकर ब्यवहार करतेथे गयाथा एकमनुष्य अतिसुन्दर उत्तम उत्तम बस्त्र पहिनेहुये उस मण्डी में आया और मुझसे भेंटकर तिल का नमूना मुझे दिखाया और पूँछा ऐसेतिल कितनेमन बिकतेहैं मैं उसे भलीभांति देख बोला इसका मूल्य प्रत्येक मन शतमुद्राहै उसमनुष्य ने कहा जो कोई इसका मोल लेनेवाला हो उसे मेरेसमीप फतह द-रवाज़े के निकट अमुकसराय में लेआना इस मूल्यपर सबका सब बिकवादेना मैं अपने घरजाय तेरेआनेकी राह देखता रहूंगा यह कह वह तो चलागया मैंने वह तिल बहुतसे ब्यापारियों को दिखाये वे सब एकसौदशरुपये देनेपर राज़ीहुये मैं अपनेमनमें प्रसन्नहुआ

कि प्रत्येक मनपर दशरुपये मुझे लाभहोंगे निदान में उसके घर गया उसने मुझे गोदाममें से जाय तिलकाबोरा दिखाया मैंने उसे तुलवाया एकसौ पचासमन निकले उनको गधोंपर लदवाय उस का मोल सोलह सहस्र पांचसौ रुपयेहमने उसे गिनदिये उसने एकहजार पांचसौ रुपये मुझेदे कहा ये तुम्हारे हैं क्योंकि मैंने अपनी बस्तुको प्रत्येकमन एकसौपर बेंचने का क़रार कियाथा अब प्रतिमन दशरुपयेबचे उसे तुमलो और पन्द्रहसहस्र भी अपने निकट रक्खो जब मुझे आवश्यकताहोगी लेलूंगा यह कह वह अपनेघर चलागया एकमास पश्चात् उस मनुष्य ने मुझसे आयकहा हमारा द्रव्य तुम्हारे निकट है मैंने कहा तय्यार है जो कहो तो लादूं फिर मैंने उससेकहा आप अपनेअश्वसे उतरकर कुछ भोजनकीजिये तुम्हारे खाते खाते तुम्हाराधन भी आजावेगा उसने उत्तरदिया मुझे एककार्य्य अवश्यहै मैं ठहरनहींसक्ता लौटकर लूंगा तुम रुपये बाहर निकालरखना मैं उसकी राह देखतारहा वह उस दिन तो न आया किन्तु एकमास पर्य्यन्त उसे मैंने न देखा तदनन्तर मैंने उस धनको रक्षापूर्व्वक रक्खा निदान तीनमासके पश्चात् फिर वह एक दिन दृष्टिपड़ा मैं तुरन्त उसके निकटगया और कहा आप उतरें और अपनाधनलें उसने कुछभी बिचार न किया और कहा मित्र इतनी शीघ्रता क्योंकरते हो मुझे भरोसा है कि मेराधन अच्छे स्थानपर है मैं आपलेलूंगा यह कह वह चलागया मैं एक सप्ताह पर्य्यन्त उसकी राह देखतारहा और मनमें शोचा यदि इतने समयान्तर में कोई कार्य्य इस धन से करता तो बहुतसालाभ उठाता निदान एक बर्ष ब्यतीतहुआ तो वह ब्योपारी उत्तम २ बस्त्र पहिन मेरेघरआया मैंने उससेकहा आप मेरेघर में उतर बिश्राम कीजिये उसने कहा बहुतअच्छा मैं चलताहूं परन्तु मेरे वास्ते कुछ श्रम न करना मैंने कहा जिसमें आपकी प्रसन्नता होगी वही करूंगा वह उतरपड़ा और मेरे घरआया मैं तुरन्त भोजनलाया वह बायेंहाथ से खानेलगा मैं देख आश्चर्य में हुआ कि वह कोई कार्य दाहिनेहाथ से न करताथा मैंने बिचारा कि यह मनुष्य शीलवान् और प्रसन्न-

चित्तहै यदि मैं इससे कोई बातपूछूं तो वह अप्रसन्न न होगा जब भोजन करचुका और सेवक भोजनकेपात्रको उठालेगया और उस स्थान को साफ़ करनेलगा हम वहांसेउठ दूसरे दालानमें जाबैठे और मैं उसका पान इलायची आदिसे सत्कार करतारहा वह बायें हाथसे लेता निदान मैंने उससेकहा यदि तुम अप्रसन्न न होतो मैंकुछ तुमसे पूछूं उसनेकहा बहुतअच्छा तब मैंनेपूंछा क्याकारणहै आपसबकाम बायेंहाथसे करतेहैं दाहिनेको नहीं लगाते आपने भोजनभी बायेंहाथ से किया उसने यह सुन ठण्ढीसांस खैंची और अपनी दाहिनीबाहु जिसेवह सदैव वस्त्रमें छिपाये रखताथा निकालदिखाया मैंनेदेखा दाहिनाहाथ उसका सबकटाहै मैंनेपूंछा हाथक्योंकर कटाहै यहसुनतेही वहअधैर्यहोरोया कुछकालपीछे अपनावृत्तांत कहनेलगा कि मैं बुग़दादकाबासीहूं मेरापिता बड़ाधनाढ्यवहांकारईसथा मैंने ब्योपारियों से मिसरकी प्रशंसासुन उसके देखनेकी इच्छाकी मुख्यकर कैरूकेजो यहांकीराजधानी है अधिकलालसाकी और कईबेरवहां जानेकीइच्छा की परन्तु जबतक कि मेरापिता जीतारहा उसने मुझेजानेकी आज्ञा न दी फिर जब वह कालवशहुआ और मैं स्वाधीनहुआ मैंने कैरू जानेकी इच्छाकी और बहुतसी सौगात और बस्तु बुग़दाद और मवस्सलकी मोललेके इस ओर चला जब मैं कैरू में पहुँचा एकसराय में जो मसरूनाम से विख्यात थी उतरा तदनन्तर किरायेपर एक घर और एक गोदाम ब्योपारकी बस्तु रखने के लिये लेकर मैं उस घरमें गया और अपने सेवकों से कहा बाज़ारसे कुछपाक मोललावो सो उन्होंने तुरन्त नानाप्रकार के भोजनला मेरे सम्मुख रक्खे मैं अपनी इच्छानुसार भोजनकर मसजिद गढ़ आदि जो ख्यात और देखनेयोग्यथे गया और भलीभांति उनको देखा दूसरे दिवस मैंने उत्तम वस्त्र पहिने और अपनी गठरियों से दोतीन थानले चौक को चला कि विदितहो ये चीजें यहां कितने मोलपर बिकती हैं जब चौकमें पहुँचा दलाल कि मेरे आगमनका समाचार सुनचुके थे उन्होंने आकर मुझे घेरा और मैंने नमूने प्रत्येक बस्तु के जो मेरे पास थे दिये उन्होंने चौकके बज़ाजों को दिखाकर बेंचना आरम्भ

किया प्रतिदिन मैं आता और मेरा थोड़ा थोड़ा असबाब बिकता परंतु मेराघर चौकसे बहुत दूरथा इसवास्ते मजदूरों और गाड़ीवालोंको दुःखहोता दलालोंने यह हालदेख मुझसेकहा यदि हमारे कहनेपर तुम्हें विश्वासहो तो हम तुम्हें एकउपाय बतावें कि मजदूरी देनेसे छूटो तम अपनीवस्तु ब्योपारियोंको बेंचनेके लिये बांटदो वे तुरंत तुमको बेंचदेंगे और तुम प्रतिसप्ताहमें केवल एकबेर सोमवार वा बृहस्पतिवारको आयाकरो इस समयान्तर में जितनामाल तुम्हारा बिकेगा उसका मोल समझ लियाकरना इसमें निस्संदेह तुमको लाभहोगा और किरायेकी हानिसे बचोगे और ये ब्योपारी भी कुछलाभ उठावेंगे तुम भलीभांति इस नगरकोमुख्य-नीलनदी को देखना और सैरकरना मैं यह बात स्वीकार कर उनको अपने घरलेगया और सम्पूर्ण वस्तु एकहीबेर लेजाकर चौकके दूकानदारों को बेंचने के लिये बांटदी उन्हों ने मालकी रसीद साखियों सहित लिखदी और मैंनेभी लिखदिया कि एकमासपर्य्यन्त तुमसे इसका मोल न मांगूंगा मैं यहप्रबंधकर अत्यंतनिश्चिन्त और हर्षितहुआ मैंने अपने समभ्रातुसे मित्रताकी एकमास के व्यतीतहोनेकेपश्चात् उनब्योपारियोंसे तक़ाज़ाकरना आरम्भकिया मैं दोदिनचौकमेंजाकर अपनीवस्तुका दामलेता कुछसमयमें मुझे बहुतद्रव्यप्राप्तहुआ मैंने उसे अपने वासस्थानसरायमसरूरमें रक्षापूर्व्वक संचितकररक्खा बहुधाभोरको मित्रोंकेसाथ सैरकोजाता और नगरकेवासियोंको चौक में इकट्ठेदेख और उनकीबार्त्तासुन हर्षितहोता एकदिन मैं बदरुद्दीन नामक ब्योपारीकी दूकानपर बैठाथा एकस्त्री उत्तमरवस्त्र आभूषण से अलंकृत कई अतिरूपवती और स्वच्छ बांदियोंकेसाथ दूकानपर आकर मेरेसमीप बैठगई उसके आगमनसे मैं अत्यन्त प्रसन्नहुआ और चाहा कि उसके रूप अनूपको बस्त्रउतारदेखूं उसने मेरी इस अधैर्य्यता और बेबशी को समझकर जालीका बस्त्र इस तमक और इस भावसे उठाया कि मैं उसके रूप अनूप और मायावी नेत्रों को देखतेही मोहितहुआ थोड़ीदेरके पीछे उसने बदरुद्दीनहसन से कुशलक्षेमपूंछी और ज़रीबाफ़काथान मांगा बदरुद्दीन ने एक

थान जिसकामोल ६६००)रु० था निकाल दिखाया उस रूपवती ने उसे पसन्दकिया और कहा यदि कहो तो मैं इसे आज अपने घरलेजाकर मोल इसका कल्ह भिजवाऊं बदरुद्दीनने कहा आप इसे तुरन्त लेजाइये इसका मोल जब चाहिये तब दीजिये परन्तु यहथान इसमनुष्यकाहै जिसे तुम दूकानपर बैठे देखती हौ आजके दिन मैंने प्रणकियाहै कि जो इस सप्ताहमें असबाब बिकाहै उसका मोलदूं उस स्त्रीने कहा एक दिनका सावकाश दो कल मैं इसका मोल अवश्यभेजूंगी ब्योपारी ने कहा सुन्दरी आजही हमको चाहिये यहसुनतेही वह मृगनयनी अप्रसन्नहुई और थान बदरुद्दीन के सम्मुख फेंकदिया और कहा तुम सब ब्योपारी बड़े बेशील हो सिवाय अपने और किसीका विश्वास नहीं करते यह कह क्रोधितहो उठचली जब मैंनेदेखा वहसुन्दरी दूरनिकलगई तो बड़ेशब्दसेपुकारा कि इधरआओ मैंने एकउपाय बिचाराहै जिसमेंसौदा बने वहस्त्री लौटआई और जानगई कि वहथान मेराहै मैंने वह थान उसस्त्री को देकर कहा आप इसेलेजाये इसका मोल दीजिये वा न दीजिये आपकाही यह धन है वह स्त्री थानले हर्षितहुई और आशीर्वाद दिया कि परमेश्वर तुम्हें अधिक द्रव्यदे और जीतारक्खे इस के सुनतेही मुझे कुछ कहनेकी शक्तिहुई तो मैंने उससेकहा आप अपना रूप अनूप बालों की लटक सुन्दरताकी चटक मुझे दिखाते जाओ उस स्त्री ने मेरी ओर फिर अपने कोमल मुख शोभायमान परसे जालीका बस्त्र उठाया उसकी सुन्दरताको देख मैं प्रथमसे अधिक मोहितहुआ और उसके स्वरूप मनहरणको टकटकी बांध निर्जीव चित्रके सदृश देखने लगा और खड़ा रहगया परन्तु उस चित्तचोर घोरने तुरन्त अपनामुख छिपालिया कि कोई अन्य न देखे तदनन्तर वह थान उठा और मुझे उसीदशा में छोड़ अपने घरको चली मैं वहीं तड़पतारहा जब कुछ सुधिसँभाली तो उस ब्योपारीसे पूछा यह सुंदरी कौनहै उसनेकहा यह एक धनपात्र की पुत्रीहै इसका पिता बहुतधन छोड़ मरगया तदनन्तर मैं उसी विह्वलतामें अपने बासस्थानकोगया और बिना भोजनकिये सोगया

और रैनभर उसीके शोचमें रहा दूसरे दिन भोरको फिर उसके देखनेकी आशामें बदरुद्दीन की दूकानपरगया क्षणमात्र न हुआथा कि वही सुन्दरी बांदियों के समूह में वहां पहुंची और मेरीओर देख कहा देखो मैं कैसी अपने बचनपर दृढ़हूं आजके बचनानुसार अपना बचन पालनकिया मैंने कहा हे सुन्दरी! मुझे आपसे भरोसाथा आपने क्यों इतना श्रमकिया उसने कहा यह सब सत्यहै परन्तु ब्योहारमें सत्यता अच्छीहोती है यह कह छःहज़ार छःसौ रुपयेकी थैली मेरेसम्मुख रख मेरेपास बैठगई मैंने अवकाश पाकर कुछ अपनी प्रीतिका हाल बार्तामें बर्णन किया यहसुन वह तुरन्त उठ चलीगई मैंने जाना मेरे इस बर्णनसे इसे कुछ खेदहुआ होगा मैं उसेदेखता रहा कि वह मेरी दृष्टिसे गुप्तहोगई तब मैं उस ब्योपारी से बिदाहो एक ओर को जिस दिशाको मैं न जानताथा चला कितनीदूर गयाथा कि एकस्त्रीने पीछेसे आके मेरी पृष्ठिपर हाथरक्खा मैंने पीछे फिरके देखा और पहिंचाना कि वह उसी स्त्रीकी एक अनुचरी है जिसपर मैं मोहितहूं मैं उसे देख हर्षितहुआ उस बांदी ने धीरेसे मेरेकान में कहा मेरी स्वामिनी तुमको बुलाती है कि तुमसे कुछ बार्ताकरे मैं तुरंत उसकेसाथ होलिया और थोड़ीदूरपरगया कि वह स्त्री सर्राफ़ की दूकानपर बैठीहुई मेरीराह देखती थी उसने मुझे देखतेही अपने समीप बैठालिया और कहा अधीर और दुःखित न हो मेरी भी तेरीप्रीति में यही दशा है परन्तु बुद्धिके बिरुद्ध था कि मैं उस ब्योपारी के सम्मुख तुझसे इस भांतिकी बार्त्ताकरती निदान मुझे बहुतसा समझाबुझाकर कहा मेरेघरचलो वा मैं तुम्हारे घरचलूं मैंने कहा मैं इसनगरमें परदेशीहूं एकसरायमेंउतराहूं वह स्थानआपके आने योग्य नहीं जो आपके घरकापता विदित हो तो वहां पहुँच सक्ताहूं उस सुन्दरीने इस बातको स्वीकार किया और कहा कल बुधबारहै तृतीयप्रहर मेराघर कि अमुकगली में है आना और उस गलीमें पूंछना अमुक मनुष्यका घर कहांहै उसी स्थानपर तुम मुझे पावोगे मैं उसके वासस्थानका पता भलीभांति पूंछ बिदाहुआ वह दिन काटना मुझे कठिन हुआ जब दूसरा दिनहुआ मैंने तड़के उठ

उत्तम उत्तम वस्त्र पहिन एकथैली पचास अशरफीकी जेबमें रक्खी व एककिराये की सवारीपर सवारहुआ जब उसगलीमेंपहुँचा उसभलेमानसकाघर पूंछा एकने ठीकठीक पता बतादिया मैंने अपनी सवारीसे उतर और किरायादे वहां से उसे बिदाकिया और कहदिया कि दूसरे दिनभोरको बाहनसहित आइयो और मुझे मसरूर की सरायमें लेजाइयो फिर मैंने उसघरके द्वारपर तालीबजाई शब्दसुनतेही दो छोटे२गुलाम बहुतश्वेतवस्त्र पहिने मानो मेरे आनेकीराह देखते थे उन्होंने आकर द्वारखोला और कहा भीतरआइये हमारी स्वामिनी तुम्हारे आगमनकीराह देखती है और बहुत अधीर और बेबशहै मैं भीतरगया वहां एकबारहदरी देखी कि बहुतऊँची जिस की ऊँचाई सातसीढ़ीकीथी और उसकेचारोंओर जालीका बनाहुआ था और उसके आगे एकपुष्पबाटिका थी इसके बिशेष बहुतसे सघनवृक्षोंसे वह स्वच्छभवन सुशोभितथा जिनसे धूप न आसक्ती और बहुतसे बृक्ष फलसेलदेहुये थे जिनपर नानाप्रकारके पक्षी अपनी मनोहर और मिष्टबाणी सुना प्रसन्न करते और उनपक्षियोंके शब्दकेसाथ बड़ेऊँचे२कुंडों में अतिनिर्म्मलनीर उसपुष्पबाटिका में पड़ता जिससे आनन्दहोता वह कुण्ड अत्यन्त देखने में सुन्दर और चौकोणथे उनके चारों ओर अजदहे के मुख बनेहुये जिनमें से अत्यन्तनिर्म्मल और उज्ज्वल बिल्लौरके समान नीर बहता निदान वह दोनों गुलाम मुझे अपनेसाथ एकमकानमें लेगये जो अत्यन्त सुन्दर और नानाभांति से अलंकृत था वहां एकबालक दौड़ाहुआ मेरे आगमनका संदेश कहनेको गया और दूसराउसकोठेको दिखाने लगा क्षणमात्रमें वह रूपवती धीरे धीरे हंसगति से चलती शिरसे पांवतक बहुमूल्य रत्न और आभूषण से अलंकृत मेरे समीप आई उस समयका हर्ष मैं कुछ बर्णन नहीं करसक्ता निदान हम दोनों परस्पर देख प्रसन्नहुये और एकदालानमें बैठकर बार्ताकरनेलगे इतने में भोजन बनगया हम दोनों खाकर फिर बार्त्ता करनेलगे । फिर वे उत्तम मदिरा और सूखे हरे फललाये कुछ बांदियां मिष्टस्वर से गान करने लगीं और कुछ सेवा करनेलगीं और वह सुन्दरी भी मुझे

अपने कटाक्ष और गानेसे रिझाती निदान सम्पूर्ण रात्रि आनन्द मङ्गलमें व्यतीतहुई जब भोरहुआ मैंने चुपके से वह अशरफ़ियोंकी थैली उसकेउपधान के गिलाफ़में जो मेरे निकटथा रखदी और उठ कर उससेकहा सुन्दरी अब मैं बिदाहोताहूं तुम्हें परमेश्वरकोसौंपा उसने पूंछा अबकब आवोगे मैंने कहा फिर सन्ध्याको आऊंगा वह प्रसन्नहो मुझे द्वारतक पहुँचागई और मुझे जाते समय सौगन्ददी कि अपने बचनपर अवश्य आना मैं उसघरसे बाहर निकल ऊंट पर जो उसी मनुष्यने प्रथमसे लारक्खाथा चढ़ मसरूरकी सराय में आया और ऊंटवालेसेकहा संध्याको फिर ऊंटलेकर आइयो और नानाप्रकारके पाक व्यञ्जन एक मनुष्यके हाथ उस सुन्दरी के पास भेजे उसी नियमित समयपर ऊंटवाला ऊंटलाया और मैंने दूसरी थैली पचास अशरफ़ियोंकी कमरमेंबाँधी और वहां जाकर रात्रिभर रहा और उसीभांति वहथैली तकिये में रखआया एकअवधिपर्यन्त वहांजाता और उससुन्दरी के पासरहता और बिदा होते थैली पचास अशरफ़ियोंकी वहां रखआता रहा कि कुछ समयान्तर में सम्पूर्ण द्रव्य बस्तुजो कुछ कि मेरेपास था चुकगया जबकुछ न रहा उसस्त्री के घरजाना छोड़दिया एक दिवस भोरको बादशाही गढ़के देखनेकोगया एक स्थानपर बहुत से मनुष्यों का समूह देखा मैं उस भीड़में घुसगया वहां क्या देखताहूँ कि एक मनुष्य घुड़चढ़ा एक अशरफ़ियोंकी थैली उसकेज़ीन में लटकती है और उसका हरा डोरा नीचेतक लटकता है अकस्मात् एक मनुष्य काष्ठका गट्ठालिये उससवार के समीपसे होकरगया सवारने इस भय से कि लकड़ीकाखोंचा न लगे अपनेघोड़े को भीड़की तरफ़ से फेरा दैवयोगसे वह डोरा थैलीका मेरेहाथमें आलगा मैंने उसे खींचकर थैली अपनीकमरमें रखली सवारने थैलीको ज़ीनमें लटकतीहुई नदेखा तो मुझको कि समीपखड़ाथा बड़ेरोषसे खड्गमारा जिससे मैं गिरपड़ा मनुष्य मुझेपड़ादेख उससवारको दुर्बचनकहनेलगे कि तूने इसको निर्दोष क्यों मारा और उस पुरुषके घोड़ेकी लगाम पकड़ चाहते थे कि उसकोमारें सवारनेकहा तुमको बिदित नहीं यह चोरहै इसनेमेरी

अशरफ़ियोंकी थैलीचुराईहै वह इसीवार्त्ता में थे कि इतनेमेंमेरीअभाग्यतासे पुलिसकी रौंदआपहुँची और रौंदके अधिपने पूंछा यहक्या हालहै सवारने अपनी अशरफ़ियों के जानेकावृत्तान्त वर्णन किया पुलिसके प्रधाननेपूंछा तुमको किसपर संदेहहै उसने मुझे बतायापुलिसदारने मुझसेपूंछा मैंने इन्कारकिया पुलिसदार ने उससे कहा यहचोर नहींहै सवारनेकहा मुझे विश्वास है कि इसीने ली तब पुलिसदारने अपनेआदमियोंको आज्ञादी इसमनुष्यका झारालो उन्होंने मेराझारालिया वहथैली मेरीकमरसे निकली पुलिसदारने प्रथम सवारसेपूंछा जो यह तेरीथैली है तो तू बता कि इसमें कितनी अशरफ़ी हैं और क्यासिक्काहै उसनेकहा अमुक सिक्केकीबीसअशरफ़ियां हैं तब पुलिसदारने खोलके देखा और गिना तो बीस अशरफ़ियां उसी सिक्केकी पाईं जैसा कि सवारने कहाथा पुलिसदार वह अशरफ़ी सवारको दे मुझे न्यायाधीश के निकट पकड़लेगया न्यायाधीश ने आज्ञा दी कि दाहिनाहाथ इसका काटडालो तुरन्त मेरा हाथ काटागया फिर न्यायाधीश ने कहा यह तो उसकी चोरीका दण्डहै इसने असत्यकहा इसलिये एकचरणभीकाटो तबमैं बहुतघबराया उसीसवारको जो वहींथा बिनतीकरप्रसन्नकिया उसने मुझ पर दयाकर न्यायाधीश से कहसुन पांवकाटने से बचाया और उस सवारने उदारता से वहथैली मुझे दे कहा मैं जानताहूं कि तू चोर नहीं कोई ऐसीही आपत्ति पड़ी कि तूने चोरकर्म किया यहकह सवार तो चलागया और जो मनुष्य कि वहांथे मुझपरदयाकर मुझे अपने घरलेगये और एक गिलास मदिराका मुझे पिलाया और रुधिर बंदकरनेकेलिये एकपट्टी मेरे घावपरदृढ़बांधी जबमैंमसरूरकी सराय कोगया और किसी अपने सेवकको न पाया कि इस दशामें मेरी सहायता करते अनन्तर यहशोचा कि उसीस्त्रीके घरजाऊं फिर यहशोचा जो वह मेरे इसहालको मालूमकरेगी तो वह भी मुझसे ग्लानिकरेगी परन्तु मैं बहुत दुःखितथा और किसी दूसरेको अपना सहायक न पाया निरुपायहो वहीं जानेकी इच्छाकी जब भीड़ छिटकगई मैं दूसरेमार्ग से उसके घरतक पहुँचा पीड़ा के कारण अत्यन्त अशक्तथा

उसके गृहजाय शय्यापर लेटगया और दाहिना हाथ कटाहुआ अपने बसन में छिपालिया थोड़ी देरमें उस सुन्दरी को मेरे आगमन की खबरहुई वह सुनतेही दौड़ीआई मुझेव्याकुल और तड़पतेदेख बोली हे मेरेप्राण! हे मेरेप्यारे! तुम्हारी क्या दशाहै मैंने मुख्य वृत्तान्त प्रकट न कर कहा मैं इस समय शिरपीड़ा से अत्यन्त व्याकुल और दुःखित हूं यह सुन वह अत्यन्त शोकयुक्तहो शय्याके नीचे बैठगई और कहनेलगी बहाना न करो सच्चकहो तुमपर कौनसी आपदा और दुःख पड़ा अभी तो कल तुम भलेचंगेथे आज यह तुम्हारी क्यादशाहुई कोई दूसरा कारणहै जिसे तुम मुझसे छिपाते हो परमेश्वर के वास्ते मुझे बताओ मैंने कुछ उत्तर न दिया और रोनेलगा तब उसने कहा जोतुम अपना हाल नहीं बताते तो मैं जानतीहूं कि तुम्हारी प्रीति और प्यार मुझसे सब झूठाहै मैंने कहा सुन्दरी मैं अपना दुःखतुमसे क्या बर्णन करूं मुझसे कहा नहीं जाता जब सायंकाल हुआ और भोजन बनगया उसने मुझे खाने को बुलाया मैंने देखा दाहिने हाथके सिवाय भोजनकरना कठिनहै मैंने कहा इससमय मुझे इच्छा नहीं उसने कहा पश्चात्तापहै तुम अपना बृत्तांत प्रकट नहीं करते तुम पीड़ा से अति दुःखित और अशक्तहो तब उसने मदिराका एक गिलासभरके मुझे दिया कि इसे पियो इससे तुम्हें शक्तिहोगी उसको भी मैं बायें हाथ से ले पीगया वह मदिराका गिलास नेत्रोंसे अश्रुके द्वारा बह निकलगया और ठंढीउसासें लेनेलगा उस सुन्दरीने कहा मेरे प्रियस्वामी क्यों तुम ऐसी ठंढी उसासें लेते और नयनों में नीरभर रुदन करते हो मैंने कहा मुझसे इसका कारण न पूंछो मेरे दाहिने हाथमें शोथहै और बहुत पीड़ाहोतीहै उसने कहा दिखाओ मैं चुपहोरहा और जो शेष मदिरा उस गिलासमें थी वहभी पीली जो गिलास बहुत बड़ा था और मदिराभी उसमें बहुतथी मुझे पीड़ा और थकनेसे बेसुधिसीहुई और उसी दशामें सोगया जब उस सुन्दरीने मुझे निद्रा में बेसुधिपाया चाहा कि मालूमकरे कि मेरे दाहिने हाथमें क्यापीड़ाहै वहां से बस्त्रहटा और मेरेहाथको कटादेख आश्चर्यितहुई फिर उसीभांति उसे बस्त्रसे ढांकदिया और अत्यन्तशोकयुक्त और बिस्मितहुई जबमैं

जागा तो उसेशोचयुक्तदेखा उसने मुझसे कुछ देखनेका हाल न कहा ऐसा न हो कि मैं कुछ बिलगमानूं परंतु अपने सेवकोंको आज्ञादी कि तुरन्त मुरगके बच्चेका गाढ़ाशोरुआ बनाओ सो उन्होंने बनाय मुझे पिलाया कि मुझे सामर्थ्यहो जब मैं पीचुका उससेबिदाहो चला उस ने मेरावस्त्र पकड़लिया और मेरेजानेकी बाधकहुई और कहा मैं तुम को इस दशा में जाने न दूंगी जबतक तुम मुझसे अपनी पीड़ाका बृत्तान्तनहीं कहते परंतु मुझे बिदितहै कि इस तुम्हारे दुःखका कारण मैंहीं अभागीहूं और जानतीहूं कि इस दुःखसे मैं शीघ्र मरजाऊंगी यह बात जो मैंने बिचारीहै उसे अवश्यकरना यहकह अपने सेवकों को आज्ञाद्दी कि इस मुहल्ले के पुलिसदार और कई साक्षियों को बुलाओ जब वह आये उनके साम्हने अपने सम्पूर्ण द्रव्य और बस्तु को मेरे नाम लिखदिया और उनको कुछ देले बिदाकिया तदनन्तर एक संदूक खोला जिसमें मेरी थैलियां जिनको पहिलेसे अन्तदिवस तक लेगयाथा उसीप्रकार रक्खी हुईथीं कहा यह थैलियां तुम्हारी लाईहुई इसमें बर्त्तमानहैं मैंने इनमें हाथभी नहीं लगाया यह कह सन्दूकको बंदकर उसकी कुंजी मुझेदी उसीदिनसे वहस्त्री रोगीहुई और दो तीनसप्ताहके पश्चात् मरगई मैं उसका शोककर सब असबाबले निजबासस्थान बग़दाद में आया सो वह तिलजो तुम्हारे द्वारा बिके उसीके धनमें से थे उस बग़दादी ने अपने वृत्तान्त को पूर्णकर मुझसे कहा अब तुमको बायें हाथ से खानेका हाल बिदित हुआ मैं तुम्हारा कृतज्ञहूं तुमने अपना इतना समय मेरे वृत्तान्त के सुनने में व्यतीत किया और तुम्हें इतनाश्रम हुआ तुम्हारी शीलता और मिलनसारी से मुझे हर्षहुआ और मेरे तिलका मोल जो तुम्हारे पास बर्त्तमानहै मैंने तुमको दिया तुम उसे स्वीकारकरो और मुझे तुमसे एक आवश्यकता है मैंने देशों देशमें फिरना इन दिनों में छोड़दियाथा यदि तुम मेरी सहायताकरो तो फिर मैं व्यापारकरूं जो जो कुछ कि बर्षमें प्राप्तहोगा हिसाबकर अर्द्धअर्द्ध भाग बांटलेंगे नसरानी व्यापारी कहताहै कि मैंने उस मनुष्यसे कहाकि मैं तुम्हारी देनसे अत्यन्त कृतज्ञहुआ कि तुमने सबका सब धन मुझे अपना

देडाला इसके बिशेष तुम मुझे अपने संयुक्त करते हो मैंने उसे मनसे स्वीकार किया कि मैं इस बिषयमें इतनी सहायता करूंगा जैसा कि अपने कार्य्य में करताहूं निदान एक शुभवार यात्राकी नियतकी जब वह दिन आया हमने बुगदाद को कूचकिया सीरा और मपटमा में पहुँचे और वहांसे फ़ारस में गये इसी भांति नगरों देशों में फिरते फिरते आपकी राजधानीमें पहुँचे कुछ दिनोंमें उस मनुष्यने मुझसे कहा मैं चाहताहूं कि फिर फ़ारस को जाऊं और वहां बैठरहूं हमने परस्पर बैठ सब अपना मुख्यधन और नफ़ेका हिसाबकर अर्द्ध अर्द्ध बांटलिया और परस्पर प्रसन्नरहे वह मनुष्य फ़ारस को गया और मैं आपके देशमें रहनेलगा यह कहानी जो मैंने आपके सम्मुख बर्णनकी क्या कुबड़े के वृत्तान्त से अद्भुत और उत्तम नहीं बादशाह काशगरनसरानी व्यापारीपर बहुत क्रोधित हुआ और कहा हे निर्लज्ज! तू क्या कहता क्या तूने कुबड़े के वृत्तान्त के समान अपना चरित्र सुनाया तू अपने मनहीं को प्रसन्न करताहै स्मरण रख मैं तुम चारोंको उस कुबड़ेके पलटे बध करूंगा यह सुन मोदी उठ बादशाहके चरणों में गिरा और बिनयकी आप क्रोध न कीजिये मेरी कहानी सुनिये यदि वह कहानी इस कुबड़े के वृत्तान्त से अद्भुत और उत्तमहो तो मुझे परिपूर्ण आशाहै किहम चारोंका अपराध क्षमाहो बादशाहने कहा जो तेरी कहानी बिचित्र होगी तो मैं तुम चारोंका अपराध क्षमाकरूंगा॥

## मोदीके मुखसे वर्णित चरित्र॥

मोदी ने कहा स्वामी कल मैं एक धनपात्र मनुष्यकी पुत्री के बिवाहमें था और उसकी सभामें बहुतसे भलेमानस नगरके बासी इकट्ठेथे जब सब बिवाह की रीतें होचुकीं और नानाप्रकार के पाक और व्यञ्जन परसे गये और सब जाकर बैठे प्रत्येकने इच्छा भोजन किया नानाप्रकारके पाकथे एक थालमें अत्यन्त स्वादिष्ठ और सरुचि लहसुन रक्खेथे प्रत्येक मनुष्य उसमेंसे थोड़ा थोड़ा लेकर रुचिपूर्वक भोजन करतापरन्तु हममें से एक मनुष्य जो उस थालके समीप बैठाथा न खाता किन्तु देखताभी नहीं हमने कहा तुम क्यों नहीं खाते उसने कहा प्रथम मैंने एकबेर इसेखाया तो ऐसे दुःखमें पड़ा कि आजतक

नहीं भूला तब सब मनुष्यों ने उससे पूंछा तुम क्यों इसस्वादिष्ठ पाक से ग्लानि करतेहो उसने कुछ उत्तर न दिया तब स्वामी ने कहा मित्र यहपाक बहुत अच्छाबनाहै और हमसब इसे रुचिसे खातेहैं तुम क्यों नहीं खाते जैसा कि तुमने अपने आगमनसे मुझे कृतार्थ किया कृपा कर इसको भी भोजन कीजिये उस पुरुषने कि बग़दाद् का बासी था उससे कहा यदि आपकी यही इच्छा है तो मुझे इन्कार नहीं परन्तु इस पाकके भोजन के पश्चात् मेराहाथ स्नान(अर्थात् एकप्रकारकी सुगन्धमईघास)और चालीस बेर अमुक घास से बहुत बेर साबुन से धुलवाना इस के बिशेष मैंने इसके भोजन की बड़ीसौगन्द खाई है जिसे मैं भंग नहीं करसक्ता उसने स्वीकार किया और एक पात्र में लहसुन रख उसके सन्मुख रक्खा और अपने सेवकों को आज्ञादी कि कईपात्रोंमें उष्णजल तय्यार रक्खें और अमुकघासकीराख और साबुन तय्यार रक्खें कि यह मनुष्य जितनी बेर चाहे हाथ अपना धोवे यह कह उससे कहा अब कुछ इसमें से भोजन कीजिये नहीं तो बस्तु हमारी नष्ट जायगी तब वह ब्यापारी लाचारी से डरते२ उसमेंसे ग्रास उठा अत्यन्त ग्लानि से मुखमें रख खानेलगा हम को अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ और बिशेष इस बात से कि उसने अँगूठे के सिवाय चार उँगलियों से खाया यद्यपि प्रथम भी उसने इसी प्रकार भोजन किया था परन्तु तबतक किसी ने न देखा था घरवाले ने उससे कहा तुम्हारे अँगूठा नहीं उस पुरुषने कहा सत्यहै इस सेवकपर एक ऐसी आपत्ति पड़ी जिससे मेरे हाथ पांवके चारों अँगूठे काटे गये जो तुम उस बृत्तान्त को सुनोगे तो आश्चर्य्यित होगे अब मुझे आज्ञा हो तो मैं अपने हाथ धोऊँ यह कह उठा और एकसौ चालीस बेर हाथधो फिर आबैठा और अपना बृत्तान्त इसभांति कहने लगा ॥

## चारोंअंगुष्ठ कटेहुये मनुष्यकी कहानी ॥

हे मित्रो! मेरापिता बग़दादका बासीथा और खलीफ़ाहारूंरशीद केसल्तनतमें मैंभी उत्पन्न हुआ और मेरापिता बड़ा धनपात्रथा और बड़ेब्यापारियों में गिनाजाताथा परन्तु अत्यन्त लम्पटथा इस निमित्त ब्यापारके बहुतसे कार्यों में अप्रबन्धतारहती उसके मरनेकेपश्चात्

बहुतसे मनुष्योंका ऋणरहगया मुझे उसकेदेने में बहुतकष्टहुआ निदान धीरेधीरे मैंने अपने पिताका सबदेन चुकादिया तदनन्तर परमेश्वरकी पूर्णकृपासे इतनाद्रव्यप्राप्तहुआ जिससेमैं कुछ निश्चिन्त हुआ और दूकानपर बैठ सादाकपड़ा बेंचाकरता एकदिन मैं भोरको अपनीदूकानखोले बैठाथा अकस्मात् एकसुन्दरीखच्चरपर सवार एक सेवकआगे और दोबांदियां पीछे मेरी दूकानपर आखड़ीहुई सेवकने उससुन्दरीका हाथथांभ बाहनसे उतारा और चहुँओर देखकहा हे सुन्दरी! तुम बहुतसबेरे आई अभी कोईदूकान नहींखुली कहांतक राह देखोगी उस सुन्दरी ने भी चारोंओर देख कहा वास्तवमें एक दूकान के सिवाय कोई भी खुली नहीं तदनन्तर वह मेरी दूकानपर आई और प्रणामकिया मैंने उसका भलीभांति आगतस्वागत किया और कहा दयाकर इसदूकानपर बैठमुझेकृतार्थकीजिये निदान वह सुन्दरी मेरीदूकानपर आय बैठगई और देखा कि चौकमें केवल उसका सेवक और मैंहीहूं सो हवाखानेकेवास्ते अपने चन्द्रमुखसे बस्त्र उतारा मैंनेजोजन्मभर ऐसा रूप छबिअनूप मनहरण प्रसन्नकरण न देखाथा तुरन्तमोहितहोगया और उसीकोदेखाकिया फिर उसने भलीभांति बस्त्र उठाय मुझेअपना इन्दुमुखदिखाया कि इतने में सबदूकानदार वहां इकट्ठेहोगये उससमय उसने लज्जाकर अपने मुखको छिपाया और मुझसे कहा मुझे बहुमूल्य थान जरबाफ़की आवश्यकता है जो तेरीदूकानपरहों तो दिखा मैंने कहा मेरीदूकानपर नहीं परन्तु आपके वास्ते अन्यदूकानदारों से जो मेराबिश्वास करते हैं लादूंगा और वह भी मेरेकारण अधिक मोल न लेंगे और आपको कुछ श्रम बार्त्ता आदिका दूकानदारों से न होगा वह सुन्दरी इस बातपर प्रसन्नहुई इस बिषयमें उसकी और मेरीबार्त्ता चिरकालपर्य्यन्त होती रही निदान मैं उन थानोंको ढूंढ़ने कई दूकानों परगया और ढूंढ़कर लेआया उसने कई एक थान पसन्दकर उनमें से रखलिये और उनका मोलपूंछा मैंनेकहा इनका मोल२४७५०) रुपये हैं उसने कहा बहुत अच्छा तदनन्तर मैंनेवह थान बस्त्रमेंबांध उसकेदासकोदिये वह सुन्दरी मुझसे बिदाहोचली उसकी प्रीति में मैं ऐसा बेबशथा न तो

उनका मोल उससेमांगा और न पूंछा कि वह सुन्दरी कहां रहती है उसके चलेजाने के पीछे मुझे बड़ाशोच हुआ कि इतनाद्रव्य मैं कहां से उन बज़ाजों कोदूंगा निदान मैं उनकेसमीपगया और कहा कि मैं इसस्त्रीको भलीभांति जानताहूं कुछ शंका का स्थाननहीं मैं उनको धैर्य्यदे संध्याको अपने घरआया रात्रिभर मुझे उसकी प्रीति और द्रव्यके देनेके बिचारमें निद्रा न आई भोरको प्रत्येकदूकानदार के गृहजाय एक सप्ताह का क़रार करआया उन्हों ने भलमनसात और शीलतासे अंगीकारकिया आठवेंदिन भोरको फिर मैंने उनकी बिनय कर कुछ और मुहलतमांगी उन्होंने मांगनाबंदकिया दूसरेदिन भोर को वह सुंदरी उसीख़च्चरपर उन्हीं सेवकोंसहित मेरीदूकानपर आई और कहनेलगी मैंने तुम्हारी बहुत राह देखी कि आकर रुपये ले-जाओगे अब आप उनको लेआई इन्हें लेकर सराफ़से परखवालो सेवक जिसकेपास वह थैलियां थीं मुझेले सराफ़के निकटगया और परखवाया सबके सब अच्छे थे वहां से मैं अपनीदूकानपर आया इतने में चौककी दूकानें खुलीं मैं उस सुंदरीसे बार्त्तालाप करतारहा उस सुन्दरीने इस चतुरता से बार्त्ता की कि जिससे बिदितहुआ कि अत्यंत बुद्धिमान् और प्रवीण है और बार्त्तान्तर में बस्त्र अपने मुख से उतारलिया फिर दूकानदारों ने दूकानें खोलीं मैंने प्रत्येक को मोलदिया वह सब मेरे सच्चेव्यवहार से बहुत प्रसन्नहुये और प्रथम से अधिक बिश्वासी समझा तदनन्तर उस सुन्दरीने और कई थान मांगे मैंने वह भी लाकर उसे दिये फिर भी मैंने न पूंछा वह सुन्दरी कौनहै और कहां से आई उसके जातेही सोचितहुआ कि देखिये इसका क्यापरिणाम होताहै और अपने मनमें सोचा इस सुन्दरीने तेरी परीक्षाली है उनकामोल अवश्य भेजवादेगी वा मेरे हानि वा अप्रतिष्ठाकी इच्छा रखती है क्योंकि दूकानदारों ने अपनी बस्तु मे-रेही बिश्वासपरदी है परन्तु जब उसकी सुन्दरता स्मरणहोती वह सबशोच भूलजाता जब एकमास ब्यतीत हुआ और उस सुन्दरी का कुछपता न लगा ब्यापारी अपनेमालके वास्ते अधैर्य होनेलगे उनके धैर्य के वास्ते जो कुछ कि मेरीदूकानपरथा शीघ्र बेंचता और

नम्बर २० मुतअल्लिके सफ़े २१०

एकस्त्रीकाखच्चरपरसवार औरव्यापारीसेबातींकरना.



कुछ कुछ उनको पहुँचाता एकदिन भोरको वही सुन्दरी उसी बाहन और उन्हीं सेवकों सहित आई मैं उसे देख हर्षितहुआ जब वह मेरीदूकानपर आकर बैठी उनथानोंका मोलदे कईप्रश्न मुझसे किये उनमें से एक यह था तुम्हारा बिवाह हुआहै वा नहीं मैंने उत्तर दिया अभी नहीं फिर उस सुन्दरी ने अपने दासको सैनकी वह मुस्कराय मुझे एकान्तमें लेगया और मेरे कानमें चुपकेसे कहा मैं जानताहूँ तुम इसपर मोहितहो परन्तु आश्चर्य्यहै तुमने इस बातको गुप्तरख किसीबातकी इससे इच्छा नहींकी और वहभी तुमपर मोहितहै यह न जानो कि यहां केवल थानोंकेवास्ते आतीहै किन्तु तुम्हारी प्रीति उसे आकर्षण करती है इसीलिये तुम्हारे बियाहका हालपूंछा तौ भी तुम इस सैनको न समझे और कुछ उससे चाहना न की मैंने उससे कहा मैं इस सुन्दरी पर उसी दिनसे कि पहिले देखाथा मोहितहूँ परन्तु मुझे कब आशाथी कि उनकी भी यही इच्छाहै यदि इसमें तुम मेरी सहायता करोगे तो यह तुम्हरा उपकार मैं कभी न भूलूंगा वह वहां से उठ उस सुन्दरीके समीपगया और कहा भलीभांति ठीककरआया हूं तब वह सुंदरी दोनों अनुचरियों को कुछ सैनकर उठखड़ीहुई और मुझसेकहा कि मैं इसीसेवकको तेरे निकट भेजूंगी जो यह कहे सो तुम करना तदनन्तर मैंने सबरुपया ब्यापारियोंको बांटदिया और उस अनुचरके आनेकीराह देखतारहा कईदिन पीछे वह आया मैंने बड़ी प्रीति से उस चन्द्रमुखी की कुशल पूंछी उसने उत्तर दिया तुम बड़े भाग्यवान्हो तुमपर वह अतिमोहित है यदि उसका बशहोता तो अभी तुम्हारे निकट चलीआती मैंनेकहा वह सुन्दरी बड़ी शीलवान् जानपड़ती है उसनेकहा क्या तुम नहीं जानते वह खलीफ़ा हारूंर-शीदकी बीबी जुबैदाकी सहेली हैऔर बीबी उसे बहुत प्यारकरती है और बाल्यावस्थासे उसने उसे पालनकिया है और महलों के सब कार्योंकी यह अधिकारी है जुबैदाने कई बेर उसे बिवाहकरने को कहा अब उसने उससे कहाहै यदि आपकीइच्छा हो तो एकब्यापारीहै मैं उससे बिवाहकरलूं बीबीने उसको स्वीकारकिया और कहा एकबेर मैं उसे देखाचाहतीहूं तब बिवाहकी आज्ञादूंगी मैं तुम्हारे लेनेको आया

हूं तुम बादशाह के मकान में चलो इसमें तुम्हारी क्या इच्छाहै मैंने कहा मैं चलने के वास्ते तत्परहूं जिससमयचाहो मुझेलेचलो उसने कहा बहुत अच्छा परन्तु तुमजानतेहो कि कोई मनुष्य ख़लीफ़ा के महलमें नहींजासक्ता किसी उपायसे मैं तुमको लेजाऊंगा आज संध्यासमय उसमसजिदमें जो अमुकनदीके कूलपर वर्त्तमान है जाकर मेरे आगमनकी बाटदेखना मैंने कहा अतिउत्तम निदान जब सायंकालहुआमैं उस मसजिदमें जाकर सेवककी बाट देखनेलगा इतने में एकछोटी नाव उस नदी के तटकी ओर आई जब वह मसजिदके नीचे पहुँची सब उतरगये और बहुत से सन्दूक़ उसपर लादे उसमें एक बड़ा लम्बाचौड़ा सन्दूक़ जो लाये थे उसको मसजिद में रख चले गये परन्तु एक सेवक वहां रहगया इतने में वह सुन्दरी भी वहां आई मैं उसके निकटगया और कहा क्या आज्ञाहै उसने कहा मुझे इस समय बात करने का सावकाश नहीं तुरन्त एकसंदूक़ खोला और मुझसेकहा तुम इसके भीतर जाकरलेटरहो मैं उसमें लेटरहा उसने तुरन्त उससन्दूक़को बन्दकर तालालगाया तब उस सेवकने कि उसकाबिश्वासित और भेदीथा केवटको पुकारा और कहा इससंदूक़को इसनावपर रक्खो वहसन्दूक़ जिससपरमैंथा उठा नावपर लेगये और चंद्रमुखी भी उसपर सवारहुई मैं इसका परिणाम बिचार भयभीत हो अपने को धिक्कार देनेलगा और इस कर्म्मसे दुःखित हुआ वह नाव ठीक ख़लीफ़ा हारूंरशीद के द्वारपर जायलगी सबसंदूक़ोंको नावसे उतार द्वारपालके प्रधान के निकट लेगये जिसके पास सब सन्दूक़ोंकी कुञ्जियांथीं और कोई बस्तु उस प्रधान के देखने भालने बिना भीतर न जाती वह प्रधान उससमय सोताथा जब उसेजगाया तो अत्यन्त क्रोधितहुआ इसहेतु उस सुन्दरी से बहुत बादानुवाद हुआ वह कहता कि यह सन्दूक़ मेरे देखे बिना भीतर न जानेपावें और उससुन्दरी ने आज्ञादीथी कि इनसन्दूक़ों को प्रधान के देखने बिना उठाउठा तुरन्त मकान के भीतर लेजाओ ऐसा न हो कि वह सन्दूक़ों को खोलकर देखे और भेदखुले परन्तु वह द्वारपाल जो प्रधानके अधिकारमें थे तलाशी के लिये प्रधान के निकटलेगये प्रथम

उसी सन्दूकको जिसमें मैं था उठाकर सम्मुखरक्खा मैं कि यहबार्ता और तकरार सुनताथा अत्यन्त भयभीतहुआ कि इस संदूकके खुलतेही अवश्य माराजाऊँगा मेराकाल आयपहुँचा परन्तु उस सुंदरीने न तो उसकी कुञ्जीदी और न उसे हाथ लगाने दिया और उससे कहा तुमभलीभांति जानतेहो मैं कोईबस्तु ज़ुबैदाकी आज्ञाबिना मंदिरमें नहीं लेजाती इससंदूक में बहुतसा बहुमूल्य असबाब ब्यापारियों का रक्खाहुआ है जो अभी इस नगरमें पहुँचे हैं और कई बोतल जमीज़म * के जलकी हैं जो एकशीशाभी इसके खोलनेमें टूटजावेगा सम्पूर्ण बस्तु इसकी नष्टहोजावेंगी इसकी जवाबदेही तुमको देनी होगी और ज़ुबैदा तुमको इस ढिठाई से दण्डदेगी प्रधान भयमान हुआ और कुछ न बोला और सन्दूक उठवादिये दास उठाकर भीतर लेगये परन्तु बड़ी कठिनता से उस दुष्ट की तलाशी से बचे यहां आकर अधिक आपदा मुझपर पड़ी अर्थात् अकस्मात् ख़लीफ़ा आप उस मकान में आया और बहुत से सन्दूकों को देख पूंछा कि मुझे इनसन्दूकों को खोलदिखा इस में क्या बस्तु है उस सुन्दरीने बहुतसे बहाने किये परन्तु कोई उपयोगी न हुआ निदान निरुपाय हो एक एक सन्दूक खोल दिखाने लगी जब सब दिखा चुकी केवल वही जिसमें मैं अभागा था शेष रहगया ख़लीफ़ा ने कहा इसकोभी तुरन्त खोलदिखा हे मित्रो! उससमय की मेरीदशा न पूंछिये काटोतो रुधिरनहीं निदान उस चतुराने विनयकी कि आप इस संदूक के खोलने में अधिक बाद न कीजिये और इसके देखनेकी इच्छा न कीजिये इसमें वह असबाबहै कि ज़ुबैदा बिना मैं इसे नहीं दिखासक्ती ख़लीफ़ा ने कहा अच्छा इसे न दिखा वहांसे ख़लीफ़ाकहीं दूसरीओर चलागया तदनंतरदासों को आज्ञादी इनसंदूकोंको तुरंत यहांसे लेजाओ सेवकउठे उनको उससुंदरी के मकानमें लेगये और वहांसे निकलआये जब उसके मकान में कोई न रहा उस सुंदरीने उस संदूकको जिसमें मैं था खोलकर कहा शीघ्रनिकल मैं निकल आया फिरमुझे एकसीढ़ी दिखाकर कहा इसपर तू चढ़जा वहां एकमकान

* एककुआं मक्के में है मुसल्मान उसका जल गङ्गाजीके तुल्य पवित्र जानते हैं॥

है तू जाकर बैठरहियो मैं अभीआतीहूं मैं जब ऊपरकोचढ़ा उसनेतु-रंत किवाड़ मूंदकर ताला लगादिया एकक्षण न हुआथा कि खली-फ़ा उस कोठेके अन्दर फिर आया उसीसंदूकपर जिसमेंमैं पहिले बंद था बैठगया और उससुन्दरीसे देरतक नगरका वृत्तान्त पूंछा किया वह सुन्दरी बहुत कालपर्यन्त खलीफ़ा से वार्त्ताकरती रही तदनन्तर खलीफ़ा वहांसे उठ अपने शयनागारमें गया वह सुन्दरी खलीफ़ा से बिदाहोय उसीमकानमें आई और मुझसे कहा कि यह दुःख तुमको मेरेकारणपहुँचे परन्तु मुझे तुमसे अधिकभयथा कुछतो तुम्हारा और कुछअपना अब धैर्य्य रक्खो किसीभांतिका डरनहीं तदनन्तर हम दोनोंने मिलकेभोजनकिया और बहुतकालपर्यन्तबार्त्ताकरतेरहे फिर उसने कहा अब तुम शयनकरो कलभोरको तुम्हारीभेंट ज़ुबैदासे हो-गी रात्रिको कि खलीफ़ायहांशयनकरतेहैं भेंटनहींहोसक्ती मैं बड़ेआ-नन्दसे उसदिव्यमकान में सोरहा और मुझमें अतिप्रसन्नता थी कि ईश्वरने मुझे अतिसुन्दरी स्त्री कृपाकी जो रूप अनूप और चतुरता और प्रवीणता में अद्वितीयहै अरुणोदयहोतेही वहसुन्दरीमुझेज़ुबै-दाकी भेंटकोलेगई और सबभांति ऊँचनीच मुझे सिखाये जो ज़ुबैदा यह कहेतो तुम यह उत्तरदेनाजो यह कहे तो तुम यहकहना निदान वह मुझे ज़ुबैदाके मकान में कि बहुतबड़ा और बादशाही सामानसे अलंकृतथा लेजाकर एकस्थानपर खड़ाकिया और कहा वह अपने शयनस्थानसे उठ यहां बैठेगी और आप चलीगईपहिले बीसस्त्रियां नवयौवना अत्यन्तरूपवान् और उत्तम आभूषण और वस्त्रसे अलं-कृत वहांआई और तख्तके सम्मुख जो ज़ुबैदाके बैठने को बिछा था दो पंक्ति बांध खड़ी होगई तदनन्तर और बीस स्त्रियां वैसीही सुन्दर पहिले समूह के समान वहां से निकलीं उनके मध्य में ज़ुबैदा बड़ी तमक और हंसगतिसे निकली ऐसे रत्नपहिनेथी जिनपर दृष्टि न ठहरती और आभूषणादिक के भार से धीरे धीरे चलती जब वह रत्नजड़ित तख्तपर बैठी उसकी बांदियां अपने अपने उचित स्थानपर खड़ीरहीं और वह सुन्दरी कि उसीकी पोषित और मेरी प्यारीथी आप उसके दाहिनीदिशि बड़ी तमक झमकसे खड़ी हुई

उस समय एक बांदी ने मुझे सैन से कहा मैं तख्तके आगे जाकर प्रणाम करने को इतना झुका कि मेरा शिर क़ालीनपर जहां उसके चरण थे लगगया और देरतक इसीभांति झुका रहा यहां तक कि खुदजुबैदाने निजमुख से मुझे शिरउठाने को कहा और मेरा नाम जाति पांति पूँछा मैंने उसका यथोचित उत्तरदिया मुझे देख और मेरीबातें सुन हर्षित हुई और कहा मैं चाहतीहूँ कि अपनी पुत्रीका तेरेसाथ बिवाहकरूं और बिवाहकी सामग्री तय्यार करने को आज्ञा देतीहूं आजके दशवें दिवस तुम्हारा बिवाह होजावेगा इस समयान्तर में खलीफ़ा से भी आज्ञा लेलूंगी दशदिन पर्य्यंत तुम यहीं होशियारी से रहो निदान मैं दशदिनतक उसी दिव्यमन्दिरमें रहा वह सुन्दरी एकान्त में बहुधा मेरे निकट आती और फिर चलीजाती मैं वहां अत्यन्त हर्षित और प्रतिष्ठापूर्व्वक रहा और जुबैदाने इसकालान्तर में खलीफ़ासे भी आज्ञालेली और बहुतसा द्रव्य मेरीप्यारी को दिया वहां प्रतिदिवस गाना नाचना आनन्दमङ्गलहोता जब नौदिन व्यतीतहुये दशवेंदिन बिवाहकी तय्यारीहुई उसदिन हमदोनों दूलहा और दुलहिन स्नानकर उत्तम उत्तम बस्त्र पहिने सन्ध्याको मेरेवास्ते बांदियों ने नानाप्रकार के पाकचुने उनमें से एकथाल में लहसुनका पुलाव था जिसे तुम भाइयोंने मुझे बरजोरी खिलाया मैंने उसे स्वादिष्ठता और पाकोंकी अपेक्षा रुचिपूर्व्वक खाया परन्तु अभाग्यता से कि दुःख भोगना था हाथ अच्छीतरह न धोये आलस्य से केवल रूमाल से हाथपोंछलिये फिर जब रात्रि भई वहांपर बहुतसे दीपदान प्रज्वलितकर बांदियों ने नृत्य गीत आदि आरम्भ किया एक ओर गाना बजाना होरहाथा एक ओर नकलें होतीं जब बिवाहकी रीतें होचुकीं बांदियां हम को नवसङ्गमागार में लेगईं मैंने भोगकी इच्छाकी अकस्मात् मुझसे मेरी स्त्री अत्यन्त अप्रसन्न और क्रोधितहुई और बड़ाशोर मचाया कि सब बांदियां इसकाहाल मालूम करने के लिये दौड़ी आईं मैं यह दशादेख अत्यन्त बिस्मित और चौकन्नाहुआ उसके भयसे उसकी अप्रसन्नताका कारण पूँछ न सका निदान बांदियोंने दुलहिन से पूँछा सुन्दरी अच्छी तो हो क्या दुःख

तुमको पहुँचा कि इतनेही काल में तुम ऐसी अधीर्य हो चिल्लाईं कुछ आज्ञा दो तो हम उसका उपायकरें उस सुन्दरी ने अतिकोपित होकर कहा इस अयोग्य और मूर्खको अभी मेरेसम्मुख से हटाओ मैंने डरते डरते कहा हे सुन्दरी! मुझसे ऐसा कौनसा अपराध हुआ कि एकही बेर मुझसे ऐसी क्रोधित होगईं उसने अप्रसन्नता से कहा तू बहुत ढीठ और दुष्ट है तूने लहसुन का पुलावखाया और हाथ नहीं धोया तू नहीं जानता कि मुझे ऐसे महामलिन मनुष्यकी सङ्गति से अतिग्लानि है अभीतक मेरा मग़ज़ उसगन्ध से फटाजाताहै तदनन्तर उसने बांदियोंसे कहा इसको पृथ्वीपर लिटाओ और चाबुक मुझेदो उन्होंने तुरन्त मुझे गिराया कई एकोंने मेरेहाथ पकड़े और कईएकोंने पांव मेरी दुलहिन ने मुझे इस निर्दयता और कठोरताई से मारा कि थकितहोगई तदनंतर बांदियोंसे कहा इसको पुलिसमें लेजाओ और पुलिसदारसे कहो इसकेहाथको जिससे इसने लहसुनका पुलाव खाया है काटडाले मैंने अपने मनमें कहा हे परमेश्वर! इस सूक्ष्म अपराधपर मैं इतना मारागया और अब हाथ कटाजाताहै वह पाककर्त्ता जिसने उसे पकायाथा और वह बांदी जो उसे लाईथी मरजाती निदान प्रत्येकबांदी को मुझपर दया उपजी यह आज्ञासुन हाथबांधके उससे बिनयकी हमारी अच्छीबहिन हमारी अच्छीबीबी बहुत क्रोधित न हो यह सत्यहै कि इसका बड़ा अपराध है और बड़ी मूर्खता की परन्तु यह तुम्हारी पदवी और स्वच्छता को न जानताथा अब इसका अपराध क्षमाकरो उसको यथोचित दण्डमिलचुका उसने कहा इतनेही दण्डसे मेराबोध नहीं हुआ मैं चाहतीहूं कि इसे सिखाऊं कि वह निर्म्मलरहे जबतक कि मैं कठिन चिह्न उसको न दूँगी कदापि स्मरण न रहेगा कि हाथ न धोनेसे क्याहोताहै तब उन्होंने फिर बिनतीकी उससमय तो वहचुप होरही और कुछ न कहा तदनन्तर उस मकान से उठ चलीगई वह सब बांदियांभी उसके पीछे २ होलीं और मुझे उसीदशामें अकेला छोड़दिया दशदिनतक मैं वहीं रहा उसके भयसे कोई दासी व बांदी मेरे निकट न आई परन्तु एकबूढ़ा कभी कभी कुछ कुछ मेरे खाने

को लाती एक दिन मैंने उससे अपनी दुलहिनका वृत्तांत पूछा कि वह क्याकरतीहै उसने कहा वहरोगीहै उसदुर्गन्धसे जो तुम्हारे हाथ से उसके मग़ज़में प्रवेशहुईथी भाई तुमने लहसुनका पुलाव भोजन कर भलीभांति हाथक्यों नहींधोये मैंने कहा अब तो मुझसे अपराध हुआ वाहरे इन स्त्रियोंकी कोमलता और क्रोध इतना कि इतने थोड़ेसे अपराधपर क्या न किया इतनेकष्ट और दण्डपानेपर भी मैं अबतक उसको वैसाही चाहताहूं और उस रूप छबि अनूपकी एक झलकके देखे बिना अत्यन्त विह्वल और अधीरहूं एक दिन उस बृद्धा अनुचरी ने कहा अब तेरी स्त्री आरोग्य होगई आज वह स्नान को स्नानागार में गई है और उसने मुझे तेरा नाम लेके कहा है कि कल के दिन मैं देखने आऊंगी अब तूभी धैर्य्य रख वह सुन्दरी ज़ुबैदाकी अत्यन्त प्यारी और उसकी सखी है निदान द्वितीय दिवस वहमेरे देखनेको आई और कहा मैं केवल तुझे दण्ड देने आईहूं फिर उसने अपनी लौंड़ियोंसे मुझे बँधवाय पछड़वाया और निर्दयता और कठोर मनसे उस्तुरा हाथमें पकड़ चारों हाथ पाँवके अंगुष्ठ काटडाले एक स्त्रीने दौड़कर किसी बृक्षका मूल पीस मेरे घावोंपर लगादिया जिससे रुधिर बन्द होगया परन्तु पीड़ा से मुझे मूर्च्छा आगई जब सुधिभई उन्हों ने थोड़ी सी मदिरा पिलाई जिससे मुझे कुछसामर्थ्य होगई अपनी स्त्री से मैंने कहा आज मैं सौगन्दखाताहूं कदाचित् फिर कभी ऐसे कुलक्षण पुलावके भोजनका संयोगहोगा तो अपने हाथोंको एकसौबीसबेर स्नान और अमुकघास की भस्म और साबुन से धोऊंगा यहसुन मेरी स्त्रीने कहा कि वहकष्ट जो मुझपरपड़ाहै मैं भी भूलजाऊंगी और तुझे अपना पतिजान तेरे साथ रहाकरूंगी उस बग़दादी ब्यापारी ने इतना कह उससभामें कहा हे मित्रो! इस कुलक्षण पुलावके भोजन न करनेका यही कारणहै निदान बांदियोंने बुलसानका तैल ख़ली-फ़ाके चिकित्सालय से लाकर मेरे घावोंपर लगाया कुछ दिनमें मैं अच्छा होगया तदनन्तर मैं और मेरीस्त्री परस्पर आनन्द मंगल से रहनेलगे मानों मैंने कभी भी पुलाव न खायाथा परन्तु जो मैं

मुख्य बादशाही महलमें रहताथा और बहुधा छिपाया और बंद कियाजाताथा इसवास्ते उदासीन रहता परन्तु अपनी स्त्रीके भयसे इसबातको न कहसक्ता उसने मेरे अन्तःकरणकी बात समझ जुबैदासे दूसरे घरमें रहनेकी आज्ञामांगी जुबैदा जो मेरी स्त्रीको बहुत प्यारकरतीथी स्वीकारकर चुपहोरही जबएक मासपूर्ण व्यतीतहुआ मैंने अपनी स्त्रीको देखा कि अपने मकानकी ओर चली आती है और कई सेवक अशरफ़ियोंके तोड़ेलियेहुये उसके पीछे पीछे आते हैं जबवह तोड़ेरख चलेगये मेरी स्त्रीने मुझसे कहा तुम्हारे क्लेशके कारण जुबैदासे मैंने अलगरहनेकी आज्ञालेली और उसने पचास हज़ार अशरफ़ी कृपाकीं कि हम प्रतिष्ठापूर्वक इसनगर में बासकरें और दशहज़ार अशरफ़ी मुझेदे कहा कि कोईउत्तमघर अपनी प्रतिष्ठाके अनुसार मोललेलो मैंने तुरन्त एकगृह मोललेलिया और उसे उत्तमबस्तुओं से अलंकृतकर उसमे जारहे और बहुतसी बांदियां और दासीदास मोलले उत्तमउत्तम चीरपहिने और आनन्दपूर्वक बिहार करनेलगे परंतु पश्चात्तापहै कि थोड़ेदिनों में मेरी स्त्री रोगयुक्तहोके कालबशहुई तदनन्तर मैंने दूसरा बिवाह किया अकस्मात् वहभी यमलोकको पधारी फिर तीसरीका संयोगहुआ सो वहभी इसीभांति मरगई मैंने उस घरको अशकुनसमझ बेंचडाला और व्यापारकी बस्तु मोलले पारसकोगया और वहांसे समरकंदको फिर वहां से यहां आ रहनेलगा उसमोदीने बादशाह काशगरसे विनयकी कि हेस्वामी ! दीनपालक दुःखहरण यहवह कहानी है जो बुग़दादी व्यापारीने उसीसभाके सम्मुख जिसमें मैं कलथा वर्णनकी बादशाहनेकहा यहकहानी निस्संदेह कुछ अद्भुतहै परंतुहमारे कुबड़ेके बृत्तान्तको नहींपहुँचती इतने में यहूदी बैद्य ने बिनयकी हे स्वामी ! मेरीकहानीको आपसुनप्रसन्नहोंगे बादशाहनेकहा जो तेरा चरित्र कुबड़ेसे बिचित्र न होगा तो अपनेछुटनेकी आशानराखियो ॥

## बादशाह काशगरके सम्मुख यहूदीकरके बर्णितकहानी ॥

यहूदी बैद्यने पृथ्वीचूम बिनयकी हे स्वामी ! मैं दमिश्कनगरमें बैद्यकी किया करता अपने पूर्णगुण के कारण उसनगर में बड़ी प्र-

तिष्ठा और सत्कारयुतरहा एक दिन वहां के हाकिमने मुझे बुलवाय आज्ञाकी कि एकरोगीकी औषधकरो तदनन्तर वह मुझे आपही एक मकान में लेगया वहांपर एक नवकिशोर अतिसुन्दर मनुष्य लेटाहुआ देखा जो पीड़ासे अतिव्याकुलथा मैंने प्रणामकिया उसने उत्तर न दिया परन्तु सैनसे कहा कि मैं तुम्हारे आगमनसे कृतज्ञहुआ तब मैंने उससे कहा अपना हाथ मुझेदो कि मैं तुम्हारी नाड़ी देखूं उसने बायांहाथ दिया मैं अत्यन्त आश्चर्यितहुआ और जाना कि वह इसरीतिको नहीं जानता तदनन्तर मैंने नाड़ीदेख औषध लिखदी और बिदाहुआ उसके देखने के लिये मैं नौदिनपर्य्यन्त जाता और वह बायांहाथ दिखायाकरता दशवें दिन मैंने उसे नीरोगपाय कहा आपअच्छेहोगये अब मेरे आनेकी कुछ आवश्यकता नहीं अब आप स्नान कीजिये फिर दमिश्कके हाकिमने मुझे पारितोषिकदे अपने चिकित्सालयका बैद्य नियतकिया और अपने महलका इलाजभी मुझसे कराता और एकस्थान मेरेभोजनके निमित्त नियतकिया वह मनुष्य जो मेरी औषधसे नीरोगहुआ जब मुझे देखताहर्षितहोता और बड़ी प्रीतिकरता सो वह अपने साथ स्नानागारमें लेगया बस्त्रउतारने के समय मैंने दाहिनाहाथ उसका कटा देखा इसीकारण वहरोगीभी होगयाथा और मुझसे छिपारखताथा उसकेदेखने से मुझे बड़ा पश्चात्ताप हुआथा उसने मुझे इसदशामें देख कहा केवल मेरा दाहिनाहाथ कटादेख आश्चर्य और पश्चात्ताप न करो मेरावृत्तान्त अद्भुतहै स्नान कर जब मैं भोजन करने को बैठूंगा तब वह कहूंगा तदनन्तर उसने मुझसे पूछा जो बागकी सैरकरना मेरेवास्ते हानिकारक न हो तो मैं जाऊं मैंने कहा बागकी सैरकरना तुम्हारे वास्ते अतिलाभकारी है और उस मनुष्यने कहा तुम्हारा मनचाहता हो तो तुमभी मेरेसाथ चलो कि मार्गमें मैं अपने निज बृत्तान्त को तुमसे कहूंगा मैंने कहा बहुत अच्छा मैं चलताहूं तदनन्तर उसने अपने सेवकों से कहा भोजनबनाओ और हम दोनों बागकी सैरको गये दो तीनबेर उसमें फिरे फिर एक क़ालीनपर जो एक सघनबृक्ष के नीचे बिछाथा बैठगये वह अपना बृत्तान्त इसभांति वर्णन करनेलगा कि मेरा उत्प-

त्तिकास्थान मवस्सलनगर है और बड़े घरानेका पुत्रहूं मेरेदादाके दशपुत्रथे मेरापिता सबसे बड़ाथा केवल अपने पिताका मैंहीं इकलौता पुत्रथा बाक़ी मेरेचचा अपुत्र थे मेरे पिताने मेरे पढ़ाने लिखानेमें बड़ा श्रम किया और नानाभांति की बिद्या और शिल्पबिद्या जो मनुष्य को सम्पूर्ण आयुमें उपयोगीहों मुझे सिखाईं जब मैं बड़ाहुआ और प्रत्येक सभामें बैठने उठनेलगा तब एक शुक्रबार को मेरा पिता और मेरे सब चचा मवस्सलकी जामामार्स्जिद में गये जब निमाज़ी निमाज़ पढ़चुके और अपने कार्य्यमें लगे मेरा पिता और मेरेचचा नगरोंकी शोभाका बखान करनेलगे एक मेरे चचाने कहा कोई देश मिसर जो नीलनदपरहै बराबरी नहीं करसक्ता मुझे उनके साथ मिसरकी प्रशंसा सुन ऐसी इच्छाहुई कदाचित् मैं स्वाधीनहोता तो उसीसमय चलाजाता यद्यपि मेरे सबचचा यही कहतेथे कि बुग़दाद और इसनदी के समान कोई नहीं परन्तु मेरे पिताने मिसरकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा जिसने मिसर नहीं देखा वहसंसारकी अद्भुतबस्तुओंसे अज्ञानहै जिसकीधरती स्वर्णकीसी है और उसकी पृथ्वी ऐसी उर्बरा है कि पुरबासी वहां के धनाढ्य और सम्पन्नहैं और स्त्रियां वहांकी अत्यन्तरूपवान् और चतुर नीलनद बहुत अच्छा और जल उसका अत्यन्त मिष्ट और पाचन और रोगहर जिसकी बहाव से चारोंदिशाके देश सदैव हरेरहते और उस देशकी धरती बहुतनर्म और खेतीके योग्यहै जिसके बोनेसे किञ्चित् श्रमनहींहोता बिशेषकर किसी कबिने उसकी प्रशंसामें कहाहै जिसका अर्थ यहहै मिसर वहांके पुरवासियों से अबकी भाषामें कहताहै तुम्हारा नद द्रव्यप्रद और तुम्हारेलाभ के हेतु सदैव यात्रा करता है पश्चात्तापहै कि तुम इसे तज अन्यदेश में जा रहो इतना कह मेरे पिताने कहा नीलनद के दोनोंओर खेती बाड़ी और सफल वृक्ष सदैव ऋतु अऋतु में रहते हैं नानाप्रकार के बृक्ष और सब भांति के पशु पक्षी वहां उत्पन्न होते हैं और नगर बहुत बसाहुआहै और मिष्टजलकी नहरें चलती हैं और महाप्रवीण मनुष्य वहां रहते हैं इसीभांति की नानाप्रकार की हज़ारों सुन्दर सुन्दर वस्तु मनहरण

वहांपर हैं वहां के जल और हरियाली की उपमादें तो मानों पन्ने के टुकड़े रूपेकपात्र में जड़ेहुये हैं तो उचितहै और कैरू उसकी दारुल्-सल्तनत है जो बहुत बड़ा और बसाहुआ जिसमें अतिसुन्दर मन्दिर वर्त्तमानहैं जिनमें अनेकभांति के दिव्य रत्न जड़े हैं मैंने बहुत से नगर और शहर आदिक देखे हैं जिसमें बड़े बड़े प्रतिष्ठित और मिलनसार मनुष्य रहते हैं और अनेकभांति की अतिहितकारक और आनन्ददायक दिव्यबस्तु उत्पन्न होती हैं मैंने बहुतसी आयु ऐसे ऐसे सुन्दर नगरों में आदरपूर्वक बिताई है फिर उस मनुष्य ने कहा मेरे पिताके मुखसे यह बचनसुन वह चुपहोरहा और कुछ उत्तर न दिया किन्तु उन्होंने भी कुछ उसकी प्रशंसा की मुझे उस काल से मिस्रदेश के देखने की ऐसी लालसा हुई कि रात दिन अधीर रहता परमेश्वर से यह मांगता कि कोई कारण ऐसा होजाय कि जिससे मैं मिस्रको देखूं मेरे चचाओं ने भी उस देशके देखने की लालसाकी और मेरे पितासे कहा तुम भी मिस्रको चलो कि हम भी तुम्हारे साथ चलें मेरे पिताने स्वीकार किया तदनन्तर मेरेचचाओं ने कि वह ब्यापारी और धनाढ्यथे बहुतसी बस्तु ब्यापारकी मोललीं जब मैंने उनकी तय्यारीका हालसुना अपने पिताके निकट रोताहुआ गया और कहा मुझे भी उनके साथ जाने की आज्ञादीजिये कि मैं भी अपने वास्ते ब्यापार की बस्तु मोललूं पिताने कहा अभी तुम छोटी अवस्थाके हो इसयात्रा में तुम्हें दुःखहोगा तुम्हारा जाना मिस्र में ठीकनहीं इसबातसे मेरीइच्छा कुछकम न हुई तब मैंने अपनेचचाओंसे कहा तुम इस बिषयमें मेरेपितासे कहो निदान उनके कहनेसे मेरापिता प्रसन्नहुआ कि यह दमिश्क पर्य्यंत हमारे साथचले वहांसे जब हम मिस्र नगरकी ओर चलेंगे तो इसे मवस्सलकी ओर बिदा करदेंगे फिर पिताने कहा दमिश्कभी बहुत अच्छा नगरहै और उसका जल वायुभी बहुतउत्तमहै मैं राज़ीहुआ कि वहींतक मुझेलेचलिये यद्यपि मैं मिस्र के देखनेकी लालसा रखताथा परन्तु पिताकी प्रसन्नताभी अवश्यथी दमिश्कपर्य्यंत भी जाना अति उत्तमजाना निदान मवस्सल से अपने पिता और चचाओं के साथ नूष्टपामारको चला

और वहांसे अपड़लिशको गया वहां से हलब में पहुँचा और थोड़े दिनरह हम सब दमिश्क में पहुँचे मैं उसनगरके देखतेही अत्यन्तप्रसन्न हुआ हम सब एकसराय में उतरे उस नगरको बहुत बड़ा पाया पुरवासी सब सजाति और शीलवान् थे कई दिनतक वहांके बाग़ जो प्रत्येक स्वर्गके बाग़ोंके समानथे सैरकी और उस नगरकी शहरपनाह सुन्दर और मनभावनथी हमने इस उपमाको सत्यजाना कि दमिश्क की सुन्दरता और लालित्यता स्वर्गके बाग़ोंके मानों प्राणहैं मेरेपिता और चचाओंने थोड़ेदिन ठहर आगेजानेकी इच्छाकर मेरा असबाब बहुत नफ़े से बेंचा कि प्रत्येक शतपर मुझे ५) रु० नफ़ा हुये जिस से मैं बहुत धनाढ्य होगया निदान मेरे बड़े मुझे दमिश्क में छोड़ आगे चले तदनन्तर मैंने ख़र्च में बहुत किफ़ायत की व्यर्थ एक कौड़ी भी ख़र्च न करता मैंने एक हवेली अपने रहनेकेलिये किरायेपर ली वह हवेली अत्युत्तम सङ्गमर्मरकी बनीहुई थी और भीतर बाहरसे उसमें जंगारसे चित्र खुदेहुये थे उसमें एक उत्तम पुष्पबाटिका थी जिसमें बहुत से फ़व्वारे चलते मैंने उस घरको शीशेआदि अन्य सामग्री से यथोचित थोड़ेख़र्च में सजाया उसघरका स्वामी प्रथम अब्दुलरहीमनामे दमिश्कका रईसथा अब उसे कोई रत्नपारखी धनवान् मोललै किरायेपर चलाताथा मैंने उसे दो अशरफ़ी किराये पर लिया और मेरेदासदासी और असबाब बहुतथा अमीरोंकीतरह उस में रहनेलगा और कभी कभी पुरबासियोंको जिनसे कि मेरीजानपहिचान और भेंट होगईथी न्योतता और आदरकरता और कभी वह मुझे निमंत्रणकर यथोचित सत्कारकरते इसीभांतिमैं अपने चचाओं के पीछे दमिश्कनगर में आनन्द मङ्गल और नानाप्रकार के भोग भोगतारहा और पुरवासी मेरे समीपआते और मेराकाम कियाकरते एकदिन मैं अपनेद्वारपर भोजनकरके बैठाथा कि एकस्त्री अतिसुंदरी उत्तम उत्तम आभूषण और वस्त्र पहिने मेरेसमीप आई और कहा क्या तुम कपड़ा बेंचतेहो यहकह मन्दिरके भीतर चलीगई जब मैंने देखा कि वह अन्दर मकानकेजाचुकी मैं वहांसे उठा और भीतरजाय किवाड़मूंदलिये और उस स्त्री को एक दालानमें लेगया और बैठाय

कहा हे सुन्दरी! मेरे समीप बहुत अच्छे थानहैं परंतु पश्चात्तापहै कि इससमय मेरे पास मौजूद नहीं उस स्त्री ने यह सुन अपने मुखसे वस्त्र उलटलिया मैं उसकारूप अनूपदेखतेही बेबशहुआ वह सुंदरी बोली मैं थानोंको मोललेने नहीं आई मुझे तेरेसाथ भेटकरनी अंगीकारथी मुझे इच्छाहै कि सायंकाल पर्य्यन्त मैं यहांरहूं यदि तुम्हें बुरा न लगे मैं इससमय कुछ भोजन किया चाहतीहूं मैंने कहा बहुत अच्छा तत्काल अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुरन्त कुछ रुचिर भोजन और उत्तम फलादिक लाओ उन्होंने उसी समय लादिये फिर हम परस्पर बैठ बड़ीरुचि और स्वादसे खाया किये और आधीरात बड़े आनंद और बिलासपूर्ब्बक कटी तदनन्तर शयन किया जब अरुणोदय भया मैंने दश अशरफ़ियां निकाल उस सुन्दरी मृगनयनी के हाथ रक्खीं उसने उन अशरफ़ियों को न लिया और तुरन्त फेरदीं और कहा क्या मैं अशरफ़ियां लेनेको तेरे पास आई थी फिर जब मैंने बहुत तकरारकी उसने कहा जो यही रीति रक्खोगे तो फिर मैं कभी तुम्हारे निकट न आऊंगी उलटी दश अशरफ़ियां अपनी थैली से निकाल मेरे हाथ रक्खीं मैंने लाचारी से लेलीं और कहने लगी फिर मैं तीन दिवस के पश्चात् आऊंगी यह कह बिदाहुई मैंने उस के बियोग में यह समझा कि मेरे चित्त को चुराके लेगई तदनन्तर तीन दिवस के पश्चात् वह सुन्दरी उसी समय मेरे गृह आई मैंने प्रीति से अगवानी की और घर में लेगया सम्पूर्ण रात्रि उसी आनन्द मङ्गलमें उसी दिनके समान ब्यतीतहुई दूसरे दिन बिदा होती समय उसने मुझसे प्रतिज्ञाकी कि तीसरे दिन फिर आऊंगी और दश अशरफ़ियां मुझे देकर चलीगई निदान तीसरी भेंट में जब मदिराका नशा उसे अच्छी तरह चढ़ा मुझसे कहने लगी हे मेरे परम प्रियतम! तू मुझे कैसा जानताहै मैं सुन्दरहूं वा नहीं मैंने कहा यह तुम्हारा प्रश्न ब्यर्थ है मेरी प्रीति को तुमने भलीभांति परखा मैं प्राणसे तुमपर मोहितहूं तुम मेरी बीबीहो इसके पूछने से क्या अर्थ है उसने कहा अब तो तुम यह कहतेहो परन्तु दूसरी स्त्री को जो मुझसे जान पहिचान रखती है देखोगे तो मुझे भूलजा-

आगे वह मुझसे अवस्थामें न्यूनहै और अत्यन्त सुन्दर कोमलांगी है मैं उसे अपने साथ लाऊंगी वह मुझसे बहुत प्रीति रखती और उसे तुम्हारे देखनेकी अतिलालसाहै तुम्हारी आज्ञा बिना मैं उसे नहीं लासक्ती मैंने कहा हे सुन्दरी! जब चाहो उसे लेआओ परन्तु मुझे दूसरी स्त्रीके देखने से क्या प्रयोजनहै मैं तो तुम पर मोहितहूं ऐसा नहीं होसक्ता कि किसीभांतिकी इसमें न्यूनाधिक्यहो उस स्त्रीने कहा इसी प्रणपर स्थिररहना मैं तुम्हारी परीक्षालेतीहूं जब यह वार्त्ता होचुकी वह सुन्दरी मुझसे बिदाहुई और उस दिन पचास अशरफियां मुझे दीं और मुझे भी लेनीपड़ीं जातेसमय कहनेलगी दो दिनके पश्चात् एक नवीन अतिथि तुम्हारे घर आवेगा उसके निमित्त भोजन आदि तय्यार रखना और मैं भी अपने नियमपर आऊंगी मैंने जिसदिन उसके आनेको सुनाथा उस घरको झड़वाकर बिछौना बिछवारक्खा और नानाप्रकार के पाक और फल तय्याररक्खे निदान सन्ध्याको वह दोनों स्त्रियां आईं और भीतरजाय दोनों ने अपने अपने मुखसे वस्त्र उतार लिया वास्तव में दूसरी दशभाग पहिली से प्रत्येक विषय में अधिकथी जो एकदृष्टि पहिली पर पड़ती तो कई बेर दूसरी पर क्योंकि छवि उसकी ऐसी अनूप मनहरण दुःखदरण आनन्दकरण थी कि आपसे आप चित्तको खींचे लेती और जब उसकी कामकी दृष्टि मुझपर पड़ती तो मैं अधीरहोजाता निदान मैंने दोनोंकी कृतज्ञताकी दूसरी स्त्रीनेकहा मुझे उचित है तुम्हारी कृतज्ञहूं कि तुमने मुझे अपने घरमें आनेकी आज्ञादी तदनन्तर मैंने उनदोनों स्त्रियोंका भोजनपर बैठाय आप नव अतिथि अर्थात् दूसरी स्त्रीके सम्मुखजाबैठा और वह पहिली स्त्रीकेभयसे मेरी ओर दृष्टि न करसक्ती और न हँससक्ती परंतु उसने हावभाव कटाक्ष से मेरे मनको मोहलिया जब उसने जाना कि मैं प्राणसे मोहितहूं तब उसने सैनसे प्यारकी बातें कीं पहिली स्त्री यह सब जानगई प्रथम मुस्कराय कहनेलगी मेरे प्रियतम इसस्त्रीपर क्यों दृष्टि करतेहो अपनी सौगन्द और प्रणको बिस्मरण करगये मैंने भी उसी भांति हँसकर कहा तुम मुझे व्यर्थ दोष लगातीहो मुझे क्या उचित है कि तुम्हारी

आज्ञाके बिपरीत इसको कि बड़ीदयासे मेरे स्थानपरलाईहो आंख उठादेखूं इसबात में तुमदोनों के निकट मेरीलज्जा है जब हम बहुत सी मदिरा पी मदांधहुये नवीनस्त्री और मैं चोरी चोरी परस्पर देखते और परस्पर कटाक्षकरते पहली स्त्रीको ऐसी डाह और बैरहुआ कि वह अत्यन्त क्रोधितहो यहकह खड़ीहुई कि मैं अभी आतीहूं कुछ कालमें दूसरी स्त्री कि मेरेसमीप बैठीथी उसके मुखका बर्ण और का और होगया और अन्तसमयकीसी दशा होगई मैंने गर्दन में हाथ डाल उसे सँभाला कि कुर्सीपरसे गिर न पड़े इतने में वह कालबशहुई मैंने घबराके अपने सेवकों को पुकारा कि इसे थांमें और बाहर निकल के पूछा कि वह पहिली स्त्री किधरगई मेरे सेवकों ने कहा कि द्वारसे बाहर निकल अमुकगलीसे हो चलीगई इससे मुझे बिदितहुआ कि यह उसीकी दुष्टताहै पिछलेगिलास में बिषमिला उसे पिलागई इस अकस्मात्‌की उपाधिसे मैं अत्यन्त बिस्मित और शोचित और भय-भीतहुआ देखिये इसके पलटे कौन आपदा मुझपर पड़ती है फिर यह सोचा आगे जो कुछहो सो हो अब इसकीलोथ तुरन्त गाड़दिया चा-हिये तदनन्तर मैंने सेवकों से कहा कि संगमर्मर के फ़र्शको जो उस घरभरमें बिछाहै धीरे २ खोदो उन्होंने तत्काल खोदडाला तब मैंने उस मुर्देको उसी में गाड़दिया फिर मैंने कुछ धन अपने साथले शेष बस्तुको मकान में बन्दकर कुफुललगाया और उसपर अपनी मुहर कर द्वारपर तालालगाया और उस रत्नपारखी के निकटजाय एकबर्ष का किराया पेशगी दे कहा यहकुंजी उसहवेलीकी है अपनेपास रख छोड़ना मुझे कुछ आवश्यकता है मैं कैरूमें अपने चचाओं के निकट थोड़े दिनकेलिये जाताहूं यहकह बिदाहुआ और अश्वपर आरूढ़हो निश्शंक कैरूकी ओर चला कुछदिन में कैरूपहुँच अपने चचाओं से भेंटकी वे मुझे देख आश्चर्यित हुये और कहनेलगे तुम क्योंकर यहांआये मैंने कहा तुम्हारे आगमन की बाट देखतारहा जब तुम न आये और न कुछ तुम्हारी क्षेमकुशल इस अवधि में पाई घबराके चलाआया उन्होंने मुझपर बड़ीदया की और प्रतिज्ञा की कि हम सब तुम्हारे पिता से तुम्हारी सिफ़ारश करेंगे क्योंकि वह तुम्हारे

यहां आनेसे अति अप्रसन्नहोगा कि तुम मेरी आज्ञाबिना क्योंचले आये तदनन्तर उसी सराय में जहां वे सब उतरे थे मैं भी रहा और वहां के जो अद्भुत २ तमाशे थे भलीभांति देखे जब मेरे पिता और चचाओं ने सब व्यापारकी वस्तु बेंच मवस्सल नगर में जाने की तय्यारी की मैं अभी कैरू अच्छीतरह न देखचुका था किसी और दूरस्थानपर छिपके जारहा जबतक वे वहांसे न गये अपने स्थान से न हिला उन्होंने मुझे बहुतढूंढ़ा परन्तु मैं न मिला सबने यही समझा कि वह इसी लज्जा से कि बिना आज्ञा अपने पिता के यहां आयाथा फिर दमिश्कको चलागया वहां पहुँच हम उसे अपनेसाथ लेजावेंगे यह बिचार वहांसे चलेगये मैं यहां कैरूनगर में तीन वर्ष पर्य्यन्त रहा और दमिश्क में रत्नपारखी के निकट वार्षिक किराया भेजदेतारहा और लिखभेजताथा कि मेरा असबाब रक्षापूर्वक रखना मैं शीघ्रही वहां पहुँचताहूं परन्तु जो आपदा मुझपर दमिश्क नगर में पड़ी उसे सुन तुम आश्चर्यित होगे निदान जब मैं वहां से दमिश्कमें आया पहले उस जौहरी के निकटगया वह मुझे देख हर्षित हुआ और मेरे साथ उस मन्दिर तक आया मैंने उसे कुफुल और मोहरको वैसाही पाया जब वह रत्नपारखी चलागया सेवक के साफ़ करते सुवर्णकी माला ज़ंजीर के आकार जिसमें दशदाने दिव्य मोतियों के पिरोये हुये थे पड़ाहुआ पाया वह उसे मेरे निकट लेआया मैंने उस मालाको पहिंचाना कि यह वही मालाहै जिसको उस मृतक स्त्रीके गलेमें देखाथा और घबराहट में मुझे उसकी कुछ सुधि न थी निदान वह माला देख उस सुन्दरी को स्मरणकर बहुत रोया और कपड़ेमें लपेट गलेमें डाललिया तदनन्तर मैं उस नगरमें रहनेलगा यहांतक कि सम्पूर्ण धन जो मेरे निकट था सब ख़र्च होगया और बेंचनेलगा प्रथम मैंने मालाबेंचने की इच्छाकी परन्तु मुझे मोती के मोलकी संख्याका ज्ञान न था इसलिये मैं ऐसे दुःखमेंपड़ा जिसे सुन कर तुमको पश्चात्ताप होगा मैं उसे चौकमें लेगया और वहां उसे एक दल्लाल के हाथदे कहा इसको बेंचताहूं उस दल्लाल ने कहा ऐसे मोती मैंने कभी नहीं देखे ऐसा बहुमूल्य मोती अलभ्य है फिर वह

नम्बर२१मुतअल्लिकेसफ़े२८६द्वि.भा.

चित्रयहूदीकापकड़जानाऔरपुलिसकेलोगोंकीमारपीट ॥



दल्लाल मुझे उस रत्नपारखी की दूकानपर जिसके घरमें मैं रहताथा बैठगया और कहा आप यहां ठहरो इसको मैं बाज़ार में दिखा और इसके मोल लेनेवाले को ढूंढ़ताहूँ जो कुछ इसका मोल ठहरे अभी आपसे आकर कहताहूँ क्षणमात्र में उस दल्लालने चुपके से आके कहा इसका मोल दोसहस्र अशरफ़ी हैं परन्तु अब कोई पचास अशरफ़ी से अधिक नहीं देता मैंने कहा जिस मोलपर बिके मुझे लादे वह दल्लाल उसी ब्यापारीके निकट जो पचास अशरफ़ी देताथा गया और कहा इसका धनी इतने मोलपर राज़ी है वह ब्यापारी यह सुनतेही उस दल्लालको पकड़ कोतवालके निकट लेगया और उस माला को दिखाय कहा यह माला चोरी गईथी अब चोर अपनेको ब्यापारी ठहराके बेंचने आया और वह चौकमें बर्त्तमानहै दोहज़ार अशरफ़ी की मालाको पचास अशरफ़ीपर देना स्वीकार कियाहै इससे सूचित है कि यह चोरहै कोतवालने बरकन्दाज़ोंको आज्ञादी कि उसे बांधके बहुतमारो क्योंइतनासस्ता बेंचताहै कोतवालने मुझे पकड़ बुलवाके पूँछा यह माला तेरीहै मैंने कहा हां यह मेरीहै निदानकोतवाल अन्यायी ने मुझे इतनामारा कि जिसके भयसे मैंने चोरीका क़रार किया ज्योंही यह सुना त्योंही मेरा दाहिनाहाथ काटडाला और माला मुझसे छीनली मैं उसीघरमें जिसमें मैं रहताथा पीड़ासे तड़फताहुआआया मेरेसेवक मुझे कोतवाल के भयसे छोड़कर चलेगये चौथेदिन क्या देखताहूँ कि बहुतसे पुलिसदार मेरेघर घुसआये उनके साथ घर वाला और वहब्यापारी जिसने मुझपर चोरी लगाई थी आया उन्हों ने आकर मुझे रस्सी से बांधा और बहुतसे दुर्बचन कहनेलगे यह माला यहांके हाकिमकीहै तीनवर्ष हुये कि यह खोगयाथा और उसी समयसे उस हाकिमकी पुत्री भी गुप्तहै यह सुन मैं हाथकटने की पीड़ा भूलगया और दूरदूरके शोचोंमें पड़ा यह आपत्ति पहिले से अधिक थी तदनन्तर धैर्य्यदिया कि जो कुछहो सो हो हाकिम या तो मेरा अपराध क्षमा करदेगा वा बधकरेगा इसमें भी मैं प्रसन्नहूँ कि इस दुःखसे तो मैं छूटूंगा उन्होंने मुझे हाकिम के सम्मुख किया हाकिम ने मुझे दयाकी दृष्टिसे देख छुड़ादिया और अपने सेवकों से पूँछा यह

वही मनुष्यहै जिसने माला बेंचनेको भेजी थी सबने कहा यह वही है हाकिमने कहा यह चोर नहीं इसपर व्यर्थ अन्याय हुआ और आज्ञा दी जिस व्यापारी ने इस मनुष्यपर चोरीलगाई है उसे बधकरो वह तत्कालही मारागया तदनन्तर हाकिम ने सभाको बिदाकर एकान्त में मुझसे कहा हे पुत्र! मुझसे तू अभयहो कह कि यह माला तेरेहाथ क्योंकर लगी इसके बर्णन में मुझसे कोई बात गुप्त न रखना मैंने उनदोनों स्त्रियोंका बृत्तान्त और पहिली के डाहका कारण दूसरी स्त्री का बिषसे मरना बिस्तारपूर्बक बर्णनकिया हाकिमने सुन आज्ञादी कि परमेश्वर की इच्छामें किसीका कुछ उपाय नहीं मैं उसी ईश्वरकी इच्छा पर प्रसन्नहूं और कृतज्ञहूं तदनन्तर मुझसे कहा हे पुत्र! तुझपर जो यह आपदापड़ी मुझे बड़ा शोकहुआ अब मैं अपना वृत्तान्त वर्णन करताहूं कि वह दोनों स्त्रियां मेरी पुत्री थीं प्रथम जो तुम्हारे घरगई वह बड़ी बेटी और दूसरी छोटी मैंने बड़ीबेटीका बिवाह कैरूमें अपने भ्राताके पुत्रकेसाथ किया अकस्मात् उसकापति कालबश हुआ और वह कईबर्ष पर्य्यन्त मिस्रमें रही और वहां से सैकड़ों कुकर्म सीखकर मेरे घरआई और दूसरी स्त्री जो उससे छोटीथी और तुम्हारे हाथों जिसके प्राण निकले वह बहुत बुद्धिमती और सुकर्मिणी थी कभी मुझे उससे दुःख न हुआ बड़ीबहिन उसे भी कुमार्गकर अपने साथ बाहर लेजाती उसके मरनेका एकदिन ब्यतीत हुआथा कि मैंने भो-जनकेसमय उससे पूंछा वह कहांहै कलसे मैंने उसे नहीं देखा उसकी बहिन यहसुन रोनेलगी मैं समझगया कि उसपर कुछ आपदा व दुःखपड़ा तब मैंने उससे पूंछा जो कुछ तुझे उसका बृत्तान्त बिदित हो कह उसने ठण्ढी सांसभर कहा मैं इसके सिवाय कुछ नहीं जानती कलकेदिन मेरी बहिन उत्तम २ बस्त्र और मोतियों की माला पहिन कहीं बाहरगई थी तबसे देख नहीं पड़ती यहसुन मैंने उसे नगर में बहुत ढुँढ़वाया परन्तु कुछ भी उस अभागी का बृत्तान्त न मालूम हुआ कुछ समय के पश्चात् उसकी बड़ी बहिन उस अपने अकर्म से लज्जितहुई और रात्रि दिवस उसके वास्ते रोदनकरती और खाना पीना छोड़दिया यहांतक कि रोगी होगई कई एकदिन में कालबश

हुई तदनन्तर हाकिमने कहा हे पुत्र ! हम तुम दोनों अभागे हैं अब अपना शोक चित्तसे भुलादे तेरा बिवाह अपनी तीसरी कन्यासे कर दूंगा वह दोनोंसे छोटी और बड़ी रूपवान्है तुम उसे देख बहुतप्रसन्नहोगे और सदैव उससे राज़ीरहोगे मेरेघरको अपना घर समझो मेरेपीछे तुम मेरे वारिसहोगे मैंने कहा मैं सब भांतिसे आपका आज्ञापालकहूं तुम्हारी कृपाका मैं कृतज्ञ नहीं होसक्ता उसने कहा अब देर न करो फिर साक्षियों को बुलवाय प्रकट रीतों के बिना अपनी पुत्री को मेरेसाथ ब्याह दिया और अपना सम्पूर्ण धन और राज्य मुझे लिखदिया तुमनेभी हाकिमसे भेंट करते समय मुझपर दयाकरते देखा होगा कल मेरे चचाओंका एकमनुष्य मुझे ढूंढ़ते मेरे निकट आया और उनका पत्र मुझे दिया जिसमें मेरेपिताका मरना और मेराबुलाना लिखाथा कि अपने पिताकी थाती को आके ले परन्तु अब मेरा बिवाह हाकिमकी पुत्री के साथ हुआहै और मवस्सल को जाना कठिनथा इसकारण मैंने अपने चचाओं को लिख भेजाहै कि मेराआना किसीभांति वहां नहीं होसक्ता मैं यहां आपके आशीर्बाद से प्रसन्नहूं मैंने अपने पिताकी द्रव्य अपनी ओरसे तुमको दिया उसपुरुषने अपनावृत्तांत सम्पूर्ण कहा अब मुझे बिश्वासहै कि तुम्हें मेरेदाहिने हाथ से न देनेका बृत्तांत भलीभांति बिदितहोगया होगा जब चरित्र समाप्त भया उस यहूदी बैद्यने काशगरके बादशाह के सम्मुख कहा यह कथा मवस्सलके ब्यापारीकीहै मैं उससमय दमिश्कमें था और उस बादशाहके जीवनपर्य्यंत दमिश्कमें उसके निकट रहा जब वह कालबशहुआ वहांसे उदासहो फ़ारस देशमें गया और फ़ारसके देशोंकी सैरकर हिन्दुस्तानमें आया वहांसे आपकी राजधानी में पहुँचा अपने पुराने बैद्यकर्म को करतारहा काशगरकेबादशाहनेकहा यहकथा जो तूनेकही अद्भुतहै परंतु इस कुबड़े के वृत्तांत के समान नहीं तुम धैर्य न धरो कि इसी के कारण तुम छुटकारा पावोगे यादरक्खो मैं तुमचारोंको इस कुबड़ेकी हिंसाके बदले बध करूंगा तदनन्तर वह दरज़ी उठ बादशाह के सम्मुख गया और उसके चरणों पर गिरके कहा एक बृत्तान्त बिनय करताहूं और

मुझे परिपूर्ण बिश्वास है कि आप उसके श्रवण से प्रसन्नहोंगे ॥

## बादशाहकाशगरकेसम्मुखदरज़ीकेमुखसेबर्णितकथा ॥

दरज़ी ने प्रणामकर बादशाह काशगर के सम्मुख इसकथाको इसभांति बर्णन किया कि एक ब्यापारी ने इस नगरमें अपने मित्रों को निमंत्रण कर नानाभांति के पाक खिलाये और मुझेभी परसों प्रातःकाल को न्योता उसके निमन्त्रणानुसार मैं उसके घर गया बीसमनुष्य वहांमैंने बैठे देखे परंतु मालिक वहां न था हमसब उस के आगमन की बाट देखतेथे इतने में क्या देखते हैं कि वहएकसुन्दर लँगड़े मनुष्यको अपने साथलिये चलाआता है हम सब उसे देख उठखड़ेहुये वह उस लँगड़े मनुष्यको जहां हमथे लाय बैठाने लगा वह मनुष्य वहां बैठनेलगा कि इतने में एकनापित अर्थात् बाल बनानेवाला उसे दृष्टिपड़ा उसे वहांबैठे देख पाछिलेपावों फिरा और सभासे निकल चलेजाने की इच्छाकी मालिक इस बात से आश्चर्यितहुआ और कहा हे मित्र ! तुम कहां जाते हो मैंने तुमको इस निमित्त श्रम दियाथा कि मेरेघरपर आकर कुछ भोजन करोगे सो भोजन तय्यारहै उसे बैठके सब मित्रोंसहित भोजनकरो बिना भोजन किये तुम्हें न जाने देंगे उस परदेशी ने कहा मैं तुम्हारे घर मरने के लिये नहीं आया ईश्वर के वास्ते मुझे जाने दो मैं इस दुष्ट कुलक्षण नापितका स्वरूप जो वहां बर्त्तमानहै नहींदेखसक्ता दरज़ी नेकहा हमसब उससे यहबचनसुन अत्यंत बिस्मितहुये इतना क्यों इस नापितसे अप्रसन्नहै सो उसका वृत्तान्त सुनने को उसकेचारों ओर बैठगये और उससेकहा हमको इस नापितके बृत्तान्त सुननेकी लालसाहै उसनेकहा हे मित्रो! मेरेलँगड़े होनेका कारण यही नापित दुष्टहै और इसीके कारण बहुतसी आपत्तियों और दुःखमें पड़ा इस निमित्त मैंने प्रणकियाहै कि जहां कहीं यह नाईहोगा वहां मैं न रहूंगा किंतु उस नगरको परित्याग करूंगा हे मित्रो! मैंने नगर बग़दाद निजबासस्थानको इसी के वास्ते त्यागकिया और निजनगरकारहना छोड़ यात्राकर इसनगरमेंपहुँचा परंतु बड़ापश्चात्तापहै यहांभी वही बैरी बर्त्तमान है इस निमित्त मैं यहां ठहर नहींसक्ता मुझेक्षमाकरोमैं

घर जाय अन्य देशमें चलाजाऊंगा कि इस कुलक्षण दुष्टसे रक्षितरहूं यह कह हम सबसे बिदाहुआ और मालिक की बिना आज्ञा चला जानेलगा परन्तु उसने दौड़के उसे ठहराया और दूसरे मकानमें लेजा बड़े सत्कार और आदरपूर्व्वक भोजनकराया और अतर पान दे कहा मैं तुम्हारा कृतज्ञहोऊंगा जो तुम इसके अपकारका वृत्तांत जो उसने तुमसे कियाहै प्रकटकरोगे हमने भी इसीभांति उससे उस चरित्रके सुननेकी इच्छाकी वहनाईभी वही वार्त्तासुनता और चुपका शिरझुकाये धरती की ओर देखताजाताथा निदान वह मनुष्य उस की ओर पीठकर बैठा और इसभांति अपना बृत्तान्त कहनेलगा॥

## पंगुलका चरित्र॥

मेरा पिता बुग़दाद नगरमें रहताथा और प्रतिष्ठापूर्बक आनन्द से निर्बाहकरता और मैं उसका इकलौतापुत्र था जब वह कालबशहु-आ मैं लिखपढ़ निपुणहोय व्यापारका कार्य्यभी जानगया जबवहजी-ताथा उसने सम्पूर्ण द्रब्य और बस्तु मेरेनाम लिखदीथी मैं समझ बूझ धन खर्च करता मेरे उत्तमाचरणसे वहांके बासी मुझे मित्र और प्यारा जानते यद्यपि मैं जवानथा तथापि मैं स्त्रियोंकीप्रीति और भोग बिलास से निपट अज्ञान था और मुझे अत्यन्त लज्जा थी कदापि स्त्रियोंकी सभा में न जाता और उनसे बिलगरहता अकस्मात् एक दिन मैं एकदिशाको जाताथा कि दूसरी ओर से बहुतसी स्त्रियां आईं मैं उनसे बचने के लिये एक सूक्ष्मगली में जाय एक तख्तपर जो एक द्वारके समीप बिछा था बैठगया और यह बिचारा कि जब स्त्रियां चलीजावेंगी तो मैं वहांसे अपनेघर चलाजाऊंगा अकस्मात् मेरीदृष्टि केसम्मुख एकखिड़की थी और उस खिड़की के नीचे बहुत से पुष्पों के बृक्षलगेथे मैं वह पुष्प खिलेहुये बैठाहुआ देखरहा था इतने में वह खिड़की खुली एक स्त्री अतियौबनवती षोड़श बर्षकी दृष्टिपड़ी उसपर मैं मोहित होगया वह मुझे देख मुस्कराई और मुझसे नयन लड़ाके पुष्पबाटिका में चलीगई और बृक्षोंको सींचा तदनन्तर उधरसे लौट मुझसे हावभाव कटाक्षकर उस खिड़की में चली गई और उसे बन्दकरलिया हे मित्रो! जितना स्त्रियों से अलग

रहता था उतनाही मैं उसपर मोहितहुआ और मूर्च्छितहो तख्तपर गिरपड़ा जब कुछ सुधिहुई देखा कि नगरका न्यायाधीश बड़ी धूम धामसे आया और उसी घरमें चलागया मैंने समझा कि यह उसी स्त्रीका पिताहै अपने घरमें उसी दशामें आया और बिरहकी अग्नि में जल बिछौनेपर ऐसागिरा कि चैतन्यता जातीरही मेरे घरकेलोग यह दशादेख अत्यन्त चिंतित और शोकयुक्त हुये और नातेदार जो प्यार करते थे यह दशासुन मुझे देखने आये और अत्यन्त चिंताकर पूछनेलगे तुम्हारी क्या दशा है और तुम्हें तत्काल क्या होगया मैंने चतुरता से अपनाभेद किसीसे न कहा और चुपहोगया वह अधिक शोकवान् हुये और वैद्य जो कुछ औषध खिलाते वह उपयोगी न होती और सब उपाय निष्फल जाते कुछ दिनमें सामर्थ्य मेरी जातीरही मानों क्षयीरोग होगया एकदिन एक वृद्धा जो मेरेघरके लोगों से जान पहिंचान रखती थी इस वृत्तांतको सुन मुझे देखने आई और बड़े बिचार से मुझे ऊपर से नीचे तक देखा तो प्रकट में कोई भी रोग मुझमें न पाया तब मेरे घरके लोगोंसे कहा तुम इसके समीप से हटजाओ मैं एकांत में फिर इसे देखूंगी जब वह सब चलेगये तब उस वृद्धाने फिर मुझे भलीभांति देख मेरे कान में कहा तुम्हारे रोगको मैंने भलीभांति पहिंचाना प्रकट में कोई रोग तुम्हारे शरीर में नहीं परन्तु तुम किसी सुन्दर स्त्रीपर मोहित हुयेहो लज्जा से प्रकट नहीं करते यदि मुझे तुम्हारी प्यारी का पता वा नाम मालूम होगा तो यथोचित तुम्हारे प्रयोजन के अर्थ सहायता करूंगी यह कह मुझसे उत्तर चाहा और बहुतसा मुझे तंग किया कि मैं उससे कुछ कहूं परन्तु मैं चाहता था कि उससे लज्जा के कारण अपना वृत्तान्त प्रकट न करूं इस निमित्त मैंने उसकी ओर देख एक ठंढी सांसली और कुछ न कहा उसने कहा मेरेप्रिय इतनी भी लज्जा न चाहिये मैं तो कहतीहूं कि तुम्हारे काम में श्रमकरूंगी फिर क्यों मुझ से अपना मनोरथ नहीं कहते यौवन अवस्थामें बहुधा ऐसा हुआ करताहै निदान इष्टमित्रों के उपायसे उनके मनोरथ प्राप्तहोते हैं उस वृद्धाने इसभांतिकी बहुतसी बातें

की मैं उससे खुला और अपने रोगका कारण वर्णन किया और उससे यही मनोरथ चाहा कि तुम्हारे द्वारा एकबेर उसका दर्शनहो और मेरीप्रीति और मोहका बृत्तान्त उसको मालूमहो तो निस्सं-देह जीवन सुफलहै उस वृद्धाने कहा हे पुत्र! वहस्त्री जिसका तुमने वर्णन किया नगरके हाकिमके न्यायाधीशकी कन्याहै आश्चर्य नहीं कि तुम उसपर मोहित हुये वह महासुन्दरी रूपवती कोमलांगी मनहरणी दुःखहरणी चन्द्रमुखी बुगदादकी स्त्रियों मेंसेहै परन्तु वह और उसकापिता जिसको तुमने देखाथा दोनों अहङ्कारी और कटु-भाषी हैं और वह न्यायाधीश अपनी लड़कियोंको कभी घरसे बाहर नहीं निकलने देता और उनको आज्ञादी है जब तुम किसी आव-श्यकतापर बाहर निकलो तो कभी किसी पुरुषकी ओर न देखना जब वह बाहर निकलती हैं उनके नेत्रोंपर कपड़ेकी पट्टीबांधीजाती है और अन्धोंके समान बांदियां हाथ पकड़ गली कूचोंमें लेजाती हैं यह उसका और उसके पिताका हालहै जो मैंने कहा कदाचित् तुम किसी दूसरी स्त्रीपर मोहितहोते निदान उस स्त्रीने बहुत पृथ्वी आकाश दिखाय कहा यह सब बातें जो मैंने कहीं सब सत्यहैं और यह बिचार जो मैं करतीहूं अग्रसोची के तौरसे है परन्तु तुम धैर्य रक्खो देखो तो ईश्वर क्याकरताहै अब तो मैं जातीहूं यह कह वह बुढ़िया चलीगई दो तीन दिनके पीछे फिर आई और मुझसे कह-नेलगी हे पुत्र! मैं प्रथमही कहती थी वहस्त्री जिसपर तुम मरतेहो बड़ी नकचढ़ी है मैंने उससे बहुत कुछ कहा परन्तु कुछ उसका बि-चार न किया जब मैंने तुम्हारी बीमारी का हालकहा यहसुन वह चुपकीहो सुनाकी फिर जब भेंटका बर्णन हुआ अत्यन्त अप्रसन्नहो भृकुटी टेढ़ीकर मेरी ओर देखा और कहा तुमने बड़ीढ़िठाईकी कि ऐसी बात मुझसे कही जो फिर मैं कभी ऐसी बात सुनूंगी तो तेरा मुख न देखूंगी तदनन्तर यह कह उस वृद्धाने मुझे बहुत धैर्य दिया कि तुम भरोसा रक्खो निराश मतहो जबतक तुम्हारा मनोरथसिद्ध न होगा मुझे चैन न पड़ेगा उसके धैर्य देनेपर भी मैं निराशहो म-रणतुल्य होगया और पहिले से अधिक मेरी बुरीदशाहोगई परन्तु

जब कभी वह वृद्धा आती तो उसे अपना भेदी समझ किंचित् धैर्य होता एक दिन वह आई और मेरे समीप बहुतसी स्त्रियों को बैठा देख मेरेकान में चुपकेसे कहा अब तुम्हारे वास्ते शुभसमाचार लाई हूं यह सुनतेही मुझ में शक्ति और बलहुआ तुरन्त उठबैठा तद-नन्तर उस वृद्धाने कहा कल सोमवारको मैं उस सुन्दरी के निकट गईथी उस समय मैंने उसे प्रसन्नपा अपने को चिन्तायुक्त बनाया और रोनेलगी उसस्त्रीने मेरी यहदशादेख पूछा मेरीअच्छी माता कुशलतोहै आज क्यों शोकवान्हो मैंनेकहा क्याकरूं बड़ा पश्चा-त्तापहै कि अभी मैं उसी मनुष्य के पास से आतीहूं उसकी कुछ आ-शानहीं अबतब होरहाहै तुम्हारी प्रीतिमें उसकी यह दशाहुई अब वहदयायोग्यहै और तुम बड़ीकठोर और निर्दयहो उसकोमलांगी ने उत्तरदिया मैंतो उसपुरुषको नहींजानती कि कौनहै औरकहांरहताहै तुम उसके मरनेका व्यर्थदोष मुझपरलगातीहो मैंनेकहा हे चंद्रमुखी गजगामिनी! तुम भूलगई मैंने तो तुमसे उसी दिन कहा था कियह वहपुरुषहै जो तुम्हारे द्वारके सम्मुख बैठाथा और तुम खिड़कीखोल पुष्पके वृक्षोंको सींचने के निमित्त बाहर आईथीं उसीसमय वह तुम पर मोहित होगयाथा और उसीक्षणसे तुम्हारे बिरहकी अग्निसे नि-शिदिन घुलाकिया अबउसमें कुछहालनहीं उससमय जो तुमसे मैंने कहाथा तुम सुनकर अप्रसन्नहुई सो मैंने वही सबहाल उससे कहा उसक्षणसे औरभी उसकी दुर्गतिहोगई अब जो तुम्हारी उसपर कृपा दृष्टिहो तो वहबचजावे नहीं तो वह मराचाहताहै जब मैं उससे यह वृत्तान्त कहचुकी और अपना स्वरूप प्रथम से अधिक चिन्तायुक्त बनाया और नेत्रोंमें अश्रुभरलाई तब उस प्यारीनेकहा हे वृद्धा! तुम सत्यकहती हो मेरीही चाह और प्रीतिसे उसकी यहदशा होगई तद-नन्तर वह बोली यदि केवल मुझ से बार्त्ताकरने व देखनेही से उसका जीवनहो तो कुछहानि नहीं तब मैंने कहा इतनीहीदया उसपर बहुत है उसने एकठण्डीसांसभरके कहा अच्छातुम उससे जाकेकहो यदि उसकीइसीमें प्रसन्नताहै तो वह मुझे फिरदेखसक्ता है परन्तु बार्त्ताके सिवाय दूसरीआशा मुझसे न रक्खे जब तक कि मैं उससे बिवाही

न जाऊं और मेरापिता राज़ी न हो मैंने उसस्त्रीकी बहुतसी प्रशंसा कर कहा वाह क्या दयावान् हो परमेश्वर तुम्हें जीतारक्खें अब मैं उसके समीप जाय यही शुभसमाचार उसे सुनातीहूं तदनन्तर उस सुन्दरी ने कहा शुक्रबार को मेरा पिता जामामसजिद में निमाज़ पढ़नेजाताहै वह मनुष्य उससमय अकेला आवे मैं उसे भीतर बुला लूंगी और अपने पिताके आगमन के एकमुहूर्त्त आगे उसे बिदा करूंगी इस समयान्तर में वह मुझे भलीभांति देखे और बार्त्तालापकरे निदान जब उस वृद्धा ने आय यह हाल बर्णन किया मैं उस समयकी प्रसन्नताका बर्णन नहीं करसक्ता कि कितनी मुझे प्राप्त हुई और तुरन्त मुझमें बल और शक्ति आगई मैंने उस वृद्धाकी बहुतसी कृतज्ञता और प्रशंसाकर हज़ार अशरफ़ी का एक तोड़ा उसे दिया और बिदाकिया और शुक्र को अरुणोदय पर उठ मेरी यही इच्छाहुई कि क्षौरकरा उत्तम उत्तम बस्त्र और अतरमल उस न्यायाधीश के मन्दिरमें जाऊं और उस प्यारी सुन्दरी से भेंट और बिवाह की बार्त्ता करूं और उसे राज़ी पा बिवाह का नेग न्यायाधीशको कहलाभेजूं यह सोच मैंने एक दासको कहा तू तुरन्त एक चतुरनापितको बुलाला कि मेरा चौरकरै दैवयोग से वह दास इसी दुष्टनाईको जो यहां बैठाहै बुलालाया उसनेआतेही प्रणामकर कहा आप के कृशांगता से जानपड़ता है कि आपके बैरी रोगी थे मैंने कहा निस्संदेह मैंने बड़ा कष्टभोगाहै और अभी अच्छाहुआहूं इसने कहा परमेश्वर आपको सम्पूर्णरोगों और कष्टोंसे रक्षितरक्खे और तुमपर दया और अनुग्रह रक्खे मैंने कहा मैं उसीकी अनुकम्पा की आशारखताहूं तदनन्तर इसने कहा आप आज्ञादीजिये तो मैं आप का क्षौरकरूं वा फ़स्तखोलूं मैंने कहा क्या तूने नहीं सुना कि अभी मैं अरोगहुआहूं फ़स्तसे क्या प्रयोजनहै तू शीघ्रही मेरा क्षौरकर बहुत बातों से बिलम्ब न कर मुझे ठीक मध्याह्नकी कहींजानाहै यह नाई फिरभी कुछ कालपर्यंत बका किया न तो अपने हथियार खोले और उस्तुराभी तीक्ष्ण और दुरुस्त न किया किन्तु एक बहुत उत्तम उस्तुरा निकाला और दालानसे उठ सहनमें गया और यन्त्रलगाकर

ग्रहगोचर बिचार कहनेलगा प्रसन्नहूजिये आज शुक्रबारको बृह-
स्पति और मंगल का संयोग है इससे कोई उत्तम मुहूर्त्त क्षौरके नि-
मित्त नहीं दूसरा यह सम्बन्ध प्रथमके बिपरीत अत्यंत कुलक्षण और
अशकुनहै और ग्रहोंसे मुझे बिदितहुआ कि आज के दिन आप के
बैरियों पर बहुतकष्टहोगा परंतु प्राणबचजावेंगे इतना दुःख होगा
कि जीवनपर्यंत आप पर रहेगा परंतु मुझे अपने साथ रखिये बि-
श्वासहै कि उन कष्टान्तरों में मैं तुम्हारे कामआऊं तदनंतर उस
पुरुष ने इतनाकह कहा मित्रो उससमय के मेरेकष्ट और व्यथाको
बिचारो कि इस दुष्ट नापितने ऐसीव्यर्थ बार्त्ता से मुझ ऐसे आसक्त
को ऐसी सुंदरी की भेंटसे जहां पक्षी पर न मारसक्ता था हटा रक्खा
मैं यहसुन अत्यंत क्रोधितहुआ तब धैर्य्यरख उससे कहा मैंने तुम्हें
कुछ सम्मत करने और मुहूर्त्त देखने को नहीं बुलाया तुझे क्षौर के
निमित्त बुलायाहै अपना कार्य्यकर नहीं तो चल बरन मैं दूसरा नाई
बुलालूंगा वह मुखमें कफ भरके बोला आप इतना क्रोधित क्यों
होते हो तुम नहीं जानते मुझ ऐसा गुणवान् नाई आपको कदा-
चित् न मिलेगा मुझमें बहुतसे गुण और विद्याहैं जिनमेंसे मैं आप
के सम्मुख कुछ बिनय करताहूं वैद्यक, ज्योतिष, व्याकरण, कविता,
न्याय, वेदान्त और सम्पूर्ण प्रकार की गणित विद्या और ग्रह
परीक्षा इन सब विद्याओं में मैं निपुणहूं इसके बिशेष भूतकालके
बादशाहों के इतिहास किन्तु संसार भरके इतिहास मुझे भली
भांति बिदित हैं कोई ऐसी पुस्तक संसार में नहीं जिसे मैं भली
भांति नहीं जानता आप के स्वर्गबासी पिता जिनको मैं प्रायः स्म-
रण कर रुदन करताहूं मेरे गुणको भले प्रकार जानते और बड़ी
प्रतिष्ठा करते और कदापि मुझे अपने से भिन्न न करते. उनके
हितको स्मरणकर इच्छा रखताहूं कि आप की यथोचित सेवाकरूं
और उन कार्य्यों में जो तुमपर पड़े हैं तुम्हारा सहायकहूं किसी
भांति का तुमपर दुःख व आपदा न आने दूं ऐसे ऐसे निरर्थक
बचन सुन क्रोध होने पर भी मैं हँस पड़ा और कहा कबतक तू
बकबक करेगा और कब चौर बनावेगा उसने उत्तर दिया वाह

नम्बर २२ मुतअ़ल्लिक़ै सफ़ै २९६ द्वि॰ भा॰

## चित्र नाई का



आपने अन्यलोगों के बिचार के बिपरीत कि वह मुझे अल्पभाषी कहते हैं अधिकभाषी का उपनाम दियाहै मेरेछःभ्राता हैं उनके नाम सुनिये बड़ेका नाम बकबक, दूसरेका नाम बकबारह, तीसरे का नाम बूबक,चतुर्थका नाम अलकूज़,पंचमका नाम अलनसचर,षष्ठकानाम शाहकुबक, यह सब तो निस्संदेह बक्की हैं और मैं उन सबसे छोटा और अल्पभाषीहूं दरज़ीने कहा इतनाकह उस मनुष्यने सभासे कहा हे मित्रो! न्यायकरो इस निरर्थक बकनेपर भी अपनेको चुपका और अल्पभाषी समझता है तब मैंने द्वितीय सेवकसे जो घरकाख़र्च उठाता था कहा तीनअशरफ़ी इसेदे बिदाकर आज मैं क्षौर न कराऊंगा इस नापितने यहसुन कहा स्वामी आप क्याकहतेहो मैं आपसे यहां नहीं आया आपकेबुलाने से यहां आयाहूं और मुझे सौगन्द है जो मैं आपके क्षौर किये बिना जाऊं जो तुम मेरी गुणग्राहकता नहीं करते तो इसमें मेरा कुछ अपराध नहीं तुम्हारा पिता मेरेगुण और योग्यता को भलीभांति जानता मानता था वह स्वर्गबासी जबकभी मुझे बुलाते तो अपनी गोदमें मुझे बैठाते और अपने साथ मुझे भोजन खिलाते और मेरी चतुरता और हर्षयुक्त अमृतरूपी बचन सुन अत्यन्त प्रसन्नहोते और यथाशक्ति सत्कार करते और कहते तू संसारभर में अद्वितीय है तब मैं बिनयकरता यह सेवक तो इस योग्य नहीं परन्तु आप प्रणतपालकता और गुणग्राहकता से कहते हैं एकदिन उन्हों ने मेरे अमृतरूपी बचनों से आनन्दितहो एकसौ अशरफ़ी और भारी ख़िलअत मुझे कृपाकिया एक समय में उनके फ़स्तखोलने से मैं धनाढ्य होगया सो मुझे अबतक वही सुधिबनी है इतनी कथा कहकर भी वह नापित चुप न हुआ तुरन्त दूसरी कथा आरम्भ की और बका यहांतक कि एक मुहूर्त ब्यतीत हुआ और उसके निरर्थक वचन सुनते सुनते मैं दीन होगया और अत्यन्त बिस्मितहो शोचा इसदुष्ट और नष्ट नाईसे क्रोधसेकाम न निकलेगा नम्रताकरनी चाहिये तब बिनयपूर्वकमैंनेकहा अपनी बचन चातुरी को समाप्त कीजिये और मेरा तुरन्त क्षौर बनाइये मुझे कुछ आवश्यकता है जैसा कि कई बेर मैं तुझसे कहचुकाहूं वह दुष्ट यह

सुनहँसा और कहा मुझे बिदितहुआ आपको कोई बड़ी आवश्यकताहै परन्तु उसे मुझेभी बताइये और मुझे अपने साथ रखिये किंतु तुम्हें उचित है कि मुझसे आप सम्मतकर उस कार्य्य को कीजिये जैसे कि तुम्हारे पिता और दादा मुझसे प्रत्येक कार्य्यमें सलाह लेते और फिर करते मुझे अपनादास और आज्ञापालक समझिये और निश्शंक मुझसे मनकी बात कहिये मैंने कहा तू बकते बकते मेरा मग़ज़ चाटगया और अपने निरर्थक बचन सुनाये इससे मेरी बहुत हानिहुई यह कह मैं उठखड़ाहुआ और रिस में अपना एक चरणउठा बड़ेबेगसे पृथ्वीमें मारा यह निर्लज्ज नापित मुझे क्रोधित और मेरे लालनेत्रदेख कहनेलगा आप अप्रसन्न न हों मैं तुरन्त तुम्हारा क्षौर बनायेदेताहूं तदनन्तर उसने मेराशिर भिगो मूंड़नाप्रारम्भकिया और थोड़ासामूंड़करठहरगया और कहा इन असत्यबिचारोंको जो तुम्हारे मनमें फिरते हैं दूरकरो और मेरी बुढ़ाई और सर्बगुणनिधानता का बिचार न कीजिये मैंने इससे कहा चल अपना कार्य्यकर अधिक न बक तदनन्तर इसनेकहा क्याकोई बड़ीही आवश्यकता है जिसमें इतनी घबराहटहै मैंने कहा प्रथम मैं तुझसे कह चुकाहूं बेरबेर क्यों पूंछताहै तेरा काम क्षौरबनाना है और झगड़ों से तुझे क्या प्रयोजन फिर इस कुलक्षणने कहा स्वामी इतने गर्म न हूजिये मुझे यह भयहै कि आपजो समझे बूझे बिना कार्य्य करें और हानिपहुँचे क्योंकि बुधजनों ने कहाहै जो मनुष्य बिचारे बिना करताहै अन्तको लज्जा उठाताहै इस निमित्त आपसे बिनय करता हूं वह कौनसा कार्य्य है मुझेभी बतादीजिये कि उसके वास्ते आप शीघ्रता करते हैं अभी तीनघड़ी मध्याह्नमें शेष हैं इतनी क्या शीघ्रताहै मैंने कहा जो प्रणतपाल कहलाते हैं वह उस नियतकाल के प्रथम अपने को पहुँचाते हैं तू कुछ इस बातका बिचार न कर क्षौर तुरन्त बनादे तब उसने मेरे धैर्य्यके हेतु अस्तुरा तीक्ष्णकर मेरा आधाशिर मूंड़ उठखड़ाहुआ और सूर्य्यकी ओर देखकर कहा अभी तीनघड़ीपूरा शेषहैं मैंने कहा मुझे ज्योतिषका निश्चय नहीं मेरे बिचार में सब असत्यहै और जलभुन उसे बहुतसे दुर्बचन कहे

तब उसनेकहा हे स्वामी! इतने न झुँझलाइये मैं अभी क्षौर बनाये देताहूं अपनेको सँभालिये इसक्रोधसे डरताहूं ऐसा न हो कि फिर तुम्हें रोग उत्पन्न होजाय एकक्षणमात्र में मैं तुम्हारा क्षौर बनाये देताहूं फिर उसने अस्तुरा पथरी पर रख और कमर से चमूटा निकाल अस्तुरे को तीक्ष्ण किया और शिर मूंड़नेलगा तो भी वह अभागा चुप न था यदि एकबालमूंड़ता तो दशबातें कहता निदानकहने लगा जो मुझे अपने साथ रखिये और निज आवश्यकताको प्रकट करिये तो उसमें मैं भी कुछआपको उपदेश वा सम्मतदूंगा मैंने इस अभागे नापितको धोखादेनेकेलिये कहा कई मेरे इष्टमित्रोंने मेरे नीरोगहोनेसे प्रसन्नहोकर मुझे न्योताहै और वह मेरे आगमनकी राह देखतेहोंगे यहनीच न्योतेका नाम सुन उछलपड़ा और कहने लगा परमेश्वर आपकाजीवन सफलकरे आपने मुझे इससमय भलीसुधि दिलाई मैंने कल पांच चार मनुष्यों को न्योताथा और आज मैं उसे भूलगया अभी कुछ भी तय्यारी नहीं की मैंने कहा कुछ हानि नहीं यद्यपि मुझे मित्रोंने न्योताहै तथापि नानाप्रकारके व्यञ्जन पकवान आदि बने रक्खे हैं वह सब मैं तुझे दिलवादूंगा परन्तु मेरा क्षौर तुरन्त बनादे और मदिरा भी तुझे उत्तम मिलेगी और जिसभांति पिताने तेरे प्रियबचन सुन तेरा पारितोषिक आदिसे सन्मान किया था विश्वास रख मैं भी तेरे चुपरहने से तुझे अधिकदे सत्कारकरूंगा यह सुन वह अत्यन्त हर्षयुक्तहुआ और कहा ईश्वर आपको जीता रक्खे उसपाकको मैं देखलूं वह मेरे मित्रोंको पूरेहोंगे वा नहीं मैंने कहा बहुतसा उत्तम पक्कमांसहै और छः मुर्ग भुनेहुये वह सब पाक अस्सी मनुष्योंको बहुत है तदनन्तर मैंने अपने दास से कहा कि वह सब पाक और मद्यके चारशीशे इसनापित को दीजिये उसने कहा बहुत अच्छा तदनन्तर इस नाई ने कहा कुछफल और पात्र भी कृपाकरो मैंने उसकीभी आज्ञादेदी यह दुष्ट और अभागा नाई क्षौरतज प्रत्येक बस्तुको देखनेलगा निदान इस दुष्ट ने इसी बहाने से और भी अर्द्धघटी व्यर्थ व्यतीतकी और क्षौरकी ओर देखा भी नहीं फिर मेरे रिसकरनेसे क्षौरबनानेलगा क्षणमात्रमें अस्तुरेको रख

कहनेलगा कि पश्चात्ताप है जो आपके पिता स्वर्गबासी जीतेहोते तो मैं कदापि निर्धन न होता परन्तु परमेश्वरकाधन्यबादहै कि आपने भी मेरा सत्कारकिया मैंने तुम्हारे और तुम्हारेपिताके सिवाय आज तक किसीसे कुछ न लिया और मेरीदशा जंजौटकेसमानहै जोनाइयों की दल्लाली किया करता व सांवल के सरिस जो भुने चने गलियों में बेंचता व सांवलका जो बकला बेंचता व शातरां बेंचनेवाले के समानथा अबूबकटके सरिस जो मार्गों में नीर छिड़कता कि धूर न उठे वा क़ासिमके समान जो ख़लीफ़ाका रक्षकथा यह सर्वदा भलीभांति आनन्द भोगते रहे बुगदाद के पुरबासी उनको निमंत्रण कर सत्कार करते उन सब में एकगुणयहथा कि इस सेवकके समान अल्पभाषीथे अब मैं एक कबित्त और नृत्य जंजौट * का गाताहूं आप उसे सुनिये अनन्तर इस अयोग्य नाई ने जंजौट के समान नाचना गाना प्रारम्भ किया मैंने उसे क्रोधितहो बरजा कि अपना मसख़रापन मत दिखा परन्तु कबसुनताथा यहांतक कि वह नक़ल उसने पूरीकी तदनन्तर कहनेलगा अब उन मित्रोंको जिनका मैंने बर्णन किया जाय भोजन खिलाताहूं जो मेरा उपदेश मानिये तो अपने मित्रों को छोड़ मेरे न्योते में संयुक्त हूजिये नहीं तो आपकेमित्र बकबककर तुम्हें बहुत दुःखदेंगे और आपके बैरी फिर रोगी होजावेंगे मैंने रिसहोने परभी उसकी दुर्बुद्धिपर हँसदिया और कहा मुझे तुम्हारा निमंत्रण स्वीकारहै किसीदिन अवकाश पा तेरामसख़रापन देखूंगा और सुनूंगा परन्तु आज किसीप्रकार वहां नहीं जासक्ता तू शीघ्र मेरा चौर पूराकर और अपने घरजा तेरेमित्र वहां आय तेरी राह देखते होंगे तदनन्तर उसने नम्रतापूर्वक बिनय किया कि जो मैंने आपसे कहा है उस से इन्कार न कीजिये और अवश्य चलिये मेरे घरकी सभा देख आप प्रसन्नता और आनन्दको प्राप्त होंगे और बिश्वासहै ऐसा आनन्द उससभा में प्राप्तहोगा कि आप अपनेमित्रों को भूलजावेंगे मैंने उससे कहा इतना निरर्थकक्यों बकताहै मैं तेरेघर आज किसीप्रकार नहीं जासक्ता अनन्तर इसने

* एक प्रकार का नृत्य और राग ॥

कहा जो आप मेरेघर नहीं चलते तो मुझेही अपनेसाथ लेचलिये अब यह पाक जो आपने कृपाकिये हैं मैं अपने घर लेजाताहूं और अपनेमित्रों को खिला पिला तुरन्त लौटआताहूं मैं ऐसा अशील नहीं कि आपको अकेलाजानेदूं इसमें आप प्रसन्न हों वा अप्रसन्न इस बातको सुन मैं अत्यन्त दुःखितहुआ और कहा हे ईश्वर! मैं इस नाईके हाथसे किस आपदामें पड़ा सम्पूर्णदिवस मेरा इसी बक-बकमें कटा फिर इस अन्यायी से कहा परमेश्वरके वास्ते मेरी हजामत पूरीकर और अपनेघर मित्रों के समीपजा वहां खा पी और उनको खिला पिला मुझे छोड़ मैं अकेला जाऊंगा मैं नहीं चाहता कि मैं अपने साथ किसीको लेजाऊं जहां मेरे जानेकी इच्छा है अन्यका वहां प्रवेश नहीं वहां तो मेराही जाना कठिन होगा उस नापित ने कहा वाह आप मुझसे हास्यकरते हैं स्वामी जब आपके मित्रों ने आप को निमन्त्रण दिया है तो मेरे जानेके लिये कौन बरजेगा वह मुझ ऐसे बुद्धिमान् को देख आपसे बहुत प्रसन्न होंगे क्योंकि मैं सभाचातुर हूं और मेरी बाचालता से वह बहुत प्रसन्न होंगे आप जो चाहिये सो कहिये मैं अवश्य आपके साथ जाऊंगा उस मनुष्यने सभासे कहा हे मित्रो! मैं उसकी बातोंसे घबराया देखिये क्योंकर इसदुष्ट नापित से छुटकारा होगा तदनन्तर सोचा कि नम्रता बिना इससे छुटकारा नहीं इतने में शुक्रबार की प्रथम बन्दना जिसे अज़ां कहते हैं हुई मैं चुपहोके बैठा उसके निरर्थक बचनका कुछभी उत्तर न दिया यहांतक कि इस नष्टने हजामत पूरीकी अनन्तर मैंने बड़ी नम्रतासे कहा मेरे सेवकों से पाकले अपने घरजा और उसे खा पी तुरन्त फिरआ मैं तेरीराह देखूंगा वह नापित जब अपने घरगया मैं अवकाशपा तुरन्त स्नानकर बस्त्र पहिन दूसरी बन्दना व अज़ांके सुननेकीराह देखतारहा दूसरी अज़ांके होतेही मैंने चाहा कि चलूं परन्तु यह दुष्ट नापित मेरे चलने की ख़बर लिये रहाथा इतने में वह निश्चिन्तहो आगेकी गली में कि मेरे घरमें मिलीहुईथी छिपरहाथा मैं उत्तम २ बसनपहिन अपनी प्यारी के घरकी ओरचला वह चुप से मेरेपीछे होलिया जब मैं न्यायाधीश के घरपहुँचा फिरके क्या देखता

हूं कि वह अभागा भी चलाआता है उसकोदेख मैं राम २ स्मरण करनेलगा और अत्यन्त कोधितहुआ परन्तु उसस्थानपर कुछ कहने का सावकाश न पाया न्यायाधीश के गृहकाद्वारा आधाखुलाहुआ था जब दरवाज़ेपर पहुँचा वह वृद्धा कि मेरे आगमन की राह देखती थी मुझेदेख दौड़ीआई और मुझे उस चित्तचोर के समीप लेगई हम दोनों बड़ीलालसा और आनन्दयुक्त प्रीतिकी वार्त्ता करते थे कि अकस्मात् हमने मनुष्योंका शब्दसुना वह सुन्दरी और मैं उठ खिड़की से देखनेलगा प्रथम न्यायाधीश को देखा कि शुक्रबार की बन्दनाकर अपने महलमें आया तदनन्तर उस नापितको देखा कि उस खिड़की के सम्मुख उसी तख़्तपर जिसपर मैंने पहिले बैठ उस कोमलांगी को देखाथा बैठाहै तब मुझे दोप्रकारका भय प्राप्तहुआ एक न्यायाधीश के पहुँचने का दूसरे नापितका निदान उस प्यारीने मुझे भयभीत देख धैर्य्यदिया और अग्रसोची से एकस्थान सोचरक्खा कि आवश्यकतापर काम आवे इसके बिशेष इस भाग्यहीन दुष्टनाई के कारण ऐसी आपदा मुझपरपड़ी कि बर्णन नहीं करसक्ता जिस समय न्यायाधीश अपने घरमें पहुँचा दैवयोग से उसके एक दासने निजदास को किसी अपराधपर बहुतमारा वह सेवक ऐसा चिल्लाया और रोया कि गलीतक उसका शब्द पहुँचा और दुर्बुद्धि नाई ने समझा कि न्यायाधीशको मेरेजानेका वृत्तान्त विदितहुआ और वह शब्द मेराही है यह समझ वह बहुत चिल्लाके रोया और निज बस्त्रफाड़ शिरपर मट्टीडाली और मुहल्ले के लोगोंको अपनी सहायता के लिये बुलाया वह सब पूंछनेलगे कुशलतो है उसने रुदनकर उत्तरदिया मेरेस्वामी को मारते हैं केवल इतनाकह मेरेघर दौड़ागया और इसीभांति वहां भी कहा मेरे नातेदार और दासचाकर यह बचनसुन सबके सब लाठियांले न्यायाधीश के घर दौड़आये और बड़ेक्रोध से न्यायाधीशका घर तोड़नेलगे न्यायाधीश ने वह शब्दसुन एक अपने दासको आज्ञादी किबाहर जाके देख कि ये कौनलोगहैं और क्यों चिल्लाते हैं वह दास उनकोदेख भयभीतहुआ और भीतरजाय न्यायाधीशसे कहा अनुमान दशहज़ार आदमी के आपके द्वारपरखड़े अत्यन्त क्रोधसे दर-

वाज़ातोड़ने की इच्छाकरते हैं न्यायाधीशने आप द्वारपर आय उनसे पूंछा कि इसशोर और चढ़ाईका क्या कारणहै मेरे आदमी जो अत्यंतक्रोधितथे कुछ उसकी प्रतिष्ठाका बिचार न कर बोले हे दुष्ट दूत! कुकर्म्मी तूने हमारे स्वामीको क्यों मारडाला उसने तेरा क्याकियाथा न्यायाधीशने कहा मैंने तुम्हारे स्वामीकी सूरत भी न देखी कब मारा और उसने मेरा क्या अपराधकिया मैं द्वारखोलताहूं तुम उसे ढूंढ़लो यह दुष्टनाई निर्दोष न्यायाधीश को बहुत से दुर्बचनकह बोला तेरी पुत्री मेरे स्वामीपर मोहितहै उसने भेंटकेवास्ते उसे मध्याह्नमें बुलाया है यहतूने जानकर उसे बहुतमारा यदि अपना भला चाहता है तो मेरे स्वामीको छोड़दे नहीं तो हमसब तेरे घरजाय उसे निकाललावेंगे और इसमें तेरी बड़ी अप्रतिष्ठाहोगी न्यायाधीश ने कहा जोतू सच्चाहै तो अपने स्वामी को मेरे घरसे ढूंढ़के निकाल ला इतना कहतेही मेरे नातेदार और यही नाई घरमें बड़ेक्रोधसे घुसगये और प्रत्येक कोण में ढूंढ़नेलगे मैं अप्रतिष्ठा और न्यायाधीश के भयसे एक सन्दूक में जो वहां खालीरक्खाथा जाछिपा और कुंढी बन्दकरली यह अभागा ढूंढ़ते २ मकान में जिसमें वह सन्दूकथा आया और सन्दूक को थोड़ासा खोल मालूम किया कि मैं उसमें छिपाहूं तुरन्त उसे अपने शिरपर उठालिया और उस ऊंचे मकान की सीढ़ी से उतर सहन में आया वहां से बाहर के द्वारकी ओर जो गलीकी तरफ़ था चला अकस्मात् संदूककी कुंढी खुलगई मैं उसमें से निकल और मुख अपना छिपा गलीकीओर भागा उस घबराहट में कि मनुष्यों की भीड़लिये यह नापित दौड़ाआताथा एक नालेके फांदने से मैं ऐसा गिरा कि मेरापांव टूटगया उसपर भी उन मनुष्यों से कि मेरे पीछे हँसते और ठट्ठामारते थे भागाजाताथा जब देखता कि बहुत समीप पहुँचगये तब दो मुट्ठी रुपये और पैसोंकी उनकी ओर फेंकता वह उसको चुनते मैं लँगड़ाता २ आगेको निकल जाता जब वह दौड़के मेरेनिकट पहुँचते तो मैं फिर द्रव्य फेंकता इसी उपाय से मैं बचता और उनको अपने समीप पहुँचने न देता जब मैं दूरनिकल गया मनुष्यों ने थकितहो मेरापीछा न किया परन्तु यह दुष्ट नापित

छायाके सदृश मेरे पीछे लगा चलाआता था और पुकार के कहता दौड़ो नहीं देखो मैं तुम्हारा कैसा हितैषी और परिश्रमीहूं किस भांति मैंने आपको न्यायाधीश से छुड़ाया प्रथम तो मैंने बिनय कियाथा जो आप मुझे अपने साथ न लेजावेंगे तो आपके बैरी बड़ी आपत्ति में पड़ेंगे यह सब जगहँसाई और अप्रतिष्ठा तुम्हारी निर्बुद्धिताके कारणहुई अबभी मुझसे न भागिये निदान यह अभागा नाई इसीभांति सम्पूर्ण मार्गों और गलियों में बकता और मेरे पीछे लगा चलाआताथा और मेरी अप्रतिष्ठा करता यहांतक कि सम्पूर्ण पुरबासी मेरे कर्म्मको जानगये इस दुष्टपर मुझे ऐसा क्रोध आताथा कि ठहरजाऊँ और पकड़के इसका गला दबाऊँ परन्तु इसमें भी अपनी अप्रतिष्ठा समझता इसवास्ते मैं वह मार्गतज दूसरी ओर को दौड़ा तोभी इसने मेरा पीछा न छोड़ा और बकता चलाआताथा मनुष्य उसकी बातें सुन मेरा तमाशा देख अनादर करते निदान ऐसे दुःख और अप्रतिष्ठा में पड़ा कि जिस को मैं बर्णन नहीं करसक्ता अन्तको निरुपायहो मैं एक बिशालघर में कि उसका स्वामी द्वारपर खड़ा हुआ था और मुझसे जानपहिंचान रखता था उसके निकट चलागया और कहा हे मित्र! परमेश्वरके वास्ते मुझे इस बिक्षिप्तसे कि मेरे पीछे लगाआता है बचाओ तब उसने इस नापितको ललकारा और बहुतसे दुर्बचन और धिक्कार दे घुड़का और हटाया तब मैं इसनाई से छुटकारापाय कुछ सावधान हुआ तदनन्तर उस मित्रने मुझसे पूछा कि तुम्हारी क्यादशाहै मैंने कहा मुझे दमलेने दो कि मैं किंचित् चैतन्य होऊं तब मैं अपना बृत्तान्त बिस्तार पूर्वक कहूंगा उसने मुझे बुरी दशा में देख कहा कि तुम अपने घर में सावधानहोगे उत्तमहै कि अपनेघर पधारो मैंने कहा यह सचहै परंतु यह दुष्ट नाई वहांपर भी मुझे न छोड़ेगा और उसके दुःख देने से मेरेप्राण न बचेंगे इसके बिशेष इस कुलक्षणी के हाथसे मैं ऐसा व्याकुल हुआ और मेरी ऐसी प्रतिष्ठा भङ्गहुई कि फिर यहांके बासियोंको मुखदिखाने योग्य न रहा निदान थोड़े दिन मैं वहीं रहा जब मैं कुछ सावधान हुआ तब बहुतसी द्रब्य ले बुगदाद को छोड़ इस

नगरमें आया मुझे विश्वासथा फिर इस अभागेसे इस नगरमें जो बुग़दादसे बहुत दूरहै भेंट न होगी परन्तु प्रारब्धसे यहांभी इसका अशकुनरूप दृष्टिपड़ा है मित्रो! तुम उनसब आपत्तियों को जो इसके हाथसे मुझपरपड़ीं भलीभांति बिचारो यह दुष्ट अभागे के कारण वह चन्द्रमुखी कि मुझसे बिवाह करनेपर राज़ीथी इसप्रकार छूट गई और लँगड़ाहुआ इसके बिशेष सम्पूर्ण नातेदार इष्ट मित्र छूटे यह कह वह पंगुल चलागया हम सबने उसका और नाईका बृत्तान्त सुन आश्चर्य्य किया तदनन्तर नाई की ओर होय उससे कहा यदि यह सब बृत्तान्त जो उस मनुष्यने कहा सत्यहै तो तू बड़ा दुष्ट और दुर्बुद्धि है और दण्डयोग्य है वह तो उस समयपर्य्यन्त मस्तक नीचे कियेथा शिर उठाय कहनेलगा जो इस मनुष्यने कहा सब सत्य है इसमें बालभरभी अन्तर नहीं अब तुमको न्यायी ठहराताहूँ देखो और बिचारो यदि मैं उसकी सहायता न करता तो ऐसे भययुक्त स्थान से क्योंकर छूटता इतनाही कुशल हुआ कि यह लँगड़ा होगया और प्राणसे न मारागया जिस समय मैंने उसके रोने और चिल्लानेका शब्द सुना तो उसके छुटकारे के लिये यह परिश्रमकिया उसके बिपरीत मुझे दोष लगाताहै और अधिक यह कि मुझे बकी नियत किया यह दोष मेरेवास्ते अत्यन्त निंद्यहै मैंतो सात भाइयों में अल्पभाषी बिख्यातहूँ अभी तुम्हारे सम्मुख अपनी और अपने छःभाइयों की कहानी बर्णन करताहूँ जिससे तुमको मेरे बचन की सत्यता बिदित होगी॥

## दरज़ी और सभाके सम्मुख नापित की कथा॥

बादशाह हारूँरशीद के राज्यमें जो अत्यन्त दानी था दश डाकू बुग़दाद नगरमें चहूँओर के मार्ग लूटते पुरबासी उनके दुःख और क्लेश देने से अतिव्याकुल भये ख़लीफ़ा यह सुन अत्यन्त क्रोधित हुआ और कोतवाल को आज्ञादी कि तुरन्त उन दशों डाकुओं को ईदके दिन कि उस दिन भेंट होतीहै पकड़लाइयो यदि उस दिन उनको पकड़ न लावेगा तो तुझे बधकरूँगा कोतवाल कि अत्यन्त चतुर और बुद्धिमान्था तुरन्त चपरासियों को पकड़ने के लिये भेजा

कि उस नियत तिथिपर उनको पहुँचावे अकस्मात् उसी तिथि को डाकुओं को पकड़ नावपर चढ़ाया और उसी दिन मैंभी प्रातःकाल उन डाकुओं को भलेमानस समझ मैं भी इसी आशापर कि यह सब मुझे अपने साथ लेजावेंगे कुछ कहे सुने बिना उस नावपर सवार होगया उसी नावको खेकर ख़लीफ़ा के महलकी ओर लेचले उस समय मुझे विदितहुआ ये सब डाकूहैं मारनेके लिये पकड़ेजाते हैं जब हम उस नावसे तटपर उतरे सिपाहियों ने हम सबको चारों ओरसे घेरलिया और एक एक की मुश्कें बांध ख़लीफ़ा के सम्मुख लेगये मैंभी डाकुओं के सदृश बांधागया और जिह्वा भी न हिलाई कि मैं डाकू नहीं मुझे क्यों लियेजाते हो निदान उन सिपाहियों की निर्बुद्धिता से मैं इस आपदा और दुःख में पड़ा जब हम ख़लीफ़ा के सम्मुखहुये उसने बधिकको आज्ञादी इन दशों डाकुओंकी गर्दन मार उसने हम सबको पंक्तिबांध बैठाया कि उसे मारना सुगमहो मेरे अच्छे प्रारब्धसे बधिक ने मुझे सबसे पीछे बैठाया तदनन्तर मारना प्रारम्भ किया जब दश मस्तक काटचुका मेरे समीप आया और ठहरगया ख़लीफ़ा उसे ठहरा देख क्रोधितहुआ कि तूने क्यों एक को छोड़ा बधिकने बिनयकी कि मैंने आपकी आज्ञानुसार दश डाकुओं को बधकिया अब दश शिर और दश धड़ोंको आप गिनलें ख़लीफ़ा ने दश मृतकों को देख मेरीओर बिचारपूर्व्वक दृष्टिकी और कहा हे वृद्ध! तू तो डाकू नहीं क्यों इन अभागों के साथ होकर बध स्थान में आया मैंने बिनयकी हे स्वामी! मैं ठगोंको भलामानस समझ उनकेसाथ नावमें बैठगया ख़लीफ़ा मेरा वृत्तान्त सुन बहुत हँसा और मेरे चुप रहने से आश्चर्य्य किया तब मैंने कहा इस सेवकने छः भाइयों के बिपरीत अल्पभाषणता स्वीकारकी है जिससे मैं सप्रतिष्ठित रहता हूँ ख़लीफ़ा मेरी गम्भीरतापर बहुत प्रसन्नहुआ और कहनेलगा तुम्हारे भाई इस गुण में तुम्हारे सदृश हैं वा नहीं मैंने कहा उनमें इस गुणका लेश भी नहीं है वह सब बहुभाषी हैं और बेषमेंभी अन्तर है एक तो कुबड़ा है, दूसरा पोपला, तीसरा काना, चौथा अन्धा, पांचवां बूचा अर्थात् दोनों कर्ण उसके कटेहुये हैं,

छठवां खरगोस की भांति चलताहै उनके वृत्तान्त और चरित्र जो आप सुनें तो उनकी पदवियां विदितहोंगी आशारखताहूं कि मुझे आज्ञाहो तो मैं उन सबकी कथा वर्णनकरूं मैंने इस बातको बिचारा कदाचित् बादशाह कहनेकी आज्ञा दे वा न दे इसवास्ते मैंने वर्णन करना प्रारम्भ किया॥

## नापितकुबड़े के प्रथमभ्राताका वृत्तान्त॥

हे स्वामी! मेरा बड़ाभाई जिसकानाम बकबकथा कुबड़ाथा और दरज़ीका कार्य्य सीखताथा जब वह इस कार्य्य में निपुणहुआ तब उसने एक दूकान किरायेकी ली दैवयोगसे वह दूकान एक पनचक्की वाले के सम्मुखथी अभी उसका काम भलीभांति न चलता और बड़ी कठिनता से कालक्षेप करता और पनचक्कीवाला इसके बिपरीत बहुत धनवान्था उसकी स्त्री अतिसुन्दरी रूपवतीथी एकदिन मेरा भाई दूकानपरबैठा कुछकार्य्य करताथा कि उस पनचक्कीवालेकी स्त्री पर जो खिड़कीपर बैठीहुईथी दृष्टिपड़ी वह उसपर मोहितहुआ वह स्त्री जो पतिब्रताथी परपुरुषको देख खिड़कीबंदकरली बकबक निज कार्य्यको तज उसकी इच्छामें मग्नहुआ इस आशापर कि उसे फिर देखै और खिड़कीकी ओर मुखकर बैठरहा उसदिन तो वह स्त्री उसेदृष्टि न पड़ी परंतु दूसरेदिवस प्रातःकाल नियमानुसार वह खिड़की खोल इधरउधर देखनेलगी और दरज़ीकी ओर देख समझगई कि वह मुझे कुदृष्टि देखता है मनमें अत्यन्त अप्रसन्नहुई परंतु प्रकटमें उसे देख मुस्कराई दरज़ी भी उसे देख हँसा और कुदृष्टि से सैनकी वह लज्जितहो खिड़की से उठचलीगई वह दरज़ी इसहावभावसे समझा कि यह स्त्री मुझको चाहती है यह समझ बहुत प्रसन्नभया उसस्त्री ने चाहा कि उसे दण्डदें इसप्रयोजन से उसने कईगज़ बहुमौल्य कपड़ा बांदी के हाथ उसके समीप भेज के कहलाभेजा कि उत्तम बसन मेरेवास्ते तुरंत सीकर तय्यारकरदे मेराभाई समझा कि वह स्त्री भी मुझे चाहती है कि इसीहेतु मेरेपास सीनेको भेजा निदान उसने बड़े श्रमसे सन्ध्यापर्यंत सीके तय्यारकिया दूसरे दिवस जब बांदी बस्त्र लेनेआई उसने वह देकर उससेकहा कि अपनी स्वामिनी से कहियो

कि अपना सबकपड़ा मुझसेसिलवायाकरें मैं बहुत शीघ्र और उत्तम सीदिया करूंगा वह बांदी उस बसनकोले अपने घरचली थोड़ीदूर जाय वहदूती लौटआई और कहा यह संदेश देना मैं भूलगई मेरी स्वामिनी ने तुमसे पूंछाहै कि रैन तुम्हारी क्योंकर व्यतीतहुई मैं तो तेरे मोहमें सर्बनिशि अधैर्य्यरही और निद्रा न आई वह सूधा इस बचन के सुनतेही अत्यन्त हर्षितहुआ और पूर्णबिश्वास हुआ कि वह भी मुझपर मोहितहै और उस बांदीके हाथ कहलाभेजा मैं भी तुम्हारी प्रीति में चारदिनसे नहीं सोया वह उससे बिदाहो क्षणमात्र में फिर सन्देशलाई मेरी स्वामिनी उस बस्त्रको देख अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसे पहिनके देखा उसकेबदन में ठीकआया अब उसने एक टुकड़ा साटनकादियाहै कि उसकातुरन्त मेरेवास्ते एकबस्त्रसीके भेज दे कि मैं इसबस्त्रकेसाथ इसेभीपहिनूं मेरामूर्खभाई उसेभी लेकेसीने लगा उसीसमय वहमृगनयनी चन्द्रबदनी भी खिड़की में आई और अपनी छबिअनूप बालोंकीलटा यौवनकी छटा दिखाई कि जिससे वह अधिक प्रसन्न होकर शीघ्रही बस्त्रसीकर तय्यार करदिया वह अनुचरी आके उसे भी लेगई और कुछ भी मज़दूरी उसे न दी उस महामूर्ख प्रेमीको निर्धनता के कारण उस दिन भी कुछ भोजन प्राप्त न हुआ सन्ध्या को क्षुधासे अत्यन्त ब्याकुलहुआ निदान कुछ ऋणले भोजन का उपाय किया दूसरेदिन अरुणोदयको वही बांदी उसके समीप आई और कहा मेरा स्वामी तुझे बुलाता है क्योंकि उसकीस्त्रीने तेरेकामको उसे देखा तेरी बहुतसी प्रशंसाकी सो वहभी चाहताहै कि अपने बसन तुझसे सिलवाये और उसकी स्त्रीचाहती है कि इसीबहाने से तेरा आवागमन हमारे घरमें होजावे और तुम दोनों में जानपहिचानहो और तुम्हारा मनोरथ भी सिद्धहो मेरा भ्राता इस बातकोसुन बांदी के साथ पनचक्कीवाले के घरगया उसने उसका आदर सत्कारकर एकथान कपड़े का दिया और कहा मुझे इसमें से २० बस्त्र सीकरदे जो कुछ इसमें से बचरहे तो उसे मुझे फेर दीजियो मेरेभाई ने पांचसात दिन के कालान्तर में सब सीदिये तदनन्तर उसने एकथान और दिया कि कई और बस्त्र सी दे वह उनको

भी सीकर लेगया पनचक्कीवाला उसकी चतुरता से अति हर्षित हुआ और कहा भाई इन सबकी सिलाई क्या हुई हिसाबकर कुछ द्रव्य उसे देनेलगा वह बांदी कि उस स्थानपर बर्त्तमानथी मेरेभाई को सैनसे निषेध किया जो तू उसकी मज़दूरी लेगा तो तेराप्रयोजन सिद्ध न होगा मेरे मूर्खभाई ने उसकी सैन समझ आवश्यकता होनेपरभी कुछ न लिया किंतु सूतकाभी मोल न लिया और उससे बिदाहो मेरेस-मीप आया और कहा लोगोंने मुझे सिलाई अबतक कुछ नहींदी तू मुझे कुछ ऋणदे मैंने कईपैसे उसेदिये उसने उनपैसों में कईदिनतक खाया केवल सूखीरोटीखाता एकदिन मेराभाई उससुंदरी के घरगया उसका पति चक्की चलाने में प्रवृत्तथा उसे देखजाना कि अपनी मज़दूरी लेने आया उसने जेबमें हाथडाल कुछद्रव्य निकाला कि उसे मज़दूरी दे प-रंतु उसबांदी ने मेरेभाईको सैनसे बर्जा कि कभी न लीजियो मेरेभाई ने पनचक्कीवाले से कहा मैं इसप्रयोजन से नहीं आया केवल कुशलक्षेम पूंछनी अङ्गीकारथी पनचक्कीवालेने गुणमानकर एक और बस्त्रसीने कोदिया वह उसेभी सीकेलेगया तदनंतर पनचक्कीवालेने चाहा कि उसको मोलदे परंतु उस दुष्टदूती बांदीकी सैनसे कि अहर्निशबर्त्त-मानरहतीथी मेरेभाईने कुछ न लिया और कहा हे पड़ोसी! इतनीक्या शीघ्रताहै और समयसमझाजावेगा यहकह वहदीन कि प्रीतिके दुःख और निर्द्धनता में व्याकुल था और क्षुधाके कारण प्राण निकलते थे दूकानपर फिरगया और पनचक्कीवालेकी स्त्री जोपतिब्रता और चतुर थी मेरेभ्राता को मज़दूरी न देनेके बिशेष उसे अधिक दण्ड देना स्वीकार हुआ और चाहा कि इस कुइच्छाका स्वाद उसे चखावे एक दिन अपने पतिको मेरेभाईकी बुरीइच्छा से बिदित किया वह सुनते ही क्रोधितहुआ और मेरेभ्राता से बदलालेने के बिचारमें हुआ सो उसने एकदिन सायङ्काल में मेरेभ्राता को निमन्त्रण किया जब वह दोनों भोजनकरके बैठचुके पनचक्कीवालेने उससे कहाभाई रात्रिबहुत व्यतीतहुई अब कहांजाओगे यहीं शयनकरो यह कह उसे एकस्थान बतादिया कि यहांपरसोजा आपजाकर अपनी स्त्रीके समीप सोरहा त-दनंतर आधीरात्रि के समय मेरेभाई को सोते से उठाया और कहा हे

परममित्र ! आज मेरा खच्चर रोगी होगयाहै और मुझे आटापीसने की आवश्यकता है जो तुम कृपाकरके इसचक्की को थोड़ीदेरतक चलाओ तो उत्तमहो मैंने कहा मैं इस सेवाके वास्ते हाज़िरहूं परन्तु मुझे चक्की चलानेकी रीतिबताओ मैं इसे नहीं जानता पनचक्कीवाले ने चक्कीकी रस्सी मेरेभाईकी कमरमें खच्चरके सदृशबांधी और कहा अब तुम चक्करके गिर्द दौड़ो कि तुम्हारे दौड़ने से चक्की चलेगी और कोड़ा उसकी पीठपर मारा तब वह चिल्लाया कि मारते क्योंहो चक्कीवाले ने कहा इससे तुम सावधानहो घूमोगे आलस्य न करोगे क्योंकि जब खच्चर सुस्ती करताहै तो मैं इसीभांति चाबुक मारताहूं तो वह चालांकहोके खींचताहै बकबक यह दशा देख अतिबिस्मित हुआ और पांच सात चक्कर शीघ्र किये निदान थकित हो बैठगया तदनन्तर उसने बड़े बेगसे बारहकोड़े मारे और कहा जल्दीघूमो हे मेरेपड़ोसी ! बैठो नहीं जो धीरेधीरे और ठहर ठहरके घूमोगे तो मेरा आटा नष्टहोजावेगा निदान उस पनचक्कीवाले ने रातभर उसके साथ यही कृत्यकिया जब अरुणोदयहुआ तो वह उसे इसीदशा में बँधा हुआ छोड़ अपनी स्त्रीके निकटगया कि वह इसीदशा से उसको देखे इतने में वही बांदी आई और उसे खोल कहा देखो मैं और मेरी स्वामिनी दोनों कैसी दयावानहैं तुम्हें इसदशामें देख न सकीं हम दोनों अपने स्वामी के कृत्यमें संयुक्त नहीं बकबकने इसका कुछभी उत्तर न दिया क्योंकि उसे बहुतकष्ट पहुँचाथा कुछ समय में जब कुछ सावधान हुआ वहांसे उठ अपने घरमें आया ख़लीफ़ा ने मेरे भाईकी कथासुन कहा ईद कापारितोषिक ले अपने घरजा मैंने बिनय की जबतक मैं अपने सम्पूर्ण भाइयों का बृत्तान्त बर्णन न करलूंगा पारितोषिक न लूंगा और न बिदाहोऊंगा ख़लीफ़ा चुपहोरहा मैंने अपने दूसरेभाई की कथा कहनी प्रारम्भकी ॥

## बकबारहनामक नाई के द्वितीय भ्राताका बृत्तान्त ॥

नापितने ख़लीफ़ाके सम्मुख बिनयकी हे स्वामी ! मेरा दूसराभाई पोपला बकबारहनामक एक दिन भ्रमताहुआ नगरकी किसीगली में जापहुँचा एक बृद्धस्त्री ने उसकारूप देख प्रथम प्रणामकिया तद-

नन्तर उससेकहा मैं तेरेलाभके अर्थ एकबातकहती हूँ जो तू उसेसुने और उसपरचले मेरे भाईने प्रसन्नहोकर कहा परमेश्वर तुमको जीता रक्खे वह क्याबातहै मैं उसे शिरआंखों से करूँगा उसबृद्धाने कहा तू मेरेसाथ एक दिव्यमन्दिरमें चल उसकी स्वामिनी एकस्त्री अत्यंत रूपवती और हँसमुखहै वह तेरेसाथ बड़ा उपकार करेगी जिस मैं तू धनपात्र होजावेगा परन्तु वह नवबाला हँसोड़ और खिलंदड़ी है वह तुझसे हँसेगी और उसकी सहेलियां तेरेसाथ खेलें कूदेंगी तू कुछ बिलग न मानियो और न अप्रसन्नहूजियो बकबारह इसे स्वीकार कर बृद्धा के साथ हुआ और उसीकेसाथ एकबड़ेभारी बि-शाल घरके भीतरगया रक्षक और द्वारपालों ने बृद्धा के कहने से न बर्जा जब कईड्योढ़ी लांघीं फिर बृद्धाने उसीबात को दृढ़ाया कि वह सुन्दरी मृगनयनी चम्पकबर्णी गजगामिनी अत्यन्त शीलवान् और हँसोड़ है शीघ्र क्रोधी उसे प्रसन्न नहीं चैतन्यरह उसकी सहे-लियों के हास्य से अप्रसन्न न होना और बिलग न मानना वह तुझे निहाल करदेगी बकबारह ने उसका बड़ा यश माना और कहा बहुत अच्छा किया कि पहिले से मुझे जनादिया देखो मैं उन्हें कैसा प्रसन्न रखताहूं फिर वह बृद्धा उसे भीतर लेगई मेरे भ्राता ने उसकी सजावट बनावट देख बड़ा आश्चर्य्य किया उस महल के आगे पुष्पबाटिका अति उत्तम थी निदान उस बृद्धा ने उसे एक दालान में लेजाय कहा तू यहीं बैठ तेरे आगमन का सन्देश उसे जाय देतीहूं मेरे भाई ने कि कभी ऐसा सुन्दर घर स्वप्नमें भी न देखाथा प्रत्येकबस्तुको देख प्रसन्नहोता इतने में उसने बांदियों का शब्दसुना कि उसकी ओर चलीआती हैं जब उसके समीप पहुँचीं उसके स्वरूप को देख सब खिलखिला के हँसने लगीं और उन बांदियों के समूह में एक नवयौवना अतिसुन्दरी मृगनयनी मन-हरणी बादशाही बस्त्र आभूषण बहुमोल्यरत्न पहिने हुये थी उसकी सजधज से उसे बिदित हुआ कि यही स्वामिनी है और बहुतसी सुन्दर बांदियां और दासियां अपने चारोंओर देख बिह्वल हुआ जब वह सुन्दरी दालानके निकट पहुँची मेरे भाईने झुकके उसकी

अगवानी की उस स्त्रीने उसे बैठने की आज्ञादी और मुस्कराके कहा हम तुम्हें देख बहुत प्रसन्नहुईं और जो कुछ तुम्हें इच्छाहो कहो हम तुमको दें बकबारह ने बिनयकी मैं केवल आपकी सेवा करना चाहता हूँ और कुछ नहीं चाहता उस सुन्दरीने कहा मैंभी यही चाहती हूँ दो चारघड़ी परस्पर हँसें बोलें यह कह उसने आज्ञादी कि भोजनलाओ बांदियों ने तुरन्त नानाप्रकारके पाकलाय उसके सम्मुख रक्खे उसने मेरे भाईकोभी बैठने की आज्ञादी दासियों ने उसको उसी सुन्दरी के सम्मुख बैठाया जब उसने खाने के लिये मुख खोला तो उस सुन्दरी ने देखा एक दांत उसके मुहँमें नहीं उसने अपनी सहेलियों को सैनकी वह सब देख हँसीं और बकबारह घड़ी घड़ी निज मस्तकउठा उस सुन्दरीकी ओरदेख हँसता और समझता कि मेरी संगति से यह प्रसन्नहोय हँसती है अत्यन्त हर्षित होता तदनन्तर उस सुन्दरीने धृष्टहोजाने के लिये दासियों से सैनकी कि हट जाओ कि यह मनुष्य भलीभांति भोजन करे और मुझ से वार्त्तालापकरे और अत्यन्त कृपापूर्व्वक उत्तम उत्तम व्यञ्जन और नानाप्रकार के फल अपने हाथों से उठा उसे दिये और हँस हँसके उससे बातें करनेलगी जब भोजनकर निश्चिन्त हुआ गानेवालियां साजकोलेके गाने बजानेलगीं और कोई कोई नाचनेलगीं मेराभ्राता भी मग्नहोय उन सबके साथ नाचनेलगा केवल वही सुन्दरी बैठी हुई सबका तमाशा देखती थी जब वह भलीभांति नाच गायचुकीं और बिश्राम किया तब उस सुन्दरीने प्रथम एक गिलास मद्यका भर आपपिया और एक गिलास मदिरा का मेरे भाईको दिया मेरे भ्राताने गिलासले उसके हाथचूंबे और उसको पीलिया और कृतज्ञताके निमित्त कि उसने अपने हाथसे गिलास उसे कृपा कियाथा सम्मुख खड़ाहुआ उस सुन्दरीने उसे अपने समीप बैठने की आज्ञा दी वह प्रणामकर बैठगया वह सुन्दरी गलबहियां डाल धीरे धीरे तमाचे मारनेलगी मेरा भाई ऐसे सुन्दर उसके हावभाव देख हर्ष से फूला न समाता और समझता कि जगत् में मुझसे कोई अधिक भाग्यशाली नहीं मदमत्त होय चाहताथा कि उस कोमलांगी

से बिहारकरे परंतु बांदियोंके भयसे कि प्रतिक्षण उसे दृष्टिमें रखतीं न करसक्ता फिर वह सुन्दरी बड़ेबेगसे तमाचे मारनेलगी तब वह अप्रसन्नहो वहांसे उठा और हटके दूरजा बैठा वह बृद्धा जो मेरेभाई को वहां लेगईथी उसे सैनसे बतलाया तू अनुचित करताहै उस मेरे उपदेशको भूलगया वह महामूर्ख उससैनका अभिप्राय समझ फिर उसी सुन्दरीके समीप आया और यह बहाना किया किमैं अप्रसन्नहो यहांसे नहीं उठताथा तब उस मृगनयनीने मुस्कराके अपना हाथ बढ़ा उसको अपनीओर खींचा और अपने समीप बैठाय प्रकटमें उस पर बड़ी कृपाकी बांदियोंने उसके अप्रसन्न करनेके लिये नानाभांति का खेल किया निदान उन सबोंने मेरेभ्राता को सभाका नक़ल करने वाला बनाकर कोई तो उसकी नाकपकड़ खींचती और कोई उसे तमाचेमारती तब मेरे भाई ने बृद्धासे कहा तुम सत्य कहतीथीं कि तू ऐसी सुन्दरी पावेगा कि कदाचित् वैसी कभी स्वप्नमेंभी न देखी होगी और तू देख मैं उसके प्रसन्नार्थ कैसे कैसे दुःख सहताहूं बृद्धा ने कहा अभी क्याहुआ आगे यह सुन्दरी तुझको बहुत आनन्द देगी तदनन्तर उस नवयौबनाने कहा तू शीघ्र क्रोधी और अ-प्रसन्नचित्त बिदित होता है देखतो थोड़े से हास्य के लिये मैं कितनी दया तुझपर करती हूं परन्तु तू बिस्मरण कर तुरन्त अप्रसन्नहो जाताहै जिससे हमें ग्लानिहोतीहै तब मेरे भाईने कहा हे सुन्दरी! मैं बर्त्तमानहूं जिसमें आपकी प्रसन्नताहै वह कीजिये आपकी आज्ञा का उल्लंघन न होगा जब उस नवयौबना ने यह समझा कि यह मूर्ख निपट मेरे कहने में आगया और किसी अनुचितको असह्य न मानैगा गलेमें हाथडाल कहा जो हमारी प्रसन्नता चाहता है तो हमारे सदृश होजा यहकह अपनी बांदियों से कहा तुरन्त अतर गुलाबनीर लावो दो बांदियां दौड़ीगईं एक अतर की शीशी लाई और दूसरी गुलाब की उस चन्द्रबदनी ने निज करसरोज से अतर ले मेरे भ्राता के बहुतसा लगाया और गुलाबनीर उसके मुखपर छिड़का मेरा भाई यह आनन्द मङ्गलदेख प्रसन्नहोय प्रफुल्लित होय आपे में न समाता तदनन्तर उस गजगामिनीने अपनी बांदियोंको

गानेबजाने की आज्ञादी वह गानकरने लगीं और एक दासी को बुलाके कहा कि इसे लेजा और जिसभांति तुझे विदित है इसे बना सँवार के मेरे समीपला यहसुन बकबारा तुरन्त उठ खड़ा हुआ और उस बृद्धासे कि वहभी उसी दासीके साथथी पूंछा उस सुन्दरी ने मेरे वास्ते क्या आज्ञा दी है उसने मेरे भाई के कानमें कहा वह सुन्दरी चाहती है कि तुझे स्त्रीस्वरूप बनाकर उस स्वरूप में भी तुझे देखे अब यह बांदी तेरीभवोंपर चित्र खींचेगी और तेरी मूछें मूड़ तुझे स्त्रियों के बसन पहिनायेगी मेरेभाईने कहा कि मेरी भ्रूपर जितना चाहो चित्र खींचो मैं उसे जलसे धुलवा डालूंगा परन्तु मूछ मूड़ने में हानिहै क्योंकि मैं कुरूप होजाऊंगा उस बृद्धाने कहा इसमें तकरार न कीजियो वह द्रव्य जो तुझे प्राप्त होनेवाली है अप्राप्त होगी यह सुन्दरी तुझपर मोहितहै उसके मन में अब यही है कि तुझे धनपात्रकरे तू इन थोड़ेसे मूछों के बाल मोड़ने के लिये तकरार न कीजियो वह कोमालाङ्गी कि तेरी प्यारी है इतनीसी बात में अप्रसन्न होजावेगी निदान बकबारा राजीहुआ और कहा जो चाहो सो करो तब वह दासी उसे एक मकानमें लेगई और उसकी भवें लालकर उसपर चित्र खींचे तदनन्तर उसकी मूछें मूड़डाली और दाढ़ी मूड़ने की इच्छा की मेरे भाई ने इसमें तकरार की कि दाढ़ी मेरी न मूड़ो उसने कहा जो तुझे यही स्वीकारथा तो मूछें क्यों मुड़वाईं स्त्रियोंके बसन दाढ़ी के साथ क्योंकर शोभा देंगे और ऐसी सुन्दरीकी प्रसन्नताकेअर्थ कि बुग़दादनगर में अद्वितीय है दाढ़ी मुड़वाना कितना बड़ाकाम है उस बृद्धाने भी मेरेभाई को बहुत समझाबुझाके राजी किया तब वह दासी दाढ़ीमूड़ स्त्रियोंके चीर उसे पहिनाकर उसी सुन्दरी के सम्मुखलेगई वह मेरेभाई को स्त्रीरूप में देखतेही हँसते हँसते लोटगई तदनन्तर उस मृगनयनी ने कहा तूने मेरी इच्छा के अनुसार यह सब बातें स्वीकार कीं अब एकबात और है कि उसके करने से पूरीप्रसन्नता होगी अर्थात् मेरे सम्मुख नृत्यकर वह हाथउठा और नाकपर अँगुली रख नाचने लगा उसके नाचनेसे वह सुन्दरी और सब बांदियां मिलके उसके साथ

नाचनेलगीं और हँसते २ बावली होगईं जब वह नृत्य करचुकीं सबोंने उसदीन के हाथपांवबांध भलीभांतिमारा और एकको दूसरी पर ढकेलने लगीं उस वृद्धाने इस कृत्य से उनको बर्जा और प्रकट में उसकी ओरसे उन सबको भिड़क मेरे भ्राता को उनकी अकृत्य से अप्रसन्न न होनेदिया और धीरेसे उसके कान में कहा जो कुछ होनाथा सो हुआ धैर्य्य रख अभी तुझे पारितोषिक मिलेगा एक बात केवल रहगई है अर्थात् यह सुन्दरी जिसदिन मदिरापानकरती है उसके नसेमें किसीको अपने समीप नहीं आनेदेती जो कोई नग्नहो केवल एकबस्त्र पहिन के उसके निकटजावे और उसके पकड़नेकी इच्छाकरे परन्तु वह आगे आगे भागती है कभी एक दालान में और कभी एक मकान से दूसरे मकान में यहां तक कि यह सुन्दरी थकित हो खड़ी होजाती है और वह पुरुष उसे पकड़ लेताहै अब वह तेरेआगेसे होके भागेगी तू नग्नहो उसकेपीछे दौड़केपकड़ लीजियो यह सुन मेरेभाई ने बुढ़ियासे यह बातसुन बसनउतारडाले केवल एकवस्त्र शरीरपर रहनेदिया और दौड़नेपर तत्परहुआ तब सुन्दरी भी दौड़नेको उद्यतहुई और उसे धोखादे अनुमान बीस पैग के उसकेआगे हो दौड़ी मेराभाई भी उसकेपीछे दौड़ा और सबबांदियांभी उसकेसाथ तालीबजातीहुई दौड़ीं वह सुन्दरी दो तीनबेरदालान के चारोंओर घूम एकछत्ते में जिसमें बहुत अँधियाराथा चली गई मेराभाई भी उसीभांति उसके पीछे दौड़कर उसी अँधेरेमकान में गया वह सुन्दरी तो उस कोठेसे अन्यमार्ग होके निजघरमें आई परन्तु मेराभाई उस मार्गको न जानताथा उस अँधेरे कोठेमें दौड़ता और भटकतारहा और कुछ उसे वहां न सूझता कि मैं किधरजाताहूँ और वह सुन्दरी कहां है निदान एकओर कुछप्रकाश देख दौड़ा और उस मकानके द्वारसे बाहर निकलगया निकलतेही वहद्वार भिड़गया मेरेभाई ने अपने को चमारोंकी गली में पाया चमार उसे नग्न और दाढ़ी मुड़ीहुई और भवोंपर चित्रखिंचे देख बिस्मित और आश्चर्य में होकर तालियां बजानेलगे और कइयों ने पीछे दौड़ उसे मारना आरम्भ किया तदनन्तर कहींसे गधा पकड़ उसपर उसे सवारकराके

नगरकीओर लेगये उसकी अभाग्यतासे वह सब नादकरतेहुये एक गलीमें कि जिसके समीप क़ाज़ीकाघर था उसे लेके निकले क़ाज़ीने शब्दसुन अपने सेवकोंसे सबको मेरेभाईसमेत पकड़ बुलवाया और वृत्तान्त पूँछा चर्म्मकारों ने कहा स्वामी हमने इस मनुष्य को इसी दशासे अमुकगली में जो वज़ीरकी स्त्री के द्वारसे सम्बन्धित है पाया यह वहांसे चलाआता था क़ाज़ीने यह सुन आज्ञादी कि इसके पावों पर सौकोड़े मारकर देशसे निकालदो फिर कभी इस नगर में न आने पावै इतना कह उसनाई ने ख़लीफ़ा से कहा यह कथा जिसको मैंने आपके सम्मुख वर्णन किया मेरे दूसरे भाई की थी फिर वह तुरन्त अपने तृतीयभ्राता का वृत्तान्त कहनेलगा॥

नापितके अन्धे बूबकनामक तृतीयभ्राताकी कथा॥

हे स्वामी! मेरा तीसराभाई बूबकनामसे प्रसिद्ध और निपट अन्धाथा बड़ा अभागी था मनुष्यों के द्वारोंपर भिक्षा मांगता और नियम यह रखता था कि गलियोंमें नित्य अकेला फिरता और अपने साथ मार्ग दिखाने के लिये किसीको न लेता और किवाड़खटखटाके चुपका खड़ा रहता और कुछ मुखसे न बोलता इतनेमें धनी उसे द्वारखोल भिक्षा देता संयोगबश एकदिन एकद्वारपर जा खटखटाया घरके धनी ने जो घरमें अकेलाथा हांकदी कि कौन है मेरे भ्राताने उत्तर न दिया दूसरी बेर फिर किवाड़ खटखटाया धनी ने फिर पूँछा कौनहै फिरभी वह न बोला तब घरवालेने द्वारखोल मेरे भाईसे कहा तू क्या मांगताहै उसने कहामैं निर्द्धन दीनयाचकहूँ परमेश्वरके नामपर कुछ भिक्षादो उसने कहा तू मुझे आंखों से अन्धा जान पड़ताहै मेरेभ्रातानेकहा सत्यहै तदनन्तरउसने कहा हाथफैला मेराभाईसमझा कि कुछदेवेगा हाथ आगेबढ़ाया वहहाथ उसकाबड़े बेगसेपकड़ सीढ़ीकेमार्गसे ऊपरलेगया बूबकनेसमझा कि यह भोजन खिलावैगा परंतु उसने ऊपर मेरेभाईको लेजाय हाथछोड़दिया और निजस्थानपर बैठ उससेपूँछा तू क्या मांगताहै उसने आशीर्बाद दे कहा मैं भिक्षुकदीन और निर्द्धन भिक्षामांगताहूँ उसनेकहा मैंभी तुझे आशीर्बाद देताहूँ कि ईश्वर तेरेनेत्रोंमें प्रकाशदे मेरेभाईने कहा इत-

नीबात पहिलेही कहदेते तो मैं सीढ़ी पर चढ़ने का कष्ट न उठाता तब उसनेकहा मैंने दोबेर तुझसे पूंछा तू कौनहै और क्या मांगताहै तू कुछ न बोला तूने मुझे उतरनेका कष्टदिया तब उसनेकहा मुझे कुछभी तो दो उसनेकहा मेरेपास कुछनहीं तब मेरेभाईनेकहा मुझे नीचे उतारदो उसनेकहा सीढ़ी तेरे सामनेहै तू आप उतरजा मेरा भाई लाचारहोकर नीचे उतरनेलगा बीचमें से उसका चरण फिसला नीचे गिरा उसके मस्तक और पीठमें बड़ी चोट लगी जिससे अत्यन्त व्यथितभया वहांसे घरवालेको कुवाच्य और धिक्कार देताहुआ आगेचला संयोगबश मार्गमें अन्य अन्धे जो मेरेभाईके मित्रथे मिले उसका शब्द पहिंचान खड़ेहुये और उससे पूंछा आज तुझे भिक्षा में क्यामिला मेरेभाईने उनसे सबवृत्तान्त अपने गिरने और चोट लगने और घरवालेकी अशीलताका वर्णन कर कहा आज मुझ को दिनभर कुछ न मिला तदनन्तर मेरेभाईने उनसे कहा तुम घर चलो और कुछद्रव्य जेबसे निकाल उन्हेंदिया कि मेरे निमित्त कुछ भोजन मोललाओ प्रकटहो जो मनुष्य बूबक को ऊपर लेगयाथा एक चोरथा बड़ाछली और ईर्षी बूबककी बातेंसुन नीचेउतरा और पीछे उसकेहोलिया और अन्धोंकी अज्ञानतामें उनकेसाथलगाहुआ उसघरमें जहां मेराभाई रहताथागया बूबकने घरमें बैठ अपने साथियों से कहा अच्छी तरह देखभाल द्वारबन्दकरो कि कोई अन्य मनुष्य यहां न रहे चोर यह बचनसुन बहुत सिटपिटाया और चहुँओरदेख एक मोटीरस्सी जो छतमें बँधीथी दोनोंहाथोंसे दृढ़ पकड़ लटकरहा वह तीनों अन्धे द्वारबन्दकर अपनी लाठियों से कोनों में भलीभांति टटोल और देखभाल एकस्थानपर बैठगये वह चोरभी रस्सीछोड़ मेरे भाई के समीप चुपका आबैठा मेराभाई जब समझा कि यहांपर अन्यपुरुष नहीं तब गुप्त बातें कहनेलगा कि तुमदोनों ने मुझे बिश्वासित समझ अपना द्रव्य मेरे निकट रक्खा मैंने तुम्हारी बस्तु यथोचित प्रबन्ध से इस समय पर्य्यन्त रक्खी अब नहीं रखसक्ता तुम उसे गिनके लेलो बूबक उस गुदड़ी को जिसमें बयालीस हज़ार रुपये रक्खे थे उठालाया और उनके

सम्मुख रखदिये उन्होंने कहा हमें तुम्हारी सत्यतापर बिश्वास है तौलने और गिननेकी कुछ आवश्यकता नहीं तब वह थैलियों को टटोल फिर उसीभांति गुदड़ी में रख जिस स्थानपर कि पहिले थीं रख आया तदनन्तर मेरे भ्राता ने कहा मुझे क्षुधालगीहै कुछ खाने को मेरे निमित्त बाज़ार से मोललाओ एक अन्धे ने कहा उसको कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि अमुक धनवान् ने मुझे पाकभेजाथा उसमेंसे कुछ खर्चहुआ और बहुतसा शेष है वह भोजन तीनों को बहुत है इतना कह उसने अपनी झोरीसे कुछ रोटियां पनीरसमेत निकालकर रक्खीं तदनन्तर मेवे निकाले और उन तीनोंने परस्पर भोजन आरम्भ किया वह चोर जो मेरेभाई के दाहिनी ओर बैठा था आगेबढ़ उत्तम उत्तम बस्तु और पाकभोजन करनेलगा परन्तु उसचोरकी रक्षाकरनेपरभी बबक चबाने का शब्दसुन चौंका और मनमें कहनेलगा हम सब मारेपड़े क्योंकि यहां कोई अन्यपुरुषजान पड़ता है यह कहतेही तुरन्त चोर का हाथ पकड़ लिया और उसपर चढ़पुकारा कि चोर चोर और बहुतसी मुक्की उसे लगाईं और उन दोनोंअंधों ने भी उसेमार बड़ानाद किया चोरभी अपनी सामर्थ्यभर उनसे बचता और उनतीनोंको पारीपारी से मारता और चिल्लाता कि लोगोदौड़ो चोरमुझे मारेडालते हैं पड़ोसी शब्दसुन चारोंओर से दौड़ेआये और द्वारतोड़ भीतर घुसपड़े और पूछा क्या है मेरेभाई ने कहा भाइयो जिसे मैं पकड़ेहूं चोरहै हमारेरुपयों के चुराने के लिये जो हमने भीखमांग संग्रह किये हैं चुरानेआयाहै चोरने समूहकोदेख दोनों नेत्र बंदकर छलसे अपने को अंधाबनालिया और कहा भाइयो यह अन्धा असत्य कहताहै परमेश्वर की सौगंदहै मैं भी इनके साथियों में से हूं मेराभाग मुझे नहीं देते और इन तीनों ने मुझे चोर ठहराया और बहुत सा मारा परमेश्वर के वास्ते मेरा न्याय चुकादो मनुष्य इसबातका न्याय कठिन समझ चारों को कोतवाल के समीपलेगये जब वह चारों कोतवाल के सम्मुख खड़े कियेगये चोरने कि अपने को भी छलसे अन्धा बनाया था उसके प्रश्नकरने के प्रथम बोला हे स्वामी! मेरीबिनय सुनिये कि हम चारों समअप-

राधी हैं यदि हम चारों बचनबन्ध करके भी पूंछे जावेंगे तो कोई हममें से सत्य सत्य न कहेगा जो आप चाहते हैं हम चारोंका अपराध सूचितहो तो एक एकको भिन्न भिन्न दण्डदेनेकी आज्ञादीजिये तो प्रत्येक निजमुखसे अपने अपने अपराधका बर्णन करेगा प्रथम मुझसे आरम्भकीजिये मेरे भाईने चाहा कि कुछ बोलूं लोगोंने उसे कुछ कहने न दिया और चोरपर मार पड़नेलगी जब अनुमान बीस वा तीस कोड़े उसपर पड़े तब तड़पनेलगा प्रथम एक आंख खोली फिर दूसरी खोल कोतवालसे बिनयकी हे स्वामी! छुड़ादीजिये मरजाऊंगा कोतवाल उसके खुलेनेत्र देख आश्चर्य्यमें हुआ और कहा हे दुष्ट अकर्मी! यह तूने क्याछल कियाथा उसने कहा जो मुझेमार से छुड़ाइये और मेरा अपराध क्षमाकीजिये तो मैं इस भेदको आप के सम्मुख बर्णनकरूं कोतवालने निज सेवकों को आज्ञादी अब न मारो मैंने इसका अपराध क्षमाकिया तब चोरने कहा स्वामी सत्य तो यह है कि मैं और तीनों मनुष्य जिनको आप अन्धा जानते हैं सनेत्र और ज्योतियुक्त हैं हम चारों ने अपने को अन्धा बनायाहै कि अभयहोय जिसके घरचाहते हैं घुसजाते हैं मैं सत्य सत्य आपके सम्मुख कहताहूं कि हमचारों ने इसीबहाने आजतक बयालीसहज़ार रुपया सञ्चित किया है आज मैं इन के समीप अपना चतुर्थ भागलेने आयाथा इन्हों ने इस भयसे कि यह हमारा भेद प्रकट न करे उसे न दिया जब मैंने अपने भागलेने में इनसे तकरार की तब इनतीनों ने मिलके मुझे भलीभांतिमारा इसकेसाक्षी सब मनुष्यहैं मुझे परिपूर्ण आशाहै कि न्यायसे मेराभाग इनसे दिलादीजिये यदि आप चाहते हैं मेरेसाथी भी आपके सम्मुख सत्य कहें तो इन्हें भी मारनेकी आज्ञादीजिये फिर देखिये यहसब मारके कारण नेत्रखोल सत्य २ कहते हैं वा नहीं मेरे भाई और उन दोनों नेभी चाहा कि कोतवालसे उसका छल प्रकटकरें पर क़ाज़ीने कुछ न सुना और कहा तुम बड़ेधृष्टहो धूर्त्तता से अन्धे बनेहो कि पुरबासी तुम्हें अन्धाजान बहुतसी भिक्षादें मेरेभाईने कहा स्वामी जो इसचोर ने हमारे बिषय में कहा कि हम सनेत्र हैं सब झूंठ है हम

तीनों परमेश्वरकी सौगन्दखाके कहते हैं कि हमें दृष्टि नहीं निदान बहुत कुछ मेरेभाई ने कहा सुना परन्तु कुछ लाभकारी न हुआ और कोतवालने आज्ञादी कि सौ सौ कोड़े इनको मारो तीनोंपर मारपड़नेलगी क़ाज़ीनेदेखा कि इनपर इतनी मारपड़ी और इन्होंने आंखें न खोलीं जानपड़ता है कि ये बड़े दुष्ट हैं और चोरनेभी अवसर पाय कहा मेरे प्रियमित्रो क्यों अपने प्राणदेतेहो यदि नेत्र खोलदो तो निस्संदेह बचोगे और तुम्हारा अपराध क्षमाहोजावेगा तदनन्तर उसने कोतवालसे बिनयकी हे स्वामी ! यह तीनोंबड़ी आज्ञा भंगकर्त्ता और कठोरचित्त हैं जो आप मारतेमारते इनको मारभी डालेंगे तो कदाचित् अपने नेत्र न खोलेंगे अब ये अपने अपराध से अधिक दण्ड पाचुके उत्तम है कि इनका अपराध क्षमाहो आप एक मनुष्य को मेरेसाथ कीजिये वह जो इन्होंने द्रव्य संचयकियाहै आपके सम्मुखलाऊं क़ाज़ी इस व्यवस्थाके मूलको न पहुँचा और चोर के कहने के अनुसार एक सेवक को उसके साथ करदिया वह जाय उस धनको उठालाया क़ाज़ी ने उसका चतुर्थ भाग गिनवाके चोर को दिया और शेष आपलिया और उन तीनों अन्धोंको मारपीट देश से निकाल दिया नाईने ख़लीफ़ा के सम्मुख बिनय की स्वामी जब मैंने यह सुना तो ढूंढ़ता हुआ बूबक के समीप गया और उस को फिर गुप्तकरके नगरमें लाया और कोतवाल के सम्मुख साक्षियों के द्वारा निर्दोषता प्रतीत कराई तदनन्तर कोतवाल ने चोरको भलीभांति दण्डदिया परन्तु द्रव्य न फेरा इसभयसे ऐसा न हो कि इस चोरके दम्भ छलसे मुझपर किसीभांति का दुःख हो नापितने इस कहानी को समाप्तकर ख़लीफ़ा से कहा यह मेरेतृतीय भ्राताका बृत्तान्तथा ख़लीफ़ा इस कहानीको सुन बहुत हँसा और इच्छाकी कि मुझे कुछ पारितोषिक आदि दे बिदाकरे परन्तु मैंने अपने चतुर्थ भ्राताकी कहानी प्रारम्भकी ॥

## नाई के चतुर्थ काने अल्कूजनामक भाईकी कहानी ॥

स्वामी मेरे चौथेभाई का नाम अल्कूजथा वह एकाक्ष था जिस भांति उसने अपनी आंख खोईथी वह वृत्तान्त यह सेवक आपके

सम्मुख वर्णन करताहै वह मेराभाई पशुहिंसा अर्थात् क़साई का कार्य्य करता था उसे भेड़ बकरी की पहिंचान अच्छीथी और भेड़ों को भलीभांति युद्ध सिखाता था इसकारण लोकमें बहुत प्रसिद्धथा प्रायः धनपात्र और भले भले मनुष्य भेड़ोंके युद्धका चरित्र देखने उसके घरआते और वह उत्तम २ हृष्ट पुष्ट युद्ध योग्य दिव्य भेड़े पालता इसके बिशेष अपनी दूकानपर बहुत उत्तम मांस बेंचता एकदिन वह अपनी दूकानपर बैठाथा कि एकबृद्ध वहांआया और अनुमान छःसेरके मांस मोललिया और उसका मूल्यदे चलागया मेरेभाई ने वे रुपये जो श्वेत और सुन्दर और नवीन प्रकार के थे देखकर किसी भिन्न संदूक में रख दिये वह बृद्ध पांचमासपर्य्यन्त उतनाही मांस उसकी दूकान से लेता और उसीभांति के रुपये देता रहा वह उन्हें एकहीस्थानपर रखताजातारहा पांचमहीनेके उपरांत मेरे भाईने उसी द्रव्यकी भेड़ें मोललेनी चाहीं जब उसने संदूक खोला तो वहां श्वेतकाग़ज़की टिकुलियांपाईं जिन्हें देख वह अत्यंत बिस्मित हुआ और अपना मस्तक पीटने और रुदन करने लगा तदनंतर अपने पड़ोसियोंको बुलाय यह बृत्तान्तकहा और काग़ज़की टिकुलियां दिखाईं वे देख अधिक आश्चर्यमेंहुये मेराभाई उस समय रोरोकर यह मांगता कि परमेश्वरकरे इसीकाल वहछली बृद्ध आजावे यह कहरहाथा कि वह बृद्ध दूरसे दृष्टिपड़ा मेरेभाईने उसे देखतेही दौड़केपकड़ा और मनुष्यों के समूह में उसे खींचलाया और दुहाई कर कर कहनेलगा हे भाइयो! देखो इसनिर्लज्ज और दुष्टने कैसाछल किया तदनंतर बहुतसे दूकानदार और पड़ोसियों से वहां बड़ी भीर होगई मेरेभाईने उसका बृत्तांत वर्णन किया बृद्धने यहसुन मेरेभाईसे कहा यही उत्तमहै कि मुझे छोड़ और कुछ न कह किन्तु यहअनादर और कुवाच्य जो तूने किया और कहे मुझसे क्षमाकर नहीं तो मैं तेरी इससे अधिक अप्रतिष्ठा और निरादरकरूंगा मैं नहीं चाहता कि ऐसी अभक्ष्यबस्तुको अपने मुखपरलाऊँ मेरेभाई ने कहा तू क्याबकता है मैं कुछ अपनीबस्तुमें छल नहींकरता तुझसे मैं नहीं डरता बृद्धने कहा तू नहीं मानता यही चाहताहै कि मैं तेरेकपटको प्रकटकरूँ यह कह

उस बुड्ढेनेकहा हे भाइयो! सुनो यह बकरी और भेड़कामांस नहीं बें-
चता किन्तु मनुष्यकामांस अपनी दूकान में रख बेंचताहै मेरेभाईने
कहा हे नीच! बृद्धावस्थामें तू असत्य कहने से भय नहींकरता उसने
कहा मैं मिथ्या नहीं कहता तेरी दूकानपर एकमनुष्यका गला कटा
हुआ भेड़की सदृश नहींलटकता जिसका मनचाहे दूकानपर जाके
देखले उसे मेराझूंठ सत्य मालूम होजावेगा मेरे भाईने एकभेड़मार
कर लटकाई थी अल्कूज़ इसबचनको सुन क्रोधितहुआ और बुड्ढे
से कहा तू झूंठाहै तुझे मेरे दोषलगाने से क्या लाभहोगा निदान वे
सबमनुष्य बृद्धको पकड़ेहुये मेरेभाई की दूकानपर लेगये यदि यह
झूंठा हो तो इसे द्विगुणदण्डदें वहां आय देखा तो वास्तवमें एकमनु-
ष्यका गलाकटाहुआ लटकताहै वहबृद्ध मायावीथा उसने सबकीदृष्टि
बांधदी थी जैसे उसने कागज़की टिकुलियों के रुपये दिखाये उसी
भांति भेड़को मनुष्य दिखाया परंतु किसीको यहगुप्तबात बिचार में
न आई तदनन्तर उससमूहमेंसे एकमनुष्यने मेरेभाईको बहुतमारकर
कहा दुष्टकुकर्म्मी तू हमको नरमांस खिलाया करताहै उस बृद्धनेभी
मेरेभाईको मारा यहांतक कि एकनेत्र उसका फूटगया तौभी उनको
धैर्य न हुआ उसे क़ाज़ी के समीप पकड़लेगये और कटेहुये मनुष्य
को भी जो उसबृद्धकी मायाकेकारण दिखाई देताथा उसीकेसाथ क़ा-
ज़ी के निकटलेजाय दिखाया क़ाज़ी उसे देख अत्यन्त क्रोधितहुआ
और आज्ञादी कि पांचसौ कोड़े अल्कूज़कोमार ऊँटपर चढ़ाओ और
नगर में प्रसिद्धकर देशसे निकालदो उसदीन ने उसबृद्ध के छलका
बृत्तांतकहा कि यह रुपयोंकेबदले कागज़की टिकुलियां देताथा परंतु
क़ाज़ीने क्रोधबश कुछ न सुना जिससमय यहकष्ट मेरेभाईपर पड़ाथा
मैं बुग़दादमें न था वह किसी निर्जनस्थानमें गुप्तरहनेलगा कुछदिन
में उसकी पीठकेघाव जो मारके कारण पड़गये थे अच्छेहोगये जब
कुछ चलने फिरनेकीशक्तिहुई तब उसने किसी दूसरी बस्तीमें जानेकी
इच्छाकी रात्रिको अप्रकट मार्गोंसे चलता जब एक नगरमें जहां उसे
कोई न जानताथा पहुँचा वहां कईदिन बड़ी कठिन दशासेकाटे एक
दिन उस नगरमें चलाजाता था कि उसने घोड़ों के चलने का शब्द

चित्र अलकूज चौथे भाई का ऊंट पर सवार करके देश से निकलवा देना



सुना पीछे फिरके देखा तो बहुत सेसवार उसकेपीछे चलेआतेहैं उन को देख भयभीतहुआ कि मेरेही पकड़नेकी तो इन्हें इच्छानहींहै वह उठते बैठते एकफाटकतक पहुँचा और सवारों के भयसे भीतरजाय द्वारबन्दकरलिया और वहांसे एकबिशाल मकानमें जानेलगा इतने में दो मनुष्यों ने आके उसेपकड़ा और कहा परमेश्वर का धन्यबाद है कि तुम्हीं ने कृपाकी हम तीनदिनसे तुम्हें ढूंढ़ते थे और दौड़ते २ हमें तीनरात्रि दिन व्यतीत हुये मेराभाई यह बचनसुन अत्यन्त बिस्मितहुआ और उनसे कहा तुम्हारा क्या प्रयोजन है और मुझसे क्या चाहतेहो तुमने मुझे किसी दूसरे के भ्रमसे पकड़ा तब उन्होंने कहा हम तुझे भलीभांति जानतेहैं तू और तेरेसाथी सबकेसब चोर और डाकूहैं तूने हमारे स्वामीकी बस्तु और धन चोराय उसे निर्द्धन किया तो भी तेरा बोध न हुआ अब तू उसके प्राणलेनेकेलिये आया है देखें तेरेपास छुरीहै वा नहीं कलरात्रिको जो तेरे पीछे दौड़ेथे तेरे हाथमें हमनेछुरी देखीथी यहकह उसके बस्त्रमें छुरीढूंढ़नेलगे दैवयोग से मेरेभाई के पास एकछुरी थी वह उन्होंने छीनली और कहनेलगे अबहमें अधिक निश्चयहुआ तू चोरहै मेरेभाईने उनसेकहा क्यायह होसक्ताहै कि जिसमनुष्य के पासछुरीहो वह चोरहो मेरी आपदाका बृत्तांतसुनो तो बिश्वास है कि तुम मुझपर दयाकरोगे मेरे भाई का वृत्तान्तसुन वहदोनों लिपटगये और बस्त्र खण्ड २ करदिये और उस के कन्धोंपरघावदेख कहनेलगे तू अपने को भलामानुषकहता है तेरे शरीरपर मारकेचिह्नहैं तू अवश्य चोर है तदनंतर उन्होंने उसे बहुत मारा तब मेरेभाईने कहा हे परमेश्वर! मैंने तेराकौनसापापकिया जिस के पलटे मैं एकबेर प्रथम निर्दोष मारागया अब दूसरीबेर ब्यर्थमारा जाताहूं उनदोनों ने मेरेभाई के कहनेपर कुछभी बिचार न किया और उसेपकड़ क़ाज़ी के समीपलेगये क़ाज़ीने उसे चोरसमझकहा हेदुष्ट अयोग्य अभागे! तू मनुष्योंकेघरोंमें सेंधदेताहै और उन्हींकेबधकरने के लिये छुरी हाथमें लेताहै अलकूज़नेकहा स्वामी मेरी सदृश संसार भरमें कोई निर्दोष और निष्पाप न होगा मैंने कोई कुकर्म नहींकिया जो मेरा बृत्तांत सुनिये तो मालूमहोगा मुझसा कोई दया योग्य नहीं

तब एकने उनमें से कहा आप इसकी बातें क्या सुनियेगा जो लोगों के घरोंमें द्वारतोड़ उनकी धरीवस्तु चुराले जाताहै और पुरवासी इस के हाथसे मारेजाते हैं जो हमारे बचनपर आपको बिश्वास न हो तो इसके कन्धे आप देखिये कि कितने चिह्न मारके हैं उन्होंने मेरेभाई की पीठखोल क़ाज़ीको दिखाई तब क़ाज़ीने आज्ञादी कि बड़ेबेगसे सौचाबुकमार ऊंटपर चढ़ा सम्पूर्ण नगरमें फेरो और एक मनुष्य इसके आगे पुकारे यह उसका दण्ड है जो कोई मनुष्यों के घरों में घुसके चोरीकरे निदान उसे मारपीट प्रसिद्ध कर देश से निकाल दिया और आज्ञादी फिर इस नगरमें न आनेपावे कई मनुष्यों ने कि उसे दूसरी बेर आपदा में देखाथा मुझसे आयकहा मैं सुनतेही वहांगया और उसेढूंढ़ गुप्त बुग़दाद में लाया और अपनी सामर्थ्य भर मैंने उसका पालन किया ख़लीफ़ा यह सुन बहुत हँसा और अल्कूज़की अभाग्यता पर अतिदया आई तदनन्तर चाहा मुझे पारितोषिक आदिदे बिदाकरे परन्तु मैंने अवसर न दिया बिनयकी स्वामी जहां आपने स्वामिभाव से इतना श्रम किया मेरे और दो भाइयों का बृत्तान्त सुनलीजिये बिश्वास है आप उन अद्भुत बृत्तान्तों को सुन आनन्दित होंगे और हम सातों भाइयोंकी कहानी परिपूर्ण होजावेगी॥

## नापितकेअलनसचरनामकपञ्चमभाईकाबृत्तान्त॥

मेरे पांचवें भाई का नाम अलनसचर था वह पिताके साथरहा करताथा परन्तु महाआलसी और निकम्मा था और बड़ी निर्लज्जतासे सन्ध्याको कुछ भिक्षामांगता और उसे भोजन कर कालक्षेप करता और मेरा पिता कि बृद्धतासे शिथिल होगया था कालवश हुआ तीनहज़ार एकसौ पचास रुपये जो उसने छोड़े थे हम सातों भाइयों ने परस्पर बांटलिये अलनसचरने भी अपना भाग पाया उसने अपनी बयसभरमें भी इतना द्रव्य न पायाथा गूढ़शोच बिचारमें पड़ा कि इसमें क्योंकर ब्यापार करूं पहिले कौनसी बस्तु लूं निदान बिचारते २ उसने साढ़ेचारसौ रुपये के शीशे के पात्र गिलास आदिक मोललिये और एकबड़े टोकड़े में भर एक दूकान

पर रख आपभी दीवारसे लग बैठा और एक दरज़ी को जो उसकी दूकानके निकट अपना काम करता था उसके सामने होकर अपने हृदयके बिचारको कहनेलगा कि मैं इस बस्तुको नवसौ रुपये पर बेंचकर उससे फिर शीशे मोललै एक हज़ार आठसौ को बेंचूंगा इसीभांति मोल लेते बेंचते तीसहज़ार रुपये होजावेंगे तदनन्तर मैं उत्तम उत्तम बहुमूल्य मणि माणिक रत्न मोती मोलले ब्यापार करूंगा जब बहुत धन मेरे मनोरथानुसार मुझे प्राप्तहोगा तब मैं एक बड़ा उत्तम बिशाल घर और कई सेवक और अश्व मोलले बड़े धनपात्रों की सदृश रहाकरूंगा धीरे २ मेरे उच्चपद और बढ़तीका हाल सम्पूर्ण नगरमें प्रसिद्ध होगा और उत्तम स्त्री पुरुष गाने बजानेवाले जो इस नगर में प्रसिद्ध हैं मेरे घर आया करेंगे जब मेरा ब्यापार बढ़ता २ पांचलाख मुद्रापर्य्यन्त पहुँचेगा तब मैं बहुतसे द्रब्य और बस्तुसे अपने को बादशाह के समान समझ वज़ीरको उसकी कन्याके साथ अपने बिवाहका नेग भेजूंगा कि मैंने सुना है कि तेरी कन्या अत्यन्त रूपवती कोमलांगी प्रियबचनी चतुरा और सुन्दर गुणयुक्ता है उसका बिवाह मेरे साथ करदे यदि वज़ीरने स्वीकार किया तो उत्तम नहीं तो उसकी कन्या को नवसंगम रात्रिके लिये एक हज़ार अशरफ़ी दूंगा यदि उसने इन्कार किया तो मैं उसके घरपरचढ़ उसके सम्मुख उसकी पुत्रीको बरजोरी निकाल लाऊंगा निदान जब मेरा बिवाह वज़ीरकी कन्या के साथ होजावेगा तो मैं दशसेवक मोललूंगा और उत्तम बस्त्र शाहज़ादों के सदृश पहिनूंगा और जड़ाऊ साजवाले मुश्की घोड़ेपरचढ़ बड़ी सजधजसे कुछदास आगेपीछे वज़ीरके घरकी ओर जाऊंगा जब मैं उसके मन्दिरमें पहुँचूंगा सम्पूर्ण छोटे बड़े मनुष्य मेरी ओर डाहसे देखेंगे और बड़े आदरभावसे मेरी अगवानीकर मन्दिरके भीतर लेजावेंगे जब मैं अपने घोड़े से उतर ऊपरजानेकी इच्छाकरूंगा मेरे सेवक दास और प्रधानआदि दोनों ओर पंक्तिबांध खड़ेहोंगे वज़ीर मुझे अपना दामादजान निजस्थानपर बैठावेगा और आप मेरे सम्मुख हो बैठेगा तब मैं सेवकोंको आज्ञादूंगा दो तोड़े हज़ार २ अशरफ़ीके

लाओ वह तुरन्तलावेंगे मैं एकतोड़ा वज़ीरको दे कहूंगा कि यह भँवरीके समयका नियत धनहै तदनन्तर दूसरा तोड़ा अशरफियोंका दे कहूंगा यह केवल अपनी उदारतासे मैं तुम्हें देताहूं मेरीदातव्य से पास दूरके सब मनुष्य परस्पर चर्चाकरेंगे तदनन्तर मैं निजवाहन घोड़ेपर चढ़ उसी सजधज और ठाटमे अपने घर आऊंगा अनन्तर मेरी स्त्री यह गुण मानकर कि मैं उसके पिताकी भेंटको गयाथा एक प्रधान को भेजेगी मैं उसे बहुमूल्यवस्त्र और बहुतसा पारितोषिक आदि दे बिदाकरूंगा यदि मेरी स्त्री कुछ मेरेनिमित्त सौगातभेजेगी तो मैं उसे अंगीकार न करूंगा और बेर २ नवीन २ बसन बदल बैठूंगा जब अपनी स्त्रीके साथ बिहारकी इच्छाहोगी तो बड़ेठाट और सगर्वबैठ दाहिनेबायें दृष्टि न करूंगा जब मेरी स्त्री सोरह शृङ्गार बारहों आभूषणकर पूर्णमासी के चन्द्रमाकी सदृश मेरे सम्मुख आवेगी मैं उसकी ओर आंख उठाके भी न देखूंगा तब उसकी सखी सहेलियां उसके आगे पीछे की आकर मुझसे कहेंगी हे स्वामी! अपनी स्त्री की ओर कि वह तुम्हारी किंकरी तुम्हारे सम्मुख खड़ी है बैठनेकी आज्ञा दो और कुछ उसकी ओर कृपाकरो मैं उनकी बात का कुछ भी उत्तर न दूंगा वह सब मेरी ग्लानि और अनिच्छा से अत्यन्त बिस्मित होंगी और बहुकालपर्य्यन्त खड़ी २ मुझसे बिनय करेंगी तदनन्तर मैं शिर उठाय किंचित् कृपादृष्टिपूर्वक उस की ओर देख फिर उसीभांति चुपकारहूंगा वह दासियां समझेंगी कि मेरी स्वामिनी उत्तम वस्त्र नहीं पहिने है इसी निमित्त उसकी ओर प्रसन्नता से नहीं देखता तो उसे वस्त्र बदलने के अर्थ एक मकान में लेजावेंगी और मैं भी अपने मकान में जाय भारी उत्तम बसन पहिर वहां आबैठूंगा जब दुलहिन को सुलाने के लिये लावेंगी मैं तनक उसकी ओर न देखूंगा किन्तु पीठफेर सोरहूंगा और उससे बातभी न करूंगा अरुणोदय होनेपर वह उठ अपनी माता से जो वज़ीरकी स्त्री है जाय मेरे गर्व और अकृपाकी निज व्यथा कह सुनावेगी उसकी माता मेरे देखने को आवेगी और मेरे हाथ चूम के कहेगी इतनी अशीलता मेरी पुत्री से न करो यह

सदैव तुम्हारी आज्ञापालन करेगी और मन कर्म्म बचन से तुम्हें प्यार करेगी निदान मेरी सासभी मुझसे बहुत कुछ कहेगी परन्तु उससे भी मैं गर्वयुक्त चुपका हो बैठारहूंगा फिर मेरे चरणों को चूम करकहेगी तुमको उचित नहीं कि इतना मेरी पुत्री से दूररहो मैंने उसे निज नेत्रों से कदाचित् भिन्न न किया और तुम्हीं ने उसका मुख देखाहै डरतीहूं ऐसा न हो तुम्हारी इस अकृपासे उसके चित्त पर कुछ खेदहो तुम्हें उचित है कि उसकी ओर देखो और उससे वार्त्ताकरो वह अत्यन्त बुद्धिचतुरा है तुम्हें सर्वदा प्रसन्न रक्खेगी जब यह बिनय मेरे मनमें कुछ फल न करेगी तब मेरी सास मद्यका एक गिलासभर मेरीस्त्रीकोदे कहेगी यह गिलास अपने पतिको दे बिश्वास है कि वह कठोरता त्यागदेगा और इसे तेरे कोमलहस्त कमलों से लेकर पीजावेगा मेरी स्त्री वह गिलास मेरे सम्मुख लाय मेरे भयसे बहुत कालपर्य्यन्त कांपा और थर्राया करेगी निदान वह कहेगी मेरेप्यारे सुखदेनपति तुम्हें उसी ईश्वरकी सौगन्दहै जिसने तुम्हें ऐसाउच्चपद दिया है इस गिलास को इस तुच्छ दासी के हाथ से लो और पानकरो मैं किञ्चित् उसके बचनका बिचार न करूंगा और न उससे बोलूंगा तब वह प्रथम से अधिक रोतीहुई आगे बढ़ गिलास मेरेमुखके पासलाय बहुत बिनय करेगी कि मैं पीऊं उसकी इस ढिठाई से मैं अप्रसन्नहोकर एकतमाचा उसके मुखपर और एक चरणकी ठोकर ऐसे मारूंगा कि दालान से नीचे जायपड़ेगी मेरा भाई इसी शोच बिचार में ऐसा मग्नथा कि वह सब बातें सचजान और दुलहिनको खड़ीजान शीशेके पात्रोंमें ऐसे बेगसे ठोकर मारी कि वह टोकड़ा उलट दूकानके नीचे आरहा और सम्पूर्ण पात्रटूट फूट चूर्णहोगये दरज़ी जो उसके निरर्थक बचन बैठा सुनता था उस के पात्रटूटे और टोकड़े को उलटा देख बहुत हँसा और मेरेभाईको कहा हे दुष्ट भाग्यहीन ! यह उसीका दण्डहै जो तूने ऐसी रूपवती स्त्रीके साथ ऐसा अकृत्य किया जो मैं तेरा श्वशुर वज़ीर के बदले होता तो एकसौ चाबुक तुझे लगाता और नगरमें प्रसिद्ध कर अ-नादर करता मेरा भाईभी टोकड़े को उलटा देख चैतन्य हुआ और

समझा यह सब मेरे अहङ्कारके कारण हानिहुई तदनन्तर व्याकुल होय वस्त्र फाड़ने और रोनेलगा यहांतक कि उसके चिल्लाने से मुहल्ले के मनुष्य जो एकत्रहो निमाज़ पढ़ने जातेथे उसकी दशा देख खड़े होगये और पूंछनेलगे कि इस कोलाहलका क्या कारणहै यदि शुक्रवारथा और दिनोंसे अधिक भीड़होगई उसकी मूर्खतापर सब हँसते संयोगवश एक धनपात्र युवती अतिसुन्दर वाहनपर सवार होकर वहां पहुँची वहां ठहर समूह से पूंछनेलगी कौनरोरहा है उस पर कौनसी आपदापड़ी उन्होंने बात बनाके बिनयकी यह निर्द्धनी दीन बहुतथोड़ा द्रव्य रखताथा एकटोकड़ा शीशेके पात्रोंकामोललेके यहां बेंचनेकेलिये आया दैवयोगसे वह टोकड़ा दूकानके नीचे गिर पड़ा और सम्पूर्णपात्र चूर्णहोगये उसस्त्रीने फिरके एक अपने सेवक को आज्ञादी वह थैलीजो तेरेपासहै इस दीनकोदे उससेवकने वह थैली जिसमें पांचसौ अशरफ़ियांथीं मेरे भाईकोदी उसने लेली अलनसचरने प्रसन्नहो असंख्य आशीर्व्वाद उस स्त्री को दिये और दूकान बन्दकर अपने घरगया अपनी भाग्यपर बहुत प्रसन्न हुआ इतने में किसीने उसके द्वारपर हांकदी अपना दरवाज़ा खोल देख एकवृद्धा कहतीहै बेटा बन्दनाका समय बीताजाताहै एकलोटा जल कादे तो मैं हाथपावँ धोकर बन्दनाकरूं मेरे भाईने उसे देखा कि वृद्धा पूर्णआयुको पहुँचगई यद्यपि उसे न जानताथा परन्तु उसे पानीदिया और कहा यहांपर बैठकर बन्दना करले जब वह नियमित बन्दनासे निश्चितहुई तब मेरेभ्राता के चरणोंपर ऐसी झुकी कि पृथ्वी से भाल लगगया जैसा कोई ईश्वरकी बन्दना करता है तदनन्तर शिर उठा उसे बहुतसे आशीर्बाद दिये परन्तु वह बसन अत्यन्त मलिन फटे पुराने पहिरे हुये थी मेरा भाई उसकी दीनतापर दयाकर समझा कि कुछ यह याचना करती है दो अशरफ़ियां निकाल उसेदीं उसने फेरदीं मेराभाई उससे अत्यन्त अप्रसन्न हुआ तब उस वृद्धा ने कहा तुमने मुझे कङ्गाल समझा तुम अपनी अशरफ़ियां अपने पास रक्खो मुझे कुछ आवश्यकता नहीं एक महातरुण अत्यन्त रूपवती और अत्यन्त दानी स्त्री मुझे बहुत कुछ देती लेती है जिससे

मैं निर्द्धन नहीं मेरा मूर्खभ्राता उस छलको न समझा कि उसने क्यों दो अशरफ़ियां फेरदीं बृद्धासे कहा हम उस तरुणीको किसी भांति देखसक्तेहैं उसने कहा निस्संदेह किन्तु उससे तुम बिवाह करसक्ते हो भाई अशरफ़ियां रखलो और मेरेसङ्ग चलो एकहीबेर अत्यन्त सुन्दरी यौवना और असंख्यधन तुम्हें मिलेगा उसने हमयानी कमर में बांधली और उस बुढ़िया के साथ होलिया आगे वह पीछे मेराभाई चले चलते २ एक बड़ेघरके द्वारपर पहुँचे बृद्धाने हांकदी तुरन्त एक ग्रीकदेश की दासीने आय द्वारको खोलदिया बृद्धा ने प्रथम मेरे भाईको भीतर जानेके लिये कहा तदनन्तर आप भीतर जाय उसे एकबड़े बिशाल मकान में लेगई वह मकान नानाप्रकार की सामग्री से अलंकृत था अनन्तर वहबृद्धा मेरेआगमनका संदेशा उस स्त्रीको देनेगई मेरा भाई गरमी के कारण अपने मस्तक से पगड़ी उतार सावधान हो बैठा क्षणमात्र में वह सुन्दरीभी मेरेभ्राता के निकटआई वह उसके रूप अनूप मनहरण दुःखदरण चन्द्रमुख दैनसुख और बस्त्राभूषणको देख मोहितहोगया और उठके झुककर प्रणामकिया उस स्त्रीने उसे वहीं रहनेदिया और आप उसके निकट आबैठी और उसे देख हर्षितहुई और कहनेलगी यह स्थान हमारे बैठने योग्य नहीं तदनन्तर मेरे भाईका हाथ पकड़ दूसरे मकानमें लेगई और बहुकालपर्यन्त प्रीतियुक्त बार्त्ता करती रही तदनन्तर उससे यह कहा कि मैं अभी आतीहूं और मकान में गई वह उसके आगमन की राह देखता रहा अकस्मात् एक बड़ा बलवान् हब्शी हाथ में खड्ग लिये हुये आया और भृकुटी बङ्ककर मेरे भाई से कहा तेरा यहां क्या काम है अलनसचर उसे देख भयभीत हुआ और मुखसे कुछभी उत्तर न निकला उस हब्शी ने हमयानी उसके कमरसे खोल कई हाथ खड्ग के मार शरीर उसका खण्ड खण्डकर दिया वह दीन अभागा घायलहो पृथ्वीपर गिरपड़ा यद्यपि उसकी बुरी दशाहोगईथी परन्तु प्राणमात्र रहगये थे जब वह समझा कि मैं इसे बधकरचुका लवण मँगवाया वही ग्रीकदेश की दासी पात्र में चूर्ण लवणका लेकेआई उन दोनों ने उसके घावोंपर भलीभांति

नोन छिड़का यद्यपि नोन छिड़कने से उसे बहुत कष्टहोता था परन्तु कुछ भी न हिला मृतकों के समान पड़ारहा उस हब्शी और दासी के चलेजाने के पश्चात् वह बृद्धा जो मेरे भ्राताको छलसे लाई थी घसीट एक चहबच्चे में डालआई जहां बहुतसी लोथेंथीं यद्यपि वह मृतक समान होगयाथा परन्तु कुछ देर में किञ्चित् सुधिहुई और प्रकट में घावोंपर नमक मलने से पीड़ाहोती थी परन्तु वही कारण उसके जीवनका हुआ और इतनी सामर्थ्य हुई कि उठबैठा दोदिन के पश्चात् वह रात्रिको उसी मकान का द्वारखोल बाहर निकला और एक मकान में छिपरहा जब उसने प्रातःकाल को देखा कि वह बृद्धादुष्टा शिकार ढूंढ़ने को गई वह भी वहांसे भाग मेरे निकट आया और उन्हीं आपत्तियों का बृत्तान्त जो थोड़ी सी अवधि में उसपर पड़ी थीं बर्णन किया एकमास के पश्चात् सब घाव उसके औषध आदि के सेवन से अच्छेहोगये तब उसने उस बृद्धा से अपना बदला लेनेकी इच्छाकी इसलिये उसने बड़ीलम्बी थैली जिसमें पांचसौ अशरफ़ियां समावें बनवाई और अशरफ़ियोंकी जगह उसमें शीशेके टुकड़ेभर अपनी कमरमें बांधे और बुढ़ियाका वेषधर एकखड्ग अपने बस्त्रों में छिपाय प्रातःकाल उसको ढूंढ़ने के लिये निकला अकस्मात् एक गली में वही कपटी बुढ़िया जो मनुष्यों को छलने और भुलावा देनेके लिये फिरतीथी उसे मिली उसने अपना शब्द बृद्धास्त्रियों के सदृश बदल प्रथम प्रणामकिया तदनन्तर कहा बहिन एकक्षणमात्रके वास्ते कहींसे तुला रुपये तौलने के लिये मांगे की लादो क्योंकि मैं फ़ारसदेश की रहनेवालीहूं अभी इस नगर में आईहूं पांचसौ अशरफ़ियां मेरे समीप हैं चाहतीहूं उसे तौल और जांचलूं पूरी हैं या कुछ कमहैं उसने उत्तरदिया बहिन तुम मुझसा इसनगरमें कोई बिश्वासित न पावोगी मेरेसाथ चलीआवो मैं अपने पुत्रके घर जो सर्राफ़ीका कार्यकरता है तुम्हें लेचलूंगी वह भली भांति तुम्हारी अशरफ़ियां तौलदेगा तुम्हें कुछभी श्रम न होगा शीघ्र चलो ऐसा न हो वह अपनी दूकानपर चलाजावै दुष्टा मेरे भाईको उसी बिशाल घरमें लेगई जिसमें पहिले लेगईथी और उसी ग्रीक

देशकी दासीने द्वारखोला तदनन्तर भीतर लेजाय एकस्वच्छस्थान पर बैठाय कहा ठहरो मैं अपने पुत्रको जाय बुलालातीहूं क्षणमात्र में उसका कपटपुत्र अर्थात् वही दुष्ट अकर्मी हब्शी पहुँचा और पुकारा हे बृद्धा! मेरे संगचलो निदान वह हब्शी मेरे भ्राताको उसी ओर जहां उसे खड्गसे माराथा लेचला अलनसचर वहांसे उठ उसी हब्शीके पीछेचला मार्गमें हब्शी को अकेला और अचैतन्य पा अपनेबस्त्रसे खड्गनिकाल ऐसी उसकी गर्दनपरमारी कि शिर उसका कट नीचे आपड़ा तब उसने एकहाथसे उसका शिर और दूसरेहाथसे धड़खींच उसी चहबच्चे में फेंकदिया इतने में वही दासी पिसाहुआ लवणलेआई और उसे नंगी तलवार लियेहुये और मुखसे बस्त्रउतारेहुये जिससे वह अपना पुरुषत्व छिपाये था देख नमकका पात्र फेंकभागी मेरे भाई ने दौड़ उसका शिर धड़से काट डाला तदनन्तर वह बृद्धा आहटसुन दौड़ी आई देखूं क्या होरहा है यहचरित्रदेख भागनेलगी इतनेमें मेरेभाईने पकड़केकहा हे दुष्टा! तू मुझे नहीं पहिंचानती मैं कौनहूं उसने कम्पितहो कहा मैं तुम्हें नहींपहिंचानती तुमकौनहो और कभी तुम्हें आगेनहींदेखा मेरेभ्राता ने कहा मैं वहीहूं तूने जिसकेघरमेंजाय अमुकदिवस हाथपांवधोनेके लिये जलमांगाथा उसे भूलगई वह बृद्धा गिड़गिड़ाय उसके चरणों पर अपराधक्षमाकरानेके लियेगिरी मेरेभाई ने उसके भी चारखण्ड किये अब उसघरमें केवल वहीसुन्दरी मृगनयनी रहगई मेराभाई उसे ढूंढ़नेलगा तो उसे एकदूसरे मकानमें पाया वह नवयौवना उसे देख भयभीतहुई और मूर्च्छित होनेलगी मेरेभाई ने उसे कुछ दुर्बचन न कहा और उसेधैर्यदे पूछा हे सुन्दरी! तू क्योंकर इनअन्याइयोंके फंदे में जिनको मैंने अभीबधकिया फँसी और रहतीथी उसनेकहा मैं एक बड़े धनपात्र ब्यापारीकीस्त्री थी यहबृद्धा जिसे मैं न जानतीथी कभी२ मेरेघरआती एकदिन उसने मुझसेकहा हे प्यारी! मेरेघरबिवाहहै यदि आप मेरेघरआवें तो मैं तुम्हारा बड़ायशमानूंगी इस विषयमें उसने मुझसे बहुत बिनयकी सो मैं उसके घरजाने के लिये प्रसन्नहुई और बहुत उत्तम आभरण और बस्त्र पहिर और सौ अशरफ़ी अपने

साथ ले उस बुढ़ियाके साथचली वह मुझे इसी घरमेंलाई मैंने यहां इस हब्शी को देखा उसने मुझे बरजोरी अपनेपास रक्खा और घर न जानेदिया इसको तीनबर्षहुये तबसे मैं इस मंदिरमें रहतीहूं और इस हब्शीके कृत्यसे अत्यन्त अप्रसन्न रहाकरतीथी मेरे भाई ने पूछा यहां कितना द्रव्यहै उसने कहा यहां इतनाधनहै कि कभी तू निर्द्धन न होगा तब वह उसे बड़ेदालानमें लेगई और बहुतसे सन्दूक केवल रुपयोंकेभरेहुये उसेदिखाये वहदेख आश्चर्यितहुआ तदनन्तर उस सुन्दरीने कहा जा और बहुतसे मनुष्य इनसन्दूकों को उठानेकेलिये ला और इन सब बस्तुओंको उठा यहांसे लेचला यहसुन मेराभाई बाहरका द्वार बंदकर दौड़ागया और बहुत ढूंढ़ के बहुतसे मज़दूर लेके वहां आया प्रथमद्वार खुला देख आश्चर्य किया तदनन्तर भीतरजाय देखा न तो वह संदूकहै न वहस्त्री मेरा भाई सोचा कि क्योंकर वहसुन्दरी सन्दूकों समेत गुप्तहोगई तदनंतर बिचारा खालीहाथ जाना उत्तमनहीं मज़दूरों से वह सब असबाब अनुमान पांच सौ अशरफ़ी के उठवा लेचला संयोगबश मेरेभाईने भीतर घुसते समय उसघरके आवागच्छ का द्वार बाहरकी ओरसे बंद न किया और न तालादिया इसलिये वहां के पड़ोसी उसघर को असबाब और मनुष्योंसे खाली और मज़दूरों के शिरपर बस्तु लेजाते देख क़ाज़ी से जायपुकारे दीन अलनसचर एकरातको अपने घर आनन्दमें सोया और प्रातःकालको उठ चाहताथा कि बाहर निकले अकस्मात् थानेके बीस सिपाहीआये और उसे पकड़लिया उसने कितनाही बिनय की कि क्षणभर ठहरो किंतु कुछ रिशवत भी देनेलगा कि उसेछोड़ें परन्तु उन्होंने उसके कहने सुननेपर कुछ भी बिचार न किया और बरजोरी उसे बांध काज़ीके समीपलेगये क़ाज़ी ने उससे पूछा मुझे बता इसबस्तुको तूने कहां से पाया उसने कहा मैं अभी सत्यसत्य इसवृत्तान्तको आपके सम्मुख बर्णन करता हूं परंतु यह एकप्रतिज्ञा कीजिये कि किसीभांतिकादण्ड मुझे न देना क़ाज़ीने कहा ऐसाहीहोगा तब मेरे भाईने आदिसे अन्तपर्य्यंत सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णनकिया और कोईबात नहींछोड़ी क़ाज़ी ने अपने

मनुष्योंको उसके घर भेज सबबस्तु उठवामँगवाई और अपने घर में भिजवाय कुछभी उसे न दिया किन्तु आज्ञादी अलनसचरको देश निकाला दो तीनबर्षपर्य्यन्त इसनगरमें न आनेपावे क्योंकि अवसर पाय काज़ीके अन्यायको ख़लीफ़ासे न कहनेपावै अलनसचरने क़ाज़ी की आज्ञानुकूल उस नगरको परित्यागकर अन्य नगर में जानेकी इच्छाकी मार्गमें डाकुओं ने उसका सब धन लूटा मैं यह वृत्तान्त सुन कुछबस्त्र संगले उसके ढूंढ़ने के लिये चला निदान उसे ढूंढ़ निकाला और अपनी सामर्थ्यभर रुपये और बस्त्रदे अप्रकट इस नगरमें गुप्त करके लाया और सदैव उसका भाइयों के समान पालन करतारहा॥

## नाईके शाहकबकनामक छठे भाईकी कहानी जिसके ओठ ख़रगोश के मानिन्द थे॥

यह कहानी मेरे छोटेभाईकी है अब केवल उसीका बृत्तान्त शेष रहगयाहै उसका नाम शाहकबकथा उसके ओठ खरगोश के सदृश ऊपरको चढ़ेहुये थे और ख़रगोशके समान चलता प्रथम उसने उसी ४५) रु० अपने पिताकी थातीसे बहुत द्रब्य कमाया निदान दुर्भाग्यतासे निजधन और नफ़ा जो कुछ उसे प्राप्तहुआथा खोबैठा किन्तु भोजन भी न मिलता तदनन्तर वह यह काम करता कि द्वारपालों और सेवकोंको द्रब्यदे धनपात्रोंके घरोंमें याचनेजाता और यह कुछ उसकी ओरसे कहते सुनते जिससे वह भाग्यवान् मनुष्य उसपर दयाकर बहुतसी भिक्षादेता दैवयोगसे एकदिन वह एकबड़े बिशाल घरकी ओर गया जहां बहुत से नौकर चाकर बर्त्तमान थे वह एक सेवक के समीपगया और पूंछा यह किसका मकान है उसने उत्तर दिया मालूम होताहै कि तू परदेशी है और तेरा नगर यहां से बहुत दूरहोगा क्योंकि यह मन्दिर और बरमकीका नाम सूर्य्य से अधिक बिख्यात है तब उसने उनसेवकों से याचनाकी उन्होंने कहा भीतर जाय हमारे स्वामी से मांगलाओ वह तुझे धनपात्र और निहाल करेगा और तुझे कोई नहीं रोकेगा मेराभाई उस मकान के भीतर गया और ढूंढ़ता मकीके समीप जाय पहुँचा वह मन्दिर भीतर से बहुत बिशाल और स्वच्छ भांति भांति की बस्तुओं से अलंकृत

था और उसके निकट एक पुष्पबाटिका थी जिसमें नानाप्रकार के रंगकी शिलका फ़र्शथा और चारोंओर उसके बरामदे खुलेहुये देखे नानाप्रकारके रंगकेपरदे लटकते जिससे सूर्य्यकी धूप भीतर न आनेपाती एकदिशाके कुछपरदे उठेहुये थे जहांसे मंद२ ठंढी२ समीर आती मेराभाई ऐसे बिशालघर और सामग्रीकोदेख हर्षितहुआ और बिश्वासहुआ यहां अवश्य मनोरथानुसार लाभहोगा तदनन्तर वहां एकदालानदेखी कि बहुतउत्तम औ स्वर्ण और मणिमाणिकरत्न आदि से सजीथी औ उसकेभीतर एक बृद्धपुरुष सुनहलीगद्दीपर बैठे देखा उसके स्वरूपसे मालूमहुआ कि इसबिशालघरका यही धनीहै वास्तवमें वही मकीथा उसनेदेखतेही मेरेभ्रातासे कुशलपूछी और कहा तू क्या चाहताहै मेरेभाईने प्रणामकर बिनयकी हे प्रणतपाल! मैं निर्धन दीनमनुष्यहूं तुम ऐसे प्रतापवान् भाग्यवान्से कुछ याचने आयाहूं वरमकीने मेरेभाईके उत्तरसे प्रसन्नहो दोनोंहाथ अपनी छातीपररक्खे उसकाफूटाटूटा हालदेख और उसपरदया और कृपाकर कहा भाई आश्चर्य्यहै हमारेबुग़दादमें निवासकरनेपरभी तुम्हारी ऐसीकुदशाहै मेराभाई इसबार्त्तासे समझा यहमुझे बहुतकुछदेगा तदनन्तर उसने वरमकी को आशीर्वाददिया वरमकीने मेरेभाई को धैर्य्यदे कहा हम ऐसाउपकार तेरेसाथ करेंगे कि जन्मभर न भूलेगा तदनन्तर मेरे भाई ने कहा आपके सम्मुख शपथखाके बिनय करताहूँ आज मैंने अबतक कुछ नहीं खाया वरमकी ने कहा क्या सत्यकहते हो तुमने अभीतक कुछभी भोजन न किया हा खेदहै यह दीनमनुष्य क्षुधा से ब्याकुल है तदनन्तर बड़े शब्द से कहा अरेलड़के तुरंत स्वच्छ जलका लोटा ला और हमारे हाथ धुलवा अभीकोई न आया न लोटा आया परन्तु वरमकी अपने हाथों को मल धोनेलगा जैसेकोई उस पर जलडालताहै और मेरेभाई से कहा तुमभी आगे आवो और हमारे साथ अपने हाथ धोवो मेरा भाई शोचा यह हँसमुखहै इससे वहभी आगे बढ़ झूठमूठ हाथ धोनेलगा तदनन्तर उसने कहा धैर्य्य धरो भोजन अभी आता है यह कह फिर हाथबढ़ाया और अपने मुखमें हाथलगा मुँह चलाने लगा जैसे कोई मुँहमें ग्रासडाल

चबाताहै और मेरेभाई से कहा हे मेरे अतिथि! तूभी खा कुछलज्जा न कर यह दृष्टांत प्रसिद्ध है ( आहारे व्यवहारे लज्जानकारे ) यह अपनाही घरसमझ तू बहुत क्षुधित जान पड़ता है मेरेभाई ने भूख से झुंझलाय कहा महाराज मुझपर दया कीजिये इन झूठी बातों से मेरी तृप्ति नहीं होती बरमकी ने कहा क्या तुम्हें यह शीरमाल स्वादिष्टनहीं लगती उसने कहा मैं न तो कुछ शीरमालदेखताहूं और न मांस निदान बरमकी के कहनेसे अनुकरण भोजनकरनेलगा थोड़े कालकेपश्चात् बरमकीने कहा छोकरे दूसरीथाली ला और मेरेभ्राता से कहा इस नवीनथालीकेपाक भोजनकरो और इसका स्वादु देख मुझसेकहो तुमने ऐसासुरुचि बटेर और चकोर का मांस कदाचित् न खायाहोगा तदनन्तर उसने बत्तखका भूनामांस मँगवाया और उसीभांति मानसी बिचार से भोजनकरनेलगा तदनन्तर मेरेभाई से कहा देखो क्यापुष्ट और रुचिकारी पक्षीकामांस बनाहै एकबाजू और रान इसकी तुमलो और धीरे २भोजनकरो अभीभांति२के पाकआने-वाले हैं इसीभांति मन्त्रीप्रत्येक प्रकारके पाक मँगवाय झूठमूठभोजन करता फिर एकबकरीके बच्चेका अन्तः परिपक्कमांस मँगवाया उसकी हृष्टताकी बहुतसी प्रशंसाकी और अन्य भोजनोंकेसदृशउसेभी खाया तदनन्तर कहा एक प्रकारकापाक ऐसास्वच्छ और स्वादु युक्तहै कि तुम यहांके सिवाय अन्य स्थानपर न पावोगे यहकह झूठमूठथोड़ा सा उसमें से अपने हाथमें ले मेरेभाई के मुखमेंडाला और कहा भाई इसके भोजनकरने से तुम्हें इसकास्वादु मालूमहोगा मेराभाई आगे बढ़ा और मुखखोल उस ग्रासको बरमकी के हाथसे ले चबाय उस की बहुतसी प्रशंसाकी बरमकी ने कहा क्यों मैं न कहता था खावोगे तो जानोगे शाहकबकने कहा वास्तव में ऐसास्वादिष्टभोजन जन्म भरमेंनहीं खाया तदनन्तर और बिधिका पक्क मांस लायागया बरम-कीने कहा यहभी कुछ स्वादुमें उससे न्यूननहीं मेरेभाई ने कहा वाह यह पाकभी स्वच्छ और सरुचिहै इसमें से अम्बर, लवंग, जावित्री, जायफल, सोंठिकी सुगन्धआती है यहसब यत्नसे इसमें मिलाये गये हैं कि एककी सुगन्ध दूसरे को नहींदबाती बरमकीनेकहा इसका

स्वादु तुमने पाये इसे भलीभांति भोजनकरो तदनन्तर आज्ञा की पात्र समेट फललावो सेवकलोग झटपट भोजनके पात्र उठा अनुकरणफलों के पात्रलगा कहनेलगे फलबर्त्तमानहैं बरमकीने मेरेभाई से कहा यह बादाम नवीन तोड़ेगये हैं तदनन्तर वह दोनों झूठमूठ उनकोतोड़ छिलके फेंक बादामकागूदा खानेलगे तदनन्तर कहा यह सब नवीन फलहैं भोजनकरो मेरेभाईने कहा स्वामी क्या अच्छे और रुचिकारी व्यञ्जनखाये जिनके खातेखाते कण्ठदुखनेलगा और तृप्ति न हुई बरमकीने मुस्कराय अनुकरण मद्यकापात्र मेरेभाईकेहाथ में दिया उसने प्रथम तो न लिया और कहा हमारेकुलमें यह अभक्ष्य है मैंने इसे कदापि पाननहीं किया निदान बरमकीके तकरारकरने से वह पीकर कहा स्वामी इसके पीने से मुझे कुछभी प्रसन्नता न हुई बरमकीने कहा मेरे मद्यालय में एकप्रकारकी मदिराहै उसके पानकरने से तुम बहुत प्रसन्नहोगे तदनन्तर उसने मानसी बिचारसे उसी भांतिकी मदिरा मँगवाय प्रथम एक गिलास आपपिया और एक गिलास मेरेभाईको दिया उसने पी अपनेको उन्मत्तबनाया और मतवालोंकेसदृश एक दोबेर हाथउठा बरमकीको मारा तीसरीबिरियां बरमकीने बचानेके निमित्त उसकाहाथ पकड़लिया और कहा क्या तू बिक्षिप्तहोगया है निदान मेराभाई चैतन्यहो कहनेलगा स्वामी आपने अपने घरमें बुलाकर नानाप्रकारके छत्तीसों व्यञ्जन खिलाये और बरजोरी मुझे मद्य पिलाई उसके नशेमें आपसे बड़ी ढिठाई की इसी निमित्त यह सेवक उसे न पीताथा ऐसा न हो कि उसके नशेमें कोई ढिठाई बनिआवे आशारखताहूं कि मेराअपराध क्षमाहो बरमकी क्रोधके बदले हँसपड़ा और कहा मैं बहुत कालसे तुझसा मनुष्य ढूंढ़ताथा परन्तु मैं इस तेरे अपराधको क्षमा न करूंगा परन्तु एक प्रतिज्ञासे कि तू मेराघर तज अनत न जा और मैं इसीसमयसे तुझ से प्यारकिया करूंगा अब हम भोजन सचमुचका मँगवाते हैं यह कह हांकदी तुरन्त सब सेवक दौड़े आये उसने आज्ञादी शीघ्रभोजन लावो उसकी आज्ञापातेही वहीपाक जो केवल उसने अपने हृदय के बिचारसेही भोजनकिये थे लाये मेरे भाईने वह सब पाक रुचिपूर्बक

मैं निर्द्धन नहीं मेरा मूर्खभ्राता उस छलको न समझा कि उसने क्यों दो अशरफ़ियां फेरदीं बृद्धासे कहा हम उस तरुणीको किसी भांति देखसक्तेहैं उसने कहा निस्संदेह किन्तु उससे तुम बिवाह करसक्ते हो भाई अशरफ़ियां रखलो और मेरेसङ्ग चलो एकहीबेर अत्यन्त सुन्दरी यौवना और असंख्यधन तुम्हें मिलेगा उसने हमयानी कमर में बांधली और उस बुढ़िया के साथ होलिया आगे वह पीछे मेरीभाई चले चलते २ एक बड़ेघरके द्वारपर पहुँचे बृद्धाने हांकदी तुरन्त एक ग्रीकदेश की दासीने आय द्वारको खोलदिया बृद्धा ने प्रथम मेरे भाईको भीतर जानेके लिये कहा तदनन्तर आप भीतर जाय उसे एकबड़े बिशाल मकान में लेगई वह मकान नानाप्रकार की सामग्री से अलंकृत था अनन्तर वहबृद्धा मेरेआगमनका संदेश उस स्त्रीको देनेगई मेरा भाई गरमी के कारण अपने मस्तक से पगड़ी उतार सावधान हो बैठा क्षणमात्र में वह सुन्दरीभी मेरेभ्राता के निकटआई वह उसके रूप अनूप मनहरण दुःखदरण चन्द्रमुख दैनसुख और बस्त्राभूषणको देख मोहितहोगया और उठके झुककर प्रणामकिया उस स्त्रीने उसे वहीं रहनेदिया और आप उसके निकट आबैठी और उसे देख हर्षितहुई और कहनेलगी यह स्थान हमारे बैठने योग्य नहीं तदनन्तर मेरे भाईका हाथ पकड़ दूसरे मकानमें लेगई और बहुकालपर्यन्त प्रीतियुक्त बार्त्ता करती रही तदनन्तर उससे यह कहा कि मैं अभी आतीहूं और मकान में गई वह उसके आगमन की राह देखता रहा अकस्मात् एक बड़ा बलवान् हब्शी हाथ में खड्ग लिये हुये आया और भृकुटी बक्रकर मेरे भाई से कहा तेरा यहां क्या काम है अजनसचर उसे देख भयभीत हुआ और मुखसे कुछभी उत्तर न निकला उस हब्शी ने हमयानी उसके कमरसे खोल कई हाथ खड्ग के मार शरीर उसका खण्ड खण्डकर दिया वह दीन अभागा घायलहो पृथ्वीपर गिरपड़ा यद्यपि उसकी बुरी दशाहोगईथी परन्तु प्राणमात्र रहगये थे जब वह समझा कि मैं इसे बधकरचुका लवण मँगवाया वही ग्रीकदेश की दासी पात्र में चूर्ण लवणका लेकेआई उन दोनों ने उसके घावोंपर भलीभांति

नोन छिड़का यद्यपि नोन छिड़कने से उसे बहुत कष्टहोता था परन्तु कुछ भी न हिला मृतकों के समान पड़ारहा उस हब्शी और दासी के चलेजाने के पश्चात् वह बृद्धा जो मेरे भ्राताको छलसे लाई थी घसीट एक चहबच्चे में डालआई जहां बहुतसी लोथेंथीं यद्यपि वह मृतक समान होगयाथा परन्तु कुछ देर में किञ्चित् सुधिहुई और प्रकट में घावोंपर नमक मलने से पीड़ाहोती थी परन्तु वही कारण उसके जीवनका हुआ और इतनी सामर्थ्य हुई कि उठबैठा दोदिन के पश्चात् वह रात्रिको उसी मकान का द्वारखोल बाहर निकला और एक मकान में छिपरहा जब उसने प्रातःकाल को देखा कि वह बृद्धादुष्टा शिकार ढूंढ़ने को गई वह भी वहांसे भाग मेरे निकट आया और उन्हीं आपत्तियों का बृत्तान्त जो थोड़ी सी अवधि में उसपर पड़ी थीं बर्णन किया एकमास के पश्चात् सब घाव उसके औषध आदि के सेवन से अच्छेहोगये तब उसने उस बृद्धा से अपना बदला लेनेकी इच्छाकी इसलिये उसने बड़ीलम्बी थैली जिसमें पांचसौ अशरफ़ियां समावें बनवाई और अशरफ़ियोंकी जगह उसमें शीशेके टुकड़ेभर अपनी कमरमें बांधे और बुढ़ियाका बेषधर एकखड्ग अपने बस्त्रों में छिपाय प्रातःकाल उसको ढूंढ़ने के लिये निकला अकस्मात् एक गली में वही कपटी बुढ़िया जो मनुष्यों को छलने और भुलावा देनेके लिये फिरतीथी उसे मिली उसने अपना शब्द बृद्धास्त्रियों के सदृश बदल प्रथम प्रणामकिया तदनन्तर कहा बहिन एकक्षणमात्रके वास्ते कहींसे तुला रुपये तौलने के लिये मांगे की लादो क्योंकि मैं फ़ारसदेश की रहनेवालीहूं अभी इस नगर में आईहूं पांचसौ अशरफ़ियां मेरे समीप हैं चाहतीहूं उसे तौल और जांचलूं पूरी हैं या कुछ कमहैं उसने उत्तरदिया बहिन तुम मुझसा इसनगरमें कोई बिश्वासित न पावोगी मेरेसाथ चलीआवो मैं अपने पुत्रके घर जो सर्राफ़ीका कार्यकरता है तुम्हें लेचलूंगी वह भली भांति तुम्हारी अशरफ़ियां तौलदेगा तुम्हें कुछभी श्रम न होगा शीघ्र चलो ऐसा न हो वह अपनी दूकानपर चलाजावै दुष्टा मेरे भाईको उसी बिशाल घरमें लेगई जिसमें पहिले लेगईथी और उसी ग्रीक

देशकी दासीने द्वारखोला तदनन्तर भीतर लेजाय एकस्वच्छस्थान पर बैठाय कहा ठहरो मैं अपने पुत्रको जाय बुलालातीहूं क्षणमात्र में उसका कपटपुत्र अर्थात् वही दुष्ट अकर्मी हब्शी पहुँचा और पुकारा हे बृद्धा ! मेरे संगचलो निदान वह हब्शी मेरे भ्राताको उसी ओर जहां उसे खड्गसे माराथा लेचला अलनसचर वहांसे उठ उसी हब्शीके पीछेचला मार्गमें हब्शी को अकेला और अचैतन्य पा अपनेवस्त्रसे खड्गनिकाल ऐसी उसकी गर्दनपरमारी कि शिर उसका कट नीचे आपड़ा तब उसने एकहाथसे उसका शिर और दूसरेहाथसे धड़खींच उसी चहबच्चे में फेंकदिया इतने में वही दासी पिसाहुआ लवणलेआई और उसे नंगी तलवार लियेहुये और मुखसे वस्त्रउतारेहुये जिससे वह अपना पुरुषत्व छिपाये था देख नमकका पात्र फेंकभागी मेरे भाई ने दौड़ उसका शिर धड़से काट डाला तदनन्तर वह बृद्धा आहटसुन दौड़ी आई देखूं क्या होरहा है यहचरित्रदेख भागनेलगी इतनेमें मेरेभाईने पकड़केकहा हे दुष्टा ! तू मुझे नहीं पहिंचानती मैं कौनहूं उसने कम्पितहो कहा मैं तुम्हें नहींपहिंचानती तुमकौनहो और कभी तुम्हें आगेनहींदेखा मेरेभ्राता ने कहा मैं वहीहूं तूने जिसकेघरमेंजाय अमुकदिवस हाथपांवधोनेके लिये जलमांगाथा उसे भूलगई वह बृद्धा गिड़गिड़ाय उसके चरणों पर अपराधक्षमाकरानेके लियेगिरी मेरेभाई ने उसके भी चारखण्ड किये अब उसघरमें केवल वहीसुन्दरी मृगनयनी रहगई मेराभाई उसे ढूंढ़नेलगा तो उसे एकदूसरे मकानमें पाया वह नवयौवना उसे देख भयभीतहुई और मूर्च्छित होनेलगी मेरेभाई ने उसे कुछ दुर्बचन न कहा और उसेधैर्यदे पूछा हे सुन्दरी ! तू क्योंकर इनअन्याइयोंके फंदे में जिनको मैंने अभीबधकिया फँसी और रहतीथी उसनेकहा मैं एक बड़े धनपात्रब्यापारीकीस्त्री थी यहबृद्धा जिसे मैं न जानतीथी कभी२ मेरेघरआती एकदिन उसने मुझसेकहा हे प्यारी! मेरेघरबिवाहहै यदि आप मेरेघरआवें तो मैं तुम्हारा बड़ायशमानूंगी इस विषयमें उसने मुझसे बहुत बिनयकी सो मैं उसके घरजाने के लिये प्रसन्नहुई और बहुत उत्तम आभरण और वस्त्र पहिर और सौ अशरफ़ी अपने

साथ ले उस बुढ़ियाके साथचली वह मुझे इसी घरमेंलाई मैंने यहां इस हब्शी को देखा उसने मुझे बरजोरी अपनेपास रक्खा और घर न जानेदिया इसको तीनबर्षहुये तबसे मैं इस मंदिरमें रहतीहूं और इस हब्शीके कृत्यसे अत्यन्त अप्रसन्न रहाकरतीथी मेरे भाई ने पूंछा यहां कितना द्रव्यहै उसने कहा यहां इतनाधनहै कि कभी तू निर्द्धन न होगा तब वह उसे बड़ेदालानमें लेगई और बहुतसे सन्दूक केवल रुपयोंकेभरेहुये उसेदिखाये वहदेख आश्चर्यितहुआ तदनन्तर उस सुन्दरीने कहा जा और बहुतसे मनुष्य इनसन्दूकों को उठानेकेलिये ला और इन सब बस्तुओंको उठा यहांसे लेचला यहसुन मेराभाई बाहरका द्वार बंदकर दौड़ागया और बहुत ढूंढ़ के बहुतसे मज़दूर लेके वहां आया प्रथमद्वार खुला देख आश्चर्य किया तदनन्तर भीतरजाय देखा न तो वह संदूकहै न वहस्त्री मेरा भाई सोचा कि क्योंकर वहसुन्दरी सन्दूकों समेत गुप्तहोगई तदनंतर बिचारा खालीहाथ जाना उत्तमनहीं मज़दूरों से वह सब असबाब अनुमान पांच सौ अशरफ़ी के उठवा लेचला संयोगबश मेरेभाईने भीतर घुसते समय उसघरके आवागच्छ का द्वार बाहरकी ओरसे बंद न किया और न तालादिया इसलिये वहां के पड़ोसी उसघर को असबाब और मनुष्योंसे खाली और मज़दूरों के शिरपर बस्तु लेजाते देख क़ाज़ी से जायपुकारे दीन अलनसचर एकरातको अपने घर आनन्दमें सोया और प्रातःकालको उठ चाहताथा कि बाहर निकले अकस्मात् थानेके बीस सिपाहीआये और उसे पकड़लिया उसने कितनाही बिनय की कि क्षणभर ठहरो किंतु कुछ रिशवत भी देनेलगा कि उसेछोड़ें परन्तु उन्होंने उसके कहने सुननेपर कुछ भी बिचार न किया और बरजोरी उसे बांध क़ाज़ीके समीपलेगये क़ाज़ी ने उससे पूंछा मुझे बता इसबस्तुको तूने कहां से पाया उसने कहा मैं अभी सत्यसत्य इसवृत्तान्तको आपके सम्मुख बर्णन करता हूं परंतु यह एकप्रतिज्ञा कीजिये कि किसीभांतिकादण्ड मुझे न देना क़ाज़ीने कहा ऐसाहीहोगा तब मेरे भाईने आदिसे अन्तपर्य्यंत सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णनकिया और कोईबात नहींछोड़ी क़ाज़ी ने अपने

मनुष्योंको उसके घर भेज सबवस्तु उठवामँगवाई और अपने घर में भिजवाय कुछभी उसे न दिया किन्तु आज्ञादी अलनसचरको देश निकाला दो तीनबर्षपर्यन्त इसनगरमें न आनेपावे क्योंकि अवसर पाय काज़ीके अन्यायको ख़लीफ़ासे न कहनेपावै अलनसचरने क़ाज़ी की आज्ञानुकूल उस नगरको परित्यागकर अन्य नगर में जानेकी इच्छाकी मार्गमें डाकुओंने उसका सब धन लूटा मैं यह बृत्तान्त सुन कुछबस्त्र संगले उसके ढूंढ़ने के लिये चला निदान उसे ढूंढ़ निकाला और अपनी सामर्थ्यभर रुपये और बस्त्रदे अप्रकट इस नगरमें गुप्त करके लाया और सदैव उसका भाइयों के समान पालन करतारहा॥

## नाईके शाहकबकनामक छठे भाईकी कहानी जिसके ओठ ख़रगोश के मानिन्द थे॥

यह कहानी मेरे छोटेभाईकी है अब केवल उसीका बृत्तान्त शेष रहगयाहै उसका नाम शाहकबकथा उसके ओठ खरगोश के सदृश ऊपरको चढ़ेहुये थे और ख़रगोशके समान चलता प्रथम उसने उसी ४५) रु० अपने पिताकी थातीसे बहुत द्रब्य कमाया निदान दुर्भाग्यतासे निजधन और नफ़ा जो कुछ उसे प्राप्तहुआथा खोबैठा किन्तु भोजन भी न मिलता तदनन्तर वह यह काम करता कि द्वारपालों और सेवकोंको द्रब्यदे धनपात्रोंके घरोंमें याचनेजाता और यह कुछ उसकी ओरसे कहते सुनते जिससे वह भाग्यवान् मनुष्य उसपर दयाकर बहुतसी भिक्षादेता दैवयोगसे एकदिन वह एकबड़े बिशाल घरकी ओर गया जहां बहुत से नौकर चाकर बर्त्तमान थे वह एक सेवक के समीपगया और पूंछा यह किसका मकान है उसने उत्तर दिया मालूम होताहै कि तू परदेशी है और तेरा नगर यहां से बहुत दूरहोगा क्योंकि यह मन्दिर और बरमकीका नाम सूर्य्य से अधिक बिख्यात है तब उसने उनसेवकों से याचनाकी उन्होंने कहा भीतर जाय हमारे स्वामी से मांगलाओ वह तुझे धनपात्र और निहाल करेगा और तुझे कोई नहीं रोकेगा मेराभाई उस मकान के भीतर गया और ढूंढ़ता मकीके समीप जाय पहुँचा वह मन्दिर भीतर से बहुत बिशाल और स्वच्छ भांति भांति की बस्तुओं से अलंकृत

था और उसके निकट एक पुष्पबाटिका थी जिसमें नानाप्रकार के रंगकी शिलका फ़र्शथा और चारोंओर उसके बरामदे खुलेहुये देखे नानाप्रकारके रंगकेपरदे लटकते जिससे सूर्य्यकी धूप भीतर न आनेपाती एकदिशाके कुछपरदे उठेहुये थे जहांसे मंद२ ठंढी२ समीर आती मेराभाई ऐसे बिशालघर और सामग्रीकोदेख हर्षितहुआ और बिश्वासहुआ यहां अवश्य मनोरथानुसार लाभहोगा तदनन्तर वहां एक दालानदेखी कि बहुतउत्तम औ स्वर्ण और मणिमाणिकरत्न आदि से सजीथी औ उसकेभीतर एक बृद्धपुरुष सुनहलीगद्दीपर बैठे देखा उसके स्वरूपसे मालूमहुआ कि इसबिशालघरका यही धनीहै वास्तवमें वही मकीथा उसनेदेखतेही मेरेभ्रातासे कुशलपूछी और कहा तू क्या चाहताहै मेरेभाईने प्रणामकर बिनयकी हे प्रणतपाल! मैं निर्धन दीनमनुष्यहूं तुम ऐसे प्रतापवान् भाग्यवान्से कुछ याचने आयाहूं वरमकीने मेरेभाईके उत्तरसे प्रसन्नहो दोनोंहाथ अपनी छातीपररक्खे उसकाफूटाटूटा हालदेख और उसपरदया और कृपाकर कहा भाई आश्चर्य्यहै हमारेबुग़दादमें निवासकरनेपरभी तुम्हारी ऐसीकुदशाहै मेराभाई इसबात्तासे समझा यहमुझे बहुतकुछदेगा तदनन्तर उसने वरमकी को आशीर्वाददिया वरमकीने मेरेभाई को धैर्य्यदे कहा हम ऐसाउपकार तेरेसाथ करेंगे कि जन्मभर न भूलेगा तदनन्तर मेरे भाई ने कहा आपके सम्मुख शपथखाके बिनय करताहूं आज मैंने अबतक कुछ नहीं खाया वरमकी ने कहा क्या सत्यकहते हो तुमने अभीतक कुछभी भोजन न किया हा खेदहै यह दीनमनुष्य क्षुधा से ब्याकुल है तदनन्तर बड़े शब्द से कहा अरेलड़के तुरंत स्वच्छ जलका लोटा ला और हमारे हाथ धुलवा अभीकोई न आया न लोटा आया परन्तु वरमकी अपने हाथों को मल धोनेलगा जैसेकोई उस पर जलडालताहै और मेरेभाई से कहा तुमभी आगे आवो और हमारे साथ अपने हाथ धोवो मेरा भाई शोचा यह हँसमुखहै इससे वहभी आगे बढ़ झूठमूठ हाथ धोनेलगा तदनन्तर उसने कहा धैर्य्य धरो भोजन अभी आता है यह कह फिर हाथबढ़ाया और अपने मुखमें हाथलगा मुँह चलाने लगा जैसे कोई मुँहमें ग्रासडाल

चबाताहै और मेरेभाई से कहा हे मेरे अतिथि! तूभी खा कुछलज्जा न कर यह दृष्टांत प्रसिद्ध है ( आहारे व्यवहारे लज्जानकारे ) यह अपनाही घरसमझ तू बहुत क्षुधित जान पड़ता है मेरेभाई ने भूख से भुंझलाय कहा महाराज मुझपर दया कीजिये इन झूठी बातों से मेरी तृप्ति नहीं होती बरमकी ने कहा क्या तुम्हें यह शीरमाल स्वादिष्ठनहीं लगती उसने कहा मैं न तो कुछ शीरमालदेखताहूं और न मांस निदान बरमकी के कहनेसे अनुकरण भोजनकरनेलगा थोड़े कालकेपश्चात् बरमकीने कहा छोकरे दूसरीथाली ला और मेरेभ्राता से कहा इस नवीनथालीकेपाक भोजनकरो और इसका स्वादु देख मुझसेकहो तुमने ऐसासुरुचि बटेर और चकोर का मांस कदाचित् न खायाहोगा तदनन्तर उसने बत्तखका भूनामांस मँगवाया और उसीभांति मानसी बिचार से भोजनकरनेलगा तदनन्तर मेरेभाई से कहा देखो क्यापुष्ट और रुचिकारी पक्षीकामांस बनाहै एकबाजू और रान इसकी तुमलो और धीरे २भोजनकरो अभीभांति२के पाकआनेवाले हैं इसीभांति मकीप्रत्येक प्रकारके पाक मँगवाय झूठमूठभोजन करता फिर एकबकरीके बच्चेका अन्तः परिपक्कमांस मँगवाया उसकी इष्टताकी बहुतसी प्रशंसाकी और अन्य भोजनोंकेसदृशउसेभी खाया तदनन्तर कहा एक प्रकारकापाक ऐसास्वच्छ और स्वादु युक्तहै कि तुम यहांके सिवाय अन्य स्थानपर न पावोगे यहकह झूठमूठथोड़ा सा उसमें से अपने हाथमें ले मेरेभाई के मुखमेंडाला और कहा भाई इसके भोजनकरने से तुम्हें इसकास्वादु मालूमहोगा मेराभाई आगे बढ़ा और मुखखोल उस ग्रासको बरमकी के हाथसे ले चबाय उस की बहुतसी प्रशंसाकी बरमकी ने कहा क्यों मैं न कहता था खावोगे तो जानोगे शाहकबकने कहा वास्तव में ऐसास्वादिष्ठभोजन जन्म भरमेंनहीं खाया तदनन्तर और बिधिका पक्क मांस लायागया बरमकीने कहा यहभी कुछ स्वादुमें उससे न्यूननहीं मेरेभाई ने कहा वाह यह पाकभी स्वच्छ और सरुचिहै इसमें से अम्बर, लवंग, जावित्री, जायफल, सोंठिकी सुगन्धआती है यहसब यत्नसे इसमें मिलाये गये हैं कि एककी सुगन्ध दूसरे को नहींदबाती बरमकीनेकहा इसका

स्वादु तुमने पाये इसे भलीभांति भोजनकरो तदनन्तर आज्ञा की पात्र समेट फललावो सेवकलोग झटपट भोजनके पात्र उठा अनुकरणफलों के पात्रलगा कहनेलगे फलवर्त्तमानहैं वरमकीने मेरेभाई से कहा यह बादाम नवीन तोड़ेगये हैं तदनन्तर वह दोनों झूठमूठ उनकोतोड़ छिलके फेंक बादामकागूदा खानेलगे तदनन्तर कहा यह सब नवीन फलहैं भोजनकरो मेरेभाईने कहा स्वामी क्या अच्छे और रुचिकारी व्यञ्जनखाये जिनके खातेखाते कण्ठदुखनेलगा और तृप्ति न हुई वरमकीने मुस्कराय अनुकरण मद्यकापात्र मेरेभाईकेहाथ में दिया उसने प्रथम तो न लिया और कहा हमारेकुलमें यह अभक्ष्य है मैंने इसे कदापि पाननहीं किया निदान वरमकीके तकरारकरने से वह पीकर कहा स्वामी इसके पीने से मुझे कुछभी प्रसन्नता न हुई वरमकीने कहा मेरे मद्यालय में एकप्रकारकी मदिराहै उसके पानकरने से तुम बहुत प्रसन्नहोगे तदनन्तर उसने मानसी बिचारसे उसी भांतिकी मदिरा मँगवाय प्रथम एक गिलास आपपिया और एक गिलास मेरेभाईको दिया उसने पी अपनेको उन्मत्तबनाया और मतवालोंकेसदृश एक दोबेर हाथउठा वरमकीको मारा तीसरीबिरियां वरमकीने बचानेके निमित्त उसकाहाथ पकड़लिया और कहा क्या तू बिक्षिप्तहोगया है निदान मेराभाई चैतन्यहो कहनेलगा स्वामी आपने अपने घरमें बुलाकर नानाप्रकारके छत्तीसौ व्यञ्जन खिलाये और बरजोरी मुझे मद्य पिलाई उसके नशेमें आपसे बड़ी ढिठाई की इसी निमित्त यह सेवक उसे न पीताथा ऐसा न हो कि उसके नशेमें कोई ढिठाई बनिआवे आशारखताहूं कि मेराअपराध क्षमाहो वरमकी क्रोधके बदले हँसपड़ा और कहा मैं बहुत कालसे तुझसा मनुष्य ढूंढ़ताथा परन्तु मैं इस तेरे अपराधको क्षमा न करूंगा परन्तु एक प्रतिज्ञासे कि तू मेराघर तज अनत न जा और मैं इसीसमयसे तुझ से प्यारकिया करूंगा अब हम भोजन सचमुचका मँगवाते हैं यह कह हांकदी तुरन्त सब सेवक दौड़े आये उसने आज्ञादी शीघ्रभोजन लावो उसकी आज्ञापातेही वहीपाक जो केवल उसने अपने हृदय के बिचारसेही भोजनकिये थे लाये मेरे भाईने वह सब पाक रुचिपूर्वक

नम्बर २४ मुतअल्लिक़ै सफ़ै २३६ दि॰भा॰

चित्र कबक का लुटेरों में घिर जाने का.



तृप्तहो भोजन किये तदनन्तर जब वह पात्र उठे सुरा आई और कई रूपवान् स्वच्छ वसन पहिरे हुई बांदियां गाने बजाने की सामग्री सहित आईं और बड़े मीठेस्वरों से गाईं मेरा भाई बरमकी की हास्यप्रकृति और उदारता से बहुत प्रसन्नभया और उसकी बहुतसी स्तुति और प्रशंसाकर आशीर्व्वाद दिये बरमकी ने निज बसनालय से बस्त्रमँगवाय मेरे भ्राताको दिये उसने अपने मलिन बस्त्र उतार उनको पहिना बरमकी ने शाहकबक को प्रत्येक विषयमें बुद्धिमान् और चतुरपा सम्पूर्ण निजघरके कार्य्य उसको सौंपे वह बीसबर्ष पर्य्यन्त अत्यन्त प्रसन्न और निश्चिन्तता से बरमकी की सेवामें तत्परहा प्रत्येक बिषयसे उसेप्रसन्न और हर्षयुक्तरक्खा नि-दान बरमकी अतिबृद्धहोकर कालबशहुआ और कोई उसके पुत्र न था सबबस्तु और रुपयाउसका खलीफ़ानेहरलिया उसकेसाथ जो कुछ मेरेभाई को प्राप्तहुआ था वहभी छीनलिया मेराभ्राता पूर्वकी भांति निर्धनहो एक यात्रियों के समूहके साथ मक्केकी यात्राको गया मार्गमें लुटेरोंने उसे लूटलिया बस्तु धन आदि उनसबका लूट उन्हें अपना गुलाम बनालिया सो मेराभ्राताभी एकबनबासीका दासभया वह जङ्गली सर्वदा उससे द्रव्यमांगता अर्थात् कहता कि इतनेरुपये मुझेदे तो मैं तुझेछोड़दूंगा जब उससे कुछन पाता तो थप्पड़मारता एक दिन मेरेभाईने उससे कहा तुम मुझेव्यर्थ मारतेहो मेरेपासकुछभीनहीं और किसीप्रकार द्रव्य देनहींसक्ता उस बनबासी ने निराशहो क्रोध से छुरीनिकाल मेरेभाईके दोनों होंठ चीरडाले तौभी उससे कठिन परिश्रम लियाकरता उस बनबासीकी स्त्री अतिसुन्दरी थी जब वह कहीं लूटनेकोजाता तो मेरेभाईको घरमें रक्षाके निमित्त रखजाता वह स्त्री एकान्तस्थलमें मेरेभाईका सन्मानकरती और उसे बहुत धैर्य्य देती सो मेराभाई जानगया कि वहमुझे बहुतचाहती है और मुझ से कुकर्म की इच्छारखती है वह उस बनबासीके भयसे उससे भिन्न रहता और यथाशक्ति उससे बचता परन्तु जब वह स्त्री उसे देखती तो नयनों से अति तीक्ष्ण कटाक्ष करती परन्तु शाहकबक अपने नेत्र नीचे करलेता एकदिन उसी सुन्दरीने भूलेसे अपने पतिके सम्मुख

वहीहावभाव शाहकबकके साथ किये उसकापति उस समय देखकर चुपहोगया और मनमें कहा मेरे पीछे यह अवश्य अनुचित कर्म करताहोगा इसविचार से वह अत्यन्त क्रोधितहुआ निदान अत्यन्त कठोरतासे शाहकबक को ऊंटपर अपने पीछे चढ़ा एकबहुत ऊंचे निर्जनपहाड़की चोटीपर लेजाय छोड़दिया और आप उतर आया और यह शोचा यहीं भोजन जल बिना दो तीन दिनमें मरके रहजावेगा संयोगबश उस पहाड़से बुग़दादनगरका रास्ताथा प्रायःयात्री मेरेभाईको वहां अकेला और क्षुधा तृषायुक्त देख भोजन देते और कईपरदेशियोंने जो वहांसे यहां आयेथे मुझसे उसकी दशा बर्णन की कि अमुक पहाड़पर तेराभाई अतिदुर्दशामें पड़ाहै यह सुन मैं तुरन्त उधरचला और उस पहाड़पर जाय यथाशक्ति उसकी सहायताकी और उसे अपने नगरमें लेगया ख़लीफ़ा इस कथाको सुन बहुत प्रसन्नहुआ और बहुतद्रव्य पारितोषिक आदि दे बिदाकिया और मुझे गंभीरताका उपनाम दिया और कहा फिर तू इस नगरमें न आइयो कुछदिन तो मैं अन्यदेशों में निवास किया जब मैंने सुना ख़लीफ़ा कालबशहुआ फिर मैं इस बुग़दादनगर में आया उस समय तक मेरे सबभाई मरगये थे कुछकाल पश्चात् पंगुल की सेवाकी जैसा तुमने उसके मुखसे सुना परन्तु बड़ाखेद और पश्चात्ताप है उसने इसपरिश्रम और सेवाके बदले मेरी यह अप्रतिष्ठाकी इसके बिशेष मुझे बकवादीका कलङ्क लगाया परन्तु उसपरभी सर्व्वदा उसको ढूंढ़तारहताथा यहां तक कि आज वह मुझे मिला उस कृतघ्नीने जो कुछ मेरे बिषय में कहा तुम भी उसके साक्षीहो इतना कह दरज़ीने ख़लीफ़ाके सम्मुख बिनय किया जब हमने सब चरित्र नाईके भाइयोंके सुने हमें परिपूर्ण विश्वास हुआ जो उस पुरुषने इसके बिषयमें कहा सब ठीकहै तदनन्तर मैंने और अन्य अतिथियोंने वहीपाक आनन्दपूर्वक भोजन किये इतनेमें तीसरापहरहोगया मैं वहां से बिदाहो अपनी दूकानपर आया और संध्याके समय दूकान बन्दकर अपनेघर जानेलगा इतनेमें यह कुबड़ा मद्यकेनशे में उन्मत्तहो मेरी दूकानके सम्मुख बैठ तबला

बजाने और गानकरनेलगा मैं इसे अपने घरमें लेगया मेरीस्त्रीने उसदिन मछली बनाईथीं वहउन्हें थालीमें रख मेरे सम्मुखलाई मैंने थोड़ीसी मछलियां कुबड़ेकोदीं कुबड़ाउनको कांटे निकालनेके बिना खागया उनके भोजनकरतेही वह मूर्च्छाखाय गिरपड़ा मैंने बहुतसे यत्नकिये परन्तु सब निष्फलहुये निदान लाञ्छन और आपके भय से उसे अपने कन्धेपर उठा यहूदी बैद्यकेघर लेगया यहांसे आपने सम्पूर्ण वृत्तांत सविस्तर सुना है इसबैद्यने भी उसे मोदीके बुखारे में फेंकदिया और मोदीने जाय उसे बाजार में दीवारसे लगाकेखड़ाकिया उसब्योपारी ने उसे चोरसमझ दोचारधौलें बड़ेबेगसे लगाईं कि वह पृथ्वीपर गिरपड़ा उसनेजाना यह मेरे हाथसेमरगया स्वामी यह वह कथा है जिसे मैंने आपके सम्मुख अपने प्राण छुड़ाने के लिये कही अब आप नीतिसे बिचारकर आज्ञादें उसमें मैं प्रसन्न और बर्त्तमानहूं चाहे आप बधकीजिये अथवा प्राणदान दीजिये खलीफ़ा काशगर दरजी से यह सुन बहुत प्रसन्नहुआ और कहा इसदरजी को साथियोंसमेत छोड़दो यहसब निर्दोष हैं और मैं इस पंगुल और नाईके छहोंभाइयोंसमेत बृत्तान्तसुन बहुतहर्षित हुआ वास्तव में यहकथा इसकुबड़े के चरित्रकी अपेक्षा अत्यन्त अद्भुत है परन्तु मैं चाहताहूं कि इसलोथके गाड़ने और तुमचारों मनुष्योंके बिदाहोनेकेप्रथम उसीनापितको जिसकीकथाके कारण सबछूटे देखूं अभी तो इसनगर में उसका मिलना कुछ कठिन नहीं तदनन्तर उस खलीफ़ाने निजसेवकोंको आज्ञादी इसदरजीके साथ जाय उसनाई को तुरन्त मेरेसम्मुखलाओ वह दोनों उसेढूंढ़ते ढूंढ़ते बहुत कालमें उसेपाकर खलीफ़ाके सम्मुख लाये उसकी अवस्था नब्बेबर्ष की थी और दाढ़ी भवें उसकी हिमके सदृशश्वेत और नासिका बहुतलम्बी और कर्ण उसके बहुतअवस्थाके कारण लटकते खलीफ़ा उसके बिचित्ररूपको देख बेबश हँसपड़ा और कहा मैंने सुनाहै तुझे अति बिचित्रकथा स्मरणहैं मुझे इच्छाहै कि तेरेमुखसे उनमें से एककथा सुनूं नाईने प्रणामकर बिनयकी हे स्वामी प्रणतपाल दुःखभञ्जन! जो कुछ मुझे आज्ञाहो उसके पालने में मैं तत्परहूं परन्तु प्रथमएक

मेरा प्रश्नहै आशारखताहूं कि उसके बर्णनकरनेकेलिये मुझे आज्ञा दीजिये खलीफ़ाने कहा वह क्याहै नाई ने कहा इस यहूदी बैद्य और दरज़ी और इसकुबड़े को जो लेटा है यहां एकत्रहोने का क्या कारणहै खलीफ़ाने कहा तुझे इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है उसने कहा जिससे आपको मालूमहो कि मैं अल्पभाषी हूं खलीफ़ाने सुशीलतासे कुबड़े और चारों मनुष्यों की सम्पूर्णकहानी जो कुबड़े की हिंसाके अपराधी ठहरेथे सविस्तर यथातथ्य बर्णन की उसनाई ने उसे आदिसे अन्तपर्य्यन्त सुन इस बिधिसे शिर हिलाया जिससे सब कोई समझे इसने इस बिषयमें कोईबात निकाली परन्तु उसे प्रकट नहीं करसक्ता तदनन्तर उसने कहा वास्तव में यह कथा अद्भुत और ललितहै मैं चाहताहूं उसकुबड़ेके समीपजाय उसे भलीभांति देखूं तदनन्तर वह कुबड़े के निकटजाय पृथ्वीपर बैठगया और उसकाशिर अपने दोनोंरानोंपर रख शोचबिचारठट्ठामारहँसा इतनाहँसा कि पीछेको गिरपड़ा और कुछ खलीफ़ाका भय न किया फिर उठ बहुतकाल पर्यंत हँसाकिया और कहा इस कुबड़ेकी ऐसी कथाहै कि मनुष्य इसेस्वर्णकेजलसे लिखें उसनाईकी बातेंसुन संपूर्ण मनुष्य आश्चर्यितहुये और परस्पर कहनेलगे यहनाई यातो बिक्षिप्तहै अथवा वृद्धावस्थाको प्राप्तहोनेसेस्वल्पबुद्धि होगयाहै काशगरके खलीफ़ा ने भी बिस्मितहो पूंछा हे अल्पभाषी बुद्धिमान् महापुरुष! तेरेइसबिधिके हँसनेका क्याकारण है उसने उत्तरदिया आपकी शीलता और दयावान् चित्तकी शपथ खाके कहताहूं यह कुबड़ा नहीं मरा अभी इसमें प्राणहै यदि मैं इसबचनको सत्य न दिखाऊं तो मैं दुर्बुद्धि औ बिक्षिप्तहूं यह कह उसने ओषधियों का सन्दूकचा जिसे वह सर्वदा अपने निकट रखताथा खोला उसमेंसे किसीबस्तुके तेलकी शीशीनिकाल बहुतकाल पर्यन्त कुबड़े के कण्ठ में मर्दनकरतारहा अनन्तर किसीयन्त्रसे कुबड़ेका जबड़ाखोल उस के कण्ठमें मोचनालेगया और उससे पकड़के मछलीकाकांटा उस कुबड़े के तालूसे निकाल सबको दिखाया क्षणमात्र में उसकुबड़े ने अपने हाथपाँव फैलाये और नेत्रखोले इसके बिशेष कितनेही चिह्न

उसकी सजीवता के जानपड़े काशगरका ख़लीफ़ा और सम्पूर्ण मनुष्य कुबड़े के जी उठने से जो एकरात दिन ज़मीनमें पड़ारहाथा अत्यन्त आश्चर्य्यित और आनन्द को प्राप्तहुये तदनन्तर ख़लीफ़ाने आज्ञादी कि यह सब कुबड़े और नाईकी कथा लिखी जावे और मेरे कोशमें रक्खीजावे इसके बिशेष आज्ञादी दरज़ी, बैद्य, मोदी और फरंगी, ब्यापारी कि उन्होंने कुबड़े के बिषयमें बहुत दुःख और क्लेशपाया बहुमूल्य पारितोषिक दे बिदाकरो और नाई का कुछमासिक नियतकर आज्ञादी मेरीसभा में उद्यतरहाकर वज़ीर की बड़ीबेटी कुबड़ेकी कहानी समाप्तकर चुपहोरही तब दुनियाज़ाद उसकी छोटी बहिनने उससे कहा हे रानी! तुमने क्या अच्छी कहानी कुबड़ेकी कही मैंने तो जानाथा वह दीन कुबड़ा वास्तव में मरगया था परन्तु उस नाईको धन्यहै जिसने अपनी बुद्धिमत्ता और यत्न से उसे फिर जिलाया हिन्दुस्तान के बादशाह शहरयारने कहा मैं भी नाई के भाइयों और पंगुल की कहानीसुन अत्यन्त प्रसन्नहुआ शहरज़ादने अपनीबहिन दुनियाज़ाद से कहा यदि बादशाह मुझे प्राणदान देगा तो मैं बकाकेपुत्र अबुलहसन और बादशाह हारूंरशीद की प्यारी शमशुन्निहार नामकी कहानी कि वह कुबड़े के चरित्रसे लालित्यता में न्यून नहीं कहूंगी उसबादशाहने उसकहानी के सुनने के लिये मलकाको उसदिनभी न मारा और नियमानुसार बादशाह सभामें जाय निजराजकाज करनेलगा तदनन्तर दूसरी रात्रि प्रातःकालके एकमुहूर्त्त पहिले उस नियमित समयपर दुनियाज़ाद ने अपनी बहिन से कहा उस कहानी को बर्णनकर सो वह इसभांति कहनेलगी॥

## अबुलहसननामकशाहज़ादाऔरबादशाहहारूंरशीद कीप्यारी शमशुन्निहारकाचरित्र॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीदकी सल्तनतमें बुग़दाद नगरमें एकपंसारी था बड़ाधनवन्त और सुन्दर और उसका अन्तःकरण उसके रूप अनूपसे भी उज्ज्वल वहां के प्रतिष्ठित और राजसभा के अधिष्ठाता

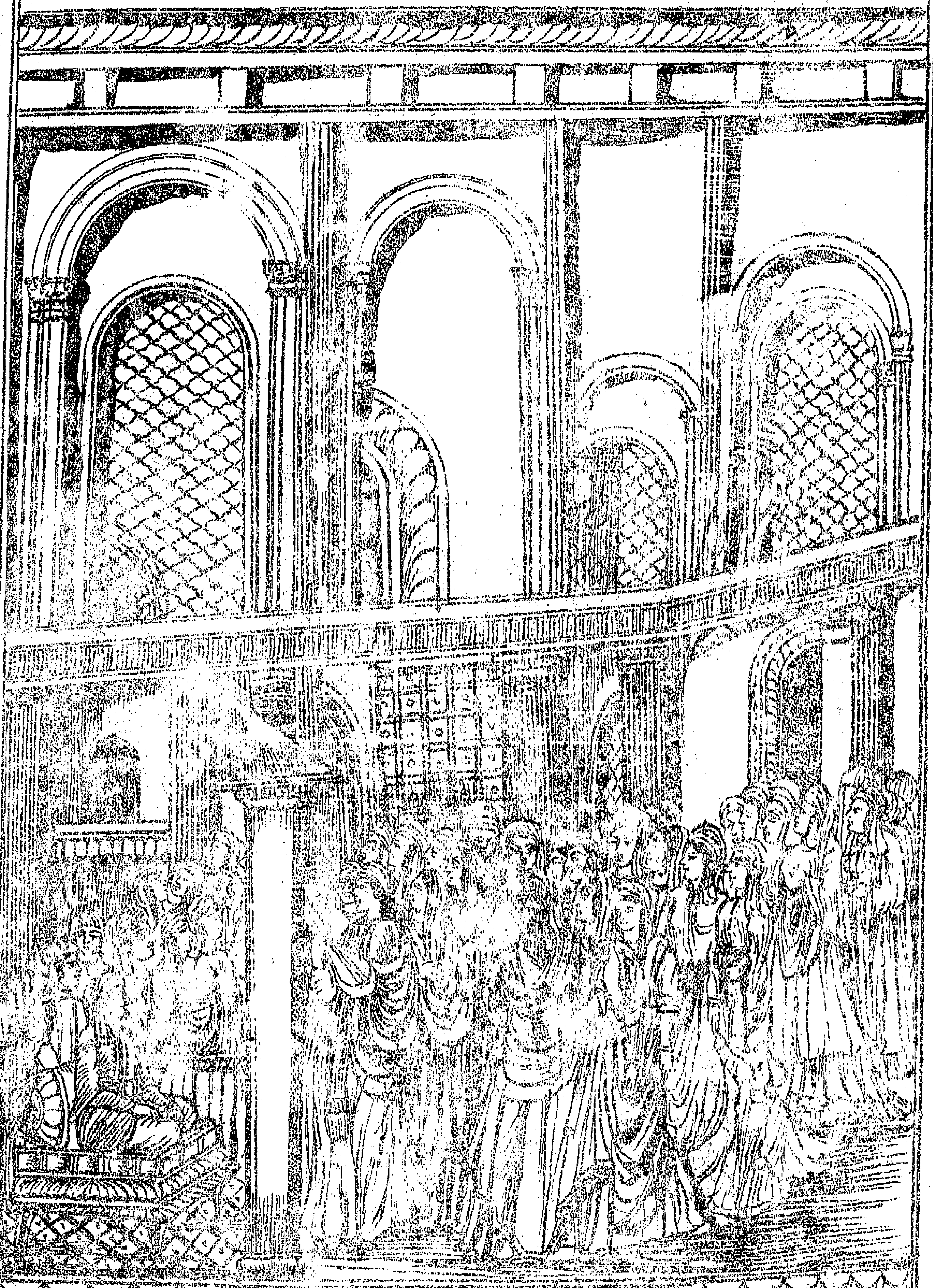
उसका अतिसत्कार करते यहां तक कि उसका विश्वास हारूंरशीद खलीफ़ा पर्य्यन्तभी विदित था बादशाही महल की छोटी छोटी बांदियां प्रत्येक विषय में उससे व्यवहार रखतीं और वह भी उनकी याचित वस्तुओं को तुरन्तदेता सो उन स्त्रियों के सर्व्ववसन आभूषण और रत्नआदि उसीके द्वारा मोल लिये जाते उसकी सुशीलता और खलीफ़ाकी मेहरबानी के कारण सर्व्वपुरके अधिष्ठाताओं के पुत्रोंकी आवागच्छ उसकी दूकानपर रहती और प्रत्येक उसपंसारी से प्यार मित्रतारखता मुख्य उनमें से एकबकाकालड़का अबुलहसन नामक जो पारसके बादशाह के घरानेमें से था उससे बहुतप्यार और मित्रता रखना और दिनको पहरभर उसके निकट बैठारहता वह पंसारीभी औरों से अधिक उसका आदर करता यह शाहज़ादा अत्यन्त सुन्दर रूपवान् था जो कोई स्त्री पुरुष उसे देखता सो मोहित होजाता इसके विशेष बड़ागुणवान् गानविद्या, कविता आदि में अतिनिपुणथा यदि वह कभी बाजाबजाता वा गानकरता उसके सुनने के निमित्त बहुतसे मनुष्य एकत्रहो उसकी प्रियवाणीसे आनन्दित हो मग्न होजाते एकदिन वही शाहज़ादा उसीकी दूकानपर बैठाथा सो क्यादेखा कि एकसुन्दरी चितकबरे खच्चरपर सवार और दश दासियां उसके आगेपीछे चली आती हैं और सबके मुखवस्त्रसे ढके हैं औरउस स्त्री की कमरमें स्वच्छपटुका बँधा है जिसके गिर्द चार अंगुलके प्रमाण चौड़ी लैसटँकीहुई और उसके वस्त्रोंमें नानाप्रकार के बड़े २ हीरे मोती जड़े उस सुन्दरीकारूप इतना विचारना चाहिये जिसकी बाँदियां और सखी सहेलियां पूर्णमासी के चन्द्रमा को लज्जादेतीथीं निदान वह सुन्दरी चन्द्रमुखी गजगामिनी उसी दूकान पर किसी आवश्यकता के निमित्त आई वह पंसारी उसे देखतेही दौड़ा और अगवानी कर निज दूकानपर बैठाया और पारस के शाहज़ादे ने औसर पा कमख़ाब से मढ़ीहुई तिपाई लेजाय उसके चरण कमलों के नीचेरक्खी और नम्रतापूर्व्वक प्रणामकर उस क़ालीनको चूमा जो उस सुन्दरी के चरणों के नीचेथा तदनन्तर जब उस सुन्दरी ने वहांपर अपना घरसमझ अपने मुखसे वस्त्रउतारा

तब चन्द्रमुखी की मनहरण छबिको देखतेही कामने औसर पाय शाहज़ादे के हृदय में ऐसे बाणमारे कि जिससे वह अति विह्वल होगया वह सुन्दरी भी शाहज़ादेको देख मोहरूपी अग्निसे जलने लगी निदान वह दोनों प्रेमी परस्पर प्रेमजाल में फँस बिरहसागर में मग्नहुये उस सुन्दरीने शाहज़ादेका खड़ारहना अनुचित समझ बैठनेकेलिये कहा शाहज़ादा उसकी आज्ञानुसार उसीके समीप बैठ गया परन्तु चित्रसमान अपनी प्यारीको टकटकी बांध देखरहाथा वह सुन्दरी उसकी अधैर्य्यता को समझ तुरन्त उठखड़ी हुई और पंसारी के कानमें प्रथम तो अपने आनेका कारण कहा तदनन्तर उस तरुणके निवासस्थानका पता चिह्न पूंछा पंसारी ने कहा हे गज-गामिनि! यह नवकिशोर बकाकापुत्र अबुलहसन नामक पारसके बा-दशाहके घरानेमें से है इसीका पिता और दादा वहांका अन्तिम बा-दशाहथा प्रायः वहांकी शाहज़ादियां ख़लीफ़ा के घराने में व्याहीगई हैं वह सुन्दरी उसके उच्चजातिका हालसुन अत्यन्त हर्षितहुई और पंसारी से कहा मुझे इस नवकिशोरसे भेंटकी अतिलालसाहै सो तुम सर्व्वदा करादिया करना मैं निज मन्दिरको सिधारतीहूं अमुकदास को बुलाने के लिये तुम्हारे निकट भेजूंगी तुम इसको अवश्य अपने संगलाना मैं चाहतीहूं यह मेरी पुष्पबाटिका और भवन की सैर करे तो इसका चित्तप्रसन्नरहे चलतीसमय फिर शाहज़ादे के लेआने की ताक़ीदकी और बचनबन्धकर चलीगई पंसारी जो सुबुद्धि और चतुरथा उस मृगनयनीका मनोरथ समझकहा मैं अवश्य इसे ला-ऊंगा तदनन्तर वह चन्द्रमुखी चम्पकबरणी बिदाहोचली शाहज़ादा उसे बड़ी बिह्वलतासे देखाकिया जब वह दृष्टिसे गुप्तहुई उस मार्गको बिक्षिप्त की नाईं ताकतारहा पंसारीने उसे बहुत समझाया कि मित्र कुशल तोहै मनुष्य तुम्हें इस कुदशामें देख हँसेंगे इस चिन्ताकोतज और अपने चित्तको दूसरी ओर लगा उसनेकहा जो मेरे अन्तः-करणके कष्टको जानो तो बिश्वासहै मुझे न बरजोगे मैं उस सुन्दरी चन्द्रमुखीकी प्रीतिमें बेबशहूं परमेश्वरकेवास्ते बताओ यह कौन है और इसका मन्दिर कहांहै पंसारीने कहा मेरेप्यारे यह सुन्दरी शम-

शुग्निहारनामक खलीफ़ाकी प्यारीहै शाहज़ादेने कहा शमशुन्निहार* इसका नामरखना बहुत उचितहुआ क्योंकि वह सूर्य्य के सदृश है पंसारी ने कहा खलीफ़ा इसे अत्यन्त प्रीति से रखता है और मुझे आज्ञाहै जो जो बस्तु यहमांगे तुरन्त इसे लादीजियो और प्रत्येक बिषयमें इसीकी प्रसन्नता मुख्य जानियो तदनन्तर पंसारीने उसे बहुतसे नीच ऊंच दिखाके चाहा किइसे उसकी प्रीतिसे हटावे परन्तु वह उसीके प्रेमरूपी अग्निमें ऐसा विह्वलथा कि उसे किसीका उपदेश फलदायक न होता निदान वे इसी बार्त्तामेंथे कि शमशुन्निहार ने निज मन्दिर में पहुँच एक दासीको उसके बुलाने के निमित्त भेजा उस दासीने पंसारी के कानमेंकहा शीघ्रचलो हमारी स्वामिनी ने तुम्हें और शाहज़ादे को बुलायाहै वे सुनतेही उसके साथहुये वह दासी उनको खलीफ़ा के महलमें लेगई उस मन्दिरके एक ओरको शमशुन्निहार के मुख्य रहनेकी जगहथी उसने दोनोंको एक सूक्ष्म द्वारसे लेजाय एक स्थानपर बैठाया क्षणमात्र में एक सेवक ने आय स्वर्ण रूपे के थाल बिछाय भांति भांति के व्यञ्जन उनपर परसे जिनकी सुगन्ध से चित्त प्रसन्न हुआ वही दासी उन्हें भोजनस्थान में लेगई जब वे भोजन से निश्चिन्त हुये एकदासी मद्यलाई और पारी पारी से उन दोनों को पिलाई तदनन्तर स्वर्ण का लोटालाया उनके हाथ धुलवाये और नानाभांति की अतरकी शीशियां आईं उन्हों ने भलीभांति अपने बस्त्रोंपर अतरमला फिर वही बिश्वासित दासी आई और उन्हें वहां से उठा उत्तम उत्तम रत्नखचित बारहदरी में लेगई वह बारहदरी गुम्मज़के सदृशथी जिसके एक ओर श्वेत संगमरमर के दोखम्भेथे और उनखम्भोंके नीचे पशुपक्षीके प्रियचित्र चित्रितथे उस बारहदरी के फ़र्शमें अति बिचित्रफूल रंगबरंगे कढ़ेहुये और उन दो खम्भों में नीचेकी ओर अति सुंदर सूक्ष्मअलमारियांबनीथीं जिनमें चीनी, बिल्लौर, मूसी, पत्थरआदि के अतिस्वच्छ और शोभायमान पात्र रक्खेथे और उन सब पात्रोंपर स्वर्णसे अति उत्तमप्रियचित्र और सुलेखलिपि थी और ऊपरकी ओरके खम्भों में किवाड़

* यामिनी भाषा में शमशुन्निहार मध्याह्न के सूर्य को कहते हैं ॥

चित्र बादशाही मकान और अबुलहसन और अत्तार देखरहे हैं॥



उनपर सुन्दर बरामदेथे उन दरवाज़ों से चहुँओर बाग़ देखपड़ता और उस बाग़की धरतीपर रंगीनपत्थरकाफ़र्श था और बारह-दरीके दोनोंओर दो दिव्य सरोवरथे जिनमें सैकड़ों फ़व्वारेछूटते उसबाग़ में सफल वृक्षोंपर हज़ारों पक्षी बुलबुल हज़ारदास्तान के सदृश अपनी मनोहरबाणीसेचहकरहेथे वह पंसारी और शाहज़ादा उस मनोहर और स्वच्छ मंदिरको बैठे देखते थे इतने में बहुतसी स्त्रियों का यूथ और बाँदियां अतिसुन्दरी स्वच्छ वस्त्राभरण पहिने आय बारहदरी की सुनहली चौकियों पर जो वहां बिछी थीं बैठगईं वे स्त्रियां साजनिकाल तय्यारकर आज्ञाकी राह देखतीरहीं तदन-न्तर वह दोनों भी एक बरामदे के नीचे जहां से वह सब उनको देख सकें बैठगये और अपनी दाहिनीओर रत्नजटित सिंहासन देखा पं-सारी ने बिचारांशपूर्वक मालूम करके शाहज़ादे से कहा यह स्थान शमशुन्निहार के बैठनेकाहै यद्यपि यह मन्दिर ख़लीफ़ाके भवनों से सम्बन्धितहै परन्तु उक्त ख़लीफ़ाने शमशुन्निहारही के अर्थ बनाया है ख़लीफ़ाको और बाँदियों से अधिक इससे प्रीति है उसे आज्ञा है स्वाधीनहो जहां चाहे पूछे बिना चलीजाय ख़लीफ़ा भी सन्देश पहुँचाये बिना उसके निकट नहीं आता तुम कुछ चिन्ता न करो बि-श्वासहै शमशुन्निहार शीघ्र आती होगी और तुम्हें अपनी दासियों से राग सुनवाकर बहुत प्रसन्न करेगी पंसारी यही बार्त्ता शाहज़ादे से करताथा कि एक बांदी ने आय उन स्त्रियों के यूथसे गाने ब-ज़ाने के लिये कहा वे सब अपने अपने साजों को उठाय बजाने लगीं कोई केवल साजबजाती और कोई स्वर मिलाय गाती शाह-ज़ादा उनका गाना और सरस मोहके गीत सुन मूर्च्छित हुआ इतने में शमशुन्निहार के आनेकी ख़बर हुई और शाहज़ादा भी चैतन्य हुआ प्रथम वही दासी दश कहारियां अपने साथ लाई उन्होंने उस रत्नजटित सिंहासन को उठा पंसारी और शाहज़ादे के समीप लाकर बिछाया तदनन्तर और बहुतसी हब्शिनें आय पंक्तिबांध खड़ी हुईं और बीस गानेवालियां सिंहासनके सम्मुख खड़ीहो गाने बजाने लगीं और दश बांदियां अतिरूपवती समआयु उसी द्वार

पर जहां से दश हब्शिने कहारियां निकलीथीं जाय उसी सुन्दरी की राह देखती रहीं इतने में वही चन्द्रमुखी गजगामिनी उसी यूथ में होके धीरेधीरे चकोरगति से इधरको आनेलगी यद्यपि वह सब सम स्वरूपथीं परन्तु उस कोमलांगीका रूप अनूपसबोंपरि था वह निज हस्तकमलों को दो सखियोंके कन्धोंपर रक्खे शिरसे चरण पर्य्यन्त रत्नपरे धीरे धीरे उसी रत्नजटित सिंहासन पर सुशोभित हुई और सैनसे उनदोनों को प्रणाम किया उन दोनोंने भी प्रणामकिया तदनन्तर उस चम्पकबर्णी ने उन स्त्रियों को जो गाती बजातीथीं आज्ञादी आगे आओ वह सब अपने २ स्थान से उठ चलीं इतने में हब्शिनियों ने उनके बैठनेकी चौकियां वहांसे उठा बरामदेके निकट जहां ये दोनों पंसारी और शाहज़ादा बैठे थे बिछादीं वे सब यथोचित पंक्तिबांध बैठगईं तदनन्तर शमसुन्निहारने उनमें से एक को मोहके राग गाने की आज्ञादी सो उसने उसी बिषय का सरसराग गाया शमसुन्निहारने उसको अपने और शाहज़ादे की दशाके सदृश समझा शाहज़ादा अधैर्य्यहो उठ खड़ा हुआ और आगे बढ़ उसी स्त्री से बांसुरीले प्रीति और मोहके व्यथा युक्त राग बांसुरी की ध्वनिके साथ बहुकाल पर्य्यन्त गाया किया जब वह गाचुका शमसुन्निहारभी उसीभांति बांसुरीकी ध्वनिपरगाई जिससे मोहरूपीअग्नि शाहज़ादे के चित्तमें एक से शतगुण अधिक प्रवेशहुई शाहज़ादे ने दूसरी बेर गाना आरम्भ किया इस बेर प्रथमसे अधिक प्रियस्वरों से गाया निदान मोहरूपी अग्नि ऐसी उनके मनमें भड़की कि वे दोनों बेबश होगये शमसुन्निहार निज सिंहासनसे उठ बारहदरी की ओर चली और शाहज़ादाभी उसके संग वहींपहुँचा और वह दोनों अति बिह्वलता में परस्पर कण्ठसे लगगये और उसी आनन्दमें मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरपड़े परन्तु बाँदियोंने दौड़कर दोनोंको सँभाला और बारहदरीमें दोनोंको लेजाय उनपर बेदमुश्कका नीर छिड़का शमसुन्निहारने चैतन्यहोतेही पंसारीको पूछा कि वह कहां है पंसारी अकेला बैठाहुआ इस दशाको देख अत्यन्तचिंतायुक्त और बिस्मितथा देखिये इसका परिणाम क्या होताहै यदि खलीफ़ा सुनपावे तो हम

तीनोंको बधकरडालेगा शाहज़ादेनेकहा शमशुन्निहार तुम्हें स्मरण करतीहै तुरन्त वहांआया शमशुन्निहारनेकहा मैं तेरा अतिगुणमान-तीहूं उसनेदोनोंको अधैर्य्य देखकहा मुझे बड़ाआश्चर्य्य है भेंटहोने परभी तुम अधैर्य्यहो शमशुन्निहार ने कहा प्रीतिकापन्थ निराला है नतोप्यारोंको भेंटमें आनन्द और न बियोग में सुख उनमें न तो भेंट की शक्ति है और न बियोग की शमशुन्निहारने एकदासी को सैनकी वह तुरन्त नानाप्रकार के व्यञ्जनलाई और शमशुन्निहार ने शाह-ज़ादा और पंसारीसमेत सरुचि भोजन किया फिर शमशुन्निहार सुराका पात्रले भलीभांति गानकर फिर पीगई और दूसरा पात्र शाहज़ादेकोदिया उसने भी उसीप्रकार गाके पानकिया इसी आनन्द मङ्गलमें एकबांदीने शमशुन्निहारसे धीरेसे कहा स्वामिनी सेवकों का प्रधानमसरूर ख़लीफ़ाका सन्देशापहुँचाने के लिये आया है पंसारी और शाहज़ादा दोनों यह बचन सुनतेही कांपने लगे और उनके मुखपर हवाइयां उड़नेलगीं शमशुन्निहारने उनको धैर्य्य दे उसबांदी से कहा कि तू जाय मसरूरकोबातों में लगा जबतक मैं शाहज़ादेको न छिपालूं फिर उसे बुलाऊंगी वह तो उधर को चलीगई शमशुन्नि-हार ने आज्ञादी कि सबद्वार बारहदरीके बन्दकरो और परदे जो बागकी ओर हैं सब छोड़दो शाहज़ादे और पंसारी को एकओर बारहदरी के बैठाय कहा यहां तुम आनन्दपूर्ब्बक सावधानता से बैठो और उस ओरके द्वारको बन्दकरादिया कि बाहरसे मालूम न हो अनन्तर आज्ञा की कि वह सब गानेवाली स्त्रियां पूर्ब्बवत् गावें बजावें यह प्रबन्धकर आप सिंहासनपर बिराजमानहुई और उस बांदी से कहा अब मसरूर को अपने साथलेआ तुरन्त मसरूर बीस सेवकों सहित जिनके गले में अतिस्वच्छ रत्नजटित सुनहले कण्ठे पड़े थे आया और प्रणाम किया उससमय वह निज सिंहासन से उतर मसरूरकी ओरआई और पूँछा तेरा आगमन क्योंकर हुआ उसने कहा ख़लीफ़ाकीओरसे यह संदेशालायाहूँ कि ख़लीफ़ा आज्ञा देते हैं कि मैं तुम्हारी भेंटबिना नहीं रहसक्ता तुम्हारे मंदिर में आने की इच्छा रखताहूं शमशुन्निहार यहसुन हर्षितहुई और कहा मेरी

ओरसे ख़लीफ़ा को कहियो मैं वर्त्तमानहूँ जब आपका मनचाहे आ-
इये यह कह निजदासियों को आज्ञा दी तुरन्त फ़र्शआदि जैसी
कि ख़लीफ़ाके आगमनपर तय्यारीहोती है करो और मसरूरसेकहा
क्षणमात्र में तय्यारीहुईजातीहै कुछकालमें ख़लीफ़ाआवें ऐसा न हो
कि शीघ्रता में कोईबातभूलजाऊं यहकह मसरूर को उसके साथियों
सहित बिदाकिया और आपआंसूभर शाहज़ादे के ढिगगई पंसारी
उसे रुदनकरतेदेख बहुतडरा ऐसा न हो कि भेदखुलगयाहो जिससे
यहरोती है उधर शाहज़ादा आनन्द में यह बिघ्न देख ब्याकुलभया
और उसे चिन्तितदेख रोनेलगा इतनेमें एकबिश्वासितदासीने आय
कहा बैठी क्याहो सेवकोंका यूथ चलाआता है क्षणमात्र में ख़लीफ़ा
भीआते हैं शमशुन्निहारने ऊर्ध्वश्वास खींचकहा हे बिधाता ! तू कैसा
कठोर और निर्दयी है कि कैसीजल्दी तूने परस्पर बियोग किया उस
दासीसे कहा इनदोनों को उस मकानमें जो बाग़केकोणसे मिलाहुआ
टेकरसनदीके तटपरहै लेजायबैठा और बाहरसेतालालगादे अवसर
पाय दूसरे द्वार से उनको गुप्त निकालियो अनन्तर शाहज़ादेकोकंठ
सेलगाय बिदाकिया और आप ख़लीफ़ाकी अगवानी के लिये खड़ी
हुई वह दासी उनदोनोंको उसीमकानमें लेजाय छोड़आई और उन्हें
बहुतसा धैर्य्यदिया कि तुम्हें यहां किसीभांतिका भय नहीं रात्रिको
अवकाशपा तुम्हें यहां से बाहरलेजाऊंगी यह कह वह तो चलीगई
वे उठके चहुँओर भ्रमते कि कहीं से निकलनेका मार्गपावें परन्तु
किसीओर से बाहर निकलने का मार्ग न मिला अकस्मात् सवार
और पैदलों को जो ख़लीफ़ाकेआगे चलेआते थे देख अतिब्याकुल
हुये अनन्तर बहुतसा प्रकाश देखा कि एकओरसे बाग़में चलाआ-
ताहै घबड़ाकर उसप्रकाशको देखनेलगे तहां समायु सेवक मोमके
दीपदान हाथों में लियेहुये हैं उनके पीछे सौसे अधिक अनुचर शस्त्र
सहित पंक्तिबांधेहुये ख़लीफ़ाकी रक्षार्थ हैं उनका यह नियमथा जब
ख़लीफ़ा किसीस्त्रीके घर रातकोजाता तो वह उसकेसाथ रहते फिर
क्या देखा उन सबके पश्चात् ख़लीफ़ा उसकेदाहिनीओर सेवकोंका
प्रधान मसरूर चलाआता है,शमशुन्निहार ख़लीफ़ाकी अगवानी

को जाय खड़ीभई और बीस अतिसुन्दर और स्वच्छसखियां सोरहों शृङ्गार और बारहों आभूषण धारणकर शमशुन्निहार के पीछे खड़ी बाजेगाजे बजा बड़े मीठे मीठे स्वरोंसे गान कररही हैं जब देखा कि ख़लीफ़ा समीप पहुँचा शमशुन्निहारने अपनाशिर ख़लीफ़ाके चरणों पर रखदिया ख़लीफ़ा शमशुन्निहारको देख हर्षितहुआ और कहा हे परमप्यारी ! अपना शिर उठा और मेरेनिकटआ मैं तुम्हारे देखनेकी अतिलालसा रखताहूं शमशुन्निहार शिर उठाय ख़लीफ़ा के सम्मुख बैठी और एक गानेवालीको गानेकेवास्ते सैन से आज्ञादी उसने दो भांतिके रागगाये जिसमें अत्यन्त प्रीतिकी तपन और बिरहथा ख़लीफ़ा समझा कि इसने शमशुन्निहारकी आज्ञानुसार इसप्रकार का रागगाया और यह सब तपन मेरेहीवास्ते है और बास्तवमें वह राग शाहज़ादेकी बिरहकाथा निदान शमशुन्निहार उसी रागके अनुराग में धैर्य्य न धरसकी गिरनेलगी दासियों ने दौड़के उसे थांभा और बारहदरी के भीतर लेगईं उधर पंसारी भी शाहज़ादेकी कुदशा देख कि वह भी मूर्च्छा खाय गिरपड़ा उसे भी सँभाला इतने में वही बांदी उसके निकट फिर आई और कहनेलगी अब तुम्हारा यहांपर रहना उत्तम नहीं मैं सभाका रँगढँग अच्छा नहीं पाती पंसारीने कहा देख शाहज़ादेकी यह दशाहै क्योंकर हम यहांसे जासक्तेहैं वह बांदी शाहज़ादेको मूर्च्छित देख दौड़ीगई और जल लाय उसपर छिड़का जब उसने सुधिसँभाली पंसारी ने कहा हम दोनों पकड़े जावेंगे अब यहांसे निकल जाना उत्तम है सो वह दासी और पंसारी शाहज़ादे को पकड़ बाहर द्वार पर्य्यन्त लेगये और नहर के तटपर कि नदी से लगी थी पहुँचे वहां उस बांदी ने धीरे से हांकदी एक मनुष्य नाव खेताहुआ उनके समीप लाया वह दोनों उसमें सवार हुये और बांदी कूलपर खड़ी रहगई और केवट नाव को वहां से शीघ्र खेके नदी में लेगया पंसारी शाहज़ादे को धैर्य्य देता और कहता हमको बहुतदूर जानाहै तुम अपने को सँभालो ऐसा न हो कि रौंद के लोग मार्ग में मिलके हमें पकड़ें इतने में वह कूलपर पहुँच नाव से उतरे पंसारीने शाहज़ादे को अत्यन्त मलिनरूप पाया और उसमें चलने

की शक्ति न देख बहुत घबड़ाया और चिन्ता करनेलगा अब क्या कीजिये इतने में उसे सुधिहुई हां मेरा यहां एक मित्र रहताहै उसके घर पर्य्यन्त जिसभांति होसके पहुँचा चाहिये निदान शाहज़ादेको खींच खांच वहां तक लेगया उसका मित्र उसे देखतेही दौड़ा और अपने मन्दिर में लेजाय उन्हें बैठाया और पूछा इस समय तुम कहांजातेहो पंसारीने कहा एक मनुष्य जिससे मुझे रुपये लेने थे भागा चाहताथा मैं यह सुन उसके ढूंढ़ने को गया इस मनुष्य को जिसे तुम मेरे साथ देखतेहो मार्ग में भेंटहुई परस्पर बार्त्ता कर मालूमहुआ कि यह उस मनुष्यको भलीभांति जानता और बता देगा अत्यन्त कृपासे मेरेसाथ हुआ यद्यपि इसके परिश्रम में सन्देह नहीं परन्तु वह मेरेहाथ न लगा निदान हम वहांसे लौटके चले आते हैं दैवयोगसे यह मार्गमें रोगीहोगया सो निरुपायहो तुम्हारे मन्दिर में आये और चाहते हैं कि प्रातःकाल पर्य्यन्त यहीं रहैं उसके मित्रने यह बृत्तान्तसुन और उसकी कुदशादेख अतिचिन्ताकी और उसकी आरोग्यता के लिये यत्न करनेलगा पंसारी ने कहा औषध की कुछ आवश्यकता नहीं यह रोग प्रायःइनको होजाया करताहै और आप से आप अच्छे होजाते हैं केवल इनको सोनेकी इच्छाहै उसके मित्रने एकबड़े बिशाल हवादार मकानमें लेजाय उन्हें सुलाया शाहज़ादे ने सोतेही स्वप्न में क्या देखा कि शमशुन्निहार ख़लीफ़ा के सम्मुख मूर्च्छित है यह स्वप्न देख चौंका और अत्यन्त ब्याकुल हुआ और पंसारी इस शोचमेंथा कहीं रात्रि शीघ्र ब्यतीतहो तो भोर होतेही कुशलपूर्ब्बक अपने घरमें पहुँचूँ घरके लोग चिंता करतेहोंगे क्योंकि पंसारी कदाचित् कहीं रात्रिको न रहताथा निदान पंसारी भोरहोतेही निज मित्रसे बिदाहो शाहज़ादेको लियेहुये अपने मन्दिर में पहुँचा और सावधान हो निजकुटुम्ब से वह सब वृत्तान्त कहा और ऐसे भयङ्कर स्थानसे बच आनेके लिये ईश्वरका धन्यबाद किया दो तीन दिन शाहज़ादा पंसारी के घरमें रहा तिस पीछे उसके नातेदार उसे उठाके वहां से लेगये शाहज़ादे ने बिदाहोते समय पंसारी से कहा मेरी ओरसे तुम बेसुध न रहना शमशुन्निहार का वृत्तान्त मुझे अ-

वश्य कहला भेजना जबसे मैंने उसे स्वप्न में मूर्च्छावश देखाहै तब से मैं अत्यन्तव्याकुलहूं उसने कहा भाई घबड़ाओ नहीं बिश्वास है वह दासी अभी आय वहां का वृत्तान्त वर्णन करेगी पंसारी दो दिन के पश्चात् शाहज़ादे के देखने को गया उसको उसीभांति ब्याकुल ठण्ढी श्वासलेते और रोते देखा उसके मित्र चहुँओर बैठे हैं और वैद्य यत्नकररहे हैं उस समय पर्यन्त उसे किसीका उपाय लाभकारी न हुआ इसीप्रकार वह अचैतन्य पड़ाहै परंतु पंसारीका शब्दसुन उसने नेत्रखोले और उसे देख मुसकराया वह दोप्रकार से हँसा एक यह कि उसे देख वह प्रसन्नहुआ दूसरे वैद्यों के उपाय पर कि वह रोग के जानने बिना अपना काल व्यर्थ नष्टकरते हैं फिर सम्पूर्ण मित्रों और वैद्योंको बिदाकिया केवल पंसारी को अपने निकट बुलाय कहा प्रीति दिनप्रतिदिन बढ़तीजाती है और उस मृगनयनी चम्पकवर्णीका बियोग क्षणप्रतिक्षण हृदयमें शालताहै सब कुटुम्ब मेरी यहदशा देख रोतेहैं मित्रोंके एकत्रहोनेसे अधिक व्याकुल रहताहूं लज्जासे किसीको कुछ नहीं कहसक्ता केवल तेरे देखने से मुझे धैर्यहुआ परंतु तुम मुझ से कोई बात गुप्त न रखना क्या शमशुन्निहारका कुछसमाचार लायेहो क्योंकर उसकी दासी को तुमने पाया और उसने तुमसे क्या कहा पंसारीने उत्तर दिया अबतक वह नहीं आई और कुछ हाल वहां का नहीं जानता यह सुन शाहज़ादा रोनेलगा पंसारीने कहा हे शाहज़ादे! परमेश्वरकेवास्ते रुदन मतकर ऐसा न हो कि बेर बेरके रोने से यह भेद खुलजावे तो महाकष्ट होगा शाहज़ादेने कहा मैंने अपने चित्तको बहुत थांभा परन्तु आंसुओं से बश नहीं वह सर्वदा गिरतेरहते हैं पंसारीने उसको बहुतसा धैर्य दे कहा शमशुन्निहार कुशलपूर्व्वक है तुम और कुछ न बिचारो उसने किसीको भेजने का अवसर नहीं पाया होगा बिश्वासहै कि सायंकाल को कोई न कोई वहां से अवश्य आवेगा निदान पंसारी उसे इसीभांति धैर्य्य दे बिदा भया जब वह अपने मन्दिर में पहुँचा उसने शमशुन्निहारकी दासी को अपने घर बैठादेख परस्पर प्रणामके पश्चात् उससे शमशुन्निहारकी क्षेमकुशल पूछी बांदीने कहा प्रथम

तुम अपना हाल बर्णनकरो क्योंकि बिदाहोती समय हमने शाह-ज़ादेको कुदशामें देखाथा पंसारी ने सम्पूर्ण बृत्तान्त मार्गका और शाहज़ादेकी ब्याकुलताका उससे प्रकटकिया दासीने शाहज़ादेकी दशासुन कहा यही उनका भी हालहै जब मैं तुम्हें बिदाकर मंदिर में गई मैंने उसे मूर्च्छितपाया किसी उपायसे चैतन्य न हुई और ख़लीफ़ा भी उसके निकट बैठाहुआ बिस्मितथा और प्रत्येकदासी बिशेष मुझसे पूछताथा तुम्हें इसके मूर्च्छाका कारण मालूमहै हम ने भेदको गुप्तरखकर कहा हम कुछ नहीं जानतीं अनंतर हम सब रोतेधोतेरहे निदान अर्द्धरात्रिको वह चैतन्यहुई उससमय ख़ली-फ़ाने पूछा शमशुन्निहार तेरी ऐसीदशा क्यों होगईथी उसने कहा स्वामी आपने इस दासीको इससमय आय कृतार्थ किया परंतु मैं अत्यन्त अभागीहूं कि मेरी यह दशा होगई कुछ आपकी सेवा न करसकी किंतु मेरी यह दशादेख आपको चिंता उपजी ख़ली-फ़ानेकहा मुझे तेरेअन्तःकरण की प्रीति भलीभांति सूचितहै चैत-न्यरह फिर कोई ऐसीबात न हो जिससे तेरी यह दशा होजावे इस रात्रिको तू इसी स्थानपर रहियो अन्य मंदिर में जानेकी इच्छा न कीजिये ऐसा न हो जो चलनेसे तुम्हें कुछ कष्टहो निदान जब ख़-लीफ़ा वहांसे चलागया शमशुन्निहारने सैनसे मुझेनिकट बुलाय तु-म्हारा बृत्तान्त पूछा मैंने उसे धैर्य्यदे कहा कि वे आनन्दपूर्बक यहांसे गये और शाहज़ादेकी मूर्च्छाकाहाल उससे न कहा तौभी उसनेरोके कहा हे शाहज़ादे! मुझे तेराहाल मालूम नहीं कि तुझपर क्या बीतता है इतनाकह फिर मूर्च्छाबशहोय मेरीगोदमें लेटगई दासियोंने जो वहां बर्त्तमानथीं दौड़के उसपर बेदमुश्कका नीर छिड़का तो तनक सचेतहुई मैंने कहा हे सुन्दरी कोमलांगी! क्या तुम अपने प्राण दोगी और हम सबको अपनेसाथ मारोगी तुम्हें उसी शाहज़ादेकी सौगं-दहै जिसकी प्रीतिमें तुम्हारी यह दशाहुई किञ्चित् अपने प्राणपर दयाकरो और दूसरे कार्य्यमें अपना मन बहलाओ तब उसने आं-खखोल मुझसे कहा मैं तेरी सेवा और उत्तम उपदेशका अतिगुण मानतीहूं परन्तु क्या करूं मैं अपने बश में नहीं फिर उसने सम्पूर्ण

बांदियों को बिदा किया केवल मुझेही अपने निकट रहनेकेलिये आज्ञादी और रात्रिभर शाहज़ादेका नामले रोयाकिये और भोर को मैं उसे गोदमें उठा उसके मुख्य बासस्थानमेंलेगई वहां ख़लीफ़ाके हुक्मसे वैद्य उसके देखनेके निमित्त बर्त्तमानथे क्षणमात्र में आप भी ख़लीफ़ा वहीं आया औषध यत्नआदि आरम्भहुआ परन्तु सब व्यर्थहुये किन्तु रोग अधिक बढ़गया रात्रिको कुछकाल निद्राआई अरुणोदय पर मुझे आज्ञादी तुम्हारे निकटपहुँच शाहज़ादेका समाचारलाऊं पंसारीने कहा तू शीघ्रजाकेकह शाहज़ादा चंगाभलाहै परंतु तुम्हारी व्याकुलताका हालसुन वह बहुत अधीर और व्यथितहुआ और उसे समझाना कि ऐसा न हो जो ख़लीफ़ा के सम्मुख बेवशी में कोईबात निकलजावे जिससे हम सबपर आपदापड़े यह कह उसे बिदाकर शाहज़ादेके निकटगया और उससे कहा शमशुन्निहारने तुम्हारी कुशल पूछनेके लिये एकदासीको भेजाथा जो कुछ दासीके मुखसे सुनाथा सबिस्तार शाहज़ादेसे बर्णन किया इतनेमें संध्याभई शाहज़ादेने पंसारीको रात्रिभर वहीं रक्खा प्रातःकाल पंसारी अपनेघरआया थोड़ीदेर न हुईथी कि वहीदासी उसकेढिगआई प्रणामकर कहा उस सुन्दरीने यह पत्र शाहज़ादेको लिखाहै पंसारीने उसी बांदी और पत्र को शाहज़ादेके निकटलेजाय कहा शमशुन्निहारने तुमको पत्रभेजाहै और बांदीको तुम्हारी कुशल पूंछने को भेजाहै शाहज़ादा यहसुन उठबैठा और बांदीको सम्मुख बुलाया पत्र उससेले आंखों में लगाया और चूम और खोल उसे पढ़ा उसमें मोह और बियोगकाकष्ट लिखाथा शाहज़ादेने दूसरी बेर उसेपढ़ा और उसका उत्तरलिख बांदीकोदे बिदाकिया पंसारी भी उसकेपाससेउठ अपने मन्दिरमें आया और चिंताकरनेलगा दिन २ इनदोनोंकी मोहमें कुदशाहोतीजाती है प्रतिदिवस दासीका आना और समाचारलाना और मेरा शाहज़ादेके निकट जाना मेरेवस्ते उत्तमनहीं वहदोनोंप्रीति में अपने२प्राणपर खेलतेहैं यदि यहभेद खुले और ख़लीफ़ा सुनपावे तो तत्काल मैं माराजाऊंगा और मेरे कुटुम्बपर न जानिये क्या आपदा और दुःखपड़े और मेरीप्रतिष्ठा

मट्टीमें मिलजावेगी इससे उत्तम यहहै तू इसनगरकोतज अन्ते जा रह एकदिन वह इसीशोच बिचारमें अपनी दूकानपर बैठाथा एक रत्नपारखी जो उसका मित्रथा उससे भेंटकरनेको आया वह जौहरी प्रायः शमशुन्निहारकी बांदीको उसके ढिगआते और उसेशाहज़ादेके घरजातेदेख चकितहुआ कि इसका क्याकारणहै और पंसारी को उससमय अत्यन्त चिन्तितप्राय समझा कि इसपरकोई आपत्तिपड़ीहै जिससे यह ऐसाशोचितहै निदान उसरत्नपारखीने उससे पूंछा शमशुन्निहारकीबांदी क्यों तुम्हारेनिकट आयाजाया करती है पंसारी उसके प्रश्नसे भयभीतहुआ और कहा कुछ लेनदेनकेलिये आतीहै जौहरीने कहा वहऐसेही नहीं आती किन्तु कोई अतिगुप्त कार्य है पंसारीने जाना इसे उस उत्तरसे बोधनहीं हुआ इससे इसे मुख्य वृत्तान्त सुनानाचाहिये सो पंसारीने बचनले उससे कहा शमशुन्निहार और पारसका शाहज़ादा एक दूसरेपर मोहितहैं और उनका समाचार मेरे द्वारा पहुँचताहै यदि यह वृत्तान्त ख़लीफ़ाको पहुँचे तो ईश्वरजाने मेरी क्या दशाहो अब मैं अपने व्यवहारियों के लेन देनका हिसाबकर बांसराको जाया चाहताहूं कि इस दुःखसे रक्षितरहूं जौहरी ने यह सुन आश्चर्य्य किया और उससे बिदाहो चलागया दोदिनपीछे वह पंसारीकी दूकानकी ओरगया उसने उसकी दूकानको बन्द देख जाना वह बांसराको चलागयाहोगा रत्न पारखीको उसके चलेजाने से शाहज़ादे पर अतिदया उपजी और मनमेंकहा इस नगरमें केवल उसका एकही मित्रथा वह तो यहांसे चलागया उसके न होनेसे शाहज़ादेपर अतिकष्ट हुआ उत्तम है कि अब तू उसकी सहायताकर यह शोच जौहरी ने शाहज़ादे से भेंटकी उसने रत्नपारखीको पहिचाना और उसका सन्मानकर उठ बैठा और कुशलपूंछी और कहा मुझसे कुछ कहनेको आयेहो वा कुछ मुझसे कामहै जौहरीने कहा हे शाहज़ादे! यद्यपि मेरी आपसे जान पहिचान कम है परन्तु मैं चाहताहूं आपकी सेवामें उद्यतरहूं इस समय मैं एकबात कहाचाहताहूं शाहज़ादेने कहा अच्छाकहो तब रत्नपारखीने कहा मुझे अपना निज दास समझो और किसी

भांतिकी मेरीओर से चिन्ता न करो मुझे पंसारी से अधिक हितैषी और बिश्वासी पावोगे जो सेवा पंसारी किया करताथा उसीपर मैं भी उद्यतरहूंगा उसकी दूकान बंददेख मैंने जाना वह बांसरा को चलागया यदि आपको उसके चलेजाने का कारण मालूम हो तो बताइये वह क्यों यहां से चलागया शाहज़ादा जौहरीका बचनसुन पीलाहोगया और उससे कहा क्या तू सचकहता है कि वह यहांसे चलागया केवल उसी के कारण मुझे धैर्य्यहोताथा उसने मेरे वास्ते बहुत से कष्टउठाये निदान शाहज़ादा उसके चलेजाने से अत्यन्त कष्टको प्राप्तहुआ तदनन्तर अपने सेवकको कहा पंसारी के घरपर उसके सेवकों से पूछकेआवो कि पंसारी कहां चलागया वह जाय पूछआया कि पंसारी दोदिन से बांसरा नगरको गया और यह भी उस सेवकने शाहज़ादे से कानमें कहा किसीकी दासी आपसे कुछ कहनेके लिये आया चाहतीहै मैं उसे बैठाय आयाहूं शाहज़ादे ने कहा तुरंत उसे ले आ और मनमें बिचारा कि वह निस्संदेह शमशुन्निहारकी बाँदी है निदान वह शाहज़ादे के सम्मुख आई और वह जौहरी उसे देख उठगया वह दासी शाहज़ादे से वार्त्तालाप कर बिदाभई उसने शाहज़ादे को पहिले से अच्छापाया जब वहां दासी जाचुकी वह रत्नपारखी शाहज़ादे के निकट आय अपने स्थानपर बैठगया और मुस्कराय के पूछनेलगा हे शाहज़ादे! तुम्हें राजद्वारसे बड़ाब्यवहार है वह झुंझलाय बोला कि तूने क्योंकर इसबातको जाना और तू क्या जानताहै कि यह किसकी दासी है जौहरीने कहा मैं भलीभांति जानताहूं वह बादशाहकी परमप्रिया शमशुन्निहारकी दासी है और मैं उसे और उसकी स्वामिनी को भलीभांति जानताहूं वह बहुधा रत्नमोललेने के लिये मेरीदूकानपर आया करतीहै यहदासी उनकी भेजीहै और प्रायःउसे मैंने पंसारी के निकट आतेजाते देखाहै यहसुनतेही शाहज़ादे को बिश्वासहुआ जौहरीभी इसभेदको जानताहै अत्यन्त भयभीतहुआ एकक्षण चुप रहा अनंतर उस रत्नपारखीसे कहा जो कुछ तुम इस भेदको जानते हो सबमुझसेकहो कोईबात मुझसे गुप्त न रखना रत्नपारखीने अव-

सरपाय आदिसे अन्तपर्य्यंत सम्पूर्ण वृत्तान्त सविस्तर समझाय बुझायकहसुनाया और कहा मेरेआगमनका यहीकारणहै और मुझे आपपर बहुत दया आई और इच्छाकी कि आपकासेवक समान बन आपकीसेवा और सहायता जैसी कि पंसारीनेकी है करूं और तुम्हारेकार्य्यमें अपनीसबप्रतिष्ठा किंतुप्राणभीदेनेमें संदेह न करूंगा मुझसे कदाचित् भेद न खुलेगा आपनिश्चयमानिये कि मुझ ऐसा हितैषी आपके पहिले मित्रकेबदलेमिला निदान शाहज़ादे को उस के हितके बचनों से कुछ धैर्य्यहुआ और उससे खुला और अपने अन्तःकरणकी बातें उससे कहने लगा परंतु यह भी कहा शमशुन्निहारकी दासी तुम्हें यहां बैठेदेख कहती थी इसी पुरुषने पंसारी को बुगदादकेजानेका सम्मत दिया है और तुमसे वह दासी बहुत शङ्कारखती है इसहेतुसे क्योंकर भेदका सम्बंध तुमसे रक्खाजावे क्योंकि उसने यहीहाल उसी सुन्दरी से कह उसके मनमें भी संदेह डालाहोगा जौहरीने कहा यहबात इस तरहसेहै जब पंसारीने मुझ से बांसरेजानेका सम्मतलिया तब मैंने निस्संदेह उसे न बरजा और मैंने जाना कि यह पुरुष बुद्धिमान् और चतुर है अपनी प्रतिष्ठा के बचानेकेअर्थ अपनापुर त्याग जाताहै तब शाहज़ादेने कहा उसने ईर्षाकेकारण तुम्हें इसबात में दोषी बनायाहै मेरेमनमें तुम्हारी ओर से कुछमलनहीं परंतु तुम्हें उचितहै जैसातुमने मुझे अपनी ओर से बिश्वास दिलायाहै वैसाही उसदासीको भी अपने साथ मिलालो और उसका भी बोधकरो जिसमें तुमसे प्रसन्नरहै और तुम्हारा गीला न करै इसीभांति बहुकालपर्य्यंत वह दोनों परस्पर सम्मत करतेरहे कोई यत्न ऐसाभी है कि जिससे फिर प्यारेकी भेंटहो फिर वह रत्नपारखी शाहज़ादेसे बिदाहो अपने मंदिरमेंगया शाहज़ादेने बांदीको बिदाकरती समय कहाथा अबकीबार कोई पत्र मेरीप्यारीसे लिखवाय मेरेहेतुलाइयो दासीने मंदिरमें पहुँच उससुन्दरी से पंसा-रीके चलेजाने और शाहज़ादे के दूसरे निजहस्ताक्षर पत्रकेमांगने का वृत्तांत बर्णनकिया शमशुन्निहारने तुरंत एकपत्र जिससे भेंटकी चाह और बियोगकादुःख और बिरहकी अधिकता और पंसारी

केचलेजानेका पश्चात्तापथा लिख बांदीको देकरकहा तुरन्त जाकर यहपत्र शाहज़ादे को पहुँचा वहबाँदी पत्रले शाहज़ादेके मन्दिरकी ओर दौड़ीजाती थी दैवयोगसे वह पत्र उसके हाथमे मार्ग में गिर पड़ा और रत्नपारखीने उसेपड़ापाया इसीबातपर जौहरी और लौंड़ी में ईर्षाउत्पन्नहुई अर्थात् वहबांदी पत्र ढूँढ़तीहुई उस स्थानपर आई जहां वह रत्नपारखी उठाय उसे पढ़ताथा लौंड़ीने जौहरी के हाथ में पत्र देखकहा यह पत्र मेरेहाथसे यहां गिरपड़ाथा तुमने इसेपाया यहपत्र मेराहै मुझे दो उस जौहरीने उसके कहनेपर कुछभी ध्यान न किया और चुपका अपने घर चलागया वह दासीभी उसके पीछे लगीहुई चलीगई और घरमें जाय फिर उससे कहा यहपत्र तुम्हारे किसी कामका नहीं उसके देदेने में तुम्हारी क्या हानिहै और तुम यहभी नहीं जानते कि इसे किसने लिखा और किसको पहुँचेगा जौहरीने पहिले बैठने की सैनकी तदनन्तर कहा मैं जानताहूं यह पत्र शमशुन्निहारने अमुक शाहज़ादे के लिये लिख दिया है दासी यह सुन भयभीतहुई रत्नपारखी ने कहा मार्ग में मैं तो तुम्हें यह पत्र देदेता परन्तु तुझसे मुझे कुछ पूछना है सत्य कह तूने शाह-ज़ादे से क्या कहा क्या मैंने पंसारी को बग़दाद से चलेजाने का सम्मत दियाहै मैं तो चाहताहूं पंसारी के बदले इस बिषय में शा-हज़ादे की यथाशक्ति सहायताकरूं तू इससे बिरुद्ध समझती है यह निस्संदेह है कि मैंनेही प्रथम पंसारी के जाने का सँदेशा शाह-ज़ादेसे कहदियाथा वहभी पहिले मुझे अबिश्वासी समझ कुछ भेद न कहताथा निदान मुझे हितैषी और सहायता में उद्यत समझ अ-पना समस्त वृत्तान्त मुझसे कहा और इसपर प्रसन्नहुआ कि मैं उसे सम्मतदूं और मैं तुझसेभी चाहताहूं कि तूभी मेरी इस सेवा को अंगीकारकर पंसारीके बदले मुझे समझ इसी बातपर शमशुन्नि-हारकोभी राज़ी करना कि वहभी मुझे बिश्वासी और भेदिया जाने यदि मेरे प्राणभी शाहज़ादे और शमशुन्निहारके कामआवें तो शंका न करूंगा प्रतिष्ठा तो क्या बस्तुहै उस बांदी ने जौहरीके बचन सुन कहा शमशुन्निहार और शाहज़ादा वास्तवमें बड़े प्रतापी और भा-

ग्यवान् हैं कि पंसारीके पीछे तुमसा उनको ऐसा हितैषी और भेदिया मिला तुम्हारी प्रशंसा शमशुन्निहारसे कर प्रसन्नकरूंगी तब जौहरी ने पत्र निकाल उसे दिया और कहा यह जाय शाहज़ादे को दे जो कुछ वह इसका उत्तरलिखे मुझेभी दिखाती जाइयो जो कुछ हमारे तुम्हारे परस्पर प्रणहुआ है वह सब शाहज़ादे से कहना तदनन्तर वह दासी पत्रले शाहज़ादे के समीपगई उसने उसे पढ़ तुरन्त उत्तर लिख दासीको दिया वह लौंडी प्रथम तो रत्नपारखी के निकटगई उसने पढ़ उसे देदिया फिर उससेभी बिदाहो शमशुन्निहारके निकट गई और उसके पत्रका उत्तरदिया और रत्नपारखी की अतिप्रशंसा की दूसरे दिन प्रातःकाल को वह फिर जौहरी के निकट आई और कहा मैंने तुम्हारी शमशुन्निहारसे अतिप्रशंसा की यह सुन वह तुम से अत्यन्त प्रसन्न और हर्षितहुई कि तुम पंसारी के बदले दूतकर्म्म करोगे कल मेरी स्वामिनी मेरे आगमनकी बाट देखतीथी कि मैंने जाय शाहज़ादेका पत्रदिया उसे पढ़ वह बहुतरोई मैंने अवसरपाय कहा हे सुन्दरी! सत्यहै कि तुम्हें पंसारी के चलेजाने से बड़ी चिन्ता हुई परन्तु मैंने और एक पुरुष इस कार्य्य के हेतु उद्यत कियाहै वह अत्यन्त बिश्वास योग्यहै पंसारीसे अधिक धैर्य्यवान् बुद्धिमान् है यह कह मैंने तुम्हारानाम लिया और शाहज़ादे और तुमसे व्यवहारथा वहभी कह सुनाया यह सुन वह अधिक हर्षितहुई और कहा मैं चाहतीहूं कि उसको देखूं और उसीके मुखसे जो बातें कही हैं सुनूं ऐसे श्रेष्ठ मनुष्य जो जाने बूझे बिना मनुष्यों के कार्य्यमें प्रवृत्त होते हैं संसारमें न्यून हैं और उसकी बुद्धि और चातुरताकी भी परीक्षा लेलूं कि इसकार्यके योग्यहै वा नहीं तू प्रातःकाल अवश्य जाय उसे लेआ इतना कह उस बांदीने कहा यदि चाहतेहो तो मेरे साथ शाहीमहलको चलो उस लौंडीकी बातसुन जौहरी गूढ़ चिन्ता करनेलगा और कहा शमशुन्निहार बिचारे बिना मुझे इबनताहर अर्थात् पंसारी समझ वहां बुलाती है यह न समझी कि इबनताहर को केवल बादशाहही न जानतेथे किन्तु शाही दर्वाज़े के सब छोटे बड़ेभी पहिंचानतेथे कोई उसे मन्दिरके आवागमन में निषेध

न करता और न पूछता मुझे तो कोई नहीं जानता क्योंकर मंदिर में जानेकी इच्छाकरूं फिर उस लौंडीने जौहरी को बहुत समझाया और धैर्य्य दिया कि भाई जो तुमने कहा सो सत्य है परंतु शमशुन्निहार अत्यन्त चतुरहै कुछ तो समझ के तुम्हें बुलवाया होगा तुम कुछ चिन्ता न करो निश्शंक मेरे साथ चलो तुम्हें किसी भांति का भय न होगा इसबातका मैं ज़िम्मा करतीहूं कि तुम्हें कुशलपूर्ब्बक तुम्हारे घरमें पहुंचाजाऊंगी निदान कितनाही लौंडीने उसे धैर्यदिया परंतु उसने स्वीकार न किया फिर वह बांदी शमशुन्निहार के निकटगई और जौहरी के डरनेका कारण उससे कहा शमशुन्निहार ने कुछ शोचके कहा वह सत्यकहता है मैं आपही गुप्त उसके मंदिर में जाय उसे देखूंगी तू मेरे आगमन का समाचार उसे दे वह बांदी जौहरी के समीप आई और शमशुन्निहार की इच्छाको प्रकटकिया और कहा अबतुम अपने घरसे कहीं न जाना मैं अभी उनको लिये आतीहूं निदान क्षणभर में शमशुन्निहार उसी बांदी समेत आपही रत्नपारखी के घरगई जौहरी प्रणामकर बड़े आदर सन्मान पूर्ब्बक घरके भीतर एकान्तस्थल में लेगया शमशुन्निहार ने वहां बैठ अपने मुखसे बस्त्रउतारा जौहरी उसके रूप छबिअनूप मनहरण सकल दुखदरण चन्द्रमुख को देख चकित हुआ और मन में कहा क्यों न राजपुत्र ऐसे मनोहर स्वरूप पर जिसको देख अप्सरा मोहित होती हैं मोहित हो फिर वह चम्पकवर्णी सब भांति से ऊंच नीच समझाय बुझाय बोली तुम्हारा परमेश्वर रक्षक है अब जाती हूं और तुम मेरे और शाहज़ादे के मध्यस्थहो इबनताहर के सदृश हमारे भी सहायक रहना मैं तुम्हें देख प्रसन्न हुई परमेश्वर का धन्यबाद है कि उसने इबनताहर के पीछे भी हम दोनों प्रिया प्रियतमके मध्यमें धैर्य्य देनेके लिये तुम ऐसे सुशील चतुर श्रेष्ठ पुरुष को दिया यह कह चलीगई और जौहरी शाहज़ादे के निकट गया शाहज़ादेने उसे दूरसे देखतेही कहा मैं तुम्हारी राह देखताथा उस दिन जो वह लौंडी उसी मृगनयनी के पास पत्रलाई थी उससे मुझे धैर्य्य न हुआ यदि शमशुन्निहार अपनी परिपूर्ण कृपा से कोई भेंट

का यत्न निकाले तो निस्सन्देह मुझे धैर्य्यहो पश्चात्ताप है जो अब तक इबनताहर होता तो कोई न कोई अवश्य उपाय ठहरता अब उसके न होनेसे निपट निराशहूं रत्नपारखी ने यह बचनसुन उससे कहा जो मैंने आपके हितके हेतु उपाय बिचारा है दूसरे मनुष्य की सामर्थ्य नहीं है जो उसे सुनियेगा तो तुमको अवश्य धैर्य्य होगा जौहरीने सबबात अर्थात् लौंडीको प्रसन्न करना और उसके घरमें शमशुन्निहारका आना शाहज़ादे से सविस्तर कहा और कहा घब-ड़ाओ नहीं एक दो दिन में तुम्हारी उसकी भेंट होजावेगी परन्तु तुम्हारा और मेरा उसके महलमें जाना उचित नहीं उसको यहीं बुलवाऊंगा और कोई बड़ामहल ठहराके तुम दोनोंका वहीं मिलाप होगा शाहज़ादा जौहरीका बचनसुन हर्षितहुआ और कहा मुझे बि-श्वासहै कि तुम्हारी कृपासे मेरा मनोरथ सिद्धहोगा जो कुछ मुझे क-होगे मैं करूंगा रत्नपारखी शाहज़ादे से बिदाहो अपने मंदिरमें आया दूसरे दिवस वहबांदी उसके घर आई जौहरी ने उसे देख कहा अ-च्छाहुआ जो तू आई मैं तेरी राह देखताथा उसनेकहा क्यों कुशल तो है जौहरीने कहा कि शाहज़ादा शमशुन्निहारके हेतु अत्यंत ब्याकुल औरब्यथितहै जिसप्रकार होसके उस कोमलांगीको ला दासीने कहा बहुतअच्छा जिससमय कहो उसीकाल उन्हें लेआऊं क्योंकि वहभी शाहज़ादेकी बिरहानलमें जैसे कि गरमबालूमें मछलीडालेसे तड़फ-तीहै उसीतरह तड़फरहीहै परंतु यहघर बहुतसूक्ष्महै उनदोनोंके नि-वासके योग्यनहीं जौहरीने कहा एक और मेराघर अत्यन्त बिशाल बड़े आदमियों के रहने के योग्य है तू चल उसे देख और पसन्दकर उसदासी ने कहा बहुत अच्छा तदनन्तर वह दोनों उसमहलमें गये उसेदेख बांदीने पसन्द किया और कहा मैं अब उससुन्दरी के निकट जाय यह सर्बबृत्तान्त कहतीहूं जो वह आनेपर राज़ी होती है तो मैं तुरन्त तुमसे आय कहतीहूं क्षणभर में वहलौंड़ी जौहरीके ढिग फिर आई और कहनेलगी कि मेरी स्वामिनी सन्ध्याकेसमय अवश्य आ-वेगी यहकह एक थैली अशरफ़ियों की जौहरीको दी और कहा उस सुन्दरीने आज्ञादी है कि उसका यथोचित सूक्ष्मभोजन और शय्या

आदि तय्यारकररखना इतना कह वह बांदी जौहरी से बिदाभई तदनन्तर उस रत्नपारखी ने अपने इष्टमित्रों से कुछ सुनहले रुपहले पात्र और अतिदिव्य मसनद उपधान आदि सामग्री जितनी कि आवश्यकताथी मांगेकी मँगवाय उस महल को भलीभांति अलंकृत किया जब वह अपने मनोरथानुसार उसे सजाचुका और सर्व्व प्रकार की खानेपीनेकी बस्तुलाय बर्त्तमानकीं तब शाहज़ादे के समीप गया वह दिव्यबस्त्र पहिर अकेला उसके साथ हुआ जौहरी उसे ऐसी गलियों में से कि कोई न देखे उस घरमें लेगया शाहज़ादा वहांबैठ शमशुन्निहारकी बाटमें जौहरी से वार्त्तालाप कररहा था कि शमशुन्निहार भी सायङ्काल को उसी लौंडी और दो और बांदियों समेत वहां पहुँची वहदोनों प्रियाप्रियतम परस्परदेख ऐसेप्रसन्नहुये कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता प्रथम तो वह बिह्वलतासे एक दूसरे को देखाकिये तदनन्तर उनदोनों ने परस्पर बियोग की व्यथा वर्णनकी जिससे वह जौहरी और तीनों दासियां उसको सुन रोनेलगे निदान जौहरीने उठके उनदोनोंके आंसूपोंछे और भोजनपर बैठाया वहदोनों कुछ थोड़ा २ भोजनकर उठखड़ेहुये तदनन्तर उसी स्थान पर जहां पहिले बैठे थे आनन्दपूर्व्वक बिलासकरनेलगे शमशुन्निहारने जौहरीसेकहा यहां कोई बजानेकी बांसुरी है जौहरीने तो प्रथम से इसभांतिकी बस्तु लारक्खीथी एकबांसुरी शमशुन्निहारको लादी वह उसकी ध्वनि में बहुत कालपर्य्यन्त मोह और प्रीति के ललित राग रागिनी गाई तदनन्तर शाहज़ादेने भी शमशुन्निहारको प्रसन्न करनेके लिये उसीसमयके सुरुचित अतिमनोहर रागगाये इसी आनंदमंगल में बड़ाशब्दसुना उसके साथही जौहरी का एकदास जो बाहर था महल के भीतर चलाआया और कहा बहुतसे मनुष्य द्वार पर एकत्र हैं और चाहते हैं कि किवाड़तोड़कर चलेआवैं मैंने उन से पूछा तुम कौनहो उन्होंने मुझे मारना शुरूकिया इसहेतु मैं भीतर भागआया जौहरी यह बृत्तान्त सुन अत्यन्त चिन्तित हुआ और चाहा आप बाहरजाय हाल मालूमकरे जब वह बाहर निकला क्या देखताहै कि सौसवार हाथोंमें खड्ग लिये उस महलके द्वारपर खड़े हैं

फिरतो उसे वहांठहरनेकी सामर्थ्य न हुई और भीतरआनेकी निदान एकपड़ोसी के घरकी दीवारपर चढ़ उसके मकान में कूदपड़ा और कहा भाई यहदशाहै मुझे बचाओ निदान वह जौहरी पड़ोसी के महल में जायछिपा अर्द्धरात्रिपर्य्यन्त वह वहांसे शब्द सुनाकिया जब देखा अब सुनाई नहीं देता तब अपने पड़ोसीका खड्ग ले अपनेमहल में गया उसमें न तो मनुष्य देखे और न असबाब परन्तु एक मनुष्य का शब्दसुना वह कहताहै तू कौन है उसने अपने दास का शब्द सुन पूंछा तू इन मनुष्यों से क्योंकरबचा उस दासने कहा मैं इसघर के कोने में छिपाथा जबवह सब चलेगये तब मैं निकलआया स्वामी यह पहरा न था किन्तु डाकू थे कितने दिनबीते कि इन्होंने अमुक महल्ले को लूटाथा और कितनेही घरोंको लूटलेगये उस जौहरी ने बिचारा कि इसकी बातकी परीक्षालेनी चाहिये यदि वह डकैतहोंगे तो इस घरकी सब सामग्री और बस्तु लूटलेगये होंगे जब दालान के भीतरगया तो उसे शून्यपाया न तो शाहज़ादा न शमशुन्निहार तब बहुत रुदन किया औरशिर पीटा कि अपने पड़ोसियोंकी बस्तु जानेसे क्याकहूंगा न जानिये उन दोनोंपर कौनसी बिपत्तिपड़ी हो दासने उसे धैर्य्यदिया और कहा शमशुन्निहारको शाहज़ादे सहित वहीं डाकूलेगये हैं या वहांसे अपनेमकानमें गईहोगी और कदाचित् शाहज़ादाभी अपने घर में पहुँचाहोगा जिन मित्रों की मँगनी बस्तु तुमलायेहो यहहालसुन वह तुम्हें कुछ न कहेंगे क्योंकि इनडाकुओं काहाल सब पुरबासियों को बिदितहै बहुधा धनपात्रों के घरोंमें घुस लूटलेगये फिर उस जौहरीने अपने मनमें कहा इबनताहर ने बड़ी चातुरता की इस बातके परिणामको समझ यहां से चलागया मैंने अपनेही हाथोंसे अपनेको फँसाया देखिये अब इसका क्याफलहोता है उन दोनोंके कारण लूटगया देखिये प्राणबचते हैं वा नहीं इतने में प्रातःकाल भया और उस डाकेका समाचार नगर भरमें फैलगया जौहरी के पड़ोसी और इष्टमित्र इकट्ठेहुये और उस अकस्माती हानिपर पश्चात्ताप करनेलगे और संसारकी रीत्यनुसार उसे बहुत समझाय बुझाय धैर्य्यदिया उसे किञ्चित् मित्रोंकी ओरसे भरोसा

चित्र रामशुनिहार और कुबलसका का क़ब्ज़ा को मैधिर जाने का ॥



हुआ परन्तु उन दोनों के हेतु चिंता करता रहा कि वह अपने २ घरों में पहुँचे वा नहीं जब वह जौहरी अकेलाहुआ तो दास उसके सम्मुख भोजनलाया परन्तु उससे कुछ खाया न गया मध्याह्न समय उसके दासने आय कहा एक मनुष्य आपको बाहर खड़ा बुलाताहै जौहरी ने बाहर निकल उससे पूँछा तू कौनहै और क्यों आया उसने कहा यद्यपि तुम मुझे नहीं जानते हो परन्तु मैं तुमको भलीभांति जानताहूँ मेरा बड़ाकार्य्य तुमसे सम्बन्धित है रत्नपारखी ने उसे अपने घरमें लेजाकर हाल पूछना चाहा उसने कहा तुम अपने दूसरे घरमें चलो जौहरी ने कहा तू क्योंकर जानता है कि मेरा दूसरा भी घर है उसने कहा मैं उसको भलीभांति जानताहूँ तुम मेरे सङ्ग चले आओ किसीप्रकारका सन्देह न करो मैं कुछ तुमसे कहा चाहताहूं जिससे तुम्हें अतिप्रसन्नता होगी रत्नपारखी यहबात सुन उसके साथहुआ और वह उसे ऐसे मार्ग में लेगया कि जिसे कोई न जानता था और कहा इसी मार्ग से तेरेघर चोरलूटने आयेथे वहां ठहर उससे कहा आगे चलो निदान वह दोनों वहां से आगे चले इतनी दूरगये कि जाते२ सन्ध्या होगई और रत्नपारखी बहुत थकितभया और सायङ्काल होनेसे बहुतडरा चलते२ टेकरसनदी के तटपर पहुँचे वहांसे नावपर सवारहो नदी के उसपारगये वह जौहरीको बड़ी लम्बी गली में जिसे उसने कभी न देखाथा लेगया और इसीभांति कई गली और बाजारों को लांघ एक द्वारपर खड़ाभया जब वह किवाड़ खुला तो उसने रत्नपारखीसे कहा कि भीतरचल जब वहदोनों उस महलमें गये तब वह किवाड़ भीतरसे बंदकरलियागया और एकभारी कुफुल उसमें लगा तदनन्तर वह मनुष्य जौहरी को एक मकान में लेगया जिसमें और दश मनुष्य बैठेथे उन्होंने जौहरीका आदर और सत्कार यथा उचितकिया और अपने निकट बैठाया जौहरी लाचारी से वहां बैठगया इतने में उनका प्रधानआया और भोजन मँगवाया और उन सबों ने हाथधोये जब सब भोजनकर निश्चिन्तहुये तो उन्होंने रत्नपारखी से पूंछा कभी तूने प्रथमभी हमको देखाथा उसनेकहा मैंने तुमको नहीं देखा न इस ओर आया और न यह गलियांदेखीं तब

उन्होंने कहा हम से रात्रिका वृत्तान्त जो तुझपर बीताहै सत्य २ कह जौहरी ने यह सुन आश्चर्य्य किया और कहा भाइयो तुम ने किसी से यह बात सुनीहोगी उन्होंने कहा निस्सन्देह हम से उस मनुष्य और स्त्रीने जो कल सायङ्कालको तुम्हारे घरमें थे कहा परंतु हमचाहते हैं कि तेरेमुखसेसुनें जौहरी को उससमय बिश्वास हुआ वास्तवमें यही डाकू औ चोरहैं जिन्होंने मेराघरलूटा तब उसनेकहा भाइयो जो कुछ हुआ सो हुआ परंतु मैं उस पुरुष और उसी सुंदर के हेतु चिन्तितहूं यदि तुम्हें कुछ उनका वृत्तान्त बिदित हो तो कहो उन्होंने कहा तू उन दोनों की चिन्ता न कर वह दोनों कुशल पूर्ब्बक निर्भय स्थानपरहैं यहकह उन्होंने दो मकान उसे बाहर से दिखाय कहा इनमें वहदोनों भिन्न भिन्नहैं और इन्हीं दोनोंसे तुम्हारा बृत्तान्त भी बिदितहुआ कि तुम उन्हें भलीभांति जानते हो और उनके बिश्वासीहो यह सुनतेही हमने उन दोनोंको सन्मानपूर्ब्बक रक्खा किसीभांति से उनको दुःख न दिया किन्तु अपनी रीति के बिपरीत हमने उन दोनोंकी सेवा की और कोई हममेंसे उनका दुःख दायक न हुआ और तुम भी हम से अभयरहो किसीभांतिका कष्ट तुम्हें न पहुँचेगा यह सुनके जौहरी को धैर्य्यहुआ और उन सब चोरों का बहुत गुणमाना तदनन्तर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त शाहज़ादे और शमशुन्निहार का आदि से अन्तपर्यंत बर्णन किया यह चरित्रसुन वह आश्चर्य्यितहुये और कहा तुम सत्य कहते हो यह पुरुष बकाका पुत्र अबुलहसननाम फ़ारस का शाहज़ादा है और यह चन्द्रमुखी खलीफ़ाकी परमप्रियाहै जौहरी ने कहा जो कुछ मैंने बर्णन किया इसमें बालभरभी न्यूनाधिक नहीं अनन्तर उन्हें बिश्वास हुआ कि जो कुछ जौहरी कहताहै वह सत्य है फिर वह सब चोर पारीपारी से जाय शाहज़ादे और शमशुन्निहारके चरणों पर गिर अपना अपना अपराध क्षमा करानेलगे और कहनेलगे जो हम इसे प्रथम से जानते तो कदाचित् यह कुत्सितकार्य न करते निपट अज्ञानतामें हम से यह अपराध हुआ फिर जौहरी से कहने लगे हमको इसकर्त्तव्यसे अत्यन्त लज्जाहुई परंतु हम सम्पूर्ण बस्तु जो

तुम्हारे घरसे लाये हैं फेर नहीं सक्के क्योंकि उसमें से हमारेसाथी रात्रिको अँधियारे में लेगये हैं परंतु सुनहली रुपहली बस्तु एकस्थानपर एकत्रकर उसे दीं अनन्तर चोरोंने उन तीनोंसे बचनबंध किया कि हमारा भेद किसी से न खुले निदान वह चोर बस्तुसहित उन तीनोंको लियेहुये टेकरसनदीके तटपरआये और नावपर सवारहो नदी के उसपार पहुँचे यह तीनों जब धरती पर उतरे उन्होंने रौंदके सवारों और घोड़ोंका शब्दसुना कि इसओर चली आती है उन्होंने इनतीनों को पकड़ लिया और उधर चोर अपनी नाव बड़े बेग से खेके दूरनिकलगये रौंदके अधिपति ने उनसे पूंछा तुम कौनहो और कहांसे चलेआतेहो प्रथम तो वह तीनों भयसे कुछ न कहसके निदान जौहरी ने कहा स्वामी हमतीनों इसपुरकेबासी भलेमानुस हैं यहमनुष्य जो नावमें सवारहुये जाते हैं यहसबडाकूहैं सो कल हमारे घर डाकाडाल सब असबाब लूटकर हमको भी पकड़लेगये थे अब हमबड़ीकठिनतासे उनसेछूट अपनेघरको जातेथे सो वे हमें इसपार पहुँचागये जो बस्तु हमारी लूटलेगयेथे वह सब हमको फेरदी और वह सब गठरियां उस प्रधानको दिखाईं उसने रत्नपारखी को सच्चा जान कुछ न कहा और छोड़दिया फिर शाहजादे और शमशुन्निहार से पूंछनेलगा कि तुम कौनहो और इस सुन्दरी चम्पकवर्णी चंद्रमुखी को कौन लाया है और इस नगरके कौनसे महल्ले में रहतेहो शाहज़ादा तो कुछ उत्तर न देसका परंतु शमशुन्निहारने उस प्रधान को एकांत में एक ओरलेजाय कुछकहा वह सुनतेही अपने घोड़े से उतर पड़ा और प्रणाम किया तुरंत दोनावें मँगवाईं एकपर शमशुन्निहार और दूसरी पर जौहरी और शाहज़ादे को बस्तु और अपने दो मनुष्य समेत बैठाये आज्ञाकी कि इनको भलीभांति इनके गृहमें पहुँचा दो वह दोनोंनावें दोनोंओर चलीं मार्ग में शाहज़ादेने उन दोनों प्यादों से कहा तुम हम दोनोंको जौहरी के महलमें कि अमुक महल्ले में रहताहै पहुँचादो परंतु वह प्यादे उससे कुछ प्रसन्न न थे उन्होंने जानबूझके उस नावको बंदीखाने की ओर पहुँचाया इस इच्छासे कि रातभर इनको बंदीखाने में रक्खें और प्रातःकाल

खलीफ़ा के सम्मुख लेजावें यह बृत्तान्त जौहरी और शाहज़ादा जानकर अत्यन्त चिन्तितहुये निदान जब उन्हें उतार बंदीख़ाने में लेगये बंदीख़ाने के अधिपति ने उनसे बृत्तांत पूंछा तो जौहरी ने सम्पूर्ण बृत्तांत कहा कि रौंद के अधिपतिने तो छोड़दिया था और आज्ञादी थी कि इन्हें घरपहुँचादो परंतु प्यादे कि जिनको हमने कुछ न दिया हमको दुःखदेनेकेलिये यहांलाये उसने जौहरी की बात सत्यजान अपने दो प्यादों को साथकरदिया और आज्ञादी कि इन दोनोंको शीघ्रही इनके घर पहुँचाआवो जोकि वहां से शाहज़ादे का महल जौहरी के घरके समीपथा इसलिये प्यादोंने उन्हें पहुँचादिया और वह दोनों बिशेष करके शाहज़ादा ऐसे थकित और अशक्ति होगये थे कि उनमें हिलनेकी भी सामर्थ्य न थी परंतु शाहज़ादे के सेवक उन दोनोंको बस्तुसहित उतारलेगये शाहज़ादेने निजदासों को आज्ञादी कि जौहरी का असबाब उठाके उसके घर पहुँचा दो जौहरी वहांसे उठ अपने घरमें आया उसके कुटुम्ब के मनुष्यरोरहे थे उसे कुशलपूर्बक देख हर्षितहुये जौहरी दो दिवसपर्यन्त निर्ब-लताके कारण अपनेघरसे बाहर न निकला तीसरेदिन मनबहलाने के लिये एक मित्रकी दूकानपर गया वहां से लौटताथा इतने में एकस्त्रीको देखा कि वह सैनसे बुलाती है निदान ध्यान से उसे देख जाना कि यह वही शमशुन्निहारकी बांदी है मार्गभर में इस भयसे कि कोई देख न ले बात न की चुपकाचला और वह दासीभी उसके पीछे लगीहुई चलीगई चलते चलते वह एक निर्जन मसजिद में गये उस लौंडीने प्रणामके पश्चात् जौहरीसे पूंछा कहो तुम चोरों से क्योंकरबचे उसने कहा प्रथम तुम अपना और दोनों बांदियों का कुशल कहो फिर मैं भी अपना बृत्तान्त कहूंगा उस लौंडी ने कहा जिससमय चोर तुम्हारे घरमें घुसगये तो मैंने जाना ख़लीफ़ा ने शमशुन्निहार का यह बृत्तान्त सुनके अपने नौकर उसके बधकरने को भेजे हैं मैं प्राणके भयसे मकानपर चढ़गई वह दोनों लौंड़ियां भी मुझे देख छतपरचढ़आईं इसीभांति हम तीनों कोठेकोठे चलते चलते एकगृहमें पहुँचे कि उस मकान का धनी बड़ा शीलवान् और

सत्पुरुषथा हमें भयभीत और कम्पितदेख अपने महल में निवास के हेतु स्थानदिया रातभर हम वहीं रहीं भोरको हम वहांसे अपने घरमें पहुँचीं बादशाही महलकी लौंड़ियां अपनी स्वामिनी को न देख अत्यन्त चिन्ता करने लगीं और हमसे पूछने लगीं हमारी स्वामिनी कहांहै तो हमने उनको धैर्यके हेतु कहा कि अपनी सखीके घर रात्रिको रहगई और हमको बिदा करदियाहै और यह कहा है कि दूसरे दिवस यहां आना यह सुन वह चुप होरहीं शेषरैनि हमारी बड़ी चिन्तासे कटी और सर्वदिवस भी बड़े शोचबिचारमें बीता कि इस सुन्दरी के बैरियोंपर क्या आपदापड़ी कि अभीतक उसका कहीं पतानहीं जब सन्ध्याहुई मैंने नदीकी ओरकाद्वार घबड़ाकेखोलदिया और केवटसे कि जिसकी नाव वहीं लगीहुईथी कहा तू अपनी नाव उसपारलेजाय एकस्त्रीको ढूंढ़ जो तुझे मिले तो उसे चढ़ाके तुरन्त यहां लेआ केवट तुरन्त वहां से किश्तीखोल उसपार लेगया अर्द्ध-रात्रिको कोई शब्द उस द्वारमें मुझे सुनपड़ा मैंने दौड़के उसकिवाड़ को खोला तो क्यादेखतीहूं उसनावपर दोमनुष्य और एकस्त्रीसवार हैं जबसमीपगई तो मैंने अपनी स्वामिनीको पहिचाना परन्तु बहुत मुरझाई हुई थी उसमें इतनी शक्ति न थी कि नावसे उतरे तब मैं और दोदासियों ने उसे नावसे उतार महलमें लाकर शय्यापर सुला दिया जब वह कुछसावधानभई तब मुझे सैनसे अपने निकट बुलाय कान में कहा तुरन्त हज़ार अशरफ़ी की थैली उन दोनों प्यादोंकोदे बिदाकर मैंने उसकी आज्ञा पालनकी अब परमेश्वरकी कृपासे अच्छी हैं और अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त जबसे चोर उनके और शाहज़ादे को तुम्हारे घरसे पकड़लेगयेथे अपने महल प्रवेशपर्यन्त सबिस्तार समझायबुझाय बर्णनकिया रत्नपारखीने भी अपना और शाहज़ादे का बृत्तांत जो कुछ कि बीताथा कहा वह उस दासी से सब चरित्र सुन जौहरीको दोथैलियां अशरफ़ी की देके बोला उस परमरूपवती को तुम्हारी बस्तुकी हानि से और तुम्हेंकष्टपहुँचने से अत्यन्तपश्चा-त्तापहुआ इसीहेतु दो तोड़े तुमको भेजादिये हैं और बहुतसा तुम्हें धैर्यदिया है जौहरीने वह तोड़ेले शमशुन्निहार और उस बांदी का

बड़ागुणमाना और उसे बिदाकर अपने घरमें आया दूसरे दिन सबबस्तु जो अपने मित्रों से मँगनी लाया था सबको पहुँचादी और जो उसे न मिला सो बनवाके पहुँचाया जो द्रव्यशेषरहा उससे एक बड़ाबिशालमहल हर्षपूर्वक बनवाना आरम्भ किया और सायङ्काल को शाहज़ादेकी भेंटकोलिये गया उसके सेवकों से उसका हाल पूंछा उन्हों ने कहा जबसे तुम उसे यहां लायेहो तबसे उसने कुछ भी न खाया और न किसीसे बातकी और न किसी के प्रश्नका उत्तरदेते हैं तुम चलके उनकोदेखो फिर जौहरीको शाहज़ादे के निकट लेगये उसने शाहज़ादेको देखा कि अपनी शय्यापर चुपचाप नेत्रमूँदे पड़ा है उसको इस दुर्दशामें देख उसको अपने हाथ से उठा बहुत धैर्य्य दिया और कहा मित्र तुम क्यों अपनेप्राणदेतेहो शाहज़ादेने उसका शब्द सुनकर जाना कि जौहरी है अपने नेत्रखोले और जौहरी का हाथ पकड़ प्रीतिपूर्व्वक दबाया और धीरे से कहा मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानताहूं कि तुमने केवल हमारेही लिये इतना कष्ट उठाया जौहरीने कहा तुम मुझपर बड़ी कृपारखते हो इससे मैं अपने को बड़ाभाग्यवान् जानताहूं अब केवल मैं आपकी आरोग्यता चाहताहूं आप कुछ खातेपीते नहींहो इससे दुर्बलताका चिह्न तुम्हारे मुखसे प्रतीत होताहै परमेश्वरके वास्ते थोड़ासा मेरेसम्मुख भोजन कीजिये तत्पश्चात् जौहरी ने पाकमँगाकर शाहज़ादेको खिलवाया शाहज़ादे ने भोजनकर हाथधोये और एकांत में शमशुन्निहारका बृत्तांत पूंछनेलगा जौहरी ने जो कुछ उस लौंड़ी से सुनाथा याथातथ्य वर्णनकर कहा अब वह अच्छी है कल उसने अपनी लौंड़ीको तुम्हारे कुशलप्रश्नार्थ भेजाथा इस समयांतर में कईबेर जौहरी ने बिदाहोकर अपने घरजानेकी इच्छाकी परन्तु शाहज़ादे ने उसे न जाने दिया इतने में अर्द्धरात्रि ब्यतीतहुई उस समय वह उससे बिदाहो घरगया और फिर प्रातःकाल शाहज़ादे के देखनेको आया शाहज़ादेको उसकी भेंटसे धैर्य्यहोताथा उसे देख उठबैठा क्षणमात्र में उसकी हानि के बदले कुछद्रब्य देनेलगा परन्तु उसने न लिया और कहा शमशुन्निहारने मुझे कुछ भेजदियाहै जिससे मैंने अपने

सब मित्रोंकी बस्तु देदी है शाहज़ादा लाचारहो चुपहोरहा जब मध्याह्नभया जौहरी ने कहा मैं बिदाहोताहूं शाहज़ादे ने निरुपाय हो उसे बिदा किया जौहरी बिदाहो अपने घर पहुँचा एक क्षण न बीताथा वही बांदी रोतीहुई उसके समीपआई जौहरीने उसके अश्रुपात और उसे कम्पितदेख पूंछा कुशल तो है आज क्यों रुदन करतीहो उसने कहा कुशल क्या है हम तुम शाहज़ादे सबके सब मारे परे जो तुम्हें और शाहज़ादेको प्राणप्रिय हैं तो तुरन्त यहां से अन्य देशमें चलेजाओ जौहरीने पूंछा क्या हुआ क्यों तू इतनाभय देतीहै तब उस लौंडीनेकहा कल जब मैं तुमसे बिदाहोकर घरपहुंची तो शमशुन्निहारने उन्हीं दो लौंडियोंमेंसे एकको जो उस रात को तुम्हारेघरआईथी किसी अपराधपर अप्रसन्न होय उसे दण्डदेनेकी आज्ञाकी सो वह बहुतसी मारखा अपने प्राणके भयसे उस महल से भागगई और सेवकों के प्रधानके निकट जाकरबैठी जो उसमहल के रक्षार्थ ख़लीफ़ाकी ओरसे नियतहैं और सम्पूर्ण रात्रिका वृत्तांत उससे कहदिया ॥

दूसरेदिन दूसरीदासी उसीसुंदरीकेभयसे भाग ख़लीफ़ाकेमुख्य महलमेंगई ईश्वरजाने वहां ख़लीफ़ासे क्याकहा तो उसनेबीसदास भेज शमशुन्निहारको पकड़बुलवाया न जानिये अब उसे मारडाला वा क्या किया मैं इसदशाकोदेख यहहालकहने के लिये तुम्हारेसमीपआईहूं यह बचनसुनतेही रत्नपारखीकी सुधि बुधि जातीरही और रोता पीटता शाहज़ादे के निकटगया तो शाहज़ादा उसे इसदशामें देख बहुतघबड़ाया और उसे अपने निकट बुलाय पूंछा उसने जो कुछ उसबांदीके मुखसेसुनाथा शाहज़ादे से कहसुनाया शाहज़ादा प्रथम तो मूर्च्छावशहुआ जब चैतन्यहुआ तो जौहरी से पूंछा अब क्याकिया चाहिये उसनेकहा इसके बिशेष और कोई उपायनहीं कि आपभी सवारहो इबनाज़पुरकी ओर चलो नहीं तो एकक्षणमें ख़लीफ़ाकेचपरासी मुझे तुझे पकड़लेजावेंगे और ख़लीफ़ा हमदोनों को अत्यन्त निरादरकर बधकरेगा शाहज़ादेने तुरन्त कईशीघ्रगामी घोड़ेतय्यारकरमँगवाये और कईसेवक सिपाहीआदि औरनिजकोश

से अशरफ़ियां और आभूषण जौहरी की कमर में बँधवा अपनी मातासे बिदाहुआ और जौहरीसमेत इबनाज़की ओर चला और रात्रि दिन वह दोनों चलेगये दूसरे दिन विश्राम के लिये प्रहर दिनचढ़े सेवकों और घोड़ोंके थकने के कारण घोड़ोंसे उतर घनेबृक्षों की शीतलछाया में ठहरगये क्षणमात्र न बीताथा कि डाकुओंनेआके उन्हेंलूटा और शाहज़ादेके सेवकोंने उनसे सामनाकिया परंतु सब मारेगये शाहज़ादा और जौहरी जो अलगरहेथे उनसेबचगये और सम्पूर्णद्रव्य बस्तु और घोड़े और उनकेशरीर से बस्त्रउतारकरभाग गये जब वे दूरचलेगये शाहज़ादेने जौहरी से कहा मुझसा अभागा कोईसंसारभरमें न होगा प्रतिक्षणनवीननवीन आपत्तिपड़ती हैं यदि हमारे धर्म्ममें अपने को बधकरडालना निषेध न होता तो अपनेको मारडालता जौहरीनेकहा हरिकीइच्छापर प्रसन्नहोय सन्तोषरखना चाहिये इसीमें कुछलाभहोगा मनुष्यकी क्याशक्ति है जो परमेश्वर की इच्छाको मेटसकै यहांठहरना उचितनहीं किसीप्रकार से अन्य स्थानपर जाय ठहरना चाहिये जहां किञ्चित् सावधानहोजावें शाह-ज़ादेनेकहा अब मैं तो यहांसेनहींउठता शमशुन्निहारके ध्यानमें इसी स्थानपर मरकेरहजाऊंगा उसके बिना जन्मअकार्थहै जौहरीने उसे बहुत समझायबुझाय वहांसेउठाया और आगेलेचला कईयोजन पहुँचनेके पश्चात् उन्हें एकमसजिद मिली उसको खुलापाके भीतर गये शेषरात्रि वहींबिताई प्रभात होतेही एकसत्पुरुषवहांआया उस ने मसजिदमें बन्दनाकरनेके पश्चात् शाहज़ादे और जौहरीको मस-जिदके कोने में बैठेहुयेदेखा वह उनके समीपगया प्रणामकरकहा मुझे तुम परदेशी जानपड़तेहो जौहरीनेकहा सत्यहै कलरात्रिकोबग़दाद से आतेथे मार्गमें डाकू सर्बधनबस्तु लूटलेगये सो तुम हमें देखलो उस पुरुष ने कहा जो तुम मेरेघरचलो तो मैं सर्बभांति से तुम्हारी सहायताकरूं वह यह समझे ऐसा न हो कि ख़लीफ़ा ने हमारे पक-ड़ने के लिये प्रसिद्धपत्र दियाहो और यह पुरुष हमें पहिचान इसी बहाने से अपने घरलेजावे इसीभांति बिचारनेलगे उसने कहा शो-चनेका क्या कारणहै मेरेसाथ क्यों नहीं चलते जौहरी ने कहा हम

दोनों नग्नहैं वस्त्रबिना लज्जाआती है दिनमें मनुष्यों के बीचमें नंगे क्योंकर जावें सो उससत्पुरुषने दो चादरेंलाके उन दोनोंको दीं और उन्हें क्षुधितजान अपनी दासी के हाथ भोजन भेजदिया उन्होंने कुछ भी भोजन न किया विशेष शाहज़ादा कि अत्यन्त निर्बल था कुछ न खासका उसी दुर्गति में पड़ारहा जौहरी शाहज़ादेके मुखका वर्ण पलटा देख भयभीतहो उसके जीवनसे निराश हुआ वह सत्पुरुष दो तीन बिरियां उनको आकर देखजाता अन्त समय जौहरी ने सत्पुरुषसे कहा मेरासाथी बहुत रोगी होगयाहै तुम इसकी आकर सुधि लेना यदि इसका हाल और तरह का होजावे तो मेरी सहायता अवश्य करना जब वह पुरुष वहां से चलागया तब शाहज़ादेने जौहरी से कहा मेरा यह अन्तसमयहै और तुम मेरे साथ के साक्षीहो कि मैं उसकी प्रीति में अबतक दृढ़हूं जो कुछ मुझे उसके मोहमें बीता उसे मैंने अत्यन्तहर्ष समझा मुझे अब कुछ पश्चात्ताप नहीं केवल यही कि मैं अपनी प्रिया दयावान् माताके निकट न गया अन्त उपदेश यह है जब मेरे नेत्र मूंद जावें और मैं स्वर्ग को सिधारूं तो मेरी लोथको इसी सत्पुरुषके घरमें छोड़ मेरी माताके निकट जाना और उससे समाचार कहना कि तेरापुत्र अमुकस्थानपर कालवशहुआ और उसने यह अन्तोपदेश किया है कि मेरी माता यहां आय बुग़दादको मेरी लोथ लेजावे और अपने सम्मुख स्नानकरा मेरे शरीरको अपने निकट गाड़े इतना कह उसने देहत्यागदी जौहरी बहुत शिर पीट रोया दूसरे दिन उसके उपदेशानुसार उसकी लोथ सत्पुरुषके घरमें रख बटोहियोंके साथ बुग़दादमें पहुँचा पहिले अपने महलमेंजाय वस्त्रबदले अनंतर स्वर्गबासी शाहज़ादेकेघरगया और चौरब्यथा और उसके मरने और अंतोपदेशका समाचार उसकी मातासे जाय कहा उसकी माता बहुत रो पीट शोककर शाहज़ादेकी लोथलानेको चली दूसरेदिन जौहरी कि शाहज़ादे के शोकमें बहुत रोया करताथा अपनेद्वारपर टहलरहाथा कि कालवस्त्रपहिरे एक स्त्री उसके निकट पहुँची जौहरीने उसे पहिचाना कि यह वही दासी है जो शमशुन्निहार की ओर से आया जाया करतीथी उसे अपने घरमें ले-

गया और उससे शमशुन्निहारके मोह में शाहज़ादेका देहान्त और उक्त स्वर्गबासी के उपदेशानुसार उसकी माताको लोथलेने जाना बर्णन किया और हाहाखा रोनेलगा वह दासी भी बहुत रोई फिर उसलौंड़ीने कहा शमशुन्निहारका भी शाहज़ादेके मोहमें देहांतहुआ फिर वह दोनों मित्रों के लिये रोनेलगे जौहरीने पूंछा कि ख़लीफ़ाने उनदोनों बांदियों से वह समाचार सुन शमशुन्निहार की क्या गति की दासीने कहा क्या अद्भुत संयोगहुआ जब ख़लीफ़ाने २० दास भेज उसे पकड़वा बुलवाया उसे रोते और तड़पते देख उसका क्रोध शान्त होगया किन्तु उसे अपने कण्ठसे लगा बहुत प्यारकर धैर्य्य दिया और उसे पारितोषिक दे आदर सन्मानपूर्बक बिदाकिया उस स्वर्गबासिनी ने अपने महलमें आय मुझसे कहा मैं तेरे हितसे बहुत प्रसन्नहुई अब मैं घड़ीपलकी होरहीहूं मैं उसकी दशा और बचन सुन बहुतरोई और धैर्य्यार्थ उससे कहा ऐसा बचन मुखसे न निकालो परमेश्वर तुम्हें जीता रक्खे हम सब तुमपर वारीहोके मरजावें उसीदिन संध्याको गानेवालियों का समूह लेके ख़लीफ़ा शमशुन्निहारके महलमें आया और ख़लीफ़ाके हुक्मके अनुसार गानाबजाना आरम्भहुआ ख़लीफ़ा शमशुन्निहारको अपनी बग़लमें ले बारहदरी में जाबैठा वह मोहके रागोंसे मूर्च्छाको प्राप्तभई कई क्षणपीछे प्राण त्यागदिये ख़लीफ़ा समझा यह अभी मूर्च्छाबशहै उसने और हम सबने बहुतसे यत्न किये पर उसने फिर श्वास न ली जब ख़लीफ़ा को बिश्वास हुआ कि यह मरगई तब बहुत रोया और आज्ञादी कि सब गानेबजानेके साज तोड़डालो इतनी आयसु पातेही वह आनन्द धाम क्षणमात्रमें शोकागार होगया और चारोंओरसे गीतों के स्वरों के बदले रोनापीटना होनेलगा ख़लीफ़ा शोकसागर में मग्नहो वहां अधिक न ठहरसका उठके अपने महल में चलागया मैं रातभर उसी मृतकके निकट बैठी रही फिर मैंने अपने हाथों उसे नहलाया धुलाया जब प्रातःकाल ख़लीफ़ाने आज्ञादी कि शमशुन्निहार को उस बड़े मक़बरे में जो पहिले उसने ख़लीफ़ासे अपने हेतु मांगलिया था इससे उसे वहीं गाड़ दिया अब मेरा यह मत है कि जिससमय

शाहज़ादेकी लोथ पुरमें पहुँचे शमशुन्निहारकेही साथ गाड़ीजावे क्योंकि यदि उनकी जीवनमें यथेष्टभेंट प्राप्त न हुई तो मरके तो एक स्थानपररहें जौहरी ने कहा कि किसकी शक्ति है जो ख़लीफ़ा की आज्ञा बिना उसको उसमक़बरे में गाड़सके दासीने कहा यह कुछ कठिन नहीं क्योंकि ख़लीफ़ाने शमशुन्निहार की सब चेरियों का मासिक नियतकर मुझे उसमक़बरेकी रक्षार्थ नियत किया और आज्ञा दी है कि जैसे तुम उसके जीने पर उसके सम्मुख हाथ बांधे खड़ी रहतीथीं उसीभाँति अब भी उद्यतरहो और मुझे वहां का परिपूर्ण अधिकार दियाहै इसके बिशेष ख़लीफ़ाको भी इनदोनों के मोहका हाल मालूम है उनदोनों बांदियों ने यह बृत्तान्त सुननेपर भी उससे कुछ न कहा किन्तु उसके साथ अधिकप्रीति और मोह करनेलगा निदान जब लोथ शाहज़ादे की बुग़दाद में पहुँची जौहरी ने यह हाल बांदी से कहा वह उसे उसमक़बरे में लेगई और हज़ारों स्त्री पुरुष उसकी लोथके साथ होगये उस बांदीने शाहज़ादेकी मातासे आज्ञाले उसे शमशुन्निहारके पहलूमें रख उसे गाड़दिया तब से संसारभरके दूरसमीप के मनुष्य उनदोनों की सच्चीप्रीतिका बृत्तांत सुन उसी मक़बरे पर आते और आशीर्व्वाददेते और अपनी अपनी कामना के लिये पूजते हैं जब शाहरज़ाद ने यह कथा सम्पूर्ण की दुनियांज़ाद ने बहुत प्रशंसाकर कहा बहिन क्या अच्छा चरित्र तूने कहा अब कोई और नवीनकथा कहो उसने कहा यदि ख़लीफ़ा प्राणदान दे तो मैं कल क़मरुज्ज़मांशाहज़ादे की कथा कहूंगी वह इससे भी अद्भुत और ललितहै ख़लीफ़ा शहरयार ने उसी कथाकी लालसा से उसका बध न किया कि उस मनोहर कथाको भी सुन लेना चाहिये ॥

## क़मरुज्ज़मां और बदौरा का बृत्तांत ॥

फ़ारसनदी से बीसदिन के रस्तेपर एक द्वीप चीलडन खालदान नामकख्यातथा उस टापू में कई देश और नगर अति सुन्दर बसे हुये थे पूर्वकालमें वहां का शाहज़मां नामक अति प्रतापवान् तेजोवान् बादशाहथा उसकी चार ब्याहता स्त्रियां और सातबांदियांथीं

परमेश्वरने उसे बहुत द्रव्य और नानाप्रकार के ऐश्वर्यदिये थे और उसे किसीप्रकार की चिन्ता न थी परन्तु पुत्र न था जो उसके राज्य का वारिसहोता बादशाह सर्वदा इसी चिन्ता और शोचमें रहता और कहा करता कि बड़ा खेद है मेरे पीछे कोई मेरा सन्तान नहीं जो मेरे सिंहासनपर बैठे एकदिन उस बादशाहने अपने मंत्री से कहा मेरीआयु ब्यर्थ बीतीजाती है अभीतक कोई पुत्र नहीं जो मेरे पीछे सिंहासनपर बैठे मन्त्री ने बिनयकी मनुष्य को उचित नहीं कि किसी अवस्था में परमेश्वरकी देनसे निराशहोवे आप एकाग्रचित्त होय ध्यानपूर्व्वक परमेश्वर से इस बिषय में प्रार्थना कीजिये और नगरके तपस्वियों और योगियों की अति सेवा कीजिये याचकोंको यथाशक्ति दान दो उनके आशीर्वादसे परमेश्वर तुमपर कृपाकरेगा बादशाहने मन्त्री के उपदेशानुसार दानदेना आरम्भ किया और अपने सम्पूर्ण देशके तपस्वियों और योगियोंको बुलवाय उनसे इस कार्य्य में सहायता मांगी निदान उनके आशीर्व्वाद से एक स्त्रीके गर्भरहा नौ महीने बीते पुत्र उत्पन्नहुआ बादशाहने बड़े हर्ष से असंख्य अशरफियां भिक्षुकों को दीं और अपने सेवकों को बहुमौल्य पारितोषिक कृपा किये इतना पुण्यकिया कि उसकी दातव्य से देशभरमें कोई याचक न रहा सबको धनाढ्य करदिया वह पुत्र अत्यन्त स्वरूपवान् उत्पन्नहुआथा इसवास्ते उसका नाम क़मरुज़्ज़मां रक्खा जब वह लिखने पढ़ने योग्य हुआ उसके हेतु बड़े बड़े विद्वान् और गुणज्ञ नियतकिये थोड़ेही कालमें वह शाहज़ादा सर्वप्रकारकी बिद्या और गुणमें निपुणहुआ जब वह पन्द्रहबर्ष का हुआ बादशाहने उसका बिवाह करना चाहा सो एकदिन क़मरुज़्ज़मांको अपने निकट बुलवाय कहा मैं चाहताहूं कि तुम्हारा बिवाह करूं तुम्हारी क्या इच्छा है शाहज़ादा बिवाहका नाम सुन मनमें बहुत अप्रसन्न हुआ और बहुतकाल पर्य्यन्त चुपका खड़ारहा बादशाह ने कहा बेटा तूने मेरे प्रश्नका उत्तर न दिया उसने बिनयकी कि पिता आपकी आज्ञाके बिरुद्ध कोई बात कहनी निपट ढिठाई है मुझे बिवाहकी इच्छानहीं क्योंकि मैंने पुस्तकों में स्त्रियों के छलमयी चरित्र

बहुत पढ़े हैं बादशाह शाहज़ादे के इस उत्तर से बहुत अप्रसन्न हुआ और कहा एकबर्षका सावकास तुम्हें दियाजाताहै उस अवसरमें समझबूझ मेरे प्रश्नका उत्तर दीजियो सो एक बर्ष के पश्चात् बादशाह ने शाहज़ादे से वही प्रश्न किया शाहज़ादे ने फिरभी अंगीकार न किया और स्त्रियोंकी बहुतसी बुराइयां बर्णनकी बादशाहने अप्रसन्नहोय शाहज़ादेको कुछ दण्ड देनाचाहा परन्तु मन्त्रीके बिनय करनेसे एक बर्षकी और अवधिदी कि उस अवधिमें शाहज़ादे ने फिरभी न माना निदान बादशाहने अपने महलमें जाय उसकी मातासे यह हाल बर्णनकर कहा तुम शाहज़ादेको समझाओ और उसे बिवाह करनेपर राज़ी करो नहीं तो मैं उसे इस आज्ञाभंग करने में दण्डदूंगा शाहज़ादेकी फ़ातिमा नामक माताने क़मरुज्ज़मां को बुलवाय ऊंचनीच समझाय बिवाहका उपदेश दिया और कहा बेटा तुम्हें पिताकी आज्ञा भंगकरनी किसी अवस्था में उचित नहीं उनकी प्रसन्नता प्रत्येक बिषय में मुख्यहै और वह कौनसा ऐसा कार्य्य है कि तुम बिवाह नहीं करते यहरीति तो हमारे पुरुषा और जातिपांति में सदा चलीआती है किसी मनुष्यको इसरीतिका उल्लंघन करना उचितनहीं क़मरुज्ज़मांने वही बात जो पितासे कहीथी मातासे भी कही और स्त्रियोंकी बुराई बर्णनकी फ़ातिमाने कहा सब स्त्रियां कुचाली नहींहोतीं बहुधाकरके पतिब्रता भी होती हैं जो तुम ने स्त्रियों के चरित्र पुस्तकों में पढ़े हैं मैंने भी उन्हीं पुस्तकों में कुचाली पुरुषों के बृत्तांत पढ़े हैं इससे यह प्रतीति नहीं कि सब पुरुष अकर्मीहों इसीहेतु सम्पूर्ण स्त्रियों को भी कुकर्मी जानना नीति नहीं निदान बहुतकाल पर्य्यन्त माताने उसे समझाया परन्तु उसने स्वीकार न किया इसीभांति कई बर्ष ब्यतीत हुये शाहज़ादे ने बिवाह अङ्गीकार न किया बादशाह ने दुःखित होय आज्ञादी इसे अमुक मकान में जो अत्यन्त सूक्ष्म और पुराना और उसमें बहुत अँधियाराहै लेजाय क़ैद करो पुनःबस्त्रों के दो चारजोड़े और कई पुस्तकें भेजदो और दासी को उसकी सेवार्थ नियतकर कहा कि शाहज़ादे के समीप कोई जाने न पावे रात्रि दिन उसी नि-

जनस्थानमें क़ैदरहे और उसकाद्वार मूंदेरहे जब क़मरुज़्ज़मां उसी मकानमें क़ैदहुआ सायङ्कालपर्य्यन्त हर्षपूर्व्वक पुस्तकें देखा किया और रात्रिको शय्यापरजाय आनन्दपूर्व्वक शयन किया दैवयोग से उसमकानमें एककुवांथा उसमें राक्षसों के बादशाह दिमरटशाह की बेटी मैमूं नामक अप्सरा रहती थी आधीरात्रिको मैमूं अप्सरा उस अपने नियम के अनुसार कुयें से बाहर निकली और संसार के अद्भुत चरित्र देखने के लिये उड़नेलगी तो वहां प्रकाश देख आश्चर्य्य में हुई और उसी किवाड़को जिसे दास ने बाहर की ओर से मूंदाथा और आप अलग सोरहाथा वह अप्सरा अपनी मायाबल से कोठेके भीतर गई वहां सुनहली शय्या और उसपर स्वच्छ बिछौना बिछादेख अधिक आश्चर्य्य किया विशेष जब उसकी दृष्टि क़मरुज़्ज़मांपर पड़ी उसकेरूप अनूप को देख मोहित हुई क़मरुज़्ज़मां का आधामुख और कुछ शरीर दुपट्टे से छिपा था उसने वह वस्त्र उठा उसको शिरसे चरणपर्य्यन्त देखा और धीरे से उसके मुख और भालको चूंबा फिर उसका मुख उसीभांति ढांक बाहर निकल आई और आकाश की ओर बायुमण्डल में उड़ी उसने किसी राक्षसके पंखोंका शब्द सुन वहीं ठहर पुकारी कौन जाता है इधरआ शाहमरशाह का बेटा नहशनामक किसी ओर उड़ाजाता था मैमूंकी आवाज़सुन तुरन्तआया अप्सरा ने उससे कहा सत्य कह तू इस समय किधर से आता है और कहां जाता है और इस रैनि में तूने सांसारिक चरित्र क्या देखे उसने कहा हे शाहज़ादी! मैं इससमय चीनदेशसे कि वहां से दूर समीप के सम्पूर्ण द्वीप दिखाई देते हैं उड़ाआताहूं चीनके बादशाहका नाम गोर है उसकी बेटी जिसकानाम बदौरा है ऐसी सुन्दरी और रूपवती है कि उसके सदृश इससमयमें हमारीजाति और मनुष्यगणों में कोई नहीं है और न होगी उसकी अलकें चन्द्रमुखपर घटाके सदृश लटकती हैं और केशों में अति सुन्दर दामिनी सदृश शोभायमान दिखाई देता है भाल अतिउज्ज्वल दर्पण के सदृश नयन अतितिरीछे और मदभरे और शुककीसी नासिका और सूक्ष्ममुख और बिम्बाफल के समान

चित्र अप्सराका कि सोते हुये कमरुज़्ज़माँको देखकर मुख चूमा चाहती है



रक्तओष्ठ और दन्त मानो मोतियोंकी दुलड़ी वाणी अतिप्रिय और मि-
ष्टमनहरण अतिकोमल और मनोहरबचन उसकी छाती अतिउज्ज्वल
और बड़ी हँसमुख मनहरणी प्रियबैनी सुखदैनी है बादशाह ने उसके
हेतु सातदरजे का महल बनवाया है किरोड़ों रुपये उसके बनवाने
में व्ययकिये पहिलाखण्ड बिल्लौरका दूसरा तांबेका तीसरा फ़ौलाद
का चौथा पीतलका पांचवां कसौटी के पत्थर का छठा रूपेका सा-
तवां स्वर्णका उसमहल के चारों ओर पुष्पवाटिका है हरप्रकार के सु-
गन्धित पुष्प और नानाप्रकारके सफल वृक्ष और स्थान स्थानपर
फ़व्वारे और कमलयुक्त सरोवर और उनके तटपर सघनवृक्ष अ-
तिसुन्दर जिनसे धूप प्रबेश नहीं करती और उनके नीचे मन्द मन्द
शीतल सुगन्धित वायु बहती है वह स्थान अतिरमणीक और शो-
भायमानहै देश २ के शाहज़ादे और बादशाह उस चन्द्रमुखी गज-
गामिनी चम्पकवर्णी की सौन्दर्यता को सुन बिवाहका नेग देते हैं पर
उसकी अद्भुतरीति है कि उसके पिताने उसे इसबिषय से स्वाधीन
कियाहै परन्तु शाहज़ादीको बिवाहसे अत्यंतग्लानि है उसके माता
पिताने उसे बहुत समझाया परंतु वह स्वीकार नहीं करती और
कहती है जो तुम इसबिषय में तकरारकरोगे तो खड्गमार मर जा-
ऊंगी इसीहेतु बादशाहने उसे एकमकान में बन्दकररक्खा है और
दशबृद्धास्त्रियां उसकी सेवाकरती हैं और उनसबपर शाहज़ादीकी
दाई जिसने उसे दुग्ध पिलाया था प्रधान है अब न तो वह कहीं
निकलसक्ती है न कोई उसके निकट जासक्ता है और बादशाह ने
अपनी पुत्री को बिक्षिप्त समझ निज देश में यह प्रसिद्धपत्र दिया
है कि जो बैद्य वा ज्योतिषी वा मंत्रज्ञ इसे अच्छाकरै मैं उसीकेसाथ
इसका बिवाहकरदूंगा पुनः उस राक्षसने मैमूं अप्सरा से कहा मुझे
उस शाहज़ादी के बन्दहोने से बड़ा खेदहै ऐसी रूपवती होनेपर
ऐसे कष्ट को प्राप्तहो मैमूंने शाहज़ादी के रूपकी प्रशंसासुन राक्षस
से भी कहा हे दुष्ट अयोग्य! तूने एक तुच्छ लड़की की इतनी प्रशं-
साकी यदि तू शाहज़ादे को कि जिसको मैंने देखाहै और उसे प्यार
करती हूं देखे तो जाने कि रूप और सौन्दर्य उसी को कहते हैं

और बिश्वासहै कि तूभी उसे देख चीनकी शाहज़ादी को भूलजा-वेगा नहशने पूंछा हे सुन्दरी! वह शाहज़ादा कहां है अप्सराने उत्तर दिया वह यहांसे अतिसमीप है और वहभी बिवाहके अङ्गीकार न करने से कष्ट उठाता है तबसे वह पुराने और निर्जनस्थान में जहां मैं रहीहूं बन्दहै नहशनेकहा यदि मैं उसशाहज़ादेकोदेखूं तो बिदित हो कि वहदोनों सुन्दरतामें तुल्यहैं वा न्यूनाधिकहैं परंतु मुझे बिश्वा-सहै कि चीनकी शाहज़ादी कहीं अधिकरूपवती होगी अप्सराने कहा क्यों झखमारताहै वह शाहज़ादी मेरे शाहज़ादेके पासंगको भी नहीं पहुँचती निदान उस राक्षस और अप्सरा में बहुतकालपर्य्यन्त तकराररही अन्तको राक्षसने कहा हे सुन्दरी! तुम्हें क्योंकर बि-श्वासहो कि मैं सच्चाहूं वा झूंठा जो कहो तो मैं उसेलाके दिखाऊं कि तुम्हें मेरे कहनेका बिश्वासहो और फिर मैं तुम्हारे शाहज़ादे को देखूं और उनदोनोंका अन्तरबिचारूं अप्सराने कहा बहुत अच्छा तू उसे मेरेशाहज़ादेके पहलू में लिटाके देख उन दोनों में कौन अ-धिक सुन्दरहै राक्षस वहांसे उड़ा और चीनदेश की शाहज़ादी को जो निद्रामें थी उठालाया और उनदोनों ने उसे शाहज़ादे के पास लिटाया पुनः उनदोनोंमें बहुतकाल तकराररही दोनों अपनी २ बा-तको दृढ़ और सूचितकरते निदान अप्सराने कहा तेरी शाहज़ादी तो परमसुंदरीहै परंतु मेरेशाहज़ादे के रूपको नहीं पहुँचती उनदो-नोंने कहा किसीतीसरे मनुष्यको जो रूपकीपहिचान रखताहो हम उसे न्यायी बदें तब अप्सराने एकठोकर पृथ्वीपर मारी और पृथ्वी फटगई उसमें से एक पिशाच कुबड़ालँगड़ा काना जिसके शिरपर छः सींगथे और उसके हाथ पांव बड़े और नाम उसका कसकस वहांसे बाहर निकला उस राक्षसने प्रणामकर एंकघुटनेके बल खड़े होके अप्सरासे बिनयकी इस सेवकको क्यों बुलाया अप्सराने कहा मुझ और नहशमें कुछ तकरारहै उसका तू निर्णयकरदे तू इन दो-नोंको जो शय्यापर अचेतसोते हैं ध्यानधरदेख कि इनमें कौनसा अधिक सुन्दर है कसकसने उनदोनोंको बड़े शोचबिचार से देखा और शिर से पांव पर्य्यन्त दोनोंको बहुकालतक देखा किया परन्तु

चित्रकसकसपिशाचकाबदूरकोउड़ालेजाते हुये. ॥



दोनों स्वरूप और अनूपछबि में तुल्यथे किसी को अच्छा न कह सका निदान बहुतशोच के अप्सरा से कहा जो यह दोनों पारीपारी से जागके परस्पर प्रीति और मोह प्रकटकरें तो निःसन्देह उनके रूपमें प्रकटहो क्योंकि कोई एक बिषयमें उत्तम दिखाई देताहै और दूसरा वैसा नहीं अप्सरा और राक्षस ने कसकस की इसबात को पसन्दकिया पहिले मैमूंने पिस्सू बनकर क़मरुज्ज़मां के गले में इस बेगसे काटा कि वह जागपड़ा और अपना हाथ गर्दनपर पिस्सूके पकड़ने के लिये मारा परन्तु उसे न पकड़सका फिर वह पिस्सू अपने पूर्वस्वरूपमें हो क़मरुज्ज़मांकी दृष्टिसे गुप्तहोगया वह तीनों अर्थात् मैमूंअप्सरा व नहश व कसकस राक्षस बायुचारी एक स्थान पर एकत्र खड़े हो उन दोनों को देखनेलगे क़मरुज्ज़मां आंख खोल चीनकी शाहज़ादी को अपने निकट सोतेहुये देखतेही मनसे उसपर मोहितहोगया स्त्रियोंसे ग्लानि करनेपर भी अकस्मात् चीनकी शाहज़ादी की प्रीतिमें ऐसामग्नहो बेबशी की दशामें प्राप्तहो कभी तो उसकामुख कभीभाल और कभी होंठचूंबता और शाहज़ादी नहश की मायावश से अचेतसोती थी उसे कुछभी यह समाचार बिदित न था शाहज़ादे ने समझा कि यह वही सुन्दरी है जिसके साथ मेरेमाता पिता ने बिवाह बिचाराथा जो मुझे इसे पहिले से दिखादेते तो मैं अवश्य स्वीकार करता अपने मनमें मातापिताकी आज्ञाभंग करने से लज्जितहुआ प्रीतिसे उसे जगानाचाहा परन्तु वह राक्षस के मन्त्रकी शक्तिसे न जगी फिर उसने अपनी प्यारी की नीलमणि की अँगूठी उतार अपनी हीरेकी अँगूठी उसे पहिनाई और उसकी आप पहिनली और अपने स्थानपर लेटरहा और अप्सरा के मन्त्र से तुरन्त निद्राबश हो अचेत होगया पुनः राक्षस ने मच्छड़ बन चीनकी शाहज़ादी के होंठमें काटा जिसकी व्यथा से वह जाग उठी और अपने साथ एक सुन्दर तरुणपुरुष को सोते देख आश्चर्यितहुई और बिवाह अंगीकार न करने परभी मोहित होगई और मनमें समझी कि मेरे पितानें इसी मनुष्य के साथ बिवाह ठहरायाथा परन्तु मैंने बहुतबुरा किया जो समझे बूझे बिना इन्कार

कर उन्हें अप्रसन्न किया और क्या बातहै कि दूलह अचेत सोता है मुझसे बातचीत और बिहार नहीं करता कुछसमय में जब वह प्रीतिको रोक न सकी और क़मरुज़्ज़मांकी बांहपकड़ बहुत हिलाया कि वह जगे परन्तु वह राक्षसके मन्त्रके बलसे न जगा शाहज़ादी निरुपायहो परमप्रीति और मोहसे उनके हाथ चूमनेलगी और देखा कि मेरी अँगूठी उसकी अंगुलीमेंहै और उसकी मैं पहिनेहूं इससे उसे बिश्वास हुआ मेरा बिवाह इसी रूपवान् पुरुषके साथहुआ फिर कण्ठसेलगा बहुत प्यार किया और अपने स्थानपर सोरही मैमूंअप्सराने राक्षस से कहा तूनेदेखा मेराशाहज़ादा इसशाहज़ादी से सौन्दर्य्यतामें श्रेष्ठ है अब तू तुरन्त शाहज़ादी को जहांसेलाया था वहीं पहुँचादे और कसकस पिशाचको बिदाकर आप कुयेंमें जाय आनन्दपूर्बक सोरही जब क़मरुज़्ज़मां प्रभातकोजागा और अपनी प्यारीको न देख बिस्मितहो चारोंओर देखनेलगा निदान समझा कि मेरे पिताने उसेबुला लिया अधैर्य्यहो उसी दासको पुकारा वह आय शाहज़ादेकी सेवा करनेलगा शाहज़ादेने अपनी नियमित क्रियाके पश्चात् दाससेपूंछा सत्यकह वह स्त्री जो मेरे समीप रात्रिको सोतीथी यहां क्योंकरआई और अब कहां है दासने बिनयकी स्वामी मैंने उस सुन्दरी को नहीं देखा वह क्योंकर इसकोठेके भीतर जिसका किवाड़ बाहरकी ओरसे बन्दकर कुफुललगायाथा आसक्ती है आपने स्वप्नदेखाहोगा क़मरुज़्ज़मांने क्रोधित होय उसे बहुत मारा और कहा तू मुझे उस स्त्री के समाचार बिदित नहींकरता तू बड़ादुष्टहै जबतक मैं तुझे भलीभांति दण्ड न दूंगा तबतक तू कुछभी बर्णन न करेगा निदान दासको रस्सी से बांध कुयेंमें लटकादिया दासने शोचा यह शाहज़ादा कुछ बिक्षिप्त और मूर्खहै मुझेकहीं मार न डाले अब किसीयत्नसे बचो दासने पुकारकेकहा जो मुझे प्राणदानहो तो उस सुन्दरीका बृत्तान्तबतादूं क़मरुज़्ज़मांने उसेकुयेंसे निकाल छोड़ दिया और कहा तुरन्तबता उसने कहा मैं सावधानहोलूं तो बतलाऊं लघुशङ्काके बहाने से कोठे के बाहरनिकल शीघ्र उसकाद्वारमूँद वहांसेभाग बादशाहके निकटआया और सारासमाचार शाहज़ादे और अपने मारखाने और कूप में

लटकाये जानेका बादशाहसे प्रकटकर कहा स्वामी आप विचारिये वह मकान बाहर से बंद और यह सेवक किवाड़ से लगके सोया था वह स्त्री जिसे शाहज़ादा मुझसे पूछता है किधर से गई आप शीघ्र जाय शाहज़ादे को देखें बादशाह दास से यह बात सुन बिस्मितहुआ और मंत्री को आज्ञादी तू तुरन्तजा और शाहज़ादेका वृत्तान्त मालूम करके मुझसे प्रकटकर मन्त्री तुरन्त शाहज़ादे के सम्मुखगया दण्डवत्‌कर उसके निकट बैठकहा आपके पिता दास से आपका वृत्तान्त सुन अत्यन्तचिंतित हुये और मुझे उसी स्त्री के समाचार बिदित करने को जिसे तुमने स्वप्न में देखा था भेजाहै शाहज़ादे ने कहा वह दास बड़ादुष्ट है मुझे उस स्त्री का हाल जो रात्रिको मेरे समीप सोतीथी नहीं बताया परमेश्वर के वास्ते तुम कहो वहसुन्दरी मृगनयनी जिसे मेरेपिताने रैनिको मेरे निकट भेजा था और उसीकेसाथ मेराबिवाह बिचाराथा कहां है मैं उसके देखे बिना निपटबेचैन और अधैर्य्यहूं जो बादशाह पूर्व्व से मुझे उस छविधामको दिखाते तो मैं काहेको ऐसीसुन्दरस्त्रीसे बिवाह स्वीकार न करता और उनके कोप में पड़ता मन्त्री ने यह सुन शाहज़ादेसे कहा महाराज आप क्या कहते हैं आपके मकान में जो बाहर से बंदथा क्योंकर स्त्रीगई आपने उसे स्वप्नावस्था में देखाहोगा शाहज़ादेने अप्रसन्नहो मन्त्रीकी दाढ़ी पकड़ली और भलीभांति ताड़नाकी मन्त्रीने अपनेप्राण बचानेके लिये कहा इससेवक को बिदित नहीं बादशाह ने किसी स्त्रीको आपके निकट भेजाहोगा अब मुझे आज्ञाहो तो मैं बादशाहसे बिनतीकर उस परमरूपवती को आपके समीप भिजवादूं शाहज़ादेने मन्त्री से कहा अब तू राहपर आया शीघ्रजा और मेरीप्यारी अतिसुन्दरी कोमलांगीको भिजवादे मंत्री बाहर निकलभागा और बादशाह के सम्मुख जाय कहा स्वामी जो दासने आपसे बिनयकी थी वह सब सत्य है शाहज़ादे ने मुझे भी मारा और कहता है कि शीघ्र उसी सुन्दरी को जो रातको मेरेसमीप सोती थी ला बादशाह इस बचन को सुन अत्यन्तचिंतित और व्यथित हुआ और आपही शाहज़ादे के निकट गया जब

वहांपहुँचा शाहज़ादे को भलाचंगा और सावधान देख प्रसन्नहुआ और उसे अपने कण्ठसे लगाय पूछा बेटा वह कौन स्त्री थी जो रात को तुम्हारे समीप आय सोई मैं कुछ नहीं जानता और अत्यन्तबिस्मितहूं यहमकान तो बंदथा किसमार्गसे स्त्रीयहांआई प्रत्यक्षमेंस्त्री काआना किसी बिधिसे नहींहोसक्ता तुमने उसे स्वप्नमें देखाहोगा शाहज़ादेने बिनयकी मैंने उसस्त्रीको स्वप्नमें नहींदेखा किंतु जाग्रत् अवस्थामें देखाहै इसकी साक्षी यह अँगूठी है फिर शाहज़ादेने चीन की शाहज़ादीकीअँगूठी उतार दिखाई किमैंने अपनीअँगूठी उसकी अंगुलीमें पहिनाई और उसकी आपपहिनली आप भले प्रकार शोचिये यदि वहयुवती मेरेपास स्वप्नमें आती तो अँगूठीक्योंकर बदलती न तो मैं मंदबुद्धिहूं और न बिक्षिप्त मैं तो सावधानहूं परमेश्वरके वास्ते उस परमप्रिया कोमलांगी को मेरेपास भिजवादीजिये उसके देखे बिना मुझे आनन्द नहीं जो आप प्रथमसे उससुन्दरी चन्द्रमुखी को एकबेर दिखाते तो मैं बिवाह आपअंगीकारकरता मैं न जानताथा कि आपने मेरा ऐसी सुन्दरीसे बिवाह ठहराया है बादशाह अँगूठी देख शोचने लगा कि यह अँगूठी शाहज़ादे की नहीं किसी और की है हमारे राज्यभर में इस बनावटकी अँगूठी नहीं बनती इसके बिशेष इसका नग बहुमोल्य है इससे प्रतीत होताहै कि शाहज़ादे का बचन मिथ्यानहीं परन्तु शोच यहहै कि प्रत्यक्ष में ऐसी सुन्दरी तरुणस्त्री बंदकोठे में इसके समीप क्योंकर आई यह क्या अच्छी बातहै किसमझमें नहीं आती अनन्तर क़मरुज़्ज़मांको वहां से लेजाय निज मन्दिर में रक्खा और प्रकट में उसका बहुत समाधान किया कि उस स्त्रीको हम ढूंढ़ तुम्हारा बिवाह उसीके साथ कियेदेते हैं तुम निश्चिन्तरहो और आप रातदिन अपने बेटेके निकट रहने लगा मन्त्रीने बिनयकी मेरे बिचार से उचित है आप पूर्ववत् राज्य के प्रबन्धमें प्रवृत्तरहैं किसीप्रकारकी हानि राज्यमें न हो और शाहज़ादेको खिरद टापूके कोटमें जो नदीके कूलपरहै भेजदीजिये वहां चारोंओरसे जहाज़ आतेजातेहैं और देशदेशका समाचार बिदित होताहै शाहजादेका चित्त वहां बहलेगा वहगढ़ बहुत दूर नहीं बाद-

शाहने मन्त्रीकेमतसे प्रसन्नहो क़मरुज्ज़मांको उसी कोटमें भेजदिया और आपभी प्रायः उसमें जायाकरता यहांतो क़मरुज्ज़मांकी यह दशाथी जो ऊपर बर्णन कियागया अब उधरका समाचारसुनो जब उस राक्षसने चीनकी शाहज़ादीको उसके निजस्थानपर शय्यास्थ किया भोरहोतेही जागकर अपने दाहिनेबायें क़मरुज्ज़मांको ढूंढ़ने लगी उसे न पाके बृद्धाको जो उसकी रक्षकथी घबराकर पुकारा और पूंछा वह अतिसुन्दर पुरुष जो रैनि में मेरेसाथ सोताथा कहां है उसके देखे बिना मैं अत्यन्तब्याकुल हूं तुरन्त उसे मेरे समीपला बृद्धा यह बचनसुन बिस्मित हुई और बिनतीकी कि हे मेरी प्यारी शाहज़ादी! कुशल तोहै क्या कहतीहो जिसमहलमें तुमनेशयनकिया है मनुष्यकी तो क्यागतिहै वहां पक्षी भी पर मार नहींसक्ते तुमने क्या स्वप्नदेखा जिसका बिचार अबतक तुम्हें बना है परमेश्वर के वास्ते ऐसीबातें न करो बादशाह यह बचनसुन हमारीगर्दनमारेगा शाहज़ादी कि अपने प्रियतमके मोहमें पगिके बिह्वलथी झुँझलाय दाई के शिरके केशपकड़ उसे बहुतमारा दाई अपने को छिटकाके भागी और बादशाह और मल्कासे अपने मारखाने और शाहज़ादी की बिक्षिप्तताका समाचार जाय सुनाया वह दोनों अतिदुःखित होय शाहज़ादी के समीपगये और उससे कहा हे बेटी! तूने रात्रिको क्या स्वप्नदेखा जिससे तुम ब्याकुल और दुःखितहो बेटीने लज्जितहोय नेत्र नीचे करके अपने माता पितासे कहा तुम मेरा बिवाह करते थे और मैं स्वीकार न करती रातको मैंने एक नवकिशोर मनुष्य को अपने पास सोते देखा उसपर मैं मोहितहुई तुरन्त मेरा उसके साथ ब्याह करो नहीं तो मैं खांड़ा मार मरजाऊंगी जो तुम मुझे पूर्व्व में उस पुरुषको दिखाते तो मैं अवश्य उसे आप स्वीकार करती यदि तुम्हें मेरे कहने की प्रतीत न हो तो देखो उस सुन्दर पुरुषने मुझे अपनी अँगूठी पहिनादी है और मेरी आप पहिनली है उसके माता पिताने अँगूठी देख जाना यह अँगूठी बहुमौल्य किसी अन्य पुरुषकी है शाहज़ादी की नहीं पुनः उन दोनों ने बहुत बिचार किया कि यह अँगूठी क्योंकर बदली गई और वह

पुरुष इस बन्दीखाने में किसप्रकार आया और बेटीके पास सोया परन्तु मुख्य समाचार के मूलको न पहुँचे निदान शाहज़ादी को बिक्षिप्त और उसपर मोहितजान सुनहली बेड़ियां उसके पांव में डालीं और आज्ञादी कि इसकी दाई के सिवाय कोईभी निवासस्थान में न जानेपावे और उसमहलके चहुँओर कईपहरे बैठादिये और वहांसे अत्यन्त मुरझाय और दुःखितहोय अपने महल में आये दूसरे दिन उसने अपने सम्पूर्ण सभासदों और पुरके अधिष्ठाताओं को बुलाय कहा जो कोई मेरीबेटीको अच्छाकरे और वह सावधान और चैतन्य होजावे तो मैं इसे उसीके साथ ब्याहदूंगा और मेरे पीछे वही सिंहासनपर बैठ राज्यकरेगा और इसीसमाचार को राज्य भर में प्रसिद्ध किया और आज्ञादी जो कोई यत्नकरनेपर भी मेरी बेटी को अच्छा न करसकेगा उसे बधकरूंगा तथापि बिवाहके लोभ से बहुत से मनुष्यों ने अनेक प्रकारके उपाय किये परन्तु कुछ भी लाभकारी न हुये बादशाहने उनके शिर कटवाय शहरपनाह के द्वारपर लटकवा दिये कईबर्ष में बैद्य और ज्योतिषी और मायावी गुणवानों के अनुमान डेढ़सौ शिरके जिन्हों ने अपनी अपनी कृत्य की और निष्फलहुये प्राणसे मारेगये उसी दाईका जो शाहज़ादी की रक्षकथी एक पुत्र था उसका नाम मरजवां था वह बाल्यावस्था से शाहज़ादीके साथ प्रीतिरखता जब वह दोनों सयाने हुये और उन दोनोंमें बियोगहुआ मरजवांको बालापनसे ज्योतिष् और रमल बि- द्याके सीखनेकी अभिलाषाहुई बहुकालतक चीनदेश में इन बिद्या- ओंको सीखा तिसपीछे अन्यदेशों में और बिद्याओंके सीखने को फिरा जब वह बहुत बर्षोंबीते सब बिद्याओं में निपुणहो लौटा तो अपने नगरमें आय शहरपनाहके द्वारपर मनुष्योंके मस्तक लटके देख बिस्मितहो घरमें पहुँचा शाहज़ादी का समाचारपूंछा उसकेघर वालोंने कहा वह तो बहुतकालसे बिक्षिप्तहोगई है बादशाहने उसे एक बन्दीखाने में बेड़ियांडाल क़ैदकररक्खा है केवल तुम्हारीमाता उस के पास आयाजाया करती है और बादशाह ने यह डौंड़ी फिरवाई है जो कोई शाहज़ादी को सचेतकरैगा उसीकेसाथ उसका बिवाहकर

दूंगा यदि उसे अच्छा न करसकेगा तो उसकी गर्दनमारूंगा यह समाचारपाय नानाभांति के गुणज्ञ अनुमान डेढ़सौके आये और उन्होंने अपनी अपनी बिद्यासे उसका उपाय किया जब उनकायत्न बृथाहुआ तब उन सबको मारकर उनके शिर शहरपनाहके द्वारपर लटकायेगये शेषबृत्तान्त तुम्हें तुम्हारी मातासे सबिस्तर बिदित होगा निदान जब दाईने अपने बेटेके आगमन का समाचार सुना बिदाहो घरमें आई अपने बेटेको बहुतदिनों के पीछे देख प्रसन्नहुई थोड़ीदेरपीछे शाहज़ादीका बृत्तान्तकहा मरजवांनेकहा किसी विधि उससे मेरी भेंटगुप्तभी होसक्ती है जिससे मैं उसके रोगकी परीक्षालूं उसकी माताने उत्तरदिया मैं इसबातको पूछके तुमसे कहूंगी यह कह शाहज़ादीके निकटगई दूसरेदिन पहरेके अधिपति से कहा भाई तुम्हें बिदितहोगा मेरीएकबेटी है जिसको मैंने शाहज़ादी के साथ दूधपिलायाथा कईबर्षबीते मैंने उसका बिवाहकरदियाथा अब वह ससुरालसे मेरेघर आई है शाहज़ादी उसके आगमन का समाचार सुन उसके देखनेकी लालसा रखती है यदि तुम्हारी इच्छाहो तो आजरात्रिको वहआय भेंटकरजावे परन्तु वह किसीके साम्हने नहीं आती प्रधानने कहा बहुत अच्छा प्रहररात्रि बीते बादशाह शयन करने के लिये महलमें प्रबेशकरते हैं तू उससमय उसेलेआइयो मैं द्वार खुला रक्खूंगा मुझेशाहज़ादीका मन रखनाहै दाई यह आज्ञा पाय मरजवांको स्त्रीकेबसन पहिराय शाहज़ादी के महलमें लेगई दाईने पहिलेजाय उसके आगमनका समाचार और भेंटकी इच्छा बर्णनकी शाहज़ादी मरजवांका समाचार सुन प्रसन्नहुई और कहा शीघ्रउसे ला जब मरज़वां गया तो पहिले दण्डवत्‌कर खड़ा भया शाहज़ादीने कहा मरजवांभाई आगे आवो कि मैं तुम्हें भलीभांति देखूं और अपने मुखसे बस्त्रउतारकरकहा भाई बहिनमें क्यापरदा है मरजवांने आगे जाय फिर दण्डवत्‌की शाहज़ादीने कहा इस समय मैं तुझे देख बहुतहर्षितहुई तेरीभेंटको मेराजी बहुत चाहताथा मर-जवांने बिनयकी इससेवकको आपने कृतार्थ किया मुझे सदा आप की सुधिबनीरहतीथी और आशीर्बाद दिया करताथा मेरा भाग्य

उदयहुआ कि फिर आपके चरणकमलों के दर्शनहुये यह कह अपनी ज्योतिष और रमलकी पुस्तक निकाल उसके रोगकी परीक्षाकरनेलगा शाहज़ादीने पुस्तक और सामग्रीको देख मरजवां से कहा भाई तू मुझे बिक्षिप्त समझता है मैं चंगी भली सावधान हूं लोग मेरे बृत्तान्त को नहीं जानते इस हेतु मुझे बावली समझ रक्खा है न तो आजतक मेरा बृत्तान्त किसी ने जाना और न किसी ने उसका उपाय किया फिर उसने साराबृत्तान्त सबिस्तर वर्णन किया और कहा उसी नवकिशोरके बियोगमें मेरी यह दशा भई जब उसकी भेंट होगी तो मैं अच्छी होजाऊंगी कोई मुझे व्यथित देख बिक्षिप्त कहता है और कोई प्रेतबाधा बताता है परन्तु साक्षात् न तो मैं सौदाइनहूं और न बिक्षिप्त न किसी भूतप्रेतकादोष है मरजवां यह बृत्तान्त बहुकाल पर्य्यन्त बिस्मित हो चुपका खड़ा सुनाकिया तदनन्तर बिनयकी हे शाहज़ादी ! मुझे तुम्हारे कहनेकी प्रतीतहुई और तुम्हारा वृत्तांत मुझे बिदितहुआ तुम भरोसा रक्खो कुछदिन और ठहरो मैं उस पुरुषके ढूंढ़ने के लिये जाताहूं यदिपरमेश्वरकी इच्छा है तो मैं शीघ्र उसे तुम्हारे समीप लाताहूं नहीं तो अपनामुख न दिखाऊंगा जब मेरे आगमनका सन्देशा इसनगरमें सुनना तो बिश्वासमानना तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगया है यहकह शाहज़ादीसे बिदाभया और यात्राकी तय्यारीकर सिधारा नगर २ गांव २ द्वीप २ जाता और बदौराकेरूपकी प्रशंसा और बिक्षिप्तता काहाल सुनता निदान मरजवां यात्रा करताहुआ चारमहीने पीछे एकपुरमें जो बहुत बसाहुआ एकनदी के कूलपरथा पहुंचा और क़मरुज़्ज़मांकानाम चीनकी शाहज़ादी के सदृश बीमारहोनेकासुन मनमें हर्षितहो पुरबासियों से पूछा कि किस देशमें यह शाहज़ादा रहताहै उन्होंनेकहा क़मरुज़्ज़मांके द्वीपमें जानेके दोमार्ग हैं एकतो खुश्कीका और दूसरानदीकेद्वारा जलकामार्ग खुश्कीसे अतिसमीप है मरजवां जलकेमार्ग्गसेजाना स्वीकारकर एकब्यापारीके साथ जो उस ओर को जाताथा जहाज़पर सवारहुआ वायु अनुकूलहोने से जहाज़के द्वारा शीघ्रक़मरुज़्ज़मांके राज्य में पहुंचा परन्तु जब कोट

के निकट जहाज़ आया ईश्वरकी इच्छासे पहाड़से टक्करखा टूटगया और सम्पूर्ण मनुष्य जलमें डूबगये परन्तु मरजवां कि पैराकीमें भी निपुणथा एकपाटके सहारे पैरताहुआ उसीकोटके नीचे जहां क़मरुज़्ज़मांको उसके पिताने रक्खा था पहुँचा दैवयोगसे उसकाल शाहज़मांभी नदीकीतरफ़ देखताथा मरजवांको डूबते और पैरते देख मंत्रीको आज्ञादी इस मनुष्यको तुरंत जलसे निकलवाओ ऐसा न हो जो यह डूबजाये केवट यह आज्ञापाय मरजवां को हाथों हाथ नदीसे निकाल बादशाह के सम्मुखलेगये बादशाह उसे देखतेही समझा यहमनुष्य बुद्धिमान्है उसेशाहज़ादेका समाचारबताय कहा इसकाउपाय कियाचाहिये पुनः बादशाह साराहाल क़मरुज़्ज़मां का मरजवांसे कहिके उसको शाहज़ादे के निकटलेगया मरजवांको उसकी दशा देखने और अँगूठीके बदलने से सूचितहुआ यह वही शाहज़ादाहै जिसपर चीनकी शाहज़ादी मोहितहै उसीके बियोग में इसकी यह दशाहोगई यह सब बातें समझबूझ बादशाहसे बिनयकी हे दीनदयाल ! मैं चाहताहूं आपके पुत्रसे एकघड़ी एकान्त में कुछबार्त्ताकरूं बादशाह मरजवांको अपनेपुत्र के समीपछोड़ आप दूसरीजगहजायबैठा कमरुज़्ज़मांने एकान्तमें उससे पूंछा तुम कौन हो और तुम्हारा आगमन किधर से हुआ मरजवां ने उत्तरदिया मैं चीनकावासीहूं उसस्त्री को जो तुम्हारे निकट सोईथी और जिस की अँगूठी तुमने बदली है भलीभांति जानताहूं वह बड़े प्रतापवान् धीमान् गोरनामक चीनके बादशाहकी कन्याहै और तुम्हारी प्रिया कानाम बदौराहै वहभी तुम्हारे मोहरूपी सागरमें मग्न और बिरहरूपी अग्निमें जलती और तुम्हारे बियोग में बहुत बेचैन रहती है सो उसीशाहज़ादीने कि उसका मैं बिश्वासीहूं उसीरात्रिका समाचार जिसमें वह तुम्हारे समीप सोई थी मुझसे सबिस्तर बर्णन किया उसकेपिताने उसेभी बिक्षिप्त समझ उसेक़ैदकर रक्खाहै और अपने राज्यभरमें यह प्रसिद्धपत्रदियाहै जो मनुष्य मेरी बेटीको अच्छाकरेगा मैं उसीकेसाथ उसेब्याहदूंगा और वही मेरेपीछे सिंहासन पर बैठ राज्य करेगा और जिसका उपाय उपयोगी न होगा

उसको बधकरूंगा सो उससमय से अबतक अनुमान डेढ़सौ मनुष्यके कि उन्हों ने उसका उपाय किया और निष्फलहुआ प्राण से मारेगये और उनके मस्तक नगरके द्वारपर लटकायेगये तुम निस्संदेह अपनी प्यारीको कि उसे केवल तुम्हारे बियोगका रोगहै अच्छाकरोगे और अपनी प्रतिज्ञानुसार उसका पिता तुम्हारे साथ उसका बिवाहकरेगा अब तुम्हें उचितहै पहिले तुम बलकारी भोजनकर सावधानहो—मरजवां के इन कोमल बचनों से क़मरुज्ज़मां को ऐसाहर्षहुआ कि उसी समय अपनी प्यारीके भेंटकी आशा से सबलहोय खड़ाहोगया और स्वच्छबस्त्र मँगवाय पहिने अपने पिता केसाथ हर्षपूर्व्वक भोजन किया और हरएक से हँसने बोलनेलगा बादशाह अपने पुत्रको प्रसन्नचित्तपाय अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसे कंठसेलगाय प्यारकर उसी कोटसे अपनेमहलमें लेगया और पुरवासियों और सभासदों को बड़े हर्ष से निमंत्रणकर यथाबिधि सत्कारकर बड़ा उत्सव किया और अपने भृत्यगणों को यथोचित् सन्मानकर पारितोषिकादि दे निहाल किया और याचक मंगनों को असंख्यदानदे धनाढ्य किया बंदियोंको जोड़े तोड़े और अनगिनत द्रव्यदे छोंड़दिया निदान वहांके बासी जितना कि शाहज़ादेके रोग से व्यथितथे उतनेही उसके चैतन्यहोने से हर्षितहुये क़मरुज्ज़मां जो चीनकी शाहज़ादी के बियोग में बहुकाल से खानापीना और सोना भूलगयाथा अब स्नानकर और बस्त्र बदल आनन्दपूर्व्वक सोया फिर जगके भलीभांति भोजनकिया कुछ दिनोंमें स्वादिष्ठ और बलदायी पाकोंके भोजनसे उसे शक्तिहुई और रूपरंग उसका अच्छा निकला जब उसे ज्ञातहुआ कि चीनकी यात्रा करसकूंगा मरजवां से कहा अब मुझे चीनमें लेचलो इससे अधिक मुझमें बियोग के दुःख सहने की शक्ति नहीं परंतु मेरापिता मुझे बहुत प्यार करता है उसे एकक्षणका बियोग मेरा असह्यहै क्योंकर मुझे बिदाकरेगा यहकह क़मरुज्ज़मां रोनेलगा मरजवांने बिनयकी आप सत्य कहते हैं परंतु एकयत्न यहांसे निकलनेकाहै आप दो तीनदिनके लिये बादशाहसे अहेरखेलनेकी आज्ञालीजिये बिश्वासहै कि वह अवश्य

आज्ञादेंगे तब आपमुझे और कई एक मनुष्योंको साथले अमुक दिशाको चलना दो घोड़े अति तीव्रगामी अपने साथ रखिये हम दो तीन मंज़िलतक अहेरके बहाने जावेंगे उपरान्त इन घोड़ों पर सवारहो चीनकी तरफ़चलेंगे शाहज़ादेको मरजवांका सम्मतपसन्दहुआ दूसरेदिन क़मरुज्ज़मांने अवसर पा बादशाहसे अहेर की आज्ञाली और मरजवांको साथलेचला कई योजन चलके सन्ध्या समय एकमुसाफ़िरख़ानेमें उतरे भोजनसे सुचित्तहो आनन्दपूर्वक सोये जब अर्द्धरात्रिबीती मरजवांने शाहज़ादे को जगायकहा अब तुम अपने बादशाही वस्त्रउतार अश्वपालक के सदृशवसनपहिरो शाहज़ादेने तुरन्त वस्त्रबदले और वहदोनों उन्हीं शीघ्रगामी घोड़ों पर चढ़ और तीसरा घोड़ा कोतलके वास्ते अपने साथ ले और समस्त सेवकोंको निद्रावश अचेतछोड़ निकलचले प्रातःकाल होतेही वह बनमें दोराहेपर पहुँचे मरजवां वहांघोड़े से उतरा और तीसरे घोड़ेको मार उसके रुधिरसे शाहज़ादेके वस्त्रफाड़केरँगे और उसीदोराहेपर फेंकदिये शाहज़ादेने मरजवांसे पूछा यह तुमने क्या किया मरजवां ने कहा जिनको तुमसरायमें सोतेछोड़आये हो हम को स्थानपर न पाकर ढूंढ़ते २ यहां पहुँचेंगे आपकेवस्त्र लोहू भरे देख जानेंगे कि कोईबनपशु आपके बैरियोंको मारकेखागयाहै और मुझे समझेंगे कि बादशाह के डरसे वह किसी ओर भाग गया निदान निरुपाय हो यहींसे लौटजावेंगे और हमारापीछा न करेंगे इस उपायसे हम उनसे बचकर निश्शंकहोय यात्राकरेंगे और जब तक कि सबलोग बादशाहसे यह समाचारकहेंगे तबतक हम बहुत दूर निकलजावेंगे निदान वहदोनों बहुतसी अशरफ़ी और रत्नादि द्रव्य लियेहुये कभी तो पृथ्वीके मार्ग्ग से और कभी जलके मार्ग्ग से चलते २ कुशलपूर्वक चीनकी राजधानी में पहुँचे और एकसरायमें उतर तीनदिन बिश्रामकिया मरजवांने इससमयान्तरमें वैद्यों के सदृश शाहज़ादे के चित्तानुसार वस्त्रबनवाये उपरांत स्नानागार में जाय दोनोंने स्नान किया मरजवां ने वैद्यों के सदृश शाहज़ादे को वस्त्र पहिराय कहा अब तुम उस घर में जहां वैद्य आदि शा-

हज़ादी को अच्छा करनेके लिये जाते हैं जाओ और मैं सब बदौरा से तुम्हारे आने का शुभसमाचार कहने जाताहूं यह कह वह अपने घरआया अपनी मातासे भेंटकर कहा तू इसीसमय शाहज़ादी से मेरे आगमन का समाचार कह कि वह प्रसन्नहो क़मरुज्ज़मां उसी बेषसे बादशाही महलके नीचेजाय पुकारनेलगा कि मैं बहुत दूरसे चीनकी शाहज़ादीको इस आशापर अच्छाकरने आयाहूं जो वहमेरे यत्नसे अच्छीहो तो बादशाह अपने बचनके अनुसार शाहज़ादीका बिवाह मेरेसाथकरदे जो मैं अच्छा न करसकूं तो बादशाह मेरे मारडालनेकी आज्ञादे बादशाहके सेवकोंने क़मरुज्ज़मांकी किशोर अवस्था और सौन्दर्य्य देख अतिचिन्ताकी और कहा हे भाई! अपनी अवस्थापर दयाकर इसी लोभसे बहुतसे मनुष्य मारेगये और उनके मस्तक नगरके द्वारपर लटकाये गये शाहज़ादी को आजतक कोई अरोग्य न करसका तू उसे अच्छा न करसकेगा तेरेप्राण व्यर्थ जावेंगे क़मरुज्ज़मां उनके बर्जने से न हटा पुनः वही बचन कहा निदान वह निरुपायहो उसे राजमन्त्री के निकटलेगये वह उसे बादशाहके साम्हने लेगया क़मरुज्ज़मां जातेही बादशाह के निकट बैठगया बादशाह उसकी ढिठाई से अप्रसन्न न हुआ किन्तु उसकी जवानीपर पछताया बिचारनेलगा कि यह अभी औरोंकी भांति माराजावेगा फिर बादशाहने वही प्रतिज्ञा उससे लिखवाली और उसे शाहज़ादी के मकानमें भेजवाया प्रधान क़मरुज्ज़मांको द्वारपर बैठाय शाहज़ादीके निकट संदेशा पहुँचानेगया और बिनय की एक मनुष्य तुम्हें अच्छाकरनेके लिये आयाहै यदि आज्ञा होतो लाऊं शाहज़ादी ने आज्ञादी तुरन्त उसेला प्रधान ने क़मरुज्ज़मां के निकट आय कहा तुम शाहज़ादी के समीप चलो और किसी यत्न से उसे अच्छाकरो क़मरुज्ज़मां ने उत्तरदिया मैं यहीं से उसे अच्छाकरदूंगा उसके निकट जानेकी कुछ आवश्यकता नहीं यह कह शाहज़ादेने लेखनी और दावात निकाल उसीरात्रिका सम्पूर्ण बृत्तान्त जिसमें शाहज़ादी उसके पास सोईथी एक पत्र में लिख अँगूठी उस में बन्दकर और प्रधानके हाथ दे कहा हे मित्र! यह

पत्रलेजाय शाहज़ादीको दे ज्योंहीं प्रधानने वहपत्र उसे दिया त्योंहीं उसेपढ़ और अँगूठी पहिंचान अपने हाथपांवसे बेड़ीतोड़ किवाड़ कीओर दौड़ी और कमरुज्ज़मांको देखतेही पहिंचानलिया कमरुज्ज़मां ने भी उसे पहिंचाना कि यह वही सुन्दरी है जो मेरेपास सोईथी और मैं इसीकी प्रीति और बियोगमें बिक्षिप्तहुआथा फिर वह दोनोंदौड़ परस्पर मिले उपरान्त दाईने वहांसे उनको उठाकर महलमें बिठाया शाहज़ादी बदौरा ने अपनी अँगूठी फिर कमरुज्ज़मांको देके कहा इस अँगूठी को अपने समीप रक्खो और तुम्हारी अँगूठी मैं अपने प्राणके समान रक्खूंगी यह दशा देख प्रधान बादशाह के पास दौड़ागया और बिनतीकी स्वामी जितने बैद्य और गुणीआये वह सब निर्बुद्धिथे इसने शाहज़ादीको निरीक्षण के बिनाही अच्छाकिया अब वह परमेश्वरकी पूर्णकृपासे सावधान है बादशाह यह शुभसमाचार सुन उसके महलमें गया उसे प्रसन्न देख अपने हृदयमें लगाया उपरान्त कमरुज्ज़मांसे भेंटकर अपनी बेटीका हाथ उसके हाथमें पकड़ा दिया और कहा जो मैंने प्रतिज्ञा कीथी अब उसे पूरीकी अब बताओ कि तुम कौनहो और किस देश से यहांआये कमरुज्ज़मां ने दण्डवत्‌कर बिनयकी मैं न तो बैद्यहूं न मन्त्रज्ञ केवल अपना मनोरथ सिद्धकरने के लिये यह बेषरचा मैं बड़े प्रतापवान् बादशाह का पुत्रहूं मेरानाम कमरुज्ज़मां और मेरे पिताका नाम शाहज़मां वह बड़े बिशाल चीलद्रननामक द्वीपोंका बादशाह है उपरान्त सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी प्रीति का सबिस्तर बर्णन किया इस अद्भुत कहानी को सुन बादशाह बिस्मित हुआ और कहा यह अपूर्व्व चरित्र स्वर्ण से लिखवाके कोश में रखने योग्य है फिर सेवकोंको आज्ञादी तुरन्त बिवाहकी तय्यारी हो कुछ काल में बिवाह की सम्पूर्ण सामग्री संग्रहहुई चीन के बादशाह ने बड़ी धूमधाम से उनका बिवाहकिया और उनदोनों बियोगियों का मनोरथ सिद्धहुआ तदनन्तर बादशाहने कमरुज्ज़मां को वज़ीर की पदवीदी सो वह अतिप्रसन्नता से निवास करनेलगा इसी हर्ष में कमरुज्ज़मांने रात्रिको यह स्वप्नदेखा कि उसका पिता अन्तसमय में

कहताहै हा ! खेदहै कि मेरापुत्र क़मरुज़्ज़मां मुझसे बिछुड़ा और उसके बियोगहीसे मेरी मृत्युहुई शाहज़ादा यहदुस्स्वप्न देख चौंक पड़ा अति बिकलहोय रुदनकरनेलगा उसका रोनासुन उसकीप्रिया जगी और घबड़ाके पूछने लगी स्वामी कुशल तो है ऐसे दुःखित होय क्यों रोतेहो क़मरुज़्ज़मां ने वहस्वप्न कहसुनाया शाहज़ादीने अपनीबुद्धिबलसेजाना इसकीइच्छा पिताकेसमीप जानेकी है उस बेर तो उसे धैर्य्यदिया और दूसरेदिन अवसरपाय अपने पितासे यहसब हाल कहा और एकबर्षकी बिदामांगी उसने अति चिन्ता कर उसे अंगीकारकिया और घोड़े हाथी आदि सामग्री और धन रत्न असंख्यदे कहा एकबर्षबीते तुम अवश्य इसदेशमें आना इतना कह उन्हें बिदाकिया और आपभी थोड़ीदूरतक उनके साथ गया अब यहांसे उन आपदाओंका बृत्तांत जो क़मरुज़्ज़मांपर पड़ी बर्णन किया जाताहै जब उनको प्रवास में एकमासबीता तो उन्हें अति-बिशाल बनमिला उसदिन क़मरुज़्ज़मांने अपने में चलनेकीशक्ति न पाकर अपनीप्रियस्त्रीसे कहा कहो तो आज इसी स्थानपर सघन वृक्षोंकी शीतलछाया के नीचेरहें क्योंकि सेनाबराबर चले आने से थकितहोगईहै बदौराने उत्तरदिया मैंभीचाहतीहूं कि आजयहीं रहते तो उत्तमथा वहभीड़ जो पीछे रहगई है पहुँचजावे और आजकेदिन बिश्रामकरें क़मरुज़्ज़मांने प्रधानों को आज्ञादी कि आज इस बनमें उतरो फ़र्राशों ने यह आज्ञापाय स्थान २ पर डेरेखड़ेकिये और से-नाभी उचित २ स्थानपर उतरपड़ी बदौरा उष्णता से अतिब्याकुल थी अपने डेरेमें जो घनेबृक्षोंकी छाया में खड़ाथा शय्यापरजाय सो-रही कुछकालपीछे उसीडेरेमें शाहज़ादा भी आया अपनीस्त्रीको निद्रा-वशदेख आपभी एकओरको लेटरहा लेटतेही उसकीदृष्टि बदौरा के बहुमूल्यरत्न और हीरेजटित पटके पर पड़ी और शाहज़ादी ने सो-तीबेर उसे अपनी कमरसे खोल वहीं रखदिया था और उसपटके के साथ सुनहली बिनावटका बटुवा बँधाहुआथा शाहज़ादे ने उसे ट-टोल मालूमकिया इसमें कई कठोरसी बस्तुहैं जबउसे खोला एकमणि पर उत्तम यन्त्रखिंचाथा क़मरुज़्ज़मां समझा यह बस्तु बहुमूल्य

होगी शाहज़ादी ने उतार बेपरवाही से उसे डालदिया न तो रक्षापूर्वक किसी सन्दूक में रक्खा और न किसी बांदीको सौंपा सत्य बृत्तान्त उस यन्त्रका तो यह है कि वह यन्त्र उसकी माताने गुप्तकरके बदौरा को दिया था क़मरुज्ज़मां अवलोकनकी इच्छासे उसे डेरे के बाहर लेजाय प्रकाश में उसके अक्षर देखनेलगा अकस्मात् कोई पक्षी उस यन्त्रको मांसकाटुकड़ा समझ झपट्टामार क़मरुज्ज़मां के हाथसे लेगया शाहज़ादा अत्यन्त दुःखित हुआ और मनमें चिन्ता करने लगा ऐसी श्रेष्ठबस्तु मेरी प्राणप्यारीकी इस बिधिसे जातीरही किसी-प्रकार से इस पक्षीसे लेनीचाहिये वह पक्षी उस यन्त्रको लियेहुये कुछ दूर एक बनमें जाबैठा क़मरुज्ज़मां ने उसका पीछाकिया जब वह उस के समीपजाता वह पक्षी उड़ दूर चलाजाता इसीभांति वह उसके पीछे लगाहुआ चलाजाता फिर वह पक्षी उसे खागया और बहुतदूर उड़के जाबैठा फिरभी क़मरुज्ज़मां उसकेपीछे चलागया जाते जाते वह अपनी सेनासे बहुतदूर निकलगया सन्ध्यासमय उसी पक्षीको एककण्टक बनमें घेरपकड़नेकी इच्छाकी जब वह उसके निकट पहुँचा वह उड़के एक बड़ेऊंचे बृक्षकी फुनगीपर जाबैठा उससमय क़मरुज्ज़मां निराशहो सोचनेलगा यह पक्षी किसीभांति न मिलेगा लाचारहो अपने डेरे में आनेकी इच्छाकी लौटतेही यह बिचारा उसयन्त्र के बिना अपनी प्यारीको अपना मुख क्यादिखाऊं इसी चिन्तामें भूखा प्यासा उसी बनमें बृक्षकेनीचे जिसपर पक्षीथा सोरहा भोरको वह पक्षी वहांसे किसीओरको उड़ा शाहज़ादा भी उसीके पीछेचला वह दिनभी ब्यर्थ उसकेपीछे दौड़ताबीता सायंकालको क्षुधासे ब्याकुल हो बनकेफलखाये दशदिन इसीभांति से पक्षी का पीछा करतारहा सन्ध्याको वह पक्षी किसी ऊंचेबृक्षपर बैठता और क़मरुज्ज़मां उसके नीचे सो रहता निदान ग्यारहवें दिन वह दोनों एक नगर में पहुँचे वह पक्षी एक बड़े बिशाल घरकी आड़में दृष्टिसे लोप होगया शाहज़ादा उसीयन्त्र के शोचमें ब्याकुलहो यह चाहताथा कि कोई ऐसा मिले जो मेरी इस दुर्दशा में सहायताकरे इसहेतु उसी नगरमें कि वह समुद्र के कूलपरथा बहुकाल पर्य्यन्त गलियों और बाज़ारों में

फिरा परन्तु किसी मनुष्यने उसकी सहायता न की निदान वहां से निकल समुद्र के कूलपर फिरनेलगा इतने में एकबाग देखा उसका द्वार भी खुलाथा उसमें वह चलागया उसके रक्षक ने क़मरुज़्ज़मां को बिदेशी मुसल्मान जानके शीघ्र किवाड़ मूंदलिये क़मरुज़्ज़मां ने अचम्भाकर उस माली से पूंछा तूने दरवाज़ा क्यों मूंदा उसने कहा मैंने तुम्हें परदेशी मुसल्मान समझ किवाड़मूंदे क्योंकि यहांके पुरबासी शिलापूजकहैं मुसल्मानों से निपट बैर रखते हैं जो किसी मुसल्मानको देखते हैं उनकी जाति में उसका दुःखदेना उत्तम धर्म्म है और आश्चर्य है तुम इसनगरमें बहुत फिरे परन्तु किसीने तुम्हें कुछ दुःख न दिया परमेश्वरका धन्यबादहै जो तुम उन दुष्टों से बचेरहे क़मरुज़्ज़मां ने उस बृद्धका अतिगुणमाना इसके उपरान्त माली ने कहा तुम थकेहो कुछ खा पी शयनकरो सो उसने उसे अपने झोपड़े में लेजाय भोजन कराया क़मरुज़्ज़मां ने सावधानहो अपना सम्पूर्ण बृत्तांत उससे प्रकट किया और रोकेकहा अब क्योंकर उस अपनी प्रियासे भेंटहोगी और उसे लेके अपने पिताके राज्यमें पहुँचूंगा कुछ जाना नहीं जाता कि वह अबतक उसी बनमें है वा वहांसे आगे गई ग्यारहदिन मुझे उसे छोड़े होचुके हैं माली ने उत्तरदिया यहांसे एक बर्षकी राहपर मुसल्मानों के देशहैं उनदेशों के बादशाह भी मुसल्मान हैं परन्तु सबदेशोंसे अबौनी नगर सबसे पासहै और समुद्र के तटपर है वहां के बासी आनन्दपूर्बक अतिशीघ्र चीलद्रनद्वीपों में पहुँचजाते हैं पृत्येक बर्ष एक ब्यापारी अबौनीनगरसे इस नगरमें आता है यहां से माल असबाब मोलले अबौनी में जाता है पुनः तुम्हारे द्वीप में जाय ब्यवहार करताहै यदि तुम कुछदिन पहिले आते तो उस ब्यापारी के जहाज़में मैं तुम्हें सवार करादेता तुम भलीभांति अपने देश में पहुँचजाते अब एक बर्ष के उपरांत वह जहाज़ आवेगा तबतक तुम मेरे झोपड़ेको अपना घर समझरहो क़मरुज़्ज़मां उस परदेशमें कि किसीको न जानताथा इसको भी परमेश्वरकी देन समझ उसके पास रहकर जहाज़ आनेकीराह देखतारहा दिनको वह माली के साथ बागका काम करता और एकान्त में अपनी प्रिया की सुधिकर रोया

करता अब हम शाहज़ादीचीनका समाचार लिखतेहैं जो डेरेमें सोगई थी जब वहजगी तो क़मरुज्ज़मांको न देख अत्यन्त बिस्मितहुई अनन्तर उसने पटकेको देखा कि बटुवा खुला है और वह यंत्र उसमें नहीं बदौरा ने बिचारा कि मेराप्राणपति उसकी परीक्षाके लिये कहीं उसे लेगयाहोगा रात्रिपर्य्यंत उसके आगमनकी राहदेखा की जब वह न आया तो अत्यन्त बेचैनहुई और यन्त्र के बनानेवाले को बहुत से दुर्बचनकहे यदि अपने भर्त्ताके खोजाने से वह दुःखितहुई परन्तु बुद्धि जो प्रत्येक दशामें मनुष्यको सुयत्न सुझाती है उसने न खोई और बड़ा साहसरक्खा और शाहज़ादेके खोजाने का बृत्तान्त थोड़ी बांदियोंके सिवाय किसीको ज्ञात न था क्योंकि वह सबमार्ग के कष्टों और सूर्य्यकी गरमी से अपने अपने डेरों में अचेत सोरहीथीं बदौरा ने समझा जो सेना इससमाचारको सुनेगी तो ऐसा न हो किसीभांति का दुःखदे अथवा भागजावे इसहेतु अपनेमनको दृढ़कर और धैर्य रख सबबांदियोंको आज्ञादी तुममें से कोई मेरेपतिके खोजानेकाहाल किसीसेना के मनुष्य वा किसी सेवकसे न कहना न कोई ऐसीबात करना जिससे यह बृत्तान्त प्रकटहो यह कह आप पुरुषोंके बस्त्र अपने पतिके सदृश पहिन अपनेपतिके समान ऐसा बेष बनाया कि कोई उसे पहिचान न सका और आज्ञादी प्रातःकाल असबाब लादके तुरंत यहां से आगेबढ़ो जब सब कुछ तैयारी होगई उसने एकबांदी को आज्ञादी कि पालकी में मेरीजगह तू सवारहो और आप घोड़े पर चढ़ उस कुलक्षण बन से आगे चली कई मास पृथ्वी और जल की यात्राकर अपने पतिके देशकी तरफ़ जातीथी कि मार्ग में उसे अबौनीकाद्वीप मिला उसके सेवक जहाज़से उतर बिश्रामके निमित्त स्थान ढूंढ़नेकेलिये उसनगरमें गये उन्हीं मनुष्योंके मुख से अबौनी के असमंजसनामक बादशाहको बिदितहुआ कि क़मरुज्ज़मांके जहाज़ने यहां पहुँच लङ्गर किया वह बहुत दूर से यात्राकिये आताहै और शीघ्रही यहांसे चलाजावेगा आज वे सब चाहते हैं कि किसी स्थानपर यहां रहैं अबौनी का बादशाह इस समाचारके सुनतेही शाहज़ादे से भेंटकरने के लिये समुद्रकी ओर गया मार्गमें वही शाह-

ज़ादी जिसने अपने पतिका बेष धारण किया था टिकनेको जातीथी उससे भेंटहुई अवौनी के बादशाह ने उसे अपने किसी बड़े मित्र बादशाह का पुत्र समझ उसका बड़ा सन्मान किया और अपने महल में लेजाय तीनदिन उसकी कारबारियों समेत बड़ी धूमधाम से जेवनारकी फिर शाहज़ादी ने बिदा होनेकी इच्छाकी अवौनी के बादशाहने जो उसके रूपअनूप और बुद्धिपर मोहित था उसे अपने निकट रखनाचाहा इसभेदको गुप्तरख प्रकटमें उससे कहा मित्र अब मैं बृद्ध और शिथिल हुआ और मेरेकोई भी पुत्रनहीं जो मेरा राज्यकरे केवल एकही बेटी है वह अत्यन्त सुन्दरी और चतुरा है मैं चाहताहूं कि जो उसके सदृश रूपवान् बुद्धिमान्हो उसे ब्याहदूं सो तुममें यह सब गुण हैं उसका बिवाह तुम्हारे साथकर तुमको गद्दीपर बैठाय परमेश्वरका भजनकरूंगा तुम न जाओ और मेरी बेटीसे बिवाहकर राज्य सुखभोगो बदौरा जो बड़ी बुद्धिमतीथी अपने मनमें सोची जो मैं पुरुषहोती तो कुछहानि न थी बिवाहकरलेती परंतु इस दशा में कि मैं स्त्रीहूं और आवश्यकतापर यह बेष धारण किया है उसके साथ क्योंकर बिवाहकरूं पहिलीही रात्रिमें यह भेद प्रकटहोजावेगा जिससे मेरा भेद खुलजावेगा और जानों अनजानों में मेरी बड़ी अप्रतिष्ठाहोगी जो मैं नहीं मानती तो बादशाह अप्रसन्नहो न जानिये क्या अपकारकरे प्राणसेमारे वा सदैव कारागृहमें रक्खे अबतक मेरेपतिका बृत्तान्त बिदित नहीं निदान भलीभांति चिंतनाकर बिवाह करनेपर राज़ीहुई और कहा एकदिन का मुझे सावकाश मिले तो मैं अपने सभासदों और मित्रों से इस बिषयमें सम्मतलेलूं बादशाहने कहा बहुत अच्छा दूसरे दिन उसने बड़े २ प्रधानों से यह समाचार बर्णनकर कहा मैं भी इस बिषय में प्रसन्नहूं तुम इस बिषयमें क्या कहतेहो सबों ने बिनयकी जिसमें आपकी मरज़ीहो हमभी प्रसन्नहैं अवौनीका बादशाह उस शाहज़ादी और उसके नौकरोंको राज़ीपा हर्षितहुआ और बड़ी धूमधामसे उसका बिवाह अपनी कन्या के साथ करदिया और सब बिवाहकी रीतिंकर बादशाहने अपनी गद्दीसे उतर दामादको बैठाय अभिषेकित किया

नम्बर २६ मुतअ़ल्लिक़े सफ़े ३६६ द्वि·भा·

चित्र शहज़ादी बदूरा का अपने पति के भेष में



और मंत्रियों और नगरके प्रतिष्ठित मनुष्यों से भेंटें दिलवाई और इसे सम्पूर्ण राज्य के अधिकार दिये यह सब समाचार देशभर में प्रसिद्ध हुआ जब रात्रिहुई बदौराको दुलहिन के शयन स्थान में लेगये बदौरा अर्द्धरात्रि पर्य्यन्त ईश्वर की बन्दना करती रही जब दुलहिन सोगई तो आपभी चुपके से एकओर सोरही प्रातःकाल बदौरा स्नानकर बस्त्रबदल तख़्तपर शोभितहो शाहीकाम करनेलगी और बादशाह दुलहिन के निकट रात्रिका हाल पूछनेकेलिये आया दुलहिन ने लज्जाकर अपना शिर नीचेकर कुछ उत्तर न दिया बादशाहने अपने बुद्धिबलसे जाना कि अभी इसकी इच्छारूपी कली नहीं खिली उसने उसे बहु धैर्य्यदे कहा आजकीरात यात्रा के श्रम के कारण उसने सम्भोग की इच्छा न की कुछ शोच मतकर दूसरी रातभी पूर्व्ववत्बीती जब बादशाह ने जाय देखा कि उसकी बेटी उसीभांति चिन्तामें है इससे ज्ञातहुआ आजकी रात्रिभी बिहार के बिना बीती इससे बादशाह अत्यन्त अप्रसन्नहुआ और अवौनी के शाहज़ादी से कहा आज तीसरी रातहोगी कदाचित् आजभी ऐसेही बीतेगी तो मैं उसे बधकरूंगा तू उसे समझादीजियो निदान तीसरी रातको जब बदौरा अपनी नियमित बन्दना से निश्चिन्त हो उसी शय्यापर सोनेलगी तब वह दुलहिन उठबैठी और बदौरा से कहा आज तीसरी रात है तुमने मुझसे बिहार न किया किन्तु बातचीत न की इसका क्या कारणहै मैंतो तुम्हें मनसे प्यार करतीहूं नहीं चाहती कि तुम्हें मेरे कारण किसीप्रकार का कष्ट हो कल मेरा पिता तुमसे अप्रसन्न हो ऐसा ऐसा कहताथा बदौरा दुलहिन की यह बातें सुन अत्यन्त ब्याकुलहो चुपरही और मन में सोची यदि अपनाभेद प्रकट करतीहूं तो बादशाह अवौनी मुझे मारडालेगा जो नहीं कहती तोभी उसकी कोपाग्निसे नहीं छूटसक्ती हरतरह से मृत्यु और अप्रतिष्ठाका साम्हना है दुलहिन ने कहा हे प्राणप्यारे! तुमने मेरेप्रश्नका कुछ उत्तर न दिया और तुम्हारी मुखकी कान्ति क्यों बदली और बिकल क्यों होगये यह दुलहिन बदौरा से लिपट गई और कहा स्वामी तुम अपने मनकी चिन्ता क्यों नहीं कहते मुझे

किसीप्रकार से तुमको दुःखदेना स्वीकार नहीं बदौरा के व्याकुलता से आंसूकीधारा बहचली और मूर्च्छा आनेलगी परन्तु उसने परमेश्वरको स्मरणकर अपनेको सँभाला और आंसूपोंछ कहा हे कोमलाङ्गी मेरीप्यारी ! मुझसे अपराधहुआ मैं दण्डयोग्यहूं तथापितुमसे क्षमाकी आश रखतीहूं अबमेरी प्रतिष्ठा और प्राण तुम्हारे हाथ हैं निरुपायहो मैं अपना बृत्तान्त तुमसे प्रकट करतीहूं उसे सुन चाहे तुम क्षमाकरो वा मारो फिर उसने अपनी छाती खोलके उसे दिखाई कि मैंभी तुम्हारेसदृश चीनकेबादशाहकी बेटीहूं और अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कह हाथजोड़ बिनतीकी जबतक मेरापति न पहुँचे तबतक मेराभेद न खुले और परमेश्वर से परिपूर्णआशहै कि वह आताहोगा तुमभी उसीकी स्त्री होना और मैं तुमदोनों प्रीतिपूर्वक उसकी सेवा करेंगी इतनासुन दुलहिनने कहा अब तुम किसीभांति की चिन्ता न करो हर्षपूर्ब्बक गद्दीपरबैठ देशका प्रबन्धकरो मैं बातबनाके अपने माता पिता और कुटुम्बको समझादूंगी वहां की यह रीति थी कि नवसङ्गमका समाचार सुन छोटा बड़ा खुशीकरता और कईरीति होतीं निदान उससमय तो वह दोनों परस्पर लिपट सोरहीं और अबौनीकी शाहज़ादी ने अपनी बाँदियों के ज्ञात करने के लिये वही शब्दादिकक्रिये जैसे कि दुलहिनें प्रथम समागममें करती हैं दुलहिनने प्रातःकालहोतेही अपने माता पिताको सैनसे रात्रिका हाल बतादिया और बदौरा स्नानकर वस्त्र पहिन आनन्दपूर्ब्बक बादशाही काममें लगी और इसी बिधि रात्रि दिन अपने प्राणपति के भेंटकी आशामें काल बितानेलगी उधर क़मरुज़्ज़मां शिलापूजकों केनगरमें माली के घररह मालीका कार्य्यकर आपत्तिकाल बिताता एकदिन भोरको मालीने उससे कहा आज शिलापूजकों का बड़ा उत्सव है न तो वो आप कार्य्य में प्रबृत्तहोते हैं और न किसीको करने देते हैं और हरएक मिलकर मेलेकी तरह स्थानस्थानपर एकत्रहोते और नानाप्रकारके तमाशे देखते हैं आजके दिन मुसल्मानों से भी ग्लानिनहींकरते इसहेतु आजतुमको छुट्टी है यदि तुम्हारा मन चाहे तो नगरमें जाय मेला देखो तुमको कोई न रोकेगा और मैंने सुना है

कि अवौनी का जहाज़भी यहां पहुँचगया है अब मैं अपने मित्रोंकी भेंटको जाताहूँ और उनसे मालूम करताआऊंगा कि कबतक यह जहाज़ उधर को जावेगा कि मैं तेरे निमित्त अन्न और ऋतुफल उसपर रखदूं यहकह वह माली समुद्रको चला और क़मरुज़्ज़मां नगरके चरित्रको देखने के बदले अपनी प्रियाकी सुधिकर रोनेलगा थोड़ेकालमें दो पक्षी उसके समीप के बृक्षपर बैठ लड़नेलगे इतने में उनमें से एक मरकर नीचे आपड़ा और दूसरा उड़ वहांसे लोपहो-गया एकक्षण पीछे दो बड़ेपक्षी दो दिशासे आय वहीं उतरे एक तो उस पक्षी मृतकके शिरकी ओर और दूसरा पांवकी ओर बैठ शिर हिलानेलगा मानो वह दोनों उसकी दुर्दशाको देख पछिताते हैं अ-नंतर उनदोनों ने अपनीचोंच और पंजोंसे गढ़ाखोद उसके शरीर को गाड़दिया और वहांसे उड़गये एकघड़ी पीछे वही दोनों उसी पक्षीको जिसने उसेमाराथा पकड़लाये और उसके पंख नोचखोच टुकड़े टुकड़ेकर चलेगये क़मरुज़्ज़मां इस चरित्रको देख बिस्मित हुआ और उसके निकटजाय भलीभांति देखनेलगा दैवयोग से एकलालबस्तु उसकी अंतड़ियों में देखपड़ी जब उसेधोके देखा तो वही यंत्रथा यद्यपि उसीसे उसे इतनाकष्ट हुआ था तथापि उसेपाय अत्यन्त प्रसन्नहुआ और समझा अब मेरी प्राणप्यारी मुझे शीघ्र मिलजावेगी दूसरेदिन माली ने उससेकहा अमुकबृक्ष सूखगया है उसे मूलसे काटडाल क़मरुज़्ज़मां ने उसको ऊपरसे काटा तिसपीछे उसकी जड़खोद निकालनेलगा अकस्मात् उसकी कुल्हाड़ी पत्थर की चट्टानपरपड़ी इसने वहांकी मट्टीटालकर उस शिलाको उठाया उसके नीचे सीढ़ी दशहाथकी पाई वह नीचे उतरगया वहां उसने एकबड़ा स्वच्छ और सुन्दरघर चौदहपर्द के अंतरमें देखा और उसमें पचासडेगें तांबेकी ढकने समेत पाईं जिनमें स्वर्णभस्मभरी थीं क़मरुज़्ज़मां इतनी द्रव्यको देख अतिप्रसन्न हुआ और माली से जाय यह समाचार कहा मालीनेकहा भाई यह धन तुमलो यह मेरे भागका नहीं क्योंकि ८० बर्षसे मैं इस बागका काम करताहूं और पूर्व्व से मेरा पिता और दादा यहीं इसी काम को करते न

यह द्रव्य उन्हें मिली और न मुझे भाई तीन दिन में यहांसे जहाज़ अबौनी को जावेगा तुम शीघ्र अपनी तय्यारीकरो और इस असंख्यधनको उसपर चढ़ाय अबौनी को जाओ परन्तु एक कामकरो कि आधी आधी डेगोंको खालीकर उनके ऊपर जैतून जो मेरे पास बहुतहै भरो लोग यह समझेंगे कि इसमें केवल जैतूनही है इसयत्न से द्रव्य रक्षापूर्ब्बक पहुँचेगा क़मरुज़्ज़मां ने माली से बहुत विनय कर कहा जो तुम यह सब द्रव्य नहीं लेते तो आधाही लेलो और अर्द्धभाग मुझे दो मालीनेकहा अच्छा तेरी इच्छा से यह मुझे स्वीकारहै क़मरुज़्ज़मां ने हरएकपात्रकी भस्म आधी रहनेदी और आधीका माली के घरमें ढेरकरदिया फिर यह सोचा ऐसा न हो कि यह यंत्र मेरेपाससे जातारहे एकडेगमें उसे रक्षापूर्ब्बक रखदेना चाहिये सो एक भाजन खालीकर उस यन्त्रको उसकी तहमें रखदिया और उसपर सुवर्ण की भस्मडालदी और उसपर चिह्न करदिया जिससे शीघ्र पहिचानीजावे जब वह यह निबन्धकर निश्चिंतहुआ संयोग से वह माली रोगीहुआ और तीसरे दिन उसकी अन्तकाल कीसी दशाहोगई उसी दिन प्रातको जहाज़ का कप्तान अपने खलासियों समेत बाग़ में पहुँचा और क़मरुज़्ज़मां से पूंछा वह कौनहै जो हमारे जहाज़पर सवारहोगा क़मरुज़्ज़मां ने कहा मैंहूं मेरेही वास्ते मालीने तुमसे कहा था मेरीबस्तु और पचास भाजन जैतून * के जो मेरे निज का मालहै लेजाय जहाज़ में चढ़ाओ पीछे से मैं भी आताहूं खलासियों ने क़मरुज़्ज़मां का असबाब पचास भाजनोंसहित लेजाय जहाज़पर लादा कप्तानने जानेकेसमय क़मरुज़्ज़मां से कहा कि जहाज़पर शीघ्रआना बिलम्ब न करना क्योंकि बायु अनुकूलहै केवल तुम्हारे पहुँचनेकी बाट देखेंगे निदान कप्तान के जानेकेपीछे क़मरुज़्ज़मां मालीसे बिदाहोने को गया माली उसे अन्तोपदेशकर काल बश हुआ शाहज़ादा लाचार होकर उसके स्नानकराने और गाड़ने में प्रवृत्तहुआ फिर बाग़ में तालालगा कुञ्जी उस बाग़के धनी को दे तुरन्त समुद्रकी ओर चला वहां जाय देखा कि जहाज़ खुलगया

* जैतून एकवृक्ष की लकड़ी अतिपुष्ट होती है ॥

मनमें अत्यन्त चिन्ता करनेलगा कि एकबर्ष और मुझे यहां ठहरना पड़ा उपरान्त समुद्रसे उसी बागमें आया और माली के भाग की स्वर्णकीभस्म पचास पात्रोंमेंभर ऊपर से जैतूनभर मुहँ मूंदलिया इस बिचारसे कि इनको अपनेसाथ लेजाऊंगा और उसी बाग में कार्यकरता और जहाज़ के आनेकी बाट देखतारहा और वह जहाज़ वायु अनुकूल पाकर थोड़ेही कालमें निर्विघ्न अबौनीद्वीप में पहुँचा बदौरा जहाज़के पहुँचनेका समाचारसुन इसबिचार से कि कदाचित् उसकापति वहां पहुँचाहो आप समुद्र के तीरआई और प्रकटमें यह मनुष्यों से कहा मुझे कुछबस्तु मोललेनी है इसहेतु ब्यापारियों के असबाब उतारने के पहिले जाताहूं निदान समुद्र के कूलपर पहुँच कप्तान से पूंछा तुम्हारा आगमन किधर से हुआ और इसपर कौन सवारहै उसने उत्तरदिया इस जहाज़ में उन्हीं ब्यापारियों के सिवाय जो सदैव ब्यवहार के निमित्त इस द्वीप में आते जाते हैं और कोई सवारनहीं और वह सब अनेक देशों की बस्तु सादा कपड़ा और बूटेदार, रत्न, सुगन्धित बस्तु, कपूर, केसर, जैतून आदि औषध लाये हैं बदौरा जैतूनको बहुत चाहतीथी उसकानाम सुनतेही कप्तान से कहनेलगी कि जितना जैतून इसपर लादा है मैं उससबको मोल लूंगी तुरन्त उसे जहाज़ से उतारो और ब्यापारियों से कहो सिवाय जैतून के पहिले सब असबाब मेरे समीपलावे कप्तान ने कहा पचास पात्रों में जो वही भराहै वह एकब्यापारीकाहै वहपीछे रहगयाहै हमने उसकी बहुकाल पर्यन्त बाट देखी परन्तु वह न आया और वायु अनुकूल होनेसे हम अधिक उस देश में न रहसके बदौरा ने कहा भला तुम उनपात्रों को नीचे उतारो जो कुछ उनका मोल होगा हम तुझे देदेंगे तू इसके धनीको देदीजियो जब वह पचासों जैतूनकेपात्र उसके सम्मुख लेगये बदौराने पूंछा इस सब बस्तुका क्या मोल होगा कप्ताननें कहा वह बहुतछोटा ब्यापारी है आप साढ़ेचारहज़ार रुपया दीजिये वह प्रसन्नहो उसे लेलेगा बदौरा ने कहा यहांपर यह बस्तु नहीं मिलती इसका बहुत मोलहोगा मैं नौ हज़ार रुपया दूंगी मेरी यह इच्छा नहीं कि किसी गरीब की हानिहो तुम इस द्रव्यको अपने

पास रखना उस व्यापारी के मिलतेही उसे द्रव्य देदेना उसी समय शाहज़ादी रुपयादे और पचासों पात्रों को उठवा अपने महल में लेगई एकभाजन को निकलवा थोड़ीसी बस्तु किसीपात्र में निकलवाई कि उसे भलीभांति देखे उसमें सोनेकी राखमिली उसने अत्यन्त अचम्भा किया जब दूसरा तीसरा पात्र खुलवाय देखा सबमें सुनहली भस्म देखी आज्ञाकी कि यह सब भाजन खाली होवें सबमें ऊपर तो वहतेल और नीचे सोने की राख भरीहुई पाई और एक पात्रके तहमें वहीयंत्र जिसे क़मरुज़्ज़मां ने रक्खाथा देख मूर्च्छितहो गिरपड़ी अबौनी की शाहज़ादी और उसकी दासियों ने दौड़के उसे सँभाला और गुलाब और बेदमुश्कका नीर उसपर छिड़का जिससे वह सचेत हुई बदौरा ने चैतन्यहो उसयन्त्रको चूम नेत्रों से लगाया और उन्हीं बाँदियोंके सम्मुख जो इसभेदको न जानतीथीं कुछकहना उचित न समझ चुपहोरही व एकान्तस्थल में अबौनीकी शाहज़ादी से कहा पूर्ब्ब जो तुमने मुझसे यंत्रका वृत्तांत सुनाथा वह यहीहै जिसे मैं देख अचेत होगई और इसी यन्त्र से मेरे प्राणप्यारे का मुझ से बियोग हुआ अब बिश्वास है कि शीघ्र उससे मेरी भेंटहोगी दूसरे दिन बदौराने अपने महल से निकल जहाज़ के कप्तानको बुला भेजा जब वह आया उससे कहा उसी ब्यापारी का बृत्तान्त जिसके पचास भाजन जैतूनकेहैं और तू उसे शिलापूजकों के देशमें छोड़आया है समझाय कह कि वह कहांरहता है और कौनसा कार्य्य करताहै कप्तान ने कहा वह किसीके बाग़में रहताहै और एक बृद्धमाली के द्वारा मैंने उसका असबाब और पचासबर्त्तनों को जहाज़पर लादाथा और उसी बाग़ में मैंने उसे छोड़ा मैं आप बाग़में उसके निकट गयाथा उसने अपनी बस्तुका भेद मुझसे कहा कि तुम मेरा असबाबले जहाज़पर चलो मैंभी मालीसे जो दोतीन दिनसे रोगी होगया है बिदाहो शीघ्र आताहूं परन्तु न जानिये ऐसा क्या कारणहुआ कि वह जहाज़पर न आसका मैंने लाचारहो जहाज़ खोलदिया बदौरा ने यह बृत्तांत सुन ब्यापारियों और कप्तानकी सम्पूर्णबस्तु और द्रव्यहरली और कप्तान से कहा वह ब्यापारी जिसे शिलापूजकों के नगर में छोड़ आयाहै मेरा

ऋणी है तू तुरन्त जाकर उसेला जबतक तू उसे न लावेगा मैं यह तेरी और व्यापारियों की वस्तु न छोडूंगा इसके सिवाय तुझे दण्डदूंगा कप्तान जहाज़ले शिलापूजकों के नगर की ओर चला और अति शीघ्र वहां पहुँच जहाज़का लंगरकिया और एक नावपर सवारहो नगर में प्रवेशकिया और उस बागके द्वारपर जाय हांकदी क़मरुज़्ज़मां अकेले रहजाने और अपनी प्रिया के बियोग से कईदिन न सोयाथा और उस घड़ीको जिसघड़ी उसयंत्र को निकाल के देखाथा हज़ारों धिक्कारदेता उस समय बस्त्र उतार सोने के लिये जाताथा इतने में शब्द सुना और उसीदशा से किवाड़ खोलनेगया ज्योंहीं किवाड़ खोला त्योंहीं कप्तान और ख़लासी उसे पकड़ नावपर लेगये और नावको शीघ्रखेकर जहाज़पर चढ़ाया और उसी समय से जहाज़का लंगर उठा अबौनी टापूको चले क़मरुज़्ज़मां इस दशा को देख विस्मित हुआ और कप्तान से पूंछा तुम मुझे बागसे पकड़ क़ैदकिये क्योंलिये जातेहो कप्तान ने कहा तू अबौनी के बादशाह का ऋणी है उसी की आज्ञा से तुझे पकड़ेलिये जाते हैं क़मरुज़्ज़मां ने कहा मैंने उसकी सूरति भी नहीं देखी और न कभी उसके देशमें गयाहूं कप्तानने कहा इस बृत्तान्तको तुम उससे कहना तुम कुछ चिन्ता मतकरो वह बादशाह अत्यन्त न्यायी और शीलवान् है तुमको दुःख न देगा निदान वह जहाज़ जैसा शीघ्र गयाथा वैसाही जल्द अबौनी देशमें पहुँचा कप्तान अपने छुटकारे के लिये उसीक्षण क़मरुज़्ज़मा को जहाज़ से उतार अबौनी के बादशाह के समीप लेगया उस समय बदौरा सोने के लिये जातीथी जहाज़ कप्तान और क़मरुज़्ज़मां समेत लौटआने का समाचार सुनतेही महल से बाहर निकलआई और अपने प्राणपतिको जिसकेवास्ते रोयाकरतीथी मलीनवस्त्रोंसे कि किसी ख़लासी ने उसे दियेथे देखकर पहिंचाना और दौड़कर उसे कण्ठ से लगाना चाहा परन्तु कुछ शोचके ठहरगई और बिचारने लगी कि यहां के पुरवासी जो मेरे और इसके बृत्तांतको नहीं जानते हँसेंगे यह शोच उसे एक प्रधानको सौंप और आज्ञादी कि उसे स्नानकरा वस्त्रपहिरा भोरकेसमय मेरे समीपलाना प्रातसमय जब वह प्रधान क़मरुज़्ज़मां

को स्नानकराय स्वच्छ वस्त्र पहिराय बदौराके निकटलेगया तो उसी समय बदौराने कप्तान और सब ब्यापारियों का असबाब छोड़ दिया बिशेष ढाईहज़ार रुपया और खिलअत आदि पारितोषिकदे बिदा किया अनन्तर क़मरुज्ज़मां को बड़ापददे प्रतिसमय अपने साथ रखनेलगी एकदिन रातको क़मरुज्ज़मां को एकांत में वह यंत्र दिया और कहा बहुत दिनबीते एक ज्योतिषी ने मुझे यह यंत्रदियाथा तुम सर्वज्ञ हो इसे भलीप्रकार देख इसके गुण अवगुण कहो क़मरुज्ज़मां ने उस समय पर्य्यन्त बदौरा अपनी प्रियाको जो पुरुष के बेष में थी अबौनी का बादशाह समझाथा वह पहिले तो कई दिनतक कमरुज्ज़मां अपने पतिके नामसे बिख्यातरही और अबौनी की शाहज़ादीके बिवाहके पश्चात् अपने श्वशुर के नाम असमंजस से प्रसिद्ध रही निदान क़मरुज्ज़मांने उस यन्त्रको देख पहिंचाना और अत्यन्त बिस्मितहो कहा स्वामी इसमें बहुतबुरे अवगुण हैं जिससे मैं आपदामेंपड़ मरणतुल्य होगया और इसीके कारण अपनी परमप्रिया से मेरा बियोगहुआ यहयंत्र मेरी स्त्रीका है जिसके बियोग में न तो मैं जीता और न मराहुआहूं जो इसकी कहानी आप मुझ से श्रवण करें तो निस्संदेह मेरी दुर्दशापर आप को दया उपजैगी बदौरा ने कहा मैं इस बृत्तांतको दूसरे समय सुनूंगी तुम कुछ काल यहां ठहरो वह वहां से उठ एक कोने में गई और पुरुषोंके वस्त्र उतार स्त्रियों के वस्त्रपहिन वही पटका जिसे बियोगकेदिन कटिमें बांधाथा बांधकर क़मरुज्ज़मांके समीपआई क़मरुज्ज़मां अपनी प्रियाको तुरन्त पहिंचान दौड़ा और उसे लिपटगया और कहा ऐसे बादशाहका गुणमानताहूं जिसकेकारण मैं अपनी प्यारी से मिला बदौरा ने कहा अबतुम उस बादशाहको न देखोगे वह बादशाह मैं हीं थी उपरांत बदौरा ने अपनाबृत्तांत आरम्भसे अन्तपर्य्यन्त क़मरुज्ज़मां से प्रकट किया और क़मरुज्ज़मांने भी अपनाहालकहा फिर परस्पर बृत्तांतसुन अपनी शय्यापरजाय सुखशयन किया तदनन्तर बदौरा ने निज वस्त्रपहिर असमंजस बादशाह को अपने महल में बुलवाभेजा उस बादशाह ने महल में एक रूपवती सुन्दर स्त्री को देख आश्चर्य्यकर पूछा यह

कौन स्त्री है और कहांसे आई और मेरादामाद कहांहै बदौराने मुस्क-राके उत्तरदिया कल दिनतक मैं अवौनी देशका बादशाह था आज मैं चीन देशकी शाहज़ादी शाहज़मांनामक चीलद्रनद्वीप के बाद-शाहके बेटेकी स्त्रीहूं यदि आप किंचित् ध्यानधर हम दोनोंका बृत्ता-न्तसुनेंगे तो आश्चर्य्यकरेंगे सो उसने अपना और अपने भर्त्ता का बृत्तांत सविस्तर कहसुनाया और कहा हमारे धर्म में चार स्त्रियों के साथ इकट्ठा बिवाह करना उचितहै परन्तु पहिली स्त्री को दूसरी स्त्री के साथ बिवाहकरने से अत्यन्त ईर्षा औ डाह उपजती है मैं इस की पहिली स्त्रीहूं मैं मनसे कहतीहूं कि तुम्हारी बेटी का बिवाह मेरे पतिसेहो बादशाहने यह अपूर्ब्ब बृत्तान्त सुन आश्चर्य्य किया और क़मरुज़्ज़मांसे कहा हे बेटा ! आजतक हम बदौरा को पुत्र जानतेथे परन्तु यह ज्ञात न था कि यह चीनकी शाहज़ादी और तुम्हारी स्त्री है अब मैं तुझे दामाद जानताहूं जो तुम्हारी इच्छाहो तो मैं अ-पनी बेटी हयातुलनफ़सका तुम्हारे साथ बिवाहकरदूं तुम्हारी स्त्री भी इस बातमें राज़ी है और तुम मेरे दामादहोकर इसदेशकी बादशाहत आनन्दपूर्ब्बक करो क़मरुज़्ज़मांने कहा मुझे अपने देशमें जाने की इच्छा थी निदान क़मरुज़्ज़मां उस दिनसे सिंहासनपर बैठ वहांका राज्य करनेलगा और हयातुलनफ़सके साथ उसका बिवाह बड़ीधू-मधामसे हुआ वह दोनों स्त्रियां आनन्दपूर्ब्बक प्रीतिसे रहने लगीं और क़मरुज़्ज़मां उन दोनों के साथ बराबर प्रीतिकरता और प्यार तुल्य रखता और पारी २ से उन दोनों के महल में जाय आनन्द से बिहारकरता ईश्वरकी इच्छासे एकही वर्ष में उन दोनों स्त्रियों से दो बेटे अतिसुंदर उत्पन्नहुये क़मरुज़्ज़मां ने उनके उत्पन्न होने का बड़ा उत्सव किया और लाखोंरुपये याचक मंगन और सेवकादि-कोंको दिये जो बेटा बदौरासे उत्पन्नहुआ उसका नाम अमजद और जो दूसरी से था उसका नाम असद रक्खा वह दोनों भाई एकही जगह रहनेलगे जब वह बड़े और बिद्या सीखने के योग्य हुये उनके वास्ते सर्ब्बगुण सम्पन्न बड़े बड़े चतुर बिद्यानिधान अध्या-पक नियत किये उन दोनों में अत्यन्त प्रीति थी जितने २ वह

बढ़तेजाते उतनीही उनमें प्रीतिभी बढ़ती गई जब वे दोनों बड़े हुये और बुरा भला समझनेलगे क़मरुज़्ज़मांने दोनों के वास्ते भिन्न २ महल और सेवक नियत करादिया परन्तु उन दोनों ने कहा हमदोनों भाई एकही महल में साथही रहाकरेंगे हमें एक दूसरे का वियोग एकघड़ीमात्र का अच्छा नहीं लगता क़मरुज़्ज़मां ने कहा हे बेटो ! जो तुम्हारी इच्छाहो वह दोनों एकही घरमें आनन्द-पूर्व्वक रहने लगे जब वह दोनों उन्नीस २ बर्ष के होकर बादशाही प्रबंध और शस्त्रविद्यामें बड़े निपुणहुये क़मरुज़्ज़मां ने बिचारा जब मैं शिकार खेलने जाऊंगा तो मेरे पीछे पारी २ से यह गद्दीपर बैठा करें सो वे अपने पिताकी आज्ञानुसार गद्दीपर बैठाकरते यदि वे दोनों सुन्दरता और बुद्धिमें तुल्य थे पर उनकी दोनों माता अपने बेटेसे दूसरेको अधिक प्यार करतीं तात्पर्य बदौरा असद को बहुत चाहती और उसकी सौत बदौराके बेटेको और वह दोनों सब बि-षयों में अपनी २ सौतेली माता से सम्बन्धरखते और यही प्रीति सौतेली माताओं के गुप्तईर्षा और डाहका कारणहुई उन दोनों ने यही चाहा कि हम अपने २ पुत्रका मन सौतेली मातासे फेरें प्रकट में उनकी परस्पर प्रीति देख न कहसकीं इस हेतु उन्हों ने चाहा इस बृत्तांतको अपने २ बेटों से प्रकटकरें सो एक दिन अमजद शा-हज़ादा बदौराकापुत्र सभासे उठ अपने घर आता था कि मार्ग्ग में सेवकने अलग लेजाय उसकी दूसरी माताका पत्र उसे दिया उसने पत्रपढ़तेही कोपाग्निमें उस सेवकको ऐसा खड्गमारा कि दो खण्ड हो गिरपड़ा और उसीदशामें अपनी माता बदौराके समीप जाय उसपत्रको दिखाया वह भी उसे पढ़ अत्यंत क्रोधितहुई और कहा बेटा जो उसने मेरे बिषयमें लिखा केवल झूठ दोष लगायाहै अन-न्तर उसने अपने महल में जाय सबबृत्तांत अपने भाई असद से कहा और उसपत्रको दिखाया वह भी उसे पढ़ अत्यन्तकोपितहुआ दूसरे दिन असद सभामें जाय तख़्त शाही पर स्थित हुआ और सभाको बिदाकर अपने घर जाता था कि मार्ग में एक बृद्धाने बदौरा का पत्र उसे दिया असद भी उसे पढ़ ऐसा क्रोधित हुआ कि उस

गुह्याको मारडाला और अपनी माता के निकटजाय पत्रदिखाया वह पत्रको पढ़तेही असद से क्रोधितहुई और कहा तूभी अमजदकी सदृश बिक्षिप्तहोगयाहै तूने व्यर्थ उसको मारडाला मेरे साम्हने से चलाजा फिर कभी मेरे साम्हने न आइयो असद अपनी माता के क्रोधित बचनसुन कोपाग्नि में काष्ठवत् जल अपने महलमें आया और वह पत्र अमजदको दिखाया निदान वह दोनों शाहज़ादे इस बातसे अत्यन्त दुःखी और व्यथितहुये और उन दोनोंकी माताओं ने अपने अपने बेटे से अतिअप्रसन्न होकर उनके बध करने की इच्छाकी तीसरेदिन क़मरुज़्ज़मां अहेरसेलौट अपने महलमेंआया दोनों स्त्रियोंको इकट्ठी शोचयुक्त और रोते देख बिस्मितहुआ और पूंछा कुशल तो है क्यों ऐसी मलिनरूपहोरहीहो बदौरा ने कहा तुम्हारे दोनों पुत्रों ने हमको इतना दुःखदिया कि कुछ हम कह नहीं सक्तीं इससे अधिक हम तुमसे और कुछ नहीं कहसक्तीं क़मरुज़्ज़मां छलयुक्त बैन बदौराके सुन कोपित हो चाहता था कि दोनों बेटों को बुलवा अपने हाथों बध करे परन्तु श्वशुर के समझाने से आप न मारा और जिन्दरनामक एक अपने प्रधान को बुला के कहा इसीसमय इन दोनों दुष्टों को नगर से बाहर लेजाय किसी बन में बधकर और उनके मरने का कोई चिह्न लाकर मुझे दिखा जिन्दर उन दोनों निर्दोष प्राणियों को रातोंरात पुरसे बाहर लेगया और भोर होतेही घोड़ों से उतर उन दोनोंसे बादशाहकी आज्ञा प्रकटकी उन्हों ने कहा हम निर्दोष हैं यदि बादशाहकी यही इच्छाहै तो बहुत अच्छा हमेंमार अमजदने कहा पहिले मुझेमार कि अपने असद भ्राताको मारेजाते न देखूं असदने भी यही कहा तब प्रधानने उन्हें मिलाके चादरसे बांधा और खड्ग निकाल मारना चाहा इतने में उसका बहुमूल्य घोड़ा जिसका साज सुनहलाथा खड्ग की चमक से भड़का और बागतोड़ बनकी ओर दौड़ा जिन्दर सोचा इनका मारना तो सुगमहै पहिले घोड़ेको पकड़लाऊं ऐसा न हो जो वह दूर निकलजावे निदान खड्ग वहीं छोड़ आप घोड़े के पीछे दौड़ा घोड़े को बनमें शीतल बायु लगी वह और अधिक भागने लगा उसके

हिनहिनाने से एकसिंह बनसे सोताहुआ जाग बाहर निकला और जिन्दरका पीछा किया॥ अब उन दोनों भाइयों का हाल सुनो वह दोनों बिचारे चादर से बँधेहुये उसके आगमन की बाट देखते थे थोड़े कालके पश्चात् असद ने अमजद से कहा भाई बिलम्ब हुआ जिन्दर घोड़ाले उधर से नहीं लौटा ऐसा न हो कि कोई उसपर दुःख पड़ाहो उसकी सहायता अवश्य करनी चाहिये यहकह उन दोनों ने चादरखोली अमजद उसका खड्गले संयोग से उसी बनकी ओर जहां सिंहने उसे गांसाथा दौड़ा और यह दशा देख सिंह को बड़ी बीरता और पुरुषार्थ से ललकारा सिंह जिन्दर को छोड़ अमजद की ओर झपटा उस साहसी ने लपक ऐसा खड्गमारा कि सिंह दो खण्डहो गिरपड़ा तिस पीछे अमजद ने खड्ग को रख जिन्दर को कि भयसे मूर्च्छितहो गिरपड़ा था पृथ्वी से उठा उसके शरीर और बस्त्रों से धूर पोंछी और असद उसके घोड़े को पकड़लाया तदनन्तर अमजद ने खड्गपोंछ जिन्दरको दे कहा अब तुम हमारे पिता की आज्ञा प्रतिपालन करो जिन्दर ने देखा सिंह के दो टुकड़े हुये पड़ा है अमजद की सामर्थ्य और बलपर धन्य २ किया और असदका बड़ागुणमाना फिर प्रत्येक के चरणचूम बिनयकी हे शाहज़ादो! तुमने मेरेप्राण ऐसे बली बैरी से बचाये और मेरे घोड़ेको पकड़ लाये यदि हज़ारबर्षपर्य्यन्त असंख्य जिह्वा से तुम्हारे उपकारका बखानकरूं तो थोड़ाहै अब मैं क्योंकर तुमकोमारूं किन्तु आशारखताहूं कि इतनीढिठाई तुम मेरी क्षमाकरो जो बादशाह मुझे तुम्हारे बदले कुटुम्बसहित बधकरे तो भी मुझे स्वीकार है निदान अमजद और असदको अपने कण्ठसे लगा कहा मुझे एक एक बस्त्र ऊपरका दो सो दोनों के बस्त्र सिंहके रक्तमें डुबोये और जितने अशरफ़ी रुपये उसके पासथे उन्हें दे कहा तुम दोनों किसी दूसरे देश में चलेजाओ और आप वहां से नगरमें आया और बादशाहके सम्मुखजाय दोनों के रुधिरसे डूबेहुये बस्त्र उसके साम्हने डालदिये देखतेही क़मरुज़्ज़मां का क्रोधशांतहोगया और बेटों के शोक से अति ब्याकुलहुआ उनके बस्त्रोंकी जेबों में से उनकी दुष्टमाताओं के हाथके

चित्र सिन्दर और शेर का



लिखेहुये दो पत्रपाये उनको पढ़ उसे प्रतीतहुई कि यह निर्दोष थे इससे वह अत्यन्त शोकयुक्तहो हाहाखाय रोकर कहनेलगा मेरेसदृश कोई अन्यायी पिता संसार भरमें न होगा जिसने अपने बेटों को निर्दोषमारा वह दोनों अपनी माताओं के छलबल से मारेगये तद-नन्तर सौगन्दखाई फिरकभी अपनी स्त्रियोंका मुख न देखूंगा और उनदोनोंको कारागृह में डालदिया और अपने दोनों पुत्रों के मरवाडा-लनेसे शोकसागरमें डूबा और इधर वह दोनों भ्राता बन २ भाग-ते और रातको बनफल भोजनकर कालक्षेप करते चलेजाते रातको बनमें एक भाई सोता और दूसरा जग बनपशुओं से रक्षा करता इसी प्रकार एक मास प्रवास करते बहुत ऊंचे काले पहाड़ के नीचे पहुँच उस पर चढ़ने लगे ऊँचान निचान के कारण थकित भये बिशेष असद अधिक असक्तहो गिरपड़ा अमजद कुछ साहस कर पहाड़की चोटी पर चढ़गया वहां निर्मल मिष्ट नीरका अति उत्तम कुण्ड और एक अनारका वृक्षथा जिसकी घने घने फलोंकी डालियां झुकके नीचेलगीथीं अमजद असदको उठा वहीं लेगया वह भूखे प्यासे निर्बल होगयेथे अनारतोड़ खाये तीन दिन वहीं ठहरे चौथेदिन दूसरे पहाड़की ओर जिसका मार्ग सूधा और बरा-बर था चले पांच दिनपीछे उस पहाड़के नीचे उतरे वहां एक बि-शालनगर देखपड़ा वह उसे देखतेही प्रसन्नहुये और वहां जाने की इच्छाकी असदने कहा भाई हम दोनों का इकट्ठा वहां जाना अच्छानहीं ऐसा नहोजो किसी प्रकारसे दुःखमें पड़ें एक तो उससे बचारहे मैं नगर में जाय शीघ्र भोजन मोललेकर आताहूं तुम इसी स्थानपर ठहरो निदान वह नगरकी ओर चला जब नगर के भीतर पहुँचा प्रथम उसे वृद्धपुरुष मिला असदने उसका स्वरूप देख दण्डवत् कर पूंछा बाज़ार किस ओर है उसने मुस्कराके उत्तर दिया हे पुत्र! तुम मुझे बिदेशी जानपड़तेहो असद ने उत्तर दिया सचहै मैं अभी इस देश में दूरसे आया हूं वृद्धने कहा बेटा तुम क्यों बाज़ार पूछतेहो असदने कहा वहां से मैं भोजन अपने भाई के निमित्त मोललाऊंगा वृद्धने कहा आज तुम मेरे घरपर चलो

वहां कईप्रकार के भोजन बनेधरे हैं तुम पेटभरकर खाना जितना लेजासको अपने भाई के लिये लेजाना निदान वह कुटिलबृद्ध असदको झांसादे अपने महलमें लेगया असद्ने उसके घरमें जाय देखा कि चालीसबृद्ध अग्नि के चहुं ओर बैठे पूजा करते हैं यह हाल देखडरा और जानगया कि इसदुष्ट बृद्धने मुझसे छल किया उपरांत उन बुड्ढेने उन चालीसों से कहा आजकादिन सुफल है जो ऐसा शिकार हाथलगा यह कह गजवान्का नामले पुकारा कि तुरन्तआ और इसे तहखाने में लेजा पुकारतेही एक कुरूपहब्शी आया और असद्को पछाड़ मुश्कैंबांधीं उस बृद्धने कहा इसे तहखाने में लेजा मेरी बोस्तना और कैवाना लड़कियोंको सौंप कहियो इसे रक्षापूर्वक रक्खें और प्रति दिवस इसे बहुत मारें और प्रात व सन्ध्याको नियम से रोटीका टुकड़ा खाने को और एक जलका लोटापीने को दें जिससे यह न मरे जब जहाज़ की ऋतु आवे हम इस मुसल्मानको ज्वालामुखी पर्ब्बतपर भेजेंगे कि इसमें अग्निकी भेंट दीजावेगी गजवान् उसे पकड़ वहीं लेगया और एक भारी बेड़ी उसके पांवमें डालदी कैवाना और बोस्तना प्रतिदिन वहांजाय असद्को नग्नकर अतिनिर्दयतासे मारतीं जिससे वह मूर्च्छाखाय गिरपड़ता तब वही दुष्ट स्त्रियां रोटी का टुकड़ा और जलदे और उसी दुर्दशा में उसे छोड़ चलीजातीं असद सचेतहो अपनीदुर्दशा और दीनतापर बहुत रोता उपरान्त यह समझता कि मेरा भाई अमजद इनसब दुःखों से तो बचा है इससे अपने मनको धैर्य्यदेता अमजद सन्ध्या तक अपने भाईकी बाट देखाकिया जबरात्रिहुई तब उसके आने से निराशहो दुःखित हुआ सम्पूर्ण रात्रि अत्यन्त व्याकुलतासे काटी भोरको उठ नगर की ओर गया उसमें मुसल्मानोंको कमदेख आश्चर्य्य किया एक मनुष्य से पूंछा इस नगरका क्या नाम है उसनेकहा इसबस्तीको अग्निपूजकोंका नगर कहते हैं क्योंकि इसमें सबकेसब अग्निपूजक रहते हैं मुसल्मान यहां नहीं रहते अमजद ने पूंछा यहां से अवोनीद्वीप कितनी दूर है उसने कहा यहां से वह द्वीप समुद्रमार्ग से चार महीने की राहपर और ख़ुश्की से दो महीने

परहै अमजद जो चारसप्ताहमें अबोनीसे आयाथा यहसुन अचम्भा किया फिरशोचा कि हमबड़े २ भयानक मार्गोंसे आये हैं सूधामार्ग इससे निस्सन्देह दूरहोगा उपरांत फिरते फिरते एक सूचीकार की दूकानपर खड़ाहोगया उस सूचीकार ने उसके स्वरूप और भेष से जाना कि यहमुसल्मानहै अमजद उसे अपने अनुकूलपाकर प्रणाम कर कुशलपूंछ बैठगया और उसे दयावान् पा अपनीआपदा और अपने भाईके लोप होजानेका बृत्तान्त प्रकटकिया सूचीकारने कहा जो तुम्हाराभाई किसी अग्निपूजकके हाथलगा तो उसका मिलना कठिनहै परन्तु अब अपनी रक्षाकरो यदि तुम मेरेसमीप रहोगे तो मैं तुम्हारीरक्षा और सहायता करूंगा अमजद इसबृत्तान्त को सुन अपनेभाई के मिलनेसे निराशहुआ और उसका उपदेशमान एक मास पर्यंत सूचीकारकेबिना बाहर न निकला एकदिन वह अकेला उसनगर में निकला तो दैवयोगसे किसीकूचे में जानिकला वहां एक अतिरूपवती तरुणस्त्री ने अपने चन्द्रमुख से बस्त्रउठाय उससे सुन्दर कटाक्षकिया और पूंछा हे प्राणप्यारे! कहांजातेहो और कहांके रहनेवालेहो ठहरजाओ अमजदने उसकेरूप छबिअनूपपर मोहित हो उत्तरदिया मैं अपने महलको जाताथा परन्तु अबतुम जहां लेचलो वहांचलूं उसमृगनयनी ने कहामुझऐसी सप्रतिष्ठितस्त्रियांअपने प्यारों को अपने घर नहीं लेजातीं किंतु पुरुषउनको अपने घर लेजायाकरते हैं अमजदशोचा मेरे तो कोई घरनहीं और जो सूचीकारकेघर इसेलेजाऊं तो बड़ीलज्जा है इसके बिशेष मैं इसनगरमें किसीको नहीं जानता तू इस बिचारको छोड़ सीधासूचीकारके घर चलाजा सो अमजद चुपकाहो वहांसेचला वह सुन्दरी उसके पीछे होली अमजदने यह इच्छाकी कि वह स्त्री मेरापीछाछोड़ चलीजावे और मैं किसी प्रकार सूचीकारके गृहमें पहुँचूं परन्तु वह दोनों ऐसे थकगये कि किसीगली में एक हवेलीके द्वारपर जिसके दोनों ओर चौकी और कोंच बिछेथे एकओर अमजद दूसरी ओर वह स्त्री बैठगई थोड़ीदेर पीछे उसस्त्रीने अमजदसे पूंछा क्या तुम्हारा महलयही है अमजद चुपकाहोरहा अनन्तर उसनेकहा प्रीतम भीतर क्यों नहीं

चलते किसकी बाट देखतेहो अमजदने उसस्त्रीके धोखा देनेकेलिये कहा इसघरकीकुंजी मेरेसेवकके पासहै उसे मैंने भोजन मोललेने के लिये बाज़ार में भेजाहै अमजदके इसकहनेसे यहप्रयोजनथा कि वह स्त्रीऊबके चलीजावे परन्तु यह न जानताथा कि वह छायाके समान पीछा न छोड़ेगी थोड़ीदेरपीछे उसस्त्री ने कहा तुम्हारासेवक बड़ादुष्ट और क्रूरहै जो अबतक नहीं आया जब वह आवे तो उसे भलेप्रकार दण्डदेना फिर कहनेलगी मुझे शोभा नहींदेती जो मैं परपुरुषके साथ मार्गमें बैठूं यह कह काष्ठका ताला जो उस महलमें लगाथा तोड़ने लगी अमजदने कहा ताला मततोड़ कुछकालठहर उसने कहा क्या तुम्हारा यह घर नहीं काष्ठकाताला फिर बनजावेगा निदान वह सुन्दरीतालातोड़ महलमेंगई अमजदने मनमें कहा इसको तो स्त्रीजान कोई कुछ न कहेगा मुझीसे इसके मध्ये तकरारहोगी इससे यह उत्तमहै कि तू यहांसे चलदे यह इच्छाकरउठा इतनेमें स्त्रीने बाहरआ कहा हे प्राणपति! तुम क्यों अपने महलमें नहीं चलते अमजदने कहा अभी मेरा सेवक बाज़ार से नहीं आया मैं उसके आगमनकी बाट देखताहूं वह आवे तो मैं चलूं उसने कहा भीतर बैठकर सेवक के आगमनकी बाट देखना निदान वह निरुपायहो महलमें गया महल अतिसुन्दर अत्यन्त स्वच्छ और बिशालदेखा सहन बहुत चौड़ा और रमणीय फिर दोनोंसीढ़ी से चढ़ बैठने के स्थानमें गये उसे अत्यन्त सुन्दर सुन्दर दालान दरदालान अति बिचित्र बस्तु से अलंकृतपाया और एक स्थान पर अनेक पात्र नानाप्रकार के स्वादिष्ठ व्यञ्जनों से भरेहुये रक्खे थे और दूसरी जगहपर चीनीके पात्रोंमें अतिस्वच्छ सूखे और गीले फलरक्खे थे एकओर मद्यके पात्र और शीशे रक्खे थे अमजद उस महलको अतिसुन्दर देख समझा कि यह अवश्य किसी धनाढ्यका स्थान है अभी उसके सेवक आय हमें मारेंगे यह शोच अति चिन्ता करनेलगा वहस्त्री सब सामग्री देख अति प्रसन्नहुई और कहनेलगी हे प्यारे,नयनों के तारे! तुमतो कहते थे अभीकुछ तय्यार नहीं यहां तो सबकुछ बर्त्तमान है तुम्हारा दास भोजन और फलादि रख कहीं दूसरे कार्य्यको चलागयाहोगा

तुम्हारे मलीन मुखसे ज्ञात होता है कि यह सब सामग्री और किसी स्त्रीके निमित्त है जिसके लिये तुम उदासीन बैठेहो हे प्यारे! तुम कुछ चिंता मतकरो उस सुन्दरी को आने दो मैं उसे कुछ न कहूंगी अमजदने हँसदिया और कहा हे प्राणप्यारी! तुम नहीं जानतीं यहपाक जो वर्त्तमान हैं मेरे भोजन करनेके योग्य नहीं मेरा सेवक अतिस्वच्छ और नवीन नानाप्रकार के भोजन लाता होगा इसी हेतु अभीतक मैंने भोजन नहीं किया वह स्त्री उसे बरजोरी भोजनपर बैठायखानेलगी और दो तीनग्रासखा एक पात्रमद्यपी दूसरा अमजदको दिया उसने वहभी लाचारीसे पिया अमजद ने मनमें कहा उत्तमहो कि कोई सेवक उस भवन के धनीका न आवे और हम यहांसे खापी अपने अपने घरोंको चलेजावें यदि ईश्वर न करे कोई आगया तो अतिअप्रतिष्ठा होगी यह तो यही चिंताकरता था परन्तु वह स्त्री बड़े हर्ष से भोजन करती थी जब वह दोनों भोजनकर मद्यपी निश्चिंतहुये इतने में उस घरका बहादुरनामक धनी आपहुँचा वह बादशाह के अश्वशालाका रक्षकथा इस भवन के सिवाय उसके रहने का एक औरभी घरथा इस घरमें कभी अपने मित्रों को निमन्त्रणकर ज्यवनार करता इसीलिये वह उसदिन अमजद के आनेके दोचार घड़ी पहिले अपने इष्टमित्रों के हेतु भोजन और फलादि उस जगह रखगया था पहिले उसने क़ुफ़ुलटूटा और द्वारखुला देख आश्चर्य्य किया जब भीतरजाय मनुष्योंके बोलने और खानेका शब्द सुना तो अधिक बिस्मित हुआ सो वह उस दीवारकी आड़में खड़ाहो उनका चरित्र देखने लगा कि यह कौन हैं उसने वहां क्या देखा कि यह दोनों निश्शंक होय भोजन करते और मदिरा पान करते हैं उस सुन्दरीकी पीठ द्वारकी ओरथी उसको बहादुर के आनेका हाल मालूम न हुआ परन्तु अमजदका मुख द्वारकी ओर था उसको आते देखडरा और अति ब्याकुलतासे बहादुरकी ओर देखनेलगा बहादुर ने सैन से उसे धैर्य्यदे अपने निकट बुलाया कि उसका हाल मालूम करे अमजद लघुशंकाका बहानाकर बहादुरके समीप गया बहादुर ने अमजद से पूँछा तुम क़ुफ़ुलतोड़ क्यों इस स्त्रीको यहां लाये अमजदने कहा

भाई तुमसे मैं बहुत लज्जितहूं यदि तुम मेरे आगमनकी व्यवस्था सुनोगे तो बिश्वासहै कि मुझे क्षमाकरोगे यह कह उसने संक्षेप में अपनी सम्पूर्ण व्यवस्था और यहांके आनेका कारण वर्णन किया बहादुरने कहा हे शाहज़ादे! मुझे तुम्हारी निर्दोषता बिदितहुई अब तुम भय न करो आनन्दपूर्व्वक उस स्त्री के साथ खाओ यह घर और सामग्री मेरी है मेरानाम बहादुर है मैं बादशाहके अश्वालय का रक्षकहूं इसके विशेष रहनेका मेरा दूसरा घरभी है इस घर में कभी कभी अपने मित्रोंके साथ आय पहर छः घड़ी हँसता बोलताहूं फिर इस घरको मूँद के चलाजाताहूं अब मैं सेवकों के समान बस्त्र पहिर तुम्हारे समीप आऊंगा तुम निश्शङ्क मुझपर कोपकरना और दुर्बचन कहना और कहना कि बिलम्ब क्योंहुआ किन्तु दण्ड देना इसमें मेरी प्रसन्नताहै और मैं तुम्हारी सेवाकरूंगा तुम रातभर इस सुन्दरीके साथ आनन्द से बिहार करना और भोरको इसे कुछ देकर बिदा करना मेरे भाग्य उदय हुये कि तुम ऐसे शाहज़ादे ने यहां आय मेराघर पवित्र किया इतना दिलासादे कहा अब तुम बेगही जाय पूर्व्ववत् उसके साथ भोजनकरो यह सुन धैर्य्यधर उस स्त्री के निकटजाय बैठा और धनी की आज्ञापाय बड़ी रुचिसे खाने पीने लगा बहादुरने अपना स्वरूप बदलकर अमजद के सम्मुख जाने की इच्छाकी इतनेमें उसके मित्र जिनको उसने निमन्त्रण कियाथा आये बहादुर ने कहा भाइयो आज दयाकरो इसके बदले में दूसरे दिन तुमको निमन्त्रण करूंगा निदान उनको बिदाकर सेवकों के बस्त्रपहिर अमजदके सम्मुखगया और उसके चरणोंपर गिर गिड़-गिड़ाय कहनेलगा मेरा अपराध क्षमाकीजिये शाहज़ादे ने प्रकटमें क्रोधित हो कहा हे निर्लज्ज! तू बड़ादुष्ट अयोग्य है भोरकागया अब आया बहादुर ने बिनयकी स्वामी आज मुझसे बड़ा अपराध हुआ मैं न जानता था कि आप आज सबेरे आवेंगे अमजदने कहा इस अपराध का दण्डदेना तुझे अवश्य है कि फिर तू ऐसा न करे यह कह उठा और दोचार लकड़ियां धीरे से उसके लगाईं और लकड़ी फेंक फिर भोजन करनेलगा उस स्त्रीको इस दण्ड देनेसे बोध न हुआ

उठके उस लकड़ी से बहादुर को ऐसामारा कि वह दीन वास्तव में पीड़ासे रोनेलगा अमजदको यहबात बहुत बुरीलगी उठकर उसके हाथसे लकड़ी छीनी और कहा हे प्राणप्रिया! कोई ऐसाभी मनुष्य को मारताहै और उसस्त्रीका हाथ पकड़के लेगया और भोजन पर बैठाया बहादुर आंसूपोंछ हाथबांध खड़ाहोगया और पात्र भरभर उनको मद्य पिलानेलगा जब उसने देखा कि वह भलीभांति भोजन करचुके तो पात्रहटा उसजगहको साफ़कर सम्पूर्ण बस्तुओं को अलमारी में रखदिया इतने में सन्ध्याभई बहादुरने हरएक स्थानपर दीपदान प्रज्वलित किये और शय्या झार अति उज्ज्वल कररक्खी अमजद और वह स्त्री शयनकरने शय्यापर गये बहादुर छुट्टी पाकर दूसरे स्थान में जायसोरहा उस स्त्रीने उसके खुर्राटों का शब्द सुन अमजद से कहा कि तुम इस खड्गसे जो शय्याके पास धरा है लेजाय उससेवकका शीशकाटो तो मैं जानूं कि तुममुझे प्यारकरते हो अमजदको उसका कहना बुरामालूमहुआ और समझा कि मदिरापी उन्मत्तहो ऐसे बचन कहती है यह समझ उसस्त्रीसे कहा हे प्यारी! सेवक ने कोई ऐसा अपराध नहीं किया जिस के बदले बधकरूं तुम्हारा इतना मारनाही मुझे बुरामालूम हुआ उस अन्यायी दुष्टा स्त्रीने कहा मेरी प्रसन्नता इसी में है कि यह दुष्ट सेवक माराजावे जो तुम नहीं मारते तो मैंहीं उसे मारतीहूं यह कह उठी और खड्ग नग्नकर बहादुर की ओर चली अमजद को बिश्वास हुआ कि यह दुष्टा अवश्य उस निर्दोषको जाय प्राणसे मारेगी उस को बचाकर इस अभागी को मारना चाहिये धोखादे उस से कहा यदि तुम्हारी प्रसन्नता इसीमें है तो खड्ग मुझे दो तो मैं अपने सेवक को अपनेही हाथसेमारूं और तुम मेरेपीछे चुपकी चलीआवो ऐसा न हो जो पांवकी आहट से वह जागउठे निदान जब वह दोनों उसी स्थानपर जहां बहादुर सोताथा गये अमजदने औसरपाय उस स्त्री के ऐसा खड्गमारा कि मस्तक उसकाकट नीचे गिरपड़ा बहादुर ने जागकर क्यादेखा कि अमजद रुधिरभराहुआ खड्ग हाथमें लिये खड़ाहै और उसस्त्रीका शिरकटकर उसकी छातीपर पड़ा है घबड़ा

के पूंछा तुमने क्यों इस स्त्रीको मारा अमजदने सम्पूर्ण व्यवस्थाबर्णन करकहा तुम्हारी रक्षाके लिये इसदुष्टाको मैंने मारा क्योंकि सिवाय इसके तुम्हारे बचनेका कोई उपाय न सूझा बहादुर ने कहा तुमधन्य हो कि मुझ निर्दोषको इस वेश्यासे बचाया इससे मैं तुम्हारा बड़ा गुण मानताहूं इतनाकह फिर बहादुर ने कहा इसी अँधियारी रात्रि में इसकी लोथ डालआनी चाहिये यदि सूर्य्यके उदयहोने के प्रथम मैं इसे फेंकआया तो कुशल है नहीं तो जानना कि मैं पकड़ा गया इस हेतु मैं पहिलेही से यह महल और सम्पूर्ण बस्तुइसकी तेरे नाम लिखेदेताहूं यह कह उसने तुरन्त उसके नाम पत्रपर अपना महल लिख अमजदको दिया और उस स्त्री का शिर और धड़ चादर में बाँध नदीकीओर लेचला मार्गान्तर में उसे थानेकी रौंदमिली और उस गठरीको खुलवाय उसमें मरीहुई स्त्रीदेख उसे पकड़ थानेदारके निकट लेगये थानेदार ने दासके वेषमें भी बहादुरको पहिंचानकर बिचारा कि बादशाहकी आज्ञाबिना इसेबधकरना उचित नहीं रात भर बहादुर को अपने घरमें लेजाय रक्खा और प्रातउठ उसे लोथ समेतबादशाहके सम्मुखलेगया बादशाह बहादुरको दुर्बचनदेकहने लगा हे दुष्ट! तू मेरी प्रजाको मार उनकाधन बस्तु लूटलेताहै अभी इसे बधस्थान में लेजाय मारो कोतवाल ने चौराहे में शूलीखड़ी की और यह डौंड़ी पिटवाई कि अमुकमनुष्यने एकस्त्रीको माराहै आज वह उसके बदले शूली दियाजावेगा अमजद बहादुर के न लौटनेसे अत्यन्त चिन्ता में व्याकुल था अकस्मात् डौंड़ीका शब्द सुन उसे बिश्वासहुआ कि बहादुर अवश्यपकड़ागया और माराजावेगा अब यह उचित नहीं कि मैं अपने को बचाऊं और मेरामित्र माराजावे तुरन्त उस घरसे निकलकर बधस्थान में गया और कोतवाल जो बहादुरके मारनेके लिये लायाथा कहा यह दीन निपट निर्दोषहै उस स्त्रीको मैंने माराहै जब इस स्त्रीने बहादुरके मारनेकी इच्छाकी मैंने उसे बचा स्त्रीको मारा और सम्पूर्ण व्यवस्था अपनी और उसस्त्री की कहसुनाई कोतवाल यह सुन उन दोनोंको बादशाहके सम्मुख लेगया बादशाह ने अमजद से कहा तू अपने मुखसे सब बृत्तान्त

कह अमजद ने अपना आदि से अन्त पर्य्यन्त सम्पूर्ण बृत्तान्त ब-र्णनकिया बादशाह ने यह बृत्तान्त सुन आज्ञादी कि मैंने इस दुष्टा के मारने का अपराध क्षमाकिया और बहादुर को भी जोकि निपट निर्दोषहै छोड़दिया और अमजद को वज़ीर किया कि अपने पिता की अनीति और मार्गकी व्यथाको भूले इस कृपाके बिशेष हरप्र-कार से उसका सन्मानकिया सो अमजद उस अग्निपूजक बादशाह की सेवाकरनेलगा और अपने भाई असदको भी बहुधा ढूंढ़ता अन-न्तर डौंड़ी पिटवाई जो मेरे असद नामक भ्राता को ढूंढ़लावेगा वा उसका समाचार देगा मैं उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा इसके बि-शेष उसने बहुत से जासूस प्रकट और गोप्य असद को ढूंढ़ने के लिये नियत किये परन्तु कहीं से उसका पता न आया वह दीन उसी तहख़ाने में क़ैदथा उस बृद्धकी बोस्तना और कैवाना लड़कियां उसे मारतीं और रोटीका टुकड़ा और जल उसके सम्मुखरख चलीजातीं इतने में अग्निपूजकों के भेंटकादिन निकट पहुंचा वह जहाज़ जो ज्वा-लामुखी पहाड़ को बर्षमें एकबेर जाया करताथा बहरामनामक कप्तान समेत वहां पहुंचा उस बृद्धने ज्वालामुखी पहाड़ की भेंटके हेतु बह-रामको उसे सौंपकर कहा इस मुसल्मानको रक्षापूर्ब्बक लेजाना जब जहाज़ वहांसे चलनेलगा बहराम ने असद को एक सन्दूक़ में बन्द किया और असबाब इस युक्तिसे जहाजपर चढ़ाया कि असद छिप गया अमजदने जहाज़ छूटनेके पहिले सुना कि अग्निपूजकों की भेंट के लिये एक जहाज़ इस नगरमें आया करता है और कप्तान उसका एक न एक मुसल्मान को आतशीन पर्ब्बत में डालने के लिये इस नगर से लेजाता है उसने बिचारा कहीं इसी कार्य्य के हेतु असदको पकड़ गुप्त जहाज़पर न चढ़ायाहो सो आपही जहाज़ पर गया और आज्ञादी कि खलासी और ब्यापारी इस जहाज़ से अलगहों और अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुम इस जहाज़ में असद को ढूंढ़ो उन्होंने ऊपर नीचे जहाज़ के बहुत ढूंढ़ा कहीं उसे न पाया निदान अमजद ने उसे छोड़ दिया जब वह जहाज़ उस बन्दर से निकल किसी समुद्र में गया तो बहराम ने असद को सन्दूक़ से निकाल

पांव में बेड़ीडाली कि कहीं अपने मरने का हाल सुनके समुद्र में न गिरपड़े कई दिन पीछे जहाज़को बिपरीत बायुलगी और चारों ओरसे जल उमड़ उस जहाज़को किसी दूसरी ओर लेगया मार्गान्तरमें कप्तानको पृथ्वी दृष्टिपड़ी उसने पहिंचाना यह मरजीना नाम मलका की दारुलसल्तनत है बहराम अत्यन्त भयभीत हुआ क्योंकि वह अग्निपूजकों से बैर रखतीथी किसी अग्निपूजक को अपने नगर में न रहनेदेती और न कोई उनका जहाज़ उसके राज्य में जाने पाता जब वह जहाज़ बन्दरमें पहुंचा कप्तान ने जहाज़के निवासियों से कहा यदि मरजीना के लोग इस जहाज़पर आय इस मनुष्य को लेजाते देखेंगे तो मरजीना जहाज़को लूट सबके बधकी आज्ञादेगी इससे यह उत्तम है कि असद की बेड़ीकाट इसे सेवकों के सदृश बस्त्र पहिनाये जावें समयपर यह कहाजावे कि यह हमारा दास है और इसके हाथ में उत्तम उत्तम बस्त्र और रत्नलेजाय रानीको भेंटदूं कि वह मुझे दुःख न दे और असद को भी दिलासादूं कि यह हमारा भेद न खोले इस उपाय से यहां बचकर जब बायु अनुकूल होगी तब जहाज़ खोलेंगे सब लोगोंने यह मत बहरामका पसन्दकिया असद के हाथ पांवकीबेड़ी हथकड़ी कटवाकर दासों के सदृश सफ़ेद कपड़े पहिनाये और उत्तम उत्तम व्यंजन उसे खिला प्रकट में उसको अपनेमें मिलाके कहा कि इसबन्दर से निकल हम तुझे तेरे देशको पहुँचा देंगे तू धैर्यरख तेरेसाथ बड़ा उपकार किया जावेगा परन्तु चैतन्य रह कोई बात उस बुड्ढे के अपकार की किसीसे न कहना और जो कहेगा तो प्राणसे माराजावेगा निदान बहराम ने असदको भली बिधि समझाय बुझाय और बिनतीकर प्रसन्न किया असद ने भी उस दुर्दशा से छूट दासवत् बस्त्र पहिनलिये और बहराम से कहने लगा कि मैं किसी से यह बृत्तान्त न कहूंगा तुम हर प्रकार से धैर्य्य रक्खो निदान जब उस जहाज़ ने मरजीना के बन्दर में लङ्गर किया मरजीना ने अपने बागसे जो समुद्र के अतिसमीपथा नवीन जहाज़ देख उसके कप्तान को बुलवाभेजा और आप भी उसका बृत्तान्त मालूम करनेकेलिये बन्दरपर गई बहराम असद को साथले मरजीना

के निकट गया और दण्डवत्कर कहा मैंने प्रचण्ड वायु के चलने और तूफ़ानके आनेसे जहाज़की रक्षाके लिये आपके बंदर में लंगर किया हम व्यापारी हैं दासोंके लेनदेन का व्योहार करते हैं हमारे सबदास बिकगये केवल यहदास हमने हिसाब किताब लिखने को रखलियां है यहकह उत्तम उत्तम बस्तु किश्तियों में लगा भेंटदेने को लेगया मरजीनाने असदके रूप अनूपको देख मोहितहो बहराम से कहा मैं तेरी भेंट न लूंगी यह सेवक मुझेदे जो कुछ इसका मोल कहेगा मैं दूंगी उपरांत असदको लियेहुये बागमें फिरनेलगी और फिरते २ पूंछा तेरा क्यानामहै असदने रुदनकर उत्तरदिया हे मलका! मेरा कौनसानाम पूंछतीहो मेरे दो नामहैं पहिलानाम मेरा शाहज़ादा असद है अब मेरानाम कुर्बानीआतश इस जहाज़के लोगोंने रक्खाहै अब अग्निपूजक मुझे भेंटदेनेको लियेजाते थे मरजीना यह बृत्तांत सुन असदकी दुर्दशापर पछिताने लगी और बहराम को बुलवा बहुतसे दुर्बचनदे कहा हे दुष्ट! तू शाहज़ादे को भेंट के निमित्त लियेजाताहै और मुझे छलसे दास बताया तेरे लिये यही उत्तम है कि अभी तू जहाज़खोल यहांसे लेजा नहीं तो तेरा जहाज़ लूट जलादूंगी मेरे सामने से दूरहो बहराम वहां से घबड़ाया हुआ और रोताहुआ जहाज़पर आया और तूफ़ानके बन्द न होनेपरभी लाचारी से अपने जहाज़ का लङ्गर उठाने लगा और मरजीना मलका असद का हाथपकड़ महल में लेगई और उसका बृत्तान्त प्रथम से अन्तपर्य्यंत सुन उसे बहुत धैर्यदिया और कहा कल मैं तुम्हें स्नान कराय स्वच्छ बसन पहिराय अपनावज़ीर बनाऊंगी यह कह भोजन मँगवाया और असद को अपने साथ बैठाय खिलाया असद कई मद्यके पात्रपी उन्मत्त होगया जब खा पी निश्चिन्त हुआ तब असद बागमें जाय सैर करने लगा और बहुतकाल पर्य्यन्त वहांपर टहलाकिया फिर बागके कुण्डपर बैठ मुखधोया और हरियालीपर लेटरहा एक घड़ी पीछे अचेतहो सोगया बहराम कि मरजीना के भयसे लंगर उठाने में लगाथा वायु अनुकूलपाकर खलासियों से कहा अब रातिहोगई मीठाजल जो जहाज़पर नहीं रहा हम तुम

चल किसीकुयें अथवा कुण्डसे भरलावें और भोर को बहुत सबेरे मैं जहाजको यहांसे खोलूंगा खलासी यह सुन जल ढूंढ़नेचले मार्ग में उन्हें सुधिहुई कि मलका के बाग में एकमीठे जलका कुण्ड है वहीं से जललाना चाहिये यह बिचार पात्रले उसी कुण्डपरगये वहां एक मनुष्यको सोतादेख पहिंचाना कि यह असद है देखकर बहुत प्रसन्नहुये पहिले जल कुण्डसेभर नौकापर लेगये और असदको धीरे से उठाय नावपर सवारकराय बड़े बेग से जहाजपर लेगये बहराम ने असद को पा बड़ाहर्ष किया और दो घड़ी तड़के जहाज खोल आतशीन पहाड़ की ओर चला भोरको मलका असद को न पाकर समझी कि वह दिशागया होगा जब बहुतकालबीता और वह न आया तब व्याकुलहो सखी और दासियोंको चहुँओर ढूंढ़नेकेलिये भेजा उन्होंने कितनाहीढूंढ़ा परन्तु कहीं उसकापता न मिला इतनेमें रात्रिहोगई मरजीना असद के बियोगमें महादुःखितहो मशालों के प्रकाशमें शाहजादेको ढूंढ़नेलगी बागकाद्वार खुलादेख बाँदियों के साथ बागमें गई एक बांदीने असदका जूता पहिंचाना दूसरी ने कहा कुण्ड में जलथोड़ा जान पड़ताहै मलका समझगई कि बहराम के सेवक आय शाहजादे को लेगये होंगे और कुण्डसे भी उन्होंने जल लियाहोगा फिर उसने एक मनुष्यको इस बृत्तान्त के मालूम होनेके लिये समुद्रके तीरभेजा कि देख बहरामका जहाज खुलगया वा नहीं उस मनुष्य को घाटियों से बिदितहुआ कि बहराम जहाजको यहांसे लेगया परन्तु पहररात्रिबीते एकनाव जलकेनिमित्त बागकीओरभेजी थी मलका मरजीना यहसुन समझी कि बहराम के मनुष्य अवश्य असद को लेगये उसने अपने जंगीजहाजों को कि प्रत्येक समय तय्यार रहतेथे आज्ञादी कि तुरन्त दशजहाज लंगरमें आवें मैं प्रातः-काल आय सवारहूंगी यह आज्ञापातेही कप्तान दशजहाजलेकेलंगर में गया और सम्पूर्ण सिपाही प्रधान और खलासी आदि यात्रा की सामग्रीसमेत सवारहो मलका की राह देखनेलगे सो वहभी भोर को आयचढ़ी और आज्ञादी कि तुरन्तजाय बहराम के जहाज को पकड़ लो सो वह सब बहरामका पीछा करनेचले तीसरेदिन उस जहाजको

चारों ओरसे घेरलिया बहराम समझगया कि असदके लिये मरजी-
नाकेजहाज़ों ने मुझेघेरा अपने प्राणधनादिसे निराशहो असदशाह-
ज़ादेको बहुतमारा कि इसीदुष्टकेकारण हमने तूफ़ानका दुःखझेला
इसके बिशेष हमारा जहाज़ इसमलकाने पकड़लिया इसको जहा-
ज़पर रखना उचित नहीं तब उसने उसकी बेड़ी हथकड़ी काट उसे
समुद्र में डालदिया शाहज़ादा पैरने में अति प्रवीणथा पैरनेलगा
पैरते २ कूलपर पहुँचा परमेश्वर का धन्यबाद किया क्योंकि परमे-
श्वरनेही ऐसे गहरेजलसे उसकेप्राण बचाये और अग्निपूजकों से
उसे छुटाया पृथ्वीपर जाय अपने बस्त्रसुखाये तिसपीछे बस्त्रपहिन
ईश्वरका भरोसा रख एकपन्थको चला बनके फलखाता दशवें दिन
एकगांवमें पहुँचा उसे निर्जनपाया फिर उसने उसगांवसे एक नगर
दूरसे देखा जब उसके निकट पहुँचा तो पहिंचाना कि यह वही अ-
ग्निपूजकों का नगर है जिसमें उसने बहुकाल पर्य्यन्त दुःख उठाया
था यदि वह नगरको देख प्रगटमें प्रसन्नहुआ परन्तु यह शोच भय-
वान्हुआ कि ऐसा न हो जो फिर कहीं अग्निपूजकों के हत्थे में
पड़ूं इस हेतु ऐसे समय में नगरको प्रवेश किया कि सब दूकानें बंद
होगई थीं और पुरबासी अपने२ धाममें चलेगये थे फिर नगर से
बाहरजाय मुसल्मानों के श्मशान में सोरहा अब बहराम का हाल
सुनिये जब उसने खिसियाय के कोपसे असद शाहज़ादे को समुद्र
में डाला कुछकाल पीछे मरजीना के जहाज़ उसे मिलगये मरजीना
आपही उसके जहाज़पर चढ़गई और बहराम से पूछा वह दास
कहां है जिसे मेरेबाग़से निकालके लेआयाहै बहराम ने बिनयकी हे
मलका! वह मेरे जहाज़में नहीं यदि वह यहां हो तो अपराधी हूं मर-
जीनाने पहिले असदको उसमें ढूंढ़ा जब उसमें न पाया क्रोधित हो
आज्ञाकी कि जहाज़की बस्तुलूटलो और बहराम को उसके सेवक
समेत पृथ्वीपर लेजाय क़ैदकरो मैं सबको बधकरूंगी जब बहराम
और उसके सेवकों को पकड़ के पृथ्वीपर लेगये तो बहराम उतर-
तेही तटपरसे भाग अग्निपूजकों के नगरकी ओर गया और रात्रि
को पुरकेबाहर पहुँचा उस समयनगर का द्वार बन्दहोगया था उसने

निरुपायहो किसी श्मशान में सोने की इच्छाकी संयोगबश उसी श्मशान में जहां असद् अचेत सोताथा गया और वहां एक मनुष्यको सोता देख असद् शाहज़ादा मनुष्य का शब्दसुन जागपड़ा और मुखफेरके देखनेलगा कि कौनहै बहराम ने उसे पहिंचान कहा आपही हमारी आपदाके कारणहुये यदि इसबर्ष में भेंट से बचे तो दूसरे बर्ष कदाचित् नहीं बचसक्के यह कह असद् को फिर बांधा और प्रातःकाल उसीबृद्धके घरजाय सम्पूर्ण बृत्तान्त अपना और असद्का बर्णन किया उस कुटिलने असद्के पांवमें बेड़ीडाल उसी तहख़ाने में भिजवाय अपनी पुत्रियों को उसी प्रकार दुःख देने की आज्ञादी जब उसने बोस्तना को अपने ढिग आते देखा तो असद् मारेभय के रोने और कांपनेलगा और मनमें कहा एकबर्ष पर्य्यन्त यहीकष्ट भोगूंगा इससे मरना उत्तम है परन्तु परमेश्वरकी माया से उसने रोने में बोस्तनाके मनको ऐसा पिघलाया कि वह भी उस के साथ रोनेलगी और कहा अब तुम मेरी ओरसे भरोसारक्खो मैं तुम को कदापिदुःख न दूंगी मैं मुसल्मानहुईहूं मैं अग्निपूजन और पापों को छोड़दिया और परमेश्वरसे यही मांगतीहूं कि तुम्हारे छूटने का कोई उपाय निकलआवे निदानबोस्तनाकी बातों से उसे परिपूर्णधैर्य हुआ परन्तु कैवानाकी ओर से उसे डररहा सो उसने बोस्तना से कहा परमेश्वर ने तुम्हें मेरेऊपर दया उपजाई परन्तु कैवाना मुझे अवश्यमारेगी बोस्तनाने उत्तर दिया तुम भयवान् मतहो मैंहीं प्रत्येक समय आयाकरूंगी उसदिन से बोस्तना उसे दिब्य भोजन खिलाने लगी और प्रतिकाल उसे धैर्य दिया करती एकदिन बोस्तना अपने भवन के द्वारपरखड़ीथी कि उसने डौंड़ीकाशब्द सुना कि एकमनुष्य कहता है वज़ीर अमजद आपही अपने भाईको ढूंढ़ने के लिये यह प्रतिज्ञा करता हुआ निकला है कि जो कोई असद को मेरे समीप लावेगा मैं उसको इतना कुछ दूंगा जिस से कई पीढ़ीतक धनवान् रहेगा और जो कोई उसे छुपाके अपने घरमें रक्खेगा वह कुटुम्ब समेत प्राणसे माराजावेगा और उसकाघर खोद उसपर हलचलाया जावेगा बोस्तना यह डौंड़ी सुन असद के समीप दौड़ी आई और

उससे यह बृत्तान्त कह बेड़ीकाट अपने साथ लेआई और गली में पुकार के कहा कि असद यह है अमजद उसका नाम सुनतेही उसी घरके द्वारपर गया और असदको पहिंचान कण्ठसे लगाय घोड़े पर सवारकर बादशाहके निकट लेगया बोस्तना भी अमजद के साथ चलीगई असदने अपनी सम्पूर्ण व्यवस्था कह सुनाई और अमजदने उसी समय उस बृद्धकाघर खुदवादिया बादशाह ने बहराम आदि उसके नातेदारों को बुलवा सबके बधकरने की आज्ञादी उन्होंने बादशाहके चरणों पर गिर क्षमामांगी बादशाहने कहा तुम्हारा अपराध कदाचित् क्षमा न होगा जबतक तुम इस अधर्म को तज मुसल्मानी धर्म्म अंगीकार न करोगे उन सबने स्वीकार किया फिर अमजदने बहराम आदिकको असंख्य धनदिया बहरामने अमजद की उदारता को देख बिनय की कि मैं गतबर्ष में अबौनी द्वीप को गयाथा मैंने तुम्हारे पिता क़मरुज्ज़मांको तुम्हारे बियोग में अत्यन्त ब्याकुल पाया आश्चर्य्य नहीं जो वह तुम्हारे शोक में तन त्यागदे उचित है कि तुम दोनों भाई अबौनीमें जाय अपने पिताको देखो मैं तुमको शीघ्रही आनन्दपूर्वक पहुँचादूंगा वह दोनों इस बातसे राज़ी हुये और वहां के बादशाह से बिदामांगी उसने हर्ष पूर्वक स्वीकार किया जब जहाज़ सामग्री समेत तय्यार हुआ वह दोनों शाहज़ादे बादशाह से बिदाहोने को गये बादशाहने उन दोनों को अपने कण्ठ से लगाया और बहुतसाद्रब्य रत्नादि दिब्यबस्तु दे उनको समुद्रतक पहुँचाने के लिये जानेलगा अकस्मात् हरकारे ने आय कहा कि अमुकदिशा से एक सेना सवार और पैदलोंकी चलीआती है बादशाह ने बिस्मितहो कहा ऐसा कौन मेरा बैरीहै जो अकस्मात् मेरे नगरपर चढ़आया अमजदने बादशाहको चिंतित देख बिनती की आप कुछ शोच न कीजिये मैं जाय उनका बृत्तान्त ज्ञात करताहूं निदान अमजद चतुरङ्गिणी सेनाले उस कटक की ओर चला और हरकारोंको भेज ज्ञातकिया कि किसी देशकी मलका सेनाले इस नगर की ओर आई है अमजदने जाय उससे भेंटकी और पूंछा कि तुम मित्रताके मार्ग से आई हो वा युद्धकी इच्छाहै यदि हमसे बैर है तो

हमसे बैरका क्याकारण है उसने कहा मैं संग्राम की इच्छा से नहीं आई मैं अपने असद नामक दासको ढूंढ़ने आईहूं बहराम नामक कप्तान इस पुरका निवासी मेरेनगरसे उसे चुरालाया है मैं तुम्हारे बादशाह से नीति चाहतीहूं यदि असद तुम्हारे नगरमें हो तो मुझे दो और मेरानाम मरजीना है अमजद पूर्ब्बवृत्तान्त सुनचुका था कहनेलगा मैं तुम्हारे दासका भाईहूं मेरानाम अमजद है एकबर्ष पर्य्यन्त वह इस नगर में लुप्तरहा तुम मेरेसाथ चलो हमारे बादशाह से भेंटकरो वह तुम्हारी भेंटसे अति प्रसन्न होंगे और असद को तुम्हें देदेवेंगे मरजीना मलका सेनाको बाहर छोड़ केवल थोड़ी सखियों समेत अमजद के साथ बादशाह की भेंटको गई बादशाह ने बड़े आदरसे उससे भेंटकी और असद शाहज़ादा भी उससे आय मिला मरजीना मलका उसे देख अत्यन्त प्रसन्नहुई और बादशाह से असद के चुरालेजाने का हाल बर्णनकर रहीथी कि इतने में दूसरे हरकारे ने आयकहा कि दूसरी ओर से एक और कटक इस पुरकी ओर चला आताहै बादशाह दूरसे उस घनीसेना को देख घबराया और अमजदसे पूछा यहकौन बैरी चढ़आयाहै जाके देखो अमजद अपनीसेना नगरके बाहर खड़ीकर आप परसेना में घुसगया समीप पहुँच किसीप्रधानसे पूछा कि तुम्हारे यहां आनेका क्या कारणहै मुझे अपने बादशाहके सम्मुख लेचलो अमजद उस प्रधानके साथ होके बादशाहके निकटगया और दण्डवत्कर पूछा हमारे बादशाह से तुम्हारा क्या प्रयोजन है कि ख़बरदिये बिना इतनी सेनालेके पुरमें घुस आनेकी इच्छा रखतेहो बादशाहने उत्तरदिया मेरानाम गोरहै और मैं चीनका बादशाहहूं अपनी बदौरानाम बेटी का समाचार मालूम करनेके लिये यहां आया कई बर्षबीते मैंने चीलद्वन द्वीपके शाहज़ादे कमरुज़्ज़मां से उसका बिवाह करदियाथा वह शाहज़ादा केवल एक बर्षकी बिदाईमांग अपनी स्त्रीसमेत पिताके दर्शनकोगया कई बर्ष से मुझे उसका समाचार ज्ञात नहीं उन्हीं को ढूंढ़ता हुआ यहां पहुँचा मुझे इसबात के सिवाय कुछ संग्रामकी इच्छानहीं अमजद जब यह समझा कि यह बादशाह उसका नाना है उसके चरणचूमे और कहा

आप धैर्य्यरक्खें मैंहीं आपका नवासा क़मरुज़्ज़माँका बेटाहूं वह इस समय अबौनीटापूका बादशाह है और माता मेरी बदौरानामक चीन की शाहज़ादी है जिसको ढूंढ़ते आप यहांतक आये दोनों कुशलपूर्बक आनन्दसे हैं चीनके बादशाहने असदको अपने कण्ठसे लगा बहुत प्यार किया और अमजद और असदके यात्रा और उनकी आपदा का हालसुन बहुत पछताया और अमजद को धैर्य्य दिया कि वहां चल तुम्हारे पितासे तुम दोनों भाइयों का मेल करादूंगा निदान अमजद ने अपने नानासे बिदाहो अपने स्वामी के निकटजाय चीनके बादशाहके आनेकाहाल कहा वह इस समाचारको सुन बिस्मितहुआ कि इतना बड़ा बादशाह अपने देशकोतज अपनी बेटीके ढूँढ़ने को निकल मेरे राज्यपर्य्यन्त पहुँचा सो अपने सेवकों को उसके आतिथ्य की आज्ञादी और इच्छाकी कि आपही उसके भेंटकोजावें इस समयान्तर में यह सुना कि तीसरी दिशासे एकभारी सेना चलीआती है बादशाह ने चिन्तामें होकर अमजद को आज्ञादी तुम जाय उसका हालभी मालूमकरो अमजद अपने असदभाई को ले बिदाभया जब वह दोनोंभ्राता सेनाके समीप पहुँचे तो मालूमहुआ कि क़मरुज़्ज़माँ अबौनीका बादशाह अपने बेटों को ढूंढ़ने के लिये निकलाहै क्योंकि जब वह अपने बेटोंको जिन्हें अपनी स्त्रियोंकी कुटिलतासे क्रोधमें बध की आज्ञादी थी और उसे यहभी बिश्वास था कि वह दोनों प्राणसे मारेगये शोकसमुद्र में मग्नहोय मृत्युके निकट पहुँचा यह दशा देख जिंदर ने उसे धैर्य्यदे जीते छोड़नेका हाल बर्णन किया यह सुन क़मरुज़्ज़माँने परमेश्वरका धन्यबाद किया और लाखों रुपये और जोड़े याचक मङ्गन आदिको दानदेकर अपने बेटोंके ढूँढ़नेकेलिये निकला दैवयोगसे फिरताहुआ इस नगरमें भी आया निदान उसने अपने बेटों को देख पहिंचाना और कण्ठ से लगा बहुकाल पर्य्यंत हर्षसे रुदन करतारहा तिसपीछे अमजद ने क़मरुज़्ज़माँ से कहा आजहीं चीनका बादशाहभी ढूंढ़ताहुआ पहुँचा उसने हर्षितहो उन दोनों शाहज़ादोंके साथहो चीनकेबादशाहसे भेंट करने की इच्छाकी थी कि इतने में क्यासुना चौथीओरसे महाकटक चलाआता है क़मरुज़्ज़माँ

ने अपने बेटोंसेकहा प्रथम इससेनाको देखनाचाहिये कि किसकी है और किसबादशाह ने इस ओरकी इच्छाकी है फिर वहतीनों उस कटकको देखनेगये अमजदने आगेबढ़केपूंछा यह किस बादशाहकी सेना है और इस अग्निपूजक देशमें क्योंआया वज़ीर ने जो सबके पहिलेथा उत्तरदिया कि यह चीलद्रनका बादशाह जो बहुकाल से अपने देशसे अपने बेटेक़मरुज़्ज़मां के ढूंढ़ने के लिये निकलाहै पहुँचा यदि तुम कुछ उसका हाल जानतेहो तो हमेंबताओ अमजदने वज़ीर से कहा मैं अभीआय तुम्हारे प्रश्नका यथार्थ उत्तर देताहूं तुम यहीं ठहरजाओ यहकह उसने जाय क़मरुज़्ज़मांसे समाचारकहा क़मरुज़्ज़मां अपने पिताके आनेका हालसुन मूर्च्छितहुआ जब कुछ सचेतभया तो अपने पिताके चरणोंपर जायगिरपड़ा दोनों बापबेटे परस्पर कण्ठसेलग २ बहुकालपर्यन्त रोयाकिये फिर शाहज़मां ने कहा हे बेटे! तुम मेरे बतानेबिना मुझेक्यों अकेलाछोड़ चलेगये इस अवधि में तुमने मुझे कुशलका समाचारभी न भेजा कि जिससे मुझे धैर्य्यहोता क़मरुज़्ज़मां अतिलज्जित हुआ और पितासे बहुतसी बिनतीकी और अपनेअसद और अमजद बेटोंको उनके पितासे मिलवाया शाहज़मांने अपनेदोनोंपोतों को अपनेकण्ठसेलगा बहुत प्यारकिया निदान वहतीनों बादशाह और मरजीनामलका तीन दिन वहांठहरे अग्निपूजकों के बादशाहने चारोंको बड़ीधूमधामसे न्योता तदनन्तर हरएक सौगातदे बिदाकिया और अमजदकेसाथ बोस्तनाको जिसने असदकी बड़ीसेवाकीथी ब्याहदिया और असद केसाथ मलकामरजीना जो इसपरमोहितथी और अपने देशको तज केवल उसीके निमित्तआई थी बड़ी धूमधामसे ब्याह किया सो वह तीनों बादशाह और मरजीनामलका अपनेपति असदसमेत अपने२ देशको सिधारे अग्निपूजकों का बादशाह अतिबृद्ध और शिथिल होगयाथा और अमजदसे बहुत प्रीतिकरताथा उसे अपना राज्य सौंप आप ईश्वरका आराधन करनेलगा और वहांके निवासी अग्निकापूजनछोड़ ईश्वरकी बन्दनाकरनेलगे मलकाशहरज़ाद जब भोरहोते यह सुन्दर कहानी कहचुकी उसकी छोटीबहिन दुनियाज़ाद

ने कहा बहिन तुमने क्या अच्छाचरित्र कहा आशाहै कि अब कोई दूसरा बृत्तान्त कहोगी क्योंकि तुम्हारे सुन्दर मुखसे ऐसी २ अद्भुत कहानी के सुनने से अतिआनन्द होताहै मलका ने उत्तर दिया यदि कल बादशाह मुझे प्राणदानदेंगे तो मैं कलरात्रिके अन्तमें नूरुद्दीन और पारस की बांदीकी अत्यन्त सुन्दर कहानी कहूंगी बादशाह शहरयार ने उस कहानी की लालसा से उस दिन भी अपनी स्त्रीको न मारा और पूर्ब्बवत् अपनी शय्यासे उठ स्नानादिक कर्म कर अपनी सभामें बैठा॥

## बांसरानगर के बादशाह के वज़ीरख़ाक़ानकेपुत्र नूरुद्दीन और पारस की बांदीकी कहानी॥

दूसरी रात्रिको शहरज़ाद उस बृत्तान्त को इसभांति कहने लगी कि पूर्ब्बकाल में बांसराका नगर अब्बासी बादशाहों के आधीन था और वहां के हाकिम जबेनी और ख़लीफ़ा हारूंरशीद दोनों एकही भाईकी सन्तानथे और वहदोनों चचेरेभाई थे जबेनी के दो वज़ीरथे प्रथमकानाम ख़ाक़ान द्वितीयका सूयख़ाक़ान वहांकी प्रजा ख़ाक़ान की उदारता के कारण बहुत प्यार और सन्मान करती और उसकी प्रशंसा सर्व्वदा करती दूसरा वज़ीर जिसका नाम सूय था अतिअशील और सूम था इसहेतु कोई नगरबासी उससे प्रसन्न न रहता और वज़ीर दोयम वज़ीर अव्वल से अतिईर्षा रखता और सदा उसकी बुराई बादशाहसे करता एकदिन बादशाह ने ख़ाक़ान-वज़ीर से कहा मेरे वास्ते अतिसुन्दर चतुर और गाने बजानेवाली बांदी मोललो सूय ने कहा ऐसी गुणयुक्त दासी दशहज़ार अशरफ़ी से कम न आवेगी बादशाह ने क्रोधकर उसे उत्तर दिया तेरे बिचार में दशहज़ार अशरफ़ी बहुत हैं मैं उसे कुछ नहीं समझता उसीसमय दशहज़ार अशरफ़ी ख़ाक़ानको लौंड़ी मोललेने के लिये दी ख़ाक़ान ने घरपर आके दल्लालोंको बुलवाभेजा और कहा कि एक रूपवती गाने बजानेवाली लौंड़ी ढूंढो उस समय से दल्लाल लौंड़ी ढूंढ़नेलगे कई दिनकेपीछे एक दल्लाल ने वज़ीर से कहा कल एक पारस का ब्यापारी एक बांदी आप के इच्छानुसार

लाया है वज़ीर ने उस समय जो बादशाह के सम्मुख जाता था दल्लाल से कहा उस लौंड़ीको ब्यापारी समेत लेआना शाहीदर्बार से लौटके मैं उसे देखूंगा दल्लाल लौंड़ीको वज़ीर के द्वारपर लाया वज़ीर दर्बारसे आय लौंड़ीको सर्व्वगुणसम्पन्न देख हर्षित हुआ किन्तु बादशाह की आज्ञासे अधिकगुण देखे सो उसके धनी से उसका मोल पूछा उसने बिनयकी स्वामी इसका बहुतमोल है परन्तु मैं इसे आपके हाथ दशहज़ार अशरफ़ी से कम न बेचूंगा मैंने बहुतकुछ इसके सिखाने में ब्यय कियाहै बाल्यावस्थासे इसे गाना बजाना सिखाया यहबांदी प्रत्येक बाजेको भलीभांति बजाती और गाती लिखने और कबितामें बड़ी निपुण है और सम्पूर्ण पुस्तकें इतिहासादिकीभी इसने पढ़ीहैं मेरेबिचार में यह इनगुणों में अद्वितीयहै परीक्षाकरने से यह सबगुण आपको प्रकट होजावेंगे वज़ीर ने इनसबके परीक्षाकेबिनाही उसकेरूप छबिअनूपको देखतेही दश हज़ार अशरफ़ी उसे गिनवादी बिदाहोते ब्यापारी ने बिनयकी स्वामीयहबांदी बहुतदूरसे यात्राकेकष्टभोग यहांपहुँची आपइसको एक सप्ताहतक बादशाह के निकट न लेजाइये इसे इससमयमें दो बेर उष्णजल से स्नानकराना उससमय उसका स्वरूप चौगुणा होजावेगा किंतु उसे पहिंचान न सकोगे अभी उसका मुख किंचित्श्याम होरहाहै ख़ाक़ानने कहा तू सत्य कहताहै मैं इसे एकसप्ताहके पीछे बादशाहके निकट लेजाऊंगा यहकह उसने बांदी को अपने भवन में लेजाय अपनी स्त्रीको सौंप दिया और कहा इसे रक्षासे रखना मैंने इसे बादशाहकी आज्ञासे मोललियाहै दो तीनबेर उष्णजल से स्नान कराइयो और मैं बस्त्रआभूषण पहिरा यहांकीरीतिके अनुसार उसे बादशाह को दूंगा उसका नाम हुस्नेअफ़रोज़ था उससे भी कहा मैंने तुझे बादशाहके हेतु मोललियाहै जब पांचसातदिन में तू सबल होजावेगी और बराबर स्नानकरेगी तो तुझे बादशाह के सम्मुख लेजाऊंगा तू यहां बड़ी रक्षासे रहियो किसी पुरुषके सामने न हूजियो बादशाह तुझे देखतेही तेरा बड़ासन्मान करेगा मेरा एक तरुणबेटा अपनी माताके पास दिनमें बहुधा आता है उससे

नम्बर ३१ मुतअ़ल्लिक़े सफ़े ४२८ हि. भा.

चित्र ख़ाक़ान वज़ीर के अरथी की



बचियो बांदीने वज़ीरसे बिनयकी भलाहुआ कि आपने मुझे पहिले से बतला दिया अब आप भरोसा रखिये मैं आपही की आज्ञा के अनुकूल बचूंगी यहकह वज़ीर तो चलागया वज़ीर का बेटा नूरुद्दीन अत्यन्त सुन्दर और शीलवान् बिशेषहास्यरस में निपुणथा मध्याह्नके समय भोजन के लिये अपनी माता के निकट आया वह हंसतरुणी चम्पकबरणी मृगनयनी गजगामिनी चन्द्रमुखी तमहारिणीके रूपअनूप को देखतेही उसपर मोहित हुआ यद्यपि यह भी उसे ज्ञातहुआ कि यह बांदी बादशाह के लिये मोललीगई है तथापि उसे यह इच्छा हुई कि यहसुन्दरी मेरेनिकटरहे बिशेष इस के बांदीभी नूरुद्दीन को देख उसपर मोहित हुई और परमेश्वरसे यह अभिलाषा करनेलगी कि कोई ऐसाउपाय बनपड़े कि मैं इसी नवकिशोर के पासरहूं और बादशाहके निकट न जाऊं उसदिनसे नूरुद्दीन प्रायःउसगृह में आता और माताकीदृष्टिबचाय उसनवयौवना से कटाक्ष के सुख लेता वह दोनों परस्पर देख प्रसन्नहोते जब उस की माताको यह ज्ञातहुआ कि नूरुद्दीन बहुधा यहांआकर लौंड़ीको घूरताहै और वहभी दृष्टिबचा उससे सुन्दर कटाक्ष करतीहै तो एक दिन उसने नूरुद्दीन से कहा और समझाया हे पुत्र ! अबतुम परमेश्वर के अनुग्रह से तरुणहुये तुम्हें उचित नहीं कि घरमेंआके स्त्रियों के निकट बैठो शीघ्र भोजनकर चलेजायाकरो निदान दो चार दिन पीछे वज़ीरकीस्त्रीने अपने हम्मामके जलको गरमकरनेकी आज्ञादी और बांदियों के साथ लौंड़ीको स्नान निमित्त भेजदिया और उन से कहा इसे भलेप्रकार मल दल नहलाय बस्त्र पहिनाय मेरेसमीप ले आओ इसे अपने मध्य में ले जाना हुस्नअफ़रोज़ने स्नानकर अतिस्वच्छ और ललित पीतबस्त्र पहिर महल में आय वज़ीर की स्त्रीको दण्डवत्की उसने उसके स्वरूप के अधिक होजानेसे उसे न पहिंचाना और अचम्भाकिया कि यह कौनसीस्त्रीहै लौंड़ीने वज़ीरकी स्त्रीसे बिनयकी मैं इन्हीं बस्त्रों में जो आपने दियेहैं कैसी दिखाई देतीहूं बांदियोंने नहला धुला और जोड़ापहिनाके मुझे कठिनतासे पहिंचाना और कहा आगेसे तुमकहीं अच्छीहोगईहो हम तुम्हेंपहिं-

चान न सकीं इनसबने खुशामदसे तो ऐसानहीं कहा वज़ीरकीस्त्री ने कहा न तो मेरी बांदियोंने यह बचन स्वार्थ से कहे और न तुझसे हँसीकी उन्होंने यथार्थ कहा मैंनेभी बड़ीकठिनतासे तुझे पहिचाना मानों सहस्रगुणरूप तू स्नानालयसे लेआई है यदि जल अभीतक उष्णहो तो मैंभी जाय उसमें स्नानकरूं मैंने बहुत दिनोंसे उष्णजल में स्नान नहीं किया लौंड़ीने कहा हे सुन्दरी! जल अभीतक उष्णहै यहसुन उसने दो लड़कियां लौंड़ीके मकानपर बैठाय उन्हें आज्ञादी जबतक मैं न आऊं तबतक तुम इस मकान के द्वारपर रहना यदि नूरुद्दीन आवे और मेरेपीछे महल में जाकर लौंड़ीके निकट जानेकी इच्छाकरे तो तुम उसे जाने न देना यहकह वह दो बांदियों समेत स्नानागारकी ओर गई संयोगवश नूरुद्दीन अपनी माताके घर आया और महलको खाली देख सीधा लौंड़ीके मकान में जानेलगा लड़कियोंने उसे बहुतबर्जा उसने न माना और उनदोनोंको उठाय उस मकानके बाहर छोड़ आया और हुस्नअफ़रोज़के समीपजाय भीतर से किवाड़ मूंदलिये और हुस्नअफ़रोज़को देखतेही उसकामनलोट पोट होगया उन दोनोंने जो ऐसे अवसर की इच्छा करते थे अति प्रसन्न हो सुखभोग किया वह दोनों लड़कियां रोती हुई स्नानागार में गईं और वज़ीरकी स्त्रीसे यह सब समाचार जाय कहा उस वज़ीर की स्त्री ने यह सुन स्नान न किया और तुरन्त अपने महल को चली अभी वह स्त्री महल में न पहुँची थी कि नूरुद्दीन वहां से निकल चलागया हुस्नअफ़रोज़ वज़ीर की स्त्री को ब्याकुल और रोतेदेख अत्यन्तबिस्मित हुई आगे बढ़के पूंछा हे सुन्दरी! कुशलतो है तुम स्नान किये बिना रुदन करती महल में क्यों आईं उसने उत्तर दिया तू मुझही से इसका हेतु पूंछती है क्या तूं नहीं जानती कि नूरुद्दीन मेरेपीछे अकेला तेरेपास आयाथा हुस्नअफ़रोज़ ने कहा हे माता! इसमें तो कोई भी तुम्हारे और उसके वास्ते दुःखकी बात न हुई यदि वह अकेला मेरे निकट आया तो क्या हुआ उसस्त्री ने कहा मेरेपतिने तुझे पूर्व्व से न बतायाथा कि तुझे बादशाह के निमित्त मोललिया है और कहाथा कि नूरुद्दीन से बचियो हुस्नअ-

फ़रोज़ने कहा मुझे उनकी आज्ञा स्मरणहै परन्तु उसबेर नूरुद्दीनने मुझसे कहा कि मेरेपिताने तुझे मुझेदेडाला अब वह तुझे बादशाह के सम्मुख नहीं लेजावेगा भला मैं क्योंकर तुम्हारे पुत्रसे बचती इसके विशेष जबसे मैंने उसे देखा मेरामन सहस्रप्रकारसे उसपर लोभायमान होरहाहै मैं बादशाहके समीप जाने की लालसा नहीं करती हूं कि जन्मभर नूरुद्दीन अपने प्राणप्यारे का बियोग देखूं वज़ीरकी स्त्रीने कहा ईश्वर तेराबचन सत्यकरे और इसबातमें मेरी भी प्रसन्नताहै परन्तु नूरुद्दीनकी कुटिलतामें सन्देह नहीं मुझे यह भयहै जिससमय वज़ीर इसबातको सुनेगा तुरन्त उसे बधकरेगा इसहेतु मैं रोतीहूं इतनाकह वहफिर रोनेलगी इतनेमें वज़ीर आया और अपनी स्त्रीको रोतीदेख कारणपूंछा उसने निरुपायहो कहा मैं अभागी स्नानकरने गईथी मेरेपीछे नूरुद्दीन ने एकान्त में आय हुस्न अफ़रोज़से भोगकिया क्या तुमने हुस्न अफ़रोज़को उसे दे डाला था नहीं इसीहेतु मैं रोतीहूं कि इसका अन्त क्या होगा वज़ीर यहसुन शिर और छातीपीटनेलगा कि इस अभागे दुष्टने यह क्या अनर्थकिया बादशाहकी धरीबस्तुको छुवा और मेरा निरादरकराया बादशाह यह समाचार सुन मुझे और उसे प्राणसे मारडालेगा उसकी स्त्रीने कहा कि स्वामी इतना शोक क्यों करते हो मेराआभूषण बेंच दशहज़ार अशरफ़ीकी एकबांदी मोललो अब जो होना था सो हुआ वज़ीर ने कहा तुम समझतीहो कि मैं हानिको झीकताहूं मैं अपनी प्रतिष्ठाको डरता और मरताहूं सूय वज़ीर जो मेरा बैरी है यहसमाचारसुन बादशाहसे कहेगा कि सुन्दरहुस्नअफ़रोज़ बादशाहके निमित्त मोलले अपने बेटेको देडाली उसकी स्त्रीनेकहा मुझेसूयके बैरकासमाचार भलेप्रकार बिदितहै परंतु किसीकेघरका हाल किसीको क्यामालूम यदि बादशाह बांदीकेमोललेनेका हालभी पूंछे तो कहना कि एकलौंडी आपकेलिये मोललीथी परंतु परीक्षासे मालूमहुआ कि वह हुज़ूरके योग्यनहीं यहसुन बादशाह तुम्हारीबात का बिश्वासकरेगा इसउपायसे दूसरे वज़ीरका कोई उपाय न चलेगा उन्हीं दल्लालों को बुलवाय कहो कि दूसरी बांदी ढूंढें निदान उस

समय स्त्रीके समझाने से वज़ीरको धैर्य्य हुआ और क्रोध उसका नूरुद्दीन की ओरसे कमहोगया उसदिन से नूरुद्दीन अपने पितासे छुपके महलमें आता और रात्रिको गुप्तसोरहता और अपनेपिता के जगने के पहिले बाहर चलाजाता परन्तु उसकी माताको उसकी ओरसे चिन्तारहती ऐसा न हो जो पिताउसका उसेएकान्तमें पाय मारडाले इसहेतु उसने अपने पतिसे इस बिषय में बातचीत की वज़ीरनेकहा मैं जब उसे पाऊंगा अवश्य मारडालूंगा उसने कहा स्वामी एकही तुम्हारा बेटाहै उसने अबतक तुम्हारे प्रतिकूल कोई कार्य नहीं किया यहकर्मभी तरुणावस्थामें बनपड़ा क्षमाकरो जो तुम्हें दण्डदिये बिना धैर्य्य नहीं तो भोरको कि वह महलसे भयभीत होकर निकल जायाकरता है तुम उससमय पकड़के मारडालनेकी इच्छाकरना मैं छुड़ालूंगी उसेदण्ड मिलजावेगा और तुम्हारे भी मनसे क्रोध जातारहेगा हुस्नअफ़रोज़को अब उसे देडालो वज़ीर ने इसबातको स्वीकार किया भोरको जब नूरुद्दीन के निकलने का समयहुआ एक घड़ी पहिले वज़ीर किवाड़की आड़में खड़ाहोरहा जब नूरुद्दीन निकला तो वज़ीरने पकड़पछाड़ा और खड्गनिकाल बध करनेलगा इतनेमें उसकी स्त्री यह शब्दसुन दौड़ीआई और वज़ीरका हाथपकड़लिया और कहा कि ईश्वरकेलिये नूरुद्दीन को छोड़ वज़ीरने कहा नहीं मैं इस कुकर्मी दुष्टको अवश्य मारूंगा तब उसकी माताने कहा पहिले तुम मुझेमारो फिर इसे मारना तुम्हें पिता होके उचित नहीं कि अपने हाथसे अपने बेटेको मारो नूरु-द्दीन ने भी अवसरपा बहुतसी बिनती कर गिड़गिड़ाय कहा तुम्हें परमेश्वरकी शपथहै जिसने तुम्हें उत्पन्न किया और प्रलयके दिन तुम उसके सम्मुख अपराधों के क्षमाके लिये खड़ेहोगे मुझे प्राण-दानदो और मेरे अपराधको क्षमाकरो वज़ीरने दयाकर खड्गहाथ से फेंक नूरुद्दीनको छोड़दिया नूरुद्दीन पृथ्वीसे उठ अपना सम्पूर्ण अपराध क्षमा करानेकेलिये पिताके चरणोंपरगिरा वज़ीरने अपने हाथसे उसका शिरउठाय कहा तू अपनी माताके चरणोंपर जाय गिर मैंने तुझे उसीके कहनेसे क्षमाकिया और जो मैंने हुस्नअफ़-

रोज़को भी देडाला परन्तु उसे व्याहता स्त्रीकी भांति रखकर इसके बेंचनेकी इच्छा न कीजिये नूरुद्दीन इसबात से अतिप्रसन्न हुआ और हाथजोड़ प्रतिज्ञाकी कि मैं इसे कदाचित् भिन्न न करूंगा तदनन्तर अत्यन्त प्रीति से वह दोनों रहनेलगे वज़ीरभी उनकी परस्पर लगन देख बहुत प्रसन्न था एक बर्षके पीछे वज़ीरने उष्णनीर से स्नान किया उससमय उसे ऐसी आवश्यकता पड़ी कि ठहरने और जल सूखने बिना शीघ्र बाहर निकल आया शीतलवायु के लगने से ज्वर और शिरपीड़ा ऐसीहुई कि कईदिन में अत्यन्तरोगीहुआ अंत समय उसने अपने पुत्र नूरुद्दीन से कि प्रत्येक समय उसकी औषध आदिके लिये उद्यत रहताथा कहा मैंने तुझे हुस्नअफ़रोज़के लिये पूर्व भी कहाथा और अब फिर अन्तोपदेश करताहूं कि उसे बड़ी प्रीतिसे रखना और कदाचित् उसके बेंचने की इच्छा न करना यह कह वज़ीर ने इस असारसंसारको छोड़दिया प्रजा उसके मृत्युका समाचार सुन रोने पीटने लगी नूरुद्दीनने बड़ी धूमधामसे अरथी निकाल अपने हाथों उसे गाड़ा और उसको पिताके मरने से बड़ा शोकहुआ चालीस दिनतक रोतापीटतारहा किसीको उसी शोकमें अपने घरमें आनेकी आज्ञा न दी तिसपीछे एक उसके परममित्रने उससे भेंटकी और वह बहुधा उसको धैर्य्य देनेलगा यहांतक कि नूरुद्दीन उसकी संगति से पिताके मरने का शोक भूलगया इसके उपरान्त अपने पुराने मित्रों को भी बुलवाय उनका सत्कार करने लगा कुछदिनों में हरएकको अपनी उदारता से धनाढ्य करदिया और अपने पिताकी सम्पूर्ण द्रव्य लम्पटता और मित्रोंको खिला पिला व्यय करडाली किन्तु हुस्नअफ़रोज़का आभूषण भी बेंच के ख़र्च करडाला एकदिन हुस्नअफ़रोज़ने उसे समझाया हे प्राणप्यारे! जो कुछ द्रव्य तुम्हारा पिता छोड़गयाथा सो सब तुमने अपस्वार्थी मित्रों को देडाली अब भी समझो और सुचाल पकड़ो जिससे तुम अपने पिताकी पदवी को पहुँचो नूरुद्दीन ने हँसके उत्तर दिया कि मेरेपिताने जो कुछ इकट्ठा कियाथा क्या उसे वह अपने साथ लेगया और क्या मैं लेजाउंगा सो क्यों न अपने मनोरथको पूराकरूं दो

चारदिन पीछे उसका प्रधान आया और जमाखर्च का हिसाब उसे दिखा कहा देखिये इस थोड़ी अवधि में आपने कितना द्रव्य खर्च किया और आप अप्रबन्धता से खर्च करते हैं इस हेतु मैं आप का कार्य नहीं करसक्ता अपना हिसाब किताब समझ मुझे बिदाकी-जिये और इसीप्रकार बहुतसे हितैषी सेवक आपकी सेवातज बैठ रहे इसीभांति प्रधान ने उसे बहुत समझाया परन्तु अचेतरूपी स्वप्नसे न जगा उसके मित्र अवसरपा पूर्वसे अधिक लूटनेलगे नित्य एक मनुष्य आता और नूरुद्दीन से कहता आज मैं अमुक बाग़ और महल में गया उसकी शोभा देखकर प्रसन्नभया वह मुझे बहुत अच्छा दिखाई दिया यदि आप उसे मुझे कृपाकरें तो मैं उसमें जा-रहूं नूरुद्दीनने तुरन्त पत्रलिख और हस्ताक्षर उसपर करके दे दिया इसीविधि किसी ने सुन्दर घोड़े और किसीने हाथी आदिकी प्रशंसा की उसने तुरन्त उसे देदिया जब केवल अपने निवास के महल के सिवाय कुछ न रहा वही स्वार्थी मित्र अलग हुये और घर बैठरहे यदि किसी को उनमें से अपने मन बहलाने को बुलाता तो वह न आता कदाचित् आता तो थोड़ी देर पीछे बिदाहो चलाजाता जो वह उस मित्रको ठहराता तो वह बहानाकर कहता मेरी स्त्री कल से रोगी होगई है उसकी औषध जाकर करूंगा इसीभांति वह सब बहाना करके चलेजाते और उसके पास न बैठते इस दशा को देख नूरुद्दीन आश्चर्य में हुआ और हुस्न अफ़रोज़ से जाकर अपने मित्रों की अशीलता बर्णन की उसने कहा हे प्राणनाथ! यह सब बातें मैंने पूर्वही तुमसे कहीथीं परन्तु तुमने मेरे कहने को न माना निदान एक दिन तीसरे उपवासपर हुस्न अफ़रोज़ने आंसूभर कहा हे प्राणप्यारे! अब मैं तुम्हारी भलाई इसी में देखती हूं कि तुम मुझे बेंचो और कुछ दिन कालक्षेप करो जब तुमपर परमेश्वर कृपा करेगा तो फिर मुझे लेलेना नूरुद्दीन ने कहा यह तो मुझसे कदाचित् न होगा कि तुझे बेंचूं परन्तु मुझे किसी मित्रसे सहायताकी आश है बिश्वास है कि वह मुझसे आंख न छिपावेंगे हुस्नअफ़रोज़ ने कहा स्वामी यह केवल तुम्हारा बिचारहै कोई इष्टमित्र इस आपत्ति

कालमें तुम्हारे काम न आवेगा समयपर सब निकल जावेंगे नूरुद्दीन ने कहा ऐसा मतकहो में तुमसे उनका हाल अधिक जानता हूं बालपन से उनके साथ मेरी मित्रता है मैंने उनके हजारों उपकार किये हैं कलभोर को में उनके समीपजाय ऋण मांगूंगा आशा है कि वह मुझे अवश्य देंगे निदान दूसरे दिन प्रातसमय नूरुद्दीन उन दशों मित्रों के निकट गया जिनका उसे अत्यन्त बिश्वास था और वह सब एकही मुहल्ले में रहतेथे पहिले एकमित्र जो औरोंसे अधिक धनपात्र था उसके द्वारपर जाकर हांकदी एक बांदीने भीतरसे पूंछा कौन है नूरुद्दीन ने कहा मैं वज़ीरकापुत्र नूरुद्दीन हूं मेरे आगमन का समाचार अपने स्वामीसे कह बांदी ने सुनतेही शीघ्र द्वारखोल दिया और उसे उत्तम स्थानपर बैठाय अपने स्वामी से यह समाचार कहा कि नूरुद्दीन तुम्हारे दर्शन करने को आये हैं उस मित्र ने मुहँ बनाय कुपित होय बांदी से कहा जाके कहदे कि स्वामी घर में नहीं और पूंछ कि उन्हें क्यों तुम बुलाते हो नूरुद्दीन बाहर से यह सब बातें सुनताथा इतने में बांदीने अपने स्वामी से जोकुछ सुनाथा उससे कहा परन्तु बांदी पहिले अपने स्वामी के वर्त्तमान होनेको कहचुकीथी अब उसके बिपरीत बड़ी लज्जा से अपने स्वामी के उपदेशानुकूल कहा नूरुद्दीन यह सुन बड़े आश्चर्य में हुआ और मनमें कहनेलगा अभीयह कलही मेरी बिनती करताथा आज यह इसबिधि की अशीलता करता है निदान अति चिन्ताकर उस मित्र के घरसे दूसरे मित्रके घर जो पहिले से कुछ न्यूनथा गया वहांभी यही उत्तर मिला इसीभांति दशोंमित्रोंके घर पारीपारीसे फिरा सबसे यही उत्तर पाया नूरुद्दीन अपने मित्रोंकी अशीलतासे बहुत घबड़ाय पछिताने लगा और समझा कि वह निपट अपस्वार्थीथे लेनेके समय मुझे घेरे रहते और मेरीजूतियां सीधी करते थे अब मुझे निर्द्धनसमझ भेंटभी नहीं करना चाहते मेरानाम सुनतेही मुख छिपालिया मेरीदशा फलदारवृक्ष के समान है जबतक वह फलसे लदारहा तबतक चारोंओर से मनुष्य फलके लोभ से उस के पास आया किये जब फल उस में न रहे तब कोई उस के समीप न गये निदान मित्रों से निराश हो

अपने घर आया और स्त्री से आंसू भर यह समाचार कहा उसने कहा अब उनका वृत्तान्त मालूम हुआ मैं आगे से जानती थी और तुम्हें कईबेर समझाया अब मेरे विचार से परमेश्वर पर भरोसा रक्खो यह उत्तम है कि तुम अपनी सम्पूर्ण दास दासी और घरकी शेष बस्तु बेंचो और उसे थोड़ा २ खर्चकरो बिश्वासहै कि तुमपर फिर दीनदयालु प्रभु कृपाकरेंगे नूरुद्दीन ने पहिले दासों को बेंचकर कई दिन अपना निर्वाह किया जब वह होचुका जो बस्तु घरकी शेष रहगई थी बेंचडाली जब कुछ न रहा तो उसने हुस्न अफ़रोज़ से जो अत्यन्त बुद्धिमान् और हितूथी यह हाल कहा वह इस महाबिकट सङ्कटको देख रोनेलगी और कहा हे प्राणनाथ! तुम्हें सुधि होगी कि तुम्हारे पिताने मुझे दशहज़ार अशरफ़ी को मोल लियाथा यद्यपि अब कोई भी मेरा वह मोल न देगा परन्तु आधामोल निस्सन्देह देवेगा तुम मुझे नख़ास में जहां दासदासी बिकते हैं लेजाय बेंचो और उस धन से तुम कालक्षेप करो जब परमेश्वर तुम्हें सामर्थ्य दे तो मुझे मोललेलीजियो नूरुद्दीन ने रोके कहा कि प्रथम तो तू मुझे प्राणसे अधिक प्रिय है दूसरे पिता ने मुझे बचनबन्ध किया है कि तुझे कदापि न बेंचूं मैं क्योंकर उससे बिरुद्ध करसक्ता हूं उसने कहा यह तुम सत्य कहतेहो मैंभी तुम्हें प्राणसे अधिक प्यार करती हूं परन्तु धर्म्मशास्त्रानुसार आपत्ति में अनुचित भी उचित है अब इससमय तुमपर ऐसी आपदा पड़ी है कि उस प्रतिज्ञा का बिचार वृथाहै तुम मुझे निश्शङ्क बेंचो नूरुद्दीन लाचारी से हुस्न-अफ़रोजको बाज़ार में लेगया और एकदल्लाल को बुलाके कहा तुम्हारे द्वारा मेरे पिताने इस बांदी को दशहज़ार अशरफ़ी दे मोल लियाथा अबमैं उसे बेंचताहूं तुम ब्यापारियों को उसे दिखाओ देखो तो इसका क्या मोललगाते हैं दल्लालने कहा बहुत अच्छा सो वह बांदीको एक मकान में बैठाय बाहर से कुफुललगाय ब्यापारियों के निकट गया उन्हों ने नानाभांति की ग्रीक, फरङ्गी, अफ़रीकी दासियां आदि बहुतमोलली थीं सो दल्लालने उनसे कहा भाइयो तुमने सब प्रकारकी दासियां मोलली हैं परंतु एकदासी पारसकी बिकती है उस

के रूप अनूप और गुणको कोई न पहुँच सकेगी और तुमने नहीं सुना कि बुधजनों ने यह दृष्टान्त कहा है हरगोल वस्तु सुपारी नहीं, और प्रतिचपटी वस्तु अञ्जीर नहीं, और सबमांस लालरंग नहीं, और सब अंडे अच्छे नहीं होते, अब तुम मेरे साथ चलकर देखो और उसका मोल बिचारो निदान वह सब व्यापारी उसी दल्लाल के साथ गये उसने किवाड़ खोल हुस्न अफ़रोज़को दिखाया वह सब उसके स्वरूप छबि अनूपको देख आश्चर्य्य में हुये और कहने लगे सच सच जन्मभर हमने ऐसी लौंड़ी शहर और मुल्क में नहीं देखी हम सब मिलके चार हज़ार अशरफ़ीतक इसका मोल देसक्ते हैं इससे अधिक हम देनेकी सामर्थ्य नहीं रखते यहकह वह सब बाहर आये और दल्लालने उस मकानको जिसमें हुस्न अफ़रोज़थी बन्दकरदिया इतनेमें सूयनामक दूसरे वज़ीरकी सवारी वहांसे निकली उसने व्यापारियों का यूथ देख पूंछा कि यह सबमनुष्य यहां क्योंइकट्ठे हैं दल्लालने कहा एकलौंड़ी मोललेनेको यह सब आये हैं और चारहज़ारअशरफ़ी तक इसका मोल लगाया परन्तु मालिक इस क़ीमतपर राज़ी नहीं सूयने भी उसके देखनेकी इच्छाकी और दल्लालसे कहा मुझे भी उसे दिखा मैंहीं उसे लेलूंगा निदान दल्लालने उसे भी हुस्न अफ़रोज़को दिखाया उसने उसे पसन्दकर कहा चारहज़ार अशरफ़ी मैं भी इस लौंड़ीकी देताहूं मुझेदिलवादे दल्लालने कहा मैं इसके मालिकसे जाके कहताहूं यदि वह राज़ीहो तो आप निश्शंक उसे मोल लीजियेवज़ीर ने सब व्यापारियोंको सैनों से मनाकिया कि ख़बरदार इससे अधिक मोल न बढ़ाना और तुम इस लौंड़ी के मोललेनेका बिचार न करना मैंहीं इसे लेलूंगा वे सब सौदागर वज़ीरके कहने से चुपकेहोरहे और किसीने दम न मारी दल्लालने नूरुद्दीनके समीप आय कहा हा! खेदहै कि तुम्हारी लौंड़ी कम कीमतपर जातीहै नूरुद्दीनने पूंछा क्योंकर उसने कहा व्यापारियोंने पहिले आके उसे देखा और पसन्दकर चार हज़ार अशरफ़ी तक देते थे और मैं बाज़ार में पुकारताथा कि चार हज़ार अशरफ़ी की पारसकी लौंड़ी मुफ्तबिकती है इस आशासे कि कोई बढ़े पांच छःहज़ार अशरफ़ी तक देवे इतने में सूयवज़ीर उस

मार्गसे चलाजाताथा व्यापारियोंको इकट्ठादेख और मेरे पुकारनेका शब्दसुन वहां खड़ाहोगया और लौंड़ीको जाके देखा और उसे पसन्दकर मुझसे कहताहै कि चारहज़ार अशरफ़ी मैं इसकी देताहूं तू मुझे दिलवादे और सब व्यापारियों को सैनसे मनाकिया कि कोई इससे अधिक क़ीमत न लगावे किन्तु उसके लेनेका भी इरादा न करे सो सब व्यापारी उसके भयसे चुपहैं और कुछ नहीं बोलते नूरुद्दीनने कहा सूय हमारेघरानेका बैरी है मुझे उसके हाथ किसीतरहसे बेंचना मंजूरनहीं तब दल्लालने कहा आप चलके व्यापारियों में खड़ेहोके बड़ेशब्दसे कहिये कि मैंने इसलौंड़ीपर क्रोधकियाथा और उस कोपान्तर में सौगन्द खाई थी कि मैं तुझे बाज़ार में लेजाय बेंचूंगा सो मैंने अपनी प्रतिज्ञापूर्ण की मुझे बास्तव में उसका बेंचना अंगीकार नहीं केवल अपनी प्रतिज्ञाके पूरा करनेके लिये यह बहाना किया था सूयभी इस बचनको सुन चुप होरहेगा अब तुम मुस्तैद होकर तय्याररहो जिस समय मैं लौंड़ीका हाथपकड़ सूय को देनेलगूं तुम उसवक़्त उसे दोचार तमाचेमार और उसे सूयके हाथसे छीन अपने घरलिये चलेजाना नूरुद्दीन दल्लालका यह मत पसन्दकर तय्यारहुआ फिर दल्लालने लौंड़ीको मकान से निकाल यही मत समझाय बाज़ार में लेजाकर दूसरे वज़ीरको उसकाहाथ पकड़ाय कहा स्वामी यह लौंड़ी तुम्हारी होचुकी वज़ीरने हाथबढ़ाय चाहा कि इतने में नूरुद्दीनने लौंड़ीका दूसरा हाथपकड़ अपनी ओर खींचलिया और धीरेसे एक तमाचामार कहा तेरे कटुवचन और आज्ञा के उल्लंघनसे मैंने यह प्रतिज्ञाकी थी कि तुझे बाज़ारमें बेंचने के लिये लेजाऊंगा अब मेरी सौगन्द पूरीहोचुकी अपनेघरचल आगे जो कुछ अपराधकरेगी तो समझाजावेगा यह कह उसेले अपने घरकीओर चला वज़ीरने अति कोपितहोके उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया और हाथबढ़ाकर कोड़ा मारनाचाहा नूरुद्दीनने लौंड़ीकाहाथ छोड़ा आगेबढ़ वज़ीरकेघोड़ेकीलगाम पकड़के ऐसाझटकामारा कि वहघोड़ेसेनीचे आरहा फिर उनदोनोंमें बड़ायुद्धभया यदिवज़ीरबूढ़ा और निर्बलथा और नूरुद्दीन तरुणथा उसने उठादेमारा और भली

भाँति घिसा और सौदागर और बाज़ारके आदमी कि सूयवज़ीर,से बदमिज़ाजीके कारण दिलसे बहुत नाराज़ थे उसके हारनेसे और नूरुद्दीनकी जीतसे बहुतही प्रसन्नहुये और कोई भी उन दोनोंमें बाधक न हुये पर जब वज़ीरके सेवकों ने अपने स्वामीका पक्षकिया और नूरुद्दीनको मारनाचाहा तब मनुष्योंने कहा इसे तुम नहीं जानते और यह तुम्हारा स्वामी है तो यह वज़ीरकाबेटा है तुम उनमें बाधा न करो क्योंकि जब वह परस्पर मिलजावेंगे तो तुम्हारे वास्ते अच्छा न होगा निदान नूरुद्दीनने बाज़ारमें वज़ीरको इतना मारा कि उसके शरीर से रक्त निकल बस्त्र लहूलुहान और कीचड़ और मट्टी से मैले होगये निदान यह तो उसे मारपीट और बांदीका हाथ पकड़ अपने घरको चला वज़ीरके नौकर चाकर अपने स्वामीको उसी दुर्दशामें बादशाह ज़बेनी के सामने लेगये बादशाह उसे देख अति आश्चर्य्य में हुये और कहा यह क्या तेरी गतिभई किसने तुझेमारा उसने बिनय की हे बादशाह ! मैं दरबारसे अपने घरको जाताथा चौकमें ब्यापारियों का समूहदेख खड़ा होगया मालूमहुआ कि वे मनुष्य पारसकी लौंड़ी मोललेने आये हैं मुझे भी रसोई के लिये एकलौंड़ी ज़रूरतथी मैंने भी उसे देखा वह अत्यन्त सुन्दरीहै मैंने चाहा इस मोलकी मिले तो लेकर आपको भेंटदूं क्योंकि वह आपकी सेवा योग्य है वह ब्यापारी चारहज़ार अशरफ़ीतक देतेथे मैंने दल्लाल से कहा इतना द्रव्य मैं भी दूंगा मुझीको दिलवादो सो उसने मुझेलाकेदी इतने में स्वर्गबासी ख़ाक़ान वज़ीरका बेटा नूरुद्दीन आया और लौंड़ी मेरेहाथसे छीनकर लेगया और कहा मैं यह लौंड़ी बिना मोल दूंगा पर तेरे हाथ न बेंचूंगा मैंने उसे बहुत समझाया कि मैं इसे अपने लिये नहीं लेता बादशाह की भेंट करूंगा इसमें उसकी मेरी तकरार हुई परन्तु उसदुष्ट अयोग्य ने मेरी यह दशाकी ऐ बादशाह ! आपको सुधिहोगी कि पूर्व आपने दशहज़ार अशरफ़ी ख़ाक़ान को लौंड़ी मोललेने के लिये निजकोश से दीथीं उसने उसी द्रव्यसे यह लौंड़ी मोलले अपने बेटेकोदी तीन चारबर्ष से वह उसी के पासहै और उसने अपने पिता के देहान्त के पीछे जो कुछ द्रव्य बस्तु बचाथा ब्यभिचारादि करके

थोड़ेही कालमें व्ययकिया अब अत्यन्त निर्द्धनहो उस लौंड़ीको बाजारमें बेंचने को लाया बादशाह यह समाचार सुन अति क्रोधित हुआ और वजीरको बिदाकर एक प्रधान को आज्ञादी कि इसीसमय चालीस सिपाही अपने साथ लेजाय नूरुद्दीन और उसकी लौंड़ीको पकड़लाओ और उसका मकान खोद पृथ्वी बराबर करदो अभी वह प्रधान सेना तय्यार कर रहाथा इतने में नूरुद्दीन के पिताके उपकारों को स्मरणकर व्याकुल हुआ और किसी उपाय से दौड़ नूरुद्दीन के घरपर जाय हांकदी बेचारे नूरुद्दीन ने जो निर्द्धनतासे सेवक न रखताथा आपही जाकर द्वारखोला प्रधान ने दण्डवत् कर सम्पूर्ण वृत्तान्त बादशाह की सभाका वर्णनकर कहा हे कुँवर! तुम इसी समय उस लौंड़ीसमेत इस नगरसे निकल जाओ यदि कुछभी ठहरोगे तो पकड़े जाओगे और निस्सन्देह बादशाह तुम्हें बध करडालेगा मैं इससे अधिक यहां नहीं ठहरसक्ता ऐसा न हो जो बादशाह के नौकर मुझे देखलेवें निदान प्रधान ने बिदाहोती समय चालीस अशर्फ़ियां जेबसे निकाल नूरुद्दीन को दीं और कहा इस समय मेरे पास यही बर्त्तमान हैं यदि कुछ भी सावकाश मिलता तो और भी तुम्हारी भेंट करता यह कह वह तो चलागया और नूरुद्दीन ने भीतरजाय हुस्नअफ़रोज़ से यह समाचार कहा और उसे अपने साथले दीवारके पिछवाड़े फांद उसी समय नगर से बाहर निकल सीधा नदीकी ओर चला दैवयोग से एक जहाज़ तय्यार पाय शीघ्रही उसपर सवारहुआ कप्तान क्षणमात्र में लंगर उसका उठा बग़दाद की ओर चला अनुकूल होने से जहाज़ की एकही बेर सब पालें खोलदीं नूरुद्दीन बासरा से कुशलपूर्बक निकल अति हर्षित हुआ और इधर बादशाह के नौकर नूरुद्दीन को पकड़ने के हेतु चले उसके घर पहुँच प्रथम तो किवाड़ खटखटाया जब किसी ने उत्तर न दिया तो उसे तोड़ भीतर गये वहां किसीको न पाके पड़ोसियोंसे पूंछा कि नूरुद्दीन कहांहै उन सबने कि मनसे उसके हितैषी थे उत्तर दिया हम नहीं जानते निदान प्रधान ने बहुत ढूँढ़कर उसका घर खुदवाय धरती बराबर करदी और बादशाह से जाके बिनय की कि नूरुद्दीन

नहीं मिला मेरे पहुँचने के पहिले न जानिये कहां निकलगया बादशाह ने आज्ञादी कि फिर जाके उसे ढूंढ़ो और डौंड़ी पिटवाओ जो कोई नूरुद्दीन को पकड़ बादशाह के सामने लावेगा हज़ार अशरफ़ी इनाम पावेगा जो कोई उसे अपने घर छिपारक्खेगा वहभी उसी के साथ प्राणसे मारा जावेगा और घरबार उसका छीनलिया जावेगा अब नूरुद्दीन का वृत्तान्त सुनो जब वह जहाज़ बुग़दादके समीप पहुँचा तो कप्ताननें लोगोंसे कहा भाइयो यह नगर अतिश्रेष्ठ और अद्भुतहै इसमें देशदेशके गुणवान् और प्रतिविद्याकेअभ्यासी वर्त्तमानहैं और अनेकप्रकारकी स्वच्छवस्तु और नाना प्रकार के फल उत्पन्न होते और थोड़ेही कारणसे यहां मनुष्य निर्द्धनसे धनवान् और सद्रव्यसे निर्द्धन होजातेहैं विशेषकर नवीनवासी बहुत समझ बूझ इसनगरमें रहते जब जहाज़ने वहांपहुँच लंगरकिया व्यापारी आदि जहाज़परसे उतर अपनेअपने ठिकानेपरगये नूरुद्दीनउनचालीसों अशरफ़ियोंमेंसे पांच अशरफ़ीकिरायादे हुस्नअफ़रोज़कोलिये हुये उतरा बुग़दादमें तो वह कभी न आयाथा और यहांके बाज़ारोंसे निपटअज्ञान था इससे बहुकाल पर्य्यंत विश्रामके स्थान को ढूंढ़ने के निमित्त फिरा फिरतेफिरते एकबाग़के द्वारपर जो नदीके कूलपर था पहुँचे वहां सुन्दर कुण्डके तटपर बैठकर अपने हाथ पांव धोये और शीतलजलपी उसी बाग़की सहञ्ची में बैठ परस्पर वार्त्ता करते करते निद्रावशहुये प्रकटहो कि वह बाग़ ख़लीफ़ाहारूंरशीदका था मध्यमें उसके बारहदरी थी जिसके भीतर बाहर हरभांतिकी अति शोभायमान चित्रकारियां थीं उसमें अस्सी किवाड़ बिल्लौर के उनमें अतिसुन्दर मोमीदीपदान हरसमय तय्यार रहाकरते जब कभी ख़लीफ़ाहारूंरशीद रात्रिको उसबाग़में जाता चारोंओर उसके रोशनीकरते उसका प्रकाश बारहदरीकी उँचाईसे नगरभरमें दिखाई देता उस बाग़का दारोग़ा शेखइब्राहीम था उसकी आज्ञाबिना कोई उस बाग़में न जाने पाता और न कोई बाग़के सम्बन्धित महलों में निवासकरसक्ता संयोगसे उसकाल वह दारोग़ा वहां न था अनुमान सायङ्कालको जब दारोग़ा वहां पहुँचा बाग़ के किनारे क्या

देखताहै कि दो मनुष्य मुखपर महीन डुपट्टाडाले आनन्दसे शयन करते हैं इससे वह अप्रसन्न हुआ और उन्हें दण्ड देनेकी इच्छा की सो उनके समीप जाय मारने को लकड़ी उठाई फिर कुछ सोच अपना हाथ रोकलिया और मनमें कहनेलगा कि ये वृत्तान्त ज्ञात किये बिना इनको मारना उचितनहीं मालूमहोताहै कि वह बिदेशी यहांकी रीति नहींजानते उत्तम यह है कि पहिले इनकावृत्तांत पूंछलूं निकटजाय उनकेमुखसे डुपट्टाउठाय देखा कि एकअतिसुन्दर पुरुष दूसरी स्त्री अतिरूपवती दोनों नींदमें अचेत सोते हैं उसने नूरुद्दीन को पांवसेहिलाय जगाया नूरुद्दीनने जागकर श्वेतदाढ़ीवाला बृद्ध पुरुषदेखा देखतेहीउठके दारोगाके हाथचूम दुआयें दीं और कहने लगा हे पिता! क्या आज्ञाहै दारोगाने पूंछा हे पुत्र! तू कौनहै और कहांसे आया नूरुद्दीननेकहा मैं कभी इसशहरमें नहीं आया इच्छा है कि मुझे आज की रात्रि यहीं विश्राम की आज्ञाहो भोरहोतेही यहांसे चलाजाऊंगा दारोगाका क्रोध उसके कोमलबचनों से बिलकुल जातारहा और दोनोंके रूपमनहरणको देख अतिनम्रहो कहनेलगा कि पुत्र तुम्हें यहां रात्रिमें कष्टहोगा मेरेसाथ चलो मैं स्वच्छ स्थान तुम्हारे निवासको दूंगा जहांसे तमाम बाग़ दिखाई देता है नूरुद्दीन ने कहा क्या यह बाग़ तुम्हाराहै दारोगानेमुस्करायकेउत्तर दिया कि मैंने अपने पिताकी थाती से इसे पायाथा उपरांत उसने दोनोंको बाग़के भीतर लेजाय बाग़के द्वारको भीतरसे मूंद कुफुल लगादिया और उनको ऐसी जगहपर बैठाया जहांसे वह सम्पूर्ण बाग़को देखें फिर दारोगा उनको अपने साथ कई मकानों के दिखानेको लेगया इतनेमें नूरुद्दीनने जेबसे दोअशरफ़ी निकाल दारोगा को दीं और कहा कुछ भोजन हमारे लिये पकवाइये दारोगा वह अशरफ़ियांले प्रसन्नहोकर अपने जेब में रख बिचारा अच्छा हुआ जो मैंने ऐसे उदार मनुष्य से कोई बुराई न की इतने में बहुत अच्छे ब्यञ्जन पकसक्ते हैं किन्तु कुछ बचरहेगा वह मेरे काम आवेगा सो उन दोनों को वहीं छोड़ आप भोजन के उपाय में गया उसके जाने के पीछे नूरुद्दीन हुस्नअफ़रोज़सहित बारहदरी में गया और

नीचेकी तय्यारी और साज सामग्रीदेख ऊपरजानेकी इच्छाकी परंतु उसके द्वारमेंताला दियाहुआथा जब वह दारोगा भोजनलाया नूरुद्दीन ने उसकी बहुत प्रशंसा और बिनतीकर कहा आपने आतिथ्य भावसे हमें साराबाग़ दिखाया परंतु वह बारहदरी हमने नहीं देखी हमारी इच्छा है कि हम उसे देखें दारोग़ाने कहा बहुत अच्छा तिसे पीछे कुञ्जीसे बारहदरी खोल उन को उसी में लेगया नूरुद्दीन से उस मकान को देख हर्षित ह्वै दारोगा से कहा यदि तुम्हारी खुशीहो तो हमदोनों तुम्हारे साथ भोजनकर यहीं शयनकरें दारोगा ने बिचारा कि जो खलीफ़ाकी इच्छा आज इधर आने की होती तो आगेसे कोई मनुष्य सन्देशादेने अवश्य आता यह बिचारकर हर्षपूर्वक उन को रहनेकी आज्ञादी फिर दारोगाने वह सब भोजन रत्नजटितपात्रों में परसदिये नूरुद्दीन ने अति रुचिसे दारोगा और हुस्नअफ़रोज़ सहित भोजन किया फिर हाथ धो नूरुद्दीन ने एक बारहदरी का किवाड़खोल हुस्नअफ़रोज़से कहा यहांबैठ शीतल चांदनीकी सैरदेखो तो क्याआनन्दहै वहदोनों खिड़की में बैठ प्रसन्नहोते थे इतने में दारोगाने पात्रआदि उठाय उन दोनोंके निकटआय कहा अगर किसी और बस्तुकी तुम्हें इच्छाहो तो उसेभी तुम्हारे सम्मुख लाऊं नूरुद्दीनने कहा कुछ थोड़ीसी मदिरा मिलसक्ती है दारोगा समझा कि यह शर्बत मांगता है तो कहा शर्बत मैं लासक्ताहूं परन्तु भोजन के पीछे उसे नहीं पीते नूरुद्दीनने कहा तुम सत्य कहतेहो परन्तु मैं शर्बत नहीं मांगता किन्तु अंगूरी मदिरा चाहता हूं दारोगा ने कहा हमारे धर्म्मशास्त्र में उसका पीना किन्तु पासरखना निषेध है बिशेष मैंने चारबेर मक्केकी यात्राकीहै मैंने मदिरा कभी नहीं देखी और न कभी उसे अपने हाथोंसे स्पर्श किया नूरुद्दीनने कहा भला उसे छुये बिना लासक्ते हो उसने कहा ऐसा कौनसा उपाय है नूरुद्दीनने कहा एक गधा बाग़कीखाईं में बँधाहै मैं तुम्हारे निकटलाय अशरफ़ी रूमाल में बांध उसपर रक्खे देताहूं तुम उसे हाँकते हाँकते मदिरा के घरमें लेजाओ मदिरा बेंचनेवाला तुम्हारे सैनकरतेही अशरफ़ियां लेकर मदिरा के पात्र इस गधेपर रखदेगा तुम इस गर्द्दभ को हांककर

यहां लेआना फिरयहां हम समभलेवेंगे तुम्हें तनक परिश्रम न होगा दारोगा इस बचनको सुन प्रसन्नहुआ और कहा यह यत्न बहुत अच्छा है दारोगा ने वैसाही किया भट्ठीसे मदिरालेआया परंतु जल्दी में बाग़का द्वार मूँदना भूलगया निदान जब गधा बारहदरीके समीप पहुँचा नूरुद्दीन दोनों ठिलियोंको जो स्वच्छ मदिरासे भरीहुईथीं उठा के भीतर लेजाकर दारोगाका बड़ागुणमान कहा तुम्हें अतिपरिश्रम भया अब मेरा एक और मनोरथ है दारोगाने पूंछा वह क्या नूरुद्दीन ने कहा कि एक गिलास और कुछफल चाहिये दारोगा ने एक स्वच्छवस्त्र बिछाय उसपर थालियां और नवीनचीनी के पात्रोंपर फल रख कहा और जो कुछ तुम्हें आवश्यकताहो लादिया जावे नूरुद्दीनने कहा अब कुछ नहीं चाहिये इसके उपरान्त दारोगा वहांसे हट किसी और मकानमें इसभयसे जाबैठा कहीं मुझे मदिरा न पिलावें नूरुद्दीन और हुस्नअफ़रोज़ प्रसन्नहो हो मदिरा पीनेलगे जब दोनों मदमत्त भये नूरुद्दीन ने हुस्नअफ़रोज से कहा हम इस संसार में बड़े प्रारब्धी हैं कि उस आपत्ति के पश्चात् परमेश्वर ने हमैं ऐसी जगह कृपाकी जहां सब तरहके आनन्द की सामग्री बर्त्तमान हैं तिस पीछे वह दोनों गानेलगे दारोगा उनका रागसुन हर्षित हुआ और चोरीसे उन दोनोंको देखनेलगा इतने में नूरुद्दीनने उसे देख कहा हे दारोगा! तुम बहुत अच्छेहो मैं तुम्हारी प्रशंसा बर्णन नहीं करसक्ता उत्तमहो जो तुमभी इस आनन्द में संयुक्तहो दारोगाने हँसके कहा मैं योंही तुम दोनों को देख प्रसन्न होताहूं यह कह फिर लोपहोगया हुस्नअफ़रोज़ ने अपने स्वामी से कहा यदि तुम्हारी इच्छाहो तो मैं इस दारोगा को भी मदिरा पिलाऊं उसने कहा इस से क्या उत्तम है कि वह भी हमारी सङ्गति में मिल आनन्द उठाये हुस्नअफ़रोज़ ने कहा तुम उसे अपने निकट बुलाओ और कुछ काल पश्चात् मदिरा का पात्र दो जो उसने पिया तो अच्छा नहीं तो तुम उसे पी शय्यापर झूठमूठ सोजाना फिर देखना मैं उसे किस भांति पिलातीहूं नूरुद्दीन ने कहा बहुत अच्छा यह कह दारोगा को पुकारा अभी वह सीढ़ीपर था कि इनको मदमत्त देख लौटगया नूरुद्दीन ने

कहा हम तुम्हें मदिरा न पिलावेंगे तुम क्षणमात्र हमारे निकटआय बैठो दारोगा नूरुद्दीन के कहने से सीढ़ी के निकट बिछौनेपर बैठगया नूरुद्दीन ने कहा यह अतिअनुचित है कि तुम हमारे बड़े होके नीचे बैठो वहांसे उठ हमारे बराबर इस सुन्दरी के निकट बैठो वह तुम्हारे बैठने से अप्रसन्न न होगी दारोगा मन में अतिप्रसन्न हुआ कि ऐसी सुन्दरी के निकट किसको बैठना मिलता है परन्तु प्रकट में नाक भौंह चढ़ाके हुस्नअफ़रोज़ के समीप बैठगया अनन्तर नूरुद्दीन ने हुस्नअफ़रोज़ को गानेकी सैनकी वह अतिसुन्दर हाव भाव कटाक्ष कर ऐसी मिष्ट कोमलवाणी से गाई कि वह दारोगा मोहित होगया जब वह गाचुकी नूरुद्दीन ने मदिरा से गिलासभर दारोगा को दे कहा हम दोनों की प्रसन्नता के लिये इसे पीवो दारोगा ने कहा पूर्व्व ही मैंने इसका कारण तुम से बर्णन किया इसमें नूरुद्दीन ने उससे अधिक तकरार की जब उसने न माना तो उसे आपही पीगया हुस्न-अफ़रोज़ ने एकसेब उठाय उसके दोखण्डकिये और एकखण्ड उस बृद्धको दे कहा जो मदिरा नहीं पीते तो भला सेब के खाने में तो कुछ पाप नहीं दारोगा उस सुन्दरी चन्द्रमुखी के हस्तकमल से सेबलेने में इन्कार न करसका और उसेले रुचिपूर्व्वक भोजन किया फिर हुस्नअफ़रोज़ मीठे स्वरों से गानेलगी नूरुद्दीन वहीं दालान में लेट कर बहाने से सोनेलगा हुस्नअफ़रोज़ने अपने पतिको सैनकर बृद्ध से कहा कि देखो साहब इनकी क्या आदत है कदाचित् एक वा दो गिलास मदिरा के अधिकपीते हैं तो मुझे अकेली छोड़ अलगजाय सोरहते हैं जबतक यह जागें तबतक तुम कृपाकर मेरेसमीप बैठे रहो थोड़ेकाल में हुस्नअफ़रोज़ ने अपने मायावी कोमल बचनों से दारोगा को अपने अनुकूल करके बिचारा कि अब यह मदिरा से ग्लानि न करेगा और मेरे रूप अनूप और गान की प्रबलता से पक्षी के सदृश जाल में पड़गया है सो अतिसुन्दर हावभाव और मनहरण कटाक्षकर हाथबढ़ाय मदिरा का गिलास उसे दिया और चित्तप्रेरक मुस्कान दिखाय कहा इसके पीनेकापाप मेरेशीशपर तुम्हें मेरेशिरकी शपथ है कि इसे पानकर देखो तो इस में कैसा स्वादु है

दारोगा तो पूर्वही से उसके भाव और गानपर मोहित था प्रकट में कुछ बहानाकर हाथ से गिलासले पीगया और आधासेब जो शेष था वहभी भक्षण करगया फिर हुस्नअफ़रोज़ ने दूसरा गिलास भी उसे दिया उसने उसे भी पीलिया इसी बिधि बराबर तीनचार गिलास उसके हाथ से पिये फिर नूरुद्दीन जो बहाने से निद्रामें था उठ अपनी जगहपर आबैठा और उसबृद्धको नशे में हँसता देख कहा तुमतो कहते थे कि मैं कदाचित् मदिराको स्पर्श न करूंगा अब तुमने क्यों पी उसने कहा मैंने इस सुन्दरी के कहनेसे पी फिर वह बृद्ध आनन्दितह्वै अपने हाथसे गिलास भर भर पीनेलगा और खूबमस्त हुआ इसीभांति वह तीनों मनुष्य अर्द्धरात्रि पर्य्यंत बैठे मद्य पिया किये हुस्नअफ़रोज़ ने कहा यहां अँधियारा बहुत है अगर कहो तो दीपदान प्रज्वलित करदूं दारोगा जो नशे में चूरथा बोला बहुत अच्छा तुमहीं जलाओ परन्तु चार पांच से अधिक न जलाना हुस्नअफ़रोज़ ने उठकर सम्पूर्णदीपदान जो अनुमान अस्सी के थे प्रकाशित करदिये तिसपीछे नूरुद्दीन ने बृद्धसे कि हुस्नअफ़रोज़ के सुन्दर चरित्रों और कोमलबचनोंपर लोभायमानथा पूंछा कहो तो वह दीपदान भी दीवार में दरवाजों पर लगे हैं जलायेजावें कि बाहर की ओर भी प्रकाश हो बृद्धने उसकी भी आज्ञा देकर कहा तीन चारसे अधिक न जलाना नूरुद्दीन ने एक सिरेसे दूसरे सिरेपर्य्यन्त सब के सब प्रज्वलित किये वह बृद्ध हुस्नअफ़रोज़ के सुन्दर बैनों में ऐसा लगाथा कि उसे भली बुरी बातकाज्ञान न रहा बादशाह हारूंरशीद अभी न सोयाथा अपने महल में जो नदी के तीरथा जाकर उसने बैठनेकी इच्छाकी कि अचानक उसकी दृष्टि उसरोशनी पर पड़ी जो बारहदरी में दारोगा की आज्ञासे नूरुद्दीन व हुस्नअफ़रोज़ ने कीथी इससे वह अत्यन्त बिस्मितहुआ और बज़ीरजाफ़र को बुलाय पूंछा कि यहकैसा प्रकाशहै क्या किसीने बागमें प्रकाश तो नहींकिया वज़ीर जाफ़र भी इस उजियालेको देख आश्चर्य्य में हुआ परन्तु उससमय बात बनाय बादशाह से बिनयकी कि इसबागके दारोगा ने पूर्व यह मानता मानीथी कि मनोरथ के सिद्धहोनेपर बाग में रोशनीकर इष्ट

मित्रोंको न्योतूंगा उसीने वही प्रकाश कियाहोगा बादशाह उस की बातका विश्वास न कर उसी बातको निश्चय करने के लिये वस्त्र उतार पुरवासियों के सदृश कपड़े पहिन वज़ीर और मसरूरको अपने साथ ले उसबाग़की ओर चला जब नगरकी गलियां लांघ बाग़के समीप पहुँचा बाग़का किवाड़ खुलापाय अधिक करके अचम्भा करनेलगा निदान दारोग़ा की ग़फ़लत समझ वज़ीरसे पूंछा इससमय बाग़का द्वार क्यों खुला है उसने भयभीतहो उत्तरदिया मुझे इस का कारण मालूम नहीं फिर वह अपने सेवकोंको एक जगह बैठा आपही बाग़ के भीतरगया और धीरेधीरे बारहदरी पर्य्यन्त पहुँच सीढ़ीपर चढ़ गया और दूसरे आड़में खड़ेहो देखा कि एक सुन्दरी और एकस्वरू-पवान् पुरुष बैठेहुये हैं और दारोग़ा मदिरा का गिलास उस स्त्री को दे कहता है हे मृगनयनी! मैंने भलीभांति तुम्हारा प्रिय गाना नहीं सुना कुछ इससमय भी गावो बजावो फिर मैं तुम्हें अपना गानासु-नाऊंगा यह कह वह वृद्ध गाने लगा बादशाह यह दशा देख वि-स्मितहो अपने मनमें सोचा दारोग़ा तो अत्यन्त आचारी था इसको क्या हुआ जो मदिरा पी उन्मत्तहो गायरहा है बादशाह ने वज़ीरको सैनसे बुलाय चुपकेसे पूंछा देख तो यह कौनहैं वज़ीरने डरते २ धीरे से पांवआगेधर क्या देखे कि वह हर्षपूर्व्वक मदिरा पानकरते हैं फिर वहां से उतर बादशाह से बिनती की सेवक तो इनदोनों पुरुष और स्त्रीको नहीं जानता न जानिये इस आचारी वृद्धको क्या होगया यह दास अत्यन्त आश्चर्यितहै कुछ नहीं कहसक्ता बादशाहने वज़ीर से कहा यदि इससुन्दरीने अच्छागाया तोमैं कुछ न कहूंगा नहीं तो मैं इन तीनोंको ऐसा दण्डदूंगा कि इनको सदास्मरण रहेगा यह कह वज़ीर से कहा तूभी मेरेसाथ सुन सो किवाड़की ओटमें छिप वह दोनों सुनने लगे वृद्धने उसकोमलांगीसे कहा कि ऐसागावो जिससे मेरामन प्रसन्न हो उसने कहा जो कोई बाजा बांसुरी आदिहोता तो तुम निस्सन्देह उसे सुन हर्षित होते जो कहीं मिलसके तो लाओ दारोग़ा ने कहा बांसुरीबजाना जानतीहो उसने कहा निस्सन्देह कुछ बजाना जानतीहूं वृद्धने तुरन्त एक कोठरीखोल बांसुरी निकाली नुरुन्नफ़रोज़ उसे ले

बजाने लगी खलीफ़ा ने सुनतेही वज़ीर से कहा यह स्त्री क्या सुन्दर बांसुरी बजाती है मैंने इसका अपराध क्षमाकिया और इसी के कारण इस मनुष्य का भी अपराध क्षमाकिया परन्तु बृद्धकी ग़फ़लत पर तुझे अवश्य फांसीदूंगा वज़ीर ने कहा अगर वह बुराबजाती बादशाह ने कहा यह दुआ क्यों मांगता है उसने कहा अगर वह बुराबजाती तो ज़रूर वह दोनों जानसे मारेजाते तो उनके साथ मारा जाना अच्छा था बादशाह इस कहने से बहुत खुशहुआ हुस्न-अफ़रोज़ ने अति प्रसन्नता से बृद्ध के सम्मुख ऐसी बांसुरी बजाई कि खलीफ़ाने भी कहा कि यह इसगुणमें अतिनिपुणहै फिर वहबांसुरी की ध्वनिके साथ गानेलगी यदि खलीफ़ा उस के बजानेपर एकभाग बिह्वलथा तो उसकी प्रियबाणी से दोभाग बिह्वलहोगया और बेबश वाह वाह कहनेलगा और वहांसे उतर बाग़के एककोनेमें जाय वज़ीर से कहा न तो मैंने आजतक ऐसा गानासुना और न ऐसा बांसुरीका बजाना इसहाक़ कि इस गुणमें बिख्यात है पर इस स्त्री के सम्मुख अज्ञान बालक है खलीफ़ा जोकि सांगीत बिद्यामें अतिकुशल और रागको भलीभांति समझता था वज़ीर से कहनेलगा मैं चाहता हूं किसीभांति भीतरजाय इसका गानाबजाना सुनूं इससमय मेरा हृदय तड़परहा है परन्तु कोई यत्न बिचारमें नहीं आता वज़ीरने कहा साहब मेरे अगर आप भीतर जावेंगे तो दारोग़ा पहिचान के मरजावेगा और यह दोनों स्त्री पुरुष आप के भयसे गानाबजाना भूलजावेंगे फिर आपके गाना सुनने का स्वादु जातारहेगा खलीफ़ा ने कहा मैं इनदोनों और बृद्ध दारोग़ा को जिसने मेरी जन्मभर सेवाकी दुःख देना नहीं चाहता तू यहीं मसरूरके साथ ठहर और मेरे आगमनकी बाट देख खलीफ़ा इसीबिचार में था दैवयोग से एकधीमर ने रात्रिको द्वार खुला पा चार पांच बड़ीबड़ी मत्स्य उसबाग़ से जो टेकरनदीके तीरथा पकड़ीं खलीफ़ा ने उसके पासजाकर दो मछलियां बड़ी बड़ी चुनकर लेलीं यद्यपि खलीफ़ा दूसरे बेषमें था परन्तु धीमर पहिचान कांपनेलगा और पांव पर गिरपड़ा खलीफ़ा ने कहा डरमत और अपने कपड़े मुझे उतारदे और मेरेवस्त्र पहिर अपनेघर चुपके चलाजा

उसने यह सुनतेही कपड़े उतार दिये और बादशाही कपड़े पहिन अपनेघर चलागया खलीफ़ा उसके कपड़े पहिन और दोमछलियां हाथमें ले पहिले वज़ीर और मसरूर के निकट खड़ाभया वज़ीर ने उसे न पहिचाना और समझा कि कोई धीमर इनआम मांगनेआया है यहशोच उसे भिड़ककहा दूरहो यहांसे चलाजा बादशाह खिलखिलाके हँसपड़ा और वज़ीर पहिचानकर डरगया और हाथ जोड़ विनयकी कि इस सेवकका अपराध क्षमाकीजिये मैंने आपको नहीं पहिचाना कि आप धीमर के वेषमें आके खड़ेभये हैं मैंहीं नहीं किन्तु कोई आपको इसवेषमें नहीं पहिचान सकेगा अब निश्शंक बारहदरी में जाइये और गानासुनिये खलीफ़ा फिर उसीभांति मछलियां हाथ में लियेहुये बारहदरी के पास खड़ाभया और द्वार खटखटाया नूरुद्दीनने पहिले शब्दसुना और दारोगा से कहा दारोगाने पूंछा कौन है खलीफ़ाने दरवाज़ेका पटखोल एकपांव आगे किया कि पहिचाना न जावे और कहा मैं करीमनामक मछली बेंचनेवालाहूं मैंने सुना था आजकी रातको तुमने अपने मित्रोंको निमन्त्रणकर उनकी जेवनारकी है इसहेतु इसीसमय अतिउत्तम दो मछलियां पकड़ आप के निकटलायाहूं नूरुद्दीन और हुस्नअफ़रोज़ दोनों मछलियों का नाम सुनतेही प्रसन्नहुये हुस्नअफ़रोज़ ने वृद्धसे कहा इसे भीतर बुलाओ तो हमदेखें कि कैसी और किसजातिकी हैं वह दारोगा कि बहुतसी मदिरा पीजाने से नशे में मग्नथा मुख अपना द्वारकीओर फेरा और खलीफ़ाको धीमरसमझ कहा मेरे इस रात्रि के चोर भीतर आवो तो मैं तुम्हेंदेखूं खलीफ़ा निश्शंक मछलियां लियेहुये भीतर गया हुस्नअफ़रोज़ ने उन्हें देखकहा यह बहुत अच्छी मछलियां हैं इन्हें मोलले पकवाओ दारोगा ने खलीफ़ा से कहा अरे करीम इन मछलियों को शीघ्रही रसोई में लेजाकर भूनकरला धीमर ने कहा बहुत अच्छा यहकह वह बारहदरी के नीचेआया और वज़ीर से कहा इसे साफ़कर तुरन्त तय्यारकर वज़ीर ने कहा बहुत अच्छा मैं इस कार्य्य में चतुरहूं बहुधा मैंने अपने हाथसे मछली बनाई हैं फिर खलीफ़ा और वज़ीर और मसरूर ने बावर्चीखाने में जाय मसाला

तैल जो कुछ आवश्यकथा लेके मछलियांपकाईं और खलीफ़ा एक पात्रमें उन्हेंरख बारहदरी में लेजाय और उसके सम्मुख रख एक नींबू भी सामने रखदिया जिसमें खटाईका स्वादुहो उपरान्त उन तीनों ने वह मछलियां खाईं और प्रसन्न भये नूरुद्दीन और हुस्न-अफ़रोज़ ने धीमरसे कहा तूने ऐसे स्वादुकी मछलियांपकाईं कि हमने ऐसेस्वादुकी कभी न खाईथीं सो उसने अशरफ़ियों की थैली निकाल जिसमें केवल चौबीसही अशरफ़ियां शेष रहगईं थीं सबकी सब खलीफ़ाको देडालीं और कहा जो मेरेपास कुछ और होता तो तुझे देडालता और कदाचित् तू पूर्ब्ब में आता तो इतना देता कि जन्मभर आनन्द भोगता इसदशा में इस थोड़ेद्रव्य को बहुत जान खलीफ़ा ने उस थैलीको नूरुद्दीनसे ले देखा तो चौबीस अशरफ़ियांथीं अत्यन्त गुणमानकर कहा मैंने तुम ऐसादानी और उदार नहीं देखा परमेश्वर आपको जीतारक्खे परन्तु मेरी एक इच्छाहै नूरुद्दीनने कहा वह क्या खलीफ़ा ने कहा मैंने यहां एक बांसुरी रक्खीहुई देखीहै इससे समझताहूं यह सुन्दरी इसे बजाना जानती है मुझे सुनने की अति लालसा है जो आप आज्ञादीजिये तो बांसुरी की ध्वनिसुन तुम्हें आशीर्व्वाद दे चलाजाऊं नूरुद्दीन ने हुस्नअफ़रोज़ से कहा कि तू बांसुरी बजाकर इस धीमर को सुना भला यहभी क्या यादरक्खेगा हुस्नअफ़रोज़ मदिराके नशे में और ऊपरसे मछली भोजनकर अति आनन्द से बांसरी उठा बजाने और स्वरमिला गानेलगी ऐसागाई कि दोनोंके स्वरमें कुछभी अन्तर न था खलीफ़ाने सुन धन्य धन्य किया फिर उसने केवल बांसुरी बजाई यह सुन खलीफ़ा अति प्रसन्न हो कहनेलगा वाह वाह क्यास्वर और क्या हाथ और क्या सुन्दर कण्ठ और क्या गानेबजाने की निपुणता और कोई ऐसा गाने बजानेवाला संसारभर में न होगा और न किसीने ऐसागाना सुना होगा नूरुद्दीनका यह नियमथा जो कोई उसकी बस्तुकी प्रशंसाकरता तुरन्त उसीको वह बस्तुदेदेता कहा हे धीमर ! मुझे विदितहुआ कि तू गाना बजाना भलीभांति समझता है मैंने हुस्नअफ़रोज़ तुझे देडाली और वहां से उठ बस्त्र पहिर खलीफ़ा से बिदाभया और कहा इसे

भलीभांति रखियो और वहां से चलदिया हुस्नअफ़रोज़ उस की उदारता को देख आश्चर्य में हुई और बिचारने लगी जिस मनुष्यने प्रशंसा मात्रमें ऐसी अपनी प्रियाको इस निर्धनता में एक धीमर को देडाला तो उसके आगे कुबेरका धन क्यावस्तु है नयनों में आंसूभर कहा हे प्राणनाथ! कहां जाओगे बैठके मेरा अन्तका गानासुनो वह इसके कहनेसे बैठगया तो हुस्नअफ़रोज़ बांसुरी हाथमें ले और उस की ओर मुँहकर उसी समयके रचित बियोगके गीत गानेलगी और यह इच्छाकरनेलगी कि मुझे धीमरको न दे जब गाचुकी तब बांसुरीफेंक रूमालमुख और नेत्रोंपर रखलिया कि उसकारोना उसे बिदित न हो नूरुद्दीन उसके रोनेपर कुछभी विचार न कर चुपका बैठारहा खलीफ़ा इस ब्यवस्था को देख आश्चर्य में हुआ और नूरुद्दीन से कहा मुझे बिदितहुआ कि यह हुस्नअफ़रोज़ तुम्हारी लौंडी है तुम उसके स्वामी हो नूरुद्दीन ने कहा हे करीम! जो कुछ तूने कहा सो सब सत्यहै तू इतनी-ही बातको देख अचम्भा मतकर यदि तू मेरा सम्पूर्ण बृत्तान्त जो इस के कारण मुझपर बीतासुने तो और भी बिस्मितहो खलीफ़ा ने कहा स्वामी मुझे वहभी सुनाइये नूरुद्दीन ने सम्पूर्ण बृत्तान्त प्रथमसे अन्त पर्यन्त वर्णन किया खलीफ़ाने सब चरित्र सुन उससे कहा अब तुम्हारी कहां जानेकी इच्छाहै नूरुद्दीन ने कहा जहां ईश्वर लेजावे धीमरने कहा तुम कहीं न जाओ बांसराको चलेजाओ मैं एक छोटापत्र लिखे देताहूं तुम जबेनी खलीफ़ा को मेरी ओरसेदेना वह इसपत्रको देखतेही तुमपर कृपाकरेगा फिर किसी प्रकारसे तुम्हें दुःख न देगा और तख़्तसे उतर तुम्हें बैठाय अपना मुकुट उतार तुम्हारे शीशपर रक्खेगा नूरुद्दीन धीमर की उन बातोंपर बहुतहँसा और कहा कहां धीमर और कहां जबेनी बादशाह—दृष्टांत—कहां राजाभोज कहां गंगा तेली, जो कुछ तूनेकहा समझ में नहीं आता बादशाह ने कहा प्रकट में तो मुझे धीमर समझतेहो परन्तु बालापन में हम और वह एकही पाठशाला में पढ़ते थे उस समय से आजतक उससे अति प्रीति है कई बेर उसने मुझे बुलवाभेजा और कहा तुम हम मिलके बादशाहतकरें वा तू मेरा वज़ीर आज़महो मैंने इसे स्वीकार न कर

प्रारब्ध पर स्थिररहा परन्तु कई मनुष्यों को मैंने उसके निकटभेजा उसने उनके साथ मेरेलेख से अधिक उपकार किया नूरुद्दीन यह सुन धीमरसे राज़ी हुआ अनन्तर ख़लीफ़ाने दावात और लेखनी आदिले पहिले महीन अक्षरों में परमेश्वरका नाम लिख इसभांति पत्र लिखा॥

## पत्रका विषय॥

ख़लीफ़ा हारूंरशीद मेंहदीकापुत्र इसपत्रको जबेनी अपने चचा के नाम भेजताहै इसपत्रके देखतेही वज़ीरखाक़ानके पुत्रको जिसे मैंने पत्र दियाहै तख़्तपर बैठाना और आप उसपर से उतर ताज शाही उसके शिरपर धरना इस आज्ञाके प्रतिपालमें बाल भरका भी अन्तर न पड़े फिर ख़लीफ़ा ने उस पत्रको लपेट अपनी मुहर उसपर करदी उसका मतलब नूरुद्दीनको न सुनाकर थैली में रख उसे दिया और कहा इसीसमय जहाज़ जानेको तय्यार होगा सो उसपर चढ़ शीघ्र बांसराको पहुँच नूरुद्दीन उस पत्रको ले बिदा होचला हुस्नअफ़रोज़ उसके पीछे रोतीहुई द्वारतक गई और उसे बिदाकर ठण्ढी श्वासें लेती अपने स्थानपर आयबैठी बृद्ध दारोगा चुपके चुपके नशे में यह सबबातें सुनता था जब नूरुद्दीन वहां से चलागया तब उसने ख़लीफ़ा की ओर जिसे धीमर समझताथा देख कहा तू यहां दो मछलियों से अधिक नहीं लाया जिसका दो चार पैसे से अधिक नहीं पासक्ता और उसके बदले अशरफ़ियों की एक थैली और एक सुन्दर लौंड़ीपाई तू इन दोनों को अपने घरलेजा नहीं सक्ता आधी बांदीमेरी है और आधी तेरी और थैलीला मुझे दे यदि उसमें रुपये हैं तो एक उसमें से तुझे दूंगा और सब लेलूंगा यदि अशरफ़ियां हैं तो उन सबको मैं लूंगा और कुछ पैसे तुझेदूंगा जब ख़लीफ़ा मछलियां भूनने को गयाथा तो उसने वज़ीरको आज्ञादीथी कि शीघ्र महल में जाय बादशाही कपड़े और चारपांच सेवकलाय यहां ठहर, जिस समय मैं बारहदरी के किसी द्वारपर हाथमारूं तो शब्द सुनतेही मेरे कपड़े और मसरूर और सेवकों सहित आइयो सो वह वहीं खड़ाथा अब यहांसे फिर दारोगा की कथा कहते हैं ख़लीफ़ा ने बृद्ध

को उत्तरदिया मुझे थैलीकाहाल मालूम नहीं कि उसमें अशरफ़ी हैं वा रुपये जो कुछ उसमें होगा आधोआध परस्पर बांटलेंगे परन्तु लौंड़ीको मैं न दूंगा और अपनेघर लेजाऊंगा इसमें तुम प्रसन्नहो वा अप्रसन्न वह बृद्ध धीमरकी इस ढिठाईपर बहुत क्रोधित होगया और एक चीनी की रकाबी उठा धीमर के शिरपर मारी खलीफ़ा ने अपना शीश हटा लिया और वह पात्र दीवार से टूक टूक भया दारोगा पात्रके न लगने से अधिक अप्रसन्न भया और रोशनी को ले खलीफ़ाको मारने के निमित्त लकड़ी ढूंढ़ने निकला इतने में ख़लीफ़ाने सीढ़ी के मार्ग से बारहदरीमें आय एक किवाड़पर हाथमारा उसका शब्द सुनतेही जाफ़र, मसरूर और चारों दास दौड़के बारहदरी में आये खलीफ़ा धीमर के बस्त्र उतार और बादशाही कपड़े पहिर तख़्तपर जो बारहदरी में पड़ा रहताथा बैठगया दाहिनी ओर वज़ीर, बाईंओर मसरूर और तख़्तके पीछे वह चारों सेवक हाथ बांधे खड़ेहोगये इतने में वह दारोगा मोटीसी लाठी ढूंढ़ हाथमें लिये धीमर के मारने के हेतु बारहदरी में आया और इधर उधर उसे ढूंढ़ने लगा अकस्मात् उसकी दृष्टि खलीफ़ापर पड़ी कि खलीफ़ा शाही कपड़े पहिने बैठाहै वज़ीर मसरूर और सेवक हाथबांधे दाहिने बायें खड़े हैं आश्चर्य्य में होकर बिचारनेलगा कि मैं स्वप्नावस्था में हूं वा जाग्रत् में खलीफ़ा ने उसे बिकलदेख कहा हे बृद्ध ! तू किसे ढूंढ़ताहै वह उनके पांवपरगिरपड़ा और गिड़गिड़ाय मुख दाढ़ी पृथ्वीसे घिस कहने लगा हे स्वामी ! मैंने बड़ा अपराध किया उसे क्षमा कीजिये इतने में खलीफ़ा ने तख़्तसे उत्तर कहा मैंने तुझे क्षमाकिया हुस्नअफ़रोज़को इसदशा के देखने से धैर्य्य हुआ और समझी कि यह बाग़ और बारहदरी इसी बादशाह की है जिसने अपना वेष धीमर का धारण कियाथा खलीफ़ा ने हुस्नअफ़रोज़ से कहा मेरेसाथ चल तू तो मुझे जानगई होगी कि मैं कौनहूं मैंने किसीको नूरुद्दीन के सदृश उदार नहीं पाया कि तुझ ऐसी परमाप्रियाको प्रशंसामात्रपर मुझे देडाला मैंने उसे बांसराका बादशाह कर भेजाहै तिसपीछे जब भले प्रकार प्रबन्ध होजावेगा तुझे भी उसीकेपास भेजदूंगा तबतक मेरे

महलमें ठहर हुस्न अफ़रोज़ यह बचन सुन हर्षितहुई और उसे बिश्वासहुआ कि अब नूरुद्दीन अवश्य बादशाहत करेगा फिर ख़लीफ़ाने उसे अपने साथ महल में लेजाय मलका जुबैदाको सौंप कहा इसे भलेप्रकार रखियो यह सुन्दरी नूरुद्दीन की स्त्री है—अब यहां से नूरुद्दीन का बृत्तान्त सुनिये वह धीमरकापत्र कि बास्तव में वह ख़लीफ़ा हारूंरशीदका लिखाथा ले बांसराको सिधारा वहां पहुँच न किसी अपनेमित्र और न किसी नातेदारको मिला सीधा बादशाही दरबारमें चलागया उससमय जबेनीबादशाह अदालत घरमें इंसाफ़ कररहाथा वह निश्शंक भीड़में पैठ बादशाहके समीप पहुँचा और पत्र उसेदिया उसने प्रथम पत्रको ले तीनबेर चूमा और चाहा कि तख़्त से उतर पत्रकी आज्ञाको प्रतिपालन करे इतने में सूयवज़ीर जो नूरुद्दीन के प्राणका बैरीथा आया बादशाह ने वह पत्र उसे दिया वह उसपत्र के पढ़तेही अतिबिकल हुआ फिर कुटिलतासे उसपत्रको बहानेसे बाहर प्रकाशमें लेजाय पढ़नेलगा और वहां उसपत्रमें जहां ईश्वरका नाम और ख़लीफ़ा की मुहरथी कतरके खागया और फिर बादशाहको आय पत्रदिया और कहा कि हुज़ूरकी क्याइच्छाहै बादशाह ने कहा इस आज्ञाका पालन करना अवश्यहै वज़ीरने कहा यह छलकापत्र जान पड़ताहै यदि बास्तव में ख़लीफ़ा के हाथका लिखा हुआहो तो ऐसा ज्ञानपड़ता है कि इसने मेरी और आपकी नालिश ख़लीफ़ासे की होगी ख़लीफ़ाने इसकी सिफ़ारश लिखीहोगी कि इसे दुःखमतदो नकि यहकि जो कुछ इसमें लिखाहै बर्त्ताव कियाजावे जो कुछ मैंने कहा इसे सत्यमानिये और किसी भांतिकी चिन्ता न कीजिये जो परमेश्वर न चाहे आगे किसी प्रकारकी हानिहोगी तो उसका मैं ज़िम्मेदारहूं जबेनी ने वज़ीरके कहनेको मान नूरुद्दीनको सूय को दिया सूय कि उसके रुधिरका प्यासाथा अपने महलमें लेजाय उसे भलीभांति मारनेलगा ऐसामारा कि वह दीन मृत्युतुल्यहो मूर्च्छित भया तिसपीछे उसको अतिसूक्ष्मस्थान में क़ैदकर उसपर चौकी नियतकर आज्ञादी कि केवल एकहीबेर इसको रोटी और जलदेना कुछ कालपीछे जब नूरुद्दीन सुधिमें आया तो क्या देखता है कि मैं महा-

मलिन और दुर्गन्धित स्थानमें पड़ाहूं वह ऐसासूक्ष्म स्थानथा कि श्वासा उसकी रुकनेलगी अपनी दुर्भाग्यता से ग्लानिकर कहनेलगा कि उस धीमर ने मेरे साथ भला उपकार किया और मैंभी अपनी दुर्बुद्धितासे उसकी बातमान इस आपदामें पड़ा निदान छः दिनतक नूरुद्दीन उसीसूक्ष्म और महामलिन स्थान में पड़ारहा सातवें दिन वज़ीरने उसके बधकी इच्छाकी परन्तु उसे अपने घरमें मारनेका अधिकार न था इसलिये एक बहाना उठाया अर्थात् कई सेवकोंके शिर पर स्वच्छबस्तु की किश्तियांधर बादशाह के सम्मुख लेगया और कहा यहवस्तु नवीन बादशाह ने आपके निमित्त तख़्त और ताजकी आशासे भेजी है बादशाह ने सूयसे कहा वह अभागा क्या अबतक जीताहै मैं जानताथा कि उसे तूने अबतक मारडाला होगा उसनेकहा मुझे अधिकार नहीं जो किसी को अपने घरपर मारूं उसनेकहा इसे अभीजाके बधकर उसने कहा हुजूर मैं आपके इन्साफ़ से बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु मैं चाहताहूं जिसप्रकार नूरुद्दीन ने सम्पूर्ण मनुष्यों के साम्हने बाज़ारमें मुझेमारा उसीप्रकार वह भी शाही दरबार में मारा जावे बादशाह ने स्वीकार किया नगरमें डौंड़ीफिरी कि कल अमुक समय नूरुद्दीन जिसने वज़ीर से ढिठाईकीथी उसके बदले गर्दनमारा जावेगा जिसे देखनाहो शाहीदरबार में आयदेखे फिर महादुष्ट और निर्दयी वजीर बीसदासों सहित बन्दीगृह में गया और बड़ी अप्रतिष्ठा से नूरुद्दीनको अंधे बेज़ीन घोड़ेपर सवार किया उसने अपनी यह दुर्दशादेख कहा मैंने प्राचीन पुस्तकों में पढ़ाहै जो कोई किसी निर्दोष मनुष्यको दुःखदेता है उसका फल बेगही पाताहै वज़ीर यह बचनसुन अति अप्रसन्न भया और कहा हे अयोग्यदुष्ट! मुझे व्यंग्य वाक्य कहताहै मैंने तेरी इस ढिठाईको क्षमाकिया क्योंकि क्षणमात्र में तू माराजावेगा और तेरामस्तककाट शहरभरमें फिराया जावेगा मैंने भी किताबों में पढ़ाहै वह मनुष्य बड़ा प्रारब्धीहै जो अपने बैरीको मरा हुआ देखे उपरांत उसके सेवकों ने नूरुद्दीनको शाही दरबारमें लेजाय एक बड़े बनमें जो शाहीमहलसे सम्बन्धितथा बधकरने के लिये बधिक को दिया और चारों ओरसे सेवकों और सिपाहियों ने उसे बीच में

करलिया और बधिकने आकर नूरुद्दीन से कहा मेरा अपराध चित्तमें न धरना मैं आपका आज्ञापालकहूं और इसकार्य्य से मेरी जीविका है बादशाह ने मुझे तुम्हारे मारनेकी आज्ञादी है तुम्हें इससमय कुछ खानापीनाहो या कहना सुननाहो तो कहसुनलो और खापीलो नूरुद्दीन इसभयानक समय में किसीको अपना सहायक न देख अपने प्राणसे निराशहुआ फिर जलमांगा मनुष्योंने तुरन्त दौड़ एक जल का पात्रभर उसेदिया वह पीताहीथा कि सूयवज़ीर बधिकपर खफ़ा हुआ कि इतनीदेर उसके मारने में क्योंकी जल्द उसेमार सब लोग वज़ीर को निर्मोही देख उसको गालियां देनेलगे जल्लाद वज़ीर के खफ़ाहोने से खड्ग निकाल शिरकाटना चाहताथा इतनेमें बादशाहने खिड़की से झांक बधिकसे कहा ठहरजा क्योंकि उसने ऊँचेसे देखा कि एकबड़ा कटक चलाआताहै वज़ीरसेकहा देखो तो यह सेना कहां से आतीहै वज़ीर ने बादशाहको भुलाने के लिये कहा कुछनहीं यहगर्द जो आप देखते हैं पुरबासियोंकी है बहुधा सवार और प्यादे इस अयोग्य का तमाशा देखने को चलेआते हैं सेनानहीं है बधिक को आज्ञादीजिये इस कुलक्षणको बधकरे बादशाहने कहा नहीं जबतक मुझे इन सवारोंका बृत्तान्त ज्ञात न होगा मैं उसके मारने की आज्ञा न दूंगा जानना चाहिये ख़लीफ़ा नूरुद्दीन के हालको भूलगया और उसके विचारसे वह प्रतिज्ञा जो उसने हुस्नअफ़रोज़ से सेना और धन नूरुद्दीनके भेजने को कीथी उतरगई इसको कई दिनबीते एकदिन वह अपने महल में जहां उसकी सब बांदियां और नूरुद्दीन की लौंडीथी गया वहां कुछ गानेका शब्दसुना कि कोई स्त्री बियोग के गीत बड़ी बिकलतामें गारहीहै उसे ठहरके सुननेलगा और सेवकों के प्रधानसे जो उसके साथथा पूछा यह कौनसी स्त्री गारही है उसने कहा यह नूरुद्दीनकी लौंड़ीहै जिसको हुज़ूरने बादशाहकर ज़वनीकी जगह भेजाहै ख़लीफ़ा को सुधिभई और कहनेलगा हा! खेद है कि मुझे दीन नूरुद्दीनकी सुधि न रही जाफ़र वज़ीरको बुलाकेकहा मैं सनद और आज्ञा नूरुद्दीन के निमित्त बांसरा को भेजना भूलगया अब यहां ठहरना न चाहिये तुरन्त तू कटकसाज बांसराको सिधार और वहांजाके देख यदि

नम्बर २२ मुतअल्लिक़ सफ़ै ५५६ द्वि० भा.

# चित्र ख़लीफ़ा और जाफ़र का



नूरुद्दीनको मारडालाहो तो तुरन्त वहांके वज़ीरको बधकीजियो यदि उसे जीतापाइयो तो उसे ज़बेनी और वज़ीरसमेत शीघ्रमेरे सम्मुख लाइयो वज़ीर तुरन्त सेनासहित बांसराकोपधारा जिससमय बधिक नूरुद्दीनको मारनेलगा दैवयोगसे वह उसीसमय पहुँचा लोगोंनेउसे देख दाहिने बायें होकर उसे मार्गदिया वह अपने घोड़े औरसवारों की सेनासमेत ज़बेनीतक शाहीदरबारमें पहुँचा ज़बेनी वज़ीर आज़मकोदेख उसकी अगवानीको सीढ़ीतक आया और उससे भेंटकर अति प्रीतिसे आदर सत्कारकिया वज़ीरने पहिले नूरुद्दीनका वृत्तान्त पूछा कि वहजीताहै वा नहीं यदिजीताहै तो उसेतुरन्तलाओ सेवक बादशाहकी आज्ञाकेअनुकूल उसीदशासे उसेवज़ीरके सम्मुख लेगये वज़ीरने उसीकाल उसके बन्धन खुलवादिये और उसीरस्सी से सूय वज़ीरको बांधा उस दिन तो वहींठहरारहा दूसरेदिन नूरुद्दीन ज़बेनीबादशाह और सूयवज़ीरको अपने साथले बुग़दादकोसिधारा और वहां पहुँच उनतीनों को ख़लीफ़ाके निकट लेगया और बादशाह से सूयके बैरका समाचार बर्णनकिया और यह भी कहा जो एकक्षण न पहुँचता तो नूरुद्दीन माराजाता ख़लीफ़ाको नूरुद्दीन पर बड़ीदया उपजी और कहा कि सूयको तू अपने हाथसे बधकर नूरुद्दीनने बिनयकी स्वामी यद्यपि यह मेरा और मेरे पिताका शत्रुहै तथापि मैं अपने हाथको उस ईर्षीदुष्टके रुधिरसे भरना नहीं चाहता ख़लीफ़ाने उसके साहसपर धन्य २ किया और बधिकको आज्ञादी कि इसकी गरदनमार सो उसने तुरन्त अपने कुकर्म का दण्डपाया फिर ख़लीफ़ाने चाहा कि नूरुद्दीनको बांसराका बादशाह करके भेजे परन्तु उसने बिनयकी इस अप्रतिष्ठापर इस सेवकने सौगन्दखाई है कि फिर उसशहर में अपने जन्मभर न जाऊँ मैं चाहताहूं कि आपकीसेवा में तत्पररहूं बादशाहने उसे निजसभामें एक सभासद नियतकर एकबड़ामकान दिया और बड़ीजागीर उसकी नियतकी कि वह अपनी उदारतासहित हुस्नअफ़रोज़ के साथ जन्मभर आनन्दमें रहे और ज़बेनीबादशाह आज्ञा न पालनकरनेसे दण्डको पहुँचा फिरवज़ीर आज़मके कहनेसुननेसे उसे बांसराको बिदाकिया

शाहरज़ाद जब यह सुन्दर कहानी कहचुकी दुनियांज़ाद ने दूसरी कहानी की इच्छाकी तब शाहरज़ाद इसभांति एक और चरित्र कहने लगी ॥

## ईरानके बदरनामक बादशाह और समुन्दालदेश की शाहज़ादीका चरित्र ॥

स्वामी ईरानदेश अति बिशाल नगरहै पूर्व में यहां के बादशाहों की चक्रवर्त्ती बादशाह की संज्ञाथी और अन्य बादशाह उसके अधीन और कर देते थे उन सबमें एक बादशाह अति तेजस्वी महाप्रतापी बहुतसेना और कोष रखता बहुत दिनतक उसने बादशाहतका सुखभोगा उसको किसीप्रकार की सांसारिक चिन्ता असन्तानादि के बिशेष न थी उसके सौ बीबियांथीं और हरएक के निमित्त सैकड़ों बांदियां सेवाकेलिये नियतथीं परन्तु किसी से बेटा नहीं होता था इसके बिशेष दूर २ के ब्यापारी महास्वरूपवान् स्त्रियांलाते वह बहुतसा द्रव्यदे उनको मोलले उनके साथ भोगकरता कि उनहीं से सन्तान उत्पन्नहो और इसी बाञ्छासे अपनी जातिकेसिद्ध और बड़ों से सहायता चाहता कि उनके आशीर्व्वादसे ही मेरामनोरथ सिद्ध हो और हज़ारों रुपये अशरफ़ी निर्धनों को दियाकरता कि इसी में ईश्वरकी कृपा मुझपर हो और अपनी चिन्ता मिटानेको बुद्धिमानों से बहुतसी कथा सुनता एक दिन एक सेवक ने बादशाह से कहा महाराज एक ब्यापारी बहुत दूरसे अति सुन्दर दासी लाया है और चाहताहै कि उसे आपकी भेंटकरे बादशाहने कहा अच्छा उस ब्यापारीसे कह कि उस दासीको लावे दूसरे दिन वह ब्यापारी बांदी को लेकर द्वारपर आ बादशाहको सलामकी बादशाह ने उससे पूंछा तुम किसदेशसे आयेहो और वह बांदी कैसी है ब्यापारी ने बिनय की स्वामी मैं बहुतदूरसे बांदीलायाहूं कि वह अपने स्वरूप में अद्वितीय है बादशाहने कहा वह कहां है उसने कहा मैंने उसे अमुकदास को सौंपाहै आज्ञाहो तो निकटलाऊं बादशाहने उसेबुलवायदेखा तो उसके अतिसुन्दररूपको बहुत पसंद किया और उसके चन्द्रमुखपर काली घुंघुवारीलटें अतिशोभायमान मानों घनमें दामिनी उस रूप अनूप

मनहरण दुःखहरणको देखतेही बादशाह मोहितहुआ और अपने केलिगृहमें इसब्यपारीसमेत उसेलेगया तिसपीछे जब उसबांदी के मुखपरसे बस्त्रउठाया तो बादशाह कामदेवकी स्त्री रतिसदृश औ में मृगवत्देख अचेतहुआ जब चैतन्यहुआ तो ब्यापारीसे उसक मोलपूंछा ब्यापारीने कहा स्वामी मैंने इसे एकहज़ार अशरफ़ी के मोललियाथा और इतनाही तीनबर्ष इसेखिलाने पहिनाने में ब्यय हुआ अब इसे आपकेभेंट करताहूं बादशाहने अतिप्रसन्नहो कह मेरीरीति नहीं कि किसीसेभेंट बिनामोल लूं किन्तु द्विगुणा त्रिगुण मोल मैं धनीको देताहूं निदान बादशाहने दशहज़ार अशरफ़ी उस ब्यापारी को दीं वह ब्यापारी उसीसमय दशतोड़े अशरफ़ियां ले बिदाभया फिर बादशाहने कईदासियां और कईसेवक उसकीरक्ष आदिकेहेतु नियतकर आज्ञादी कि इसे हम्माम में लेजाय स्नान कराय स्वच्छबस्त्रपहिराओ उन्होंने भलीभांति मल नहला औ उत्तमबस्त्र और अतिसुन्दर हीरे आदि जटितआभूषण और मोति योंकी अतिमनोहर माला पहिराय दुलहिनके सदृश अलंकृत किय वह सब उसके रूप छबिअनूपको देख बिस्मितहुये और उन्होंने बादशाहसे बिनयकी कि तीनचारदिन यह बिश्रामकरे जिससेमार्ग का परिश्रम जातारहे और स्वस्थ चित्तहोजावे और बलकारी पा भोजनकरे फिर जब इसे देखियेगा तो बिश्वासहै कि वहपहिचानी न जावेगी उसकारूप आजसे द्विगुणहोजावेगा सो बादशाहने तीन दिनतक उससेभोग न किया प्रकटहो कि ईरानकी दारुलसल्तन उससमय एक समुद्रके कूलपरथी और शाहीमहल खारी समुद्र के तीरथा वहबांदी बहुधा उस महल से जो उसे निवासको मिलाथ समुद्रकी ओर देखती और उनसबतरंगोंको जो महलकी दीवार से लगके टक्करखातीं तमाशादेखती निदान तीसरे दिन समुद्रकी ओ का द्वारखोल कुर्सीपर बैठीथी कि बादशाहको समाचार पहुँचा कि अब वह सावधान होगई है वह वहांगया बांदीसमझी कि मेरी को बांदीआईहै इसीबिचारसे बादशाहकीओर देखा परन्तु कुछ बाद शाहका सन्मान न किया बादशाह उसके मनोहर स्वरूपको दे

आश्चर्य्यमें हुआ और उसकेसत्कार न करनेसे समझा अभी यह सि-
खाईनहींगई जब बादशाह उसकेसमीपगया तो भी उसे वैसाही चुप
देखा परन्तु बादशाहको बिहारादिके करनेसे न रोंका निदान बाद-
शाहने संगमान्तरमें उससे कहा मेरीप्राणप्यारी तू किसदेशकी रहने-
वालीहै और तेरे माता पिता कौनहैं और उनका नाम क्याहै जिनसे
तुझ ऐसी अप्सरा उत्पन्नहुई यदि मेरेघरमें सहस्रोंबांदियाँ रूप-
वती वर्त्तमानहैं परन्तु तेरेसमान कोईनहीं और जितनी मुझे तेरीप्रीति
है दूसरेसेनहीं वह इनबातोंको चुपकीसुनाकी बरन जिह्वाभी न हिलाई
बादशाहने थोड़ीदेर पीछे उससे कहा हे प्रिये! तूनेमेरे प्रश्नका कुछ
भी उत्तर न दिया जिससे मैं हर्षितहोता और न तूने मेरी ओर आंख
उठाके देखा कि मेरेनयन ठण्ढेहोते और तू क्यों शोकमें मुरझायरही
है तुरन्तबता कि इससे मैं अतिबिकलहूं यदि अपनेदेश वा माता
पिताकी सुधिकर कुढ़तीहो तो वह तो नहीं आसक्ते इस के बिशेष
संसारकी सकलबस्तु बिद्यमानहैं उसने कितनेही इस भांति के बचन
कहे परन्तु न तो यहबोली और न आंख उठाके उसकी ओर देखा
चुपकी पृथ्वी की ओर देखतीरही परन्तु बादशाह कुछ अप्रसन्न न
हुआ और मनमें शोचा आगे जब हिल मिलजावेगी तब बोलेगी फिर
उसने हांकदी सुनतेही दो बांदियां और सेवक आये बादशाह ने भो-
जनमांगा उन्होंने तुरन्त नानाप्रकार के ब्यञ्जन लादिये बादशाह
लौंडीकेसाथ भोजन करनेलगा और अपने हाथसे उत्तम उत्तम पाक
उसके सम्मुख रखताजाता था वह सुन्दरी उसी भांतिसे चुपकी भो-
जन करतीरही इसहेतु बादशाह ने उसके प्रसन्नकरने को अनेकप्र-
कारके चरित्र दिखाये और रात्रिको उसके सम्मुख नृत्यकी आज्ञा
दी कि मन उसका बहलकर हृदयका शोकजातारहे तौभी वह मृगन-
यनी उसीप्रकार चुपरही निदान बादशाहने उसके नियत सेवकों से
पूछा कि इस सुन्दरीको तुमने हँसते बोलते देखाहै उन्होंने कहा हमने
कभी इसको बातेंकरते भी नहींसुना जबसे वहआई सदाचुपरहती है
निदान बादशाह रात्रिभर उसके साथसुख से बिहारकर ऐसा प्रसन्न
हुआ कि किसीस्त्री से ऐसासुख न हुआथा और पूर्व्वसे अधिक उसे

प्यार करनेलगा और इच्छाकी कि उसके सिवाय कभी किसी से बिलास न करूंगा तदनन्तर अपनी सम्पूर्ण स्त्रियोंको बुलाया और उनको बहुतसी बस्तु और द्रव्यआदिक देकर आज्ञादी कि जिसका जिससे मनचाहे बिवाहकरले परन्तु थोड़ीसी बांदियां लौंड़ी के लिये रखलीं एकबर्ष पर्यन्त बादशाह उसके चुपरहने से अतिबिकलरहा एकदिन उस सुन्दरी से कहा हे प्राणप्यारी! बड़ाखेद है कि मुझे तेरा बृत्तान्त बिदित नहीं कि तू मुझसे प्रसन्नहै वा अप्रसन्न और मैंतो तेरासत्कार यथावस्थित करताहूं तेरीही प्रसन्नता के लिये मैंने अपनी सबस्त्रियों को परित्याग किया यदिईश्वर न चाहे तू गूंगी है तो महाअनर्थहै कि ऐसीसुन्दरी रूपवती में इतना बड़ा दोष यदि गूंगीनहीं तो कुछ बोल क्योंकि मुझे चुपरहने से अतिकष्ट है और एकबर्ष से मैं रात दिन परमेश्वर से यह मांगताहूं कि जो तेरे उदर से कोई पुत्र उत्पन्नहोतातो मेरेपीछे बादशाहत करता क्योंकि दिन दिन मेरी आयु घटती और निर्बलता दबातीजाती है परमेश्वरके वास्ते जो तू गूंगीनहीं तो मुझसे कुछबात कर नहीं तो मैं प्राणदेताहूं मेरीहत्या तुझपर होगी वह सुन्दरी यह बचससुन उसकी ओरदेख मुस्कराई बादशाहने उसके इस सुन्दर भावसे आनन्दितहो जाना अब यह बोलेगी प्रसन्नता से उसकी ओर देखनेलगा वह मनहरणी थोड़ी देरपीछे बोली मैं बहुतसी बातें आपसे कहना चाहतीहूं परन्तु मैं नहीं जानती कि पहिलीबात कौनसीकहूं इस कालान्तर में तुमने मुझपर इतनी दयाकी जिससे मैं आपका धन्यवाद करती हूं वह ईश्वर सर्वोपरि तुमको इसका बदलादे और १२० बर्षपर्य्यन्त तुम जीतेरहो और तुम्हारे शत्रु प्रताप रूपी अग्नि से जलके भस्महों और आप नित्य प्रसन्नरहें आपको शुभसमाचार देतीहूं मुझे तुझसे गर्भरहा आशा है कि पुत्रही उत्पन्न होगा और जो कुछ इससमय में ढिठाई हुई क्षमाकीजिये न बोलने का यह कारणथा अबतक मेरामन तुमसे प्रसन्न न था परन्तु इससमय में मैं तुम्हें मनबच से चाहतीहूं ईरानका बादशाह उसके यह कोमल मनोहर बचनसुन इतना प्रसन्न हुआ जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और उससे लिपटगया और कहा मेरी आंखें अब रोशन हुईं और

गर्भका शुभबृत्तान्त सुन महाहर्षितहूं यहकह उठ खड़ाहुआ और कहा अब मैं जाके यह शुभसमाचार सबसे प्रकट करताहूं फिर बाहर आके वज़ीर से कहा एकलाख अशरफ़ी याचक मंगनों को अभीदो और जिसकी जो आवश्यकताहो उसे चुकादो उपरान्त महल में आ उस सुन्दरी से कहा मुझे क्षमाकरना मैंने यहसब बृत्तान्त तुमसे सुन अपने वज़ीर आदि दरबारियों से कहा अबतुमसे बहुतबातें पूछना चाहताहूं प्रथम यह कि एकबर्ष पर्य्यंत अप्रसन्नहोकर चुप क्यों रही उसने कहा मेरेउदासीन चित्तका यह कारणथा कि परमेश्वरने मुझे तुम्हारी दासीकिया और अपने देशसे इतनादूर फेंका कि वहां जानेकी फिर आश नहीं इसके बिशेष अपने माता पिता और भाईबन्धु से बियोग होनेका जो मनुष्य दूसरे का अधीनहो उसकेलिये मृत्यु उत्तमहै यह सबबातें मेरे उदास रहनेकीथीं बादशाहने कहा हे सुन्दरि! जो तुमने कहा सो सत्य है परन्तु जब कि कोई अतिसुन्दर हो और उसकी प्रीति बादशाह के हृदय में पैठे तो चिन्ताकी जगह नहीं उसने कहा ये सब बचन जो आपने मेरे धैर्य्य के लिये कहे उचित हैं परन्तु बांदी बांदीहीहै बादशाहने कहा हे मृगनयनी! तुम्हारी बार्त्तासे प्रतीत होताहै कि तुमकिसी बड़े घरानेकी पुत्रीहो मुझे अपना और अपने माता पिताका नाम जिससे तुमसी चन्द्रमुखी मृगनयनी उत्पन्न हुई हालसुनाओ और उनका निवास कहां हैउसने कहासाहब मेरा नाम गुलअनार आशीन है मेरा पिता आशीननामक नदका बड़ा बादशाहथा उसने मृत्युसमय मेरे सहोदरभ्राता सालक और मेरीमाता को सम्पूर्ण बादशाहत सौंपदी मेरीमाता भी उसनदके किसी बादशाह की बेटीथी हमतीनों अपने राज्यमें आनंदमंगल से रहतेथे अकस्मात् एकशत्रु मेरेपिताका मरनासुन सकटक हमपरचढ़ा हमारी बादशाहत छीनली मेराभाई उसका सामना न करसका लाचारहो मुझे और मेरी माताको गुप्त वहांसे लेके निकलआया कई दिनपीछे मेरेभाई ने मुझको एकांतमें लेजायकहा हम तुमतो आपत्ति में पड़े हैं यदि भाग्य सहायकहो तो मेरीइच्छा है कि किसीयत्नसे बैरीको अपने देशसे निकालें और बादशाहतकरें इससे पहिले तेराबिवाह करदूं परन्तु मेरी

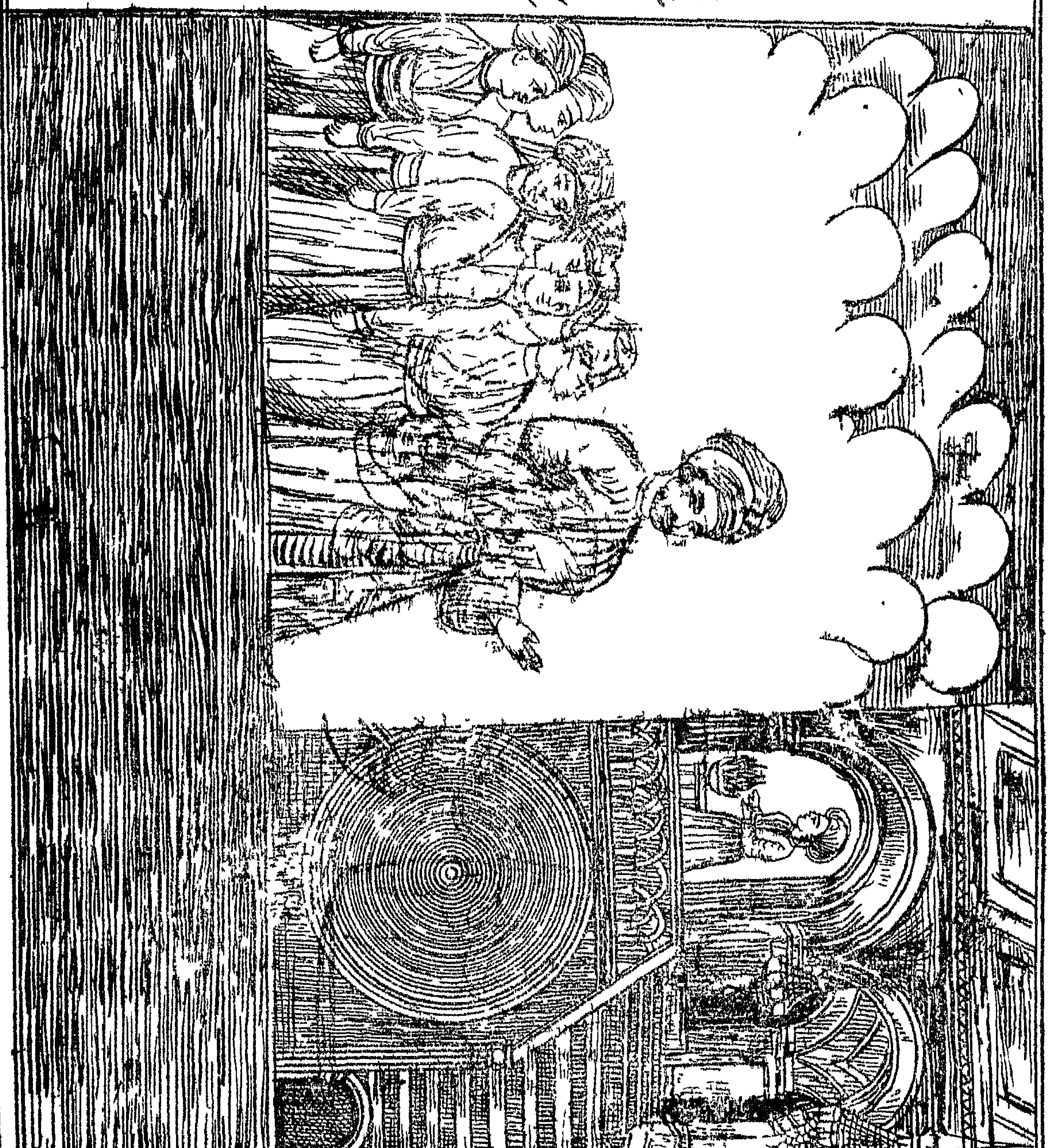
दृष्टिमें जलवासी कोई शाहज़ादा नहीं जचता यही इच्छा रखताहूं कि तेरा ब्याह किसी पृथ्वीके शाहज़ादे से करूं जहां तू आदरपूर्व्वक रहे जो कुछ कि तेरे दहेजआदिकी आवश्यकहोगी अपनी सामर्थ्य भर तय्यार करदूंगा मैं अपने भाई के मुखसे यह बचनसुन अति अप्रसन्न और महाकोपितहुई और उससे कहा सुनोभाई मैं और तुमदोनों एकही जलनिवासी माता पिताके बीर्य्यसे उत्पन्नहुये और आजतक कोई शाहज़ादी धरतीके शाहज़ादे से ब्याही न गई मुझे यह बात कब अंगीकार है कि मेरा सम्बन्ध उनसेहो मैं यही चाहतीहूं कि तुम्हारी दशामें मैंभीरहूं यदि इससे भी दुःखपड़े तो तुम्हारे साथ प्राण देनेको तत्परहूं मेरेभाई ने कहा यह दूसरीबात है परन्तु हे प्यारीबहिन! जो तुम पृथ्वी के बादशाहों से ब्याह करना अंगीकार नहीं करतीं इसका क्या कारण है क्या पृथ्वी के बादशाह सब कमीने और अयोग्यहैं ऐसानहीं जो तुम समझतीहो किन्तु बहुत से उनमें भलेमानस उच्चजाति हैं निदान भाई ने इस बिषय में मुझे बहुत समझाया वह मुझे बहुतबुरा मालूमहुआ और मनमें अति क्रोधितहोकर उससमय तो चुपहोरही फिर जब मेराभाई मेरेपास से उठके किसी और कार्य्य में प्रवृत्तहुआ मैं नदसे निकल पृथ्वी पर आई और एकद्वीप में पहुँच किसी ऐसे स्थानपर जहां किसी मनुष्य की आवागमन न थी जाय थककर अचेतहो सोरही मैंने अपनी बहुत रक्षाकी कि कोई मनुष्य मुझतक न पहुँचे परन्तु कुछ लाभकारी न हुआ सो एक प्रतिष्ठित मनुष्य मुझे सोतेदेख अपने सेवकों सहित वहां आया और मुझे उठवाकर अपने महलमें ले गया और मुझे बहुत प्रीतिकर चाहा कि अपनी इच्छा पूर्णकरूं परन्तु मैंने उसकी ओर न देखा जब उसे ज्ञातहुआ कि यह बिनय से न मानेगी तब उसने बरजोरी भोगकरना चाहा मैंने उसे इसढिठाई का ऐसा दण्डदिया जिस से वह लज्जाको प्राप्तभया निदान उसने निराशहो मुझे इस ब्यापारी के हाथ बेंचडाला यह ब्यापारी बड़ा भलामानस और सुशीलथा कभी मुझे उससे कष्ट न मिला किन्तु बातचीत भी न हुई इतना कह फिर गुलअनार बोली यदि

आपमुझसे इतनीप्रीति न करते तो मैं तुमसे कदाचित् प्रसन्न न होती और यदि अनीतिमात्र भी मुझसे करते तो मैं उसद्वार से जो समुद्रकी ओर है कूद अपने कुटुम्ब से जामिलती परन्तु एकही चिन्तार्थी यदि मेरी माता और भाईको ज्ञात होता कि मैं अमुक बादशाहकी बांदीहुई तो लज्जासे मुझे तुरन्त मारडालते जो मेरे उदरसे पुत्र उत्पन्न होजावे तो निस्सन्देह यहांसे नहीं जासक्ती हर दशामें मुझे अपनी दासी जानना परन्तु मेरा सन्मान अपनी स्त्री के सदृशकरना जब गुलअनार ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बादशाह से कहसुनाया तो बादशाहने कहा तेरे सुन्दरमुख से अति बिचित्र बातें सुनीं जो भलीभांति समझमें नहीं आतीं मुझे इच्छाहै कि उन सबको निश्चयकर अपने मनको धैर्य्यदूं परन्तु प्रथम मैं तुम्हारा गुणमानताहूं क्योंकि मेरी तुम से अतीव प्रीति प्रतीत हुई और सबसे अधिक मेरेचित्तको यह भरोसाहुआ कि तुमभी अपने देश की शाहजादी हो आजसे तुमको मैंने मलका मुल्क ईरानका नाम दिया कल मैं अपने राज्यभरमें डौंड़ी फिराऊंगा कि तुम आगे समुन्द्रालकी शाहज़ादीथीं और अब ईरानदेश की शाहजादीहुईं और तुम्हें नित्य आदरकर पूर्व्व से अधिक तुमसे प्रीति करूंगा और तुम भी सिवाय मेरे और किसीसे प्यार न रखना अब तुम मुझे बताओ कि क्योंकर तुम जलमें रहसक्तीहो और डूबती नहीं पूर्व्व मैंने सुना था कि मनुष्य जलमें रहते हैं परन्तु बिश्वास न हुआ अब मुझे भलीभांति ज्ञातहुआ कि वह सत्य है यहांतक कि तुम दरियाईपरी हो परन्तु आश्चर्य्यितहूं कि मनुष्य जल में क्योंकर रहते हैं और अनय कामकाज करते हैं शाहज़ादी ने कहा यदि पानी कितनाही गहराहो परन्तु हमारीदृष्टि वैसीही पहुँचती है हमजल में बस्तुओंको दूरसे देखसक्तीहैं समुद्रमें रातदिन समान है जैसा कि हम पृथ्वी में सब बस्तुओंको दूरहों वा निकट देखसक्तीहैं तैसाही नीरमेंभी देखती हैं हमें चन्द्रमा सर्व्वदा जलमें अपना सुन्दर प्रकाश देता है और हम वहांसे अपरिश्रम तारागण और बृक्षोंको देखसक्ती हैं जिस प्रकार धरतीपर देश प्रदेश पुर ग्रामादि हैं उसीभांति हरएक बाद-

शाह के भिन्न भिन्न हैं किन्तु धरती से तीनहिस्से वहां बस्ती है और प्रतिदेश में बहुतसी बिशाल बस्तियां हैं जैसे कि यहां सब जाति भिन्न भिन्न रहती हैं यही दशा वहांकी भी है और वहांके शाहीमहल अतिबिशाल और सुन्दर संगमरमर के रंगबिरंगे निर्म्माण किये जाते हैं और उन महलों में सीप, बिल्लौर, मूंगा और अनेक प्रकारके रंगकी मणि जड़ीजाती हैं जलमें रत्न धरतीकी अपेक्षा बहुत हैं और मोती तो असंख्य इतने बड़े बड़े होते जिनका मैं बिचार नहीं कर सक्ती और वहां महल सबलोग बनालेते हैं और आवागमन के निमित्त गाड़ी व सवारी की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह दूर दूर अतिसुगमता से चलेजाते हैं बादशाहलोग दरियाई घोड़े अपने घुड़शाल में अपनी शोभाके लिये रखते हैं जब कभी तमाशा देखने कहीं जाते हैं तो उन्हें मँगालेते हैं वह घोड़े इस सुगमता से जलमें चलते हैं कि सवार हिलताभी नहीं और गाड़ियांभी अतिदृढ़ और उत्तम बनाते हैं उनपर बादशाह तख़्तधर सवारहोते हैं केवल सैन सेही वह गाड़ी जिस ओर चाहैं बिजली और बायुकी सदृश चली जातीहै थोड़ेही कालमें दूसरे नगरको पहुँच उसपर सैरकरते फिरतेहैं वहां की स्त्रियां अत्यन्त सुन्दर और पतिसेवामें चतुरहैं यदि आज्ञा दीजिये तो अपने भाई और माताको जो मेरे देखने के बिना अति शोकयुक्तहैं यहां बुलाऊं कि परस्पर दर्शन लाभ प्राप्तहो जब मैं उन से यह कहूंगी कि मैंने इतने बड़े ईरानके बादशाहके साथ बिवाह किया तब वह अत्यन्त प्रसन्नहोंगे बादशाहने कहा हे मृगनयनी! तुममेरी प्राणप्यारी हो उनको अतिप्रसन्नता से बुलाओ मैं उनका यथोचित सन्मान करूंगा परन्तु बड़ा आश्चर्य्य है कि वह यह नहीं जानते कि तुम कहां रहतीहो फिर क्योंकर बुलावोगी गुलअनारने कहा स्वामी इसकी कुछ शङ्कामतकरो क्षणमात्रमें वह सब यहां पहुँचेंगे तुम इस मकानसे उठकर दूसरे मकानमें जाबैठो और किवाड़ मूँद झरोखे से उनके आगमन का तमाशा देखो बादशाह वहांसे उठ दूसरे मकान में गया और द्वारमूंद झरोखे में से देखनेलगा गुलअनार मलकाने अपनी दासीसे अग्नि मँगवाई और कहा तू बाहरजा किवाड़ मूंदले

और जबतक मैं न बुलाऊं मेरे पास न आइयो जब मलका अकेली हुई उसने छोटासा एक संदूकचा खोल एक चन्दनकी लकड़ी का टुकड़ा निकाला और उसे आगपर रक्खा जब उसमें से धुआँ निकला और ऊंचाहुआ तब कोई मंत्र पढ़ने लगी वह शब्द बादशाह न समझता था और हृदय में लालसारख उधरकोही देखने लगा उस मन्त्र के पूर्ण होतेही नद बढ़ने और उमड़ने लगा बढ़ते बढ़ते उस राजमहल के बराबर पहुँचा कुछ कालमें नदका जल फटगया उसमें से एक तरुण सुन्दर पुरुष प्रकट हुआ जिसकी मूछें जल के सदृश हरीथीं फिर एक स्त्री निकली उसके पीछे पांचस्त्रियां यौवनवती निकलीं गुलअनार ने आगे बढ़ उनकी अगवानी की और परस्पर भेंटभई जब जलसे तटपर पहुँचकर गुलअनार के निकट पहुँचे तो सुल्तान सालह और उसकी माता और सम्पूर्ण स्त्रियों ने पारी पारीसे गुलअनार मलका को अपने २ कंठसे लगाय नेत्रों से आंसू बहाये उसने भी सबका यथोचित सत्कारकर बैठाया उसकी माता ने कहा हे पुत्री! तुम्हारे देखने से प्रसन्नता प्राप्तहुई जो जो कष्ट कि तुम्हारे बियोग में हुये वह बर्णन नहीं करसक्ती हूं और मैंने तुम्हारे भ्रातासे तुम्हारी अप्रसन्नता और रूठजाने का कारण सुनाथा इससे दुःखहुआ अब बर्णन करो कि तुमपर वहां से आके क्या हुआ और क्योंकर यहां पहुँची यह सुनतेही वह अपनी माता के चरणोंपर गिरपड़ी और शिरउठाय कहा बास्तव में मुझ से बड़ा अपराध हुआ उसे दयाकर क्षमाकरो मैं बड़ी बड़ी आपत्ति और दुःखोंको झेल यहां पहुँची जिससे मुझे बिदितहुआ कि बास्तव में पृथ्वी के बादशाह भी समुद्रके बादशाहके तुल्यहैं फिर उसके भ्राता सालहने कहा प्यारी तुम अपने देशको फिरचलो वहां हम तुम पूर्ब्बवत् प्रीतिसे रहेंगे और उसकी माताने भी यही कहा गुलअनारने उन दोनोंको उत्तर दिया मैं अब यहांसे क्योंकर जासक्ती हूँ प्रथम तो इस बादशाहने मुझे दशहज़ार अशरफ़ीपर मोल लिया फिर मेरी प्रसन्नता के निमित्त अपनी सम्पूर्ण बिवाही हुई स्त्रियोंको परित्याग किया और मुझे अपनी मलका बनाया इसके बिशेष

चित्र शहज़ादी गुल अनार का मंत्र पढ़ते हुये और उसके भाईबारिका नदी से बाहर निकलना



मुझे उससे चारमासका गर्भ है ईरानका बादशाह उनके निकट बैठाहुआ यह सबबार्त्ता सुनताथा गुलअनार के लेजाने का हाल सुन बहुत घबराया और मनमें कहनेलगा बड़ा अनर्थ है कि मेरी प्रिया अपनी माता और भाई के साथ चलीजावेगी तो मेराजीना कठिन होगा इतने में गुलअनार शाहजादी ने दासियों को बुलाय भोजन मांगा उन्होंने तुरन्तपात्र रख सुन्दर भोजन परसदिये इसके उपरान्त गुलअनार ने उनको बैठाय भोजन के लिये कहा उन्होंने कहा क्या हमको उचितहै कि ईरान के बादशाह के बिना जिसके घर हम आये हैं भोजनकरें इतने में एकही बेर उनके मुखका लालबर्ण होगया और मुँह और नथुनोंसे अग्निकी लाटें निकलनेलगीं बादशाह यह चरित्रदेख घबराया इतनेमें गुलअनार उन दोनोंसे आज्ञा पाय अपने पति के समीप आई और कहा तुम्हारे बिना वे भोजन नहीं करते उचित है कि तुमभी वहां चलो और सबसे भेंटकर सुख पूर्व्वक बैठ भोजन कीजिये यद्यपि मेरे माता और भाई मुझसे कहते हैं कि मेरे साथ फिर अपने देशको सिधारो परन्तु मैं तुमसे ऐसी प्रसन्नहूं कि तुम्हें छोड़ वहां नहीं जासक्ती बादशाह ने कहा हे मेरी प्राणप्यारी! मैं तुम्हारे इन सुन्दर बचनों से महाप्रसन्न हुआ अब मुझे तुम्हारी ओर से धैर्य्य हुआ कि तुम्हें मेरी बड़ी प्रीति है और तुम मुझे छोड़ अपने देशको न जाओगी मैंभी तुम्हारी माता और भ्राताके भेंटकी लालसा रखताहूं अब जाके उनके दर्शन करताहूं और उनके साथ भोजन करूंगा परन्तु उनके मुख और नासिका से लाटें निकलते देख भयभीतहूं गुलअनार ने कहा इस बातकी आप चिन्ता न कीजिये यह आग इसहेतु निकलती है वह बिना आपके भोजन करने में अप्रसन्न हैं बादशाहको यह बचन सुन धैर्य्य हुआ और अपना मन दृढ़कर उसकेसाथ उस मकान में गया गुलअनार ने बादशाहको सबसे मिलवाया उन सबने बादशाह के सम्मान के निमित्त अपने शिरोंको पृथ्वी से लगाया बादशाहने तुरन्त दौड़ उन के शिर उठाय पारी २ से सबसे भेंटकी तिस पीछे सब मिलके बैठे सालहने बादशाह से कहा हम आपके सम्मुख अतिप्रसन्नता प्रकट

करते हैं कि मेरी बहिन बहुतसे दुःख सह आपकी छायामें आई और तुमसे बहुत प्रसन्न है परमेश्वर आपका जन्म सफलकरे बादशाहने भी उचित उचित बिनयपूर्व्वक कोमल बचन कहकर उनका आगत स्वागत कर उन सबको भोजन कराया जब सब भोजनकर निश्चिंतभये तो वार्त्ताकरनेलगे इतने में रात्रिहोगई तब बादशाह ने उनके निमित्त सुन्दर कोमल सेज बिछवाय सुलाय आप उनसे बिदाहो निज केलिगृह में जाय आनन्दपूर्व्वक सोरहा प्रातःकाल उठ अपने अतिथियों को भलीभांति आदरकर न्योता और इसी प्रकार बहुत दिनोंतक उन सबको अपने देश में रख प्रतिदिवस नवीन प्रकार से मान करतारहा इतने में गुलअनार पूरे दिनों से होकर पीड़ा से बेचैनहुई उसके दूसरे दिन पुत्र उत्पन्न हुआ इसमें बड़ी प्रसन्नताहुई और गुलअनार की माताने अपनी रीति के अनुसार बहुतभारी बहुमूल्य जोड़ा छठीके दिन उस देश और चलनके अनुसार तय्यारकर बादशाह को दिया वह शाहज़ादा कि अति सुन्दर चन्द्रमा के सदृश उत्पन्न हुआ था इसलिये उसका नाम बदर रक्खागया और महाउत्सव किया और याचक मङ्गनादिकों को असंख्य द्रव्य, भूषण, रत्न, बस्त्रदे अयाचक किया और अपने दरबारवालों को अनेक प्रकार की बिचित्र बस्तु कृपा कीं और सेवक सेनादिको भी बहुमूल्य पारितोषिक आदि दिया और नगर में आज्ञादी कि सब अपने अपने घरों में मंगलाचार मनावें और नृत्यादि देखें कईदिनतक पुरबासियों को बड़ी धूमधाम से न्योता जब सौरके दिन होचुके तो मलकाने स्नानकर बहुत उत्तम चीरपहिरे ईरानका बादशाह और उसकी माता और भ्राता उन पांचों शाहज़ादियों समेत बड़े हर्ष से बदरके देखनेको गये उसे देख अति प्रसन्नहुये तदनन्तर सालह बच्चेको दाईकी गोदसेले अपने कण्ठ से लगाय बहुत प्यारकर उसी मकानमें इधर उधर टहलनेलगा इतने में उसी द्वार से निकल शाहज़ादे समेत नदमें कूदपड़ा ईरानका बादशाह यहहाल देख घबड़ाय रोनेपीटनेलगा और उसे बिश्वास हुआ कि फिर अपने पुत्रको न देखूंगा मलकाने हँसके बादशाह को धैर्य्य दिया कि आप

भय न कीजिये यह जैसा तुम्हारा पुत्र है तैसाही मेरा देखो मैं तो इसके लिये कुछ भी चिन्ता नहीं करती भरोसा रक्खो इसको किसी भांति का डर नहीं इसे मेराभाई जलके भीतर इसीलिये लेगया है कि उसे जल और पृथ्वी पर फिरना बराबर हो जैसा कि हमलोगों को अभ्यास है उसीभांति उसकी माताआदि अन्य स्त्रियों ने भी बादशाह को धैर्यदिया कुछकाल पीछे नदका जल हिलने लगा और सालह अथाह नीरकी तरंगों में से बदर को ले बाहर निकला और बायुपर उड़ उसी द्वारसे महलमें आया बादशाह अपने बेटेको अपने मामूंकी गोदमें आनन्दसे सोते देख अत्यन्त आश्चर्य में हुआ सालहने बादशाहसे पूछा कि हुजूर जब मैं अपने भानजेको जलमें लेगया आपको तो कुछ भय न हुआथा बादशाहने कहा कुछ न पूछो मेरी क्या दशा भई अब मेरा उसे देख नयेसिरेसे जन्म भया सालहने कहा कुछ शोचकी जगह न थी क्योंकि मैंने नदमें उतरने के पहिले हजरत सुलेमानकी अँगूठीका इस्मआज़म नामक मन्त्र पढ़लियाथा हमारी जाति में यह रीतिहै जबकोई सन्तान हमारेबीर्य का पृथ्वीपर उत्पन्न होता है तो हम इस्मआज़म उग्रमन्त्र की शक्तिसे उसे जलमें सैर करानेको लेजाते हैं जैसा कि तुमने देखा यह कह उसने शाहज़ादेको दाईको देदिया और एक छोटासा सन्दूकचा कि उसे शीघ्रतामें नदके भीतर से अपने साथले आयाथा खोला और उसमें से सोहीरके टुकड़े कि प्रत्येक कपोतके अण्डेके तुल्य थे और उतनीही बड़ी बड़ी अतिबिचित्र मणि और नीलमणि कि प्रत्येक दोतोले तीनमाशेकी थीं और नील मणिकी तीसमाला जिसमें दशदश लड़ी गुहीहुई वह सब बादशाह को भेंटकर कहा मुझे अपनी बहिन का बृत्तान्त मालूम न था कि किस स्थानपर है और किस ऐश्वर्यवान् बादशाह से उसका बिवाह हुआ इसी हेतु खाली हाथ हम आये और यहां तुम्हारे प्रताप और ऐश्वर्य को देख लज्जितहुये कि कौनसी ऐसी बस्तु तुम्हारी भेंटकरें इस निमित्त थोड़े से रत्न यद्यपि वह तुम्हारे योग्य नहीं अपने देशसे ला आपकी भेंट किये सो इस सूक्ष्मबस्तु को हमारी प्रसन्नताके लिये स्वीकार कीजिये ईरानका बादशाह उन बिचित्र और अनेक भांति

के सुन्दर रत्नोंको देख अति आश्चर्य्य में हुआ उनमें से दो रत्न तो इतने बड़े थे कि पृथ्वी भरमें वैसे नहीं होंगे फिर उसे बड़ेहर्ष से अंगीकारकर शिर नेत्रों से लगाय सालह का बड़ा गुणमाना और कहने लगा मैं तुम्हारी शीलता और बिशेष इस सम्बन्ध से अतिहर्षितहूं तुमने मुझे ऐसे बड़े बहुमौल्य रत्न दिये और उन्हें तुच्छ कहते हो भाई यह संदूकचा कई राज्य का मोलहोगा फिर उसने अपनी स्त्री से कहा हे मृगनयनी! तुम्हारे भाईने वहरत्न भेंटदिये चाहताहूं कि थोड़े से लूं और शेषलौटादूं परन्तु वह बहुत बिनय करताहै तुम मेरी ओर से उसे समझाओ गुलअनार ने उत्तर दिया हे स्वामिन्! यद्यपि पृथ्वी पर ये वस्तु कमहैं परन्तु समुद्र में कि हरएक स्थानपर रत्नोंकी खानिहैं कुछवस्तु नहीं इस बातका आपकुछ सोच न कीजिये और लेलीजिये बादशाह यहसुन चुपहोरहा कईदिन पीछे सालहने बादशाहसे कहा हम सब आप के यहां इतने प्रसन्नरहे कि इतना आनन्द और स्थानपर न मिलता परन्तु हमें यहां आये बहुत दिनबीते वहां का समाचार कुछ ज्ञातनहीं क्योंकि बहुधा नगर में बादशाह के न होनेसेप्रबन्ध में उलट पलट होजाते हैंइसहेतु आपसे बिनती करते हैं यदि आपकी इच्छाहो तो हम सब तुमसे और अपनी बहिन से बिदा हो अपने देशको सिधारें बादशाहने लाचारी से अंगीकारकर कहा यद्यपि हम लाचारीसे तुम्हें बिदाकरते हैं परन्तु गुलअनार और बदर को मतभूलना और कभी कभी उनके देखने के लिये आना और मुझेभी अपना दर्शनदे कृतार्थ करतेरहना सालह बादशाह से बिदा हो समन्दाल देशको सिधारा और ज्यों ज्यों बदर बढ़ता त्यों त्यों उसके माता पिता प्रसन्नहोते कभी कभी सालह और उसकी माता उसके देखने को आते जब बदर पढ़ने लिखने योग्य हुआ थोड़ेही काल में सम्पूर्ण बिद्या और गुणों में निपुण हुआ और पन्द्रह वर्षकी आयु में जब अतिकुशल बुद्धि हुआ तो उसके पिताने उसे अपना क़ायम मुक़ाम करके और व्यवस्थादि कार्य उसे सौंपे उसने अपनी नीतिसे प्रजाको बहुत प्रसन्न रक्खा प्रत्येक बिषय को भली भांति समझता और सुनता और उसका उत्तर यथार्थ देता और किसी से अहंकार

न करता जब बादशाहने अपने शाहज़ादेको प्रत्येक विषय में अति कुशल देखा तो ताजबादशाही अपने शीशसे उतार उसके मस्तक पर धारणकिया फिर उसके हाथचूमें क्योंकि यह सूचितहै कि सब बादशाही प्रबन्ध इन्हीं हाथोंसे भुगतेंगे और बादशाह तख़्त के नीचे कि वह आसन वज़ीर और अमीरों का था बैठा फिर सब वज़ीर और सभा जो सेना और देशके प्रबन्धक थे नवीन बादशाह को भेंट देनेलगे और पूर्व्ववत् उसकी आज्ञा पालनेलगे जब इन सब कामों से निश्चिन्तहुआ वज़ीर राज्यके प्रबन्ध और व्यवस्था उसके सम्मुख लाया उसने भलीभांति उन्हें भुगताया जिसे सब देखके आश्चर्यित हुये और थोड़ेही कालमें शाहज़ादेने अपनी सल्तनतका ऐसा प्रबन्ध किया कि हरएकको पसन्द आया और उस की तीव्रबुद्धिपर धन्यधन्य करने लगे जब वह यह सब कार्य्य कर निश्चिंतभया पिताकेसाथ अपनी माताके निकट आया उसकी माता उसका शीशमुकुटसे सुशोभितदेख दौड़ी और अपने कण्ठ से लगाय हर्षितहुई दोवर्ष में उसका पिता उसे सबप्रकारसे चतुर पाकर नगरके बाहरजाय ईश्वरका आराधन करनेलगा बद्र प्रायः अहेर खेलता और देश देश ग्राम ग्राम घूमता प्रत्येक विषय को निश्चयकर उसका उपाय करता निदान इसी में प्रबन्ध बद्र का पिता रोगयुक्त हुआ और दिन २ उसका रोग बढ़ता गया निदान जब अपने जीवन से निराश हुआ तो वज़ीर और प्रधानों को बुलाकर बादशाह बद्र की प्रतिज्ञा प्रतिपालन के लिये प्रतिज्ञा लेली और इस संसार असार से परमधाम को सिधारा यह दशा देख बद्र और गुलअनार रोने पीटनेलगे और बड़े ठाटसे अर्थी निकाल उसे गाड़ा बद्र एकपूर्ण वर्ष अपने पिताके शोकमें दिनरात रुदन करतारहा इतने में सालह और गुलअनार की माता वहां पहुँचीं और अनेक भांति के गुणबखान रोने लगीं जब निश्चिंत हुये तो सालहने एकदिन अपनी बहिन गुलअनार से कहा आश्चर्य्यहै कि तुमको अबतक बद्रके बिवाहका सोचनहीं यदि तुम्हारी इच्छाहो तो मैं एक शाहज़ादी अपने देशों मेंसे जो रूप अनूप में

बदरकेतुल्यहो ढूंढूं मलकाने उत्तर दिया अबतक मुझे इस बातका कुछसोच न था क्योंकि मैंने अबतक उसकीरुचि इस विषयमें न पाई थी और मैं बहुत खुशहोंगी जो कोई समुद्रकी शाहज़ादी से सम्बन्धहो यदि तुम्हारे विचार में कोईहो तो मुझेभी ज्ञात करना तुम्हारी कृपासे आशहै कि तुम कोई ऐसीस्त्री उसके निमित्त ढूंढ़ोगे कि जिसे बदरदेख मोहित होगा सालहने कहा मैं तुमसे एक शाहज़ादी का वृत्तान्त वर्णन करूंगा परन्तु जिससमय बदर अचेत सोजावेगा गुलअनारने बदरको बहुत कालसे चुपदेख जाना कि वह सोता है और बदर शाहज़ादीका हालसुन अनुकर्ण निद्रावशहुआ और अपनाध्यान उनकी वार्त्तापर रक्खा गुलअनारने सालह से कहा भाई तुम निश्शंक उस शाहज़ादी का हाल वर्णनकरो बदर अचेत सोताहै सालहने कहा इसविषय में रक्षा अवश्य चाहिये ऐसा न हो कि बदर उसके रूपकी प्रशंसा सुन मोहित होजावे और उसके वास्ते सर्व्वस्वत्याग विचारे उस शाहज़ादी के पिताका वृत्तांत तुम्हें ज्ञातहै वह अहङ्कार से किसी बादशाह और शाहज़ादे को चाहो पृथ्वीकाहो वा जलवासी अपने बराबर नहीं समझता ईश्वरजाने माने वा न माने परंतु बदर उसके मोहमें अपना प्राणदेगा केवल तुमसे उसका और उसके पिताका नाम वर्णन करताहूं उस शाहज़ादीका नाम जवाहरहै और उसके पिताकानाम सुल्तानसमन्दाल गुलअनारने कहा क्या भाई अभीतक कहीं जवाहर शाहज़ादी ब्याही नहीं गई मैंने उसे अपने यहां आनेके पहिले देखाथा उस समय वह आठमहीने की थी वास्तव में उस समयमें उसकी सुन्दरता विख्यातथी जो कोई उसे देखता प्रसन्नहोता अबतो तरुण अवस्था में उसका औरही यौवन होगयाहोगा इस संसारमें वह अद्वितीयहै वह निस्संदेह मेरे पुत्र बदर से बड़ी है और मैं अश्चर्यितहूं कि तुम्हें उसके मांगने में क्या परिश्रमहै सालहने कहा समन्दाल ऐसा अहङ्कारी है कि किसी बादशाहको अपने समान नहीं समझता मैं नहीं जानता वह इस सम्बन्ध को स्वीकारकरे वा नहीं अब मैं अपने भानजेके निमित्त उससे प्रार्थना करूंगा परन्तु चैतन्य रह

जबतक मैं लड़की के पिताको प्रसन्न न करलूं तबतक इस बृत्तांत को बदर न सुननेपावे ऐसा न हो जो बदर उसका बखानसुन मोहित होकर अपना प्राणत्यागदे इसी भांति वह दोनों बहिनभाई बहुकाल पर्यंत बार्त्ता कियाकिये अन्तको यह बात ठहरी कि सालह तुरन्त अपने देशको जावे और समन्दाल बादशाहसे जाय बिवाहका नेग दे सालहको परिपूर्ण बिश्वासथा कि बदर अचेत सोताहै वह दोनों यही बर्त्ताकर चलेगये और बदर ने चुपके २ वही बार्त्ता सुनी और जवाहर शाहज़ादीकी मूर्ति जो उन्होंने निकालकर देखीथी देख उस पर मोहित हुआ उस रात्रि तो उसी मूर्तिके स्मरणमें अधीरहो लोटा किया और प्रातकोभी उसीके बिचारमें उठा और खानापीना बोल-ना चालना तजदिया जब सालह अपनी बहिनसे बिदा होनेको आ-या तब बदरकी आक्रांति बदली देख कारण पूंछा उसने अपने मुख्य अभिप्रायको छिपाकर कहा मेराजी यहां बहुत घबड़ाताहै मुझे आप अपने साथ रखिये और अपने देशजाने की इच्छा न कीजिये मेरी इ-च्छाहै कि दोतीनदिनके लिये आपके साथ अहेर खेलने जाऊं और मनमें यह बिचारा कि इसी बहाने से अपने मामूं के साथ अपनी प्रि-या के ढूंढ़ने के लिये यहांसे निकलजाऊंगा इस बातको अपनी माता से गुप्तरक्खा क्योंकि वह कदाचित् मेरा बियोग न सहेगी और मुझे न जाने देगी प्रकट में अपनी माता से अहेर खेलने की आज्ञा ली और अहेरकी सामग्री ले सालह के साथ एकओरको चला यहांतक कि एकदिन मृगके पीछे घोड़ा दौड़ाते बिछुड़गये उस समय कोई से-वक बदरके पास न था वह थकितहो अपने घोड़ेसे उतरा और घोड़े को किसी बृक्षसे बांध एकनदी के तीर सघनबृक्षोंकी शीतल छायामें हरी २ घास पर बैठगया और हाहा खाय अपनी प्यारी के ध्यान में रोनेलगा बहुकालपर्यंत उसी दशा में बैठारहा उधर सालह उसे न देख घबड़ाया और सेनासे पूंछा कि वह कहांहै कोई न कहसका कि वह कहांगया सो वह आपही उसके ढूंढ़ने को निकला वहांपहुँच दू-रसे क्या देखताहै कि वह अपनी प्रियाके बिरहकी तपनि में तप धाड़ें मारमाररोरहाहै तब उसे बिश्वासहुआ निस्संदेह उसने जवाहरशाह-

ज़ादीका वृत्तान्त सुनाहोगा और उसीके बियोगमें बिकलहैं सो अप-
ने घोड़ेसे उतर और उसे रूखमें बांध धीरेधीरे उसकी आड़ में आय
खड़ाहो सुननेलगा कि वह इन बातोंको कहरहाथा हे मेरी प्राणप्रिया
समंदालकी पुत्री ! तुम्हारी मूर्तिको देख मेरी यह दुर्दशा भई मुझे
बिश्वासहै कि तुम संसारकी सकल शाहज़ादियों किंतु चन्द्रमासे भी
अधिक सुन्दर हो मैंने अपना मन तुम्हारे अर्प्पण किया परंतु आश्च-
र्य्यितहूं कि तुम्हें कहांजाके ढूंढूं सालहको इससे अधिक सुननेकीश-
क्ति न रही और आगेजाय उसके पासबैठ कहा मुझे निस्संदेह बिदि-
त हुआ तुमने हमदोनों बहिन भाईकी वार्त्ता सुनीहोगी हमारी रक्षा
कुछकाम न आई बदर ने कहा कि मामूंसाहब मैंने आपकी सब बातें
सुनी जो होनाथा सो हुआ यदि आपको मेरेप्राणप्यारे हैं तुम मेरे
बिवाह का नेग उसके पिताको देकर प्रसन्नकरो सालहने उसे धैर्य्य
दिया कि तुम अब नगरको चलो मैं अबइसी कार्य्यके साधने के लिये
समन्दाल देशको जाता हूँ बदर ने कहा तुम्हें मेरीप्रीति होती, तो तुम
मुझे इसदशामें अकेला छोड़ न जाते यदि मुझे हृदयसे प्यारकरतेहो
तो मुझे अपनेसाथ उधर लेचलो उसने कहा तुम्हारी माताकी आ-
ज्ञाबिना मैं क्योंकर तुम्हें लेजासक्ताहूं बदरनेकहा तुम भलीभांति जा-
नते हो कि मेरीमाता काहेको प्रसन्नतासे जानेकी आज्ञा देगी क्यों-
कि वह मुझे प्राणसे अधिक प्यार करतीहै सालहने अपनी अँगुली
से एक अँगूठी जिसपर इस्मआज़म नामक यंत्र लिखाथा उतार
उसे देकर कहा तू इसे अपनी अँगुलीमें पहिन और निश्शंक जलमें
चलेजाइयो जब बदरने उसे पहिंचाना तो सालहने उससे कहा अब
जो कुछ मैं करूं तू भी उसे निस्संदेह कीजियो सो वह दोनों बायुपर
उड़े और समुद्र के तीर पहुँचे उससे उतर जलमें चलने लगे कुछ
काल में वह दोनों समुद्र की बस्ती में पहुँचे सालह बदर को अपनी
माता के समीप लेगया बदर ने अपनी माईको देख हाथ चूंबे और
परस्पर देख हर्षितहुये फिर सालहकी माताने उसकी कुशल पूंछ उ-
से प्यारकिया फिर उसने और स्त्रियोंसे बदरको मिलवाया बदर उन
से वार्त्ता करने लगा इतने में सालहने सावकाश पाय अपनी माता

से एकान्त में बदरके समन्दाल बादशाहकी शाहज़ादी पर मोहित होने का बृत्तान्त कह सुनाया और कहा अब मैं समन्दाल देश को जाताहूं और वहां पहुँच बादशाह को बदर के बिवाह के निमित्त नेगदूंगा यद्यपि सालह इस बिषयमें निपट निर्दोष था और उसने यथाशक्ति बहुत रक्षाकी थी कि जवाहर का हाल बदर को विदित न हो परन्तु उसकी माता ने उससे अतिप्रसन्नहो कहा तू नहीं जानताथा कि समन्दाल महा अहंकारी है जो तूने उसकी पुत्री का बर्णन किया और बदर को उस के मोह में फँसाया सालह ने कहा जो बदर जवाहर पर इतना मोहित रहा और किसी उपायसे भी जवाहर के साथ उसका बिवाह न भया तो वह निस्सन्देह देहत्याग देगा और मैं यथाशक्ति इस विषय में परिश्रम करूंगा मैं समन्दाल को जाय बिवाह का नेग बादशाह को पहुँचाऊँगा परन्तु पहिले उसे बहुमोल्य रत्न भेंट दूंगा मुझे बिश्वास है कि वह ऐसे बड़े बादशाह को अवश्य अपनी पुत्री देदेगा माता ने कहा इससे क्या उत्तम परंतु उस के अहंकार का भय है समझ बूझके इस विषय में वार्त्ता करना और बदरको मेरेही निकट छोड़जाओ यह कह उसने अपने पास से बहुत से रत्न, हीरे मणि, नीलमणि आदि की अतिउज्ज्वल माला निकालीं और उनको दिव्य सन्दूकचे में रख सालह से कहा कि यह पहिले भेंटदेकर अपना मनोरथ बर्णनकीजियो उस ने वह सन्दूकचा अपने साथलिया और अपनी सेना समेत माता और भानजे से बिदा भया और तुरन्त ही समन्दाल देश में पहुँच बादशाह के समीप गया बादशाह ने उसका बड़ा सन्मान किया और तख़्तसे उठ सालह से भेंट की और अपने निकट बैठने को कहा सालह दण्डवत् कर उसके निकट बैठगया फिर समन्दाल ने उसकी कुशल पूंछ कहा यदि कोई कार्य्य तुम्हारा इस रियासत से सम्बन्धित हो तो कहो मैं उसे शिर आंखों से पूराकरूंगा सालहने कहा मैं आपसे भेंट करने आयाहूं इसके विशेष एक और भी प्रयोजन है यदि आप भली भांति ध्यानधर उसे सुनें तो मैं बिनयकरूं इतना कह उसने अपने सेवक से मालाओं का सन्दूकचाले भेंट कर कहा यह भेंट मित्रता से स्वीकारकीजिये बादशाह समन्दाल ने म-

लिकसालहकी खातिर से उसे कबूल किया मलिकसालह समन्दाल को प्रसन्नता पूर्व्वक देख बहुत सी प्रशंसाकर अपना मनोरथ इस भांति कहने लगा कि मैं आपकी कृपा और मित्रवत् दया जो हमेशा से हम दोनों बादशाहों में प्राचीन से चली आईहै समझ और निश्शंकहो अपने मनोरथ के प्रकट करने को आयाहूं कि आप के अति उज्ज्वल दर्पणरूपी मनपर प्रकटहो कि मेरी बहिन गुलअनार नाम एक बड़े ईरान के बादशाहके साथ बिवाही गईथी उसके उदरसे एक कुँवर उत्पन्न हुआ शाहजादा सौंदर्य्य में अद्वितीय और विद्यारूपी भूषणसे भी ऐसा अलंकृत है कि इस समय के बुधजन उस के सामने कुछ बस्तु नहीं उसके पिताने चौदह बर्षकी आयुमें उसे तख्त पर बैठाय राजकाज सौंपा ईश्वरकी दया से वह बिवाहने योग्य हुआ इसहेतु आपसे बिनयहै कि उस शाहजादेको अपनापुत्र बनाय जवाहर अपनी कुँवरि का बिवाह उसके साथ करदीजिये समन्दाल देश का बादशाह इस बातको सुनतेही महाअप्रसन्न हो कहने लगा हे सालह ! आजतक मैं तुझे बड़ा बुद्धिमान् और चतुर समझता था आज तुम्हरी चतुरता कहां जातीरही कि ऐसे अनुचित बचन कहने लगे और मेरीपुत्रीका नाम निश्शंक मुखपरलिया क्या तुम मेरे ऐश्वर्य्यकोनहींजानते इनदोनों राज्यमें बड़ा अन्तरहै परंतु तुम्हारी मृत्यु यहांलाई सालह यह सुन बहुत पछताया कि मैंने अपने वास्ते शाहजादी जवाहरका नेग तो नहीं दिया यह बादशाह यही समझताहोगा सो उसने कहा आपसमझे होंगे कि मैंने अपने लिये कहा हे बादशाह ! मैंने अपनेभानजे बदरनामक ईरानके बादशाहके हेतु नेग दिया बादशाह समन्दाल ने अधिक अप्रसन्नहो कहा तुमने मुझे और गाली चढ़ाई फिर तो वह महाकोपितहो कहने लगा हे दुष्ट ! तूने मेरी पुत्री को गुलअनारके पुत्र बदरके बराबर समझा तेरा पिता कौन था तेरी बहिन क्या बलाहै और तेराभानजा क्या वस्तुहै निदान उसने अपने सेवकोंसे कहा इसका शीशकाट फेंकदो उस के सेवकों ने सालह को बध करनाचाहा सालह अवकाशपा अपनी सेनासे जो एक हज़ारके अनुमान शस्त्रसहित खड़ीथी और भी उसकी माताके भेजेहुये कटक

में जो वहां पहुँचाथा जामिला उन्होंने उसे बिकल देखकहा कुशल तो है हमें आप आज्ञामात्रदीजिये फिर देखिये हम क्याकरतेहैं सालह को उस सेनाके आजाने से सामर्थ्यहुई और उनको साथले चढ़आया तहां महासंग्रामभया निदान समन्दालका बादशाह परास्त भया सो सालहने समन्दाल बादशाहको कैदकरलिया और थोड़े से लोग वहीं छोड़ आपसेना समेत उसकेमहलमें चढ़गया इस इच्छासे कि उसकी पुत्री को पकड़लेजावे जवाहर उसके आगमनका समाचार सुन कई बाँदियों समेतसमुद्रसे निकल किसी द्वीपकी ओर चली और वहांपहुंच किसी बनमें जाछिपी॥ कई सेवकों ने बार्त्तामें समन्दालको क्रोधित देख सालहके मारडालने का समाचार उसकी माता से जाय कहा वह यह सुन अतिकष्टको प्राप्तभई और बदरभी उस समय नानी के समीप विद्यमानथा इसहाल को सुन अपने मनमें चिन्ता करनेलगा कि बड़ा खेद है जो मेरे कारण सालह पर यह कष्टहुआ नानी मेरा आना कुलक्षण समझेगी अब तेरा रहना यहां किसी भांति उचित नहीं यह विचार अकस्मात् समुद्र से निकल ईरान को सिधारा परन्तु मार्ग्ग न जानताथा भूलकर उसी टापूमें जहां जवाहरशाहज़ादी जाके छिपीथी पहुँचा और थकितहो एक बड़ेबृक्षके नीचे जिस के चहुँओर बहुत से दिव्य तरुथे बैठगया इतने में मनुष्यों का शब्द सुनाई दिया कानलगाके सुननेलगा पर भलीभांति न सुनसका निदान चुपके उठ दबेपाँवों वहां गया जहां से शब्द सुनाई देता था वहां जवाहर शाहज़ादी को बैठेहुये देख मोहितहुआ और जाना कि निस्सन्देह यह वही स्त्री है जिसपर मैं मोहितहूं सो बदरने उस के सम्मुखजाय कहा परमेश्वरका धन्यबाद है जिसने तुम्हारे दर्शन से मुझे कृतार्थकिया ऐसे समयमें मुझे आज्ञाहो तोमें तुम्हारे निकटरह हरभांति से आपकी सेवाकरूं दयाकर मुझे अपना नाम बतलाइये उसने कहा तुमसत्य कहतेहो अवश्यहै कि एकमनुष्य तुम्हारे सदृश मेरी सहायताकरे मेरानाम जवाहर है और मैं समन्दाल बादशाह की पुत्रीहूं अपने महलमें आनन्दपूर्वक थी अकस्मात् शोर सुना और उसके साथही मनुष्यों ने आकेकहा कि सालह बादशाहने मेरे

पिताको क़ैदकिया इसकाकारण मैं नहीं जानती मैं यहदशादेख यहां आय छिपगई बदरने सोचे बिना अपनावृत्तान्त उससे बर्णन किया और कहा मेरानाम बदरहै मैं ईरानके बादशाहका पुत्रहूं और सालह बादशाह मेरा मामा है उसने उसे इसी बातके लिये क़ैद किया कि तुम्हारा बिवाह मेरेसाथकरदे जब तेरे पिताने यह बात न मानके मेरे मामा के बधकी आज्ञादी तो दैवयोगसे उसकी सेना वहां पहुँचगई और तेरेपिताको क़ैदकरलिया अब तुम धैर्य्यरक्खो मैं परस्पर मिलाप करादूंगा सालह बादशाहको केवल यही इच्छा है कि तेरा पिता मेरेसाथ तेरा बिवाह करदे फिर वह किसी भांतिका तुम्हें कष्ट न देगा जवाहर उसके मधुर बचन और रूपअनूपको देख मोहित हुई परन्तु जबउसे बिदितहुआ कि इसी के कारण यह आपत्तिपड़ी तब उसे अपना शत्रुसमझ प्रकटमें उससे प्रीतिपूर्व्वककहा हे बदर मलकागुलअनार केपुत्र! मैं तुझेदेख हर्षितभई बास्तव में यही उचितहै कि तेरेसाथ मेरा बिवाहहो परन्तु मेरे पिताने न माना बड़ी भूलकी यदि वह तुझे देखता तो बिश्वासथा कि वह इस सम्बन्धको अवश्य मानता और बड़े हर्ष से तेरा बिवाह मेरेसाथ करदेता यह कह जवाहर ने प्रीति से अपना हाथ आगे बढ़ाया बदरने इस बात से महाप्रसन्नहो अपना हाथ बढ़ाके चाहा कि उसका हाथ पकड़ के चूंबे जवाहर ने तुरन्त अपना हाथ खींचलिया और बदर के मुख पर थूकदिया कि मन्त्रके हेतु किसीप्रकार का जलहोना चाहिये और कहा हे दुष्ट! यह चोलाछोड़ लालपीठ और चरण का पक्षी बनजा बदर अपना शरीर छोड़ बिचित्रपक्षी बनगया फिर जवाहर ने एक बाँदी से कहा इस पक्षीको निर्जल द्वीपमें लेजाकर छोड़दे वह टापू केवलएकपहाड़था जिसमें नीरका चिह्न भी न था वह दासी उस पक्षी को पकड़लेचली मार्ग में उसे बदरपर दया उपजी और अपने मन में चिन्तनाकी कि यह शाहज़ादा बड़े लाड़प्यार में रहा उस द्वीपमें बिना अन्नजल के मरके रहजायगा और यह शाहज़ादी कि अति दयावानहै यद्यपि उसने कोपमें इसे पक्षी बनाया जब शांतहोगी तो पछतावेगी उत्तम है कि इसे ऐसे स्थान पर छोड़ूं जिससे इस की

अकालमृत्यु न हो वह दासी तो उसे किसी अच्छे द्वीपमें छोड़ आई जहां नानाप्रकार के सकलवृक्ष और स्थान स्थानपर सुन्दर कुण्ड थे अब यहां से सालहका वृत्तान्त सुनो उसके प्रधानों ने जवाहर राजपुत्री को बहुतही ढूंढ़ा परन्तु जवाहर को न पाया निदान आज्ञा दी कि समन्दाल को उसी बन्दीघरमें बड़ा कष्टदो एक मनुष्य उसके खबरलेने को नियतकर आप अपनी माताके समीप आया और सम्पूर्ण व्यवस्था कह सुनाई जब उसे विदितहुआ कि बदर किसी ओर को निकल गया तब घबड़ाके उसका वृत्तान्त पूछने लगा उसकी माताने कहा जब मैंने समन्दालके कोपकाहालसुना तो यहां से दूसरी सेना भेजी तभीसे बदर न जानिये कहां चला गया उसका समाचार कुछ भी विदित नहीं तुम्हारे परास्त होनेको सुन घबड़ाया होगा और अपने बचाने को किसी ओर चलागया यह सुन सालह महाशोकयुक्त भया कि मैंने जिसकी प्रसन्नताके लिये यह सब दुःखउठाये वही हमारे हाथसे जाता रहा अपनी बहिनको क्या मुख दिखाऊंगा फिर अपने प्रधानों को बदरके ढूंढ़ने के लिये भेजा परन्तु कहीं उसका ठिकाना न लगा तब सालह अतिचिंतित हो अपने राज्यको अपनी माताको सौंप आपही समन्दाल देशको बदरके ढूंढ़ने को गया उसी दिन गुलअनार अपने देश से अपनी माताके निकट आई उसके आगमनकायह कारणथा कि जिसदिन बदर अहेरकोगया और रातको फिर न आया तो समझी कि किसी मृगका पीछाकरते दूरनिकलगये होंगेइसहेतु उन्हें लौट आनेमें देरी हुई परन्तु जब वह कई दिनतक न आये तो अतिचिन्ताकर उन लोगोंसे जो सालह और बदरके साथ गयेथे उन दोनोंका हालपूछा उन्होंने कहा उन दोनों ने एक मृगके पीछे ऐसा घोड़ादौड़ाया कि हमारी दृष्टिसे लुप्त होगये हमने कई दिनतक बन बन और पहाड़ पहाड़ उन्हें ढूंढ़ा कहीं उनको न पाया परन्तु उनदोनोंकी सवारी के घोड़े निस्सन्देह हमको मिले वह वृक्षसे बँधेहुये थे गुलअनार ने धैर्य्यधर मनमें कहा कि मामूं भानजे दोनों समुद्रमें पैठगये होंगे फिर उन्हें आज्ञादी अब तुम उसी स्थानपर जाय भलीभांति ढूंढ़ो और

आप अपनी दासियों की आज्ञानतासे समुद्रमें कूदपड़ी और अपने इससन्देहके मिटाने को कि सालह उसे अपने साथ समुद्रमें लेगया वा नहीं थोड़ेही कालमें अपने नैहरमें पहुँची प्रथम देहलीमें माता उसे देख प्रसन्न भई फिर उससे कहा तुम अपने पुत्रका हाल पूंछने यहां आई होगी उसका समाचार तुमसे क्या कहें प्रथम जब बदर अपने मामाके साथ यहांआया तो मैं उसे देख महाप्रसन्न भई परन्तु जब सालहने समन्दाल बादशाहके निकटजाय बिवाहका नेगदिया तब उस बादशाहने अप्रसन्नहो सालहको बधकरना चाहा सो उसके आदमियों ने आके यह सब मुझसे कहा मैंने तुरन्त और बहुतसी सेना उसके समीप भेजी सो सालहने उसे परास्तकिया परन्तु बदर अपने मामूं की पराजय सुन वहां से किसी ओर निकल गया और सालह समन्दालको क़ैदकर मेरे निकट आया जब उसने अपने भानजेके गुम होजाने को सुना फिर उसके ढूंढ़ने को समन्दाल देशमें चलागया रानी गुलअनार अपने पुत्रके चलेजानेको सुन बहुतरोई और सालहको बुराभला कहनेलगी उसकी माता ने कहा वास्तव में उसने बड़ा अपराध किया कि जवाहर के बर्णन में उसने रक्षा न की परन्तु मुझे बिश्वास है कि तेरा पुत्र तुझे शीघ्रही आन मिलेगा धैर्य्यरक्खो और उसके देशकी रक्षाकरो तुम्हारा वहां होना अवश्य है गुलअनार अपनी माताकी आज्ञानुसार उससे बिदाहो ईरान देशमें गई और उन्हीं प्रधानोंको जिन्हें बदरके ढूंढने के निमित्तफिर भेजाथा बुलवालिया और कहा मुझे मेरे पुत्रका हाल मालूमहै वह यहां शीघ्रही आया चाहता है फिर आज्ञा दी कि तुम इसी समाचारको राज्यभर में बिख्यातकरो राजमन्त्री और सभासद यह वृत्तान्त सुन अत्यन्त प्रसन्न हुये और आनन्दपूर्व्वक अपने अपने सम्बन्धित कार्य्य में लगे॥ अब यहांसे फिर बादशाह बदरका हाल लिखाजाताहै जब जवाहरकी दासी बदरको पक्षीकी योनिमें टापूमें लेजाय छोड़आई तो वह अपनेको पक्षीके शरीरमें देख महाबिस्मित भया कुछ न जानता था कि मैं कहांहूं और ईरानदेश किस ओर है और पक्षोंमें इतनी सामर्थ्य न थी कि अपने राज्य में पहुँचे परन्तु

जो उसे और आपदा भोगनी थी सो वह बिचारा और पक्षियोंके सदृश उसीद्वीपके खेतों में बैठकर चुगता फिरता और रात्रिकोऊंचे वृक्षोंपर जाबैठता कईदिनपीछे एकचिड़ीमार अपनाजाललिये उसी खेतकी ओरचला जहां शाहज़ादा बदर पक्षियों के साथ बैठाहुआ खेतमें चुगताथा उसपक्षीको नवीन प्रकारका देख आश्चर्य्यकर मन में कहनेलगा मेराजन्म इसीकार्य्यमें बीता परन्तु आजतक ऐसासुन्दरपक्षी नहीं देखा सो जालबिछाय उसे और पक्षियोंकेसाथपकड़ा और उसेदेख पिंजड़ेमें रख नगरकी ओर लेगया जब वह चौकमें पहुँचा पुरबासी ऐसा नवीनपक्षीदेख उस चिड़ीमारके चहुंओर एकत्र हुये सो उनमेंसे एकमनुष्यने उसका मोलपूंछा उसने उत्तरदिया भाई पक्षीलेकर क्याकरोगे उसने कहा हम इसे भूनकरखावेंगे चिड़ीमार ने कहा तुम इसका मोल कहांतक दोगे बहुत एकरुपया वा एकअशरफ़ी मैं इतने मोलपर इसे न बेचूंगा मैंने जन्मभरमें ऐसासुन्दर पक्षीनहींदेखा मैं इसे बादशाह की भेंटदूंगा बिश्वासहै कि वह इसे देख प्रसन्नहोगा और मुझे पारितोषिक कृपाकरेगा यह कह वह बादशाहकी डेवढ़ी पर गया अकस्मात् बादशाह बरोठे पर बैठाहुआ बाज़ारकी सकल बस्तुदेखताथा संयोगसे उसकी दृष्टि उसीपक्षीपर पड़ी उसने ऐसा सुन्दरपक्षी न देखाथा उसे देख प्रसन्नभया और एकसेवकसे कहा कि इसपक्षीको मोलला सेवकने आय उससे उस का मोलपूंछा उसने कहा मैं इसे बादशाहकी भेंटदेनेको बहुतदूरसे लायाहूं सेवकने कहा मैं भी बादशाह की आज्ञासे इसे लेनेआयाहूं तब उसचिड़ीमार ने पिंजड़ापक्षीका उसेदिया वह सेवक पिंजड़ा बादशाहके निकट लेगया बादशाह ने प्रसन्नहोय दश अशरफ़ियां उसेदिलवा बिदाकिया और आज्ञादी कि इसपक्षीको स्वर्णकेपिंजड़ेमें रक्खो और अन्नजलकी कुल्हियां जवाहिरातकी बनाओ उस समय तो बादशाह सवारहो कहीं चलागया जब वहांसे लौटआया तो पिंजड़ा अपने सम्मुख मँगवाया और उसपक्षीको पिंजड़ेसे निकाल अपने हाथपर बैठाय सेवकसे पूंछा इसने कुछ अन्नजल खाया उसने बिनयकी कि अन्नजल सब वर्त्तमान है इसने कुछभी इसमेंसे

नहींखाया बादशाहने यह सुन अनेकप्रकारके भोजन लगवादिये और उस पक्षीको थालियोंपर लेजाके बैठाय वह पक्षी बादशाहके हाथसे कूद वहां जाबैठा और हरएक रिकाबीसे कूदकूद खानेलगा बादशाह यह देख अचंभितहुआ और सेवकसे कहा मलकाकोबुला ला कि वह भी इस पक्षीका चरित्रदेखे उसनेजाय मलकासेकहा वह तुरन्त बादशाह के सम्मुखआई और उस पक्षीको देखतेही अपना मुख ढांपलिया बादशाहने अतिआश्चर्य्यमान पूछा हे सुन्दरी! यहां कौन परपुरुष है जिससे तुमने अपना मुख छिपाया यहां केवल पक्षी है वा मैंहूं वा तुम्हारी दासियां वा एकसेवक मलका ने कहा यह पक्षी वास्तव में पक्षीनहीं यह बदरनामक गुलअनार जो शाहज़ादी दरियाई देशोंकी विख्यात है उसकापुत्र ईरान महादेशका बादशाहहै और रानफर्राशीका नवासा जो अमुकदरियाकी शाहज़ादी है और इसे समन्दालदेशकी शाहज़ादी ने कोप से पक्षी बनाया फिर कहने लगी स्त्रियोंको परमेश्वर ने परदा करने की आज्ञादी है इसनिमित्त मैंने अपनामुख इससे छिपाया, बादशाह बिचारे बदरकी यहदुर्दशा सुन व्यथितभये और शाहज़ादीसे कहा किसीउपायसे यह बादशाह अपनी निजयोनि प्राप्तकरसक्ता है उसनेकहा यह कितनी बड़ीबात है आप दूसरे स्थानपर पक्षी समेत जाइये मैं उसे क्षणभरमें उसके मुख्यस्वरूपमें लादेतीहूं बादशाह उसपक्षीको लियेहुये दूसरेस्थान में गया, शाहज़ादी ने एक जलका पात्रले उसपर कुछमन्त्र के शब्द पढ़े इतने में वह जल खौलनेलगा सो उसमें से थोड़ासाजलले बादशाहको दिया उसने उसके कहने से उसपक्षीपर छिड़क दिया और यहकहा कि इसीमन्त्रकीशक्ति और उससंसारकेरचनेवालेकी आज्ञानुसार यह पक्षीकी योनिछोड़ अपनीयोनिमेंआ, इसशब्दके पूर्णहोतेही वह अपनी योनिको प्राप्तभया बादशाहभी अतिसुन्दर पुरुष को जिसकेमाथेसे बादशाही चिह्नप्रतीतहोतेथे देख आश्चर्य्यमें होय महाप्रसन्नभया और बदरभी अपने को अपने स्वरूप में देख उस बादशाह के चरणोंपर गिरपड़ा और ईश्वरका धन्यवाद किया फिर शिर उठाय उसबादशाह के हस्तकमलचूम बहुतसे आशीर्बाद देने

लगा परन्तु मलका अपने महलको पधारी तदनन्तर बादशाहने बदरको अपने साथ भोजनकराया जब सुचित्तहुआ समंदाल की बेटीके जादूकाहेतु पूंछा बदरने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बर्णन किया बादशाह ने यह समाचार सुन अतिआश्चर्य्यितहोय कहा जो कुछ होनाथा सो हुआ अब तुम्हारी क्या इच्छाहै मुझसे बर्णनकरो बदर ने कहा आपने मुझसे ऐसा उपकार किया जो जन्मभरकी तुम्हारी सेवाकरूं तौभी उऋणनहीं होसक्ता परन्तु बहुत दिनोंसे मैं अपने देश से निकलाहूं इसहेतु इच्छा है कि अपने देशकोजाय वहांका प्रबन्ध करूं और सिवाय इसके डरताहूं कि ऐसा न हो जो गुलअनार मेरीमाता मेरे बियोगमें अपनी देह त्यागदे वहांजाय उसे धैर्य्यदूं इसनिमित्त दयाकर मुझे एकजहाज़ कृपाकीजिये तो उसमें अपने देश को पहुँचूं बादशाहने अपने सेवकों को आज्ञादी कि तुरन्त एक जहाज़ तीव्रगामी तैयारहो सो तुरन्त एकजहाज़ तय्यारहोगया बदर बादशाह से बिदाहोय ईरानदेशकी ओर पधारा दशदिनतक बायु अनकूलरही और आनन्दपूर्वक यात्राकी ग्यारहवेंदिन बायु बिपरीतचली और अगाधजल उमड़आया जिससे जहाज़ कुमार्ग होगया प्रचण्ड बायुसे जहाज़की रस्सियां और मस्तूल टूटगया और जहाज़ टक्करखा चूर्णहोगया बहुत से मनुष्य डूबमरे कई मनुष्य एकपाट के सहारे पैरने लगे उसमें बदरभी टूटहुये पाटपर समुद्र की तरंगों और धारोंमें बहता बहता तटपर पहुँचा वहां समीपही एकनगर था सो बदर पृथ्वीपर पहुँचा और जलसे निकल किसी ओर जानेलगा अकस्मात् घोड़े, गायें, बैल, खच्चर आदिपशु चहूं ओर से दौड़े और शोरमचा उसे जलसे निकलने न दिया बदर बड़े यत्नसे उन्हें हटाकर एकपहाड़की कन्दरा में जाछिपा और बिश्राम कर वहां अपनेवस्त्र धूपमें सुखाये जब वहां तनक सावधानहुआ तब उसने नगरमें जानेकी इच्छाकी नगरद्वारपर फिर पशुओं ने उसे रोंका वहपशु कहते थे यहनगर बहुतबुरा है इसमें जानेसे जन्मभर दुःखमें पड़ोगे बड़ी कठिनता से बदर नगरके भीतरगया उसे अति स्वच्छ और महाबिशाल और उज्ज्वल देखा परन्तु मनुष्य नहीं थे

अत्यन्त बिस्मितहुआ और समझा कि पुरका मनुष्यों से खालीहोना और पशुओंका एकत्रहोकर बिदेशीको रोंकना बिना किसी हेतु के नहीं साहसधर आगेगया तो उसने दूकानों को दूकानदार बिना देखा इसीभांति सम्पूर्ण नगरमें फिराकिया कहीं मनुष्य न देखा फिर आगेजाय एक बृद्धपुरुष बैठादेखा जो अपनी दूकानपर फलोंको रख कर उज्ज्वल करताजाताथा बदरने उसे दंडवत्की उसने शिर उठाय बदरको देखा और उसकारूप देख आश्चर्य्य में हुआ कि यह क्योंकर इस नगरमें आया फिर उसने प्रणामका उत्तरदे उससे पूंछा कि तुम कौनहो और किधर से आये बदरने संक्षेप में अपना बृत्तान्त बर्णन किया उसबृद्धने उससे पूंछा तुमने किसी मनुष्यको इसनगर में देखा बदरने कहा सिवायतुम्हारे अबतक मैंने किसीको नहीं देखा बड़ा आश्चर्य्य है कि ऐसास्वच्छ नगर निर्जनहो बृद्धने कहा शीघ्र भीतर चलाआ बाहर मतिखड़ारह ऐसा न हो जो किसी दुःख में पड़े मैं इस नगरका बृत्तान्त तुझे सुनाऊंगा बदर उसके कहने के अनुसार उसकी दूकानके भीतर जाय उसके समीप बैठगया बृद्धने बदरको पहिले भूखाप्यासा देख भोजनकराया फिर बदरसे कहा इस बस्तीकानाम मायावीनगर है और यहांकी अतिरूपवती शाहज़ादी मलकाहै और मायाबिद्या में भी अतिद्वीय है वह सम्पूर्णपशु जो तुम्हें समुद्रकेतट और नगरद्वारपर मिले भीतर आनेको बर्जतेथे वह सब तुम्हारे सदृश मनुष्य थे इसरानी ने अपनी मन्त्रबिद्या के बलसे उन्हें पशुबनारक्खाहै यदि कोई तरुणपुरुषरूपवान् तुम्हारेसदृश भाग्यहीनता सेइस नगरमें आनिकला तो इसरानीके जासूसदेख उसको बरजोरी उसके समीपलेजातेथे प्रथम वह उसका अत्यन्त सत्कार करतीहै कि मानोंउसमनुष्यके बिचारमें वह उसपरमरतीहै निदान अप्रसन्नहोय उससे प्रीतित्यागपक्षी वा पशुबनाके छोड़देतीहै वहदीन अपनीजाति के साथसमुद्रके तीर घासचर कालक्षेप करता है यदि कोई यात्री भूलसे वा कोई आपत्तिकामारा तटपर उतरने वा नगरप्रवेशकी इच्छा करताहै तो वे पशु उसपरदयाकर उसे शोरकर रोंकतेहैं वह बिचारेतो बोलनेकी शक्ति नहीं रखते जिससे अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन करें

चित्र बदरका समुद्र से निकलना और गाय और बेसरों को रोकना



परन्तु अपनेसे उससे कहते हैं कि इसनगरमें कदाचित् मतिजा नहीं तो तेरी हमारीसी दशाहोजावेगी परन्तु वह प्रवासी उनके अभिप्रायको नहीं समझता और उस मलकाके फन्दे में पड़ अन्त को पशु होजाता मनुष्यता जातीरहती है बदर बृद्ध से यह बृत्तान्त सुन बहुत घबड़ाया और कहनेलगा एक जादूगरनी से अभी छुट्टी न पाई थी कि दूसरी के हाथमें पड़ा मैं अत्यन्त अभागा हूं फिर अपना सम्पूर्ण बृत्तांत उसबृद्धसे कहसुनाया उसे उसपरदया उपजी और उसे धैर्य्यदे कहा यद्यपि यहांका और यहांकीमलकाका यहीहालहै जैसा कि मैंने बर्णनकिया तथापि तेरेप्रारब्ध अच्छेथे कि तू मेरे पास चलाआया और किसी दूसरे से न मिला अब तू इसी दुकानमें रहाकर और जो मैं कहूं वही कीजियो यहां किसीसे अपना प्रयोजन मतिरख मुझे यहांकेबासी सबछोटेबड़े जानते हैं तू सब दुःखों से बचारहेगा बादशाह बदरने उसकी बड़ी प्रशंसाकी और उसीदूकानपर बैठारहा जो कोई उसे वहां बैठादेखता तो उसके रूप छबि अनूपको देख पछताता और महाबिस्मितहोता कि यह क्योंकर उसरानीके फन्देसे बचा मनुष्य उसे प्रायः बृद्धका दास जानते और वह बुड्ढा उनसे कहता भाइयो यह मेराभतीजाहै दास नहीं है इसके पिताका कालहोगया मेरेपुत्र न था उसे मैंने बुलाकर अपना पुत्र बनाया और अपने देशसे इसेबुलाभेजा कि मेरेपास रहाकरे वे यह सबबृत्तान्तसुन प्रसन्न होते फिर कहते जितना कि हम इस बातसे प्रसन्नभये उतनाही हमें खेदहै जब हम बिचारते हैं कि मलका इसे देखतेही अपनेसाथ लेजावेगी और कईदिन इसे अपने समीपरख वही दुष्टता इससे भी करेगी जो औरोंके साथ की है तब हमें दुःख होताहै वह बृद्ध उनसे कहता कि मुझे बिश्वास है जब रानी इसके आनेको सुनेगी तो मैं उससे बिनय करूंगा कि यह मेरा भतीजाहै मैंने इसे अपना पुत्र बनायाहै वह मेरे कारण इससे कुछ न कहेगी निदान बदर एकमहीने तक उस बृद्धके पास आनन्द में रहा किसी भांतिका उसे खेद न पहुंचा एकदिन वह उसीदूकानपर बैठाहुआथा कि अकस्मात् रानीकीसवारी बृद्धकी दूकानसे जातीहुईदेखी पहिले

सेना आगे आगे जाती थी उसकी दृष्टि पड़ी वह उठके दूकान के भीतरगया और बृद्धसे पूंछा यह सवारी इस धूमधाम से किसकी आती है उसनेकहा यह सवारी उस मलकाकी है जिसका बृत्तान्त मैंने पूर्व में कहाथा परन्तु भयभीत न हो अपने स्थानपर जायबैठो इसके उपरान्त बदरने देखा कि उसरानी की अरदली के सिपाही हज़ार मनुष्य सबगुलाबीबस्त्र पहने और नग्न खड्ग हाथों में लिये जाते थे उनमेंसे कोई भी सेनापति न था जो बृद्धको प्रणाम न करता उसके पीछे खोजियों के यूथके यूथ भारी कीनखाब के बसन पहिरे उत्तम उत्तम बाहनों पर सवार होकर निकले जब समीपही दूकान के आये तो उनके अधिपतियों ने भी बृद्धको बड़ी नम्रता से दण्ड-वत् की फिर क्या देखा कि एक स्त्रियोंका समूह अनेकभांति के स्वच्छ बस्त्र और जड़ाऊ आभूषण पहिने बरछियां हाथों में लिये पैदल धीरे धीरे चलाआता है उनके मध्यमें मलका मुश्की घोड़ेपर सवार जिसकासाज सबसुनहला और स्थान स्थानपर बड़ेबड़े टुकड़े हीरे के जटितथे बड़ी धूमधाम और सजधजसे चली आतीथी उन सब सुन्दरियोंने झुकझुकके वृद्धको प्रणाम किया जब मलकाकी सवारी सम्मुख आई बदर बादशाहको देखतेही उसपर मोहितभई और घोड़ेकी बाग ठहराई और खड़े होके उसने उसबृद्धको पुकारा और पूंछा कि यह सुन्दर मनुष्य क्या तुम्हारा दास है और कबसे तु-म्हारे पास आयाहै बृद्धने प्रथम अपना मस्तक उसके चरणोंपर रखचूमा तदनन्तर उठ हाथजोड़ बिनती की हे खुदावन्द ! यह मेरा भतीजाहै बहुत दिनहुये कि इसका पिता कालबश हुआ मैंने अपुत्र होनेकेकारण इसे अपना पुत्रबनाय अपने पास बुलाकेरक्खा जिस से इस जन्ममें मुझे धैर्य्यरहे और मेरेपीछे मेरा नाम रहे मलका बदर को देख मोहिगई और इच्छाहुई कि किसीभांति इसे बुड्ढे से लेके आनन्दभोगें यह बिचारकहा मेरेपिता इससुन्दर पुरुषको मुझे देदो मैं अग्नि और प्रकाशकी शपथ खातीहूं कि इसे बहुत अच्छेप्रकार रक्खूंगी और किसीबिधिसे इसेदुःख न दूंगी और मुझे तेरीप्रीतिसे बिश्वास है कि तू इस बिषयमें मुझसे निषेध न करेगा और मैं सदैव

तेरा गुण मानतीरहूंगी अब्दुल्लानेकहा आपने मुझे और मेरेभतीजे को इसकृपासे अतिसप्रतिष्ठकिया परन्तु यह राज्यव्यवहार से निपट अज्ञान है इसहेतु आज आपके समीप इसे नहीं भेजसक्ता मलका ने कहा इसबातका तुम कुछभी शोच न करो एकही दिनमें यह सब जानलेगा और मुझे अग्नि और प्रकाशकी सौगन्द है कि जबतक तू इसको मुझे न देगा तबतक मैं यहांसे न हिलूंगी और इसीकारण तुम्हें दुःखहोगा और मैं प्रतिज्ञा करतीहूं कि तू इस पुरुषके देने में कदाचित् न पछतावेगा बृद्धने उसके कोपसे डरकेकहा बहुत अच्छा मैं राजीहूं परन्तु कल वह आपके सम्मुख आवेगा मलका ने यह मानलिया और अपनी सेना और सेवकों समेत वहां से चलीगई फिर अब्दुल्लाने बदर बादशाह से कहा इसमलकाने तुम्हारे भेजने के लिये बहुत कहा जैसा तुमने देखा अब तुमको किसीभांति मैं नहीं रखसक्ता यदि मैं न मानता तो ईश्वरजाने कोपमें तुमसे औरमुझसे क्या करबैठती उसने अग्निकी जिसे अपना पूजक समझती है सौगन्दखाई है बिश्वास है कि तुम्हारेसाथ किसीप्रकारकी बुराई न करेगी और अच्छीतरह रक्खेगी मैं तुम्हारी नित्य खबर लियाकरूंगा उसके सभासद सब मुझसे मित्रतारखतेहैं वेभी अपनी सामर्थ्यभर तुम्हारी सहायताकरेंगे निदान ऐसे २ बचनों से उस समय तो बदर धैर्य्ययुक्त होकर कहनेलगा मेरेप्रारब्ध में बुराई या भलाई जो कुछ लिखी है अवश्य भोगनी पड़ेगी अथवा इसी मलका के हाथों मेरीमृत्युहै या इसीसे मेरामनोरथपूराहोगा निदान अब उसी के समीप जानाचाहिये बृद्धने कहा कुछ चिन्ता न करो यदि यह रानी राज्यबल और मायाशक्ति रखती है तथापि किसीभांति मेरी इच्छाके बिपरीत न करसकेगी कदाचित् करेगी तो कुछ न चलेगा परन्तु यह बचन मेरा स्मरणरखियो यह दुष्टा तुमसे बुराई तो अवश्यकरेगी उससमय तुम्हें चाहिये कि चैतन्यरहो और जो बात कि इसके नियम के बिरुद्ध देखो मुझसे तुरन्त आकर कहना निदान दूसरे दिन वह राक्षसी उसीबृद्धकी दूकानके समीप उसी तड़क सड़क और सजधज से निकली और वहां खड़ी होके बुड्ढे से कहा

तुम्हारे भतीजेकी लालसासे जिसके देनेको तुमने मुझे बचन दिया था। मुझेरात्रिभर निद्रा न आई और इसी विचारमें रही कि किसी भांति सबेराहो तो मैं उसे लाऊं मुझे बिश्वासहै कि तुम अपनेबचन के सच्चे होगे कदाचित् असत्य न भाषोगे और अपनी प्रतिज्ञा को अवश्य पूर्ण करोगे बृद्धने प्रथमतो सत्कारार्थ अपना शीश पृथ्वी से लगाया फिर मलका के समीपगया कि कोई उनकीबार्त्ता न सुने और उसके घोड़ेके शिरकेपास खड़ाहो बड़ी नम्रता से बिनयकी कि कलदिनको जो कुछ मैंने आपके सम्मुख अपने भतीजेके हेतु बिनय की उसे न भूलियेगा। मैं अब उसे आपको सौंपताहूं परन्तु आशा है किसी प्रकारसे इसे दुःख न दोगी इसे आप मेरा पुत्र समझ सर्व्वदा इसपर कृपा रखना यदि इसके बिरुद्ध किसी तरहका दुःख दीजियेगा तो जानो वह मुझे पहुँचा रानीने कहा इसबिषय में मैंने कल बड़ी सौगन्दखाई है कदाचित् उसे दुःख न दूंगी तुमदोनों धैर्यरक्खो अब्दुल्लाने बदरका हाथपकड़ मलकाके हाथमें दिया और कहनेलगा। मैं दूसरीबेर इसके लिये कहताहूं कि इसे कभी कभी मेरे निकट आनेकी भी आज्ञा दियाकरना मलका ने इसे स्वीकार कर एक अशरफ़ियों का तोड़ा जो अपने साथ लाईथी बृद्धको दिया इसके उपरान्त मलकाने आज्ञादी कि एकघोड़ा बहुतउत्तम सामग्रीसे सजाके तुरन्तलाओ सेवक एक अश्व अनेकप्रकारकी बस्तु से अलंकृतलाये मलकाने बदरको आज्ञादी कि इसघोड़ेपर सवार हो वह शीघ्रही सवार होगया मलका ने अब्दुल्ला से पूंछा तुम्हारे भतीजेका क्यानामहै उसने कहा इसकानाम बदर है मलका ने कहा बड़ी भूलहुई इसे शम्स अर्थात् मध्याह्नका सूर्य्यकहना चाहिये था निदान बदर घोड़ेपर सवारहो मलकाके पीछेहोलिया और मलका उसे अपने बाईओर कर महलकी ओर सिधारी मार्गान्तर में पुरबासी बदरको देखते और हर्षित होते और मलका को ग्लानिदृष्टि से देखते और उसके अन्याय और दुष्टप्रकृतिकी बार्त्ता करते कोई कहता इसने नयाशिकार पाया है इसके साथभी वही दुष्टता करेगी जो औरोंके साथ की है ईश्वर इस मनुष्यपर दयाकरे और इसदुष्टा

के फन्दे से छुड़ावे दूसरा कहता यदि यह पुरुष प्रारब्धी होता तो इस व्यभिचारिणी के चंगुल में न पड़ता बदरको यह वार्ता सुनकर विश्वासहुआ कि जो कुछ उस वृद्धने इसका वृत्तान्त मुझसे कहा वह सब सत्य है फिर मलका अपने महल में जाय बदरका हाथ पकड़ अपनी दासियों और खोजियों समेत अपने महल में गई जिसकी सर्व्व सामग्री सवर्ण की और उसमें नानाप्रकार के अतिउज्ज्वल हीरे आदि रत्नजड़ित थे वह उसे बाग में सैर कराने लगई बदर बादशाह प्रतिमन्दिर और वस्तु को देख प्रशंसा करता उसकी बाचालताको सुन शाहीमकान के सब मनुष्य जानते कि यह वृद्धका भतीजा नहीं किन्तु यह कोई रईस वा कहीं का शाहज़ादा है इतने में भोजनका समय पहुँचा दासियोंने आय मलका से कहा भोजन तय्यार है मलका बदरसहित पाकशाला में गई और सोने चांदी के पात्रोंमें खानेलगे जब निश्चिन्त भये मलका ने एक स्वच्छ मद्य का पात्रपिया और बदरने भी पिया इसीप्रकार मदिरा चलनेलगी गानेवालियां अपने अपने बाजों को उठाय मीठेस्वरों से गाने लगीं बहुकालपर्य्यन्त यही आनन्द रहा जब रात बहुत बीती और वह दोनों मदिरामें उन्मत्त भये मलकाकी आज्ञानुसार सम्पूर्णदासियां और सेवक वहांसे चलेगये फिर उन दोनोंने शय्यापर जाकर सुख से बिहार किया प्रातउठ उन दोनों ने स्नान किया और महासुन्दर सुन्दर वस्त्र पहिर भोजन किया इसके उपरान्त बहुकाल पर्य्यन्त बाकगी सैर और परस्पर हास्यादिकका आनन्द उठाया किये इतने में रात्रिभई और पूर्व्ववत् भोजन से निश्चिन्तहो शय्यास्थहुये इसी प्रकार चालीस दिनतक उस मलकाने बड़ा आनन्द उठाया अथ उसकी प्रकृति बदलगई सो एकरातको वहदोनों छपरखटमें शयन करतेथे कि अर्द्धरात्रिमें मलकाजगी बदरको सोताहुआ समझ चुप के उठी परन्तु वह जागताथा वह सोचा कि यह अवश्य कोई नई बात करेगी सो वह और भी चुपकेहोकर पड़ारहा और उसकीओर ध्यान धर देखनेलगा मलकाने सन्दूकचाखोला उसमें से एकछोटासा पात्र पीली मिट्टी से भरा हुआ निकाला और उसके मकान के एक ओर

अपने मंत्रकेबलसे एकनिर्मलजलका कुण्ड प्रकटकिया बदर उसे देख भयभीतहो कांपनेलगा परन्तु यह चुपकाही पड़ारहा फिर उसने एक जलका पात्र उस कुण्डमें से भरलिया और एकपात्रमें थोड़ीसी मैदा रख और उस जलको उसमें डाल गूंधा बहुकालपर्य्यन्त अपनेही हाथसे उसे मलती रही फिर कई एक औषधें छोटी छोटी डिबियों से निकाल उसी मैदे में मिलाईं और उसकी एकटिकिया कुलचे के तौर पर बनाई और अग्निलाय कोयले सुलगाये और उसे लोहेके तवे पर रख पकाया जब वह पकचुकी तब उसने उस तवे और सब बस्तुओं को जहां से निकालाथा वहीं रख दिया और एक मन्त्रपढ़ा जिससे वह कुण्ड लोप होगया और उस टिकिया को रक्षापूर्व्वक रख आपफिर आय बदरके साथसोरही बदरने यह सबदेख जाना कि इस में कुछभेदहै और मुझे यहां चालीसदिनकी अवधि व्यतीत होगई है मेरेही निमित्त इसने यह युक्ति अवश्यकी है यह बृत्तान्त बृद्धसे कहना चाहिये निदान जब भोरभया दोनोंने स्नानकर वस्त्रपहिने बदरने मलकासे कहा मैं इन दिनों आपके बिचित्र बागोंकी सुन्दरता और आपकी परिपूर्ण अनुग्रहका सुखउठा अपने चचाको बिस्मरण करगया जो आप मुझे आज्ञादें तो मैं खड़े २ उनका दर्शन करआऊं मलकाने कहा सत्य है मैंनेभी बहुतदिनों से उनकी भेंट नहींकी तुम जाय तुरन्त देखआवो फिर उसने एक मुश्कीघोड़ा साजसमेत सवारी के निमित्त दे बिदाकिया जब वह अब्दुल्लाकी दूकानपर पहुँचा वह उसे देख हर्षितभया और कुशल पूंछ कहा तुमने उस दुष्टाको कैसा पाया बदरने उत्तरदिया अबतक तो उसने मुझे अतिप्रीतिसे रक्खा परन्तु रात्रिके कृत्यमें मुझे संदेहहै फिर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त रात्रिका बर्णनकर कहा इसीलिये मैं अबतक तुम्हारे उपदेशों को भूलाहुआ था अब घबराय तुम्हारे समीप आया तुम कोई मुझे ऐसा यत्नबताओ कि मैं उसके छलसेबचूं किसी कष्टको प्राप्त न हूं अब्दुल्ला ने मुस्कराके कहा वह तुम्हें पशुबनाना चाहती है परन्तु अत्युत्तम हुआ जो तुमने मुझे पहिलेसे चिताया अब तुम कुछभी भय न करो मैं उसका उपाय बताताहूं जिससे तुम्हें दुःख न होगा फिर अब्दुल्लाने

दो कुलचे उसेदे कहा इनको अपने पास रक्खो जब वह कुकर्मिणी अपने कुलचेका टुकड़ा तुम्हें भोजनको देवे तो तुम उसे कदाचित् न खाना और चतुरतासे उसे अपने आस्तीनमें छिपालेना और वह कुलचे जो तुझे मैंनेदियेहैं खाइयो जब वह जानेगी कि तुमने वह कुलचा भोजन करलिया तो तुमको पशुबनाने की इच्छाकरेगी परन्तु तुम्हें कुछ फल न करेगा फिर तुम उसी कुलचेको उसे खिलाना वह निस्संदेह उसे भोजनकरेगी तुमथोड़ासाजल अपनेहाथमेंलेके उसके मुखपर छिड़कके कहना अपनी योनिको छोड़ दूसरे चोलेमें हो उसी समय जिसपशुका तुम नामलोगे वही होजावेगी तब तुम उसे मेरे समीप लेआइयो जो उचितहोगा कियाजावेगा जो मैं तुमसेकहूंगा सो करना बदर अब्दुल्लाके इस उपाय से अतिप्रसन्नहो मलका के निकटगया मलका तो उसके आगमनकीबाट बागमें बैठीहुई देखतीथी उसेदेखकहनेलगी हे प्राणप्यारे! तुमने बहुतबिलम्बकिया मैं तुम्हारे दर्शन बिना महाब्याकुल थी बदरने कहा मैं तुमसे अधिक बिकल था यही इच्छाथी कि शीघ्रहीलौटूं और तुमसे भेंटकरूं परंतु चचा की बार्त्ता में बिलम्ब होगया उन्होंने मेरे निमित्त बड़े प्रेमसे व्यञ्जन पकवाये परंतु जब मैंने देखा कि भोजनकरने में यहां और बिलम्ब होगा केवल एकही कुलचा भोजनकर और एक अपने साथ लिये आयाहूं सो वह एककुलचा कि श्वेतबस्त्र में लपेटाहुआथा दिखाके कहा हे मृगनयनी! तुमभी इसमें से थोड़ासा भोजनकरो मलकाने कहा मैं इसे शिर नेत्रोंसे अंगीकार करूंगी तुम्हाराचचा मेरा हितू है उसके घरकीबस्तु भोजनकरनी अवश्य है परंतु पहिले तुम यह मेरा कुलचा जो मैंने तेरेपीछे बनायाहै भोजनकरो बदरने कहा बहुत अच्छा तुमने जो अतिपरिश्रम कर यहबनायाहै बिश्वासहै कि बहुत अच्छा होगा मैं तुम्हारे परिश्रम और कृपासे उऋण नहीं होसक्ता सो उसने वह तो अपने आस्तीनमें रखलिया वह कुलचा जो अब्दुल्ला ने दियाथा तोड़के खाया और बड़ीप्रशंसाकी कि हे चन्द्रमुखी! मैंने ऐसा स्वादिष्ठ कुलचा जन्मभर नहींखाया जब उसने जाना कि बदरने मेरा बनाया कुलचा भोजन किया तुरन्त उसके मुखपर जल

छिड़क कहा अपना चोलाछोड़ एककाने लँगड़े कुरूप घोड़ेकास्व-रूप बनजा उस मंत्रने कुछ काम न किया जैसा था वैसाही बना रहा मलकाने अचम्भा कर बिचारा कि इस मंत्रने कुछभी बल न किया निदान बदरने कहा हे सुन्दरी ! मैंने तुम्हारा कुलचा खाया बड़ा स्वादिष्ठ था अबतुम हमारा कुलचा भोजनकरो सो वही अर्थात् उसीका पकायाहुआ उसे कुलचा दिया मलकाको यह भलीभांति निश्चयथा कि यह वह कुलचा है कि जो अब्दुल्लाके पाससे लाया है निश्शंक भोजन किया बदरने तुरंत जलकी अंजलीले उसके मुखपर छिड़क कहा अपना मुख्य स्वरूपत्याग घोड़ी होजा इसबचन के कहतेही वह मलका घोड़ी बनगई और महाब्याकुलभई और रुदनकरने और अपना मस्तक बदर के चरणों पर बारंवार रख अपराध क्षमा करानेलगी परंतु बदरको इतनी सामर्थ्य न थी कि फिर उस घोड़ी को मलका बनावे निदान घोड़ीको खींच अश्वशालामें लेगया और अश्वपालकको उसे दे कहा जीनलगाम देके इसे तुरंतला वह जो लगाम उसके मुँह में देताथा कोई ठीक न होती बदरने दो घोड़े तय्यारकराये एकपर आप सवारहुआ और दूसरेपर साईस को सवारहोनेकी आज्ञादी और कहा इस घोड़ीको खींच अब्दुल्ला की दूकानपर लेआ जब वे दोनों उसे लियेहुये अब्दुल्ला के घरपहुँचे अब्दुल्लाने दूरसे देख जाना कि बदर उसपर प्रबल होकर उसको घोड़ी बनायलाया है अत्यन्त हर्षितभया और कहा हे दुष्टा! ईश्वरने तुझे पाप कर्म्म का दण्ड दिया बदर घोड़े से उतर अब्दुल्ला की दूकानपर गया अब्दुल्लाने उठ उसे कंठसे लगाया और उसकी बहुत प्रशंसाकी फिर बदरने सम्पूर्ण वृत्तान्त कहसुनाया और कहा इसके मुहँ में कोईभी लगाम नहीं लगती वृद्धने अपने घोड़ों में से एकलगाम निकालदी वह उसके मुख में ठीक आगई फिर अब्दुल्लाने बदरसे कहा अब तुम इस नगर में क्षणभर भी न ठहरो इसीपर सवारहोके अपने देशको सिधारो परन्तु चैतन्यरहना कदाचित् इस लगाम को इसके मुखसे न निकालना बदर उससे बिदा हो अपने देशको सिधारा कई मंज़िलें चला तीनदिन पीछे एकबड़े

॥ चित्र जिन का मलका बुड्ढा और बदर को लिये जाते हुये



नगरमें पहुँचा वहां एकवृद्ध से भेंटभई प्रकटमें वह सत्पुरुष मालूम होताथा और पैदल अपने घरकी ओर जाताथा उसने बदरको प्रणाम किया और पूंछा तुम किधर से आते हो बादशाह बदर उसके उत्तर देनेको ठहरगया फिर उस वृद्धने उसे बातोंमें लगालिया इतने में एकवृद्धा बदरको उसघोड़ीपर सवार देख आखड़ीभई और महाबिकलहोय फूटफूट रोई जब बदर उसवृद्धसे बातें कर चुका तब उस वृद्धासे रोनेका कारण पूंछा उसवृद्धानेकहा मेरेपुत्रकी घोड़ी मरगई वह ऐसीहीथी जिसपर तुम सवारहो यदि तुम इसेबेंचो तो मैंलेलूं जो तुम इसकामोल मांगोगे वहीदूंगी बदरने कहा हे माता! मैं इस घोड़ी को नहीं बेंचसक्ता और मेरीसामर्थ्य नहीं जो मैं तुम्हें इसे दूं वृद्धाने कहा ईश्वरके वास्ते इसे मुझेदे यदि तू न देगा तो इसके शोकमें मैं और मेरा पुत्र दोनों मरजावेंगे बदर ने कहा इसका बड़ा मोलहै तुम उसे नहीं देसकोगी बुढ़ियाने कहा मैं तुरन्त देदूँगी बदर यह समझा यहवृद्धा अतिनिर्द्धन और आपत्तिकी मारी फटे पुराने वस्त्रपहिने है इसे तो थोड़ी द्रव्यके देनेकी भी सामर्थ्य न होगी बहुत धन कहांसे देगी इतना बड़ा मोल कहना चाहिये कि निराश हो चलीजावे यह समझ उसने कहा इसका मोल एक हजार अशरफ़ी है यदि इतना द्रव्यमुझेदे तो यह घोड़ी तेरीहै वृद्धा ने इतना सुनतेही अपनीकमर से थैली खोल हजार अशरफ़ी बदरको गिनदीं और कहा ये अशरफ़ियां गिनलो और घोड़ी से उतरो कदाचित् हजार अशरफ़ी से कमहोंगी तो मेरा घर जो अतिसमीप है वहांसे तुझे लादूंगी बदर आश्चर्य्यित हुआ और कहनेलगा हे माता! मुझे यह घोड़ीबेंचनी किसीभांति स्वीकार नहीं मैंने जो तुझसे मोल किया तो केवल हँसी कीथी वह वृद्ध जो वहां खड़ाथा और सबबातें सुनताथा उससे कहने लगा भाई तुम यह घोड़ी वृद्धाके हाथ बेंचचुके अब तुम्हारी तकरार न चलेगी क्या तुम इस नगरकी रीति नहीं जानते जो कोई व्यवहार में मिथ्या बोलता है वह प्राणसे माराजाताहै अब तुम्हें उचितहै कि हजार अशरफ़ी लेके घोड़ी इसे देडालो क्योंकि इसने वही दिया जो तुमने अपने मुखसे मांगा अब तुम इस विषय में व्यर्थ

तकरार करते हो यदि यह बृत्तान्त बादशाह सुनेगा तो न जानिये तुम्हारी क्या गति करे बदर बादशाह यह सुन अत्यन्त बिकलभया और उस घोड़ी से उतर पड़ा बुढ़िया उसे शीघ्रही उस की लगाम पकड़ एकनहरके तटपर जो वहां बहती थी लेगई और जीन लगाम उतार एक अंजली जलकी उसनहर में से ले उस घोड़ीपर छिड़क कहा मेरीप्यारी पुत्री इसयोनिको जो तेरे योग्य नहीं छोड़ निजस्वरूपको प्राप्तहो इतना बचन कहतेही वह मलका बनगई बदर भयके मारे मूर्च्छित हो पृथ्वीपर गिरनेलगा इतने में उसी बृद्धने उसे थामलिया और उस बृद्धा से जो मलकाकी माताथी और उसीने मलका को सम्पूर्णमाया सिखाई थी अपने कण्ठसे लगाया और महाप्रसन्न भई इतने में पश्चिम की ओरसे एक महाबिकराल कुरूप राक्षस प्रकट हुआ एक हाथसे बदर को और दूसरे से उस बृद्धा और मलका को उठाय ले उड़ा क्षणभर में उन तीनों को मलका के भवन में पहुँचाया मलकाने वहां पहुँच महाकोपसे दांत पीसपीस बदर से कहा हे दुष्ट! मेरी सेवाकाफलथा जोतूने और तेरे चचाने मेरे साथकिया देख अब तुझे मैं कैसा दण्ड देतीहूं यह कह थोड़ासा जल अंजलीमें ले उसपर छिड़ककहा अपनाचोला छोड़ महाअशौच उल्लूबनजा बदर उल्लू बनगया फिर मलका ने अपनी दासी को आज्ञादी कि इस पक्षी को पिंजड़े में बन्दकरदे और उसे अन्न जल कुछभी न दीजियो दासी ने उसे पिंजड़े में रखलिया परन्तु मलका से छिपाकर उसे अन्न जल दियाकरती वह दासी बृद्धकी मित्रथी गुप्तमें यह हाल उसको सुनाया कि यह रानी तुम्हें और तुम्हारे भतीजे को अवश्य मारडालेगी तुम अपनी रक्षाकरो वह बृद्ध यह सुनतेही बिचारा कि बात बढ़गई अब तुम इसका औरही कुछ उपाय करो सो उसने बड़ा नाद किया इतने में एक महाउग्रराक्षस बरकनामक जिसके चारों बाजू सपक्ष थे आया और बृद्धसे बिनय की मेरी आपने क्यों सुधिकी बृद्धने कहा हे बरक! पहिले तू बदर के प्राणकी रक्षाकर और उसकी रक्षकबांदी कोले ईरानदेश में रानी गुलअनार के महल में पहुँचा कि बदर की माता उस बांदीसे यह बृत्तान्त सुने राक्षस यह आज्ञा पातेही तुरन्त

जादूगरनी के महलमें पहुँचा और उसबाँदीको भी वृद्धकी आज्ञासे डालकर उसकोले आकाशको उड़ा औरक्षणमात्रमें ईरानदेशपहुँचा और रानी गुलअनारकी छतपर खड़ा भया उसदासीने सीढ़ीकेमार्ग से जाय गुलअनार और उसकी माताको कि परस्पर अपने दुःख की वार्त्ता करतीथीं प्रणाम किया और सब हाल वर्णन किया गुल-अनार बदरका वृत्तान्त सुनतेही अतिहर्षित भई और उठके उस दासीको कण्ठसे लगाय बड़ा गुणमाना और अपने सेवकोंकोआ-ज्ञादी कि तुम डौंड़ी पिटवाओ कि महाराजा बदर शीघ्रहीं यहां पहुँचा चाहता है फिर सुगन्धित वस्तु अग्निपर रख मलिक सा-लहको समुद्रके राज्यसे बुलाया जब वह पहुँचा तो मलका गुल-अनारने कहा भाई तुम्हारा भानजा बदर मायावी देशमें वहां की मलकासे महाकष्ट पारहा है अब वहां तुम्हारा मेराकाम है कि उसे उस महाआपत्ति से छुड़ावें सालहने अपनी सामुद्रीसेना को आ-ज्ञादी तुम तुरन्त जलमार्ग से मायावी देशमें पहुँचो मैं तुम्हारे पहुँचनेसे भी पहिले पहुँचूंगा इसके उपरांत असंख्य राक्षसी क-टक अपने साथ ले अपनी माता और बहिनसहित क्षणमात्र में मायावी देशमें पहुँचा और निश्शंक राजमहलमें प्रवेशकर मलिक आदि अग्निपूजकों को एकही बेर बिनाशकर ध्वस्तकरादिया तद-न्तर गुलअनारने उसी दासीसे पूछा वह पिंजड़ा तुरंतला जिसमें मेरा बदर बादशाह है वह तुरंत उठालाई उसने बदर को बाहर निकाला और उसपर नीर छिड़ककर कहा इसयोनिको तज अपने चोले में आ उसी समय वह बदर बादशाह बनगया मलकाने उसे हृदयसे लगालिया और हर्षित भई उपरान्त बदरने चैतन्यहो अ-पने मातुलादि से भेंटकी तदनन्तर गुलअनार अब्दुल्लाके घरमें गई और उससे भेंटकर अतिनम्रता से कहा तुमने बदरकी बड़ी रक्षा और सेवाकी अब जो सेवा हमारे योग्यहो कहो कि हम उऋण हो-जावें और प्रसन्नतासे करें अब्दुल्लाने कहा मेरे बिचारसे यह उचित है तुम इसीदासी के साथ बदर को बिवाहदो कि वह भी महारूप-वान् है मलका गुलअनार ने उसे स्वीकार कर उसे राजसी उत्तम

उत्तम सुवर्णमयी रत्नजटित सुन्दर नखसे शिखतक शृङ्गारकर बदर को ब्याहदिया बदर ने कहा मैंने आपकी और पितासमान वृद्धकी आज्ञापालन की परन्तु मैं वास्तव में जवाहर शाहज़ादी से अपना बिवाह करूंगा उसकी माता ने मुस्कराय कहा बहुत अच्छा इसका यत्न कियाजावेगा इतना कह उसने सामुद्रीकटकको जो बिद्यमान था आज्ञादी कि तुम तुरन्तजाय जल और पृथ्वी के नगरों में ढूंढ़ो जो कोई शाहज़ादी सुन्दरी मेरे पुत्र के समानहो तो मुझे आकर कहो मैं बदरकी मँगनीकरूं बदरने कहा यह सबब्यर्थहै तुम जानती हो कि मैं शाहज़ादी समन्दालपर मोहितहूं उसके सदृश कोईभी स्त्री नहीं उसने मुझे केवल अपने पिताके भयसे कष्टदियाजो समन्दाल के बादशाहको बन्दीगृहसे छुड़ाय मेरे हेतु उससे कहोगे तो कदापि इन्कार न करेगा गुलअनार ने कहा हे मेरे प्यारे पुत्र! उसे तो तुम्हारे मातुलने कष्टदेरक्खा है यदि वह उसे छुड़ाय यहां बुलावे तो निरस-न्देह स्वीकार वा निषेध का हाल मालूमहो फिर बदर ने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सालहसे कहा कि मालिक समन्दालको छुड़ाओ उसके मातुलने अग्निकी अंगीठी मँगवाय कुछ वस्तु उसमें डाल मंत्रपढ़ा धुवें के उठतेही पृथ्वी कांपी और समन्दाल चाकरों सहित आया और बदर उसके चरणोंपर गिरपड़ा फिर दोनों घुटनोंके बल उसके सम्मुखखड़ेहो कहा जिसमनुष्य के हेतु सालहने मँगनी को कहा था वह मैंहीहूं मैंही फ़ारसदेशका महाराजाहूं मुझपर आपकृपाकीजिये आशाहै कि तुम मुझे अपनी पुत्रीकी प्रीतिमें न मारोगे जो कुछहोना था सो हुआ अब कृपाकर यह सम्बन्ध स्वीकार कीजिये समन्दा-लने तुरन्त बदर को धरती से उठाय अपने कण्ठ से लगाय कहा यदि तुम्हारी इसकी प्रीति में यह दशा है कि मेरी पुत्रीके बिवाहके बिना मरजावोगे तो मैं प्रसन्न हूं जवाहर को मैंने तुम्हें खुशी से दिया वह अब तुम्हारी है वह कदाचित् मेरी आज्ञा न तोड़ेगी वह मेरे कहने को अवश्य मानेगी समन्दाल ने सेवकको आज्ञा दी कि तुरन्तजा और जवाहरको जहां कहीं हो ढूंढ़कर लेआ वह यह आज्ञा पातेही जवाहरको उसकी दासियों समेत ढूंढ़लाये उसके

पिताने उसे कण्ठ से लगाय कहा हे प्यारी पुत्री! मैंने तेरा बिवाह ईरान के महाराजा बदरनामक से जो सम्मुख खड़ा है करदिया तेरा अपनी सम्पूर्ण स्त्रियों से अधिक सत्कार कियाकरेगा और हम तुम दोनोंको प्रसन्नरक्खेगा शाहज़ादी जवाहरने अपने पिता से कहा जो कुछ आपने आज्ञादी मैंने उसे स्वीकारकिया परन्तु वह अपराध जो मुझसे बदरके मध्ये क्रोध में हुआ बदर उसे क्षमाकरे सो उसने क्षमाकिया। फिर बिवाहकी रीतें बड़े धूमधाम से उसी मायावीनगरमें हुईं और जितने मनुष्य बिचारे आपत्तिके मारे उसी दुष्ट मलकाके मंत्रबलसे पशु बनेहुये भ्रमते फिरते थे उसके मारेजातेही सब अपने अपने स्वरूपमें आये और आशीर्बाद देदे अपने देशों को सिधारे इसके उपरान्त बादशाह समन्दाल अपने देशकोगया और ईरानका बादशाह परिवारसहित ईरान को सिधारा सालह कितनेएकदिन वहां रहा फिर अपनी मातादि सहित अपने राज्य में पहुँचा॥

इति श्रीपण्डितप्यारेलालउल्थाकृतेसहस्ररजनीचरित्रे
द्वितीयभागस्समाप्तः॥

सो० संवत्सर इकतीस भाद्रशुक्ल भृगुबार में।
पूरण बिस्वबीरा उल्थाकृत यह भाग बर॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

# सहस्ररजनीचरित्र ॥

## तृतीयभागप्रारम्भः ॥

सो० लम्बोदर छबिधाम कृपा जासु सुखदेन अति ।
करत सोहिं परणाम तृतियभाग पूरणकरहु ॥

## ग़ानिम और फ़ितनह की कहानी ॥

मलकाशहरज़ाद ने बादशाह शहरयारसे बिनयकी कि हे स्वामी! पूर्ब्बकाल में एक व्यापारी अयूब नामक दमिश्कनगरका निवासी महाधनवान् श्रीमान् था उसके ग़ानिमनामक एकपुत्र और अलकनबनाम एक पुत्री अतिगुणवान् स्वरूपवान् थी जो कोई उस पुत्री को देखता बेबश होय मोहिजाता एक दिन अकस्मात् वह व्यापारी बहुत धनछोड़ कालबश भया सो उसके गोदाम में सौ गठरियां उत्तम उत्तम बस्तुकी बँधीहुई रक्खीथीं जिसमें भारीभारी कमख़ाब और गुलबदनआदि के थानथे और प्रतिगठरी पर बुग़दादी अक्षरों से लिखाहुआथा उससमय सुलेमानकापुत्र मुहम्मदजबेनी दमिश्कका बादशाहथा अपने पिताके मरनेके पश्चात् एक दिन ग़ानिमने अपनी मातासेपूंछा मैंने प्रतिगठरीपर बड़ेबुग़दादी अक्षरों से लिखाहुआ देखाहै उसके क्या अर्थ हैं उसकी माता ने कहा तुम्हारे पिताकी यह रीतिथी कि जब किसी देशमें व्यापारकी बस्तुलेजानेकी इच्छाकरता था तो उसेबांधके हरएकगठरीपर नाम उसनगरका लिखदेता कि लादनेकेसमय भ्रम न पड़े इनदिनों बुग़दादकीयात्राको उद्यतथा परन्तु मृत्युने उसे अवसर न दिया अकस्मात् कालबशहुआ इतनाकह उसकीमाता पतिकी सुधिकरके रोनेलगी

गानिम अपनी माताका यह शोक न देखसका निदान उस काल तो वह चुप होरहा दूसरे समय उसे प्रसन्नदेख कहनेलगा बड़ाखेद है कि मेरापिता यह असबाब बुगदादमेंलेजाने न पाया अबमैं चाहताहूं कि मैंहीलेजाऊं और बेंचूं उसकीमाता यह सुन अतिचिन्ताकरने लगी क्योंकि वह उसे बहुत प्यारकरती थी फिर कहा हे पुत्र!तुम अभी छोटेहो ऐसी कठिनयात्रा को क्योंकर करोगे एकतो मैं अपने पतिके शोकमें दुःखीहूं दूसरे तुमभी चाहतेहो कि अपने वियोगके दुःखमें मुझेडालो मेरेबिचार में तुम्हेंउचित है कि यह माल दमिश्क के व्यापारियों को थोड़े नफ़ेपर देडालो और इतने दूरकी यात्रा मतकरो गानिमने अपनी माताका समझाना कुछ न माना और बुगदादकी यात्रा मनमेंठान नख़ासमेंजाय कईदास अपनी आवश्यकतानुकूल मोललिये और सौ ऊंट और सम्पूर्णसामग्री तय्यार कर पांच छः व्यापारियों के साथ जो बुगदादको जातेथे होलिया और अपने सेवकों और बहुत से लोगोंकेसाथ बड़े आनन्द से बुगदाद को पधारा मार्गमें सबमनुष्य थकगये इतने में बुगदाद नगर दृष्टिपड़ा उस को देखतेही सबलोग अतिप्रसन्न होय राहका श्रम भूलगये और नगर में प्रवेशकर एकबड़ी सराय में जाउतरे परन्तु गानिम ने उन सबके साथ रहनेकी इच्छा न की और अलग उत्तम स्थान में रातको जायरहा भोर उठ उसने एकस्वच्छ गृह जो सुन्दर बस्तुओं से अलंकृतथा और उस में पुष्पबाटिका जो अतिउत्तम सुगन्धितफूलों से सुशोभित थी किरायेपरलिया और कईदिनतक उसने उसमें आनन्दसे निवासकिया जब भलीभांति बिश्रामकरचुका तो एकदिन उत्तम बसनपहिर व्यापारियों की सभामें जहां सब अपना असबाबलियें बेंचने को एकत्रथे गया और कोई थान दासोंके हाथमें अपने साथलेगया वहांजाय व्यापारियों से भेंटकी उन्हों ने यथोचित सत्कारकिया और नमूनेदेख पसन्दकर असबाब उसका मोललेलिया निदान गानिम ने अपनी सम्पूर्णबस्तु थोड़ेकाल में बहुत से लाभपर बेंचडाली केवल एकहीगठरी अपने निमित्त रहनेदी फिर दूसरेदिन अपने मन्दिर से निकल बाज़ारकीओर गया

वहांसब दूकानों को बन्ददेख बिस्मितहुआ मनुष्यों से उसकाकारण पूंछा उन्होंने कहा अमुक व्यापारी जो व्यापारियों में मुख्यथा आज ही कालबशहुआ उसके शोकको वह सब गये हैं गानिमने पूंछा वह उसकेलिये किस मसजिदपर निमाजपढ़ेंगे और वहांसे किसक़बरिस्तानमें लेजावेंगे पुरबासियोंने पताबतादिया गानिम अपने दासको बिदाकर आप उसमसजिदकी ओर गया और वहां पहुँच सुना कि निमाज़पढ़ अरथीको क़बरिस्तान की ओर लियेजाते हैं गानिमभी उसी लोथके साथ होलिया और उसी क़बरिस्तानपर जो नगर से बहुतदूरथा जायपहुँचा उस लोथकी क़बर पहिलेसेही पत्थर की बनीहुईथी और धूपकेकारण चारोंओर डेरे खड़े कियेगये थे लोथ को क़बर के भीतर लेगये और सब व्यापारी आदि उन डेरोंमें ठहरे और कुरानकीआयतेंपढ़नेलगे लोथगाड़ने के पश्चात् अन्य व्यापारी एकही स्वरसे फ़ातिहा पढ़नेलगे इतने में रात्रिभई गानिमने रात्रि होजाने और गृह बहुतदूरहोने के कारण घरजानेकीइच्छाकी इतनेमें वहांके रीत्यनुसारभोजनआया जिससे ज्ञातहुआ कि वह डेरे केवल धूपकेही बचावके हेतु नहीं खड़ेकियेगये किन्तु रात्रिको सब मनुष्य वहां रहेंगे दूसरे दिन नगरको पधारेंगे गानिम यह बात बिचारने लगा कि मैं बिदेशीहूं यदि रात्रिको यहांसब रहजावेंगे ऐसा न हो जो चोर मेरे घरकोलूटें वा मेरेदासही अवसरपा सम्पूर्ण द्रब्यलेदे किसी ओर भागजावें तो मैं उनको कहां ढूंढ़ता फिरूंगा इस हेतु सूक्ष्मभोजनकर मनुष्यों की दृष्टिबचा अपने घरकोचला चिन्तासे जल्दी जल्दी भागताथा बहुधा ऐसा होता है कि जो मनुष्य किसी बिषय में शीघ्रताकरता है प्रायः दुःख उठाता है दैवयोगसे वह अँधियारे में भूल औरही मार्ग में जायपड़ा घूमते घूमते आधीरात्रि को नगरद्वारपर पहुँचा परन्तु वह द्वार उसकी अभाग्यता से बन्द होगयाथा उसे रात्रिबिताने को रहने की जगह ढूँढ़ना अवश्यहुई निदान बहुत ढूँढ़ने से नगरके निकट एकक़बरिस्तानमिला जो चारों ओर ऊंची दीवारों से घिराहुआथा उसके मध्य में एक नारियलका वृक्ष लगाहुआ था उसने भीतरजाय किवाड़ मूंदलिया और एक

बराबर जगह ढूंढ़ हरीघासपर लेटरहा परन्तु क़बरिस्तान के भयसे उसे निद्रा न पड़ी और घबड़ाके उठखड़ाहुआ और द्वारके सामने टहलने लगा इतने में दूरसे कुछ प्रकाश दृष्टिपड़ा कि उसी ओर चलाआताहै डर से वृक्षपर चढ़गया और उसकी लतामें छिपकर बैठरहा इतने में तीन मनुष्य सेवकोंके सदृश वस्त्र पहिरे उसी क़बरिस्तान में आये एकके हाथमें लालटेन और दो उसके कईपगपीछे एक सन्दूक़ अपने कन्धोंपर लिये थे अपने कन्धे से सन्दूक़ उतार एकने उनमेंसे कहा भाइयो यदि मेरी बातसुनो तो इस सन्दूक़ को इसीभांति छोड़ नगरको चलो दूसरेने कहा हमारी स्वामिनीने ऐसी आज्ञा नहीं दी जो हम ऐसा करेंगे तो बहुत पछतावेंगे क्योंकि उन्होंने सन्दूक़के गाड़नेकी आज्ञादी है तीसरेने कहा तू सत्य कहता है तदनन्तर वह फावड़ेसे पृथ्वी खोदनेलगे यहां तक उन्होंने गहरा गढ़ा खोदा कि सन्दूक़ उसमें गाड़ चलेगये ग़ानिम यह सब बातें सुन बिचारा कि इसमें द्रव्य भराहोगा किसी धनवान् पर आपत्ति पड़ीहै इससे यहां गड़वादियाहै निदान वृक्षसे उतरा और हाथों से उसकी मिट्टी सरका सन्दूक़ को देखा उस सन्दूक़में कुफ़ुल लगाथा बिचारने लगा कि इसे क्योंकर तोड़ूं फिर उसने कई टुकड़े पत्थरके उठा एकको कुफ़ुलके नीचे और दूसरेको ऊपररख ऐसा ज़ोर किया कि वह सुगमतासे खुलगया फिर उसने संदूक़का पट उठाया उसमें रूपयेके बदले एक अतिरूपवती तरुण स्त्रीको लेटीहुई देखा समझा कि वह सोती है फिर यह बिचारा यदि वह सोती होती तो कुफ़ुलके खड़खड़ाहट से अवश्य जागपड़ती फिर उसके बाजूबंद और कान के बालोंको देखा कि वह हीरेके हैं और सुंदर बड़े बड़े नीलमणि की माला उसके कण्ठमें लटकती है और राजसी वस्त्र पहिने है इस से जाना कि यह बीबी ख़लीफ़ाके महलकी है फिर उसके रूपअनूपपर दृष्टिकर मोहित हुआ परंतु इतनी सामर्थ्य न हुई कि वह पूंछे कि क्यों चुपचाप संदूक़ में पड़ीहै पहिले ग़ानिमने वही द्वार जिसे दास खुला छोड़गये थे जाके मूंद दिया तदनन्तर उसे सन्दूक़में से बाहर निकाल बराबर धरतीपर रक्खा जब उसके बायुलगी तो कुछ हिलन

लगी और आधेनेत्रखोल ग़ानिमके देखे बिना इससुंदरस्वरसे पुकारी कि अरीज़ोहरा, बिस्तान, शाहसफरम् मरकलां, कासेवोस, नूरुन्निहार तुमसब कहांहो यह सबनाम उसकी दासियोंके थे जो रातदिन उसकीसेवा करतीथीं और वह उनको सर्वदापुकारतीथी इसके सुनने से ग़ानिम प्रसन्नहुआ जब उसने देखा कि कोई उत्तर नहींदेती बिस्मित हुई और भलेप्रकार नेत्रखोले क्या देखा कि मैं क़बरिस्तान मे पड़ीहूं इससे वह अत्यन्तव्यथितहोय बड़ेशब्द से कहनेलगी यह मुर्दाजीनेके लिये यहांआया है वह प्रलयका समय आगया मैं संध्या से अपना बुराहाल देखतीहूं ग़ानिमने उसके सम्मुखजाय कहा मैं बिदेशीहूं दैवयोगसे तुम्हारे प्राण बचाने के लिये यहां पहुँचा अब जो आज्ञाहो उसे प्रतिपालन करूं उस सुन्दरीने उससे पूंछा मैंक्यों कर यहां पहुँची और कौन मुझे यहां लाया ग़ानिमने सम्पूर्ण बृत्तांत कह सुनाया फिर उस मृगनयनी ने ग़ानिमकोदेखतेही मुख ढांप कहा ईश्वरका धन्यबाद है कि मेरे प्राण बचाने के लिये उसने तुमको यहा भेजा इतना कह फिर ग़ानिम से बोली कि तुम सबेरे नगरमें जाय एक खच्चर किरायेपर लाइयो मैं इसी संदूक़में लेटीहूं तुम इसमें कुफुलदे ख़च्चर परलाद मुझे लेचलियो मैं तो पैदल तेरे साथचलती परन्तु इन बस्त्रोंसे पुरमें न छिपूंगी और मैं तेरेघर पहुँच अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाऊंगी ग़ानिम ने सन्दूक़ को गढ़े से निकाल मिट्टी से साफ़ किया फिर वह सुन्दरी उसमें जाय लेटरही और ग़ानिम ने सन्दूक़ इस युक्तिसे बन्दकिया जिस में बायु न रुके भोरको क़बरिस्तान से निकल पुरकी ओर चला नगरका द्वारखुला देख तुरन्तही भीतर चलागया और एक खच्चर किरायाकर फिर उस क़बरिस्तानमें आया और खच्चरवालेसे कहा मैंएकखच्चर किरायेकर एक सन्दूक़ क़बरिस्तान तक लाया था बहुत चाहा कि वह खच्चर वाला रात्रिभर यहां ठहरे और भोरको असबाब घर पहुँचादे उसने न माना बस्तुछोड़ चलागया अब तू इस सन्दूक़ को नगर में मेरे घर पहुँचादे फिर उन दोनोंने सन्दूक़ उठाय खच्चरकी पीठपर रक्खा और उसे चारोंओर से बांध नगर की ओर चला ग़ानिम सम्पूर्ण

मार्ग में अतिडरताजाताथा कि कहीं यह भेद खुल न जावे जब वह सन्दूकसमेत अपने घरमें पहुँचा तबप्रसन्नहो खच्चरवाले को बिदा किया और अपने दास से कहा कि घरका द्वार मूंददे उसने बंद करदिया फिर उस सुन्दरीको सन्दूकसे निकाल पूंछा अब तुम कैसी हो उस सुन्दरीने उत्तरदिया मैं अच्छीहूँ तदनन्तर ग़ानिम एकदास को अपनेसाथले बाज़ारमेंगया और उसकेहेतु नानाप्रकारके दिव्य भोजन अपनेहाथसे मोल लिये और उत्तम मद्य जो बादशाह के निमित्त जातीथी और फलवालेकी दूकानसे उत्तमफल मोलले घर में आया और उनको सुधारके थालियोंमें लगाय उस सुंदरीके निकटले जाकर कहा भोजनकरो उसने कहा जबतक तुम मेरे साथ बैठके न खाओगे मैं न खाऊंगी ग़ानिम भी लाचारहोकर बैठगया जब उसने अपने मुखसे वस्त्रउतार एक ओर रखदिया ग़ानिमको उस वस्त्रके एकओर बड़ेअक्षरों में रेशमसे कढ़ाहुआ देखपड़ा उस में लिखाथा कि हे हारूंरशीद! मैं तेरी हूँ और तू मेरा है ग़ानिम उसेपढ़ बहुत घबड़ाया और कहनेलगा हे मृगनयनी! तुम अपना नाम और वृत्तान्त बतलाओ उसने कहा मेरा नाम फ़ितनह है मैं बादशाह हारूंरशीद की प्रियाहूँ बाल्यावस्था से मैं उनके महल में आईहूं और थोड़ेही काल में मैं औरों से सब बातों में निपुण होगई ख़लीफ़ा मेरी बुद्धि और स्वरूप को देख प्यार करनेलगा और अपने निकट एक मन्दिर मुझे रहने को दिया और बीस दासियां और सेवक मेरी सेवा और रक्षाके लिये नियत किये और इतना धनदिया कि मैं और शाहज़ादियोंके समान रहनेलगी ज़ुबैदा मलका जो ब्याहता स्त्री है इस वृत्तांतको सुन मुझ से डाहकरनेलगी और मेरे मारडालने के विचारमें हुई परंतु मेरी चातुरता से उसका बल न चलसका निदान धीरे २ किसी मेरीदासी को लोभसे बहँकाया जब बादशाह किसी शत्रुसे युद्धकरने गया उसी बांदीने अवसर पाया पहिले रातको तो मुझे शरबत में कोई मूर्च्छा की औषध पिलाई जिसके पीने से मैं अचेतहोगई तब उसने मुझे संदूक में बंदकर गड़वादिया परंतु मेरी आयु बाक़ीथी इसकारण ईश्वर ने

तूझे उसकब्रिस्तानमें पहुँचाया और तेरे मनमें डाला तूने संदूकको खोला और मुझे अपने घरलाया यदि यह बात जुबैदासुनै तो निस्संदेह तुझे मरवाडाले अब जबतक कि बादशाह बाहर है निस्संदेह मैं तेरे भवन में हूँ जब वह नगरमें आवेगा और मेरे न होनेके समाचारसुन अत्यन्त बिकलहो अपनी सामर्थ्यभर ढुँढ़वावेगा और जिससमय उसे यह मालूमहोगा कि मैं तेरे घरमेंहूँ उसीसमय मुझे बुलवावेगा और तुझे बधकरेगा गानिम यहसुन बहुत घबराया और कहनेलगा हे मृगनयनी! तुम तो बचगईं परंतु मेरा बचना कठिनहै फ़ितनहने कहा कोई किसीके घरका बृत्तान्त नहीं जानता जबतक कि उसके घरका कोईभेदी प्रकट न करे गानिमनेकहा यहसत्यहै परंतुमेरे दास किसीसे मित्रतानहीं रखते जिनसे कुछ इस बिषय में बार्त्ताकरें इसके बिशेष सबकोई जानते हैं कि तरुणपुरुष बिनादासी वा किसी सुंदरीके नहीं रहसक्ता यदि कोई तुमको मेरादास देखभी लेगा तो उसे यही संदेह होगा कि तुमभी वहीहो फिर गानिम अपनीशक्तिभर किसी दासकेसम्मुख फ़ितनहको न करता यहीबार्त्तालाप करतेथे कि इतनेमें किसीने उसकाद्वार खड़खड़ाया गानिमउठा इतनेमें एकदासने आके कहा कि भोजन आपके निमित्तलायाहूँ गानिम भोजनकी थालियां दासके हाथसे ले आप घरमें लेगया और फ़ितनहको भोजनकराय कहा सुन्दरी अब तुम आरामकरो मैं अभी आताहूं यहकह बाज़ार को गया और दो बहुतअच्छी बांदियां और उत्तम उत्तम बस्त्रमोल ले आया और बांदियोंको फ़ितनहकी सेवाकरने के लिये आज्ञादी वह महाप्रसन्न होकर कहनेलगी अब मैं ईश्वरसे यह मांगतीहूँ कि मेरेशीघ्रदिन फिरें और पूर्व अधिकार प्राप्तहो तो मैं तुमसे उऋणहोजाऊं फिर फ़ितनह ने बार्त्तान्तर में कहा हे स्वामी! गानिमने कहा मेरा इतना सन्मान न कीजिये किंतु अपना सेवक समझिये फ़ितनहने कहा यह तुम क्या कहतेहो यदि इससे अधिक सत्कार करूं तो उचितहै क्योंकि तुमने मेरे प्राणबचाये मैं तुम्हारे उपकार का हज़ार जिह्वासे बखान नहीं करसक्ती फिर क्योंकर तुम्हें दास समझूं यद्यपि दोनों में अधिक प्रीति होगई थी परंतु गानिम को

भलीभांति मालूमथा कि जो वस्तु मुख्य स्वामीकी हो वह सेवक को त्याज्य है जब सन्ध्याभई उसने दीपक प्रज्वलितकर बिछौने बिछाये और उनपर फल, स्वच्छमद्य बुग़दादकी रीत्यनुसार रक्खी वहांके वासी दिनको तो मांस और रोटी आदि भोजन करते रात्रि को केवल फलखाते निदान वे दोनों भोजन करने लगे और दो तीन गिलास मदिराके पीकर मदमत्तहो मीठेस्वरोंसे गानेलगे प्रथम ग़ानिमने उसीसमय के रचित पद प्रीतिके स्वरोंसे गानकिये फिर फ़ितनह ने भी उसी विषयके गीतसुनाये जबरात्रि बहुतसी बीती ग़ानिम फ़ितनहसे बिदाहो दूसरेस्थानमें जायसोरहा बहुकालपर्य्यन्त वे दोनों इसीप्रकार आनन्द भोगतेरहे और सिवाय बार्त्ताके कोई और बात न होनेपाई ख़लीफ़ाके भयसे ग़ानिम रैनिको अकेलासोता और दिन को कहीं घरसे बाहर न जाता और जितना ग़ानिम अपने तनमनसे फ़ितनहपर मोहित था उतनाही वह उसपर मोहितथी परन्तु किसी विषयसे प्रयोजन न रखते बुग़दाद में सिवाय एकदासीके इसबातको कोई न जानता और वह तीनोंदासभी जो सन्दूक़को क़बरिस्तान में गाड़आयेथे न जानते परन्तु मलिकाज़ुबैदा अपने पतिके भयसे प्रति समय चिन्तामें रहती इसीसोचमें बृद्धाको कि उसीकीदाई और बाल्यावस्था में उसेखिलायाथा बुलवाभेजा जब वहआई तब उससे कहा हे माता! मैं तुमसे सदैव अपनादुःख कहाकरतीहूं और तुम मुझे उस में सुमतबताय मेरीसहायता करतीहो अबभी तुमको वैसीही सलाह केलिये कि जिससे मुझे रातदिन आराम नहींहै बुलायाहै तुम कोई इस विषय में उपाय बताओ कि जिससे मैं बचूं फिर अपना सम्पूर्णबृत्तान्तकहसुनाया वह बृद्धा किमहाधूर्त्ताथी कहनेलगी हे प्यारीपुत्री! यह कौनबड़ीबातहै तुमधैर्य्यरक्खो कुछभी चिन्ता मतकरो मैंने ख़लीफ़ाको इसबातके खफ़ा न होनेकेलिये एक यत्नसोचाहै तुम वहीकरो ज़ुबैदाने कहा वहक्याहै उसबृद्धाने कहा कि एक लकड़ीका पुतला बड़ासाबनवाओ मैं उसे पुराने बस्त्रसे लपेटूंगी तुम आज्ञादेना कि इस लोथको बादशाही क़बरिस्तान में गाड़ो और तुरन्तही उसपर बड़ाबिशाल मक़बराबनवाओ और एक बड़े चित्र को काले बस्त्रसे

पहिनाय क़बरपररक्खो और उस क़बरके चारोंओर बहुतसे दीपक प्रज्वलितकराना और तुम आपभी उसके शोकमें कालेबसन पहिन क़बरिस्तानमें कभी कभी जाना इसीभांति तुम्हारी और फ़ितनह की दासियां और सबदरबारी काले बस्त्र पहिन प्रतिदिन उस क़ब-रिस्तान में जाय बिलापकरें खलीफा जब आय यह दशादेखेगा तो अवश्य घबड़ा के पूंछेगा उससमय तुम अवसर पाय कहियो कि यह फ़ितनहका शोकहै कि वह अकस्मात् तुम्हारे पीछे कालवशहुई और अमुकक़बरिस्तान में गाड़ीगई और उसकी क़बरभी बनवादी गई खलीफ़ा यहसुन निस्सन्देहरोवेगा और उसके मरनेका बिश्वा-सभी होजावेगा यदि तुम्हारी ईर्षा का बिचारकर क़बरखोद देखा चाहे तो क़बर खोदना और मृतकको निकालना धर्म्म शास्त्र के बि-परीतहै और दूसरे उसे क्या प्रयोजनहै किएकदासीके लिये इतना परिश्रम करे इस हेतु मैं काष्ठ का पुतला बड़ी रक्षाके साथ किसी अच्छे कारीगर से बनवाऊंगी जिसमें कोई भी न जानेगा कि किस निमित्तबनवायाहै इतनाकह उसनेकहा हे सुन्दरी ! उसीबांदीको जिस ने फ़ितनहको शरबत से मूर्च्छा की औषध डाल पिलाई है चुपके से बुलाकेकहो तू अपनेलोगों से प्रसिद्धकर कि मैंने फ़ितनह को अप-नीशय्यापर मुवा पायाहै और उस मकानमें जिसमें फ़ितनहथी मूंद भीतर उसके किसी को न जानेदेवे और यही बात तुम्हें कहलाभेजे तुम इसबातको सुनतेही मसरूरको शोककरनेकी आज्ञादेना जुबैदा यह बचन बृद्धासे सुन हर्षितहुई और अपना सन्दूक़ खोल अमोल हीरेकी एक अँगूठी उसेदी और कण्ठसे लगाय कहा मैं इस उपाय बताने से तुम्हारा बड़ागुणमानती हूं मुझे धैर्य्यहुआ तुम काष्ठ का पुतला तुरन्त बनवालाओ और शेष बस्तु मैं अभी यहां तय्यार कराती हूं वह बड़ापुतला बनवालाई और उसपर पुराने बस्त्र लपेट दिये और मसरूर को आज्ञादी कि फ़ितनह की लाशको लेजाय बादशाही क़बरिस्तान में गाड़े उसने उसकी लोथलेजाय वहीं गाड़ दिया फिर आपदासियों समेत कालेबस्त्रपहिर उसके लिये रोनेलगी दूसरे दिन थवैयों को वहां भेज उसकी बहुतबड़ी क़बर बनवाई और

और संध्या को दास दासियां क़बरिस्तान में एकत्रहो फ़ितनह के लिये शोक करते निदान नगर भर में फ़ितनह का मरना प्रसिद्ध होगया ग़ानिमने इस समाचार को सुन फ़ितनहसे कहा हे मृग-नयनी! तुम्हारे कालबश होने का समाचार नगर भर में बिख्यात हुआहै फ़ितनहने कहा ईश्वरका धन्यबाद है कि मैं तुम्हारे कारण जीतीहूं यदि ईश्वर चाहेगा तो यह सब छल जो वे करती हैं उसी से लज्जितहोंगी और हम तुम दोनों का मनोरथ एक न एकदिन सिद्ध होगा और इस सेवा और परिश्रम का फल जो तुमने बिना प्रयोजन किया है ख़लीफ़ा एक न एकदिन तुमको देगा और ईश्वर तुमको मुझे देडाले ग़ानिमने कहा मैं योंहीं तुम्हारी दयासे प्रसन्न हूं बुधजनोंने कहाहै जो बस्तु कि स्वामीकीहै सेवकको उसे बर्तना न चाहिये किन्तु दृष्टिभी न करनी चाहिये निदान तीनमहीनेके पश्चात् ख़लीफ़ा अपने शत्रुओं को बिजयकर बग़दाद में आया सब से अधिक उसे फ़ितनह के भेंटकी लालसा थी पहिले उसी के मकान में गया तो ज़ुबैदा और सब छोटे बड़ोंको कालेबस्त्र पहिने शोकमें देख बिस्मित भया कि यह किसका शोक है ज़ुबैदा ने छलसे ठंढी श्वासखींच कहा यह बिलाप फ़ितनह का है कि तुम्हारे पीछे अक-स्मात् मृत्युसे कालबशभई ख़लीफ़ा इस समाचारको सुनतेही शोक सागर में अचेतहो गिरने लगा तो जाफ़रवज़ीरने जो उसके साथ था उसे सँभाल लिया जब वह सचेतभया तो पूंछने लगा कि मेरी परमप्रिया फ़ितनहको कहां गाड़ा है ज़ुबैदाने कहा कि मैंने आपही उसका सब काम किया और उसकी मसजिद बनवाई यदि आप आज्ञादें तो मैं आप के साथ वहां चलूं ख़लीफ़ा ने कहा तुम्हें कुछ अवश्य नहीं और उसी समय बस्त्र बदलने बिना ख़लीफ़ा मसरूर कोसाथले क़बरिस्तान में गया तो क्या देखताहै कि एकचित्र काले कपड़े पहिनेहुये रक्खा है और उसके चारोंओर दीपक जलरहे हैं और एक बस्तु वहां बड़ीसजावट से धरी है अत्यन्त बिस्मित और आश्चर्यितहुआ कि सवतियाडाह होनेपर भी ज़ुबैदाने इस भड़क से क़बर बनवाई है ऐसा न हो जो बास्तव में फ़ितनह न मरी हो

और मेरी स्त्री ने अवसरपाय महलसे उसे निकालदियाहो वा किसी दूर जगह भेजवादियाहो जहां से कोई हाल उसका न सुनपड़े उसके उपरान्त वह बिचारनेलगा कि मुझे बिश्वास नहीं कि ज़ुबैदाने मेरी प्रियाकी अपेक्षा ऐसा कियाहो फिर बहुकालपर्य्यन्त चिन्तित रहा निदान आज्ञादी कि इस चित्रको जो क़बरपर रक्खाहै तुरन्त उतार उसके वस्त्र उतारो जब वह नग्न कियागया तो क्या देखा कि एक काष्ठके पुतले को कपड़े पहिराये हैं यह देख उसे अधिक छल ज्ञात हुआ और चाहा कि क़बर खुदवाके फ़ितनह की लोथ देखें कि बास्तव में वह मरीहै वा नहीं परन्तु विद्वानोंने उसे मना किया कि हमारे धर्म्मशास्त्र में क़बर खुदवाना बर्जितहै यह सुन ख़लीफ़ा ने क़बरको न खुदवाया और बहुतसे कुरान पढ़नेवालों को उसपर नियत किया प्रायः आप भी वहां जाता और रोता निदान एक मासपर्य्यन्त फ़ितनह के ध्यान में जाफ़रवज़ीर और सभासहित रुदन करता रहा कोई दिन ऐसा न था कि ख़लीफ़ा उसकी सुधि न करता हायहाय कर न रोता इस अवधि में सिवाय रोने पीटने के दूसरे कार्य्यकी ओर ध्यान ख़लीफ़ाने न दिया चालीस दिनतक उसकी यही दशारही फिर उसने कालेबस्त्र उतारे और सबको कपड़े बदलने की आज्ञादी तिसपीछे बहुतसी रातोंके जागरणके कारण शय्यापरजाय सोगया दैवयोग से दो बांदियां अपनी चौकीके अनुकूल एक शिरहाने और दूसरी पांयतेकी ओर बैठीहुई चिकन काढ़ रहीथीं शिरहानेवाली का नाम नूरुन्निहार था और दूसरीका नाम नगहत पहिलीने ख़लीफ़ाको सोयाहुआ जान कहा मैंने आज शुभ समाचार सुनाहै हमारे स्वामी जब जागेंगे तब उनसे कहेंगी ख़लीफ़ा सुनतेही प्रसन्नहोंगे फ़ितनह नहीं मरी वह कुशलपूर्व्वक है दूसरीने कहा हे परमेश्वर! यह कैसी बातहै कि फ़ितनह अबतक जीती है उसने ऐसे बड़े शब्द से इस बचनको कहा कि ख़लीफ़ा जागउठा और कहनेलगा तुमने क्यों शोरकरके मुझे जगाया उसने बिनयकी अय हुज़ूर! मेरा अपराध क्षमाकीजिये मैंने ऐसीबात सुनी जिससे मुझे धैर्य्य न रहा अभी मैंने सुना है कि फ़ितनह

जीती है खलीफ़ाने आश्चर्यितहो पूंछा वह कहां है उसने बिनती की मैंने आज सन्ध्याको फ़ितनह के हाथका लिखाहुआ पत्र एक मनुष्य के द्वारा पायाहै जिसमें उसने अपना सम्पूर्ण बृत्तांत लिख दिया है मैं चाहतीथी कि आपको दिखाऊं पर जब मैंने देखा कि आपने एक महीने पीछे अब आराम किया है इसलिये वह पत्र दिखाना उचित न जाना खलीफ़ाने कहा उस पत्रको शीघ्र मुझे दे इतना बिलम्ब क्यों किया उसने वह पत्र झट खलीफ़ाको देदिया खलीफ़ाने बड़े हर्षसे उसे खोल पढ़ा उसमें फ़ितनहने अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त और ग़ानिमकी सेवा का हाल लिखाथा खलीफ़ा ने वह पढ़ ग़ानिम के नामपर लज्जितहो महाअप्रसन्न हुआ और ज़ुबैदाकी धूर्त्ततासे बड़े आश्चर्य में हो समझा कि फ़ितना से ग़ानिमने अवश्य भोगकिया होगा यह बिचार मनमें कहनेलगा हे दुष्टे! तू चारमास तक उस तरुण ब्यापारी के घरमें रही और मुझे मालूम न हुआ मैंने यहांपहुँच कितनादुःख तेरेमरनेमें उठाया निदान खलीफ़ा कोपितहो शय्यासे उठ सभामें आया वहां सभासद उसके आगमन की राह देखतेथे वज़ीरजाफ़र तख़्तके सम्मुख आय धरती चूम हाथ बांध खड़ाहुआ खलीफ़ा ने आज्ञादी मैं एक बिषयमें तेरीपरीक्षा लेताहूं तू चारहज़ार सिपाही चौकीपहरेके अपने साथलेके ग़ानिम ब्यापारी दमिश्कके निवासीको जो अयूब का पुत्रहै पकड़ला और फ़ितनहनामक मेरीदासीको जो चारमहीने से उसके घरमें रहती है हाथसे जाने न पावे उसेभी पकड़ अपने साथ लेतेआइयो और उसके महलको खुदवाके धरतीके बराबर करडाल मैं उन दोनोंको कठिन दण्ड दिया चाहता हूं वज़ीरने यह आयसुपाय सेनाले सिधारा और ग़ानिम का महल चारोंओर से घेरलिया और बेलदार भी घरखोदने के लिये हाज़िरहुये तिस पीछे बरकन्दाज़ों को आज्ञादी कि चैतन्यरहो किसी ओरसे वहब्यापारी बाहर निकलने न पावे उससमय ग़ानिम और फ़ितनह दोनों भोजन करचुके थे अकस्मात् फ़ितनहने घरके द्वारसे जो मार्ग में था क्या देखा कि जाफ़रवज़ीर सेनालियेहुये द्वारपरखड़ाहै उसे बिश्वासहुआ

कि यह कटक ग़ानिमके पकड़ने के हेतु आयाहै समझगई कि मेरा पत्र ख़लीफ़ाको पहुँचा उसने वज़ीरको मेरेलेनेको भेजाहै महाभय-भीतहो काँपनेलगी और यहभी बिश्वासहुआ कि ख़लीफ़ा मेरीआपत्तियोंकोसुन कदाचित् मुझे कुछ न कहेगा परंतु ग़ानिमको देखतेही बध करडालेगा यह सोच उसने ग़ानिमसे कहा कि बहुत सेना हमें पकड़नेको नग्न खड्गलिये वज़ीरसहित खड़ीहै और कोतवालभी उसके साथ है ग़ानिम यह बचन सुनतेही भयभीत हुआ कि बात करनेकी भी शक्ति न रही फ़ितनहने कहा बैठे क्या हो समय कुछ नहींरहा यदि मुझे प्यारकरते हो तो उठो और अपने बस्त्र उतार दासोंके कपड़े पहिन अपने मुख और हाथोंमें काली भस्म मलो और रसोई के पात्रोंका टोकड़ा अपने शिरपर रख यहांसे निकल जाओ जिसभांति होसके अपनी रक्षाकरो सेनाकेलोग रसोइये का मज़दूर समझ तुझे कुछ न कहेंगे यदि पूंछें कि मालिक घरका कहां है तो उनसे कहियो घरमें है ग़ानिमने कहा मुझे केवल तुम्हारेही लिये भयहै अपने प्राणका कुछ सन्देह नहीं फ़ितनहने कहा मेरा कुछ भी शोच न करो मैं अपने को घरकी बस्तु सहित बचा लूंगी और जब ख़लीफ़ा से मेरा सामनाहोगा तो तेरी ओरसे भी सफ़ाई करदूंगी यदि इस समय तू उसके सम्मुख जावेगा तो निस्सन्देह वह तुझे मारडालेगा ग़ानिम यह सुन बहुत घबराया कि क्या करूं फ़ितनहने उसे चिन्तामें देख कहा हे प्यारे! जो मैं कहती हूं करो ग़ानिम निरुपायहो दासोंके महामलिन बस्त्रपहिरे और सियाही और चूल्हेकी भस्म देहपर लगाय खालीपात्रोंका टोकड़ा शीश पर रख फ़ितनह से बिदाहो बाहर निकला और सीधा किसी कूचेकी ओर चला सिपाहियों ने ग़ानिमको रसोइयेका लड़का समझ कुछ न कहा जब वज़ीर के सम्मुख से होके चला उसने भी न जाना कि यह वहीहै जिसके पकड़नेको यहां आयाहूं और रिसालदारआदि सिपाही जो वज़ीरकेपीछे खड़े थे उन्होंने भी उसे न पहिचाना ग़ानिम उसीप्रकार से नगरके द्वारतक पहुँचा और वज़ीर द्वार खुला पाय भीतर आया तो क्या देखता है कि मन्दिर में बहुत संदूकें और थै-

लियां रक्खी हैं जिनमें उत्तम उत्तम बस्तु और बहुतसी द्रव्यभरी हैं और वह सबधन ग़ानिमका था जो उसने अपने ब्यापारकी बस्तु बेंचकर धरा था फ़ितनह वज़ीरको देख उठी और चरण छू थरथर काँपने लगी जैसे कोई मारेजाने के समय काँपता है और वज़ीर से बिनती की कि जो कुछ ख़लीफ़ा की आज्ञा है वह मेरे शीश नेत्रों पर मुझसे सब बर्णन कीजिये वज़ीर ने उसके चरण चूमकर कहा हे सुन्दरि! मैं केवल इसी हेतु आया हूं कि तुम्हें यहां से शाहीदरबारमें लेजाऊं और उस ब्यापारीको जो इसघर में रहताहै ख़लीफ़ा के निकट पहुँचाउं फ़ितनहने कहा मैं वर्त्तमानहूं मुझे लेचलो और वह ब्यापारी जिसने मेरेप्राणकी रक्षाकी है वह तो यहां नहीं है अनुमान एकमासके बीताहोगा कि वह ब्यापारकी बस्तुलेके दमिश्क़को चला गया और मुझे अपनी बस्तु की रक्षाके लिये जो इन सन्दूक़ों और थैलियों में है यहांपर छोड़गया है अब मैं बिनय करतीहूं कि इनसन्दूक़ों और थैलियों को यहांसे उठाके बादशाहके महलमें भिजवादो वज़ीरने कहा बहुत अच्छा और मज़दूरोंके शिरपर उन सन्दूक़ों और थैलियों को रख मसरूरको सौंपदिया कि ख़लीफ़ाके निकट भेजदो फिर वज़ीरने कोतवाल के कानमें कहा कि तुम इस घरको खुदवाके धरतीके बराबर करडालो यदि कहीं वह ब्यापारी छिपाहोगा तो बिदित होजावेगा निदान इधर मकान खुदनेलगा और उधर वज़ीर और फ़ितनह दोनों बांदियों समेत दरबार शाहीको सिधारे कोतवालने क्षणभरमें उसमकानको खुदवाय मैदान करदिया जब कहीं भी ग़ानिमका चिह्न न पाया तो वज़ीरसे आय यह हालकहा ख़लीफ़ाने वज़ीरको दूरसे आतेदेख कहा क्यों तूने मेरी आज्ञा पालनकी उसने बिनयकर कहा अयहुज़ूर! मैंने आपकी आज्ञानुकूल पहिले तो ग़ानिमको ढूंढ़ा बिदित हुआ कि एक महीनेसे वह दमिश्क़को चलागया फिर उसकाघर खुदवाडाला और जो कुछ धनादिक हाथलगा उसे मसरूरको सौंपदिया और फ़ितनहको लेतेआयाहूं ख़लीफ़ा ग़ानिमके न पकड़े जानेपर अधिक कोपितहुआ और फ़ितनह को अपने समीप बुलवाय न तो उससे कुछ बातकी और न उसकी ओर देखा

समझा कि यह अवश्य व्यापारीके साथरही है फिर महाकोपितहो मसरूरको आज्ञादी कि इस दुष्टाको लेजाय अमुक कारागृहमें कैद करो यह कारागृह शाहीमहलकी दीवारके समीप था प्रायःअपराधी बांदियां उसी कारागृह में क़ैद कीजातीं मसरूर ने यह आज्ञा पाय उसे वहीं क़ैदकिया और खलीफ़ाने उसी क्रोध में मुहम्मद जबेनी और दमिश्क़ के बादशाह के नाम यह पत्र लिखा ॥

. हारूंरशीदका पत्र मुहम्मदजबेनीके नामपर ॥

भाई तुम जानो और आगाह हो कि ग़ानिम नामी दमिश्क़ का सौदागर अयूबका पुत्र मेरी फ़ितनह अतिसुन्दरी दासीको बहँकाके लेभागा तुम इस पत्रके पढ़तेही अपनी सामर्थ्यभर उसे ढूँढ़ना और जहां पाना बेड़ी हथकड़ीडाल तीनदिनतक उसे सम्पूर्ण नगर में विख्यात करना किन्तु कोतवाली के सिपाहियोंको आज्ञादेना कि हर गलीमें उसे कोड़ेमारें और एकमनुष्य उसके आगे यह कहताजावे कि यह दण्ड उसी मनुष्यकाहै जो कोई बादशाहकी चोरीकरे वा उस की दासीको भगायलेजावे फिर पहरेमें करके उसे मेरेनिकट भेजदेना और उसका घर खोद हल चलवाना यदि उसके माता पिता पुत्री बहिन भाई जोकोई उसके कुटुम्बमें से वहांहो उसकोभी इसीभांतिका दण्ड देना और जो कोई उस नगरका निवासी प्रकट वा गुप्तमें उनकी सहायता करे उनको भी यही दण्डदेना इतनालिख पत्र बन्दकिया और उसपर अपनी मुहर बनाय दूतको दिया और आज्ञादी कि तुरन्त दमिश्क़को पहुँच और एककबूतर अपने साथलेताजा पत्रकी रसीद जबेनी से लेके उसके पंख में बांध इधरकी ओर उड़ादीजियो जिससे मुझे मध्याह्नपर्य्यन्त मिले उससमय में कबूतर एक प्रकारके ऐसे थे कि महीनेकारास्ता चारदिन में लांघजाते और जिस नगर वा स्थानमें उत्पन्न होते वा पालेजाते वहां पहुँचते निदान दूत एक रात दिनमें दमिश्क़में पहुँचा और जबेनीके सम्मुख जाय पत्रदिया उसने अपने तख़्तसे उतर पत्रको बड़े सन्मानसे ले अपने शीशपर रक्खा और तीनबेर चूमकर पढ़ा उसके पढ़तेही घोड़ेपर सवारहो अपने सरदारों और कोतवाल को साथले ग़ानिमके घरगया ग़ा-

नम्बर ३६ मुतअल्लिक़ै सफ़ै ५१२ व १९ भा॰

चित्र ग़ानिम बीमार का मसजिद में



निम जबसे दमिश्कछोड़ बुग़दादमें गयाथा तबसे कोई भी पत्र अपनी माताको न भेजाथा केवल उन्हीं व्यापारियों से जो ग़ानिमके साथ बुग़दाद को गये थे उसकी माता को कुशलका कुछ बृत्तान्त बिदित हुआथा इसीकारण उसे विश्वासहुआ कि ग़ानिम मरगया यदि जीता होता तो इस अवधिमें कुछ न कुछ हमें समाचार अवश्य भेजता निदान अतिबिलाप कर ऐसा शोक किया जैसे कोई अपनेही सम्मुख मराहुआ देखे और एक क़बर ग़ानिमकी अपने गृह में बनवाय उसका चित्र उसपर धरगत दिन उसी क़बरपर रहाकरती और भोर और सन्ध्या उसकी सुधि कर रोती मानों बास्तव में उसकी लोथ वहांही गड़ी है और अलकनब उसकी पुत्री ग़ानिमकी बहिन भी उसी भांति अपनी माताके साथ रोती पीटती और कभी कभी गलीके लोगभी उनका रुदन सुन उनके साथ रोते निदान जबेनी ने उसके द्वार पहुँच हांकदी तो भीतरसे एक बांदी आई जबेनी ने ग़ानिमको पूँछा वह दासी प्रथम तो दमिश्कके बादशाहको देख बिस्मित हुई फिर सँभलके कहा कि बहुत दिन हुये वह मरगया उसकी मा और बहिन क़बरपर बैठी रोया करतीहैं जबेनी ने दासी के कहनेपर कुछ बिचार न कर अपने प्रधानों और सिपाहियों से कहा तुम उसके घरमें घुसके ढूंढो इसके उपरांत आपभी घरमें प्रबेशकर क्या देखताहै कि ग़ानिमकी माता और बहिन उसकी क़बरपर बैठीहुई महाबिलाप कररही हैं उन दोनों आपत्तिकी मारियों ने पर पुरुष को देख मुख अपना ढाँप लिया फिर ग़ानिमकी माता दौड़ बादशाह के चरणोंपर पड़ी बादशाहने कहा हे सुन्दरी! हम तेरेपुत्र ग़ानिमको ढूँढ़तेहैं वह यहांहै या नहीं उसने कहा बहुत दिनहुये कि वह मरगया हम अब इस क़बरपर बैठीहुई शोकमें हैं यह कह ग़ानिम की सुधि कर इतना रोई कि आवाज़ उसकी बन्द होगई और हिचकी लगगई जबेनी भी अत्यन्त दयावान् था यह दशादेख बेबशहोय रोनेलगा और अपने मनमें बिचारा यदि अपराधी है तो ग़ानिमहै उसकी मा बहिन ने कौनसा अपराध किया हारूंरशीद महाकठोर है कि इन बिचारी निर्दोष स्त्रियोंके दुःख देनेको ताकीद कर लिखा है इतने में

वह मनुष्य जो नगर में चहुँओर ग़ानिमके ढूँढ़ने को गये थे आये और बादशाहसे कहा हमने ग़ानिमको नहीं पाया और ग़ानिम की मा बहिनके रोने पीटने से बिदितहुआ कि वह मरगया जबेनी बादशाह न चाहताथा कि इनको किसी भांतिका क्लेशदें परन्तु हारूँरशीद के भयसे लाचारहो ग़ानिमकी माता से कहा हे माता! तुम और तुम्हारी बेटी इस घर से निकलो यह सुन वह दोनों बेचारियां वहांसे निकलीं तब जबेनी ने अपना वस्त्र जो बहुत चौड़ा और लम्बाथा उन्हें उढ़ादिया और अपने निकट उन्हें बैठालिया तिस पीछे उसने पुरबासियों को आज्ञादी कि इस घरको लूटलो यह सुन हज़ारों मनुष्य उस गृहमें घुसपड़े जो कुछ धनबस्तु बर्त्तमान लूटके लेगये वह दोनों स्त्रियां इस दशाको देख बिस्मितहुईं क्योंकि कुछ उनको इस आपत्तिका बृत्तान्त बिदित न था इसके अनन्तर बादशाह ने कोतवालको आज्ञादी कि इस घरको खुदवाय बराबर करदो कोतवाल ने बादशाहकी आज्ञापाय घरको खुदवाडाला तिस पीछे बादशाह ने उन दोनों मा बेटियों को अपने महल में लेजाय उनसे कहा मैंने सब दुःख तुमको हारूंरशीद बादशाहकी आज्ञासे दिये दूसरे दिन आज्ञा दी कि इनदोनों को नग्नकरडालो और प्रजाके सम्मुख चाबुकमारो जिससमय वस्त्र उतारेगये जबेनी को उनका शरीर कोमल और लाल देखकर दया उपजी परन्तु बादशाहकी आज्ञासे लाचार था निदान उनके बचानेको एक बहुत मोटा कम्मल घोड़ोंके बालोंका उन्हें पहिना दिया और उनका शिर बन्दकर उनके शिरके केश बिथराय दोनों कंधोंपर डाल दिये अलकनबके बाल बहुत पतले और इतने लम्बे थे उसकी एँड़ीपर्य्यंत पहुँच धरती से जायलगे निदान इसी दुर्दशा से उन्हें पुरबासियोंके समूह में बिख्यात करते २ नगरमेंलेगये और पीछे उनके कोतवाल सिपाहियों को लियेहुये साथहुआ और उनके आगे ढँढोरिया यह कहता चला कि यह दण्ड उन मनुष्यों का है जो बादशाह का अपराध करें जब वह इस महादुर्दशा से बिख्यात होतीहुई चौकमें आईं तो लज्जा से उन्हों ने अपना मुख बालों से छिपा लिया सम्पूर्ण नगरके निवासी उन्हें इस दशामें देख रोनेलगे

और नगरकी स्त्रियां कोठों और झरोखों से इस हालको देख और उनको निर्दोष समझ बहुत पछताईं विशेष अलकनबका रूप अनूप और यौवन देख अतिचिन्ताकर हाथमलनेलगीं और बालक उनके रोनेपीटनेको सुन भयभीत हुये जब सन्ध्याभई तो उनदोनोंकोशाही महलमेंलाये तब वह बेचारियां आपत्तिकी मारीहुईं इस घोरकष्ट से अचेत होगईं दमिश्ककी मल्का भी उनकी यह दशासुन अतिखेदको प्राप्तभई यद्यपि बादशाहने निषेध कियाथा कि कोई भी इनकी सहायता न करे तथापि मल्काने अपनी दासियों को गुप्तभेजकर उनको भोजन भिजवाया दासियों ने वहां जाय उन्हें मूर्च्छित देख उनपर गुलाब नीर छिड़का और शरबत पिलाया जिससे वह सचेतभईं तब उनमें से एकने ग़ानिमकी मातासे कहा तुम्हारी दुर्दशासुन सबको खेदभया विशेष मल्काको और हमको मल्काने आज्ञादीहै कि तुम्हारी यथाशक्ति सेवाकरें ग़ानिमकी माताने उन दासियोंका गुण माना और मल्काको बहुत से आशीर्ब्बाद देकर कहा बादशाहने हमसे यह नहींकहा कि ख़लीफ़ा हमपर क्यों इतना कोपितभया जो इस दण्ड और अप्रतिष्ठाकी आज्ञादी दासियों ने कहा हे सुन्दरी! तुम्हारे इस दुःखका हेतु तुम्हारा पुत्रहीहुआ जिसका नाम ग़ानिमहै उसपर दोष लगाहै कि वह ख़लीफ़ाकी एक महासुन्दरी चन्द्रमुखी प्रियाको छल से लेभागा इसहेतु बादशाहने क्रोधितहो तुम्हारे दण्डदेने की आज्ञा भेजीहै किसीको सामर्थ्य नहीं कि उसकी आज्ञा भंगकरे हमारे बादशाहने भी उसके भयसे निरुपायहो तुमको यह कष्ट दिया परन्तु इस बातसे मनमें बहुत पछताता है और हमभी तुम्हें निर्दोष देख पश्चात्ताप करतीहैं ग़ानिमकी माताने कहा मैं अपने पुत्रके स्वभाव को भलीभांति जानतीहूं उसके शिक्षा और उपदेशादि में मैंने बहुत परिश्रम किया विशेष बादशाही कार्य्यादिक मैंने उसे बड़े श्रम से सिखाये उससे कदाचित् ऐसा अपराध न हुआहोगा और वह सब जो कि हमपर अन्याय भया हमने उसे अपने मन से क्षमा किया यदि वह जीताहै तो यह सब हानि उसपर निवछावरहै अलकनबभी चैतन्यहुई सबबातें सुनकर माताके कण्ठसे लगी और कहने लगी

मुझे भी यह स्वीकारहै कि जो तुम कहतीहो मैं भी अपने भाई के जीनेका समाचार सुन अपने सबदुःख भूलगई इसके अनन्तर वह दोनों मा बेटियां परस्पर कण्ठसे लगीं और ग़ानिमकी सुधिकर बड़ी अप्रसन्नता से रुदन करनेलगीं फिर मल्काकी दासियों ने उन्हें भोजन कराया उन्होंने उनके कहने से दोचार ग्रासखाये दूसरे दिन ज़बेनी ने ख़लीफ़ाहारूँरशीद की अज्ञानुकूल कि उसने तीन दिन तक बराबर दण्ड देनेको लिखाथा उन दोनों मा बेटियोंको पूर्ववत् दुःख देनेके लिये बाहर निकाला पुरबासियों ने यह हाल देखते ही अपनी दूकानें न खोलीं और नगर से बाहर चलेगये और स्त्रियां भी यह दशा उनकी न देख सकीं और अपने अपने महल के द्वार मूंद भीतर बैठरहीं फिर तीन दिवसपर्य्यन्त कोई बाहर न निकला चौथे दिन दमिश्कके बादशाहने सम्पूर्ण गली बाज़ारों में यह इश्तिहार दिया कि कोई ग़ानिमकी मा बहिन को अपने घर में जगह न देवे और न उनकी सहायता करे और आज्ञा दी कि इस नगर से उन्हें निकालदो जिधर उनका मन चाहे उधरको चलीजावें निदान वह मा बेटियां जिस गलीवा कूचे और जिस जान पहिंचानके निकट सहायता की आशासे जातीं वह उन से दूर भागता और बादशाह के भयसे उनके समीप न खड़ा होता ग़ानिमकी माता ने यह दशा देख लाचारहो अपनी पुत्री से कहा बादशाहकी आज्ञा से कोई हम को अपने घरमें न रहनेदेगा और न भोजनादिक की सुधिलेगा इस से उत्तमहै किहम तुम किसी अन्य देशको पधारें फिर बादशाह ज़बेनी ने सम्पूर्ण समाचार लिख कबूतर के पंखमेंबांध बग़दादकी ओर उड़ाया हारूँरशीद ने उस पत्रके पढ़तेही फिर लिखा कि अपने नगर के तीनमंज़िलतक के गांवों में भी डौंड़ी पिटवाओ कि कोई उनको रहने न दे और किसी भांति से सहायता न करे ज़बेनी ने हारूँरशीदकी आज्ञानुकूल फिर डौंड़ी पिटवाई और उन्हें देश निकाला देके गुप्त आधी आधी अशरफ़ी उनकोदी कि तुम दोनों अन्य देशोंमें जाय इसका कुछ मोललेके भोजन करना उन दोनों ने उसे लेके भिक्षुकों के समान एक पुराने बस्त्रकी झोली गले में लटकाई

और बहुत दूरजाय एकग्राममें पहुँचीं वहा किसानों की स्त्रियां उन्हें देख चहुँओर से एकत्रभई और उनसे पूंछनेलगीं तुमने क्या ऐसा खलीफ़ाका अपराध किया जिसका तुमने इतना बड़ा दण्डपाया यह सुन वह बिलाप करनेलगीं ग्रामकी स्त्रियों ने यह दशा देख सम्पूर्ण वृत्तांत के सुनने की इच्छाकर उनसे कहा कि अपना सब हाल कहो ग़ानिमकी माताने निरुपायहो वह सब वृत्तांत कहसुनाया यह सुन सम्पूर्ण स्त्रियों को उनपर बड़ी दया उपजी और उनको धैर्य्यदे भोजन कराया और उनके ऊपरसे कम्मलउतार वस्त्र पहिराये तिसपीछे वह दोनों आपत्तिकी मारी उन्हें आशीर्ब्बाद दे हलबनगरकी ओर चलीं दिनको चलतीं और रातको मसजिदों में उतर बोरियों पर पड़रहतीं यदि मसजिद न पातीं तो सरायों में रहतीं और भण्डारों में जाय मांगतीं और खातीं कईदिन पीछे हलबनगर में पहुँचीं परन्तु वहांका रहना उन्हें अच्छा न मालूम हुआ इसहेतु वहां से निकल मवस्सलमें आईं और वहांसे ग़ानिमके भेंटकी आशासे बुग़दाद में गईं जहां उनके सम्पूर्ण मनोरथ सिद्धभये यद्यपि ग़ानिमका मिलना वहां उनको दुर्लभ था परन्तु आशा बलवान् है इतने दुःख भोगने परभी ग़ानिमकी प्रीति उनको आकर्षणकर वहां लेगई जो कोई उन को मिलता ग़ानिमको पूंछतीं अब यहां से फ़ितनहका वृत्तांत कहते हैं बेचारी फ़ितनह उसी सूक्ष्म कारागृह में रात दिन ग़ानिम की सुधिकर महाविलापकरती और उसको अभाग्यतापर धिक्कारदेती बहुधा खलीफ़ा रात्रिसमय मन्दिरके सहन में जो उस कारागृह के निकट था टहलता और राज्य के माली मुल्की उपायें सोचता दैवयोगसे एकरात्रिको वह वहां टहलताथा कि अकस्मात् एक महापीड़ा युक्त शब्द उसे सुनपड़ा वह उसे सुनके खड़ाहोगया और फ़ितनह अपनी प्रियाका शब्द पहिंचाना कि महाशोकसे कहरही है हे भाग्यहीनग़ानिम! तू कहांहै और तुझपर क्या बीततीहै क्यों तूने मेरी सेवा की जिसके बदले तू इसदुःखमें पड़ाहै तेरेपरिश्रमका यही फलथा कि भलाईकेबदले बुराईहुई द्रव्य तेरा यों नष्टहुआ मुझे मालूम नहीं तू जीताहै या खलीफ़ाके भयसे मरगया यह कह फिर कहा हे खलीफ़ा!

तूने निर्दोष ग़ानिमपर ऐसी अनीतिकी कि किसी बादशाहने किसी मनुष्यपर ऐसा न कियाहोगा ईश्वरसे तू नहीं डरता जिसदिन अर्थात् प्रलयमें न्यायार्थ मनुष्य ईश्वरके सम्मुख खड़ेहोंगे और भले और बुरे पूंछेजावेंगे उससमय तू इसअन्यायका क्या उत्तरदेगा और क्योंकर इस अन्यायसे छूटेगा जब फ़ितनह यह बचन कहचुकी तो हायहायकर महाविलाप करनेलगी खलीफ़ा यह सुन अत्यन्त लज्जितभया और अपने मनमें कहनेलगा जो फ़ितनहने कहा सत्यहै बड़ा अनर्थ भया कि मैंने केवल अपनेही विचारसे उनपर इतनाकोप किया और ग़ानिमकी मा बहिनको इतना दण्ड दिया यह नीति के बिपरीत है इसके अनन्तर अपने महलमें जाय मसरूरको बुलाय कहा शीघ्र फ़ितनहको कारागृहसे निकाल मेरे सम्मुखला वह फ़ितनहसे प्रीति रखताथा और उसके क़ैदहोने से खेदको प्राप्त हुआथा यह आज्ञापातेही हर्षितहो कारागृहमें गया और फ़ितनहसे कहा हे सुन्दरी! मेरे संगचलो तुम्हें खलीफ़ाने बुलायाहै मुझे विश्वासहै अब तुम यहांसे छुटकारापावोगी निदान मसरूर उसे खलीफ़ाके निकट लेगया वह वहां जातेही शीश अपना खलीफ़ाके चरणोंपररख रुदन करनेलगी खलीफ़ा ने उससे प्रथम यह प्रश्न किया कि तूने क्योंकर मुझे अन्यायी ठहराया सत्यकह कौन मनुष्यहै जिसपर मैंने अनीति की तू भलीभांति जानतीहै कि मैं अनीति नहींकरता यह सुन फ़ितनह समझगई कि वही बातें जो मैंने कारागृहमें कहीथीं खलीफ़ाने सुनी यह सोच फिर कहनेलगी हे स्वामी! यदि कोई अनुचित बचन मेरे मुखसे निकले तो आप क्षमा कीजियेगा मैं सम्पूर्ण वृत्तांत वर्णनकरतीहूं अयूबका पुत्र ग़ानिम दमिश्कका ब्यापारी है और उसका कुछ भी अपराध नहीं है उसने मेरे प्राण बचाये मुझे अपने घरमें रहने को स्थान दिया और आपके सम्मुख सत्य सत्य बिनय करती हूं कि प्रथम तो वह मुझे देख मोहित हुआथा और अज्ञानतासे उसे मुझसे विहारकी इच्छाथी परन्तु जब मैंने अपना बृत्तांत उससे प्रकट किया तब उसने जाना कि मैं आपकी प्रियाहूं तो उसी समय से अपनी इच्छा छोड़ कहनेलगा कि हे मृगनयनी! जो बस्तु स्वामीकी

है वह सेवकों को त्याज्यहै निदान उसी दिनसे अपनी इच्छा त्याग मेरेसाथ सच्ची प्रीति रखनेलगा यहसुन खलीफ़ाने फ़ितनहका शिर धरती से उठाय अपने समीप बैठालिया और कहनेलगा अपना वृत्तान्त विस्तारपूर्व्वक कह फ़ितनहने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आदिसे अन्तपर्य्यंत कह सुनाया खलीफ़ा ने कहा मुझे तेरे कहने पर विश्वास हुआ परन्तु मुझे अचम्भा है कि तूने अपने समाचार न दिये और मुझको आये एक महीना हुआ अब तूने लिख के मुझे ज्ञातकिया फ़ितनहने कहा बादशाह प्रणतपाल दुःखभञ्जन इसका कारण यह है कि पूरा एक महीना हुआ कि ग़ानिम अपने घरकी सम्पूर्ण वस्तु मुझे सौंप अपने दमिश्क देशको किसी आवश्यक व्यापारके लिये गया मैंने किसी से आपके आनेका हाल न सुनाथा जिस दिन मैंने यह सुना कि आप आगये सो तुरन्तही एक पत्र लिख नूरुन्निहार के द्वारा आपको खबरदी खलीफ़ा ने कहा सत्य है मैंने बड़ा अन्याय किया परन्तु अब मुझे इच्छाहै कि इस दुःखके बदले अपनी सामर्थ्यभर तेरे विचारके अनुकूल उस व्यापारी के साथ उपकारकरूं जो तू उसके लिये बिचारे फ़ितनहने यह कृपायुक्त बचन ग़ानिम के निमित्त सुन खलीफ़ा के चरण छूकर बिनय की कि आप के क़लमरौ भरमें यह डौंड़ी फिराई जावै कि मैंने ग़ानिम का अपराध क्षमा किया यह हाल सुनतेही वह आजावेगा खलीफ़ा ने कहा बहुत अच्छा मैं अभी डौंड़ीकी आज्ञा देता हूं और जो कुछ द्रव्यादिक उसकी और उसके कुटुम्ब की नष्ट हुई है उसका दूना उसे दूँगा और तेरा ब्याह उसके साथ करदूंगा फ़ितनह यह सुन अतिहर्षित भई और ग़ानिमके असबाबको देखा कि सन्दूक़ों में रक्खाहुआ है फिर दूसरे दिन खलीफ़ा ने वज़ीर को आज्ञादी कि राज्यभर में डौंड़ी फेरदे मैंने दमिश्क के व्यापारी ग़ानिम का अपराध क्षमाकिया यह आज्ञापाय वज़ीरने सब राज्यमें डौंड़ी फिरवादी परन्तु डौंड़ी से कुछ लाभ न हुआ न तो वह आया और न किसी ने उसका समाचार दिया तब फ़ितनह खलीफ़ा की आज्ञा लेकर आपही ग़ानिम के ढूंढ़ने को एक तोड़ा हज़ार अशरफ़ी का

लेके भोरको सवारहुई और दो सेवकों को अपने साथ ले मसजिद में जाय सिद्ध और याचकों को पुण्य करदिया और उनसे अपने मनोरथ के सिद्ध के लिये आशीर्व्वाद पाया और दूसरे दिन भी यही काम किया इसीभांति वह रत्नपारखियों में गई वहां ठहर एक दल्लाल को अपने समीप बुलाया कि इससे अपना अर्थ पूंछे वह दल्लाल अतिधर्मिष्ठ था और विदेशियों और रोगियोंकी सेवा किया करता था इसीकारण उस महानगर में वह ख्यात था और दूरसे याचक मंगन उसे ढूंढते आते और हरएक अमीर और रईस पुण्य के लिये बहुतसा द्रव्य भेजदिया करता वह दल्लाल उसे याचक और बिदेशियों को बांटदेता फ़ितनहने भी अशरफ़ियोंकी थैली उसे देकर कहा इस द्रव्यको रोगी और दीनजनोंको बांट देना मैं भलीभांति जानती हूँ कि तुम उचित प्रकारसे इसे खर्च करोगे दल्लाल ने उसे बादशाही वस्त्र पहिरे देख जाना कि यह किसी बादशाहकी बीबी है झुकके दण्डवत् की और कहने लगा हे सुन्दरी ! जो तुमने मुझे कहा मैं उसे शिर नेत्रों से करूंगा परन्तु आप अपने हाथ से इसे बांटें तो बहुत उचित है यदि मेरे घरमें आइयो तो वहां पर दो स्त्रियां दयायोग्य हैं तुम अवश्य उनकी दुर्दशा देख अपनी कृपा करोगी कलके दिन वे इस नगर में आई थीं मैंने उनको महादुःखित और फटे पुराने वस्त्र पहिरे देखा और मारेधूपके काली और क्षुधा तृषाके मारे मुरझाई हुई थीं सो मैंने उन दोनोंको अपने गृह में लाय अपनी स्त्री को सौंपदिया और कहा इनकी भली भांति सुधिलेना ऐसा न हो कि किसी प्रकार से इन्हें दुःख पहुँचे निदान मेरी स्त्री ने उष्णजल से उनके मुख और हाथ पांव धुलवाये और कोमल बिछौना बिछवाय बैठाया और वस्त्रादिक उन्हें पहिराये वह तो मार्ग की थकी टूटी अतिदुःखित थीं इस हेतु मैंने अबतक उनसे नहीं पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आईं फ़ितनह यह सुनतेही उसी के साथ सीधी चली और दल्लाल उसकी सवारी के आगे हुआ फ़ितनहने सवारी के साथ उसका दौड़ना उचित न जानकर कहा मैं तुम्हारे दासकेसाथ जातीहूँ तुमधीरे २ मेरे पीछे आना फिर फ़ितनह

दल्लालके गृह में पहुँच बाहन से उतरी दास दौड़के महलके भीतर गया और दल्लालकी स्त्रीको फ़ितनहके आगमनका संदेशा दिया उसकी स्त्री अपने मकानसे निकल अगवानी के लिये दौड़ी आई परन्तु फ़ितनहने उसके पहुँचने से पहिलेही दासके साथ भीतरजाय इतने समीप पहुँची कि उसे आनेका अवकाश न मिला दल्लालकी स्त्री उसको देख चरणचूमने को झुकी फ़ितनहने उसका शिरउठाय कहा हे सुंदरी! मैं तेरेघर उनदोनों स्त्रियोंके समाचार मालूम करनेको आईहूं जो कल रात्रिको इस नगरमें आईहैं दल्लालकी स्त्रीने कहा वहदोनों अपनीसेज पर पड़ी हैं यह सुन पहिले फ़ितनह उसी ओर गई जिधर ग़ानिमकी माता थी उसकी ओर ध्यानसे देख कहा हे प्यारी,सुन्दरी! मैं तुम दोनों की सुधि लेने और सेवाके लिये आईहूं ग़ानिमकी माताने आशिष दी कि ईश्वर तुम्हें इसका उत्तम फलदे हम ऐसी आपदामें हैं कि ईश्वर हमारे शत्रुओं को भी उसमें न डाले यह कह वह रुदन करनेलगी उसको रोतेदेख फ़ितनह और दल्लालकीस्त्री भी रोई तदनन्तर फ़ितनहने ग़ानिमकी मातासे कहा बहिन तुम अपना वृत्तान्तकहो कौन हो और तुम्हें कौन बिपत्तिपड़ी और क्यों तुम्हारी यह दुर्दशाभई मैं अपनी शक्तिभर तुम्हारी सहायता करूंगी ग़ानिमकी माता ने कहा हे सुन्दरी, ख़लीफ़ाकी प्रिया! फ़ितनह नामक हमारे इस दुःखका कारणहुई फ़ितनह यह बचन सुन चुपहोरही और धैर्य्यधर बेगानों की भांति बातें सुननेलगी ग़ानिमकी माताने कहा कि मैं दमिश्क के ब्यापारी अयूब की स्त्रीहूं मेरा एक पुत्र ग़ानिम नामक किसी कार्य के निमित्त बुग़दादको गया वहां उसको फ़ितनहके साथ कलंक लगा इस कारण ख़लीफ़ाने उसके बध करने की आज्ञादी जब उसको न पाया तो ख़लीफ़ा ने दमिश्क के बादशाह को आज्ञापत्र भेजा कि ग़ानिमके घरको खुदवाके बनके सदृश करदे और मुझे और मेरी बेटीको तीन दिनतक कोड़ेमार ख्यातकर देश निकाल दे इसी से वहांके हाकिम ने मेरा सम्पूर्ण द्रब्य लुटाय और मकान खुदवाय उसी बिधि दण्डदे नगरकी सीमा से निकाल दिया परन्तु हम इसी आपदा में प्रसन्न हैं यदि ग़ानिम जीतेजी हमसे आमिले जिस क्षण

हम उसका स्वरूप देखेंगी उस द्रव्य और बस्तुके बिनाशको भूल जावेंगी ख़लीफ़ाकी प्रियाने जो हमपर और हमारे पुत्रपर अनीति की है उसे हम खुशीसे क्षमाकरें उस समय फ़ितनह बोली हे माता! जैसे तुम ग़ानिमकी निर्दोषताको प्रकट करतीहो मैंभी साक्षीहूं और मैंही वह अभागी फ़ितनहहूं जो तुम्हारी इन आपत्तियोंकी कारण हुई अब जितना कि तुमपर मेरे प्रारब्धहीनतासे प्रतिष्ठा में अन्तर पड़ा जो ईश्वर चाहे तो मेरेही कारण तुम्हारे यह सब दुःख दूर होजावेंगे और तुम्हारी हानिका पलटा तुमको हज़ार हिस्से अधिक मिलजावेगा अब मेरे कहने से ख़लीफ़ाने ग़ानिमका अपराध क्षमा किया उसने अपने मुल्कमें यह डौंड़ी पिटवादी है कि मैंने ग़ानिम का अपराध क्षमाकिया और यह भी आज्ञादी है कि वह मेरे सम्मुख आवे हे माता! अब तुम धैर्य्य रक्खो ख़लीफ़ा तुम्हें अपना शत्रुनहीं समझता किन्तु वह ग़ानिमके आने की राह देखता है कि उसकी सेवाके बदले जो उसने मेरे साथकी है पारितोषिकादिदे सत्कारकरे और उसको मेरे साथ ब्याहदे अब तुम मुझे अपनी पुत्रीके सदृश समझो ग़ानिमकी माता इस बृत्तान्त को सुन हर्षित भई तदनन्तर फ़ितनह उठ ग़ानिम की माता के कण्ठ से बहुकालपर्य्यन्त लगी रही फिर उसको लेकर अलकनबके समीपगई और उसे भी हृदय से लगाय धैर्य्यदिया और उनको समझाय कहनेलगी कि सम्पूर्ण द्रव्यादिक तुम्हारे पुत्रका जो इस नगर में था मेरे पास धराहै हानि नहीं हुआ यद्यपि मैं जानतीहूं कि संसारभरके ख़ज़ाने ग़ानिम के देखने बिना तुम्हारे बिचारमें तुच्छ हैं परन्तु तुम निराश मतहो प्रभु चाहे तो वह भी शीघ्र आय मिलताहै जब परमेश्वरने तुमको यहां तक पहुँचाया तो उसकी प्रभुतासे कुछ दूरनहीं कि वह भी यहां तुरन्त पहुँचे फ़ितनह यही बार्त्ता करतीथी कि वही दल्लाल अपने घर आया और फ़ितनह से कहा हे सुन्दरी! एक अच्छीबात मैंने देखी कि एक ऊँटवाला एक रोगी मनुष्य को ऊँटपर बैठाये और उसकी निर्ब्बलता के कारण चहुंओर से उसे रस्सियों से बांधे अस्पताल में आयाहै मैंने और ऊँटवाले ने चारोंओर से कजावेकी रस्सियां काट

ऊँट से उतारा और उसकी जातिपांति पूंछा वह कुछ भी न बोला रोने के सिवाय कुछ अपना बृत्तांत प्रकट न किया मैं उसे महादुर्ब्बल और आसक्त देख उसे अपने घरमें लेआयाहूं और एक मकान में उसे सुलाय उसके हेतु पथ्य मँगवाया है और बस्त्र निकलवाये हैं कि पहिराय उसे भोजन करावैं जिसमें बोलनेकी शक्तिहो अनन्तर बैद्य को देखाय औषध करूंगा फ़ितनह ये बचन सुनतेही बिस्मित भई और उससे कहनेलगी मुझे वहां लेचलो कि मैं भी उस रोगी का दर्शनकरूं दल्लाल फ़ितनह को वहीं लेगया ग़ानिम की माताने अपनी बेटीसे कहा यह स्थान बहुत उत्तम है कि दूरदूर के बिदेशी और निर्द्धन यहां आते हैं कहीं यह तुम्हाराही भ्राता न हो निदान फ़ितनहने वहां जाय क्या देखा कि एक तरुणरोगी जिसके मुखका बर्ण पीला महाकुरूप होरहाहै और नेत्रों से आंसू बहते हैं पलँगपर पड़ाहै उसकी प्रीतिकी तासीर से फ़ितनह का हृदय उमड़ आया और अधीर होनेलगी जब ध्यानधर देखा तो पहिंचाना कि यह ग़ानिम है तो रोकर पूछनेलगी हे ग़ानिम ! तेरी यह क्या दशा भई ग़ानिमने फ़ितनहका शब्द पहिंचान नयन खोल और उसकी ओर भली भांति देख बोला हे सुंदरी ! तुमहो इतना कहतेही मारेहर्ष के मूर्च्छागत भया फ़ितनह और दल्लालने दौड़कर उसपर गुलाब छिड़का और उसे शर्ब्बत पिलाया वह सचेत भया तब दल्लालने फ़ितनह से कहा हे मृगनयनी ! तुम यहांसे चलीजावो ऐसा न हो जो इस महाहर्ष में वह मरजावे यह सुन फ़ितनह उस जगह से चलीगई जब ग़ानिमने फ़ितनह को न देखा न उसकी आवाजसुनी तो चहुँओर देख बोला हे कोमलाङ्गी ! तुम कहांहो मेरे सम्मुख नहीं आती मैंने तुम्हारा चित्र स्वप्नावस्थामें तो नहीं देखा वा बास्तवमें दृष्टिपड़ी दल्लालने कहा नहीं तुम्हारा बिचार न था किन्तु वह सुन्दरी बास्तव में आईथी अब हमें सूचितहुआ कितुम ग़ानिमहो ख़लीफ़ाने यह डौंड़ी फिरवाई है कि मैंने ग़ानिमका अपराध क्षमा किया अब तुम धैर्य्यरक्खो और शेषबृत्तान्त तुम अपनी प्रियासे सुनोगे अब ईश्वर तुम्हें आरोग्यकरे जितना श्रम हमसे होसकेगा हम उसे मनसे करेंगे फिर वह वहांसे उठ

औषध लाने को गया और फ़ितनह वहांसे उठ उसकी मा बहिनके पासगई और ग़ानिमके आनेका हाल कहा ग़ानिमकी माताको अपने पुत्रके आनेका बिश्वास हुआ और महाप्रसन्नतासे मूर्च्छित होगई फिर फ़ितनह और दल्लालके यत्नसे उसने सुधि सम्हाली और अपने पुत्रके समीप जाने की इच्छाकी दल्लालने उसे बर्जकर कहा वह अतिअशक्त है तुम्हारे जाने से उसे खेद होगा ऐसा न हो जो वह अधीर होजावे उसकी माता दल्लालका बचन मानगई फ़ितनह ने कहा यदि ईश्वरकी इच्छा होगी तो हम तुम साथही उसके पास जावेंगी अब मैं जाती हूं और ख़लीफ़ा से भी हाल सुनाती हूं सो फ़ितनह उनसे बिदाहो बादशाह के महलकी ओर चली वहां पहुंच ख़लीफ़ासे एकान्त में भेंट की और सम्पूर्ण बृत्तान्त ग़ानिम और उसकी माताके आनेका कहसुनाया ख़लीफ़ाने कहा तूने क्योंकर उन तीनोंको ढूंढ़ा उसने दल्लालकी भेंट और बातों में ग़ानिमके मा बहिन के रूपछबि अनूपकी प्रशंसा बर्णनकी सो उनके देखने की इच्छाकर अपने मनमें ख़लीफ़ाने प्रतिज्ञाकी कि जैसे मैंने ग़ानिम और उसकी मा बहिनको निर्दोष दुःखदिया और उनकी अप्रतिष्ठा भई तैसेही उसे और उसके कुटुम्बको प्रजाके सम्मुख सत्कार करूंगा जिससे उऋण होजाऊं और उनकी बस्तुओं के बदले उन्हें इतना द्रब्यदूंगा कि वह महाधनवान् होजावेंगे पुनः ख़लीफ़ाने फ़ितनहसे कहा धैर्य्य रख मैं तेरा बिवाह ग़ानिम से करदूंगा आजसे तू मेरी लौंड़ी नहीं मैंने तुझे छोड़दिया अब तू जा यदि वह आरोग्य होगयाहो तो उसे उसकी मा बहिन समेत तुरन्त मेरे सम्मुख लेआ दूसरे दिन प्रातःकाल फ़ितनह घबड़ाई हुई दल्लालके घर ग़ानिम का हाल पूछने को गई प्रथम दल्लाल से भेंटकी और ग़ानिम का बृत्तान्त पूछा उसने कहा ग़ानिम आजकी रातको अच्छीतरह रहा केवल उसे तुम्हारेही बियोग का रोगथा अब वह ईश्वर की परिपूर्ण कृपासे आरोग्यहै जब ख़लीफ़ाकी क्षमाका सुना और तुमसे भेंटकी तो कुछ सावधान होगया अब तुम्हारी और अपनी मा बहिनके भेंटकी लालसा रखता है फ़ितनह यह बचन सुनतेही पहिले आप अकेली ग़ानिमके निक-

टगई और उसकी मा बहिन को बाहर ठहराया और कहा मैं अभी तुम्हें बुलाती हूं जब फ़ितनह और दल्लाल उसके सम्मुख गये दल्लालने ग़ानिमसे कहा मित्र अब इस सुंदरी से भलीभांति भेंटकरो जिसे कल देखके तुम बेसुधिहोगये थे और उसके देखनेका तुमने स्वप्न समझाथा ग़ानिमने फ़ितनहकी ओर देख कहा हे मृगनयनी, चन्द्रबदनी! तुम क्योंकर बादशाहके महलसे मेरीभेंटको आई तुम्हारे देखने बिना तो क्षणमात्र भी ख़लीफ़ा नहीं रहसक्ताथा उसने क्योंकर तुम्हें यहां आनेदिया फ़ितनहने कहा मैं ख़लीफ़ाकी आज्ञानुकूल यहां आई हूँ और उसने मुझसे यह प्रतिज्ञाकी है कि मेराबिवाह तुमसे करदेगा ग़ानिम यह सुन इतना प्रसन्नभया जिसका वर्णन नहीं होसक्ता और आश्चर्य्यितहोय पूँछनेलगा सत्य कहतीहो ख़लीफ़ा तुमको दे डालेगा उसने कहा निस्सन्देह क्योंकि ख़लीफ़ाने पूर्व में केवल शङ्का से तुम्हारे बधकी आज्ञादीथी जब तुम उसके हाथ न लगे तो उसने दमिश्कके बादशाहको लिख तुम्हारी मा बहिनको दुःखदिलाया और तुम्हाराघर खुदवाय सम्पूर्ण वस्तु धन लुटवादिया अब वह अपने अन्याय से लज्जितभया और उसे मेरेमुखसे तुम्हारी निर्दोषता प्रतीत भई इसकारण चाहता है कि तुमसे उऋण होजावे इसके अनंतर ग़ानिमने अपनी मा बहिनका हाल पूँछा फ़ितनहने बिस्तारसे वर्णन किया वह सुन महाखेदको प्राप्तहोय रुदन करनेलगा फ़ितनहने कहा अब यह तुम्हारा शोक ब्यर्थहै जो होनाथा सो हुआ अब तुम्हारी मा बहिन यहांही हैं यह सुन उसे उनके दर्शनकी लालसाभई फ़ितनहने उन्हें बुलाया वह दोनों स्त्रियां कि फ़ितनहके बुलानेकी बाट देखतीथीं भीतर दौड़ीआईं और ग़ानिमके कण्ठलग बहुत रोईं दल्लाल ने उन्हें धैर्य्य दिया इसके अनन्तर ग़ानिम ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आदि से अन्तपर्य्यंत इसभांति बर्णन किया कि मैं ख़लीफ़ा के भयसे बुग़दाद से भागकर एकग्राममें जाय छिपा और वहां रोगी होगया एक दयावान् किसान ने मेरी सहायता की और अपनी सामर्थ्यभर मेरे खिलाने पिलाने और औषध आदि में तत्पररहा परन्तु जब वह मेरे प्राणसे निराशभया तो उसने एक ऊंट किरायाकर ऊंटवाले से कहा

इसे तू बुगदाद के अस्पतालमें पहुँचा दे सो उसने मुझे वहां पहुँचा दिया फिर फ़ितनहने सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णनकिया जब सब अपना२ बृत्तान्त कहचुके फ़ितनहने कहा अब हम सब मिलके ईश्वरका धन्य-बादकरें कि उस सच्चिदानन्द प्रभुने हमपर दयाकी और हमें इस महादुःख से निकाल परस्पर भेंटकरादी जब ग़ानिम भलीभांति आरोग्यभया फ़ितनह ने चाहा कि ग़ानिम और उसकी मा बहिनको ख़लीफ़ाके सम्मुख लेजावें फिर सोचनेलगी कि इसके पास अच्छे बस्त्र नहीं जिसे पहिन ख़लीफ़ाके सम्मुख लेजावें यह समझ अपने मकानको सिधारी और हज़ार अशरफ़ी दल्लालको दे कहा कि तुम अतिस्वच्छ बसन अलकनव और उसकी माता के लिये मोललेके आवो वह दल्लाल कि अतिप्रबीण और महाचतुर था अत्युत्तम रेशमीथान मोलले तीनदिनमें भारी जोड़े उन दोनों स्त्रियोंके निमित्त बनवाये फिर एकदिन ख़लीफ़ाकी भेंटका नियतकिया और उसदिन वह तीनोंकपड़े पहिन शय्यापर बैठेथे कि जाफ़रवज़ीर ख़लीफ़ाकी आज्ञानुसार बहुतसी सेना और प्रधान साथले उस दल्लाल के घर ग़ानिमके लेनेको आया और घोड़ेसे उतर घरके भीतरगया और भेंटकर कुशलपूँछ ग़ानिमसे कहा मैं तुम्हारे लेनेकेवास्ते आयाहूँ तुम मेरे साथचलो ख़लीफ़ा तुम्हारे दर्शन किया चाहतेहैं सो ग़ानिम उत्तम घोड़ेपर सवारहुआ और फ़ितनहने उसकी मा बहिनको दो ऊँटोंपर सवारकराय आप अपने घोड़ेपर सवारहो गुप्तमार्ग से उन्हें बादशाह के महलमें लेगई और वज़ीर ग़ानिम को बाज़ारमें से ख़लीफ़ा के सामने लेगया उससमय ख़लीफ़ा अपने तख़्तपर बैठाथा और उसके चहूँओर वज़ीर सभासद और देश देशके बसीठ और देश देशके निवासी बर्त्तमानथे जब ग़ानिम ख़लीफ़ा के पास पहुँचा तो अपना शीश पृथ्वी चूमनेको ख़लीफ़ा के तख़्तके सम्मुख रक्खा और निजर-चितपदोंमें स्तुतिकी जिसकोसुन सम्पूर्ण सभा उसकी प्रशंसा करने लगी ख़लीफ़ाने कहा मैं तुझे देख प्रसन्नहुआ जब तुमसे अपनी प्रिया के बचाने का बृत्तान्त सुनेंगे तो अधिक प्रसन्नहोंगे ग़ानिमने सम्पूर्ण बृत्तान्त आदि से अंतपर्य्यंत कहसुनाया ख़लीफ़ा उसे सुन प्रसन्न

भया और आज्ञादी कि एकभारी खिलअत जैसी कि बड़े अमीरोंको मिलाकरती है दो ग़ानिमने खिलअतपहिन दण्डवत्कर कहा हे स्वामी! मुझे इच्छा है कि जन्मभर आपके चरणोंसे लगारहूं ख़लीफ़ा उससे अतिप्रसन्न हुआ फिर अपने घरमेंआया और वज़ीरसे कहा ग़ानिमको अपने साथकरके मेरे निकटलेआ जब ख़लीफ़ा एकान्त में गया तो फ़ितनहको बुलवाभेजा और कहा ग़ानिमकी मा बहिनको भी लेतीआ फ़ितनह उनदोनों मा बेटियों को ख़लीफ़ाके सन्मुख लेआई उनदोनों ने भी ख़लीफ़ाके चरणछुये ख़लीफ़ा अलकनब को देखते ही मोहितहुआ और कहनेलगा जैसा कि मैंने तुम्हें निर्दोष अप्रतिष्ठा की वैसेही अब मैं अपना अलकनबके साथ बिवाहकर तुम्हारा दुःख भुलाऊँगा क्योंकि जुबैदा जो तुम्हारे इस दुःखका कारणहुई उसको यह दण्ड देताहूं कि अलकनबकी डाह और ईर्षा से मरे इसके अनन्तर ग़ानिमकी मातासे कहा हे सुन्दरी! तुम अभी तरुणहो मेरे वज़ीरजाफ़र से अपना बिवाहकरो और ग़ानिम से कहा तू फ़ितनहपर मोहितहै और तुझे भी इसके साथ ब्याहकरना उचित है फिर ख़लीफ़ाने क़ाज़ी और गवाहों को बुलवाया और तीनों ने ब्याह किया ग़ानिम यह बिचारताथा कि उसकी बहिन लौंडी होगी परन्तु ख़लीफ़ा ने उसे स्त्री बनाया फिर ख़लीफ़ा ने आज्ञाकी कि यह बृत्तान्त इतिहासकी तौरपर लिख हमारे ख़ज़ाने में रक्खाजावे और नकलें उस की देशान्तरों में भेजीजावें जब शाहज़ादी शहरज़ाद यह कहानी कहचुकी तब दुनियांज़ाद ने कहा वाह यह क्या अद्भुत कहानी थी शहरज़ाद ने कहा यदि तू दूसरी सुनैगी तो महाप्रसन्न होगी शहरयारने कहने की आज्ञादी परन्तु भोर होगया था इसहेतु दूसरी रातको चरित्र कहने लगी॥

## जैनुस्सनम शाहज़ादा और राक्षसों के बादशाह की कहानी॥

पूर्व्वकाल में बांसरादेशका एक बड़ा बादशाह प्रजापालक और महाऐश्वर्य्यवान् द्रब्यवान्था परन्तु सन्तान न होनेसे सदैव महाशोकवान् रहता नगरनिवासी सर्व्वदा ईश्वर से प्रार्थना करते कि हमारे बादशाह के पुत्रहो निदान उस सच्चिदानन्द ईश्वर ने उनकी

इच्छा पूर्णकी अर्थात् मलका सगर्भ भई और नवमास पीछे उसके पुत्र उत्पन्नभया उसकानाम जैनुस्सनम रक्खा बादशाह ने अपने देशके सम्पूर्ण ज्योतिषियों को बुलवाय आज्ञादी कि इसका जन्मपत्र बनाओ इस लड़के का समाचार कहो सबने उसका जन्मपत्र बनाय एक मतहो कहा हजूर इसकी पूर्णआयु होगी और बड़ा साहसी और प्रतापी होगा परन्तु कई बिषय में इसे भय प्राप्त होगा बादशाह ने कहा मुझे इसबात की चिन्ता नहीं क्योंकि मेरापुत्र पुरुषार्थी तो होगा बादशाहोंको आपत्ति और दुःखसे कुछ उपाय नहीं चलता बरु ऐसे बिषय बादशाह को उपदेश होते हैं सो बादशाह ने ज्योतिषियों को पारितोषिक और द्रब्यादिक दे बिदाकिया जब वह शाहजादा पठन योग्य भया अनेकप्रकार के गुणी नियत हुये थोड़ेही काल में वह प्रत्येकविद्या और गुण में निपुणभया दैवयोग से इसका पिता ऐसा बीमार हुआ कि असाध्य होगया अन्त समय उसने जैनुस्सनम अपने पुत्रको बुलाय उपदेश किया कि तू कदाचित् अपस्वार्थियों की बात न सुनियो और अधिक उदारता भी न कीजियो किन्तु दण्ड और दान सम रखियो क्योंकि बादशाह प्रायः छलमें पड़के कुकर्म्म में पड़ सुकर्म्म तजदेते हैं इतना कहतेही बादशाहने देहत्यागदी जैनुस्सनम शोकके बस्त्र पहिन सात दिनतक बिलाप करतारहा आठवें दिन तख़्तपर बिराजमान हो बादशाही ख़ज़ाने की मोहर तोड़ एकहीबेर ब्यय करनेलगा उसी आनन्द में सल्तनत के प्रबन्ध से निपट अचेतभया तरुण मनुष्यों की संगति से यह आनन्द भोगनेलगा थोड़ेही काल में पिताका सम्पूर्ण कोश बेश्याओं को लुटादिया उसकी माता जो अत्यन्त बुद्धिमान् चतुरथी बहुधा समझाती परन्तु उपदेश ब्यर्थजाता यहांतक कि सल्तनत की अप्रबन्धता से नगर में चरचा होनेलगा और कोलाहल मचगया और दूर दूर यहबात उड़गई धीरे धीरे सम्पूर्णकोश खाली होगये और सेना निर्द्धनतासे स्थान स्थान से उठ जाने लगी उस समय वह कुछ सोचता भया अपने सब तरुण निर्बुद्धि मित्रों को निकाल बड़े बड़े चतुर बूढ़ों को नियत किया उन्होंने भलीबातें उसे

सिखाई यहांतक कि वह सल्तनतकी अप्रबंधतासे ज्ञातहो लज्जित भया और जाना कि मैंने इतनाद्रव्य व्यर्थ खर्च किया रातदिन इसी चिंतामें रहनेलगा सो एकदिन उसने स्वप्नदेखा कि एकवृद्धने उससे मुस्कराय कहा हे जैनुस्सनम ! तू जान कि संसारमें कोई ऐसा शोकनहीं जिसके पीछे हर्ष न हो कोई ऐसी आपदानहीं कि उसके पीछे आनन्द न मिले यदि तू चाहता है यह दुःख मेराजावे तो तुरन्त कैरूंनगरको जो मिसर की दारुल्सल्तनत है चलाजा वहां पहुँचतेही तेरी सम्पूर्ण आपदा दूरहोजावेंगी और तेरा प्रताप वहां चमकेगा जब वह जगा तब उसने वह स्वप्न अपनी मातासे कहा मातानेकहा हे पुत्र ! केवल स्वप्नके बिश्वासपर जो मनुष्य हजारों प्रतिरात्रिमें देखता है और बास्तवमें कुछनहीं इतने बड़ेदूरकी यात्राकरनी न चाहिये जैनुस्सनम ने कहा हे माता ! तू यह क्या कहती है सब स्वप्न केवल बिचारही नहीं होते किन्तु बहुधा सत्यहोते हैं इस के सिवाय वह बृद्ध ऐसा न था जिसका बचन असत्य हो वह कोई सिद्धपुरुष था उसके कहतेही मेरेमनको धैर्य्य हुआ मुझे उसके बचन का भलीभांति निश्चयहै मैं अवश्य कैरूंको जाय अपने प्रारब्ध की परीक्षालूंगा माने बहुत चाहा कि उसे न जानेदें परन्तु उसका समझाना लाभकारी न भया निदान अपनाराज्य अपनी माता को सौंप अकेला गुप्त अपने महलसे निकल कैरूंको सिधारा और बहुतसे दुःख उठाय उसी बिशाल और सुन्दरनगरमें जायपहुंचा और एक मसजिद में थकित हो सोरहा फिर उसने उसीबृद्धको स्वप्नमें देखा कि कहताहै हे पुत्र ! मैं तेरे इस पुरुषार्थ से प्रसन्नभया कि तूने मेरा बचन निश्चयकर अपने आनन्दको तज इतनी बड़ी यात्राकी मैंने केवल तेरी परीक्षाली और तुझे महापुरुषार्थी पाया अब तू महाद्रव्य पावेगा और इस संसार में तू बड़ा बादशाह होगा अब तू यहांसे निजदेश बांसराको लौटजा तू वहीं इतना धन पावेगा कि किसी बादशाहको न मिलाहोगा जैनुस्सनमने जगके अपने मनमें कहा उस बृद्धने मुझे व्यर्थ कैरूं में आनेको कहा यदि बांसरा में मेरा मनोरथ सिद्धथा तो क्यों मुझे यहां के आनेका श्रमदिया अच्छाहुआ जो मैंने यह भेद अपनी माताके

सिवाय किसी से न कहा नहीं तो लोग आज मेरी निर्बुद्धिता पर हास्यकरते इसके अनन्तर वह बांसराको लौटा जब वहां कुशलपूर्वक पहुँचा तो माताने उससे पूंछा कि शीघ्र चले आनेका क्या कारण है उसने दूसरे स्वप्नका बृत्तान्त कह सुनाया वह उसे धैर्य्य दे कहने लगी बेटा अपने कार्य्य में चिन्ता न कर यदि तेरे भाग्यमें धन है तो घरबैठे मिलेगा परन्तु जब ईश्वर तुझपर अपनी परिपूर्ण कृपा करे तो आगेकी भांति लम्पट में व्यय न करना सुकार्य्य और आवश्यकता के बिशेष एक कौड़ी किसीको न देना उसने स्वीकार कर प्रतिज्ञाकी कि अब तुम्हारी आज्ञा पालन करूंगा इसमें बालभर भी अन्तर न पड़ेगा रात्रिको फिर उसी बृद्ध पुरुषने स्वप्न दिया हे जैन ! समय आय पहुँचा तुम्हें बहुत धन मिलेगा कल अपने पिताके मकान में जाय फड़हे से उसे खोदियो तुम्हें वहां एक बड़ाकोश मिलेगा जैनने जागके अपनी मातासे कहा उसकी माता ने मुसकराय कहा वह बृद्ध कैसा है कि दो बेर न मानकर धूर्त्तता से तीसरीबेर तुझसे कहगया जिसका कुछ मूलनहीं जैनने कहा यद्यपि मुझेभी उसके बचनपर बिश्वास नहीं तथापि चाहताहूं कि मैं अपने पिताका मकानभी खोदकर देखूं वह बहुत हँसी और कहनेलगी जाओ और देखो वहां तुम्हें इतना परिश्रम नहीं जितना कैरू के जाने में था जैनुस्सनमने कहा मुझे कुछ निश्चयहै कि तीसरा स्वप्न सत्यहोगा चाहता हूं कि उसकी परीक्षालूं क्योंकि उसने मुझ से पहिले कहा तू कैरू को जा वहां तेरा मनोरथ सिद्ध होगा सो मैं वहांगया फिर मुझसे दूसरे स्वप्न में कहा केवल मैंने तेरे पुरुषार्थकी परीक्षाली अब तू फिर बांसरा को लौटजा वहीं तेरी इच्छा सिद्धहोगी सो मैं उसकी आज्ञा से यहां आया अब केवल तीसरे स्वप्नकी परीक्षा शेषरही माताने कहा अब अधिक इस बिषयमें श्रम मतकर उस समय तो वह चुपहोरहा और मासे छिप अपने पिताके मकानमें जाय खोदने लगा खोदते खोदते अनुमान एकगजके चौकोन गहरा खोदडाला जब उसमें से द्रब्यका चिह्न भी न पाया तो थक के बैठगया और अपने मनमें कहनेलगा माता मेरी बहुत हँसके कहेगी

यह विदित है कि झूठे लोभसे पिताका मकान खोद्डाला और कुछ न पाया निदान सुस्ताय फिर फडुहा लेके उठा और खोदनेलगा तो अकस्मात् एक चट्टान सफ़ेद संगमरमरका उसे दिखाई दिया उसने उस शिला को वहांसे सरकाया उसके नीचे एकद्वार प्रकट भया जैनने फडुहे से तालातोड़ द्वारखोला उसके साथ संगमरमर की सीढ़ीलगीहुईथी सो एक दीपक जलाकर उसके उजियाले में सीढ़ी के मार्गसे नीचे उतरा और एक बिशाल दालान कि उसकी दीवार चीनीकी और छत बिल्लौर की बनीहुईथी गया वहां क्या देखताहै कि सुन्दर चार सीप की तिपाइयां बिछी हैं और प्रतितिपाई पर दशदश सीमाक़ पत्थरकी डेगें बराबर बराबर रक्खीहैं जैनुस्सनम समझा कि इनपात्रों में स्वच्छमदिरा होगी और पुरानीहोने से बहुत अच्छी होगई होगी यह विचार एकपात्र के निकट जाय ढकना उठाया उसे अशरफ़ियों से भराहुआ पाया इससे महाप्रसन्न हुआ पुनः सब पात्रों के ढकने उठाय देखा वे सब अशरफ़ियों से भरीहुई थीं एक मुट्ठी अशरफ़ियों की भर अपनी माताको जाय दिखाई वह देखतेही अचम्भे में हुई और पुत्र से कहनेलगी ईश्वर ने तुझपर बड़ी कृपाकी अब इस द्रव्यको पूर्व्ववत् नष्ट न कीजियो जैन ने कहा तुम निश्चयमानो मैं आपकी आज्ञा के बिरुद्ध कोई काम न करूंगा इसके अनन्तर उसकी माता ने कहा मुझेभी वहां लेजाय धन दिखा वह उसका हाथ पकड़ नीचे उतार लेगया उसने वहां जाय अशरफ़ियां भरी देखीं अनन्तर मलका की दृष्टि एक छोटेसे पात्रपर कि वहभी सीमाक़ पत्थर का बनाहुआ था और उस दालानके एक कोने में रक्खाहुआथा पड़ी जैन ने उसे देखाथा पूंछा इसमें क्याहै उसने उसको खोला उसमें एक सुनहली कुंजी निकली मलकाने कहा हे पुत्र ! निश्चय यह दूसरे किसी कोशकी कुंजी है इस के उपरान्त वे दालानके चहुंओर ढूंढ़नेलगे ढूंढ़ते २ उन्हों ने दालानके एक ओर सुन्दर दरवाज़ा जिसमें कुफुल लगाथा पाया तब तो उन्हें बिश्वासभया कि यह कुंजी अवश्य इसी द्वारकी है जैन ने कुंजी से कुफुलखोला तो एक महाबिशाल घर चौकोन देखा उसके

मध्यमें सुनहले नवखम्भे थे आठ खम्भोंपर एक एक मनुष्यका चित्र अति उत्तम और दिव्य हीरेका बनाहुआ था जिनकी चमक से वह सब मकान प्रकाशितथा जैनुस्सनम ने उन्हें देखतेही अचम्भा किया और मनमें कहनेलगा हे प्रभु! ऐसे अपूर्व्व सुन्दर चित्र मेरे पिताको कहांसे मिले परन्तु नवांखम्भा खाली था केवल सफ़ेद सा-टनसे मढ़ाहुआ उसपर यह लिखाथा हे मेरे प्यारेपुत्र! यद्यपि ये आठों चित्र अपूर्व्व हैं परन्तु नवां इन आठों से सुन्दर और बहु मौल्य और चमक दमक में अधिकहै यदि तू उसे भी लिया चाहता है तो कैरूं में जा वहां मेरादास बृद्ध मुबारक नामक रहता है वह बहुत प्रसिद्ध है जिस किसीसे तू पूंछेगा वह तुरन्त उसका घर तुझे बतादेवेगा तू उसके समीप जाय अपना बृत्तान्त कहना वह तुझे मेरापुत्र जानके ऐसे स्थानपर लेजावेगा जहां से यह नवांचित्र हीरे का तुझे सुगमता से मिलजावेगा जैन यह पढ़तेही अपनी मातासे कहनेलगा मुझे ऐसे अपूर्व्व चित्रकी अतिलालसा है क्योंकि ये आठोंमूर्त्ति उसके मोलको नहीं पहुँचतीं अब मैं कैरूं को जाता हूं बिश्वास है कि तुम मुझे वहां जानेकी आज्ञा दोगी उसने कहा तुम ऐसे सत्पुरुष की आज्ञानुसार यह कामकरते हो निश्चय है तुम्हें किसीभांति से खेद न होगा इसलिये मैं तुझे मना नहीं करती जब तुम चाहो चलेजाओ मैं और वज़ीरआजम तुम्हारे सल्तनत का प्रबन्ध करते रहेंगे इसके अनन्तर जैन बादशाह कई सेवक अपने साथले कैरूंनगरको सिधारा थोड़े दिनों में कुशल पूर्व्वक वहां प-हुँचा और पूंछने से मालूमहुआ कि मुबारक नगरमें अति प्रसिद्ध है और बड़े आदमियों के समान रहता है उसके घरमें पहुँच द्वारपर हांकदी एक सेवक ने आय द्वारखोला और जैनुस्सनम से नाम पूंछा जैनुस्सनम ने कहा मैं इस नगर में अभी आयाहूं तुम्हारे स्वामी की उदारता की प्रशंसा को सुना चाहताहूं कि उसके घरमें उतरूं दास ने कहा तनक ठहरो कि मैं अपने स्वामी से तुम्हारे आगमन का संदेशादूं फिर वह दास शीघ्रही अपने स्वामी की आज्ञानुकूल जैनको महल के भीतर लेगया जैनुस्सनमने भीतरजाय एक बिशाल

अतिसुन्दर मन्दिर देखा एक मकान में मुबारक उसके आनेकी बाट देखताथा उसके देखतेही मुबारकने उठ उसे दण्डवत्की और कुशल पूंछी बादशाहने उसका उत्तरदे कहा मुझे तुमने पहिचाना वा नहीं मेरानाम जैनुस्सनमहै मैं स्वर्गबासी बांसरा के बादशाह का पुत्रहूँ मुबारकने कहा मुझे तो उस बादशाहने मोललिया था आपकी आयु कितनीहोगी जैनने कहा बीसबर्षकी इसके अनन्तर जैनने पूँछा तुमको हमारे पितासे बिछुड़े कितनेबर्ष बीते मुबारकने कहा बाईसबर्ष मुझे क्योंकर निश्चयहो कि तुम उसी के पुत्रहो जैनुस्सनमने कहा मेरे पिताका एक मकानथा उसमें मैंने चालीसपात्र अशरफ़ियों से भरेहुये पाये मुबारकने कहा इसके बिशेष और भी तुमने उसमें कुछपाया जैनुस्सनम ने कहा नवखम्भस्वर्ण के आठ खम्भों पर एक डाल आठ चित्र हीरे के अतिसुन्दर रक्खे हुये हैं और नवांखम्भा श्वेतसाटन में मढ़ा हुआ उसपर मेरे पिता ने लिखा है जिससे मुझे नवींमूर्त्ति जो इन आठों से बहुत उत्तम है मिले तुम उस स्थान को जानतेहो मुझे वहां लेजाओगे अभी जैन न कहचुका था कि मुबारक उसके चरणोंपर गिरपड़ा और उसके हाथ बहुकालपर्य्यन्त चूम कहा मुझे बिश्वास भया तुम बांसरा के बादशाहके जो मेरा स्वामीथा पुत्रहो मैं तुम्हें अवश्य वहीं लेजाऊंगा जहां से नवांचित्र मिलेगा परन्तु थोड़े दिन आप यहां बिश्राम कीजिये जिससे मार्ग की निर्बलता जातीरहे आज मैंने पुरके रईसों को न्योता है मैं सबके साथ भोजन करता था कि तुम्हारे आगमन का समाचार सुन बाहर निकल आया अब आप भी वहां चलके रुचिपूर्व्वक भोजन कीजिये जैनने हर्षसे उत्तर दिया बहुत अच्छा इसके अनन्तर वह जैनको जहां सब मनुष्य एकत्र थे लेगया और उनको भोजनपर बैठाय आप सेवकों के सदृश खड़ारहा और जैन की सेवाकरनेलगा नगरबासी यह दशा देख परस्पर धीरे से कहने लगे यह बिदेशी मनुष्य कौनहै जिसकी सेवा मुबारक ऐसी करता है जब सब भोजन करचुके मुबारकने लोगोंसे कहा भाइयो मेरी इस सेवापर कुछ आश्चर्य्य न करो यह बांसराका शाहज़ादाहै जो मेरा

स्वामी है इसके पिताने मुझे मोललियाथा और मेरे छूटने से पहिले मरगया अब यह शाहज़ादा मेरास्वामी है और अपने पिताका यह एकही पुत्रहै जैनुस्सनम ने बार्त्तान्तरमें कहा मैं इस समूहके सन्मुख यह प्रतिज्ञा करताहूं कि मैंने तुझे छोड़दिया केवल एकही बात जो मैंने तुमसे कही वही शेषरहगई है मुबारकने यह वचनसुनतेही प्रणामकिया इसके उपरान्त मदिराआई सन्ध्यातक वे सब पीतेरहे निदान मुबारकने सबको फलोंके पात्रदे बिदा किया दूसरेदिन जैन ने उससेकहा अब मेरी राहकी मांदगी जातीरही मैं कैरूं मैं तमाशा देखने नहीं आया केवल नवेंचित्रके निमित्त इतना श्रम उठायाहै उचितहै कि हम तुम यहांसे सिधारें मुबारकनेकहा बहुत अच्छा परन्तु एकबात पहिलेही तुमसे कहनी उत्तमहै कि इसमार्ग में बहुतसे भय हैं आपको उनबस्तुओं से बचना और भयरखना अवश्य है जैनने कहा तुम भलीभांति भरोसा रक्खो मैं कदाचित् न डरूंगा और इस बातके लिये मुझे प्राण भी देने स्वीकार हैं तुम मुझे अपने साथले चलो जो तुम कहोगे वही करूंगा किसी दुःख और भूत प्रेतादि से भय न करूंगा मुबारकने जैनको धैर्य्यवान् देख अपने सेवकों को यात्रा के तय्यारीकी आज्ञादी फिर उसके दूसरे दिन भोरको स्नान और नियमित कृत्यकर वहांसे चले मार्ग में अद्भुत सुन्दर बस्तु देखतेहुये कई दिनपीछे एक महासूक्ष्म राहमें पहुँचे मुबारकने घोड़ों और और बस्तुओंको वहीं छोड़ कई पियादे उनकी रक्षाको नियत किये और कहा हमारे लौटनेतक तुम यहां सब बस्तुकी रक्षाकरना इसके अनन्तर जैनको पैदल ले आगे बढ़ा और उसी भयभीत स्थान में जहां वह नवांचित्रथा पहुँच जैनसे कहा तुम अपने मनको दृढ़रखना किसी अद्भुत और भयदेनेवाले विषयको देख मतडरना इतने में वे एक नदीके कूलपर पहुँचे मुबारक वहां बैठगया और जैन को भी अपने निकट बैठालिया और कहनेलगा हमें इस नदी से पारहोना अवश्यहै जैनने कहा क्योंकर इस नदी से पारहोंगे मुबारकने कहा तुम्हारे और मेरे लेनेको राक्षसों के बादशाहकी माया की नौका अभी यहां आवेगी तुम कदाचित् न बोलना उसके केवटोंको

चित्र जैनुस्सनम और मुबारक का नदी में किश्ती पर शेर खेवट समेत.



अद्भुतस्वरूप होगा ऐसानहो जो तुम उन्हें देख आश्चर्यकर उनसे कोई बातचीत करो मैं पहिले से तुम्हें चिताये रखताहूं जो तुम सवार होकर तनकभी मुझसे बोलोगे तो तुरन्त वह नाव इस अथाह जलमें डूबजावेगी जैनने कहा मैं कुछ न बोलूंगा और तुमको उचितहै कि सबबातें मुझे बतादो जिसमें मैं बचारहूं इतने में वे क्या देखते हैं कि एक चन्दनकी नाव अत्यन्त सुन्दरी जिसका मस्तूल अम्बरका और बादवान नीली साटनका है उसनदी में उनकी ओर चलीआती है और उसको केवल एक मनुष्य खेवताथा जिसका शिर हाथीका और देह सिंहकीसी थी जब वह नाव उनकेपास पहुँची तो उस केवटने सूंड़से एकएकको पकड़ नावमें सवार किया और क्षणमात्र में पारलेजाय उसीभांति उनदोनों को नावसे उतार नदी के पार उतारदिया फिर वह नाव गुप्तहोगई मुबारकने जैनसे कहा यह द्वीप जिसमें हम तुम हैं राक्षसों का है और निस्सन्देह यह स्वर्ग के बागका नमूनाहै देखो किसविधि के अतिस्वच्छ खेत हरेहरे और उनकी क्यारियोंके चहुँओर अनेकप्रकारके सुगंधित खिलेखिले पुष्प और सुन्दर तरकारियां शोभायमान हैं इसके विशेष देखो क्या सुन्दर सघन और फलयुक्त वृक्ष भारकेमारे धरती से लगरहे हैं और पक्षियों की प्रियबाणी सुनो कि चहुँदिशसे बड़े अनुराग और आनन्दसे बोलरहे हैं जैनका थकाव वहांके जल बायुलगने से जातारहा और उसटापू के तमाशे और रंगरंग के फूल और पक्षियों को देख आनन्दित भया और पैग पैगपर नवीन और अद्भुत वस्तु देख प्रसन्न होता निदान चलते चलते वे दोनों ऐसे स्थानपर पहुँचे जहां एककोट देखपड़ा वह कोट हीरेका बनाहुआथा उसके चहुँओर बड़ी बिशाल और गहरी खाई थी और उसखाई की चारों ओर थोड़ीदूर सघनबृक्ष लगेहुयेथे जिनकी छाया सम्पूर्ण मकानको ढांपेथी और उस मकानके द्वारके आगे एक दिव्यसेतु बारहगज़का लम्बा छःगज़ चौड़ा सीपका बनाहुआ उसके दरवाज़े पर बिकराल राक्षसोंका पहरा बैठाहुआ था कि कोई बादशाहकी आज्ञा बिना भीतर न जानेपावे मुबारक वहीं ठहरगया और जैन से कहा यदि हम तनक आगे बढ़ें

तो वे महाबिकराल राक्षस जो पहरेपर बैठे हैं तुरन्त हमको मारडा-लेंगे अब मुझे रक्षार्थ कोई मन्त्रपढ़ना चाहिये जिसमें वह हमारे समीप न आसकें यह कह मुबारकने अपनी कमरसे एकथैली जिस में चारपटके थे निकाली एक उसने अपनी कमर में लपेटा और दूसरा अपनीपीठपर डाला और दो जैनको दिये कि वहभी अपनी कमर और पीठपर लपेटे फिर उसने कपड़ेकी दो चादरें पृथ्वीपर बिछाईं और उसके किनारोंपर अनेकप्रकार के पत्थर रख उनपर वे दोनों बैठे फिर मुबारकने शाहज़ादेसे कहा अब मैं राक्षसपति का जो इसी मन्दिरमें है आवाहन करताहूं यदि वह कोपसे बड़ा बिक-रालबनके आया तो जानना हम बड़ेदुःखमें पड़े यह समझना हमारे यहां आने से वह अप्रसन्न भया और यदि वह अच्छे मनुष्य का देहधर आया तो तुम्हारी कामना सिद्धहोगी किसी भांति का भय तुम्हें न पहुँचेगा परन्तु जिससमय वह तुम्हारे सम्मुख आवे तुम उसे दण्डवत् करना परन्तु वह चादर जिसपर तुम बैठेहो कदाचित् अपने शरीरसे अलग न करना नहीं तो तुरन्त मरजावोगे फिर उस से बिनयकर कहना हे राक्षसपति ! मेरापिता जो आपका प्राचीन सेवकता उसका कालहोगया आशारखताहूं कि जो कृपा उनपर थी मुझपरभी हो यदि वह पूंछे तू किस बिषयकी कृपा चाहताहै तो तुम कहना वह नवांचित्र मुझे देदीजिये निदान वह उसे भलीभांति समझाय बुझाय मन्त्रपढ़नेलगा उसके पढ़तेही बड़ेबेग से बिजुली चमकने लगी तत्पश्चात् बादल बड़े जोर से गर्जने लगा और ऐसा शब्दहुआ कि वह सम्पूर्ण द्वीप कांपनेलगा और चारोंओर अँधियारा छायगया मानों प्रलयहुई शाहज़ादा यह दशा देख ब-हुत घबराया और भयसे हृदय उसका धड़कने लगा मुबारकने मुसुकराय कहा घबराओ नहीं जो कुछ होनाथा सो होचुका अब उजियाला हुआजाता है इतने में बादल बिजुली जातीरही उजि-यालाभया और राक्षसपति मनुष्य की सुन्दर देहधर प्रकट भया जैनने उसके देखतेही मुबारकके उपदेशानुकूल उसे दूरसे झुकके दण्डवत् की राक्षसपति मुसुकराता हुआ उसके निकट आया और

कहनेलगा हे मेरेपुत्र ! मैं तेरे पिताको बहुत प्यार करताथा जब वह मेरे समीप आता तो बिदाकरते समय उसे मैं एक हीरेका चित्र सौगातकी तौरपर देता और वह उसे अपने साथलेजाता अब वही प्रीति मुझे तुम्हारे साथ भी है मैंने तुम्हारे पितासे कहाथा कि तुम नवें खम्भे में श्वेत साटनपर लिखना जिसे हे शाहजादा! तुमने पढ़ा और यहां चलेआये मैंने तेरे पितासे प्रतिज्ञाकी थी कि यह नवांचित्र मैं तेरेपुत्र को दूंगा वह इन आठों चित्रोंसे जो तुम्हारे निकट हैं सुन्दरता में कहीं अच्छाहै मैंने अपनी प्रतिज्ञाके प्रतिपालनके लिये बृद्धके स्वरूप में तुम्हें स्वप्नदिया वह बृद्ध पुरुष मैंहींथा और मैंनेही तुम्हे वह गोप्यधन बतलाया जिसमें तुमने अशरफियों का पात्र और हीरेके पात्र रक्खे पाये मुझे तुम्हारा मनोरथ विदित है जिस हेतु तुम यहां आयेहो धैर्य्यरक्खो तुम्हारी कामना सिद्ध होगी यदि मैं तुम्हारे पितासे उसके देनेका प्रण न भी करता तो तुमको निस्संदेह देता अब तुम मेरा एक कामकरो कि एकस्वरूपवान् कन्या जिस का अन्तःकरण शुद्धहो मेरेलिये लाओ परन्तु चैतन्य रहना उससे किसी कर्मकी इच्छा न रखना जैनने इस बचनको मान बड़ी प्रतिज्ञा और बिनतीकी कि यदि ऐसी कन्या जैसी आपने कहीहै मुझे मिलेगी तो लाऊंगा उसके रूपकी तो परीक्षाहोसक्ती है परन्तु उसके हृदयकी कौन जाने राक्षसने मुसकराय कहा सत्यहै मनुष्य दूसरे के अन्तःकरणका हाल नहीं जानता किन्तु हमभी अपनी जातिके मनका हाल नहीं जानते अब हम एक दर्पण तुम्हें देतेहैं उससे अन्तःकरणका हाल तुम्हें मालूम होगा जब कोई सुन्दरकन्या पन्द्रहवर्षकी तुम्हें मिले तुम उसका मुख इस शीशेमें देखना यदि वह गुणयुक्तहोगी तो तुमको उस का मुख स्पष्ट दीखेगा नहीं तो यह दर्प्पण ऐसादृष्टिपड़ेगा कि कदापि तुम्हें भलीभांति उसकी सुन्दरता मालूम न होगी चैतन्यरहो इसप्रतिज्ञामें अन्तर न पड़े नहीं तो तुझे मारडालूंगा जैनने फिर यही प्रतिज्ञाकी कि मैं अवश्य इसप्रणको पूराकरूंगा फिर राक्षसपति ने जैनको दर्पणदेकर कहा हे पुत्र ! अब तुम बिदाहो इसीदर्पण के कारण तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोगा फिर जैन और मुबारक राक्षसपति से बिदाभये

और उसी भांति दोनों नावपर बैठ क्षणभर में पारउतरे और वहांसे अपने वाहनोंपर सवारहो सबलोगों समेत कैरूनगर की ओर सिधारे जब वहदोनों कैरूमें पहुँचे जैनने कईदिनतक वहां बिश्रामकर मुबारक से बिदामांगी कि कन्याको ढूंढ़नेजावें मुबारकने कहा क्या यहां सुन्दर कन्या नहीं हैं इस नगरमें जितनी तुम्हें कन्या मिलेंगी दूसरे पुरमें मिलना उनका कठिनहै जैनने कहा तुम सत्य कहतेहो परन्तु मैं नहीं जानता कि ऐसी कन्या कहां मिलेगी मुबारक ने कहा इससे आप भरोसा रखिये यहां एक बृद्धा स्त्री है कि उसको सम्पूर्ण नगर की कन्याओंका हाल भलीभांति मालूम है उसको बुलवाय उस कार्य्यके हेतु नियत करताहूं निश्चयहै कि वह जिसप्रकारकी लड़की चाहोगे लेआवेगी निदान उसबृद्धा को कि बास्तव में दूतकर्म्म में निपुण और महाधूर्ता थी बुलाया वह थोड़ेकालमेंबहुतसी लड़कियां पन्द्रह पन्द्रह बर्षकी रूप अनूपमें सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृशथीं लाई परन्तु जब जैन उनका स्वरूप दर्प्पणमें देखता तो मलिन पाता ऐसी कोई भी न थी जिसकी सूरत दर्प्पणमें निर्मल दीखे निदान निरुपाय हो जैन और मुबारक दोनों कैरू से बुग़दाद में गये वहां एक बिशाल मन्दिर किरायेको लेउतरे और बड़ी उदारता से रहनेलगे उनकेघर में प्रतिसमय भोजनके पात्र बिछे रहते और नानाप्रकार के ब्यंजन पके रहते और सैकड़ों मनुष्य उनके साथ भोजन करते जो बचरहता भिक्षुकों को बांटा जाता निदान उसकी उदारता से पुरबासी आदि सब आनन्दसे रहते यह समाचार सर्वत्र प्रसिद्धभया संयोगवश उस गली में एक मनुष्य मुरादनामक महाअहंकारी और ईर्षी रहताथा वह धनवान् और उदारको देख बहुत जलता और विरोध रखता क्योंकि वह आप निर्द्धनथा जैनुस्सनमकी उदारताको देख चिन्तित हुआ एकदिन संध्याकी निमाज़के पीछे मसजिदमें बैठ अपने मित्रों से कहा भाइयो मैंनेसुनाहै कि एकमनुष्य हमारी गलीमें आके उतराहै दिन२हज़ारोंरुपये खर्च करताहै मैं इसनगरमें किसीको ऐसा नहीं पाता जिसने उससे कुछ लिया न हो ऐसा जानपड़ताहै कि वह चोर है जो इस बसेहुये नगरको लूटनेआयाहै तुम सब उससे अपनी रक्षा

करो क्योंकि ख़लीफ़ाको यह बिदितहोगा कि ऐसादुर्जन इस गली में रहता है ऐसा न हो जो हमभी इसी अपराध में फँसें सबों ने उसके बचनसुन कहा वास्तव में ऐसेदुष्टसे बचना उचित है किन्तु हमें चाहिये कि ऐसे मनुष्यकी ख़बर कोतवालसे करें ईर्षी यह मतसुन अपने महलमें आया और मनमें यहसोचा कि कल अवश्य कोतवाल से यहबात कहूंगा दैवयोग से मुबारक ने भी सुबह को बन्दनासे नि-श्चिन्तहो उनमें बैठ उसीईर्षी की वार्त्तासुनीथी तुरन्त एक थैली पांचसौ अशरफ़ियों की और कुछ थानरेशमी गठरीबांधे प्रभात समय उसके घरगया मुराद उसके आनेका हालपाय भीतरसे बाहर निकल आया और क्रोधितहोय मुखबनाय मुबारकसे कहा तेरा क्या नाम है जो तू मेरेघरआया और मुझसे क्या चाहता है मुबारक ने अति नम्रहोय कहा मैं बिदेशी तुम्हारे परोस आयरहाहूं फिर वह थैली और रेशमीथानों की गठरी उसेदेदी और कहा जैनने जो तुम्हारे परोस में उतराहै तुम्हारी बड़ाईको सुन मुझे तुम्हारे निकट भेजा है उसको तुम्हारे दर्शनकी इच्छाहै और यहभी कहाहै कि यह थोरीसी बस्तुलेलो और मुझे सदैव अपनासेवक समझो वह उसे ले प्रसन्न भया और मुबारकसे कहा मेराप्रणाम अपने शाहज़ादे से कहदो कि मैं आपके सम्मुख न आनेसे लज्जितहूं प्रभातको मैं अवश्य आऊंगा निदान दूसरेदिन भोर को मसजिद में जाय मुराद ने अपने मित्रों से कहा भाइयो मुझे भलीभांति ज्ञातहुआ कि वह मनुष्य जिसका वृत्तान्त मैंने कल तुमसे कहाथा बहुत अच्छा आदमी है कुकर्मी नहीं किन्तु वह किसी बादशाहका पुत्र है अब कोई उसकी झूठीबात बादशाह से न कहनी चाहिये निदान मुराद ने जो बातें अगिलेदिन उनके चित्तमें जमाई थीं सब उठादीं इसके अनन्तर अपने महल में जाय अतिस्वच्छ बसन पहिर शाहज़ादे की भेंट को गया जैनने उसका बहुत सम्मानकिया मुरादने जैन से कहा तुम्हारे इस नगरमें आनेका क्या हेतुहै और किस प्रयोजन से तुम यहां इतने दिन ठहरे जैन ने कहा मैं यहां एक महासुन्दर कन्या पन्द्रह बर्षकी ढूंढ़ने आयाहूं मुराद ने कहा ऐसी कन्या का मिलना

अतिकठिन है परन्तु मेरे विचार से एकहै उसका पिता प्राचीनमन्त्री है अब उसने बहुकाल से बादशाही सेवा छोड़दी है और अपनी पुत्रीको अपना धर्म्म कर्म्म सिखायाहै वह कन्या रूप अनूपके विशेष अन्तःकरणकी स्वच्छता भी रखती है यदि तुम उसके पिताके समीप जाय उसकी कांक्षा करोगे तो वह निस्सन्देह उसे तुम्हें देदेगा जैनने कहा मैं जबतक उसमें वह सबगुण देख न लूंगा कदाचित् उसके साथ बिवाह न करूंगा मुरादने कहा तुम क्योंकर एकही बेर उसे देख सकोगे यहबातें तो बहुत दिनतक रहने से मालूम होती हैं जैनने कहा मैं उसका स्वरूप देखतेही जानलूंगा यहसुन मुरादने कहा अब मैं जाय उसके पितासे एकबेर मुख देखनेको कहताहूं तुम उस समय उसकी परीक्षालेलेना इसके अनन्तर जैनने मुरादके साथ जाय मंत्री से भेंटकी मन्त्री उसकी जातिपांति पूछ अपनी पुत्री से ब्याहदेनेपर राज़ीहुआ और अपनीपुत्रीको आज्ञादी कि एकबेर इस शाहजादेको सम्मुखहोकर अपने मुखसे बस्त्रउठा दिखादे निदान जब उसने बहु मूल्यरत्नजटित बस्त्र पहिर अपने कोमलमुख से बसन उठाया तो वह उसे देखतेही मोहितहुआ और अपने मनमें बिचारा कि जो होगा तो मैं इसे अपनेही साथ ब्याहूंगा राक्षसपतिको न दूंगा फिर उसने उसका स्वरूप उसी दर्प्पणमें देखा तो अत्यन्त स्पष्ट और उज्ज्वल दृष्टि पड़ा और वह दर्प्पण सूर्य्यवत् प्रकाशित भया इस परीक्षा से भी उसे भरोसा हुआ कि जैसा ढूंढ़ता था वैसाही उसे पाया फिर मन्त्री ने काज़ी को बुलवाय उसका बिवाह बांधा और तीन दिनतक उसे अपने घरमें रख बिवाहकी सबरीतें बड़ी सजधज से कीं तिस पीछे जैनने अपने डेरेपरजाय लाखोंरुपयेका जड़ाऊ भूषण मुबारक के हाथ कन्याके लिये भेजा फिर मन्त्री ने बहुतसा दहेजदे मुबारकके साथ कन्याको बिदाकिया जैनने वहां के अमीरों और मन्त्रियों को निमन्त्रण दिया और अनेक प्रकार के व्यञ्जन खिलाय सत्कार किया मुबारक ने जैनसे तत्पश्चात् कहा अब यहां रहने की कुछ आवश्यकता नहीं कैरूंको पधारो जो प्रतिज्ञा तुमने राक्षसपति से की है उसपर दृढ़रहो उसे न भूलना जैनने कहा मैं इस कन्यापर मोहितहूं

क्योंकर राक्षसपतिको दूं अब मैं इसे अपनेदेश बांसराको लेजाय अपनी मलका बनाताहूं मुबारकने कहा कदाचित् ऐसाकाम न कीजियो राक्षसपति से यहबात छिप न रहेगी तुम्हारे भोगकरने के पहिले वह तुम्हें बधकरडालेगा और उसे अपने साथ लेजावेगा इसकारण तुम यह बिचार अपने मनसे निकालो जिसभांति बने अपने प्रणके अनुसार इस सुन्दरीको उसके निकट पहुँचाओ कि उसके अनुकूल रहनेसे तुम्हारा भलाहै जैन ने अपना चित्त दृढ़कर कहा तुम इसको मुझसे छिपाओ कि मार्गभर में मैं उसे देखने न पाऊं फिर मुबारक यात्राकी तय्यारी करके शाहज़ादे और दुलहिन समेत सिधारा और वहांसे राक्षसपति के टापूकी राहली मार्ग्गान्तर में वह चन्द्रमुखी बीमार होगई और शाहज़ादेको कि केवल बिवाहके दिन देखा था घबराके मुबारकसे पूछा कि इतनी यात्रा करके कभी मैं अपने पतिके देशमें नहीं पहुँची मैंने बिवाहके दिनके सिवाय उसे फिर न देखा इसका क्या हेतुहै मुबारकने कहा हे सुन्दरी! अब मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगा सत्य तो यहहै तुम जैनका स्वरूप कदापि न देखोगी उसने जो तुमसे बिवाह किया है बांसराके लेजाने के वास्ते न था किन्तु तुम्हें राक्षसपतिको कि उसने जैनसे तुम ऐसी सुन्दर कन्याको मांगाथा बग़दाद से लाया है यहसुन वह रोनेलगी उसके रुदनकरनेसे मुबारक और जैन दोनों चिन्ता करनेलगे फिर उस सुन्दरी ने कहा यहां मेरा कोई नहीं मैं दीन बिदेशीहूं तुम ईश्वर सच्चिदानन्द से इस बिषयका कि मुझे तुम छलसे यहांलाये और मेरे मारने की इच्छा रखतेहो प्रलयमें क्या उत्तर दोगे निदान उसीदशा से वह उसे राक्षसपति के सम्मुख लेगये और उसे सौंपदिया राक्षसपति ने उसेदेख पसन्द किया और हर्षितहो जैनसे कहा तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरीकी जैसी मैं चाहताथा वैसी सुन्दर कन्या तुम मेरे हेतु लाये मैं तुमसे महाप्रसन्न भया अब तू यहां से तुरन्त अपने देश को जा उसी तहख़ाने में जहां तुमने द्रव्य पायाहै नवांचित्र जिसके देने की मैंने तुमसे प्रतिज्ञाकी है पाओगे जैन राक्षसपति से बिदा हुआ और कैरूंकी ओर सिधारा वहांपहुँच थोड़ेदिनठहरा फिर नवेंचित्रकी

लालसासे बांसराको चला परन्तु सम्पूर्ण मार्ग्ग में उसी चन्द्रमुखी की सुधि करके रोता और कहता बड़ाखेद है कि हम छलसे उसको उसके प्रिय पितासे छुड़ाय उसके मारने के लिये राक्षसपतिको दे आये उसी चिन्तामें वह बांसरामें पहुँचा उसके मन्त्री सभासद छोटे बड़े महाहर्षित भये प्रथम जैन अपनी माता के निकट गया और अपनी यात्रा का हाल आदिसे अन्त पर्य्यंत कह सुनाया उसने कहा अब तुम शीघ्र उस नवेंचित्रको पाओगे उसी स्थानपर चलो जहां राक्षसपतिने तुम्हें देने की प्रतिज्ञा की है परन्तु जैन अपनी प्यारी के बियोग में नवेंचित्र को भूलगया और मनमें कहने लगा अब मैं अपनी प्यारी बिना नवांचित्र लेकर क्या करूंगा हे ईश्वर! किसी प्रकार उस प्राणप्यारी को मुझे दिलवादे निदान जैन अतिचिन्तित होय अपनी माता सहित नवां चित्र लेने को उतरा और वहांजाय नवेंखम्भे पर चित्रके बदले एक सुन्दरी को बैठे देखा शाहजादे ने उसे पहिचाना कि यह तो वही कन्या है जिसे हम राक्षसपति को दे आये थे देखते ही वह आश्चर्य्यित हुआ और बिस्मितहो खड़ा रहगया उस कन्या ने जैन से कहा तुम्हारा अचम्भा इसहेतुहै कि मेरेबदले तुम किसी अन्यवस्तु को जो मुझसे उत्तम है लेनेआये थे जैनने कहा हे सुन्दरी! इसलिये मेराआश्चर्य्य नहीं जो तुमने बिचारा किन्तु तुम ऐसी वस्तुको पाके मारे हर्षके बिस्मित हो ईश्वर जानता है तुम्हारी प्रीति और मोहमें मेरा बुराहालहुआ और बराबर तुम्हारा स्मरण बनारहा कि क्या बुराकामकिया कि ऐसे स्थान में फेंकआये परन्तु क्याकरूं इस बिषयमें मैं लाचार था क्योंकि राक्षसपतिने मुझसे बचन लेलियाथा कि मैं उसे एककन्या तुम ऐसी पहुँचाऊं यदि तनक भी इस प्रतिज्ञा में अन्तर पड़ता तो वह मुझे मार डालता मैंने मार्ग्गान्तर में बहुतचाहा कि उसप्रण को भंगकर तुम्हें अपने देशमें लाऊं और नवेंचित्र से हाथ उठाऊं परन्तु मेरे मित्र ने जो मेरेसाथ था राक्षसपति के भयसे मुझे मना किया अब ईश्वर ने मुझे घरबैठे देदिया और तुम मुझे उन चित्रों बरु संसारके सम्पूर्ण द्रव्यसेभी अधिक प्रिय हो जैन यह कहचुकाथा कि अकस्मात् एक

घोर शब्द भया और मन्दिर हिलनेलगा शाहजादे की माता इस दशाको देख भयभीत हुई इतने में राक्षसपति मनुष्य रूप से प्रकट भया और जैनकी मातासे कहनेलगा हे मलका! मैं तेरे पुत्रसे अति स्नेह रखताहूं जबमुझे मालूम हुआ कि वह इस सुन्दरी पर मोहित है और केवल अपनी प्रतिज्ञाके पूर्णकरने को लाचारी से मुझे यह सुंदरी दी तो मैंने उसे देडाली फिर जैनसे कहा इसी प्रीतिसे सदैव रहना और कोई दूसरी स्त्रीसे ब्याहकर इस कन्याको दुःखन देना फिर उस नवेंचित्रको भी दे शाहजादेसे बिदाहो गुप्तभया शाहजादे ने अति प्रसन्नहो डौंड़ी पिटवाई कि पुरवासी इस सुंदरी को आजसे बांसरकी मलका कहें सो बहुकालपर्यंत वह अतिआनन्द मंगल से रहे ॥

## शाहज़ादे खुदादाद और दरियाबार शाहज़ादीका चरित्र ॥

इस कथाके मध्यमें दरियाबार देशका भी बर्णन कियाजाता है हैरननगरमें एक बड़ा बादशाह प्रजापालक सर्व्वगुण अलंकृत था उस परमात्मा प्रभुने सब कुछ उसे दियाथा सिवाय संतान के कोई कामना उसे न थी यद्यपि उसके महलमें बहुतसी सुन्दर २ स्त्रियांथीं परन्तु किसी से संतान न उपजती बादशाह सर्व्वदा सच्चिदानन्द ईश्वर से पुत्रार्थ प्रार्थना करता निदान एक निशाको उसने स्वप्नमें देखा कि एक अतिउज्ज्वल स्वरूप सत्पुरुष उससे कहता है कि हे बादशाह! तेरी प्रार्थना स्वीकार भई प्रभातउठ निमाजपढ़ ईश्वरसे मनके मनोरथकी प्रार्थनाकर तत्पश्चात् अपनी पुष्पबाटिकामें जाय मालीसे अनारमँगवाय अपनी इच्छानुसार भोजनकर वहईश्वर सर्वोपरिहै तुझपर कृपाकरेगा बादशाहने भोरको उठ रात्रिका स्वप्न स्मरण कर प्रभुका धन्यबाद किया तदनन्तर बन्दनाकर घुटनोंके बल खड़े हो प्रार्थनाकी पुनि बागमें गया और बागवान से एकअनार मँगवाय पचासदाने गिनकेखाये क्योंकि उसके पचास स्त्रियांथी उसदिन से पारी पारी हर एकसे बिहार करनेलगा ईश्वरकी मायासे उसकी संपूर्ण स्त्रियां सगर्भभईं परंतु एकस्त्री जिसका नाम पीरोज़था उसके कुछभी चिह्न गर्भका न प्रकट भया इसहेतु बादशाह को उससे ग्लानि हुई और विचारा कि यह बांझहै क्योंकि परमेश्वरने इसे कुलक्षण और

दुर्भागीसमझ न चाहा कि यह शाहज़ादेकी माताहो तदनन्तर उसने चाहा कि पीरोज़ को मरवाडाले परन्तु मंत्री ने उसे बर्जा और समझाया कि कदाचित् यह भी गर्भवतीहो और उसका गर्भ और स्त्रियों के सदृश प्रकट न होताहो बादशाहने कहा अच्छा इसे मत मारो परंतु यह मेरे नगरमें न रहे मैं इसे नहीं देखसक्ता मंत्रीने कहा बहुत अच्छा इसको अपने भतीजे के निकट जिसका नाम सुमेरहै भेजदीजिये बादशाहने उसे समरिया नगरमें भेजदिया और अपने भतीजे को एक पत्रलिखा कियह सुन्दरी तुम्हारे समीप भेजते हैं यदि इसका गर्भ प्रकटहो वा कोई पुत्र इसके उदर से उत्पन्नहो तो तुरंत मुझे संदेशा भेजना ईश्वरकी कृपासे वह पीरोज़ समरियादेशमें जाय पूरेदिनों में बेटा जनी तब शाहज़ादे समीरने हैरन के बादशाहको पत्र लिखा कि पीरोज़के पेटसे पुत्र उत्पन्न भया बादशाहको इस शुभसमाचारकेसुनतेही प्रसन्नता हुई और उसका यह उत्तर लिख भेजा कि यहां भी भगवत्की पूर्णकृपासे सब स्त्रियोंके उदरसे एक एक पुत्र उत्पन्न भया है मैं पीरोज़के बेटा होनेसे अतिहर्षयुक्तहुआ तुम उसका नाम खुदादाद रक्खो उसको भलीभांति पालन पोषणकरो और जो कुछ तुमको छठी आदि रीतोंमें चाहिये यहां से भेजदियाजावेगा समीर उस कुँवरका पालन मनसे करनेलगा जब खुदादाद पढ़ने के योग्य भया तो घोड़ेकी सवारी बाणविद्या और संसार के सकल गुणों को सीख निपुणभया जब अठरहवां बर्ष लगा तो ऐसारूप और पुरुषार्थ हुआ कि कोई उसके सदृश संसार में न था उसने अपने को अति बलवान् और साहसी देख अपनी मातासे कहा मुझे तुम आज्ञादो तो समरियानगर को तज कहीं अनत जाय अपने पुरुषार्थ की परीक्षालूं आजकल मेरेपिता हैरनके बादशाह के कई शत्रुहैं और चहुँओर के कई बादशाह भी चाहते हैं कि उसपर चढ़धावें बड़ा आश्चर्य है कि ऐसे कुसमय में मेरा पिता मुझे क्यों नहीं बुलाता और मुझे इसकठिन समय में अपने साथ क्योंनहीं करता मुझे यहां रहना उचित नहीं यद्यपि मेरा पिता मेरे पुरुषार्थ और साहसको नहीं जानता और मुझे नहीं बुलाया परन्तु मुझे आपही

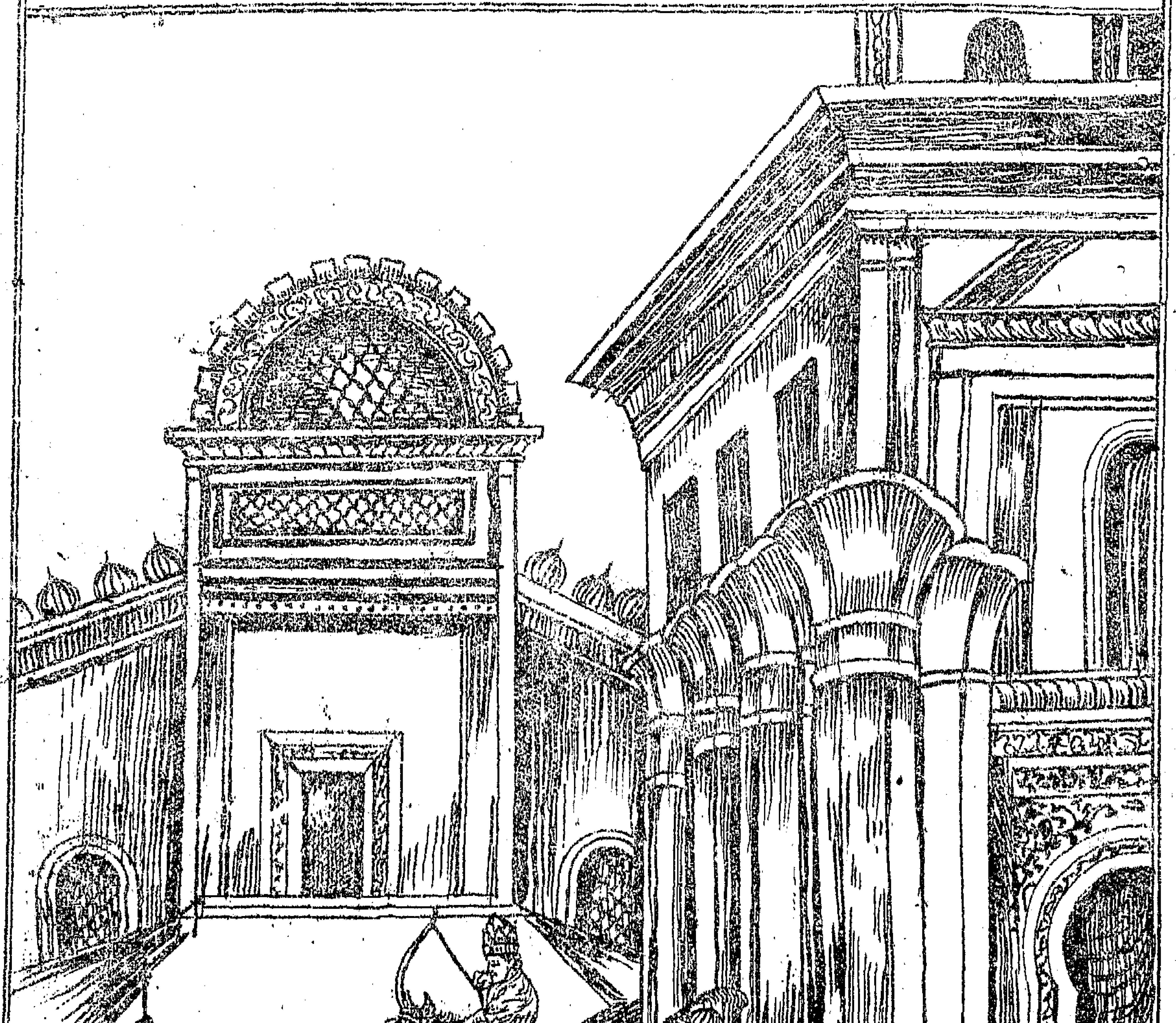
उचितहै कि ऐसे कुसमय में अपने पिता के निकट जाऊं माता ने कहा हे प्यारे पुत्र ! यद्यपि तुम्हारा बियोग मुझे स्वीकार नहीं परंतु ऐसे कालमें कि शत्रु चहुँओर से तुम्हारे पितापर चढ़आये हैं तुम्हें वहां पहुँचना अवश्य है शायद वह तुझे अपनी सहायता के लिये बुलाभेजे खुदादादने कहा ऐसे समय में उसके बुलानेकी बाट मैं देख नहीं सक्ता इसके बिशेष मुझे अपने पिताके दर्शनकी इतनी लालसा है यदि मैं जाय उसे न देखूं और उसके चरण न चूमूं तो निश्चय है कि मैं मरजाऊं मैं वहांपहुँच बिदेशी बन उसकी सेवाकरूंगा और जबतक मेरे पिताको मेरा पुरुषार्थ सूचित न होगा तब तक अपने को उसका पुत्र प्रकट न करूंगा परंतु माता ने उसे जानेकी आज्ञा न दी एकदिन वह शाहज़ादा अहेरके बहाने शफेद घोड़ेपर जिसकी लगाम स्वर्ण और ज़ीन आदि रत्न जटित मोतियों के झालरों की टकी हुई थी सवार हुआ और रत्न जटित धनुर्बाण अपनी भुजापर लटकाय समरिया से चला और शीघ्रही अपने मित्रों और सभासदों समेत बड़ी धूम धामसे हैरन नगर में पहुँचा और अवसर पाय बादशाह का सामनाकर दण्डवत् की बादशाह उसके रूपको देखतेही प्रसन्न हुआ और अतिकृपा पूर्व्वक उसे अपने निकट बुलाय नाम और जाति पांति पूछी खुदादादने कहा मैं एक धनवान् का पुत्र और कैरू नगर का निवासीहूं सैरके व्यसन से अपने देश को तज अन्य देशों को देखता आप के सम्मुख पहुँचा मैंने सुनाहै आपको शत्रुओं ने घेरा है चाहता हूं कि इस संग्राम में अपनी बीरता आपको दिखाऊं बादशाह उसकी बीरतायुक्त बार्तासुन अत्यन्त प्रसन्न भया और अपनी सेनाका उसे रणधीर किया उसने अपनेअधीनी कटकको देखतेही सब प्रधानोंका सन्मान किया और सब को राज़ी किया और यथा बिधि साज सामान से उसे अलंकृत किया बादशाह उसे देखतेही प्रसन्न हुआ और उसकी इस बुद्धिपर उसे अपना सभासद किया वहांके मंत्री उसके स्वभावको देख उसे मन से प्यार करनेलगे उसके सामने सब शाहज़ादे और अन्य अधिष्ठाता तुच्छ होगये इससे वह डाह करनेलगे खुदादाद बादशाह

को बहुत प्रसन्न रखने लगा और दिन दिन बादशाह की कृपादृष्टि उसपर अधिक होती जो शत्रु हैरन देशको परास्त कियाचाहते थे कटक का बनाव और युद्धकी सामग्री तय्यार देख अपने अपने देश को चलेगये धीरेधीरे बादशाहने उसकी बुद्धिपर बिश्वास कर अपने समस्त पुत्र उसे सौंपदिये कि वे होशियारहों यद्यपि खुदादाद अपने भाइयों से छोटाथा परंतु अपनी चतुरता से सबका हाकिमहुआ इस से वह सब उससे महाईर्षा रखनेलगे और शत्रु होगये और परस्पर कहने लगे कि हमारे पिताको क्या होगया जो इस बिदेशीको इतना प्यारकरताहै कि हम सबपर इसे हाकिम कियाहै हम कोई काम इसकी आज्ञाबिना नहीं करसक्ते यह बात हमें कदाचित् स्वीकार नहीं इसका कुछ यत्न किया चाहिये कि इस बिदेशीको यहांसे निकालें और इसे कोई दोष लगावें एकने कहा इसे अकेला पाय मारडालें दूसरे ने कहा इसभांति इसे बधकरना हमारेवास्ते अच्छा न होगा क्योंकि यहबात बादशाह से छिपी न रहेगी और वह हमारे प्राणका बैरी होजावेगा ईश्वरजाने हमारेसाथ क्याकरे इससे उत्तम यहहै कि इससे अहेरखेलनेकी आज्ञा लेकर किसी ओर को चलेजावें और किसी दूर देशमें हो रहें इससे हमारे पिताको बड़ाखेदहोगा निदान अप्रसन्न और चिंतायुक्तहो इसे मारडालेगा मेरे बिचारमें यह युक्ति उत्तम है उन सबने कहा निस्सन्देह यह मत अच्छाहै यहसमझ कर उन्होंने खुदादादके निकटजाय कहा यदि हमें आज्ञाहो तो हम सबभाई मिलके सैर तमाशा देखने और अहेर खेलनेजावें संध्यापर्यंत आजावेंगे खुदादाद ने कहा जाओ वह सबभाई अहेरका बहानाकर चलेगये और फिर न लौटे तीसरे दिन जब बादशाहने उन सबको न देखा तो खुदादादसे पूछने लगा कि क्या कारणहै कि मैं अपने पुत्रोंको नहीं देखता उसने बिनतीकी हेखुदाबन्द! तीनदिनबीते कि वह सब अहेरखेलनेको एक दिनके लिये छुट्टी लेकर गये आज तीसरादिनहै अबतक लौटकरनहीं आये इससे यह सेवक बड़ी चिन्तामेंहै जब बहुतदिन बीते और वह न फिरे बादशाह शोकयुक्तहुआ और क्रोधको थांभ खुदादादसे कहा हे बिदेशी! तूने इतना साहस किया कि मेरे पुत्रोंको अहेर खेलनेकी

आज्ञादी और आप उनकेसाथ न गया अब तेरेवास्ते उत्तम यहहै कि तू जा जहांजाने तुरन्त उनको ढूंढ़ला नहींतो निस्सन्देह तुझे बध करूंगा खुदादाद बादशाहके ऐसे बचनसुन डरा और शीघ्र तय्यार होकर घोड़ेपर सवारहुआ और शाहज़ादों के ढूंढ़ने को नगर छोड़ एक ओरको चला ग्राम ग्राम पुर पुर उनको ढूंढ़ताथा जबकहीं उन का चिह्नभी न पाया तो अत्यन्त शोकवान् होय कहनेलगा हे मेरे भाइयो! तुम्हें क्या होगया और तुमकहांहो किसी सबल बैरीके फंदे में तो नहीं पड़े जहांसे निकल नहींसके जबतक तुम मुझे न मिलोगे मैं हैरननगर में न जाऊंगा क्योंकि बादशाह को महाखेद होगा निदान वह बनबन ढूंढ़ता ढूंढ़ता एक महानिर्जन बनमें पहुँचा उस के मध्यमें कालेपत्थर का एक महल अतिसुन्दर बनाहुआ था यह फिरता फिरता उसमहलके नीचे जा खड़ाभया और क्या देखताहै कि एक महासुन्दरस्त्री अतिदुर्दशामें शिरके बालखोले उसीघरमें है और उसके सम्पूर्ण बस्त्र फटे और मुखकारंग पीला और महाचिन्ता से कुछ धीरे २ कह रही है खुदादादने कानदेसुना कि वह कहतीहै हे बटोही! इसस्थानसे भाग नहीं तो अभी इसघरके स्वामी से बहुत दुःख पावेगा इसघरका स्वामी जंगीक़ौमका मनुष्य भत्ती है जिन मनुष्यों की मृत्युनिकट पहुँचती है वही इसबनमें आतेहैं वह हत्यारा उनको पकड़ एकमहासूक्ष्म अँधियारे तहखानेमें उन्हें अपने भोजनके निमित्त रखताहै खुदादादने कहा हे सुन्दरी! मुझेबताओ कितुमकौन हो और कहांकी रहनेवालीहो उसनेकहा मैं कैरूं देशकी रहनेवालीहूं और बुग़दादको जातीथी कि इसकुलक्षण बनमें पहुँची और वहीं जंगी मुझे मिला उसने मेरेसमस्त सेवकों को मार मुझे इसी घर में रक्खाहै अब मैं जीनानहीं चाहती इससे मरनाभला क्योंकि वह ह-ब्शी मुझसे भोगकरने की इच्छारखता है अबतक मैंने उससे अपने को बचाया यदि मैं कल उसका कहना न मानूंगी तो वह मुझे निस्स-न्देह मारडालेगा अब मैं अपने प्राणसे हाथधोये बैठीहूं परन्तु तुम क्यों अपने प्राण देने यहां आयेहो शीघ्रभागो वह मुसाफिरोंके ढूंढ़ने को गयाहै अभी आताहोगा वह बहुतदूरसे बनको देखाकरताहै अभी

वहसुन्दरी बातेंकरतीथी कि इतने में वह हब्शी आयपहुँचा उसका बड़ास्थूल और उग्रस्वरूप था और बड़ेदृढ़ तुरकी घोड़ेपर सवार भारीखड्ग भुजामें लटकाये हुयेथा उसके सिवाय दूसरेकी सामर्थ्य न थी कि उसखड्गको उठासके खुदादाद उसके बिकरालरूपको देखके भयभीतहुआ और ईश्वरसे प्रार्थना की कि इस राक्षसको मारे फिर खड्गनिकाल सावधानहो बड़े साहस और दृढ़ता से उसके पहुँचने की बाट देखनेलगा जब वह समीप पहुँचा शाहज़ादेको निर्बलजान के युद्धकी इच्छा न की चाहताथा कि उसे जीता पकड़े खुदादाद ने उसके मनका बिचार जानलिया कि वह मुझसे युद्धकी इच्छा नहीं रखता शीघ्रही खड्ग उसके घुटनेपर ऐसामारा कि वह क्रोधमें आके घोरशब्द करनेलगा उसके चिल्लाने से सम्पूर्ण बन गूंजगया फिर उस हब्शीने झुलझुलाय ऐसेबेगसे खड्गमारा यदि वह अपनी और अपने घोड़ेकी चतुरता से खाली न देता तो साफ खीरेकी तरह दो टूकहोजाता जब उस हब्शीका वार खालीपड़ा तब खुदादादने झपटके ऐसी गदामारी कि उसका दाहिनाहाथ कटके गदासमेत धरती पर गिरपड़ा फिर एकक्षण पीछे बहुत घबरा गया और आसन उसका रिकाबसे छूटके पृथ्वीपर आ रहा खुदादादने तुरन्त घोड़े से उतर अपने शत्रुका शीशकाट फेंकदिया वह सुन्दरी खिड़कीसे यह बृत्तान्त देखतीथी और ईश्वर से उस बीरके लिये जयकी प्रार्थना करतीथी जब उस हब्शी को मराहुआ और खुदादादकी जय देखी महाप्रसन्न हुई और खुदादाद से पुकारके कहा ईश्वरका धन्यबाद है कि उसने इस महादुष्ट को तुम्हारेद्वारा बिनाशकिया अब तुम मेरे निकटआवो और इसकी कुंजियां वह अपने पास रक्खा करताथा लेके द्वारखोलो खुदादाद ने उसके जेबसे बहुतसी कुंजियों का गुच्छा निकाल द्वार खोला और जहां वह सुन्दरी बैठीहुई थी गया उसने उसे आते देख अगवानी की और चाहा कि उसके चरणोंपर गिरपड़ें परन्तु खुदा-दादने उसे झुकनेभी न दिया इसके अनन्तर उसने इसकी प्रशंसा की और कहनेलगी तुम्हारे समान योधा संसारभर में नहीं वह सु-न्दरी पाससे ऐसी रूपवान् देखपड़ी कि वैसीदूर से न देखपड़ी थी

चित्र खुदादाद और हब्शी का जंग में और शहज़ादी का खिड़की से देखना



खुदादाद उसे देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ फिर वह परस्परबैठ बार्त्ता करनेलगे इतने में अकस्मात् रोनेपीटनेका शब्द सुनपड़ा खुदादा-दने पूछा यह शब्द किसकाहै और कहांसे आताहै उसने एक द्वार की ओर जो उस घरके नीचे था सैनसे कहा यहांसे यह शब्द आता है इस स्थान में बहुतसे मनुष्य अभाग्यतासे इस हब्शी के हाथ में पड़े सो इसीजगह में हैं प्रतिदिन वह एकको भूनखाता था खुदा-दादने कहा मैं उनको निकालना चाहताहूँ चलो मुझे बताओ कि वह किसमकान में बन्द हैं फिर वे वहींगये और एककुंजी कुफलमें लगाकर उसे खोलनाचाहा परन्तु वह न लगी तब उसने दूसरी कुंजीलगाई कि इतने में वह अधिक शोर करनेलगे खुदादादको म-हाखेद भया कि ये इतने क्यों अधीर होते हैं उस सुन्दरीने कहा हमारे पांवकी आहट और कुफल की खड़खड़ाहट से जानते हैं कि वही दुष्ट आयाहै हममें से एकको भूनकर भक्षणकरेगा सब यही बि-चारते हैं कि आज मुझे भूनके भोजनकरेगा इसहेतु भयसे सबके सब घबराते हैं और बहुतशोर मचाते हैं तहखाने में से उनका शब्द ऐसासुनाई देता था मानो वह कुवेंमें से बोलरहे हैं निदान जब उसने द्वारखोला तो बहुतसी सीढ़ियोंका ज़ीना दृष्टिपड़ा उस सीढ़ीसे उतर वहां पहुँचा तो वहां बड़ा अँधियाराथा और सूक्ष्मस्थान पाया उसमें सौ मनुष्यों से अधिक थे और हरएक के हाथ बेड़ियोंसे बँधेहुये थे खुदादाद ने कहा अबतुम भय मतकरो तुम्हारे शत्रु को मैंने प्राण से मारडाला अब ईश्वरका धन्यबाद करो कि उसने तुम्हारे बैरीका बि-नाशकिया वे सब इसबातको सुनतेही महाहर्षित भये फिर दोनों उन की हथकड़ी बेड़ी खोलनेलगे जो बेड़ियों से छुड़ाये जातेथे वह शा-हज़ादे की सहायता करते थे निदान क्षणमात्रमें सबको खोल वहांसे बाहर निकाला तब सबोंने खुदादाद के चरणचूमे और उसे आशी-र्बाददिया जब वह सबदालानमें जहां भलीभांति सूर्य्यका प्रकाश था आये तो उनके मध्यमें खुदादाद ने अपने भाइयों को जिनके ढूंढ़ने के लिये निकला था देख आश्चर्य्य किया और उनसे कहनेलगा उस ईश्वर सच्चिदानन्दका धन्यबादहै कि तुमसब मुझे जीते मिले

तुम्हारा पिता तुम्हारे बियोगमें महादुःखित होरहा है भला तुम में से किसीको उस दुष्टने तो नहीं खाया फिर अपने समस्त भाइयोंको गिनके उस समूह से न्यारा किया वह प्रसन्नता से परस्पर कण्ठ से लगे पुनि खुदादाद ने भलीभांति सबों को भोजन कराया और बहुत सी बस्तु जो उसक़िले में ईरानके क़ालीन और चीनकी साटन और कमख़ाब आदिके थानादिक उसदुष्टने व्यापारियों के लूटके इकट्ठे कियेथे सबकोदिये और जो जो उनकाथा सोसो उनको देडाला फिर कहा जो जो गठरी जिस जिस की हो पहिचान के लेले बाकी बस्तु सबको बांटदी और यथावस्थित सबको प्रसन्नकरके फिर उन से कहा तुम इस असबाबको क्योंकर लेजावोगे सवारी इस निर्जीव बनमें कहां मिलेगी उन्होंने कहा यह हब्शी हमारे ऊंटभी लूटकर लायाथा वह इस क़िले के पशुशाला में होंगे फिर खुदादाद सबके साथ वहांगया तो वहां सो ऊंट और उन्हीं शाहज़ादोंक सोघोड़े बँधे हुयेथे उसने घोड़े और ऊंटोको जिसजिसकेथे देदिये उस पशुशाला में सैकड़ों गुलाम हब्शीथे उन्होंने सबको छूटाहुआ देख जाना वह हब्शी मारागया इससे भयभीतहो बनकी ओर भाग गये किसी ने उनका पीछा न किया फिर वह सब व्यापारी खुदादाद से बिदा हो अपने अपने देशको पधारे खुदादाद ने उस सुन्दरीसे कहा अबतुम किधर जावोगी और कहां से यह हब्शी तुमको लायाथा हमें बताओ तो हम वहां तुम्हें पहुँचादें निश्चय है यह सब हैरन के बादशाह के पुत्र तुम्हारे देशको जानते होंगे तो तुम्हें वहां पहुंचादेंगे उस सुन्दरी ने कहा मैं केरूंकी रहनेवालीहूं तुमने मेरेसाथ बड़ा उपकारकिया कि इस महादुष्टसे मेरा प्राण और धर्म्म बचाया अब मैं तुमसे अपना बृत्तान्त नहीं छिपातीहूं मैं बड़ेबादशाह की पुत्रीहूं उसको पकड़ एक दुष्टने मार डाला और उसका मुल्क छीनालिया मैं अपने प्राण और प्रतिष्ठाको बचाके वहांसे भागी यह बात सुन खुदादाद और उसके सब भ्राताओं ने उसे धैर्य्य दे कहा हे सुन्दरी! अब तुम आनन्द से रहोगी किसीभांतिसे तुम्हें दुःख न होगा तुम अपना सबबृत्तान्तकहो जब उसने देखा कि बे कहे नहीं बनपड़ता तब इसभांति कहनेलगी॥

## दरियाबार नामक शाहज़ादी की कहानी ॥

एकद्वीप में दरियाबार नाम बड़ा नगर है उसका बादशाह बड़ा प्रतापी था सन्तान न होने से सदा चिंतित रहता और ईश्वर से प्रार्थना करता बहुत काल पश्चात् उसके घर बेटी उत्पन्न भई सो वह मैं हीं अभागी हूं मेरे पिताने मेरे उत्पन्न होतेही बड़ा उत्सव मनाया जब मैं सयानी भई मुझे उसने लिखाया पढ़ाया और राज्य के प्रबंधादिक भलीभांति सिखाये इस प्रयोजनसे कि मेरे पीछे यही राज्य करेगी एकदिन मेरा पिता अहेरको गयाथा कि उसने बन में एक गोरखर के पीछे घोड़ा दौड़ाया और उसका इतना पीछाकिया कि सन्ध्या होगई और अपनी सेना से अलग होगया निदान थकितहोय घोड़े से उतर मार्गमें बैठा और बिचारनेलगा कि वह गोरखर थककर इसी स्थानपर आवेगा इसके अनन्तर बृक्षों के मध्यमें कुछ उजियाला देखा तो समझा कि यहां कोई ग्राम है वहां चल रात्रि बितानी चाहिये भोरभये समझ लियाजावेगा यह बिचार वहां से उठ उस प्रकाशकी ओर चला जब वह बहुत दूरतक गया तो क्या देखताहै कि वह प्रकाश एक घरसे जो घोरबनके मध्यमें है दिखाई देताहै फिर उसने दूरसे देखा कि अतिबिकरालरूप एक हब्शी राक्षसके सदृश उसघरमें बैठाहै और बहुतसी शराबकी ठिलियां सम्मुख रक्खी हैं और बैलके मांस को कोलोंकी आगपर भूनभून खाता है और ठिलियों से उठा उठा मदिरा पानकरता है उसी में उसने एक सुंदर स्त्रीको भी देखा कि रस्सीसे हाथ बँधेहुये एक कोनेमें महाचिन्ता से बैठी है और उस के चरणों के पास दो तीन बर्षका एक बालक बैठा हुआ माताकी दुर्दशा देख रुदन करता है मेरे पिताको यह बृत्तान्त देखतेही दया उपजी और बिचारने लगा कि इस दुष्ट को गदा से बधकरे परन्तु अवसर न पाय उसकी घातमें खड़ारहा इतने में राक्षस ने बैल का आधा मांस खाय सब ठिलियोंकी मदिरा पीली फिर उस स्त्रीसे कहने लगा हे सुन्दरी, मृगनयनी! शाहज़ादी! कबतक तू मुझ से अलग रहेगी और मेरा कहना न मानेगी देख तो मैं तेरा कितना सत्कार करता हूं और कितना तुझ पर मरता हूं तुझे भी उ-

चितहै कि तूभी प्यारकर उसने उत्तर दिया हे दुष्ट बनवासी ! तूक्या बकता है कभी ऐसा न होगा जितना तू चाहे मुझे दुःखदे वा मुझे प्राण से मारडाले मैं कदाचित् तुझ से प्रसन्न न हूंगी वह राक्षस यह बचन सुनतेही कुपित हुआ और उस चन्द्रमुखी को एक हाथ से पकड़ खड्ग उठाय चाहा कि उसका शिर काटडालें इतने में मेरे पिता ने एक तीर बड़े बेग से उसके हृदय में मारा कि छाती के पार होगया और उसी समय वह पृथ्वीपर गिर यमद्वारको गया फिर मेरे पिता ने घर में जाय उस सुंदरी के हाथ खोले और उससे पूंछा तू कौनहै और क्योंकर यह दुष्ट तुझे यहां लाया उसने कहा यहां से पासही समुद्र के तटपर सरासंग की जाति बनमनुष्यों के सदृश रहती है उसके बादशाह से मेरा विवाह भया और यही राक्षस जिसे तुमने अभी मारा है मेरे पिताका सभासद मुझपर मोहित था और यही इसकी इच्छा बनी रहतीथी कि अवसर पाय मुझे ले भागे सो एक दिन मेरेभर्त्ता को अचेतपा मुझे और मेरे बच्चेको वहांसे इस बन में भगालाया और प्रति दिवस मुझसे मैथुन की इच्छा रखताथा परन्तु अब तक ईश्वरने मुझे उससे बचाया मैंने अपने प्राणसे हाथ धोके उस से इस भांतिकी बार्ताकी तब उसने निराशहो मुझे मारना चाहा पर यह दुष्ट तुम्हारेही हाथ से नरकबासी भया मेरा यही बृत्तान्त था जो मैंने तुमसे कहा यह सुन मेरे पिताने उसको धैर्य्य दे कहा प्रभात को मैं तुझे इस निर्जन स्थानसे दरियाबार को लेजाऊंगा मैं वहांका बादशाह हूं यदि तुम्हें वह नगर पसन्दहुआ तो उसमें रहना उस सुन्दरीने यह स्वीकार किया दूसरे दिन भोर को मेरा पिता उस बन से उसको बालक समेत लेचला इतने में अकस्मात् उसके सरदार और सेवक और सेना सकल रात्रिको उसे ढूंढ़ते और चहुँओर दौड़ते फिरते थे वहां पहुँचे और बादशाहके दर्शन पाय महाहर्षित भये और उस सुन्दरी को बादशाह के साथ सवार देख आश्चर्य्य करनेलगे कि इस निर्जन बनमें ऐसी रूपवान् स्त्री कहांसे पाई बादशाहने सम्पूर्ण कहानी उनसे कह सुनाई फिर एकने उस सुन्दरीको अपने पीछे और दूसरेने उसके बालकको घोड़ेपर चढ़ालिया थोड़े कालमें मेरा पिता अपने महल में

पहुँचा और एकमन्दिर अतिसुन्दर महाबिशाल उस स्त्री के रहने को बनवादिया और उसके पुत्रको पढ़ानेलगा निदान वह सुन्दरी आनन्द पूर्ब्बक रहनेलगी बहुत कालबीता कि उसने अपने भर्त्तारका कुछभी समाचार न सुना फिर उसने मेरेपिताकेसाथ बिवाह करनेकी इच्छा की और अतिसुन्दर हावभावसे मेरेपिताको मोहितकर उससे बिवाह किया उसका पुत्र भी थोड़ेबर्षपीछे अच्छातरुण और सुन्दर निकला राज्यादिक कार्यों के बिशेष सर्व्वगुणों में अलंकृत भया उसे मेरेपिता और सम्पूर्ण सभासदोंने पसन्दकिया और सबके बिचारमें यह आया कि मेराब्याह उसके साथमें होवे और मेरेपिताकेपीछे गद्दी परबैठे वह यह अनुग्रह बादशाहकी अपने ऊपरदेख बिशेष ब्याहकी खबर सुन अतिप्रसन्नभया फिर एकदिन मेरे पिताने चाहा कि मेरा हाथ उसे पकड़ाके मुझे ब्याहदे परन्तु प्रथम उसने कई प्रतिज्ञाकी उनमें से एक यह थी कि दूसरीस्त्रीसे बिवाह न करे यहबात उस महा अहङ्कारी ने स्वीकार न की और समझा कि मुझे तुच्छसमझ यह प्रणकरतेहैं इसी हेतु बिवाह न भया इसबातसे वह अतिअप्रसन्न भया और मनमें मेरे पिता से शत्रुता रखने लगा निदान एकदिन अवसरपाय वह मेरे पिताको बधकर मेरे मारनेको महल में आया परन्तु मन्त्री यह खबर सुनतेही हितकी राहसे मुझको तुरन्त वहां से निकाल लेगया और गुप्त अपने एक मित्रके गृह में लेजाय रक्खा और दो दिनकी अवधि में जहाज़ तय्यारकराय मुझे और एक मेरी दासी को एक देशको कि उसका बादशाह मेरे पिताका मित्रथा लेचला प्रारब्धानुसार कई दिन पीछे ऐसा जल उमड़ा और प्रचण्ड बायुचली कि कप्तान और खलासी उसे देख मूर्च्छा खाय गिरपड़े निदान तरंगों के बेगसे जहाज टूकटूक होगया और उस अथाह जल में मन्त्री आदि सबके सब डूबगये परन्तु मैं एक पाटपर लहरोंके थपेड़ोंसे समुद्र के कूलपर आयलगी उस सच्चिदानन्द प्रभुने मुझे दुःखदिखानेको अपनी माया दिखाय अबतक जीतारक्खा जब मैं सावधानभई तो अपनेको तीरपर पाय ईश्वरका धन्यबादकिया परन्तु मन्त्री और अपने साथियोंको न देख जाना कि

वे जलमें डूबगये इसके अनन्तर अपने पिताका मरना यादकर महा बिलाप करनेलगी और किसी अपने सम्बन्धीको न देख बहुतघब- राई और यह बिचारा कि अब मैं भी इससमुद्रमें डूबमरूं इतनेमें अकस्मात् मनुष्य और घोड़ों का बड़ाशब्दसुना और क्या देखती हूं कि कई सवार शस्त्रसहित हैं उनके मध्यमें एक अतिस्वरूपवान् शाहज़ादा सुनहले वस्त्रपहिने और हीरेका पटुकाबांधे और शीशपर रत्नजटित मुकुट रक्खे आता है उन सबोंने मुझे वहां अकेला देख अचम्भा किया इसके अनन्तर उस शाहज़ादेने एक मनुष्यको मेरे समीप भेजा कि मुझसे मेरा हाल पूंछकर शाहज़ादेसे कहे उसने मु- झसे कितनाही पूंछा परन्तु मैंने उसे उत्तर न दिया और रोनेलगी जब उन्होंने बहुत से पाट जहाज़के तटपर देखे तो समझे कोई ज- हाज़ टूटगयाहै जिसकी ये लकड़ियां और पाट यहां बहआयेहैं यह सुन्दरी भी उसी जहाज़पर होगी और किसी तख़्ते पर यहां वह आई फिर उन सबों ने मुझे घेरलिया और नम्रतापूर्ब्बक पूंछने लगे कि मैं अपना बृत्तान्त उनसे कहूं जब मैंने उनसे कुछ न कहा तो शाहज़ादा अधीन होकर आपही मेरे निकट आया और सबको मेरे पाससे हटाके मुझसे कहा हे चन्द्रमुखी ! तुम किसीबातकी चिंता और भय मतकरो हम इस हेतु तेरा बृत्तान्त पूंछते हैं कि तुम्हें अपने मंदिरमें अपनी माताके निकट लेजावें वह हरप्रकार तेरी सेवाक- रेगी और तुमको प्रसन्नरक्खेगी मैंने उसेभला मनुष्य पायके अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया उसने सुनतेही अश्रुपात किये और बहुत पछिताया फिर मुझे धैर्य्यदे अपने साथ लेगया और अपनी माता को सौंपदिया मैंने उसकी मातासे भी अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त कहा उसने भी सुन खेदकिया और निशिदिन मेरा सन्मान करती रही और अपने पुत्रको मुझपरमोहित और अधीरदेख मेरा बिवाह उसके साथ करदिया मैंभी उसके रूप छबि अनूप और प्रीतिकोदेख प्रसन्न रही फिर बिवाहकी रीतें राजसी प्रकार से कीगईं भाग्य से कुछ उपाय नहीं चलता बरात की रात्रि जंगबारका बादशाह जो उस द्वीपके निकटही था और सदैव उससे युद्धकी इच्छा रखताथा अव-

सरपाय बड़ाकटक ले चढ़आया और उसनगर के बहुतसे मनुष्यों को मार मुझे और मेरे पतिके पकड़ने की इच्छाकी तो हम शीघ्रही उससे बचके रातोंरात समुद्र की ओर भागे वहां एक धीमर की डोंगी हाथलगी हम दोनों उसपर सवारहो चले दूरतक वह नाव जलधारा में पड़के एक ओरको बही जातीथी परन्तु यह मालूम न था कि भाग्य कहां लेजावेगा निदान तीसरे दिन देखा कि एक जहाज़ हमारी ओर चलाआता है उसे देख हम प्रसन्न हुये और जाना कि किसी ब्यापारी का जहाज़ होगा वह हमारी सहायताको आया है जब वह समीप पहुँचा तो उसमें से पांचसात डकैते नग्न गदा हाथों में लिये हमारी डोंगी पर चढ़आये और हम दोनों को बांध अपने जहाज़पर लेगये जब उन्होंने मेरे मुखपर से वस्त्र उतार देखा तो मुझपर सबके सब मोहित होगये और सबोंने चाहा कि इस सुन्दरी को मैंलूं बहुकालपर्य्यन्त वह परस्पर बादानुबाद करते रहे फिर एकक्षणमें परस्पर युद्धकर कटकर रहगये परन्तु एक मनुष्य जो सब से प्रबल था बचरहा मुझसे कहनेलगा मैं तुझे कैरूंनगर में लेजाय वहां एक अपने मित्रको दूंगा मैंने उससे एकदासीलादेने की प्रतिज्ञाकी है अनन्तर उसने कहा यह मनुष्य कौनहै तेरे कुटुम्ब में से है वा तुझपर मोहित है मैंने कहा यह मेरा पति है उसने कहा यदि ऐसाहै तो मैं इसे इसदुःखसे छुड़ाऊं क्योंकि यह तुझको मित्र के निकट क्योंकर देखसकेगा यह कह उस महादुष्ट ने मेरेभर्त्तारको उठाय उस अथाह जलमें उसीप्रकार बँधेहुये डाल दिया मैंने रोया पीटा और उसे बर्जा परन्तु कुछलाभ न भया और उसेजलमें डूबते देख चाहती थी कि मैं भी कूदूं परन्तु उसने तुरन्तही मुझको पकड़ लिया और मस्तूलकी रस्सीसे बांधरक्खा और जहाज़चलाया बायु तो अनुकूलही थी शीघ्रही एक छोटे नगरमें पहुँचे वह उस नगर के कई ऊंट डेरे और दास मोलले कैरूंको चला कईमंजिल पृथ्वीके मार्ग से चलेथे कि दैवयोग से इसीहब्शीने जो इस महलमें रहताथा हमें आके घेरलिया और दूर से उसेदेख हमने बड़ा ऊंचा मुनारासमझा जब निकट आया कठिनतासे उसे मनुष्य समझा फिर उसने

गदा निकाल उस डकैतसे कहा अपने हाथ कैदियोंके सदृशबांधकर अपने दासों और इस सुन्दरी समेत मेरेसाथ होले परन्तु धाड़ी ने बड़े साहस से दासों समेत उसका सामना किया बहुकाल पर्य्यन्त युद्ध होता रहा निदान वह दासों समेत मारागया फिर वह हब्शी मुझे और ऊंटोंको लुटेरेकी लोथ समेत भवन के भीतर लेगया और उस मृतकका मांस संध्या को भोजन किया फिर मुझेदेख कहा अब शोक और क्रोधको मन से दूरकर और इस स्वच्छक़िले में रहकर मुझसे आनन्द भोग परन्तु इससमय जो तुझे खेदहै इसहेतु आज तुझे कुछ न कहूंगा कल तुझसे बिहार करूंगा यह कह मुझे एक मकान में लेजाय रक्खा और आप द्वारमूंद दूसरे मकान में जाय अकेला सोरहा प्रभात को उठ उसने किवाड़ खोले और बिदेशियों के ढूंढ़नेको दूर निकलगया और खाली हाथ फिरा आताथा कि तुम से सामनाभया और तुम्हारे हाथों मारागया जब वह अपना वृत्तान्तकहचुकी खुदादादको उसपर दयाउपजी और उसे धैर्य्यदे कहा अब तुमको किसीभांतिकी चिन्ता वा भय न होगी ये बादशाह हैरनके पुत्रहैं जिसे चाहे स्वीकारकर तुम्हें अपने नगरमें जाय आनन्द से रक्खेंगे और इनका पिता सब भांति से तुम्हारी रक्षाकरेगा यदि तुम इनसे भी प्रसन्न नहीं तो फिर तुम उस मनुष्यको जिसने तुम्हें इसदुःखसे छुड़ाया बिवाहकरो यह बात उसने स्वीकार की सो वहीं बड़ी धूमधामसे ब्याहभया वहां सकल बस्तु खानेपीने फल, मदिरा आदिकी बर्त्तमानथीं खुदादादने अनेकप्रकार के ब्यंजन पकवाये और अपने भाइयों को खिलाये दूसरे दिन सबबस्तु अपने साथले वहांसे हैरननगरको सिधारे एक मंज़िल पहुँच अच्छी जगहदेख डेरे खड़ेकर उतरे जब एकही मंज़िल हैरननगरकी शेषरही रात्रि को भोजनकर उनसबोंने भलीभांति मद्यपानकी खुदादाद आनन्दित हो कहनेलगे मैंने अबतक अपने को तुम से छिपाया परन्तु अब मैं अपना हाल बर्णनकरताहूं मैंभी तुम्हारा एक भाईहूं अर्थात् हैरन के बादशाहका पुत्रहूं मुझेशाहज़ादे समेरनेपालाहै मेरीमाताकानाम पीरोज़है और दरियाबारसेभीकहा हे सुन्दरी! अबतक तुमको मेरीजाति

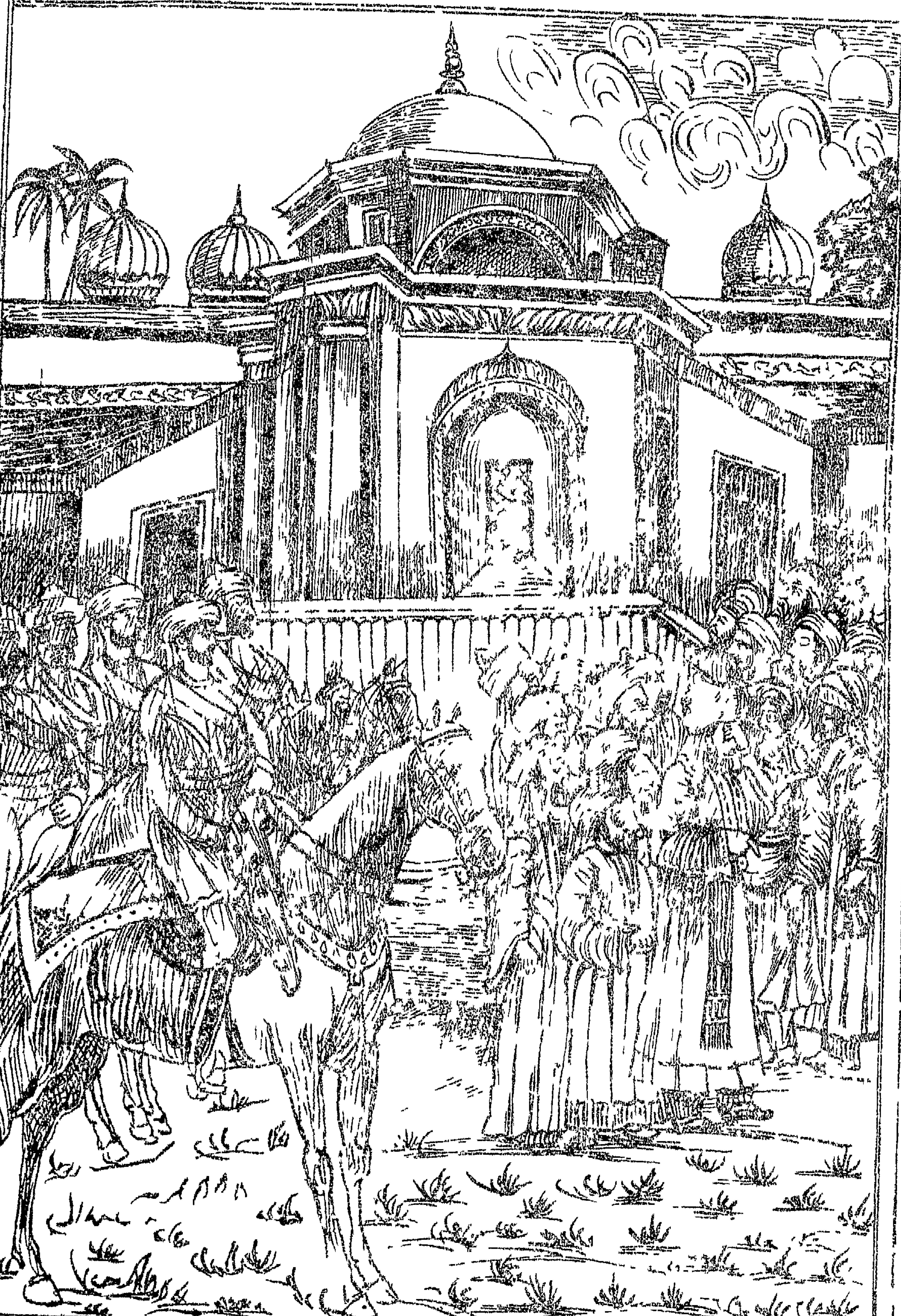
भाँति ज्ञात न थी। अब तुमभी प्रसन्नहो कि तुम्हारापतिभी शाहज़ादाहै उसने कहा यद्यपि तुमने मुझे अपना बृत्तान्त न कहाथा परन्तु मुझे पूर्वही निश्चयथा कि तुम किसीबड़े बादशाहके पुत्रहो वहसब शाह-ज़ादे उसके बचनसुन प्रकटमें तो प्रसन्नहुये परन्तु मनमें महाईर्षा से उनको यहबात बुरी मालूमहुई यहदुष्ट खुदादादके उपकारको भूल उसके मारनेका सोचकरनेलगे और इसीबातकेलिये परस्पर सम्मत करनेलगे एकने उनमें से कहा हमारापिता उसे बिदेशीसमझ इतना प्यारकरताथा कि हम सबको उसे स्वामी किया और जब जानेगा कि मेरापुत्रहै तो निश्चय उसे युवराजकरदेगा इसहेतु उत्तम यहहै कि इसे यहीं मारडालें यह बिचारकर वह सब उसकेडेरेके चहुँओर जाय गदामारनेलगे यहांतक कि खुदादाद को टुकड़े टुकड़ेकर अ-पने बिचारसे मारडाला दूसरे दिन प्रभात को हैरन में पहुँच बाद-शाह से भेंटकी बादशाह उनको कुशलपूर्वक देख बहुत प्रसन्न हुआ और उनसे बिलम्बका कारण पूछा उन्होंने हब्शी से पकड़ा जाना और खुदादादकी सहायता से छूटने का हाल तो न कहा किन्तु यह कहा हमें अहेरखेलते बिलम्ब भया बादशाह उनकी बातों को सत्य जान चुपकाहोरहा ॥ अब खुदादादका बृत्तान्त सुनो जब भोर को दरियाबार ने जागके देखा कि खुदादाद रुधिर में डूबा और अनेक घावोंसे घायल पड़ाहै देखतेही उसे मराहुआजान बिलापकरनेलगी और उसकी तरुणता और गुण कथनकर आंसुओं से नदी बहाई फिर जब ध्यानधर उसका मुखदेखा तो कुछकुछ उसके नथुनोंसे स्वर आताथा और शरीर उसका गर्मपाया तो डेरेके द्वारको मूंद नगरकी ओर जर्राह ढूंढ़नेगई और एक जर्राहको अपनेसाथ डेरेमें लाई वहां खुदादादको न पाया तो समझी कि कोई बन पशु इसेउठाय लेगया और खायगया यह बिचारकर इतनी रोई कि जर्राहको उसपर दया उपजी और उसे धैर्यदे नगरमें लेगया और एक अलग मकान उस के निवासको दे दो बांदियां उसके सेवार्थनियतकीं और बहुधा आप भी जाय उसकी बड़ी सेवा और सन्मानकरता एकदिन जर्राहने उसे किंचित् प्रसन्न पाय पूछा हे सुन्दरी! यदि तुम मुझे अपनी आपदा

और वृत्तान्त सुनाओ तो मैं अपनी सामर्थ्य भर तुम्हारी सहायता और परिश्रमकरूं उसने उसे चतुरजान अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त उससे कह सुनाया जर्राहने कहा हे मृगनयनी! यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम तुमको तुम्हारे बादशाह तक पहुँचाने का उपायकरें वह नीतिमान् है तुमको देख प्रसन्नहोगा और तुम्हारा बदला अपने पुत्रों से लेगा शाहज़ादी इसबातपर राज़ी हुई फिर जर्राहने दो ऊंट किराये के लिये और उनपर सवारहो हैरननगर में गया और एक सराय में उतर सरायवाले से नगरका वृत्तान्त पूंछा उसने कहा यहां के बादशाह का पुत्र अत्यन्त प्रतापी और पुरुषार्थी बहुत कालसे लोपहै उसका हाल कोई नहीं जानता कि उसे क्या हुआ जीता है वा मरगया पीरोज़ उसकी माताने उसे ढूंढ़ा परन्तु उसका ठिकाना न लगा उसके माता पिताके विशेष पुरके सब रईस उस शाहज़ादे की सुधिकर विलापकरते और पछताते हैं यद्यपि इसबादशाह के और उन्चास बेटे हैं परन्तु कोई भी उसकी वीरता और पुरुषार्थ को नहीं पहुँचता यद्यपि उसने बहुत ढूंढ़ा परन्तु कहीं उसका ठि-काना नहीं लगता जर्राह ने यह सुन यह हाल दरियाबार से कहा उसने चाहा कि खुदादादकी माताके निकट जाय अपने पति का हाल उससे कहे पर जर्राहने सोचके उससे कहा यदि तुम इसउपाय के लिये वहां पहुँचो और शाहज़ादे तुम्हारे आगमन का समाचार सुनेंगे तो तुमको मारडालेंगे तुम्हारे प्राणकी व्यर्थ हानि हो इस से उत्तम यह है कि प्रथम मैं किसीभांति खुदादाद की माता के समीप पहुंचूं तदनन्तर तुम्हें बुलाऊं जबतक तुम यहीं बैठीरहो यह कह वह तो पुरकी ओर गया मार्गान्तर में एक स्त्री को ऊंटपर सवारदेखा जिसकासाज अति स्वच्छथा उसकेपीछे बहुतसी बांदियां और अनेक दास और प्यादे एक ओर से चले आते हैं पुरवासी उससुन्दरीको सवारदेखतेही दोनोंओर अगवानी के लिये पंक्ति बांध खड़ेहोगये जर्राहने भी उनसबके साथ उसेदण्डवत्की एक मनुष्यसे पूंछा यह तो कहींकीमलकामालूमहोती है. उसनेकहा निस्संदेह यहां के मनुष्य इसे बहुतसाप्यार करतेहैं क्योंकि यह खुदादादकी माताहै

निश्चय तुमने उसका बृत्तान्त सुनाहोगा वह यह बचन सुनतेही सवारी के साथ लगाहुआ चलागया इतने में उस सुन्दरी ने किसी मसजिद् में पहुँच ईश्वरकी बन्दनाकी और बहुतसी अशरफ़ियां रुपये पुण्य किये क्योंकि बादशाहने प्रतिज्ञाकी थी कि खुदादाद के लौटनेतक उसकी माता याचक और मंगनों को बहुत दानकरे कि याचक उसके पुत्रकेप्राणको आशीर्ब्बाददें तदनन्तर जर्राहने भीड़में पैठ उसके एक दास से कहा भाई हमको एकबात इससमय अवश्य मलकासे कहनी है उसने उत्तरदिया यदि तुझे कुछ समाचार खुदादाद का कहनाहै तो जावो वह निस्सन्देह सुनेगी यदि कोई दूसरा मनोरथ है तो कठिनहै इनदिनों वह अपने पुत्र के बियोग में बिकल है जर्राहने उसके कानमें कहा मैं कुछ उसी के लाभकी बात कहूंगा दासने कहा यदि ऐसाहै तो तू चुपका शाही महलपर्य्यंत सवारी के साथ लगा चलाजा निदान जब पीरोज़ मन्दिरतक पहुँची उसीदास ने उससे बिनयकी एकबिदेशी आपसे एकान्तमें कुछ कहा चाहता है पीरोज़ ने उससे कहा उसे लेआ तदनन्तर वह उसे सम्मुख लेगया पीरोज़ने उसे कृपादृष्टिसे आगे बुलवाया जर्राहने पृथ्वी चूम बिनयकी मैं बड़ी कथा आपसे कहा चाहताहूं तुम उसे सुन बिस्मित होगी तदनन्तर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त खुदादादका कह सुनाया पीरोज़ अपने पुत्रके घायल होनेका हाल सुनके मूर्च्छाखाय गिरपड़ी बांदियोंने दौड़के उठाया और उसपर गुलाब नीरछिड़का जब सचेत भई तो जर्राहसे कहनेलगी तुमजाय दरियाबारको मेरी और बादशाहकी ओरसे धैर्य्यदो फिर उसे बिदाकर अपने पुत्रकी सुधिकर बिलाप करती थी कि अकस्मात् उस महल में बादशाह आये और पीरोज़को इसभांति रुदन करते देख हेतु पूछा उसने जो कुछ जर्राहसे सुनाथा बर्णन किया बादशाह सुनतेही अपने पुत्रों से महा अप्रसन्न भया तदनन्तर वहां से उठ सभा में आया सम्पूर्ण सभा बादशाहको कोधितदेख भयभीत भई बादशाहने तख़्तपर बिराजमानहो वज़ीरको आज्ञादी कि तत्काल मेरे चौकी पहरे के हज़ार चपरासी लेजाय उञ्चासों पुत्रोंको पकड़के लेआ और उसी बन्दी

गृह में जहां खूनी बँधे रहतेहैं क़ैदकर चैतन्यरह कोई उनमें से नि-
कलके न जानेपावे मंत्री ने यह आज्ञापाय उन सबको पकड़ बन्दी-
गृहमें डालदिया और बादशाहसे आय कहदिया बादशाहने सभी
को बिदाकर कहा एकमासपर्य्यन्त मुझे सभा करने का अवकाश
नहीं तुम एकमहीने पीछे आना फिर वहांसे उठ मंत्री को अपनेसाथ
लियेहुये पीरोज़ के महल में आया और मन्त्री को आज्ञादी कि तू
सराय में जाय दरियाबार शाहज़ादीको जर्राह सहित बड़े सत्कार
से मेरे निकटला मन्त्री ने उसी समय एक सफ़ेद ऊंट जिसकी सब
सामग्री रत्नजटित थी बादशाह के पशुशाला में लेलिया और
आप घोड़ेपर सवार हो बहुतसी सेना ले वहां पहुँचा और बाद-
शाहकी ओरसे उसे सबकुछकहा और उसी ऊंटपर सवारकराय और
उसको तुरकी घोड़ेपरचढ़ाय बड़ीधूमधाम से महलकी ओर ले चला
पुरबासी उसकी सवारी और जलूस देखनेको दूरदूर से दौड़आये
फिर सबको बिदितहुआ कि यहसवारी खुदादादकीस्त्री दरियाबार
शाहज़ादी की है वह सब बहुत प्रसन्न भये और उन्हें निश्चयहुआ
कि इससे खुदादाद का ठिकाना लगेगा निदान जब उसकी सवारी
महलके द्वारतक पहुँची बादशाह उसकी अगवानी को आया उसने
अपने बाहन से उतर बादशाह के चरणचूमे बादशाह उसका हाथ
पकड़ पीरोज़ मलकाके घर लेगया तदनन्तर वह तीनों परस्पर क-
ण्ठसे लग बहुत रोये कि हिचकियां लगगईं जब वह सावधान हुये
तब दरियाबारने बादशाहसे बिनयकी मैं आशारखतीहूं कि जिन्होंने
मेरे पतिको निर्दोष इस निर्दयता से बधकिया उनसे उनका बदला
लिया चाहिये यहसुन बादशाहने कहा हे सुन्दरी! तुम भरोसा रक्खो
मैं इनसब पुत्रोंको मारडालूंगा पुनि बादशाह कहनेलगा यद्यपि मैंने
अपने प्रियपुत्र खुदादादकी लोथनहीं पाई परन्तु उसकी बड़ाई के
वास्ते अवश्य है कि एक मक़बरा उसका बनवाऊं तदनन्तर मन्त्री
को बुलवाय आज्ञादी कि नगरके मध्यमें एकमक़बरा सफ़ेद संगम-
रमरका तत्काल तय्यारहो मन्त्री ने मेमारों को बुलवाय एक उत्तम
स्थान में बड़ाभारी मक़बरा बनवाया और उसके मध्यमें खुदादाद

मिरखुदादादके मक़बरेपरसवारों और फ़क़ीरों औरस्त्रियों औरबादशाहका शोककरना ॥



का चित्र खिंचवाय रक्खा बादशाह को जब क़बरकी तय्यारी की ख़बर पहुँची उसने एकदिन उसके रोनेपीटने और कुरान पढ़ने के लिये नियत किया जब वह दिन आनपहुँचा सम्पूर्ण पुरवासी देखने को एकत्र भये बादशाह अपने समस्त सभासदों और मन्त्री के साथ वहां पहुँचा और फ़र्शपर जो कालीसाटन सुनहली बूटीका बिछा हुआ था बैठा थोड़ी देर पीछे सवारों का रिसाला कि उनके शिर नीचे और नेत्र कुछ खुले और कुछ मूंदेहुये थे पहुँचा और दो बेर उस क़बर की परिक्रमा कर तीसरी बेर उसके सम्मुख खड़े भये और बड़ा शब्द कर कहने लगे हे बादशाह के पुत्र ! यदि हमारे खड्गबेग और भुजबलसे तुम्हारा छुटकाराहो तो हम प्राण सहित विद्यमान हैं यदि ईश्वरकी कोई दूसरी आज्ञाहै तो हम निरुपाय हैं यह कह वह जिधर से आयेथे तिधर चलेगये तदनन्तर कुटी के रहनेवाले सौ वृद्ध जिन्हों ने केवल अपनी आयु में ईश्वराराधन किया और कभी मनुष्यका रूपभी न देखाथा आये उनमें से एक शिरपर बड़ीभारी पुस्तक रक्खे और उसको अपने एकहाथ से थांभे सबके प्रथम था वह सब तीनबेर परिक्रमाकर मध्यमें खड़ेहोगये एकने उनमें से बड़े शब्दसे कहा यदि हमारे आशीर्व्वाद से तुम्हारा छुटकारा वा प्राण बचें तो हमभी मौजूद हैं यह कह वह भी चलेगये तदनन्तर पचास स्त्रियां अति रूपवान् छवि धाम चन्द्रमुखी मृगनयनी रत्नजटित अतिसुन्दर सफ़ेद टांघनोंपर सवार और शिरोंपर रत्नोंकी टोकरियां भरीहुई लिये उसीप्रकार मक़बरे के चहुँओर फिरीं तदनन्तर सामने आईं उनमें से एक जो सबसे छोटीथी बड़े शब्दसे कहनेलगी अय शाहज़ादे यदि हमारा रूप अनूप तुम्हारे काम आवे तो हम मौजूदहैं हमसब तुम्हारी दासियां हैं परन्तु तुम जानतेहो इस स्थानपर कुछ सुन्दरता भी काम नहीं आती यह कह और आशीर्व्वाद दे चलीगईं तदनन्तर बादशाह और उस के साथियों ने तीनबेर परिक्रमा की और बादशाह खड़ाहो कहने लगा हे मेरे पुत्र! मेरे नेत्र तेरे बियोग में ज्योतिहीन होरहे हैं उनमें प्रकाश कर इस विधि की वार्त्ता कर रोनेलगा और उसके साथियों ने भी

महा विलाप किया जब निश्चिन्त भये बादशाह सभासदों सहित महलमें आया और मक़बरे का दरवाज़ा मूंदागया फिर प्रतिसप्ताह एक दिन वहां जाता और शोक करता तदनन्तर बादशाह ने उन्चासों पुत्रोंको बदलालेने की आज्ञा दी यह समाचार नगरभरमें प्रसिद्ध हुआ और उनके फांसी की सामग्री तय्यार भई संयोगबश क्या सुनपड़ा कि एक शत्रु बादशाह का जिसे उसने पहिले परास्त किया था बहुतसा कटक लिये नगरके निकट पहुँचा बादशाह इस समाचारको सुन बहुत घबड़ाया और सम्पूर्ण सभासदभी व्याकुल हो कहनेलगे बड़ाखेद और पश्चात्ताप है यदि शाहज़ादा खुदादाद इस समयपर जीता होता तो इस बैरीको क्षणभर में परास्त करता निदान बादशाह आपही अपनी सेना साथले पुरसे बाहर निकला और तय्यारी भागजाने की भी कर रक्खी थी कि जिस समय पर शत्रु प्रबल होगा तो नदके मार्गसे और किसीदेशको निकल जाऊंगा निदान जब दोनों कटक सम्मुख भये और शत्रुकी सेना चहुँओर से इन्हें घेरा चाहती थी कि बिनाशकरें कि अकस्मात् बहुत सवारों की सेना प्रकटहुई दोनोंओरके बादशाह उनकी चातुरता देख आश्चर्यितहुये और न जाना यह कटक किसकी ओरकाहै जब वह सेना निकट पहुँची तो हैरन के बादशाह के शत्रुओंपर चढ़गई और पर सेनाको मारकर टूक२करडाला हैरन यह दशा देख बिस्मित हुआ और ईश्वरका धन्यबाद किया और अपने सेवकों से कहा इससेना के अधिपति का नाम पूछो कि यह कौनहै और कहांसे आया जब दुश्मन की सेना मारीगई और जो कुछ बची अपना २ प्राणलेकर इधर उधर भागगई तब खुदादाद हैरनके बादशाहकी भेंट के लिये आया जब वह दोनों सम्मुख हुये बादशाह ने उसे पहिंचान लिया कि यह मेरा प्यारा पुत्र खुदादादहै तो इतना हर्षितहुआ जिसका वर्णन नहीं होसक्ता खुदादाद ने कहा जिसको आप ने सुनाथा मारागया वह मैं हूं ईश्वर ने मुझे आजके दिनके लिये जीता रक्खा कि आपकी सेवा करूं और आपके बैरी को मारूं बादशाह ने कहा हे मेरे प्यारे पुत्र! मैं तुझसे निराश था तेरे मिलनेकी मुझे कब आशा

थी कि फिर तुझे जीता देखूं निदान वह दोनों पिता पुत्र बाहनों से उतर परस्पर छाती से मिले पुनि बादशाहने उसकाहाथ पकड़ कर कहा मुझे तेरी बीरता प्रथम से ज्ञातहोचुकी है विशेष मनुष्य-भक्षी हब्शी से छुड़ाना और अपने भाइयों से दुःखपाने का हाल भलीभांति बिदित है अब अपनी माता के निकट चलो वह तुम्हारे शोक में रोते रोते ब्याकुल है उसमें केवल हड्डियां रहगई हैं और तुम्हारे हाथसे जीत होनेका समाचारसुन प्रसन्नहोगी मार्गान्तर में खुदादाद ने बादशाह से पूछा हे पिता! आपको उस दुष्ट हब्शीका बृत्तान्त क्योंकर मालूमहुआ किसी मेरे भ्राताने आपसे बर्णनकिया होगा बादशाहने कहा नहीं किन्तु दरियाबारसे मैंने सब बृत्तान्तसुना वह बहुतकाल से हमारे पास रहती है और तुम्हारे भाइयों से बद-लालेनेको कहतीहै खुदादाद ने यह सुना कि दरियाबारभी यहीं है महाप्रसन्नभया दूसरेदिन खुदादाद के सलामत आनेका हाल नगर भर में पहुँचा निदान घर घर उत्सव होनेलगा ठौर ठौर नृत्य गीत आदिमें मङ्गल होनेलगे फ़ीरोज़ और दरियाबार खुदादाद के कण्ठ से लगगोई फिर वह चारों एकही ठौर बैठ इधर उधरकी बार्ताकरने लगे इतने में बादशाह और उन दोनों को यह आश्चर्य हुआ कि खुदादाद इतने भारी घावों के खानेपर भी क्योंकर जीतारहा सो बादशाहकी आज्ञानुकूल खुदादाद ने कहा प्रभातको डेरे में कहीं से एक किसान आया मुझे घायल और रुधिरसेभरे देख ऊंटपर सवार कर अपने घर लेगया और बनकी बूटियांपीस घावपर लगाईं सो घाव तत्काल भरआये और थोड़ेही दिनों में आरोग्य होगया तब मैं इस नगर की ओर सिधारा मार्गान्तर में शत्रुकी असंख्य सेना देखी कि हैरन के मारने को जाती है मैंने यह बृत्तान्त ग्रामबासियों से कहकर उनसे सहायता मांगी और बहुत से मनुष्यों को एकत्रकर उनका अधिपति बना और तत्काल अवसर पर पहुँचा और आपके प्रताप से बैरियों को परास्तकिया बादशाहने खुदादाद की बड़ी प्रशंसा की पुनि कहनेलगा उन सब शाहजादों को मारने की आज्ञा देताहूँ जिन्होंने तुमसे ऐसा अपकार किया उसनें बिनय

की यद्यपि वह इसीदण्ड के योग्यहैं परन्तु आपहीके पुत्र और मेरे भाई हैं मैंने उनका अपराध क्षमाकिया आशारखताहूं कि आप भी उनका अपराध क्षमाकरेंगे बादशाहने खुदादादके कहनेसे उन सब का अपराध क्षमाकिया और समस्त सभासदोंको इकट्ठाकर खुदादादको अपना युवराजकिया और उन्चासोंपुत्रों को अपने सम्मुख बुलवाया वह सब उसीदशासे बँधेहुये आये खुदादाद सबकी बेड़ियां और हथकड़ियां कटवाकरके गलेसे मिला औरसबसेप्रीति करनेलगा जैसे कि उनसे हब्शी के मंदिरमें प्यारकियाथा पुरवासियोंने उसकी सुशीलतापर धन्य धन्य कहा इसकेअनन्तर उसजर्राहको पारितोषिक और द्रव्यादिक दे बिदाकिया मलका शहरज़ादने यह पूरी कहानी शहरयार बादशाहसे कही यदि आप सोते जागतेकी कहानी सुनेंगे तो अतिप्रसन्नहोंगे इतनेमें दुनियाज़ादने पूर्ब्ववत्कहा क्या उत्तम बृत्तान्त तुमने सुनाया अबकुछ और कहो उसने कहा अब तो प्रभात होगया जो कल मेरेप्राण बचेंगे तो एक अद्भुत कहानी सोते जागते की कहूंगी शहरयारने कहनेकी आज्ञादी सो इसभांति कहनेलगी ॥

## खलीफ़ा हारूंरशीद और सोतेजागते की कहानी ॥

हारूंरशीद खलीफ़ाकी सल्तनत में एकबड़ाब्यापारी बग़दाद में रहताथा उसके केवल एकही पुत्र अबुलहसननामक अपनी ब्याहता स्त्रीसे उत्पन्नहुआ था उसने बड़ेपरिश्रमसे अपनी आयुभर में बहुतसा द्रब्य संचयकिया परन्तु बड़ा कञ्जूसथा जब वह मरगया अबुलहसन अपने पिता के बिपरीत बहुत खर्च करनेलगा धीरे धीरे अपने इष्ट मित्रोंको इतनादिया कि वह सब धनवान् होगये इसके अनन्तर उसने अपने शेषद्रब्यके दोभागकिये एक में नगर के घर मोललिये जिनका किराया उसकी आयुभर को काफ़ी था और द्वितीयभागसे अपना खर्चचलाता बहुधा उसके साथ मित्ररहते और सदैव इन्द्रके सदृश सभा रहती और रातदिन वह सब अबुलहसन के साथ उत्तम भोजन करते जब भोजन तय्यार होता रंग बरंगे उत्तम उत्तम पात्र जिनमें नानाप्रकारकी चित्रकारियां खिंचीथीं बिछाये जाते और बेश्याओं के नृत्यगीत रातदिनदेखते और भांड़ नक़ाल

हरदिन अनेकभांति की उस के सम्मुख नक़लें और तमाशे करते इसी प्रकार अबुल्हसन ने एकही बर्षमें अपने पिता का सम्पूर्ण द्रब्य खर्च करडाला जब उसे खिलाने पिलानेकी सामर्थ्य न रही मित्रोंने भी उसके घर आना जाना छोड़दिया किंतु मार्गमें कदापि किसीका सामना होता तो वह उसकी ओरसे मुखफेर आंखें चुराता और जो कोई उनमेंसे मिलता और अबुल्हसन उसे ठहराता तो वह कुछ बहानाकर चलाजाता वह उन झूंठे मित्रोंकी अशीलतासे बिस्मित भया और मनमें पछताता कि जिनकी प्रसन्नता के लिये मैंने निर्बुद्धितासे अपना सर्व धन खर्च किया उन के शीलकी यह दशाहै निदान महाखेदितभया एकदिन अपनी माताके निकटगया और शोकवान्हो बैठा माताने उसे चिन्तित देख पूंछा हे प्यारे पुत्र! तेरी यह क्या दशाभई मैं सर्वदा तेरा चित्तप्रसन्न देखती थी आज तू क्यों उदासीनहै जान पड़ताहै कि तूने अपने पिताका द्रब्य उड़ा डाला मैं तेरा चलनदेख पहिलेसे जानतीथी कि तू शीघ्रही निर्द्धन होगा परन्तु तौभी जानतीथी कि कुछतो बचावेगा परन्तु मुझे मालूमहुआ कि तूने कुछ न रक्खा सब लुच्चों और दुष्टोंको अपनामित्र बनाय खिलादिया अब इसदुःखमें कौन काम आताहै वह अपनीमाता के ये बचनसुन रोदिया और उन अपनेमित्रोंके निकटगया जिनपर निश्चय रखताथा और उनसे ऋणकीतौरपर मांगा वह तो उसीसे धनपाय अपना भलीभांति निर्वाह करतेथे सबोंने इन्कारकिया ऐसे बनगये जानों कभी की जानपहिचान न थी अत्यन्त अशीलता से साफ़ जवाबदिया वह उनसे निराशहोय माताके निकटआया और कहनेलगा तुमने सत्य कहा था वास्तव में वह सब दुष्ट स्वार्थी थे निदान उसे भली भांति उन स्वार्थी मित्रोंका बृत्तांत ज्ञातभया तब प्रतिज्ञाकी कि कभीभी बुगदादके बासियोंसे मित्रता न करूंगा अपनी शेषबस्तुओंको बेंच थोड़ाद्रब्यइकट्ठाकिया और उसे थोड़ाथोड़ाखर्च करनेलगा केवल एक बिदेशीको अपने घर लेआता रात्रिको उसके साथ भोजनकरके और आधीराततक उससे मित्रवत् बार्त्ता करता और प्रभातको उसे बिदाकरता दूसरे दिन दूसरे को बुलाता और

इसीभांतिव्यवहार रखता और भोरकोभोजन पकवाय पांच चार घड़ी दिनरहे बुग़दाद के पुलपर बिदेशियोंकी ढूंढ़में जाय बैठता और रात्रिको उसका सन्मान करता और बातोंमें अपना मन बहलाता और सुबहको उसे बिदाकर कहता अब तुम कभी मेरेघरमें न आना और न मुझसे भेंटकरना निदान मित्रोंकी मित्रतासे उसका ऐसा विश्वास जातारहा कि वह अधिकभेंटसे भागता और उसे यही स्वभाव पड़गयाथा कि मेहमानके बिना उसे भोजनमें स्वाद न लगता इसलिये यह बातठहराई कि केवल दोपहर बिदेशियोंका सन्मान करता और दूसरेदिन फिर उसे न बुलाता जो कभी कोई उससे मिलता तो उसकी ओर नेत्रभी उठाके न देखता बरन प्रणामका उत्तर भी न देता एकदिन अबुल्हसन अपनी प्रकृति के अनुकूल बुग़दादके पुल पर बैठाथा कि उसदिन ख़लीफ़ा हारूंरशीदसे उसकी भेंटहुई परन्तु ख़लीफ़ाने अपनाबेष ऐसा बदलाथा कि कुछभी न पहिचाना जाता यद्यपि उसके साथ बहुतसे मंत्री और सेवक थे और वह सब राति दिन नगरकीरक्षा करतेथे तथापि ख़लीफ़ा आपभी बेषबदल नगर काहाल मालूमकरनेकेलिये निकलता ख़लीफ़ाने इस बिषयके लिये यह नियम कियाथा कि मासकी पहिली तिथि को संध्यासे बुग़दाद के मार्गोंमें बेषबदलकर निकलता और नगरका बुराभला देखता सो मवस्सलके रहनेवालों के बेषसे निकला उसके साथ महाबलवन्त दासभीथा अबुल्हसन उसेदेख समझा कि यह कोई मवस्सल का ब्यापारी है तुरन्त उसके बराबरजाय प्रणाम किया पुनि बिनयकी कि कृपाकरके आजकी रात मेरेघर बिश्राम कीजिये और मेरे सूक्ष्मभोजनको खाय मुझे कृतार्थकीजिये निदान उस बिदेशीको कि बास्तवमें वह ख़लीफ़ाथा अपने घरमें लेआया मार्गान्तरमें अपनी प्रकृतिको उससे प्रकटकिया ख़लीफ़ा उसके भोले और सुन्दरबचन सुन समझा कि इसका हालभी मालूम करनाचाहिये इसलिये उसके साथहोलिया उसने उसे अपने घरमें लेजाय अतिस्वच्छ स्थान में जो महासुन्दर शीशे आदि बस्तुओं से अलंकृतथा मसनद पर बैठाया इसके अनन्तर उत्तम उत्तम बर्तन बिछाकर अनेकभांति

के सुन्दर पाक उसपर परसदिये उसकी माता पाकक्रिया में अद्वितीयथी और अपने पुत्रकी प्रीति से आपही श्रमकरती सो उसदिन तीनपात्र पाकके लाई एकमें कई कुक्कुटका मांस धराहुआ और दूसरे भाजन में अतिउत्तम भुनाहुआ मांस तीसरे में कबूतरका मांस था वह सब भोजन इतनाथा कि उसे कई मनुष्य खाकर तृप्तहोते अबुलहसन ख़लीफ़ा के सम्मुख हो बैठा और भोजन करनेलगा जब तृप्तहुये ख़लीफ़ा के दासने जलभरा पात्रलाय उसके हाथ धुलाये जब पात्र उठाये गये अबुलहसन की माताने पात्रों में फल बादाम आदिक लगाय उनके सामनेरक्खे जब सायंकाल हुआ अबुलहसन दीपक जलाकर स्वच्छ मद्य के शीशे और गिलासलाये और माता से कहा इस मनुष्य के सेवकको भलीभांति भोजन कराना फिर उसने मदिराका पात्रभर ख़लीफ़ा को दिया तत्पश्चात् आप पीगया इसी भांति ख़लीफ़ाने भी उसे पिलाया फिर आप पीगया इसीप्रकार वह दोनों मद्यपी आनन्दितहुये ख़लीफ़ा अबुलहसन के स्वभाव से अति प्रसन्न हुआ और उसका नाम और जाति पूंछी उसने कहा मेरानाम अबुलहसन है मेरा पिता स्वर्गवासी ब्यापारी था यद्यपि अमीरों की सामग्री न थी परन्तु प्रतिष्ठापूर्वक यहां ब्यापारियों के सदृश निर्ब्बाह करताथा जब वह कालबश हुआ उसका धन मुझे मिला मैंने उसे बहुतसा ख़र्च करडाला परन्तु जब सब धन लम्पटता और मित्रों के सन्मानमें ख़र्च होगया तो मित्रोंने मुझे बांसके सदृश भीतर से खोखलपाय मेरे घरका आनाजाना छोंड़ दिया मुझे रुपये लुटा देनेसे दुःखहुआ इसलिये हरएक मित्र के निकट सहायता के लिये गया परन्तु किसीने मेरी सहायता न की सब अशीलहोगये तब मैं समझा कि वह सब मित्र स्वार्थी थे मैंने भी उनसे मिलना छोंड़दिया और यह प्रतिज्ञाकी कि बग़दादके बासियोंसे कि वह महा अशीलहैं कभीभी न मिलूंगा किन्तु प्रतिदिन बिदेशीको केवल एकरातके लिये लाकर अपनेसाथ भोजन कराऊंगा और दोपहर उससे बार्त्ताकर प्रभातको उसे बिदा कियाकरूंगा जैसा कि राहमें आपसे कहाथा ख़लीफ़ा अबुलहसनके यहबचनसुन बहुत प्रसन्नहुआ और कहनेलगा तुम

ने भलाकिया कि ऐसेस्वार्थी झूंठेमित्रोंसे मिलना छोड़दिया अब तुम निस्सन्देह आनन्दसे रहतेहो और दिन दिन विदेशियों से अपना जी बहलाकर भोरको उन्हें बिदाकर फिर उनसे प्रयोजन नहीं रखते तुम्हारा स्वभाव बहुत अच्छाहै मुझे तुम्हारे इस आनन्द पर बड़ी ईर्षा है पुनि बहुकालपर्य्यन्त वह मद्यपान और हास्यादिक की वार्त्ता करते रहे इसमें रात बहुतबीती खलीफ़ा ने कहा रात्रि बहुत व्यतीतहुई मुझे सुबहको मंज़िल चलना है कहो तो सोरहूं और तुम भी अब आराम करो भोरको मैं तुम्हारे जगने के पहिले चला जाऊंगा परन्तु मुझे यह इच्छाहै कि मैं तुम्हारी इस सेवासे उऋण होजाऊं जो कुछ तुम कामना रखतेहो कहो उसे पूराकरूंगा मैं बग़-दादियों के समान अशील नहीं अबुल्हसन ने खलीफ़ा से जिसे ब्यापारी समझे था कहा हे मेरे परमप्रियसखा! तुमने जो कहा मैंने सुना परन्तु तुम समझो कि मेरेमनमें कोई इच्छानहीं है जो तुमसे कहूं मैं अपने भाग्यपर प्रसन्नहूं और जो तुमने कहा कि उऋण होजाऊं ईश्वर साक्षी है मैं आपही तुम्हारा कृतज्ञ हूं कि तुम कृपा कर मेरे घरमें आये और यह थोड़ा अन्न जल जो आपके योग्य नहीं भोजन किया परन्तु एक बात से मुझे सदा खेद रहाकरता है यदि तुम्हारी इच्छाहो तो बर्णनकरूं यह तुम भलीभांति जानतेहो कि बग़दाद नगर में हज़ारों गलियां हैं और प्रत्येक गली में एक एक मसजिद उनका मवज़्ज़न (अर्थात् निमाज़ पढ़ानेवाला) पांचबेर अज़ांपढ़ निमाज़ के वास्ते बुलाताहै इस महल्ले का मवज़्ज़न वृद्ध अत्यन्त दुस्स्वभाव और धूर्त्त है उसके चारमित्र हैं कि वह भी उस के सदृश मनुष्योंको दुःखदेते हैं प्रतिदिन वह चारों वृद्ध के घर में जाय मनुष्यों के दुःख देनेकी वार्त्ता करते हैं मुझे भी बहुधा उनसे दुःख पहुँचताहै वह दुष्ट सदैव सबको धमकाते और बुराभला कहते इस हेतु हम सब उनके दुःख देने से ब्याकुल और भयवान् हैं मैं उनको देख महाअप्रसन्न होताहूं खलीफ़ा ने कहा तुमने इसका कौनसा उपाय सोचा है उसने कहा उनके दण्डदेने को मैं ईश्वर से प्रार्थना करताहूं कि वही ईश्वर कल मुझे खलीफ़ा हारूंरशीद के

तख़्तपर बैठादे ख़लीफ़ाने पूंछा यदि तुम ख़लीफ़ाभी हुये तो क्या करोगे उसनेकहा मैं आज्ञादूंगा कि सौ सौ चाबुक उन्हीं बुड्ढोंको और चारसौ केवल उसी मवज़्ज़नको लगायेजावें तो मेरे मनका अरमान निकले और गलीके लोगों को दुःख न दें ख़लीफ़ा उसकी इस इच्छा को सुनकर प्रसन्न हुआ यह तो बड़ा रसीला था मानो उसने हास्यका मूलपाया और कहनेलगा हे मित्र! मैंभी यही चाहता हूं कि ऐसे दुष्टोंको दण्ड मिले और इच्छा जो तुमरखतेहो ईश्वरकी मायासे कुछ दूर नहीं और कुछ आश्चर्य्य नहीं जो बादशाहको तुम्हारा यह यत्न और बुद्धि ज्ञातहो और एकदिन तुम्हें अपने स्थान पर बैठाय तुम्हें सम्पूर्ण अधिकार दे तब तुम भलीभांति उनको दण्ड दोगे मैं तो एक बिदेशी व्यापारीहूं नहीं तो मैं उनको अवश्य दण्ड देता उसने कहा तुम मुझे बुद्धिहीन समझ हास्य करतेहो निश्चय है कि ख़लीफ़ाभी इन्हीं विचारोंको जो शेख़चिल्लीके सदृशहैं सुनके हँसेगा ख़लीफ़ाने कहा नहीं नहीं मैं हास्य नहीं करता ईश्वरने यह निषेध किया है कि कोई किसी को न हँसे विशेष तुमसे कि जिसने मुझे ऐसा स्वादिष्ठ भोजन प्रीतिपूर्वक खिलाया हास्यकरूं और ख़लीफ़ा भी तुम्हारे इस विचार पर कदाचित् न हँसेगा अब तुमने मुझे प्रसन्नकिया आधीरात बीती अब सोनेका समय आय पहुँचा अबुलहसनने कहा सत्य कहतेहो बहुत रात बीती शेष जो मद्य रहगई है हम तुम पीके सोरहें एक बात तुमसे कहनी अवश्य है जिस समय प्रभात को तुम यहां से सिधारो तो इस मकान का द्वार मूंद जाना उसे कदाचित् खुला न छोड़ना ख़लीफ़ा ने उत्तर दिया बहुत उत्तम ऐसाही किया जावेगा पुनि ख़लीफ़ाने मदिरा का पात्रभर प्रथम तो आपपिया और दूसरे पात्रमें मूर्च्छा की औषधि जो उसके साथथी घोलकर अबुलहसनकोदी और कहा सन्ध्यासे तुमने मुझे पात्रभरभर पिलाये अब यह अन्तिमपात्र है इसे मेरे हाथसे पियो उसे वह ले तुरन्त पीगया उस औषधि ने तुरन्त अपना फल किया अर्थात् उसने वह पात्र बड़ी कठिनता से रक्खा और अचेत होय शिर उसका घुटनोंपर जायलगा ख़लीफ़ा इसदशाकोदेख बहुत हँसा

इसके अनन्तर ख़लीफ़ाने अपने सेवक को जो भोजनकर हाथबांधे खड़ा था बुलाय आज्ञादी कि इस मनुष्यको अपने कन्धेपर उठाले और इस मन्दिरको भलीभांति पहिचानरख जिस समय मैं कहूं तू फिर उसे यहीं लाय छोड़जाइयो वह दास कि अतिबलवान् था धीरे से अबुल्हसन को कंधेपर रख ख़लीफ़ा के साथ होलिया ख़लीफ़ा वहांसे निकल उस द्वारको खुलाछोड़ अपने महल में पहुँचा और चोर दरवाज़े से दास को साथ लिये हुये अपने मन्दिर के भीतर जहां उसके सोनेका मकान था गया वहां वह सेवक और दासियां जिनकी पारी उस रातकी थी ख़लीफ़ा के आगमनकी राह देखतीथीं ख़लीफ़ा ने उनको आज्ञादी कि इसमनुष्यके वस्त्रउतार हमारे सोने के कपड़े पहिरावो और मेरी शय्यापर सुलावो चैतन्यरहो कोई यहां का नियत मनुष्य न सोवे और जिस समय यह प्रभात को जगै तो उसे मेरी जगह समझ के दण्डवत् आदिक करना निदान मुझ में और उसमें तनक अन्तर न समझना और उसको मेरे सदृश बादशाहकहना उन्होंने कहा बहुत अच्छा फिर वह तो अपनी सम्बन्धित सेवा टहल करने लगे और ख़लीफ़ा यह आज्ञा दे बाहर आया और अपने वज़ीर को बुलवाय आज्ञादी कि कल एक मनुष्यको जो मेरीशय्यापर सोताहै मेरे शाहीकपड़ेपहिर तख़्तपर बैठेगा तुम सब उसे मेरी जगह समझ बादशाही भाव बर्तना और उसकी आज्ञा पालन करना जो द्रव्य और पारितोषिकादि किसीको दिलवाये मेरे कोशसे देना और सम्पूर्ण सभासद भोरको आकर उसकी अगवानी करें और वहां उपस्थित रहें और मसरूर को भी यही आज्ञादी कि भोरको जिसभांति मुझे निमाज़ के निमित्त उठाया करता है उसी प्रकार उसेभी उठाना निदान ख़लीफ़ा उन सबको समझाय बुझाय किसी दूसरे मकान में जाय सोरहा जब प्रभात हुआ तो ख़लीफ़ा अरुणोदय पर उठ वहां जाबैठा जहांसे सबकाम और बार्त्ता अबुल्हसनकी सुने और देखे और उसे कोई न देखे वहां सब चौकीदार और शय्याकी दासियां विद्यमानथीं अबुल्हसन के जगतेही अपने स्थानपर खड़ीहुई जब निमाज़की बेर आयपहुँची मसरूर खोजीने

चित्र अबुलहसन का ख़लीफ़ा के महल में आश्चर्य देखने का



जो शय्याके सिरहाने था स्फंजकाटुकड़ा सिरके में डूबाहुआ उसकी नाक के समीप लेजाय सुँघाया अबुल्हसन सिरके की तीव्रगंध से छींका और शिरउठाय नेत्रखोल चाहा कि खखार थूकें तो एकबांदी ने तुरन्त उसे स्वर्ण के उगालदान में लेलिया कि क़ालीनपर गिर-के बिछौना ख़राब न होजावे यह नियत रीतिथी कि इसीभांति ख़-लीफ़ाको स्फंजके टुकड़ेको सिरकेसे भर सुँघाय उठाते कि जगत्के ईश्वरका आराधन करें इसके अनन्तर अबुल्हसन ने फिर अपना शीश तकियेपरधर दीपक के प्रकाश में बड़ाभारी दालान अनेक भांतिसे अलंकृत देखा उसकी छत भांतिभांति के चित्रोंसे चित्रित थी और अतिस्वच्छ क़ालीन बिछेहुये और स्थान स्थानपर महासु-न्दर २ चित्रलगेहुये पुनि क्यादेखता है कि अतिरूपवती चन्द्रमुखी चम्पकवर्णी दासियां उसके सम्मुख हाथजोड़े खड़ी हैं कई तो निज हस्तकमलों में उगालदान लिये और कई कोमल हाथों में सुन्दर मुरछल और कई गाने बजानेके साज लिये और खोजी अतिसुन्दर सुनहले कपड़े पहिरे चुपचाप खड़ेथे जब उसकी दृष्टि लिहाफ़ और पलंगपोश पर पड़ी तो वह अतिस्वच्छ गुलाबीरंग कमख़ाबका था और उसके चहुँओर हीरे और मोतियों की झालरें सजी थीं इसी भांति मसहरी आदि शय्या की सामग्री ऐसीही थी और उपधान के समीप ख़लीफ़ाका मुकुट धराथा वह ऐसी सामग्री देख आश्च-र्य्यित हुआ और बिचारने लगा क्या मैं स्वप्न देखता हूं वा प्रत्यक्ष में यदि मैं जाग्रत् अवस्था में देखता हूं तो मैं अवश्य ख़लीफ़ा हूं रात्रि को उस अतिथि से हास्य में ख़लीफ़ा का बर्णन हुआथा कहीं वही बिचार मेरे चित्तमें तो नहीं समाया और बास्तवमें कुछ न हो इसी चिन्तासे फिर अपनी आंखें मूंद सोने की इच्छा की कि एक खोजी ने उसके समीप आय हाथबांध बिनय की किहे दीनपालक! बादशाह यह सोने का समय नहीं यह काल ईश्वरकी बन्दनाका है और सूर्य्य उदय हुआ चाहते हैं उसने इस बातको सुन अचम्भा किया और अपने को सोता हुआ जान फिर नयन मूंदे जब खोजी ने उत्तर उनसे न पाया और कोई चिह्न जगने के न देखे तो एक

चरण पीछे फिर कहा हे कृपानिधान! दासकी यह बिनती है कि यह समय आपके जगनेका है उठिये और ईश्वर की बन्दना कीजिये सूर्य्य निकला चाहतेहैं अबुल्हसन ने यह बातसुन मनमें कहा तुम धोखेमें हो सोते नहीं यह सोनेका समय है सोयाहुआ मनुष्य बात नहीं सुनता मैं तो सबबातें सुनताहूं पुनि उसने आंखखोल क्यादेखा कि दिन निकल आया वह बस्तुयें जो रात्रिको दीपकके प्रकाश में देखीथीं दिब्य उजियाले में भी दृष्टिपड़ीं फिर वह आनन्दित हो शय्यापरसे उठबैठा और जानगया कि उस परमात्माने मुझे यह राज्य कृपा किया खलीफ़ा वहींपर बैठाहुआ उसके बिचारों को समझता और प्रसन्न होताथा इतने में एक दासीने उसके सम्मुख आय चरण चूमे और गायनियों ने सामने आय मीठे स्वरों से बांसुरी बजाय सलामीदी और सहनाई आदिक बाजोंके ललित स्वरों से उसे मोहलिया कि वह अपनेको भूलगया फिर उसे प्रथम यह विचार उठा जो कुछ कि देखता सुनताहूं स्वप्न है या सत्य है फिर दोनोंहाथों को आंखोंपररख मनमें कहने लगा यह सब दास सुनहले बसन पहिरे और ऐसी यौवनवती सुन्दर स्त्रियां ऐसे मनोहर और शोभायमान बस्त्र पहिरे और यह उत्तम साजलिये जिनको मैं देखताहूं क्या हैं और मैं कहां हूं और इसजगह मैं कहांआया मैं सावधानहूं वा नहीं निदान उसनेहाथ अपने मुखपर से उठाय नेत्रखोले इतने में खोजा मसरूर आया और शिरनीचे कर धरतीचूमी फिर शिरउठाय कहा हुजूर आज क्या कारण है कि आपने अबतक ईश्वर की बन्दना नहीं की कहीं रात्रिको निद्रा में बिघ्न तो नहीं हुआ वा कुछ आपके शत्रुओं की देह में ब्यतिक्रम भया अब उठके सभा में बिराजमान हूजिये और राज्यके कार्य्योंको कीजिये सम्पूर्ण सभासद आप की बाट देखते हैं सभाका समय आन पहुँचा मसरूर के वचनसुन उसे निश्चयहुआ कि मैं जागताहूं और वह बस्तु और स्थान स्वप्न नहीं वास्तव में हैं पुनि विचारने लगा यह पदवी मुझे क्योंकर प्राप्तहुई फिर मसरूरसे पूछनेलगा तूने यहबातें किस मनुष्यसेकीं और किसे बादशाह कहता है मैं तो तुझे नहीं पहिचानता तूने किसी और के

धोखे से मुझे बादशाह कहा मसरूरने कहा हे कृपासागर ! क्या यह आप सत्य कहते हैं वा इस किंकरकी परीक्षा लेतेहैं आप क्या बादशाह नहीं और पूर्व्व से पश्चिम पर्य्यन्त आपका राज्य नहीं आशा रखताहूं कि इस सेवकपर कृपादृष्टि रखिये जानपड़ता है कि आपने कोई स्वप्न रात्रिको देखा है जिससे ऐसे उलटे बचन कहतेहो अबुलहसन मसरूर के यह बचन सुन बहुत हँसा कि हँसते हँसते पीठ उसकी तकिये से लगगई खलीफ़ा भी आनन्दित होय चाहता था कि ठट्ठामारके हँसे परन्तु हँसी दबाली कि कहीं अबुलहसन उसका शब्द पहिचान न ले निदान वह बहुकाल पर्य्यन्त हँसता रहा फिर भलीभांति अपनी शय्यापर उठकेबैठा और एकलड़केसे कि उसका कालारंग मसरूर के सदृश था कहनेलगा सत्यकहो मैं कौन हूं उस बालकने बिनतीकी कि आप बादशाह हैं अबुलहसनने कहा तू बड़ा झूठा है इसीसे तेरा स्वरूप काले श्वान के सदृश काला होगया है फिर उसने एक बांदीको कि औरोंसे निकट खड़ीथी कहा हे सुन्दरी ! इधर आ और अपना कोमल हाथ आगे बढ़ा और मेरी अंगुलीका पोर अपने दांतसे काट कि मैं जानूं कि सोताहूं या जागता उसबांदी ने जाना कि खलीफ़ा भी छिपे हुये इस बृत्तांत को देखरहा है महाहर्षित होय उसकी अंगुलीका पोर आगे जाय धीरसे दांतके नीचे दबाया उसने तुरन्त अपना हाथ खींचकर कहा ईश्वर मैं क्योंकर एकही रात्रिमें खलीफ़ा बनगया बड़ा आश्चर्य्यहै पुनि उससे कहने लगा तुझे ईश्वरकी सौगन्द है सत्य कहना क्या मैं वास्तवमें बादशाह और तुम्हारा स्वामी हूं उसने कहा आप वास्तव में हमारे स्वामी हैं जब उसने उठनेकी इच्छाकी तो एक दासने दौड़के उसका हाथथांभ उठाया जब वह खड़ाहुआ सारे महल में प्रणाम का नाद राजसी रीति से फैलगया सब खोजी और दासियों ने अगवानीकर आशीर्व्वाद दिया कि वह परमात्मा सच्चिदानन्द आपका यह दिन कुशल और आनन्द से बितावे अबुलहसन ने मन में कहा हे प्रभु ! यह क्या बात है कि कल तो मैं अबुल्हसन था आज मैं खलीफ़ा बनगया मेरी समझ में कुछ नहीं आता क्योंकर मुझे यह

पदवी मिली फिर सेवकों ने उसे बादशाही कपड़े पहिनाये और सब दोनों ओर से पंक्तिबांध द्वारपर्य्यन्त खड़े भये और मसरूर आगे होके उसे दरबार में लेगया अबुल्हसन भीतर जाय तख़्त के समीप खड़ा हुआ कि मनुष्य उसका हाथ पकड़ चढ़ावें सो बड़े दो प्रधानों ने आय उसकी भुजा पकड़ तख़्त पर बैठाया उसके विराजमान होतेही बड़ा शब्द प्रणाम का भया जिसके सुनने से वह महाहर्षितहुआ और दाहिनी बाईंओर क्या देखताहै कि बड़े बड़े सरदार हाथ जोड़के पंक्तिबांधे खड़े हैं सो सबकी बिनती सुननेलगा राजमंत्री कि जो ख़लीफ़ा के पीछे राज्य प्रबन्ध करताथा अबुल्हसन को देखआया और दण्डवत्कर आशीर्ब्बाद दिया कि तुमपर ईश्वर की छाया रहे और असंख्य वर्षकी आयुहो मित्र प्रसन्न और शत्रु आपके प्रताप से भस्महों यह सब दशादेख उसे निश्चय भया कि मैं जागता हूं स्वप्न नहीं देखता मैं अवश्य ख़लीफ़ा भया जैसी मेरी इच्छाथी बेपरिश्रम ईश्वरने पूर्णकी और आज्ञा चलानेलगा प्रथम मन्त्री से जो हाथ बांधे खड़ाथा कहा तुमको कुछ कहना है उस ने बिनय की कि सर्ब्ब सेवक और सेना अगवानी करने और आज्ञा पालने के लिये बाहर खड़ीहै यदि आज्ञाहो तो आपके सम्मुख आय प्रणाम करे अबुल्हसन ने आज्ञादी कि सभा का द्वार खोलो यह आज्ञापाय दो मंत्रियोंने चोबदारों को आज्ञादी कि सबको आने दो फिर सबने आय दण्डवत्की और अपने२ स्थानपरजाय चुपकेखड़े होगये जब अगवानी होचुकी तब मंत्रीने जो तख़्तके सामने अकेला खड़ाथा लोगों की अरज़ियां दीं और प्रतिदेश और व्यवस्था का बृत्तांत कहनेलगा अभी कह न चुका था कि अबुल्हसन ने नगर के कोतवाल को बुलवाय आज्ञादी कि अमुक गलीमें जाय मवज़्ज़न को जो उस मसजिदका है चारसौ कोड़े उसके पांवपर लगा और चारमनुष्यों को जो उस के संगती हैं सौ सौ चाबुक मारियो पुनि पांचोंको ऊंटोंपर उलटा सवार कराय नगर के बाज़ारों में घुमाइयो और उसके आगे एक मनुष्य यह कहता जावे कि यह दण्ड उन मनुष्यों का है जो अपनी गलीवालों को दुःख देवें और उन को

झूठा दोषलगावें फिर देशसे निकाल दीजियो कोतवाल ने यह आज्ञापाय अबुल्हसन की गली में जाय वही काम किया खलीफ़ा नेभी निषेध न किया क्योंकि पूर्वसे उसे अबुल्हसनके मुखसे उस बृद्ध और उस के संगतियोंकी दुष्टता का बृत्तान्त ज्ञातहोगया था इस समयान्तर में मंत्री भी कहसुनकर निश्चिन्त भया और कोतवालनेआय अबुल्हसन से कहा कि मैंने आपकी आज्ञासे उनपांचों मनुष्योंको दंडदेकर देशनिकालादिया यहसुन अबुल्हसनने मुस्करायकहा मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हुआ खलीफ़ा छिपेछिपे उसकी प्रसन्नता को देखता और हर्षितहोता इसके उपरान्त अबुल्हसन ने वज़ीर को आज्ञादी कि हज़ार अशरफ़ी इस नगरकी अमुक गलीमें अबुल्हसनकी माताको भिजवादे मंत्रीने वही किया वहबृद्धा अर्थात् अबुल्हसनकी माता कि इस बृत्तान्तको न जानती थी रुपये लेकर अतिप्रसन्न हुई और आश्चर्य्य में हो बिचारने लगी कि खलीफ़ाने मुझपर बड़ीकृपाकी इतने में मन्त्रीनेभीजाय अबुल्हसन से रुपये देनेका हाल कहदिया जब बादशाही कामों से निश्चिन्त हुआ दरबारी अगवानी कर बिदा भये केवल मन्त्री और मसरूर अबुल्हसनके निकट रहगये तब अबुल्हसन मन्त्री और मसरूरकी सहायता से नीचे उतरा और उसी सुन्दर मकान में जिसमें प्रथम था गया मार्गमें उसे दिशा लगी इतनेमें खलीफ़ाके पाखानेको खोल दिया वह पाखाना अतिउत्तम बना था उस पर अति शोभायमान मखमल बिछा था उसके रक्षकने सुनहली जूता कि खलीफ़ा उसे पहिरकर दिशा को जातेथे उसके सम्मुख रक्खा अबुल्हसन ने उस को उठाय अपनी चौड़ी आस्तीनमें धरलिया इसबात से मंत्री और खोजी को बहुत हँसी आई परन्तु खलीफ़ाके भयसे थँभे रहे निदान मंत्रीने बिनय की कि हे बादशाह! यह जूता पहिन दिशा जातेहैं यह सुन वह उसे चरणोंमें पहिर दिशागया जब बाहर निकला मसरूर उसे रसोई की ओर लेगया उसके पहुँचतेही द्वार खुलगया और सेवक गानेवालियों को बुलानेको गये जब अबुल्हसन भोजन पर बैठा तब गाना आरम्भ हुआ जिसके सुनतेही वह प्रसन्न भया

और शोचनेलगा हे भगवन्! यह आनन्द मैं स्वप्न में देखताहूं या साक्षात् पुनि बिचारनेलगा यह तो जाग्रत् अवस्था है इसमें मनुष्य स्वप्न नहीं देखताहै जब मनुष्य सोजाताहै तब स्वप्नदेखता है मैं तो साक्षात् जाग्रत् अवस्था में चलता फिरताहूं इस समयतक मुझे मालूमथा कि मैं बादशाह नहीं मेरे सिवाय कोई दूसरा इस देशका स्वामी है परन्तु जो मैंने आज्ञादी उसका पालन हुआ यह सुखआदि केवल मेरेही हेतुहैं मैंहीं बादशाहहूं वहां प्रतिबस्तु बिचित्रथीं बहुतसे सोनेरूपेके पात्रथे जिसे अबुल्हसन देख प्रसन्न होता और सात बांदियां अत्यन्त रूपवान् छबिधाम अपने गाने के साजलिये उसके चहुँओर मीठे स्वरोंसे बजायरहीं और अति स्वच्छ प्रकाश के सातझालर उसमन्दिर की छतमें सुशोभित मध्य में भोजनके पात्र महासुन्दर बिछे थे और सुबर्ण की सात अँगीठियां दूर धरीहुई जिनमें नानाभांतिकी सुगन्धें जलाई जातीं जिन सुगन्धों से हृदय प्रसन्न होता और सात दासियां अति रूपवती नखशिखसे शृंगारकिये और रंगबिरंगे आभरण पहिरे उसके चहुँओर खड़ीं और सबके हस्तकमलों में मुरछल और रत्न जटित अतिबिचित्र डण्डियों की पंखियां थीं जब अबुल्हसन उस मनोहर मन्दिर में बैठा तो पग पगपर ठहरके उन अद्भुत बस्तुओं को देखता और बिस्मित होता निदान उस महल में जाय भोजनपर बैठा उसके बैठतेही वह सातो दासियां उस नवीन ख़लीफ़ा के मुरछल हिलानेलगीं अबुल्हसन उन्हें देख आनन्दको प्राप्तभया और मुसकराय उनसे कहनेलगा तुममेंसे मुझे पारीपारी से मुरछल हिलाओ और छः भोजनकरें निदान तीनको दाहिनी ओर और तीनको बाईं ओर बैठायलिया वह छःदासियां उसकी आज्ञानुसार बैठगईं परन्तु ख़लीफ़ाकेभयसे भोजनमें हाथ न डाला फिर अबुल्हसनने मुसकराय कहा तुमभी भोजनकरो और उनसे उनका नाम पूछनेलगा तो एकने कहा मेरानाम चन्द्रकला दूसरीका ललिता तीसरीकानाम शशिमुखी और चौथी का निर्म्मला पांचवीं का स्वर्गाप्सरा छठीका नाम चपला सातवीं का जो पंखा झलरही थी और उसकी सुन्दर बार्त्ता से

वह महाप्रसन्न था पूंछा तेरा क्या नाम है उसने कहा मेरा नाम च-
न्द्रक्रांति है ख़लीफ़ा भी छिपकर ये बातें सुनताथा और उसके प्रिय
बचन सुन प्रसन्न होता जब उन्होंने जाना कि अबुल्हसन भोजन
करचुका तो सेवकों ने जो खड़े थे दौड़के एक ने जलका पात्र और
दूसरे ने सीलावची लाय उसके हाथ धुलवाये फिर उसे दूसरे मकान
में लेगये उस में अति सुन्दर सुनहले चित्र दीवारों में लगेथे उसके
भीतर जातेही गानेवालियां गानकरनेलगीं उसमकान में मणिजटित
सात कन्दीलें सात स्थान पर लटकी थीं उनके नीचे सात भाजन
सूखे और हरे फलों के भरे हुये रक्खे थे वहां भी सात दासियां अ-
तिस्वरूपवती थीं जिन्हें देख वह मोहित होगया और उन सब के
साथ फल भोजन करनेलगा और उनके नाम पूंछे उन्होंनेभी बताय
दिये फिर मेवे उठाकर हरएक को देनेलगा और उनको खिलावता
गया पुनि वहां से उठ मसरूर समेत तीसरे मकान में गया वह भी
वैसाही सजाथा वहां सातसमूह गानेवालियों के थे और अप्सराओं
के सदृश सात दासियां सुनहले सात पात्र लिये भांति भांति के
शरबत लिये खड़ी थीं वहां भी उसके पहुँचतेही गाना आरम्भहुआ
उसमें से थोड़ासा पीकर उनसे कहा तुम्हें जौनसा शरबत अच्छा
लगे पीजाओ फिर सातों के नाम पूंछे और उनके नाम सुन प्रसन्न
भया फिर बहुकाल पर्य्यन्त उनसे हास्यादिक बार्त्ता करतारहा ख़-
लीफ़ा भी उसके बचन सुन प्रसन्न होता जब सूर्य्य अस्तभया अ-
बुल्हसन चौथे मकान को गया वह भी उसीप्रकार प्रतिवस्तु से
अलंकृत और शोभित था सात मणिजटित फानूस जिनमें कपूरी
बत्तियां जलाईगईं थीं वहां दिनके बराबर प्रकाशथा जो सौंदर्य इस
मन्दिरमें था वैसा पूर्व मन्दिरों में न था इस बारहदरी में सात यूथ
गानेवालियों के थे जो मीठे और ललित स्वरोंसे गाय बजाय मनको
आकर्षणकरतीं और मनुष्यके हृदयको अतिकोमल करदेतीं विशेष
इसके स्वरूप छबि अनूपमें अद्वितीय किन्तु पूर्णमासी के चन्द्रमा को
लज्जादेतीं अपने हस्तकमलों में सुनहलपात्र कुलचे और मिठाई
आदिक लिये खड़ी और गजक आदिक जो मद्य के पश्चात् अवश्य

होता है उनके निकटथी और उस मकानमें एक ठौर रूपेकी सात सुराहियां स्वच्छ मद्य से भरीहुई और उनके निकट महासुन्दर बिल्लौरी गिलास धरे थे बुग़दादनगर की यह रीतिथी कि सरदार रात्रि को छिपकर मदिरापीते और दिनको उससे ग्लानि रखते निदान जब अबुल्हसन मद्यघर में जाय बैठा वहां सात दासियां महाकोमलांगी बांकपने से खड़ीथीं जिनके देखतेही अबुल्हसन बेबशहुआ और उसका स्वर पलटगया और उनसबको पूर्वकी सब दासियों से जिनको देखाथा अधिक सुन्दर पाकर मोहितभया और इच्छा की कि इनसे वार्त्ताकरूं परन्तु गान और सारंगी मृदंग के शब्दसे उसे कुछ सुनाई न दिया इसहेतु उसने हाथोंसे तालीबजाई जिससे गाना बजाना बन्दहुआ जब सब चुपभये उसने उस दासी को जो उसके समीपही खड़ी थी हाथपकड़ अपने निकट बैठालिया और उसका नाम पूछने लगा उसने कहा हे बादशाह ! मेरा नाम मणिमाला है यह सुन अबुल्हसन ने कहा तेरी दन्तमाला हीरेसी अतिउज्ज्वलहै जिसने तेरा यह नाम रक्खा बड़ी भूलकी उचित था कि इससे कोई उत्तम नाम होता अब तू एक मद्यका पात्रभर मुझे पिला कि मैं तेरे कोमल कमलवत् हाथों से पिऊं मणिमालाने तुरन्त भर उसेदिया वह पीगया पुनि उससे कहा अब तू एक गिलास आपपी उसने एकपात्र भरकर एक विचित्र रागगाया जिसे अबुल्हसनसुन प्रसन्नभया फिर वह पान करगई अनन्तर अबुल्हसन ने उन पात्रोंमें से फल उठाय दूसरी दासीको दिया और अपने निकट बैठाय उसकाभी नाम पूछा उसने कहा मेरा नाम शशिमुखी है यह सुनतेही उसने कहा तेरेनेत्र चन्द्रमा से अधिक प्रकाशयुत हैं उचित था इससे बढ़के कोई नाम होता सो उसने उसके हाथसे भी मद्यपिया इसीभांति तीसरीदासी को बुलाया और उससेभी वही व्यवहारकिया जब उसने कईमदिरा के पात्रपिये मणिमाला बांदी खलीफ़ाकी सैनसे फिर पात्रमद्यसे भर और उसमें मूर्च्छा की औषधिडाल उसके समीप लाई और कहने लगी हुजूर इस अन्तिम मदिरा के पात्रको मेरेहाथसे पान कीजिये मैं एकगीत गाती हूं वह मैंने आजही प्रभातको रचाहै अबतक उसे

किसी ने नहीं सुना फिर वह बांदी बांसुरी हाथ में लेके बजाने लगी उसने वह राग ऐसागाया जिसको अबुल्हसनने सुन धन्यबादकिया और दूसरीबेर फिर उससे वही गीत गवायाथा जब वह गाचुकी तो अबुल्हसनने चाहा कि उसकी प्रशंसाकरूं परन्तु मूर्च्छाकी औषध के गुण से मखखोल के रहगया कोई बात न कहसका नेत्र उसके मुँदगये और हाथ फैलगये जैसे कोई मूर्च्छा खायाहुआ सोजाताहै निदान उसकी वही दशाभई जो पहिले दिन होगई थी पात्र उसके हाथसे छिटक गिरनेलगा परन्तु एक दासीने दौड़के उसे थांभलिया खलीफ़ा उसे बेसुधि देख अपने स्थानसे उठ वहांआया और शाही वस्त्र उसके शरीरसे उतरवाय उसके कपड़े उसे पहिनादिये और उसी दासको आज्ञादी कि इसे इसीभांति उठाय इसके घरके उसी मकान में लिटाय आ और लौटतेहुये द्वारखुला छोड़ियो वह दास उसे उठाय कन्धेपररख चोरदरवाज़ेसे सुलाआया फिर खलीफ़ा ने अपने कुटुम्बसे कहा कि यह मनुष्य ईश्वरसे प्रार्थना करताथा कि जो मैं एक दिनकेलिये खलीफ़ा होजाऊं तो अपनी गलीके मवज़्ज़न और उसके चारसंगती बूढ़ों को दण्डदूं क्योंकि उनसे उसने बहुत कष्ट उठायाथा इसहेतु मैंने इसयत्नसे उसे एकदिनकेलिये खलीफ़ा बनाया और उसने अपनी इच्छानुसार दण्ड दिया अबुल्हसन रात्रिभर मूर्च्छित रहा जब प्रातःकाल हुआ और दिन चढ़ा क्या देखता है कि मैं अपने घरमें हूं इससे बड़ा आश्चर्य्य किया और मणिमाला शशिमुखी आदिक बांदियों के नाम उसे स्मरणथे पुकारने लगा कि तुम कहां हो मेरे निकट आओ निदान वह बड़े नाद से बादशाही महल के खोजियों और दासियों को बुलाने लगा उसकी माता शब्द सुन उसके निकट दौड़ीआई और पुत्रसे कहनेलगी हे पुत्र! तुझे क्या होगया जो ऐसी बातें कहता है अबुल्हसन अपना शिर उठाय अपनी माताको बड़े अहंकार से देख कहनेलगा हे सत्पुरुषिणी! तू किसे अपना पुत्र कहती है उसने कहा मैं तुझे अपना पुत्र कहती हूं क्या तुम मेरे पुत्र नहीं क्या एकरात्रि मेंही तुम मुझे भूल गये उसने कहा हे दुष्टा! क्या मैं तेरा बेटा हूं तू क्यों इतनी ढिठाई

करती है तू झूठ बोलती है मैं अबुल्हसन नहीं मैं ख़लीफ़ाहूं उसकी माता ने कहा हे प्रियपुत्र! चुप इतनी बड़ीबात मुखसे मत निकाल अभी तुझे पुरबासी बिक्षिप्त समझ मारेंगे उसने कहा मैं बिक्षिप्त नहीं कि जैसा तू समझतीहै मैं सावधानहूं फिर मैं तुझसे कहताहूं कि मैं ख़लीफ़ाहूं जो संसारभरका स्वामी है उसकीमाने कहा बेटा बड़ाखेद है तेरीबुद्धि ठिकाने नहीं तुझे कोई भूत लगाहै वा शैतान ने अवसर पाय तेरी बुद्धि पलट दी जिससे तू ऐसी बहकी बातें करता है मैंने तुझे ईश्वरको सौंपा तू मेरा पुत्र अबुल्हसनहै और मैं तेरी माताहूं और कई चिह्न उसे दिखाये कि वह सावधान होजावे पुनि कहने लगी तू नहीं देखता यह घर तेराहै वा ख़लीफ़ा का तू सदैव इसीघर में जबसे उत्पन्नभया मेरे साथ रहा किया जो बातें मैंने तुझसे कहीं उन्हें सोच जो तू कहता है उस बिचार को छोड़दे यह पदवी तुझे प्राप्त नहीं और कदाचित् न होगी फिर कदापि ऐसा किसीसे बर्णन न कीजियो अबुल्हसन माता से यह बचन सुन आंखें खोल और अपना शिर हाथपर रख इसतरह सोचने लगा जैसे कोई मनुष्य कुछ भूलगयाहो और उसे सोचे फिर अपनी मातासे कहनेलगा जो तूने कहा सो सत्य है और मैं भी भलीभांति जानताहूं कि मैं अबु-ल्हसनहूं और तू मेरीमाता है और यह मेराघरहै पुनि चहुँओर देख कहनेलगा इसमें सन्देह नहीं कि मैं अबुल्हसन नहीं परन्तु मैं नहीं जानता कि किसलिये मेरे मनमें यह बिचार समाया उसकी माता समझी कि मेरापुत्र बीमारहोगया जिससे ऐसी बहकी २ बातें कर-ताहै वा उसने कोई दुःस्वप्न देखा यह चिन्तना कर वह हँसने लगी और उससे पूँछनेलगी हे पुत्र! क्या तुमने रात्रिको दुःस्वप्नदेखा अ-बुल्हसन ने घुड़कके अपनी मातासे कहा हे दुष्टा! तू समझ के नहीं बोलती तू क्या झखमारती है कदाचित् तेरापुत्र नहीं और न तू मेरीमाता तूने बड़ीढिठाईकी कि मुझे अपनापुत्र समझती है तू नहीं जानती कि मैं ख़लीफ़ाहूं तू अभीभ्रममेंहै उस बृद्धा ने कहा हे पुत्र! ईश्वर के वास्ते ऐसीबातें मुखसे मत निकाल तूने मवञ्ज़न का हाल नहीं सुना कि वह और चारउसके संगती अपनीगलीके मनुष्योंको

धमकाते और उन्हें दुःख देते थे कल कोतवाल ने आय उन पांचों मनुष्यों को पकड़कर चारसौ कोड़े मवज्ज़नको और सौ सौ उन चारों बृद्धोंके लगाये पुनि उलटा ऊंटपर चढ़ाय नगर भरमें फिराया फिर महाकष्ट दे और उनकी अप्रतिष्ठा कर देश निकाला दिया मैं डरतीहूं बेटा कहीं तेरीभी ऐसीही गति न हो अबुल्हसनकी माता तो यह न जानती थी कि अबुल्हसनही की आज्ञासे वह सब दण्डदिये गये उसकी माताने डरानेके लिये यह हाल कहा था अबुल्हसन इस वचन के सुनतेही कहनेलगा अब तुम भलीभांति जानो न तो मैं तुम्हारा पुत्र और न अबुल्हसन किन्तु ख़लीफ़ाहूं क्योंकि मवज्ज़न और उसके चार संगियों को मेरीही आज्ञासे दण्ड दियागया अब मैं निस्सन्देह ख़लीफ़ाहूं तू इसे स्वप्न मत समझ कोतवालको मैं-नेही दण्ड देनेकी आज्ञादीथी उसने तुरन्त मेरी आज्ञा प्रतिपालन की तेरेही बचनसे प्रतीतभया कि मैं ख़लीफ़ाहूं उसकी मा कुछ न समझी कि अबुल्हसन मवज्ज़नका हाल सुनकर अपनी बातपर क्यों दृढ़हुआ परन्तु उससे कहा ईश्वर कुशलकरे जो कोई तेरे इन वचनों को सुनेगा क्याकहेगा वह सुनतेही महाकोपित भया और कहनेलगा हे दुष्टा! चुपरह नहीं तो उठके तुझे ऐसा मारूंगा कि मरण पर्य्यन्त स्मरण रक्खेगी मैं अवश्य ख़लीफ़ाहूं उस विचारीने जाना कि यह अधिक बहका और विक्षिप्तभया इससे अतिचिन्ताकर रोने लगी अबुल्हसन कि उस विचार में डूबाथा अपनी माताके रोनेपर तनक ध्यान न देकर क्रोधाग्नि से उठ खड़ाहुआ और एक लाठी उठाय अपनीमातासे कहनेलगा दुष्टा सत्य कह मैं कौनहूं उस बृद्धा ने उसकी ओर प्रीतिकी दृष्टिसे देख कहा तू मेरा पुत्र अबुल्हसनहै और मैं वही हूं जिसने तुझे उत्पन्नकिया और दूध पिलाया तूने भूलसे अपनानाम इतना बढ़ाया क्योंकि यहसंज्ञा केवल हारूंरशीद की है जिसके हम तुम और सम्पूर्ण देश आज्ञा पालने वालेहैं और वह हमारास्वामी है अभी कलही उसने मुझे हज़ार अशरफ़ियोंका तोड़ा भेजदियाथा उसे अशरफ़ियों का नाम सुनतेही निश्चयभया कि मैं ख़लीफ़ा अवश्यहूं क्योंकि मंत्रीने उसीकी आज्ञासे उसकी

माको अशरफ़ियां भिजवाई थीं पुनि अपनी मातासे कहनेलगा ओ धूर्त्ता! अबभी तुझे मेरे ख़लीफ़ा होनेका निश्चयनहीं भैनेही तो अपने राजमंत्री जाफ़र के हाथ हज़ार अशरफ़ियां तुझे भिजवा दी थीं जो आज्ञा मैं देताथा उसका तुरन्त प्रतिपाल होता था तौभी तू मुझे अपना पुत्र कहती है तुझे झूठ बोलनेका दण्ड अवश्य देना चाहिये इतना कह उसने अपनी माताका हाथपकड़ लकड़ीसे बहुत मारा वह बिचारी महा रुदन करनेलगी उसका रोना सुन गलीके सब मनुष्य दौड़आये परन्तु अबुल्हसन मारता जाता था और कहताथा कि मैं ख़लीफ़ाहूं वह बुढ़िया मारखातीजाती और कहतीथी कि मेरा पुत्रहै जबपड़ोसी वहांपहुँचे तो वहकुछ शांतहुआ और उन्होंनेउसके हाथसे लकड़ी छीनकर उन दोनोंके मध्यमें आय कहनेलगे अबुल्हसन तुझे क्याहोगया ईश्वरसे नहींडरता और नहीं समझता कि कोई सुपूत अपनी मातापर हाथ उठाताहै तुझे लज्जा नहींआती कि अपनी माताको इसभांति से मारताहै और वह तुझे इतना प्यार करती है अबुल्हसन महाक्रोधितहो नेत्रलालकर कहनेलगा अबुल्हसन कौन है यह तुमने किसका नाम रक्खाहै पड़ोसी इसबचनको सुनतेही घबड़ाये और कहनेलगे क्यातू इसगली और घरमें नहींरहता और यह तेरीमातानहीं तुझे इसनेनहींजना उसनेकहा मैं इसदुष्टाकोनहीं जानता न तुम्हें जानताहूं कि तुमकौन बलाहो मैं अबुल्हसन नहीं मैं ख़लीफ़ा हूं सबोंने जाना कियह विक्षिप्तहोगयाहै जैसे इसने अपनीमाता को माराहै तैसेही हमैंभी मारेगा उनमेंसे एक मनुष्यने यह वृत्तान्त दारोगासे जाय कहा दारोगा सुनतेही अबुल्हसनके घर दौड़ाआया जब मनुष्यों ने अबुल्हसन को पकड़ा तो उसने इच्छाकी कि यहांसे छूटकर भागे यह देख दारोगाने पकड़ बड़े बेगसे कोड़े मारे जिनके लगने से वह चुपका होगया पुनि दारोगा उसे बँधवाय हाथपावों में हथकड़ी बेड़ी और गलेमें शृंखलडाल बन्दीगृहकी ओर लेगया कोई तो उसे घूंसा मारता और कोई तमाचा और कोई उसे दुर्ब्बाच्य कहता जैसा कि सौदाईके साथ ब्यवहारकरते हैं जब इसभांति मार खाई और अप्रतिष्ठा भई तब अपने मन में बिचारनेलगा कि पुर

बासियों ने मुझे बिक्षिप्त बनाया और मैं तो सावधानहूं निदान जब अबुल्हसन उसी दशामें क़ैदहुआ दारोगा ने उस बिक्षिप्तता को असाध्य समझ लोहे के पिंजरे में बन्दकिया और प्रतिदिन पचासकोड़े उसकी पीठ और कन्धों पर मारता तीन सप्ताह पर्य्यन्त उसकी यही दशा रही दारोगा उसे कोड़ेमार के पूछता अब तू सावधान हुआ वा नहीं कह अब तू अपने को ख़लीफ़ा समझता है या नहीं अबुल्हसनने कहा मैं बिक्षिप्त नहीं मैंने अभाग्यतासे इतनी मारखाई और प्रतिष्ठागँवाई उसकी माता जो प्रतिदिन बन्दीगृहमें उसे देखने जाती उसका यह कष्ट देख रोती फिर उस ने देखा कि वह दिन दिन दुबला होता जाताहै न तो दिनको आनन्द और न रात को चैन और सदैव पीड़ा से रोता और हाहा खाताहै पीठ और उसकी भुजा मार से काली और घायल होगईहै और देहकी खाल उधड़गई उस को उसपर बड़ी दया आई तब इच्छा की कि उस से वार्त्ताकर परीक्षालें कि वह चैतन्य होगया वा नहीं सो उस से बातें करनेलगी वह भी बादशाह के महलका सब व्यवहार भूलगया था और समझा कि वह सब स्वप्न था यदि बास्तव में होता तो मैं जाग्रत् अवस्था में क्यों न देखता और क्यों न वह सब बांदियां मेरे सम्मुख आतीं परन्तु यह बिषय अर्थात् कि मेरी आज्ञा से मन्त्री ने आय हज़ार अशरफ़ियां मेरीमाता को दीं और मवज़्ज़न आदिक को दण्डदिया गया मुझे भ्रम में डालते हैं कि मैं ख़लीफ़ाहूं परन्तु यह अचम्भा है कि किसको स्वप्न समझूं और किसको न समझूं एक दिन वह इसीचिन्ता में था कि उसकी माताआई और उसकी अतिदुबली देह देख और दिनों से अधिक रोई अबुल्हसनने उसे बड़ी नम्रता से प्रणाम किया उसकी माताने सावधान होनेका चिह्न पाके पूछा हे पुत्र! अब तेरी क्या दशाहै वह बिचार कि जिसने तेरी यह दशा की तेरे शिरमें तो नहीं उसने कहा हे माता! मेरा अपराध और ढिठाई जो कुछ मुझ से हुई उसे क्षमाकरो और यही पड़ोसियों से भी मेरी ओर से बिनय करना कि जो कुछ मैंने अनुचित कहा क्षमाकरें मैं ख़लीफ़ा नहींहूं अबुल्हसन तुम्हारा पुत्रहूं और तुम मेरी माताहो इसी

प्रकारके बहुतसे बचन कहे जिसके सुनने से उसकी माता हर्षितभई और समझी कि मेरा पुत्र परमेश्वरकी पूर्ण कृपा से अब चैतन्य है पुनि प्रसन्न होय उससे कहनेलगी कि मैं बिचारती हूं वह बिदेशी जिसे तू अपने घरमें लायाथा प्रभात को उठ द्वारमूंदने बिना चलागया और शैतान ने आके तुझे बहकाया जिसहेतु तूने वह बचन कहे अबुल्हसनने कहा अभीतक मुझे निश्चय था कि वह ब्यापारी मवस्सलका मेरे मकान का द्वारमूंद चलागया अब मालूम हुआ कि वह खुलाछोड़ चलागया और अवसर पाय शैतानने मुझे बहकाया ईश्वरने कुशल किया अब मैं अच्छाहूं शीघ्र मुझे यहां से बाहर निकाल निदान दारोगा ने अबुल्हसन की माता के कहने से उसे छोड़ दिया वह वहां से छूट अपने मकानमें आया और पूर्ब्बवत् एक बिदेशी को अपने घर बुलाता और रात्रिको उसे भोजन कराय प्रभात को उसे बिदा करदेता एकदिन अबुल्हसन कि पहिली तिथिको बिदेशी ढूंढ़नेके लिये पुलकी ओरगया अकस्मात् उस दिनभी ख़लीफ़ा हारूंरशीद् पूर्ब्बवत् मवस्सल के ब्यापारी का वेषकिये वहीं पहुँचा वह तो पहिले से बैठाथा दूरसे उसे देख पहिचान गया कि यह वही मवस्सली ब्यापारी है जिसके कारण मैंने यह दुःख उठाये यदि किवाड़मूँदजाता तो शैतान घुसकर मुझे न बहकाता उसे देखतेही कांपा और मनमें कहनेलगा हे ईश्वर! इस मनुष्य से मुझे बचाइयो उसकी ओरसे मुखफेर जलकी तरङ्गें देखने लगा और अपने को छिपाय लिया कि वह न देखले ख़लीफ़ा तो उसे ढूँढ़ताही था कि उसे फिर अपने महल में लेजाकर उसका तमाशा देखे और जो उसने दुःख उठाया है उससे उऋण होजावे और उसके साथ ऐसा उपकार करे कि जन्मभर आनन्द में बितावे निदान ख़लीफ़ाने भी उसे दूरसे देख लिया और उसके सम्मुख जाय खड़ाहुआ और दण्डवत्कर चाहा कि उससे भेंटकरे परन्तु उसने तनक भी उसकी ओर न देखा और बेशीलहोय कहा मुझे तुम्हारी दण्डवत् अङ्गीकार नहीं अपना रस्ता लो ख़लीफ़ा ने कहा तूने मुझे नहीं पहिचाना एक महीना बीता कि मुझे इसी तिथिमें तुमने अपने घरमें लेजाय सन्मानकर भोजनकरा

था था उसने रूखे होके कहा मैं तुझे नहीं पहिचानता जाओ भाई अपना कामकरो खलीफ़ा रुखाई का कारण कुछ न समझसका फिर शोचनेलगा कि वह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार केवल एकहीबेर बिदेशीको अपने घरमें लेजाता उसीपर दृढ़है इसीहेतु यह रुखाई करता है यह बिचार कहनेलगा तुम भलीभांति अपने मन में बिचारो और स्मरणकरो कि तुमसे हमसे जानपहिचान है या नहीं बड़ा खेद है कि तुम मुझे बिस्मरण करगये बिदित होता है कि तुमने इस अवधि में किसी प्रकारका दुःखउठाया है जिससे कि तुम मुझसे अलगहोते हो बिश्वासकर जानो कि मुझे तुम्हारी बड़ीप्रीति है यदि मुझे तुम्हारे दुःख और क्लेशका हाल मालूमहो तो मैं तुम्हारी सहायता करूं यह सुन उसने उत्तरदिया मैं नहींजानता कि तुमसे मेरी कुछ सहाय होसके परंतु मैं इतना जानताहूं कि तुम्हारे कारण मैं बिक्षिप्त कहलाया भाई तुम मुझसे मतबोलो और मेरे पास से चलेजाओ दूसरी बेर मुझे दुःख मतदो खलीफ़ा ने उसकेकण्ठ से लगकर कहा भाई इतनाअप्रसन्न न हो अब मैं तुम्हें छोड़ दूसरीठौर नहीं जासक्ता मैं बड़ाभाग्यवान् हूं कि फिर तुम्हें अच्छीतरह देखा और तुम्हें भी अवश्य है कि आज मुझे घरमें लेजाय वैसेही भोजन कराओ और मुझे इच्छा है किफिर तुम्हारे साथ मद्य पीऊं अबुल्हसन ने कहा मुझे कुछ आवश्यकता नहीं उस मनुष्यसे जिससे मुझे कष्टपहुँचा मिलूं जैसे चतुर कहते हैं (मृदंग अपना लेजाओ और आप बजाओ) तुम्हारेकारण मैंने बड़ी आपदा उठाई मैं नहीं चाहता कि फिर उसमें पडूं खलीफ़ाने दूसरी बेर उसके हृदयसे लग कहा हे मेरे प्रियमित्र! तुम मुझसे अप्रसन्नमतहो मुझे अपना मित्र समझो और बताओ कि तुम्हें मुझसे कौनसा दुःख पहुँचा यदि अनजाने मुझसे कोई अपराधहुआ तो उसका बदलादूंगा अबुल्हसन उसके दम में आगया और उसे अपने निकट बैठालिया और अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त आदि से अन्त पर्य्यन्त बर्णन किया जिसे खलीफ़ा भलीभांति जानताथा पुनि कहनेलगा यह स्वप्न मेरे चित्तमें ऐसा समागया कि मैंने जाना कि मैं खलीफ़ाहूं इसपर पड़ोसियों ने मुझे बिक्षिप्त समझ क़ैद करवाया और बन्दीगृह में मैंने महा कष्ट

उठाया और मुझपर बड़ीमारपड़ी तूही इस दुःखका हेतुहै कि भोरको जातीसमय मेरे मकानका द्वारखुला छोड़गया और शैतान ने दरवाज़ेसे आय मुझे बहँकाया उन सम्पूर्ण दुःखों के बिशेष मैंने उसदशा में अपनी माताको मारा और उसे बुराभला कहा और पड़ोसियोंको दुर्वाच्यकहे इसकारण उन्होंने बन्दीगृहमें मुझे मार खिलवाई इन सब बिषयों के आपही हेतुहैं निदान उसने सब यह दशा बिदशा जो कुछ कि बीतीथी क्रोध में ख़लीफ़ासे कहसुनाई वह इन सब बातोंको पहिले से जानता था उसकी सूधीभोली बातें सुन भलीभांति ठट्ठामार हँसा यह देख अबुल्हसन कहने लगा मैं जानता था कि तू मुझसे प्रीति रखता है और मेरादुःख सुन पछितावेगा और अपने अपराधपर लज्जितहोगा इस के बिपरीत मेरी आपदाको सुन हँसा इतनाकह वह महा अप्रसन्न हुआ और क्रोधितहोय कहने लगा यदि तुझे मेरे कहनेका बिश्वास न हो तो मेरीपीठ और कन्धों को देख कि कोड़ोंके चिह्न अबतक बर्त्तमान हैं निदान वह उसकी देहपर निशान देख बहुत पछिताया और उसे धैर्य्यदे फिर कण्ठ से लगाय कहने लगा भाई मुझे तुम्हारे चिह्न देख महाखेद भया परन्तु जो होनाथा सो हुआ अब मेरा अपराध क्षमाकरो और मुझे अपने घर ले चलकर भोजन करावो सुबहके वक्त मैं दरवाज़ा मूंद चलाजाऊंगा यद्यपि अबुल्हसन ने पूर्व्वमें यह प्रतिज्ञाकी थी कि दूसरी बेर किसीको अपने घर न लेजाऊंगा बिशेषकर ऐसे मनुष्यको जिसके कारणइतनादुःख पहुँचा परन्तु उस बेचारेको इस के सिवाय कि उसेले घर में जावे कुछ न बनआया निदान दोनों वहांसे उठ नगर की ओर सिधारे मार्गान्तर में ख़लीफ़ा ने उससे कहा तुम मुझसे भरोसा रक्खो मैं प्रणकरता हूं कि अपनी प्रतिज्ञा के बिपरीत न करूंगा परन्तु तुम्हें उचित नहीं कि मुझ ऐसे परम प्रिय मित्रको कि हरदशा में तुम्हारी भलाई और प्रसन्नताकी कांक्षारखता है शंकाकरो उसने कहा जो तुम कहते हो वह सत्य है परन्तु फिर मेरे घर आनेकी आशा मतिरखना क्योंकि वह सब दुःखजो मुझे पहुँचे उसका तुमहीं हेतुथे यह सुन ख़लीफ़ाने मुसकराय कहा तुम बड़े मनपापी हो इतने कहने सुनने परभी फिर

तुम्हारे मनमें सन्देह बनारहा इसीबिधि परस्पर वार्त्ताकरते सन्ध्या को घरमें पहुँचे उसकी माता ने भोजनपकाय सम्मुख रक्खा अबुल्हसन ख़लीफ़ाके साथ बैठके खानेलगा जब निश्चिन्तभया तो उस की माताने और पात्रबिछाय उसपर फल मदिरादिक ला धरदिये और आप भीतरजाय सोरही उनदोनोंने मद्यके कई पात्रपिये और अनेक प्रकारकी वार्त्ताकरतेरहे जब ख़लीफ़ाने देखा कि अबुल्हसन उन्मत्त भया तब उससे पूँछनेलगा तुम कभी किसीपर मोहित हुये थे उसने कहा न तो मैं किसीपर मोहित भया और न मुझे बिवाह का सुख मालूम है उसने पूँछा फिर किसपर तुम्हारी रुचिहै उसने कहा कि मेरी यही इच्छाहै कि स्वच्छ मदिरापीऊं और अपने मित्रों से वार्त्ताकरूं इसके बिशेष एक और इच्छा है कि मैं एक सुन्दर स्त्रीसे जो स्वप्नमें मेरेसाथ बैठके मदिरापान करतीथी विवाहकरना चाहता हूं परन्तु ऐसी स्वरूपवान् छबिधाम सिवाय महल बादशाह वा मंत्री के घरके किसको मिले पुनि एक मद्यका पात्र भर ख़लीफ़ाको दिया और कहनेलगा यह अन्तिमपात्रहै मेरे हाथसेलेके पियो वह तुरन्त पीगया फिर ख़लीफ़ानेभी एकपात्रभर उसमें थोड़ीसी मूर्च्छाकी बूटी डाल उसेदेकर कहा कि उस सुंदरीको जिसे तूने स्वप्नमें देखाथा सुधिकरसोजा अबुल्हसनने मुसकराय वह पात्र अपने हाथमें ले उस अनुचरी की सुधिमें पिया और मूर्च्छाखाय सोगया फिर ख़लीफ़ा ने उसीदासको सैनकी कि इसे बड़ीरचासे महल में लेजा वह उसेकांधे पर उठाय ले चला और ख़लीफ़ा उसके घरसे निकल द्वारमूंद उसके साथ होलिया जब अपने घरमें पहुँचा दाससे कहा इसे चौथी बारहदरीमें जहांसे उसे उठाय लेगयाथा मेरीशय्यापर लिटाय दे पुनि खोजियों को आज्ञा दी कि उसके कपड़े उतार मेरे वस्त्र पहिनाओ उन्होंने तुरन्त वहीकिया ख़लीफ़ा प्रभातहोतेही अपने शयन स्थान में गया और छिपके बैठरहा कि वहांसे अबुल्हसनका तमाशा देखे निदान जब उसबूटीका असरगया तो वहजगा और नेत्रखोले तो सोनेका उगालदान और प्रत्येकबस्तु वहां बिद्यमान देखी गानेवालियोंके सातसमूह तुरन्त अपने बाजे ले स्वरमिलाय अतिललित गीत

गानेलगे वह सहनाईका अतिमिष्ट शब्दसुन प्रसन्नहुआ और इतना दुःख उठाकर जो फिर वह सामान देखा तो अधिक आश्चर्य्यित भया और अपने चहुँओर खोजियों को खड़ा देख पूर्व समय की सुधिकी और उस बारहदरी को भी देख पहिचान गया और वही प्रकाश और वही बस्तु देखीं गाना बजाना बन्दहुआ कि ख़लीफ़ा उसका रूप और उसकी बातें सुने इस हेतु शयनालय के सेवक चुपचाप अपनी अपनी ठौरपर हाथ बांधे खड़ेरहे अबुल्हसन ने अपनी उँगली आश्चर्य्य से दांत से काटी और कहने लगा बड़ा खेदहै कि आज मैं फिर वही स्वप्न देखताहूं जो प्रथम मैंने देखाथा निश्चय है कि मैं फिर पूर्व्ववत् लोहेके पिंजड़े में बन्द किया जाऊं और बेड़ी हथकड़ी पहिन कईदिन तक मारखाया करूं वह मनुष्य जो कल मेरे घरगयाथा महादुष्टहै वही इस स्वप्न और अप्रतिष्ठाका कारण भया यद्यपि उसने मुझसे प्रतिज्ञाकीथी कि मैं जाते वक्त मकानका दरवाजा मूँदजाऊंगा परन्तु फिर वह किवाड़ खुला छोड़गया शैतान ने उसद्वारसे आय मुझे बहँकाया और ऐसे स्वप्न फिर दिखाये जिसे मैंने अपनेको ख़लीफ़ा समझा हे ईश्वर ! उसकी माया और दृष्टिबन्दीसे मुझे बचा यह कह उसने फिर अपनी आंखें मूँदीं और बहुकाल पर्यन्त शोचतारहा कि एकक्षण पीछे आंखेंखोल वह सब सामग्री और खोजियों और बांदियोंको देख आश्चर्य्यकर कहनेलगा हे परमात्मा, सच्चिदानन्द, प्रभु ! मुझे शैतान के छलसे बचादे फिर नयनमूंद मनमें कहनेलगा तू इसीभांति पड़ारह तनक न बोल चाहे मध्याह्न भी होजावे शैतान झखमार के आप चला जावेगा परन्तु लोगों ने उसे चुपका रहने न दिया प्राणानन्दिनी नामक अनुचरी जिसको उसने पहिलीबेर देखाथा उसके समीप आय बैठी और उससे कहनेलगी हे बादशाह ! यदि मेरा अपराध क्षमाहो तो मैं बिनयकरूं यह आपके सोने का समय नहीं जागिये सूर्य्य उदयहुये अबुल्हसन प्राणानन्दिनी का शब्द पहिचानकर कहनेलगा शैतान मेरेपास से उठ दूसरे मनुष्यके धोखे से मुझे ख़लीफ़ा कहता है प्राणानन्दिनीने कहा आपही बादशाह हैं और यह नाम जो मैंने आप

को दिया मुख्य आपही का है क्योंकि आप हिंदू मुसल्मान किन्तु संसार भरके चक्रवर्ती बादशाह हैं जिसकी मैं किंकरी अनुचरीहूं आपने रात्रिको कुछ स्वप्न देखाहै जिससे आप यह कहते हैं यदि आप भली भांति नेत्रखोलें तो यह सन्देह आपका निवृत्त होजाये और समझें कि मैं अपने मन्दिर में हूं और यह बाँदियां आपकी सेवाके लिये खड़ी हैं आप कुछ अचम्भा न कीजिये क्योंकि रात्रिको आपने बहुकालपर्य्यन्त शयनकिया हमने आपकी निद्रामें विघ्नहोने से न जगाया निदान प्राणानन्दिनी ने इस भांति की बहुतसी बातेंकीं इतने में वह उठबैठा और नेत्रखोले और उन लौंड़ियों को जिन्हें पहिले देखाथा पहिचाना वह सब हरबराय उस के निकटआय खड़ीहुईं पुनि प्राणानन्दिनी उस से बातें करने लगी और कहने लगी हे बादशाह! यह समय आपके जगने का है देखिये उजियाला प्रकट हुआ उसने अपनी आंखेंमल उससे कहा मैं तो बादशाह नहीं बेचारा अबुल्हसन हूं मुझे अपना बृत्तान्त भलीभांति मालूम है तूने उसके बिपरीत मुझे बादशाह क्यों कहा उसने उत्तरदिया हम अबुल्हसन को नहीं जानतीं कि वह कौन है ऐसा न कहिये कि आप बादशाह नहीं अबुल्हसन ने चहुँओर देखकर कहा क्या अद्भुत माया है कि मैं उस बारहदरी में बैठाहूं जिसमें पहिले था और वही स्वप्न देखता हूं जो पहिले देखाथा ऐसा न हो जो इस स्वप्नके देखने से वही दुःख उठाऊं मेराईश्वर रक्षक है खलीफ़ा यह सब बार्त्तासुन चाहता था कि ठट्ठामार हँसे परन्तु हँसी को दबाये रहा फिर अबुल्हसन ने लेटकर अपनी आंखें मूंदलीं तब फिर प्राणानन्दिनी ने कहा यद्यपि इस किंकरी ने दो बेर आपसे कहा कि समय बीताजाता है आप क्यों नहीं जागते सम्पूर्ण सभासद अगवानीके लिये खड़े हैं आपहीकी आज्ञा है कि आपको सूर्य्योदय के पहिले जगादें फिर दो बांदियों ने उसकी भुजापकड़ उठायदिया और बारहदरीके मध्यमें गद्दीपर लेजाय बैठायदिया और हाथ बांधकर उस के सम्मुख नृत्य और ललितस्वरोंसे गानकरने लगीं और चहुँओर से सुन्दरबाजे बजने लगे अबुल्हसन इस दशाको देख मनमें कहनेलगा क्यामैं वास्तवमें बादशाहहूं

और चाहताथा कि कुछ वार्त्ताकरे परन्तु शोर और वाह वाह में कुछ सुनाई न देता तब उस ने हाथ की सैनसे शशिमुखी को जो उसके सम्मुख नृत्यकरती थी बुलाय पूंछा सत्य कह मैं कौन हूं उसने उत्तर दिया हे बादशाह ! इस प्रश्नसे आप परीक्षालेते हैं आपही बताइये क्या आप बादशाह नहीं फिर कौनहैं अपने को आपक्यों भूलगये आप इस रात्रिको अपने नियम से अधिकसोये यदि आप कहिये तो हम उन सब बातों को जो कल आपने की हैं स्मरण करावें फिर कहने लगी कल आपने सभा में जाय कोतवाल को अमुक गलीमें भेजकर मवज़्ज़न और चार उसके संगतियोंको दण्डदिलाया और मन्त्री को भेजकर हज़ार अशरफ़ी अबुल्हसन की माता को दिलाई और जब फिर बारहदरी में आपगये तब अमुकपाक भोजन किया और अमुक बचनकहे और हमको स्वामिवत् दयालुतासे बैठाय भोजन कराया और फलदिये और हमारे हाथसे मद्य के पात्र पानकिये और हमारा गानासुना फिर शय्यापर रात्रिभर ऐसे सोये कि दिनहोगया और फिरभी आपकी आंखें नहीं खुलतीं मणिमाला और अन्य अनुचरियां और खोजी भी एक मतहोय उस शशिमुखी के बचनका पक्षकरतेरहे फिर सब कहनेलगे कि अब आप उठिये और भोरकी बन्दना कीजिये अभी समय कुछ शेष है अबुल्हसन ने उन बातोंको सुनकहा हे महाधूर्तो! यद्यपि तुमरूप अनूपसे छकी और यौवन में पकीहो परन्तु बुद्धि और चतुरतासे ख़ालीहो पूर्व्व में मैंने ऐसाही स्वप्नदेखा था तब बड़े २ दुःख और कष्टउठाये और बहुकाल पर्य्यन्त लोहे के पिंजड़े में हथकड़ी और बेड़ी डालेहुये पड़ारहा प्रतिदिवस पचासकोड़े मुझपर पड़ाकरते थे जिससे मेरी पीठकी खाल उधड़गई और उसपर कालेचिह्न पड़गये तुम उसे स्वप्न समझतीहो यह सुन शशिमुखी ने उत्तरदिया यह बृत्तान्त अर्थात् क़ैदहोना और मारखाना आपके बैरियोंने स्वप्नमें देखाहोगा क्योंकि आपकलसे कहीं नहीं गये रात्रिभर इसी बारहदरी में सोया किये इस समय में आपकी आंखें खुली हैं अबुल्हसन ने उसका बचन सुन कहा तू सत्यकहती है और समझा जबसे मैं इस महलमें आया फिर यहांसे बाहर नहीं निकला

परन्तु फिर चिन्ताकरने लगा कि उस दशाको जिसमें मारखाई स्वप्न समझूं वा इसे जो साक्षात् देखताहूं हे प्रभु! मैं अबुल्हसनहूं वा ख़लीफ़ा जो सत्यहो सो बिदितहोजावे इसके अनन्तर अपनी भुजाओं को जिनपर मारके चिह्न पड़े थे खोलके उन स्त्रियों को दिखाये और कहनेलगा तुम बिचारो कि सोयेहुये मनुष्यके शरीरपरभी कहीं मार के चिह्नपड़तेहैं इस विषयको साक्षात्समझो अभीतक इनके दबाने से पीड़ा होती है अबदृढ़ सूचितहुआ कि मैं ख़लीफ़ा नहीं बेचारा अबुल्हसन हूं यदि कोई इसे स्वप्न समझे तो कोई बात संसार में इस से अद्भुत न होगी कि स्वप्न में मारपड़े और उसका परिणाम (अर्थात् पीड़ा जाग्रत् अवस्थामें ज्ञातहो इसके उपरान्त उसने एक) बांदी को बुलाय कहा मेरा मांस काट जिससे मुझे मालूमहो कि मैं जागताहूं वा सोता उसने वैसाही किया तो वह पीड़ा से चिल्लानेलगा उसके चिल्लातेही एकहीबेर सबबाजे बजने लगे और सब खोजी और लौंड़ियां गाने बजाने लगीं फिर अबुल्हसनने अपने वस्त्रउतार फेंकदिये केवल एक पायजामा पहिरेरहा और उन सब के साथ हो नाचता और तालियां बजानेलगा कभी इतना झुकता कि दोहरा जाता निदान कोईबात मसख़रेपनकी नछोड़ी ख़लीफ़ा यहदशा देख हँसते हँसते लोटगया निदान उसने पुकारकर कहा अबुल्हसन बस कर क्या हँसते हँसते तू मुझे मारडालेगा जब ख़लीफ़ाने यह कहा तब सब चुपहोरहे और बाजों का शब्दभी बन्दहुआ अबुल्हसन भी चुपहोय आवाज़की तरफ़ देखनेलगा उसने वहां ख़लीफ़ाको देख पहिचान कर कहा आपही ब्यापारी का बेषबनायेहुये थे इतना कह कुछ लज्जितहुआ और समझा कि मैं जगाहूं स्वप्ननहीं देखता और यह सबबातें ख़लीफ़ा की खुशी के लियेहुईं पुनि ख़लीफ़ा की ओर देख कहनेलगा कि आपही मवस्सल के ब्यापारी के बेषमें थे और आपही मेरे मारपड़ने और प्रतिष्ठा के हेतुहुये ख़लीफ़ाने कहा अबुल्हसन तू सत्यकहताहै मैं इसका तुझे यथार्थ बदलादूंगा और मैं ईश्वर को साक्षी करता हूं कि इसके बदले तेरेसाथ ऐसा उपकार करूंगा कि आजतक किसीसे न किया होगा यह कह ख़लीफ़ा उस

मकानसे नीचे उतरआया और मसरूरको आज्ञादी कि तुरंत बस्त्र लाय इसेपहिनाओ जब वह पहिनचुका ख़लीफ़ाने उसे अपनेकण्ठसे लगाय कहा तू मेराभाईहै जो तू कहेगा वही करूंगा अबुल्हसनने कहा हे दयालु,कृपालु! पहिले आपकहिये कि मेरे बिक्षिप्त बनानेसे आपको क्या लाभथा ख़लीफ़ाने उसे धैर्य्यदे कहा महीनेकी पहिली तिथिको वेषबदल नगरके बुरेभले बृत्तान्तके मालूमकरनेको नगरके गलीकूचों में फिराकरताहूं तथा अमुकरात्रि को तूने मुझे अपने घरमें लेजाय अति स्वादिष्ठ भोजनखिलाये तेरीवार्त्ता से ज्ञातहुआ कि यदि तुझे ईश्वर एक दिनकेलिये ख़लीफ़ाकरदे तो अपनीगलीके अमुकमव-ज्ज़न और चार उस के संगती मनुष्यों को दण्डदेगा इसलिये मैं तुझेमदिरामें मूर्च्छाकी ओषधिपिलाय अपने मन्दिरमें उठवालाया तू रात्रिकी बातेंबिचार ख़लीफ़ा बनबैठा और हरएकको मारने और बुराभला कहनेलगा निदानक़ैदहोके मारखाई एकमासपीछे दूसरी बेर मैं फिर तेरा अतिथिहोके उसीभांति तुझे यहां उठालाया अब तू धर्य्यधर अबुल्हसनने कहा हे बादशाह! जो कष्टमुझपर पड़े सो जन्मभर स्मरणरहेंगे कि ख़लीफ़ाके कारण मेरी यह दशाभई और बिश्वासहै कि आप मुझपर सर्व्वदा कृपा करतेरहेंगे परन्तु मेरी यह इच्छा है कि आपकी सेवा में रहूं और प्रतिसमय आपके सम्मुख उपस्थितरहूं ख़लीफ़ाने कहा मैंने तेरी यह इच्छा स्वीकारकी और तुझे मैंने हरसमय आनेकी आज्ञादी तुझे कोई न रोकेगा फिर एक मन्दिर अतिसुन्दर उसके रहनेको दिया और हज़ार अशरफ़ी देके यही मासिक उसका नियत किया जब ख़लीफ़ा सभामें गया तो अबु-ल्हसन अवसरपाय अपने घरमें आया और अपनी मातासे सम्पूर्ण बृत्तान्त वर्णन किया कि जो कुछ बीताथा स्वप्न न था किन्तु यह सब जाग्रत् अवस्थामें ख़लीफ़ा की इच्छा से हुआ और उसने मुझे एक रात दिन के लिये अपना राजपद दे मेरी सब आज्ञा प्रचलित कराई अबमुझे उसनें अपना सभासद नियतकिया फिर यह बृत्तान्तसम्पूर्ण बग़दादनगर में बिख्यात हुआ और वहां से और नगरों में प्रसिद्ध भया उस दिनसे अबुल्हसन ख़लीफ़ा के निकट उपस्थितरहकर उसको

अपने हास्य और बाचालता से प्रसन्न रखता एक दिन ख़लीफ़ा अबुल्हसनको जुबैदा अपनी मलकाके समीप लेगया और इसका सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया वह यहसुन हर्षितभई अबुल्हसन बहुधा ख़लीफ़ा के साथ महल में जाता और बहुधा चन्द्रकला नाम एक अनुचरी को प्यारकी दृष्टिसे देखता जुबैदाने यह बृत्तान्त ख़लीफ़ा से कहा कि अबुल्हसन इस सुन्दरीको बहुत देखाकरता है और वहभी उससे प्रसन्न मालूमहोती है यदि सलाहहो तो इन दोनों का बिवाह करदें ख़लीफ़ाने कहा हे प्रिय! तुमने मेरेमनकी बातकही क्योंकि मैंने इससे प्रतिज्ञाकीथी कि तुझे अतिसुन्दर स्त्रीदूंगा परन्तु अबतक मैंने इसकीरुचि किसीपर न पाई अबतुमसे मालूमहुआ इससे क्या उत्तम कि इन दोनों का बिवाह करदिया जावे जितना कि जुबैदा को चन्द्रकलाप्रियथी उतनाही ख़लीफ़ाको अबुल्हसन प्याराथा पुनि उनका बिवाह बड़ी धूमधाम से हुआ जुबैदा ने असंख्य द्रव्य दहेज़में दिया और ख़लीफ़ानेभी अबुल्हसनको बहुत रत्न और धनदिया अबुल्हसन चन्द्रकला को उसी मकान में लेगया जो ख़लीफ़ाने उसेदिया था और बड़ा उत्सव किया कई दिनतक आनन्दरहा फिर वहदोनों प्रीतिपूर्व्वक रहनेलगे सिवाय इसके कि वह ख़लीफ़ा और जुबैदा की सेवामें जाते बियोग न होता बास्तवमें चन्द्रकला अत्यन्त चतुर और रूपवान्थी इसहेतु अबुल्हसन उसपर मोहित रहता वहदोनों प्रियाप्रियतम अतिउदारथे सदैव उत्तम भोजन करते और स्वच्छ वस्त्र पहिरते और दिव्य मदिरापीते और भोरसे सायंकालपर्य्यंत भोजन के भाजन बिछेरहते जो खोजी वा कोई अनुचरी उनके भेंट को आती तो वह उनको बिना भोजन कराये बिदा न करते इसके बिशेष उनकी प्रतिष्ठानुसार वस्त्र देते और कइयों को पारितोषिकादिक दे बिदाकरते और रात्रिको फल मिठाइयां मुरब्बे और अचार भोजनके समय रक्खे रहते गाना बजाना आदिक आनन्द रहता निदान इसीभांति इन्होंने धनवानों के समान अपना निर्व्वाहकिया उनके रसोइयेंनेभी बहुत दिनोंतक अतिस्वच्छ भोजन पकाये और निश्शंक लुटादिये तो एक दिन रसोइयें ने ख़र्चका हिसाब उन्हें लाय

दिखाया और इसीप्रकार तोशेखानेवाले ने कि उन दोनों के बस्त्रों में ख़र्चकियाथा सो रुपया मांगा उन्हों ने जो कुछ कि बचाथा देदिया तथापि हज़ारों रुपये का ऋण उनके मध्ये निकला और ख़र्चकी ओर से दुःखपानेलगे अबुलहसन ने इस प्रतिज्ञा से कि कदाचित् ख़लीफ़ा से कुछ न मांगूँगा सो ख़लीफ़ासे कुछमांग न सका और पूर्वका द्रव्य जो बिवाहके प्रथम पायाथा अपनी माता को देडाला अबकुछ मातासेभी न मांगसक्ताथा और चन्द्रकलाभी कि ज़ुबैदाने उसे इतना द्रव्यदियाथा कि जन्मभर उसे बहुत था न मांगसक्तीथी सो द्रव्य के न होने से अतिदुःखपाकर अबुलहसनने अपनी स्त्री से कहा अबकोई उपाय करनाचाहिये सो परस्पर सहायता करनी अवश्य है चन्द्रकलाको इसके कहनेपर कुछ दृढ़ताहुई और कहनेलगी मैं तो निपट निराशथी अब तुम बताओ कि वह कौनसी युक्ति है उसने कहा वह ऐसा उपाय है कि वह कुछ न कुछ अवश्य देंगे वह यह है कि हम तुम दोनों मरें उसने कहा जो तुम चाहो तो मरो मैं अभीनहीं मरती मुझे तो अभी संसार का सुख भोगना है यदि इस उपायके बिशेष कोई अन्य यत्नहो तो निस्संदेह मैंभी इसमें संयुक्तहूं उसने कहा आख़िर को तेरास्त्रीका जन्म है मरनेका नाम सुन के घबड़ागई मुझे मरने का हाल न कहनेदिया मेरा प्रयोजन बास्तवमें मरनानहीं किन्तु केवल मक्कर करनाहै चन्द्रकला ने कहा यदि मरनेसे तुम्हारा यहअभिप्राय है तो इससे उत्तम दूसरा कोई उपाय नहीं अब उस मक्करको बयानकर कि मैंभी उसे समझूं उसके पतिने कहा मैं लेट के मृतकवत् बनूँगा तुम मुझपर एकउज्ज्वलचादर डालदेना कि मानों मैं बास्तव में कालबश हुआ फिर मुझे दालानमें रख यथोचित बिलाप करना और एकपगड़ी बँधीहुई मेरेशीशपर रखकर मेरेचरण पश्चिम की ओर कर देना और बस्त्रफाड़ शिरके केश खोल रुदन करती हुई ज़ुबैदाके निकट जाना वह तुझे अवश्यकुछ देवेगी कि मेरीअरथीबड़ी धूमधामसे उठाई जावे और तेरेबस्त्र फटेदेख अतिउत्तम थान देगी जब तुम वहांसे रुपये लेके आवोगी तो मैं उठ खड़ाहूँगा और फिर तुम लेटकर मृतक बनना मैं तुझे बस्त्र पहिरा ख़लीफ़ा के निकट

नम्बर ७१ मुन्शी आलिमअली के राये ५६ ५ लह. आ.

चित्रचन्द्रकलाकोशरदकेनिकट औरबादशाह औरवज़ीरकाहा-
लपूछना.



जाय यही छल उससे करूंगा निश्चय है कि वह इस हालको सुन ज़ुबैदासे कम न देगा जब वह यह उपाय बर्णनकरचुका उसकी स्त्रीने कहा यह उपाय बहुत अच्छाहै वह निस्सन्देह हम तुमको बहुत कुछ देंगे अब हममेंसे कोई वह उपायकरे जिससे लाभहो जब हम परस्पर मिलकर उसको करेंगे तो निश्चय बहुत रुपया मिलेगा अब विलम्ब मतकरो फिर अबुल्हसन क़ालीन पर सफ़ेद चादर बिछाय चित लेट गया और पांव अपने लम्बे करदिये और एक चादर लपेट मृतकके सदृश बनगया उसकी स्त्रीने पश्चिमकी ओर उसके चरणफेर दिये और महीनवस्त्र से उसका मुख छिपादिया और पगड़ी उस के मुखपर इसभांति रक्खी कि श्वास उसका न रुके पुनि अपने शिर की ओढ़नी फाड़ केशखोल बहुत बिलाप किया उसी दशा से रुदन करतीहुई ज़ुबैदाके महल में गई और उससे अबुल्हसन के मरने का हाल कहसुनाया ज़ुबैदा और अन्य बांदियां यह सुन रोने और पछिताने लगीं ज़ुबैदा कि इसे बहुत चाहतीथी उसके बचनपर निश्चयकर एक हज़ार अशरफ़ी और एक भारी थान कमख़ाबका उसे देकर कहा कि इसे अरथीपर डालियो और अशरफ़ियों को फ़ातिहा और दरूद में ख़र्चकरना वह उसेले अपने घरमेंलाकर अबुल्हसन को रुपये और वस्त्र दिखादिये वह हर्षितहोय उठ खड़ाहुआ पुनि चन्द्रकला ने कहा अब मैं बहानाकर के मरती हूँ तू मेरे मरनेका हाल ख़लीफ़ासे जाके कह और अशरफ़ियां और थान उससेला उस ने कहा तू मुझे इस बिषयमें क्या सिखाती है मैं तुझसे आपही चतुरहूँ अब तू तुरन्त मृतकवत् बन देख तो मैं क्या काम करता हूँ निदान अबुल्हसन अपनी स्त्रीको वस्त्रसे ढांपकर दरबार केसमय रुदनकरता हुआ चला ख़लीफ़ा ने उसे रोतेहुये देख अपने सब काम छोड़ दिये और उसकी ओर देखनेलगा और उससे रोनेका हेतु पूछा उसने बिनयकी हे दयालु,कृपालु,स्वामी! मेरी स्त्री चन्द्रकला मरगई ख़लीफ़ाने बड़ाखेद किया और उसे रोतेदेख वज़ीर आदिक सकल सभासदोंने भी महारुदन किया और ख़लीफ़ा ने हज़ार अशरफ़ी और भारीथान कमख़ाबका दिलवाकर उसे बिदा किया उसने हँसी खुशी

लाकर चन्द्रकला को दिखाया वह प्रसन्नहो उठबैठी खलीफ़ा और जुबैदाको उन दोनों के मरनेसे महाशोकथा इतने में खलीफ़ा सभा को बिदाकर मसरूरको साथले जुबैदा के महल में आया और उसे अत्यन्त चिन्ताकरते और आंसू बहाते देख खलीफ़ा ने उसे धैर्य्य देकर कहा कि यद्यपि चन्द्रकला तुम्हारी हितैषी लौंड़ी थी परन्तु ईश्वरसे कुछ उपाय नहीं चलता सन्तोष रक्खो जुबैदा यह सुनतेही आश्चर्य्य में हो समझी कि खलीफ़ा को धोखा हुआ कि अबुल्हसनको चन्द्रकला समझा यह सोच कहनेलगी हज़ूर चन्द्रकला तो जीती है अबुल्हसन तुम्हारा सभासद् मरगया खलीफ़ा हँसकर मसरूरसे कहनेलगा इसकी समझसे मुझे अचम्भाहै कि ऐसी उलटी बात कही कि चन्द्रकला के बदले अबुल्हसन का मरना बताती है पुनि जुबैदासे कहनेलगा हे सुन्दरी! तुम अबुल्हसनके वास्ते मतरोवो वह तो चंगाभला है अभी अपनी स्त्री के लिये बिलाप करताथा अब तुम अपनी प्रिय बांदी के लिये रुदनकरो अबुल्हसन थोड़ी देरहुई कि मेरेपास रोताहुआ आयाथा मुझे भी उसे देख रोना आया और उसने मुझसे अपनी स्त्रीकेमरनेका हाल प्रकटकियासो मैंने एकथान कमख़ाब और एकहज़ार अशरफ़ी उसे दिलवादीं जिससे उसे धैर्य्य हो उससमय मसरूर वहां खड़ाथा यह सब बातें जो मैं कहताहूँ उसने देखीं यदि तुम्हें संदेह वा भ्रमहो तो इस से पूँछलो जुबैदा ने खलीफ़ा से कहा तुम्हारा स्वभाव हँसीका है परन्तु यह समय हँसीका नहीं तुम मेरी लौंड़ीका शोक करतेहो और बास्तवमें उसका पति मरा है तुम्हें चाहिये कि अबुल्हसन के वास्ते रुदनकरो खलीफ़ाने कहा हे सुन्दरी! मैं हँसीसे नहीं कहता बास्तवमें अबुल्हसन जीताहै और चंगा भला है तुम धोखेमेंहो जुबैदाने उत्तरदिया ऐसानहीं जैसा तुमकहतेहो लौंड़ीजीती है थोड़ीदेरहुई कि वह रोतीहुई मेरेसमीप आईथी बहुकाल पर्य्यन्त अपने पतिके मरनेसे बिलापकरतीरही सो उसकी यह दशा देखमैं भी रोई मेरारोनादेख सबबांदियां भीरोईं आपसबसे यहवृत्तांत पूँछें किमैंने उसे एकहज़ार अशरफ़ी और एक कमख़ाबका थान दिया था नहीं मुझे जो आपने शोकमें देखा मुझे अबुल्हसन के मरजानेकाही

शोकहै और मैं चाहतीथी कि आपको कहला भेजूं इतने में तुम आपही आये निदान बहुकाल पर्य्यन्त इसी बिषयमें तकरार रही ख़लीफ़ा कहताथा कि अबुल्हसन जीताहै और चन्द्रकला मरगई और ज़ुबैदा कहती नहीं चन्द्रकला जीती है निदान ख़लीफ़ा ने खिसिया कर मसरूरको आज्ञादी कि यद्यपि मैं जानताहूं कि चन्द्रकला मरगई तथापि तू शीघ्रजाय ठीक ठीक हाल वहांका ला कि इन दोनों में से कौन मरा और कौन जीताहै जब मसरूर जाचुका तो ख़लीफ़ा ने ज़ुबैदासे कहा अभी मालूम हुआजाता है कि सच्चा कौनहै और झूठा कौन है ज़ुबैदा ने कहा मैं सच्चीहूंगी और तुम अभी सुनोगे कि अबुल्हसन मरा निदान दोनों अपनी २ बातपर दृढ़थे उन दोनों ने परस्पर प्रण किया ख़लीफ़ा ने कहा यदि मैं हारूं तो अमुक बाग़ तुम्हें दूं और जो तुम हारो तो तुम्हारा खिलौनोंवाला मकान लेलूं ज़ुबैदा राज़ी हुई वह दोनों परस्पर इस प्रणपर मसरूर के आगमन की बाट देखनेलगे अबुल्हसन तो प्रथमही जानता था कि इस बिषय में ख़लीफ़ा और ज़ुबैदा में अवश्य तकरार होगी किन्तु परीक्षाकी बारआवेगी इसहेतु उसने प्रथमसे एकउपाय सोचरक्खा था वह अपने मकानमें बैठाहुआ स्त्रीसे बार्त्ता करताथा कि किवाड़ की दरारसे मसरूर को आते देखा कि सूधा इन्हींके घरकीओर चला आता है और समझगया कि इसी हेतु ख़लीफ़ा ने उसे भेजा है यह देख उसने अपनी स्त्री से कहा कि तुरन्त तुम फिर एकबेर मर जाओ चन्द्रकला तुरन्त लेट कफ़न पहिन मृतकतुल्य बनगई और अबुल्हसन ने एक कमख़ाब का थान जिसे ख़लीफ़ा ने उसे दियाथा उसपर डालदिया और घरकाद्वार खोल अपनी रोनी सूरति बनाय रूमाल अपने नेत्रोंपर रख लोथ के शिरहाने बैठगया इतने में मसरूर भीतर आया और चन्द्रकला को मरा देख मनमें प्रसन्नहुआ कि हमारा ख़लीफ़ा सच्चा है जब निकट पहुँचा तो अबुल्हसन उठ बड़े आदर से उसके हाथों को चूमकर कहनेलगा तुम देखते हो मैं किस शोक और आपदामें हूं चन्द्रकला ऐसी स्त्री इस संसार से उठ गई तुम भी उसपर दयारखते थे मसरूर भी उसकी सुधिकरके बहुत

रोया और शिरकी ओरसे वस्त्र उठाय उसकी सूरति देखी फिर मुख छिपाय कहनेलगा ईश्वरकी मायासे किसीका कुछ उपाय नहीं चलता चन्द्रकला मेरी अच्छी बहिन थी ईश्वर तुझपर दयालुहो पुनि अबुल्हसनसे कहनेलगा स्त्रियोंकी क्यादशाहै भलेप्रकार निश्चय करने के बिना हरएक बातपर तकरारकर अपनी बातको दृढ़रखती हैं और दूसरेका बचन नहीं सुनतीं यद्यपि ज़ुबैदा बुद्धिमान्है परंतु यही कहती है कि तुममरगये और चन्द्रकला जीतीहै बड़ीदेरसे ख़लीफ़ा से तकरारकरतीहै यद्यपि मैंनेभी साक्षीदी क्योंकि तुमने मेरेसामने यह हाल कहाथा तौ भी ज़ुबैदा को निश्चय नहीं और अबतक वह अपनेही बचनको दृढ़करती है और ख़लीफ़ा को झूठा जानती है उसने कहा ईश्वर ख़लीफ़ा को जीता रक्खे कि उन्हों ने इस दुःख में मेरी बड़ी पालना की मैं आपही जाकर वृत्तान्त कह आता परन्तु अरथी छोड़कर नहीं जासक्ता मसरूर ने कहा यदि अब मुझे ख़लीफ़ा के पासजानेकी आवश्यकता न होती तो इसी दशामें तुम्हारे संयुक्त होता तुम्हारे जानेकी वहां आवश्यकता नहीं अब जाय इस हाल को बिस्तारसे वर्णन करताहूँ यहकह वह बिदाहुआ अबुल्हसन द्वारतक उसके साथहुआ जब मसरूर दूर निकलगया अबुल्हसन ने अपनी स्त्रीके ऊपरसे थान और चादर उठाय कहा अब तुम उठबैठो परन्तु मुझे बिश्वास है कि ज़ुबैदा मसरूर के कहने पर निश्चय न करेगी और किसी अपनी बिश्वासित दासीको यहां देखने के लिये भेजेगी चन्द्रकला ने तुरन्त उठ अपने वस्त्र पहिन लिये फिर वह दोनों द्वार के समीप बैठ मार्गके दरवाज़ेकी दरार से देखते थे कि देखिये अब कौन आताहै मसरूर महलमें पहुँचकर हँसा और अपने दोनोंहाथ मारेहर्ष के बजाये अर्थात् ख़लीफ़ा सच्चाहुआ और ज़ुबैदा को जीत लिया ज़ुबैदा ने अप्रसन्न होय कहा हे ग़ुलाम हब्शी,दुष्ट ! यह हँसने का समय नहीं है सत्य कह कौन मराहै स्त्री वा पुरुष मसरूर ने कहा चन्द्रकला कालबश हुई अबुल्हसन उसके शोकमें रोरहा है ख़लीफ़ा यह बचन सुनतेही उछलपड़ा और ठट्ठा मार के हँसा और ज़ुबैदा से कहनेलगा हे सुन्दरी ! तुम्हारा खिलौनोंवाला घर मैं जीता इसके

अनन्तर खलीफ़ा मसरूर से कहनेलगा कि सम्पूर्ण बृत्तान्त वहां के जाने और अरथी के देखने का बिस्तार से बर्णन कर उस ने कहा हे स्वामी! जिस समय मैं अबुल्हसन के घर पहुँचा द्वार उसका खुलापाया भीतरजाय क्या देखा कि अबुल्हसन अरथी के शिरहा ने बैठाहुआ रोरहा है और चन्द्रकला क़फ़नाई हुई दालानके मध्यमें पड़ी है और वह कमख़ाब का थान जो आपने उसे दिया था लोथ पर पड़ाहुआ था मैं उस लोथके निकटगया और शिरहाने की ओर से उसके मुँहपरसे बस्त्र उठाय देखा उसके मुख की कांति बदली हुई थी परन्तु किंचित् शोथहुआ था फिर उसके मुखपर बस्त्र ढांक चला आया वहांका यही हालथा जो मैंने आपसे कह सुनाया ख़लीफ़ाने कहा मुझे इस बिषयमें कुछ सन्देह न था अब तेरे देखआने से दृढ़ निश्चयहुआ पुनि ख़लीफ़ा जुबैदासे कहनेलगा तुम्हेंभी स्त्रीके मरने का निश्चय हुआ होगा तुमने शर्तहारी जुबैदा ने ख़लीफ़ा से कहा मुझे इस दासके बचनका निश्चय नहीं यह दास महादुष्ट और धूर्त्त है न मैं अन्धीहूं न बिक्षिप्त मैंने अपनी आंखोंसे चन्द्रकलाको देखा कि रोती पीटती आई थी मैंने उस से आप बातें कीं और जो उसने कहा मैंने सुना मसरूर कहने लगा हे सुन्दरी! मुझे तुम्हारी और खलीफ़ा की कि मुझे संसारमें इससे अधिक प्रिय कोई नहीं सौगन्द है कि चन्द्रकला मरी और उसका पति जीता है जुबैदा ने क्रोधित होय कहा कि भला मैं अभी तुझसे समझूंगी फिर अपनी दासियों को बुलाय उनसे पूंछा कि ख़लीफ़ाके आनेके पहिले कौन रोताहुआ मेरे पास आयथा दासियोंने बिनयकी कि चन्द्रकला रोतीहुई आई थी फिर जुबैदा ने उस बांदी से जो उसकी खज़ांची थी पूंछा कि किसको मैंने अशरफ़ियां और थान दिलवाया उस ने कहा चन्द्रकलाको फिर जुबैदाने क्रोधितहोकर मसरूर से कहा हे दुष्ट! अयोग्य तू क्यों इन सब के प्रतिकूल कहता है मैं तेरे कहने का निश्चयकरूं वा सब बांदियों का मसरूर ने बहुत कुछ कहा निदान चुपका होरहा और ख़लीफ़ा ने जुबैदा की ओर देख हँसके कहा जिस ने स्त्रियोंको भ्रष्टबुद्धि कहा सत्य कहा है हे सुन्दरी! इसी समय मसरूर अपनी

आंखसे देखआयाहै कि चन्द्रकला दालान में मुई पड़ीहै और अबुल्हसन उसके शिरहाने बैठा रोरहा है जिसपर तुम्हें बिश्वास नहीं आता ज़ुबैदा ने ख़लीफ़ा से कहा मेरा अपराध क्षमाहो मसरूर के बचनका मुझे निश्चय नहीं वह तुम्हारा सेवक है तुम्हारीसीही कहेगा और उसके कहने पर तुमने मुझे बुद्धिहीन बनाया मैं बिनय करती हूं मुझेभी आज्ञाहो तो मैंभी किसी अपने मनुष्य से भेद मालूमकरूं कि मैं सच्चीहूं वा झूठी ख़लीफ़ाने कहा बहुत अच्छा तुमभी किसीको भेजो ज़ुबैदाने अपनीदाई को जिसका दूध उसने पियाथा बुलाय कहा कि तुम अबुल्हसन के घरजावो और भलीभांति मालूम करो कि अबुल्हसन मरा है वा चन्द्रकला मैं तुझे इनआमदूंगी वह दण्डवत् कर सिधारी ख़लीफ़ा ने मन में कहा दाईका जाना व्यर्थहुआ उसके मुख से सुनकर ज़ुबैदा को बिश्वास होगा और मसरूर से साफ़ होजावेगी अबुल्हसन कि अपने दरवाज़े की दरार से मार्ग की ओर देखरहा था दाई को आते देख समझा कि वह ज़ुबैदा की तरफ़ से हालके मालूम करनेको आती है अब जो उचितहो सो करनाचाहिये तो अपनी बीबी से कहा कि दाई ज़ुबैदाकी ओर से आई है अब मुझे चाहिये कि मैं मरूं सो वह पहिलेकी भांति लेटगया और अपने को मुर्दा बनालिया चन्द्रकला ने उसे क़फ़न पहिराय थान कमख़ाब का जो ज़ुबैदा ने दिया था डालदिया और पगड़ी उसके शिरपर रखदी और दाई तुरन्त उसके घरपहुँची और क्या देखती है कि चन्द्रकला अपने शिरके बाल नोचे खसोटे छाती पीटती आंसू बहारही है दाई उसके समीप जाय अति नम्रतासे कहने लगी मैं इस समय मातमपुरसीको तुम्हारे पास नहीं आई उसने कहा हेमाता! देखो मैं किसदुःख में हूं अबुल्हसन कि जिस के साथ ख़लीफ़ा और ज़ुबैदा ने बड़ी दया करके मेरा बिवाह कियाथा मरगया फिर उसने पुकारके कहा हे अबुल्हसन! तुम मुझे रांड कियेजातेहो मैं तुम्हारे पीछे क्याकरूंगी ईश्वर ने कौन कष्ट मुझपर डाला दाईने देखा कि जो कुछ मैं यहां देखतीहूं मसरूर के कहने के प्रतिकूल है फिर उसने अपना शिर ऊपर करके कहा धिक्कारहै उस मुँहकाले गुलामपर जिसने झूठी बातें कहके मेरी

स्वामिनी और ख़लीफ़ा में झगड़ा डाला और चन्द्रकलासे कहा बच्ची तुमने कुछ अचम्भेकीबात और भी सुनी उस अयोग्य हब्शी अर्थात् मसरूरने ख़लीफ़ासे कहा कि चन्द्रकला अर्थात् तेरेशत्रु कालबश हुये और अबुल्हसन तुम्हारा पति जीताहै और इसबात पर लड़ झगड़ ज़ुबैदाको अप्रसन्न किया उसने रोके कहा यदि हे माता! जो मसरूर कहताहै वही सत्य होता तो मैं आज अपने प्रिय प्रियतम के शोकमें न पड़ती यह कह महाबिलाप करनेलगी दाई भी उसे इसदशामें देख रोने लगी और चतुरता से अबुल्हसनके शिर-हानेजाय वस्त्र उठाया और उसे भलीभांति देख तुरन्त ढांपदिया और आशीर्ब्बाद दिया हे दीन अबुल्हसन! तुझपर ईश्वर दयाकरे और चन्द्रकला से कहनेलगी तेरा ईश्वर रक्षकहै मैं चाहती हूं कि मैं भी तेरेसाथ शोक करूं परन्तु क्याकरूं ऐसी आवश्यकता है कि मैं तनक ठहर नहींसक्ती ज़ुबैदा मेरेपहुँचनेकी राहदेखतीहोगी उस दासने झूठकह उन्हें इस समय अप्रसन्न कर रक्खाहै और निर्ल-ज्जतासे उनके सम्मुख इसबातकी सौगन्ध खाई कि तुम मरगई हो और तुम्हारा स्वर्गबासी पति जीताहै इतना कह दाई आंसू पोंछती हुई ज़ुबैदा के महलको सिधारी उधर अबुल्हसन उठबैठा और वे दोनों किवाड़की दरार से मार्गकी ओर देखनेलगे कि देखिये अब क्या होताहै कि उसका समयपर उपाय करें अबतक तो अपनी बुद्धि और धूर्त्तता से अपनेको बचातेरहे यद्यपि वह बुढ़िया महानिर्ब्बल थी तथापि शीघ्र अपने पांवों को उठातीहुई चली जो चन्द्रकला के जीने और अबुल्हसन के मरने का समाचार कह ज़ुबैदा को प्रसन्न और ख़लीफ़ा को निरुत्तरकरे निदान मन्दिर में हांफतीहुई ज़ुबैदा और ख़लीफ़ाके निकटगई जो कुछ कि उसने वहां देखाथा सब ज़ुबै-दासे कहसुनाया ज़ुबैदा उसकीबातें सुन कहनेलगी अब यह सम्पूर्ण बृत्तान्त जाय ख़लीफ़ा से कह कि वह हमें निर्बुद्धी समझ हँसकर कहता है कि सब धोखे में हैं और उसका एक अनुचर सत्यबक्ता है और मसरूर अपने मनमें प्रसन्नथा और बग़लें बजाता था कि अब दाई अपने नेत्रोंसे देखआईहै वही कहैगी जो मैंने बर्णन किया दाई

ने मसरूर से कहा तू बड़ा झूठा है तूने क्यों स्वामी के सम्मुख झूठ कहा चन्द्रकला तो जीती है मैं अभी देखआई कि अबुल्हसन मर गया अब तू दण्ड योग्यहै निदानदाईने बहुतसे ऐसेही व्यंग्यबचन कहे मसरूर ने उसके कठोर बचन सुन कहा हे पोपलीबुढ़िया ! तू बड़ी झूठी है कि मुझे झूठाबनाती है तूने एकबात भी सत्य न कही मैं अपने नेत्रोंसे स्त्रीको मरीहुई देखआयाहूं दाईने कहा वाह वाह तू बड़ालबार है कि मुझे झूठी बनाताहै अभी मैं उसके घरसे आती हूं अबुल्हसन को मुवा देखकर उसकी स्त्रीको रोतीहुई उसके शिर-हाने छोड़आई मसरूरने कहा हे महाधूर्त्ता ! तू चाहती है कि मुझको फरेबदेवे दाईने कहा मक्कार झूठातूहै कि स्वामी के सम्मुख झूठकह-ताहै ज़ुबैदाने जो कुवाच्य उसकी दाईको कहे थे सुनकर ख़लीफ़ासे कहनेलगी कि इस अनुचरकी ढिठाई और बात सुनते हो कि क्या क्या मेरीदाई को उसने कहा तुम कुछ नहीं बोलते यह कह उसने खिसि-यानी हो रोदिया खलीफ़ा इस परस्पर की बातों और बिशेषकर जो ज़ुबैदाने कहा था सुनके तंगहुआ और कहनेलगा इस बिषय में सि-वाय चुप रहने के और कुछ उपाय नहीं बिस्मित हो चुपहोगया उधर ज़ुबैदा और उसकी लौंड़ियां जो वहां उपस्थित थीं सबकीसब बिस्मित होय चुपहोरहीं थोड़ीदेर पीछे ख़लीफ़ा ने ज़ुबैदा से कहा हम एक दूसरे के आगे झूठे हैं पहिले मैं फिर तुम और इसीभांति मसरूर और दाई हमसे किसीका कोई निश्चय नहीं मानता अब उचितहै कि हम सब अबुल्हसन के घर में चलें कि सचझूठ खुलजावे अब इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं कि यह सन्देह दूरहोवे ख़लीफ़ा आगे और ज़ुबैदा पीछे होके चले सबके आगे मसरूर और पीछे सबके दाई और सम्पूर्ण दासियां होलीं मार्गान्तरमें परस्पर दाई और मस-रूरकी इस बिषयमें तकरार होनेलगी ज़ुबैदाने दाईका पक्षकर मसरूर को कुवाच्यकहे मसरूर ने कहा हे स्वामिनी ! यदि तुम्हारी दाई इस बिषयमें सच्ची है तो मेरेसाथ शर्त्तकरे दाईने कहा बहुत अच्छा इसके अनन्तर उनदोनोंने एक एकथान सुनहरी कमख़ाबका ख़लीफ़ा और ज़ुबैदाके सम्मुख शर्त्तबांधा वह महल जिसमें अबुल्हसन रहता था

जुबैदाके मंदिरके सम्मुखथा सो अबुल्हसनने देखा ख़लीफ़ा जिसके आगे मसरूर और ख़लीफ़ाके पीछे जुबैदा और उसके पीछे दाई बांदियोंसमेत चले आते हैं यह देख अपनी स्त्रीसे कहा देख सबके सब घरके पास आनपहुँचे वह देख घबड़ाई और कहनेलगी अब हमारा भेद खुलजावेगा और हम दोनों लज्जितहोंगे उसने कहा तुम मत घबड़ाओ तुम उसको भूलगई कि मैंने जो अभी तुमसे कहाथा उन के द्वार पहुँचनेतक मैं उपायकरलूंगा पुनि वे दोनों अपना अपना क़फ़न पहिन दालानके मध्यमें उतानेहो लेटगये जब सब द्वारपर पहुँचे ख़लीफ़ा मसरूर और जुबैदा दाई इत्यादि दासियोंके साथ भीतरगये तो क्या देखते हैं कि वे दोनों मरगये हैं यह दशा देख आश्चर्यमें हुये और किसीके बिचारमें कुछ न आया कि यह क्याबात है निदान जुबैदाने ख़लीफ़ासे कहा हा! क्या अनर्थ है कि ये दोनोंमर गये पुनि दाई और मसरूरकी ओर देख कहनेलगी तुम्हारे बेरबेर की तक़रार और आदमियों के भेजने से मेरी प्रियलौंड़ीभी मरगई ख़लीफ़ाने कहा कि ऐसानहीं जैसा तुम कहतीहो किन्तु प्रथम चन्द्रकला मरी है अबुल्हसन उसपर मोहित था उसने उसके शोकमें अपने को मारडाला अब मैं जीता और तुम हारी तुम्हारा चित्रोंवाला महल मेराहुआ जुबैदाने उत्तरदिया नहीं किन्तु मैंने यह प्रण जीता और तुम हारे तुम्हारा अमुकबाग़ मेराहुआ क्योंकि अबुल्हसन पहिले मुवाहै मेरीदाईने आके साक्षीदी है यहबात ख़लीफ़ा और जुबैदामें फिर होनेलगी और इसीतरह दाई और मसरूरमें भी हर एक कहता था कि मैं सच्चाहूं और मैंने यह शर्त्तजीती और दूसरा उसकी बातको काटता और अपने बाक्यको सूचित करता निदान ख़लीफ़ा कुछ सोच दोनों मृतकों के मध्य में आबैठा और पुकारके कहनेलगा मैं प्रतिज्ञा करताहूं कि एक हज़ार अशरफ़ी अभी उसे दूंगा जो मुझे ठीक बतादे कि पहिले कौनमरा यह सुनतेही उसमृतक से जिसपर पगड़ी रक्खी थी अर्थात् अबुल्हसनसे यहबात सुनी जो प्रथम मराथा सो मैंहूं मुझे हज़ार अशरफ़ी कृपाकीजिये एकक्षणपश्चात् क्या देखते हैं कि अबुल्हसन अपने शरीरसे थान उतार

खलीफ़ाके चरणोंपर गिरपड़ा उसकीस्त्रीभी इसीभांति उठ ज़ुबैदाके पादकमलों में गिरी ज़ुबैदा डरगई और चिल्लाउठी कि मुरदे जीके मुझे और खलीफ़ाको लिपटगये जब उसकाभय निवृत्त हुआ तब वह चन्द्रकलासे कहनेलगी हे अभागी ! तेरेही कारण आजका सब दिन हमारा लड़ने झगड़ने में बीता अच्छा मैंने तेरा अपराध क्षमा किया मैं इसीको बहुत जानतीहूं कि तुझे कुशलपूर्वकदेखा इसीप्रकार जब अबुल्हसनका शब्द खलीफ़ाने सुना तो हँसनेलगा और उन दोनोंको कुशलपूर्वक देख प्रसन्नहुआ पुनि अबुल्हसनसे कहनेलगा तुझे क्या सूझीथी कितूने मक्करकर मुझे और रानीको लड़वादिया और महलके नौकरों को कष्टदिया और मुझे हँसाते हँसाते मारडाला उसने कहा हे खुदावन्द ! मैं सम्पूर्णवृत्तान्त सत्यसत्य वर्णन करताहूं मैं जबसे आपके शरणमें आया और आपने मेरा बिवाह करदिया तबसे मैं यथावस्थित अपना निर्बाह करताथा परन्तु अनेक भांति के खर्चोंसे सम्पूर्णद्रव्य जो आपने कृपाकियाथा व्यय होगया और मैं क़र्ज़दारहोगया और मेरे नौकरोंने मुझे बहुत दुःखदिया तो मैंने लाचार हो जो कुछ कि वस्तु और द्रव्य मेरे पास था हिसाबकर दे दिया जब कुछभी हमारेपास न रहा तो हमने यह उपाय और छल किया इस यत्नके सिवाय जो हमने निर्लज्जता से किया कुछ और न सूझा आशा रखते हैं कि हमारी ढिठाई क्षमा हो खलीफ़ा और ज़ुबैदा अबुल्हसनके सत्यकहने से अतिप्रसन्नभये और अबुल्हसन और उसकी स्त्री को अपने साथलेजाय हज़ार अशरफ़ी जिसकीप्रतिज्ञा खलीफ़ाने कीथी दीं सो वे दोनों अपनेस्वामी और स्वामिनी की उदारता से बड़े आनन्द से रहे शहरज़ाद ने जब यह कहानी पूर्णकी तो खलीफ़ासे कहनेलगी हे स्वामी! कलकी रात्रिको मैं इससे बिचित्रकहानी सुनाऊंगी जिसे सुनकर आप प्रसन्नहोंगे निदान दूसरी रात्रिको दुनियांज़ादने सूर्य्यके उदय के पहिले सुधि कराई और खलीफ़ाने कहा कि मैंभी उस कहानी के सुननेकी इच्छारखताहूं सो वह कहने लगी ॥

## अलादीन और विचित्रदीपक का वृत्तान्त॥

किसी उज्ज्वल नगर में मुस्तफ़ानाम दरजी रहता था वह अपने कार्य्य में बड़ी कठिनतासे अपने कुटुम्ब समेत अपना निर्व्वाह करता उसका पुत्र अलादीन अति आलसी और खिलाड़ी था माता पिताका वाक्य टूलखता प्रभातको अपने घरसे निकलजाता और सारेदिन बालकों के साथ जो उसके हमजोली और उसकी भांति अयोग्य निकम्मेथे खेलता जब वह बड़ाहुआ तब उसके पिताने बहुत सा श्रमकिया कि कोई गुण उसे सिखावे किसी कार्य्यमें उसकामन न लगा निदान लाचारहो उसे अपनी दूकानपर जिसपर वह बैठाकरता था लेजाया करता और अपना काम उसे सिखाता परन्तु न तो वह प्यारसे न मार पीट से सीने में चित्तलगाता और सदा अपने पिता को अप्रसन्न रखता जब मुस्तफ़ा किसी कार्य के लिये दूकान से उठता तब वह दूकान से भागजाता और सन्ध्यापर्य्यंत न आता बहुतसी मारखाता परन्तु कुछ न सँभला और कोई काम उसने न सीखा निपट गुणहीन रहा मुस्तफ़ा उसपर सदैव क्रोधकरता और महाचिन्ता करता कि यह क्योंकर मेरे पीछे अपना निर्व्वाह करेगा इसी चिन्ता से वह बीमार होगया और कई मास पीछे मृत्युवशभया अलादीनकी मातानेदेखा कि इससे दूकान न सँभलसकैगी इसलिये उसने बन्दकरदिया और असबाबबेंच रुई कातनेलगी वह बेचारी सूत बेंच बेंचके गुज़ारा करती यदि अपने पुत्रको कुछकाम करने को कहती तो उसे धमकाता और भयदेता और सर्वदा कठोर वाक्य कह उसे दुःखदेता और बुरे मनुष्योंसे संगति रखता जब वह चौदह वर्षकाभया तौ भी वैसाही रहा और अपने निर्व्वाहकी चिन्तामात्र नकी इसी दशामें एकदिन वह बाज़ारमें खेलताथा कि एकविदेशीने अलादीन को देखा विदितहो वह महाधूर्त्त जादूगर था इसलिये उसे आफ़्रिका का जादूगर कहते थे और वह आफ़्रिका खण्डका रहनेवालाथा दो दिनहुये थे कि वह इस चीन देश में जगत्में घूमता हुआ पहुँचा था और रमलआदिक विद्यामें भी निपुण था उसने अलादीनको देख पहिचाना कि यह बालक मेरे कामका है जिसको ढूंढ़ता

ढूंढ़ता देशदेश नगर नगर फिरा निदान जादूगरने दूसरे दरज़ियों और पड़ोसियों से मालूमकर एकदिन अलादीन को अकेला पाके कहा बेटा क्यातुम मुस्तफ़ादरज़ी के पुत्रहो उसने कहा हां मैं उसीका पुत्रहूं परन्तु बहुकालबीता कि मेरा पिता कालवशभया इतनासुनते ही उसमायावी ने उसके कण्ठमें हाथडाल उसे अपने हृदयसेलगाय बहु कालपर्य्यन्त प्यारकिया. और ठंढी ठंढी श्वासेंभर रोनेलगा अलादीन ने उसे रुदनकरते देख पूछा तुम क्यों रोतेहो उसजादूगरने कहा हे पुत्र! मैं इसका क्या कारण वर्णनकरूं तुम्हारापिता मेराबड़ा भ्राताथा बहुतबर्षोंसे मैं यात्रा करतारहा अब इसनगरमें केवल उन्हीं के दर्शनको आया अपने मनमें महाप्रसन्न था कि उससे बहुत बर्षों के पीछे भेंटकरूंगा और वह भी मुझसेमिल प्रसन्नहोंगे अब तुम्हारे मुखसे उनके मरने का समाचार सुन ऐसा शोकयुक्त भया जिसका वर्णन नहीं करसक्ता अब सब मनोरथ मेरा मिट्टी में मिलगया और मेराश्रम बृथा नष्टहोगया अब भगवान् तुझे जीतारक्खे तेरा स्वरूप तेरेपिता से मिलताहै और सब चिह्न उसके तेरेमें पाताहूं निदान तुझेदेख मैं सन्तुष्टभया पुनि उसने अपनी जेबसे एकमुट्ठी भर पैसे निकाल उसेदिये और पूछनेलगा बेटा तुम्हारी माता कहांरहती है तुम उसके निकटजाय पहिले मेरी ओर से प्रणाम करना और कहना यदि कल मुझे सावकाश मिलेगा तो मैं अवश्य आऊंगा मैं वहां पहुंच जहां कि मेराभाई रहता और बैठता था और जिस ठौरपर वह मृत्युबश हुआहै देखके अपने मनको धैर्य्यदूंगा यह कह वह तो चलागया अलादीन दौड़के अपनी माता के निकट आया और उससे पूछनेलगा हे माता! मेरेकोई चचाभी है उसने कहा कोई नहीं किन्तु संसार में सिवायमेरे और तेरे पिताके कोई कुटुम्ब में से नहीं है उसनेकहा अभी कोई मुझसे कहता था कि मैं तेरा चचाहूं जबउसने मेरेपिताके मरनेको सुना तो मुझे कण्ठसे लगाके बहुतरोया और मुझे बहुत प्यारकर पैसेदिये और तुम्हें प्रणाम कहा है और यह कहाहै कि यदि मुझे कल अवसर मिलेगा तो मैं अवश्य आऊंगा वह इसघरके देखनेकी अतिलालसा रखता है बिशेष उसस्थानका

जहां मेरा पिता रहता और उठता बैठता था उसकी माताने कहा तेरेपिताका एकभाई था सो बहुतकाल बीता कि तेरे पिताके जीतेही वह कालबशहुआ मैंने उससे नहीं सुना था कि कोई उसका और भी भाई है दूसरे दिन फिर मायावी ने अलादीन से कि वह बाज़ार में बालकोंके साथ खेलरहाथा भेंटकी और उसको हृदयसे लगाय दो अशरफ़ियांदीं और कहनेलगा हे पुत्र ! तू अपनी माताको देके कहना कि आज संध्याको मैं तेरे घर आऊंगा तुम अशरफ़ी भुनाके भोजन पका रखना जिसे हम तुम मिलके खायेंगे अब मुझे अपने घरका पता बतावो कि किस गली में है उसने ठीक ठीक बतादिया वह सुन चलागया और अलादीनने वे अशरफ़ियां अपनी माताको दीं और अपने अनुकर्ण चचा का वाक्य भी कह सुनाया यह सुन उसकी माता अच्छीवस्तु पाकनिमित्त बाज़ारसे मोललाई और चीनी और तांबेके भाजन जो उसके पास न थे सो पड़ोसियों से मांगलाई और दिनभर रसोई पकातीरही जब अनुमान सायंकाल के भोजन बन चुका तो उसने अलादीन से कहा तेरा चचा घरको ढूंढ़ता फिरता होगा तू उसे अपने साथ घरमें लिवाला यद्यपि अलादीन ने उसे ठीक अपने घरका पता बताय दिया था तथापि वह उसके लिवाने को उठा जब द्वारके निकट पहुँचा तो सुना कि कोई मनुष्य किवाड़ खुलवाताहै जब उसने दरवाज़ा खोला तो वही आफ्रिका का जादूगर दो शीशे मद्यके और फल हाथमें लियेहुये आया उसने वह सबबस्तु अलादीनको दी और आप भवन के भीतर चला आया और उस की माताको नम्रहोय दण्डवत् की और उससे पूंछनेलगा मेरा भाई सदैव कहां बैठा करता था उसने बताय दिया तो प्रथम उसने अपना शिर वहां नवाया और कई बेर उसे चूमा फिर अतिविलाप कर कहने लगा मैं कितना अभागो हूं यद्यपि मैंने इतना श्रम मार्गका उठाया तथापि मुझे तुम्हारा दर्शन न प्राप्तभया इस नगर में मेरे पहुँचनें के पहिले तुम्हें कालहुआ उसकी माताने उस ठौरपर जहां उसका पति बैठा करता था बैठनेको कहा उसने कहा मैं क्योंकर वहां बैठसक्ताहूं जहां मेरा पिता समान प्रियभाई बैठाकरता

था अलादीनकी माताने उससे अधिक न कहा और कहनेलगी जहां तुम्हारा मनमाने बैठो वह उचित स्थानपर बैठगया और उस से बार्त्ता करनेलगा कि भाभी तुम घबड़ाना नहीं कि तुमने मुझे पहि-ले नहीं देखा क्योंकि पूरे चालीस वर्ष बीते कि मैंने इसनगरको जहां उत्पन्नहुआ था छोड़ा इस अवधि में पहले मैं हिन्दुस्तान में गया फिर फ़ारस में फिर मिसर में इनसब विशाल देशों को देख फिर मैं आफ़्रिकाखण्डके बिचित्र नगरोंमें गया वहांके बासियों को बुद्धिमान् देख वहीं निवास अंगीकार किया परन्तु अपने नगरको नहीं भूला और न अपने परिवार और इष्टमित्रोंको विशेष अपने भाईको नहीं भूला सदैव उनकी सुधिबनी रहतीथी और यही कांक्षाथी कि फिर जाके उनका दर्शनकरूं इसहेतु इतनी बड़ी यात्राकर यहां आया परन्तु उसके कालहोनेका सुन मुझे बड़ी व्यथाहुई जिसका वर्णन नहींकरसक्ता हा ! खेदहै कि मेरा इतना परिश्रम सबवृथागया परन्तु किंचित् अलादीन के देखनेसे धैर्य्यहुआ कि मेरा भतीजा है इसके स्वरूप में मेरे भाई के चिह्न दिखाई देतेहैं इसी लिये मैंने एकहीबेर इसको देखने से पहिंचान लिया उससे तुमने सुनाहोगा कि मुझे कितना दुःख भया परन्तु ईश्वरका धन्यबाद है कि उसके पुत्र को देख मुझे धैर्य्यहुआ मानो मुझे उनके दर्शनहुये जब उसने देखा कि बहुतशोककी बार्त्ताकरने से अलादीनकी माताका मन भरआया और उसकी सुधिकर रोनेलगी तब उसने वह बातें छोड़दीं औरही कुछ कहनेलगा और अलादीनकी ओर मुखकर उसका नाम पूंछा उसने बतायदिया फिर पूंछा बेटा तुम कौनसा उद्योग करतेहो तुमने जीविका के लिये कौनसा गुण सीखा है वह लज्जितहो कुछ उत्तर न देसका और अपना शिर निहुराय लिया उसकी माताने कहा यहमहा-आलसी है इसके पिताने अपने जीते जी बहुत कोशिश की कि इसे अपना काम सिखावें परन्तु इसने कुछ न सीखा और अपना जन्म निपट खेलमें खोया दिनभर लड़कोंके साथ खेलाकरताहै जैसा तुमने देखा अब उचित है कि तुम इसे कुछ समझावो और कहो सुनो कि सुमार्ग में लगे और खेलआदि परित्यागकरे निस्सन्देह तुम ऐसे

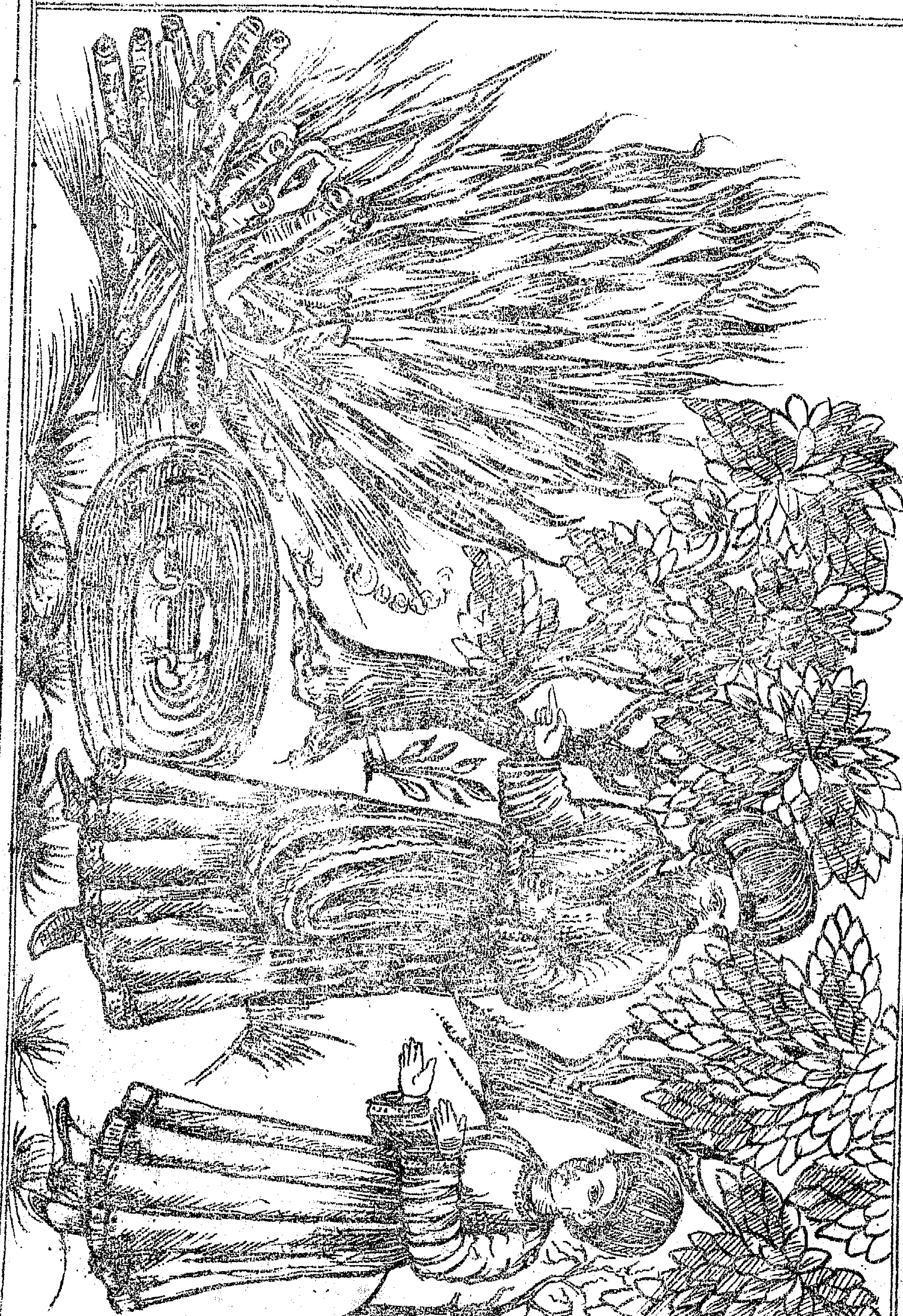
पोषकका कहना मानके सुमार्ग में लगे और अपने पेशेके सीखने में मनलगाये क्योंकि वह भलीभांति जानता है कि इसका पिता कुछ धन अथवा वस्तु छोड़कर नहीं मरा जिससे हम अपना यथोचित निर्बाह करते और यहभी देखता है कि मैं दिनभर चरखा कातती हूं तथापि बड़ी कठिनता से भोजनमात्र प्राप्त होता है मैंने कई बेर खिसियानी होके चाहा कि इसे अपने घर से निकालदूं कि वहक्षुधा से पीड़ितहो कोई उद्योगकरे परन्तु पुत्रकी पीड़ासे यह भी स्वीकार नहीं इतना कह वह स्त्री रुदनकरनेलगी मायावी ने कहा क्या बेटा यह बातें सत्य हैं तुम अब समर्थ हो तुम्हें उचित है कि तुम कुछ उद्योगकरो यहां अनेकप्रकारके व्यवहारहैं यदि एक पर तुम्हारा मन न लगे तो दूसरा स्वीकार करो यदि वह जिसे तुम्हारा पिताक-रताथा पसन्द नहीं और जो तुम उससे कोई श्रेष्ठ कामकी इच्छा करतेहो तो मुझ से मत छिपाओ स्पष्टकहो कि मैं उस में तुम्हारी सहायता करूं जब उसने देखा कि अलादीन कुछ उत्तर नहींदेता तो कहने लगा हे पुत्र ! यदि तुम चाहते हो कि अच्छा पेशासीखें वा यह इच्छाहै कि उच्चपदवी और प्रतिष्ठितहोवें तो मैं तुम्हें बजाजी की दूकान कराढूं जिसमें अनेक प्रकारके थान और भांति भांतिका कपड़ा हो और तुम उसमें बैठकर कमाओ अपने मनकी बात मुझ से कहो मैं तुमसे प्रतिज्ञा करताहूं जो ईश्वरचाहे तो तुम्हारा मनोरथ पूराकरूंगा अलादीन उसके यह बचनसुन अतिप्रसन्नभया क्योंकि वह जानता था कि वहव्यापारी जो ऐसी दूकान करते हैं और कपड़े का लेन देन रखते हैं निश्चिन्ताई से अपना निर्बाह करते हैं अच्छे कपड़े पहिन और भांति भांति के पाक भोजन करते हैं सो सैनसे उसेकहा यदि तुमने यह काम पसन्द कियातो कल मैं तुमको सुन्दर वस्त्रपहिराय एकव्यापारी के निकट भेंट के लिये लिवालजा-ऊंगा और एक दूकान चौकमें तुम्हें किरायेपर लेदूंगा अलादीनकी माता कि उसे अबतक वास्तवमें अपना देवर न जानती थी उसको अपने पुत्रपर यह दयालुता देख उसका गुणानुबाद करनेलगी और उसे धनवान् समझ अलादीनका हाथ उसके हाथ में पकड़ाय कहने

लगी जो इसकेवास्ते अच्छाहो सो करो इतना कह आपभोजन नि-
काला और उसके आगे परसदिया और तीनोंने तृप्तहोकर भोजन
किया इसके अनन्तर मायावी कहने लगा रात बहुत बीती मैं बिदा
होता हूं यह कह वह चलागया दूसरेदिन वह फिरआया और अला-
दीनको उस ब्यापारी की दूकान में जिस में अनेकप्रकार के कपड़े
के जोड़े सियेहुये रहतेथे लेगया और अलादीन से कहा तू अपने
बित्त के अनुसार जोड़ा पसन्दकर कि मैं तुझेलेदूं अलादीन अपने
अनुकर्ण चचा की ऐसी उदारता देख प्रसन्न भया और जोड़ा
पसन्द किया उसने वह जोड़ा सामान सहित मोललेके उसे दिया
वह उसे पहिन शिर से पांवतक अपने को देख अत्यन्त प्रसन्नहुआ
फिर वह जादूगर उसे चौक में लेगया जहां बहुत से बड़े बड़े
ब्यापारियों की दूकानें थीं और उससे कहनेलगा यदि तुम चाहते
हो तुमभी इन ब्यापारियों के सदृशहो तो बहुधा यहां आया करो
और इनकी रीति और ब्यवहार देखा करो फिर उसे बड़ी प्रसिद्ध
सराय में जहां बिदेशी उतरा करते थे लेगया और वहांसे बादशाही
मकानों में लेगया और सम्पूर्ण नगर में फिराय उस सरायमें जहां
वह आप रहता था गया वहां बहुत ब्यापारियों से जिनसे वह जान
पहिंचान रखता था अपने भतीजे को मिलाया और सबोंने मिलके
भोजन किया जब सायंकाल हुआ तो अलादीन ने अपने चचा से
बिदामांगी उसने उसे अकेला जाने न दिया और आप साथ होके
उसे घर में पहुँचा आया उसकी माता ऐसे उत्तम बस्त्र उसे पहिरे
देख अतिप्रसन्नहुई और मायावीको हजारों आशीर्बाद देनेलगी
और कहनेलगी मैं तुम्हारी उदारता का गुणानुबाद नहीं करसक्ती
मेरापुत्र इस कृपा के योग्य न था वह तुम्हारी सदा सेवामें रहेगा
जिस मार्ग में तुम लगाओगे चलेगा मायावी ने कहा अलादीन
बहुत अच्छा लड़का है जो मैं कहूंगा वही करेगा अफ़सोस है कि
कल शुक्रवारहै सब दूकानें बन्दहोंगी इसलिये कोई दूकान किराये
न मिलसकेगी और कोई बस्तु मोल नहीं ले सक्ता दूकानदार सब
सैर तमाशा देखने जावेंगे जो ईश्वर चाहे तो यह सब कार्य्य परसों

करूंगा कल मैं इसे बागों की सैर को लेजाऊंगा उसने उन बागों और मार्गों को अबतक नहीं देखा अभीतक बालकों के साथ बृथा खेलाकिया है अब इसे उचितहै कि बुद्धिमानों की संगतिमें बैठाकरे यह कहकर बिदाहुआ अलादीनने जब बागों में जानेको सुना तो अत्यंत हर्षितहुआ क्योंकि उस बेचारे ने केवल नगरके महलों के द्वारही देखे थे और कदापि नगरके बाहर और ग्रामों में न गयाथा निदान दूसरेदिन प्रभातको उठ अपने वस्त्र पहिने और अपने चचा की बाट देखता था जब बिलम्बभया और वह न आया तो द्वार खोल उसकी मार्ग देखने लगा इतनेमें क्या देखता है कि वह चला आता है वह अपनी मातासे बिदा हो आया और द्वारमूंद मायावी के निकट गया मायावीने उसे बड़ीप्रीति से पुकारकर कहा आज मैं क्या २ उत्तम मकान और हरे २ बृक्ष और दिव्य बाग दिखाताहूं जो तूने कभी न देखेहोंगे पुनि वह उसे बहुत दूर लेगया जब अलादीन नये २ सुन्दर २ मकान और बाग देखता तो प्रसन्न हो कहता चचा क्या भले २ बिचित्र बागहैं वे जाते २ नगर के बाहर निकलगये और थकितभये वह महाधूर्त्त कि अपने कार्य्य के लिये आगेजानेकी इच्छा रखता था इसलिये एक निर्मल जलके कुण्ड के तटपर बैठगया और छलयुक्त यह बचन अलादीन से कहे हे मेरे प्यारे पुत्र! तुम थकित भये और मैंभी थकगया हूं आवो तनक यहां बिश्रामकरें फिर आगे चलेंगे यह कह उसने अपनी कमरसे एक रूमाल जिसमें भांति भांति के स्वादिष्ठ और मिष्टफल और कुलचे बँधे थे निकाला उनमें से अर्द्धभाग उसे दिया और आधा आप लिया और कहनेलगा फल जितने तुम चाहो अच्छे अच्छे चुनके खाओ भोजनान्तरमें उसे उपदेश करतारहा कि हे पुत्र! तुम बालकों से मत खेलाकरो चतुरमनुष्यों की संगतिमें बैठ उनके सुबाक्योंपर ध्यान रक्खाकरो जिससे तुम्हें लाभ प्राप्तहो और तुम समझदार और बुद्धिमान् होजावोगे जब खाचुके तो वह दुष्ट दम दिलासा देताहुआ अलादीनको बहुत दूरलेगया और नगर बहुत छूटगया पहाड़ दिखनेलगे अलादीन कि कदापि इतनी दूर न

चलाथा थकित भया और पूछनेलगा तुम कितनी दूर जाओगे हम बागों से बहुत दूर निकल आये उसने कहा भतीजे तू मत घबड़ा मन दृढ़रख मैं तुझे एकबाग दिखाऊंगा जिसके आगे यहसब तुच्छ हैं वह यहां से बहुत दूर नहीं जब तुम उसे देखोगे आपही दौड़के उसमें जाओगे निदान वह उसे फुसलाये हुये हाथ पकड़ खींचेलिये जाता था और उसके जी बहलानेको मनोहर कहानीभी कहताजाता था अन्तको वह एक घोर बनमें जो दो पहाड़ोंके मध्यमें था पहुँचे यहै मुख्य वही स्थानहै जहां वह मायावी अलादीन के लेजाने की इच्छा रखताथा और जिसहेतु इतना परिश्रम कर आफ़िकाखण्ड से वह आयाथा निदान वहां पहुँच उसने उससे कहा इसी ठौरपर वह बागहै जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा तू उसेदेख प्रसन्नहोगा मैं आगलेने के लिये जाताहूं तू सूखाकाष्ठ चुनरख मैं आगजलाऊंगा अलादीनने वहीकिया और उसने आप आग जलाई और उस अग्निसे अपनी बत्तीजलाई और थोड़ासा अतर और सुगन्धितबस्तु उस बत्तीपर डाली इतनेमें एक बड़ा धुंधाकार धुंवां उसमें से उठा उसने कुछमंत्र पढ़ा इतने में धरती कांपी और जिस स्थानपर वह खड़ेथे एकचौकोण शिला अनुमान डेढ़पगके प्रकटहुई जिसके बीच में लोहे का कड़ा उठानेको लगाहुआथा अलादीन उसे देखडरकर वहांसे भागा जादूगरने दौड़के उसेपकड़ा और क्रोधितहो बड़ेबेगसे एक तमाचा उसके मुखमें मारा जिससे अलादीन बैठगया और उसके दांतों से रुधिर की धाराबही और कहनेलगा चचा मैंने तुम्हारा ऐसा कौनसा अपराधकिया कि तुमने मुझे इस भांति मारा उसने कहा मैं तुम्हारा चचा हूं तुम मुझे पितासमान समझो मेरेमार और क्रोधकरनेपर बिलग मत मानो पुनि प्यार और नम्रतासे कहनेलगा हे पुत्र! मैं तुमसे और कुछनहींचाहता सिवाय इसके जो मैं तुमसे कहूं उसेतुम कियाकरो मैं तुम्हें बड़ाआदमी बनादूंगा निदान इसभांति के बचन कह उसका भय दूरकिया जब देखा कि अलादीन अब राहपर आया तो कहने लगा तुमने देखा मेरेपढ़नेसे पृथ्वी हिली और यह शिला निकल आई अब तू निश्चयमान इसशिलाके नीचे एकगोप्य वस्तु मुख्य

चित्र जादूगर का मय अलादीन के गड्ढे के निकट .



तेरेही लिये धरी है वह एक दिन तुझे महाधनवान् करदेगी और संसार में सिवाय तेरे कोई दूसरा नहीं कि इसको हाथलगासके अब तू इस शिलाको उठा और उसके भीतर जा मैं तो इसके भीतर नहीं जासक्ता सिवाय तेरे और किसीका कामनहीं कि इसद्रव्यको जाकेलेवे अब जो मैं कहूं वही कीजियो उसके भीतरजाने और लौटने में कुछ देर न लगेगी इस कार्य्य को सिवाय तेरे और मेरे तीसरा कोई नहीं करसक्ता अलादीन ने लाचारहो अङ्गीकार किया और कहने लगा चचा मैं तय्यारहूं जो कुछ तुम आज्ञादोगे मैं तुरन्त पालन करूंगा मायावी यह बचनसुन उसपर प्रसन्नहुआ और उसे अपने कण्ठ से लगाय कहनेलगा यही बात चाहिये मेरे निकट आ जब वह उसके पासगया मायावीने उसे एक छल्ला देकर कहा कि इसे अपनी अँगु-लीमें पहिन इस शिला को उठा उसने कहा हे चचा! मैं अकेला इस भारी शिलाको न उठासकूंगा तुम भी हाथ लगाओ और बलकरो जादूगर कहनेलगा मेरी सहायता की तुझे आवश्यकता नहीं जो होती तो तेरेकहने बिना मैं करता तुम अपने बापका नामलेके तिनुके की भांति सरकाओ उसने लोहेका छल्ला अपनी अँगुली में पहिन उस शिलाको अतिसुगमता से सरकाया उसके नीचे तीनचार पगका गहरागढ़ा उसे दृष्टिपड़ा जिसके भीतर एकओरको छोटासा दरवाज़ा लगाहुआ था और उस किवाड़के बाईंओर सीढ़ीलगी थी जिससे मनुष्य नीचे उतर जासक्ताथा मायावीने उससे कहा हे मेरे प्रियपुत्र! तुम मेरे इन बाक्योंको भलीभांति सुधि रखना चैतन्यरहो उन्हें बि-स्मरण न करना अब तू इसगढ़े में कूदकर एकद्वारको पावेगा उसके साथ एक सीढ़ीलगीहै तू वहां एक अतिबिचित्र सुन्दर मकान पावेगा जिसमें तीन बराबर दालान हैं उनके मध्य में ताम्रके अतिस्वच्छ बिशालपात्र सोने रूपेके भरेहुये रक्खेहैं परन्तु तू उन्हें न छूना जब तुम पहिले दालानमें जाओ तो तुम अपनावस्त्र कमरसे भलीभांति कसके बांधना फिर तुम दूसरे दालानमें चलेजाना और इसी बिधि तीसरेमें और उस मकानकी दीवारको कदाचित् स्पर्श न करना यदि तुम्हारावस्त्र उससे छू जावेगा तो तत्कालभस्म होजावोगे इसलिये

तुम्हें कहे रखताहूं कि वस्त्र अपने दृढ़करके कमरसे बांधलेना फिर तीसरे दालान में एकद्वार तुम्हें और मिलैगा जब उसमें से होके भीतर जाओगे तो एक बाग़ देखोगे जिसमें अतिसुन्दर अनेक प्रकार के फलित वृक्ष देखोगे तुम सूधे आगेको उस मार्गसे जो तुम्हें मिलेगा चलेजाना निदान एक मंचपर जिसमें पचास हाथ की सीढ़ी है मिलेगी उसके ऊपर एकछत है जब तुम उसपर चढ़जाओगे तो वहां एक ताक़है जिसमें एक दीपक जलताहुआ रक्खा है तुम उसे वहांसे उठाकर बुझाय देना तेल और बत्ती उसकी फेंक उसे अपने दामन में रखलेना और मेरे समीप चलेआना तुम्हारा वस्त्र चिकना नहीं होगा उसमें तेल नहीं जब तुम उसे ताक़से उठालोगे तो वह तुरन्त सूखजावेगा यदि तुम्हारा मन चाहे तो उनवृक्षों के फल जितने ले सको लेलीजियो निदान जब उसने सब यह क्रिया उसे भलीभांति सिखाई और विधि समझाई तो उस मायावीने उस लोहेके छल्लेको जो लेलिया था फिर उसे पहिनाय दिया और कहने लगा इसके कारण तुमप्रतिदुःखसे कि तुमपरपड़े बचेरहोगे यह सब बातें जो तुमसे कहीं भलीभांति स्मरण रखियो भूलियो नहीं अब हे मेरे प्रियपुत्र! तुम इस गढ़े में कूदो जिससे हम तुम दोनों धनपात्र होजावें और जन्मभर राज्यभोगें अलादीन अतिसाहस कर उस गढ़े में कूदपड़ा और सीढ़ी से उतर आगेको जिसमें तीन दालान थे गया और डरतारहा ऐसा न हो कि उसका वस्त्र उस गृहकी दीवारों से लगजावे जब बाग़के भीतर पहुँचा तो सीढ़ीके द्वारा छतपर चढ़ गया और दीपक जो प्रज्वलित था उठाय अपने दामनमें रखलिया फिर उस छतसे उतर बाग़में आया और मार्गमें जितने उसे अच्छे फल मिले चुन लिये वहांके वृक्ष अतिविचित्र अनेकरंगों फलों से प्रफुल्लित थे कई तो फल श्वेत और प्रकाशयुक्त बिल्लौरके सदृश थे और कोई कोई हरे और ऊदे और पीले निदान अतिअद्भुत उनका रंग कि जो श्वेत थे वह हीरे और लाल थे वह जो हरे सो जमुर्रद और जो अन्य रंग थे बहुमोल्य रत्न किन्तु रत्नों से भी अधिक सुन्दर थे अलादीन तो उन रत्नों के गुण न जानता और न उनका

मोल जानता सो उन फलों को अंगूर और अंजीर के सदृश जैसे उसने नगरमें बिकतेहुये देखे थे समझ उनके लेने में अधिक लोभ न किया उतनेही रत्न लिये जितने उसकी जेब और आस्तीन में समाये और जेबों को अपनी कमर से बांधलिया और आस्तीनें मुखपर से बांधदीं कि कोई फल उनमेंसे न गिरपड़े और कुछ अपने गिरेबान और कमरमें जहां जितनी जगहथी रखलिये फिर तीनों दालानोंसे तुरन्त नाँघ उसी गढ़ेमें आय पहुँचा क्योंकि जानता था कि चचा मेरे आगमन की बाट देखताहोगा सो वहां पहुँच हांकदी कि चचा मैं आयाहूं हाथपकड़ मुझे ऊपर खींचलो उसनेकहा बहुत अच्छा मैं तुझे निकालताहूं परन्तु प्रथम तू मुझेदीपकदे अलादीनने कहा इससमय मैं दीपक नहीं निकालसक्ता बाहर आकर निकाल दूंगा बास्तवमें दीपक निकालदेनेमें कठिनताथी क्योंकि पहिल उसने दीपकको अपनीछाती में रक्खाथा फिर बहुतसे फल वहींरखके उसके चहुँओरसे बस्त्रबांधाथा कि किसीओर से कुछ न गिरे और सीढ़ियों के उतरने और फलोंके बोझसे थककर हफताथा उस समय यही चाहताथा कि तुरन्त बाहर निकलूं और शीतल बायुके लगने से ठंढाहों और मायावी यह चाहताथा कि पहिले दीपक उससे लेलूं फिर उसे गढ़ेसे निकालूं निदान इसी तकरारमें जादूगर ऐसा क्रोधितभया कि थोड़ीसी सुगन्धित बस्तु लेके उसी जलती आग में डालदी और निर्दयतासे मंत्रपढ़ सैनकी कि वह शिलाउठ उसीगढ़े पर ढकगई और मट्टी उसी स्थानपर बराबर जैसी कि पहिले थी होगई अब सुना चाहिये जादूगर बास्तवमें मुस्तफ़ा दरज़ीका भाई न था और न वह अलादीनका चचा वह आफ़्रिकाखण्डका निवासी और वही उसकी जन्मभूमि थी उसनगर में जादूकी बिद्या बहुतथी वह चालीसबर्ष जादू पढ़तारहा इसके बिशेष ज्योतिषादिक बिद्या में अद्वितीय और बहुत सी पुस्तकें रमलकी उसने पढ़ीं अन्तको उसे बिदितहुआ कि जगत् में किसी स्थानपर एकबिचित्र दीपकहै जिस मनुष्यके हाथ वह दीपकलगे कईबीर उसके अधीन रहें और ज्योतिर्बिद्या से उसे यह मालूम हुआ कि वह दीपक चीनदेशमें

अमुक स्थानपर है इसबातपर निश्चयकर आफ़िका से चीन में उसे लेनेआया और यह भी वह जानता था कि उस दीपकको वह आप नहीं लेसक्ता इसलिये उसे दूसरे मनुष्यकी आवश्यकता हुई कि उसे निकाल देवे तो उसने अलादीन को भोला सूधादेख भतीजाबनाया और जाना कि इसीके हाथसे मेरा मनोरथ सिद्धहोगा और उसकी यह इच्छाथी जब वह दीपक उसके हाथलगे तो इसभेदके न खुलने के लिये उसीदिन अलादीन को मंत्र से मारडाले निदान जब उसका अर्थ सिद्ध न भया पकड़ेजानेके भयसे उसीदिन आफ़िकाको सिधारा ऐसा न हो कि नगरबासियों ने अलादीन को जातेदेखाहो अब उसे अकेलादेख उससे पूंछे इसी चिन्ता में उस छल्लेका लेनाभी भूलगया परन्तु अलादीन ईश्वरकी इच्छासे इसी छल्ले के द्वारा बचा परन्तु वह मायावी दुष्ट उस दीपक के पानेसे निराशभया इस बिषय में यही निराश न हुआ किन्तु बहुतसे ऐसे कुकर्म्मी निराश होजाते हैं अला-दीन तो इससे अपकार की आशा न रखताथा आश्चर्य्य में भया और जब उसने जीतेजी अपनेको क़बरमें देखा तो हज़ारोंबेर अपने चचासे चिल्लाकर कहनेलगा कि अपना दीपक मुझसे लो और मुझे यहांसे निकालो परन्तु यहसब कहना इसका बृथाथा इसका उत्तर उसने कुछ न सुना और अपनेको अँधियारे में देख घबड़ाकर रुदन करनेलगा और सीढ़ीसे नीचे उतरनेलगा परन्तु सब चरित्र मायाके जो बागइत्यादिथे सब गुप्तहोगये जब केवल अँधियाराही देखा तो कई बेर दाहिनीओरसे बाईं ओर गया और इधरसे उधर पर किसी तरफ़से राह न पाई और न कुछ उजियाला देखाइससे अतिदुःखित होकर रुदन करनेलगा और निपट निराशहोय उस कालकोठरी के एक अच्छे ठौरपर बैठगया और उसे निश्चयहुआ कि इस स्थानसे कभी न निकलूंगा इसीस्थानपर मुझे मृत्युलेआई है दो दिनतक वह उसी गढ़े में रहा तीसरे दिन मरना अपना अवश्यजान दोनों हाथ उसके परस्पर मिले तो वह छल्लाभी पत्थरसे रगड़गया ज्योंहीं रगड़ा त्योंहीं महाबिकराल स्वरूप बीर धरती से निकल प्रकटभया ऊंचा इतनाथा कि शिर उसका आकाश से जालगा उसने बड़े शब्दसे कहा

तू मुझसे क्या इच्छारखताहै मैं तेरा आज्ञापालक दासवत्हूं और मैं उसका अधीनहूं जिसके हाथ में यह छल्लाहै मैं और दूसरा बीर भी इसीप्रकार उस मनुष्य से बाहरनहीं जो यह छल्ला पहिने है उसने कि ऐसा बिकराल स्वरूप कभी न देखाथा उस बीरके प्रकटहोनेसे भयवान्हुआ और कुछबात उससे न करसका निदान जब कुछ सावधानहुआ तो उससे कहनेलगा यदि तुझे सामर्थ्य है तो तू मुझे इस स्थानसे बाहर निकाल इतना कहतेही उस बीर ने उसे बाहर निकाल खड़ाकिया जब वह अपने को बाहरदेख अचम्भितभया सोचा कि क्योंकर सुगमता से बाहर निकलआया कि उस गढ़ेका कुछ चिह्नभी दृष्टि नहींपड़ा फिर नगरकी ओर देखा कि उसके चहुँओर बाग हैं और जिसमार्ग से आयाथा उसे पहिचाना और उसीको पकड़ ईश्वर का धन्यवाद किया फिर उजियाला देखा निदान अशक्तता के कारण बड़ीकठिनतासे घरपहुँचा जब उसने अपनापांव अपने घरकेद्वारके भीतर रक्खा तो माताको देख हर्षितहुआ परन्तु तीनदिन कुछखाया पिया न था अतिनिर्बलतासे मूर्च्छितहोगया उसकी माताने कि तीन दिनतक उसे नहीं देखाथा और यह समझती थी कि वह मरगया व कहीं गुमहोगया रोतीथी उसकी यह दशादेख तनमनसे उसे सचेत करनेलगी जब उसने सुधिसम्हाली पहिले उसने अपनी माता से यह बातकही कि कुछभोजन ला तीनदिनसे मैंने कुछनहीं खाया भोजन पहिलेसे पकाहुआथा उसकीमाताने आगेरखके कहा हे पुत्र! भोजन में शीघ्रता न करना बहुत खानेसे मरनेका भयहै थोड़ाखायके चुप होके सोरह फिर मुझसे बात कीजियो अलादीनने वही किया और थोड़ाही खानाखाया और थोड़ाही जलपिया और कहनेलगा उस दुष्टने जो मेरेसाथ अपकारकिया उसका बर्णन अतिबिस्तृत है वह अपने विचार से मुझे यमको सौंपगया यह वही मनुष्यहै जिसे तुम मेराचचा जानतीथीं और मैं भी निपट उसके छलमें आगयाथा परन्तु तुम निश्चय मानो वह बड़ा निर्दयी था यह सबप्रीति जो उसने मेरे साथकी सब धूर्त्तता थी केवल उसकी यह कांक्षाथी कि अपने किसी प्रयोजनके लिये मुझेबधकरे पुनि अलादीनने किञ्चित् अपने

में सामर्थ्यपा अपना सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी मातासे बिस्तारपूर्बक कहसुनाया और वे फल उसे दिये उसकी माता कि उनके गुण और मोलको न जानतीथी सो उन्हें उसने लेके धरतीपर रखदिये परन्तु अँधियारे में उनकाप्रकाश सूर्य्यवत् देखा तो उसे ज्ञातहुआ कि यह बस्तु देखने में अच्छी है जब अलादीनने सम्पूर्णबृत्तान्त कह सुनाया तो उसने उस दुष्टमायावी को बहुत से दुर्बाच्यकहे और ईश्वर का धन्यबादकिया कि मुझरांडके बालकको उससे छुड़ाया जो वह तीन दिनतक न सोयाथा इसलिये वहां से उठ दूसरी जगहपर सोरही अलादीन भी उसी रात्रि को भलीभांति सोरहा प्रभात को अपने को क्षुधा से महाबिकल पाकर अपनी माता से कहा मैं इस समय बहुत भूंखाहूं कुछ मुझे भोजन दो उसकी माता कि अतिनिर्द्धन थी कहनेलगी बेटा इससमय पर तो मेरेपास रोटीका टुकड़ा भी नहीं जो तुझे खानेको दूं यदि तनक सन्तोष रक्खो तो थोड़ासा सूत जिसे मैंने काता है बाज़ार में लेजाय बेंचूं और कुछ भोजन मोललाऊं उसने कहा सूतको तुम और दिन बेंचना आज तुम उस दीपक को जिसे मैं लाया हूं लेजाके बेचो और खानेकी बस्तु मोल लाओ कि रातदिन कटे वह उठकर वही दीपकलाई और उसे देख कहनेलगी बेटा यह दीपक मलिनहोरहाहै यदि इसे साफ़कर बेंचूंगी तो कुछ अधिक मिलैगा इसके अनन्तर वह थोड़ासा जल और रेतलेकर उसे ज़ोरसे मलनेलगी उसके मलतेही एक बिकराल उग्र बीर बड़ेबेगसे धरतीको फाड़निकला और बड़े नादसे मानो बादल गर्जताहै कहनेलगा तू क्या इच्छारखती है मैं उस कार्य्यके करने में दासवत् उन मनुष्यों का हूं जिनके हाथमें यह दीपक है और मुझसे आदिले अन्य वीरभी इस दीपकके अधीनहैं वह तो उसका स्वरूप देखतेही मूर्च्छाखाय गिरी अलादीन कि गढ़ेमें वह स्वरूप देखचुका था इतना न डरा कि अचेत होजाता किन्तु उसने झपट के एकहाथ से माताको सँभाला और एकहाथसे दीपकपकड़ बीरकेपास जाकर अपनी माताके बदले उत्तरदिया मैं भूंखाहूं कुछ भोजनला वह यह बचन सुनतेही गुप्तहोगया एक क्षण पीछे बड़ाभारी सुनहला पात्र

अपने शिरपररक्खे प्रकटहुआ जिसमें अतिस्वादिष्टपाकोंकी बारह रुपहली रिकाबियां रक्खीहुईं और दो शीशे स्वच्छमद्यके और दो रूपेके गिलास दोनों हाथों में लिये आया और सबपात्रोंको दालान में रख गुप्त होगया अलादीनने अपनी माताको जो मूर्च्छितथी जल छिड़का जिससे वह चैतन्यहुई और उससे कहनेलगा अब मातिडर उठबैठ और आकर भोजनकर बिलम्ब मतकर नहीं तो भोजन ठंढा होजावैगा वह यह उत्तम उत्तम नानाव्यंजन देख आश्चर्य्य में हुई और मनमें सोचनेलगी यह कहां से आया कदाचित् यहांके बादशाहने हमारी आपदाकाहाल सुनकर भेजाहै अलादीनने कहा अब आके भोजनकरो मैं इसका समाचार तुमसे वर्णनकरूंगा फिर वह रुचिसे खानेलगे भोजनान्तरमें उसकी माता वह सुनहले रुपहले पात्रदेख बिस्मितहो पूंछनेलगी यह भाजन किसवस्तुके बने हैं मैंने ऐसे सुन्दर भाजन चमकदार कदाचित् नहीं देखे जब वह तृप्तभये तो शेष भोजन रखछोड़ा और तीनदिनतक उसे खायाकिये और अलादीनने सम्पूर्ण वृत्तांत बीरके भोजन देजाने का उससे कह सुनाया उसने सुन अचम्भामाना और कहनेलगी मुझे निश्चयनहीं क्योंकि मैंने कदापि बीरनहीं देखा और न कभी अपनी जानपहिंचानवाले से सुना क्या इसी दीपक के कारण जिसको तुम अपने साथलाये हो वह दुष्ट प्रकट भयाथा इसको मेरी दृष्टिसे दूरकरो तुम इसे किसी दूसरी जगह छिपाय रक्खो कि मेरा हाथ उसपर कदापि न लगे किन्तु उत्तमहै कि तुम इसे फेंकदो वा किसीके हाथ इसे बेंचडालो कि इसके स्पर्श से ऐसा बिकरालरूप न देखूं और इस छल्लेको भी अंगुली से निकाल फेंकदो हमको बीरोंका आवाहन कुछ अवश्य नहीं है उसने कहा इस दीपकको क्यों बेचें इससे तो हमको इस आपदा में बहुत बहुत लाभहुये और आगेको इससे अधिक लाभ की आशाहै तुम भलीभांति सोचो कि इसी के वास्ते मेरे अनुकर्ण चचाने इतनी दूरका सफ़र उठाया यह बहुत अच्छी बस्तुहै उसका सबश्रम इसीके वास्तेथा कि उसे यह बिचित्रदीपक मिले और वह भलीभांति इस दीपक के गुणको जानताथा और उसने इस दीपककी अपेक्षा

रत्नादिकोंको तुच्छसमझा परन्तु उस ईश्वरने मेरीदीनतापर दयालु होकर उसकाभाग्य और धन मुझे कृपाकिया मुझे इसदीपकके लाभ उठाने दे इसबातको गुप्त रखना कि कोई न जाने और पड़ोसी डाह और बिरोध न करें परन्तु मैं इसे तुमसे छिपाके ऐसे स्थानपर रक्खूंगा कि आवश्यकता पर फिर पाऊं परन्तु इस छल्ले को अलग नहीं करसक्ता क्योंकि मैं इसीसे जीता बचा नहीं तो मैं कबका उसी गढ़े में मरगया होता अब तू मुझे आज्ञा दे तो इसे अंगुलीमें ही पहिनेरहूं कौन जानता है कि किससमय पर अकस्माती आपदा पड़े तो मैं इसके द्वारा बचसक्ताहूं उसकी माता यह बातें सुन चुपहोरही फिर कहनेलगी जो उचित जानो सोकरो परन्तु मुझे बीरोंसे कुछ प्रयोजन नहीं दो दिनतक वही भोजन उन्होंने भलीभांति तृप्तहोय खाया जब तीसरे दिन कुछ न रहा तो प्रातःकाल अलादीनको क्षुधालगी वह एक रुपहला बीरका लायाहुआ पात्र अपने बस्त्रमें ढांप बाज़ारकी ओर बेंचनेगया संयोगवश एक यहूदीसे जो सोने चांदीके पात्रोंका व्यवहार किया करताथा भेंटभई अलादीनने उसे एकान्तमें लेजाय वह भाजन दिखाया और कहनेलगा तुम इसे मोललोगे वह यहूदी जोकि अतिबुद्धिमान् और धूर्त्तथा इसेलेके परखा उसकी चांदी बहुत उत्तम पाकर कहनेलगा इसका मोल क्या चाहतेहो अलादीनने जो खोटी खरी चांदीकाहाल न जानताथा और कभी चांदीके लेनदेन का काम न पड़ाथा कहनेलगा जो कुछ तुम दोगे सोलेलूंगा क्योंकि तुम इसका मोल जानतेहो मुझे तुमपर बिश्वासहै उसने एक अशरफ़ी निकाल उसेदी यद्यपि वह रिकाबी अशरफ़ी से सत्तर हिस्से मोल में अधिकथी परन्तु अलादीनने उसे प्रसन्नहोके लेलिया और वह धूर्त्त इतना लाभउठाकरभी पछताया कि क्यों मैंने उसे कम न दिया यह बिचार अलादीनके पीछे दौड़ा कि कुछ अशरफ़ी में से फेर लें परन्तु अलादीन दूर निकल गयाथा मार्ग्ग में अलादीनने अशरफ़ी तुड़ाकर भोजन मोललिया और घरमें पहुँच जो अशरफ़ीमें शेषबचा था अपनी माता को दिया कि बाज़ारमें जाके कई दिन के लिये अन्न मोल लावे इसीभांति कईदिन उन्होंने कालक्षेप किया जब वह भी होचुका

तो अलादीन ने दूसरापात्र उसी यहूदी के हाथबेंचा और यहूदी ने वही मोल जो पहिले दियाथा प्रति भाजनका दिया इस भय से कि अलादीन भड़कके फिर और के हाथ न बेंचे एक अशरफ़ी से कम हरएक भाजनका मोल न किया निदान जब अलादीन बारहभाजन बेंचके ख़र्चकरचुका तो उसने सुनहला बड़ापात्र जिसमें वह बारह भाजन रक्खेथे जाय दिखाया उसने उसेतौल दशअशरफ़ियां उसके हाथमें रक्खीं अलादीन ने प्रसन्नह्वै लेलीं और कुछ तकरार न की आगे तो अलादीन बालकों के साथ खेलताथा परन्तु इस मायावी के हाथ से दुःखदेनेके कारण बहुधा बाज़ारमें जाता और बुद्धिमानों से बार्त्ताकरता और बहुधा बड़ेबड़े ब्यापारियोंकी दूकानके पासजाय खड़ाहोता कि अनेक प्रकारके व्यवहारकी वार्त्ता उनकी सुने थोड़े दिनों में कुछ सांसारिक व्यवहार को जानगया जब वह सब अशरफ़ियां ख़र्चकरचुका तो उसी दीपकको उठालाया और उसी स्थानपर जहां उसकी माताने उसे मलाथा रेत लेके धीरे से मलनेलगा इतने में बीर प्रकटहुआ और नम्रतापूर्ब्बक कहनेलगा तू क्या चाहता है मैं और दूसरे बीर उसके अधीन हैं जिसके हाथ में यह दीपक है अलादीन ने कहा मैं भूखाहूं कुछ भोजन मेरेलिये ला वह यह सुन गुप्तहोगया फिर एकदम में जैसा कि पहिले लाया था उसीतरह से एकखोञ्चा खाने का लेआया और अलादीन के सामनेरखकर गुप्त होगया उससमय उसकी माता कहीं गईहुई थी जब घर आई और भोजनदेखा तो जाना कि यह भी पूर्ब्बवत् इसी दीपकके द्वारा आया फिर दोनों ने बैठके तृप्तहोकर भोजनकिया और बाक़ी दो दिनतक ख़र्च किया जब रुपया पैसा उनके पास न रहा तो चांदीके पात्रलेके उसी यहूदीके पास बेंचने गया मार्ग में वह एक भलेमानुष सुनार की दूकानसे होकर निकला सुनार ने उसे अपनी दूकान पर बुला करकहा हे पुत्र! मैंने तुझे बहुधा कुछ वस्तु अमुक यहूदीके पास लेजाते देखाहै और उधर से खालीहाथ आते पाया आजभी कुछ लिये हुये उधरको जातेहो जानपड़ताहै कि तुम कुछ बेंचनेको उसके पास जातेहो परन्तु तुम्हें मालूमनहीं कि वह यहूदी महाधूर्त्त और अधर्मी

है जिसने उसके साथ व्यवहार किया वह उसकी धूर्त्तताको भली भांति जानगया मेरा प्रयोजन यह है यदि तुम कोई वस्तु बेंचनेको लेजातेहो तो मुझे दिखावो मैं उसका ठीकमोलदूंगा और जो मैं उसे न लेसकूंगा तो मैं और व्यापारी के पास लेजाऊंगा जो तुमसे छल न करेगा उसने यह वचनसुन वही पात्र बस्रसे निकाल उसे दिखाया उसने उसे परखकर कहा कि इसकी चांदी बहुत चोखी है फिर कहने लगा इसप्रकार का तूने कोई और पात्र यहूदी के हाथबेंचा है उसने उसका तुझे क्या मोल दिया है उसने कहा बारह भाजन इसी प्रकारके उस यहूदी के हाथ बेंचे हैं उसने प्रतिपात्रपर मुझे एक अशरफ़ी दीहै सुनारने कहा बड़ा अनर्थहुआ उस दुष्टने तेरे साथ ऐसा छल किया जिसका कुछ वर्णन नहीं होसक्ता फिर पात्र को तौल कहनेलगा ठीक मोल इसका बहत्तर अशरफ़ी है और थैली से अशरफ़ियां निकालदीं और कहनेलगा भाई जो तुम्हें सन्देहहो तो तुम दूसरे सुनार के पास लेजावो और उसे दिखावो जो वह इसका मोल अधिकदे तो मैं प्रतिज्ञा करताहूं कि उसका द्विगुण तुम्हें दूंगा परन्तु यह बात यहूदी से न कहना अलादीन उसका गुणमानकर घरमें आया और फिर कभी और पात्रोंको और किसी केपास बेंचने न लेगया और सबपात्र उसी सुनारके पासबेंचे इसी प्रकार बहुकालपर्य्यन्त अपना निर्ब्बाह करतेरहे यद्यपि वह दोनों चाहते तो उसी दीपकके कारण उन्हें असंख्यधन प्राप्तहोता परन्तु कईबर्षतक वही पात्र बेंच कालक्षेप करतेरहे और उसकी माता बराबर चरखा कातती रही इस समयान्तर में अलादीन बहुधा चौकके बजाजे और सर्राफ़ेमें जाकर घूमता बिशेष रत्नपारखियों की दूकान पर बैठकर हरएकप्रकार के जवाहिरोंको देखता और उनका व्यवहार देखता और उन जवाहिरोंको अपने रत्नोंकी अपेक्षा जिनको अज्ञानतामें शीशेके रंगबिरंगे टुकड़े जानताथा चमकदमक में कहीं कमपाता धीरे धीरे वह जाननेलगा कि वह शीशेके टुकड़े नहीं किन्तु वह अतिउत्तम रत्न हैं परन्तु यहबात अपनेही मनमें रक्खी अपनी मातासे भी न कहीं एकदिन वह नगरमें सैरकरताथा अकस्मात् डौंड़ी

का शब्दसुना कि आज कोई अपनी दूकान न खोले न अपने घर से बाहर निकले क्योंकि बद्रबदौर शाहज़ादी स्नानकरने को हम्माममें जावेगी और नहाकर अपने महलमें आवेगी इस कालान्तरमें कदाचित् कोई मनुष्य बाज़ार वा गलीमें न निकले यह सुन कर उसे यह लालसाहुई कि किसी उपाय से उस सुन्दरीका मुखखुला हुआ देखें इसहेतु उसने एक गृह हम्माम के पास ढूंढ़ रक्खा कि उसके दरवाज़ेकी दरारोंमें बैठकर शाहज़ादी के रूपको देखें और पहिले से उस घर में जाय बैठरहा क्षण भर पीछे वहभी पहुँची और हम्माम के निकट अपनी बांदियों और खोजियों में अपने कोमल चंद्रमुखसे वस्त्र उतारा अलादीन ने कि तबतक सिवाय अपनी वृद्ध कुरूपमाता के कोई सुन्दर स्त्री न देखीथी और यही जानताथा कि सब स्त्रियां मेरी माताके सदृशाहोंगी परन्तु जब इसे देखा तो समझा कि ईश्वरने ऐसे स्वरूपभी उत्पन्न किये हैं निदान उस रूप छबिअनूप मनहरणको देखतेही मोहका बाण उसके हृदयसे पारहोगया और मूर्च्छाखाय गिरपड़ा जब सचेतभया और जाना कि वह सुन्दरी हम्माममेंगई तो मनमें कहनेलगा अब इस स्थानपर ठहरना उचित नहीं क्योंकि अब हम्माम से मुखढाँपे निकलेगी तो उस समय उस का देखना वा न देखना बराबर है यह सोच गुप्तमार्ग से अपने घर पहुँचा और मोहकी व्यथा अपनी मातासे छिपा न सका उसकी माता उसकी दुर्दशादेख अतिबिकल हुई और उसे रोते पीटते देख अचम्भाकर पूंछनेलगी हे पुत्र! तुझे क्या दुःखहुआ जो तू रोताहै तू कुछ बीमार तो नहीं होगया उसने कुछ उत्तर न दिया कुछकाल पर्य्यन्त अपनी प्यारीकी सुधि में चुपका बैठारहा माता उसकी कि रसोई पकाने में लगी थी इसलिये फिर उससे न पूंछा जब उसने भोजनपकाय थालियों में परस उसे बुलाया तो वह माताके कहनेसे थोड़ासाखाके फिर चुपहोरहा उसकी माताने भोजनान्तर में उससे उसकी बिकलताका हाल पूंछा पर वह कुछ न बोला जब भोजनकर चुका तो फिर उससे पूंछा परन्तु वह न बोला रात्रिभर उसी सुन्दरी की सुधि में तड़पतारहा दूसरे दिन भोरको अपनी माताके पास जो

चरखा कातरही थी बैठकर कहनेलगा हे माता! अबमैं अपनी व्यथा तुमसे कहताहूं मुझे कोई बीमारी नहीं जैसा कि तुमने बिचारकियाहै कल जो यहां के बादशाह की पुत्री हम्माम में गई तो मुझे उसके देखनेकी लालसाहुई सो मैं एकघरमें जाय छिपा जब वह चन्द्रबदनी आई और अपने मुखसे बस्त्र उठाया तो उसके रूप छबिअनूप मनहरणको उसीघरकी दरारसे देखतेही मोहित होगया मेरी बिकलता का यही कारण है इस बीमारीका यत्न सिवाय इसके और कुछ नहीं कि बादशाहके पासजाकर उसकी पुत्रीको मांगूं उसकी माता यह बचन सुन हँसकर कहनेलगी बेटा चुपरह ऐसी बात मुखसे मत निकाल तेरे इस कहने से मालूमहुआ कि तेरी बुद्धिभ्रष्टहोगई है अलादीनने उत्तरदिया मैं तो सावधानहूं मैं तो पहिलेसेही जानताथा कि तुम मुझे अवश्य बुद्धिहीन समझोगी पर मैं अवश्य बादशाहकी कन्यालूंगा उसने कहा हे बेटा! क्या तू अपनेको भूलगया तू ग़रीबदरज़ीका पुत्र है जो एक तुच्छ इस बादशाहकी प्रजाहै क्या तू शाही रीतोंको नहीं जानता कि वह अपनी सन्तानका बिवाह अपने बराबरवालों के सिवाय दूसरेसे नहींकरते जो वह ऐसा न करें तो उनकी नामधराई हो और सल्तनतमें बिघ्नहो अलादीनने कहा हे माता! जो तुम यह कहती हो सो सत्यहै परन्तु मैं बादशाहसे इसबातके कहनेके बिना न रहूंगा तुम्हीं मेरीओरसे जाकर बादशाहसे कहो जो तुम इसकार्य्य में परिश्रम न करोगी तो मैं देह त्यागदूंगा अब तुम्हारे हाथ मेरे प्राण हैं मैं तो अपनी प्राणप्रिया के बियोग में मरचुकाहूं उसकी माता यह सुन अतिचिन्तित हुई और कहनेलगी हे पुत्र! हमें वह कार्य्य करना चाहिये और वह बात मुखसे निकालनी चाहिये जिससे लज्जा को न प्राप्तहो (कहां राजा भोज कहां गंगातेली) कहां तू ग़रीब और कहां शाहज़ादी जो तेरी ज़ातिकी कन्याहोती तो निस्सन्देह मैं जाती अपनी ओर देख हम ऐसे बड़े बादशाहको कन्याकेवास्ते कहसक्ती हैं मुझे इतना साहस कहां कि बादशाहके सम्मुख जाय इतनी बड़ी बातकहूं जब तेरा पिता मुझपर क्रोध करता तो मैं डरजाती और मेरे मुँहसे बात न निकलती सिवाय इसके जो कोई बादशाहके पास

जावे तो उसे चाहिये कि अपनी इच्छाके प्रकटकरने के पहिले अपनी प्रतिष्ठानुसार भेंटदे मैं बादशाहके पास कौनसी भेंट इतने बड़े कार्य्यके लिये लेजाऊं तू ऐसी बात करना चाहता है कि वह नहीं होसक्ती अलादीनने अपनी माता के बचन सुन कहा हे माता ! मैं उसकी प्रीतिमें ऐसा नहीं फँसा कि उसे मनसे निकालूं इसलिये फिर बिनय करताहूं कि ईश्वर के वास्ते यह सब बिचार अपने हृदयसे निकालकर जिसतरहसे बने बादशाहसे जाकर उसकी पुत्रीके लिये प्रार्थनाकरो और इसकामकेलिये परिश्रमकरो मेरा मन साक्षी देताहै कि मेराकार्य्य सिद्धहोगा जो तूने कहा कि राजाओं को भेंट देना अवश्य है और मेरेपास कोई ऐसी बस्तु नहीं जो बादशाहोंके भेंटदेने के योग्य हो हे माता ! उन रत्नोंको जो मैं अपने साथ लायाथा और तुम उनको अबतक शीशेके टुकड़े जानतीहो क्या वह बादशाहकी भेंटके योग्य नहीं पहिले मैंभी न जानता था जौहरियों की दूकानपर जाने से उनकी व्यवस्था मुझे मालूमहुई संसारके सबरत्न मेरेरत्नों के आगे तुच्छहैं न तो वैसे रँगदार और न उतने बड़े परन्तु बड़ा खेद है कि हम तुम दोनों उनके मोलको नहीं जानते मैं भलीभांति जानताहूं कि वह सब जवाहिर बादशाहों की भेंट देने के योग्य हैं तुम उन सबको उठालावो कि मैं उन सबको साफ़कर और हरएक प्रकार को अलग २ कर किसी साफ़ बर्तन में लगाय रक्खूं फिर तुम उनकी सफ़ाई और चमक मालूम करोगी वह बहुत सुन्दर चीनी के भाजन में उन्हें उठालाई और उनको सजाया फिर तो वह सूर्य्य चन्द्रमा के सदृश प्रकाश देने लगे और उन दोनों की दृष्टि उनपर न ठहरतीथी अलादीन ने अपनी मातासे कहा यह बादशाहकी भेंटके लिये रक्खे हैं मेरे बिचार में इनसे उत्तम और कोई बस्तु भेंट देनेके योग्य नहीं अब जो कोई और बातहो सोभी कहो यद्यपि वह बड़ेचमकदार और सुन्दरथे परन्तु उनका हाल मालूम न होनेसे फिर उसकी माता तकरार करनेलगी कि तुम्हारी यह भेंट ऐसी नहीं कि बादशाह प्रसन्नहो और तेरी कामना पूरीहो मैं अर्थ रहित लौटआऊंगी जो मैं तुमसे कहतीहूं वहीहोगा जो मैंने साहस

कर अपना मनोरथ बादशाहसे कहा तो वह मुझे बावली और बु-
द्धिहीन समझ मेरी बातोंसे हँसेगा और सिड़िन समझ दरबार से
निकलवा देगा अथवा कोपित होय मुझे और तुझे मरवाडालेगा
निदान अलादीन की माताने उसे बहुत समझाया कि यह बिचार
छोंड़देवे परन्तु वह ऐसा मोहित हुआ था कि कुछ न समझा और
बड़ी कठिनता से अपनी माताको जानेकेलिये तय्यार किया सो उस
की माता कहनेलगी मैंने माना कि मैं बादशाहके सम्मुख साहस
करगई और उससे बिवाहके लिये प्रार्थनाकी जो उसने मुझसे पूंछा
कि तुम कहां रहतीहो और कितना धन तुम्हारे पासहै और तुम्हारी
जातिपांति क्याहै तो उससमय मैं उसे क्या उत्तरदूंगी उसने कहा
इस बिषय की चिन्ता भी मतकर पहिले देखो कि बादशाह तुझ
से क्योंकर भेंट करताहै और इस मनोरथ का क्या उत्तर देता है
मुझे दीपकपर बड़ा निश्चय है और जानताहूं कि जो बस्तु मैं मां-
गूंगा वह मुझे तुरन्त उसके द्वारा प्राप्त होगी जैसा कि कई बर्ष से
तुम देखतीहो उसकी माता यह सुन चुप होरही और समझी कि
इसी दीपकके कारण मेरे सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होजावेंगे उससमय
तो उसे धैर्य्यहुआ और वह सब बातें जो उसे कठिन जानपड़ती
थीं सुगम मालूमहुईं और अपने पुत्रसे जानेकी प्रतिज्ञाकी अला-
दीनने कहा कि इस भेद को किसी से मत कहना और बादशाहसे
भी एकान्त में कहना इतना कह दोनों सोरहे परन्तु अलादीन को
अपनी प्रियाके मोहमें रात्रिभर निद्रा न आई तड़प २ रात्रि बिताई
प्रातःसमय उठ अपनी मातासे कहनेलगा यह दरबार का समय है
शीघ्र बस्त्र पहिनकर जा सो उसबृद्धाने एक उज्ज्वलरूमाल में रत्नों
से भरा पात्र लपेट पुनि दूसरे बस्त्र में बांध गिरहदे दरबारकी ओर
चली उससमय राजमन्त्री आदिक सम्पूर्ण सभासद बादशाह के
सम्मुख बिद्यमानथे इतने में वहभी पहुँची और उन मनुष्योंके साथ
जो अपनी ब्यवस्था और नीतिके लिये जातेथे उनकेसाथ दीवान-
खानेके भीतर जो बड़ाबिशाल था गई क्या देखती है कि बादशाह
के सामने सब खड़े हुये अपना २ बृत्तान्त कहते और बादशाह

उनकी व्यवस्थाको सुनता और यथोचित उनका निर्णयकरता जब मुक़द्दमों का फ़ैसला होचुका तो बादशाह वहां से उठ अपने ख़ास मकानमेंआया और सिवाय राजमन्त्रीके सबको बिदाकरके देश प्रबन्धके उपाय बिचारनेलगा जब उससेभी निश्चिन्तहुआ तो अपने महल में गया जब अलादीनकी माता ने देखा कि अब बादशाह दरबार में नहीं आवेगा और सबलोगभी चलेजाते हैं तो अपनेघर में लौटआई अलादीन उसके हाथमें रत्नोंकापात्र देख समझा कि मेरी माताको बादशाह से बिनयकरनेका अवसर न मिला घबड़ाके पूंछनेलगा हे माता! कुशल तो है उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त ब्यौरेवार बर्णनकर कहा मैंने बादशाहको भलीभांति देखा और बहुत काल पर्य्यंत उसके सम्मुख खड़ीरही किसीने मुझे नहीं रोंका और बादशाहभी मुझे बहुत कालतक देखताथा परन्तु उसे अवकाश न मिला कि मुझसे कुछ पूंछता और मुझेभी अपने प्रयोजनके बर्णन करनेका अवसर न मिला परन्तु इतना मालूमहुआ कि बादशाह एक २ का हाल सुनके उसका उत्तर बहुत स्पष्टदेताहै उसकी प्रजापालकता में संदेह नहीं छोटे बड़े सब जाके उससे बातें करते हैं किसीको बुरा भला नहीं कहता आज उसने बहुतसी ब्यवस्था सुनी जब सब सुनचुका और समय भी होचुका तो उठकर अपने महल को पधारा कल्ह फिर जाऊंगी अलादीन ने उसका बड़ा गुण माना और उसे बिश्वासहुआ कि यहभी निश्शंक और निर्भय होकर बादशाह से अपना मनोरथ कहेगी दूसरे दिन भोरहोतेही वह फिर बादशाहके दरबारमेंगई परन्तु उसका जाना निपट ब्यर्थथा क्योंकि दरबारका द्वार मुँदाहुआ पाया और वहांके मनुष्यों से सुना कि दो दिनतक छुट्टीरहेगी इसलिये अपने घर लौटआई और अलादीन से वह हाल कहसुनाया दो दिनपीछे फिर उसकी मातागई परन्तु उसदिन भी बहुत लोगोंके होनेसे न तो बादशाहने उससे पूंछा और न उसने सावकाश पाया इसीभांति कईबेर उसकी माता बादशाहके सम्मुख जाती और कहनेका अवसर न पाती निदान एकदिन बादशाह ने न्यायादि प्रबन्धसे निश्चिन्तहो वज़ीर से कहा कई दिन से

मैं इस स्त्रीको देखताहूं कि प्रतिदिन मेरे सम्मुख खड़ी रहती है और अपनेहाथोंमें कुछ लपेटे लियेरहती और दरबारके छुट्टीपाने के पीछे कुछ कहेसुने बिना चलीजातीहै तू उससे पूंछ कि उसकी क्या इच्छा है मन्त्रीने भी कि उसके हालको न जानताथा चाहा कि अपनी अ-ज्ञानताको बादशाहसे प्रकट न करे इसलिये बिनयकी कि ऐ हुज़ूर! स्त्रियां थोड़ी थोड़ी बातकेलिये निरर्थ नालिश करती हैं सो यह भी वैसेही आतीहोगी किसीने उसे मांस वा दूसरीबस्तु बुरी वा तौल में कम उसके हाथ बेचीहोगी इस उत्तरसे बादशाहको बोध न हुआ दूसरे दिन बादशाह ने सभामें बिराजमान होकर मन्त्री को आज्ञादी कि जब वह स्त्री मेरे दरबार में आवे तो उसे मेरेपास लाइयो कि मैं उससे पूंछूं कि उसकी कौनसी इच्छाहै उसने कहा बहुत अच्छा और अपने शिरपर हाथ रक्खा अर्थात् यदि आपकी आज्ञापालन न करूं तो मेरा शिर काटाजावे इतने में अलादीन की माता बाद-शाहके सम्मुख खड़ीहुई परन्तु मन्त्रीने उसे बादशाह के सामने न बुलाया बादशाहने आपही उसेदेख मन्त्रीसे कहा वह स्त्री आई है उसे मेरेपास लेआ कि मैं उससे कुछ पूंछूं मन्त्रीने एक मनुष्य से कहा उस स्त्री को बुला के बादशाह के सम्मुख लेजाओ वह उसे तख़्त शाहीके पास लेगया और अपनी जगहपर जाय खड़ाहुआ अलादीन की माताने औरोंकी भांति अपनेशिरको पृथ्वी से लगा के स्वच्छक़ालीन को जो तख़्तके नीचे बिछाया था चूमा और देरतक धरती से लगी पड़ीरही यहांतक कि बादशाहने उठने की आज्ञादी वह उठ खड़ी हुई बादशाह ने उससे पूंछा मैं तुझको बहुत दिनसे देखताहूं कि तू हरदिन मेरी कचहरी में आती है अब अपना मनोरथ प्रकटकर कि तू किस अर्थ के लिये आयाकरती है उस बूढ़ीने यह सुन फिर धरतीचूमी और हाथबांध बिनयकी हे बादशाह दीनप्रति-पालक! जो मुझे प्राणदानहो और मेरीढिठाई क्षमाहो तो मैं अपना अर्थ बर्णनकरूं परन्तु वह बात सबके सामने नहीं कहसक्की बाद-शाहने सबको यहांसे बिदाकिया केवल वज़ीरआज़म वहां रहा तब बादशाहने उससे कहा अब तू बर्णनकर उसने बादशाह को एका-

न्तमें अपने ऊपर दयालु पाकर फिर विनय की यह किंकरी आशा रखती है कि मेरी बिनतीसे आपको दुःख न हो मेरी ढिठाई क्षमाकरो बादशाहने कहा मैंने क्षमाकिया जो तेरे मनमें हो उसे निश्शंक और निर्भय होकर प्रकटकर पहिले उस ने जिसतरह अलादीन ने उसकी कन्याको देखाथा बर्णन किया फिर कहनेलगी कि उस समय से वह उसपर मोहित है अब उसकी यह इच्छा है कि आपकी पुत्रीका उस के साथ बिवाहहोजावे और इसीलिये मुझे आपके सम्मुख भेजा है बादशाह उसकी बिनती सुन कुछ अप्रसन्न न हुआ किन्तु कुछ भी मुँह न मोड़ा और पूछने लगा इस बस्त्रमें क्या बँधाहै उसने रत्नोंका पात्रखोल बादशाह को अर्पणकिया वह अतिविचित्र और उज्ज्वल और बड़े बड़े रत्नोंको देख आश्चर्य्यमें हुआ और प्रसन्नहो लेलिया और एक एक उठाय उठाय देखता और वाह वाह करके कहता कि ऐसे बहुमोल्य रत्न भी ईश्वर ने संसार में पैदा किये हैं फिर उस ने उन रत्नों को एकठौर रख मन्त्री को बुलाय दिखाये कि ऐसे तूने भी कदाचित् रत्नदेखेहैं उसने देखकर कहा कि मैंने कभीभी नहींसुने पुनि बादशाहने मंत्रीसे कहा कि यह मनुष्य जिसने यहरत्न भेजेहैं इस योग्य है कि उसका बिवाह अपनी कन्यासे करूं मन्त्री यहसुन महादुःखित हुआ क्योंकि उसे बिश्वासथा कि बादशाह सिवाय मेरे पुत्र के और किसीको कन्या न देगा अब ऐसे रत्नदेख उसके बिपरीत कहताहै सो एकबातमनमेंठान बादशाहकेकानमें कहा हे स्वामी! यहभेंट आपकी कन्याकी अपेक्षा तुच्छहै आशारखताहूं कि तीनमहीने का सावकाश मिले कि मेरापुत्र इससे उत्तम भेंटदेगा यद्यपि बादशाह जानताथा कि ऐसी सौगात जो अलादीनकी मातानेदी और किसीको प्राप्त न होगी परन्तु उसके कहने से उसकी प्रार्थना स्वीकारकी और अलादीनकी मातासे कहा अब तुम अपने घरजाके अपने पुत्रसे कहो कि हमने उसकी इच्छा स्वीकारकी परन्तु अभी दहेजका असबाब जो हम अपनी लड़कियों को दियाकरतेहैं तय्यार नहींकिया तीनमहीने के पीछे सब तय्यारहोगा तब तुम यहां आना वह अतिप्रसन्नहो अपने घरआई यह प्रसन्नता उसे कई हेतुओं से प्राप्तहुई एक तो आनेजाने

से छुटी और दूसरे अपनी इच्छानुकूल उत्तरपाया तीसरे इस भयसे कि ईश्वर जाने बादशाह इस बिनयसे कोपित होकर उसे और उसके पुत्रको न जानिये क्या दण्डदे अलादीन अपनी माताको देखकर अपनी बुद्धि से जानगया कि मेरीमाता कार्य्य सिद्धकर आई क्योंकि दरबारसे शीघ्र चलेआनेसे यह बात उसे मालूम हुई और मुख उस का और दिनों से प्रसन्नथा जब निकट पहुँची अलादीन ने पुकार के कहा हे माता! कुशल तो है उसकी माता दरबारकेवस्त्र उतार कहने लगी हे पुत्र! अब प्रसन्न हो फिर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया और कहा मुझे बादशाह ने अभी हां ना का उत्तर न दियाथा कि मन्त्री ने बादशाहके कान में कुछ कहा तब मैं डरगई कि ऐसा न हो कि बादशाह को बहकावे परन्तु जब बादशाह ने हँसके मुझसे कहा कि अब तुम जाके अपने पुत्रसे कहो कि मैंने तुम्हारा मनोरथ स्वीकार किया तीन महीने पीछे फिर आइयो तब मुझे भरोसाहुआ यह शुभ समाचार अपनी माता से सुन अलादीन महाहर्षित होकर उसका गुणानुबाद करनेलगा परन्तु तीन महीने की अवधि जो बादशाहने की थी उस चन्द्रमुखी की प्रीति में इतनी बड़ी मालूम हुई मानों तीन बर्ष का अन्तर है दिन और घड़ी गिनने लगा जब दो महीने बीते तो एकदिन सायंकाल को अलादीन की माताने दीपक जलानेकी इच्छाकी और यह देखा कि घरमें तेल नहीं सो तेल बाज़ार से मोललेनेगई वहां क्या देखती है कि चारों ओर बिवाहकी धूमधाम होरही है और दूकानदार दूकानें मूंद दीपमाला में लगेहैं और बरातकासामान एकओर से दूसरीओर जाताहै और गलीकूचोंमें प्रधान और अधिष्ठाता सुनहले बस्त्रपहिरे स्वच्छ घोड़ोंपर जिनके रुपहले सुनहले सुन्दरसाज़ हैं सवार हैं और बहुतसे सेवक उनकेसाथ बड़ी धूमधामसे आतेजातेहैं अलादीनकी माताने उसतेलीसे जिससे तेल लियाथा पूंछा आज यह कैसी धूमधामहै उसने कहा तुम कहांसे आई हो क्या तुम इस नगरकी रहनेवाली नहींहो यह बात सब कोई जानताहै कि आज रातको यहांके वज़ीरआज़म के पुत्रसे शाहज़ादीका बिवाहहै अब एकघड़ीपीछे शाहज़ादी भी स्नानकरनेको आवेगी इस

लिये सब प्रधान उसके जलूसके वास्ते तय्यारहोके महलबादशाही के तरफ़ जाते हैं वह यह सुनतेही अपने घर दौड़ीगई और अला-दीनके निकट जाय कहनेलगी हे पुत्र! बड़ा खेदहै कि मेरा परिश्रम और वह सब रत्न बृथागये बादशाहने बड़ा छलकिया अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहा वह सुन चिन्तितभया और मातासे पूंछनेलगा बादशा-हने क्योंकर अपना प्रणतोड़ा उसने जो कुछ बाज़ार में देखा और सुनाथा ब्योरेवार बर्णन किया और कहनेलगी आज रात्रिको तेरी प्यारी का राजमंत्री के पुत्रसे बिवाह ठहराहै सो इससमय वह स्ना-नकरने को हम्माममें जावेगी अलादीन यह सुनतेही महाब्यथित भया कि जैसे किसीपर बिजुलीपड़े जिसके गिरने से वह मूर्च्छाको प्राप्तहो थोड़ी देरके पीछे जब सचेतहुआ तो मनमें बिचारा हा! बड़ी लज्जाकी बात है कि बदरबदौरको सिवाय मेरे कोई दूसरा लेजावे अब इसमें देरी न करनी चाहिये कोई ऐसा यत्नकरो कि मंत्रीका पुत्र ब्याहकेलेजाने न पावे सोचते २ दीपकको याद किया और माता से कहने लगा कुछ चिन्ता मतकर उस मन्त्री का पुत्र उस से भोग न करसकेगा तुम भोजन पकाओ मैं अपने मकान में एक क्षणकेलिये जाताहूं वह समझगई कि यह दीपक निकालेगा और उसीसे कोई ऐसा उपाय करेगा जिस से उनके बिवाह में बिघ्नहो वह तो भोजन पकाने लगी और इधर अलादीन ने अपने मकान में जातेही उस दीपक को वहां से निकालकर रगड़ा तो वही बीर प्रकट हुआ और अलादीन से कहनेलगा मुझे क्या आज्ञाहै मैं और दूसरे बीर इस दीपक के अधीन उस कामको तुरन्त प्रतिपालन करेंगे अलादीनने कहा आजतक मैंने तुमसे खानेकी बस्तुके सिवाय और कोई काम नहीं कहा अब तुमसे एक काम कहताहूं वह यह है मैंने यहां के बादशाह से उसकी पुत्री बदरबदौर के साथ ब्याह करनेकी प्रार्थना कीथी उसने स्वीकार कर कहाथा कि तीनमहीने पीछे मैं तुझे अपनी लड़की बिवाहदूंगा अब वह अपनी प्रतिज्ञाके बिपरीत उस अवधि के पहिले उसका ब्याह राजमंत्री के पुत्रसे किये देताहै सो इसीरात्रि को बिवाह नियतहुआ है अभी मैंने यह समाचार सुनाहै अब जो मैं

कहूं सो तू कर अर्थात् जब दूलह दुलहिन इकट्ठेसोवें तू उन दोनोंको बिछौने समेत मेरेपास लेआइयो उस बीरने कहा यह कितना बड़ा कामहै और जो कोई आज्ञाहो तो वह भी कहो उसने कहा इससमय तो सिवाय इसके और कोई काम नहीं जो तुझसे कहूं यह सुन वह बीर गुप्त होगया इस के उपरान्त अलादीन वहां से निकल हँसी खुशीसे भोजन करनेलगा जब भोजन करचुका तो अपनी मातासे बहुत कालपर्य्यन्त अपनी प्यारी की बार्त्ता करतारहा फिर माता से बिदाहो अपने मकान में सोनेगया परन्तु बीरकी बाटमें उसे निद्रा न आई जब शाही महल में बिवाहकी रीतें होचुकीं और रात्रिभी बहुत बीती तो मंत्री के पुत्रको मकानमें लेगये वह पहिले शय्यापर जाकर लेटा और दुलहिनको बांदियों समेत लेजाय रीतेंकर और उसके बस्त्र उतार रात्रिके बस्त्र पहिराय दूलहके पास सुलायदिया और आप अनुचरियों समेत बाहर निकलआईं और उस मकान का द्वार लौंड़ियों ने मूंदलिया द्वारके मूंदतेही वही बीर प्रकटभया और इससे पहिले कि दूलह कुछ दुलहिनसे बातचीतकरे वा उस का मुखदेखे उन दोनोंको शय्या समेत उठाय अलादीनके मकानमें लाया अलादीन जो बाट देखताथा बीरसे कहनेलगा इस दूलहको लेजाय पाखाने में बन्दकरदे भोरको फिर इसे यहां पर लेआइयो यह आज्ञापाय वह बीर उसे शय्यासे उठाय लेगया और एकपाखाने में जिसमें महादुर्गंधित मल भराथा बन्दकिया जिसकी दुर्गंधिसे उसका दिमाग़ फटाजाता था और इधर अलादीन ने दुलहिन से अधिक बार्त्ता न की केवल इतनाही उससे कहा कि हे मेरी प्रिया! तुम कुछ भय मतकरो तुम्हें यहां किसीभांति से दुःख न पहुँचेगा मैंने यह बात इस लियेकी कि तुम्हें मंत्रीके पुत्रसे बचाऊं क्योंकि तेरे पिताने मुझसे प्रतिज्ञाकीथी कि मेराबिवाह तेरेसाथ करदे अब अपने बचनके बिपरीत तुझे मंत्रीपुत्रके साथब्याहदिया वह बेचारी कि कुछ न जानतीथी सुन के चुपहोरही कुछ उत्तर न दिया किंतु सहमिगई और घबड़ागई अलादीन ने उससे कुछ न कहा और अपने बस्त्र और पगड़ी उतारकर उस के साथ पीठ फेरके सोरहा और एक खड्ग उसके और अपने मध्यमें

बीरका वज़ीरज़ादे और शाहज़ादी को बादशाही महल से अलादीन के पास लाना.



रखदी कि वह सुन्दरी इसबात को जाने कि जो मैं उससे किसीकर्म की इच्छा रक्खूं तो इसी खड्गसे माराजाऊं इस उपाय से उसने अपनी प्रियाको दूसरे से बचाया और अत्यन्त प्रसन्नहोकर रात्रिभर आनन्दपूर्वक सोयाकिया परन्तु उस सुन्दरी को वह रात्रि महादुःख और चिन्तामें कटी और अधिकतर मन्त्री के पुत्रकी रात्रि दुःख में बीती कि रात्रिभर सड़े पाखाने में बन्दरहा भोर को अलादीनको दीपक के रगड़ने की कुछ आवश्यकता न पड़ी क्योंकि प्रभातहोतेही वह बीर आपही आया और अलादीन से कहने लगा हे स्वामी ! मैं आयाहूं जो आज्ञाहो सो करूं अलादीनने कहा दूल्हेको उसजगहसे जहां तूने उसे बिदाकियाहै जाके लेआ और उसे शय्यापर सुलाकर शाहज़ादी सहित उसी मकानमें पहुँचादे यह कह उसने खड्ग बीच में से निकाला वह बीर मन्त्रीके पुत्रको पाखानेसे बाहर निकाल उस सुन्दरीकेपास उसे लिटाकर जहांसे लायाथा छोड़आया सबसे अधिक दुःख दूलह दुलहिनको उस महाबिकराल बीरके देखनेसे हुआ यदि बिछौना फटके वे दोनों मरजाते तो आश्चर्य्य न था निदान जब वह बीर छोड़आया तो उसीसमय बादशाहने अपनी पुत्रीको देखना चाहा कि पूंछे यहरात्रि उसकी क्योंकर बीती सो मकानके भीतरआय दूलह कि मलकी दुर्गन्धि और शीतसे अतिदुःख पाकर मृतकवत् होरहाथा बादशाहकाशब्द सुनतेही पलँगसे कूद बाहर निकलआया और दूसरे मकानमें जहां रात्रिको अपने बस्त्र उतारकर सोनेके मकानमें गया था जाकर कपड़े पहिने जब बादशाह भीतर गया और अपने जातिकी रीतिके अनुसार मुसकराय अपनीपुत्रीसे पूंछा तुम्हारीरात्रि क्योंकर बीती फिर जब आगे बढ़के ध्यानकरके उसकी सूरत देखी और माथेको चूमा तो उसका मुख मलिन और उदास देख बिस्मित हुआ और कुछ न समझा कि यह दुःख उसे लज्जा से है वा किसी और कारणसे चाहा कि उससे पूंछे दुलहिन निर्बलताके कारण अपने दुःखका बृत्तान्त नहीं कहसकी बादशाह समझा कि लज्जा के कारण अपने दुःखका बृत्तान्त नहीं कहसकी वा कोई दूसरीबात रात्रिमें हुई जो इसे नहीं भाई जिससे वह चुपहै निदान

वह लौट मल्काके निकट गया और उससे शाहज़ादीका हाल बर्णन किया मल्काने कहा हे हुजूर ! बादशाहज़ादी के इसहालसे मत घबड़ाओ क्योंकि बहुधा ऐसादुःख नौसंगमके समय नई दुलहिनों पर होता है तीनदिन पर्यन्त उनकी यही दशा होती है मैं आप जाकर उससे बृत्तान्त पूंछ तुमसे कहूंगी फिर मल्का शाहज़ादी के मकानमें गई और उसको कंठसे लगाया परन्तु उसे चुप और दुःखमें उदास देख आश्चर्य्य में हुई और समझी कि इसे अवश्य रात्रिको दुःखहुआहै जिसे वह बर्णन नहीं करसक्ती तब मल्काने उसे बहुत समझाया और कहासुना वह ठंढीश्वास ले कहनेलगी हे मेरीमाता ! यदि इस हाल में मुझसे कोई बात ढिठाई की हो तो क्षमाकरना क्योंकि एक ऐसा अद्भुतचरित्र रात्रि को हुआ जिससे मैं अबतक अपने होशमें नहीं और उस भयसे काँपतीहूं पुनि अपना और अपने दूलहका सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया कि रात्रिको जब लौंड़ियों ने मकानका द्वार मूंदा तो तुरन्तही वह शय्या जिसपर मैं और मेरा पतिथा किसीने उठा लेजाकर एक बड़े विशाल कोठे में रक्खा और मेरे भर्त्तार को मुझसे अलग कर और कहीं लेगया फिर मैं नहीं जानती कि उसके साथ क्या व्यवहार किया फिर मैंने एक तरुणपुरुष को देखा कि मुझे धैर्य्य दे अपने और मेरे मध्य में खड्ग रख मेरीओरसे पीठफेर सोरहा प्रभातको फिर मेरे पतिको मेरेसाथ लिटाया और यह शय्या किसी ने एकक्षणमें यहीं लाकर रक्खी जब मेरापिता मेरेमकान में आयाथा तब मैं ऐसे शोकमें डूबी हुईथी कि कुछभी उत्तर न देसकी किन्तु डरतीहूं कि मेरे चुपरहनेसे पिताजी क्रोधित न हुयेहों परन्तु मुझे निश्चयहै कि जब मेरा दुःख उनपर ज्ञातहोगा तो निस्सन्देह मेरा अपराध क्षमाकरेंगे उसकी माता यहसुन बिस्मितहुई और इन बातोंपर उसे बिश्वास न हुआ और कहनेलगी बहुत अच्छा हुआ कि तुमने यह बृत्तान्त बादशाह से न कहा अब किसीसे यह हाल न कहना नहीं तो तुमको विक्षिप्त समझेंगे उसने कहा तुम निश्चय मानो कि मैं सावधानहूं और मेरी बुद्धि भंग नहीं हुई यदि तुम्हें विश्वास न होवे तो इस बृत्तान्तको मेरे

पतिसे जायपूंछो वहभी तुमसे यही कहेगा उसने कहा भला मैं उस से भी पूंछूंगी जो उसनेभी यही कहा तो मैं सचजानूंगी तबतक तुम उठो और इस चिन्ताको अपने चित्तसे टालो यह बिषय अद्भुत है क्या तुम नौबत और बाजोंका शब्द नहीं सुनती जो चहुँओर नगर में बजरहे हैं अपने मनको सावधानकरो और यह दुःस्वप्न जो तुमने देखाहै अपने जी से भुलाओ पुनि उसने उसका मुखधुलवाया फिर बादशाह के निकटगई और कहनेलगी कि आज रात्रिको तुम्हारी पुत्रीने कोई दुःस्वप्न देखाहै जिससे वह भयभीतहुई और मंत्रीके पुत्रको बुलाय पूंछा क्या तूनेभी वही दुःस्वप्न देखा जो तेरी स्त्री ने देखा है उसने कहा मैं नहीं जानता कि तुमने मुझसे कौनसा प्रश्न किया बादशाहने कहा जो स्वप्न तेरी स्त्रीने रात्रिको देखा तूनेभी वही देखाहै मन्त्रीका पुत्र तो बिवाहहोनाही अतिकठिन जानताथा और इससे उसकी प्रतिष्ठा वृद्धिको प्राप्तहुईथी इसलिये उचित न जाना कि रात्रिकी बार्त्ताको बर्णनकरे सो मल्कासे कहा मैंने कोई स्वप्न नहीं देखा यद्यपि रात्रिको महाघोर दुःख भोगाथा तथापि अपनी खुशी प्रकटकी मल्काको निश्चयहुआ कि केवल उसकी पुत्रीही ने दुःस्वप्न देखा है वह सम्पूर्ण बार्त्ता अलादीन को दीपक के अधीन बीर से मालूमहुई और यह भी बिदित हुआ कि आज रात्रिको दुलहिन दुलहा इकट्ठे सोवेंगे सो रात्रिको भी उन्हें इकट्ठे सोने न देना चाहिये यह बिचार सन्ध्याको उसने दीपकमला तो वही बीर प्रकट भया अलादीन ने आज्ञा दी कि आज रात्रि को फिर वही दूलह दुलहिन इकट्ठा सोवेंगे तू इससे पहिले कि वह बात चीत वा भोगादि करें पूर्ब्बवत् शय्या समेत मेरे मकान में लेआइयो वह बीर उनको शय्यापर लेटतेही शय्यासमेत उठाकर अलादीन के मकान में लेआया और मन्त्री के पुत्रको फिर उसी मलस्थान में बन्द कर दिया और शाहज़ादी ने भी पूर्ब्बवत् अपने साथ अलादीन को सोतेहुये पाया और खड्ग भी बीच में रक्खाहुआ देखा प्रभातको वह बीर राजमन्त्री के पुत्रको पाख़ाने से निकाल और शाहज़ादी के पास लिटाय जहांसे लायाथा वहीं रखआया बादशाह तो पहिली

रात्रिकाहाल सुन चिन्तामें थाही भोरहोतेही शाहज़ादी के मकानमें हाल पूंछने के लिये पहुँचा तो दूलह शय्यापरसे शीघ्र उतर निकल भागा और दूसरे मकान में वस्त्र पहिनने को गया और बादशाह भीतरगया तो अपनी प्यारी पुत्री को उसीभांति शोकवान् पाकर सन्तोष न रहा और पूंछा हे प्यारी बेटी! तेरी क्या दशाहै मैं तुझे प्रसन्न नहीं पाता शाहज़ादीने कुछ उत्तर न दिया बादशाहने जाना कि कलसे आज और भी उसका बुराहाल है और रात्रि को कोई उपाधिहुई सो क्रोधितहो खड्गखींच लाल नेत्रकर कहनेलगा जो तुझपर बीता है सो कह नहीं तो मैं तुझे बधकरडालूंगा वह नङ्गी खड्गदेख भयभीतभई और प्राणके भयसे रुदनकर अपने पितासे कहनेलगी यदि कोई मुझसे अपराधहोवे तो उसे क्षमा कीजिये और मुझे बिश्वास है कि जब मैं आज और कलकी रात्रिका हाल बिनय करूंगी तो आपका सबक्रोध शान्त होजावेगा बादशाह इस बातको सुन कुछ धीरहुआ फिर शाहज़ादी ने अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बिस्तारपूर्व्वक कह सुनाया पुनि कहनेलगी जो इसमें कुछ आपको सन्देहहो तो मेरे पतिसे जा पूंछ लीजिये कि उसके बर्णनसे मेरेबचन की सत्यता सूचित होगी उसने उसके धैर्य्य के लिये कहा जो तूने कहा उसपर मुझे बिश्वासहै परन्तु मैंने तुझे दुःख देनेको तेरा बिवाह नहीं किया धैर्य्यरख आज रात्रिको यह उपाधि न होगी यहकह बादशाह अपने मकानमें आया और मंत्रीको बुलवा भेजा और उससे कहनेलगा तूने अपने पुत्रको देखा और उससे कुछ सुना उसने कहा मैंने अबतक उसको नहीं देखा फिर सम्पूर्ण बृत्तान्त जो अपनी पुत्रीसे सुनाथा सविस्तार बर्णन किया और कहनेलगा यद्यपि जो मेरी पुत्री ने कहा मैं उसे सत्य संमझताहूं तथापि मेरी इच्छाहै कि मैं तेरे पुत्रसे भी सुनूं तू उससे सब हाल जाय पूंछ मंत्री ने वह हाल अपने पुत्रसे जा पूंछा और जो कुछ बादशाहसे सुनाथा उससे भी सुना कि जो कुछ बादशाहज़ादी ने अपने पितासे कहा उसमें सन्देह नहीं दो रात्रिसे कोई शय्याको उठाकर एक बिशाल मकान में रखके मुझे एक सड़े पाखाने में केवल एक पाजामें समेत

जिसे मैं पहिले होताहूं लेजाकर छिपाताहै वहां मुझे हाथ हिलानेकी सामर्थ्य नहीं रहती और मुझे अपनी स्त्रीका कुछ हालभी मालूमनहीं रहता कि कहां रहती है यदि दो तीन दिन मेरी यही दशारही तो मैं दुर्गन्धि और शरदी से देह त्यागदूंगा यहीदशा मेरी स्त्रीकी भी बिचारना चाहिये अब मुझे उससे अलगरहना अवश्यहै मैं नम्रता पूर्व्वक बिनय करताहूं कि बादशाह को इस बातपर राजीकरो कि मेरी निगाहसे अपनी पुत्री अलगकरे इसबात से मैं उनका बड़ा गुण मानूंगा नहीं तो शाहज़ादी अधिक दुःखितहोगी मन्त्री ने जब यह सुना और समझा कि दो दिन में तो उसकी यह दशाहुई कि मेरापुत्र भय और दुःखसे बहुत दुबलाहोगया है जो दोचार दिन और शाहज़ादी के साथ सोवेगा तो उसके प्राणपर बनआवेगी अब उचितहै इसे शाहज़ादी के पास न जानेदूं आगे समझ लियाजावेगा इसबातको अपनेमन में ठान बादशाहके सम्मुखगया और कहा इस दासके पुत्रने वही कहा जो कुछ आपने अपनी पुत्रीसे सुनाथा अब मेरे बिचारानुकूल उचितहै कि दूलह और दुलहिनको एक जगह न सुलावें जिससे दोनों कुशलसे रहें और आज्ञादीजिये कि बिवाह की रीतें सम्पूर्ण राज्य में बन्द कीजावें बादशाह इस बातपर राजी हुआ और बिवाहके उत्सवके बन्द होने के लिये आज्ञादी घर घर और गलीगली में जो मङ्गलाचार होताथा एकहीबेर बन्दहोगया और यह अशुभ समाचार सुनतेही पुरबासी चिन्तितहुये और कोलाहल पड़गया कि खुशीके बन्दहोने का क्याकारण है फिर सबने सुना कि मन्त्री का पुत्र बादशाही महल से निकाला गया परन्तु अलादीनके सिवाय इसका हेतु किसीको बिदित न था जब अलादीन को निश्चय हुआ कि मंत्रीकापुत्र राजमहलसे निकालागया तो उसने फिर दीपक को न रगड़ा और उसीतीन महीनेकी अवधिको जोबादशाहने उससे कीथी उसीको गिनतारहा जब वह अवधिबीती तो अलादीन ने अपनी माताको बादशाहके निकटभेजा कि वह उसकी प्रतिज्ञाकी सुधि करावे वह दरबार में जाके बादशाह के सम्मुख खड़ीहुई बादशाह ने उसे पहिचाना उसनेचाहा कि वहीप्रतिज्ञा स्मरणकरावे इतने में मंत्री

कोईबात पूंछने के लिये बादशाहके निकटगया बादशाह ने उसे ठह-
राके कहा वह स्त्री जिसने बहुमूल्यरत्न मुझे भेंट दियेथे फिर आई
है उसे आगेबुलाके पूंछ कि वह क्याकहती है मंत्रीने चोबदारसे कहा
कि वहस्त्री जो सम्मुखखड़ी है आगेबुलाला चोबदार उसे आगेलेगया
उसने पूर्ववत् शीशझुकाय तख़्तका पाया चूमा बादशाहने उससे
पूंछा तू क्यामांगती है उसने बिनयकी मैं आपको वह प्रतिज्ञा स्मरण
करानेको आई हूं जो आपने कहाथा कि आप मेरे पुत्रकेसाथ जिसका
नाम अलादीन है तीन महीनेके पश्चात् अपनीकन्यासे बिवाहकरेंगे
अब वह अवधि बीतिगई इसलिये आपको सुधि दिलाने आईहूं य-
द्यपि बादशाह उसबृद्धाको देखतेही जानगयाथा कि शाहज़ादीकेमां-
गनेकेलिये आई है और अबभी उसके कहने से यहीबात मालूमहुई
तो मनमें अतिचिंतित हुआ कि इस स्त्रीको क्योंकर साफ़ उत्तरदूं
क्योंकि इससे बचन हारचुकाहूं अब जो इन्कारकरूं तो बड़ीअशीलता
है जो राज़ीहोऊं तो क्योंकर ऐसे अप्रकट मनुष्यको जिसे देखाभी नहीं
अपनीपुत्री देडालूं इस विषयमें मन्त्रीसे सम्मत पूंछा उसने बिनयकी
आपने जो कुछसोचाहै सोसत्यहै यहबातकुछकठिन नहीं आप अला-
दीनको कहलाभेजिये कि मेरीपुत्रीका मेहरबड़ाहै जो तुझमें उसके देने
की सामर्थ्यहो तो मेरीकन्या को ब्याहलेजा नहीं तो फिर कभी नाम मति
लीजियो जो और बड़ाकाम आप समझें और वह ऐसाहो कि उससे
पूरा न होसके उसीको आपकहिये बादशाहको यह सम्मत बहुत प-
सन्दहुआ और अलादीनकी मातासे कहनेलगा हे सुन्दरी! मैं तुझे
बचनदेचुकाहूं अपने बाक्यसे नहीं फिरता मैं तय्यारहूं कि अपनी पुत्री
तेरेपुत्रको ब्याहदूं परन्तु शाहज़ादीने एकप्रतिज्ञाकी है जो तेरापुत्र
उसेपूराकरे तो ब्याहदूं अब तू जाके उससे कह कि बादशाह अपने
बचनपर दृढ़है परन्तु तू पचासपात्र स्वर्ण के जिसमें उसीप्रकार के
रत्नभरेहुयेहों जो पहिले तुमने भेंटदियेथे चालीस समआयु हब्शियों
के शिरोंपर रक्खे और प्रतिहब्शी के आगे एक एक गुलाम महा-
सुन्दर और सुनहलेवस्त्र और रत्न पहिरे हुये मेरे समीप भेजे सो तू
जाकर यह प्रतिज्ञा उससे बर्णनकर जो कुछ इसका उत्तर दे मुझसे

शीघ्र आनकर कह मैं तेरीराह देखतारहूंगा यहसुन वह तख़्तके पाये को चूम अपने घरकीओर पधारी और मार्गभर अपने पुत्रकी निर्बु-द्धितापर हँसतीथी कि अब उसको क्योंकर वह रंगबरंगे शीशे के टुकड़े प्राप्तहोंगे जो वह बादशाहको भेंटदेगा अब तो वह तहख़ाना भी लुपगया होगा और कहांसे इतनेदास हब्शी श्वेतरंगके और सु-न्दरपावेगा उसने व्यर्थ मुझे आवागमनका दुःखदिया यही चिन्त-नाकरतीहुई अपनेघरको पहुँची और अलादीन से कहनेलगी क्यों बेटा मैं तुझसे कहती थी कि शाहज़ादी की प्रीति अपने मनसे दूर कर यद्यपि बादशाहने अपनी सुशीलतासे मुझपर कृपाकी थी जिस से निश्चयथा कि तुझे अपनीपुत्री देडालेगा और तेरी मनोकामना सिद्धहोगी परन्तु मंत्री ने उसे बहकाया क्योंकि जब मैं बादशाह के सम्मुखगई तो उसने मुझे अपनेनिकट बुलाय पूंछा तू क्यामांगती है मैंने बिनयकी कि पूर्व्व में मैंने आपकी सेवामें अमुक बिषयके लिये कहाथा सो आपने स्वीकारकर कहाथा कि तीनमहीने के पीछे बदर बदौराका बिवाह तेरे पुत्रसे करदूंगा अब वह अवधि बीतिगई इस कारण मैं सुधि करानेको आईहूं उसने ऐसी एकशर्त्त मुझसे कही जिसे प्रलयतक तू पूरा न करसकेगा फिर उसने वहीशर्त्त बिस्तार पूर्व्वक कहदी उसने कहा हे माता! यह कुछ कठिन नहीं बादशाहने धोखाखाया कि इसीप्रणपर अपनी पुत्रीको देता है यह जो उसने मांगे हैं उस शाहज़ादी की अपेक्षा जो रूप अनूप में अद्वितीय है अतितुच्छ हैं मैंतो नामशर्त्त का सुनकर उड़गयाथा कि कोई कठिन होगी अब देखो क्योंकर यह वस्तु मुझे प्राप्तहोती है अब तुम भोजन पकावो वह यह सुन बाज़ारसे पाक मोललेनेगई अलादीन ने दीपक को उतार रगड़ा तो वही बीर प्रकटभया और नम्रताकी बातें कहने लगा अलादीनने कहा बादशाह अपनीपुत्री देनेको तय्यारहै परन्तु वह पहिले चालीसपात्र उन्हीं फलों के भरेहुये उस बाटिका से जहां से मैं इस दीपकको लायाथा मांगताहै और चालीसदास हब्शी सम आयु वैसे रत्नमयीपात्रों को शिरपर रखलावें और प्रतिहब्शी के आगे एक २ हब्शीसमआयु श्वेतवर्ण महासुन्दर भारी सुनहले वस्त्रपहिने

हुयेहों अब तू जाके यह सब पदार्थ ला कि मैं उसे दरबार उठजाने के पहिले बादशाहके समीप भेजदूं बीरने अलादीनसे कहा बहुत अच्छा अभीलाया तिसके उपरान्त थोड़े काल के पीछे वह सुनहले भाजन रत्नमय समअायु हब्शियों के शीशपरधरे और चालीसदास श्वेत बर्ण महारूपवान् भारीभारी सुनहले स्वच्छबस्त्र पहिरेहुये लाके प्रकट भया और अनेकप्रकार के महासुन्दर बड़े बड़े मोती हीरे और बिबिध भांतिके मणि उन्हीं रत्नों के सदृश जो उसने पाहिले भेंटदिये थे लाया और प्रतिपात्रपर तोड़ह पोशरुपहली और उनपर सुनहली चित्रकारियांथीं पड़ाथा जब वह बीर इतने अनुचरादिक लाया तो उसके छोटे से घरमें वे पात्र धूपपड़ने से ऐसे झलकते दिखाई देते थे मानों पुष्पबाटिका अनेकभांति के रंगबरंगे सुन्दर फूलों से खिलरही है फिर बीर ने अलादीन से कहा जो कुछ और भी आज्ञा हो तो प्रतिपालनकरूं उसने कहा अब तुम्हारा कुछ काम नहीं वह सुन गुप्तहोगया जब अलादीनकी माता बाजारसे आई तो यह चरित्र देख बिस्मितहुई फिर उसने वह भोजन जो बाजारसे लाईथी रखकर चाहा कि अपनेमुखसे बस्त्रउतार बैठे इतनेमें अलादीनने कहा हे माता! अवसर हाथसे जाताहै तुम तुरन्त यहपदार्थ दरबारके उठजानेके पहिलेही बादशाह के निकट पहुँचादो कि बादशाह मेरी प्रबीणता देख मुझे अपनी पुत्री के बिवाहके योग्यजाने उसनेकहा बहुत अच्छा तू यह पात्र यथाक्रमकरदे और हरएकपात्रके आगे सफ़ेदरंगके हब्शीहोलें जब यहपात्र अलादीनके घरसे निकले और पीछे पीछे उसकीमाता चली तो अलादीन द्वारमूंदकर अपने मकानमें बैठरहा कि देखिये इस भेंटके लेनेसे बादशाह मुझे दामाद बनाताहै वा नहीं और हर एक हब्शी ऐसे स्वच्छआभूषण पहिनेथा कि एकएक करोड़रुपयेका माल समझना चाहिये जब वह सब बादशाह के महलकी ओर चले तो पुरबासी क्यादेखतेहैं कि सूधी पंक्ति काले और सफ़ेद दासोंकी जाती है न तो उनकी दृष्टि चित्रितढकनों और न उन सुनहले बस्त्र और रत्नोंपर ठहरती उनके देखनेको हज़ारों तमाशाई चारोंओर से एकत्रहोगये फिर जब वह बादशाहकी सभाके समीप पहुँचे तो हल-

कारोंने यह समाचार जाय बादशाहको सुनाया उसने आज्ञादी कि उनसबको मेरेसम्मुख लाओ वह अस्सीदास दो पंक्ति बांधकर बादशाहके सम्मुखगये जब तख्त के समीप पहुँचे तो अर्धगोलाकारके सदृश बादशाही तख्त के आगे खड़े हुये फिर अनुचरों ने पात्रों परसे तोड़ेपोश उतार लिये और हाथ बांध तख्त के आगे खड़े हुये फिर अलादीन की माता भी बादशाह के सम्मुख आई और धरती चूम विनय करने लगी कि अलादीनने आपको दण्डवत्कर कहलाभेजा है यदियह थोड़ा तोहफ़ाजो आपकेयोग्यनहींपर आशा रखताहूं कि कृपा करके आप इसे स्वीकार कीजिये बादशाह वह सब वस्तु और दास भली भांतिदेख आश्चर्यमें हुआऔर मंत्री से कहा जो मनुष्य ऐसी अलभ्य वस्तुके देनेकी सामर्थ्य रखताहो वह तेरे विचारमें इस योग्य है कि मेरी पुत्रीउसे ब्याहीजावे वा नहीं उसने डाहसे चाहाकि बादशाहका मनउसकी ओरसे हटावेसो बहुतसे उपाय और यत्नकिये परन्तु बादशाह ने उसका कुछ भी कहना न माना और भेंट बहुत पसन्द कर स्वीकार की और अलादीन की माता से कहा तुम जाके अपने पुत्रको यहांलाओ मुझे उसके देखनेकी बहुत लालसाहै और जो मैंने प्रतिज्ञाकी है उसे पूर्णकरूंगा अलादीन की माता यह शुभ समाचार सुन अलादीनके बुलानेको घर दौड़ीगई और उधर बादशाह दरबारियों को बिदा कर अपने महल में गया और अपनी पुत्रीके सेवकों को आज्ञादी कि वह सब पात्र मेरी पुत्रीके मकान में लेजाओ और आप भी उन रत्नों के देखने को वहीं गया और उन अस्सी गुलामोंको अपनी पुत्रीकेघरमें बुलवाय बराबर खड़ा किया शाहज़ादी दरवाज़ेकी दरारसे ऐसे पदार्थ और गुलामों को देख विस्मित हुईजब अलादीनकी माता घरमें पहुँची तो अलादीनसे कहा बेटाधन्यहै तेरी सौगात बादशाहने पसन्दकी और सबने एकमतहोय कहा कि तू योग्य है कि शाहज़ादी बदरबदौर तुझे ब्याही जावे सो बादशाहनेभी तुझे बुलायाहै किअपनी पुत्रीकाहाथ तेरेहाथमें पकड़ा दे अलादीन यहशुभ समाचार सुन महाप्रसन्न हुआ और माता से कहने लगा कुछठहरजामैं अभी चलताहूं यहकह मकानमें गया और

दीपकको निकालरगड़ारगड़तेही वहबीर प्रकटहुआ और उसीबि
से अधीनता करने लगा अलादीनने कहा हे बीर! मैं हम्माम कि
चाहताहूं तू एककपड़ों का जोड़ा बादशाहों के पहिरनेका मेरेडीलं
बराबर तुरन्तला वहबीर इसबातके सुनतेही उसका हाथ पकड़ ए
संगमरमरके हम्माम में जो बहुत सुन्दर और अनेक बिधिके रंगों
चित्रितऔर अलंकृतथा लेगया अलादीन तोशेख़ाने में बस्त्रउता
कर थोड़े गर्मजलमेंगया और भलेप्रकारमलमल नहाया औरभांति
भांतिकी सुगंधें अपनी देहमें मलीं और वहां से निकल उसी तोशे
ख़ानेमें जहां पहिले बस्त्र उतारेथे आया वहां उसने अपने शरीर को
पहिलेसे गोरा और कोमलपाया और मुख उसका चन्द्रमा के सदृश
दमकने लगा और सबशरीरके जोड़ों में चुस्तीऔर चालाकी आगई
और उसस्थानमें एक जोड़ा बहुत भारी रक्खाहुआ देखा सो उसने
बीरकी सहायता से उसे पहिना और अतिबस्त्रको देख आश्चर्य में
हुआ जब पहिन चुकातो बीरने उसे घरमें पहुँचाकर पूछा कुछ और
आवश्यकताहो तो उसकीभी आज्ञादोमैं उसको यहांलेआऊं उसने
कहाएकघोड़ा बहुत सुन्दरला कि वैसा किसी बादशाहकी अश्वशा-
लामें न हो औरउसका साजसामानएककरोड़ रुपयेकाहो इसके बि-
शेष बारह गुलाम मुख्य मेरी सेवाके लिये मेरेदहिने बायें और मेरे
पीछेरहें और बीससेवक मेरेआगे चलें और छःबांदियां अतिस्वच्छ
और उज्ज्वल बस्त्र पहिरेमेरी माताकी सेवाकेलिये और दोलौंड़ियां
औरदो स्वच्छ जोड़े मेरी प्रिया और उसकी माताके लिये और दश
तोड़े अशरफ़ियों के मेरे वास्तेला वह यह आज्ञा पातेही गुप्तहुआ
एकक्षण पीछे वहसब बस्तु लेआया अलादीनने चारतोड़े तो अपनी
माता को दिये कि आवश्यकता पर बादशाह के मकान में काम
आवें और छः तोड़े छः दासों को देकर कहा तुम मेरे घरसे बादशाह
केमकान तक मुट्ठीभरभर अशरफ़ियां भिक्षुकोंको फेंकियो और तीन
बाईं ओर औरतीन दाहिनी ओर रहना और बीस आगे २ चलना
और छःबांदियां अपनी माको देकर कहा कि यह दासियाँ तुम्हारी
सेवाके निमित्तहैं और दो भारी जोड़े दुलहिन और उसकी माताके

लिये देना फिर बीरको बिदाकिया कि अब तुम्हारा कुछ काम नहीं आगे जो कुछ होगा तुमसे कहूंगा यह सुन वह गुप्तहुआ अलादीन ने एकदाससे पहिले अपने आगमनका समाचार बादशाहको कहला भेजा जब वह दास बादशाह के सम्मुखगया और यह पैग़ाम अलादीन के पासलाया कि बादशाह तुम्हारी बाट देखते हैं शीघ्र चलिये तो अलादीन घोड़ेपर सवारहुआ और सेवक उसके दायें बायें और आगे पीछेहुये यद्यपि अलादीन जन्मभर घोड़ेपरसवार न हुआ था तथापि घोड़ेपर सवारोंके सदृश सवार होकर दौड़ाता कुदाता गलियों से निकल बाज़ार में पहुँचा हज़ारोंलोग चहुँओर से देखने को इकट्ठेहुये और वह छः दास अलादीनके दोनों ओर से मुट्ठी भरभर अशरफ़ियां फेंकनेलगे भिक्षुकोंने अलादीनकी उदारता देख आश्चर्य्य किया और परस्पर कहने लगे आज तक कोई मनुष्य ऐसा दाता इस मार्ग से नहीं गया और पुरबासी जिन्होंने अलादीनको आगे फटेहालों से देखाथा इससजधजसे उसे देखकर न पहिचानसके और बिस्मित थे कि यह कौन नवीन मनुष्य इस धूमधाम से जाताहै जिसने बादशाह को ऐसी सौगात भेजी और आपभी ऐसेही वस्त्रपहिरे है कि कभीहमने बादशाहको पहिने नहीं देखा और घोड़ाभी वैसाही बहुमोल्य जिसका साज और सामान भी बहुमोल्य रत्नोंसे जड़ाहुआ है निदान यह समाचार सुनकर कि बादशाह ने अपनी पुत्रीका बिवाह इससे ठहरायाहै अति प्रसन्नहुये और एक मतहोय कहने लगे यह मनुष्य निस्सन्देह शाहज़ादी के बिवाह के योग्यहै फिर जब बादशाहके महलमें पहुँचा और उधरसे वज़ीर आज़म और देशों देशों के सरदार उसकी अगवानी को आये अलादीन ने दरवाज़ेपर पहुँचकर चाहा कि घोड़ेपर से उतरें पर सबोंने उसे उतरनेसे मनाकिया और आगेभी उसेसवार लेगये जब वह बादशाहके निकट पहुँचातो वहांके लोग उसे घोड़ेसे उतार दो पंक्तियों के मध्यमें बादशाहके समीपलेगये बादशाह उसका स्वरूप और आभूषण वस्त्र देख अति प्रसन्न भया अलादीन ने चाहा कि बादशाह के चरणोंपर गिरे परन्तु बादशाहने हाथपकड़ तख़्तपर

उसे चढ़ालिया और अपने और मन्त्रीके मध्यमें उसे बैठाया अला-
दीन बादशाह से कहनेलगा मैं यहींका बासीहूं और बदरबदौर के
मोहसे मेराजीना कठिन है बादशाह ने उसे कण्ठ से लगाय उत्तर
दिया हे पुत्र! क्या तूने मुझे अन्यायी समझा और मेरे बचनपर
बिश्वास नहींरखते और एकक्षण के लिये ऐसाकहतेहो मुझे तुम्हारे
प्राण बहुत प्यारे हैं जैसा कि मैं तुझे सुनताथा वैसाही पाया इतना
कह बादशाह ने सैनको तो चहुँ ओर से ढोल नफीरी और दमामे
बजनेलगे इसके अनन्तर बादशाह अलादीन को अपने महल में
लेगया जहां सब असबाब न्योतेका तैयारथा सो उन दोनोंने इकट्ठे
बैठकर भोजन किया बादशाह क्षण पल पर अलादीन को देखता
और हरतरहकी बातें उससे करतारहा निदान जबतक वह भोजन
करतेरहे तबतक परस्पर बातें करतेरहे बादशाह ने अलादीन को
बाचालतामें बहुत चतुरपाया जब भोजनसे निश्चिन्तहुये तो बाद-
शाहने नगरके क़ाज़ीको बुलाया और निकाहनामा लिखने की आ-
ज्ञादी फिर मन्त्री और अधिष्ठाताओं के सामने अलादीन से वार्त्ता
की अलादीनने ऐसा अच्छा उत्तरदिया कि सबने उसे पसंदकिया
और उसकीबुद्धि और चातुर्य्यता और बाचालतापर सबने धन्य २
कहा जब बिवाह होचुका तो बादशाहने अलादीनसे कहा जो चाहो
तो आजकेदिन इसीमहलमेंरहो कि सब बिवाहकी रीतेंकी जावें उस-
ने बिनयकी कि यह बात मेरीखुशी और इच्छापर रखिये मैं एक ब-
हुत खूबसूरत महल अपनी प्रियाके लिये बनवाया चाहताहूं बाद-
साहने कहा मेरेमहलके सामने बड़ाभारीमैदानहै जहां कहीं तुम चा-
हो अपनामहल बनवाओयहकह बादशाहने हृदयसेउसे लगायबिदा
किया वह घोड़ेपर सवारहो उसीबिधि से अंशरफ़ियां लुटाता हुआ
गया और चारों ओरसे धन्य धन्यका शब्दहुआ जबवह अपनेघोड़े
से उतर घरपहुँचा तो अपनेमकानमें गया और उसदीपकको रगड़ा
तुरन्तही वहबीर प्रकटहुआ और जो वह बचन कहताथा कहे अ-
लादीन ने कहा आजतक जो मैंने कहा तूने किया अब मैं कहता
हूं कि मेरे वास्ते एक महल अमुक मैदान में बादशाह के महल के

सम्मुख जितना अच्छा और जल्दी बनासके कि मेरी प्रिया उसमें आके रहे और जिस पत्थरका तू चाहै उसी पत्थर का बनाना और उसके ऊपर एकबड़ी बारहदरी गुम्मजदार केवल सोने रूपेकी हो और हर तरफ़ छः छः दरवाज़े तय्यारकर और उनमें हीरे लालआदिक जड़ियो परन्तु एकदरवाजह सादारखियो उसमें रत्नमतिजड़ियो प्रयोजन यहहै कि वह बारहदरी ऐसी सुन्दर बने किवैसी संसारभरमें न हो और मैं चाहताहूं कि आगे उसमहल में एक दीवानख़ानाहो और एकबहुतबड़ी स्वच्छपुष्पबाटिका और रसोईघर और ख़ज़ाना जिसमें असंख्यधन रुपये अशरफ़ीहों और उसमें बस्त्र हरऋतु के तय्यारहों और एक अश्वशाला जिसमें अच्छे बहुमोल्य घोड़े और साईस और दारोगासमेत रहें और रसोई में बहुतसे रसोइये जो सब भांतिका भोजन पकासकें रहें और असंख्य अनुचरियां मेरी प्रिया की सेवाकेलिये इसके विशेष रहें जो कुछ मैं इससमय वर्णन करने में भूलगयाहूं वहभी सब शीघ्रही तय्यारकर जब बनाचुके तो मुझसे कहदीजियो जिससमय अलादीन ने यह आज्ञादी उससमय सूर्य्यास्तहोनेवालाथा यहसुन बीरगुप्तहोगया अलादीन रात्रिको उसमहासुन्दरी कोमलाङ्गीकी सुधिमें महाचिन्तित रहा निदान पिछलीरात्रि को कुछ उसकी आंखलगी और प्रभात को जागतेही बीर ने आय कहा हे स्वामी! महल आपका बनगया चलके उसेदेखिये कि तुम्हारी इच्छाके अनुसार बना वा नहीं पुनि वह बीर उसे उठाके क्षणभर में उस नयेमहलमें लेगया अलादीनने उसे अपने बिचारके अनुसार पाया और हरमकान को देखा कि ठौर ठौरमें लाखों और करोड़ों रुपयेकी बस्तु लगी है इसके बिशेष उसमें हरप्रकारके दारोगा और काम करनेवाले स्त्री पुरुष लौंडीआदिक बहुत उत्तम उत्तम बस्त्र पहिने हुये और सब अपना अपना काम करते थे और इसी भांति बहुतसे कोष ख़ज़ानची समेत देखे जिसमें बड़े बड़े सन्दूक़ भरेहुये और सुनहली थैलियां और बिबिध भांतिकी बस्तुओं को यथेच्छ बिद्यमान देखकर अतिप्रसन्न हुआ फिर वह बीर अलादीन को अश्वशालामें लेगया वहां नानाप्रकारके संसारके चुनेहुये घोड़े दारोग़ा

और पालकसमेतथे इसके अनन्तर वह उसे तोशेख़ाने में लेगया जहां प्रतिबस्तु आवश्यकता की बर्तमानथी निदान सब मकान तह-ख़ानोंसे बालाख़ानोंतक अलादीनने देखे बिशेष बारहदरीके जिसमें चौबीस दरवाज़ेथे और उसमें असबाब और सामान सोने चांदी और चित्रके देख अतिप्रसन्न होय बीरसे कहनेलगा जो कुछ मेरा बिचार था उससे मैंने अधिकपाया परन्तु एकबस्तु रहगई है जिसका बर्णन मैंने तुझसे नहीं कियाथा वह यह है कि एक बड़ाक़ालीन स्वच्छमख़-मलका लाकर बादशाहके महलसे इस घरतक बिछे चौड़ान उसका लम्बाई के समान हो कि बद्रबदौर बादशाह से बिदा होती समय उसी क़ालीन पर होके आवे उसने कहा बहुत अच्छा क्षणमात्र में उसेभी लाताहूं अलादीनने थोड़ीदेरमें एकक़ालीन उतनाही लम्बा चौड़ा अपने घर से राजमन्दिरतक ठीक बिछाहुआ देखा फिर उस बीरने उसे नयेमहलसे उसके घर पहुँचायदिया और उस नयेमहल के दरवाज़ों को जो बादशाही महल के सामने थे खोलदिया द्वारपा-लकोंने प्रभातको जब द्वारखोले तो उस मैदान में एक बड़ा बिशाल नया महल तय्यारदेख आश्चर्य्यकिया और अधिकतर उनको इस बातका अचम्भाहुआ कि एकबहुत बड़ा क़ालीन उस नये महल से बादशाहके महल पर्य्यन्त बिछाहुआहै सो उनकेद्वारा सम्पूर्ण महल में यहबात बिख्यातहुई जबमंत्री बादशाहके महलमेंआया तो उसने भी अलादीनका घरदेख अचम्भाकिया और दौड़के यह समाचार बादशाहको दिया कि आपके मन्दिरके सामने बड़ा महल धूमधाम का दृष्टिपड़ता है पुनि कहनेलगा स्वामी यह सब काम जादूका जानपड़ताहै बादशाह ने कहा ऐसा कदाचित् नहीं होगा जैसा तुम कहतेहो यह महल अलादीनका है कलके दिन उसने मुझसे बद्र-बदौर के अर्थ मन्दिर बनाने की आज्ञादी थी उसनें असंख्य धन व्ययकर अतिशीघ्र बनवाया है वह धनके बल प्रतिदिन नयेमहल बनवासक्ता है परन्तु तू ईर्षासे उसके कामोंको जादूका संदेह करताहै यद्यपि दरबारका समय आनपहुँचाथा इसलिये उन्होंने इसबिषय में अधिक बार्त्ता न की और अलादीन अपने घरपहुँच बीरको

बिदा किया और माताको वस्त्र पहिनते देख पूछा अब बादशाहदर-
बारसे निश्चिंत हुआहोगा तुम इन बांदियों के साथ जिनको धीर
लायाथा बादशाहके महलमें लेजाओ और दुलहिनको जाके दोनों
जोड़े और आभूषणदो फिर कहना कि बादशाह भी दुलहिन के
साथ आकरमेरे भवनको पवित्रकरें यहसुन उसने बादशाहज़ादियों
के सदृश स्वच्छ वस्त्र पहिरे और दासियां भी अच्छे अच्छे जोड़े
पहिन और बुरक़ा मुखपरडाल बादशाह के महलको सिधारीं और
अलादीन भी उसीबिधि अशरफ़ियां लुटाता अपने नवीन मन्दिर
कीओर चला जब अलादीन की माता बादशाह के दरवाज़े पर प-
हुँची तो चोपदारों ने आगमन का समाचर बादशाह को पहुँचाया
बादशाह ने सुनतेही बाजों के बजनेकी आज्ञादी सो चहुँओर से
खुशी और उत्सव के बाजे बजने लगे जिनसे नगर भरमें खुशीफै-
लगई व्यापारियोंने अपनी अपनी दूकानें अलंकृत कर बन्दनवार
बांधे और सुन्दर क़ालीन बिछाये और रात्रिको बड़ी रोशनी की
कारीगर और नगरबासी अपना अपना काम छोड़ दुलहिन की
सवारी देखनेको उस मैदानमें जो बादशाही महल और अलादीन
के महल के मध्यमें था एकत्रहुये और वह नवीन बिचित्र भवनदेख
आश्चर्य्य में हुये खोजियोंका सरदार अलादीनकी माता की अग-
वानीकर शाहज़ादीके मकान में लेगया और शाहज़ादीने भी उस
की अगवानीकर उससे मिल भेंटकी फिर अलादीनकी माताने वस्त्र
और आभूषण उसे दिये और अनुचरियोंने शाहज़ादीको पहिनाय
जब वह वस्त्र पहिनचुकी तो बादशाह भी वहीं आया और अला-
दीनकी माताका मुख खुला देख आश्चर्य्य में हुआ और मनमेंकहने
लगा कि मैं जानताथा कि यह वृद्धाहोगी परन्तु यहतो अभी तरुण
और सुन्दर और बुद्धिमान् है निदान सन्ध्या समय दुलहिन बाद-
शाह से बिदाहुई और परस्पर कण्ठलगरोये वह उस दिव्य मन्दिर
को पधारी अलादीन की माता सौबाँदियां लेकर जो बहुत अच्छे
चीर पहिनेथीं पीछे उसके होली जब बादशाही महल के बाहरआई
तो एक ओरसे सौ सरदार और इतनेही खोजी दूसरी ओर बड़ीधूम-

धामसे शाहज़ादी के आगे होलिये इसके पीछे बादशाह के चारसौ दास सुनहरी बन्नातका पटका और रत्नजड़ित बस्त्राभरण और सुन्दर टोपियां पहिनेचले फिर शाहज़ादी और उसके पीछे उनकी अनुचरियां और उनसबके पीछे चारलुख सिपाहियों के हुये जिन के हाथों में प्रकाश के निमित्त एकएक दीपकथा जिसके प्रकाशसे दोनों भवनोंके मध्यमें दिनप्रतीत होताथा उससमूहके मध्यमें शाहज़ादी चन्द्रबदनी उसी स्वच्छ क़ालीनपर हंसचाल से धीरे धीरे पैदलजाती थी और इधर उस बिचित्र मन्दिरकी डोमनियां छत्तों पर शाहज़ादी के साम्हने मुबारकबादी के रागगातीं जिनके ताल और स्वरोंका शब्द दूरदूर पहुँचताथा जब दुलहिन इस सजधज से उसी बिचित्र भवनमें पहुँची तो अलादीन प्रसन्न हो उसकी कुशल पूंछनेचला अलादीन की माता ने उसे पहिचनवाया क्योंकि सैकड़ों बाँदियां अच्छे २ उत्तम उत्तम बस्त्र पहिनेथीं निदान जब दूल्हा और दुलहिन ने परस्पर भेंटकी तो शाहज़ादी अलादीन की सुन्दरताको देख महाप्रसन्न हुई और अलादीन ने अतिनम्र हो उससे कहा अहोमेरे भाग्य तुम ऐसी कोमलाङ्गी शाहज़ादीने मुझ ऐसे अभागे के घरपर कृपाकी और ईश्वरने संसार भरकी सुन्दरता तुझीको दीहै उसने कहा हे शाहज़ादे! मैं अपने पिताके अधीन और उनकी आज्ञापालक थी जो कुछ उन्होंने मेरे वास्ते बिचारा मैंने उसे स्वीकार किया परन्तु अब जो मैंने आपको अपने नेत्रोंसे देखा तो मनसे प्रसन्नहुई अलादीन इस उत्तर से बहुत प्रसन्नहुआ और उसका खड़ारहना उचित न समझा क्यों कि वह इतनी दूरके चलने से थकगई थी इसलिये उसका हाथचूम बारहदरीमें जिसमें असंख्य मोमीबत्तियां काफूरी जलतीं और असंख्य दासियां बिद्यमानथीं लेगया वहां भांति भांति के भोजनों के पात्र बिछे हुये थे और उनपर सुनहली रुपहली रकाबियां स्थान स्थान पर चुनी हुईं और अन्यभाजन सम्पूर्ण सुनहले और सुन्दरबनेहुये उचित उचित स्थानोंपर रक्खे हुयेथे और वह बारहदरी और मकानोंसे बहुत अच्छी बनीहुई और किरोड़ों रुपयेकी बस्तुसे अलंकृत

और शोभायमानथी शाहज़ादी उसे देख अपने पतिसे कहनेलगी कि मैं यह जानतीथी कि मेरे पिताके महलके सदृश संसारमें कोई महल न होगा परन्तु इन मकानों के विशेष कर इस बारहदरी के सामने बादशाहके महल तुच्छ हैं फिर अलादीन ने उसे भोजनपर बैठाया और आप दूसरी ओर उसके सम्मुखहो बैठा और एक ओर उसकीमाता बैठगई शाहज़ादी के बैठतेही सुन्दर गानेवाली उत्तम उत्तम साज बजानेलगीं और स्वर मिलाय मिलाय मीठे शब्द से गान करनेलगीं जब भोजनसे सुचित्तहुये शाहज़ादी कहनेलगी न तो मैंने जन्मभर ऐसे साजसुने और न गाना वह यह न जानतीथी कि यह गायनियां अप्सरा हैं जिन्हें बिचित्र दीपक का बीर पसन्द करकेलायाहै इतने में भोजनकेपात्र झटपट उठगये और एकसमूह नाचनेवालोंका जिनमें स्त्री और पुरुष दोनों थे आया और भांति भांति से नृत्यकिया और बिचित्र नक़लें उस नगरकी रीतिके अनुसारकीं जब इसीतरह आधीरात बीती तो वहांकी रीतिके अनुसार अलादीन और शाहज़ादी दोनों नाचे क्योंकि यह एकचीनमें प्राचीनरीतिथी कि दूलह दुलहिन आपभी नाचते निदान जब यह सब रीतें होचुकीं तो अलादीन अपनी स्त्री को सोनेके मकानमें लेगया वहां लौंड़ियोंने दुलहिनको रात्रिके बस्त्र पहिनाये और उसे छपरखटमें लेगईं और उसी भांति दासियों ने अलादीन के बस्त्र उतार सोने के कपड़े पहिनाये और सब वहां से निकलआईं अलादीन रात्रिभर आनन्दपूर्व्वक सोतारहा दूसरे दिन प्रभातको अलादीन जागा तो बाँदियां स्वच्छ बस्त्र उसकेलिये लाईं यद्यपि वह कपड़ों का जोड़ा पहिलेदिनसे कुछरंगतमें भिन्नथा परन्तु तैयारी उसकी वैसेही थी और एक घोड़ाभी उसकी सवारीके लिये लाया सो अलादीन कपड़े पहिन और बिजुली के सदृश गतिके अश्वपर सवारहो बादशाहके महलकीओरचला एक बड़ासमूह दासोंका उसके साथहुआ बादशाहने पहिले दिनके समान उससे भेंटकी और अपने तख़्त पर अपनेपास उसे बैठाया और भोजन मँगवाया कि अलादीनको खिलावे अलादीनने बिनयकी आजके दिन मुझे न खिलाइये आज

आप मेरे घरमें सिधारिये अब मैं आपके लेनेको आयाहूं कि आप इस किंकरके महलमें मंत्रीआदि समेत चलके भोजन कीजिये बादशाहने स्वीकार किया और सम्बन्ध के कारण इसभांति चला कि दाहिनी ओर उसके अलादीन और बाईंओर राजमंत्री और उनके पीछे सम्पूर्ण सभासद् और सबके आगे खोजियों का सरदार निदान जब नवीन महलमेंगये हरएक मकानके देखने से उनको अधिक आश्चर्य्य होताजाता था यहांतक कि बारहदरी में जहां अलादीन ने उनके बैठने की तय्यारी की थी पहुंचा बादशाह उसकी चित्रकारी और सुन्दरताको देख अधिक प्रसन्नहुआ कि उसमें हीरे और रत्नादिक भीतर बाहर जड़ेथे थोड़ीदेरपीछे बादशाहने मंत्रीसे कहा ऐसा मन्दिर हमारे राज्यभरमें नहीं और ऐसा स्वच्छमहल मैंने अब तक नहींदेखा उसने बिनयकी परसोंतक बिवाह के पहिले इस महल का चिह्नभीनहीं था केवल एकरात्रिमें यह ऐसा बिशाल और सुंदरमहल बनके तय्यारहोगया सो मैंने पहिलेही तय्यारहोनेकी ख़बरदीथी बादशाहनेकहा सत्यहै यहबात मुझे भूलीनहीं परन्तु मैं यह न समझाथा कि ऐसा उत्तम घर बनाहोगा जिसमें संगमर्मर के बदले सुनहली और रुपहली ईंटेंलगी हैं और सुन्दरद्वारों में लोहे और पीतलके बदले अनमोलरत्नादिकजड़े हैं इतने में दरवाज़ोंको देखनेलगा सोउनमें केवल तेईसदरवाज़े जड़ाऊथे और चौबीसवां सादा था इससे अति आश्चर्यमें होकर मंत्रीसे कहनेलगा यद्यपि बारहदरी और इसमंदिर में रत्नजड़ेहैं पर एक दरवाज़ा सादा क्यों रहगया उसनेकहा मालूम होता है कि अलादीन को इसके बनवाने का अवकाश नहीं मिला होगा आगे उसे तय्यार करावेगा सामान इसका उसके पास होगा जबचाहेगा बनवालेगा अलादीन उससमय किसीकामको गयाथा जब उसकामको करके बादशाहके पास आया तो बादशाहने अलादीनसे पूछा तुम्हारी बारहदरी संसारभर में अद्भुत है परन्तु इसका क्या कारण है कि तुमने एक दरवाज़ा सादा रक्खा यातो कारीगर भूलगया वा उसके बनवाने का सामान नहीं निकला अलादीन ने कहा यह कोई कारण उसके सादारहनेका नहीं किन्तु मेरीही आज्ञा

से उसने दरवाज़े को सादारक्खा इसलिये दयाकरके आप बनवा दीजिये बादशाहने कहा जो तुम्हारी यही इच्छाहै तो इसीकी तय्यारी होजावेगी जितने रत्न दरकारहों मैं दूंगा इतना कह उसने आज्ञादी जितने चतुर रत्नपारखी इस नगर में हों सब आवें जब बादशाह बारहदरीसे नीचेउतरा तो अलादीन बादशाहको मकान में लेगया जहां अपनी प्रियाको भोजन करायाथा एकक्षण पीछे वह चंद्रमुखीभी आई बादशाहने उसे बहुत प्रसन्नपाया वहां नानाभांति के सुवर्ण और हीरों के पात्र बिछे थे एकठौर पर बदरबदौरा और अलादीन बादशाह समेत बैठे और दूसरी जगह मन्त्री आदिक सम्पूर्ण अधिष्ठाता बैठकर रुचिपूर्व्वक भोजन करनेलगे जब बादशाह भोजनसे निश्चिंतहुआ तो सब भोजनों की प्रशंसाकर कहने लगा कि मैंने कभी ऐसे स्वादिष्ठ भोजन नहीं चक्खे फिर बारहदरी के चहुँ ओर नाचरंग होनेलगा बादशाह सुनके महाप्रसन्नहुआ जब सबकाम होचुके तो इतने में मन्त्री ने बादशाहसे बिनयकी कि रत्नपारखी आगये हैं बादशाह ने उनको बारहदरी में लेजाके किवाड़ दिखाये और कहनेलगा कि मैं चाहताहूं कि यह दरवाज़ाभी औरों के समान रत्नों से जड़ाजावे तुम सब दरवाज़ों का काम अच्छी तरह देखो और चौबीसवें को भी शीघ्र बनावो उन्होंने उसे भली भांति देख कहा हम आपके प्रताप से बनासक्ते हैं परन्तु ऐसे रत्न हमारे पास नहीं बादशाहने कहा जितने रत्न तुमको आवश्यकहोंगे मैं दूंगा जब मैं अपने महलमें जाऊं तुम मेरे पास आना मैं तुमको बहुतसे रत्नदिखाऊंगा उनमें से अच्छे अच्छे चुनलेना निदान बादशाह अपने भवनमें आया उन रत्नपारखियोंको बुलाय अपने जवाहिरात जो अलादीनकी माताने भेंटदियेथे दिये उनसबने एकमहीने में उन सबको उस दरवाज़ेपर जड़दिया तो भी आधा दरवाज़ा न बना जब अलादीन ने देखा कि सब रत्न मन्त्री और बादशाह के खर्च होगये और वह दरवाज़ा औरों के सदृश तय्यार न होसका तब उन कारीगरों से कहनेलगा यह सबरत्न बादशाह के जो तुमने लगाये हैं उखाड़के लेजावो बादशाह और मन्त्रीको दो वह थोड़ही

काल में उखाड़के लेगये जब अलादीन एकान्त में हुआ तो उसी बिचित्र दीपक को रगड़ा तो बीर प्रकटहुआ और वही अधीनता के बचनकहे अलादीन कहनेलगा हे बीर! मैंने तुझसे आके कहाथा कि चौबीसवें दरवाज़ेको तू सादारखियो सो तूने वैसाही किया था अब मैं तुझे आज्ञा देताहूं कि तू उसद्वारको भी रत्नों से जड़ दे बीर यह सुनतेही गुप्तहोगया और अलादीन भी वहां से कहीं चलागया फिर जो कोई क्षणके पीछे आया तो क्या देखताहै कि वह भी औरों के सदृश बनगया है फिर उन्हीं कारीगरों ने जाय बादशाह से यह सम्पूर्ण समाचार कहसुनाया और वह रत्न जो बादशाह और मन्त्री ने दिये थे उसके सम्मुख लेगये बादशाह यह सुनतेही सवारहुआ और अलादीन के महल में शीघ्रही पहुँचकर घोड़े से उतरा और अलादीनको खबरदिये बिना बारहदरीपर चढ़गया जब अलादीन ने सुना कि बादशाह अकस्मात् आही पहुँचा तो घबरा के चाहा कि उसकी अगवानी करै परन्तु बादशाहने उसे आनेका अवसर न दिया और तुरन्तही उस स्थानपर जहां अलादीन था पहुँच गया और कहनेलगा हे पुत्र! मैं केवल यह हाल पूंछने आयाहूं कि तुमने क्यों इस किवाड़को बनने न दिया और मेरे कारीगरोंको रत्नों समेत क्यों लौटाया इसका क्या कारणहै उसने कहा आपने पहिले उस दर-वाज़ेको सादादेखाथा परन्तु अब वह भी और दरवाज़ोंके सदृश बन गयाहै बादशाहने जाकर देखा कि वह दरवाज़ा औरोंके समान बना हुआहै अन्तको न पहिंचानसका कि सादा किवाड़ कौनसा था तब उसने अतिहर्षसे अलादीन को कण्ठसे लगाया और उसके भाल को चूमा और आश्चर्यितहो यह कहने लगा हे पुत्र! तुम अद्भुत मनुष्यहो तुमने बराबर ऐसे काम किये जो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहरहैं तुम्हारे समान जगत् में कोई मनुष्य न होगा अलादीनने बादशाह की प्रशंसा करने से अपना शिर नीचे झुकालिया और कहनेलगा यह सब आपकी बड़ीकृपाहै जो आपने ऐसा कहा नहीं तो मुझ ऐसे अयोग्य के बनालेनेकी क्या सामर्थ्यथी इतनासुन वह तो चलागया और अपने भवनमें पहुँच राजमन्त्री से यह सबकाम

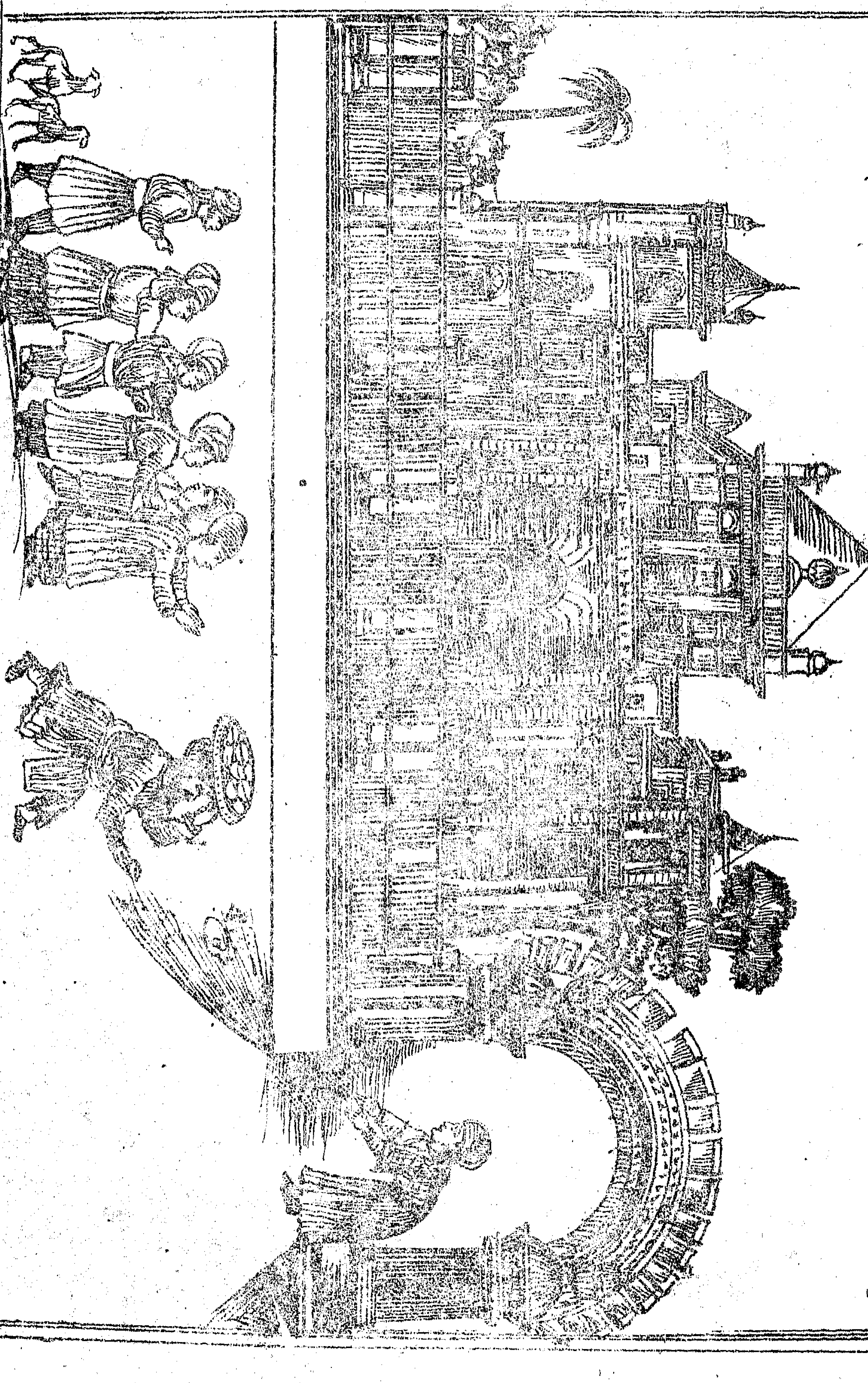
कहे मंत्रीने यह सब काम जादूके समझकर बिनयकी कि यह सब काम जादूके मालूमहोते हैं सो ऐसाही इस दासने पहिले भी बिनय कियाथा बादशाहने कहा तू ईर्षा से कहताहै अभी तू मेरी पुत्री का बिवाह अपने पुत्रकेसाथ होना भूला नहीं मन्त्री समझा कि बादशाह महामूर्ख और धोखेमें है कि इसबिषयमें किसी की बात नहीं मानता फिर कभी इस बिषय में उसने वार्त्ता न की बादशाह बहुधा प्रभात को जागके उस सुन्दर मन्दिर को देखता और प्रसन्न होता और अलादीन ने यह नियम कियाथा कि सप्ताह में एकदिन बाज़ार में जाता और हरतरफ़की सैरकरता कभी कभी मस्जिद में निमाज़ पढ़नेजाता और कभी कभी मन्त्रीकी भेंटकोजाता और कभी अपने बिचित्र भवनमें दरबारकरता और कदापि अमीरों और सरदारों के घरमें जाता और वहभी उसके मन्दिर में आकर भोजन करते और अलादीनने दो दासों को इसकामके लिये नियत किया था कि जब मैं सवारहोकर बाहरजाऊँ तो तुम मार्गमें दोनों ओर से अशरफ़ियां लुटाना इसलिये बड़ासमूह मनुष्यों का उसकी सवारीके चहुँ ओर इकट्ठाहोजाता और बहुतसे लोग उसकी सवारी और धूमधाम के देखनेको आते और जो भिक्षुक और निर्धन शिथिल और निर्बलथे और उसके मन्दिरतक पहुँचनेकी सामर्थ्य न रखतेथे वह सब नगरमें ही रुपयेपाते इसके बिशेष प्रतिसप्ताह में वह एकबेर शिकारको जाता और कभी नगर के बाहर शिकारखेल शीघ्रही चलाआता और कभी नगरसे बहुत दूर निकल जाता और नगरनिवासियों को अपनी उदारता से धनवान् बनादेता उसकी उदारता से पुरबासी उसे आशीर्वाद दियाकरते और ऐसा प्याराजानते कि उसके शिरकी सौगन्दखाते और अलादीन बादशाहको भी अपने से प्रसन्न रखता इन गुणों के बिशेष महापुरुषार्थी था और चाहता था कि इस गुणसे भी बादशाहको ज्ञातकरें दैवयोगसे क्यासुना कि बादशाह किसीनगर के लेनेके लिये सेना इकट्ठी करता है यह सुनतेही अलादीनने बादशाह से कहा इसयुद्धको मेरीमतिपर रखिये और मुझको उसका अधिकार दीजिये बादशाह ने स्वीकार किया अलादीन कुछ सेनासाथ

ले अकस्मात् नगरसे बाहरगया और थोड़ेहीकालमें अपने उपाय और यत्न और थोड़े कटकसे अपने बैरीको परास्तकिया बादशाह यह जयका शुभसमाचार सुन अतिप्रसन्न हुआ और इसकामसे उसकानाम दूरदूरके देशोंमें प्रसिद्धहुआ और अलादीन फिर अपने शहर में लौटआया बहुत बर्षपर्य्यंत इसी भांति उदारता और सत्कर्म्मपूर्व्वक उस नगर में रहा वह अफ्रीकी जादूगर जो चीनदेश से आफ्रिका में पहुँचा था समझाकरताथा कि अलादीन उसगढ़े में क्षुधा तृषा और घबराहटसे निश्चय मरगयाहोगा उन दिनों वह यह बिचारा कि यद्यपि उसका जीतारहना कठिन था तथापि रमल से उसकाहाल मालूम करनाचाहिये सो उसने दालानमें बैठके एक चौकोन सन्दूकचा जिस में रमलकी पुस्तक और उसके बिधानकी बस्तुथी खोला और एक बस्तुको जिसमें रेत भरी हुई थी उठाकर उससे अलादीन के ग्रह देखनेलगा कि अलादीन अमुकस्थानपर मुवाहै वा नहीं बड़ेबिचारसे ज्ञातहुआ कि अलादीन जीताहै और बड़ाधनवानहै उसकाबिवाह चीनकी बादशाहजादी के साथ हुआहै इसबातके मालूमहोतेही उसकामुख डाहकेकारण लालहोगया और मारे क्रोधके रुधिर टपकने लगा और कहने लगा बड़ाखेद है कि वह दुष्ट सूचीकार का छोकरा दीपकके कारण यह आनन्दभोगे और मज़ेलूटे और मेरे जन्मभरका श्रमफल उसेप्राप्तहो अब जाके ऐसा उपाय करना चाहिये कि उससे वह बिचित्र दीपक लेलूं वा वहां उसे मारडालूं दूसरे दिन शीघ्रगामी घोड़े पर चढ़ चीन की ओर चला और मार्ग में सिवाय दमलेने घोड़े के कहीं न ठहरा नगर नगर देश देश लांघता चीनमें पहुँचा और किसी सरायमें उतर एक घर किरायेपर लिया केवल एकही रात्रिमें बिश्रामकर दूसरेदिन अलादीनके ढूंढ़ने को निकला निदान ढूंढ़ते ढूंढ़ते एक समूह में पहुँचा जहां बहुत से मनुष्यबैठे चाह पीतेथे उन्होंने एकपात्रभरके इसे पिलाया वह उनकी बातोंपर ध्यान रखनेलगा वहां सब परस्पर अलादीन का बखान करते थे अफ्रीकी ने अवसर पाय एक मनुष्य से पूछा तुम किस मन्दिरका वर्णनकरतेहो उसने उत्तरदिया तुम बिदेशी

जानपड़तेहो तुमने क्या अलादीनका बिचित्र मंदिर नहीं देखा और न उसका हाल सुना जबसे बदरबदौरा शाहज़ादी का बिवाह उस के साथ हुआ है सबकोई उसे शाहज़ादा कहते हैं उसका बिचित्र भवन संसारभर में अद्भुत है अर्थात् जगत् भरमें ऐसा अपूर्व मन्दिर न होगा तुमने भी कि दूर दूर देशोंसे आतेहो निश्चय है कि ऐसा मन्दिर कहीं न देखा न सुनाहोगा जब तुम उसे देखोगे हमारी बात का बिश्वास मानोगे उसने कहा हां मैं बिदेशीहूं कलके दिन आफ्रिका खण्डसे यहां आयाहूं अब मैं भी उस बिचित्र भवनको देख अपने मनको प्रसन्नकरूंगा आप दयाकरके उसका पता बतादीजिये सो उन्होंने बतादिया जब उस अफ़्रीकी ने उस अपूर्वभवनको चहुँ ओर से भलीभांति देखा तो उसे निश्चय हुआ कि यह भवन उसी बिचित्र दीपके द्वारा अलादीन ने बनवायाहै और यहधन ऐश्वर्य्य उसी के कारण प्राप्तहुआ क्योंकि वह बीर जो उस दीपके अधीनहै प्रति विषयको निस्सन्देह करदेता है और यही बादशाहसे सम्बन्ध का कारणहुआ इतना बिचार उसी सराय में जहां वहउतरा था लौट आया और यह बृत्तान्त बिदित करने लगा कि अलादीन उस बिचित्र दीपक को अपने साथ रखता है या किसी और स्थानपर इसको रमलकी पुस्तक निकाल बिचारनेलगा सो उसे मालूम हुआ कि वह दीपक उसी मन्दिरमें है उसे महाहर्ष हुआ कि अब वह दीपकलेकर अलादीनको दुःखदूंगा और अलादीन अहेरखेलनेको नगरके बाहर आठदिनकेलिये गयाथा केवल तीनहीदिन उसको गयेबीतेथे ये सम्पूर्णबृत्तान्त वहदुष्ट अफ़्रीकी मालूमकर सरायके मालिक के पास गया और उससे उस बिचित्र भवनका बखानकर कहनेलगा मैं चाहताहूं कि जैसे मैं इस महल के देखने से प्रसन्न हुआ उसीभांति से उस मन्दिर के स्वामी को भी देखूं जबतक उसे न देखूंगा तबतक यहांसे जानेकी इच्छा न करूंगा सरायवाले ने कहा यह बात कुछ कठिन नहीं वह मनुष्य बहुधा अपने घर में रहता है अब तीनदिन बीते कि वह आठ दिनके लिये अहेर को गया है निश्चयहै कि वह पांचदिन के पीछे लौट आवेगा उसने इस बिषय में अधिकबार्त्ता न

की ओर उठकर अपने मकानमें आया और मन में कहने लगा यहीसमय काम करनेकाहै इसको हाथसे खोना न चाहिये फिर वहां से उठकर कसेरेकी दूकान पर जो नवीन नवीन दीपक बनाता था गया और कहनेलगा कि तू तांबे के बारह दीपक शीघ्र मुझे बना देसक्ता है उसने कहा आज तो मैं नहीं देसक्ता परन्तु कल के दिन निस्सन्देह जब तू चाहेगा बनादूंगा उसने कहा बहुतअच्छा कलही बनादेना परन्तु उनको उज्ज्वल कररखना और जो मोल उनका मांगेगा सो मैं दूंगा यह कहकर वह अपने भवनको आया और दूसरे दिन बारहदीपक उसीदूकान से मोललै एक उज्ज्वल टोकरी में रख और उस को बग़ल में दाब अलादीन के बिचित्र भवन की ओर चला जब समीप पहुँचा तो बड़ेशब्द से कहनेलगा कि पुरानेदीपकों के बदले नये दिये बेचताहूं नगर की गलियों के बालक उसका शब्दसुन दौड़ेआये और उसको बिक्षिप्त समझ उसके चहुँओर खड़ेहोके हँसने और कोलाहल करनेलगे इसीभांति जो कोई आता जाताथा उसके शब्द को सुन हँसता और कहता कि यह महामूर्ख और बिक्षिप्तहै कि नवीन दीपकों को पुराने दियोंसे बदलता है वह जादूगर न तो बालकों के शब्द से खेदमानता और न पुरबासियों के कहने से उसे ब्यथाहोती अनुक्षण यहीपुकारताथा कि नये दियों को पुराने से बदलताहूं इतने में उसकाशब्द बदरबदौराने जो बारहदरी में बैठीहुई थी सुना परन्तु भलीभांति न समझसकी कि वह क्या कहता है क्योंकि उसके पीछे लड़के भी घोरशब्द मचाते थे निदान शाहज़ादी ने एक लौंड़ी से कहा कि तू जाके इस शब्द और कोलाहलका हाल मालूमकर कि वह कैसाहै थोड़ेही काल में वह दासी वहांसे बारहदरीको हँसतीहुई लौट आई शाहज़ादी ने उससे पूंछा कि हे मूर्खा! तू अपने आप क्यों इतना हँसतीहै उसने कहा कि हे स्वामिनी! एक मूर्खमनुष्य अच्छे२नवीन और उज्ज्वल तांबेके दीपकोंका टोकरा लियेहुये है वह उन्हें बेंचतानहीं किंतु उन को पुरानों से बदलता है और उसके चहुँओर बहुतसे बालक उसकी अज्ञानता और निर्बुद्धिता पर हँसते और उसको मसखरा बनाकर

चित्र अलादीन के जादू के महल का और अफ़्रीकी को चिराग़ लेकर आना ॥



छोड़ते हैं दूसरी लौंड़ीने कहा कि एक बहुत पुराना दिया इसी भवन में कानसपर धरा है जो आप आज्ञा देवें तो हम उसको बदललावें यह वही दीपकथा जिसके कारण अलादीन को यह आनन्द और सुखप्राप्त हुआथा यद्यपि अलादीनने अपने बिचारसे उसकी रक्षा बहुत की थी परन्तु उसे उचितथा कि ऐसी अपूर्व और अद्वितीय बस्तुको अपनी देहके साथ यंत्रके सदृश बांधके रखता और कदापि उसको अपने पाससे अलग न करता परन्तु मनुष्य जो भूलका भरा हुआहै और उसे इसबुरे दिन और ऐसेबैरीकी आशा नथी और शाहज़ादी न तो उसका गुण जानतीथी और न कभी अलादीनने उसकी रक्षाके लिये उससे कुछ कहाथा उस दासी के कहने से उसने हँसकर एक सेवक से कहा वह पुराना दीपक लेजा नवीन उज्ज्वल दीपक से बदलला सेवक ने यह आज्ञापातेही वह दीपक लेजाय आफ्रीकी से कहा कि इस पुराने दीपकके बदले मुझे नयादिया बदलदे वह मायावी उसे देखतेही समझगया कि यह वही विचित्र दीपकहै उसे लेकर अपनी जेबमें रख टोकरेको बढ़ाकर सेवकसे कहने लगा कि जौनसा दीपकचाहे छांटकरलेले वह उनमें से एकउज्ज्वलसा दिया उठाय शाहज़ादी के निकट लेआया जब यह व्यवहार होचुका तो फिर बालकउसीभांति शोरकरनेलगे उसने कुछउनके शब्दपर ध्यान न किया और अलादीन के भवनसे दूर निकलकर चुपहोरहा उसके चुपरहनेसे बालकभी इधरउधर चलेगये जब वह मैदानको जो महलों के मध्यमेंथा नांघचुका और अप्रकट गलियोंसे राहली तो उसने उन शेषदीपकोंको टोकरीसमेत किसी ओर फेंकदिया और जल्दी जल्दी चलने लगा कि नगरके द्वारसे बाहर निकलजाय जब वह नगरसे निकल अपने प्रयोजनके सिद्धकरनेके लिये ठहरा तो अपने घोड़े और बस्तुको जो सरायमेंथी छूटनेका कुछ खेद न किया क्योंकि वह जानताथा कि अब मुझे ऐसी बस्तुमिलीहै कि जिसके द्वारा असंख्यधन प्राप्तहो यहांतक कि आधीरात्रि बीती तब उसने दीपकको अपनी जेबसे निकालकर रगड़ा रगड़तेही वह बीर प्रकट हुआ और कहने लगा मैं आपकी आज्ञापालन में दासवत् हूं और उस मनुष्य

के आधीनहूं कि जिसके पास यह बिचित्र दीपक है आफ़्रीकी ने कहा मैं चाहताहूं कि वह अद्भुत भवन जो तूने और इस दीपकके अन्य अधीन बीरोंने इसनगर में बनाया है उसको सम्पूर्णबस्तु और मनुष्यों समेत और मुझे आफ़्रिका में लेजाय रखदो उसने तुरन्त उसके बिचारानुसार किया अब अवश्यहै कि चीन के बादशाह के खेदका भी बृत्तांत बर्णन करूं दूसरेदिन प्रभात को जब बादशाह निद्रासे जगा और अलादीनके बिचित्र भवन के देखनेको गया तो उसने अथाह मैदानके सिवाय महलका कोई चिह्न न देखा समझा कि मुझे कुछ धोखाहुआहै फिर उसने अपने नेत्रोंको भलेप्रकार मल करदेखा फिरभी उसे निर्जन मैदान दृष्टिपड़ा तब उसने कहा कि बायु साफ़ और आकाशभी निर्म्मलहै और सूर्य्य उदय हुआ चाहते हैं इनसबबातों के होनेपर भी किसलिये मैं नवीन भवनका चिह्न नहीं पाता पुनि उसने भलीभांति चहुँओर देखा परन्तु कुछ उसे दिखाई न दिया बहुतकाल पर्य्यन्त आश्चर्य्य में खड़ेहो उसीमैदानको देखता रहा और मनमें सोचा कि बड़े अचम्भेकी बातहै कि ऐसाबड़ा चमकता अद्भुत भवन जिसको मैं प्रतिदिन सूर्य्यके समान देखताथा अकस्मात् गुप्तहोजाय उसका तो कोई निशान दिखाई नहींदेता यदि धरतीमें धसजाता तो भी कुछ न निशान दीखता और जो गिर पड़ता तोभी पत्थर काष्ठादिक दिखाई देते जब उसे भलीभांति निश्चय हुआ कि वह भवन यहांनहीं तोभी भ्रमके सन्देहसे किसीसे यह हाल न कहा और यह सोचा कि शायद मेरे देखनेमें कुछ फ़र्क़हो इससे बार बार उधरको देखता निदान निराशाहो किसी ओर चलागया और वज़ीरआज़मको बुलवाया वह शीघ्रही सम्मुख आया और बादशाहसे कहने लगा कि हे स्वामिन्! आज आपने अपनी रीति के बिपरीत मुझको इससमय क्योंबुलाया जानपड़ताहै कि कोई नईबातहुई है और क्या आपको मालूम नहींहै कि आजका दिन कौंसलका है सम्पूर्णमंत्री और सभासद् बिद्यमान हैं मुझे अवश्य है कि आपके सिधारने के पहिले व्यवस्थाओं को यथाक्रम लगारक्खूं अब जो कुछ आपको आज्ञादेनी हो कहिये बादशाहने कहा बास्तव में ऐसी

ही बातहुई है जैसी तूने कही है मुझे बता कि अलादीन का भवन क्याहुआ उसने बिनतीकी कि मैं तो आपके भयसे दौड़ाआया किसी और बातका बिचार न किया जानताथा कि वह अपनी जगंह पर होगा बादशाहने मंत्रीसे कहा तू मेरे कोठेपर जाकर उस महल को देख कि दिखाई देताहै या नहीं मंत्रीने बादशाहकी आज्ञानुसार वहां जाकरदेखा तो उसेभी सिवाय निर्जनमैदानके कुछभीदिखाई न दिया जबउसको भलेप्रकार निश्चयहुआ कि अलादीनका भवन कहीं गुप्त होगया और उसकाकुछभी चिह्न नहीं पायाजाता तो बादशाहकेसम्मुख आया बादशाहने उससे पूंछा कि तूने अलादीनके भवनको देखा मन्त्रीने बिनय की कि महाराज इसदासने पहिलेही से बिनती की थी वह सुन्दर मन्दिर जादूके बल से बनाहुआ है परन्तु आपने मेरी बातका कुछ बिचार न किया बादशाह ने महाक्रोधित होकर पूंछा कि वह धूर्त्त और छली कहांहै मैं उसका शीश काटे बिना न रहूंगा मंत्रीने बिनयकी कि वह कईदिनबीते आपसे बिदाहोकर शिकार खेलने गयाहै मैं उसे ढूंढ़ताहूं इतनासुन बादशाहने क्रोधितहो यह आज्ञादी कि हमारे अरदली के तीससवारों को आज्ञा दीजावे कि उस दुष्टको जंजीर में बाँधकर मेरे सम्मुखलावें उसने तुरन्त तीस सवार चुन उनके अधिपति से ताकीदकर कहा कि उसको अच्छी तरह ढूंढ़ियो ऐसा न हो कि किसी ओर को निकलजावे वे लोग अलादीन के शिकार खेलने की ख़बर सुनकर उधरचले और उस को नगर से पांच छःकोसपर कि अहेर खेलकर लौटा आता था पाया प्रधानने उसे प्रणामकर कहा बादशाहने तुम्हें शीघ्रबुलवाया है और हमको आज्ञादी है कि तुम्हारे साथरहें अलादीन को सूचितहुआ कि ये सवार बादशाहकी अरदलीके हैं और मुझे क़ैदकरने को आयेहैं सो वह उसी भांति शिकार खेलतेहुये अनुमान नगर के आधे कोस पर पहुँचा सवारों ने उसे चहुँओर से घेरलिया और प्रधानने आगेबढ़के उससे कहा कि हमें बादशाहने आज्ञादी है कि तुम्हें अपराधियों की तरह जंजीरमें बांधकर बादशाहके निकट ले जावें इस में हमारा कुछ अपराध नहीं है हम को अवश्य है कि

बादशाहकी आज्ञामाने उसने इसबातको सुन अचम्भाकिया कि बाद-शाहने मुझे निर्दोष क़ैदकरनेकी क्यों आज्ञादी है फिर सवारों से पूछनेलगा मैंने न तो कोई अपराध बादशाह का किया और न प्रजाका उन्होंने उत्तरदिया यहतो हम कुछनहीं जानते हमें बादशाह की आज्ञा है कि तुम्हेंबांधकर लेजावें फिर उन्होंने एक बड़ी ज़ंजीर उसके गलेमेंडाल उसे उसमें ऐसा जकड़ा कि उसे हाथहिलाने की शक्ति न रही फिर उसका प्रधान आगे होलिया और उसके पीछे अलादीन पैदल ज़ंजीर में बँधाहुआ जिसका एकसिरा एकसवार के हाथा लेचले जब शहरपनाह के भीतर पहुँचे तो जिस मनुष्य ने उसकी यह दशादेखी कि उसको अपराधियों के सदृश बाँधे हुये लियेजातेहैं उसको इसके मारेजाने का बिश्वास हुआ और जो कि वह सबका प्याराथा और हरएक उसका गुणमानता था इस लिये सब नगरबासी शस्त्र धर धर और बहुधा शस्त्र उठाउठाकर सवारों के पीछे चढ़धाये वे इसधावेको देख भयभीतहुये कि ऐसा न हो जो ये सब अलादीनको हमसे छीनलेजावें इसलिये वे उसे बड़ीरक्षा से बादशाही महलमें लेगये द्वारपालों ने सवारों के प्रवेश होतेही बादशाही महल को मूंदलिया कि कोई झगड़ा उठाने वालों में से भीतर न जानेपावे जब अलादीन को बादशाहके सम्मुख लेगये तो बादशाह ने बधिकको पहिलेही से खड़ाथा आज्ञादी कि इसका अभी शिरकाटडाल बधिक ने अलादीन की कमरसे ज़ंजीर खोल उसको एकठौरपर बैठाया और उसके नेत्रोंमें पट्टीबांधी और तीन बेरखड्गहवापर चलाके केवल बादशाहकी बाटदेखनेलगा कि एकही हाथमें खड्गसे शिर जुदाकरडाले इतने में मन्त्री पहुँचा और क्या देखा कि बहुतसे लोग बाहरकी ओर मैदान में शस्त्रसमेत एकत्र हैं बहुत से दीवारोंपर चढ़ेहुये भीतर कूदना चाहतेहैं जब बादशाहने चाहा कि अलादीन के मारनेके लिये सैनकरे इतनेमें मन्त्री ने बाद-शाहसे बिनयकी कि आपक्या काम करतेहैं इस मनुष्यके मारडालने से आपके बैरियों को महादुःख होगा क्योंकि मन्दिर के चहुँओर हज़ारों लाखों मनुष्य शस्त्रादिक लियेहुये खड़ेहैं बादशाहने कहा

किसीकी सामर्थ्यहै कि इतना साहसकरे उसने कहा आप उस दीवार को जो उस मैदानकी है कि देखिये निदान बादशाह असंख्य मनुष्यों को दीवारपर चढ़े और कूदने को तय्यार देख डरगया और तुरन्त बधिक को आज्ञादी कि तू अपनी तलवार हाथसे फेंकदे और अलादीन के नेत्रोंसे पट्टीखोल उसे छोड़दे और एक प्रधानको आज्ञा दी कि बड़े शब्दसे आवाजकर कि बादशाहने अलादीन का अपराध क्षमाकिया और उसे छोड़दियासो बधिकने अपने स्वामीकी आज्ञानुसार तलवार फेंकदी और प्रधानने भी डौंड़ी पिटाई यह समाचार सुन वे मनुष्य जो दीवारपर चढ़ेथे अलादीन को छुटाहुआ देख और डौंड़ी सुन प्रसन्नहुये और इधर उधर कूदपड़े इसीभांति से सम्पूर्ण नगरमें यह हाल प्रसिद्ध हुआ और सबलोग अपने २ घरको लौटगये जब अलादीन छूटा तो बादशाहके सम्मुख दूरसे धरती चूम बिनती करने लगा हे स्वामिन् ! जैसे आपने मुझे प्राणदान दिये आशाहै किमेरा अपराध भी मुझे बतला दीजिये बादशाहने कहा अय अभागे दुष्ट! अभी तक तुझे तेरा अपराध मालूम नहींहुआ मेरे पास चला आ तो मैं तेरा अपराध तुझे बताऊं अलादीन जब ऊपर चढ़गया तो बादशाह अपने कोठेपर लेगया और कहा इस किवाड़ को खोलकर देख कि तेरा बनवाया हुआ मन्दिर क्या हुआ और चहुँओर भलीभांति देख मुझे बतला कि वह महल कहां चलागया अलादीन ने देखा परन्तु निर्जन मैदान के सिवाय उसे कुछ भी सुझाई न दिया और कुछ न समझसका कि उस बिचित्रमन्दिर को कौन उठालेगया यह तमाशा देख चुपचाप सुन्नहोके उसी स्थानपर खड़ा रहगया बादशाहने कहा तूने देखा अब मुझेबता कि तेरा मन्दिर कहां है और मेरी पुत्री किधर चलीगई अलादीन ने कहा बास्तव में मेरा मन्दिर कि जिस स्थानपर था नहीं है न जानिये कहां चलागया परन्तु इस में मेरा कुछ अपराध नहींहै और न मेरे कारण यह बात हुईहै बादशाह ने कहा मुझे तेरे मन्दिर के खोजाने की कुछ चिन्ता नहीं मुझे अपनी पुत्रीका दुःख है जो तू अपनी कुशल चाहता है तो शीघ्र उसे ला यही न समझ कि अब तू छूटगया उसने कहा मुझे चालीस दिनका

सावकाश दीजिये यदि इस अवधिमें आपकी पुत्रीको ढूंढ़कर लाया तो उत्तम है नहीं तो ईश्वर की सौगन्द है कि मैं अपना आपही शिर काट तख़्तके नीचे डालदूंगा बादशाह ने कहा बहुतअच्छा मैंने तुझे चालीस दिनकी छुट्टीदी अबतू जाके जहांसे पावे वहांसे ढूंढ़ला नहीं तो जहां कहीं तू होगा मैं तुझको पकड़वा सक्काहूं अलादीन बाद-शाहसे बिदाहोकर इस बुरीदशासे शिर नीचे कियेहुये रोताहुआ निक-ला जिस प्रधान और सरदारके आगेसे होकर वह जाता वह अलादीन पर दयाकरके अपना मुख उस से छिपालेता कि उसे अधिक दुःख न हो और जब वह बादशाहके महल से रोता हुआ बाहर निकला आश्चर्य्यमें था कि क्या करूं और कहांजाऊं और किस जगह अप-नी स्त्रीको ढूंढूं निदान इसी चिन्तामें बिक्षिप्तकी नाईं हरएक दरवाज़े पर जाकर घरके मालिकसे पूछता कि तुमने कहीं मेरा बिचित्र मन्दिर देखा है वा उसका समाचार मुझसे कहसक्ते हो इस प्रश्नसे वे सब अलादीन को बिक्षिप्त समझते और कई मनुष्य उसकी बातों पर हँसते और जो उसके साथ प्रीतिरखते थे उसकी दुर्दशा देख कुढ़ते निदान तीन दिनतक वह उस नगरमेंरहा और हरएक गलीकूचे में फिरा करता जो कोई उसे कुछ भिक्षा देता तो उसे वह भोजन करता और कोई उसे उपाय न सूझता जिससे उस महलका ठिकाना लगे निदान बिचारा अलादीन उसी कुदशासे उसी नगर में जहां ऐसी धूमधामसे रहताथा अधिक न ठहरसका और उसी आपत्तिकालमें एकओर बनकी सूधपर निकलगया दिनभरचला निदान एक नदीके कूलपर पहुँचा वहां बिचारा कि अब मेरी प्रिया काहेको मिलेगी इससे उत्तम है कि इसी अथाहजल में डूबमरूं जो इस कष्ट और रात दिन की चिंतासे छूटूं यह बात मनमें ठान नदीकी ओरचला परन्तु अति-धर्म्मिष्ठथा सोचा कि ईश्वरकी कृपासे निराशाहोके अपने प्राणदेना मनुष्यको उचित नहीं उत्तम यह है कि अपने अर्थकी सिद्धिके लिये मैं ईश्वरकी बंदना और प्रार्थना करूं सो ज्योंहीं स्नान करने नदी में गया त्योंहीं उसका चरण फिसला और डूबनेलगा परन्तु उसने एक पहाड़ की शिलाको जो वहांसे अनुमान दोपगके थी पकड़कर

अपने को थांभलिया और उसमें लटकरहा यह बात उसके वास्ते बहुत अच्छीहुई क्योंकि उस छल्लेको जिसे आफ्रीकी मायावीने उसी बिचित्रदीपक के मँगवाने के समय उसको पहिनाया था शिलाके पकड़ने से उसमें रगड़लगी रगड़खातेही वहीबीर जो उसी गढ़ेमें आया था और अलादीन को गढ़े में से निकाला था प्रकट हुआ और कहने लगा तेरी क्या इच्छा है मैं उसके पूर्ण करने के लिये उद्यतहूं तेरी आज्ञाका पालन मुझे अवश्य स्वीकार है किन्तु उस मनुष्य का भी जिसके हाथ में यह छल्ला होगा मैं और दूसरे बीर इसी छल्ले के अधीन हैं अलादीन यह हाल देख कुछ सावधान हुआ और उससे कहा पहिले तू डूबते से मुझेबचा और फिर यह बतला जो मन्दिर मैंने बनवायाथा वह कहां है और उसको कौन लेगयाहै और अब तू उसभवनको उसीस्थानपर लाकर जहां पहिले था स्थापित करसक्ताहै उसबीरने कहा उसमहलका लाना मेराकाम नहीं है वह दीपक के बीरोंका कामहै फिर उसने अलादीनको वहांसे उठाकर नदीके तटपर बैठाय दिया और हाथ बांध उसके सम्मुख हुआ अलादीनने कहा जो यह कार्य्य तुझसे नहीं होसक्ता तो मुझे उस मन्दिरमें जहां कहीं कि हो लेजाकर बदरबदौरके पास छोड़ आसक्ताहै उसने कहा निस्संदेह यह काम मैं करसक्ताहूं इतनाकह उसने अलादीनको कूलपरसे उठाया और तुरन्त आफ्रिकाखण्ड में लेगया और उसी मन्दिरके समीप जो किसी उज्ज्वल नगरके मैदान के मध्य में था पहुँचा दिया यद्यपि बहुत रात्रि बीतनेके कारण अँधियाराथा परन्तु अलादीनने अपने मन्दिर को पहिचानलिया उससमय भवन में सम्पूर्ण मनुष्य सोते थे अलादीन वहांसे उठकर एक वृक्षके नीचे जाबैठा और ईश्वरकी बंदना और प्रार्थना कर कहने लगा उस ईश्वर सर्बोपरिपर निछावरहूं कि जिसने मुझे निराशहोने पर भी फिर अपनी छौतक पहुँचाया और जो पांच छः दिनतक महादुर्दशा में अन्नजल बिना फिरा किया था अब प्रसन्न होकर निद्रा के बेगसे वहीं सोरहा दूसरे दिन प्रभातको जबसूर्य्य उदयहुये तो वह पक्षियों की प्रियबाणी सुनने से जगा और उस वृक्षके नीचे से उठ सघन

रूखोंके नीचे जाबैठा और वहांसे अपने प्यारे मन्दिरको भलीभांति देखने लगा यह बिचारकर कि अब मैं फिर इसी भवन और उसी सुन्दरी से मिलूंगा फिर वहांसे भी उठ अपनी स्त्री के मकानके पास गया और इस आशासे दरवाज़े के भीतर टहलनेलगा कि शाहज़ादी निस्संदेह जगकर मुझे देखेगी टहलती समय उसने बिचारा कि इस महल के यहां आनेका क्या कारण है निदान भली बिधि सोच उसने जाना कि वह दीपक अवश्य खोगया है पुनि अपने को धिक्कारदिया कि मेरेही ध्यान न रखने से वह दीपक खोगया मुझे उचितथा कि उसे क्षणमात्र अपने से न्यारा न करता और जो ख़त्ते के बीरसे सुनाथा कि यह मन्दिर आफ़्रिकामें है इससे उसे मालूम हुआ कि बैर उसी आफ़्रीकी मायावी ने मुझसे लियाहै वह शाहज़ादी बहुत दिनचढ़े जगी क्योंकि रात्रिभर उस दुष्ट आफ़्रीकी से बचने के लिये जगी और चिन्ता और महाशोक में रहती और उस जादूगर के साथ उसने ऐसा उपकार कियाथा कि उस महल में रह न सक्ता निदान शाह-ज़ादी जगकर वस्त्र पहिरनेलगी तो एक बांदीने द्वारमें से अलादीन को देखा और दौड़कर उसने उसी मन्दिर में अलादीन के आनेका समाचार दिया यह सुनतेही उसे अलादीन के पहुँचने का निश्चय हुआ और आप जाकर उसे अपने नेत्रों देखा और दरवाज़े को खोला अलादीन ने किवाड़ खुलने का शब्दसुन शिर अपना ऊपर को उठाया और अपनी प्रियाको पहिंचान अतिसंतुष्टभया शाहज़ा-दीने उसीसमय अपनी लौंड़ियों को आज्ञादी कि मेरे पतिको तुरन्त चोर दरवाज़ेसे मेरे पासलाओ और तुरंतही उस द्वारको जिसमें से अलादीनको देखा था मूंदलिया अलादीन उसी चोर दरवाज़े से जो बारहदरी के पास था अपनी स्त्री के निकट गया जो प्रसन्नता और आनन्द उसको भेंटसे प्राप्त हुआ उसका बर्णन नहीं होसक्ता बहुत कालतक वह कंठसेलग रुदन करतेरहे फिर हरएक ने अपनी अपनी दुर्दशा और परस्पर वियोग का वृत्तान्त जो कुछ कि उनपर बीता था वर्णनकिया फिर एकजगह पर बैठगये अलादीन ने अपनी स्त्री से पूंछा तुम्हें ईश्वर और अपने पिताकी सौगन्द है कि तुमने उस

प्राचीन दीपक को जिसे मैं बारहदरी के कानसपर रक्खाकरताथा क्या किया उसने बिनयकी बड़ाखेदहै कि यह सबदुःख और आपदा जो हमपर पड़ी उसका मैंहीं कारण हुई वह दीपक यहां नहीं है अलादीनने कहा वह अपराध तू अपनी तरफमतकर वह मेराही अपराधहै कि मैंने उसे रक्षासे अपनेसाथ न रक्खा भला जो कुछ हुआ सो हुआ अब उस दीपक के मिलने की युक्तिकरनी चाहिये अबबताओ कि वह दीपक अबकिसके हाथलगाहै उसने अपने पति से सम्पूर्ण बृत्तान्त उस नवीन दीपकसे इसी बिचित्र दीपकके बदलनेका सबिस्तर बर्णन किया और कहनेलगी कि दूसरे दिन मैंने अपनेको इसमन्दिर समेत इसी नगरमें जिसे मैं नहींजानती देखा उसदुष्ट अन्यायी जादूगरके मुखसे मैंने इसका नाम आफ्रिका सुनाहै और उसने ऐसाजादूकिया कि यह भवन चीनसे यहां आया यहसुन अलादीन ने अपनी स्त्रीसे कहा हमें मालूमहुआ कि हम आफ्रिका खण्डमें हैं परन्तु सत्यकहो कि तुम उसधूर्त्त के हाथसे अबतक बची हो व नहीं उसने कहा अबतक ईश्वर ने मुझे बचाया है पुनि अलादीन कहनेलगा वह जादूगर महादुष्ट है समय पाकर उसका बृत्तान्त तुझसे कहूंगा परन्तु यह मुझेबतला कि वह उसदीपकको कहांरखताहै शाहजादी ने कहा वह दीपक बड़ीहोशियारी से वस्त्रमें लपेटकर अपनी छाती में रखताहै एकदिन उसने मेरे साम्हने निकालाथा अलादीनने कहा हे चन्द्रमुखी! तुम इस पूछनेसे अप्रसन्न न होना वह दुष्ट हमदोनों के प्राणोंकाबैरी है और तुम से वह क्योंकर ब्यवहार रखताहै और तुमक्योंकर उससे बातेंकरती हो उसने उत्तरदिया जबसे मैं यहांआईहूं एकबेर रात्रिको मेरे निकट आता है उसने बहुतचाहा कि तेरी प्रीति से मेरामन फेरकर मेरापति वही बने और तुझको बुरीतरहसे यादकरताहै और हज़ारों गालियां दे कोपित होकर ऐसी बातें कहता है जिनको मैं बर्णन नहीं करसक्ती परन्तु जो मुझे अपने देश और पिता और पतिके बियोगमें पाता है इससे कुछ अधिक न कहके चलाजाता है और समझताहै कि अन्तको धीरे धीरे सबको भूल मन बचसे उसकी प्रीति में फँसूंगी

मैं तो अपने मनमें ठानचुकीथी कि यदि मुझसे बलात्कारसे किसी दूसरी बातको इच्छाकरेगा तो मैं तुरन्त देहत्यागदूंगी इतनेदिनों में उसीकेडरसे भयभीतरही परन्तु अबतुझे देख मुझे धैर्य्यहुआ अलादीन ने कहा मुझे बिश्वासथा कि तुम उसके छलमें न आवोगी अब मैं उसके उपायमें जाताहूं मध्याह्न पर्य्यन्त फिर आऊंगा जो तुममुझे दूसरेबस्त्र और अन्य बेषधरेहुये देखना तो आश्चर्य न करना और मैं चोरदरवाज़े से आऊंगा एक मनुष्य उसपर नियत करो कि जब मैं आऊं तुरन्त उसदरवाज़े को खोलदे इसने द्वारपर उस लौंड़ीको उसकार्य्य के लिये नियत किया अलादीन उसी चोर दरवाज़े से निकलकर बाहरगया और चहुंओर देखनेलगा अकस्मात् एक किसानको देखा कि वह भी नगरमेंजानेकी इच्छारखता है अलादीन ने दौड़कर उससे भेंटकी और कुछ उसको देके इस पर राज़ीकिया कि अपने बस्त्रोंको अलादीनके बस्त्रोंसे बदले अलादीन ने एककोने में जाके अपनेचीर उतार उसकिसानको दिये और उसके आप पहिनलिये और एकदूसरे से अलगहोकर अपनी अपनी राहलगे अलादीन उस नगर के बड़े बाज़ार में जहां भांति २ की सम्पूर्ण बस्तु बिकती थीं गया और एकपंसारीकी दूकानपरजिसके पास सब प्रकारकी औषधैंथीं जाकरखड़ाहुआ और दूकानदार से पूंछा अमुकबस्तु तेरेपासहै दूकानदार उसके मलिनबस्त्र देख समझा कि इसकेपास इतनाधन कहांहोगा जो उसका मोल देगा इसलिये उससेकहा बस्तुतो मेरेपासहै परन्तु तुमसे उसका मोल न दिया जावेगा अलादीनने थैलीसे अशरफ़ियां निकाल दिखाईं उसने अशरफ़ियां देखतेही उसीबस्तुकी पुड़ियाबांध अलादीनकोदी और उसका मोलएक अशरफ़ी ली फिर अलादीनने कुछ भोजन मोललेकर खाया और चलदिया और चोर दरवाज़ा खुलापाके भीतरगया और वहां से सीधा अपनी स्त्रीके पासगया और उससे कहने लगा मैंने उस दुष्टके दूरकरनेका एक अच्छा उपाय बिचाररक्खाहै परन्तु अबतुम कुछसाहसकरो जिससे फिर तुम अपने पितासे जाके मिलो और मेरेभी प्राणबचाओ फिर अलादीनने बदरबदौर से कहा तुम आज

दिव्यबस्त्र और आभरण पहिन और सुगन्ध लगा और मुसकरा करबैठो जिससमय वह दुष्ट तुम्हारे पास आवे तो प्रसन्नहोकर उससे इस प्रकारकी बातें करना कि अब मैंने तेरी प्रीति में सबको भुला दिया तेरे सिवाय और किसीकी ओर मेराध्यान नहीं आजकी रात्रि में चाहतीहूं कि हम तुम बैठके एक जगह भोजन प्रीति पूर्व्वक करें और हमदोनों परस्पर बैठकर सुरापानकरें निश्चय है कि वह इस बातको सुन आपही मद्यलेने को नगर में जावेगा और जब वह मद्य लेनेजावे तुम इसबस्तुको जिसे मैं तुम्हें देताहूं एक गिलास में डाल कर और गिलासों से कुछ दूररखना और मद्यपान करतीसमय एक बांदी तुम्हारी सैनके करतेही उसी गिलासमें मद्य भरके तुमको देवे और तुम वह पात्र प्रथम अपने हाथमें ले उसके गिलाससे बदल के देना वह उसको तुम्हारे हाथसे ले प्रसन्नतापूर्व्वक सबका सब पीजावेगा सोपीतेही वह औंधाहोकर गिरपड़ेगा और तुम भी उसके गिलासको उसके हाथसे लेकर दिखानेके वास्ते मुखमें लगालेना उसके पीतेही उसे इतनाचेत न रहेगा कि वह तुम्हारा पीना न पीना मालूमकरे शाहजादी ने अलादीनकी ये बातें सुनकर कहा जैसा कि तुमने मुझसे कहाहै वैसाही करूंगी यहकह अलादीन वहां से चुपके एकमकान में बैठरहा जब रात्रि भई तो वह चोर दरवाजे से बाहरको निकलगया बदरबदौर जबसे अपने पिता और पीतमसे अलगहुईथी न तो उसने चिन्तामें बस्त्र बदले थे और न कभी शृङ्गार कियाथा उन्हीं मलिनबस्त्रों को जिन्हें चीनसे पहिनेथी पहिने रही केवल उसदिन उसने अपने पतिकी आज्ञानुसार बहुतभारी जोड़ा और रत्न पहिन भली भांति अपना बनाव और शृङ्गारकिया और एकपटुका जिसमें भांति भांतिके अतिस्वच्छ हीरे जड़ेथे कमरमें बांधा और एक बहुत भारी बड़े बड़े मोतियोंका हार गले में पहिना और मणि और हीरेजटित सुन्दर कड़े हाथोंमें पहिने जब वह बस्त्र और आभूषण पहिनचुकी तो बारहदरी के भीतर उस अफ्रीकी के आनेकी राह देखनेलगी इतने में अफ्रीकी भी अपने नियत समयपर आया शाहजादी ने उससमयतक उसका अकुशलरूप आंख उठाकर न देखाथा परन्तु

अपनी बांदीसे सुना कि यह वही मनुष्यहै जो नवीन दीपकसे पुराना दीपक बदलकर लेगयाथा जब जादूगर बारहदरी के दरबाज़े में पहुँचा तो शाहज़ादी उसकी अगवानी के लिये मुसकरातीहुई उठी और उसका हाथ पकड़लेआई और अपने निकट उसे बैठाया वह धूर्त्तजादूगर उसके दिव्यरूप और स्वच्छवस्त्र भूषणको देख मोहित होगया उसको इतना साहस न था कि उस चन्द्रमुखीके बराबर बैठे परन्तु शाहज़ादीने उसे बैठायलिया फिर शाहज़ादी उससे कहने लगी आज तुमने मुझे प्रसन्न पायाहै उसका कारण नहीं जानते वह यहहै कि मैं अपने कुटुम्बके बियोगमें बिशेष अपने पति अलादीन और पिताके बिछुड़ने में अहर्निशि चिन्तामें डूबीरहतीथी अब मुझे सन्तोषहुआ और समझी कि अलादीनको मेरे पिताने अवश्य मारडालाहोगा अब उसकेलिये चिन्ताकरनी व्यर्थ है मैं अपने को क्यों मारूं इस निमित्त मैंने अपने चित्तसे यह बिचार निकाल डाला मन बचसे तुमपर मोहितहुई आज मेराचित्त चाहताहै कि तुम हम मिलके भोजनकरें परन्तु जबतक भोजन निकालाजावे और चुनाजावे तबतक थोड़ीसी उत्तममदिरा मेरे वास्ते मँगवावो वह इस बातको सुन अतिआनन्द में हुआ और अपने भाग्यपर प्रसन्नहो कहनेलगा बहुत अच्छी सुरा इसनगर में नहीं मिलती है परन्तु मेरे घरमें सातबर्षकी पुरानी मदिरा रक्खी है यदि आपमुझे आज्ञादेवें तो मैं जाकर उसमें से कई शीशे भरलाऊं शाहज़ादी ने कहा मुझे तुम्हारा जाना असह्यहै किसी औरको भेजकर मँगवालो उसनेकहा बिना मेरे गये वह नहीं आसक्ती न तो वह मन्दिर किसी दूसरे को मालूम है और न किसीको उसकी कुंजी मिलेगी शाहज़ादीने कहा यदि तुम आपही जातेहो तो शीघ्रलौट आना तुम्हारे पीछे मैं भोजन न करूंगी अफ़्रीकीजादूगर उस मन्दिरसे सुरालेनेको दौड़ागया और शाहज़ादीने उसके जाने के पीछे उस बस्तुको जो अलादीनने उसको दीथी एक गिलास में रख उसे एक ओर को धरदिया इतने में अफ़्रीकी स्वच्छ मद्यलेके आ पहुँचा और वह परस्पर सम्मुखहो बैठे शाहज़ादी उत्तम २ और स्वादिष्ठ भोजन अपने हाथसे उठाकर

जादूगरके आगे रखती जातीथी पुनि शाहज़ादी ने उससेकहा जो तुम्हें ललित गान सुननेकी इच्छाहो तो मैं गाऊं परन्तु मैं अकेलीहूं इससे परस्परबार्त्ता करनीही अच्छी है अफ़्रीकी इस बाक्य को सुन अधिक मोहगया और मारे प्रसन्नता के फूलगया फिर बदरबदौर ने एकमद्यका पात्र उस अफ़्रीकीकी यादमें पिया और सुराकी बहुत सी प्रशंसाकर कहनेलगी तुमने जितनी प्रशंसा इस मद्यकी की थी यथार्थ में यह वैसीही है फिर शाहज़ादी ने एकपात्र मद्यका भरकर अफ़्रीकी को दिया उसने वह पानकर कहा मैंने कभी इस आनन्द से मदिरा नहीं पीथी जब वह दोनों भोजनकर तृप्तहुये और तीन गिलास परस्पर पिये तो बदरबदौर ने एकलौंड़ीको सैनदी कि उस पात्रको जिसमें वही बिषरक्खा था मद्यसे भरके मुझे दे और दूसरा अफ़्रीकी को उसने दोनों गिलासभर बिषका गिलास शाहज़ादी को और दूसरा अफ़्रीकी को दिया तब शाहज़ादी ने अफ़्रीकी से कहा हमारे चीनदेश में यह रीति है कि मद्यपानकरती बिरियां वह दोनों मनुष्य जिन्हें परस्पर अत्यन्तप्रीति हो अपना २ पात्र एक दूसरे के हाथ से बदल आपुसकी आरोग्यता के लिये पीते हैं यह कह अपना गिलास अफ़्रीकी को दिया और दूसरे हाथसे उसका गिलास लेलिया अफ़्रीकी को यह भाव अच्छा मालूमहुआ और इस बात से अत्यन्त प्रेम समझकर कहनेलगा हे मृगनयनी, चन्द्रमुखी! जो सुन्दरता और स्नेह और प्रीति तुम्हारे चीनदेश में हैं वह हमारे आफ़्रिका खण्ड में नहीं है आज इस भावको मैंने तुमसे सीखा और तुम्हारा मन बचसे गुणमाना अब मैं कभीं इसको न भूलूंगा शाहज़ादी ने कहा अब तुम इसको पीजाओ इतना कह शाहज़ादी ने अपने गिलासको मुखसे लगाया अभी उसके ओठतक गिलास न पहुँचाथा कि अफ़्रीकी एकही बेर वह गिलास बिषमयी घूट २ कर पीगया और बूंदभर भी उस में न छोड़ी उस हलाहल के पीतेही वह पीठके बल गिरपड़ा जब शाहज़ादीने देखा कि उसकीआंखें फिर गईं और बिना हिले झुले सुन्न सा पड़ा है तब उसने एक लौंड़ी से कहा कि चोरदरवाजे से तुरन्त अलादीन को बुला ला वह लौंड़ी

दौड़ीगई और चोरदरवाज़े को खोल अलादीन को बुलालाई अला-दीन जब बारहदरी पर चढ़गया तो अफ़ीकी को मराहुआ पाया शाहज़ादी ने अपने पति को धन्यवाद दिया और अत्यन्त सन्तुष्ट हुई अलादीनने अपनी स्त्री से कहा एक क्षणमात्र के लिये तुम अपने मकान में जाओ तो मैं तुम्हें इस भवन सहित चीन में लेजाने का उपायकरूं सो शाहज़ादी उस मकान से अपनी लौंड़ियोंसमेत नि-कलके दूसरे मकान में गई अलादीन ने उस मकान के दरवाज़े को मूंद उस अफ़ीकी की लोथ के पास जो बारहदरी में पड़ीहुईथी गया और उसके वस्त्रको खोल वही दीपक निकाल लिया और उसको जैसा कि शाहज़ादी ने कहाथा वस्त्र के कई तहमें लपेटाहुआ पाया अलादीन ने उस दीपक को निकाल रगड़ा तुरन्त वह वीर प्रकट हुआ और उसीभांति उसने अपनी अधीनता प्रकटकी अलादीन ने कहा मैंने तुझे इसलिये बुलायाहै कि इस अद्भुतमन्दिर को इसी क्षण उठालेजाकर चीन में जहां कि पहिले था स्थापित करदे उस वीरने शिर हिलाया अर्थात् यह सैनकी कि बहुत अच्छा फिर गुप्त होगया और एकक्षणमात्र में उसीभवनको आफ़िका से उठालेजाकर चीन में जहांसे कि वह उठालेगया था लेजायरक्खा केवल वह भवन धीरेसे दोबेर हिला एक तो उठाती समय और दूसरे रखती समय अलादीन अतिप्रसन्न होकर कहनेलगा हमारी पूरी खुशी कल होगी और अभी शाहज़ादी ने संध्याका भोजन न किया था और अलादीन भी क्षुधित था इसलिये शाहज़ादी ने अपने सेवकों को आज्ञादी कि शीघ्र वह सब भोजन उस बारहदरी से जो अभीतक वहीं रक्खेहुये थे लाओ फिर वह दोनों भोजन से निश्चिन्तहो और उसी जादूगरकी मदिरालाईहुई बड़े आनन्दसे पीकर अपनी शय्या पर सो रहे चीनका बादशाह उस दिन से कि अलादीन का महल उसकी पुत्री समेत गुम होगया था बहुत बेचैन रहता न तो रात्रि को सोता और न दिन को प्रसन्न रहता और सदैव अपने मकान में जाके अकेला अपनी प्रियपुत्री की सुधिकर रुदन करता और उसी के विचार में रहता जब भोरहुआ और सूर्य्योदय के पश्चात्

पूर्ववत् बादशाह उसी कोठे पर गया और बड़े खेद से उस ओर को जहां अलादीन का बिचित्र भवन था अपने धैर्य्य के लिये देखा तो उसे वह भवन देखपड़ा और उसको भलीभांति देख शीघ्रही वहां से उतर घोड़ेपर सवारहो अलादीनके महलको सिधारा और अलादीननेभी प्रभातको जब वस्त्रादिक पहिन बारहदरी में जानेकी इच्छा की कि अकस्मात् बादशाह को देखा कि अकेला चला आताहै अलादीनने दौड़के बादशाहकी भुजा पकड़ घोड़ेपरसे उतारा बादशाहने अलादीनसे कहा मैं अभी तुझसे कुछ बात न करूंगा जब तक कि मैं अपनी पुत्रीको न देखलूंगा अलादीन उसे जहां कि उसकी पुत्री थी लेगया और उसे बादशाह के आने का हाल बताया वह तुरन्तही वस्त्रपहिने बादशाह के सम्मुख आई बादशाह उसे देख महाहर्षितभया और अपने कण्ठसे लगाके कहने लगा कि अपना समाचार कहो कि तुम क्योंकर यहांसे उस बिचित्र भवन समेत गुप्त होगईथीं उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त कहसुनाया कि मैं इस कष्ट से अपने प्रिय अलादीनके कारणछूटी और मुझे अपने प्राणपतिके बियोगका बड़ादुःख बिशेष इसबातका कि तुमने उसे कोपमें मारडाला होगा इसबातमें वह निर्दोष है पुनि कहने लगी कि मैं उस प्राचीन दीपकके गुणको न जानतीथी हँसी के लिये उसे बदलाथा फिर अलादीनने बारहदरीका दरवाज़ा खोल उस जादूगरकी लोथ बादशाह को दिखाई और कहनेलगा मैंने अपनी प्रतिज्ञानुसार तुम्हारी पुत्री को यहां पहुँचादिया बादशाह यह सम्पूर्ण बृत्तान्तसुन अत्यन्त बिस्मितहुआ और उस दुष्टकी लोथदेखी कि मुख उसका कालाहोगया है और झाग उसके मुखसे निकलेहुये हैं बादशाहने अलादीन से कहा उस क्रोधसे जो मैंने तुमपर चिन्ता में कियाथा उसका कुछ भी बिचार अपने मनमें मत रखना और तुम मेरे पुत्रहो बहुधा माता पिता अपनी सन्तानपर क्रोधकरते हैं फिर उसे अत्यन्त प्रीति से हृदय में लगालिया अलादीनने कहा मुझे उस बातमें कुछ शिकायत नहींहै यह अफ्रीकी जादूगर बड़ादुष्टथा उसी के कारण यह उपाधिमची जब कभी आपको सावकाश होगा तो मैं कुछ और भी उसके

कपट और ईर्षाका बृत्तान्त आपसे कहूंगा ईश्वर ने अपनी परिपूर्ण अनुग्रह से मुझेबचाया बादशाह ने कहा इस कहानीको मैं फिर सुनूंगा अब तुम इसकी लोथ यहां से फेंकवादो अलादीनने एकअपने नौकरको आज्ञादी कि उसकी लोथको दूर निर्जन बनमें फेंक आवो कि पक्षी आदि इसका मांस नोचकर भक्षणकरें इसके अनन्तर बादशाहने हर्षितहो आज्ञादी कि नौबतबजे सो चहुँओर गाने बजाने का शब्दहुआ और दशदिनतक सम्पूर्ण नगर में नाच गाना और अनेकप्रकार के आनन्द और मंगलाचार उनके आगमन के लियेहुये दोबेर परमेश्वरने अलादीन को अफ़्रीकी जादूगरके हाथ से बचाया तीसरी बेर फिर आपदामें पड़ा सो कहते हैं उस अफ़्रीकी जादूगरका एक छोटाभाईथा वह भी जादूकी विद्यामें निपुणथा वह दोनोंभाई कभी एकनगरमें नहींरहते थे यदि एक पूर्व में होता तो दूसरा पश्चिममें परन्तु प्रतिबर्ष में वहदोनों एकबेर अपनी रमलविद्यासे एकदूसरेका हालमालूमकरते कि किस नगरमें हैं और कौनसा काम करते हैं निदान एकबर्षके पश्चात् जादूगर के भाईको अलादीनके हाथ से जादूगरके मारेजानेका हाल मालूमहुआ और उसने चाहा कि अपने बड़ेभाई का बृत्तान्त मालूमकरूं तो उसने एक चौकोन संदूकचा कि वह अपने बड़े भाईके सदृश अपने निकट रक्खा करताथा खोलकर अपने भाईका हाल देखा तो उसे मालूमहुआ कि एक मनुष्यने चीनकी राजधानी में बिष पिलाके उसे मारडाला और वह मनुष्य प्रथममें अत्यन्त निर्द्धनथा परंतु अब वह उस देशके बादशाह की कन्याके साथ ब्याहागयाहै इस हालके मालूमहोतेही वह बहुतरोया और साथही उसके यहभी सोचा कि वह तेरे रोनेसे जी न उठेगा अब इससे उत्तमहै कि उसके मारनेवालेसे चलके बदलालें यह मनमें ठान अपने घोड़ेपर सवारहो चीनदेश को सिधारा बहुतदिनों में बड़े बड़े बन, पहाड़, नदी, नद नांघताहुआ चीनकी सीमा में आन पहुँचा और वहांसे चीनकी राजधानी में पहुँचा और एक घर किराये पर लेके वहां उतर रात्रिको बिश्रामकर प्रभातकोजगा और नगरकी सैर करनेलगा निदान एक पुरबासियों के समूह में पहुँचा और वहांपर

ध्यानधर नगरनिवासियों की वार्त्ता सुननेलगा वह ऐसास्थानथा कि जहां एक समूह बड़ा लुंगाड़ों का एकत्रहो रात्रि दिन वार्त्ता आदिक करता और वे लोग इकट्ठे मिलके भोजन करने को बैठे थे और नगरभर की कहानी और भांति भांति की बातें और हरएक का वृत्तान्त परस्पर कहते उसने सबकुछ सुना उससमय वह सब फ़ातिमा नामक स्त्रीकी प्रशंसा और उसकी प्रकृति आचार और महिमा का वर्णन करते थे यह सुन उसने शोचा कदाचित् इस में मेरा भी अर्थ सिद्धहो फिर उस जादूगरने उस समूह मेंसे एक मनुष्यको किनारेपर लेजाके पूंछा कि वह वृद्धा कैसी है और उसका क्या माहात्म्य और गुण हैं उसने कहा तुमने नहीं देखा और नहीं सुना कि वह इससमय में अद्वितीय है जन्मभर उसने ईश्वरकी बन्दना की वह अपने घरसे सिवाय सोमवार और शुक्रवार के बाहर नहीं निकलती उसने कई करामातें की हैं और करती है उनमें से एक यह है कि जिस किसी को कितनीही ज़ोरसे शिरमें पीड़ाहो तो उसके हाथ के स्पर्श से उसकी पीड़ा जाती रहती है उस जादूगर नें केवल इतनीही बातसुन फिर उससे कुछ न पूंछा और उससे पता पूंछलिया दूसरेदिन उसी वृद्धा का घर पूंछते पूंछते ढूंढ़निकाला और उसको भलीभांति पहिचान वहांसे लौटआया आधीरात्रिको उसीफ़ातिमाके घरकी ओर सिधारा जब उसके घर पहुँचा तो बाहर के दरवाज़े को जो भीतरकी ओर से मुंदाहुआ था किसी यत्नसे खोला और चुपचाप भीतरगया तो क्या देखा कि वही वृद्धा चन्द्रमाकी चांदनी में शय्यापर एक पुरानाबोरिया बिछाये कोठेके आगे सोरही है यह देखउसने एक हाथमें नङ्गीतलवार लेकर दूसरे हाथसे उसे जगाया उस बिचारी ने आंखेंखोल क्यादेखा कि एक मनुष्य खड्गलिये उसकी छातीपर मारना चाहता है परन्तु जब उस जादूगरने देखा कि वह जागी है तो कहनेलगा यदि तू चिल्लाई तो तुरन्त तुझको वधकर डालूंगा जो अपनाभला चाहती है तो उठ जो मैं कहूं सो कर फ़ातिमा कि रात्रि के बस्त्रों से सोतीथी उठके भयभीतहो कांपनेलगी उस दुष्टने उससे कहा डरमत केवल मैं तेरे पहिनने के बस्त्र माँगताहूं उनको मुझे दे और मेरेबस्त्र तू ले उसने तु-

रन्त अपने वस्त्र उसे देडाले उससमायावीने उसे पहिनकर कहा जो चिह्न तेरे मुखपर हैं उन सबको मेरे मुखपर बनादे मैं चाहताहूं कि तुझसा बनजाऊं वह भयभीत थी कुछभी उत्तर न देसकी जादूगर ने कहा तू डर नहीं मेरा अपनासा रूप बनादे मैं तुझे प्राण से न मारूंगा फ़ातिमा को इस बातसे कुछ धैर्य्य हुआ और उसे भीतर ले जाके दीपक जलाया और एक प्रकारका तेल उस दुष्ट के मुखपर लगाके अपनीसी सूरत उसकी बनादी और कहा अब मेरे और तेरेरंग और रूप में कुछभी अन्तर नहीं है फिर उसने अपने शिरका मुडासा उस जादूगरके शीशपर बांधा और उसको बुरक़ा उढ़ाके सब बातें उसे सिखाईं कि इस इस भांति से नगरबासियों से अपने मुख और बदन को छिपाइयो फिर एक दिव्यमाला और एक तसबीह अपने पहिनने की उसके गलेमें पहिनादी और एक दिव्य लकड़ी जिसे वह सदा अपने हाथमें पकड़ नगर में फिराकरती थी दी और उसके हाथ में एक शीशादेकर कहा कि अब तू देख कि मुझमें और तुझमें कुछ अन्तरहै कि नहीं निदान जब उस दुष्टने अपनेको फ़ातिमासा बना हुआपाया तो सौगन्दके खानेपरभी उसका गलाघोंटकर मारडाला क्योंकि जो उसको कटारमारता तो उसके रुधिर से इसभेदके खुलनेका उसे संदेहथा और उसकीलोथ एक कुण्डमें जो उसी कोठे में था डालदी और आप भोरतक वहीं रहा दूसरे दिन प्रातःकाल को यद्यपि वह दिन फ़ातिमा के निकलने का न था यह बिचारकर कि कदाचित् नगरनिवासी कोई उससे प्रश्न करेंगे तो मैं उनको बहानाकर सुगमतासे उत्तर दूंगा सो वहांसे निकल अलादीन के भवन की ओर चला मार्ग में मनुष्य उसे फ़ातिमा जान उसके चहुँ ओर आन आन कर खड़े हुए उस बिचित्र भवन तक बहुत से मनुष्य इकट्ठे होगये कोई उससे शुभ आशीर्वाद की प्रार्थना करता और कोई उसके हाथ चूमता और कोई उसके बस्त्रको चूमता और कोई उस के सम्मुख खड़ा होता कि उनके शिर पर हाथ रखके उनके शिरकी पीड़ाको दूरकरे वह धूर्त्त माला हाथ में लिये कुछ बुड़ बुड़ा रहा था कि मनुष्य जानें कि यह वृद्धा कोई नियमित मन्त्र जपती है यहां तक

कि सबने उस दम्भी को फ़ातिमा समझा और बहुधा वह जादूगर उन मनुष्यों की प्रीति से जो उनके भले बुरे से कुछ प्रयोजन नहीं रखते थे मार्ग में खड़ा होजाता इसी भांति जब वह उसीभवन के समीप पहुँचा फिर तो वहां इतनी भीड़ हुई कि उसतक पहुँचना कठिन होगया और लोग आपस में झगड़ने लगे हरकोई यही चाहताथा कि मैंही फ़ातिमा के पास खड़ाहोऊं और उसके वस्त्रके स्पर्श से दोनोंलोकका आनन्द उठाऊं निदान इतना कोलाहलमचा कि यह शब्द बदरबदौर तक पहुँचा शाहज़ादी ने पूछा यह शोर क्यों होताहै जब कोई पड़ोसियों में से बता न सका तो उसने एक लौंड़ी को आज्ञादी कि तुरन्त जाके इस शब्दका हाल मालूमकर मुझे बता उस लौंड़ीने हाल मालूमकर शाहज़ादी से कहा कि उस वृद्धाके चहुँओर जिसका नाम फ़ातिमाहै असंख्य मनुष्यों की भीड़ है वही शब्द तुम्हारे कानोंतक पहुँचा शाहज़ादी तो पहिले से उस की प्रशंसा सुन उसके दर्शनकी लालसा रखती थी इसलिये एक खोजी को भेज उस फ़ातिमा को बुलवाया जब खोजी उसके निकट गया तो सब पुरबासी खोजीको देख अलग अलग होगये वह जादूगर खोजीको देख प्रसन्नहुआ खोजी ने झुकके दण्डवत् की और कहनेलगा हे वृद्धा! शाहज़ादी को तुम्हारे दर्शनकी बड़ी लालसाहै मेरेसाथ चलो उसने उत्तर दिया शाहज़ादीने मुझपर बड़ी कृपाकी जो मुझे बुलाया मैं चलतीहूं सो वह उसके साथ होके भीतरगया और वहां बारहदरी में जाकर उसे बहुत से आशीर्वाद दिये और संसारकी असत्यता और ईश्वरके आराधन के विषय में उसे बहुत से उपदेशकिये शाहज़ादीने उसकी बातें सुन और उसको ईश्वरको पहुँची हुई समझ उत्तर दिया हे मेरी माता! मैं चाहतीहूं कि तुम यहां बैठके मुझे ईश्वरके पहुँचने का मार्ग बताओ वह शाहज़ादीके निकट बड़ीलज्जासे शिरनीचे कियेहुये बैठगई पुनि बादशाहज़ादी ने उससे कहा हे माता! मुझे अत्यन्त अभिलाषाहै कि तुम मेरे पास रहाकरो कि मैं तुमसे बहुधा वार्त्ता कियाकरूं और मुक्तिकी विधि सीखूं फ़ातिमाने कहा यहांके रहने से मेरा ईश्वरका आराधन न बन

पड़ेगा इसलिये मेरा यहांरहना नहीं होसक्ता शाहज़ादीने कहा जो तुम मेरेपास न रहो तो इसबिचित्र भवनमें बहुतमकान ख़ाली हैं उन मेंसे किसीको पसंदकरके तुम उसमेंरहो वह इसबातसे अतिप्रसन्न हुआ क्योंकि वह यही चाहता था कि किसी भांति मैं अलादीन के घरमें घुसूं तो अवसरपाय शाहज़ादी से छलकरके अपनाकार्य सिद्धकरूं फिर वह शाहज़ादी से कहनेलगा कि मुझे ऐसे स्वच्छ मन्दिर में ऐसी शाहज़ादी की संगति में रहना क्या उचित है मैंने तो संसारका माया मोह त्याग दियाहै परन्तु लाचारी है तुम्हारी आज्ञा भङ्ग नहीं करसक्ती जिसमें आपकी प्रसन्नताहो मुझे अवश्यकरना चाहिये शाहज़ादी उसका यह उत्तर सुन उठखड़ी हुई और कहा मेरेसाथ चलके ख़ाली मकानों को देखो और उनमें से एकको पसंदकरो उस दुष्टने उसकेसाथ मकानों को देखा सो उनमें से एक को पसंदकिया फिर शाहज़ादीने बारहदरी में उसे लाके चाहा कि अपने साथ उसे भोजन कराये उससमय उसजादूगर ने बिचारा कि ऐसा न हो कि भोजन करतीसमय मेरामुख शाहज़ादी देख पहिचान ले कि वह फ़ातिमा नहीं है और भेद मेरा खुलजावे इस निमित्तकहा मैं तो सूखी रोटीके टुकड़े अथवा शुष्कफलों के गूदेके विशेष और कुछभी भोजन नहीं करती अपने मकान में भूखलगने पर खालिया करूंगी शाहज़ादी ने थोड़े से सूखे फल और रोटी के टुकड़े उसके मकान में भिजवादिये और कहनेलगी तुम अपने मकानमें जाके कुछ थोड़ा बहुत खाके मेरेपास चलीआना मैं तुम्हारे आगमनकी बाटदेखती रहूंगी वह दुष्ट उससे बिदा होकर अपने मकानमें आया और एक खोजी को जिसको उसकी सेवा के लिये नियत किया था कहा कि जब शाहज़ादी भोजनकर निश्चिन्तहो तो तुरन्त मुझे समाचार दीजिये सो जब शाहज़ादी भोजनकरचुकी तो उसीसमय उस खोजीने ख़बरकी सो वह शाहज़ादी के सम्मुख गया शाहज़ादी ने कहा मुझे अत्यन्त अभिलाषा है कि ऐसी पवित्र बृद्धा की सेवामें जैसी कि तुमहो रहूं और बार्त्तालाप करूं इस बार्त्तामें बदरबदौरने उस जादूगर से कहा कुछ आँखें खोल इस बारहदरी की

तय्यारी को देखो कि कैसी है फिर शाहज़ादी ने उस बारहदरी की सम्पूर्ण बस्तु और उसके मकानों को उसे दिखाया उसने देखके कहा वास्तव में यह बारहदरी प्रशंसाके योग्य है और उसके सदृश संसारभर में कोई महलनहीं परन्तु एकबस्तु इसमें नहीं यदि वह भी होती तो हज़ार हिस्से यह बारहदरी शोभादेती शाहज़ादी ने कहा मुझे बताओ वहकौनसी बस्तु है उसने कहा यदि इस बारहदरी के मध्यमें रुख़नामक पत्नी का अण्डा लटकायाजाता तो अधिक शोभा होती और चारोंदिशा में अपना दूसरा न रखती शाहज़ादी ने उस से पूंछा रुख कैसा पत्नीहोताहै और उसका अण्डा कहां हाथलगेगा उसने कहा कि रुख़ बड़ापत्नीहै और सिवायपहाड़की चोटी के और कहीं बास नहीं करता जिसने इस भवनको बनाया है उसको यह सुगमतासे मिलसक्ताहै फिर उसजादूगर से बहुकाल पर्य्यन्त बार्त्ता करतीरही परन्तु रुख़ के अण्डे को न भूली और अपने मनमें यह बिचारा कि जब अलादीन शिकार से आवेगा तो मैं अवश्य उस से मांगूंगी अलादीनको अहेर खेलने को गयेहुये छः दिन हुये थे उसके पीछे अफ़्रीकी जादूगर के भाई ने अपने सर्वकार्य्य कर लिये अकस्मात् उसदिन सन्ध्याको अलादीन भी घरपहुँचा उसके आने से वह दुष्ट शाहज़ादी से बिदाहोकर अपने मकान में गया जिस समय अलादीन अपने भवनमें पहुँचा और स्त्रीसे मिला तो उसने उसे और दिनों के सदृश प्रसन्न न पाया तो पूंछा कुशल तो है मेरे पीछे तुम कैसीरहीं तुममलिनरूप क्यों दिखाईदेतीहो ईश्वरके वास्ते मुझसे मत छिपावो अपनेमन का हालकहो जहांतक कि मेरी सामर्थ्य और शक्तिहोगी तहांतक मैं अवश्य करूंगा जब अलादीनने उसकी बहुतसी बिनती की तब शाहज़ादीने कहा मेराभवन मुख्य करके बारहदरी संसार भरमें अद्वितीयहै और भांतिभांतिकी स्वच्छबस्तुओं से अलंकृत है परन्तु एकबस्तु मैं चाहती हूं कि वह भी इसी में हो वह यह है कि बारहदरी के मध्यमें रुख़पत्नी का अण्डा लटकाया जावे तो इसकी अधिकशोभाहो अलादीन ने उत्तरदिया यह तो कुछ बड़ी बातनहीं है मैं बारहदरी में उस अण्डेको लटकवा

दूंगा सो अलादीन अपनी प्रियाको वहीं छोड़ बारहदरीके भीतर आया और उसदीपकको छातीमेंसे निकाला क्योंकि जबसे कि उस ने जादूगरसे दुःखउठायाथा तब से दीपकको अपनीछातीसे अलग न करता निदान उस को रगड़ा तो वहीबीर जो उसके अधीन था आया अलादीननेकहा हे बीर! एक अण्डा रुखपक्षीका बारहदरी में लटकादे जिससे इसकी अधिक शोभाहो मैं तुझे आज्ञादेताहूं कि इस दीपक के दास जिसके कि तू भी अधीन है शीघ्र यह मेरामनो-रथ सिद्धकरें अभीअलादीन अपनी बात पूरी न करचुका था कि वहबीर ऐसाघोर नादकर बोला कि वह सम्पूर्ण मन्दिर कांपनेलगा और अलादीन भी डरकेकांपा फिर बीर ने क्रोधितहोय अलादीन से कहा हे भाग्यहीन! मैं और मेरेसाथियों ने जो कुछ कि तूने कहा तुरन्त किया कभी तेरी आज्ञा भंग न की परन्तु तूने हमारा गुण न माना किन्तुउसके बिपरीत हमको आज्ञादेताहै कि हम अपने स्वामी को तेरे पासलावें और उसको इसबारहदरी में लटकावें अब तू और तेरीस्त्री इस मन्दिरसमेत योग्यहैं कि टुकड़े २ होकर विनाश को प्राप्तहोवें परन्तु तेरा भाग्य अच्छाहै इसलिये कि तूने यहइच्छा अपनी अभिलाषसे नहीं की और यह आज्ञा तेरी कामनासे नहीं हुई मालूमकर कि यह सब उपाधि उस अफ़्रीकी के भाई के कारण हुई जिसे तूने प्राणसे मारा है और वह इस बिचित्र भवन में फ़ा-तिमा नामक बृद्धाके बेष में छिपाहुआ है उसने फ़ातिमा को मार-डाला और उसी दुष्टने तेरी स्त्री को यह उपदेश किया है इसबात से उसका यह प्रयोजनहै कि तू और तेरी स्त्री इसी अद्भुत भवन समेत नष्ट होजावें जो तू अपने को न बचावेगा तो वह तुझ को मारडालेगा चैतन्य रह उसके छल और धूर्त्तता से बचारहियो वह बीर यह सब बातें अलादीन को समझा बुझाके चलागया अलादीन तो फ़ातिमा का माहात्म्य पहिले से जानताथा और यह भी भलीभांति जानताथा कि उसबृद्धा के फूंकने से शिरकी पीड़ा जाती रहती है इससे बहानाकर अपने शिरको लपेट शाहज़ादी के मकानमें गया परन्तु जो बातें कि बीरने उससे कहीथीं शाहज़ादी

से न कहीं और अपनी प्रियाके निकट बैठ अपना शिर पकड़ लिया और कहनेलगा कि मेरे शिरमें पीड़ाहोती है शाहज़ादी ने इस दशा को देख अपने सेवकों को आज्ञादी कि फ़ातिमाको बुलालाओ जब सेवक फ़ातिमाको बुलानेगये तो शाहज़ादी ने उसके बुलाने और भवनमें रखनेका सम्पूर्ण बृत्तान्त अलादीनसे कहदिया इतने में वह जादूगर भी आया अलादीनने उसके आतेही कहा कि हे माता! मैं तुम्हारे दर्शनसे अतिप्रसन्न हुआ और तुम्हारा होना इस स्थान पर मेरेवास्ते अत्यन्त लाभकारी हुआ इससमय मैं शिरकी पीड़ा से अत्यन्त बिकलहूं चाहताहूं कि तुम अपनी कृपासे मेरे शिरकी पीड़ा शान्त करो और फूंको मुझे विश्वास है कि तुम्हारे आशीर्व्वाद और झाड़ने से मेरे शीशकी पीड़ा जातीरहेगी और मैं अच्छा हो-जाऊंगा अलादीन ने इतनी बात कहके अपने शिरको उसके आगे किया वह अनुकर्ण फ़ातिमा भी आगे को बढ़ी और उसी समय उसने अपने हाथको तलवार पर रक्खा जिसको अपने बस्त्रमें छिपाये था अलादीन ने इस बातको मालूमकर चतुरतासे इससे पहिले कि वह उसे मियानसे निकाले पकड़ लिया और उसीके खड्ग को लेकर उसीकी छाती में ऐसा मारा कि उसी क्षण वह दुष्ट धरती पर गिरके नरकबासी हुआ शाहज़ादी यह दशादेख चिल्लाई और अलादीन से कहनेलगी हे मेरे प्रियप्रियतम! तुमने क्यों ऐसी पवित्र वृद्धाको बध किया अलादीन ने कहा हे सुंदरी! मैंने फ़ातिमा को नहीं मारा परन्तु एक महादुष्ट को कि मेरे प्राणका बैरीथा माराहै यह मेरे बध करने को आया था यदि मैं यह उपाय न करता तो वह मुझे कभी जीता न छोड़ता यह एक दुष्टहै जिसे तुम फ़ातिमा समझती थीं फिर उसके मुखको खोलकर दिखाया और कहनेलगा इसी दुष्टने फ़ाति-माका गलाघोंट मारडाला और छलसे फ़ातिमा बना कि अवसर पाय मुझे मारे परन्तु मैंने इसके बिचारको पहिलेसेही जान इसको नरक में भेजा यह दुष्ट उसी जादूगरका भाईथा जो तुमको इसीभवन स-मेत आफ़्रीका में लेगयाथा फिर अलादीनने बीरसे सुनाहुआ सम्पूर्ण बृत्तान्त अपनी प्रिया को कह सुनाया और उसकी लोथ वहां से

फिकवाकर आप ईश्वरकी अनुग्रहसे उनदोनों जादूगरों के छलसे बचारहा कईवर्ष पश्चात् चीनका बादशाह बहुत बृद्ध होकर मर गया यद्यपि सिवाय बद्रबदौर के और कोई उसकी सन्तान न थी इसलिये वही तख़्तपर बैठी और फिर वह राज्य अलादीन के हाथ लगा निदान अलादीन और बद्रबदौर ने बहुत वर्षोंतक चीन के राज्यके सुखभोगे॥

इति श्रीसहस्ररजनीचरित्रे पण्डितप्यारेलालउल्थाकृते तृतीयभागस्सम्पूर्णतामगात् ॥

दोहा ॥

श्रीबिश्वम्भर की कृपा पूरण भो अभिराम ॥
सहसरजनिबरशुभदको तृतियभागसुखधाम १
ईश्वरके सुमिरण करत प्यारेलाल सुजान ॥
देत अशीश सुसज्जनन पढ़िहैं जे बुधिमान २
सर्व मनोरथ सफलहों और होय शुभकाज ॥
धन पुत्रन से सबफलैं और होयँ शुचिसाज ३

# सहस्ररजनीचरित्र ॥

चतुर्थभागप्रारम्भः

दो० द्विरदबदनसुखमासदन बिघनहरण बिश्वेश।
उमानँदनमोदकअदन मंगल करण गणेश ॥
ता पद पद्म मनाय के प्यारेलाल सुजान।
करतसुभागचतुर्थको उलथा अतिसुखदान ॥

## खलीफ़ा हारूंरशीद और बाबा अब्दुल्लाकी कहानी ॥

मलकाशहरज़ादने ईरानके बादशाहसे कहा किसीसमय मनुष्य का चित्त ऐसा प्रसन्न होताहै कि सब मनुष्यों को उसका हर्ष बिदित होजाताहै और इसीभांति पुरुषका मन अत्यन्त प्रसन्न होजाता है जिसका कारण किसी के बिचारमें नहींआता किंतु यदि वही मनुष्य जो अपही चाहे कि अपने चित्तका हाल मालूम करे तो उसे भी एकही बेर मालूम नहीं होता सो एक दिन खलीफ़ा हारूंरशीद आपही कुछ चिंतित होकर अपने महलमें बैठा था कि बादशाह का भेदी वज़ीरजाफ़र आया और खलीफ़ा को चिंतितपाके चुपका हाथबांध खड़ाहोरहा थोड़ी देरपीछे खलीफ़ाने आंखेंखोल उसकी ओर देखा और कुछ बार्त्ता न की फिर उसी बिधि चिन्ता में चुपका बैठरहा मंत्रीने अपने स्वामीको इसदशामें देख बिनयकी हे बाद-शाह ! आशा रखताहूं कि यह दासानुदास आपकी इस चिन्ताका हाल मालूमकरे खलीफ़ा हारूंरशीदने उत्तर दिया तू ने सत्यकहा मुझे कभी कभी चिन्ता आजाती है परन्तु मैं चाहताहूं कि तू कोई ऐसीबात बिचार जिससे यह चिन्ता मेरी निबृत्तहो मंत्रीने बिनय की मुझे मालूमहै कि आपका सदा से यह नियम है कि बहुधा आप बेषबदल अन्यायियों और दुष्टोंके हाल मालूम करने को नगरकी सीमाओं और गलियोंमें घूमाकरतेथे और आज के दिनको आपने इसीकार्य्य के लिये नियत किया है उत्तमहै कि अपने नियमानुसार वही कार्य्य कीजिये जिससे यह आपके मनका सम्पूर्णशोच जातारहे

और प्रजाकेहाल मालूम करनेसे निश्चयहै कि चित्तआपका सन्तुष्ट होजावेगा ख़लीफ़ा ने कहा सत्यहैमैं इस बातको भूल गया था इस समय तूने स्मरण कराया तूभी शीघ्रही अपना बेष बदलकर आ मैं भी बेष बदलताहूं फिर वे दोनों बेष बदलकर बाग़केचोर दरवाज़ेसे निकलकर प्रथम नगर के चहूंओर घूमे तदनन्तर नावपर सवारहो नदीके पारजाकर वहांकी बस्ती देखने लगे उसपारसे फिरती समय पलकी ओर आये वहां एकअन्धे भिक्षुकने ख़लीफ़ासे भिक्षामांगी ख़लीफ़ाने एक अशरफ़ी जेबसे निकाल उसके हाथमें रखदी उस अंधेने ख़लीफ़ाका हाथ पकड़ ठहराया और आशीर्ब्बाद देकर कहनेलगा हे सत्पुरुष उदार! तूने मुझे अशरफ़ी दानदी तू मुझे एकधौलभी मार क्योंकि मैं इसी दण्डके योग्य हूं किन्तु इससे अधिकका, यहकहके उसने ख़लीफ़ाका हाथ छोड़दिया और फिर कपड़ा ख़लीफ़ाका पकड़े कि ऐसा न हो कि बिनामारे धौलके चला जावे ख़लीफ़ा उसकी इस इच्छा से आश्चर्य्य में हुआ और कहा हे भलेमानस! मुझसे इसबातकी आशा मतरख मैं क्योंकर अपने पुण्यका फल नष्टकरूं यह कहके ख़लीफ़ा ने चाहा कि बस्त्र अंधेसे छुड़ाकर चलाजावे उसने इस बातको मालूम कर दामनको जोरसे पकड़ा और कहनेलगा कि मेरी इस ढिठाई को क्षमाकर और जो मैं कहताहूं सो कर अर्थात् एकधौलमेरेशिरपर मार नहीं तोअपनी अशरफ़ी फेरले कि मुझे धौलमारे बिना तेरी अशरफ़ी लेना स्वीकारनहीं क्योंकि जोमैंने ईश्वरसे प्रतिज्ञाकीहै उसे उल्लंघन नहींकर सक्ता जो तू इसकाकारण सुने तो जाने कि मेरा बहुत बड़ा अपराध है ख़लीफ़ाने लाचार हो धीरेसे एकधौल उसके शीशपर मारी वह भिक्षुक बस्त्रछोड़ कर शुभ आशीर्ब्बाद देनेलगा निदान ख़लीफ़ा और वज़ीर दोनों आगे बढ़े और थोड़ी दूरजाय ख़लीफ़ाने वज़ीर से कहा मैं चाहताहूं कि इस भिक्षुकसे इसकी प्रतिज्ञा का कारण पूंछूं तू जा और उससे कह वह मनुष्य जिसने तुझे अशरफ़ी दीथी ख़लीफ़ाहै कल भोरको ख़लीफ़ाकी सभामें जाना वह तुझसे कुछपूंछेगा सो मंत्री ने अंधे भिक्षुकके पासजाकर पहिले एक अशरफ़ी उसेदी

उसने उससेभी धौलमारनेको कहा वज़ीरने धीरेसे उसे धौललगा ख़लीफ़ाकी आज्ञा को सुनाया और ख़लीफ़ा को जा मिला फिर वह दोनोंनगरमें गये तो क्या देखा कि मैदान में एकतरुणमनुष्य दिव्य बस्त्र पहिने घोड़ीपर सवार है और अत्यन्त निर्दयता से घोड़ी को चाबुक और ऐड़ेंमार दुःखदेताहै और उसघोड़ीके दौड़तेदौड़ते मुख में रुधिर और भाग भरगया है ख़लीफ़ा उसके कठोरचित्त और निर्दयताको देख आश्चर्य्य में हुआ और इसबातके मालूम करनेको वहां खड़ा होगया और तमाशाई जो वहां प्रथमसे खड़ेहोके देख रहेथे उनसे घोड़ीके इतनामारने और दौड़ानेका कारणपूंछा उन्हों ने कहा हम हरदिन इसको इसीमैदानमें इसीसमय देखतेहैं किअपनी घोड़ीको इसी बिधि मारमारकर सैकड़ों चक्कर देताहै परन्तु हमें इस का हेतु कुछ मालूम नहीं कि यह मनुष्य कौनहै और इसघोड़ी के मारने और दौड़ाने से उसे क्या प्रयोजनहै ख़लीफ़ाने यह सुन जाफ़रसे कहा मैं आगे जाताहूं तू इस सवारको जाके आज्ञादे कि कल उसी समय जो भिक्षुक के लिये नियत कियाहै मेरीसभामें आवे उसने वही किया फिर वज़ीर और ख़लीफ़ा एकगली में गये जिसमें कई बेर पहिले भी गये थे वहां बड़ाभारी अतिस्वच्छ महल बनाहुआ देख ख़लीफ़ाने उसे सोचा कि यह महल किसी मेरे सेवक का बनाया हुआ होगा तो वज़ीरसे पूंछा यह घर किसका है उसने बिनय की मुझे कुछ इसका बृत्तान्त मालूम नहीं जो आज्ञाहो तो मैं यहांकेबासियों से पूंछूं निदान वज़ीर ने वहांके रहनेवालों से पूंछा कि यह नवीन और सुन्दर महल किसकाहै उन्होंने कहा यह महल ख़्वाजहहसन हब्बाल काहै हब्बाल रस्सी बटनेवाले को कहते हैं यह मनुष्य सदैव रस्सी बटा करता था और रस्सी बेंचकर कठिनतासे अपना निर्बाह करता था परन्तु यह नहीं जानते कि क्योंकर उसे यह बहुतसाद्रब्य प्राप्तहुआ जिससे उसने इतना बिशालमहल बनवायाहै अब वह बड़े आनन्द से अपना कालक्षेप करता है ख़लीफ़ा ने यह बात सुन वज़ीरसे कहा मैं चाहताहूं कि ख़्वाजहहसन हब्बालको देखूं और यह समाचार पूंछूं तू जाके उससे कह कि कल के दिन उसकाल में जो उनदोनों के

लिये नियत किया है मेरी सभा में आवें उसने तुरन्त अपने स्वामी की आज्ञा प्रतिपालन की दूसरेदिन प्रभातको जब ख़लीफ़ा निमाज़ भोरकी पढ़ तख़्तपर सुशोभित हुआ वज़ीर तीनों मनुष्योंको उसके सम्मुख लेगया उन्होंने पहिले तख़्त के पायेको चूमा ख़लीफ़ा ने पहिले उस अन्धे भिक्षुक से पूंछा तेरा क्या नाम है उसने उत्तरदिया मेरा नाम बाबाअब्दुल्ला है ख़लीफ़ाने कहा मैंने कल तुझे एक अशरफ़ीदी तूने उसे लेकर क्यों कहा कि मुझे एकधौल मारो या अपनी अशरफ़ी लौटालो और तूने यह क्यों प्रतिज्ञा की अब मैं चाहता हूं कि इस प्रतिज्ञाका कारण मालूमकरूं अब्दुल्ला ने अपना शिर ख़लीफ़ाके तख़्तके सामने पृथ्वीसे लगाया और उठकर कहने लगा अयशाहनशाह! प्रथममेरी यह बिनय है कि वह ढिठाई जो कलमैंने आपसे कीथी क्षमा हो क्योंकि मैंने आपको न पहिचाना अब मैं बिस्तारपूर्वक इस प्रतिज्ञाका बृत्तान्त आपके सम्मुख वर्णन करता हूं उससे आपको अवश्य बिदित होगा कि मैं निस्सन्देह ऐसे दण्ड के योग्यहूं ॥

## अन्धेबाबाअब्दुल्लाका बृत्तान्त ॥

बाबाअब्दुल्ला ने खलीफ़ा के सम्मुख अपना बृत्तान्त इस बिधि बर्णनकिया कि मेरा उत्पत्तिस्थल बग़दाद नगरहै जब मेरेमाता पिता मरगये तो उनकाद्रव्य मेरे हाथ लगा यद्यपि उतना द्रव्य मेरे जन्म भरको बहुत था परन्तु मैंने उसकी कुछ भी क़दर न की थोड़ेही काल में उसे लम्पटतामें ख़र्चकर डाला जब थोड़ासा बचा तो उस धनके बढ़ने के लिये रात दिन परिश्रम करता यहां तक कि धीरे धीरे मैंने अस्सीऊंट इकट्ठे किये और उन्हें सौदागरों को दिया करता हरबेर में उनऊंटोंके किराये से जो मुझेलाभ होता तो और ऊंटोंको लेकर राज्य में मैं लियेफिरता और आप उनऊंटोंके साथ रहता थोड़ेदिनों के लाभ से मैं समझा कि थोड़ेही काल में मैं महाधनवान् होजाऊंगा सो मैं एकबेर बांसरानगर से जहां ब्यापारियों ने अपनी बस्तु को हिंदुस्तान के लेजाने के इरादे से लादाथा असबाब को पहुँचा के खाली ऊंट लिये हुये बग़दाद को लौटा आता था कि मार्गान्तर में

मैंने अपने ऊंटों को एक वनमें जो बस्तीसे दूरथा चरने के लिये छोड़दिया और सुंदर हरियाली घास देख उनके पांव रस्सीसे बाधदिये इतने में एक योगी जो पैदल बांसरानगरको जाताथा वहां आया और मेरे पास बैठा मैंने उससे पूंछा तुम किधर से आते हो और कहां जाओगे उसयोगी ने भी मुझसे यही प्रश्न किया निदान हमने परस्पर अपने आवागमन का हाल वर्णन किया और भोजन निकाल कर खानेलगे भोजनान्तर में उससे मेरी बहुत वार्त्ताहुई सो योगीने मुझसे कहा एकस्थानपर जो यहांसे बहुत दूर नहीं असंख्य द्रव्यका कोषहै जो तुम अपने अस्सी ऊंटोंको केवल अशरफ़ी और रत्नोंसेही भरलोगे तथापि उसमें से कुछ कम न होगा और वह बेप्रमाण कोष वैसाही भराहुआ दीखेगा इसके सुनतेही मैं अतिप्रसन्नहुआ और उसयोगी का बेषदेखकर यह विचार में न आया कि वह छलसे कहता है इससे उठके उसके गले मिला और कहा हे महात्मा! तुमको संसारी धनकी कुछ परवाह नहीं और जगत् के सबकार्य्यसे तुम कुछकाम नहीं रखते आश्चर्य्य नहीं कि आपको उसद्रव्यका हाल मालूम हो मुझे वह स्थान बताओ तो मैं अस्सी ऊंटोंको वहांसे भरकर आपको श्रमफलमें एकऊंटदूं और मैंजानताहूं कि आपको उसकी कुछ इच्छा नहीं कहनेको यहबात कही परन्तु मन में इसबातका बड़ाखेदहुआ कि अशरफ़ी और रत्नोंका भराहुआ एकऊंट देना उचित नहीं फिर सोचा कि उन्नासीऊंट मेरेवास्ते बहुतहैं निदान कभी मैं पश्चात्ताप करता और कदापि अपने मनको समझाता सो उसयोगीने मुझे कमहिम्मत और लोभी विचारके कहा मैं एक ऊंटके वास्ते द्रव्यनहीं बताता परन्तु एकबातसे कि तुम सब ऊंटोंको लेचलो और हम तुम उसद्रव्यको उनपर लादें उसके आधे मुझको दो और आधे तुमलो चालीस ऊंटोंसे तुम हज़ारोंऊंट पैदाकरसक्के हो मैंने कहा बहुत अच्छा मैं आपकी प्रसन्नता से बाहर नहीं जो आप आज्ञा दें मुझे स्वीकार है और मैंयह सोचा यदि चालीसऊंट द्रव्यके मुझेमिलें तो वह कईपीढ़ियों को काफीहोंगे जो अङ्गीकार नहीं करता तो जन्मभर पछताता रहूंगा निदान उस योगीकी बातमान

उसके साथहुआ और थोड़ीदूर जाकर एक पहाड़ के दरें में पहुँचे जिसका मार्ग अतिसूक्ष्मथा ऊंटों की पंक्तिबांध वहां से लेगये थोड़ी देरके पीछे मार्ग कुछ चौड़ामिला वहां से सब आनन्दपूर्वक निकल गये इसके अनन्तर दो पहाड़ दृष्टिपड़े जिनका वह दरहथा उस मार्ग में ऊँचान निचान बहुतथा कोई मनुष्य वहां न था जो हमको देखता इसलिये निश्शंक होकर वहां पहुँचे योगीने कहा अब यहांपर ऊंटोंको बैठाकर मेरेसाथ आवो मैं ऊंटोंको बैठाकर वहां गया थोड़ी दूरपर जाके योगीने पथरी और लोहा अपने पास से निकाल आग झाड़ी और कुछ थोड़ासा काष्ठ एकत्रकर उसको जलाया और अग्नि प्रबलकर उसपर कोई सुगंधित बस्तु डाली और कोई मंत्रपढ़ा जिसको मैं न समझता था उसके पढ़तेही एक बड़ा धुंधाकार धुवां उठा और ऊपर जाके फटगया और उस धुवेंमें जो दोनों पहाड़ोंके मध्यमें था एकटीला दृष्टिपड़ा और हमारी जगह से वहां तक एक रस्ता बनगया और द्वारखुला हुआ दृष्टिपड़ा उसके भीतर एक बड़ी कन्दरा दिखाईदी जिसमें एकविशाल महल जिन्नों का बनाया हुआ दिखाई दिया मनुष्य ऐसा भवन नहीं बनासके जब उस महल में जाकर देखा तो उसमें असंख्य द्रव्य भराहुआ था मैं अशरफ़ियोंके ढेरको देख ऐसा झपटा जैसे गृध्र अपने शिकारपर झपटता है और जितनाचाहा मैंने ऊंटोंकी खुरजियों में भरलिया वह योगी भी इसी काम में लगा परन्तु वह केवल रत्नोंको उठाकर भरता और मुझसे भी रत्न भरनेको कहता सो मैं भी अशरफ़ियोंको छोड़ बहुतमोल्य रत्न भरनेलगा निदान जब हम बहुतसा धन खुरजियों में भर ऊंटोंपर लादचुके और बाहर निकलने की इच्छाकी तो वह योगी फिर द्वार खोलकर उसीकोषके भीतर जहां हज़ारों बस्तु अतिसुन्दर सुबर्ण की नवीन प्रकारकी रक्खी हुईथीं गया और वहां से एक लकड़ीकी डिबिया जिसमें मल्हमथा एक संदूकचे मेंसे निकाल कर लेली और मुझको दिखाकर उसने अपनी जेबमें रखली फिर वह अग्निमें सुगन्धित बस्तु डालकर मंत्रपढ़नेलगा जिससे वह द्वार मूंदगया और वह टीला जैसा कि पहिले दीखताथा वैसाही दिखलाई देनेलगा फिर

हमने परस्पर उनऊंटोंको आधे २ बांटलिये और उसी सूक्ष्ममार्गमेंसे एक एक ऊंटकरकेनिकाले जब उस पहाड़के दरेसे बाहरनिकले और खुलावन पाके बिदाहुये तब वह योगी बांसरा को सिधारा और मैं बुग़दादको चला और बिदाहोती समय मैंने उस योगीका बहुतसा गुणानुबाद किया क्योंकि उसने करोड़ों का द्रव्य दिलाया निदान जब बिदा भये तो मैं ऊंटलेकर कईपग आगे गयाथा कि शैताननें मेरे मनमें यह बातडाली और लोभसे यह बिचार किया कि यह योगी अकेला है अर्थात् इसके कुटुम्बआदि नहीं और संसारके कामों से भी कुछ प्रयोजन नहीं रखताहै इतने धनके भरेहुये ऊंट क्याकरेगा किन्तु रखवारी करने से उसको ईश्वर की बन्दना में बिघ्न पड़ेगा उत्तमहै कि कुछ ऊंट इससे और लिया चाहिये इसबात को मन में ठान अपने ऊंटों को बैठाया और उनके पांवबांध वहां से उसीयोगी को पुकारताहुआ चला वह मेरा शब्द सुन ठहरगया जब मैं निकट पहुँचा तो उस से कहा कि मैंने आपको बिदा करकेसोचा कि तुम योगीहो जगत् से बिरक्त और ईश्वरकी बन्दना में अहर्निश रत तुम्हारे इसद्रव्यके लेजाने से भजन स्मरण में विघ्नपड़ेगा इसकी रक्षा करनी पड़ेगी इससे उत्तमहै कि वह ऊंट मुझको देडालो उसनेकहा तू सत्य कहता है इतने ऊंटोंके रखने से अवश्य विघ्नहोगा जितने तू चाहे इनमें से लेले मैंने प्रथम से यहबात न बिचारी थी वह ईश्वर परमात्मा तुझे आनन्द रक्खे तूने मुझे बहुत अच्छी बात बताई सो मैं दशऊंट उपयोगी के भाग में से चाहता था कि लेकर आगे को चलूं अकस्मात् फिर मेरे मन में यह आई कि योगी को दशऊंट के देने से कुछ खेद न हुआ दशऊंट और इससे लेने चाहिये फिर उस योगी के समीपजाय मैंने कहा तीसऊंटोंकी रखवारी और सेवा तुमसे बन न पड़ेगी उत्तमहै कि दशऊंट मुझे और दो योगीने कहा अच्छा बाबा जो तेरी यही इच्छाहै तो दश इनमें से और ले बीसऊंट मेरे वास्ते बहुत हैं सो मैं दश ऊंट और योगी के भाग में से लेगया जब उन बीसों को मैंने अपनी पंक्ति में मिलाया तो मुझे लोभ अधिक हुआ और चाहा कि दशऊंट और उससे लूं निदान फिर उसके पासगया

और कहसुन के दशऊंट और किन्तु शेष दशऊंट भी उससे ले दम दिलासा देके चलाआया योगीने सबके सब ऊंट हँसी खुशीसे मुझ को देदिये और वस्त्र झाड़कर उठखड़ा हुआ और चलनेकी इच्छा की परन्तु तृष्णाने मुझे न छोड़ा कि मैं उन ऊंटों को जो सबके सब अशरफ़ी और रत्नों से भरेहुयेथे सन्तोष करके अपनेमहलमें आता सो यह शोच पैदाहुआ कि वह मल्हमकी डिबिया भी योगीसे लेनी चाहिये निदान फिर मैंने ठहरकर उसयोगीसे कहा तुम इसडिबिया को जिसमें मल्हम है अपने पास रखकर क्या करोगे उसे भी मुझे कृपाकरो उसने उसकेदेनेका इन्कारकिया इससे मुझे अधिक अभि-लाषाहुई और मैंने अपने मनमें ठाना कि यदि वह योगी प्रसन्नता से डिबिया देवे तो भला नहीं तो ज़ोर से उससे लेलूंगा उसयोगीने यह बात समझकर डिबिया को अपनी ज़ेबसे निकाला और कहने लगा भाई जो तुम्हारी प्रसन्नता इसी के लेने में है तो लेलो परन्तु तुझे उचितहै कि इस मल्हम का गुण मुझसे पूछले मैंने उस डिबिया में मल्हम भरा देख उसयोगी से कहा जहां तुम ने इतनीकृपा और उपकार मुझसे कियाहै तो इसका गुणभी मुझे बताय दीजिये उस ने कहा इसके गुण अद्भुत और विचित्र हैं जो तुम इसमल्हम में से थोड़ासा अपने बायें नेत्र में लगाओ तो तुम्हें संसार भरके कोष दिखाई देवें और जो इसी मल्हम को अपनी दाहिनी आंखमें लगाओ तो तुम दोनों आंखोंसे अन्धे होजावो मैंने परीक्षा के लिये उस डिबियाको योगी के हाथ में देकर कहा तुम इसकेगुण को भलीभांति जानतेहो अपने हाथ से मल्हम मेरे बायेंनेत्र में लगादो उसयोगी ने मेरी आंखबंदकरके थोड़ासा मल्हम उसडिबियासे लेमेरे पलकपर लगादिया मल्हम के लगातेही मैंने नेत्रखोल चहूंओर देखा कि ह-ज़ारों गड़ेहुये कोष जैसा कि उसयोगीने कहाथा दृष्टि पड़नेलगे तब मैंने दाहिनी आंखको मूंदकर कहा कि अब तुम मेरे इसनेत्रमें भी मल्हम लगादो उसने कहा मैंने तुझे पहिलेही बतादिया कि इस नेत्र में लगाने से तुम अन्धे होजावोगे यद्यपि वह योगी सत्य कहताथा प-रन्तु तृष्णासे मैंने उसके बाक्यको झूठ समझा और बिचारकिया कि

दाहिने नेत्रके लगाने से कुछ अधिक लाभ होगा यह योगी मुझे बहँकाकर चाहता है कि मुझे वह लाभ उठाने न दे मैंने मुस्करा के उससे कहा तुम मुझे धोखा देते हो उसने कहा मुझे ईश्वर की सौगन्द है कि इस मल्हममें यहीगुण है हे प्यारे भाई! मेरे बचन को सचजान मैंने तुझसे झूठ नहींकहा मैंने उसकी बातको न माना और यही जाना कि छलसे मुझको उसके अपूर्ब्ब गुणसे निराश रखताहै यह बिचार मैंने फिर उससे मल्हम लगानेको कहा उसने न माना और कहनेलगा कि मैंने तेरेसाथ भलाई की है अब बुराई क्योंकरूं निश्चयजान कि इस बातसे जन्मभर तू दुःख और कष्ट भोगकरेगा इसवास्ते इस बिचारको छोड़दे और मेरे कहनेको मान जितना जितना वह योगी यहबातें कहताथा उतनाही मेरीलालसा अधिक होतीजाती थी निदान मैंने उसे परमेश्वरकी सौगन्द दिला कर कहा हे प्यारे योगी! जिसबस्तुको मैंने तुझसे मांगा वह सब पाया यह मेरी अन्तकी प्रार्थनाहै दयाकर इस इच्छाकोभी पूर्णकर और जो कुछ मुझपर दुःखहोगा उससे तुम अलगहो तुम्हेंदोष न लगाऊंगा उसने कुछ न माना परन्तु मेरे पीछे पड़ने से लाचारहोकर थोड़ासा वह मल्हम मेरी दाहिनी आंखकी पलकपर लगादिया जब मैंने आंखखोली तो दोनों आंखों से अपनेको अंधापाया अँधियारे के सिवाय कुछभी प्रतीत न हुआ तबसे अबतक मैं अन्धाहूं फिर उस योगीसे मैं बोला हे योगी! जो तू कहताथा सोईहुआ और उसे बहुतसी गालियां देकर कहा कि जो तू मुझे यह द्रब्य न दिलाता तो उत्तमथा अब यह सब द्रब्य और रत्नादिक मेरे किस कामके हैं तू चालीस ऊंट अपने भागके लेजा और मुझे अच्छाकर योगीने उत्तरदिया मेरा इसमें क्याअपराधहै मैंने तेरेसाथ ऐसी भलाई की थीकि कभी किसी ने किसीके साथ न कीहो परन्तु तूने मेरा उपदेश न माना तेरा मलिनमन इतने द्रब्यके पानेसेभी न भरा और तेरी इच्छा न गई और मेरे बचनको न माना छल समझा अब इसका क्या उपायहै अब तू सुजाखा नहीं होसक्ता फिर मैंने अत्यन्त बिनय करके कहा हे योगी! इन अस्सी ऊंटों को जो अशरफी और रत्नोंसे

लदे हैं लेजा मैंने प्रसन्नता से तुम्हे दिये जो तुमसे होसके तो ईश्वर के वास्ते मेरे नेत्रों में ज्योतिदे उस योगी ने फिर मेरी बातका उत्तर न दिया और मुझे उसीदुर्दशा और कष्ट में छोड़कर और वह अस्सीऊंट लेकर बांसरा देशकी ओर चलदिया मैं कितनाही चिल्लाया किया कि मुझे भी इस बनसे अपने साथलेचल मार्ग में किसी दूसरे व्यापारी के साथहोलूंगा परन्तु उसने कुछ भी मेरी बात न सुनी निदान मैं उसयोगी के चलेजाने के पीछे अपने नेत्रों की ज्योति और धनखोकर क्षुधा और तृषा से मरनेलगा संयोग बश दूसरे दिन बांसरा देशके व्यापारियों का समूह जो बुग़दाद को जाताथा उधर निकला मुझ को इस आपत्ति में देख दयासे बुग़दाद में लेआये मुझे इस नगर में सिवाय इसके कि भीखमांगकर अपना कालक्षेप करूं और कुछ न बनपड़ा निदान भीखमांगनी आरम्भ करके यह प्रतिज्ञाकी कि इस तृष्णाका यह दण्ड है कि जो कोई मुझपर दयाकर कुछदे तो उचित है कि एकधौलभी मेरे शिरपर मारे यही कारण था कि मैंने आपसे कल इसबात में तकरारकीथी जब उस बृद्ध अब्दुल्लाने अपना बृत्तांत समाप्त किया तो ख़लीफ़ा ने उससे कहा हे भिक्षुक! तेरा अपराध बड़ाहै ईश्वर उसको क्षमाकरे अब तुमको उचितहै कि अपनी जातिके फ़क़ीरों से अपने अपराध को कहो कि तुमको आशीर्वाद दें अब तुम अपने निर्वाहकी कुछ चिन्ता मतकरो तुम्हारे वास्ते मैं पांच रुपये रोज़ अपने कोषसे नियत किये देताहूं वह जन्मभर तुमको पहुँचे जावेंगे अब तुम नगर में भिक्षा के लिये मत जायाकरो यह सुन उसने ख़लीफ़ाको प्रणाम किया और कहने लगा जो कुछ आपने आज्ञा की मुझे स्वीकार है जब ख़लीफ़ा भिक्षुककी कहानी सुन चुका उस मनुष्य से जो हरदिन अपनी घोड़ीपर सवार होके उसे दौड़ाता और मारताथा उससे उसका नामपूंछा उसने बिनयकी मेरा नाम सीदीनैमान है ख़लीफ़ा ने कहा हमने बहुतसे सवारों को देखा कि वह घोड़ेकी सवारी सीखने के लिये बहुत श्रमकरते हैं बहुधा हमने भी घोड़ेपर सवार हो घोड़ोंको फेराहै परन्तु मैंने किसीको नहीं देखा

कि जैसा तुम अपनी घोड़ी को दौड़ाया करतेहो कल मैंने तुमको देखा कि तुम अपनी घोड़ीको चाबुक और एड़ें अत्यन्त निर्दयता से मारतेथे सब मनुष्योंको यह दशा देख अत्यन्त आश्चर्य था और उन सबसे अधिक मैं आश्चर्यित था यहांतक कि मैंने उस समूह में खड़ेहोकर इसका कारण वहांके मनुष्यों से पूंछा परकोई न बता सका इतनाही मालूम हुआ कि प्रतिदिन इसीभांति तुम अपनी घोड़ीको कष्टदेतेहो अब मैं तुमसे इसका कारण पूंछताहूं उचितहै कि तुम सत्य सत्य कहो सीदीनैमानने जाना कि खलीफ़ा इसहाल के सुनने के लिये बहुत हठ करता है और कहे बिना किसीभांति मेरा छुटकारा नहीं होसक्ता पहिले इस प्रश्नके सुनतेही उसके मुख का वर्ण बदलगया और खलीफ़ा के भयसे चुपचाप चित्रवत् खड़ा रहगया खलीफ़ा ने कहा सीदीनैमान डरमत मुझसे कारण उसका वर्णनकर और इससमय मुझे अपने मित्रों के समान समझ और जिसतरह उनसे बातचीत और अपना हाल कहता है मुझसेभी कह यदि उस भेदके बर्णनमें किसी बातकाभय तुझको हो तो मैंने उसे क्षमाकिया सीदीनैमान को खलीफ़ाके धैर्य्य देनेसे कुछ बोलने का साहस हुआ सो हाथबांध बिनय करनेलगा मैंने इस बिषय में अपनी जाति धर्म्म के विपरीत कोई काम नहीं किया इसलिये मैं आपकी आज्ञानुसार इस बृत्तान्त को बर्णन करताहूं जो कोई अपराध मुझसे हुआहो निस्सन्देह दण्डके योग्यहूं यह तो निस्सन्देहहै कि मैं अपनीघोड़ीको जैसा कि आपने देखा हरदिन घुमायाकरताहूं सो आपको इस घोड़ीपर बड़ीदयाहुई और मेरा इसभांति से चक्कर देना आपको बुरामालूम हुआ यदि आप इसका कारण सुनेंगे तो यह दण्ड इसके लिये आप थोड़ा समझेंगे॥

### सीदीनैमान और उसकी घोड़ी की कहानी॥

हे बादशाह! मेरेमाता पिता अपने मरनेके पीछे इतना धन छोड़ गये थे कि वह मेरे जन्मभरको कम न था और आनन्दपूर्व्वक अपना निर्वाह करता किसीभांति की चिन्ता न रखता एकदिन तरुणावस्थाके बेगमें यह बिचार उपजा कि एकसुन्दर स्त्री से बिवाहकरूं

परन्तु ईश्वर ने न चाहा कि कोई अच्छी स्त्री मुझको मिले जो दुःख सुख की साथी हो संयोगवश मैंने एक स्त्री के साथ जो अतिरूपवान् छबिधामथी बिवाह किया और दूसरेही दिनसे उसकी दुष्टता का हाल मुझपर खुलनेलगा हे स्वामी! आपको भलीभांति मालूम है कि हमारीजाति में बिवाहके पहिले स्त्री के देखनेकी रीति नहीं है और बिवाह के पहिले पति स्त्री के रूप और अन्तःकरणकी अशुद्धताको किसीतरह नहीं कहसक्ता हरतरह उसीस्त्रीके साथ प्रसन्नता पूर्व्वक रहना चाहिये चाहो वह सुशील हो वा अशील निदान पहिले उसके रूप छबि अनूप को देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और ईश्वरका धन्यबाद किया और प्रसन्नता से रात्रिभर उसके साथ सोया बिवाह के दूसरेदिन जब उसके और मेरेलिये भोजन लाया गया मैंने अपनी स्त्रीकोभी बुलवाभेजा बहुत काल में वह भोजन पर आबैठी संयोग से उससमय हम पुलाव भोजन करनेलगे और मैं अपने देशकी रीति के अनुसार चमचे से खानेलगा और वह अपने जेबसे कानकुरेदनी निकाल उससे चावलका एक एक दाना उठाकर खानेलगी यह देख मैं आश्चर्य्य में हुआ और उसका नामलेकर कहा हे सुन्दरी! क्या तुमने भोजनकी यही रीति अपने सम्बन्धियोंसे सीखी है या तुम अन्नके दाने गिनतीहो दूसरे समय भोजन करोगी मैं जानताहूं कि तुमने इतने समय में चावल के दशवीस दानोंसे अधिक न खायेहोंगे जो तुम सरफ़ेकी राह से नहीं खातीहो तो ईश्वर ने मुझे बहुतकुछ दियाहै तुम उसका कुछ बिचार मतकरो हे सुन्दरी! जो भोजन करनेकी रीति है और जिस तरहसे मैं खाताहूं भोजनकरो परन्तु उसने उत्तर न दिया और उसीप्रकार पात्र में से एक एक दाना उठाकर खानेलगी किंतु मेरे खिजाने के लिये एक २ दानाभी देरमें उठाकर खानेलगी जब शीरमाल और बाक़रखानी खानेलगे तो उसने थोड़ासा रोटी का छिलका तोड़कर बड़े नखरेसे अपने मुखमेंडाला निदान इतना खाया कि उतने भोजन से चिड़ियाभी तृप्त न हो मैं उसकी हठसे अतिआश्चर्य्यमें हुआ और बिचारा कि शायद इसे पुरुषके साथ भोजन करते लज्जाआती हो

चित्र क़बरिस्तान में स्त्री का जंगली समूह के साथ मुरदे का मांस खाते हुये और सीदी नैमान का गुप्त देखना.



आगे मेरेसाथ खायाकरेगी और यहभी सोचा कि कदाचित् वह भोजन करचुकीहो इसलिये इस समय उसे रुचि नहीं है अथवा यह समझा कि उसको अकेले खानेका अभ्यास है निदान इनसबबातों को बिचार मैंने उससे कुछ न कहा और भोजन करके मैदानमें घूमने कोगया उसके खानेका सोच कुछ मेरेमनमें न रहा दूसरे समय जब भोजनकरनेका समय आया तो उसने उसीतरह खाया कि जैसा पहिले भोजन कियाथा किन्तु हरदिन उसीभांति भोजन करती मुझे उसकी यह दशादेख अधिक अचम्भाहुआ कि यह स्त्री बिना भोजन क्योंकर जीती है यहांतक एकरात्रिको वह मुझे अपने बिचारमें सोया हुआ जान मेरेपाससे चुपके उठी पर उस समय मैं जगता था क्या देखा कि वह बड़ी सावधानी से उठती है कि मुझे उसका उठना जान न पड़े मैं आश्चर्य्य में हुआ कि यह इससमय क्यों अपना आराम छोड़ मेरे पाससे उठी मैंने चाहा कि इसके हालको मालूमकरूं फिर और सोताबनके खर्राटे लेनेलगा इतने में वह बस्त्रपहिन चुपकेसे बाहरको चली मैंभी शीघ्र अपनी शय्यापरसे उठ बस्त्रों को कांधेपर डाल उसके पीछे चला और घरकी खिड़की से देखनेलगा कि वह किधरको जाती है वह आगेबढ़के दरवाज़े को जो गलीकी ओर था खोलकर बाहरगई मैंभी उसी द्वारसे जो उसने बन्द न किया था बाहर निकला और भलीभांति चन्द्रमाकी चांदनी में देखताहुआ उस के पीछे होलिया चलती २ वह श्मशान में पहुँची जो हमारे घरसे निकटथा मैं भी वहां दीवारसेलग इसभांति खड़ा होगया कि उसे भलेप्रकार देखूं और वह मुझे न देखसके निदान क्या देखताहूं कि वह एक प्रेतकेसाथ जाबैठीहै हे प्रजापालक! आपजानते हैं कि प्रेत या तो शैतानकी सृष्टिहैं वा भूतके प्रकारों में से हैं जो अकेदुके यात्री को पातेहैं तो उनको डराकर मारखाते हैं और जो वह किसी दिन बिदेशी नहींपाते तो रात्रिको क़बरोंमेंसे मुर्दे निकालकर भक्षणकरते हैं मैं अपनी स्त्रीको प्रेतकेसाथ बैठेदेख भयभीतहुआ और आश्चर्यमें हुआ फिर उन्होंने मिलकर एकलोथ जो उसीदिन गाड़ीगई थी क़बर में से खोदकर निकाली और वह दोनों अर्थात् मेरी स्त्री

और प्रेत उस मृतक का मांस काट काट कर खाते और अति प्रसन्नतासे परस्पर वार्त्ताकरते परन्तु मैं दूर खड़ाथा इसनिमित्त उनकी बातें भलीभांति न सुनपड़ती थीं और उनकी दशा देख कांपने लगा जब वह सब मांस भक्षण कर चुके उस मृतककी हड्डियां फिर उसी कबरमें डाल फिर उसे मट्टी से तोपदिया मैं उन दोनोंको वहीं छोड़कर तुरन्त अपने घर चलाआया और उसद्वारको उसीप्रकार खुला छोड़ अपनी शय्यापर आकर बहानेसे सोरहा थोड़ी देरकेपीछे उस स्त्रीने भी आकर अपने वस्त्रउतारे और मेरे साथ सोरही उसके हालसे मुझे मालूम हुआ कि उसने मुझे नहीं देखा और उसको मेरा आना जाना मालूम नहीं हुआ पर ऐसी मुर्दों के खानेवाले स्त्री के साथ सोना बहुत बुरा मालूम हुआ निदान उस समय तो मैं ग्लानि पूर्व्वक उस दुष्टाके साथ सोरहा इतने में भोरकी बांग सुन मैं जगपड़ा और दिशा और स्नानादिसे निश्चिन्तहो निमाज़ पढ़नेको मसजिद में गया और निमाज़ पढ़ और नियमित कृत्यकर बागों में गया और टहलती समय यह बिचार में आया कि किसी भांति अपनी स्त्रीको इस असंगति से हटाऊं और मुर्दों के खानेकी प्रकृति उससे छुड़ाऊं सो इसी बिचारमेंमैं अपने घरमें भोजनके समयपहुँचा मेरी स्त्रीनेमुझे देखतेही मेरे सेवकों से भोजन मँगवा रक्खा फिर जब हम खाने लगे तो वह उसी भांति एक २ दाना उठाकर खाने लगी मैंने उससे कहा हे सुन्दरी! जो तुम्हें किसी भोजन की रुचि न हो तो देखो ईश्वरकी कृपासे नाना भांति के भोजन उपस्थित हैं और इसके बिशेष प्रतिदिन भोजन बदलाये जाते हैं जिसकी तुम्हें रुचिहो उसको खाओ और जो तुमको यह खाने पसन्द न हों तो अपनी इच्छाके अनुसार भोजन पकवा लिया करो इन बातों के सिवाय मैं तुमसे पूछताहूं क्या संसार में कोई भोजन मुर्दे के मांस से उत्तम नहीं जिसे तुम रुचि पूर्व्वक भक्षण करतीहो अभी मैंने यह सारीबात पूर्ण न की थी कि वह समझ गई कि रात्रि को मैंने उसका हाल देखा है इस से मारेकोप के उसका मुख लाल होगया और आंखें उसकी उभर आईं और मुखमें झाग भरलाई उसकी यह दशा देख मैं भयभीतहुआ और मेरी

सुधि बुधि बिसरगई उसने उस क्रोधमें एक जलभर गिलास जो उसके पास रक्खा हुआथा उठालिया और उँगलियां जलमें डुबो कुछ शब्द जिनको मैं नहीं समझता था पढ़ने लगी फिर उन उँगलियों से जल मुझपर छिड़का और कहा हे दुष्ट ! तूने मेरा भेद खोला इस अपराधकादण्ड तू भुगत और कुत्ताबनजा उसके इतना कहतेही मैं कुत्ता बनगया वह लकड़ी उठा मुझे मारने लगी इतना मारा कि मैं मरजाता परन्तु मैं अपने बचावके लिये घरभरमें फिरा किया और वह लकड़ी लियेहुये मुझे खदेड़ती और मारती जाती थी जब वह मुझे मारते २ थकगई तो उसने दरवाजा खोल दिया मैं पीड़ाके मारे चिल्लाताहुआ बाहरको भागा यद्यपि बाहर निकल करके मारखाने से बचा परन्तु उस टोलेके कुत्ते मुझे दुःखदेने लगे भूकते और काटनेलगे वहांसे मैं पूंछदबाके बाजारकी ओर भागा और एक दूकानदारकी दूकानमें जो बकरीके शिरपाये और जीभ बेचता था घुसगया और एककोनेमें छिपके बैठरहा उस दूकानदारको मुझ पर दया उपजी और उन कुत्तोंसे मुझे बचाया और उनको अपनी दूकानके आगेसे मारकर दूर भगादिया मैं उन आपदाओंसे छूटकर रात्रिभर उसकी दूकानमें बैठरहा जब प्रभातहुआ तो वह दूकानदार बहुत सवेरे शिर पावँ लेने गया और बहुतसा सौदा इसप्रकार का मोललेकर आया और अपनी दूकानपर उसे क्रमसे रक्खा मैंने दूर से देखा कि बहुत से कुत्ते मांसकी गन्ध पाके उसकी दूकानके चहुँ ओर हैं सो मैंभी उसके आगे जाके खड़ा होगया वह मुझे देख समझा कि इसने कलसे कुछभी नहीं खाया केवल मेरी दूकानमें भूखा छिपरहा फिर उसने बड़ा लोथड़ा मांसका मेरे सम्मुख डालदिया मैं उस मांसकी ओर न देखकर उसके निकट जाकर अपनी पूंछ हिलाने लगा कि वह यहजाने कि मेरी इच्छा इसी दूकानपर पड़े रहनेकी है उसने मुझे तत्काल लकड़ी से डराया और अपनी दूकान से निकाल दिया मैंनेभी उसकी दूकान छोड़दी और फिरते २ एक नानबाई की दूकान पर जा खड़ाहुआ संयोगवश वह उससमय भोजन करताथा यद्यपि मैंने कुछ उससे मांगनेकी सैन न कीथी परन्तु उसने एक टुकड़ा रोटी

का मेरे आगे फेंक दिया मैंने उसे कुत्तों की भांति झपटा और पूंछ हिलाई वह मेरे स्वरूपको देख प्रसन्न हुआ और मुस्कराया यद्यपि मुझे क्षुधा न थी परन्तु थोड़ासा टुकड़ा तोड़कर भोजन किया उस को मेरा स्वरूप पसन्द हुआ और चाहा कि मैं उसकी दूकान पर रहाकरूँ उसकी यह इच्छा पाके मैं उसकी दूकानकी ओर मुखकरके बैठगया और सन्ध्याको वह मुझे अपने घरमें लेगया किन्तु सदा मुझको लेजाता परन्तु मैं उसकी आज्ञा बिना अपना पावँ उसके घर में न रखता था निदान अन्तको उसने मेरी एक जगह नियत की जिसमें मैं रात्रिको रहता और भोजन करती समय मुझे भली भांति खिलाता इसके विशेष वह मुझपर अत्यन्त कृपा रखता और मैं भी हर समय उसकी ओर देखा करता और उसके सैन करते ही उठता बैठता जब वह नानबाई अपने घरसे दूकान को अथवा और किसी जगहको जाता तो पीछे उसके हो लेता जब वह मेरे सोनेके समय बाहर निकलता और मुझे अपने साथ न देखता तो मुझे गलीमें खड़े होके उस नामसे जो मेरा उसने रक्खाथा पुकारता मैं तुरन्त उसका शब्द सुन उसके पास जाता और उसके दरवाजे के आगे दौड़ा और खेलाकरता और बाहरको जाने के समय कभी उसके आगे दौड़ाजाता और कभी उसके पीछे हो लेता निदान प्रत्येक समय उसके मुखकी ओर देखा करता बहुकालपर्य्यन्त मैं उसके घरमें अतिआनन्द से रहा एक दिन कोई स्त्री रोटियां मोल लेने उसकी दूकान पर आई और रोटी मोल लेकर उसने एक खोटी मुद्रा अपनी मुद्राओं में मिलाकर उस नानबाई को दी नानबाई ने उनको परख कर खोटी मुद्रा उसे लौटादी कि इसके बदले अच्छी मुद्रा मुझे दे उस स्त्रीने उस खोटीमुद्राके फेर लेने में नकाररकी और कहने लगी कि यह मुद्रा नवीन प्रचलितहै नानबाई ने कहा कि यह खोटी है अभी इसका हाल तुझे मालूम होजावेगा यद्यपि मेरा कुत्ता पशुहै परन्तु वह इस मुद्राको परखलेवेगा यह कह उसने मेरा नाम लेके पुकारा कि यहां आ मैं उसके शब्द सुनतेही कूदकर उसके सम्मुख गया नानबाई ने उन सब मुद्राओं को मेरे आगे फेंक दिया

और कहने लगा इसमें जो खोटीहो तू देखकर अलग करदे मैंनेउन सबको एक २ करके देखा और जो खोटीथी उसपर मैंने अपना चरण रखदिया और अच्छोंको एक ओर धर उस नानबाई के मुखको देखने लगा वह नानबाई मेरी बुद्धि पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वह स्त्री यह दशा देख आश्चर्य्य में हुई और खोटे मुद्राको बदलदिया जब वह स्त्री अपने घर चलीगई तो मेरे स्वामी ने अपने पड़ोसियों को बुला कर यह सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया उन्होंने मेरी परीक्षा के लिये अच्छे रुपयों में खोटे रुपये मिलाकर मेरे आगे डाल दिये कि वह भी अपने नेत्रोंसे मेरी बुद्धिको देखें मैं शीघ्र अच्छोंमें से खोटों को अलग करके उनपर अपने चरण रखता गया उन्होंने यह दशा देख अचम्भा मानकर बहुत मनुष्यों से जो मार्ग में चलते थे यह हाल कहा थोड़ेही काल में यह समाचार नगरभर में प्रसिद्ध हुआ और मैं उस दिन सन्ध्यापर्य्यन्त मुद्राओं को परखता रहा उस दिन से वह नानबाई अधिक मुझपर दया करने लगा और सब उसके पड़ोसी और इष्टमित्र यही उससे कहते थे कि तूने यह कुत्ता क्या एक सर्राफ रक्खाहै वह सब मेरे नानबाई के पास रहने से ईर्षा करने लगे और चाहते थे कि मुझे वहांसे निकाल दें इसलिये नानबाई क्षण भर भी मुझे अपनेसे अलग न करता कई दिनके पीछे एक स्त्री उस दूकान पर रोटीमोल लेनेआई और छःमुद्रा जिसमें एक खोटा था नानबाईको दिया उसने परखने को मुझे दिखाया मैंने तुरन्त उनमें से खोटा मुद्रा न्यारा करके चरणके नीचे दबालिया और उसकी ओर देखनेलगा वह मानगई कि तू सच कहता है यही खोटा मुद्रा था जो तूने परखा और नानबाई से छुपा के मुझे सैन करके बुलाया और अपने घरमें लेजानेकी इच्छाकी मैं ईश्वरसे सदैव यह प्रार्थना करता था कि किसी भांति फिर अपनी योनिको प्राप्त होऊं और फिर मनुष्यबनूं निदान उस स्त्रीके बेर २ देखने से मुझे निश्चयहुआ किशायद कुछ मेरे हालको जानगई हो मैं उसीकी ओर देखाकिया यहांतक कि वह कई पग जाके फिर लौटी और मुझे सैनकी मैं उसके अभिप्राय को समझगया और अपने स्वामीकी दृष्टि बचाकर उस स्त्रीके साथहो

लिया वह मुझे अपने साथ देख अत्यन्त प्रसन्नहुई और अपने घरमें लेगई निदान जब मैं घरके भीतर गया तो उस स्त्रीने द्वारको मूंद लिया और मुझको एक मकान में लेगई जिसमें एक सुन्दरी कारचोबी वस्त्र पहिने बैठीहुई थी मैंने बुद्धि से मालूम किया कि वह इस स्त्रीकी पुत्री है और वह स्त्री जादूकी विद्यामें अतिप्रवीण थी फिर उसी स्त्रीने जो मुझे बाज़ार से लाईथी उस सुन्दरीसे कहा यही कुत्ता खोटे मुद्राओंको अच्छों में से परखता है मैं यह खबर पहिले सुनकर समझती थी कि यह कुत्ता मनुष्य था किसी अभागे निर्दयी ने इसे जादूसे कुत्ता बनाया है आज मेरे मनमें आया कि मैं जाकर उस नानबाई की दूकान से रोटी मोललूं और इस बातकी परीक्षालूं सोमैंने इसे परीक्षा में परिपूर्ण पाया हे पुत्री ! तुम इसे भलीभांति देखो कि कौनहै वास्तव में पशुहै वा जादूसे पशुबनगया वह सुन्दरी मेरी ओर भलीभांति देख बोली हे माता ! तुम सत्य कहती हो मैं इसका वृत्तांत अभी तुमसे कहूंगी यह कहके वह सुन्दरी अपने स्थानसे उठी और एक जलका पात्र लेकर उसमें अपना हाथ डुबोया और मेरे ऊपर उस जलको छिड़क के कहा जो वास्तव में कुत्ताहै तो तू कुत्ताही बनारह यदि तू मनुष्य है तो इस जलके प्रभाव से अभी पुरुष तनु को प्राप्तहोजा उसके कहतेही मैं तुरन्त पशुका शरीर छोड़ निजयोनि में आया और उस सुन्दरी चन्द्रमुखी के चरणों पर गिरकर उसके वस्त्रों को चूमा और कहने लगा कि तुमने मुझपर इतनी कृपाकी जिसका मैं गुणानुवाद नहीं करसक्ता सो उत्तम है कि आज से मैं तुम्हारी सेवकाई किया करूंगा फिर मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी स्त्रीका कहकर उस स्त्रीका जो मुझे अपने घर लाईथी गुणानुवाद किया उस सुन्दरीने कहा हे सीदीनैमान ! इससे अधिक हमारा गुण वर्णन मतकर किन्तु हम आपही तुम ऐसे अच्छे मनुष्य के साथ उपकार करके प्रसन्नहुई तेरी स्त्रीका हाल विवाह होनेके पहिले से जानतीथीं और मुझे उसके जादूके सीखने और इस विद्याके ज्ञान का हाल मालूम है किन्तु हम दोनों एकही गुरुआयनकी चेली हैं आगे बहुधा हम्माममें उससे भेंटहुआ करती थी परन्तु उसकी दुष्ट

प्रकृति और दुःस्वभावसे मैंने उससे मिलना छोड़ दिया और केवल तुम इतनाही न जानो कि मैंने तुम्हारा रूप बदल दिया किन्तु मैं उसे तुम्हारे अपकार के बदले कोई दण्ड तुमसे दिलवाऊंगी तुम भी घरमें जाकर उसका शरीर बदल दो अब तम यहां ठहरो मैं अभी आतीहूं यह कह वह सुन्दरी कोठरी में गई और वह उसकी माता के निकट बैठकर उसी सुन्दरी का यश बर्णन करने लगा उस की माता भी मुझसे बिचित्र जादूकी बातें कहने लगी इतने में उस की पुत्री भीतर से एक बोतल लियेहुये आई और कहने लगी हे सीदीनैमान! मैंने अपनी पुस्तक में देखा कि इस समय तेरी स्त्री घरमें नहीं है परन्तु एकक्षण में आवेगी उसने तुम्हारे सेवकों से कि वह तुम्हारे न होने के कारण अत्यन्त बिकल थे कहा कि मेरा पति भोजन करते २ उठकर किसी अवश्य कार्य्यके लिये गया और एक कुत्ता दरवाज़ा खुला पाके दालान के भीतर चलाआया मैंने उसे मारकर निकालदिया फिर उस सुन्दरी ने एक जलका पात्र उसे देके कहा हे सीदीनैमान! अब तुम अपने घर जाओ और यह बोतल अपने से अलग न करना और उसके आगमनकी बाटदेखना वह दुष्टा शीघ्रही बाहरसे आवेगी और तुम्हें देख अत्यन्त ब्याकुल होगी और चाहेगी कि तुम्हारे आगे से भागकर चलीजावें तुम थोड़ासा जल इस पात्रमें से लेकर उसपर छिड़क देना और यह शब्दपढ़ना इससे अधिक पढ़ने की कुछ आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम इस मन्त्रका प्रभाव अपनी आंखों से देखलोगे मैं उस चन्द्र-बदनी के सिखायेहुये शब्द यादकर उससे बिदाहुआ और अपने घरमें आया और जो जो बातें उस सुन्दरीने मुझसे कहीं सबदेखने में आईं अर्थात् क्षणमात्रभी नबीताथा कि मेरी स्त्री वहां आई और चाहतीथी कि मेरे आगेसे भागजावे मैंने शीघ्रही उसपर वह अभि-मन्त्रित जल छिड़कदिया और वही शब्द पढ़े जिसके प्रतापसे वह घोड़ीबनगई यह वही घोड़ीहै जिसको आपने कल देखाथा फिरजब मैंने उसको उस योनि में देखा तो आश्चर्य्य में हुआ और उसके अयालपकड़ अश्वशाला में लेगया और बागडोर से उसको बांधा

और चाबुकसे इतना मारा कि थकगया सीदीनैमान ने यहांतक अपने वृत्तान्तको कहके खलीफ़ासे बिनयकी कि हे बादशाह ! मुझे बिश्वासहै कि आप मुझसे अप्रसन्न न होंगे किन्तु आप ऐसी कर्कशा स्त्री के लिये अधिक दण्ड बिचारेंगे इतना कह वह चुप होरहा खलीफ़ाने जब देखा कि सीदीनैमान अपना बृत्तान्त पूर्णकर चुका तो उससे कहा कि बास्तव में तुम्हारा बृत्तान्त अत्यन्त अद्भुत है और तुम्हारी स्त्रीका बड़ा अपराध है और तुम्हारा दण्डदेना मेरे बिचारमें बहुतठीकहै परन्तु तुमसे पूछताहूं कि कबतक उसको तुम यह दण्ड दिया करोगे और पशुबनाके रक्खोगे मेरे बिचारमें यह उत्तम है कि अब तुम जाके उसी सुन्दरी से जिसके मन्त्रके प्रभावसे तुमने उसे घोड़ी बनादिया कहो कि उसको फिर पूर्व्ववत् स्त्री बनावे परन्तु मुझे यह भय और शोच है कि यह दुष्टा अपनी योनिको प्राप्तहोकर ईश्वर जाने क्या अपकार तुमसे करे जिसका कोई उपाय न हो इसलिये खलीफ़ाने फिर कुछ इस बातमें तकरार न की और तीसरे मनुष्य से जिसे वज़ीरने बुलवायाथा कहने लगा कल जब मैं अमुक गली में गया तो तुम्हारा बिशाल और बिचित्र महल देख मुझे अत्यन्त आश्चर्य्य हुआ जो उस गलीके मनुष्यों से पूछा कि यह बड़ामहल किसका है तो उन्होंने तुम्हारा नामलिया और कहा यद्यपि ख्वाजेहसन जो पहिले बड़ी कठिनता से अपना निर्बाहकरता था अब परमेश्वरने उसे इतनी सामर्थ्यदी है कि उसने ऐसा बिशाल और सुन्दर महल बनवाया है परन्तु वह अपनी उस दशाको नहीं भूला और द्रब्यको ब्यर्थ खर्च नहीं करता सो पड़ोसी तुम्हारे तुमको सब अच्छा और भला कहतेहैं कोई तुमसे अप्रसन्न नहीं अब मैं चाहताहूं कि तुम मुझसे बर्णनकरो कि क्योंकर तुमको इतना धन प्राप्तहुआ इसीलिये तुमको मैंने बुलाया है मेरा कुछभय मतकरो मुझे केवल तुम्हारे बृत्तान्त सुनने के सिवाय और कुछ प्रयोजन नहीं है तुम अपने ईश्वरके दियेहुये धनको भोगो और ईश्वर तुम्हारे ऊपर सदैव कृपाकरे खलीफ़ा ने इसभांतिके बचन कह उसे धैर्य्य दिया ख्वाजेहसन ने तख़्तके पायेको चूमा और क़ालीन

जो तख्त के नीचे बिछा था चूमकर बिनती की कि हे बादशाह ! मैं सत्य सत्य अपना वृत्तान्त आपके सम्मुख विदित करताहूं ईश्वर साक्षी है कि मैंने कोई बात अपनी जाति धर्म्म की प्रतिपाल नहीं की केवल ईश्वर के अनुग्रह से इस पदवीको पहुँचा फिर वह इस भांति अपना वृत्तान्त कहने लगा ॥

## ख्वाजेहसन रस्सी बेंचनेवाले की कहानी ॥

हेबादशाह ! आपकी आज्ञानुसार विनयकरताहूं कि क्योंकर मुझे इतना द्रव्यमिला परन्तु प्रथम आप मेरेमित्रोंका हाल जो बग़दादके निवासी हैं सुनिये वह अबतक जीतेहैं और मेरे वृत्तान्तके जो मैं कहताहूं साक्षीहैं एकका नाम साद और दूसरेकानाम सादीहै सादीको यह निश्चयथा कि संसारमें कोई मनुष्य बिनाद्रव्य के आनंद नहीं उठाता और वह धन उद्योग किये बिना प्राप्त नहीं होता और साद का मत इसके विरुद्ध था सो वह यह कहताथा कि जबतक भाग्य उदय नहींहोता तबतक धननहीं मिलता साद सादीसे ग़रीबथा और उन दोनों में अत्यन्त स्नेहथा और कदापि परस्पर किसी बातमें तकरार न होती सिवाय इस विवादके कि सादी उद्यमको श्रेष्ठमानता और साद भाग्यको एकदिन उनदोनोंमें इसीबातके लिये बहुतवार्त्ता हुई सादीने कहा या तो मनुष्य दरिद्रतामें उत्पन्न होके सदैव दरिद्री रहताहै वा धन होनेकी अवस्था में जन्म लेकर तरुणावधिमें अपने द्रव्यको व्यर्थ व्ययकर आपत्ति उठाताहै फिर उसको इतनी सामर्थ्य नहीं होती कि आनंदमें रहाकरे अथवा किसी गुण वा उद्यमसे द्रव्य कमावे साद कहता कि उद्यम और पुरुषार्थ और गुण कुछ काम नहीं आता केवल अपनेही भाग्यसे धनवान्होताहै धनवान्ता और दरिद्रता संयोगिकहैं मनुष्यका उद्यम और उपाय कुछकाम नहींआतासिवायमाल और उपायके अमीरीके असबाब बहुतेहैं जो भाग्यसे सम्बन्ध रखतेहैं सादीने कहा तुम झूठ कहतेहो आवो हमतुमदोनों इस बातकी परीक्षालें किसी पेशेवालेको जो श्रमसे कालक्षेप करताहो कुछ धनदेवें वह निस्संदेह अपनी वस्तुको बढ़ावेगा तो वह अवश्यद्रव्यवान् हो आनन्द उठावेगा उस समय तुम्हें मेरे वाक्य का बिश्वास

होगा सो वे दोनों मित्र सैर करते २ मेरेघरपर आये और जहां मैं रस्सी बटता था पहुँचे और यह काम अर्थात् रस्सी बटने का मेरी कई पीढ़ियों से था मेरे पिता और दादा यही काम करते थे मेरेघर और वस्त्र को देख उन्हें मेरी ग़रीबी का हाल मालूम हुआ साद ने सादी से मेरी ओर सैनकर कहा जो तुम्हें परीक्षा की इच्छाहो तो कुछ अशरफियां इसे देकर इसकी परीक्षाकरो यह मनुष्य बहुतकाल से यहां रहता है मैं भलीभांति जानताहूं कि यह रस्सी बटके अपने कुटुम्ब समेत अतिकठिनता से अपना निर्बाह करता है सादी ने उत्तर दिया कि बहुत अच्छा परन्तु हम इस मनुष्य को भलीभांति देखलें फिर वे दोनों टहलते हुये मेरी ओर आये मैंने अपना काम छोड़ उनको प्रणामकिया सादीने मेरा नाम पूँछा मैंने कहा मेरानाम हसन है परन्तु जो मैं रस्सी बटताहूं इस निमित्त मुझे हसनहब्वाल कहते हैं फिर सादी ने मुझसे कहा पेशेवालेको पेशाबहुत होता है मुझे निश्चय था कि तुम इस पेशे से सुख में होगे और बहुतसी रस्सी बटने के वास्ते तुम्हारे पास इकट्ठी होंगी किन्तु तुमारे बाप दादा कि वे भी सदा से यही काम करते थे तुम्हारे लिये बहुत कुछ सामग्री छोड़गये होंगे और तुम ने उनको यथाशक्ति बढ़ाया होगा मैंने उत्तर दिया मेरे पास कुछ भी नहीं है जिससे मुझे सुखहो और पेटभर रोटी मिलें मेराहाल यह है कि भोरसे संध्या पर्य्यन्त मैं रस्सी बटताहूं एक क्षण भी श्वास नहीं लेता फिरभी बड़ी कठिनता से सूखीही रोटी मेरे कुटुम्ब को प्राप्त होतीहैं मेरे एक स्त्री और छोटे पांच बालकहैं उनलड़कों में से कोई इस योग्यनहीं कि मेरी सहायताकरे मैं यथाशक्ति उनके भोजन आदि की खबर लेताहूं जो रस्सी बनाताहूं उसे बेंचकर कुछ तो खाने में खर्च करताहूं जो कुछ बचताहै दूसरेदिन रस्सी मोललाकर यही काम करताहूं इसदशापर फिरभी ईश्वरका धन्यबाद है कि उसने मुझे दूसरे के अधीन न किया जब मैं अपना परिपूर्ण वृत्तान्त सादी से कहचुका तो उसने मुझसे कहा मुझे तेरा वृत्तान्त बिस्तारपूर्ब्बक बिदितहुआ यहबात तो मेरी समुझ के प्रतिकूल दिखाईदी जो मैं तुझे दोसौ अशरफ़ियों की थैली दूं

तो तू आनन्द पूर्व्वक अपना निर्व्वाह करसक्ता है और इतने द्रव्य की प्राप्ति से धनवान् होजावेगा वा नहीं मैंने सादी को उत्तर दिया इतनी अशरफ़ी कि आप मुझे देने को कहते हैं इनसे मैं एकही बेर द्रव्यवान् नहीं होसक्ता परन्तु उपायसे मैं निस्संदेह पेशेवाले के बराबर द्रव्य संचयकरलूंगा सादी ने मुझे विश्वासित और सत्यवादी देख अपनी जेब से दोसौ अशरफ़ियों की थैली निकालकरदी और कहा मैं तुझको यह थैली दान देताहूं तुम इसेलो और अपना व्यवहार करो ईश्वर तुम्हें इसमें बरकतदे तुम इसे बहुत समुझबूझ के खर्च करना यहवृथा नष्टहोने न पावे तुम्हारे आनन्दसे साद जो मेरा परमस्नेही है महाप्रसन्नहोगा आगे यदि तुम्हें आनन्द में देखेंगे तो हमको अति हर्ष होगा मैंने वह अशरफ़ियोंकी थैलीलेके अपनी जेब में रखली और महाहर्ष से फूला न समाया और सादी का बहुतसा गुणानुबाद कर उस के बस्त्रको चूमा फिर वे दोनों मित्र मुझसे बिदा होके चलेगये हे स्वामी! उनके जानेके उपरान्त मैं फिर अपना कार्य करनेलगा और मन में सोचनेलगा कि इन अशरफ़ियों की थैली कहांधरूं घरमें कोई स्थान नहीं और न कोई सन्दूकचाहै जिसमें मैं उसे रक्खूं फिर सोचा कि इस थैली को अपनी पगड़ी में बांधकर रक्खूं सो उसे घरमें लेगया और अपनी स्त्री व पुत्रोंसे छिपाकर दश अशरफ़ियां खर्च के लिये निकाल लीं और बाक़ी अशरफ़ियों को थैली में डोरेसे दृढ़बांधा और पगड़ी में युक्तिसे थैलीको रखलिया और वह पगड़ी शिरपर बांधी और सब काम छोड़के पहिले बाज़ार में सन मोललिया और मार्गमें लौटती समय थोड़ासा मांस कि बहुत दिनों से न खाया था रात्रिके लिये मोललिया सो उसे हाथ में लिये हुयेघर आताथा कि अकस्मात् एक चील्हने झपट्टा मार चाहाकि मेरेहाथसे मांसछीने मैंने उसे बचाया और दूसरे हाथसे उस चील्ह को हटाया उसने दूसरी ओर आके फिर झपट्टा मारा सो फिर मैंने बचाया उस उछलकूद में मेरी अभाग्यता से शिरपरकी पगड़ी गिर पड़ी और वह चील्ह तुरन्त अपने पंजोंमें पगड़ीको पकड़के ले उड़ी मैं बहुतही कूदा और चिल्लाया जिसके सुननेसे मुहल्लेकी स्त्रियां और

बालक इकट्ठेहुये और उस चील्ह को उड़ानेलगे परन्तु उसने पगड़ी न छोड़ी और ऐसी दूरलेके उड़ी कि हमारी दृष्टिसे गुप्तहोगई निदान मैं द्रव्य के जाने से महाचिंतित होके अपने घरमें आया और उन दश अशरफ़ियों का जो आगे थैली से निकालीथीं सन मोललिया और कुछ अपने भोजनादिक गृहस्थी कार्य्यमें खर्चकीं इस लज्जा और शोकसे मरना उत्तम था और सोचा जब सादी मेरा उपकारी आवेगा और उस हालको सुनेगा तो उसे कदाचित् चील्ह के ले जानें का निश्चय न होगा उसे मेरे मक्कर करनेपर सन्देह होगा फिर जबतक वह थोड़ी अशरफ़ियां मेरे पासरहीं तबतक मैं चैन में रहा और थोड़ेदिन पेटभर अपने स्त्री पुत्रों सहित भोजन किया फिर मैं वैसाही दरिद्री होगया फिरभी सन्तोष रख ईश्वर का धन्यबाद यह बिचारता कि उसी ईश्वरने मुझे ये अशरफ़ियांदीं और फिर उसनें लेलीं जो कुछ उस परमात्मा सच्चिदानन्दने मनुष्यके लिये रचाहै सो उत्तमहै इसी चिन्ता में था कि मेरी स्त्री ने जिससे मैंने अशरफ़ियों के पाने का हाल न कहा था मुझे इस दशामेंदेखा और कई पड़ोसी मेरी दशादेख इकट्ठे हुये और चिन्ताकाहाल पूंछनेलगे परन्तु मैंने उनसे कुछ न कहा ॥

दो० अपनोद्रव्यगँवायकेकहियेनाहींरोय। हँसैपड़ोसीबहुरितबयामेंअचरजजोय॥

परन्तु जब उन्होंने बहुत पूंछा तो मैंने सबहाल कहदिया वे सब मुझे झूठा समझ बहुत हँसे यहांतक कि बालकभी मेरी बातपर ठट्ठामार कहने लगे कि जिसने जन्मभर अशरफ़ी न देखी उसनें इतनी अशरफ़ी कहांसे पाई कि चील्ह पगड़ी समेत ले उड़ी परन्तु मेरीस्त्री सत्यजान बहुत रोई जब इस बातको छहमहीने बीते तो वे दोनोंमित्र अर्थात् साद और सादी मेरी गली की ओर आये सादने सादीसे कहा यह तो वही गलीहै जिसमें हसन रहताथा चलके उसे देखना चाहिये कि उन दोसौ अशरफ़ियों से कितना उसका ब्यापार बढ़ा निश्चयहै कि वह पूर्ब्ब से धनवान् होगा सादीने कहा बहुत अच्छा उसे बहुकालसे हमने नहीं देखा मैंभी चाहताहूं कि उसे अच्छेहालमें देख प्रसन्न होऊं यह कह वे दोनों स्नेही मेरे घरकी ओर आये पहिले

सादने सादीसे कहा मैं तो उसे उसी दरिद्रतामें पाताहूं कि वह फटे पुराने बस्त्र पहिने है परन्तु कुछ उसकी पगड़ी उजली दिखाई देती है और कुछ अन्तर नहीं तुमभी भलीभांति देखो कि जो मैं कहता हूं सत्यहै वह झूंठ सादीने आगेबढ़के जो मुझे देखा तो उसी दशामें पाया फिर वे दोनों मेरे पास आये पहिले सादने पूंछा हे हसन! तुम्हारी क्या दशाहै और तुम्हारा ब्यापार उन दोसौ अशरफ़ियों से बढ़ा वा नहीं मैंने कहा मैं अपनी दुर्भाग्यता का बृत्तान्त तुमसे क्या बर्णन करूं न तो लज्जा के मारे कह सक्ता हूं और न छिपा कर रखने की सामर्थ्य है मुझपर अद्भुत बृत्तान्त हुआ उसे सुन कर बिस्मित होगे मैं लाचार होकर बर्णन करता हूं फिर मैंने सम्पूर्ण बृत्तान्त उनसे कह सुनाया सादीको बिश्वास न हुआ और कहा हे हसन! तू हमसे हँसी करता है और चाहता है कि हमको छले जो तूने कहा वह निश्चय मानने के योग्य नहीं चीलहों का काम पगड़ी लेजाना नहींहै वह वही लेतेहैं जो उनका भक्ष्य होताहै और तुमने वह कामकिया जो बहुधा तुम्हारे से मनुष्य करतेहैं अर्थात् जब उनको कुछ कहीं मिलताहै और बहुतसा द्रब्य पाते हैं तो वह अपने कामको छोड़ लम्पटता में उस द्रब्यको खर्च करदेतेहैं फिर वह निर्द्धन होजाते हैं फिर अपने कामको करतेहैं तुमनेभी ऐसाही कियाहोगा क्योंकि तुमने इसी थोड़ेदिनों में सम्पूर्ण द्रब्यको ब्यर्थ खर्च किया और जैसेथे वैसेही बनेरहे मैंने कहा जितना आपमुझे बुराभला कहिये सो यथार्थ है और मैंइसी योग्यहूं परन्तु इस अद्भुत कहानी को जोमैंने तुमसे बर्णनकी क्या कोई मनुष्य यहां नहीं जो न जानता हो मैं तुमसे झूंठ नहीं कहता और मुझे भी आश्चर्य्य है कि चीलह पगड़ी नहीं लेती परन्तु यहबात जो मुझपर बीती अपूर्व है सादने मेरापक्षकरके सादीसे कहा कि बहुधा देखासुना है कि चीलह बहुतसी बस्तु अपने भक्ष्यके बिशेष भी लेजाती है इसमें कुछ आश्चर्य्य नहीं सादीने यह सुनके अपनी जेबसे एकथैली अशरफ़ियोंकी निकाली और उसमेंसे दोसौ अशरफ़ी और मुझे गिनदीं और कहने लगा हे हसन! अबकीबेर दोसौ अशरफ़ियां फिर तुमको देताहूं इन्हें बड़ी

सावधानी से रखना और पहिले की भांति मत खोना तुम इसका अच्छा व्यापारकरो जिससे तुम्हें बहुत लाभहोवे और ब्यपारको बढ़ाओ जैसा कि सबलोग करतेहैं मैंने सादीका अधिक गुणानुवाद किया और आशीर्व्वाद दिया फिर जब वह दोनों मित्र चलेगये मैं अपने कारख़ाने में आया और वहां से घरगया संयोगवश उस समय मेरीस्त्री और पुत्र घरमें न थे मैंने एक ओर होके दश अशरफ़ियां निकालीं बाक़ी एकसौ नब्बे अशरफ़ियां एकवस्त्र में बांधलीं और चाहा कि इनको ऐसे स्थानपर रक्खूं जहां मेरी स्त्री और पुत्रोंकी पहुँच न हो इतने में मैंने एक कोने में मिट्टीकी मठोर खड़ीहुई देखी जिसमें गेहूंकी भूसी भरीहुई थी मैंने उन अशरफ़ियों को गेहूं की भूसी में रखदिया और समझा कि यहां किसीका हाथ न पहुँचेगा इतने में मेरी स्त्री घरमें आई मैंने कुछ उससे न कहा और रस्सी मोल लेनेको बाज़ार में गया मेरे जानेके उपरान्त एक मनुष्य शिर धोनेकी मिट्टी बेंचताहुआ वहां आया मेरीस्त्रीने मिट्टी मोललेनी चाही परन्तु घरमें कौड़ी भी न थी तो उसने विचारा कि भूसीकी मठोर घरमें रक्खीहै उसको देके मिट्टीलेलेनी चाहिये सो मिट्टीवालाभी इस बातपर राज़ीहुआ और मिट्टी को भूसी से बदललिया और मठोर समेत भूसी उठायलेगया इतनेमें मैंभी सन मोललियेहुये और एक बोझ अपने शिररक्खे आया और पांचभार सनके मजदूरोंसे उठवालाया वह बोझ उठवाके एक ओर रखदिये और मजदूरों को मजदूरी देकर बिदा करदिया मैं विश्राम करनेके लिये एक जगह जाकर लेटरहा और जहां वह मठोर भूसीकी रक्खीथी दृष्टिकी तो उसे वहां न पाया इससे अत्यन्त ब्याकुल हुआ कि जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और उठकर अपनी स्त्रीसे पूंछा कि वह मठोर यहां से क्या हुई उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त मिट्टीसे बदलनेका कह सुनाया यह सुन मैं चिल्लाकर बोला हे दुष्टा अभागी! यह क्या तूने किया कि तूने मुझे और मेरे बच्चोंको मारडाला और मिट्टी बेंचनेवाले को धनवान् कर दिया फिर मैंने सम्पूर्ण बृत्तान्त मठोर में एकसौ नब्बे अशरफ़ियां रखने का उससे कह सुनाया मेरी स्त्री यह बात सुनतेही शिर और

छाती पीटकर रुदनकरनेलगी और कहनेलगी कि उस मिट्टीके बें-चनेवालेको कहांपाऊंगी वह अभागा आजही इस टोले में आयाथा सिवाय आजके मैंने उसे कभी नहीं देखा फिर मुझसे कहनेलगी तूने बड़ा अनर्थ किया कि इस बात को मुझसे न कहा जो मेरा बिश्वास मान मुझसे कहता तो कदाचित् ऐसा न होता निदान उसने बहुत रोया पीटा मैंने उसकी यहदशादेख उससे कहा कि इतना मतचिल्ला कि पड़ोसी हमारी इस दुर्दशाको सुन मेरी और तेरी निर्बुद्धिता पर हँसेंगे अब उचितहै कि ईश्वरकी इच्छापर अपने को छोड़ें और उन दश अशरफ़ियों से जो मैंने निकालीथीं थोड़ेदिन अपने बिताये और अपनी चिंताको जो मुझे दूसरीबेरकी हानिसे हुईथी आपके सम्मुख उसका कहांतक वर्णनकरूं फिर सोचउठा कि सादीसे भेंटहोती समय में क्याकहूंगा वह तो पहिलेही हालका निश्चय नहीं करता था अबकीबेर उसे निश्चयकरके मेरे छल और लम्पटताका निश्चय होगा निदान एकदिन साद और सादी कुछ मेरेही विषय में तकरार करते हुये मेरे घरकी तरफ़ आये मैंने उनको दूर से देखकर अपना काम छोड़दिया और चाहा कि कहीं जाकर छिपरहूं और उनके सम्मुख न हूं क्योंकि मेरी आंखें लज्जा से उनके सम्मुख न होंगी अभी मैं बाहर नहीं निकलाथा कि उन दोनोंने पहुँच प्रणामकर मेरी कुशलपूंछी मैंने अत्यन्त लज्जा से आंखें अपनी नीचेकरके प्रणामका उत्तरदिया मुझको वैसाही टूटे हालों और दरिद्रता में पाकर अत्य-न्त आश्चर्य में हुये और पूंछा कुशल तो है अब तुम क्यों इस दुर्दशा में हो उनअशरफ़ियों से क्या तुमने अपना ब्यापार नहीं बढ़ाया मैंने उनसे कहा अशरफ़ियों का यह हालहुआ कि तुम्हारे जाने के उपरान्त मैं अपने घरमेंगया और मैंने एक मठोर में कि बहुतबड़ी और बहुतकालसे एक गेहूंकी भूसीसे भरीहुई एक ओर रक्खी थी दश अशरफ़ियां उस थैलीमेंसे निकाल बाक़ी एकसौनब्बे अशरफ़ी थैली समेत अपनी स्त्री पुत्रों से छुपाकररखदीं संयोग से उससमय कोई घरमें न था सबलोग कहीं बाहरगये थे फिर मैं उनदशअश-रफ़ियों को लेकर सन मोललेनेको बाजारमें गया मेरेपीछे जब मेरी

स्त्री घरमेंआई तो एकमनुष्य मिट्टी शिरधोनेकी बेंचताहुआ आया मेरी स्त्रीकेपास उससमय कौड़ी पैसा न था और मिट्टी की आवश्यकताथी बाहर निकल उससे कहा जो तू भूसीसे मिट्टी बदल दे तो मैं लूं वह इस बातपर राज़ी हुआ और मेरी स्त्री को बहुतसी मिट्टी देकर मठोर को भूसीसहित उठवायेहुये लेगया यदि तुमकहो कि तुम ने अपनी स्त्री से अशरफ़ियोंके मठोरमें रखनेका हाल क्यों नहीं कहा तो उत्तर उसका यह है कि तुमने मुझसे कहा था कि अबकी बेर उनको सावधानी से रखना मैंने अपने बिचार से वह अच्छी जगह जानीथी और रक्षाकेलिये अपनी स्त्री से कहा कि ऐसा न हो जोकि बिना पूंछे उसमें से खर्चकरडाले तुम्हारी दीनपालकता और उपकारमें सन्देह नहीं परन्तु मेरेभाग्यमें दरिद्रता लिखीहै क्योंकर मुझे धनप्राप्तहो अब मैं तुम्हारे उपकारका जन्मभर गुण मानता रहूंगा और तुम्हारा यश गाऊंगा सादीने इस बृत्तान्तको सुनकर कहा मुझे तुम्हारी इस बातका परिपूर्ण निश्चय हुआ मैंने मित्रवत् चारसौ अशरफ़ियां तुमको दीथीं प्रयोजन यहथा कि तुमभी धनवान् बन जावो न यह कि तुम उसका उपकारमान मेरागुण वर्णनकरो निदान वह दोनों परमस्नेही मेरेदुर्भाग्यपर अत्यन्त खेद करनेलगे निदान साद सत्पुरुषथा और मुझसे उसकी पुरानी जान पहिंचान थी सो उसने एकपैसा सीसे का जेबसे निकाल सादीको दिखाया और मुझ से कहा कि इसीसीसे के टुकड़े से देख तो ईश्वर तुझको कैसी बरकतें देता है सादी उसे देखकर हँसा और ठट्ठामारनेलगा और हास्यसे कहा कि यह सीसेका टुकड़ा हसनको बड़ालाभ देसक्ताहै और उस का कौनसा काम निकलेगा सादने उस पैसेको देके मुझसे कहा कि तुम सादीकीबातोंका कुछ बिचार मतकरो और इसको अपने पास रक्खो और सादीको हँसने दो एकही दिनमें तुमको इसका हाल मालूम होजावेगा और ईश्वरचाहेगा तो इसी के कारण तुम धनवान्होजावोगे मैंने वह पैसालेकर अपनी जेबमें रखलिया वह दोनों सखा मुझसे बिदा हो चलेगये और मैं रस्सी बटनेलगा रात्रि को जब मैंने सोने के लिये अपने वस्त्र उतारे तो वह पैसा जो सादने दियाथा जेबसे

गिरपड़ा मैंने उसको उठाके किसी ताखपर रखदिया अकस्मात् उसी रात्रिको एकधीमर जो मेरेपड़ोसमें था अपने जालके बनाने के लिये उसे एक पैसे की आवश्यकता हुई कि सूत लाकर जालको बनाकर प्रभातको मछलियां पकड़े और उन्हें बेंचकर अपनेकुटुंबकेलिये जीविका प्राप्तकरे उसका यह नियमथा कि सूर्य्योदयके एकमुहूर्त्त पहिले नदीपर मछलियां पकड़नेकोजाता उसने अपनीस्त्रीसे कहा कि तू जाकर अपने पड़ोसीसे एकपैसा मुझेलादे वह स्त्री सबके घरगई परन्तु उसको कहींसे पैसा न मिला निराशहोकर अपने घरआई धीमरने अपनीस्त्रीसे कहा जानपड़ताहै तू हसन रस्सी बटनेवाले के घर नहीं गई उसने कहा कि सत्य है मैं उसके घर नहींगई क्योंकि उसकाघर और लोगोंसे दूरहै यदि मैं वहांजाती तो कुछ न कुछ वहांसेलेके आती उस धीमरने कहा तू अत्यन्त आलसी है शीघ्र उसके घरजा वहां से अवश्य कुछ मिलेगा उसकी स्त्री बरबराती हुई मेरे घरमें आई और द्वारखुलवाकर कहा हे हसन! मेरेपतिको इस समय एक पैसे की आवश्यकता है कि अपने जालको बनावे मुझे स्मरणथा एक पैसा जो सादने मुझे दियाथा अमुकस्थानपर रक्खा है मैंने उसको पुकारके कहा कि ज़रा तू ठहरजा मेरी स्त्री पैसा लिये आतीहै मेरी स्त्री उसके शब्दसे जगी मेरे बताने से उसने पैसा लेजाकर अपनी पड़ोसिनको दिया वह स्त्री पैसा पाने से अत्यन्त प्रसन्नहुई और मेरी स्त्री से कहा तूने और तेरेपतिने मेरेपतिपर बड़ा उपकार किया मैं प्रतिज्ञाकरतीहूं कि जो पहिली बेर जाल डालके मछलियां पकड़ेगा वह सब तुझे दूंगी निश्चयहै कि मेरा पति भी इस प्रतिज्ञा को स्वीकारकरे जब उस स्त्रीने वह पैसा लेजाकर अपने पतिको दिया और अपनी प्रतिज्ञाको कहसुनाया तो उसने प्रसन्न होकर उस प्रतिज्ञा को अङ्गीकार करलिया और अपनी स्त्री से कहा तूने बहुत अच्छा किया जो यह प्रतिज्ञा उनसे करके आई वह अपने जालको बनाकर दो मुहूर्त के तड़के मछली पकड़नेको नदीपर गया जब उसने पहिले पहिल जालडालकर खींचा तो एकही मछली कुछ एक बालिश्त से बड़ी उसके जालमें आई उसने उस मछली को अलगरख

कर फिर कईबेर जालडाल और बहुत से मत्स्य पकड़े परन्तु पहिले वाली सब से छोटी थी जब वह धीमर अपने घरआया तो सब कार्य्यों के पहिले वह पहिली पकड़ी हुई मछली हाथ में लेकर मेरे पास आया और कहनेलगा हे मित्र! रात्रिको मेरी स्त्रीने तुमसे प्रतिज्ञाकीथी कि जितनी मछलियां पहिलीबेर जाल में आवेंगी वह सब तुमको दूंगी सो एकही मछली पहिले पहिल आई सो वह यहहै तुम इसे लेलो क्योंकि मेरी स्त्रीने जो तुमसे प्रतिज्ञाकीथी मैंने उसको पूराकिया यदि पहिलीबेर में जालभरके आती तो उन सबको मैं तुम्हें लादेता परन्तु तुम्हारे भाग्य में यही एकहीथी मैंने बहुत कुछ उस मछली के लेनेमें तकरारकी परन्तु उसने मेरेहाथ में जोर से रखदी मैंने अपनी स्त्री को वह मछलीदी और कहा कि जो हमने रात्रिको धीमरकी स्त्रीको एकपैसा दियाथा उसके बदले यह मछली पाई परन्तु सादने तो हमसे प्रतिज्ञाकीथी कि इस पैसेके द्वारा तुम धनवान् होजाबोगे फिर मैंने अपनी स्त्रीसे उन दोनों मित्रोंके आने और पैसे के देनेका हाल बर्णन किया मेरी स्त्री भी उस मछलीको देखकर आश्चर्य्य में हुई और कहनेलगी मैं इसको क्या करूं फिर सोच बिचारकर मनमें कहनेलगी कि इसे बालकों के लिये भूनलूं क्योंकि मसाला नहीं है कि जो इसका शोरुआ पकाऊं निदान मेरी स्त्रीने उस मछली को साफ़ करती समय उसके उदर से एक बड़ा टुकड़ा हीरेका पाया उसने जाना कि यह टुकड़ा सीसेका है यद्यपि उसने केवल हीरेका नामही सुनाथा परन्तु आंखों से कदापि न देखाथा तो उसे छोटे लड़कों के खेलने को दिया वह उसे खेलरहे थे तो इतने में उसके और भाइयोंने देखकर उसे छीनलिया और उसकी सुन्दरता और चमक देखकर सब उसके लेनेकी लालसा करनेलगे और हरएक उसे पारी पारी से अपने पास रखता जब रात्रिहुई और दीपक जलायागया तो बालक उसे दीपक के प्रकाशमें देखकर प्रसन्नहोते और चिल्लाते इतनेमें मेरी स्त्रीने भोजन तय्यार करलिये और हम सब भोजन करनेलगे बड़े पुत्र ने उस हीरे को एक ओर थाली के रखदिया और चुपके होके भोजन करने लगा भोजन से

निश्चिन्त होने के उपरान्त फिर वह बालक पूर्ववत् हीरे के लिये झगड़नेलगे उनके शोरकरने पर हमने कुछ ध्यान न किया निदान जब बहुत शोर किया तो मैंने बड़े लड़के को बुलाकर पूंछा आज तुम किस लिये लड़तेहो उसने कहा हे पिता! हम एक सीसे के लिये कि वह अत्यन्त प्रकाशवान् है झगड़ते हैं मैंने उसे मँगवाकर देखा तो उसकी चमक दमक देख आश्चर्य्य में हुआ और अपनी स्त्री से पूंछा कि यह सीसेका टुकड़ा तुमने कहांसे पाया उसने कहा मैंने उस मछली के साफ़ करती समय उसके उदरमें से पाया मैं समझा कि यह केवल सीसेका टुकड़ा है फिर मैंने अपनी स्त्री से कहा दीपक को ओट में बुखारी के भीतर रखदो जब दीपक हमारे आगे से उठायागया तो उस हीरेका प्रकाश इतना था कि हम सब कार्य्य दीपक बिना करसक्के थे फिर मैंने उस हीरे को बुखारी के एक ओर में रखदिया जिससे उजियाला हो उससमय मैं विचारने लगा कि साहके पैसे के कारण इतना लाभ तो हुआ कि रात्रिको दीपक की आवश्यकता न हुई तेलकी किफ़ायत हुई जब हमारे बच्चोंने देखा कि हमने दीपक को बुझाकर प्रकाशके लिये उस सीसे के टुकड़ेको रक्खा तो वह और भी उछलने कूदनेलगे और शोर मचाने लगे इतना चिल्लाया कि पड़ोसियोंने सुनलिया निदान मेरेघुड़कने से चुपहोके सोरहे और हमभी अपनी शय्यापर सोरहे भोरको उठकर अपना काम करनेलगे और उस सीसे के टुकड़ेका बिचार मेरेमनसे जातारहा मेरे पड़ोसमें एक यहूदी बड़ाजोहरी रहताथा उसरात्रिको जब वह दोनों स्त्री पुरुष सोनेकी इच्छा करते तो बालकोंके शब्द से बेचैन होजाते और बहुकाल पर्य्यंत उनको चिल्लाहटसे निद्रा न आ-ती प्रभातके समय उसकी स्त्री अपने पतिकी ओरसे शोरकी शिका-यतकरनेको मेरेपास आई मेरी स्त्री उसे देखतेही उसके अन्तःकरण की बात समझगई और उसका नामलेकर कहा तुमको मेरेबच्चोंके सोरके कारण रात्रिको निद्रामें विघ्नहुआहोगा सो उनका अपराध क्षमाकरो और तुम जानतीहो कि बालक थोड़ेमें हँसदेते हैं और थोड़े मेंरोदेतेहैं भीतर आवोमैं बालकोंके लड़ने झगड़ने का हाल कहूं जब

वह भीतर गई मेरी स्त्रीने वह सीसेका टुकड़ा उसे दिखाया और कहा इसी कारण आपस में बालक शब्द करतेथे वह रत्नोंको पहिचानती थी उसे देख आश्चर्य्य में हुई मेरी स्त्री ने सम्पूर्ण वृत्तान्त मछलीके पेट में से निकलने का उस से कहदिया उसने यह वृत्तांत सुन कहा यह टुकड़ा सीसेका और प्रकारके सीसों से बहुत श्रेष्ठहै मेरेपास भी एक इसी भांतिका सीसे का टुकड़ा है जिसे मैं कभी २ पहिनती हूं जो तू इसे बेंचे तो मैं इसे मोललूं मेरे पुत्र बेंचने का नाम सुन अपनी मातासे रोकर कहने लगे कि तू इसे मत बेंच फिर हम शोर न करेंगे उन बालकों की यह दशा देख वह दोनों स्त्रियां चुप होरहीं और यहूदी की स्त्री बिदा होकर अपने घरचली और धीरे से मेरी स्त्री से कहा कि चैतन्य रह कोई दूसरा मनुष्य इसको देखने न पावे और हम से कहे बिना इसको दूसरे के हाथ मत बेंचना प्रभातको वह यहूदी चौक में अपनी दूकानपर गया उसकी स्त्री ने वहीं जाकर उस सीसे के टुकड़े का हाल उससे कहा यहूदी ने यह सुनकर कहा अभी तू जाके उस सीसे के टुकड़े को मोलले पहिले उसका थोड़ा मोल कहियो जब वह न माने तो बढ़ा दीजियो जितने को हो ली-जियो वह अपने पतिकी आज्ञानुसार मेरी स्त्री के निकट आई और कहनेलगी कि बीसअशरफ़ी उस सीसे के टुकड़े की देतीहूं मेरी स्त्री बीस अशरफ़ियोंका नाम सुनकर सोची कि यह इसका अधिकमोल देती है परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया इतनेमें मैं अपना काम छो-ड़कर भोजन करनेके लिये घरमें आया और उनदोनोंकी द्वारमें बातें करतेदेखा मेरी स्त्री ने मुझे ठहरा के कहा कि बीस अशरफ़ियां यह पड़ोसिन सीसे के टुकड़े की देती है मैंने अबतक कुछ उसका उत्तर नहीं दिया तुम्हारी क्या इच्छाहै मैंने सादके वाक्यको स्मरण किया कि उसने कहाथा कि यह सीसे का पैसा तुमको बहुत कुछ दिलवा-वेगा मेरे चुप रहने से पड़ोसिनने जाना कि इस मोलपर यह राज़ी नहीं है उसने कहा हे हमसाये ! जो तुम इतनेपर प्रसन्न नहींहो तो मैं पचास अशरफ़ी देती हूं मैंने देखा कि यहूदिन इतनी शीघ्र बीस अशरफ़ी से पचास अशरफ़ीतक आई है इसका बहुत बड़ा मोल

होगा मैं चुपहोरहा और उसका कुछ भी उत्तर न दिया उसने मुझे चुप देखके कहा एकसौ अशरफ़ीलो और यह बहुतहै मैं नहीं जानती कि मेरापति इसमोलके देनेपर राज़ीहो या नहीं मैंने कहा तुम क्या कहती हो मैं इस टुकड़े को लाख अशरफ़ी से कम न बेचूंगा और इसीमोलपर तुम्हें और तेरे पतिको दूंगा क्योंकि तुम पड़ोसीहो यहूदिन बढ़ते २ पचास हज़ार अशरफ़ीतक आई और मुझसे कहा कि तुम इसे सन्ध्यातक मत बेंचना कि मेरा पति इस को एकदृष्टि देखले मैंने कहा बहुत अच्छा रात्रिको उसकापति भी मेरेमहल में आया और मैंने उसहीरे को उसेदिखाया अभी दीपक नहीं जलाया गयाथा कि वह हीरा दीपकके सदृश मेरेहाथमें चमकरहाथा यहूदी को उस समय जो कुछ कि उसकी स्त्री ने कहाथा बिश्वास हुआ और उसी हीरे को अपने हाथ में लेके बहुत काल पर्य्यन्त जांचतारहा और फेरफार के देखा किया और अत्यन्त आश्चर्यमेंहो कहनेलगा कि मेरी स्त्री पचासहज़ार अशरफ़ी देती है मैं उससे बीसहज़ार अशरफ़ी अधिक देताहूं मैंने कहा तुमको तुम्हारी स्त्री से मालूम हुआ होगा कि मैंने उससे जो मोल कहाहै कि लाख अशरफ़ी से कम न बेंचूंगा उसने कितनाही चाहा कि मैं लाखरुपये से कमलूं मैंने कहा जो तुम न लोगे तो मैं दूसरेजौहरी के हाथ इसे बेंचूंगा निदान वह यहूदी इतनेपर राज़ीहुआ और दो हज़ार अशरफ़ी बयानेके तौरपर देके मुझसे कहा कि मैं सब कल अशरफ़ियां तुझे लादूंगा और इसहीरेको लेजाऊंगा मैं भी इस बातपर राज़ीहुआ निदान दूसरेदिन उस यहूदीने अपने इष्टमित्रों से क़रज़लेके एकलाख अशरफ़ियां मुझे गिनदीं तब मैंने वह हीरे का टुकड़ा उसे दिया और उसी से मैं धनवान् होगया ईश्वर का धन्यबादकिया उसी ईश्वरके दिये हुये द्रब्यसे अपना गृहस्थी का असबाब धनवानों के सदृश बनाया और मेरी स्त्रीने भी बालकों के बस्त्र बनवाये और मैंने एक बड़ाघर मोललेकर उसकी छत परदे आदि सामग्री से दुरुस्त करली मैंने अपनी स्त्री से कहा अब हमें यह उचित है कि अपने पुराने पेशेको न छोड़ें और कुछ द्रब्य उठा

रक्खें और थोड़ीसी द्रव्यसे कामकाज कियाकरें फिर मैंने नगर के सम्पूर्ण कारीगर नौकररक्खे और उनको कई सै रुपये देकर कई कारखाने रस्सीके जमाये और कई मनुष्योंको विश्वासितजान एक एक कारखाना उनको सौंपदिया अब बुग़दाद नगर में ऐसी कोई गली नहीं जिसमें मेरा गुमाश्ता अथवा रस्सीका कारबारी न हो और इसीभांति प्रतिनगर और ज़िलअमें एक २ कारखाना नियत कर एक २ मुहर्रिर वहां नियतकिया अब मुझे इसप्रबन्धसे बहुतसा धन प्राप्त होताहै और अपने कारख़ाने के लिये मैंने एक बिशाल मन्दिर मोललिया जिसमें ज़मीनबहुतथी परंतु वह घर छिन्न भिन्न था अब उसे तुड़वाकर नयेसिरेसे उसे बिशाल स्वच्छ भवन बनवाया जिसको कल आपने देख उसमें केवल मेरे कारिन्दे रहते हैं और दफ़्तरका हिसाब किताब वहीं है और अपना और अपने कुटुम्बका असबाब वहीं रखता हूं फिर मैं अपने प्राचीन घरको जिसमें साद और सादी आतेथे छोड़कर नयेघरमें जो कि वहां मैंने रहनेके लिये बनवायाथा आ रहा और कुछ दिनके पीछे में साद और सादीको स्मरण होआया और उन्होंने चाहा कि फिर मुझे आकर देखें सो वे दोनों उसी पुराने घर में आये मुझे और मेरे कुटुम्ब को वहां न पाकर आश्चर्य्य में हुये फिर वहां के बासियों से पूंछा कि अमुक रस्सीवाला कहां है जीता है वा मरगया उन्होंने कहा अब तो वह बड़ा ब्यापारी बनगया है अब उसका नाम केवल हसन कोई नहीं लेता किन्तु उसे ख्वाजे हसनहब्वाल कहते हैं अब वह अमुक स्थानपर एक बिशाल महल बनवाकर उसमें रहता है सो वे दोनों स्नेही मुझे पूंछतेहुये वहां आये परन्तु सादी को तनक बिश्वास न था कि यह द्रब्य और ऐश्वर्य्य मुझे उस पैसेके कारण प्राप्त भया इसलिये उसने सादसे कहा यदि हसन मुझसे दोबेर झूंठ बोला यहां तक कि उसने झूंठ बोलकर मुझसे चारसौ अशरफ़ियांलीं और उन्हीं अशरफ़ियां से इतना धन बढ़ाया परन्तु मैं उसे इस दशा में देख कर महा प्रसन्न हूंगा और वह सीसेका पैसा जो तुमने दिया है उससे किस भांति इतना द्रब्य पाता सादने कहा

यह जो कुछ तुम कहतेहो झूठहै हसन झूंठा और धूर्त नहींहै जो उस ने तुमसे कहा वह सब सत्यहै और मुझे परिपूर्ण बिश्वासहै कि उसी पैसे के कारण उसे यह ऐश्वर्य्य प्राप्तहुआ अभी तुमको हसनके वर्णन से मालूमहोगा इसीभांति वार्त्ता करतेहुये वे दोनोंमित्र उसी गली में जिसमें मेराघरथा आये और मेरे सुन्दरभवन की सजावट और बनावटदेख पहिंचानगये कि यह नवीन रचितभवन अवश्य ख्वाजे हसनका होगा सो उन्होंने द्वारपर पहुँचकर हांकदी द्वारपालने दर-वाज़ेको खोलदिया सादी बहुतसे सेवकोंको देख भयभीत हुआ कि ऐसा न हो जो किसी अमीर का यह भवनहो निदान साहसकर उस द्वारपालकसे पूंछा क्या यह ख्वाजेहसनहब्बाल का महल है द्वार-पालने उत्तर दिया कि यह घर उन्हींकाहै भीतरजावो हसन अपने दीवानख़ाने में बैठाहै वहां बहुतसे उसके नौकर होंगे कोई उसे जा-कर तुम्हारे आनेका समाचारदेगा फिर वे दोनों मित्र वहां आये जहां मैं बैठाथा मैंने देखतेही पहिंचान लिया और तुरन्त अपने स्थान से उठ उनकी ओर दौड़ा और उनकेबस्त्र चूमे वे बहुतेरा चा-हतेथे कि मैं गलेमिलूं पर मैं न मिलता निदान उनको भीतर लेजाकर एकदालानमें बहुत अच्छे स्थानपर बैठाना चाहा परन्तु उस स्थान पर वे चाहते थे कि मैं बैठूं मैंने कहा कि हे सज्जनो! मैं अपनेको नहीं भूला मैं वही हसन रस्सीबटनेवालाहूं मैं सदा आपको आशीर्ब्बाद देताहूं निदान वे एकस्थानपर बैठगये और मैंभी उनकेसम्मुखहो बैठा सादीनेकहा मैं तुम्हें इसदशामें देखकर महाप्रसन्नहुआ और ईश्वरने जैसा कि हमारा मन चाहता था तुम्हें उसपदवीको पहुँचाया और मुझे निश्चयहै कि उन्हीं चारसौ अशरफ़ियों से जो मैंने तुम को दीथीं यह सब धन ऐश्वर्य्य प्राप्तहुआ परन्तु सत्य कहो कि तुम क्यों पूर्ब्ब में दोबेर मुझसे झूठबोले थे साद यह बात सादीसे सुनकर बहुत से पेचखाकर चुपकेचुपके सुनाकिया जब सादी कहचुका तो वह बोला कि इसका उत्तर मैं तुम्हेंदेताहूं कि जो कुछ पूर्ब्ब में हसनने अशरफ़ियों के खोजानेका हाल कहाथा वह सब सचहै उसमें कुछ अन्तर नहीं फिर उनमें परस्पर इसी बातपर तकरार होनेलगी मैंने

कहा भाइयो इसबातको जानेदो मेरेवास्ते क्यों परस्पर खेद करतेहो आगे जो कुछ मेरे ऊपर बीताथा वह कहसुनाया उसको सचजानो या झूंठ और अबभी जो कुछ हुआ है तुमसे कहताहूं सो उसने सम्पूर्णवृत्तान्त धीमर को पैसेका देना और मछली के पेटमें से हीरेका निकलना जैसा कि हे खलीफ़ा! मैंने आपकेसम्मुख अभीवर्णन कियाहै उसनेभी कहा सादीने उसे सुनके कहा हे हसन! इतनेबड़े हीरे का मछलीके उदरमेंसे निकलना वैसाहै जैसा कि चील्ह तुम्हारे शिर परसे पगड़ी उड़ालेगई और मठोर भूसीकी देके शिरधोने की मिट्टी ली शायद सचहो परन्तु मुझे बिश्वास नहींआता यह द्रव्य तुम्हें उन्हीं अशरफ़ियों से प्राप्तहुआ यह कह वे उठे और मुझसे बिदा होनेलगे मैंभी उठखड़हुआ और उनसे कहनेलगा भाइयो आपने मुझपर बड़ा अनुग्रहकिया कि इतना श्रमकर मेरेमहलमें आये और इस घरको पवित्र किया परन्तु मेरी यह इच्छा है कि रात्रिको आप यहां भोजनकर यहीं निवास कीजिये प्रभातको मैं तुम्हें नदी और भवनकी सैरके लिये जो मैंने इसी शहरमें हवाखाने के लिये लियाहै ले चलूंगा उन्हों ने न माना जब मैंने बहुत कहा तो उन्होंने मान लिया मैंने उनके लिये नानाप्रकारके व्यंजन पकवाये और उन को अपने भवन के सब असबाब दिखाये और परस्पर हास्य और हर एक भांतिसे प्रसन्नताकी बार्त्ता करते रहे इतने में दासीने कहा कि भोजन तय्यारहै तब अपने उन दोनों मित्रोंको अपने भोजन करने के कमरेमें लेगया जिसमें अनेक भांतिके स्वच्छ पाकथे और अति सुन्दर और उज्ज्वल दीपक उचित २ स्थानों पर प्रज्वलितथे और एकओर मधुर स्वर से गाना होरहा था और एक तरफ़ स्त्री पुरुष नृत्य करते थे इसके विशेष बहुत से तमाशे उनको दिखाये और भोजन से निश्चिन्त होकर हम सोरहे प्रभातको उठकर हम एक किश्तीपर सवार हुये केवट उसको बहाव में खेतेहुये लेचले थोड़ेकाल में हम अपने घरमें जो गांवमेंथा जा पहुँचे फिर किश्तीसे उतर सैर करतेहुये एक घरके भीतर आये मैंने अपने रहने की जगह और कारख़ाने उनको सब दिखाये वह घर और उसकी तय्यारी को देख

कर हर्षितहुये इसके अनन्तर बाग़में गये जिसमें सबभांतिके सघन वृक्षलगेहुयेथे और नदीसे पक्कीनहरोंके द्वारा निर्मलजल सब जगह पहुँचता था और पकेहुयेफल सुन्दर वृक्षों में लगेहुये थे और सुन्दर पुष्पबाटिका में अनेकभांति के सुगंधित फूल लगे थे जिनकी सुगन्ध से सारेबाग़में चहुँओर सुगन्ध फैलरहीथी और स्थान २ पर पानी की चादरें और फ़व्वारे छूटरहे और अनेक भांति के पक्षी उन्हीं सघन बृक्षोंपर अपनी ललितबाणी बोलते इसके बिशेष वहां बहुत सी बस्तु उपस्थित थीं जिनके देखने से मनको अतिआनन्द होता वे दोनों मित्रदेखकर अत्यन्त प्रसन्नहुये कभी मेरागुण मानकर कहते कि तुमने हमको बहुत सुन्दर स्थानपर लाके सैरकराई और कभी यह आशीर्बाद देते कि ईश्वरकरे यह बिचित्र भवन और बाग़ फली-भूतहो निदान मैं उनको एकबड़े सघनबृक्ष के नीचे कि वह बाग़केकि-नारेपर लगाहुआ था लेगया और उसको दिखाकर उनको छोटे से मकान में भोजनकरने के लिये लेगया और दालानमें जहां मसनद तकिया लगाहुआ था उनको बिठलाया इस समयांतर में मेरे दोपुत्र जिनको मैंने दो तीनदिन पहिलेसे उनके अध्यापक समेत उसबाग़ में जल बायु बदलने के लिये भेजाथा पक्षियों का घोंसला ढूंढ़ते हुये एकवृक्ष के नीचे गये सो उनको एक घोंसला मिला उन्हों ने चाहा कि उस बृक्षपर घोंसला उतारने के लिये चढ़जावें परन्तु अभ्यास के न होने और कमज़ोरी से उसपर चढ़नेकी शक्ति अपने में न पाई निदान अपने नौकर को जो उनकी सेवा किया करता था उसपर चढ़ने को कहा वह सेवक उसपर चढ़गया और उस घोंसलेको देख के आश्चर्य्य में हुआ कि वह पगड़ी से बना हुआथा और घोंसले को उसी तरह बृक्षसे उतारलाया और मेरे पुत्रोंको वह पगड़ी दिखाई बड़ा बालक मेरे दिखाने को लेआया मैंने उसे दूरसे देखा कि अति प्रसन्नता से मेरी ओर चला आताहै और उसको मेरे सम्मुख रखके बोला हे पिता! देखो यह घोंसला बस्त्रका बनाहुआहै साद और सादी उसे देख मुझसे अधिक आश्चर्य्य में हुये जब मैंने अच्छीतरह उस घोंसले को देखा तो अपनी पगड़ी को पहिचाना कि यह वही पगड़ी

है जिसको पहिले चील्ह मेरे शिरपर से झपट्टामारके लेउड़ी थी फिर मैंने उनदोनों मित्रों से कहा तुम भी ध्यान करके देखो कि यह वही पगड़ी है कि जो उसदिन मेरे शीशपर थी जब आप पहिले पहिल मेरे कारखाने में आये थे सादनेकहा मैंतो पहिचान नहीं सक्का सादी बोला यदि एकसौनब्बे अशरफियां इसमें हों तो जानिये कि यह वही पगड़ी है मैंने कहा निस्संदेह यह वही मेरी पगड़ी है जो उस दिन मेरे शिरपर रक्खीहुई थी जब मैंने हाथमें लेकर अनुमान किया तो बहुतभारी पाया और उसे खोला तो एक वस्तु भारीसी उस में थी जब गिरहको खोला तो उसमें वहीथैली अशरफ़ियों की निकली मैंने उस थैली को दिखाकर सादी से कहा पहिचानो यह थैली तुम्हारी है उसने पहिचानकर कहा वास्तव में यह वही थैली अशरफ़ियों की है जो मैंने तुमको पहिलीबेर दीथी फिर मैंने उस थैलीका मुख खोल सादी के सम्मुख अशरफ़ियों का ढेरकरदियां और कहा इनको गिनो उसने गिनीं वह पूरी एकसौनब्बे अशरफ़ियां थीं सादी देखतेही अति लज्जित हुआ और कहने लगा कि अब मुझ को तुम्हारे वचन का बिश्वास हुआ परन्तु वह अशरफ़ियां जो तुमको दूसरी बेर मैंने दी हैं उनसे तुम को आधा धन प्राप्तहुआ है और आधा उस पैसे से मैं सुनके चुपहोरहा परन्तु साद और सादी में झगड़ा होनेलगा भोजन करने के उपरान्त हम तीनों बागमें हवादार मकानपर सोरहे सन्ध्या को जब सूर्य्य अस्त हुआ तो जगे और घोड़ोंपर सवारहोकर बग़दादको चले मार्ग में सम्पूर्ण सेवक हमसे अलग होके पीछे रहगये दाना घोड़ोंने नहीं खाया था और नगर की सब दूकानें बंदहोगई थीं दो तीन दास जो हमारेसङ्ग चलेआये थे दाना ढूंढ़नेगये सो किसी सेवक ने भूसी की मठोर भरीहुई किसी बनिये की दूकानपर देखी वह उस बनिये से मोल लेके मटुकी सहित मेरेपास उठवालाया इसबातपर कि कल हम मठोर तेरी दूकानपर भिजवा देवेंगे फिर नौकर हरएक घोड़ेके आगे उस भूसीको मठोर मेंसे निकालकर डालनेलगा अँधियारे में एकवस्त्र उसके हाथलगा और वह उसे बहुतभारी मालूमहुआ वह उसे उसीभांति मेरे पास

लेआया और मुझे देकर कहा कि देखिये यह वही वस्त्र तो नहीं है जिसका हाल कई बेर तुमने हमसे कहा मैंने उसे हाथमें लेकर पहिचाना कि यह वही कपड़ाहै जिसमें एकसौनब्बे अशरफ़ियां बांध के भूसी की मठोर में रक्खी थीं इससे अतिप्रसन्न होके मैंने अपने मित्रों से कहा भाइयो ! ईश्वरने मुझे सच्चाकिया और सादीसे कहा यह दूसरी एकसौनब्बे अशरफ़ियां हैं जो तुमसे मैंने पाई थीं और मैं इस पुराने चिथड़े को कि जिसमें उनको भँगवायाथा भलीभांति पहिचानताहूं फिर मैंने उस मठोरको अपने सामने उठवाभँगवाया और अपनी स्त्रीके निकटभेजा उसने कहलाभेजा यह वही मठोर है जिसमें भूसी रक्खीजाती थी सादीने यह दशा देख कहा कि मेरा विचार अशुद्धथा और सादसे कहा अब मैंने तुम्हारी बातको सच्चा जाना और उसपर बिश्वास हुआ कि धन धनसे नहीं बढ़ता किन्तु ईश्वर की अनुग्रह से दरिद्री धनाढ्य होजाता है इतना कह हम सब सो रहे दूसरे दिन प्रभात को बिदा होकर वह दोनों मित्र अपने महल को पधारे जब बादशाहने यह सम्पूर्ण कथा हसन से सुनी तो कहनेलगा कि मुझे प्रथमसे तुम्हारे पड़ोसियोंके द्वारा बिदितहै कि तुम व्यर्थ ख़र्च नहीं करते और वह हीरा जिसने तुमको धनवान् करादिया मेरेकोषमें है तू सादीको यहां बुलाला कि उस हीरेको अपने नेत्रसे आके देखे और उसे निश्चयहो कि रुपये पैसेसे सब निर्धन धनवान् नहीं होजाते और तू इस कहानी को मेरे कोषाधिपसे भी कह कि वह इस चरित्रको लिखकर हीरेकेसाथ मेरेकोषमें रक्खे फिर बादशाह ने सैनसे हसनको बिदाकरदिया तत्पश्चात् सीदीनैमान और बाबाअब्दुल्ला भी तख़्तको चूम बिदाहुये मलकाशहरज़ाद ने चाहा कि दूसरी कहानी आरम्भ करें परन्तु हिंदुस्तानके बादशाह ने प्रातःकाल होजानेसे कहा उस कहानीको मैं कल सुनूंगा॥

## अलीबाबा और चालीस ठगोंकी कहानी जो एक दासीके उपायसे मारेगये॥

दूसरी रातको मलका कहानीको इस भांति बर्णन करनेलगी कि पारसदेशमें दोभाईथे एकका नाम क़ासिम और दूसरेका अलीबाबा

था उन्हों ने अपने पिताके मृत्युके पश्चात् थोड़ेद्रव्य को आपस में बांटलिया और थोड़ेही समय में दोनों भाइयोंने उसे खर्चकरडाला क़ासिमने एकस्त्रीकेसाथ जिसका पिता बड़ाधनवान्था बिवाह किया और अपने श्वशुरके कालके उपरांत उसको श्वशुर की एक दूकान मिली जिसमें व्यापारकी बहुमूल्य वस्तु भरीथी और बहुतसा द्रव्य जो पृथ्वी में गड़ाथा पाया इस से वह उस नगर में बड़ाब्यापारी बिख्यातहुआ अलीबाबाने जिस लड़कीके साथ बिवाहकिया उसका पिता निर्धन और दरिद्रीथा वह दोनों छोटे से घरमें रहतेथे अली-बाबा प्रतिदिन सूखाकाष्ठ गधोंपर लादके नगरमें लाता और उसको बेंच अपना निर्बाह करता एक दिन अलीबाबा ने काष्ठ अपनी आवश्यकता के अनुसार काटा और चाहता था कि गधोंपर लादे अकस्मात् उसने दाहिनीओर से धूलिउड़ती अपनीओर आतीहुई देखी जब उसने भलीभांति देखा तो बहुत से सवार उसे दृष्टिपड़े जो पांवउठाये उसीकी ओर चलेआते हैं वह उनको देखकर भयभीत हुआ कि कहीं लुटेरे न हों और मेरे गधोंको छीनलेजावें और मुझे मारडालें इससे भयवान् होके भागनेलगा परन्तु सवार पासही प-हुँचगयेथे इससे वह बनसे निकलकर न जासका इसलिये उसने जल्दीमें गधोंको एक ओर हांकदिया और आप एकसघन वृक्षपर अपनेको छिपानेके लिये चढ़गया और ऐसे स्थानपर बैठा कि उस को वहांसे सब कुछदीखे और वह किसीको दृष्टि न पड़े वह वृक्ष एक पहाड़से लगाहुआ था परन्तु वह पर्वत बहुत ऊंचाथा वह सवार कि अत्यन्त बलवान् और चालाकथे उस पर्वतके नीचे पहुँचकर अपने अपने वाहनोंसे उतरे अलीबाबा ने उनको भलीभांति देख मालूम किया कि वह निस्सन्देह लुटेरे हैं किसी बिदेशियोंके समूह को अभी लूटकर उनकी वस्तुलायेहैं किसी अच्छेस्थानपर रक्षापूर्बकरक्खेंगे सो वैसाहीहुआ उन चालीसों ठगों ने उसी वृक्षके समीप पहुँच कर घोड़ोंकी लगामें उतारडालीं और उनको बागडोरसे बांध खुरजियां जिनमें सोना रूपाथा उतारीं फिर अलीबाबा ने क्यादेखा कि सब के आगे उनका सरदार अपने बोझको कांधेपर रक्खेहुये उसी वृक्ष

नम्बर ४६ मुतअल्लिके सफ़े ७२१ च॰ भा॰



चित्र अलीबाबाका अपने गधों पर नीचे अशरफ़ियां और ऊपर लकड़ी लाद के शहरको जाते हुये.

के नीचे आया और कांटे और भाड़ियों से होताहुआ एक स्थान पर खड़ा होकर कहनेलगा ( खुल अय समसम ) इस बचन के कहतेही वहां एक किवाड़ खुलगया जब सब उसके साथ उस किवाड़ के भीतर जाचुके तब वह आपभी उसी दरवाजेमें चलागया अलीबाबा लाचारी से उसीबृक्षपर छिपा बैठारहा इस भयसे कि वह ठग कहीं निकल न आवें और मुझे मारडालें और कभी यह बिचारता कि चुपकेसे नीचे उतर उनके एक घोड़ेपर सवारहूं और एकपर सब लगामों को लाद अपने आगे गधोंकोकर नगरमें चलाजाऊं इतने में वही दरवाज़ा खुलगया और वह चालीसों ठग वहां से निकले उनका सरदार पहिले आप निकला और दरवाज़े के पास खड़ाहो आप देखाकिया फिर उसके साथी वहांसे निकले अलीबाबाने फिर सुना कि वह सरदार कहताहै ( बन्दहो समसम ) इसबातके कहते ही वह किवाड़ मुंदगया सब अपने अपने घोड़ोंको लगाम दे सवार हुये जब सरदार ने देखा कि सब चलनेको तय्यार हैं तब वह सब के आगे हो लिया और जिस ओरसे वह आये थे उसी ओर चले गये अलीबाबा उनके जाने के उपरान्त कई क्षण उस बृक्ष पर से न उतरा और यह सोचा कि ऐसा न हो कि वह फिर आवें और मुझे देखलेवें जब वह दूर निकलगये और दृष्टिसे लोप होगये तब उसने बृक्षसे उतर परीक्षाकी इच्छाकी कि मैंभी वही शब्द पढ़कर देखूं कि वह किवाड़ खुलताहै वा नहीं अथवा बन्द होताहै वा नहीं सो उसद्वारके पास पहुँच उसने कहा ( खुल अय समसम ) इसबचन के कहतेही वह खुलगया और उसमें जाकर क्या देखा कि वह बड़ी बिशाल और स्वच्छ कन्दरा है इससे वह अत्यन्त आश्चर्य्य में हुआ कि ऐसा मन्दिर पहाड़को खोदकर क्योंकर बनाया परन्तु छत उसकी एक मनुष्यकी उँचाईके बराबरथी और पर्वत के शिखर से रौशनदानों के द्वारा उस कन्दरा में प्रकाश पहुँचता था तो उसने उजियाले में देखा कि बहुतसी बस्तु धरी हैं और हरएक भांतिकी माल की गठरियां रक्खी हैं और नीचे ऊपर भारी भारी कमख़ाब चिकन आदिके थान ढेर पड़े हैं इसके बिशेष असंख्य द्रब्य है कुछतो ढेरों

रक्खा है और कुछ बड़े बड़े चमड़े की बड़ी बड़ी थैलियों में सीकर रक्खा है इतनी बस्तु और द्रव्य देख उस ने सोचा कि यह कन्दरा थोड़े बर्षों से नहीं भरी किन्तु सैकड़ों बर्षों से ठगों ने इस बस्तु को लूट कर यहां इकट्ठा किया है फिर दरवाज़ा आपही आप बन्द होगया अलीबाबा उसके बन्द होने से न डरा क्योंकि उसे उस के खोलने का भी मन्त्र यादथा फिर वह इतनी अशरफ़ी उस कन्दरा से बाहर निकाललाया कि उसके गधे उठासकें और गधाको एकओर कर उनपर थैलियां अशरफ़ियों की लादीं और ऊपर से थोड़सा काष्ठ रख उसे चहुँओर से छिपालिया जिससे लकड़ियों का गट्ठा जानपड़े जब वह लादचुका तो कहनेलगा (बन्दहो अय समसम) यह कहतेही वह दरवाज़ा बन्दहोगया और उस दरवाज़े का यह प्रभाव था कि जब कोई उसके भीतर जाता तो वह आप से बन्द होजाता और जबतक कोई (खुल अय समसम) उच्चारण न करता कभी भी वह न खुलता अलीबाबा गधोंको आगेकर नगरको चला जब वह भीतरपहुँचा तो उनगधोंको अपने घरके भीतरलेगया और बाहरका किवाड़मूंद ऊपरकी लकड़ियां उतार और अशरफ़ियों की थैलियां उतार उतार अपनी स्त्री के सम्मुख लेगया उसकी स्त्रीने टटोलके देखा कि उनमें अशरफ़ियां भरी हैं समझी कि उसका पति कहीं से चुराकर लाया है तो अपने भर्त्ताको दुर्बचनदे कहने लगी तुझे यह कर्म उचित न था उसने कहा मैंने चोरीनहीं की मैं इस बृत्तान्तको तुझसे कहताहूं तू मेरे भाग्यके उदय होनेका हाल सुनकर हर्षित होगी फिर उसने थैलियों में से अशरफ़ियां निकाल उसके आगे ढेरकरदीं जिसके देखने से उसकी स्त्रीके नेत्र चौंधियाने लगे और उस हाल को सुन अत्यन्त प्रसन्नहुई और उनको गिननेलगी अलीबाबा ने कहा तुम क्या बेसमझहो कहांतक गिनोगी अब मैं इसको गढ़ा खोद गाड़ेदेताहूं उसकी स्त्रीने कहा बहुत अच्छा परन्तु मैं इनका अनुमान करना चाहती हूं कि यह सब कितनी हैं अलीबाबाने कहा बहुत अच्छा परन्तु चैतन्यरह कि यह भेद खुलने न पावे सो उसकी स्त्री तराजूलेनेको क़ासिमके घरमेंगई परन्तु क़ासिम

को घरमें न पाया उसने उसकी स्त्रीसे कहा अपनी तराज़ू एकक्षणके लिये मुझेदे उसने पूंछा बड़ी चाहिये अथवा छोटी उसने कहा मुझे छोटीसी तराज़ूचाहिये उसकी जिठानी ने कहा ज़रा ठहरजा मैं ढूंढ़ करलातीहूं इसबहाने वह दृष्टिकी ओट होकर तराज़ू के पलड़ों के ऊपर मोम और चरबी लपेटकर लाई कि मालूमकरे कि कौनसी वस्तु अलीबाबाकी स्त्री तौलेगी कि चिकनाई से उसमें निस्सन्देह कुछ न कुछ लगरहेगा निदान अलीबाबा की स्त्री ने उस तराज़ू को अपने घर लेजाके सम्पूर्ण ढेर अशरफ़ियों का तौला और अली-बाबा गढ़ाखोदनेलगा निदान दोनों स्त्री पुरुषों ने मिलके उन अश-रफ़ियों को गढ़े में गाड़ दिया और अलीबाबाकी स्त्री क़ासिमकी स्त्री को तराज़ू देनेआई और जल्दी में कुछ बिचार न किया एक अश-रफ़ी चरबी की लससे उस तराज़ूमें लगगई थी क़ासिम की स्त्री वह अशरफ़ी लगीहुई देख डाहकी अग्निसे जलनेलगी और समझी कि इस तराज़ूमें अशरफ़ियां तुली हैं इससे अति आश्चर्य्य में हुई और सोचनेलगी कि अलीबाबा जो अत्यन्त निर्द्धन और दरिद्री था इतनी अशरफ़ियां कहांसे पाईं जिनको उसने तराज़ूपर तौला क़ासिम अलीबाबा का भाई सायङ्काल को जब अपने घरमें आया उसकी स्त्री ने कहा तू अपने को बड़ा भाग्यवान् और धनवान् समझता है परन्तु तुझसे तेरा भाई बड़ा धनवान् है उसकी स्त्री ने अशरफ़ियों को आधिक्यता से तौलकर रक्खा है तू गिनकर रक्खाकरताहै क़ासिमने पूंछा तुम क्योंकर जानती हो उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णन किया और वह अशरफ़ी जिसपर किसी प्राचीन बादशाहका सिक्काथा उसे दिखाई क़ासिमको रात्रिभर ईर्षा से निद्रा न आई भोरको उठकर अपने भाई के पासगया और उससे कहा भाई प्रकट में तुम अत्यन्त धनहीन जान पड़ते हो परन्तु तुम्हारे पास बहुतसा धन है और इतनी अशरफ़ियां हैं कि तुम उन को तराज़ू में तौलतेहो अलीबाबा ने कहा मैं तुम्हारे अभिप्राय को नहीं समझता उसे बिस्तारपूर्ब्बक बर्णनकरो क़ासिम ने कहा अब तुम मुझे मतभुलाओ फिर उसने वह अशरफ़ी जो उसकी स्त्री ने दीथी

अलीबाबा को दिखाई और कहने लगा कि इसप्रकार की लाखों अशरफ़ियां तुम्हारे पासहैं मेरी स्त्रीने इसे तराजू में पायाथा अलीबाबा ने यह बृत्तान्त सुन जाना कि यह दोनों स्त्री पुरुष मेरे भेदको जानगये अब इनसे छिपाने में बैर होगा लाचारी से उनसे ठगोंका बृत्तान्त कह सुनाया उसने यह सुन अलीबाबासे कहा यदि तुम वह स्थान न बताओगे तो मैं अभी तुम्हारी अशरफ़ियों का हाल कोतवालसे जाकर कहदूंगा ब्यर्थ में तुम्हारी अशरफ़ियां जावेंगी और तुम क़ैद होजाओगे अलीबाबा ने भयभीत होकर सब हाल उस से कहदिया और वह मन्त्र भी उसे बतादिये क़ासिम सब बातों को सीखकर दूसरे दिन प्रभात को दश खच्चर अपने साथ लिये उसी ओरको जिधर अलीबाबा ने बताया था सिधारा जब उस पर्व्वत और बृक्षके पास जिसपर अलीबाबा छिपाथा पहुँचा तो उसे दरवाज़ा दीखा उसने कहा ( खुल अय समसम ) उसके कहने से वह दरवाज़ा खुलगया और क़ासिम उसके भीतरगया वहां उसने बहुतसी बस्तुदेखीं कि चारोंओर पटीपड़ी हैं फिर वह दरवाज़ा उसके भीतर जाने के उपरान्त बन्द होगया वह उस कन्दरा में चहुँओर फिरा किया और भांति २ की बस्तु और खज़ाने देखतारहा निदान दशखच्चरों के बराबर अशरफ़ियोंकी थैलियां भरके द्वारके पास लाया और चाहा कि दरवाज़े को खोल अशरफ़ियों को खच्चरों पर लादें परंतु ( समसम ) अर्थात् तिलिस्मका शब्द भूलकर कहनेलगा कि ( अपनबारले ) तात्पर्य्य खोल हे जौ ! जब वह दरवाज़ा न खुला इस बात से वह अत्यन्त आश्चर्य में हुआ और पारी २ से हर अनाज का नाम सिवाय ( समसम ) को पुकारा परन्तु वह किवाड़ न खुला ( समसम ) का शब्द उसे ऐसाभूला मानो उसने कभी इस शब्दको न सुनाथा निदानवह उन अशरफ़ियों को ढेरकरके अचम्भे में उस कंदरा में कभी आगे बढ़ताथा और कभी पीछेको हटता और पहिले कि उसे उस असंख्य द्रब्य के देखने से खुशीहुईथी अब वही दुःख की हेतुहुई किन्तु वह अपने प्राणसे निराशहुआ अकस्मात् मध्याह्न के समय वह ठग वहां पर आये और दूरसे उस स्थानपर खच्चरों

को देख अचम्भेमें हुये कि इनको कौन यहांलाया जब पास पहुँचे तो खच्चरोंके पीछे दौड़े प्रयोजन उनका यह था कि मालूम करें कि उन को यहां कौन लाया फिर सरदार अपने साथियों समेत घोड़े से उतर द्वारकी ओर चला और वहां पहुँच उसने वह मन्त्र पढ़ा कि वह किवाड़ खुलगया क़ासिम घोड़ोंकी टापें सुनतेही धरतीपर गिर पड़ा और उसको निश्चयहुआ कि यह वही ठगहैं अब मैं निस्सन्देह माराजाऊंगा तौभी सँभल बैठा कि दरवाजे के खुलतेही निकल कर भागे उसके दौड़ने से ठगोंका सरदार जो आगे था किसी सदमे से गिरपड़ा सो किसी सवारने क़ासिमको देखतेही खड्ग ऐसा मारा कि वह दोटूक होगया फिर वह सवार सब भीतर गये और वह अशरफ़ियां जो क़ासिमने लेजाने के लिये द्वारके पास रक्खीथीं भीतर लेजाकर कोश में रखदीं और घबराहटमें उन थैलियों के न होने से जो अलीबाबा लेगयाथा कुछ ध्यान न किया सबके सब इसी चिन्ता में पड़े कि यह मनुष्य किधर से आया रौशनदानों से तो कोई नहीं आसक्ता क्योंकि इतने ऊंचे पहाड़ पर क्योंकर चढ़सक्ता यदि द्वार से आता तो अवश्य था कि उसे खोलने और बन्द करने का मन्त्र मालूम होता फिर उन्हों ने क़ासिम की लोथ के चार टुकड़े किये और कन्दरा के बाहर उन्हों ने बाईं ओर दो टुकड़े और दाहिनी ओर दो रक्खे कि औरों को वह लाश देखकर उपदेश हो और गुफा में जाने की इच्छा न करें फिर वह कन्दरा का द्वार मूंद घोड़ों पर सवार हो चलेगये जब क़ासिमकी स्त्री ने देखा कि रात्रि होगई और क़ासिम लौटकर घर में नहीं आया तो घबड़ाकर अलीबाबा के निकट दौड़ीगई और रोकर कहने लगी भाई अब तक क़ासिम घरमें नहीं आया तुमको अवश्य मालूम होगा कि वह किस बन में गया है ऐसा न हो जो उसपर कुछ दुःख पड़ाहो अलीबाबा समझा कि कुछ न कुछ विघ्न हुआहै जो क़ासिम वहांसे नहीं आया सो उसकी स्त्री को धैर्य्य देकर कहा कि क़ासिम अति चतुर है वह नगर में से होकर नहीं आवेगा नगरके बाहरसे होकर आवेगा इसीलिये उसे बिलम्ब हुआ इस बातके सुनतेही उसकी स्त्री को कुछ धैर्य्य हुआ और

अपने घरमें आई जब आधीरात बीती तो अपने पति के लिये अधिक व्याकुलहुई परन्तु भयसे चिल्ला नहीं सक्ती थी कि उसके पड़ोसी उस भेद को जान न लें अपने मनहीमन में रुदन करती और धिक्कार देतीथी कि क्यों मैंने इस भेदको कहा और अलीबाबासे ईर्षा ठानी निदान वह रात्रि उसे रोते कटी जब प्रभात हुआ तो अली-बाबा के पास दौड़ीगई अलीबाबा अपनी भाभी को धैर्य्य दे तुरन्त अपने गधों समेत उसीबनको सिधारा जब उस पर्व्वतके नीचे पहुँचा तो वहां रुधिर बहा देख आश्चर्य्य में हुआ न तो उसने अपने भाई को देखा और न दश खच्चरोंको इससे अति आश्चर्य्यमें हो सोचने लगा कि यह कुछ बुराशकुन मालूम होताहै फिर उसने उसी मन्त्रका उच्चारण किया तुरन्त वह दरवाज़ा खुलगया तो वहां दरवाज़े के दा-हिने बायें अपने भाई की लोथ को टुकड़े टुकड़े हुआ देख अत्यन्त भयभीत हुआ उसने अपने भाईकी लोथको चादरमें बांध एक गधे पर लादा और उसको काष्ठसे चहुँओर छिपा लिया और दो गधों पर अशरफ़ियों की थैलियां लाद उन परभी छिपाने के लिये ल-कड़ियां रक्खीं जब निश्चिन्त हुआ तो उसने द्वार को उसी मन्त्र से मुंदादिया और नगरको सिधारा और बड़ी रक्षासे अपने घरमें प-हुँचा और वह गधे अशरफ़ियोंके लदेहुये घरमें लेजाकर अपनी स्त्री से कहा कि यह अशरफ़ियां उतारले परन्तु उससे कुछभी क़ासिमके मारेजाने का बृत्तान्त न कहा और उसी गधे के सहित जिसपर क़ा-सिमकी लोथथी क़ासिम के घरमें आया और दरवाज़े पर हांकदी मरजीना नामक एक लौंड़ीने जो अत्यन्त चतुर और समझदार थी आकर किवाड़ खोला अलीबाबा उस गधे को महल के भीतर ले-गया और क़ासिमकी लोथ को उतार मरजीना से कहा हे मरजीना! शीघ्र तू इस लोथ के गाड़ने का उपाय कर मैं अभी अपनी भावजको एक बात कहके तेरा साथ देताहूँ क़ासिम की स्त्रीने अलीबाबाको दूर से देख पूँछा हे अलीबाबा ! मेरे पतिको क्या समाचार लाये परन्तु खेद है कि मैं तेरे मुख से दुःखके चिह्न पाती हूँ अलीबाबा ने उससे उस के पतिका ठगों के हाथसे मारेजाने और उसकी लोथके लानेका

बृत्तान्त वर्णनकिया और कहा हे सुन्दरी! अब जो कुछ होनाथा वह हुआ परन्तु यह भेद छिपारखना उचित है जिससे हमारे प्राण बच इतनाकह फिर अलीबाबा ने अपनी भावजसे कहा कि ईश्वर की इच्छामें किसीका उपाय नहीं चलता अब सन्तोष रक्खो अब तुम को उचित है कि शोकके दिन पूर्ण होने के उपरान्त मुझसे बिवाह करलो अति आनन्द में रहोगी मेरी स्त्री अतिसुशील है तुमसे वह बैर न करेगी क़ासिमकी स्त्रीने रोकर कहा मैं तुम्हारी इच्छासे बाहर नहीं फिर उसने पतिके लिये महाविलाप किया और शिर के बाल नोचे अलीबाबाने उसे वहीं छोड़ मरजीनासे आकर अपने भाई के कफ़नके लिये बातचीतकी जो कुछ समय के अनुकूलथा उस बांदी से कहकर गधोंसमेत अपन घरमें आया अलीबाबा के जानेके उपरान्त मरजीना अत्तारकी दूकान पर गई और उस भेदके छिपाने के लिये ऐसी औषध मांगी जिसे मरणप्रायके समय बीमारको देते हैं अत्तारने औषध देकर उससे पूछा तेरे घरमें कौन ऐसा बीमारहै उसने रोकर कहा मेरा स्वामी क़ासिम बहुत बीमार होगया है न तो कुछ खाता है और न कुछ बात करता है इसलिये सब उसके जीनेसे निराश हैं दूसरे दिन मरजीना फिर उसी दूकानपर गई और उससे वह औषध और सुगन्धमांगी जो अन्तसमय में रोगी को देते हैं कि उस औषधके प्रभावसे कुछ बीमार को आराम होता है जब अत्तार ने उसे वह औषध दी तो मरजीना उसे लेकर रोई और हाहाखाय कहनेलगी मैं नहीं जानती कि औषध के खानेकी भी अवसर मिले वा न मिले अथवा मेरे जातेहीजाते देहान्त होजावे. इसतरफ़ तो अलीबाबा बाट देखताथा कि जिससमय रोने पीटने का शब्द क़ासिमके घरसे सुने तो शीघ्रजाके शोककरे दूसरे दिन प्रभात को मरजीना मुँह अँधेरे एकबूढ़े दरज़ी के पास जिसका नाम मुस्तफ़ाथा गई वह दरज़ी बहुधा क़फ़न सिया करताथा सो उसीसमय उसने दूकान खोलीथी मरजीनाने एक अशरफ़ी उसकोदी और कहा अपने नेत्रों में पट्टीबांधकर मेरे घरतक चलो मुस्तफ़ाने कहा मैं इसतरह नहींचलूंगा मरजीनाने एक और अशरफ़ी उसके हाथमेंरख

के बहुतसी बिनतीकी यहांतक कि वह दरज़ी अशरफ़ियों के लोभ से चलने के लिये राज़ीहुआ फिर मरजीना उसके नेत्रोंपर रूमाल बांध और हाथ उसका पकड़ उसी मकानमें जहां उसके स्वामीकी लाश पड़ीहुई थी लेगई और क़ासिमकी लोथको क्रमसे रख और उसपर चादरडाल अँधेरी कोठरी में मुस्तफ़ाकी आंखें खोलदीं और कहा तुम इस लोथ के बराबर कफ़न सींकर तय्यार करदो तुमको एक अशरफ़ी और दूंगी जब मुस्तफ़ाने सींकर तय्यार करदिया तब मरजीनाने तीसरी अशरफ़ीभी उसे देडाली और फिर उसकी आंखों में पट्टी बांधकर उस कोठेसे हाथ पकड़ लेआई जहां पहिले उसने उसकी आंखों पर रूमाल बांधा था और उसको बिदाकर अपने घरमें लौट आई और जल गरमकर उसने और अलीबाबाने मिलकर क़ासिम की लोथ को स्नान कराया और उसको कफ़नाकर स्वच्छ स्थानपर रक्खा मरजीना एक मसजिदके इमामके पासगई और उससे कहा एक अरथी तय्यार है चलके उसपर निमाज़पढ़ो और उसको फलाने क़बरिस्तानपर लेजाकर गाड़दो उस मसजिद के इमाम और वहां के रहनेवाले जिनका यही कामथा उसके साथ आये और चारमनुष्य उसके पड़ोसी उसके जनाज़े को अपने कांधे पर उठा उसे निमाज़ पढ़ने के स्थानपर लेगये निमाज़ पढ़ने के उपरान्त और चार मनुष्य अरथी को क़बरिस्तान से लेचले मरजीना जनाज़े के आगे शिरनंगी रोती पीटती बिलाप करती चली यहांतक कि अलीबाबा पड़ोसियों के साथ जनाज़ा लेकर क़बरिस्तान में आया और उसको गाड़ अपने भ्राताके शोकमें चालीस दिन तक बैठारहा और नगरकी रीति के अनुसार महल्ले के घरकी स्त्रियां घड़ीभर के वास्ते एकत्रहो क़ासिमकी स्त्री के साथ रोईं और उसको धैर्य्य देचलीगईं और अलीबाबा और उसकी स्त्री और क़ासिमकी स्त्री के बिशेष नगरका कोई मनुष्य इस भेदको न जानता था चालीस दिनके उपरान्त अलीबाबा ने क़ासिम की स्त्री के साथ बिवाह किया अलीबाबाका एक पुत्रथा वह किसी बड़े ब्यापारी के साथ रहाकरता था और ब्यापार के कार्य्य को भलीभांति जानता

सो उसके पिता ने क़ासिम की दूकान उसे सौंपी सो वह दूकानपर बैठने लगा ॥

अब यहांसे उन्हीं चालीसोंठगोंकावृत्तान्तबर्णनकियाजाताहै ॥

एकदिन वह ठग अपनी कन्दरा में आये और वहां क़ासिमकी लोथका कुछ भी चिह्न न पाकर अत्यन्त आश्चर्य्यमें हुये इसके सिवाय देखा कि उस ख़ज़ाने से बहुतसी अशरफ़ियां भी निकलगई हैं उनके सरदारने कहा यदि इस बातका खोज नहीं करते तो आगे को हमें अधिक दुःखहोगा और सिवाय इसके धीरे धीरे यह सम्पूर्ण द्रव्य जो हमने और हमारे पुरुषों ने बड़े श्रमसे बहुकाल में सञ्चय कियाहै नष्ट होजावेगा फिर सबों ने सोचा कि इसमें कुछ संदेहनहीं कि वह मनुष्य जिसे हमने बधकिया दरवाज़े के खोलने और बन्द करने के मंत्रको जानताथा इसके बिशेष कोई और मनुष्य भी इस भेदको जानताहै जो दरवाज़ा खोलकर बहुतसा धन और मुर्दे को उठाकर लेगया अवश्य है कि हममें से एकमनुष्य अतिचतुर और प्रवीण नगर में बिदेशी के बेषसे जावे गली गली महल्ला महल्ला फिरके मालूमकरे कि कौन मनुष्य नगर में इनदिनों मरा है और वह कहां रहताहै जब इतना मालूम होगा तो उससमय कोई और यत्न कियाजावेगा उनमें से एक ठगने कहा मैं इस कार्य्य के निमित्त नगर में जाताहूं या तो उस मनुष्य का ठिकाना मालूम कर तुमसे कहूंगा या अपने प्राण देडालूंगा निदान वह ठग रात्रि को नगर में आया और भोर को चौक में गया तो मुस्तफ़ा की दूकान के सिवाय सबदूकानें बन्दपाईं वह दरज़ी अपनी दूकानमें अपनाकाम हाथ में लियेहुये मोढ़ेपर बैठाहुआथा इसने जाके उसे प्रणाम किया और कहा अभी अँधियाराहै तुम इससमय अपना कार्य क्योंकर कर सक्तेहो मुस्तफ़ा ने कहा जानपड़ता है कि तुम बिदेशीहो इसबुढ़ापे के ब्यापनेपर भी मेरीदृष्टि अबतक ऐसी तीव्रहै कि अभी कलकेदिन अँधियारे घर में एकलोथका क़फ़न सिया यह बात सुनकर ठग अपने मनमें समझा कि इस बृद्धका उत्तर मेरी अभिलाषाके अनुकूल है फिर इस भेदके अधिक खुलने के लिये कहा कि मालूमहोताहै कि

तुम क़फ़न सिया करतेहो मुस्तफ़ाने कहा जो कुछ कि हो मुझसे कुछ और अधिक मतपूंछो ठग ने एक अशरफ़ी उसी दरज़ी के हाथ में रखके कहा मैं कोई भेद तुमसे नहीं पूछता केवल इतनाही चाहताहूं कि मुझे पतेसे या अपने साथ लेजाकर उस घरको बतादो जिसमें तुम क़फ़नसीनेको गयेथे मुस्तफ़ाने लालच के बशकहा उस घरको तो मैंने अपनी आंखोंसे नहीं देखा मुझे एकस्त्री एकमहलमें लेगई थी उसे मैं निस्संदेह जानताहूं वह मेरे नेत्रों में पट्टीबांध एकघर में लेगई और एक अँधियारे मकान में मेरी आंखें खोलकर मुझे वह लोथ दिखलाई और उसकाक़फ़न सिलवाया फिर मेरेनेत्रोंमें पट्टीबांध उसी स्थानमें जहांसे कि लेगई लाकर छोड़गई और पट्टी खोलदी भला मैं क्योंकर तुझे उस मकान को दिखाऊं ठगने कहा मुझे वहां लेचल जहां से तेरी आंखें बंदकीथीं कि मैं तेरी आंखोंको रूमाल से बांधूं और तेरेसाथरहूं तू उसी बिचारसे चलियो जैसा कि पहिले पट्टी बांधकर चलाथा शायद इस उपाय सेही मुझे वह घर मालूम होजावे यदि आप मुझपर इतनी दया करोगे तो मैं एक अशरफ़ी और तुम्हारी भेंटकरूंगा इतना कह एक अशरफ़ी और मुस्तफ़ा के हाथमें धरदी मुस्तफ़ाने उनदोनों अशरफ़ियों को जेबमेंरख ठगसे उसीप्रकार से जानेकी प्रतिज्ञा की फिर उसने अपनी दूकान उसी भांति खुलीछोड़ी और उसको उसजगहपर लाकर कहा यह स्थान वही है जहांसे मुझे वह स्त्री आंखेंबन्दकरके लेगईथी ठगने रूमाल उसकी आंखोंमें बांधा और उसके साथ सिधारा मुस्तफ़ा उसीभांति उस ओरको चला जिधर पहिले मरजीनाके साथ गयाथा और इतनाही चलकर खड़ा होगया कि यहींतक पहिले भी आया था उस ठगने शीघ्र एक चिह्न खड़ियाका उसपर करदिया और मुस्तफ़ाकी आंखेंखोल पूंछा यह किसकाघरहै उसनेकहा मैं नहींजानता मैं इस महल्लेके लोगोंको नहीं जानता ठगने जाना कि इससे अधिक मुस्तफ़ासे हाल मालूम नहीं होसक्ता तो मुस्तफ़ा का अतिगुणमानकर कहा तुमने मेरे लिये अतिपरिश्रम किया फिर वह ठग उससे बिदा हो बनको गया और मुस्तफ़ा अपनी दूकान पर आया उसीसमय

मरजीना अपनेघरसे बाहर किसी काम के लिये गईथी जब वह अपने घरपहुँची तो दरवाज़ेपर चिह्नदेख आश्चर्यमें खड़ीरहके सोची कि मेरेस्वामीको किसी बैरीने पहिंचानने के लिये यह निशानकिया न जानिये क्या उपाधिमचे सो उसने महल्लेभरके पड़ोसियों के दरवाज़ोंपर वही निशान खड़ियाके करदिये और यह भेद किसीसे न कहा वह ठग अपने समूह में गया और सम्पूर्ण बृत्तान्त सरदार से बर्णनकिया वह सबलोग पृथक् २ होकर सरदार समेत उस नगर में आये और जब वह मनुष्य जो अलीबाबा के घरपर निशानकर गया था अपने सरदार को पहिंचनवाने के वास्ते लाया तो पहिले सरदारने एकदरवाज़ेपर खड़ियाका निशानपाया इससे वह समझा कि यह घर उसी मनुष्यकाहै जिसको हम ढूंढ़ते हैं फिर जब उसकी दृष्टि दूसरे और तीसरे किन्तु महल्लेभर के दरवाज़ों पर पड़ी तो वही ठीकचिह्न सबद्वारों में पाकर आश्चर्य में हुआ कि हम क्योंकर उस घरको मालूम करें वह पहिलाठग इस हालसे अत्यन्त लज्जित हुआ और उसको उत्तर देते न बनिआया निदान सौगन्द खाके अपने सरदार से कहा कि मैंने उसी एकदरवाज़ेपर निशान किया था परन्तु मैं नहीं जानता कि क्योंकर और दरवाज़ोंपर एक २ चिह्न बनाहुआ है इससे उस दरवाज़े को भलीभांति नहीं पहिंचानसके फिर वह सरदार वहांसे चौकमें आया और अपने साथियों से जो वहां मिलतेगये कहनेलगा हमारा परिश्रम ब्यर्थगया और वहद्वार न पासके इस बृत्तान्त को अपने सब साथियों से कहदेना अब मैं बनमें जाताहूं जो उसे मिले थे अपने सरदारके साथ उसी कन्दराकी ओर लौटगये जब सब ठग वहां एकत्र हुये सरदार ने उस ठगको जो निशानकर आया था और उसकी बात झूठ हुईथी सब के साम्हने दण्डदिया और सबसे कहा जो तुम सबमें से नगरमें जाकर मेरेचोरका ठीकपता लगाकर लावे और मुझसे आकर कहेगा मैं उसकेसाथ बड़ाउपकार करूंगा यह सुन उनमें से एकमनुष्य ने उससमूह में से निकलकर कहा मैं नगरको जाताहूं और उसका घर मालूमकर उसका समाचारलाय तुमको देताहूं सरदारने उसे पारि-

तोषकादि देकर बिदाकिया वहभी पहिले मुस्तफ़ा दरज़ी के पास आया और पहिले ठगकी सदृश दरज़ी को अशरफ़ियां दे उसे राज़ी किया और नेत्रों में पट्टी बांध अलीबाबा के घरतक लेगया और उसके द्वारपर लाल चिह्न किया क्योंकि श्वेत चिह्नों में लालचिह्न वाला घर प्रतीत होसक्ताहै उसके चलेजाने के उपरान्त मरजीना लाल देख सोचितहुई और उसने वैसाही चिह्न और दरवाज़ों पर भी करदिया और चुपकी होरही उस ठगने अपने समूह में अपने सरदार से कहा मैं द्वारे पर चिह्न कर आयाहूं अब वह दरवाज़ा औरोंसे स्पष्ट प्रतीत होताहै वह सरदार कई ठगोंसहित वहां आया तो उसने पूर्व्ववत् सब द्वारों के एकसे चिह्न पाये इससे खिसियाना हुआ और अपने घरको लौटकर उस दूसरे ठगको भी यथोचित दण्डदिया फिर सोचनेलगा कि दो मनुष्यों से चूकभई और दण्ड पाया निश्चयहै कि अब कोई मनुष्य इसकाममें पग न डालेगा इससे उत्तमहै कि आप नगरमें अकेले जाके बैरीका घर मालूमकरूं फिर आपही अकेला नगर में आके उसी दरज़ी के बताने से जिसको बहुतकुछ दियाथा अलीबाबाके घरतकपहुँचा उसपर कोई चिह्न न किया किन्तु दोबेर भीतर बाहर से उस द्वारेको देख और उसके निशानों को भलीभांति ध्यान में रख फिर बनमें गया और अपने समूह से कहा मैं उसको भलेप्रकार देख आयाहूं उसके पहिंचानने में अब धोखा न पड़ेगा परन्तु तुम एक कामकरो कि उन्नीसखच्चर मोल लो और एक कुप्पा तैलका और सैंतीस कुप्पे खाली इकट्ठे करो कि हरएक कुप्पेमें एकमनुष्य तुममें से मेरे और उन क़ैदी दो मनुष्यों के सिवाय शस्त्रसहित बैठें और दोकुप्पे एकखच्चरपर लादे जावें उन्नीसवें खच्चरपर एकमनुष्य और दूसरी ओर उसके कुप्पा तैल का रक्खाजावे और हम भठियारों के बेष में नगर के भीतर खच्चरों समेत जावें और रात्रिको उसीदरवाज़ेपर पहुँच उसके धनी से रात्रिके रहने के लिये कहें फिर वहां रहकर रात्रिको सब मनुष्य कुप्पों में से निकलकर उसे मारडालें और जितना कि द्रव्य वह यहांसे उठाकर लेगयाहै उन खच्चरोंपर लादकर लेआवें यहमत सब

ने माना और गांवमें जाकर खच्चर और कुप्पे मोललाये और जिस भांति उसने कहाथा एक एक ठग उस कुप्पे में बैठा और कुप्पों के ऊपर तैलमलदिया कि सबकुप्पे तैलके कुप्पे दिखलाई देवें फिर उस सरदारने अपना वेष तैल बेंचनेवालों का बनाया और उन्नीस खच्चरोंपर सैंतीस कुप्पे जिनमें एक एक ठगको बैठाया था और तैल का कुप्पा लादके नगर में ऐसे समय लाया कि अलीबाबा के घर सन्ध्याको पहुँचा संयोगबश उससमय अलीबाबा भोजनकर अपने दरवाज़े पर टहलताथा सो ठगों के सरदारने उसे दण्डवत् करके कहा मैं अमुक गांवका रहनेवालाहूं और तैलका बहुधा ब्यापार करताहूं परन्तु आज सन्ध्या होगई इसलिये शोचितहूं कि रात कहां बिताऊं जो आप कृपाकर मुझे खच्चरों सहित अपने घर में जगहदें तो मैं कुप्पे उतारूं और घोड़ोंका दाना घास करूं अलीबाबा उस दुष्ट का शब्द पहिचानकर भी कि वह उसने बृक्षपर से कन्दरा के भीतरसे सुनाथा उसे भठियारेके स्वरूपमें देख पहिचान न सका कि वह ठगों का सरदारहै सुशीलतासे उसकी बातको स्वीकार कर कहा बहुत अच्छा आजकी रात्रि मेरे घरमेंरहो कि एकबिशाल कोठा खालीकरके उसे बतला दिया कि इसके भीतर तुम उतरो और अपने खच्चरों को बांधो और एक सेवकको दाने घासके लिये नियत किया और मरजीना से कहा एक मेहमान मेरेघरमें आयाहै उसके लिये जल्दी भोजन बना और स्वच्छ शय्या बिछाकर तय्यार रख जब ठगों का सरदार कुप्पे उतार चुका तो अलीबाबा ने उसका बड़ा सन्मान किया और उसके सम्मुख मरजीना को बुलाके आज्ञादी कि मेरे मेहमानकी बड़ी सेवा कीजियो जिससे कि उसे किसीप्रकार का परिश्रम न पड़े और भोरको मैं हम्माम करूंगा गर्म्म जल तय्यार रखियो और एक जोड़ा बस्त्रका निकाल अब्दुल्ला नौकरको दे कि उसे स्नानके उपरान्त मैं पहनूंगा और मेरे पीनेके लिये भोरके वास्ते शोरुवा रातहीको तय्यार रखियो मरजीनाने कहा बहुत अच्छा जिस २ कामकी आपने आज्ञादी है उसे मैं समयपर करूंगी अलीबाबा यह आज्ञा मरजीनाको दे अपने सोनेकी जगह में जाय सोरहा

और ठगोंका सरदार भोजन करनेके उपरांत अश्वशालामें गया और खच्चरों और साथियों को भोजन खिलाया फिर हरएक कुप्पेके पास जिसमें मनुष्यथे गया और धीरेसे अपने साथियों को समझा बुझाकर कहा आधीरात्रि को जब मैं तुमको बुलाऊं तो तुम तुरन्त कुप्पेको मुँहसे पेंदीतक छुरी से काटकर निकलआना फिर वह सरदार आज्ञा देकर रसोई के दरवाज़े से सोनेकी जगह में आया मरजीना दीपक लिये उसके साथथी उसने उस सरदार से पूंछा कोई वस्तु तुमको और आवश्यक हो तो मुझसे कहो उसने कहा अब मुझे और कुछ नहीं चाहिये यहकह उस दीपकको बुझादिया और शय्यापर जाय लेटा और अपने मनमें कहा एक नींद सोके उठूंगा और अपने साथियों को अपने कार्य्यके लिये बुलाऊंगा मरजीना ने स्वामीकी आज्ञानुसार एक जोड़ा सफ़ेद कपड़ों का निकाल अब्दुल्ला नौकरको कि वह उससमय तक जागताथा दिया फिर उसने शोरुवा पकाने के लिये भाजन चूल्हेपर रक्खा और आंच करदी थोड़ीदेर के पश्चात् उसको शोरुवा देखने के लिये दीपककी आवश्यकता पड़ी अकस्मात् दीपक सब बुझगयेथे और तेल घरमें न था और कोई मोमकी बत्ती भी उससमय उसे न मिली वह दासी दीपक जलाने के लिये अतिशोचित थी अब्दुल्ला सेवकने उसे चिन्तितपाके पूंछा तू क्यों इससमय शोचमें है उस मकानमें बहुतसे कुप्पे तेलके रक्खे हैं जितना तुझे तेल चाहिये लेआ यह कहके सेवक तो इसबात को बिचारकर सोरहा कि प्रभातको अपने स्वामी के साथ मुझे भी हम्माम जानाहोगा इससमय अवश्य है कि सोरहूं और मरजीना अकेली तेलका लोटा उठा उस मकानमें जहां तेल के कुप्पे बराबर रक्खे थे गई जब वह एक कुप्पे के समीप पहुँची तो उसमें ठग जो अपने सरदारके आगमनकी बाट देखताथा आहटपाके धीरेसे पूंछनेलगा क्या हमारे निकलनेका समयहै मरजीना उसका शब्दसुन यद्यपि उसने बहुत धीरे से पूंछाथा भयभीत हुई और उनकी धूर्त्तता को समझगई और उसके प्रश्नका उत्तर सरदारकी भांति यह दिया कि अभी नहीं अर्थात् अभी तुम्हारे निकलने

का समय नहीं पहुँचा फिर वह दूसरे कुप्पे के पासगई वहां से भी यही शब्दसुना और उसने वही उत्तर दिया निदान इसीभांति सब कुप्पोंपरगई तो सोची हे ईश्वर! सबठगों को मेरेस्वामीने तैलबेंचने वाला समझकर उतारा और यह सबचोर हैं कि लूटने और उसके बधकरने के लिये तैल बेंचनेवाले का वेष धरआये हैं निदान मरजीनाने तैलवाले कुप्पे से कुल्हड़ा तैलका भरलिया और रसोई में जाकर दीपक में तैलडाल उसे जलाया और बड़ी एकडेग निकाल उस कुप्पे में से तैललाकर भलीभांति गर्म किया जब खूब गर्म होगया तब मरजीना उसमें से एक डेगचीभर एक सिरे से कुप्पोंमें डालनेलगी वह सबठग उन्हीं कुप्पों में जलभुन के रहगये और उस चतुर और बुद्धिमान् बांदी के उपाय से झगड़े और शोरके बिना वह सब के सब मरगये फिर मरजीना उस डेगसमेत रसोई में दरवाज़ा मूंदके बैठरही और अलीबाबा के लिये शोरुवा पकाने लगी एकघड़ी न बीती थी कि ठगोंका सरदार जागा और दरवाज़े को खोलकर क्या देखा कि चहुँओर अँधियारा है उसने हांकदी परन्तु वहां से आवाज़ न आई क्षणभरके उपरांत उनसबको फिर पुकारा तथापि कोई उत्तर न आया तीसरी बेर फिर बड़ेज़ोरसे आवाज़दी फिर भी कुछ न सुना तब व्याकुलहो उसी मकान में गया जहां वह सब कुप्पे रक्खे हुये थे उसने बिचारा कि यह सब अचेत सोगये हैं वहां जाय सबको जगाऊं जब एक कुप्पे के पासगया तो उसमें से जलेहुये मनुष्य की दुर्गन्ध आई और उसे बहुत गर्मपाया इसी भांति सम्पूर्ण कुप्पों के निकटगया और यहीदशा देखी तब आप भी भयसे दीवारपर चढ़ बागकी ओर कूदपड़ा और वहां से भागा जब बहुत देरहुई और वह सरदार वहां से न लौटा तो मरजीना ने जाना कि वहदुष्ट पिछवाड़े से कूदभागा क्योंकि बाहरके दरवाज़ेपर दो कुफुल लगेहुये थे फिर मरजीना उनठगों से सुचित्तहो सोरही दोघड़ी के तड़के अलीबाबा उठ हम्मामभेंगया अबतक उसे रात्रिका समाचार मालूम न हुआ जब अलीबाबाने सूर्य्योदय के प्रथम हम्माम किया तब उन कुप्पों को अपने घरमें रक्खा देख आश्चर्य्य में हुआ

कि क्या अब तक वह ब्यापारी अपने खच्चरों पर कुप्पेलादकर बाज़ार नहींलेगया उसने मरजीनासे इसकाहेतु पूंछा उसने उत्तरदिया कि ईश्वर आपकी १२० वर्षकी आयुकरे मैं इस ब्यापारीका बृत्तान्त आपसे एकांत में कहूंगी अलीबाबा उसके साथ एकान्त में गया मरजीना दरवाज़ेको मूंद उसे एककुप्पे के निकटलेगई और कहनेलगी कि देखिये इसमें तेलहै जब उसने कुप्पे में देखा तो उसे मनुष्य दृष्टि पड़ा वह चिल्ला और भयखाभागा उसने कहा तुम इस मनुष्य से मत डरो यह तुमको कष्ट नहीं देसक्ता यह मरापड़ाहै अलीबाबाने पूंछा कि यह मनुष्य क्योंकर मारागया उसने कहा इस हालको आप से कहूंगी अब चुपके होरहिये कि तुम्हारे पड़ोसी इस भेदको जान न लें अब तुम एकसिरेसे दूसरे सिरेतक देखतेजाओ उसने एकसिरे से दूसरे सिरेतक देखा सबको मराहुआ पाया महाआश्चर्य्य से कभी मरजीनाको देखता और कदापि कुप्पों की ओर दृष्टि करता फिर मरजीनासे पूंछा वह ब्यापारी क्या हुआ उसने कहा वह ब्यापारी नहीं था उसका हाल भी तुमसे कहूंगी कि वह कौनथा और क्या हुआ अब तुम हम्मामसे आयेहो ईश्वरने कुशल की शोरुवा तय्यार है उसकोपीजिये उसने कहा इसहालको मुझसे बर्णनकर जिससे मुझको धैर्यहो उसके सुनने के लिये अत्यन्त बिह्वल होरहाहूं सो वह इसप्रकार से कहनेलगी हे स्वामी! जब आप मुझे शोरुवा पकाने के लिये आज्ञादेकर सोगये मैंने एक बस्त्रोंका जोड़ा निकाल अब्दुल्लाको दिया और शोरुवा पकानेकेलिये चूल्हे में आंच करती रही जब शोरुवा पकचुका तो उसको साफ़ करने के लिये मैंने चाहा कि दीपक जलाऊं घरमें तैलहोचुकाथा अब्दुल्लाने मुझे चिन्तित पाके कहा कि उसमकानमें बहुतसे कुप्पे तैलके भरे रक्खेहैं जितना तैल चाहिये जाकर लेआ मैं तैलका पात्रलेकर एक कुप्पे के पास गई उसमें से एक शब्द सुना कि यह समय निकलनेका है मैं वह शब्द सुन कुछ न डरी और तुरंतजानगई कि इस महादुष्ट ब्यापारी ने तुम्हारे मारने के लिये यह उपाय किया है मैंने उत्तर दिया कि अभी निकलनेका समय नहीं पहुँचा फिर दूसरे कुप्पे के निकटगई

वहांभी यही शब्द सुना उसे भी यही उत्तर दिया और इसीभांति पारीपारी से सब कुप्पों के निकटगई और पूर्वोक्त उत्तरदेतीरही वह सब अपने सरदार की आज्ञाकी बाट देखते थे जिसको आपने व्यापारी समझकर अपने घर में उतारा था और उसका भलीभांति सन्मान किया था वह दुष्ट अपने लोगों को तुम्हारे मारने और घर लूटने के लिये लायाथा और चाहताथा कि तुमकोमारे परन्तु मैंने उसे अवसर न दिया शीघ्रही अन्त के कुप्पे में से तैलभरलाई और दीपक जलाया फिर मैंने रसोई में से एक बड़ाबर्तन तैलसेभर उसे चूल्हेपर रक्खा और उसके नीचे प्रचण्डअग्निजलाई जब वह तैल औट गया तो इतना कि हरएक मरजावे तैल डालतीगई और क्षणमात्रमें उनको मार रसोईमें आई और दीपकको बुझाके खिड़की में से देखनेलगी कि देखूं वह दुष्टव्यापारी अब क्याकरताहै कुछकालके उपरान्त वह जगा और कईबेर उसने अपने साथियों को बुलाया जब उसने किसीका शब्द न सुना तो वहांसे नीचे आके उन कुप्पों के पासगया और वह दशा देख मुझे अँधियारे में मालूमहुआ कि वह किसीओर को भागकर चलागया जब बहुतकालबीता और वह न फिरा तब मैं समझी कि वह बाग़से फाँदकर भागगया फिर मैं सो रही इतनाकह मरजीनाने अपने स्वामी से कहा जो कुछ सच २ था मैंने कहसुनाया और दो तीनदिन आगे मुझे इसबातके चिह्नमालूम होगयेथे परन्तु मैंने आप से नहीं कहा अब वहभी कहती हूं उसको मनलगाकर सुनिये एकदिन प्रभातको जब मैं बाहरसे घरमें आती थी एक सफ़ेद निशान मैंने अपने दरवाज़ेपर देखा और दूसरेदिन लालचिह्न उस श्वेतचिह्न के पासदेखा दोनोंबेर मालूम करने के लिये मैंने अपने सब पड़ोसियों के किवाड़ोंपर भी वही निशान करदिये जिसमें हमारा दरवाज़ा प्रतीत न होवे तुम निश्चय समझो कि यह दुष्टता उसी बनके ठगोंकी थी पहिचानने केलिये तुम्हारे द्वारपर निशान करगये थे परन्तु उन चालीसों में से न जानिये कि दोको क्या हुआ अब उन दो ठगों और सरदार से जो बचकर गयेहैं निश्चिन्त न रहना वह अवश्य तुम्हारे पीछे लगे रहेंगे और अवसरपाकर

निस्सन्देह तुमको बधकरडालेंगे और जो कुछ तुम्हारे प्राणकी रक्षाके
लिये मुझे बनपड़ा सो मैंने किया और आगेभी यथोचित प्रबन्ध
करूंगी अलीबाबा यह बृत्तान्त अपनी लौंडीसे सुनकर हर्षित हुआ
और कहनेलगा मैं तुझसे बहुत प्रसन्नहुआ अब जो कुछ तू अपने
लियेकहै मैं अपने जीतेजी उसे करदूं मरजीना ने कहा अब पहिले
अवश्यहै कि शीघ्र इन लोथों को अपने बागमें गाड़दो जिससे किसी
को यह भेद मालूम न हो अलीबाबा अपने नौकरों को अपने साथ
ले बागमें जो बहुत बड़ाथा गया और बृक्षोंके नीचे बहुतबड़ा और
गहरागढ़ा खोद उन सम्पूर्ण मुर्दों के शस्त्रछीन और उनको बाग में
ले जाकर गाड़दिया और ऊपरसे पृथ्वी कूटपीट बराबर करदी कि
जिससे कुछ चिह्न जान न पड़े और सब कुप्पे और हथियार छिपा
कर एक २ दो २ खच्चर अपने सेवकके हाथ बाज़ार में भिजवाकर
बिकवादिये और अलीबाबा बड़ी होशियारी से रहता कि उसके धन-
वान् होनेका किसी को हाल मालूम न होनेपावे और वह ठगोंका सर-
दार भागकर उसी बनमें अत्यन्त बिकलता से गया और बिचारने
लगा कि अब कोई ऐसायत्न करूं कि उस मनुष्य अर्थात् अलीबाबा
को बधंकरूं नहीं तो इस कोषका सम्पूर्ण द्रब्य निकालकर लेजावेगा
अब किसी दूसरेको अपना साथी न करूं अपने आप जिसप्रकार से
होसके अलीबाबाको मारूं फिर अपने मतलब के मित्ररख वही कार्य्य
जो पीढ़ियों से चलाआता है कियाकरूं यह मन में ठान रात्रिको वहीं
सोरहा प्रभातको जगकर कोई अपना नवीनवेष किया और वहां से
आकर एक सरायमें उतरा और वहां यह सोचा कि इतने मनुष्यों के
मरनेका हाल निस्सन्देह बादशाह को पहुँचा होगा और अलीबाबा
पकड़ागया होगा और उसके धन और उसके घरको भी बादशाह ने
छीनलियाहोगा यह बृत्तान्त निस्सन्देह नगरभर में बिख्यात होगया
होगा सरायवाले से पूंछा यहांके रहनेवालों का कोई अद्भुत समाचार
तुमने सुनाहो तो कहो उसने जो बातें दो तीनदिन के समयान्तरमें हुई
थीं और उसने देखी और सुनीथीं वर्णनकीं परन्तु उस सरदारने अपने
प्रयोजनकी कोईबात न सुनी और समझा कि वह मनुष्य अर्थात्

अलीबाबा अत्यन्त बुद्धिमान्है इतनी द्रव्य के लेजाने और मनुष्यों के मारने परभी अपनी होशियारीसे अबतकबचाहै ऐसा न हो जो तूभी उसके हाथसे माराजावे इसचिन्तापर भी उसने अलीबाबाके धोखा देनेके लिये उत्तम २ बस्तु ब्यापारकी अपने स्थानसे लाकर एकत्र कीं और चौक में एक दूकान किराये पर मोल लेकर उस असबाब को लेजाकर उसमें रखदिया और उस दूकानपर बैठ बेंचने लगा संयोगबश वह दूकान अलीबाबा के पुत्रके सम्मुख थी उस दुष्ट ने अपना नाम ख़्वाजेहसन बिख्यात किया और दूकानदारों और ब्यापारियों से उसने मित्रताकी और हरएकसे अच्छा स्वभावबर्तने लगा विशेष अलीबाबा के पुत्र से जो अतितरुण और स्वरूपवान् और सुन्दर वस्त्र पहिनता था बड़ी मित्रताकी और बहुधा उसीके पास उठता बैठता तीनचार दिन के उपरान्त अलीबाबा जो बहुधा अपने पुत्रके देखने के लिये दूकानपर आयाजाया करताथा आया वहां ठगने उसे देख पहिंचाना और उससे पूंछा कि यह मनुष्य तुम्हारी दूकानपर कौन आया करताहै उसने कहा यह मेरा पिताहै इसबात के सुनतेही वह महाधूर्त्त क़ासिम को धोखेसे बहुत प्यार करनेलगा और बहुतसी सौगातें मित्रवत् देता और बहुधा उत्तम २ भोजन बनाकर उसे अपने साथ खिलाता अलीबाबा के पुत्रने भी चाहा कि एकदिन उसको न्योतें यदि उसकाघर बहुत छोटाथा इसलिये उसने यह बात अपने पितासे कही उसके पिताने कहा बहुत अच्छा तुम भी अपने मित्र की ज्यवनार करो जिसभांति उसने तुम्हारा आदर कियाथा करना कल शुक्रबार है तुम बड़े ब्यापारियों के सदृश अपनी दूकान मूंद दोपहर के उपरान्त टहलते हुये मेरे घर में लेआओ मैं मरजीनाको आज्ञा देरखता हूं कि वह भोजन तय्यार रक्खे निदान दूसरेदिन शुक्रबारको ठग और अलीबाबा का पुत्र टहलने को निकले लौटती समय अलीबाबा का पुत्र उसको उसी कूचे में जिसमें अलीबाबा रहता था लेआया जब घरके द्वारपर पहुँचे तो उसने ठगको वहां ठहराकर द्वार खुलवाया और ठग से कहा यह महल मेरे पिताका है जब से उसने मेरे साथ तुम्हारे अ-

धिक स्नेहका बृत्तान्त सुना तबसे तुम्हारे साथ भेंट किया चाहताहै यदि भीतरचलके उनसे भेंटकीजिये तो मुझे हर्ष होगा यद्यपि ठग की यही इच्छाथी कि किसीभांति मेरा आवागमन अलीबाबा के घरमें हो तो अवसर पाकर अपना कार्य साधूं परन्तु उससमय वह न गया और अलीबाबाके पुत्रसे चाहा कि कोई बहाना करके चला जावे फिर अलीबाबा के नौकरने द्वारखोला तो वह उसकी बहुतसी बिनतीकर उसको भीतर लेगया जबवह घर में गया तो वह अली- बाबा से प्रसन्नतापूर्ब्बक मिला जिससे जानपड़े कि वह अपनी प्रसन्नता से आया है अलीबाबा ने भेंटकर आनन्दित हो उससे कुशल पूंछी और कहनेलगा तुम मेरे पुत्रसे अत्यन्त स्नेह रखतेहो और उसपर बहुत दया करते हो इसलिये मैं तुम्हारा बहुत गुण मानताहूं और मुझे भलीभांति सूचित है कि जितनी मैं उससे प्रीति रखता हूं उससे अधिक तुम उससे स्नेह रखतेहोगे ठगने भी बहुत सी बातें प्रसन्न करनेकी कहके कहा तुम्हारे पुत्रसे मैं राज़ीहूं यद्यपि अभी वह छोटाहै परन्तु ईश्वरने उसे सुबुद्धिदी है और बड़ा सुपूतहै फिर वह बड़ी प्रीति से बार्त्तालाप करनेलगा थोड़ीदेर के पीछे ठगने बिदामांगी कि अब मैं जाताहूं अलीबाबा ने उसे ठहराया कि तुम कहांजातेहो मैंने तुम्हें न्योताहै कृपाकरके भोजन करके जाना यद्यपि वह भोजन ऐसे नहीं कि जिनको आप रुचिपूर्बक ग्रहणकरें परन्तु मुझ पर अनुग्रहकर थोड़ासा भोजन कीजिये उसने कहा मैं आप की दयालुतासे मन बच से कृतज्ञ हुआ और तो कुछ चिन्ता नहीं परन्तु एक कार्य्य ऐसा है जिससे मैं अधिक नहीं ठहरसक्ताहूं और न भोजन करसक्ताहूं अलीबाबा ने पूंछा वह कौनसी बात है उसने कहा मुझे ऐसा रोगहोगयाहै कि जिससे मैं नमकदारभोजन नहीं कर- सक्ता अलीबाबाने कहा जो यही कारणहै तो अभी सब भोजन नहीं बना मैंरसोइये से कहेदेताहूं कि किसी भोजनमें नोन न डाले ठहरजा- इये मैं अभी आताहूं फिर अलीबाबाने रसोई में जाकर मरजीनासे कहा कि थोड़ासा भोजन बिना नमक पकाइयो वह यह सुनकर आश्चर्य्य में हुई और अलीबाबा से पूंछा कि ऐसा कौन मनुष्यहै कि जो बिना

नमकके भोजन करेगा अलीबाबा ने कहा कोई मनुष्यहो तुझे इससे क्या कामहै जो मैं कहताहूं वहीकर मरजीना ने उनसे तो यही कहा कि बहुत अच्छा मैं वैसाही भोजन पकाऊंगी परन्तु अपने मनमें सोचने लगी वह मनुष्य कैसाहै जो नोन नहीं खाता मैं भी चलकर देखूं और भोजन पकाकर अब्दुल्ला दासके साथ भोजनके लिये भोजनके पात्र बिछानेगई यद्यपि वह ठग व्यापारियों के वस्त्र पहिने था और अपनी सूरत बदलाईथी तथापि उसको देखतेही उसने पहिंचान लिया फिर मरजीनाने ध्यानधरके मालूम किया कि वह ठग एक खड्ग अपने कपड़ोंमें छिपायेहै और यह सोची कि यह दुष्ट इसीलिये मेरेस्वामी का नमकनहीं खाता कि उसे छलसे मारडाले यह उसका बड़ा शत्रुहै फिर मरजीनाने अपने मनमें कहा कि जो तू सन्ध्याको मेरेस्वामी के मारने का इरादा करेगा मैं भोरहीको तुझे मारडालूंगी निदान वह पात्र बिछा और भोजन परसकर चलीगई फिर जब अलीबाबा और ठग भोजन करचुके तो अब्दुल्लाने मरजीनासे कहा कि अब सूखे मेवेलेचल मरजीनाने वहांके पात्र उठालिये और फलोंकी तश्तरियां लेगई फिर उसने एक छोटी चौकी मद्यकी अलीबाबा के पास बिछाकर उसपर तीन गिलास रक्खे और आप अब्दुल्लासमेत रसोई जेवने के बहाने दूसरे मकान में गई ख़्वाजेहसन अर्थात् ठगोंका सरदार अवसर पाकर प्रसन्नहुआ और सोचा इसीसमय अलीबाबासे अपना बैरलूं और एक खड्गमार उसे बधकरूं फिर बागमें से निकलजाऊं उसका पुत्र मुझे इसकाममें रोक नहींसक्ता यदि थोड़ाभी हाथ पांव हिलावेगा तो उसेभी मारके एक ठिकाने लगाऊंगा परन्तु यह कार्य्य उस समय सिद्ध करना चाहिये जिससमय अलीबाबाका दास और उस की रसोइन जाकर भोजनकरें मरजीना उसकी तेवरी देख परखगई और समझगई किऐसा न हो कि यह दुष्ट मेरेस्वामीको दुःख पहुँचावे उत्तम है कि चलके प्रथम उसीको किसीभांति से मारूं फिर उसी हितैषी लौंड़ीने तुरन्त नाचनेके वस्त्र पहिने और एक पगड़ीशिरपर धरली और सुन्दर रूपे के मुलम्मे का पटका कमर में बांधा और उसमें एक खड्गरख अपने मुखको छिपानेके लिये अतिस्वच्छ डुपट्टा

ओढ़ा जब वह बेष बदलचुकी तो उसने अब्दुल्ला से कहा कि अपना बाजा उठाले कि हमदोनों मिलकर अपने स्वामीके मेहमानको नाच गाकर प्रसन्न करें अब्दुल्ला तबला बजाताहुआ मरजीना के आगे चला फिर वह दोनों उस मकान में जिसमें अलीबाबा और उसका मेहमान था आये और उन्होंने नाचने गानेकी आज्ञाली अलीबाबा ने आज्ञा देकर कहा कि ऐसे तमाशे और नक़लें कर जिससे ख़्वाजेहसन देखकर सन्तुष्ट होजाय अब्दुल्ला पास जाकर बाजा बजाने लगा तो मरजीना उसके आगे होकर नाचने लगी और नानाप्रकार के सुन्दर नाच दिखाकर सब को आनन्दित किया फिर मरजीना कमरसे खड्ग निकाल हाथमें ले नाचनेलगी सब नाचोंमें से उनको एकभांतिका नाच अच्छा मालूमहुआ कि नाच करते कभी मरजीना खड्गको बगलमें रखती और कभी पेटपर थोड़ी देर के उपरान्त मरजीना ने तबला अब्दुल्ला से लेकर अपने बायें हाथ में पकड़ा और खड्गको दाहिने हाथमें रख पारितोषिक लेनेको अलीबाबाके पासगई उसने उसे एक अशरफ़ीदी फिर वह अलीबाबा के पुत्र के पासगई उसने भी एक अशरफ़ी दी ख़्वाजेहसन भी समझा कि वह मेरे पासभी आवेगी तो वह एक अशरफ़ी निकालने लगा मरजीना ने अवसर पाके बड़ी होशियारी और साहस से बड़े बेगके साथ खड्ग उसके हृदयमें मारा कि ख़्वाजेहसन उसीसमय मरगया अलीबाबा इस दशाको देख भयभीत हुआ और मरजीना पर क्रोध करके कहनेलगा हे अभागिनी! तूने यह क्या काम किया कि जिस से मैं माराजाऊं उसने कहा मैंने यह काम आपके मारेजाने का नहीं किया किन्तु आपके प्राणकी रक्षाकी है इसके वस्त्रोंको खोल कर देखो जब उसने उसके कपड़े खोले तो उसमें एक छोटीसी पैनी छुरी पाई फिर उसने अलीबाबा से कहा कि यह तुम्हारे प्राणका बैरी था और भलीभांति देखो और पहिंचानो कि यह वही तेल बेंचने वाला ठगहै वा नहीं जो तुम्हारे मारने को आयाथा इसीलिये नहीं चाहताथा कि तुम्हारा नोनखावे जिससमय आपने बेनमक भोजन पकानेकी आज्ञादीथी उसीसमय मैंने आकर उसको देखा और पहिं-

चाना और समझी कि वह तुम्हें मारना चाहताहै ईश्वरका धन्यवाद है कि वही मेरा बिचार सत्यहुआ और आपके प्राण उसी परमात्मा सच्चिदानन्द ईश्वरने बचाये अलीबाबाने मरजीनाका बड़ा गुणमाना कि तूने दूसरी बेर उसके हाथ से मुझे बचाया फिर उसे कण्ठ से लगाकर दासित्व से उसे छुड़ाया और कहने लगा कि इस हित के बदले तेरा बिवाह अपने पुत्रकेसाथ करताहूं सो उसने अपने पुत्र से कहा मैं जानताहूं कि तुम सुपूतहो जो मैं कहूंगा वह तुम मानोगे मुझे अभिलाषाहै कि मरजीनाको तुमसेब्याहदूं वह अत्यन्त हितैषी है अब यह निश्चयमानो कि ख़्वाजेहसनका तुम्हारेसाथ मित्रताकरने से यही प्रयोजनथा कि वह मुझेमारे परन्तु मरजीनाने अपनी बुद्धिमत्ता और यत्नसे उसे मारकर सबको बचाया इतनासुन वह इसबात पर राज़ी हुआ फिर अलीबाबा और उसके पुत्रने इस होशियारी से उसबाग़ में ठगकी लोथको गाड़ा कि बहुत बर्षोंतक यह बृत्तान्त किसी को बिदित न हुआ फिर अलीबाबा ने अपने पुत्र का बिवाह मरजीनाके साथ बड़ी धूमधामसे किया और अपने पड़ोसियों और इष्ट मित्रों को निमन्त्रणकर यथोचित सत्कार किया और बड़े नाच रंग दिखाये और अलीबाबा ठगोंके भयसे उस दिनके सिवाय कि अपने भाई क़ासिमकी लोथ कन्दरासे उठालाया था उस ख़ज़ाने में न गया परन्तु एक दिन वह अपने घोड़ेपर सवार होकर उस कोषकी ओर गया मार्ग में मनुष्य और घोड़ों के चरणचिह्न न देखकर अति प्रसन्नहोगया और दरवाज़ेके पास जाकर घोड़ेसे उतरा और घोड़ेको वहीं बांधदिया और उस दरवाज़ेके पास जाकर वही मन्त्रपढ़ा तुरन्त दरवाज़ा खुलगया और उसीके भीतर जाकर देखा कि वह सब धन और बस्तु उसीभांति रक्खी है इससे उसे बिश्वासहुआ कि अब कोई भी ठग जीता नहीं इसके सिवाय कोई दूसरा उस द्रव्यके भेद को न जानता था फिर वह कईबार अशरफ़ियां वहांसे भरके घरमें लाया और अपने पुत्रको वही कन्दरा दिखाई और खुलने और मूंदनेका भी मन्त्र उसे सिखादिया निदान वह दोनों उस असंख्य द्रव्य से जन्मभर आनन्द में रहे मलका शहरज़ाद ने इस कहानी को

भोरहोते पूर्णकिया और दूसरी रात्रि को और एककहानी कहनेलगी॥

## बुग़दादनगरके निवासी अलीख़्वाजह ब्यापारीकी कहानी ॥

ख़लीफ़ाहारूंरशीदकी सल्तनत में एकब्यापारी बुग़दादमें रहता था और थोड़ीसी बस्तुसे ब्यापार करता और अपने दादे परदादेके बनायेहुये घरमें रहता उसके कुटुम्ब में से कोई न था उस ब्यापारीने बराबर तीन रात्रि स्वप्नदेखा कि कोई सत्पुरुष कहता है कि मक्केकी यात्रा जो तुझपर उचितहै क्योंनहींकरता अलीख़्वाजह इसस्वप्नको देख बहुतडरा और उस सत्पुरुषका बचन उसके मनमें ऐसा गड़ा कि अपना सब असबाब और दूकान बेंचकर मक्के के जानेकी इच्छा की और अपने घरमें एक किरायेदारकोरख बिदेशियोंकेसाथ जो मक्के को जातेथे होलिया और अपनेजाने के पहिले एकहज़ार अशरफ़ी जो राहख़र्चसे अधिक बचरही थीं एकठिलिया में रख और ऊपर उसके जैतूनका तेलभर उसकामुख भलीभांति बन्द किया और एक सौदागर जो उसकापुराना मित्रथा उसके घरमें लेगया और कहने लगा कि आपने सुनाहोगा कि इनदिनों मैं मक्केकी यात्राको जाताहूं सो एकठिलिया जैतूनकेतेलकी तुम्हारेपास रखनेकोलायाहूं इसको मेरे लौटनेतक अपनेपास रखियो उस ब्यापारीने अपने गोदामकी कुंजी अलीख़्वाजे को देकर कहा तुम आपगोदाम को खोलकर जहां कि तुम चाहो उसको रखदो और लौटकर आपही आकर लेलेना अलीख़्वाजे ने उसठिलियाको एक मकानमें रख और उसका ताला बन्दकर उसकी कुंजी उसी ब्यापारीको सौंपदी और अपने ब्यापार की बस्तुको एकऊंटपर लादकर सवारहुआ और यात्रियों के साथ चला जब वह मक्केमें कुशलपूर्वक पहुँचा और ज़िलहिज्जके महीनेमें कि हज़ारों मुसल्मान वहां पहुँचकर मक्केकी परिक्रमा करते हैं उस ने भी परिक्रमाकी जब वह निश्चिन्त हुआ तो असबाब बेंचने को निकला अकस्मात् दो ब्यापारी सैरकरते हुये अलीख़्वाजह की दूकानपर गये और उसकी बस्तु को देख प्रसन्नहुये और पसन्दकर परस्पर कहनेलगे कि यह ब्यापारी इस असबाबको क़ैरू में जो मिसरकी राजधानी है लेजावे तो बड़े मोलसे बिकेगा अलीख़्वाजा कि

पहिलेसे मिसरकीप्रशंसासुन मनमें देखनेकी लालसारखताथा इस बातकोसुन अधिकप्रसन्नहुआ और बुग़दादकाइरादा छोड़कर मिसरकेजानेकी दृढ़इच्छाकी और यात्रियों के समूहके साथ उधरको सिधारा जब वहांपहुँचा तो उस बिचित्र देशमें सैरकर अतिहर्षित हुआ और अपने असबाबको वहां बेंच बहुतसा लाभ उठाया और दूसरा असबाब मोललेकर दमिश्क में जानेकी उसे इच्छाहुई और एकमास पर्य्यन्त क़ैरूमें रहकर अहरामकी सैरकी जो नीलनद के तटपर कई मंज़िलोंसे दीखते हैं और २ भी नीलनद के कूलके बसे नगर देख दमिश्ककी ओर चला मार्ग्ग में रोदसलेम आदिक मसजिदोंका जो मुसल्मानों ने बनाईथीं दर्शनकिया फिर दमिश्क नगरमें गया उस नगरको बहुतसा बसाहुआ और अनेकभांति से अलंकृत पाया और उसमें कुंड बहुतदेखे और खेती और बाग़कोखिलाहुआ और फलसमेतदेख बुग़दादको भूलगया फिरवहांसे हलब मवस्सल और शीराजको गया और वहां से आनन्दपूर्बक सातबर्षके उपरान्त बुग़दादमेंपहुँचा अब धूर्त्तता उसबुग़दादी ब्यापारीकी सुनिये कि इस सातबर्ष के समयान्तरमें उसने अलीख्वाजह और उसकी बस्तुकी कुछभी सुधि न की अकस्मात् एकदिन सन्ध्याको अपनीस्त्रीके साथ भोजनकरताथा तो उससमय ज़ैतूनकेतेलकीबार्त्ताचली उसकी स्त्री ने कहा मेरामन उसके खानेको बहुत चाहताहै उसनेकहा तुम्हारी इस वार्त्ता से मुझे अलीख्वाजह स्मरण होआया कि सातबर्षबीते हैं कि मक्केकीयात्राको गयाहै और जातीसमय एकठिलिया ज़ैतूनके तेलकी मेरी अमुककोठरीमें छोड़गयाहै परन्तु न जानिये अब वहकहांहै पूर्ब में एकयात्रीसेसुनाथा कि अलीख्वाजह मिसरकी ओर मक्केसेगयाहै ईश्वरजानेमरगयाहै या जीताहै यदिउसकातेल बिगड़ न गयाहो तो उसमेंसे थोड़ासा निकालकरचक्खें मुझेएकबर्त्तन और दीपकदो कि उसमें से तेल निकालकर चक्खूं उसकीस्त्री कि अत्यन्त धर्म्मिष्ठाथी कहनेलगी ईश्वरके वास्ते ऐसा बुराकर्म्म मतकर कि किसीकीधरोहरमें चोरीकरे भला तुमको क्योंकर निश्चयहुआ कि वह मिसरसे जीतेजी लौटकर नहीं फिरेगा क्या तुमने किसी से उसके मरने का

समाचार सुना क्या आश्चर्य्य है कि वह कल अथवा परसों कुशल पूर्ब्बक लौटआवे उससमय तुमको इस चोरी से अत्यन्त लज्जा प्राप्तहोवेगी जो तुम उसकी बस्तु उसे पूरी न दोगे तो हमारी अत्यन्त निन्दा होगी मैं इसकामकी साथी नहीं और न उस तेलको चक्खूंगी इसके बिशेष तुम बिचारो कि सातवर्षका पुराना तेल कब भोजन करनेके योग्यहोगा मैं तुझे सौगन्ददेतीहूं कि यहकाम मतकर उस धर्म्मवतीने अपने पतिको बहुत समझाया और उसे निषेध किया इतना समझाया कि उससमय तो उसने वह इच्छा छोड़दी परंतु दूसरेसमय फिर वह ब्यापारी रिकाबी ले तेलकी कोठरीमें चला उसकीस्त्रीने कहा मैं इसकाममें तेरेसाथ नहींहूं इससे तुझपर अवश्य कोई न कोई उपाधि फैलेगी उसने कुछ न माना और कोठरी में जाकर उसने उस ठिलिया को खोला यद्यपि वह तेल सड़कर बहुत ख़राब होगयाथा तथापि उसने उसठिलियाको हिलाकर एकबर्त्तन उसतेल से भरलिया संयोग से एक अशरफ़ी तेलके साथ निकल आई ब्यापारीने अशरफ़ीको देखतेही लोभबश सम्पूर्ण तेल उड़ेल के देखा कि अशरफ़ियांभरी हैं उससमय उसने उस तेलको फिर ठिलिया में डालदिया और मुख उसका बंदकर कोठरी से निकल आया और अपनी स्त्रीसे कहा तू सत्य कहती है मैंने इस तेलको बहुतबदबूदारपाया और उसी भांति उसठिलिया के मुखको बंदकर चला आया परन्तु वहदुष्ट इसी शोचमें रात्रिभर न सोया कि किसी भांति वह अशरफ़ियां अलीख्वाजे की लेलूं फिर भोर को उसने अशरफ़ियां निकाल और नवीन स्वच्छतेल बाज़ारसे मोललाकर उस ठिलिया में भर और उसका मुख बन्दकर कोठरी में रखदिया ईश्वरकीमाया से एक महीने के उपरान्त अलीख्वाजह बुग़दाद में आकर अपने मित्र बुग़दादी ब्यापारीकी भेंटको गया उसने उससे भेंटकी और प्रकटमें अत्यन्त प्रसन्नहुआ निदान कुशल पूंछने के पश्चात् अलीख्वाजह ने अपनी बस्तु मांगी और कहा ज़ैतून के तेलकी ठिलिया देदीजिये ब्यापारी ने उत्तर दिया भाई मैं नहीं जानता कि तुमने कोठरी में कहां रक्खी है कुंजी लो और अपनी बस्तु

निकालकर लेजाओ अलीख्वाजह कोठरी में जा अपनी ठिलिया को कोठरी में से निकाल लाया और उस व्यापारी से बिदा होकर अपने घरगया जब उसने ठिलियामें अशरफ़ियां न पाईंतो अत्यन्त चिन्तित हुआ और बहुतरोया और उस व्यापारी से जाकर कहा हे मित्र ! मैं ईश्वरको साक्षी देता हूँ कि मैं यात्रा करती समय एक हज़ार अशरफ़ियां ठिलिया में रखकर गयाथा अब उनको नहीं पाता इसका क्या कारणहै यदि तुमने किसी कामकी आवश्यकता से उन को ख़र्च कियाहो तो कुछ हानि नहीं जब चाहना देना उसने अशरफ़ियोंके लेनेसे इन्कारकिया और कहनेलगा भाई जातीसमय ठिलिया ज़ैतूनके तेलकी अपने हाथसे मेरी कोठरी में रखगये थे क्या मैं जानताथा कि उसमें अशरफ़ियांथीं वा तेल सो तुम उस ठिलिया को उसी भांति उठाकर लेगये अब तुम मुझपर झूठ कलंक किस वास्ते लगाते हो यह भले मनुष्यकी बात नहीं भला रखती समय तुमने अशरफ़ियोंके बिषयमें मुझसे कहाथा तुमने तो केवल तेलका वर्णन कियाथा देखो वह तो रक्खाहै यदि अशरफ़ियां होतीं तो वह भी आकर पाते उसने उसकी बहुतसी बिनती की और बहुत रोकर कहाकि मेरी जन्मभरकी कमाई वही हज़ार अशरफ़ियां थीं आशा रखताहूँ कि मुझ पर दयाकर उनको देदीजिये उसने मुँह लाल करकहा तुम बड़े अधर्मीहो भाई यहांसे चलेजावो मेरे घर फिर न आना तुम्हाराहाल मालूमहुआ कि तुम महाधूर्त्तहो यही बार्त्ता अलीख्वाजह और व्यापारी से होती थी कि उस मुहल्ले के बहुत से मनुष्य एकत्र होगये और उनके झगड़ेका बृत्तान्त बग़दादभर में प्रसिद्धहोगया और हरएकभलेमानसने सुना निदानख्वाजहअत्यन्त व्याकुल होकर व्यापारीको न्यायाधीशके पास लेगया और सम्पूर्ण बृत्तान्त सुनाया न्यायाधीशने अलीख्वाजहसे पूँछा तेराकोई साक्षी है उसनेकहा मैंने भेदखुलनेके भयसे किसीको साक्षी नहींकिया और मैं इस व्यापारीको अपना मित्र और बिश्वासित समझेथा तब न्यायाधीशने उस व्यापारीसे सौगन्दखानेको कहा उसने सौगन्दखाकर कहा कि अलीख़्वाजह की अशरफ़ियों को मैं नहीं जानता न्याया-

धीशने ब्यापारी को निर्दोष समझ छोड़दिया अलीख्वाजह न्याया-धीशके न्याय से निराशहुआ और दूसरे दिन एक अर्ज़ी लिखकर ख़लीफ़ा हारूंरशीदको जिससमय कि वह शुक्रवारकी निमाज़ पढ़ने के लिये मसजिदमें जाताथा निवेदनकी खलीफ़ा ने उसकी अर्ज़ी को पढ़ और अभिप्राय समझ आज्ञादी कि कल दोनों मनुष्य मेरी सभामें आवें और इस ब्यवस्थाको मैं आप निर्णय करूंगा और सन्ध्यासमय अपने नियमके अनुकूल नगरका हालमालूम करनेको बेषबदल निकला और दूरसे देखा कि चन्द्रमाकी ललित चाँदनी में दश अथवा बारह बालक परस्पर खेलते हैं ख़लीफ़ा वहां जाकर खड़ाहोगया सो एकबालकने जो उनबच्चोंसे अत्यन्त स्वरूपवान्था और बालकों से कहा आवो हम तुम सब मिलकर न्यायाधीश की नक़लकरें मैं न्यायाधीश बनताहूं और तुममें से एक बालक अली-ख्वाजह और दूसरा ब्यापारी बने जिसके पास वहहज़ार अशरफ़ी रखकर यात्राको गया फिर तुममें से कोई दोनों को मेरेसामने लावे ख़लीफ़ा उनदोनोंका नामसुन आश्चर्य्यमें हुआकि कल इसीबिषय की अर्ज़ीमार्गमें किसीने दीहै और मैंने उसे पढ़ादेखूं तो यह बालक क्या निर्णय करताहै फिरख़लीफ़ा ध्यानधर देखनेलगा और बिचार किया यहबात इतनीनगरमें बिख्यातहुई कि हरकोई जानताहै किन्तु बालक परस्पर उसीकी नक़लकरके खेलते हैं निदान उनलड़कों ने अपनेमेंसे एकको अलीख्वाजह और दूसरेको बुग़दादी ब्यापारी नियतकर उसी बालकके पासलेगया जो बड़ी धूमधामसे न्यायाधीश बनके बैठाथा उसबालकने कल्पित अलीख्वाजहसे पूँछा तू इसब्या-पारीसे क्याचाहताहै उसने अपनाबृत्तान्त बिस्तारपूर्बक बर्णन किया कल्पित न्यायाधीशने इतना सुनकर उस ब्यापारीसे पूंछा तूने अश-रफ़ियां उसकी नहीं लीं उस ब्यापारीने वही उत्तर दिया जो शहरके न्यायाधीशको दियाथा किन्तु सौगन्द खानेलगा न्यायाधीशने कहा पहिले मैं वह ठिलिया देखना चाहताहूं जिसमें नालिशी ने जैतूनका तेल भरकर तेरे घरमें रक्खी थी कल्पित अलीख्वाजह उसे लाया और न्यायाधीशने उनदोनोंसे पूंछा कि यह ठिलिया वहीहै जिसको

चित्र ख़लीफ़ा का वेष बदले हुये खेलते हुये लड़कों में जो काज़ी के फ़ैसले की नक़ल करते थे



अलीख़्वाजह ब्यापारी के घरमें रखकर गयाथा उन दोनों ने कहा यही ठिलियाहै फिर न्यायाधीशने कहा उसे खोलकर थोड़ासा तेल मेरेपासलावो कि इसका स्वाददेखू कि कैसाहै निदान थोड़ासा तेल चखकर कहा इसका स्वाद बहुत अच्छा है मैं जानताथा कि सात बर्ष के उपरान्त इसका बुरा स्वादहोगयाहोगा और सड़गया होगा फिर उस न्यायाधीश ने आज्ञादी कि दो तेलके बेंचनेवाले बाज़ारसे बुलाला वह बालक अपने समूह मेंसे दो लड़कों को तेल बेंचनेवाले नियतकर न्यायाधीश के निकट लेगये उसने उनसे पूंछा कि तुम तेल बेंचनेवालेहो उन्होंने कहा हां हमारी यही जीविकाहै उसने उनसे पूंछा कि ज़ैतूनकातेल कबतक अच्छारहताहै और बदमज़ा नहींहोता उन्होंने कहा साहब यदि कोई कितनाही उपाय करे तो तीन बर्ष के पश्चात् उसके रंग और गन्धमें अन्तर पड़जाताहै किन्तु उसे फेंक देते हैं फिर उस बालकने उनसे कहा इस ठिलियाके तेलको देखकर मालूमकरो कि यह तेल कितने बर्षोंका है और उसका स्वाद कैसाहै उन्होंने उस ठिलिया में से झूठमूठ निकालकर देखा और चखकर कहा यह तेल बहुत अच्छा और स्वादिष्ठहै न्यायाधीशने कहा तुम झूठ कहतेहो अलीख़्वाजह सातबर्षहुये कि यह तेल रखकर यात्रा को गयाथा उन्हों ने कहा आप चाहिये जो कहिये परन्तु यह तेल एक बर्षसे अधिक का नहींहै इसी बर्षका बनाहुआहै कोई ब्यापारी बुग़दादमें न होगा जो इसबातको न जानताहो निदान उसबुग़दादी ब्यापारीने उस तेलको सूंघ और चख इसबातकोमाना तब कल्पित न्यायाधीशने अनुकर्ण बुग़दादीसे कहा तू चोरहै तूने यहकर्म फांसी पानेका किया है इतनासुन सबबालक कूदने और तालियां बजाने लगे और उस कल्पित बुग़दादी ब्यापारीको पकड़के दण्डदेनेकेलिये लेगये ख़लीफ़ाहारूंरशीद उसबालककी बुद्धिदेख अतिप्रसन्न हुआ और अपने मनमें ठहराया कि कल इसी भांति इस ब्यवस्था को निर्णयकरूंगा फिर ख्वाजहने जाफ़रसे जो वहींखड़ाथा आज्ञादी इस बालकको जिसने इससमय न्यायाधीश बनकर ब्यवस्थाको निर्णय कियाहै पहिंचानरख कलइसको मेरेपास लाइयो कि इसीभांति मेरे

सम्मुख इसी व्यवस्थाका निर्णयकरे और नगर का न्यायाधीश भी आकर इसी बालक से सीखे और अलीख्वाजह को कहलाभेजा कि कल इस ठिलिया को अपने साथ लेताआवे और दो तेल बेंचनेवाले भी आवें ख़लीफ़ा यह आज्ञा मन्त्री को मार्ग में देकर अपने महल में गया प्रभातको मन्त्री उसी मुहल्ले में जहां बालकोंने खेलखेलाथा गया और उनके गुरु से पूंछा उसने कहा वह सब बालक अपने अपने घरको गये हैं मन्त्रीने उनके माता पिताको बुलाकर आज्ञादी कि तुम तुरन्त अपने अपने पुत्रोंको लावो सो वे उनकोलाये मंत्रीने उनसे पूंछा तुममें से रात्रिको किस लड़केने न्यायाधीश बनके खेल खेला था उनमें से एकबालक ने कहा मैं न्यायाधीश बनाथा मंत्रीने कहा मेरेसाथचल ख़लीफ़ा ने तुझे बुलाया है उस लड़के की माता डरगई और रोनेलगी मन्त्रीने उसे धैर्य्य देकर कहा कुछचिन्ता मत कर एकघड़ी के उपरान्त तेरेपुत्रको पहुँचादूंगा उसकीमाता प्रसन्न हुई और उसको वस्त्रपहिनाकर मंत्री के साथ करादिया और मन्त्री उसे ख़लीफ़ा के पासलेगया खलीफ़ा ने सभाके समय उस बालक को अपने पास बैठाया फिर जब नालिशी आये तो ख़लीफ़ाने उन से कहा तुम अपने अपने हालको इस बालक से कहो यही इस व्यवस्थाको निर्णय करेगा अलीख्वाजह और व्यापारी ने अपना अपना वृत्तान्त वर्णन किया और वह व्यापारी इन्कार करने के उपरान्त सौगन्द खानेलगा उस बालकने कहा अभी सौगन्द खानेकी कुछ आवश्यकता नहीं पहिले उस ठिलियाको लाकर दिखावो सो वही ठिलिया बालक के सम्मुख रक्खीगई ख़लीफ़ा ने उसका मुख खुलवाकर उस तेलको चक्खा और तेल बेंचनेवालों को भी दिखाया और चखाया उन्हों ने कहा इस तेल का स्वादु अभी बिगड़ा नहीं यह तेल इसी वर्षका बनाहुआ है तब उस बालक ने व्यापारी से कहा तुम झूठ कहतेहो क्योंकि सातवर्ष हुये कि अलीख्वाजह ने इस ठिलिया में भरके रक्खा रहै इस वर्ष का तेल इस में क्योंकर आगया तेल बेंचनेवालों ने वही उत्तरदिया जो बालकों ने खेलती समय दिया निदान बुग़दादी व्यापारी ने हारमान अपने अपराधको मानलिया

इतना कह उस बालक ने ख़लीफ़ासे कहा हे स्वामी! कल हमने यही खेल खेलाथा हमको अपराधी के दण्ड देनेकी सामर्थ्य न थी अब यह व्यवस्था का निर्णय आपके सम्मुख हुआ उसको दण्ड देकर हज़ार अशरफ़ी अलीख्वाजह को दिलवा दीजिये ख़लीफ़ाने आज्ञा दी कि इस ब्यापारीको फांसी दो और उससे पूंछो कि हज़ार अशरफ़ी अलीख्वाजह की कहां हैं जहां बतावै वहांसे लाकर अलीख्वाजह को देदो और उस बालक को अपने कण्ठ से लगाकर एकहज़ार अशरफ़ी पारितोषिक दीं और घरको पहुँचादिया मल्का शहरज़ादने इस कहानी को पूर्णकर शहरयार से कहा अभी बहुतसी उत्तम उत्तम और ललित कहानी हैं कलकी रात्रिको मैं बर्णन करूंगी॥

## कल के घोड़े की कहानी॥

आपको भलीभांति मालूम होगा कि हज़ारोंबर्ष से पारस के निवासी नौरोज़ अर्थात् बर्षका प्रथमदिन जानकर खुशी करतेथे बिशेष अग्निपूजक उस दिन नृत्य और अनेक भांतिके तमाशे देखते और अतिउत्तम और बिचित्र बिचित्र बस्तु बड़े बड़े बादशाह और धनवानों को भेंट देते और दूरसे नानाप्रकार के गुणवान् महासुन्दर और दिब्यबस्तु बादशाह के सामने लाते और हज़ारों रुपये पारितोषिक पाते सो किसी काल में नौरोज़ को कोई पारस का महातेजस्वी बादशाह जो उदारतामें अतिबिख्यात था तमाशा देखने को नगर के बाहरगया और सम्पूर्ण सभासद् और नौकरों ने आन आनकर अपनी अपना भेंटदी और बड़े बड़े गुणवान् कारीगरोंने नानाप्रकारकी बस्तु दीं उन में हिन्दुस्तान का निवासी एक गुणवान् हिन्दू आया और कर जोड़ दण्डवत्कर एक कलका घोड़ा बादशाह को भेंट दिया और विनय की कि इस सेवक ने इसको अत्यन्त श्रम और यत्न से बहुत दिनों में आप के लिये बनाया है निश्चय है कि ऐसी अद्भुत बस्तु अबतक किसी ने आपको न दी होगी बादशाह ने कहा यह घोड़ा केवल काष्ठका बना है उसपर तूने सुनहली रुपहली सामग्री लगाकर सज़ाहै इससे इसनगर में उत्तम बन सक्ताहै इस सामग्री के बिशेष और कोई अपूर्व बस्तु मैं इस घोड़े में

नहीं देखता उसने विनय की हे हुजूर! मैं इस घोड़ेके रूप और सामग्री की प्रशंसा नहीं करता किन्तु मैंने इसमें बड़ी कारीगरी रक्खी है कि मेरे सिवाय दूसरा कोई भी इसे नहीं बना सक्ता हे स्वामी! इस घोड़ेमें ऐसी कलहै कि यदि मैं अथवा कोई दूसरा मनुष्य जिसे मैं उस कल को बतादूं चढ़कर उसको घुमाये तो तत्कालही यह घोड़ा पक्षी के समान बायुपर उड़ेगा और एक घड़ीमें कलके बलसे सौ दोसौ कोस जावे और फिर वहींपर फिर आवे यदि आज्ञा हो तो मैं इसपर चढ़ कर इसका प्रभाव दिखाऊं बादशाह यह सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और इच्छाकी कि कारीगर के सच झूठकी परीक्षा लें तदनन्तर उसे चढ़ने की आज्ञादी हिन्दी अपना एक चरण घोड़ेकी बाईं रिकाबमें दे उचककर ज़ीनपर जाबैठा और दूसरेचरण को दूसरीरिकाबमें रख लिया और बादशाह से बिनय की मुझे किधर जाने की आज्ञा होती है शीराज नामक राजधानीसे डेढ़कोसके प्रमाण पर एक बहुत ऊंचा पर्वत था जो बादशाह की सभा से दिखाई देताहै बादशाहने कहा यद्यपि वह पर्वत दूर नहीं परन्तु तेरी परीक्षाको बहुत है वहांतकजा और एक खजूरवृक्षका पत्ता जो उस पर्वत के नीचेलगाहै तोड़करले- आ अभी बादशाह कह न चुकाथा कि उस हिन्दीने घोड़े की गर्दन के निकटका पेच मरोड़ा तो तत्कालही वह घोड़ा धरती से आका- शकी ओर बायु में बिजुली के समान उस पर्वत की ओर उड़ा और दूरहोनेके कारण दृष्टि से गुप्तहोगया सम्पूर्ण सभासद् इस बिचित्र चरित्रको देख महाआश्चर्य्य में हुये और वाह वाह का शब्द होने लगा पावघड़ी के अनन्तर में वह घोड़ा फिर उन्होंने देखा और क्या देखा कि खजूरके बृक्षकी डाली उस हिन्दीके हाथ में है हिन्दी घोड़े को पृथ्वीपरलाया और वही टहनी बादशाहको दी बादशाह उसको देख अत्यन्त प्रसन्न और बिस्मितहुआ और उस घोड़े का मोल पूंछा उसने कहा हे स्वामी! मैं इसको नहीं बेंचता परन्तु एक प्रतिज्ञासे इस को मैं आपको भेंटदेताहूं कि जो इच्छा मैं आपसे करूं उसको स्वी- कारकीजिये बादशाह ने कहा तू जानता है कि ईरानदेश अत्यन्त सुन्दर और बसाहुआहै और इसके सम्पूर्णनगर एक एक देशके तुल्य

हैं यहांके अधिपति बादशाहों के सदृशरहतेहैं जिस नगरको तू पसन्दकरे मैं तुझे उसका बादशाह बनादूं हिन्दीने कहा मुझे धन और नगर आदिक का लोभ नहीं मेरा अभिप्राय कुछ और है यदि मेरा अपराधक्षमाहो तोउसे बिनयकरूं बादशाहने कहा मैंने तेरा अपराध क्षमाकिया उसने कहा जो आप मेराबिवाह अपनी पुत्रीसे करें तो मैं आपको यह घोड़ादूं अभी बादशाहने कुछ उत्तर नहीं दिया था कि उसके सब सभासद् यह बात सुनकर उसपर अत्यन्तकोपित हुये परंतु बादशाह के भयसे उसे कुछ न कहा और चुपकेहोरहे इतने में बादशाह का बड़ा पुत्र फ़ीरोज़शाह जो युवराजथा इसबातको सुन महाअप्रसन्नहुआ और मनमें सोचा कि इस दुष्ट हिंदीकी क्या सामर्थ्य है कि शाहज़ादी से जो मेरीबहिनहै बिवाहहो यह सोचकर बादशाहसे बिनयकी यदि आप हिंदीकी इस इच्छाको स्वीकार कीजियेगा तो बड़ी जगं हँसाई होगी बादशाह ने कहा यद्यपि यह बात बड़ी लज्जाकीहै पर ऐसाघोड़ा संसारभरमें नहीं मिलसक्ता जब फ़ीरोज़शाह समझा कि बादशाह तो इस बातपर प्रसन्न है कि घोड़ेके बदले अपनी कन्याकोदे और इस नीच हिंदी को अपना दामादबनावे तो उस हिंदीसे कहा भला मैं इस घोड़ेपर सवारहो परीक्षालूं यदि यह मेरी परीक्षामें उत्तमठहरा तो ख़रीदनेकी इच्छा बादशाहको है यह सुन हिंदीनेकहा बहुत अच्छा आपइसपर सवारहो परीक्षालेलें इतनाकह घोड़ेको शाहज़ादे के पास लेगया फ़ीरोज़शाह निश्शंक उस घोड़ेपर चढ़ा और दोनों पांव अपने रकाबों पर जमाकर घोड़े के गर्दन का पेंच मड़ोड़ा जैसा कि हिंदीको मड़ोड़ते देखाथा घुमातेही वह बाणके सदृश आकाशको उड़ा थोड़ेही कालमें वह घोड़ा शाहज़ादे समेत बादशाह और उसकी सभाकी दृष्टि से लुप्तहोगया तब उस हिन्दी ने अत्यन्तचिन्तित होकर बादशाह से बिनयकी कि हे स्वामी! शाहज़ादे ने जल्दी की और इतना सावकाश न दिया कि मैं उसे सब कलें बतादूं कि किस पेंचके घुमाने से वह चलता है और किस पेंचसे ठहरजाता है और किससे नीचे को उतरता है एकही कलके घुमाने से कि वह चलता है मुझे देखकर समझा

कि केवल एकही कलसे वह घोड़ा सबकाम करताहै और उसने वह कल कि जिससे वह घोड़ा जहां से कि चलाहै वहीं आताहै मुझसे नहीं पूछा जो ईश्वर न चाहे कोई दुःख शाहज़ादेको पहुँचे तो उस में मेरा अपराधनहीं बादशाह इस बातको सुन अतिचिन्ताको प्राप्त हुआ और समझा कि मेरे पुत्रको अवश्य कुछ दुःख होगा इसबातको सोच हिंदीसे कहा तूने क्यों नहीं लौट आनेकी कल मेरे पुत्रको बताई उसने उत्तरदिया आप देखते थे कि शाहज़ादेने मेराघोड़ा लातेही निश्शंक उसपर बैठकर उड़ने की कलमड़ोड़ी जिससे घोड़ा तुरंत आकाशपर बायु के समान बढ़गया मैंने बातकहने का भी सावकाश न पाया कि सब कलोंकाहाल उसे बतादेता परंतु एक आशा है कि कदाचित् बहुत दूरजाकर शाहज़ादेका हाथ संयोगसे दूसरे पेंचपर पड़जावे और उसे मड़ोड़े तो निस्सन्देह वह घोड़ा धरतीपर आसक्ता है बादशाहने कहा मैंनेमाना जो शाहज़ादे को पेंच मिलजावे और वह उसे घुमावे तो ईश्वर जाने वहघोड़ा उसे लेकर पहाड़ पर उतरे अथवा नदीमेंगिरे हिंदीने कहा इस बातका आप भय न कीजिये जो वह नदीमें उतरे और उस नदीका पाट चाहे कितनाही चौड़ाहो वह पैरके अपने सवारसहित पृथ्वीपर निकल आवेगा और जिधर उसका सवार चाहेगा उधर उसको लेजावेगा और यहनहीं होसक्ता कि शाहज़ादा उस पेंचको पाकर पर्वत वा बनमें उतरे बस्तीके सिवाय कहीं न उतरेगा बादशाहने कहा मुझे तेरे बचनका निश्चय नहीं मैं तीनमहीने का तुझे सावकाश देताहूं यदि इस समयान्तरमें मेरा पुत्र कुशलसे आया वा मैंने उसके कुशल का समाचार सुना तो अच्छा नहीं तो मैं तुझे प्राण से मरवाडालूंगा इतना कह बादशाहने आज्ञादी कि इस हिंदी को लेजाकर क़ैदकरो तदनन्तर महाशोचित होकर अपने मन्दिर में गया और नौरोज़ का उत्सव बन्दकरदिया ॥

अब फ़ीरोज़शाह का बृत्तांत सुनो कि वह आकाशकी ओर बायु में ऊंचे होताथा सो एकघड़ी में वह इतना ऊंचाहुआ कि कुछ भी धरती न देखपड़तीथी और पर्वत उसको मिट्टीकेढेलेके सदृश दीखता

चित्र फ़ीरोज़शाह का ज़मीन पर वायु से उतरते हुये.



था तब उसकी इच्छा हुई कि जहांसे मैं चढ़ाहूं वहींपर उतरूं फिर उसने उसी पेंचको कि जिसको पहिले घुमायाथा उलटामड़ोड़ा कि वह घोड़ा नीचेको उतरे परन्तु कुछफल न हुआ किंतु उस पेंच को चहुँओर घुमाया किसी उपाय से घोड़ा नीचे को न उतरा ऊपरही को चढ़तागया फ़ीरोज़शाह इस दशा को देखकर बहुतघबड़ाया और अपनी जल्दी और पेंचों के हाल न पूंछने से लज्जित हुआ और कहनेलगा बड़ा खेदहै कि तेरे प्राण व्यर्थगये तदनन्तर निराशहोकर उसने घोड़े के शिर और गर्दनको भलीभांति टटोला निदान बहुत ढूंढ़ने के उपरान्त उसने दाहिने कानके नीचे एक पेंच पाया जिसके मड़ोड़ने से वह घोड़ा नीचे को उतरनेलगा उससमय डेढ़ घड़ीरात बीतगई थी वह उसके उतरने से प्रसन्नहुआ और जाना कि अब प्राण मेरे बचेंगे और इच्छाकी कि किसीनगर अथवा बस्ती में उतरूं निदान वह घोड़ा आधीरातको धरतीपर उतरा फ़ीरोज़शाह बहुत भूंखाथा घोड़े से तुरन्त उतरपड़ा क्योंकि उसने दिनभर नौरोज़ के तमाशे देखने में कुछभोजन न कियाथा सो उतरतेही उस की इच्छाहुई कि इस जगहका हालमालूमकरूं कि कैसी है फिर उसे मालूमहुआ कि वह किसी विशाल महलकी छतहै जिसके चहुँओर कि मुड़ेरेंदिव्य संगमरमरकी बनी हैं तो वह उस छतके चहुँओर घूम कर मार्ग उतरनेका ढूंढ़नेलगा एकओर को उसने एकसीढ़ी भीतर को पाई जिसके किवाड़ का एकपट खुला हुआथा और एक बन्द वहां वह सोचनेलगा कि ईश्वरजाने अँधियारे में किसी बैरीसे भेंटहो वा किसी मित्रसे फिर सोचा कि मैं यहां किसीको दुःखदेने नहीं आया यदि कोई मुझे बिना शस्त्रके देखेगा तो मेरे मारनेकी इच्छा न करेगा इतना शोचकर वह धीरे २ किवाड़ खोलकर दबेपांवों नीचे उतरा तो एकबड़े दालानमें पहुँचा पहिले शाहज़ादा वहां कान रख कर सुनने लगा कि वहां के रहनेवालों का हाल मालूम करे परन्तु सिवाय खुर्राटों के शब्द के उसे कुछ सुनाई न दिया फिर वह कई पग आगे बढ़ा उसने दीपक के प्रकाश में देखा कि हब्शी और नौकर कमरोंमें सोरहे हैं उनको देखकर वह समझा कि यह खोजी

किसी मलकाके मन्दिर के रक्षक हैं और बास्तव में वहां एक बादशाह की पुत्री रहतीथी और उसके सोनेका स्थान उस दालान के पास था और वहां उजियाले में क्या देखा कि उसके द्वारेपर एक महीन रेशमका परदा लटका है वह कुछ और आगे बढ़के उस परदे के पास ऐसा दबे पांवों गया कि खोजियोंको उसके पांवका आहट मालूम न हुआ और उसीप्रकार सोतेरहे फिर उस परदेको उठाकर भीतरगया तो वहां महासुन्दर दालान पाया जिसमें बहुतसी स्त्रियां और लौंड़ियां अपनी अपनी शय्यापर पड़ी सोरही हैं फिर जब आगे बढ़ा तो क्या देखा कि एक जड़ाऊ महास्वच्छ छपरखट पर शाहज़ादी सोती है शाहज़ादा उसके रूप छबि अनूप को देखकर मोहित होगया और सोचने लगा यदि यह सुन्दरी मुझपर प्रसन्न होजाय तो अपने को धन्य मानकर इसके पाससे कहीं न जाऊंगा यदि इस सुन्दरी की प्रीति में मेरे प्राणभी जावें तो शोचनहीं फिर वह उसके पासगया और आस्तीन जो मृगनयनी के दिव्य चन्द्रमुखपर पड़ीथी धीरे से उठाकर उसको नयनभर देखने लगा इतने में वह जागपड़ी और एक परपुरुष को अपनी शय्या के पास जो अत्यन्त रूपवान् और शाही बस्त्र पहिने हुये है देखतेही भयभीत होगई और अत्यन्तबिस्मित होकर चुपहोगई फ़ीरोज़शाहने अति नम्रतापूर्व्वक बिनय की आप मुझको देखकर भय न कीजिये मैं ईरान देशका शाहज़ादाहूं प्रभातको मैं अपने पिताके पास नौरोज़ के तमाशेमें था और इस समय मैं परदेशमें हूं जिसमें प्राणका भय है जो तुम्हारी कृपा मुझपर न हो तो निश्चय है कि मैं माराजाऊंगा आशाहै कि कृपाकरके मेरी दशापर दयाकर सब उपाधियों से मेरी रक्षाकरो वह सुन्दरी जिससे फ़ीरोज़शाह ने अपना हाल कहा था बंगालदेशकी शाहज़ादीथी और उसकी कई बहिनें उससे छोटीथीं और उस बिशाल मन्दिर को बादशाह ने मुख्य उसी के लिये बनवायाथा निदान उसने फ़ीरोज़शाह का बृत्तान्त सुनकर कहा हे शाहज़ादे! तुम धैर्य्यरक्खो तुम्हें किसीप्रकारका दुःख न होगा जिस तरह तुम अपने देशमें रहते थे उसीतरह यहांभीरहोगे मैं तुम्हारी

क्या सहायता करूंगी तुमकोही इतनी सामर्थ्य होगी कि औरों के सहायकहोगे तुमको केवल मेरेही भवनमें अधिकार न होगा किन्तु सम्पूर्ण बंगालदेश में होगा फ़ीरोज़शाह ने उसकी बहुतसी प्रशंसा की और उसका गुणानुबाद कर अपना मस्तक धरतीपर रखनेलगा सो शाहज़ादीने रखने न दिया और कहनेलगी कि अब तुम कहो कि तुम्हारा आना यहां क्योंकर हुआ। और तुम्हें राजधानीको छोड़े हुये कितनाकाल ब्यतीत हुआ और किस उपाय या मन्त्रके बलसे तुम मेरे मन्दिर में पहुँचे और क्योंकर मेरे रक्षकों से बचकर यहां तक तुम आये जानपड़ता है कि तुम भूंखेहो अब रात्रिहै और इस भवनके सम्पूर्ण नौकर और दासियां अचेत सोरहे हैं जो ईश्वर चाहे प्रभात होतेही दासियोंको आज्ञादूंगी कि तुम्हें अलग मकानमें जाकर रक्खें और वहां सम्पूर्ण बस्तु तुम्हारे लिये तय्यार करें जिससे तुम भोजनकर बिश्रामकरो मैं दूसरे समय तुम्हारा बृत्तान्त सुनूंगी अभी वह भलीभांति बार्त्ता न करचुकेथे कि इतने में मन्दिरकी सम्पूर्ण दासियां जागउठीं फ़ीरोज़शाहको शाहज़ादी के सम्मुख खड़ा देख अत्यन्त आश्चर्य्यमें हुईं और मनमें कहनेलगी कि यह मनुष्य क्योंकर राक्षसों के पहरेसे फांदकर यहां आया कि किसीको खबर न हुई और फ़ीरोज़शाहको एक मकान में लेगईं और उसके आराम करने के लिये नानाप्रकारकी बस्तु रक्खीं और दिब्य शय्या बिछादी और रसोईं में जाकर शीघ्र भोजन पकाया अभी फ़ीरोज़शाहने हाथ पांव न धोयेथे कि नानाप्रकार के भोजन वहां तय्यार होगये उसने रुचिपूर्ब्बक भोजन किया तदनन्तर उसे शय्यापरलोटाया बंगालदेशकी शाहज़ादीभी फ़ीरोज़शाह के रूपअनूपको देख कर मोहितहोगई थोड़ीदेर में वह सब दासियां फ़ीरोज़शाहके पाससे उठकर शाहज़ादीके पास आईं और भोजन करनेका हाल उससे कह सुनाया उनमें से कोई दासी शाहज़ादीकी बहुत मुँहलगीथी उसने शाहज़ादेके रूपकी बहुतसी प्रशंसाकरकहा यदि ऐसे सुन्दर और नवकिशोरसे तुम्हारा बिवाह हो तो क्या अच्छीबात है शाहज़ादी इस बातको सुन मनमें अतिप्रसन्नहुई प्रकटमें कहनेलगी चुपरहो बृथा

मत बको अपनी जगहपर जाकर सोरहो और मुझेभी सोनेदो यह कहकर वह सोरही शाहज़ादी प्रभातको उठतेही बहुकाल पर्यंत दर्पणमें अपना मुखदेख शृङ्गार करतीरही उसने अपने दिव्यभुजंगी लटोंमें मोती पिरोकर अतिशोभायमान हीरे और मोतियोंकी माला अपने गलेमें डाली और बहुमौल्य बाजूबंद अपनी भुजा में पहिर और रत्नमयी पटका कमरमें बांधा और बहुतभारी रेशमीवस्त्र जो हिंदुस्तानमें केवल शाहज़ादी के लिये बनताथा पहिना निदान दिव्य बस्त्र भूषणादिसे उसकारूप महासुन्दर कामदेवकी स्त्रीके समानहोगया जब वह अपना शृङ्गार करचुकी तो एक लौंड़ीके द्वारा शाहज़ादे को कहलाभेजा कि तुम यहां आनेकी इच्छा न करना मैं आपही तुम्हारे पास आतीहूं उधर फ़ीरोज़शाहने भी जगकर और बस्त्रपहिनकर दासियोंसे पूछा कि शाहज़ादी अभीजगी हैं वा नहीं मुझेबतलाओ कि मैं उसके पास जाना चाहताहूं दासियोंने कहा आप श्रम न कीजिये वह आपही आतीहोंगी फिर शाहज़ादी शाहज़ादेके पासआई और उसकी कुशलपूछ परस्पर देखकर अतिप्रसन्न हुये शाहज़ादेने कहा मैंने रात्रिको आकर तुम्हारी निद्रामें बिघ्नकिया सो मेरा अपराध क्षमाकीजिये उसने कहा मुझे इसबातसे कुछ रंज नहीं किन्तु तुम्हारे दर्शन करके मैं बहुतप्रसन्नहुई अबकहो कि क्योंकर अपनेदेश से यहांआये और रात्रिको किसभांति मेरे मन्दिरतक पहुँचे किसी की सामर्थ्य नहीं कि मेरी आज्ञाबिना मुझतक पहुँचे मुझे तुम्हारे हालके सुनने की अतिलालसा है फ़ीरोज़शाह इसभांति बिस्तारपूर्ब्बक अपना हाल कहनेलगा कि कलमैं नौरोज़ के उत्सव में था सबकारीगर और शिल्पी अनेकभांतिकी बस्तुलेकर मेरे पिताकी सभा में जो फ़ारसका बादशाहहै उपस्थित थे सो एककारीगर हिन्दुस्तानका बासी एक कलका घोड़ा बनाकरलाया और मेरेपितासे कहनेलगा कि यह घोड़ा केवल कलसे उड़ताहै सो बादशाह ने उसका उड़ना देखकर इच्छाकी कि जिसमोलकाहो लेलें इसलिये हिंदी से पूछा इस घोड़ेका क्यामोलहै उसने कहा कि इस घोड़ेको एकबातपर देताहूं कि आप मेरा बिवाह अपनी पुत्रीसे करदें सभासद् इसबातको सुनकर उसकी निर्बुद्धिता

और ढिठाईपर बहुत हँसे और मुझेभी उसकी इस इच्छा से बहुत दुःख हुआ और बादशाह को उस घोड़ेकी अधिक लालसा पाकर समझा कि ऐसा न हो जो बादशाह हिंदीकी इच्छा स्वीकारकरे इस लिये इसबिषय में मैंने बादशाहको बहुत समझाया कि इस घोड़ेके कल और पुरजोंको इस हिंदीके सिवाय कोई नहीं जानता जबतक और आदमी न जाने तबतक यह घोड़ा कुछ कामका नहीं हिंदीने कहा ऐसा नहीं है किंतु जो मनुष्य चाहे उसपर सवारहोकर परीक्षा लेले उससमय बादशाहने मुझसे कहा तूही चढ़कर इसका हाल मालूमकर सो बादशाहकी आज्ञानुसार कल मालूम करने के बिना उसी पेंचको घुमाया जिससे घोड़ा बहुतऊंचे आकाशकी ओर उड़ा वह कल मैंने उसके कारीगर से सीखीथी वह घोड़ा इतना ऊंचे को उड़ा कि पृथ्वी मुझे न दिखाई देतीथी जब आकाशसे जाकर मिला तो उससमय मैं अत्यन्त भयवान् हुआ और इच्छाकी कि किसीभांति घोड़ा नीचेको उतरे तो उस कीलको उलटा फेरनेलगा परन्तु कुछ लाभ न हुआ ऊपरकोही चलाजाताथा निदान बहुत ढूंढ़कर दूसरी कीलको मड़ोड़ा सो उसके मड़ोड़नेसे वह घोड़ा नीचे उतरने लगा इतने में रातहोगई मैं बहुत भयभीत था कि न जानिये यह घोड़ा मुझे कहां उतारे संयोगसे वह तुम्हारे भवनकी छतपरले उतरा वहां एकसीढ़ी देखी जिसके किवाड़का एकपट खुलाहुआथा और एक बन्द मैं उस सीढ़ीसे धीरे धीरे नीचेको आया वहां मैंने झिलमिलाता प्रकाशदेखा और सब खोजियोंको सोतेहुये पाया अपने सामने के मकान में बहुत उजियाला देखा जिसके दरवाज़ेपर रेशमीपरदा लटक रहाथा यद्यपि मुझे वहां बहुत भयहुआ कि कोई खोजी जगकर मुझको देखेगा तो निस्सन्देह मारडालेगा तथापि आगेबढ़ा और समझा कि उस स्थानपर अवश्य कोई शाहज़ादी सोतीहोगी फिर तो सब आपको मालूमहै और जो आपने ऐसे समय मुझपर कृपाकी उसका सहस्र जिह्वासे गुणानुबाद नहीं करसक्ता अब मैं मन बचनसे तुम्हारा सेवकहूं और मनके बिशेष और कोई बस्तु मेरे पास भेंट देनेको नहींहै परन्तु कठिनता यहहै कि वहभी मेरे अधिकारमें नहीं

उसेभी तुम्हारी प्रीतिने आकर्षण करलिया है अब जो कुछ मुझे आज्ञाहो उसे करूं शाहज़ादी यह प्रीति की बार्त्तासुन अत्यन्त प्रसन्नहुई और इकबारगी उत्तरदिया तुमने अपना अतिबिचित्र बृत्तान्त सुनाया और मुझे प्रसन्नकिया अब तुम बताओ कि तुम बहुधा इस घोड़ेपर सैरकरतेहोगे संयोगसे आज मेरे यहां भी आनिकले इससे तुम्हारे बचनपर बिश्वास करना और अपने मनको तुमसे लगाना बृथाहै और ईरानदेश तुम्हारी जन्मभूमिहै तुम्हें वहांजानेकी अवश्य लालसाहोगी फ़ीरोज़शाह ने हरएक प्रश्नका उत्तर यथार्थ देकर अपनी ओरसे उसे धैर्य्य दिया इतने में एकदासी ने आकर कहा कि भोजन तय्यार है शाहज़ादी फ़ीरोज़शाह का हाथपकड़कर लेगई और उसको बैठाया और आपभी उसके सम्मुख जाबैठी यद्यपि शाहज़ादी के भोजनका समय न था परन्तु यह बिचारकर कि रात्रिको फ़ीरोज़शाह ने भलीभांति भोजन नहीं कियांहोगा आपभी उसके मनरखनेको भोजन करनेलगी दासियों ने अतिस्वच्छ पात्रों में अनेक प्रकार के स्वादिष्ठ भोजन परसे जब वह खाने लगे तो उसीसमय सब बांदियां जो महारूपवान् थीं मिष्टस्वरों से गान करने लगीं और नानाभांति के दिब्यबाजन बजानेलगीं और शाहज़ादी अत्यन्त प्रीति से फ़ीरोज़शाहको भोजन कराती और परस्पर के हावभाव से दोनों का हृदय कामरूपी अग्नि से दहकता जब भोजन से निश्चिन्त हुये तो शाहज़ादी उसे पकड़ के और कमरे में लेगई जिसमें अतिशोभायमान सुनहली और लाज वरद की अतिबिचित्र चित्रकारियां थीं और उसकी सम्पूर्ण सामग्री सुनहली रुपहली बस्तुकी थीं वह दोनों एक दिब्यदालान में जाकर बैठे जिसके सम्मुख महासुन्दर पुष्पबाटिका थी जिसमें अनेक भांतिके रंगों के फूलों की लपट से मनुष्यों का मन लोभता और ठौर ठौर पर मिष्टफलोंके घनेबृक्ष फलेहुये जिनपर भांतिभांतिके पक्षी मीठी मीठी बाणीसे बोलाकरते फ़ीरोज़शाह उसबाटिका और दिब्य सामग्री को देख महाप्रसन्नहुआ और कहनेलगा मैं जानताथा कि जो जो भवन और बाग़ हमारे फ़ारसदेश में हैं वैसे पृथ्वी मण्डल

में न होंगे परन्तु अब सूचित हुआ कि वहां के सब मन्दिर इस के सामने तुच्छहैं शाहज़ादी ने कहा यह भवन जिसकी तुम प्रशंसा करतेहो ऐसा उत्तम नहीं यदि मेरे पिताका भवन जो यहांका बादशाहहै देखोगे तो निस्सन्देह प्रसन्नहोगे तुम मेरे पिता से अवश्य भेंटकरो वह तुम्हारा भलीभांति सत्कार करेगा फ़ीरोज़शाह को इस बात के सुनने से राजमन्दिर के देखने की अतिलालसा हुई और शाहज़ादीका यह बिचारथा कि जब उसका पिता ऐसे रूपवान् और सुशील शाहज़ादेको देखेगा तो अतिप्रसन्न होगा और मुझे उसे बिवाहदेगा और फ़ीरोज़शाह कईदिन उसके पास रहा उसका मन वहां ऐसा लगा कि और जगहपर जाने का उद्योग न करता था फिर इस हेतु वहां के बादशाहके निकट न गया एकदिन फिर शाहज़ादी ने अपने पिता के निकट जानेकी रुचि दिलाई परन्तु फ़ीरोज़शाह ने कुछ सोच बिचार उससे कहा कि हे सुन्दरी ! जो कुछ तुम कहतीहो मुझे स्वीकार है परन्तु बादशाही सामग्री बिना ऐसे चक्रवर्ती बादशाह के पासजाना उचित नहीं यद्यपि वह मेरे कुलका नाम सुन प्रसन्नहोगा परन्तु इसदशा में मैं उसकी दृष्टिमें तुच्छ हो जाऊंगा शाहज़ादीने कहा यहां सबकुछ उपस्थितहै इस जगह बहुत से ब्यापारी तुम्हारेदेश और जातिके हैं तुम उनसे सब सामग्री जो कुछ तुमको आवश्यकहो मोललो और एक अलग मन्दिरमें रहकर अपनी पदवी समान सामग्री इकट्ठीकरो उसने कहा बहुत अच्छा अब एक अभिलाषा यहहै उसे मनलगाके सुनो कि मुझे अपनेपिता का हाल मालूम नहीं कि उसकी मेरे बियोग में क्या दशा हुई मुझे अत्यन्तभयहै कि ऐसा न हो जो शोकके कारण उसकादेहान्तहोजावे इसलिये आपकी कृपासे आशाहै यदि प्रसन्नतापूर्ब्बक मुझे आज्ञा दो तो तुरन्त जाकर अपने पितासे भेंटकरूं और उनको धैर्य्यदूं और बिवाह को जो तुम्हें भी स्वीकारहै अपने पितासे बर्णनकरके उनसे आज्ञाले आऊं शाहज़ादीने यह बचनसुन पसन्दकिया परन्तु उसी समय यह बिचार पैदाहुआ यदि यह शाहज़ादा फिर अपने देशसे न आवे और अपने माता पिताकी प्रीतिमें वहींरहजावे और मुझे अपने

बिरहमें तड़पताछोड़े तो मैं उसका क्या करसकूंगी इससे उत्तमहै कि थोड़ेदिन और यहां इसे रखना चाहिये कदाचित् यहां रहनेसे मुझ मे प्रीति अधिकहो और अपने देशमें जानेका उद्योग न करे निदान यह बिचार मनमेंठान फ़ीरोज़शाहसे कहा कि थोड़ेदिन और ठहर जाइये उसने स्वीकार किया फिर बहुतकाल पर्य्यन्त फ़ीरोज़शाह शाहज़ादी के साथ रहकर नानाभांति के तमाशे देखता और मनमानता आनन्द उठातारहा और प्रतिदिन बनमें जाकर अहेर खेलता और शाहज़ादी उसके मन बहलानेको नक़लें दिखाती और सन्ध्या को उसी दिव्यमन्दिरमें जिसमें नानाभांति के अतिसुन्दर बिछौने और उत्तम २ तकिये रक्खेहुयेथे आनन्द भोगते और हरएकप्रकार की बार्त्ताकरते बहुधा फ़ीरोज़शाह फ़ारसदेशकेकोशों और सेना का बर्णन करता जब दोमहीने बीते उसकामन शाहज़ादीके प्रेम और अमृतरूपी बातोंमें ऐसा फँसा कि उसकाबियोग क्षणमात्र उसको न सुहाता बहुतकालके पश्चात उसने अपनेपिताका स्मरणकर शाहज़ादीसे जानेकेलिये आज्ञामांगी और कहा यदि तुमको मेरेबचन पर निश्चय न हो तो तुमभी मेरे साथचलो वह इसबात से प्रसन्न हुई दूसरे दिन रातको जब सारेमन्दिर के नौकर और दासियां सो गईं तब फ़ीरोज़शाह शाहज़ादी को छतपर लेगया और उसको अपने आगे घोड़ेपर चढ़ालिया और घोड़ेका मुख फ़ारस देशकी ओर कर चलनेके पेंचको घुमाया सो वह घड़ीभरमें शीराज़में जो फ़ारसकी राजधानी है जायपहुँचा फ़ीरोज़शाह न तो अपने मन्दिर में उतरा और न अपने पितासे मिलने को गया किन्तु एक ग्राम में जो शीराज़केपास था घोड़ेसे नीचेउतरा और शाहज़ादीको एक बादशाही महलमें जो उसगावँ में बनाहुआ था उतारा और शाहज़ादी से कहा अब मैं जाकर अपने पिता से तुम्हारे आनेका समाचार देकर तुम्हारेपास चला आताहूं फिर उसमंदिरके प्रबन्धक को आज्ञा दी जो २ बस्तु शाहज़ादीकेलिये आवश्यकहो संग्रहकर और एकघोड़ा मेरेलिये ला और दिब्यपात्रों में स्वादिष्ठ पाक लाकर शाहज़ादी को भोजनकरा मैं अभी शीराज़से लौटकर आताहूं यह आज्ञा प्रबंधक

चित्र शाहज़ादेका कलदार घोड़ेपर लश्करमें.



को दे घोड़ेपर सवारहुआ मार्ग में पुरवासी उसे देखकर प्रसन्न होते क्योंकि वहांके रहनेवाले उसकेलिये ईश्वरसे प्रार्थना करते कि ईश्वर उसे कुशलपूर्व्बक यहांपर पहुँचावे जब शाहज़ादा अपने पिताके पास गया तो बादशाह को उसके देखने से अतिप्रसन्नताहुई और महाप्रीतिसे अपने कण्ठ में लगाया और अत्यन्त हर्षसे बहुत रोया और बृत्तान्त पूंछा उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त बर्णन किया तदनन्तर बंगाल देशकी शाहज़ादीका हाल बर्णनकर कहा मैं उसे अपनेसाथ बिवाह करनेकी प्रतिज्ञा कर कलके घोड़ेपर लाया हूं और अमुक गावँके मंदिर में उसको छोड़कर पहिले आप आया कि आपकी आज्ञापाकर उसे सन्मानपूर्व्बक लेआऊं इतना कह फ़ीरोज़शाह अपने पिता के चरणों पर गिरपड़ा और उस को लाने और उसके साथ बिवाह करनेकी आज्ञा मांगी बादशाह ने उसको अपने चरणों से उठाकर फिर अपने हृदयमे लगाया और कहा हे पुत्र! मैं तुम्हें केवल बिवाह करनेकी आज्ञा नहीं देता किन्तु मुझे इच्छा है कि मैंही जाकर उसका सत्कार करूं और फिर उसको सवार करके अपने मन्दिर में लाऊं और आज सबरीतें बिवाह की करूं फिर बादशाहने आज्ञादी कि मेरी सवारी शीघ्र तय्यारहो और सब मनुष्य खुशीकरें और बिवाहके बाजे बजें और आज्ञादी कि उस हिन्दीको जो क़ैद में है मेरे सामने लावो सो उस हिन्दी को तत्काल बादशाहके निकट लेगये बादशाह ने उससे कहा यद्यपि तू मारडालने के योग्यथा परन्तु ईश्वरका धन्यबाद कर कि मेरा पुत्र मुझसे कुशलपूर्व्बक मिला इसलिये मैंने अब तुझे छोड़दिया इसी समय अपना घोड़ा लेकर यहां से चलाजा फिर कभी मेरे पास न आइयो उस हिन्दी ने बंदीख़ाने से निकलतेही सुना था कि फ़ीरोज़शाह उसघोड़ेपर एक शाहज़ादी महारूपवती अपने साथ लाया है और उसे अमुक गावँ में बादशाह के महल में छोड़कर आप अकेला यहां आया बादशाह ने वहां जानेकी तय्यारी की है कि उस गावँ में जाकर शाहज़ादी को ले आयें सो हिन्दी बादशाह के जाने के पहिले उस गावँ को चला और उस भवन के प्रबंधकसे जाकर कहा कि बादशाह और फ़ीरो-

ज़शाह ने मुझे बंगाले की शाहज़ादी के लेजाने के लिये आज्ञादी है कि उस कलके घोड़े पर उस को सवार करके लेजाऊं अब वह दोनों शाहज़ादी की बाट देखते हैं क्योंकि बादशाहकी इच्छा है कि इसघोड़े के चरित्र को सब शीराज़ के बासी भी देखें प्रबंधक उस के क़ैदके छुटने का हाल तो सुनचुका था उसकी बातको निश्चय समझा और उस शाहज़ादी के पास ले जाकर कहा कि बादशाह ने तुम्हारे लेजाने के लिये इस मनुष्य को भेजा है वह प्रसन्नहोकर जाने के लिये तय्यार हुई वह हिन्दी पहिले आप कलके घोड़ेपर सवार हुआ फिर शाहज़ादी को अपनेआगे बैठाकर कलको मरोड़ा सो वह घोड़ा आकाशकी ओर उड़ा और उसीक्षण बादशाह भी बड़ीधूम धामसे उसगावँकी ओरचला उस समय फ़ीरोज़शाहकी यह इच्छा हुई कि बादशाह के पहुँचने के पहिले शाहज़ादी को बादशाहके पहुँचनेका समाचार दें कि वह चलने की तय्यारी करे जब वहांपहुँचा तो प्रबन्धक से शाहज़ादी के लेजानेका हाल सुन महादुःखितहुआ जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और बादशाह और सभासद् इससमाचार को सुन अतिब्यथित होय अपने महल को लौटगये परन्तु फ़ीरोज़शाह बहुतकाल पर्य्यन्त मूर्च्छित रहा जब सुधिसँभाली तो उसी समय प्रबन्धक ने आकर फ़ीरोज़शाह के चरणोंपर शिररक्खा और कहा इस सेवक से यह अपराध अज्ञानतामें हुआ अब जो चाहिये दण्डदीजिये फ़ीरोज़शाह ने उससे कहा उठ तुझसे मेरीही ग़फ़लत से अपराध हुआ अब बिलम्बमतकर शीघ्र मेरेलिये योगियों के बस्त्रला उसमंदिर के पास एक योगी और उसके कई चेले रहते थे सो रक्षकने जाकर कहा कि बादशाह एक रईस से अप्रसन्न हुआ है और उसकी इच्छा है कि उसे पकड़कर मारडालें सो वह ऐसी दशामें अप्रतिष्ठा के कारण मुझसे कहनेलगा। यदि मुझे योगियों के बस्त्रमिलें तो मैं बेषबदल इस नगरसे निकलजाऊं सो उस योगी ने अपने बस्त्र उसेदिये वह लेकर फ़ीरोज़शाहके पास लाया फ़ीरोज़शाह उनबस्त्रों को पहिन और अपने बेषकोबदल और उत्तम २ रत्नों का सन्दूक़चा राहख़र्चके लिये लेकर रात्रिको अँधियारेमें वहांसे बन

को चला और मनमें यहठाना कि जबतक बंगालेकी शाहज़ादी मुझे न मिलेगी तबतक इधरकोमुख न करूंगा अब यहांसे उसहिन्दीका हाल बर्णन करते हैं कि उस कलके घोड़ेने दो अथवा तीनघड़ी के समयमें उनको कश्मीरकी राजधानी में पहुँचादिया उस समय उस हिन्दीको भूखलगी और समझा कि शाहज़ादीभी भूखी होगी फिर वह सघन शीतलछायादार बृक्षोंके नीचे जहां निर्म्मलजलका दिब्य सरोवरथा उस घोड़ेपरसे उतरा और भोजनकी कोई बस्तुके ढूंढ़ने के लिये एकओरकोगया उसके जानेके उपरान्त शाहज़ादी महाकुरूप मनुष्यके अधिकारमें अपने को देखकर अतिचिन्तितहुई और उसे इच्छा हुई कि किसीभांति मेरा पतिब्रतधर्म्म बचे और कहीं जाकर उससे छिपें परंतु बहुतदेरसे भोजन न कियाथा और मार्गके श्रमसे निर्बलताके कारण इतनी सामर्थ्य अपनी देहमें न पाई कि वहांसे उठकरछिपे और ईश्वरसे प्रार्थना करतीथी कि मरजाऊं निदान वह इन्हीं बिचारोंमें थी कि इतने में हिन्दी ने आकर उसे कुछ भोजनकराया भोजनके उपरांत उस दुष्टने उससे भोगकी इच्छाकी जब उस पतिब्रताने इन्कार किया तब वह दुष्ट उसे धमकाने लगा और उसे मारनेलगा वह बिचारी लाचारहोके चिल्लाने और रोने लगी उसके रोनेसे उस बनमें कोलाहल मचगया संयोगबश मनुष्योंके बड़ेसवारोंके समूहने आकर उनदोनों को घेरलिया वह सवार कश्मीरके बादशाहके साथथे जो अहेर खेलकर लौटते समय शाहज़ादीके भाग्यसे उधरको हो निकले और रोनेकाशब्द सुनकर वहां दौड़ेआये निदान कश्मीरके बादशाहने हिन्दीसे पूछा तू कौनहै और तेराक्यानामहै और यह स्त्री तेरी कौनहै और इसके आंसू क्योंनहीं थमते हैं उस हिन्दी ने कड़ेहोके कहा यह मेरी जोरू है किसीको क्या सामर्थ्यहै कि हमदोनोंमें बोलसके शाहज़ादीने कश्मीरके बादशाहसे कहा ईश्वर तुमको केवल मेरेधर्मके बचाने के लिये लायाहै यह झूठा है इसकी बातको निश्चय न करना ईश्वर मुझे इसकी स्त्री न बनावे यह जादूगर मुझे फ़ारस के शाहज़ादे के घरसे चुराकर जादूके घोड़ेपर बैठाकर लेभागाहै बादशाहको उसशाहज़ादीके रोनेपर दया

आई और उसके रूपअनूप चन्द्रमुखको देख आश्चर्य्यमें हुआ और उसकेबचनपर बिश्वासकर सवारों को आज्ञादी कि इसदुष्टको ऐसे कुकर्मके पलटे बधकरडालो सो उसीसमय सवारों ने उस हिन्दीका शिर तन से काटडाला अब वह शाहज़ादी एकसे छूट दूसरेके फंदेमें पड़ी फिर कश्मीरका बादशाह उसको एकघोड़ेपर सवारकरा अपने नगर में लेगया और महाबिशाल भवन उसके रहने के लिये नियत किया और बहुतसे दास, दासियां उसकी सेवाको दीं और उसको बहुतधैर्य्य देकर कहा हे सुन्दरी! तुम थकी मालूमहोतीहो इसलिये बिश्रामकरो इतना कह बादशाह चलागया शाहज़ादी ऐसे अयोग्य और दुष्ट मनुष्य की संगति से अतिचिन्ता को प्राप्तहुई थी आरामपाकर सोरही जब जगी तो सोचनेलगी कि कश्मीरके बादशाह ने प्रयोजन बिना मुझे उसदुष्टसे छुड़ाया और मेरा भलीभांति सत्कारकिया दो तीनदिनके उपरांत बादशाहने उससे बिवाहकी इच्छा की और तय्यारी करने की आज्ञा दी और चारोंओर नौबतें बजने लगीं और सल्तनत भरमें यह समाचार फैलगया कि हर मनुष्य अपनी शक्तिभर तमाशा देखकर खुशी करें जब बादशाह को यह इच्छा हुई कि बंगालेकी शाहज़ादीसे जाकर यह कहें कि वह शृङ्गार कर मेरे आगमनकी बाट देखे इतनेमें शाहज़ादीकी आंखें बाजोंके शब्दसे खुलगईं उसने दासियों से पूछा बाजे क्यों बजते हैं उन्होंने कहा तुम्हारा बिवाह बादशाहके साथ होगा यह सब उसकी धूमहै इतना सुनतेही शाहज़ादी मूर्च्छा खाकरगिरपड़ी बांदियोंने यहदशा देखकर बादशाह कश्मीर को यहहाल कहसुनाया वह सुनतेही उस की औषध आदि यत्न करनेलगा पर शाहज़ादी उसी दशामें पड़ी रही जब चैतन्यहुई तो उसने मरनेकी इच्छा की क्योंकि उसको फ़ारसके शाहज़ादेके सिवाय किसीसे बिवाहकरने की इच्छा न थी तदनन्तर उसने आपको बिक्षिप्त बनाया और बादशाह को हज़ारों गालियां देनेलगी और धाधाकर मारने लगी बादशाह उसकी यह दशा देखकर अत्यन्त चिन्तित हुआ और उसके पाससे उठकर बाहरआया और दासियों को आज्ञादी इसका घड़ी२ का हाल मुझ

से कहो और यह समझा कि इस सुन्दरी को कोई भूतबाधा हुई है इसलिये आज्ञादी कि बैद्य और फूंकने और झाड़नेवाले आवें और इस शाहज़ादी को हज़ारयत्न और मन्त्र इत्यादि से चंगाकरें पहिले नगरके बैद्यों ने उसकी औषधि की फिर सब सयानों ने यत्न आदिक किये और नानाप्रकारके अभिमंत्रित जल पिलाये और धूनीदी पर वह कुछ अच्छी न हुई किन्तु सन्ध्याको और भी उसकी बुरी दशा होगई जिससे बादशाह रात्रिभर बेचैनरहा दूसरे दिन प्रभातको भी वही दशा उसकी रही तो बादशाहने यह इश्तिहार दिया जो कोई शाहज़ादी को अच्छा करेगा तो उसे बहुतसा पारितोषिक दूंगा फिर बैद्यों ने परस्पर सम्मत कर बादशाह से बिनय की यदि यह रोग शाहज़ादी को नवीन उपजाहोगा तो निस्सन्देह साध्य है यदि प्राचीन है तो असाध्यहोगा यहबात बिनादेखे रोगी के स्पष्ट बिदित नहीं होसक्ती बादशाहने खोजियों को आज्ञादी कि इन बैद्योंमें से एक अथवा दोको लेजाकर शाहज़ादी की नाड़ी दिखावो वह लेजानेलगे शाहज़ादी यह बात सुनकर मन में बिचारने लगी यदि बैद्य मेरी नाड़ी देखेंगे तो उनको मालूमहोगा कि मुझेकुछ रोग नहीं है मक्कर से बिक्षिप्त बनगई है तो मेरी बनावट का हाल खुलजावेगा अब ऐसा हाल अपना बनाना चाहिये कि कोई मेरे पास न आसके जो कोई उसकेपास जाता तो वह उसको काटने और मारने दौड़ती इस भयसे कोई उसकेपास न जासक्ता फिर उन सब बैद्यों ने यहदशादेख नाड़ीके देखे बिना अनेकभांतिकी औषधि और क्वाथ बिक्षिप्तताको हटानेवाले उसके पीनेको दिये शाहज़ादी ने उन्हें तत्काल पीजाती फिर वह मनुष्यों के दिखानेकेलिये बिक्षिप्त बनजाती और एकान्त में अच्छी होजाती निदान बादशाहने देश देशके बैद्य शाहज़ादीके लिये बुलाये परन्तु किसीसे वह अच्छी न हुई और फ़ीरोज़शाह योगियोंके वस्त्रपहिन अपनाबेषबदल बंगालदेशके नगर नगर ढूंढ़ता फिरता और उसके सब अंग सूखगये इसीभांति घूमता घूमता एक नगरमें पहुँचा जो हिन्दुस्तान से सम्बन्धित था उसने वहांके निवासियोंसे सुना कि कश्मीरमें एकबंगालदेशकी शाहज़ादी

है ।जिससे वहांका बादशाह बिवाहकरना चाहताहै वह ऐसी बिक्षिप्त होगई है कि किसीभांति अच्छी नहीं होती यह सुनतेही फ़ीरोज़शाह समझगया कि वही शाहज़ादी है जिसको मैं ढूंढ़ता यहांतक पहुँचा तो वहांसे सिधारा और बहुतसा मार्गका कष्टउठाकर कश्मीर में जा पहुँचा और एकसरायमें जा उतरा और दिनभर शाहज़ादीका हाल सुनाकिया और उसकी यहभी इच्छाहुई कि उस हिन्दी दुष्टका हाल जो शाहज़ादी को लेभागाथा मालूमकरें परन्तु उसका बृत्तान्त किसी ने उसे न सुनाया फिर वह समझगया कि शाहज़ादी ने अपने बचावके लिये यह उपाय कियाहोगा निदान फ़ीरोज़शाह ने योगियों के वस्त्र उतार सांगोपांग बैद्योंके वस्त्र जैसा कि उस देश में प्रचार था पहिनलिये और दूसरे दिन वह बैद्योंकी भांति गलियों में फिरने लगा एक दिन बादशाहके दरवाज़े पर जाकर उसके रक्षकसे कहा कि मैं शाहज़ादी के अच्छाकरने के लिये बहुतदूरसे आयाहूं उसने घृणासे उत्तरदिया अपना मुख तो देख तू क्या शाहज़ादीको अच्छा करेगा हज़ारों बुद्धिमान् बैद्यों मे तो कुछ बन न आया तुझसे क्या होसकेगा उसने कहा मैं कुछ बादशाहसे नहीं मांगता केवल भाग्य की परीक्षाके लिये यहां आयाहूं और बहुतसी लाभकारी ओषधियां मैं जानताहूं रक्षकको उसपर दयाआई और उसको ठहराकर बादशाहसे जो शाहज़ादीके अच्छे होनेसे निराश होचुकाथा जाकर बिनतीकी कि एक बैद्य बहुत दूरसे आया है और उसके पास बहुत अच्छी दवाइयां हैं इतना सुनतेही बादशाहने आज्ञादी उसको मेरे पासलावो सो वह बादशाहके पासगया बादशाह ने सम्पूर्ण बृत्तान्त उससे बर्णन करके कहा वह अपने पास किसीको आने नहीं देती परन्तु तुम उसे दूरसे देखकरके ओषधि ऐसी दो जिससे वह अच्छी हो इतनाकह उसे एक मकान में जो शाहज़ादी के भवन में लगा हुआथा लेगया फ़ीरोज़शाह ने उस मकानमें जाकर देखा कि शाहज़ादी अपनी अभाग्यता के गीत गारही है जिसके सुनने से मनुष्य का मन फटजाता है फ़ीरोज़शाह ने उसे देखकर पहिंचाना और ध्यान धरकर देखा कि उसने अपने को बिक्षिप्त बनाया है बास्तव

में उसे कोई भी रोग नहीं तदनन्तर शाहज़ादे ने उस मकान से आके कहा कि मैंने उसे भलीभांति देखा उसका रोग साध्य है यदि आज्ञा हो तो मैं उससे कुछ पूंछूं और हाल मालूम करनेके उपरान्त यत्न उसका अति सुगम होजावेगा क्योंकि फ़ीरोज़शाह भली-भांति जानताथा कि मेरा शब्द सुनतेही अपनी बनाई हुई विक्षिप्तताको छोड़देगी और जो मैं कहूंगा वही करेगी बादशाहने आज्ञादी कि उस मकान का किवाड़खोल दो और इस वैद्यको उसकेपास जाने दो जब शाहज़ादा उस मकानमें गया तो शाहज़ादी उसे वैद्यके वेष में देख क्रोधकरने और गालियां देनेलगी परन्तु वह न हटा और उसके पास चलागया निदान नम्रतापूर्वक धीरे से उससे कहा मैं वैद्यनहीं हूं मैं फ़ीरोज़शाह पारस देशका शाहज़ादा हूं तेरेलिये मैंने अपनी यह दशा बनाई यद्यपि शाहज़ादेने अपना वेषबदला और लम्बीदाढ़ी रक्खीहुई थी पर वह शब्द और रूप से पहिचान कर सावधान होगई और अतिप्रसन्न होकर उसका मुख देखने लगी जैसे कि कोई मनुष्य किसीवस्तुकी इच्छाकरै और उसे बहुकाल के उपरांत अतिपरिश्रम करपावै फिर फ़ीरोज़शाहने उससे सब हाल पूंछा और अपना वृत्तान्तभी संक्षेपमें वर्णन किया कि नगर नगर देशदेश फिर तेरा यहां ठिकाना लगा अब प्रसन्न हो मैं तुझे यहांसे निकाल लेजाऊंगा शाहज़ादीने यह वृत्तान्त सुन कहा कि मैंने अपने धर्म्म के बचानेके लिये यह उपाय किया उसका सबहाल सुन फ़ीरोज़शाह ने कहा तुझे मालूमहै कि उस कलके घोड़ेको बादशाहने कहांरक्खा है उसनेकहा मैं नहीं जानती फ़ीरोज़शाह ने बिचारा कि बादशाहने उसघोड़ेको रक्षापूर्बक रक्खाहोगा फिर उसे धैर्य्य देकर कहा अब तुझे यह उचितहै कि तू अच्छी बनजा कि बादशाह जाने कि तू मेरी दवा से अच्छीहुई इसकारण जो कुछ कहूंगा वह मानेगा उसनेकहा अच्छा दूसरेदिन शाहज़ादी बस्त्र बदल अपनी सुधिमें आई और सब से भलीभांति यथोचित ब्यवहार करनेलगी बादशाह उसको भलीचंगी देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वैद्यकी बहुतसी प्रशंसा की फ़ीरोज़शाह ने जो कुछ उचितथा कहकर कहा यह बंगाल देशकी

शाहज़ादी क्योंकर यहांआई प्रयोजन उसका इसके पूंछनेसे यह था कि बादशाह कलके घोड़ेका बृत्तान्त बर्णनकरे परंतु बादशाह उसके अभ्यन्तर को कुछ न समझा निदान उसने शाहज़ादीके आगमनका हाल जैसा फ़ीरोज़शाहने शाहज़ादी से सुना था कहा और यह भी कहा घोड़ाकाष्ठका जो उनके पास रक्खा हुआथा मैंने उसेरक्षापूर्व्वक रखदियाहै शाहज़ादेने यहसब सुनकर कहा इससे मालूमहोताहै कि यह शाहज़ादी उसजादू के घोड़ेपर चढ़के आईथी उतरते समय उसे कोई सुगन्ध और धूनी नहीं दीगई इसी कारण उसे प्रेतबाधा हुई यद्यपि मैं उसे जादूके बल सुधिमें लाया परन्तु अभी वह भलीभांति अच्छी नहींहुई यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि वह अच्छी होजाय और फिर कभी उसे भूतबाधा न हो तो आप सब नगर निवासियों को बड़े मैदान में इकट्ठा कीजिये और उस जादूके घोड़ेको भी वहां मँगवाइये कि मैं शाहज़ादी को उसपर चढ़ाकर उसेधूनीदूं कि कदापि बीमार न हो परन्तु उसदिन शाहज़ादी को उत्तम उत्तमबस्त्र पहिनने उचित हैं बादशाहने अपने सम्पूर्ण सभासदोंको आज्ञादी कि जिस बात की यह बैद्य आज्ञा करे उसे तुरन्त प्रतिपालन करो निदान दूसरे दिन कलके घोड़ेको उठालाके एकबड़े मैदानमें जो राजभवन के आगेथा रक्खा और डौंड़ीपिटवाई कि नगरके सबलोग अमुक मैदान में इकट्ठे हों और सेना भी घेरा बांधकर खड़ीहो जब नगर-बासी इकट्ठे हुये और बादशाहका कटक भी वहीं आया तो बैद्यने आज्ञाकी कि किसीको उसघोड़ेके पास न जानेदेना और बादशाहभी अपने डेरे में बिराजमान हो और उसके चारोंओर सम्पूर्ण सभा-सद खड़ेहों और बंगालदेशकी शाहज़ादी अपनी लौंड़ियों समेत उसघोड़ेपर सवार हो जब उसके कहने के अनुसार सबहोचुका और दासियां शाहज़ादीको घोड़ेपर सवारकर घोड़ेकी बाग पकड़के खड़ी हुई तो उस बैद्यने घोड़ेके आस पास बहुतसी अग्निकी अंगीठियां रखवाईं और उसमें तेल और मट्टी भरभर सुगन्ध डाल तीन बेर उसकी परिक्रमाकी और कुछ धोखादेनेको पढ़नेलगा तब अँगीठियों से ऐसाधुआं निकला कि वह शाहज़ादी घोड़े समेतछिपगई तो वह

अवसर पाकर उसकेपीछे चढ़ा और चलने के पेंचको घुमाया तो वह घोड़ा तत्काल आकाश की ओर उड़ा तब फ़ीरोज़शाह ने बड़े शब्द से कहा हे कश्मीर के बादशाह! तूने शाहज़ादी से बिवाहकी इच्छा की थी अबतूजान कि यह शाहज़ादी फ़ारसके शाहज़ादेका माल है जो अपने साथ लिये जाता है बादशाह कश्मीर और उसके सभासद यहबात सुन अति आश्चर्य्य में हुये सो उसदिन फ़ीरोज़शाह कईघड़ी के उपरान्त बंगाले की शाहज़ादीको लेकर फ़ारसदेश में पहुँचा और बादशाहके पासगया बादशाह अपने पुत्रको देखकर अति प्रसन्नहुआ और कईदिनके पश्चात् उसका बिवाह बड़ी धूमधाम से करदिया बिवाहके उपरान्त बादशाह ने बंगाले के बादशाहको यह संदेशा भेजा कि तुम्हारी बेटीकेसाथ मैंने अपने बड़े बेटेका बिवाह करदिया और तुम्हारी बेटी यहां अतिप्रसन्न है बंगाले के बादशाहको इसबातसे अतिहर्ष प्राप्तहुआ और उसका उत्तर यथोचित लिख असंख्यद्रब्य और रत्नादिक भेजे शहरज़ाद यह कहानी पूर्ण कर दूसरी रात्रिको अहमद और परीबानूंकी कहानी कहनेलगी ॥

## अहमदशाहज़ादा और बानूंपरीका वृत्तान्त ॥

स्वामी पूर्ब्बकाल में एक तेजवान् हिन्दुस्तान के बादशाह के तीन पुत्र थे बड़ेका नाम हुसेन दूसरे का नाम अली तीसरेका नाम अहमद और नूरुलनिहार उसके भाई की पुत्री थी सो बादशाहने अपने भाई के मरने के उपरान्त अपनी भतीजी को अपने मंदिरमें लाकर रक्खा था और बड़े बड़े विद्वानों और गुणवानों से उसको पढ़वाया वह अपनी हमजोलियों और निजकुटुम्ब और बादशाह के परिवारसे अधिक रूपवान् और बुद्धिमान्थी और बाल्यावस्थासे उन पूर्ब्बोक्त शाहज़ादोंकेसाथ खेलती बादशाहने बिचारा कि तरुणावस्था में इसका बिवाह किसी दूसरे शाहज़ादे के साथ करूंगा परन्तु जब उसको मालूमहुआ कि तीनों मेरे पुत्र उसपर मोहित हैं और प्रत्येक की यह लालसाहै कि बिवाह उसका मेरेसाथ हो तो वह अतिचिन्ता करनेलगा और शोचा कि यदि इसका बिवाह उन तीनों मेंसे जिसके साथ करूंगा तो दूसरे अप्रसन्नहोंगे और मैं किसी

की अप्रसन्नता नहीं चाहता यदि किसी दूसरे शाहज़ादेको ब्याहदूं तो सब के सब अप्रसन्न होंगे न जानिये कि उसके मोह में मग्न होकर अपने प्राणत्यागदें अथवा किसी दूसरे देशमें चलेजावें यह बात उपाधि उठाये बिना न रहेगी ऐसा कोई उपाय करना चाहिये कि चाहे जिसके साथ उसका बिवाहहो दूसरे दो भाई अप्रसन्न न होवें इसीभांति वह बादशाह बहुकाल पर्य्यन्त शोचता रहा अन्तको उसने एक उपाय बिचारलिया और तीनों अपने पुत्रों को बुलाकर कहा कि मेरे बिचार में तुम तीनों बराबरहो मैं एकको तुममें से बड़ा समझकर नूरुलनिहारका बिवाह नहीं करसक्ता और यह भी नहीं होसक्ता कि उसका बिवाह तुम तीनों के साथ करदूं परन्तु एक बात मैंने बिचारी है इसकारण किसी न किसी के साथ उसका बिवाह होजा-वेगा और कोई तुममेंसे अप्रसन्न न होगा और तुम तीनों की प्रीति स्थिर रहेगी और तुममें से कोई आपस में डाह और बैर न करेगा वह यहहै कि तुमतीनों पृथक् पृथक् यात्राकरो और एकएक बिचित्र बस्तु मेरेलिये लावो जिसकी बस्तु अद्भुत होगी उसकेसाथ नूरुलनि-हारका बिवाह करूंगा और जो कुछ तुमको उस बस्तुके लानेके लिये द्रब्य आवश्यक हो मेरे कोषसे लेजावो इतनासुन उनतीनों ने इस बातको स्वीकारकिया और हरएक अपने मनमें प्रसन्नहुआ कि सब भाइयों में मैंहीं अच्छीबस्तु लाकर नूरुलनिहारके साथ बिवाहकरूंगा तदनन्तर बादशाहने सबको उनकी इच्छानुसार द्रब्यदेकर आज्ञा दी कि अब शीघ्र यात्राकी तय्यारी करके सिधारो सो वह ब्यापारियों का बेषधर कुछ बस्तु और दासोंको साथ लेकर साथही अपने पिता की राजधानी से चले और कई मंज़िलों तक इकट्ठे गये फिर वह एक ऐसे स्थानपर पहुँचे जहां देशोंके मार्ग भिन्न भिन्न थे वहां एक सरायमें उतरे उन्होंने परस्पर मिल भोजन किया और यह प्रति-ज्ञाकी कि अबतक हम तीनों भाइयोंकी एकही राह थी कल हम भिन्न भिन्नहोकर भिन्नभिन्न देशों में जावेंगे उचितहै कि हमतीनोंभाई एक बर्ष से अधिक यात्रा न करें और इतनी अवधि के उपरांत इस स-रायमें आवें और यहां परस्पर भेंटकर पिता के निकट जावें और जो

एकभाई पहुँचे वह यहांबैठकर दोनोंभाइयों के आगमनकी राहदेखे निदान दूसरे दिन वह तीनोंभाई परस्पर कण्ठलग बिदाहो घोड़ों पर सवारहो न्यारे न्यारे देशों में गये हुसेन शाहज़ादा जो सबसे बड़ाथा सदाविष्णुगढ़की प्रशंसा सुनता और उसके देखनेकी अति लालसा रखता सो वह उस नगरकी ओर यात्रियोंके समूहके साथ जहाज़पर चढ़ा तीनमास पर्य्यंत जलकी यात्रा की उपरान्त पृथ्वी पर बहुतसे नगर और दिव्यदेश लांघकर विष्णुगढ़ में जापहुँचा और एक सराय में उतरा जहां बिशेषकर ब्यापारी उतरा करतेथे वहांके निवासियोंसे मालूमहुआ कि वहां एकबाज़ारहै जहां अति बिचित्र और उत्तमबस्तु बिकती हैं दूसरेदिन शाहज़ादा उसी बाज़ार में गया उसकी लम्बान चौड़ान और परिधिको देख आश्चर्य्य में हुआ उसमें हज़ारोंदूकानें अतिस्वच्छता पूर्व्वक बनी थीं और प्रत्येक दूकानके सामने सायबान गर्मी के बचावके लिये इस शोभा और उपायसे लगाहुआ था कि दूकानों पर तनक अँधियारा न होता प्रतिबस्तुकी दूकानें भिन्न भिन्नथीं और भांति भांतिके दिव्यबस्त्र रंग बरंग बूटेदार दूकानों पर क्रमसे रक्खेहुये थे बृक्ष और सुंदर पुष्पों के बिचित्र चित्र इस उत्तमता से उन कपड़ोंपर कढ़ेहुये थे कि उनके देखने से यही ज्ञातहोताथा कि बास्तवमेंही यह बृक्ष और पुष्प हैं इसके बिशेष रेशमी और कमख़ाब, चिकन, साटन और अतलश आदि ईरान और चीनके बनेहुये असंख्यथानथे कहीं तो शीशे और चीनी आदिकके दिव्यपात्र दूकानों पर भरेहुये और हज़ारों प्रकारके सुन्दर कालीन आदिक बिकते थे जिनके देखने से वह अचम्भे में हुआ फिर वहांसे उन दूकानों पर आया जिन में सुनहले रुपहले भाजन और रत्न हीरेआदिक थे जिनकी चमक दमक से दूकानें प्रकाशित होरही थीं हुसेन एकही बाज़ारमें इतना असबाब और रत्नदेख मनमें समझा ईश्वरजाने नगरभरमें कितना माल और असबाब होगा और वहां के ब्राह्मणों को देख अधिक आश्चर्य्य में हुआ कि सबके सब द्रव्यकी आधिक्यता से दिव्य आभूषणों से अलंकृत होकर फिरते हैं और उनके दासभी सुवर्ण के कड़े और

कण्ठे और अनेक भूषणपहिने रहते थे और प्रत्येक बाज़ारमें हरएक भांतिके फूलोंके ढेरकेढेर और वहांके बासी दिव्यपुष्पोंकी माला कोई तो हाथोंमें लिये और कोई बद्धियां कण्ठोंमेंबांधे नगरमें घूम रहे हैं और हाटबाटपर दूकानदार फूलोंके गुलदस्ते चुनरखते इस सुगंध से बाज़ारभर सुगंधित होरहाथा हुसेन बहुकाल पर्य्यंत फिरा फिर थककर कहीं बैठनेकी इच्छाकी सो एकदूकानदार ने अपनी बुद्धिसे जानकर प्रीतिपूर्व्वक उसको अपनी दूकानपर बैठाया एकघड़ी के उपरान्त एक दल्लालको देखा कि एक ग़लीचा चारगजका चौकोण लियेहुये कहता फिरताहै कि यह ग़लीचा तीसहज़ार अशरफ़ी को बिकताहै जिसका मनचाहै मोल लेले शाहज़ादेने यहशब्दसुन आश्चर्यकिया और उस दल्लालको बुलाया और ग़लीचे को देखकर कहा ऐसा ग़लीचा एकरुपयेको बिकताहै इसमें कौन ऐसा गुणहै जिसकी तू तीसहज़ार अशरफ़ी मांगताहै उसने शाहज़ादेको ब्यापारीसमझकरकहा भाई क्या तुम इस ग़लीचेका बहुतमोल जानतेहो इसके स्वामीने मुझसे कहाहै कि मैं चालीसहज़ार अशरफ़ीसे कम न बेचूंगा शाहज़ादेने कहा इसमें कोई बड़ागुणहोगा जिसका इतनाबड़ा मोल है उसने कहा इसमें बड़ागुणहै जिससमय तुम इसपर बैठकर किसी स्थानपरदूरहो अथवा निकटजानेकी इच्छाकरो तो तत्कालही तुम उसीस्थानपर पहुँचजावोगे शाहज़ादा यह सुन समझा कि इस से संसारमें कोई भी बिचित्रबस्तु न होगी ईश्वरका धन्यबाद है कि इस यात्राका जो मुझे प्रयोजन था वह प्राप्तहुआ निश्चय है कि इसको बादशाह देख अत्यन्त प्रसन्नहोगा और पसन्द करेगा तदनन्तर शाहज़ादेने मोल लेनेकी इच्छासे दल्लालसे कहा यदि इसका यही गुणहै तो इतने मोलपर मैंहीं लिये लेताहूं दल्लालने कहा जो तुम्हें मेरे वाक्यपर संदेह हो तो इसकी परीक्षा कर लीजिये और इसीपर बैठकर सरायमें चलिये वहींपर मोलइसका देदीजियेगा निदान दल्लालने उसदूकानके पीछे ग़लीचेको बिछा शाहज़ादेको उसपर बैठा आपभी उसपर बैठकरजानेकी इच्छाकी वह ग़लीचा तत्कालही देवताके बिमानकेसदृश बायुमें उड़ा और शीघ्रही सराय में पहुँचगये

शाहज़ादे ने चालीस हज़ार अशरफ़ियां उसगलीचेका मोल और बीसअशरफ़ियां उसदल्लाल को इनआमदीं और बड़ाप्रसन्नहुआ और निश्चयहुआ कि अपने पिताके निकट यह गलीचा लेजाने से अवश्य मुझे नूरुलनिहार ब्याही जावेगी और ऐसी अद्भुत और अपूर्ववस्तु मेरेभाइयों को चाहो वह संसारभर में फिरें प्राप्त न होगी तदनन्तर यह शोचा कि उस गलीचेपर बैठकर उसी सरायमें जहां से वह तीनों भाई अलगहुये थे जाकर उतरे और सब भाइयों के आनेकी राहदेखे परन्तु साथही यह शोचा कि मुझे उसजगह बहुत ठहरनाहोगा और अकेला घबड़ाऊंगा इससे उत्तम है कि यहांके निवासियों और बादशाह को भलीभांति देखलूं और इसनगरकी भली भांति सैरकरूं इसलिये कई महीनेतक वहांरहा वहांके बादशाह का यह नियम था कि प्रतिसप्ताह में एक दिन परदेशी व्यापारियोंकी व्यवस्था सुनने और न्यायचुकाने के लिये बिराजता हुसेन उसको इसकारण भली भांति देखता परन्तु हुसेनको अपने प्रकट करने की इच्छा न थी और शाहज़ादा कि अत्यन्त रूपवान् अतिचतुर बाचाल तीव्र बुद्धिथा इसकारण बिष्णुगढ़का बादशाह और व्यापारियों से उससे अधिक प्रीति करता और बहुधा उससे हिन्दुस्तान के राज्य का बृत्तान्त पूंछता फिर शाहज़ादा अतिबिख्यात मंदिर के देखने को गया सो एक देवालयको अतिसुन्दर और पीतलका बनाहुआ था देखा जो भीतरसे दशगज़ चौकोण था और उसके मध्य में एक देवता मनुष्य के डीलके समान इसभांति रक्खा हुआ था कि चहुं-ओरके देखनेवाले उसे अपनी ओर देखतेहुये समझते और उसके नेत्र बहुमूल्यरत्नोंसे जड़े थे तदनन्तर दूसरेगावँ में देवालय देखा कि वह भी अति विचित्र पहिलेके समान बनाहुआ था उस जगह एक मैदान अनुमान आधे बीघे के चौड़ा था जिसमें अतिसुगन्धित पुष्पादि के बृक्ष अतिसुन्दरता से लगेथे और उस पुष्पबाटिका के चहुँओर दीवारें अनुमान तीनगज़के ऊंची थीं जिससे कोई पशु उसके भीतर न जासके और उस मैदान के मध्य में एक चबूतरा एक मनुष्यकी ऊँचाई के अनुमान पत्थरका बनाहुआ था और उस

के पत्थरों को इस कारीगरी से जमाया था कि वह एकही पत्थर का मालूम होता था और उस चबूतरे पर एक देवालय पचास गज़का ऊंचा था कि चारों ओर कोसों से दीखता लम्बान उसका तीस गज़का चौड़ाई उसकी बीस गज़की थी वह निपट संगमरमर का बनाहुआ था और उसका पत्थर ऐसा साफ़ और चिकना था कि शीशे के सदृश उसमें मुख दीखता था मण्डप उसका अतिबिचित्र बनाहुआ था उसमें देवताओं के सैकड़ों चित्र रक्खेहुये थे प्रतिदिन भोर और सन्ध्याको ब्राह्मणों की स्त्री पुरुष और बालक आते और नानाभांति की पूजाकर कुतूहल करते कोई तो मग्नहोकर नाचता और कोई प्रसन्नता से गाता बजाता और स्थान स्थानपर इन्द्र के तुल्य सभा लगाकर नाच तमाशे देखते और दूर दूर से लाखों मनुष्य भेंट देने को एकत्र होते और नानाभांति की असंख्य बस्तु और बहुतसी द्रब्य उस देवालय में चढ़ाते शाहज़ादे ने वहां का बार्षिकमेला भलीभांति देखा मेले के दिन सबनगरों के प्रधान और मुख्य मुख्य नगरनिवासी उस देवालय में पूजनकर परिक्रमा करते बिशेष एक महाबिशाल देवालय में बड़े बड़े पण्डित षट्शास्त्री चार पांच महीने की राहसे वहां आकर यथाविधि बन्दना करते निदान हिंदुस्तान भरकेबासी पूजनके निमित्त इतने इकट्ठेहोते जिनको देख शाहज़ादा आश्चर्यमें हुआ उसमैदान के एकओर चालीस स्तम्भों पर नौखण्डा एक बड़ाबिशाल सुन्दर भवन था जिसमें बादशाह और उसके मंत्री और प्रधान परदेशियोंके न्यायके लिये बैठाकरते वह मन्दिर भीतर से बहुतसी दिब्य सामग्री से अलंकृत था और बाहरसे नानाप्रकारके देशों और बिशेषकर पशु पक्षी के महासुन्दर चित्रों से बिचित्रथा वह चित्रकारियां इस सुन्दरता और कारीगरी से खिची थीं कि सचमुचकी मालूमहोतीं दूसरे देहाती गँवार महा बिकराल पशु पक्षी जैसे कि सिंह आदिक का चित्र देखकर डरजाते और इस मैदानके तीन ओर काष्ठके अतिबिचित्र मन्दिर उसीभांति भीतर बाहरसे सजेहुये इसकारीगरी से बनेहुय थे कि जिस ओरको चाहें घुमाने से मनुष्यों समेत फिरते सो मनुष्य तमाशा देखने के

लिये काष्ठके मन्दिरों को घुमाते और प्रतिस्थानपर अनुमान एक हज़ारके मस्तहाथी जो सुनहली झूलों और रुपहले हौदों से सुशोभित थे दृष्टि पड़े उनपर गवैयेगाते और नक़ाल नक़्लेंकरते और हाथियों के पाठे नानाभांति के रंगों में चित्रित थे हुसेन शाहज़ादा हाथियों का तमाशा देख अधिक आश्चर्य में हुआ अर्थात् एक बहुतबड़ाहाथी चारतिपाइयों पर जिनके नीचे पहिये लगेथे उनपर चारों चरणधरे खड़ाहुआ सूंड़से बांसुरी बजाता जिसके सुनने से सबलोग वाहवाह करते और उस हाथीको जिधर चाहते खींचकर लेजाते और दूसराहाथी पहिले से कुछ छोटा एककाष्ठ के बड़ेशहतीर के एक सिरेपर खड़ाथा और वह शहतीर एक ऊंची तिपाईपर जो अनुमान आठ गज़के थी रक्खाथा और उस शहतीरके दूसरे सिरेपर लोहा हाथीके बोझके समान था कभी वह हाथी ज़ोर करने के कारण धरतीपर आलगता और कभी वह उठकर ऊपरको आजाता वह गज उस अवस्था में हावभावकर अपना नाच दिखाता और सूंड़से तानके साथ गाता और हाथीभी उसके साथ गान करते और मनुष्य उसको इसीदशामें इधरउधर लिये फिरते यह हाथियों का तमाशा बादशाहके सम्मुखहोता हुसेन शाहज़ादा ऐसे अनूठे तमाशोंके देखने के लिये एकबर्ष पर्य्यन्त बिष्णुगढ़में रहा तदनन्तर एकदिन सरायके पिछवाड़े जिसमें वह रहताथा जाकर उसग़लीचेको बिछाया और उसपर अपने सेवक समेत जिसको वह अपने साथ लायाथा बैठा और मनमें उसीसराय में पहुँचनेकी इच्छा की जिस में उसकेभाइयों ने पहुँचने की प्रतिज्ञाकी थी इतना बिचारतेही वह तत्काल वहां पहुँचगया और ब्यापारियों के बेष से वहां ठहर कर अपने भाइयों के आनेकी राह देखने लगा और शाहज़ादा अली जो हुसेन से छोटाथा एक यात्रियों के समूहके साथ ईरानदेश को सिधारा चारमहीनेके उपरान्त शीराज़ में जो फ़ारसकी राजधानीथी पहुँचा और अन्य ब्यापारियों के साथ जिनसे अतिप्रीति होगईथी एक सरायमें उतरा और अपनेको रत्नपारखी प्रसिद्धकर उनकेसाथ प्रीतिपूर्ब्बक रहनेलगा जब ब्यापारियों ने लेनदेनका उद्योग किया

तब शाहज़ादा भी अपने बस्त्र बदल वहांके बड़े बज़ाज़े में गया वह बाज़ार सब पक्काथा दूकानें सब मण्डपाकार गोल स्तम्भोंपर बनी हुईथीं हुसेन उस बाज़ारकीसैरकर अचम्भा करनेलगा कि एकबाज़ार में तो करोड़ों रुपयों की बस्तुहै तो नगर भरके द्रव्यकी क्यागिनती कीजावे दल्लाल प्रति बस्तुके नमूने दिखाते फिरते थे उनमें से एक दल्लाल आधेगज़की लम्बी और पौनगज़की चौड़ी दिब्यहाथीदांत की दूरबीन हाथोंमें लियेहुये कहता फ़िरता है कि इसदूरबीनकामोल तीसहज़ार अशरफ़ीहै शाहज़ादाअली यहसुन बिचारा कि यहदल्लाल बिक्षिप्तहोगा तदनन्तर शाहज़ादेने एकदूकानदारके समीप जाकर पूछा क्या यहदल्लाल बिक्षिप्तहै कि तीसहज़ार अशरफ़ी एकहाथीदांत की कहता फिरताहै भला कोई भी दीवानाहोगा जो इसछोटी बस्तु को इतनी अशरफ़ियोंपर मोललेगा उसदूकानदारने कहा भाई यह दल्लाल और दल्लालों से अधिकचतुर और बिश्वसित है इसके द्वारा हज़ारों रुपयोंका ब्यवहार होता है कलतक चंगाभलाथा आजका हाल मालूम नहीं कि बिक्षिप्त होगयाहो यदि वह इस दूरबीन की तीसहज़ार अशरफ़ी कहता है तो वह अवश्य इसी मोलकी होगी अभी इसकाहाल मालूम हुआजाता है ज़रा यहां आने दो तबतक आपमेरी दूकानपर ठहरिये सो वहां ठहरगया इतने में वह दल्लाल वहां पहुँचा उस ब्यापारी ने उसे निकटबुलाकर कहा कि इसदूर-बीनका गुण कह कि बहुधा मनुष्य इसका मोल सुनकर आश्चर्य्य करतेहैं बिशेषकर इसने तुझे बिक्षिप्तबनायाहै उसने उत्तरदिया आप इसका मोल सुनकर मुझे बिक्षिप्त बनाते हैं जब मैं इसकागुण ब-र्णन करूंगा तो इसीसमय इसको मोल लेलीजियेगा आपही नहीं किन्तु नगरके और आदमी भी इसकी क़ीमत सुनकर हँसतेहैं फिर उसने वह दूरबीन अलीशाहज़ादे को दिखाकर कहा इसके देखने का प्रकार मैं तुमको बताताहूं इसके दोनों सिरोंपर शीशेके दो टुकड़े लगेहुये हैं तुम अपनी दृष्टिका उनदोनों शीशोंके सामनेकरो यद्यपि वह बस्तु हज़ारकोसपर क्यों न हो पर वह इसभांति तुमको दिखाई देगी जैसे तुम्हारे निकट रक्खी हुई है शाहज़ादे ने कहा मुझे तेरे

कहनेका बिश्वास नहीं जबतक कि मैं इस दूरबीनकी परीक्षा न लेलूं दल्लालने दूरबीन शाहज़ादेके हाथमेंदी और देखनेकीबिधि उसको बताकर कहा जिसको तुम देखना चाहो अपने मनमें उसका सङ्कल्प कर देखो अलीने अपने पिताके देखनेके बिचारसे दूरबीनकी अपनी दृष्टिके साम्हने किया तो उसने अपने पिताको कुशलपूर्ब्बक तख़्तपर बैठेदेखा फिर अपनी प्रिया नूरुल्निहारको भी देखा कि वहभी अपनी शय्यापर कुशलपूर्ब्बक बैठी है और उसकी दासियां उसकी शय्याके चहुँओर हाथ बांधे खड़ी हैं इस अपूर्ब दूरबीनको देख बहुत अचम्भे में हुआ और मनमें कहनेलगा यदि दश बर्ष पर्यन्त देशों देश घूमता और ढूंढ़ता तो इस बिचित्र दूरबीन सी कोई बस्तु प्राप्त न होती तदनन्तर उस दल्लाल से कहा बास्तव में जैसा तुमने इसका गुण कहा था वैसा हमने इसमें पाया तीसहज़ार अशरफ़ी मुझसे लो दल्लालने कहा भाई इसके स्वामीने प्रणकिया है कि चालीसहज़ार अशरफ़ी से कम न लूंगा शाहज़ादेने दल्लाल को सच्चा जान सराय में लेजाकर चालीसहज़ार अशरफ़ियां उसको गिनदीं और दूरबीनको जो बास्तव में संसारदर्शकथी मोललेकर अतिप्रसन्न हुआ और समझा कि इस दूरबीन के कारण मुझे अवश्य नूरुल्निहार मिलेगी तदनन्तर वह फ़ारसदेश की सैर करने लगा एक बर्ष के अनुमान वहां रहकर यात्रियोंके साथ हिन्दुस्थान को सिधारा और कुशलपूर्ब्बक उसी सरायमें पहुँचा जहां हुसैन बैठा हुआ था और हुसैनके साथ रहने लगा तीसरा शाहज़ादा जिसका नाम अहमद था अपने भाइयों से बिदाहोकर समरक़न्द की ओर गया और वहां पहुँचकर एक सरायमें उतरा दूसरे दिन उस नगरके चौकमें गया वहां उसने एकदल्लाल को देखा कि वह सेब हाथमें लियेहुये कहता फिरता है यहसेब पैंतीस हज़ार अशरफ़ियोंका बिकता है अहमदने उसको निकट बुलाकर पूंछा मुझको यहसेब दिखाकर इसका गुण कह दल्लालने वहसेब अहमद को देकर कहा आप इसको देखिये और इसका इतना मोल सुनकर अचम्भा न कीजिये इसके गुणसुनिये मनुष्य कितनाही रोगी होगया

हो अथवा मृत्यु निकट पहुँचे इसके सूंघतेही तत्काल आरोग्य होजावेगा मानो कदापि उसे रोग न ब्यापाथा और तुरंत उसकी देह में बलआजाताहै फिर जन्मभर रोगी न होगा अहमदने कहा जो यह सत्यहै तोमैं इसे इसीसंख्यापर मोललेताहूं दल्लालने कहा भाई इस बातको यहां के सबब्यापारी जानते हैं यहसेब एकबड़ेबैद्यने कईबूटियां और औषधसंयुक्तकर बहुतबर्षों परिश्रमकरके बनायाथा और ओषधियों की प्राप्तिके लिये बहुतसाधन ब्यय किया और सैकड़ों रोगियोंको केवल सुँघाने सेही अच्छाकिया परन्तु वह अकस्मात् कालबशहुआ और इससेबको आप सूंघने न पाया मरनेके उपरान्त कुछभी द्रब्य न छोड़ा उसके परिवार में बहुतसे असमर्थ बालक हैं अब उसकी स्त्रीने लाचार होकर इस सेबको बेंचनेके लिये निकाला है दल्लालकी बातें सुनकर बहुतसे मनुष्य एकत्रहोगये संयोगबश उस समूहमें से एकमनुष्य ने आगे बढ़कर कहा कि मेरा मित्र बहु कालसे रोगी होगया है और अब वह अपने जीवनसे निराश है तुम चलके ज़रा यह सेब उसे सुँघादो तो मैं तुम्हारा बड़ागुणमानूंगा और जन्मभर तुम्हारा यश बखानूंगा अहमद ने यहबचन सुन कर दल्लालसे कहा जो वह रोगी इस सेबके सूँघने से निरोग होजायगा तो अभी चालीसहज़ार अशरफ़ी देताहूं उसने कहा बहुत अच्छा आप इसकी परीक्षा लेलीजिये मैंने तो इसके द्वारा अनेक रोगियों को नीरोग किया निदान वहरोगी उससेबके सुँघातेही नीरोग होगया तदनन्तर अहमद ने चालीसहज़ार अशरफ़ियां उस को गिनदीं और वहसेब मोललिया और इच्छा की जो कोई यात्री हिन्दुस्थान के जानेवाले मिलें उनके साथ यहांसे चलूं और जब तक न मिलें तबतक इधर उधरकी सैरकरूं कितनेदिनोंके उपरान्त अहमद यात्रियों के साथ हिन्दुस्थान को चला और कुछ काल में कुशलपूर्ब्बक उसी सराय में जहां दोनों भाई उतरे थे जा पहुँचा निदान तीनों भाई परस्पर भेंटकर अत्यन्त प्रसन्नहुये और ईश्वर का धन्यबाद किया हुसेन शाहज़ादे ने जो सबसे बड़ाथा कहा अब हम अपनी अपनी यात्राका हाल और अपनी बस्तु का हाल कहते

हैं और उसका गुणभी बर्णन करतेहैं मैंने एक गलीचा जिसपर बैठाहूं मोललिया यद्यपि यह प्रकट में कुछ वस्तु नहीं परन्तु इसमें बहुत बड़ागुणहै जब कोई मनुष्य इसपर बैठकर किसी दूर वा निकट देशके जाने की इच्छाकरे तो उसीसमय वहां पहुँचजावै मैंने इसे चालीस हज़ार अशरफ़ी को मोललिया और मैं इसपर बैठ यहां चला आया अब पांच महीने से तुम्हारे आगमन की बाट देखताहूं जिसका मन चाहे परीक्षालेले जब हुसेन बड़ा शाहज़ादा कहचुका तो अली कहनेलगा कि भाई सचहै तुम्हारी बस्तु अतिअपूर्वहै तद-नन्तर उसने हाथी दांत की दूरबीन को निकालकर दिखाया और कहा मैंने भी इसे इसी संख्यापर मोललिया इसका गुण यह है कि सैकड़ों कोसों की बस्तु इसप्रकार दिखाई देती है जैसे कि साम्हने रक्खी है जिसका मनचाहे परीक्षालेले मैं तुमको इसकी बिधिबता-ताहूं हुसेन ने उसदूरबीन को उससे लेकर जिस बिधानसे उसने उसे बतायाथा नूरुल्निहारके देखने की इच्छा की दूरसे दोनों भाई उस की ओर देखरहे थे कि देखें वह क्या कहता है अकस्मात् उन्होंने उसके मुखका रंग बदला पाया उसे चिन्तायुक्त देखकर आश्चर्य्य में हुये हुसेन ने कहा कि हम तीनोंने जो इतना परिश्रम नूरुल्निहारके लिये कियाथा सब बृथागया अब मैंने इसको देखा अत्यन्तरोगी मृत्युके निकट पाया उसके चहुँओर दासियां और ख़्वाजे खड़ेरोरहे हैं यदि तुमभी चाहो तो उसका अन्तका दर्शन करलो शाहज़ादा अलीने भी देखा वही दशापाई तदनन्तर वह दूरबीन अहमद को दी तो उसने भी उसे उसी दशामें देखा तब अपने भाइयोंसे कहा यद्यपि नूरुल्निहार पर हमसब मोहित हैं परन्तु मैं उसे इसीसमय नीरोग करसक्ताहूं इतना कह उसने उसी सेबको जेबसे निकालकर उन दोनों को दिखाया और कहा यहभी गलीचे और दूरबीन के मोलसे कम मोलका नहीं है अब इसकी परीक्षा का यही समय है इसमें बड़ा यहगुणहै जो मनुष्यचाहै कैसाही रोगीहो इसके सुंघातेही नीरोग होजाता है अब तुम इसकागुण नूरुल्निहार के सुंघाती स-मय देखलेना परन्तु इसीसमय वहां पहुँचजावें हुसेन ने अहमद

से कहा यह कुछ कठिन नहीं हम गलीचे पर बैठकर तत्कालही नूरुलनिहार के समीप पहुँचसक्तेहैं अब बिलम्बमत करो मेरे साथ तुम दोनों बैठजावो कि बातकीबातमें वहां पहुँचजावें और सेवकोंको यहीं छोड़ो पीछेसे वहां पहुँचरहेंगे निदान वहतीनों उसी गलीचेपर बैठे और सबने पहुँचनेकी इच्छाकी सो तत्कालही वह नूरुलनिहार के समीप पहुँचगये सेवक उनको देखकर डरगये और कहने लगे कि यह तीन मनुष्य क्योंकर यहां घुसआये पहिले उन्होंने चाहा कि उनको मारकर निकाल दें फिर पहिचान कर आश्चर्य में हुये सब से पहिले शाहज़ादा अहमदने आगे बढ़कर वह औषधमयी सेब नूरुलनिहार को सुंघाया थोड़े काल के उपरान्त उसने अपने नेत्र खोलदिये और अपना मुख इधर उधर फेरकर उन सबको देखा तदनन्तर अपनी शय्यासे उठ बस्त्रमांगे और यह समझी कि सोकर अभी उठी हूं इतनेमें दासियोंने उससे कहा यह तीनों तेरेचचेरे भाई अभी आये हैं और अहमदने तुम्हें कोई बस्तु सुंघाकर अच्छा किया है वह उनको देखकर अतिप्रसन्न हुई और अहमद का गुण माना और तीनों शाहज़ादे भी उसके आरोग्य होनेसे प्रसन्न हुये तदनन्तर वह नूरुलनिहार से बिदाहोकर बादशाह के समीप गये उनके पहुँचने के प्रथम सेवक सम्पूर्ण बृत्तांत कहचुके थे बादशाह ने उठके सबको प्रीतिपूर्ब्बक अपने कण्ठसे लगाया और नूरुलनिहार को इन शाहज़ादोंके द्वारा नीरोग होनेसे अति आश्चर्य किया तदनन्तर उन्होंने अपनी अपनी वस्तु बादशाहको दी और उनके गुण बर्णन किये और कहा इन तीनों बस्तुओं को देखकर जो सब से उत्तम और बिचित्र हो अपने प्राणके अनुसार उसके लानेवाले को नूरुलनिहार से बिबाह करदीजिये यह सुन बादशाह अति चिन्ता करनेलगा और मनमें सोचा यदि मैं नूरुलनिहारको अहमदको बिबाह दूं तो औरोंपर अन्याय होगा जो अलीके निकट दूरबीन न होती तो क्योंकर उसके बीमार होनेका हाल बिदित होता इसीप्रकार जो हुसेन का गलीचा न होता तो किसप्रकार से नूरुलनिहार के समीप पहुँचते और उसको आरोग्य करते मेरे बिचार

चित्र शाहज़ादे अली और अहमद का पलंग के निकट बीमार शाहज़ादी को देखते हुये.



में तीनोंकी बस्तु तुल्यहै यदि एकबस्तु न होती तो उसका अच्छा होना असम्भवित था फिर भी इसका निर्णय न हुआ अभी वही कठिनता है परन्तु अब चाहता हूं कि आज कोई दूसरा यत्न बिचारकर उसमें जिसको श्रेष्ठपाऊं उसे नूरुल्निहार ब्याहदूं इतना सोचकर उनसे कहनेलगा तुम तीनों भाई घोड़ोंपर सवारहो और अपने साथ धनुषबाण लेकर अमुक मैदान में घुड़दौड़ के लिये जाओ और मैं भी अपने सभासदों सहित आताहूं तुम तीनों भाई मेरे साम्हने एक २ तीर फेंको जिसका तीर दूरजावेगा उसी को नूरुल्निहार मिलेगी वहसब अपने पिताकी आज्ञानुकूल उसी मैदान में गये और बादशाह भी उन्हीं बिचित्र बस्तुओंको कोष में भिजवाकर वहां पहुँचा पहिले हुसेनने जो सब से बड़ाथा तीरछोड़ा फिर अलीने सो इसका तीर थोड़ीदूर आगे गया इसके उपरान्त अहमद ने तीर चलाया परन्तु उसका तीर किसीको दृष्टि न पड़ा कि वह कहां गिरा निदान सब ने यही बिचारा कि वह तीर या तो इतना दूरगया कि किसी को दिखाई नहीं देता अथवा अहमद के हाथमें ही रहगया सो बादशाह ने इस बातका अधिक बिचार न करके अलीके साथ नूरुल्निहारका बिवाह ठहराया और कुछदिन के उपरान्त बड़ी धूमधाम से बिवाह करदिया परन्तु हुसेन शाहजादा डाहसे उस समाज में संयुक्त न हुआ क्योंकि वह और भाइयों की अपेक्षा नूरुल्निहार की बहुत प्रीति रखता था सो लज्जासे उसने योगियों के सदृश गेरुवे बस्त्र पहिने और संसार का मायामोह जो सदा स्थिर नहीं रहता परित्याग किया अहमदको भी बड़ी डाह उपजी और अत्यन्त लज्जासे बिवाहमें न गया परन्तु योगी का वेष धारण न किया और सदैव अपने तीरको ढूंढ़ता रहता था एक दिन वह अकेला उस तीरके ढूंढ़ने के लिये चला और वहां से सूधा दाहिने बायें देखता हुआ आगे बढ़ा और कई बड़े २ पर्ब्बतों के शिखरपर ढूंढ़ने लगा तो उसे एक बड़े टीलेपर पड़ाहुआ पाया आश्चर्य में होकर मन में बिचारनेलगा कि इतनीदूर तीरका आना असम्भवित है और उस तीरको देखकर और अचम्भे में हुआ कि

पत्थर पर चिपकाहुआहै बिचारा कि इसमें कोई भेद अवश्यहै फिर आगे बढ़कर एक कन्दरा में जो उसी शिखरपर थी गया और थोड़ी दूर जाकर एक लोहे का दरवाज़ा उसे दृष्टि पड़ा उसके भीतर जाकर उसने कुछ ढलाव पाया जिसमें वह तीर समेत चला और समझा कि वहां अधिक अँधियारा होगा परन्तु वहां दिव्य उजियाला था और वहां से पचास व साठ पगपर महा सुन्दर विशाल घर था जिसमें उसने क्या देखा कि एक स्त्री अतिरूपवती राजसी स्वच्छ बस्त्र आभूषणों से अलंकृत अपनी अनुचरियों के मध्य में धीरे धीरे द्वारकी ओर चली आती है शाहज़ादा उसे प्रणाम करने लगा उसने आपही निकट आकर अत्यन्त प्रीति और मीठीबाणी से आगत स्वागत और शिष्टाचारकर कहा हे अहमद! कुशलसे तो हो शाहज़ादा अपना नाम सुन आश्चर्य में हुआ कि यह मृगनयनी जिससे मेरी कभीं भी भेंट नहीं मेरा नाम क्योंकर जानती है फिर उसके चरण को छूकर कहा हे मृगनयनी! मैं तुम्हारे सत्कार करनेसे गुण मानता हूं परंतु आश्चर्य में हूं कि तुमने मेरा नाम क्योंकर जाना उसनें कहा अब हम और तुम चलके बारहदरी में आनंद भोगें वहां पहुँचकर तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगी इतना कहकर वह चन्द्रमुखी शाहज़ादे को अपने साथ लेकर बारहदरी में गई शाहज़ादा वहांपहुँचकर उसको देखनेलगा जिसके सुनहली गोलमंडपाकार गुम्बजपर लाजवर्द से चित्रकारियां थीं और नानाभांति की दिब्य सामग्री से अलंकृत देख आश्चर्य्यमें हुआ इससे परीने कहा यह मकान और मकानों से कि बास्तव में तुम्हारेहैं तुच्छ है जब उनको देखोगे तो अति प्रसन्न होगे फिर अहमद को अपने निकट बैठाकर कहनेलगी तुम मुझको नहीं जानते परन्तु मैं तुमको भलीभांति जानतीहूं अब मैं अपने कुलकाहाल कहतीहूं तुमने पुस्तकों में पढ़ा होगा कि धरती पर कहीं जिन्न भी रहतेहैं मैं एक बड़े प्रतिष्ठित जिन्नकी पुत्रीहूं और मेरानाम परीबानूहै अब तुम अपने पिता का वृत्तान्त जो बादशाह है मुझसे सुनो नूरुन्निहार तुम्हारी चचेरी बहिन है और तुम तीन भाईहो और प्रत्येकको यह इच्छाथी

कि नूरुल्निहार मुझे मिले तुम तीनों ने अपने पिताके बिचारके अनुकूल बहुत दूरकी यात्राकी और तुम पूर्व्वोक्त प्रयोजनके निमित्त समरक़न्द में जाकर ओषधियों का सेव जिसका कारण मैं हुई लाये और इसीभांति तुम्हारा बड़ाभाई बिष्णुगढ़में जाकर ग़लीचा लाया और अली हाथीदांत की दूरबीन बस इतना बर्णन बहुतहै कि तुमजानो कि मैं तुम्हारे हालको परिपूर्ण जानतीहूं अब तुम सत्य कहो मैं अच्छीहूं या नूरुल्निहार के साथ तुम्हारा मन बिवाह को चाहता है जब तुमने तीरफेंकने का इरादा किया था उस समय मैंने बिचारा कि तुम्हारा तीर हुसेनसे आगे न जावेगा तो तुम्हारे छोड़ते ही मैंने उसे बायुमें पकड़ा और दृष्टि बन्दकर इस शिखरपर डाल दिया इसलिये कि तुम उसे अवश्य ढूंढ़ने आवोगे और इसीबहाने मेरी तुमसे भेंटहोगी जब इतना हाल कहचुकी तो प्रीतिकी दृष्टि से उसने अहमद को देखा और लज्जितहोकर नयन नीचे करदिये और शाहज़ादा यह सबबातें सुनकर अतिप्रसन्न हुआ यह तो जानताही था कि अब किसीभांति नूरुल्निहार नहीं मिलसक्ती और परीबानू भी अतिसुन्दरी है उसके रूप अनूप मनहरण को देखतेही मोहित होगया कि नूरुल्निहार की प्रीति भूलगया निदान उस सुन्दरीको अति सन्तुष्ट पाकर कहनेलगा अब मुझको यही इच्छा है कि जन्मभर तुम्हारी सेवा में रहूं मैं मनुष्यहूं और तुम जिन्नकी पुत्री हो तुम्हारे गुरुजन इस सम्बन्ध को क्योंकर स्वीकार करेंगे उसने कहा मैं इसबिषय में स्वाधीनहूं जिसकेसाथ चाहूं अपना बिवाह करलूं परन्तु जो तुमने कहा कि मैं तुम्हारी सेवा में रहूं यह अनुचित है तुम मेरे पति और इनसब बस्तु और भवनादिक के स्वामी हो मुझेही अपनी दासी समझो और मुझे तुम्हारे साथ बिवाह की अतिलालसा है और मुझे तुम्हारी बुद्धि और प्रबीणतासे परिपूर्ण आशाहै कि तुम इस बातसे इन्कार न करोगे और मैं तो कहचुकी कि मैं स्वाधीन हूं इसके बिशेष हमारे कुलमें यह रीति है कि तरुण अवस्थापर हरएक परी जिन्न अथवा मनुष्यपर जिससे उसका मन लोभायमान हो उसके साथ अपना बिवाह करले इससे जन्मभर

स्त्री पुरुषमें परस्पर प्रीति रहती है जब बानूपरीने यह सबबातेंकहीं शाहज़ादा उसके उत्तर में अत्यन्तकृतकृत्य होकर उसके वस्त्र को भुककर चूमनेलगा परन्तु बानूपरी ने उसे भुकने न दिया और उस के पलटे अपना हाथदिया जिसे शाहज़ादेने अतिप्रीति से वहांकी रीति के अनुकूल चूमा और अपने नेत्र और हृदयमें लगाया बानूने मुस्कराके कहा अब इसहाथ पकड़नेकी लाजरखकर बचन घात न करना और इसीबातपर मैं भी स्थिरहूं अहमदने कहा उस मनुष्य की जो तुमपर मोहितहो क्योंकर प्रीति भंगहोसक्तीहै मैंने अपनेको तुम्हेंसौंपा जैसा तुम्हारा मनचाहे करो उसने कहा तुम मेरे पतिहो और मैं तुम्हारीभार्य्याहूं यही प्रण जो परस्परहुआहै विवाह है और जोकुछ रीतें बिवाहकी होतीहैं सब व्यर्थहैं अबहम तुम संध्याको एकदिव्य भवनमें आनंदभोगेंगे जिसको तुमदेखकर अतिप्रसन्नहोगे तदनन्तर दासियों ने नानाप्रकारके दिव्यब्यंजनलाये और उन दोनों ने भोजनकिये इसके उपरांत शराबउड़ी जब निश्चिन्तहुये तब बानूपरी शाहज़ादेको अपने मुख्य भवनमें लेगई जो मुख्य उसके सोने का था वहां शाहज़ादा हरजगह रत्नोंके ढेर देख बिस्मित हुआ और बानूसे कहनेलगा कि ऐसा स्वच्छभवन और यह अलभ्य सामग्री संसार भरमें न होगी उसने कहा तुम मेरा बासस्थान देखकर उसकी इतनी प्रशंसा करतेहो यदि जिन्नोंके घर देखोगे तो क्या कहोगे मेरे बागकोभी देखकर तुम अतिहर्षित होगे परन्तु अब उसके देखने का समय नहींरहा पुनि वह उसे और मकान में लेगई जहां रात्रिमें भोजन करती थी उसकी सजावट भी औरोंसे न्यून न थी उसमें सैकड़ों सुगन्धित दीपक उचित २ स्थानोंपर प्रकाशित थे और बिल्लौर के बरतन जिनमें बहुरत्न जटित थे और अतिशोभायमान गुलदस्ते और अनेकभांति के दिव्यपात्र धरेहुयेथे और कईगानेवाली स्त्रियां अतिरूपवान् जो अतिउत्तम वस्त्र पहिने हुये थीं वह सब आन २ कर मिष्टवाणी से गान करनेलगीं फिर वह दोनों भोजनकरने लगे बानूपरी दिव्य और स्वादिष्ठ भोजन अपने हाथ से उठाकर अहमदके आगेरखती और उनपाकोंका नाम बतलाकर शाहज़ादे

को चखाती और जो २ पाक अहमदने कदापि भोजन नहीं किये थे उनके बनानेकी बिधि बतलाती इसके उपरान्त उन्होंने मद्यपान की और मिठाई और फलादिक खाये जब इससे भी निश्चिन्तहुये तो वह दोनों एक बड़े दालानमें जिसमें अच्छी मसनद और सुनहरे तकिये रक्खेहुये थे जाकर बैठे उनके बिराजमान होतेही बहुतसीपरियां वहांआई और बिचित्रनृत्य और मीठेस्वरोंसे गानेलगीं सो वहदोनों उनके अद्भुतगानसे अतिप्रसन्न हुये और वहांसे उठ कर और मकानमेंगये जहां रत्नजटित छपरखट था और सब बराती वहांसे छिन्नभिन्न होकर इधर उधर चलेगये कि दूलह दुलहिन आरामकरें कईदिन इसीभांति आनन्द मंगलरहा यदि अहमद शाहज़ादा हज़ारोंबर्ष मनुष्यों में रहता तोभी ऐसा आनन्द न देखता निदान छः महीने तक उस परीके साथ अनेकभांति के सुखोंकोभोगता रहा और उसका मोह उसके मनमें ऐसा समाया कि उसके देखने बिना उसे क्षणमात्र न चैन पड़ता और इसीभांति बानूपरी भी उसकी प्रीतिसागर में मग्नथी प्रतिक्षण उसीके शिष्टाचार और आदर में रहती सो अहमद उसप्रीतिमें अपने कुटुम्बको भूलगया परन्तु कभी २ उसे पिताके दर्शनकी लालसा होती और इच्छाउपजती कि किसीप्रकार अपने पिताका कुशल मालूम करे और यह संभव न था कि अपनी प्रियाकी आज्ञा बिनाजावे निदान एकदिन उसने बानूसे इस बातके लिये आज्ञामांगी कि यदि तुम्हारी इच्छा हो तो मैं अपने पिताके दर्शन करआऊं बानूपरीको इस बिचारसे कि शाहज़ादा यहां से बहाना करके जाना चाहताहै अतिचिन्ताहुई और उससे कहनेलगी तुमने मुझसे पहिले क्या प्रतिज्ञा कीथी अब उसके बिपरीत किया चाहते हो जानपड़ताहै कि तुम्हारे हृदयसे मेरी प्रीति उठगई अहमदने उत्तरदिया मेरा प्रयोजन यह नहीं कि यहां से उदास होकर चला जाऊं और फिर न आऊं मेरे बुड्ढे पिताको मेरे बियोग से अतिदुःख हुआ होगा यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो दर्शन करके शीघ्र तुम्हारी सेवा में आऊं कदापि और कोई बात तुम्हारी इच्छाके बिरुद्ध न होगी किन्तु मेरी ईश्वरसे यह प्रार्थना

है कि जन्मभर तुम्हारी सेवा में रहूं निदान इसप्रकार की बार्त्ता से उसे प्रसन्नकिया और उसे बिदित हुआ कि शाहज़ादा भी मुझे बहुत ही चाहता है फिर उसे आज्ञादी जाओ अपने पिताके दर्शन करके शीघ्र लौटआना अधिक न ठहरना अब यहां से हिन्दुस्थान के बादशाहका हाल बर्णन किया जाताहै जब उसने विधिपूर्व्वक अली शाहज़ादेका नूरुलनिहारसे बिवाह करदिया उसदिनसे हुसेन और अहमदको न देखकर अतिशोकवान् रहाकरता था एकदिन उसने दोनों का हाल पूंछा सभासदों ने विनय की कि हुसेन तो योगी बेष धारणकर तपस्या करताहै और अहमद शाहज़ादा किसी ओर को निकल गया सो बादशाहने यहबात सुनकर अहमदके ढूंढ़ने के लिये पत्र अपने गुमाश्तों को लिखे कि जहां कहीं उसको पाओ सम्मानपूर्व्वक मेरे निकटलाओ बहुत ढूंढ़नेपर भी उसको न पाया निदान जब सम्पूर्ण सभासदों ने बादशाहको अहमद के खोजाने से बहुत बिकलपाया तो इस बिषय में अतिचिन्ता करने लगे एकको स्मरणहुआ कि इसनगर में एकजादूगरनी अतिचतुर रहती है तो बादशाहके पासलाकर उसकी प्रशंसाकी और बिनयकी कि आप उसको बुलवाकर शाहज़ादेका हाल पूंछलें बादशाहने कहा अच्छा तुम उसे अपने साथ लेतेआना निदान वह जादूगरनी आई बादशाहने उससे कहा जबसे मैंने अली अपने कुँवरका नूरुलनिहारसे बिवाह करदिया तबसे अहमद का कुछ पता नहीं लगता तू अपने जादूकेबलसे उसका हाल मालूम करके मुझसे कह कि जीता है वा नहीं यदि जीताहै तो कहां है और किस दशा मेंहै उससे मेरीभेंट होगी वा नहीं उसने उत्तर दिया मैं आपके प्रश्न का उत्तर इसी समय नहीं देसक्ती यदि आज सावकाश मिले तो कल मैं ठीक २ इसका उत्तर दूंगी बादशाहने कहा यदि तू मेरे प्रश्नका उत्तर देगी तो मैं तुझे बहुत कुछ दूंगा दूसरे दिन प्रभात को वह जादूगरनी बादशाहके निकट आई और बिनयकी मैंने अपनी जादूकी बिद्या से मालूमकिया कि अहमद जीता है इससमय इसबातके सिवाय और कुछ नहीं बतलासक्ती कि वह कहां है बादशाह यह बात सुन अति

प्रसन्नहुआ और उसके मिलनेकी उसे आशाहुई अब अहमदका बृत्तान्त फिर बर्णन करते हैं जब वह परीबानूसे आज्ञालेचुका तो परीबानूने उससे कहा मेरे इस उपदेशको न भूलना वह यह है कि अपने पिता और निवासियोंसे अपने बिवाहके सिवाय किसी बिचित्र वस्तुका बर्णन न करना केवल अपने पिताके धैर्यके लिये यही कहना कि वहां अति प्रसन्नतासे रहता हूं आपके दर्शन के निमित्त आया इतना कह बानूपरी ने यात्राकी तय्यारी की आज्ञादी जब सामग्री तय्यारहोचुकी तो बीस सवार उसके साथकिये और दिव्य घोड़ा जो अति उत्तम रत्नोंकी सामग्री से सजा था शाहज़ादे के चढ़ने को दिया और उसे कण्ठसे लगाकर बिदाकिया और शाहज़ादा सिधारती समय उसी प्रतिज्ञाको दृढ़ाकर घोड़ेपर सवार हुआ और बीस सवारों सहित जो जिन्नथे बड़ी धूम धामसे नगरकी ओर चला शाहीमहल पासही था क्षणमात्र में पहुंचगये बादशाह के सम्पूर्ण सभासद और नगर निवासी अहमद को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुये और निजकाज तज झुक २ कर प्रणाम करने और आशीर्ब्बाद देनेलगे और बड़ीभीड़ दोनों ओर से उसके साथ बादशाहीमहल तकगई शाहज़ादा सभामें उतर अपने पिताके चरणोंपर जायगिरा बादशाहने खड़ेहोकर उसे अपने हृदयसे लगाया और बहुतप्यार किया और कहनेलगा हे पुत्र! तुम नूरुलनिहारसे निराशहोकर ऐसे गुप्तहोगये कि बहुतढूंढ़नेपरभी तुम्हारा ठिकाना न लगा और मैं तुम्हारेबियोगमें इस दशाको प्राप्तहुआ इतनेकालतक कहांथे और किसभांति कालक्षेप किया अहमदने बिनती की जबसे नूरुलनिहार बिवाही गई मुझे अतिखेद प्राप्तहुआ आपको भलीभांति स्मरण होगा जिसदिन हम तीनों भाइयोंने आपकी आज्ञानुसार तीरचलाये बड़े मैदानहोनेपरभी मेरातीर दृष्टिसेलुप्तहोगया सो मैं उसी चिन्ता में अपनातीर ढूंढ़ते २ अकेलागया और दहिने बांये इधर उधर ढूंढ़नेलगा परन्तु वहतीर कहीं न दीखा सो उसको ढूंढ़ते २ दूरनिकलगया और निराश होकर मन में बिचारनेलगा इतनीदूर मेरा तीर काहेको आयाहोगा किंतु तीर चलानेवालेका भी तीर यहां नहीं

आसक्ता निदान इसी चिन्तामें मैंने अपने तीरको एक ऊंचे पर्व्वत के शिखरपर जो यहां से अनुमान चार कोसके है पाया फिर मन में शोचा इतनी दूरआना तेरा बिना किसी भेदके नहीं है यह शोच वहांसे ऐसे स्थानपर पहुंचा जहां मैं अबतक अतिआनन्द से रहा इसके बिशेष और बृत्तान्त नहीं कहसक्ता केवल आपके धैर्य्य देने के लिये यहां आया अब मुझे फिर आज्ञाहो तो फिर मैं वहांजाऊं कभी कभी आपके दर्शन को आया करूंगा बादशाह ने कहा मैंने प्रसन्नता से आज्ञादी और मुझे भरोसा हुआ कि तुम आनन्द पूर्व्वक मेरे नगरके पास रहतेहो यदि तुम्हारे आने में कुछ देरहुई तो मैं किसभांति तेरे कुशलका समाचार पाया करूंगा अहमद ने विनयकी आप चाहते हैं कि मेरे भेदको मालूम करें मैं तो पहिलेही विनय करचुकाहूं जो कुछ मैंने कहा इससे अधिक वर्णन आपके शरण में नहीं करसक्ता आप धैर्य्यरखिये मैं बहुतदफे आया करूंगा बादशाहने कहा बेटा मेरा प्रयोजन तो केवल यही है कि तुम्हारा समाचार मालूम हुआ करे मुझे तुम्हारे भेदके पूछने की कुछ आवश्यकता नहीं अब मैंने तुमको बिदाकिया कि यहां शीघ्र आकर मुझसे मिलजाना सो अहमद तीन दिनतक वहांरहा चौथे दिन भोरको वहांसे सिधारा और अपनी प्रियाके निकटपहुँचा वह उसके जल्दी लौटआनेसे अतिप्रसन्नहुई फिर दोनों प्रियाप्रियतमअत्यन्त प्रीति और सम्मानपूर्व्वक अनेकभांति के भोग और विलासकरने लगे जब एक महीना बीता और शाहज़ादा अपने पिताके दर्शन को न गया तो उसकी प्रियाने कहा कि तुमने पूर्व्व में कहाथा कि मासके प्रारम्भ में अपने पिताके निकटजाऊंगा सो अब क्यों नहीं जातेहो तुम्हारा पिता तुम्हारा रास्ता देखताहोगा शाहज़ादे ने कहा सत्य है परन्तु आपकी आज्ञा बिना मैंने वहांका उद्योग नहीं किया उसने कहा प्यारे तुम मेरी आज्ञापर मतरहो महीनेके आदि में तुम मेरेपूछनेके बिना भेटकर आयाकरो सो शाहज़ादा दूसरे दिन प्रभात को बड़ी धूमधाम से अपने पिताके पासगया फिर तो उसने एक नियम बांधलिया कि प्रतिमासके आरम्भ में अपने पिताके पास

जाकर और वहां तीन दिन रहकर चौथे दिन चला आता दिन पर दिन उसके साथ धूम धाम अधिक होती जातीथी अन्त को एकदिन एक प्रधान जो बादशाहका मुँहलगा था शाहज़ादे की सवारी की धूम अधिक देख बिस्मित हुआ और सोचने लगा कि शाहज़ादे का हाल कुछ जाना नहीं जाता कि कहां रहता है और यह ऐश्वर्य्य इसको कहां से प्राप्तहुआ सो उसने ईर्षा से बादशाहको बहका करकहा तुम अपनेपुत्रसे अचेतहो और यह नहीं देखते कि उसका ऐश्वर्य्य दिन २ बढ़ता जाता है ऐसा न हो जो तुमको अवसरपा-करदुःखदे और तुमको क़ैदखाने में डालकर आपका तख़्तछीनले और जब से तुमने नूरुन्निहारको अली से ब्याहदिया तबसे हु-सेन और वह अर्थात् अहमद अत्यन्त अप्रसन्न हैं इतना कि एक ने संसारकोही परित्याग किया और अहमद जो अतितेजवान् है ऐसा न हो कि आपसे अपना पलटाले बादशाह अत्यन्तनिर्बुद्धि था उसप्रधानके छलमें आगया और अहमद के रहनेका हाल खोज करने लगा एक दिन वज़ीर के पूंछे बिना जो अहमद का हितैषी था उसी जादूगरनीको चोरदरवाज़ेसे निज शयनस्थान में लेगया और उससे कहा जैसे तूने अपनी विद्या से कहा था कि अहमद जीताहै उसबातको यथार्थ पाकर मुझे तेरा बिश्वास हुआ सो अब यह इच्छाहै कि कुछ और भी उसका बृत्तांत वर्णनकर यद्यपि प्रकट होकर प्रतिमास मेरीभेंटको आता है परन्तु अबतक में उसकेरहनेकी जगहको नहीं जानता मैं इसबातको उससे अधिक पूंछ नहीं सका अब तू मेरे सेवकों से छिपकर उसके रहनेकी जगह मालूमकर अब वह नियम के अनुकूल आयाहुआ है और मेरे पूंछने के बिना थोड़ी दूर आगेजाकर गुप्त होजावेगा आज तू मार्ग्गमें ऐसे स्थानपर छिप कर बैठ जिससे उसके जानेका हाल मालूम होजावे और फिर आ-कर मुझसे कहियो वह बादशाहसे बिदा होकर वहांगई जहां अह-मदने अपना तीर पाया था और किसी कन्दरामें छिपकर अहमद के आगमन की बाट देखती रही अहमद भोरको उठकर नगर से सिधारा जब उसगुफ़ा के समीप पहुँचा तो जादूगरनी ने क्या देखा

कि वह और उसके सेवक बड़े बड़े टीलों और शिखरों पर चढ़कर दूसरी दिशा को जातेहैं और वह भयानक स्थान है कि कोई मनुष्य सवार अथवा पैदल वहां नहीं जासक्ता निदान वह सोची कि उन शिखरोंके दूसरी ओर कोई बिशालकन्दरा है जिसमें जिन्न और राक्षसआदि निवास करतेहैं वह इसी बिचारमें थी अकस्मात् शाहज़ादा निजसेवकों सहित वहांसे गुप्त होगया फिर वह जादूगरनी उसी गुफ़ासे बाहर निकली और चहुँओर दूर दूर अपनी सामर्थ्यभर फिरी परन्तु ठिकाना न लगा और वह लोहेका द्वारभी उसे न मिला क्योंकि वह द्वार और भवन उसमनुष्यके सिवाय जिस को बानूअप्सरा चाहती थी दूसरे को न मिलताथा उस जादूगरनी ने मनमें कहा मैंने इतना ब्यर्थ परिश्रम किया जिस कामके लिये आईथी मालूम न हुआ फिर बादशाहके पासगई और वहांका सम्पूर्ण बृत्तान्त कह सुनाया और कहा मैंने बहुतसा श्रम उसके निवासके ढूंढ़नेके लिये किया परन्तु कुछलाभ न हुआ यदि मुझे आप सावकाश दीजिये तो फिर जाकर जिस भांति होसके मालूम करूं बादशाहने उसे आज्ञा देकर कहा जिस प्रकार चाहे उसे प्रकटकर मैं तेरे आने की बाट देखता रहूंगा इतना कह बादशाह ने एक हीरेका बड़ा टुकड़ा बहुमोल्य उसे देकर बिदा किया और कहने लगा जिस दिन उस बात को मुझे सुनावेगी मैं तुझ को अतिप्रसन्न करूंगा फिर वह जादूगरनी अपने घर में बैठकर अहमद के आगमन की बाट देखने लगी क्योंकि उसे मालूम था कि उक्त शाहज़ादा प्रतिमास के आरम्भ में एक बेर अपने पिता की भेंट को आयाकरता है निदान जब महीने के बीतनेमें एकदिन शेषरहा तो वह उसी शिखर पर सीढ़ीके समीप बैठरही दूसरे दिन जब शाहज़ादा अपने सेवकों समेत जो उसके साथ सदा रहाकरते थे उसी लोहेके द्वारसे उसी जादूगरनी के निकट होकर निकला तो उसे गुदड़ी ओढ़ेहुये देखकर समझा कि यह कोई शिला फूटकर गिरी है परन्तु जब उस जादूगरनीने अहमदको अपने निकट चलते देखा तब वह महारुदन करनेलगी जैसे कोई दुखिया किसीसे सहायता

की इच्छा करे अहमद को उसके रोने पर अतिदया उपजी और खड़ेहोकर सैनसे पूंछा तू क्याकहती है वह जादूगरनी जो अत्यंत धूर्त्ता और चतुराथी अधिक बिलाप करनेलगी शाहज़ादे को उसपर अधिक दया आई जब उसने शाहज़ादे की अपने ऊपर अधिक कृपा पाई तब ठंढीश्वासभर धीरे शब्द से अपना बृत्तान्त इसभांति बर्णन करनेलगी कि मैं अपनेघरसे किसी आवश्यक कार्य्यके उद्योग से अमुक ग्रामको जाती थी अकस्मात् मुझे ज्वर और शीत बड़े बेगसे आया जिससे मेरी शक्ति जाती रही और बेबश होकर गिर पड़ी शाहज़ादे ने कहा कोई ऐसा स्थान नहीं जहांपर तुझको भिजवादूं परन्तु एकमकान अतिसमीप है जो तू कहे तो तुझे वहां भिजवादूं वहां तू शीघ्र नीरोगहोजावेगी तू उठकर मेरेपास आ उस दुष्टा ने एक और श्वासभरकर कहा कि मैं ऐसी निर्बल होगई हूं कि उठ नहींसक्ती तब शाहज़ादे ने एक सवार से कहा इस बृद्धाको अपने साथ घोड़ेपर चढ़ाले उसने तुरन्त उसको अपने घोड़ेपर बैठालिया और अहमद वहां से लौटकर लोहे के द्वारे को गया और भवन में प्रबेशकर अपनी प्यारीको बुलवाया वह उसके पास आई और उस से पूंछा कुशल तोहै तुम क्यों मार्ग्ग से लौटआये और मुझे क्यों बुलवाया उसने बृद्धाका वृत्तांत बर्णनकिया कि मार्ग्गमें इसे मैंने बीमारपाया और दया से उसको अपने साथ लेआया अब तुम इसको यहीं रक्खो और इसकी औषधकरो बानूअप्सरा ने अपनी अनुचरियोंसे कहा इसेलेकर किसी अच्छेस्थानमें रक्खो और इसकी औषध करो जब उसे लेगई तो बानूअप्सराने उसे उपदेशकी भांति कहा हे प्राणप्यारे! मैं तुम्हारी दयालु प्रकृति से अतिप्रसन्नहुई और तुम्हारे कहने के अनुसार उसकी सुधि लेती रहूंगी परन्तु भयवती हूं कि ऐसा न हो कि तुमको भलाईके पलटे बुराईमिले क्योंकि मैं इसबृद्धा को ऐसा रोगयुक्त नहीं पाती जिससे वह इस दशाको प्राप्तहो मुझे मालूम होताहै कि किसी तुम्हारे बैरीने तुमसे छल किया है अच्छा अब तुमसिधारो अहमदने यहसुन कहा हे मेरी प्यारी! ईश्वर तुमको जीतारक्खे तुम्हारी कृपासे मुझे कोई दुःख न देगा और मुझे भली

भांति मालूम है कि मेरा कोई बैरी नहीं मैं सबके साथ भलाई करता हूं इससे किसीसे बुराईकी आशानहीं इतना कहकर बिदाहुआ और अपने पिताके मन्दिर में पहुँचा बादशाह जो अशुद्ध सूचक प्रधान के बहकाने से भयवान् था जाकर भेंटकी वे लौंड़ियां जो उस बृद्धा की सेवा के निमित्त नियत थीं उसे एक दिव्य भवन में लेगई जो अतिउत्तम सामग्री से अलंकृत था और एकसुन्दर शय्यापर उसे लिटादिया एकदासी उसके पास बैठी और दूसरी शीघ्रही उठकर चीनी के पात्रमें एक अरक़लाई जो बिशेष करके ज्वरका हटाने-वाला था फिर उन दोनों ने उसे पकड़कर बैठादिया और कहा इस को पीजा इसके पीने से किसीभांति का रोग शरीर में नहीं रहता जादूगरनी वह औषध लेकर पानकरगई और फिर लेटगई उन्होंने उसे लिहाफ़ ओढ़ाकर कहा अब सोरह थोड़ेही कालमें तू नीरोग होजावेगी उसने यह छल केवल इसीलिये किया था कि अहमद का बासस्थान मालूमपड़े जब उसे भलीभांति बिदित होगया तो वह उठके बैठी और उन दासियों से उसने कहा मुझे उस औ-षधके पानकरने से शरीर भरमें पसीना छूटा अब मैं निपट नीरोग होगई और मेरीदेह में बलभी आगया अब यही समाचार अपनी स्वामिनी से जायकहो कि मैं उसके पासजाऊं और उनसे बिदाहोकर अपने घरको सिधारूं फिर वह जादूगरनी को हरएक मकान दि-खातीहुई उस बारहदरी में लेगई जो अतिसुन्दर दिव्य बस्तुओं से सजी थी वहां उसने उसी परी को दिव्य तख़्तपर बिराजमान देखा जो उत्तम उत्तम हीरों और मणियों से जटित था और उस तख़्त के चहुँ ओर बहुत सी दासियां अतिरूपवती सुन्दर बसन पहिने हाथ जोड़े खड़ी थीं जादूगरनी उस भवन को विशेष करके अद्भुत रत्नमयी स्वच्छ तख़्त को देखा अतिविस्मित हुई और बानू के भयसे कोई वचन मुखसे न निकाला तब वह उसके चरणों पर गिरपड़ी बानूपरी ने उसे भरोसा देकर कहा हे बृद्धा! तेरेयहां आने से मैं अतिप्रसन्न हुई तुम मेरे महलको भलीभांति देखो मेरी दा-सियां सम्पूर्ण महल और सामग्री तुम्हें दिखावेंगी जादूगरनी उस

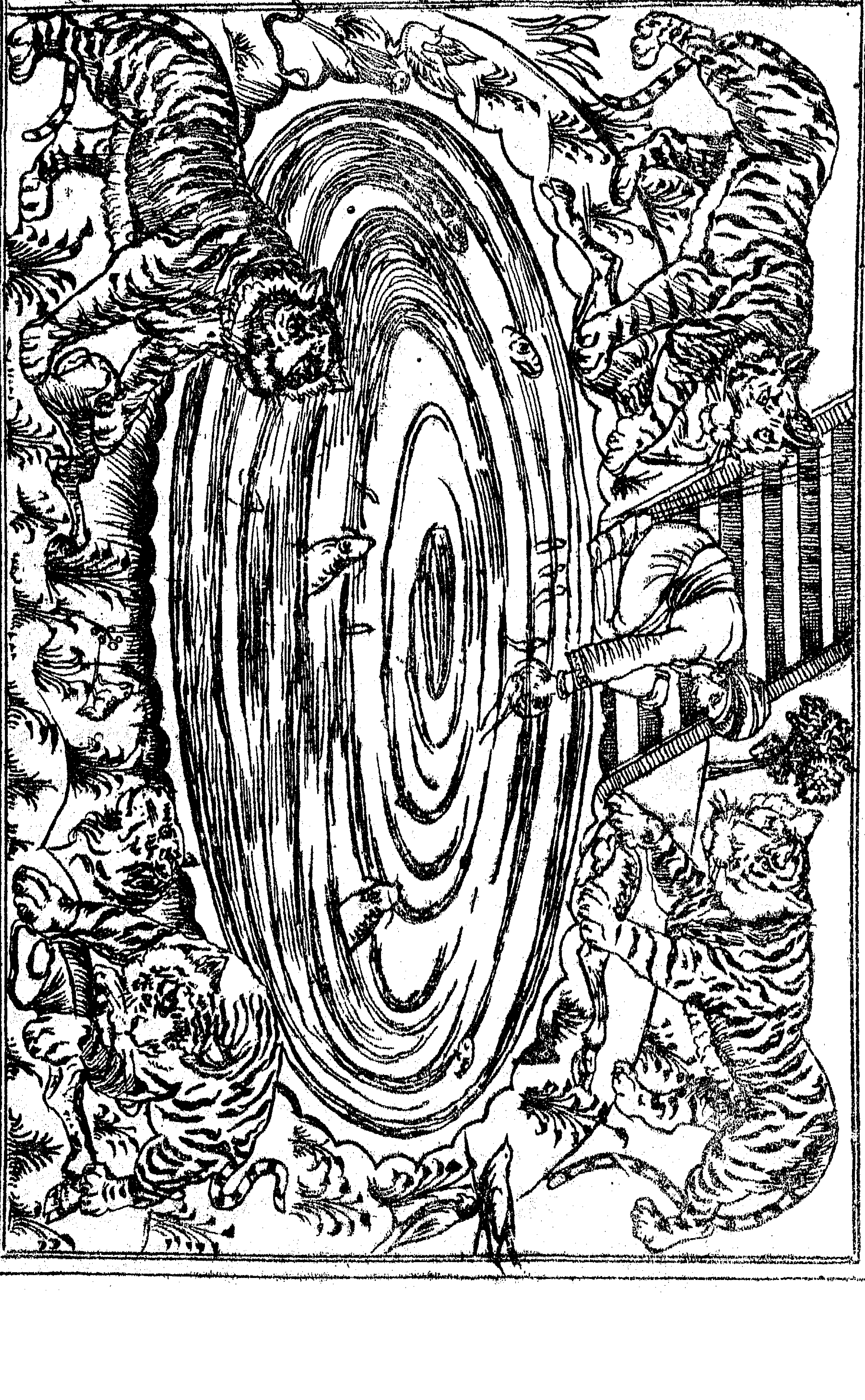
के नीचेकी धरती को चूम विदाहुई फिर वह भवनके हर मकानकी देख भाल और उसको यथोचित बिचार वहांसे चली दासियों ने उसे लोहे के द्वारसे बाहर लेजाकर जहां से अहमद उसे लाया था छोड़दिया और कहा अब तू अपने घरजा वह आगे बढ़ी तदनंतर थोड़ीदूर जाकर उसने लोहे के द्वारके देखने की इच्छाकी कि उसे पहिंचानरक्खे वह द्वार उसकी दृष्टिसे गुप्तहोगया वह वहां चहुँओर फिरी परन्तु कुछभी उसका ठिकाना न लगा निदान लाचारहोकर नगरमें आई और गुप्तमार्गों से बादशाह के महलके चोरदरवाज़े से भीतरगई और बादशाह के किसी सेवक से बादशाह को अपने आगमन का संदेशा कहलाभेजा बादशाह ने उसको भीतर बुलवाया वह उसके सम्मुख चिंतित होकर गई बादशाह समझगया कि आजभी प्रयोजन सिद्ध न हुआ होगा निदान उसने उससे पूंछा वह कामकरआई वा नहीं उसने उत्तरदिया कि उसबातको भलीभांति मालूमकरआई हूं सो मैं वर्णन करतीहूं परंतु चिन्ताके चिह्न जो मेरे मुखपर हैं उसका दूसरा कारण है फिर उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया और कहा उस परी और अहमद में पुरुष स्त्रीका ब्यवहार है शायद आप उसपरी के ऐसे ब्यवहारको सुन प्रसन्नहुये होंगे और यह समझाहोगा कि अहमदको उसके साथ सांसारिक सुख प्राप्त हुआ परंतु मेरे बिचारमें यह सब बातें आपके लिये दुःखदायी जान पड़ती हैं कि ऐसा न हो जो आपका पुत्र आपसे कुछ बैरठाने जो यह समझें कि अहमद सपूतहै कि ऐसा काम उससे बन न पड़ेगा यह सचहै परंतु इससमय वह परीकी प्रीति में फँसाहै क्या आश्चर्य्य है कि उसके उपदेशके अनुकूल किसी अनुचित कर्म का उद्योग करे तात्पर्य यह शंकाका स्थान है उसका उपाय आप अवश्य कीजिये इतनाकह वह बादशाहसे विदाहोनेलगी बादशाहने चलते समय उससे कहा मैं तुझपर दो प्रकारसे प्रसन्नहुआ एक जो तूने इतना परिश्रम उस बृत्तान्तके मालूम करनेके लिया उठाया और दूसरे तेरे अतिहितकारक उपदेशसे जब बादशाहने समझा कि वह मंदिरमेंसे जाचुकी तब उसने अपने प्रधानको जिसने उसके मनमें शंकाडाली

थी बुलवाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया और उससे सम्मत पूंछा कि इस बातका क्या उपाय कियाजावे उसनेकहा इसका उपाय अति सुगमहै अहमद अभी यहीं है उसे क़ैदमें डालदीजिये मारडालना उसका उचितनहीं इस सम्मतको उसने पसंद किया उस समय तो यह चुपहोरहा दूसरेदिन फिर उसने जादूगरनी को बुलवाकर अहमदके क़ैदकरनेकेलिये सम्मतपूंछा उसने कहा मेरे बिचारसे यहउपाय अनुचितहै क्योंकि जब आप उसे क़ैदकरेंगे तो यहभी अवश्यहै कि उसके साथियोंकोभी क़ैदकरें वह सबके सब जिन्नहैं उनको सबकुछसामर्थ्यहै ऐसा न हो जो वह बन्दीख़ाने से निकलकर उस परीको जाय पुकारे तो वह अपने पतिकी दशासुनकर एक उपाधि मचावे जिस का निवारण आपको कठिनहो यदि आपको मेरा विश्वासहो तो मैं एक ऐसा यत्नबताऊं जिससे आपको बहुतलाभहो और किसीभांति की हानि न हो बहुधा आपको अहेरआदिक में ख़ेमेकी आवश्यकता पड़ती है और उसके बनाने में बहुतसा द्रव्य व्ययहोताहै अब आप अहमदसे कहें कि एक बड़ाडेरा कहीं से मुझेलादे जिसमें मेरी सम्पूर्णसभा और सेनासमावै और वह ऐसा हलकाहो कि एकमनुष्य उसे जहां चाहे उठालेचले जब वह आपकी यहमांग लादेवे तो बहुत सी वस्तु मँगाने के योग्य आपको बताऊंगी निदान वह आपकी मांगों से बहुत तंग होजावेगा और इसी उपाय से जिन्नोंकी अद्भुत बनाई वस्तु आपको प्राप्तहोंगी और अहमद दिक़होकर मारेलज्जा के कदापि आपकी देहरी पर पग न धरेगा और आप उसके छल और बैरसे बचेंगे और ऐसेकुपूतके मारने अथवा क़ैदकरनेकी आप को आवश्यकता न पड़ेगी फिर बादशाहने यही बात अपनी सम्पूर्ण सभासे कह सम्मत पूंछा वह सुन चुपकेहोरहे बादशाह इस सम्मत को अच्छासमझ चुपहोरहा दूसरे दिन जब अहमद बादशाह के निकटगया और बहुकालपर्यन्त परस्पर वार्त्ता रही तब बादशाहने अवसर पाकर कहा पूर्वमें मैं बहुत दिनतक तुम्हारे बियोगसे चिन्ता में रहा जब तुम मेरे पासआये तो मुझे तुम्हारे देखनेसे अतिप्रसन्नताहुई यद्यपि मुझे तुम्हारे रहने की जगह मालूम न थी तथापि मैंने

उसके पूंछने में तुमसे हठ न किया परन्तु अब मुझे यह भेद मालूम हुआ कि तमने महाऐश्वर्य और अतिरूपवान् परीके साथ अपना विवाह किया इसेस मैं अधिक प्रसन्न हुआ परन्तु यह कहो जो मैं तुमसे कोई बस्तु मांगूं तो तुम परी से वह लासक्के हो और उसको तुम्हारा इतना पक्ष है कि जो बस्तु मैं तुमसे मांगूं उसको निश्शंक देदेगी तुम्हें खूब मालूम है कि बहुधा मैं अहेर को जाया करता हूँ मुझे डेरों की आवश्यकता हुआ करती है जिसके उठाने के लिये बहुत से ऊंट दरकार होते हैं मैं चाहताहूं कि ऐसा डेरा मुझको मिले जिसमें मेरा सम्पूर्ण कटक समाजावे और वह इतना हलका हो जिस को तुम अथवा कोई और एक मनुष्य उठालावे तुम उस परीसे मुझे लादो अहमदने कहा बहुत अच्छा मैं अपनी भार्या से जाकर कहता हूं परन्तु मैं नहीं जानता कि ऐसा उत्तम डेरा उसके पासहै वा नहीं यदि है तो वह देगी नहीं तो नहीं इसहेतु उसके लाने की प्रतिज्ञा आपसे नहीं करता बादशाह ने कहा जो तू वैसा डेरा न लावेगा तो मैं तेरा मुख न देखूंगा और तुम कैसे उसके पति और वह कैसी तुम्हारी पत्नी है कि ऐसी तुच्छ बस्तुभी तुम्हारे कहने से न देगी जान पड़ता है कि तुम को वह तुच्छ और दासवत् समझती है जो तुम उससे डेरा मांगोगे उसने दिया तो जानना कि वह तुमसे अतिहित रखती है नहीं तो नहीं मुझे निश्चय है कि वह तुमसे बहुत प्रीति रखती है जो कुछ उससे मांगोगे वह प्रसन्नतासे तुमको देवेगी शाहज़ादा इस नियमके बिपरीत कि तीनदिन रहकर चौथेदिन जाता था केवल दोहीदिन रहकर तीसरेदिन उधर को चला जब भवन में पहुँचकर बानूपरी के पासगया तो उसने उसे चिन्तित देख पूंछा कुशल तो है आज क्यों तुम उदासहोकर अपने पिताके पाससे आयेहो शाहज़ादे ने सम्पूर्ण बृत्तान्त कहदिया बानूने इतना सुनकर उत्तर दिया तुम धैर्य रक्खो मैं तुमको अवश्य डेरादूंगी परन्तु मुझे मालूम हुआ कि उसका काल निकट पहुँचा अहमद ने कहा ईश्वर मेरेपिता को बहुकालपर्यन्त जीतारक्खे हे सुंदरी! वो कुछ रोगी नहीं अभी उन को कुशलपूर्बक छोड़आयाहूं परन्तु आश्चर्य में हूं कि मैंने कुछहाल

यहां का उससे नहीं कहा उसको सबहाल क्योंकर मालूमहुआ बानू परीने उत्तरदिया हे प्रियतम ! तुमको स्मरणहोगा कि मैंने उस बृद्धा को जिसे तुम रोगी समझकर यहां उठालाये थे देखकर क्या कहाथा वह बीमार न थी उसने केवल तुम्हारा हाल मालूम करनेको बहाना किया था उसीने जाकर वहां यह सब हालकहा जब तुम उसको यहां छोड़गये थे मैंने उसको औषध पिलाई बहाना करके वह अच्छी होगई और मेरेपास बिदा होनेको आई मैंने उसकेसाथ दासियां करके उसे सबसामग्री इसभवनकी दिखाई फिर वह देखभालकर बिदाहुई इसके बिशेष किसीकी सामर्थ्य नहीं जो यहांतक पहुँचे क्या आश्चर्य है कि यहांका सब भेद जानगईहो शाहज़ादे ने उसकी बहुतसी प्रशंसाकर कहा अब मेरी इच्छाहै कि तुम्हारी कृपा से वैसा डेरा अपने पिताके पासलेजाऊं उसने कहा इस तुच्छ बस्तुकेलिये इतनी चिन्ता क्यों करतेहो उसे मैं अभी मँगवाती हूं इतनाकह उसने एक दासी को जो खजाञ्ची थी बुलवाकर कहा कि फलाना डेरा शीघ्रलेआ वह दौड़ीगई और उसी डेरेको लाई और बानू की सैनके अनुकूल उसे अहमद शाहज़ादेको दिया अहमद उसे मुट्ठी में दबाकर समझा कि हमारी प्यारी ने मुझसे हास्य कियाहै बानू इस बातको जानकर ठट्ठामारके हँसी और कहनेलगी हे प्यारे ! तुमने अपने मनमें समझा होगा कि मैं तुमसे हँसतीहूँ फिर नूरजहां अपनी दासी से कहा कि इस डेरेको लेकर एक बड़ेबनमें खड़ाकर जिससे अहमद को इस का गुण मालूमहो तदनन्तर वह दासी उस डेरेको लेकर भवन से बहुतदूर चलीगई और वहां उसने वही डेरा खड़ाकिया शाहज़ादेने उसे ऐसा बड़ा पाया कि दो बादशाह भी सेनासमेत वहां भलीभांति बैठसकें और किसीको एक दूसरे से कष्ट न हो उस दासीने फिर उसे तहकर शाहज़ादे अहमदको दिया यह उसीसमय उसे लेकर सिधारा और अपने नियमित सवारों सहित अपने पिता के सम्मुख गया और उस डेरेको दिया बादशाह भी उसे देख समझा यह तो बहुत छोटा है जब वह खड़ाहुआ उसको बहुत बड़ा देख आश्चर्य किया और ऐसी अद्भुत बस्तु लादेने से अहमद का अतिगुण माना फिर

चित्र शहज़ादे अहमद का शेरों को मांस देकर चश्मे से सुनहरा पानी भरते हुये.



उसने अपने सेवकों को आज्ञादी इसे रक्षापूर्व्वक रक्खो और इस अपूर्व्व वस्तु की प्राप्ति से उसे भय और शंका अधिकहुई और विचारा वह परी बास्तव में अहमदको बहुत चाहती है अपने द्रव्य और ऐश्वर्यसे बड़े२ कामकरसक्तीहै मेराराज्यलेना कौन बड़ीबातहै फिर उसने जादूगरनी को बुलवाकर इस विषय में सम्मतपूंछा उस ने कहा शाहज़ादे से पानी चश्मेशेरोंका मांगो जब बादशाह सन्ध्या के समय अपने सभा के समूहके मध्यमें बैठाथा कि अहमद आया और चरण चूम बादशाह के पास बैठगया बादशाह ने उससे कहा मैं तुम्हारे डेरेके लाने से अतिप्रसन्नहुआ निस्सन्देह कोई ऐसी विचित्रबस्तु हमारे खज़ाने में नहीं परन्तु एकबस्तु मुझे और चाहिये यदि उसेभी लाओ तो मैं अतिप्रसन्न हूंगा तुम्हारी प्रियाके पास पानी चश्मेशेरोंकाहै जिसके पीतेही सर्वभांतिके ज्वरादिकरोग नाश होजाते हैं और मुझे निश्चय है कि मेरी आरोग्यता तुझको स्वीकारहोगी थोड़ासाजल मेरेलिये लाओ कि आवश्यकतापर उसको पियाकरूं शाहज़ादा इस बातको सुनकर चुपहोरहा और सोचने लगा कि डेरे को जिसतरह मैंने जाना उसतरह लादिया ऐसा न हो जो उस जलके मांगने से परी अप्रसन्न होजावे और अहमदको यह भलीभांति विदित था कि जो बस्तु मैं उससे मांगूंगा नाहीं न करेगी इस चिन्तनाके उपरांत उसने उत्तर दिया मेरे अधिकार में कोई बस्तु नहीं परन्तु मैं उस जलको भी मांगूंगा यदि उसने दिया तो लाऊंगा आपसे प्रतिज्ञा नहीं करसक्ता आपकी मांगी हुई बस्तु लाने में अपनी सपूती समझता हूं परन्तु इस बस्तु के मांगने में कष्ट अवश्यहै निदान दूसरे दिन वह बादशाह से बिदाहोकर अपनी प्रिया के निकट आया और कुशल पूंछने के उपरान्त कहा मेरा पिता आपकी कृपासे बड़ा गुण मानता है परन्तु उसने सिंहरक्षित सरोवर जल मांगाहै यदि तुमको उसके देने में कष्ट न हो तो मुझे मँगवादो मैं उसको जाकर देआऊं बानूपरी ने कहा जानपड़ता है कि तेरा पिता तुम्हारी और हमारी परीक्षा लेता है जो कुछ जादूगरनी उस को सिखाती है वही बस्तु वह मांगता है अच्छा

वह भी तुमको मैं दूंगी इसमें भी मुझे कुछ हानि नहीं परन्तु कुछ भयहै अब मैं उसे बर्णनकरतीहूं चित्तधरसुनो अमुक मैदानमें एक दिब्यसरोवरहै जिसकी रक्षाकेलिये अतिबलवान् चार सिंहहैं उन की उसपर चौकी रहती है पारी २ से दो सिंह जागते हैं और दो सोते हैं और किसी मनुष्य को जलके पास जाने नहीं देते मगर मैं ऐसी तदबीर तुमको बताऊंगी कि जिसके सबब से तुम्हें कुछ नुक्सान और आसेब उन शेरों से न पहुँचेगा इतना कह उसने सुई और धागा निकालकर कई गेंदें अपने हाथ बनाईं एकगेंद शाहज़ादेको देकर कहा पहिले तुम इस गेंदको रक्षापूर्ब्बक रक्खो दूसरे यह कि तुम दो घोड़े अतितीब्रगामी लेना एकपर तुम चढ़ना और दूसरेपर एकभेंड़के चारटुकड़े करके लादना वह भेंड़ मैं आज काट रक्खूंगी तीसरे यह कि तुमको मैं एकपात्र देतीहूं तुम उसमें जल भरना अब भोरके सवारहो और दूसरे घोड़ेकी बाग पकड़ उसी मैदानकी ओर जाना जब उस मैदानके निकटवर्त्ति भवनके लोहे के द्वारपर पहुँचो तो इस गेंदको आगे डालदेना यह गेंद आपही लुढ़कताहुआ उस भवन के द्वारतक पहुँचेगा तुम उस गेंद के पीछे चलेजाना जहां कहीं यह गेंदठहरे वहींपर तुम उन चारों सिंहोंको देखोगे और द्वार खुल जावेगा वह दो सिंह जो जगेहोंगे तो सोते हुओंको भी जगा देवेंगे फिर वह चारों तुमको देखकर नाद करेंगे परन्तु तुम उनसे भय न करना भेंड़के चारोंटूक तुम उनके सम्मुख डालदेना घोड़ेपरसे न उतरना और एंड़ मारकर भवन के भीतर पैठकर सरोवर पर पहुँचजाना और वहांसे नीरभर लौटआना वह सिंह तो भोजन करतेहोंगे तुझसे कुछ न कहेंगे शाहज़ादा भोर को उठ उधरको चला और उसी भवन के निकट पहुँच पात्र जलसेभरा जब कुछदूर निकटआया तो दो सिंह उसके पीछे दौड़े उसने उनका भय न किया और अपने बचाव के लिये तलवार गिलाफ़ से निकाल ली सो एकसिंह उसे जातेहुये देख लौटगया और दूसरे ने शाहज़ादे को शिर और पूंछ से सैन की कि तू अभय चलाजा परन्तु दूसरा सिंह उसके साथ लगाहुआ जाता था इतने में शाहज़ादा नगर

में पहुँच बादशाह के महल में चला गया और वह सिंह जो पीछे चला आताथा अहमदको मन्दिरमें प्रवेशकरते देख लौटगया उसे कुछ दुःख न दिया फिर बहुतसे मनुष्य अहमदको अकेले देख उस के साथ होगये और वहां पहुँच उसे घोड़ेसे उतारा उस समय बादशाह सभामें बैठ अपने देशके प्रबन्धकी वार्त्ता करता था शाहज़ादे ने उसे प्रणामकर वही जलकाघट उसे भेंटदिया और बिनय की यह वही जल है जो आपने मांगाथा यह जल अलभ्यहै ऐसी अपूर्बबस्तु आपके निकट कदाचित् न होगी जो ईश्वर न चाहे आपकी देहमें किसी भांतिकी ब्यथाहो तो थोड़ासा इसको पीलीजियेगा तत्काल निबृत्तहोजावेगी बादशाहने अतिहर्षसे उसका हाथपकड़ उसे अपने दाहिनी ओर बैठालिया और कहनेलगा तुम इस जलको अतिभयानक स्थान से लायेहो इससे मैं तुमसे अतिप्रसन्न हुआ और इस भयानक स्थानका हाल जादूगरनी ने बादशाहसे कहाथा फिर बादशाहने अहमदसे पूछा तुम वहां क्योंकरगये और शेरोंसे बचकर क्योंकर जललाये शाहज़ादेने कहा आपके प्रताप से कुशलपूर्ब्बक वहां पहुँचा फिर उसने सम्पूर्ण बृत्तान्त बर्णनकिया जब बादशाहने अपने पुत्रका इतना साहसदेखा तो प्रथम से अधिकडरा और दशगुणा बैर और भय उसके मन में समाया तब उसे शीघ्र बिदाकर मन्दिरमें गया और उस जादूगरनीको बुलाभेजा और संपूर्णसमाचार उससे कहा वह तो पहिले यह सब हाल सुनचुकीथी अब बादशाह से सब बृत्तान्त सुन अत्यन्त बिस्मितहुई फिर बिनयकी अब की बेर अहमदसे इस भांतिकी बस्तु मांगिये बिश्वासहै कि वह बस्तु न लासकेगा बादशाहने उसको बिदा किया जब अहमद दूसरे दिन बादशाहके निकट आया तो उसने कहा हे प्रियपुत्र! मैं तुम्हारी सेवा से अतिप्रसन्नहुआ अब तीसरी बात भी मुझको अवश्यहै यदि तुम उसे भी करो तो जन्मभर तुमसे प्रसन्न रहूंगा शाहज़ादेने बिनयकी वह कौनसी बात है आप कृपाकर कहिये बादशाहने कहा मेरे पास एक मनुष्यलाओ जिसका डील एक गज़से अधिक न हो और उस की बीसगज़की दाढ़ी हो साढ़ेछःमनकी ज़रीब कन्धे में लेकर चले

और वह उसे इसभांति घुमाये जैसे कोई काठके सोंटेको घुमाता है अहमदने विनयकी इस भांतिका मनुष्य संसारभरमें उत्पन्न न हुआ होगा निदान जब वह बानूपरीके निकटगया तब उससे यह हाल वर्णनकिया और बानूकीओर देखकर कहा ऐसा मनुष्य जगत्भरमें न होगा बादशाह समझेबूझे बिना यह आज्ञा मुझको देचुका यदि ऐसा मनुष्यभी मिला तो इतनी भारी जरीब अपने कन्धेपर क्योंकर उठासकेगा इतनाकह फिर कहनेलगा मेरे विचारमें तो कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो तुम जानतीहो तो बताओ उसने कहा इस बात में तुम कुछ चिन्ता न करो तुमने तो बड़े भयानक स्थान से अपने पिताको जल लादिया यह बात उससे कठिन नहीं है इस गुणवाला मेरा भाई शब्बर है यदि वह और मैं एकही माता पिताकी सन्तानहूं परन्तु ईश्वर ने उसका स्वरूप ऐसाही रचा है और वह बड़ा धीर और साहसी है और अमुक स्थान का बादशाह है और एक लोहेकी जरीबके सिवाय और शस्त्र अपने पास नहीं रखता अब मैं उसको बुलातीहूं तुम उससे कदाचित् न डरना शाहज़ादे अहमदने कहा जो शब्बर तुम्हारा भाई है और उसका स्वरूप अद्भुतहै मैं उसको देखकर अतिप्रसन्नहूंगा जैसा कि कोई शख़्स अपने मित्र और भाई बन्धुके देखने से प्रसन्नहोता है उसे देखकर क्यों डरूंगा फिर परीबानूने सुनहली अँगीठी मँगवाकर उसने अग्निजलाई और एक सुवर्ण का सन्दूक़चा मँगवाकर उस ने खोला और उस में से कोई सुगन्ध निकाल उस में डाली जब उसका धुवां घना उठा तो कईक्षणके उपरान्त उसने कहा मेराभाई शब्बर आया तुम उस को देखतेहो वा नहीं शाहज़ादेने शिर ऊपर उठाके शब्बरको देखा कि वास्तव में उसका डील गजभरका था और बड़ी तमक झमक से आताथा उसके कन्धेपर लोहेकी साढ़ेछःमनकी जरीब रक्खीहुई थी और उसकी दाढ़ी बहुत घनी बीसगज़की लम्बीथी परंतु उसको इस उपायसे रखताथा कि धरती में नहीं लगतीथी और मूछें उस की कानोंतक पहुँचतीं जिससे उसका मुख छिपाहुआथा और नेत्र उसके शिरमें घुसेहुये थे और शिर उसका जिसपर अतिउत्तम

मणिजटित मुकुटथा आगे और पीछे कुबड़ाथा अहमद शब्बर को देख न डरा और उसीभांति अपनी प्रियाके निकट बैठारहा शब्बर ने आगे बढ़कर उसको एक दृष्टि से देख पूंछा कि तुम्हारे निकट यह कौन बैठाहै बानूपरीने कहा यह अहमद नाम मेरापति हिन्दुस्तान के बादशाह का पुत्रहै भाई मैंने अपने बिवाह में तुमको इसलिये नहीं बुलाया कि तुम उन दिनों बड़े युद्ध में प्रवृत्त थे अब तुमने ईश्वरकी कृपासे अपने बैरियोंको परास्तकिया इसलिये मैंने तुमको बुलाया इतना सुनतेही उसने अहमद को प्रीति से देखा और अपनी बहिन से कहा कोई ऐसा काम इस शाहज़ादेका अटका है कि मैं उसे करूं उसने उत्तर दिया हिन्दुस्तानका बादशाह अर्थात् इस शाहज़ादे का पिता तुम्हारे दर्शनों की इच्छा रखता है कृपा करके तुम इसके साथ वहांजाओ उसने कहा मैं इसीसमय जानेको तय्यार हूं बानूने कहा भाई आज तुम दिनभरके थकेहो कल भोर को जांना और सन्ध्याको मैं सम्पूर्ण बृत्तान्त अहमदका तुमसे बर्णनकरूंगी तदनन्तर बानूपरीने बादशाह और उसके मन्त्री आदिक सम्पूर्ण सभासदोंका बिशेष जादूगरनीका बृत्तान्त बर्णनकिया दूसरे दिन प्रभात को शब्बर अहमद के साथ चला मार्ग्ग में मनुष्य शब्बर के बिकराल स्वरूपको देखकर भयसे दूकानों और घरों में छिप कर बैठरहे और अपने अपने किवाड़ोंको बन्द करलिया और कोई घबराहट से पगड़ियों और जूतियों को छोड़कर भागगये फिर वह शाही दरबारमें गया जहां बादशाह अपने सम्पूर्ण सभासदों और मन्त्रियों सहित बैठाथा वहांभी मनुष्य शब्बरको देख छिपगये शब्बर ने अतिग्लानि और अहंकारसे बादशाह के तख़्तके निकट जाकर कहा तूने मेरे दर्शनकी अभिलाषाकी थी सो मैं आया कह मुझसे क्या इच्छारखता है बादशाहने उसके बिकटरूप के देखतेही उत्तर देनेके बदले अपने दोनों हाथ आंखोंपर रक्खे और वहांसे भागने की इच्छाकी शब्बर बादशाहकी अशीलता से अतिअप्रसन्न हुआ कि मैं तो इतना परिश्रमकर उसके बुलाने के अनुकूल यहां आया और वह मुझे देखकर भागताहै निदान लोहेकी जरीबको उठा उस

के शिरपरमारा कि शिर उसका खण्ड खण्ड होकर चूर्ण होगया उस समयतक अहमद वहां नहीं पहुँचाथा उसके पीछे यह उपद्रव हुआ इतनेमें अहमदभी पहुँचा फिर शब्बरने राजमन्त्रीको मारना चाहा परन्तु शाहज़ादे अहमदने उसको बचाया कि यह मेरा अतिहितैषी मित्रहै इसने कोई अनुचितबात मेरेलिये नहींकी और सब मेरे बैरी हैं इतना सुनतेही सब प्रधान और मन्त्री जो दोनों ओर पंक्तिबांध कर खड़ेथे उनलोगोंके सिवाय जो भागगयेथे कोई जीता न बचा सब के सब मारेगये फिर शब्बर ने सभा से राजभवन में आकर राज- मंत्रीसे जिसके प्राण शाहज़ादेके कहनेसे बचगयेथे कहा उस जादू- गरनीको जो मेरे बहनोईकी बैरिनहै और उन बादशाहके सम्मतियों को बुलाला कि उनको इस दुष्टकर्म्मका दण्डदूं इतना सुनतेही मन्त्री पहिले उस जादूगरनीको और तिसके उपरांत सब सभासदोंको जो शाहज़ादेके बैरीथे बुलालाया शब्बरने उनकोभी लोहेकी जरीबसे मारा और उस जादूगरनीसे कहा कि तेरे बुरे उपदेशका फल यहीहै जो तुझको अब मिला तदनन्तर शब्बरने नगरभरके मनुष्योंके मारने का इरादाकिया परन्तु शाहज़ादे ने सबको बचादिया फिर शब्बरने अहमद को शाही बसन पहिनाकर तख़्तपर बैठाया और उसके नामकी नगरभरमें डौंड़ीपिटवादी नगरके सम्पूर्ण मनुष्य अहमद से प्रसन्नथे उसके तख़्तपर बैठने से अतिसंतुष्ट हुये और अपनी अपनी सामर्थ्यभर भेंट देकर बड़े नादसे उसको आशीर्बाद देने लगे जब शब्बर यहां यथेच्छ प्रबन्ध करचुका तो अपनी बहिन को भी वहां लेआया तिसके उपरान्त शब्बर बिदा होकर अपने भ- वनको सिधारा अहमद ने अली और नुरुन्निहार को बहुत कुछ देकर एकनगरका अधिपति करके बिदाकिया और एक प्रधान को हुसेन शाहज़ादेके पास भेजकर कहलाभेजा जिस देशको तुमचाहो उसका बादशाह तुमको बना दें परन्तु हुसेन उस दशा में अति प्रसन्नथा उसने राजपाट स्वीकार न किया और उसी प्रधानके द्वारा अहमदकी कृतज्ञता कहलाभेजी और अपनाजन्म ईश्वरके आरा- धन और तपस्या में बिताया शहरज़ाद इस कहानीको सम्पूर्ण करके

दूसरे दिन तीनबहिनोंके परस्पर ईर्षाकी दूसरी कहानी कहने लगी ऐसेही बिचित्र चरित्र कहकर अपने प्राणको बादशाह से बचाती ॥

## तीनबहिनोंकी कहानी ॥

पूर्व्वकाल में फ़ारस देशका शाहज़ादा खुसरोशाहनाम बहुधा रातों को वेष बदल एक सेवकको अपने साथ ले नगर की सैर किया करता और संसार के अद्भुत विषय जिनका बर्णन बिस्तार से है देखता निदान जब शाहज़ादे के पिताकी बृद्धावस्थाके प्राप्तहोने से देहान्तहोगया तो शाहज़ादा तख़्तपर बैठा और उसने अपनानाम कैखुसरो जारी किया और उसी भांति सन्ध्या से वज़ीरको साथले और बेष बदल नगरके बाज़ारों और गलियों में फिरने लगा अकस्मात् एक गलीमें जापड़ा वहां उसने एकघरमें दो तीन स्त्रियोंको बातें करतेहुये सुना बादशाहने पासजाकर दरवाज़ेकी दरारसे झांककर देखा कि तीनबहिनें एकदालानमें बैठीहुई आपसमें बातेंकरती हैं वह कानलगाकर उनकी बातें सुननेलगा तथाच बड़ी बहिन ने अपना इस भांति मनोरथ प्रकटकिया कि मैं चाहतीहूं कि मेरा बिवाह बादशाहके रोटी पकानेवाले से हो कि अतिउत्तम और स्वादिष्ठ रोटियां खाकर तुमदोनों को तरसायाकरूं मँझली बहिन ने कहा कि मेरी इच्छा यह है कि मेराबिवाह बादशाहके बावर्ची से हो कि उत्तम उत्तम भोजन कि जिनके आगे बादशाहकी रोटियां तुच्छहैं मेरेखाने में आयाकरें तीसरी बहिन ने जो सबसे छोटी और चतुर और बाचालथी अपनी पारी में कहा कि मेरी तुम दोनों कीसी छोटी इच्छा नहीं है किन्तु मेरी बड़ी इच्छाहै मैं चाहतीहूं कि इस देशके बादशाह से मेरा ब्याहहो और उस बादशाह से एकपुत्र उत्पन्नहो जिसके एक ओरके बाल स्वर्णकेहों और दूसरे तरफ़के रूपेके और जब वह बालक रोवे तो उसकी आंखों से मोती झड़ें और हँसती समय उसके लाल ओष्ठ कलीके सदृश खिलेहुये मालूमहोवें बादशाह उन तीनोंबहिनों के बिशेष उस छोटी बहिन का मनोरथसुन अति आश्चर्य में हुआ और इच्छाकी कि उन तीनोंबहिनों की इच्छा पूर्णकरें इस बालको अपने मनमें ठान मंत्रीसे कहा कि तू इसघरको खूब पहिंचान रख

और सुबहको इन तीनों बहिनों को मेरेपास लाइयो निदान दूसरे दिन भोरको मंत्री उन तीनों बहिनों को उनके घरसे लेजाके बादशाहके सम्मुख लेगया बादशाह ने उनसे कहा कि कल रात्रिको तुम क्या कहतीथीं उन सबबातोंको मुझसे वर्णनकरो पर चैतन्यरहो उस बातमें अन्तर न पड़े क्योंकि वे बातें मुझको मालूमहैं और अपने कानों सुनचुकाहूं इस बातको सुनकर वे तीनों बहिनें मारेलज्जा के कुछ उत्तर न देसकीं और अपने अपने शिर नीचे करके चुप होरहीं बादशाह छोटी बहिन को जो महासुन्दर और नखशिख से बहुत अच्छीथी देखकर मोहित होगया जब बहुत पूंछा तो उन्होंने इन्कार किया बादशाह ने उनको दिलासा देकर कहा कि तुम कुछ भय मत करो और लाजछोड़ जैसी कि रात्रिको वार्त्ता करतीथीं मुझसे वर्णन करो कि मैं तुम्हारे मनोरथोंको सिद्धकरूं निदान उन्होंने अपने अपने मनोरथोंको प्रकट किया बादशाह ने सुनकर बड़ी बहिन का विवाह अपने रोटीपकानेवाले केसाथ और मँझली का विवाह बावर्ची के साथ उसी दिन करदिया और अपने विवाहकी तय्यारी की आज्ञादी तय्यारी होनेके उपरान्त बादशाहोंके समान बड़े धूमधाम से बिवाह किया और बादशाहने उसको मलका बनाया और बड़ी दोनों बहिनों का बिवाह उन रसोईदारोंके प्रतिष्ठाके अनुसार अर्थात् बिनाधूमधाम के किया था उन सबको उचितथा कि अपनी अपनी अभिलाषाको पाकर प्रसन्नहोतीं पर अपनी छोटी बहिन के बिवाह की धूमधाम और प्रताप देखकर ईर्षा हुई और रात्रि दिन जलाकरतीं एक दिन बड़ी और मँझली बहिन हम्माममें नहाने के लिये आईं तहां बड़ीने मँझली से कहा छोटीबहिन हमसे ऐसी सुन्दर न थी कि मलका होती मुझको यह बात बुरीमालूमहुई मँझली बहिन ने उत्तर दिया बहिन मैं भी इस बातसे बहुत अप्रसन्नहूं मैं नहीं जानती कि बादशाहने उसे क्या देखकर पसन्द किया वह तो मलका होनेके योग्य न थी मेरे विचार से बहिन तूही बादशाह के बिवाहके योग्यथी बादशाह को उचित था कि तुझेही मलका बनाता बड़ी बहिनने उत्तर दिया कि मैं अतिआश्चर्य में हूं जिसका वर्णन नहीं

करसक्ती यदि बादशाह तेरा सौन्दर्य्य पसन्दकर तुझ से विवाहक
रता तो उस छोकड़ीसे हज़ार हिस्से अच्छाथा निदान बादशाहकी
अनीतिसे हम बड़े खेद में रहती हैं अब कोई ऐसी यत्नकिया चाहिये
कि जिससे वह छोकड़ी बादशाहकी दृष्टिसे गिरजावे सो वे दोनों
बहिनें इसी चिन्ता में रहकर भेंटहोनेपर यही बातें कियाकरतीं और
उसके मारडालने और कष्टका उपाय सोचतीं पर कुछ न बनप-
ड़ता और छोटीबहिन उन दोनोंका अतिसत्कार करती और जिस
भांति उसको उन दोनोंसे पहिले प्रीतिथी अबभी वही प्यार रखती
संयोग से कितने महीनों के उपरान्त उसके गर्भरहा और बादशाह
इस खबरको सुनकर अतिप्रसन्न हुआ और अपने सम्बन्धित स-
म्पूर्णनगरों में खुशी करनेके वास्ते आज्ञादी वे दोनों बहिनें अवसर
पाके बादशाह के महल में गईं और मलकासे कहा कि हमको ईश्वर
ने यह दिन दिखाया हम चाहती हैं कि जब प्रसूतिका समयहो तो
हमहीं जनवायें और चालीस दिनतक कामकाजके लिये उपस्थित
रहें मलका ने कहा बीबियो बहुत अच्छा तुम से और कौन अधिक
विश्वासितहोगा कि जिनका हम ऐसे काममें विश्वासकरें पर मैं बा-
दशाह की आज्ञापालकहूं उनकी आज्ञाके बिना कोई काम नहीं कर
सक्ती इससे उत्तमहै कि तुम्हारे पति बादशाह से इस आज्ञाको लेलें
निश्चयहै कि बादशाह रिश्तेदारी के सबब से रहनेकी आज्ञा देदेंगे
फिर उन दोनों के पतियोंने अपनी स्त्रियों का कहना मानकर बाद-
शाह से अपनी स्त्रियों के रहने की प्रार्थना की बादशाहने कहा
कि मैं पूछकर उत्तरदूंगा फिर बादशाहने अपनी स्त्रीसे पूछा तुम्हारी
इच्छाहो तो तुम्हारी बहिनें प्रसूतिके समय तुम्हारे पास उपस्थित
रहें मेरे विचारसे बेगानोंसे उनका रहना ऐसे समयपर उत्तम होगा
मलकाने कहा कि यह बात मेरे विचारसे भी बहुत अच्छीहै तथाच
मलका की दोनों बहिनों के रहने की आज्ञादी और वे दोनों उसी
समयसे बादशाहके महलमें रहनेलगीं अब उनको अपने मनोरथ
के अनुसार अवसर मिलगया जब मलकाकी प्रसूतिका समय पहुँचा
तो उसके अतिसुन्दर पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके देखने से उन दोनों के

मनमें ईर्षाबढ़गई और मलकाकी दृष्टि बचाकर उस पुत्रको एक कम्मल के टुकड़े में सावधानीसे लपेट और एक पिटारी में बन्दकर नहर के बहावमें जो मलकाके महल में जारीथी डालदिया और उसकी जगह एक कुत्तेका मुवाहुआ पिल्लालेकर लोगों को दिखाया कि मलका यह जनी है यह ख़बर बादशाहको पहुँची इससे अति क्रोधितहुआ और मलकाके मारडालनेका इरादा किया परन्तु मन्त्रीने जो संयोग से उपस्थित था बादशाह को कह सुनकर रोंका और मलकाकी निर्दोषता बहुत से प्रमाणदेकर प्रतीत कराई अकस्मात् वह पिटारी बहते बहते बाग़ों की नहरमें गई और बाग़ के दारोग़ाकी दृष्टि जो नहरके किनारेपर टहलरहाथा उस पिटारीपर पड़ी उसने तुरन्तही एक बाग़वान को पुकारा और उस पिटारी को दिखाकर कहा कि शीघ्रजाके उस पिटारीको मेरेपासला कि मैं देखूं उसमें क्या है बाग़वान दौड़कर नहरकिनारेगया और किसीलकड़ी से खींचकर पिटारीको बाहर निकालकर दारोग़ाके पासलाया दारोग़ा उसी समय का पैदाहुआ अतिसुन्दर लड़का कम्मल में लिपटा हुआ उस पिटारी में देखकर अतिआश्चर्य्य में हुआ वह दारोग़ा निष्पुत्रथा और संतान के लिये सदैव ईश्वर से प्रार्थना करता था उस बालक को देखतेही पिटारी समेत घरको लेगया और अपनी स्त्रीसे कहा कि ईश्वरने मुझको यह लड़का दिया है अभी एक दाई बुलवाकर दूध पिलवा और इसको अपने उदरका पुत्र जान बड़ी सावधानी से पालन पोषण कर उसकी पत्नी अतिप्रसन्न होकर उसका पालन करनेलगी दारोग़ा ने इस बातकी कुछ तलाश न की कि वह बालक कहां से आया और मनमें समझा कि वह लड़का निश्चय करके मलकाके महल से आयाहै दूसरे बर्ष मलकाके एक और पुत्र उत्पन्न हुआ और उसकी दुष्ट बहिनोंने ईर्षासे उस बच्चे के साथ वही बर्तावकिया अर्थात् उसको भी कपड़े में लपेट और पिटारीमें बन्दकर उसी नहरमें डालदिया और यह बात प्रसिद्धकी कि अबकीबेर मलकाके बिल्लीका बच्चा पैदाहुआ संयोग से वह लड़का भी दारोग़ाके हाथलगा उसने वह बच्चा भी लेजाकर अपनी भार्या

को दिया और कहा इसको पाल बादशाह इस हालको सुनकर आगे से अधिक अप्रसन्नहुआ और मलका के मारडालने की इच्छा की परन्तु मन्त्री ने कह सुनके इसबेर भी मलका को बचाया और बादशाह के क्रोधको समझाय बुझायके निवृत्त किया तीसरीबेर मलका के लड़की पैदाहुई और वहभी अपने भाइयोंके सदृश पिटारीमें बन्द करके नहरमें डालीगई और वह लड़की भी उसी दारोगा को मिली और उसने उसको भी अपनी स्त्रीको देकर कहा उन दोनों लड़कों के साथ पाल उन दोनों बहिनों ने प्रकटकिया कि अबकीबेर मलका के छछूंदर पैदाहुई बादशाह को इसबेरका क्रोध न थँभा और इस के सुनतेही कहा कि ऐसी स्त्री को जो जीताछोड़ूंगा तो मेरे महलको ऐसे ऐसे जन्तु पैदाकरके भरदेवैगी अब उचित है कि उसको मैं मारडालूं राजमन्त्री और सभासद् जो उपस्थित थे बादशाह के चरणकमलों पर गिरपड़े और क्षमामांगी और मन्त्रीने हाथबांध के बिनयकी कि हे बादशाह! ऐसे मनुष्यका मारडालना जो निर्दोषहो उचितनहीं विधाताकी रचनामें कोईउपाय नहीं चलता जो आप उस से ऐसेही अप्रसन्नहैं तो उसके पास न जायाकीजिये और कुछदान पुण्य कीजिये फ़ारसका बादशाह ऐसी ऐसी बातें सुनकर समझा कि बास्तव में मलका का मारना अनुचितहै तब मन्त्रीसे कहा कि मैं उसको न मारूंगा पर एकदण्ड उसके लिये मैंने बिचाराहै वह मार डालनेसे भी बुराहै एक क़ैदख़ाना जामअमसजिदके दरवाज़ेके पास बनवायाजावे और मलका काठके पिंजड़ेमें क़ैदहोकरके उसमें रक्खी जावे जो मुसल्मान निमाज़ पढ़नेको आवे तो पहिले मलकाके मुख पर थूककर अपना पग मसजिद के भीतर रक्खाकरे कदाचित् कोई मनुष्य ऐसा न करे तो वहभी ऐसा दण्डपावे बादशाह से यह बात मन्त्री सुनकर चुपहोरहा और यह आज्ञामानी कदाचित् यहदण्ड जो बादशाहने निर्दोष मलकाके लिये बिचाराथा इन दो दुष्ट बहिनों को दियाजाता तो उचित था निदान क़ैदख़ाना तय्यारहोगया और वह बेचारी मलका उसमें क़ैद कीगई और नगरबासी जो मसजिद में निमाज़पढ़ने को जाते तो पहिले उस मलका के मुँहपर थूकते वह

बेचारी सन्तोषकरके इसदुःखको सहती और जोकोई उसके अपराध को जिसके सबबसे बादशाहने यह दण्ड नियत कियाथा सुनता तो उसको निर्दोष समझ दयाकरता और उसके इसदुःखसे छूटने के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता दारोगा और उसकी स्त्री उन दोनों शाहज़ादों और शाहज़ादी को बड़ेप्यार से पालते और ज्यों ज्यों वह बढ़ते त्यों त्यों उनदोनों प्राणियों को हर्षहोता जब वहतीनों सयाने हुये तो दारोगा ने बड़ेका नाम बहमन और छोटे का नाम परवेज़ और लड़की का नाम परीज़ादरक्खा जब शाहज़ादे पढ़नेके योग्य हुये तो दारोगाने उनके लिखाने पढ़ानेके लिये बड़े २ विद्वान् नियत किये और शाहज़ादीको भी जब लिखने पढ़नेकी इच्छापाई तो उस को भी उन्हींविद्वानों को सौंपा कईदिनों में परीज़ादभी अपने भाइयों की भांति लिख पढ़के निपुणहोगई और विद्वानोंसे कविता इतिहास और बहुतसी विद्या उन तीनोंने सीखीं थोड़ेदिनोंमें वे ऐसे पढ़ लिख कर प्रवीणहुये कि उनके अध्यापकों को आश्चर्यहुआ और कहने लगे कि ये तो हमसे भी निपुणहैं फिर उन तीनों ने घोड़ेकी सवारी तीरन्दाज़ी और सिपाहगरी और नेज़ह चलाने की प्रक्रिया आदि सीखीं इन गुणों के विशेष परीज़ाद ने गानाबजाना हरएकसाज़ का भी सीखा दारोगा इनतीनों सन्तानको सब विद्या और गुणोंमें सम्पन्न पाकर अतिप्रसन्न हुआ और जो कि उसकाघर उनकेरहने के योग्य न था इसलिये नगरसे बाहरजाकर उसने थोड़ीदूरपर जंगल और हरियाली के निकट जगह मोललेकर वहां बहुतबड़ा महल बनवाना प्रारम्भकिया और आप दिनरात उसके बनवाने में प्रवृत्त रहता जब वह मकान बनगया तो उसने बड़ेबड़े चित्रकारों से भीतरबाहर बड़ी सुन्दरता से चित्रकारियां बनवाईं और अच्छी अच्छी वस्तुओं से उसे सजाया और उसके पास एक अतिसुन्दर पुष्पबाटिका बनाई जिसमें सब प्रकारके फूल और मेवों के वृक्ष लगाये और सिवाय इसके एक बड़ारमना तय्यार किया जिसके चहुँओर ऊँचीदीवारें खिंचवाकर उसमें सबप्रकार के शिकारी जानवर पशु पक्षीपाले कि वे दोनों शाहज़ादे और शाहज़ादी उसमें अहेर खेलाकरें जब वह

मकान सबतरहसे तय्यारहुआ तो दारोगाने बादशाह से जाकर उसीमहल में रहनेकी आज्ञामांगी बादशाह कि उससे अतिप्रसन्न रहताथा उसे प्रसन्नता से आज्ञादी सो दारोगा बादशाह से बिदा होकर उन तीनों समेत उसमहलमें रहनेलगा उसकीस्त्री कईबर्ष पहिले मरगईथी और वह महलमें आनेके पांच छः महीनेके उपरांत अकस्मात् बीमार होकर मरगया और इतना सावकाश न पाया कि उन तीनों संतानों के उत्पन्न होने का हाल बतलाये पर केवल इतनाही कहनेपाया कि बाबा तुम प्रतिष्ठापूर्ब्बक बहिन भाई मिले रहना उसके देहान्तके उपरान्त बहमन और परवेज़ और परीज़ाद ने यथोचित उसका कर्मकिया और परस्पर प्रीतिपूर्ब्बक रहनेलगे शाहज़ादे कि बड़े उद्योगी और हौसलेवरथे इससे वह बड़ेदरजेको पहुंचे एकदिन दोनों शाहज़ादे शिकार खेलनेकोगये और परीज़ाद शाहज़ादी अपने घरमें अकेली रही संयोग से एक धर्मिष्ठ बृद्धा उसके दरवाज़ेपर आई और उसने शाहज़ादी से इच्छा की कि जो आज्ञाहो तो मैं मकान के भीतर आकर निमाज़ पढ़ूं क्योंकि मेरा निमाज़का समयजाता है शाहज़ादी ने उसे भीतर आनेकी आज्ञादी जब वह बृद्धा अपने नियमित बन्दना और आराधनसे निश्चिन्त हुई तो दासियां शाहज़ादी की सैन के अनुकूल उसे सारे महल और बाग़ में फिरालाईं और उसने अच्छी तरह वह महल और बाग़ असबाब सामान को देखा और अतिप्रसन्न हुई और मन में सोची कि जिस मनुष्य ने इस मकान को बनाया है वह मकानों के बनाने में अतिनिपुण था फिर लौंडियां उस बृद्धाको परीज़ादके पास कि वह बारहदरी में बैठीथी लाईं शाहज़ादीने उसको देखकर कहा कि हे माता! आवो और मेरे पास बैठो ऐसी धर्मिष्ठ और आचारवती जैसी कि तुमहो संगति करके अपने को कृतार्थ समझती हूं तुमने ईश्वरके आराधनका ऐसा आचार स्वीकार कियाहै कि सब कोई उसीमार्गकी इच्छा करतेहैं बृद्धाने चाहा कि उस मकानके नीचे बैठें परन्तु शाहज़ादी ने सुशीलतासे उठकर उसका हाथ पकड़ अपने साथ बैठालिया उस बृद्धाने कहा बीबी तुमसी शीलवती मैंने

किसीस्त्रीको नहींपाया यद्यपि मेरी ऐसीपदवी नहीं कि मैं तुम्हारे पास बैठूं पर आपकी आज्ञा प्रतिपालन की फिर वह बृद्धा परीज़ाद से बातचीत करनेलगी इतने में लौंडियों ने बरतन बिछाकर उन में नानाभांति के भोजन कुलचे रोटियां और सूखे हरे मीठे मेवे तश्तरियोंमें रक्खे और कईप्रकारकी मिठाई लाकर चुनी शाहज़ादी ने एकरोटी उठाकर उस बुढ़ियाकोदी और कहा हे माता! इसको भोजन कर और जो मेवे तुमको अच्छेलगें उनको खावो क्योंकि तुम बड़ीदेर की घरसे निकलीहो राहमें भोजन करनेका संयोग न हुआ होगा उस तपस्विनी बृद्धा ने कहा मुझे ऐसे स्वादिष्ठ भोजनों के भोजन करने का अभ्यास नहीं है पर जो अब खाऊं तो हानि नहीं क्योंकि ईश्वर ऐसी उदार स्त्रीके हाथ से भोजन खिलवाताहै जब उस बृद्धा और शाहज़ादीने थोड़ासा भोजनखाया तो शाहज़ादीने ईश्वरकी बन्दनाका प्रकार उससे पूंछा उसने अपनी बुद्धि के अनुसार उसे बताया फिर उस बुढ़िया से पूंछा कि यह महल कैसा बनाहै सब मकान और असबाब रीति के अनुसार रक्खा है कोई बस्तु इस मकान और बाग़ में दरकार है या नहीं बृद्धाने कहा हे सुन्दरी! इस बातको मुझसे मत पूंछ यद्यपि यह बाग़ और मकान खूब बना है और हरतरह से अलंकृत है परन्तु मेरे विचारसे तीन बस्तुओंकी इसमें ज़रूरत है अगर वह भी इस बाग़ में हों तो सब तरहसे यह उत्तम होजावे परीज़ादने सौगन्द देकर उससे पूंछा कि वे तीन चीज़ें कौन हैं मैं उनके इकट्ठे करने में अतिपरिश्रम करूंगी निदान शाहज़ादी के बहुत तकरार करने से बृद्धाने लाचार होके कहा हे सुंदरी! पहिले एक पक्षीहै जिसको बुलबुल हज़ारदास्तां बोलते हैं और वह नायाब है कहीं नहीं मिलता जब वह प्रियबाणी से बोलताहै तो हज़ारों जानवर उसकी सुन्दरबाणी सुनने के वास्ते आते हैं और उसकी आवाज़केसाथ अपनी आवाज़ मिलाते हैं दूसरे एकबृक्षहै जिसके पत्ते बहुत चिकनेहैं और पवन के लगने से जब एक पत्ता दूसरे पत्तेकेसाथ रगड़ता है तो अच्छी आवाज़ और भांति भांति के गान सुनाई देते हैं जिसके सुनने से मनुष्य बिह्वल होजाता है

तीसरे सुनहलेरंगका पानी कि जो एक बूंद उसकी किसी ठिलिया में डालकर बाग में रक्खे तो थोड़ी देरमें वह बरतन भरजावेगा और फिर फ़व्वारे के समान उछलता और छूटतारहेगा कभी भी बन्द न होगा और पानी उठकर फिर उसी बरतनमें पड़ता है शाहज़ादी ने कहा निश्चय है कि तुमको ऐसी बिचित्र बस्तुओं का हाल मालूम होगा कि कहां हैं मुझको उस जगह का पता बतला बृद्धाने कहा ये तीनों चीज़ें हिन्दुस्तान से पृथक् देशों अर्थात् और विलायतों में मिलेंगी और इस जगह से अमुक ओर को बीस दिनकी राहपर है बीसवें दिन जाके पूंछना कि गानेवाली चिड़िया और गानेवालाबृक्ष और सोने के रंगकापानी कहां है वह मनुष्य जिससे तुमको पहिले भेंटहोगी इनतीनों चीज़ों का ठिकाना बतायेगा यह कहकर बृद्धा ने शाहज़ादी से बिदाहोकर अपनी राहली परीज़ाद ने वे बातें जो उस बृद्धासे सुनी थीं खूब यादरक्खीं बृद्धा यह समझती थी कि शाहज़ादी ने साधारण इन चीज़ों का पता पूंछाहै न यह कि आपही वहां जानेका इरादा करेगी इसलिये उसने साफ़ पता बतादिया और परीज़ाद उसको खूबयादरख इन चीज़ों की प्राप्तिका उपाय बिचारने लगी इसी चिन्तामेंथी कि उसकेभाई शिकार से लौटआये परीज़ाद को इस दशा में देखकर अति बिस्मित हुये निदान बहमन ने उससे पूंछा कि बहिन आज तुम क्यों शोचितहो ईश्वर न चाहे क्या तुम कुछबीमार होगई अथवा कोईबात तुम्हारीमरजी के प्रतिकूल हुईहो तो हमसे कहो कि हम उसका कोई उपायकरें शाहज़ादीने थोड़ीदेर तक कुछउत्तर न दिया फिर अपना शिरउठा दोनों भाइयोंकी ओर देखा और फिर नीचे आंखें करके कहा कि कुछ नहीं बहमन ने कहा कोईबात अवश्यहै जो हमको नहीं बतातीहो अब हम तबतक तुम्हारे पास से न जावेंगे जबतक तुम अपने रंजका हाल प्रकट न करोगी जब परीज़ादने देखा कि दोनोंभाई बड़े अधैर्य्य हैं तो लाचार होकर कहा यद्यपि इस चिन्ता का हाल प्रकट करना तुमको भी रंज देनाहै परन्तु बेकहे नहीं बनता इसलिये बर्णन करतीहूँ कि यहघर हमारे पिताने हमारेलिये निर्म्माण किया था और बहुत सजाहुआ है

पर आज मुझे मालूमहुआ कि जो तीन चीज़ें इसमहल और बाग़ में होतीं तो यह अपूर्व्व था और संसार में इसके सदृश कोई मकान न पायाजाता वे तीन चीज़ें यह हैं एक चिड़िया बोलने वाली और दूसरा गानेवाला बृक्ष तीसरे सोनेके रंगका पानी जबसे मैंने इनतीनों चीज़ों का हाल सुना तबसे मुझ को इनकी अतिलालसा हुई कि जिस तरह से होसके इन चीज़ों को पैदा करके अपने घर में रक्खूं जो तुमसे होसके तो तुम इन चीज़ों के ढूंढ़ने में मेरी सहायता करो बहमन ने कहा तुम उस जगह का जहां ये तीनों चीज़ें पाई जाती हैं नाम और निशान मुझको बतादो कि मैं कल सुबह को उधर जाऊं परवेज़ ने जब देखा कि बड़ाभाई सफ़रकरने को तय्यार है तो कहा भाई तुम हम सबसे बड़े हो तुम्हारा घरमें रहना उचित है मुझे आज्ञा दो तो मैंही सफ़रकरूं और तीनों चीज़ों को ढूंढ़कर अपनी प्यारी बहिन के लिये लाऊं बहमन ने कहा भाई मुझे तुम्हारे साहस और हिम्मत पर निश्चय है कि जो काम मुझसे न होसकेगा उसको तुम्हीं सिद्धकरलोगे पर जो मैं जाऊं तो अच्छी बात है तुम अपनी बहिन के पास रहो दूसरेदिन शाहज़ादा बहमन ने उस जगह का नाम और निशान जहां ये तीनों बस्तु थीं परीज़ाद से पूंछकर बिदा मांगी और शस्त्रबांधकर घोड़ेपर सवार हुआ उस वक्त परीज़ाद को अपने भाई के बियोग से बड़ादुःख हुआ और रोकर कहनेलगी भाई मुझे तुम्हारा बियोग असह्य है मैं नहीं चाहती कि तुम मुझसे और अपने भाई परवेज़ से अलग हो मुझे इनतीनों चीज़ों के न पानेसे इतनादुःख न होगा जितना तुम्हारे बियोगसे है कदाचित् हररोज़ का हाल तुम्हारा मालूम होता तो भी कुछ न कुछ हम दोनों को धैर्य्यहोता शाहज़ादे से बहमन ने कहा मैं इस सफ़र का पक्का इरादा करचुकाहूं और बहुतजल्दी इस कामको करके आन मिलताहूं कुछचिन्ता मतकरो कदाचित् मेरे जाने के उपरान्त तुमको मेरेहाल के मालूम करनेकी इच्छाहो तो मैं तुमको अपना निशान दिये जाताहूं उससे मेरा बुरा भला हाल मालूम होजावेगा यह कहकर बहमन ने अपनी कमर से एक क़रोली निकालकर परीज़ाद

कोदी और कहा तुम इसको अपने पास रक्खो जिस दिन वा जिस वक़्त तुमको मेरी कुशलका हाल मालूम करनाहो तो तुम इस को निकालकर देखना जो उसको साफ़ और चमकता हुआ पाना तो समझना कि मैं कुशलपूर्ब्बकहूं जो उसमें लहू टपकताहुआ देखना तो मुझे जीता न समझना सो शाहज़ादा इसतरह से परीज़ादको धैर्य्य देकर सिधारा और सीधी राहली कहीं रस्ता न भूला जब बीसदिनकीराह फ़ारसदेशसे लांघचुका तो उसने एकबृद्ध को जिस का स्वरूप अतिभयानक और बिकराल था देखा कि एकबृक्ष के नीचे बैठा है और उस दरख़्तकेपास एक झोपड़ा पड़ाहुआ देखा कि उसके सबब वह उष्णता और शीतसे बचारहता वह इतना बूढ़ाथा कि भौंहें मूछें और डाढ़ीके बाल बरफ़के समान सफ़ेदथे और इतने लम्बे और गुंजानथे कि उसके सारेमुँहको छिपालियाथा और डाढ़ी उसकी पैरोंतक पहुँचीथी और हाथ पांवके नाखून बहुत बढ़ गयेथे वह बूढ़ा अपने शिरपर एकटोपी लम्बीसी पहिने और सारे शरीर में एकचटाई लपेटेहुये था वह कोई सिद्धथा जो बहुत दिनोंसे संसारका मायामोहछोड़ ईश्वरकी बन्दना में प्रबृत्तहुआथा इसलिये उसका ऐसास्वरूप बनगयाथा बहमन उसदिन प्रभातसे ढूंढ़ताथा कि किसी मनुष्यको देखूं कि जिससे उन तीनों चीज़ों का ठिकाना पूंछूं उससिद्धको कि पहिले वही इसबीसादिनके पीछे मिलाथा देख कर उसकेपास आखड़ाहुआ और समझा यह वही मनुष्य है जिस को उस बुढ़ियाने बताया था फिर शाहज़ादे ने घोड़ेसे उतरके उस सिद्धको दण्डवत्कर आशीर्ब्बाद दिया कि हे पिता! ईश्वर तेरी आयु अधिककरे और सब तेरे मनोरथ सिद्धकरे सिद्धने उस शाहज़ादे को दण्डवत् का उत्तर दिया पर कुछ शाहज़ादेके समझमें न आया शाहज़ादेने मालूम किया कि मूछोंने इस सिद्धका मुँह ऐसाबन्दकर रक्खा है जिससे कुछ समझमें नहीं आता फिर शाहज़ादे ने घोड़ा दरख़्त में बांधकर मिक़राज़ निकाली और कहा हे सिद्ध! तुम्हारी मूछें इतनी बढ़गई हैं कि सारे मुँहको बन्दकररक्खाहै जो मरज़ीहो तो मैं तुम्हारी मूछें और भौंहें कतरडालूं कि उनके बढ़नेसे तुम्हारा

स्वरूप रीछके समान बनगया है कि मनुष्य नहीं मालूमहोते उस सिद्धने इशारेसे कहा बहुत अच्छा शाहज़ादे ने कैंचीसे उसकी मूछें और भौंहें कतरडालीं सो उसवृद्धका चेहरा जवानोंके मुखकीसदृश मालूमहोनेलगा शाहज़ादे ने कहा यदि मेरे पास शीशाहोता तो मैं तुमको तुम्हारा स्वरूप दिखाता कि तुम जवान मालूमहोतेहो और पहिले से अब तुम्हारा मनुष्यकासा स्वरूप मालूम होता है ऐसी स्वार्थकीबातों से वह सिद्ध मुस्कराया और कहा मैं तुम्हारीसेवासे प्रसन्नहुआ जो सेवा मुझसे होसके मैं करूं तुम्हारा क्याअर्थ है मुझ सेकहो तो मैं अपनी सामर्थ्यभर उसमें परिश्रमकरूं शाहज़ादेने कहा हे सिद्ध! मैं बहुतदूरसे बोलती चिड़िया और गानेवाले वृक्ष औरसुन-हले पानीकेलिये यहांआयाहूं और मुझेमालूम है कि यह तीनों चीजें निकटहैं परन्तु उसस्थानको नहीं जानता जो तुमजानते हो तो दया करके मुझे बतावो शाहज़ादेकी यह बातसुन सिद्धके मुखकारंगउड़ गया और नीचेआंखेंकरलीं और कुछभी उत्तर न दिया शाहज़ादेने फिर सिद्धसे कहा हे पिता! मैंने जो कुछ तुमसे कहा तुमने समझा या नहीं जो तुम इसहालको नहींजानते तो वैसाही मुझसे कहो कि मैं किसी और मनुष्यसे जाकर पूंछूं सिद्धने बहुतदेरके पीछे उत्तरदिया उस जगहको जिसे तुम ढूंढ़तेहो उसे मैंजानताहूं पर तुमने मेरीबहुत सेवाकीहै इसवास्ते तुमसे प्रीतिहोगई है इसलिये नहीं चाहता कि इस राह और स्थानको तुम्हें बताऊं शाहज़ादे ने कहा क्या कारण है कि तुम मुझसे उसस्थानको छिपातेहो सिद्धने कहा उस मार्ग में बहुतसे भयहैं सिवाय तुम्हारे और बहुत से मनुष्य इसजगहआये और मुझसे उसमकानकी राहपूंछी मैंने उसराहके बताने में बहुत ढीलकी पर उन्होंने मेरीबात न मानी निदान मैंने लाचारहोके उस रस्तेको बताया अब तुम निश्चयमानो कि वह सबकेसब उसीराह में मारेगये कोई मनुष्य जीताबचकर इधर न आया जो तुम को अपनी जान प्यारीहै तो मेरा उपदेश मानो और आगे मतजावो यहींसे अपनेघर फिरजावो शाहज़ादे ने कि अपने इरादेपर दृढ़ था उस सिद्ध से कहा तुमने अतिप्रीति से जो ये हितकारक उपदेश

किये मैंने उनकोसुना इसका मैं अतिगुण मानताहूं चाहे इसमार्गमें कितनेहीभयहों पर मैं अपने इरादेसे हटनहींसक्ता यदि मुझपर कोई चढ़भीआवेगा तो अपने शस्त्रों से जो मेरेपासहैं अपनी रक्षाकरूंगा और मुझे निश्चय है कि कोई मुझसे अधिक साहसी और पुरुषार्थी न होगा सिद्धने कहा तुम्हारे सामनेहोके उस मकानमें जानेके बाधक न होंगे किन्तु वह दिखाई न देंगे फिर तुम क्योंकर उनसे बच सकोगे शाहज़ादे ने कहा मुझे उनका भय नहीं तुम मुझे राह बतावो सिद्धने जब उसशाहज़ादेको इस इरादे में दृढ़पाया तो उसने अपनी थैलीमें हाथ डालकर एक गेंद निकाला और कहा खेदहै कि तुमने मेरे उपदेशको न माना अब मैं लाचारहूं इस गेंदकोलो और जबतुम सवारहो तो इसगेंदको अपने आगे डालदो वहलुढ़कताहुआ आगेको जावेगा तुमभी उसके पीछे जाना जब गेंद एकपहाड़के नीचे ठहर जावे तो तुम घोड़ेसे उतरना और घोड़ेकी गरदनपर बाग डाल कर छोड़देना वह घोड़ा वहांसे जबतक कि तुम फिर न आवोगे कहीं न जावेगा फिर तुम उसपहाड़पर चढ़ोगे तो अपने दाहिने बायें बड़े २ कालेपत्थर देखोगे और अपने चारों ओर बुरे २ शब्दसुनोगे जो तुमको कोप और भ्रम दिलावेंगे और तुम्हें पहाड़ के शिखरपर जाने न देंगे पर चैतन्यरहो तुमआवाज़ोंसे मतडरना और मुँहफेरके पीछे न देखना जो तुमडरोगे अथवा मुँहफेरके पीछेदेखोगे तो उसी समय कालेपत्थर बनजावोगे जो तुमको मार्गमें पहाड़ मिलेंगे वो सब मनुष्यथे वो सब तुम्हारी तरह उन्हीं तीनचीज़ोंके लेनेके लिगे गये और राहमें उनआवाज़ों से डरके काले पत्थरहोगये जब तुम कुशल पूर्व्वक पहाड़केसिरेपर पहुँचोगे तो वहांपर एकपिंजड़ा पाओगे जिस में बोलतीचिड़िया उसके भीतरबैठी बोलतीहोगी तुम उस चिड़ियासे पूछना कि गानेवालावृक्ष और सुनहलेरंगका पानी कहां है वह चिड़िया दोनोंचीजें तुमको बतावेगी फिर जब तुम उनतीनों चीज़ों को पावोगे तो फिर कुछभय न रहेगा फिरभी तुमसे कहताहूं कि अभी कुछनहीं भया मेराकहना मान के तुम इस उद्योगको छोड़दो और अपने घर चलेजाओ बहमनने सिद्धसे कहा अबतो मैं अपने प्रयो-

जनको सिद्धकिये बिना नहींफिरता अब मैं उसतरफ़को सिधारताहूं यह कहके शाहज़ादेने घोड़ेपरसवारहो उसगेंदको अपने आगे फेंक दिया वह गेंद जल्दी २ लुढ़कताहुआ आगेको चला शाहज़ादा उस के पीछे उसी गेंदकीतरफ़ देखताहुआ जाता जब वह गेंद उस पर्वतके नीचे जिसका उस सिद्धने बर्णनकियाथा पहुँचा तो ठहरगया शाह-ज़ादाभी उसीजगहपर जाकरउतरा और घोड़ेकी लगाम गरदनपर डालकर वहीं छोड़दिया और आप पहाड़पर चढ़ने लगा जहांतक उसकीदृष्टि उसपर्ब्बतपर पड़तीथी कालेपत्थर पड़ेहुये उसको दिखाई देतेथे अभीचारपांच क़दमऊपर चढ़ाथा कि वहां चहुँओरसे शोर जैसा कि सिद्धने कहाथा सुना पर शाहज़ादेने किसीको वहां न देखा कभी सुनताथा कि कौन ये अहमक़है किधरको जाताहै इसको नजाने दो और कभी वहांसे यह आवाज़ आतीथी कि इसको पकड़कर ठह-राओ और बधकरडालो और तीसरी ऐसे ज़ोर से आवाज़ आई कि जैसे बादलगरजताहै और उसमें कोई कहताहै हे चोर! हे खूनी! हे क़ा-तिल! और कभी यह आवाज़ धीरेसे उसके कानोंमें पहुँचती इसे कुछ न कहो इसमनुष्य कि अच्छाशिकारहै जानेदो यह वही मनुष्यहै जो पिंजड़े और चिड़ियाको लेआवेगा बहमन इनबातोंको सुनकर कुछ न डरा और पूर्ब्बत् बड़ेसाहस और दिलावरी से पहाड़पर चढ़ता गया परन्तु जबपास और चहुँओरसे आवाज़ें उसको पहुँचनेलगीं तो वह ऐसा भयभीतहुआ कि उसके पांव कांपने और थर्राने लगे और ठहर न सका सिद्धकी सबबातें मारेभयके भूलगया और मुखफेरके देखनेलगा उसके मुखफेरतेही कालापत्थर बनगया जबसे परीज़ा-दसे बहमन शाहज़ादा बिदाहुआथा तबसे वह उसछुरीको गिलाफ़ समेत अपनीकमरमें रखती और जब चाहती उसको निकालके शाहज़ादेका हाल मालूम करलेती और उसदिन के पहिले जिसमें कि शाहज़ादा पत्थरहोगया था कईबेर छुरीको देखा तो उसे साफ़ और उज्ज्वल पाया पर उस दिन परवेज़ शाहज़ादे ने परीज़ाद से कहा बहिन मुझेछुरीदो तोमैं उसमें अपने भाईका हालदेखूं परीज़ाद ने छुरी निकालकर परवेज़ के हाथमें दी जब परवेज़ ने उसको

मियानसे खींचकर देखा तो उस छुरीसे रक्तकी बूंदें टपकनेलगीं यह देखतेही उसने छुरीहाथसे फेंकदी और रोनेलगा जब परीज़ादको भी यह हाल मालूमहुआ तो रोके कहनेलगी बड़ाखेद है कि भय्या मेरेलिये तूने अपने प्राण दिये मुझ अभागिनने बोलती चिड़िया, गाते दरख़्त और सुनहले रंगके पानीका तुमसे क्यों बर्णन किया और क्यों मैंने उस बृद्धासे इसघरके अच्छे बुरे होनेका हाल पूंछा जिसके उत्तर में उसने इन बस्तुओं का बर्णन किया कदाचित् वह बुढ़िया न आती वह बड़ी मक्कार और दुष्टाथी मैंने उसका बड़ा सम्मान किया और उसने मेरेसाथ यह अपकार किया और तूने क्यों उन बस्तुओं का रास्ता उससे पूंछाथा जो वह चीजें अब मेरे हाथ भी लगें तो मेरेभाईके मरनेके पीछे किसकामकी हैं और उन्हें लेकर क्या करूंगी निदान शाहज़ादी उसकेगुण बर्णनकर बहुत रोई परवेज़भी अपनी बहिनके सदृश अतिखेद को प्राप्तहुआ फिर शाहज़ादी से कहा अब मुझे अवश्यहै कि मैं भी सफ़रकरूं कि मालूम हो कि मेराभाई अपने कालसे मुवा या किसीने उसको मारा मैं उसके मारनेवाले से जाकर बदलालूंगा परीज़ादने उसे बहुत समझाया कि तुम वहांका इरादा मतकरो और समझो कि इसराह में बड़े भयहैं ऐसा न हो कि दूसरा भाई भी मेरेहाथसे जावे परन्तु परवेज़ने उसका कहना न सुना और दूसरे दिन तय्यार होके अपनी बहिन से बिदा होकर चाहा कि सिधारूं परीज़ादने कहा मुझे छुरीके देखने से बहमन का बुराभला हाल मालूम होता था तुम्हारा हाल क्योंकर मालूमहोगा परवेज़ने एक मरवारीदकी माला उसे देकर कहा जब इसमालाके दाने अलग अलग देखना और देखना कि चलतेहैं तो जानना कि मैं जीताहूं और जब कि इसके दाने एकदूसरेसे चिपटजावें तो मालूम करना कि मैं जीता नहीं परीज़ादने उस मालाको लेकर अपनेगले में डाललिया और हररोज़ उसे देखकर परवेज़की कुशल का हाल मालूम करलेती निदान दूसरे दिन शाहज़ादा परवेज़ उस तरफ़ को सिधारा और बीस मंज़िलें लांघकर उसी सिद्ध से उसी जगहपर जहां बहमन ने भेंटकी थी मिला और उसको प्रणामकर

के पूंछा जो तुम्हें मालूमहो किस जगहपर बोलती चिड़िया और गाता दरख़्त और सुबर्णके रंगका जलहै वो क्योंकर मिलेंगे तो मुझ को बताओ सिद्धने वहांके सब ख़तरे उसे बताकर कहा एक मनुष्य तुम्हारीही शकल और आयुका थोड़े दिनहुये हैं कि उसने मुझसे इसी बातका प्रश्न किया था मैंने उसे बहुत समझाया पर उसने न माना अन्तको मेरे बतानेसे वह उन्हीं तीनों चीज़ोंके तलाश करने को गया फिर वहांसे न लौटा मालूम हुआ कि वह भी औरोंके सदृश जो इन्हीं चीज़ों के ढूंढ़ने के लिये गयेथे मरगया परवेज़ने कहा मैं उस मनुष्य को जिसका तुमने बर्णन किया खूबजानताहूं वह मेरा भाई था मुझे निश्चय हुआ कि वह मारागया पर यह मालूम नहीं कि क्योंकर मारागया सिद्धने कहा इसहाल को मैं तुमसे खूब बर्णन करसक्ता हूं वह औरोंके सदृश पत्थर बनगया जो तुम मेरा उपदेश न सुनोगे तो तुमभी वैसेही बनजाओगे अब उत्तम है कि तुम इस इरादेको छोड़दो परवेज़ने कहा जो कुछ तुम मेरीभलाई के वास्ते कहतेहो उसे मैं गुणमानता हूं पर आशा रखताहूं कि मुझे उसका रास्ता बताओ मेरा इस बिषय में ऐसा इरादानहीं कि इस से हटजाऊं सिद्धने कहा जो तुम मेरी बात नहीं मानते तोमैं लाचार हूं और बृद्धावस्था के ब्यापनेसे मैं तुम्हारे साथ राहबताने को नहीं जासक्ता इसलिये मैं तुमको एकगेंद देताहूं वह तुमको रास्ताबतावेगा जब परवेज़ सवार हुआ तो सिद्धने अपनी झोली से गेंद निकाल कर उसको दिया और उससे कहा तुम उन शब्दों से जो पहाड़पर सुनोगे और आवाज़ करनेवाले न देखोगे तो डरना नहीं और पहाड़पर चढ़े चलेजाना बोलनेवाली चिड़िया और गानेवालाबृक्ष और सोनेके रंगका जल तेरेहाथ लगेगा इतनाकह उस सिद्धने शाहज़ादेको बिदाकिया शाहज़ादेने घोड़ेपर सवारहो गेंदको अपने आगेडालदिया और घोड़ेको ऐंड़मार उसगेंदके पीछेचला जब वह पहाड़के नीचे पहुँचा और गेंदभी ठहरगया तो वहभी घोड़ेसे उतरकर ठहरगया और उन बातों को जो सिद्धसे सुनीथीं एक एक अपने दिल में जमाईं फिर बड़ेसाहस से पर्ब्बतके शिखर पर जाने

का इरादा किया और उसपर चढ़ने लगा पांच छः पग न गया होगा कि अकस्मात् मनुष्यकाशब्द पाससे सुना जो उसको डराता और दुर्बाद देता है कि हे भाग्यहीन! आपत्तिके मारे खड़ा होजा कि मैं तुझे इसढिठाई का दण्ड दूं जब परवेज़ने बुरीगाली सुनी तो मारे लज्जा के क्रोधमें आगया और सिद्धकी सबबातें भूलकर एकही बेर मियानसे तलवार निकाल पीछेफिरा कि उस मनुष्यको जो गाली देताहै मारें पर उसने वहां किसीको न देखा और साथही शाहज़ादा और उसकाघोड़ा कालेपत्थर बनगये परीज़ाद परवेज़ के जानेके उपरान्त हरवक्त मोतियोंकी मालाको देखा करतीथी और उसके मोती गिना करती और रात्रिको वह माला गले में डालकर सोजाती निदान उस बुरे दिनको जिसमें परवेज़ अपने भाई के सदृशपत्थर बनगया था मालाको देखा तो उसके मोती एक दूसरे से ऐसे मिले चिपटे पाये कि किसीतरह एक दूसरे से अलग न हुये इससे परीज़ादको निश्चय हुआ कि परवेज़ शाहज़ादे के भी प्राणगये उसने अपने मनमें कहा कि ऐसे दोनों प्यारे भाइयों के मारेजानेके उपरान्त मेराजीना बृथाहै अब जोहो सोहो अब तू भी यहांसे चलदे फिर दूसरे दिन मरदाने कपड़े पहिनकर नौकरों चाकरों से कहा मैं थोड़ेदिनों के लिये किसी ओर को जातीहूं तुम मकान और असबाबकी ख़बरदारी करना फिर शस्त्रबांध घोड़ेपर सवारहोके अकेली उसीओर को चली शाहज़ादी घोड़ेपर खूब सवार होतीथी और शिकारभी खूबकरसक्तीथी इसलिये मार्ग के कष्ट उसे कुछ मालूम न हुये जब शाहज़ादी उस रास्तेको लांघ-कर उस सिद्धके पास पहुँची तो घोड़े से उतर उसके पास जाबैठी और उससे पूंछा कि यहां इधर उधर कौन ऐसीजगह है जिस में बोलती चिड़िया और गानेवाला वृक्ष और स्वर्णके रंगका जल है दयाकर मुझे बतादीजिये सिद्धने कहा तुम्हारे शब्दसे मालूम होताहै कि तुमस्त्रीहो मैं उसजगहको जहां वह तीनोंचीजें हैं खूब जानताहूं तुम क्यों पूंछती हो परीज़ाद ने कहा मैंने तीनों चीज़ों का बिचित्र वृत्तान्तसुना है मैं चाहती हूं कि उनको अपने घरमें लेजा-

कररक्खूं सिद्धने कहा बास्तव में वह ऐसेही बिचित्र और अपूर्व्व बस्तुहैं और तुम्हारे पासरहनेके लायक हैं परन्तु तुम्हेंमालूम नहीं कि उन चीज़ोंके प्राप्तकरने में कैसे २ भयहैं तुम्हारेवास्ते यही उत्तम है कि तुम उनका बिचार मतकरो और यहीं से अपने घर लौटजावो परीज़ाद् ने कहा हे पिता ! मैं बहुत दूरसे आई हूं मैं अपने मनोरथ के सिद्धकरे बिना नहींजासक्ती अबतुम वहांके डर मुझे बताओ कि कहां से वो आरम्भ होते हैं और वो किसतरह के हैं उनको सुनकर सोचूं कि मैं उनको सह सकूंगी वा नहीं उस सिद्धने वहांके डरावने हाल जैसे कि बहमन और परवेज़से कहेथे इससे भी कहे और कहा कि वह सबख़तरे पर्वतके आरम्भ से शिखरतक रहते हैं पहिले बोल-नेवाली चिड़िया मिलैगी और चिड़िया के बताने से गानेवाला दरख़्त और सोनेके रंगका पानी भी प्राप्त होगा उस पर्व्वत के चढ़ने में बड़े भयानक शब्द सुन पड़ेंगे और चारों ओर जितने काले पत्थर देखोगी वो सब मनुष्य थे बड़े साहस से इसी मतलब के लिये वहां गये और मार्ग में भय खाकर पत्थर बनगये हाल उस का यहहै जब उन भयानक और दुर्व्वादों को सुनकर क्रोधमें आया और डरकर मुखफेर अपने पीछे देखने लगा तो मुँहफेरने के सा-थही वह और उसका घोड़ा पत्थर बनजाताहै जब वह सिद्ध इस हालको बिस्तारपूर्व्वक बर्णन करचुका तो परीज़ाद ने कहा मुझे खूब मालूम हुआ कि वह आवाज़ें केवल डराने और धमकाने के वास्ते हैं इनके बिशेष और कोई भयनहीं कि कोई मनुष्य सामने होकर उस पर्व्वतपर चढ़ने से रोके हे सिद्ध ! यद्यपि मैं स्त्रीहूं परन्तु मैं ऐसी दिलेर और बे भटक हूं कि सब बातों को सहलूंगी न तो आवाज़ों को सुनकर क्रोधकरूंगी और न मुझको भयहोगा इसके सिवाय मैं ऐसा उपाय करूंगी कि वह आवाज़ें मुझे कुछभी सुनाई न देंगी मैं अपने कानों में खूबसी रुई भरलूंगी सिद्धने कहा बीबी मुझे मालूम होताहै कि वो चीज़ें तेरेही भाग्यमें हैं क्योंकि किसीको आजतक यह उपाय न सूझा पर ध्यानरख उन भयानक आवाज़ों से न डरना परीज़ादने कहा ऐसाही होगा मेरा मन साक्षी देता

है कि मेरामनोरथ अवश्य सिद्धहोगा तुम दयाकरके उस मार्ग को बताओ सिद्धने फिर उसे समझाया कि अपने घरको लौट जाओ पर परीज़ादने कुछ न माना जब सिद्ध समझा कि शाहज़ादी अपने उद्योग पर दृढ़ है तब उसे एक गेंद अपनी झोली से निकाल कर दिया और कहा इसको अपने आगे लुढ़का देना और उसके पीछे चलीजाना जब वह गेंद पहाड़के नीचे पहुँचकर ठहरजावे तुम घोड़े से उतर पहाड़पर चढ़ना शाहज़ादी गेंदलेकर घोड़े पर सवार हुई और जिसतरह सिद्धने कहाथा अपने आगे गेंदको फेंककर उसके पीछे घोड़ेको तेज़किया निदान वह गेंद पर्ब्बतके नीचे पहुँचकर ठहरगया शाहज़ादी क्षणमात्र वहां ठहर अपने कानों को रुई से खूब बन्दकर पहाड़पर चढ़नेलगी जब कईपग ऊपर गई तो चारों तरफ़से आवाज़ें आनेलगीं परन्तु रुई के सबब से जो कानों में भरी हुईथी आवाज़ें न सुनाई दीं फिर भयानक शब्दहुये इस से भी उसे खबर न हुई फिर वो गाली जो स्त्रियों के लियेहैं उसको सुनाई देनेलगीं शाहज़ादीने उन्हें थोड़ा बहुत सुनकर हंसदिया और कुछ बुरा न माना और मन में कहा इन दुर्वादों और बुरीबातों से क्या मैं अपने मतलबसे न हटूंगी इस बकने से क्या होताहै निदान शाहज़ादी ऐसे भयानक स्थानसे जहां रुस्तम आदि योद्धाओं का ज़हरपानी होता था बड़े साहस से लांघकर शिखरपर चालाकी से पहुँची वहां उसने एक पिंजड़ा रक्खाहुआ देखा जहां एक चिड़िया अति मनोहर बाणी से बोल रही थी पर शाहज़ादी को देखकर अपने छोटे डीलके होनेपरभी बादल के समान गरजनेलगी और कहनेलगी पीछेको फिर जा मेरेपास न आ शाहज़ादी उसकी यह बात सुन हिम्मत बांध वहांसे दौड़ शिखर पर चढ़गई वहां पृथ्वी बराबर पाई और जल्दी जाकर उस पिंजड़े पर अपना हाथ रख दिया और कहा अब मैंने तुझको पाया कभी तू मेरे हाथसे न छूटेगी फिर शाहज़ादी ने अपने कानोंसे रुई निकाललीं और उस चिड़ियासे उत्तरसुना हे अतिसाहसवान् बीबी! धैर्य्यरख अब मुझसे तुझे कुछ कष्ट न होगा जैसा कि और लोगोंको पहुँचा यद्यपि मैं इस

पिंजड़े में बंदहूं पर मुझे बहुतसे छिपेहुये अहवाल मालूमहैं अबसे मैं तुम्हारी लौंड़ीहुई और तुम मेरी स्वामिनी मुझे तुम्हाराहाल खूब मालूम है और तुमनहीं जानतीं एकदिन मैं तुम्हारे काम आऊंगी अब जो कुछ आज्ञादो तो मैं उसे करूं इनबातों को चिड़ियासे सुन कर शाहज़ादी अतिप्रसन्नहुई परन्तु साथही अपने भाइयोंको याद करके बहुत रंजकिया और उस चिड़ियासे कहा मैं बहुतसी बातोंकी इच्छा रखतीहूं सबके पहिले मेरा यह प्रश्नहै कि यहांकहीं सोनेकेरंग का पानी है जिसके अतिविचित्रगुण मैंने सुनेहैं यदि तुझे मालूमहो तो मुझे बता उस चिड़ियाने वह जगह जिसमें वह पानीथा बताया तथाच वह वहां जाकर एक चांदीकी ठिलिया जो अपने साथ लेगई थी उसजलसे भरलाई फिर उस चिड़ियासे कहा मैं गानेवाले वृक्षको भी ढूंढ़तीहूं मुझेबता वह कहांहै चिड़ियाने कहा तुम्हारी पीठके पीछे एक जंगल है जिसमें तुम उसबृक्षको पावोगी और वह जंगल बहुत दूर नहींहै परीज़ाद उस जंगलमें गई वहांजाकर उसदरख़्तसे बहुत अच्छा गाना सुना वह दरख़्त बहुत ऊंचा था फिर उस चिड़िया से कहा मैंने उस दरख़्त को तो पाया पर उसको उखाड़कर नहीं ला सक्की चिड़िया ने कहा तुम एक छोटीसी टहनी उसकी तोड़कर ले आवो और अपने बाग़ में लेजाकर लगादो वह शाख तुम्हारे लगातेही तुरन्तही जड़ पकड़ के लगजावेगी और अति सुन्दर बृक्ष जैसा कि तुम इसजंगल में देखतीहो होजावेगा सो शाहज़ादी एक टहनी तोड़लाई इनतीनों बस्तुओं के प्राप्तहोने से अतिप्रसन्न हुई फिर उस चिड़िया से कहा यह मतलब तो पूराहोगया परन्तु दोभाई मेरे यहां इसी अर्थके लिये आये और अब वहकाले पत्थरहोके यहां पड़ेहैं चाहतीहूं जो वहभी जीजावें तो अपने साथ घरलेजाऊं अब कोई ऐसा उपाय बता कि जिससे मेरी यह इच्छा भी सिद्धहो चिड़ियाने कहा तू ठिलिया से थोड़ासा सोने का पानी लेकर उन सब काले पत्थरों पर जो इधर उधर पर्वतपर पड़े हैं छिड़कदो सब इस जलके प्रभावसे जी उठेंगे उन सबके साथ तुम्हारे दोनों भाईभी जी उठेंगे फिर वह शाहज़ादी चिड़ियासे इसबातको सुनकर प्रसन्न हुई

चित्र बहमन परवेज़ और परीज़ाद का गानेवाले दरख़्त की शाख़ बुलबुल के पिंजड़े और सुनहरे रंग के घड़े और शाहज़ादों समेत. ।।



आर वहां उन तीनों चीजों को लेकर पत्थरों के निकटआई उसने उस चांदीकी ठिलिया से थोड़ासा पानी लेकर ज़रा ज़रा सब पत्थरों पर छिड़का छिड़कतेही वे सब पत्थर जिनमें उसके दोनों भाई भी थे घोड़ों समेत जीकर उठ खड़ेहुये शाहज़ादी ने अपने भाइयों को पहिंचानकर उनके गले लगी और आश्चर्य्यमें होके उनसे कहा तुम यहां क्याकरते थे उन्होंने कहा हम यहां सोते थे परीज़ादने कहा तुमको मेरे बिना सोना अच्छा मालूम हुआ और तुम्हें याद नहीं कि तुम बोलती चिड़िया और गानेवाले बृक्ष और सुनहले पानी के लाने को यहां आये थे और तुमने इस जगह पर कालेपत्थर देखे थे अब तो देखो कोई उनमें से यहां बाक़ी है ये आदमी जो तुम्हारे चहुँओर खड़े हैं तुम्हारे घोड़ोंसमेत पत्थर बनगये थे अब वे जीके तुम्हारी राह देखते हैं जो तुम पूंछाचाहो कि किस करामात से तुम जीगये तो मैं तुमसे कहतीहूं मैंने इस ठिलिया से पानी लेकर सब पर छिड़का उसके प्रभावसे सब जीगये इसपिंजड़े, बोलती चिड़िया और गानेवाले बृक्ष को जिनकी टहनी मेरे हाथमें हैं और सुनहले रंग के पानी को प्राप्तकरके यह चाहा कि वे तुम्हारे यह तीनों चीज़ लेकर घरमें न जावें इसलिये मैंने इसचिड़िया से पूंछा कि क्योंकर मेरेभाई जीवेंगे कि मैं उनको घरमें लेजाऊं उसने कहा इस पानी के छिड़कने से जीजावेंगे मैंने थोड़ा थोड़ा पानी सबपर छिड़का इसबात के करतेही वे सब जीगये यह सुनकर बहमन और परवेज़ अपनी बहिन की अति प्रशंसा और गुण वर्णन करनेलगे और इसीभांति सब लोग शाहज़ादी को आशीर्ब्बाद देनेलगे और हरएक कहता बीबी हम तुम्हारे दास हैं जन्मभर तुम्हारे अहसानमन्द रहेंगे अब जो आज्ञा हो उसको प्रतिपालन करें परीज़ादने कहा मुझको अपने भाई के जिलाने का प्रयोजन था इसमें तुमको भी लाभहुआ मैं तुम्हारी कृतज्ञता से अतिप्रसन्न हुई अब तुम अपने अपने घोड़ों पर सवारहोके जिधर से आयेथे उधरको चलेजावो परीज़ादने उन सबको बिदाकरके अपने घोड़ेपर सवारहोने का इरादा किया बहमन ने उसके पहिले सवारहोके कहा जो आज्ञा हो तो मैं इस पिंजड़े

को उठाकर तुम्हारे आगे आगे चलूं परीज़ाद ने कहा यह चिड़िया मेरी लौंड़ी है मैं इस को आपही लेचलूंगी जो तुम्हारी खुशी हो तो तुम गानेवाले बृक्षकी शाख लेचलो और जबतक मैं घोड़े की पीठपर सवारहूं तुम इस पिंजड़ेको थाँभो फिर जब वह सवारहुई पिंजड़ेको अपने आगे जीनपर रखलिया और परवेज़से कहा कि तुम उस ठिलिया को कि जिसमें सोनेके रंगका पानी है सावधानी से उठा लेचलो परवेज़ ने उसको उठालिया फिर जब और लोगभी जो परीज़ाद के पानी छिड़कने से ज़िन्दा होगये थे घोड़ोंपर सवार होकर तय्यारहुये तब परीज़ादने ठहरके कहा कि भाइयो जो मनुष्य तुम में से श्रेष्ठहो वह आगेचले सबोंने कहा हे सुन्दरी! हममें से कोई इस योग्य नहीं जो तुम्हारे आगे चले जब परीज़ाद ने देखा कि कोई मनुष्य उनमें से आगे चलने का इरादा नहीं रखता और चाहते हैं कि मैंही सबके आगे चलूं तब उसने इन्कार करके कहा भाइयो मेरी किसीतरह से आगे चलनेकी पदवी नहीं पर जो तुम सब आज्ञा देतेहो इस से लाचारहूं यह कहके वह आगे चली और उसके पीछे दोनों शाहज़ादे और उनके पीछे सम्पूर्ण मनुष्य होलिये फिर उन सब लोगोंने कहा कि उस सिद्ध को देखते और उसके राहबताने का गुण मानते पर उन्होंने उस सिद्धको उस जगहपर जहां वह रहता था जीता न पाया और न मालूमहुआ कि वह कितनी बड़ी आयु के प्राप्तहोनेसे मुवा या इसवास्ते कि वह इनचीज़ों के राहबतानेवाला था और अब शाहज़ादी ने उनको पाया इसलिये मरगया सो वह समूह वहां से सिधारा मार्गान्तर में जिस मनुष्यके देश और देशके मार्गपर ठहरते वह परीज़ाद और शाहज़ादी से बिदाहोकर उधर को चलाजाता यहां तक तीनों बहिन भाई अकेले रहगये और मंजिलें लांघकर अपने घर पहुँचे परीज़ाद ने वहां जाकर उस चिड़िया का पिंजड़ा बाग़में उसतरफ़ जो बारहदरी के पासथा लटका दिया उस चिड़िया के बोलतेही बहुतसी चिड़ियाँ जैसे कि बुलबुल, हज़ारदास्तां, अगन, पिद्दा, तोता आदि मनोहर बाणी बोलनेवाले उसकी आवाज सुनने को दूर दूर से आकर इकट्ठेहुये इसके उप-

रान्त उसने गानेवाले वृक्षकी डाली उसी बाग़ में एक जगह पर जो उस बारहदरी के पासथी लगादी वह डाली तुरन्तही जड़ पकड़ के हरीहोगई और जल्दीसे बढ़के एक बहुत ऊंचा दरख़्त होगई और उसके पत्तोंसे गानेकी आवाज़ उस बड़ेवृक्षके सदृश जिसकी यहडाली थी आनेलगी फिर शाहज़ादीने संगमरमरका एक अतिउत्तम हौज़ बनवाकर चमन में रक्खा और उस में सोनेके रंगका पानीभरा वह तुरन्त बढ़नेलगा यहांतक कि वह बर्तन भरगया और एक फ़व्वारा उबलकर बीसफुटतक ऊंचे होकर छूटनेलगा और वह पानी ऊपर से उसी बर्तनमें गिरता और किसी तरफ़को न बहता उन विचित्र वस्तुओंका वृत्तान्त तीनही दिन में मशहूर होगया उस शहर के रहनेवाले उस बाग़ और घरमें आते जिनका दरवाज़ा सदा खुला रहताथा जाके तमाशा और सैरदेखते और अतिप्रसन्न और आश्चर्य्य में होते कितने दिनों के उपरान्त जब उन तीनोंभाई बहिनों की सफ़र की मांदगीगई तो बहमन और परवेज़ पूर्ववत् शिकार खेलने को जानेलगे तथाच एकदिन दोनों शाहज़ादे शिकारखेलने को कोसभर के फ़ासले पर गये इतने में फ़ारसका बादशाह भी संयोग से उसी जगह पर शिकार खेलने को आया शाहज़ादों ने सवारोंकी भीड़देखकर चाहा कि अपनेको बादशाहकी दृष्टिसे बचा घरको फिरजावें इस इरादे से उन्होंने शिकार को छोड़कर घरकी राहली संयोग से वह उस मार्ग्ग से चले जिधर से बादशाह की सवारी आतीथी उन्होंने कितनाही चाहा कि इस राहसे फिरके और तरफ़कोजावें पर राह तंग होनेसे न फिरे और बादशाह के सामने होगये लाचारहो घोड़ों से उतर बादशाह को दण्डवत् की और देरतक पृथ्वी पर झुके रहे बादशाह उन के घोड़े और वस्त्र सब अच्छेदेख समझा शायद मेरे नौकर होंगे और उनकी सूरत देखने की लालसाकी और वहां ठहरगया और उन को उठने की आज्ञा दी वह दोनों शाहज़ादे उठकर बादशाह के आगे दृष्टि नीचे किये खड़े होगये बादशाह उन के रूप अनूपको देख आश्चर्य्य में हुआ और देरतक उन को देखा किया फिर उनका नाम पूंछा और कहा

तुम कहां रहते हो बहमन शाहज़ादे ने उत्तर दिया कि हुज़ूर हम दोनों आपके बागों के रक्षक जो स्वर्गबासीहुआ उसके पुत्रहैं उसने अपने जीतेजी शहर के बाहर एक नयामकान तय्यार कियाथा कि हम उस में रहें और बड़े होकर हुज़ूर की सेवा के योग्यहों बादशाहने कहा कि तुम शिकार खेलने के वास्ते क्यों आया करतेहो शिकार खेलना तो बादशाहों का धर्म्म है न प्रजा और नौकरों का बहमन ने बिनयकी कि हे बादशाह! हम कम उमर के होने से राजनीति नहीं जानते बादशाह इस उत्तर से अतिप्रसन्न हुआ और कहा कि मैं तुम्हारा शिकार खेलना देखना चाहता हूं तुम चाहो जिसतरह शिकारखेलो फिर वह दोनों शाहज़ादे अपने अपने घोड़ों पर सवारहोकर बादशाह के साथहुये जब जंगल में गये तो बहमन ने शेरको और परवेज़ने रीछ को अतिबीरता और चालाकी के साथ बरछीसेमारा और बादशाह के सम्मुख रक्खा थोड़ी देरके उपरान्त फिर बन में जाके बहमन ने रीछ और परवेज़ ने शेरका अहेर किया और उन को बादशाह के सामनेलाये फिर उन्हों ने शिकार का इरादा किया पर बादशाह ने उनको मनाकिया और बुलवाके कहा तुम अब क्या मेरे सब शिकारी जानवरों को मार डालोगे मुझे केवल तुम्हारी दिलावरी की परीक्षा लेनी थी बादशाह उनकी बीरता और साहस से अतिप्रसन्न हुआ और कहा कि तुम दोनों मेरे साथ चलके भोजन करो बहमन ने कहा कि हुज़ूर ने हमारा अतिसत्कार किया आज हम नहीं चलसक्के और दिन जो आज्ञा होगी प्रतिपालन कीजावेगी बादशाह ने इन्कार करने से अतिआश्चर्य्य में होकर पूंछा इसका क्या कारण है बहमन ने बिनयकी हमारी एकछोटी बहिन है हमतीनों बहिन भाइयों से अति प्रीति है इससे सलाहके बिना कहीं नहीं जाते और वह भी हम से बे पूंछे कोई काम नहीं करती बादशाह ने कहा हम तुम्हारी प्रीति को सुनकर अतिप्रसन्नहुये अच्छा आज तुम अपने घरजावो और अपनी बहिन से सलाह करके कल तुम इसी जगहपर शिकार खेलने को आवो और मुझसे इस बात का उत्तर कहना वह दोनों

शाहज़ादे बादशाह से बिदाहोकर अपने घर आये पर बहिन से पूंछना और बादशाह से भेंटहोने का हाल कहना भूलगये दूसरेदिन जब शिकारमें गये तो शिकारसे लौटने के वक्त बादशाह ने पूंछा क्यों तुमने अपनी बहिन से मेरेसाथ जाने का सम्मत पूंछाथा और उसने तुमसे तुम्हारे जाने को कहा वा नहीं वह दोनों शाहज़ादे डरगये और उनके मुखका रंग बदलगया और एक दूसरे की तरफ़ देखने लगा अन्त को बहमन ने कहा कि स्वामी हमदोनों भूलगये किसीने हममें से इसबात को न कहा बादशाहने कहा आज पूंछना और कल मुझसे आकर कहना संयोग से उस दिन भी वह दोनों भाई अपनी बहिन से पूंछना भूलगये तीसरेदिन भी बादशाह उनके भूलजाने पर कुछ अप्रसन्न न हुआ और सोने के तीनगेंद बादशाहने अपनी जेब से निकाल एक कपड़े में बांध बहमन को दिये और कहा कि तुम इनको अपनी कमरमें रखना इनसे अब तुम मेरीबात न भूलो-गे कदाचित् जो तुम्हें यादभी न रहेगी तो जब तुम अपनी कमर खोलोगे तो यह तीनोंगेंद तुम्हारी कमर से पृथ्वीपर गिरपड़ेंगे उनकी आवाज़ से तुमको यह बात याद पड़जावेगी इस ताकीद के करनेपर भी उस दिन भी वह दोनों शाहज़ादे अपने घरमें जाकर उस बात को भूलगये पर शाहज़ादा बहमन जब कपड़े उतारकर आराम के लिये जानेलगा तब वह तीनोंगेंद उसकी कमर से धरतीपर गिरपड़े उनकी आवाज़ से उसको बादशाह की बात याद आगई सो वह दो-नों शाहज़ादे परीज़ाद के मकान में गये अभी उसने आराम न कियाथा उससे सम्मत पूंछा परीज़ाद ने भाइयों की भूलपर कि तीन दिनतक बादशाह की बात भूलगये थे अति पश्चात्ताप किया और कहा यह तुम्हारा बड़ाभाग्य था कि तुमको इसतरह से बादशाह से भेंटहोगई इस बातसे तुमको बड़ालाभ होगा पर मुझे बड़ा खेद हुआ कि तुमने बादशाह की आज्ञाको न माना किन्तु तुम सोचो तो तुमको मुझसे अधिक रंजहुआ होगा तुमने बड़ी ढिठाई की बाद-शाह की आज्ञा न मानकर उसके घरतक न गये अब मैं इस बातको बोलती चिड़ियासे पूंछती हूँ देखूं वह क्याकहती है जो कुछ वह कहे

उसको करना जब परीज़ाद ने बोलती चिड़िया को उतारकर अपने पासरक्खा तो पूछनेलगी हे चिड़िया! तुझको गुप्तभेद मालूम है और तेरी अतितीव्र बुद्धि है एक बात मैं तुझसे पूछतीहूं किसंयोग से मेरे दोनों भाइयों की बादशाह से भेंट होगई बादशाह उनपर अतिदयावान् है किन्तु उसको इच्छा है कि उनको अपना मेहमान बनाये निदान सब बीताहुआ हाल शाहज़ादी ने बर्णन किया और कहा अब तेरी क्या सलाह है चिड़िया ने कहा हे स्वामिनी! शाहज़ादों को बादशाह की आज्ञा अवश्य माननी चाहिये क्योंकि वह इस समयका अधिपति है उनके मेहमान बनने में कुछ हानि नहीं रुचिपूर्व्वक बादशाह के महलमें पधारें किन्तु शाहज़ादों को उचित है कि बादशाह के निमंत्रण के लिये बड़ी धूमधाम के साथ सामान तय्यार करें और अपने घर बुलावें जिस से कि परस्पर प्रीति हो परीज़ाद ने कहा हे चिड़िया! मैं प्रीति से नहीं चाहती कि शाहज़ादे एक घड़ीभर भी मेरी दृष्टि की ओट हों उस चिड़िया ने कहा यह बात सचहै पर उनको वहां जाने में कुछ डर नहीं परीज़ाद ने कहा बहुत अच्छा पर यह बता जब बादशाह इस घर में आवें तो मुझ को अवश्य बादशाह के सामने निकलना पड़ेगा कदाचित् मैं सामने न आऊं तो नाहक़ को बादशाह अप्रसन्न होगा क्योंकि बादशाह अपनी प्रजा को सन्तान के समान समझता है और प्रजा उस को अपने पिता के समान जानती है जब प्रभात हुआ तो दोनों शाहज़ादे शिकार में पहुँचे इतने में बादशाह भी वहां आनपहुँचे और बहमनसे पूछा तुम्हारी बहिनने हमारे प्रश्नका क्या उत्तरदिया आज भी कलकी तरह भूलगये बहमन ने आगे बढ़कर बिनयकी हे शाहन्शाह! हम आपके आज्ञापालक हैं हमारी छोटी बहिन ने भी हमको आज्ञादेदी है किन्तु उसने बहुत से दुर्ब्बाद कहे कि क्यों तुमने बादशाहकी आज्ञा न मानी बादशाह ने यह बचन सुनकर कहा मैं तुम से किसीतरह से अप्रसन्न नहीं किन्तु मनसे प्रसन्नहूं निदान वह दोनों शाहज़ादे अपने ऊपर बादशाहकी ऐसी प्रसन्नता पाकर लज्जित होगये इधर बादशाह शिकार खेलनेलगा जब थोड़ीदेर के उपरान्त

बादशाहने उनशाहज़ादोंको अपनेसाथ अहेरखेलते न देखा तो पास
बुलवाकर बहुतसा धैर्य्यदिया और तुरन्तही अपनेमहलको सिधारा
वह दोनों शाहज़ादेभी बादशाहके साथथे निदान बादशाह उनको
अतिप्रीति से अपने साथ महलमें लेचला और उनकी अतिप्रतिष्ठा
की बादशाहके सबनौकर यहदशादेख डाहकी अग्निसे भस्महोगये
और नगरके रहनेवाले भी उनकी इतनी प्रतिष्ठा देखकर आश्चर्य
में थे और आपस में कहते थे ये दोनों मनुष्य कौन हैं कि जिनकी
बादशाह इतनी प्रतिष्ठा करताहै हमलोग इनको नहीं जानते किंतु
उनकी प्यारी २ सूरत देखकर कहते हैं कि ऐसे सुन्दर शाहज़ादे
उसी मलकाके उदरसे जो बादशाहके कोषमें है उत्पन्नहोते तो इतने
ही बड़ेहोते जब बादशाह शाहज़ादों सहित अपने महलमें आया
तो भोजनका समय होगया दासों ने दिव्य थालियांआदि पात्र बि-
छाय अनेक प्रकारके भोजन परसे जब बादशाह भोजनपर बैठा तो
उनदोनों शाहज़ादोंको भी बैठनेका इशारहकिया बहमन और पर-
वेज़ कि बादशाह से बर्तावकी रीति को न जानते थे प्रणामकरके
भोजनपर बैठगये और बादशाहकेसाथ भोजन किया बादशाह की
इच्छाहुई कि इनकी बुद्धि और बाचालता की परीक्षालें सो बाद-
शाह हरएक बातको उनसे छेड़कर पूंछता वह दोनों शाहज़ादे कि
सम्पूर्ण विद्या और हुनरोंको खूबसीखेहुये थे उन्होंने सबके यथार्थ
उत्तर दिये जिससे बादशाह अतिप्रसन्न होगया और अपने मन
में शोचनेलगा कदाचित् ऐसे दोपुत्र ईश्वर मुझको देता तो बहुत
अच्छाहोता और उनकी अतिप्रीति होगई और देरतक भोजन
पर बैठकर उनकी बातें सुनतारहा जब सुचित्त हुआ तो बादशाह
उन दोनों भाइयों को अपने साथ लियेहुये अपने केलिगृह में ले-
गया और उसका जी उनके मीठे वचनोंसे न भरा देरतक बोलता
रहा अन्त को अतिप्रशंसा करनेलगा फिर बादशाहने गानेबजाने
की आज्ञादी सो गाने बजानेवाले अपना २ साज़ और सामान
लेकर आये और नाचरंग होने लगा तहां अतिसुन्दर चन्द्रमुखी
स्त्रियों ने ताल और स्वरके साथ खूबगाया और नक़ालोंने नक़लें

कीं जिससे दोनों शाहज़ादे अतिप्रसन्न होगये निदान सारा दिन बड़े आनन्द मंगलमें बीता इतने में संध्याहोगई बहमन और परवेज़ दोनों शाहज़ादे बादशाह से बिदाहोकर अपने घरको सिधारे परन्तु बादशाह ने उनको बिदाहोते वक्त कहा कि कल तुम नियमित समयपर शिकार को आना मैं तुम को फिर अपने महल में लाऊंगा किंतु मेरी इच्छा है कि तुम बहुधा हमारे सम्मुख रहाकरो शाहज़ादों ने कहा हमारे मनकी यह इच्छाहै कि जब हुज़ूर शिकार के लिये मैदान में सुशोभित हों और जब शिकार खेलकर सु चित्त होजावें तब हमारी कुटी में बिराजमानहों यह बात हमारी प्रतिष्ठा का हेतुहै बादशाहने कि उनसे अतिप्रसन्न था उत्तरदिया कि मुझे तुम्हारी इच्छा हरहालत में स्वीकार है हम अवश्य तुम्हारे घरमें चलेंगे और तुम्हारी बहिन कि जिसकी बाचालता और बुद्धि तुम्हारी बोलने से प्रकटहै मेहमानबनेंगे प्रभातको हम तुम्हें मिलेंगे जहां आज मिले थे जब दोनों शाहज़ादे घर पहुँचे तो साराहाल शाही महलका अपनी बहिनसे बर्णनकर कहा कि हे परीज़ाद! बादशाहने कल शिकारसे लौटकर हमारेघरमें आनेकी प्रतिज्ञाकीहै और आज हमारी बड़ी प्रतिष्ठा की इसलिये हमारी इच्छाहै कि हमभी बादशाह की प्रतिज्ञा के अनुसार सामान तय्यारकरें परीज़ादने कहा भाइयो वास्तवमें तुम बड़ेहौसलेवरहो ज़रा ठहरजावो मैं इसविषयमें बोलती चिड़िया से सम्मत पूंछूं उसकी सलाह के अनुसार काम करूंगी सो. परीज़ाद ने उस चिड़िया का पिंजड़ा उठाकर अपने सामने रक्खा और पिछला सारा हाल बर्णन किया कि बादशाह हमारे घर में सुशोभित होंगे इसमें क्या सलाह है और कौन कौन खाने बनवाये जावें चाहो वह छोटीसी चिड़िया थी परन्तु बुद्धि उसकी अपूर्ब्बथी कहने लगी हे स्वामिनी! बड़े भाग्यकी बातहै कि बादशाह तुम्हारे घर में आवें हरतरह से भोजनआदि तय्यारियां अच्छी रीति से हों कुछ चिन्ताकी बात नहीं परन्तु सब भोजन के पहिले एक थाली खीरे के आश * की जिसपर आबदार मोती चुनेहों तय्यार करके

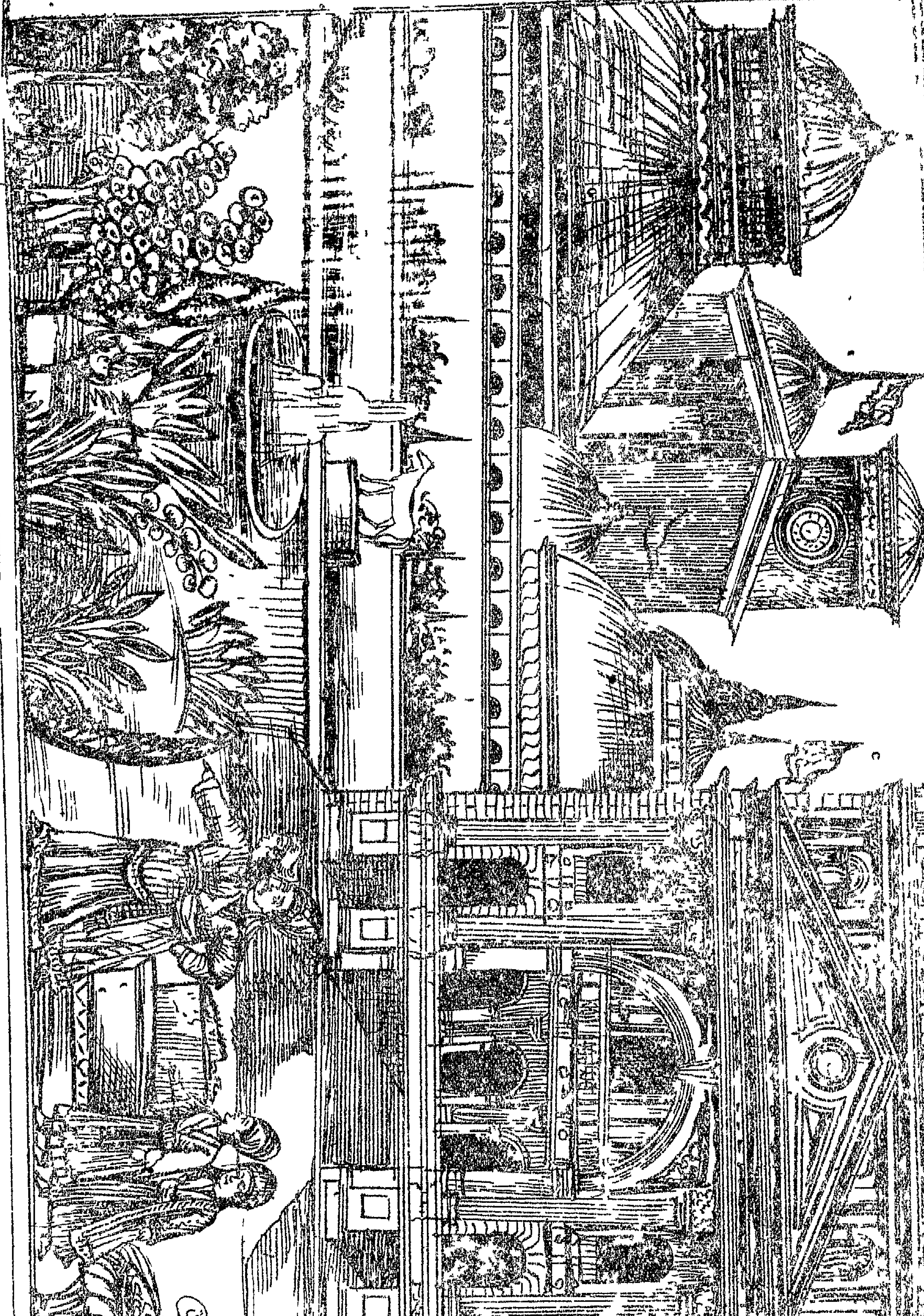
*-आश वह है कि किसी वस्तुको उबालकर उसका बहुतगाढ़ा रस निकाल लेते हैं॥

बादशाह के सामने रक्खीजावे यहबात सुनकर परीज़ाद आश्चर्य्य में होकर कहनेलगी अय चिड़िया! मैंने आजतक खीरे की आश मोतियोंके साथ नहीं सुनी निश्चयहै कि बादशाह भी ऐसा भोजन देखकर आश्चर्य्य में होकर हमारी निर्बुद्धितापर हँसेंगे सिवाय इसके आबदार मोती हमारे पास कहां है उस चिड़िया ने कहा कि मोतियों का इकट्ठाकरना कुछ कठिन नहीं है स्वामिनी! जो कुछ मैं कहतीहूं ज़रूर करो और मोतियों के मिलने का उपाय बतातीहूं कलप्रभात को तुम अपने रमनेमें जाकर दाहिनी ओर अमुक वृत्तकेनीचे खुद- वाना वहांसे बहुत से मोती मिलेंगे जब यह बात बोलती चिड़िया कहचुकी तो चुपहोरही दूसरे दिन भोरको परीज़ाद रमनेमें गई और उसबृत्तके नीचे पहुँची फिर एक बाग़बानको बुलाकर कहा कि इस जगहपर खोद सो बाग़बान वहांकी धरती खोदने लगा अकस्मात् एकबहुत सख़्तचीज़ मिट्टीमें मालूमहुई तब मालीने मिट्टीको हटाकर एकसुनहरा सन्दूक़चा देखा जो अतिसुन्दर साफ़ चौकोणथा माली ने यह सबहाल परीज़ादसे कहा उसने प्रसन्न होकर उत्तर दिया मैं तुझे इसी कामके वास्ते लाई थी बड़ी सावधानी से निकालकर मेरे पासला मालीने उसको निकालकर शाहज़ादी के हवाले किया परी- ज़ाद नें जब उसको खोलकर देखा कि वह मुंहतक आबदार मो- तियों से भरा है शाहज़ादी उनको देखकर अतिप्रसन्न हुई और उसको लेकर अपने मुख्यमकान में जाती थी बहमन और परवेज़ सुबहके वक्त मालीको परीज़ादके साथ बाग़की तरफ़ जातेदेख अति आश्चर्य्य में थे कि आज नियम के प्रतिकूल यह क्या व्यवहारहै सो बड़ी जल्दी कपड़े पहिन बाग़की ओरचले कि दूरसे क्या देखा कि परीज़ाद अपने हाथों में कोई बस्तुलिये चली आतीहै जब पास पहुँचे तो क्या देखा कि एक सोनेका बक्स उसके बग़ल में दबा है पूंछा बहिन ज़ब तुम मालीको लेकर बाग़की ओर जातार्थी तो उस वक्त तुम्हारे हाथ ख़ाली थे अब सन्दूक़चा सोने का तुम्हारे पास देखतेहैं बताओ कि यह कहां से हाथ आया परीज़ाद ने कहा कि मैं चिड़िया के बतानेसे सुबहको बाग़बानको लेकर अपने रमनेमें फ़लाने

दरख़्तके नीचे गई थी ईश्वरकी पूर्णकृपा और भाग्य से यह सन्दूक़चा मुझको मिला इस बातको सुनकर वह अति प्रसन्न हुये फिर परीज़ादने बहमन से कहा कि मेरे साथ आवो कुछ कहूंगी एक बड़ी कठिनता है परवेज़ ने कहा बहिन ऐसा कौन गुप्त भेद है जो हमारे सुनने के लायक़ नहीं आजतक तुमने कोई बात हमसे नहीं छिपाई परीज़ादने कहा अपने प्यारे दोनयनोंकी सौगन्दहै कोई बात ऐसी नहीं जिसका तुमसे पर्दाहो फिर परीज़ादने दोनों भाइयोंको अलग लेजाकर साराहाल उससम्मतका जो चिड़िया ने दिया था बताया इस बातको सुनकर वह तीनों देरतक शोचते रहे कि इस बोलती चिड़ियाने खीरेकी आशको मोतियों के साथ भोजनके समयरखना क्यों शोचाहै जबकुछ न समझसके तो परस्पर कहनेलगे बोलती चिड़िया अतिचतुरहै कोई लाभकी बात उसने बिचारी होगी फिर परीज़ाद ने अपने कमरे में जाकर रसोइये को बुलाया और आज्ञादी कि कलदशबजेतक सबप्रकार के भोजन बादशाह के भोजन के योग्य तय्यारहों उनके ब्योरे की मुझको कुछ आवश्यकता नहीं पर यह भोजन अति उत्तम रीति से बनाइयो रसोइये ने पूंछा वह कौनसी वस्तुहै परीज़ादने कहा कि खीरेकी आशका थाल तय्यार करना और उसपर बहुत आबदार मोती चुनेहों ऐसा सजाहो कि उस पर मोतीही मोतीदीखें रसोइये ने खीरेकी आश मोतियों केसाथ सुनकर अति आश्चर्य किया और मनमें कहनेलगा कि आजतक ऐसा खाना किसी ने पृथ्वीभरमें न खायाहोगा हंसोंको सुना है कि वे मोती चुगतेहैं निदान परीज़ादने वह संदूक़चा रसोइये को देदिया और आज्ञादी कि जितने मोती उसथालमेंलगें उतने ख़र्चकरना जो बाक़ी रहजावें बक्स में रहनेदेना नष्ट न होनेपायें रसोइया परीज़ाद के बचन सुनकर चित्रवत् चुपहोरहा और मोतियोंका बक्स लेकर बिदाहुआ और रसोई में जाकर तय्यारी करनेलगा परीज़ादने अपनामहल औरबाग़ झड़वाय साफ़कराय अतिउत्तम बिछौना आदि झाड़ फानूस से अलंकृत किया फिर जब दोनों शाहज़ादे उत्तम बस्त्रपहिनकर घोड़ोंपर सवारहुये तो मैदान में पहुँचकर बादशाह

नम्बर ५१ मुताबिक़े सफ़े ८३६ व ७.

शाहज़ादी का अपने आदमियों समेत शाहज़ादों को सैर दिखाती हुई जिसमें गानेवाला दरख़्त और फ़व्वारह था ॥



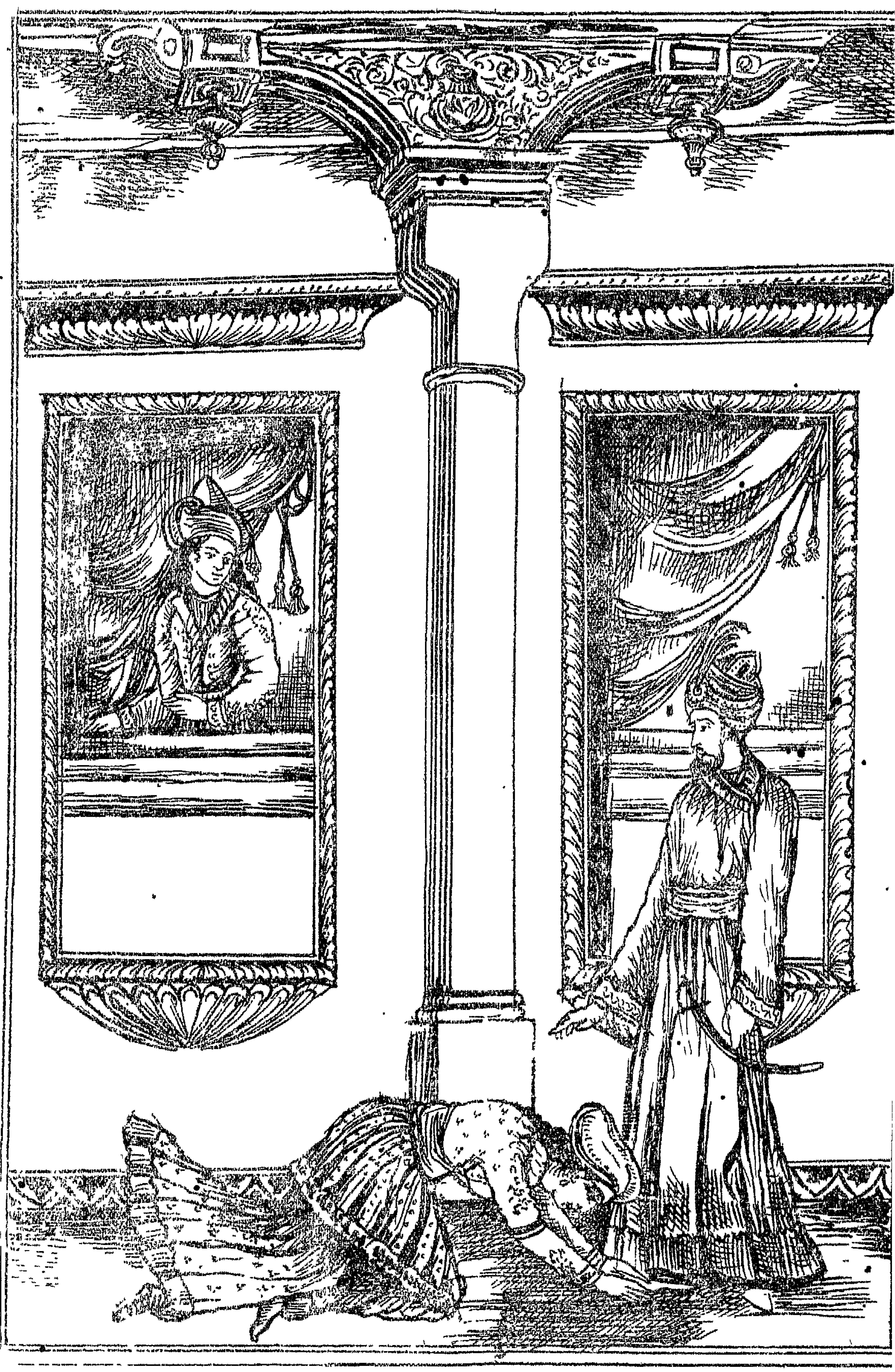
से भेंटहुई और बहुत देरतक शिकार खेलतेरहे उसदिन बहुत धूपसे गरमीथी इससे बादशाहने अहेर खेलना छोड़दिया और उन शाहज़ादोंके साथचला जब उनके महल के निकट पहुँचा तो शाहज़ादे बहमनने आगे बढ़कर अपनी बहिन परीज़ाद से बादशाहके आने का हाल कहा कि बादशाहकी सवारी घरतक आपहुँची वह यह सुनतेही उठखड़ीहुई और अगवानीके लिये आगे बढ़ी और दरवाज़े की देहली में जाकर खड़ीहुई बादशाह उस दिन घोड़ेपर सवार थे जब घोड़े से उतरकर भीतर आये तो परीज़ाद ने दौड़कर अपना शिर बादशाहके चरणोंपर धरा बहमन और परवेज़ दोनों बादशाह के साथ थे उन्होंने परीज़ादको पहिचनवाया बादशाहने अतिप्रीति से अपने हाथोंसे परीज़ादका शिर अपने चरणोंसे उठाया और उस के रूप अनूपको साफ़दृष्टिसे देख अति प्रसन्नहुआ और मनमें शोचनेलगा कि ईश्वरकी कृपासे ये तीनों बहिन भाई एकसूरत के हैं फिर परीज़ाद बादशाहको अपने साथ लिये महल में पहुँची और अच्छे स्थानपर बैठाया बादशाह उस बिचित्र महल को देख अति प्रसन्नहोकर परीज़ादसे कहनेलगा हे सुन्दरी! तुम्हारा महल अति सुन्दर है अब मैं बाग़ देखना चाहताहूं परीज़ाद ने प्रसन्नहो कमरे का एक दरवाज़ा जिससे वह साराबाग़ दिखाई देता था खोलदिया पहिले बादशाहकी दृष्टिफ़व्वारेपरपड़ी जो बहुतसाफ़था और उसके आगे सोनेका पानी कुछवस्तु नहीं बादशाह यह रंग देखकर अति आश्चर्य्य में हुआ और परीज़ाद से पूछा कि यह कैसा अच्छा फ़व्वारहहै मैंने कभी ऐसा फ़व्वारह नहींदेखा सुनहराजल कहांरहता है और किसके ज़ोरसे इतना ऊंचा होकर छूटताहै मैं इसको पाससे देखूंगा परीज़ादने कहा बहुत अच्छा आप पास चलकर रुचिपूर्वक अवलोकन कीजिये यह कहकर वह बादशाहको अपनेसाथ फ़व्वारे के पास लेगई बादशाह अतिरुचि से ध्यानधरके फ़व्वारे को देखरहाथा कि इतनेमें गानेकी अति ललितबाणी कानमें सुनाईदी और तानों से वह गाना बहुत ठीक था बादशाह का मन अति मोहित होगया और चारोंतरफ़ मुखफेरके नज़र दौड़ाई और बहुतेरा इधर

उधर दूरतक देखा पर गवैया नज़र न आया इससे अति बिस्मित हुआ कि हे ईश्वर! यह क्याभेदहै परीज़ादसे पूछा कि यह आवाज़ गानेकी कहांसे आती है क्या तानसेन है जो धरतीमें फिर अवतार धारणकर अलाप रहे हैं परीज़ादने मुस्कराके कहा कि कोई अच्छा गानेवाला नहीं यह आवाज़ अमुक बृक्ष से आती है आप दोचार पग आगे बढ़कर उस बृक्षको देखें बादशाह तो उस बृक्ष की लालसाही रखताथा आगे बढ़कर गानेवाले दरख़्त के पास जापहुँचा उसबृक्षसे बिचित्र तान और राग सुनकर मूर्च्छा खागया जब कुछ चैतन्य हुआ तो अति आश्चर्य्य से कभी तो फ़व्वारे को देखता कभी कान लगाकर गानेवाले बृक्षका राग सुनता निदान चुप न रहसका लाचार होकर परीज़ादसे पूछा हमने ऐसा दरख़्त आजतक नहीं देखा तुम्हारे हाथ कहांसेलगा यहबृक्षतो बड़ीबहारकाहै जीनेकी बहार यहीहै कि मनुष्य की आयु चैन और आराममें बीते परीज़ाद ने कहा इसकानाम गानेवालाबृक्ष है इसदेश में इसकानामनिशान नहीं इसको मैं बहुत दूरसे लाईहूं जिसफ़व्वारे के पानीका सोनेकासा रंगहै इसका बर्णन मैं अवकाश पाकर करूंगी अब आप बोलतीचिड़ियाको अवलोकन कीजिये बादशाह ने प्रसन्न होकर कहा उसको मुझे दिखावो कि वह कहांहै और किसरंगकीहै वहभी अपूर्व्व होगी परीज़ाद बादशाहको अपने साथ लिये वहां से फिरी कि बोलती चिड़ियाका तमाशादिखावे निदान फिरतेवक्त फिर बादशाह फ़व्वारे के पासआया और उसफ़व्वारेको खूबध्यानसे देख कहनेलगा कि यह फ़व्वारह जो सोनेकापानी लुटारहा है इसका खज़ाना कहीं नहीं दिखाईदेता कि कहांसे पानी फ़व्वारे तक पहुँचता है न कोई ऐसाबड़ा बर्त्तन दिखाई देता है परीज़ादने कहा हजूर इस फ़व्वारेका खज़ाना नहीं है ईश्वर ने इस जल में यह सामर्थ्य दीहै कि आपही आप हौज़में आ गिरताहै वहां न आगहै न कुछजलताहै यह दिनरात एकही तरहपर जारी रहताहै और संगमरमरके बर्त्तनसे पानीबाहर नहींजाता और कभी घटताभी नहीं बादशाह यह सारा हाल सुनकर और भी आश्चर्य्य में हुआ परीज़ाद ऐसी ऐसी बिचित्र

बातें सुनातीहुई बादशाहको बारहदरीतकलाई यहां और भी तमाशा दिखाया कि हज़ारों सुन्दर बाणीवाले जानवर प्रिय शब्द से फलदार बृक्षोंपर बैठेहुये चहचहारहे हैं बादशाह अतिआश्चर्य्य में होकर कहनेलगा हे परीज़ाद! यह कौनसा जादूका जाल बिछाहै कि रंगबरंगे जानवर इतने बृक्षों पर बैठे हैं कि मानों संसार के सब जानवर यहीं हैं परीज़ादने कहा हुज़ूर ये सब पक्षी इसी बोलती चिड़ियाके सबबसे हैं जिसका पिंजड़ा बारहदरीकी छतमें लटकरहाहै अब आगे बढ़कर और अच्छे २ राग सुनाई देंगे जब बादशाह बारहदरीके भीतरगया तो क्या देखा कि बोलती चिड़िया एकसुनहरे तलजटित पिंजड़े में प्रियबाणी से चहचहारही है जब बादशाह उसके सामने पहुँचा तो परीज़ाद ने कहा हे मेरी बोलती चिड़िया! तू क्या देखती नहीं है कि हुज़ूर बारहदरी में सुशोभित हुये हैं यह सुनकर वह चिड़िया चुपहोरही उसके साथही सब चिड़ियां चुपहोगईं पहिले चिड़ियाने बादशाह की कुशल प्रश्नकी बादशाहने भी यथोचित उत्तरदिया फिर चिड़ियाने बादशाहको आशीर्ब्बाद दिया इतना कहकर मलका शहरज़ाद बादशाह शहरयारसे कहनेलगी कि उस बारहदरी में अतिउत्तम और स्वादिष्ठ भोजन दिव्य सोने चांदी के पात्रों में परसे हुये थे जब बादशाह भोजनको बैठा तो संयोगसे उसकी दृष्टि उसीथालपर पड़ी बादशाह ने हाथबढ़ाकर उसथाल को अपने सामने खींचकर चाहा कि उसमेंसे उठाकर भोजनकरे पर क्या देखताहै कि हज़ारों मोती खीरेकी आशपर चुने हुये हैं इसबातको देखकर वह अतिआश्चर्य में हुआ और मन में शोचा कि यह भोजन नये प्रकारका बनाहै उससे हाथहटाकर परीज़ाद और दोनों भाइयोंसे पूछा कि यह बस्तु भोजनके योग्य नहीं क्या कारण कि हमारे भोजनकोलिये परसीगई परीज़ाद और उसके भाई तो इसका कारण न जानतेथे चुपहोगये पर बोलती चिड़िया कहनेलगी कि ईश्वरकी क्या मायाहै कि हुज़ूर खीरे की आशपर आबदार मोतीचुनेहुये देखकर इतने आश्चर्य में हुये बड़े आश्चर्य की बातहै कि जब मलका लड़के के बदले कुत्ता बिल्ली अपने पेट

से जनी तब अचम्भा न आया क्या मनुष्यके पेटसे जीव जन्तुभी पैदाहोते हैं अभी तो बादशाह चिड़ियाके मुख्य आशय को न स-मझाथा कहनेलगा कि हे चिड़िया! तेरा बचन सत्य है और मैं भी जानताहूं कि ये बातें बुद्धिसे दूरहैं पर उनदोनों स्त्रियोंने जो मलका के प्रसूति के समय उपस्थितथीं आकर मुझसे कहा मैंने उनकी बात निश्चयकी और यह नहीं समझा कि उनका छलहै वे दोनों औरतें ग़ैर न थीं बरन मलकाकी सगी बहिनें थीं फिर मैं क्योंकर उनकी बात झूठ मानता चिड़ियाने कहा हां मैंभी जानतीहूं कि वे दोनों दुष्ट औरतें मलकाकी बहिनेंहैं पर वे इस बातसे कि आपकी मल-का पर अति कृपादृष्टिथी इससे मारे ईर्षाके जलगईं और मलका के हानिका उपाय बिचारनेलगीं निदान उन्होंने यह छलकिया कि हु-हुज़ूरका मन उससे फिरगया पर अब उनका छल खुलगया शाहज़ादा बहमन परवेज़ और परीज़ाद ये तीनों बहिन भाई बैठे चिड़ियाकी बातें सुनरहेथे कि उस बोलती चिड़ियाने बादशाह से इशारह किया कि ये दोनों सुन्दर जवान तुम्हारे पुत्रहैं और यह सुन्दरी मृगनयनी चम्पकबर्णी आपकी पुत्री है मलका तुम्हारी यही कुत्ता बिल्ली और छछून्दर जनी थी उन दोनों स्त्रियोंने मारेईर्षा के जन्म के समय इनको कंबलके टुकड़े में लपेटकर और इनको पिटारी में धर नहर में फेंक दिया कि ये कुँवर दरियामें डूबजावें पर इनकी आयु शेषथी वह पि-टारी बहते २ बादशाही बाग़ोंके दारोग़ाके हाथलगी जिसके सन्तान न होतीथी उसने इनको अपना सन्तान समझकर पालन पोषणकिया जब ये कुछ बड़ेहुये तो खूब इनको पढ़ाया लिखाया हे बादशाह! आप ध्यानसे सुनिये ये दोनों शाहज़ादे और शाहज़ादी आपकी सन्तानहैं जब बादशाह को उन स्त्रियोंकी दुष्टता सूचित हुई और उनका फ़रेब खुलगया तो उस चिड़ियासे कहा कि अब मुझको इनका हाल मालूमहुआ पहिले जब मैंने शाहज़ादों को शिकार में देखाथा तो [illegible] जोश किया कि मेरे मनको उनकी तरफ़ खींचताथा मुझ को निश्चयहुआ कि ये तीनों मेरी सन्तानहैं यह कहकर आंखों में आंसू भरलाया और प्रीतिसे उन तीनोंको अपने कण्ठसे लगाया

चित्र शाहरयार का क्रोध शान्त होना और शाहज़ादे का पाँव पड़ना ॥



और कहा अब मुझको अपनाबाप समझो वे तीनों यह बात सुनकर दौड़करबादशाहके कण्ठलगे और परस्पर बैठकर रुचिपूर्वक भोजनकरने लगे जब खाचुके और पात्रउठगये तो बादशाहने कहा कि अब मैंबिदाहोताहूं कल मैं फिर तुम्हारे घरआऊंगा अब तुम प्रसन्न हो मैं तुम्हारी माताको अपने साथ यहां लाऊंगा उनके चरणछूनेयहकहकर बादशाह बिदाहुआ और अपने वायुगामी घोड़ेपर सवारहोकर बेगही अपने मणिमन्दिर में पहुँचा और तुरंतही वज़ीरको बुलाकर आज्ञादी कि वे दो औरतें अर्थात् मलकाकी बहिनेंजो प्रसूतिके समय भीतरथीं और उनका अतिनिश्चयथा सो दू अतिदुष्टा और अपने कुटुम्ब की बैरिनि निकलीं जितना उनको दण्ड दियाजावे वह उनके योग्यहै बधिकको आज्ञा दो कि उनकोबधकरडाले धरती उनके रुधिरकी पियासी है वज़ीर ने तुरन्त बादशाहकी आज्ञा प्रतिपालन की जैसा कियाथा वैसा पाया तदनतर बादशाह उस जामामसजिद में जहां मलका क़ैद थी गया कईबर्ष उसको उसकष्ट के भुगतने में बीतगयेथे उसमें से उसको निकला और प्रीतिपूर्ब्बक गलेसे लगाया और उसकी दुर्दशा पर बहुत कुढ़ा और उस कोमलांगी के फटेपुरानेबस्त्र देखकर बहुत रुदन करनेलगा और कहा कि यह अपराध अनजाने मुझ से हुआ ईश्वरके वास्ते क्षमाकर मुझे तेरी दोनों बहिनोंने जाल और फ़रेबका बिछौना बिछाकर तुझपर कोपकराया अब उन्होंने अपने कियेका दण्डपाया अर्थात् बधकरडालीगईं बादशाहने हज़ारतरह से उसमलकाका आश्वास किया और उस बोलती चिड़िया की कहानी कहसुनाई और कहा कि अब तुम मेरे साथ वहांचलो मलकाने जब यह हाल सुना तो प्रसन्नहोगई और पहिले स्नान किया और अति उत्तमबस्त्र पहिन सुन्दर आभूषणादि से अलंकृत हुई और वहां पहुँचकर अपनीसन्तान से मिली ईश्वरने दिनफेरे भाग्य उदयहुई कि इकबारगी ऐश्वर्य्य धनधान्यादि सन्तान सुखप्राप्तहुआ यह ख़बर सारे राज्यमें फैलगई और परवेज़ और परीज़ाद तीनों बहिन भाई राज्य के वारिसहुये और उनको निश्चय हुआ कि हम

शाहज़ादे हैं फिर बादशाह और मलका और उनोनों ने बैठकर भोजनकिया जब सुचित्त हुये तब बादशाह मलको उसबागकी सैरकरनेके वास्ते लेगया और गानेवाले वृक्षका गासुनाया और फव्वारह दिखाया फिर बारहदरी में आकर उस बती चिड़िया का तमाशा दिखाया इसके उपरान्त बादशाह घोड़ेपर सवारहुआ और दोनोंशाहज़ादे अपने अपने घोड़ोंपर एक दाहिनी दूसरा बाईं ओर साथथे और मलका सुखपालपर सवारहुई उसदिन बाज़ार बहुत अच्छा सजाथा और शहर के सब छोटेबड़े इससवारी के देखनेकोइकट्ठेथे उसदिन बादशाहने इतना कंचन बरसाया कि धरती सोनेकी बनगई और याचक सज्जन और ग़रीब धवान् बनगये इसतरह से बादशाही महल में पहुँचे और सम्पूर्ण सभासद और छोटेबड़ोंने बड़ेबड़े पारितोषिकपाये बादशाहने बहमनको जो बड़ा पुत्रथा युवराज नियतकिया और देशके प्रबन्ध आदि को उसीके सम्मतपर छोड़ा और परवेज़ को जनरेली पदपर नियतकर और पृथ्वीजलकी सेनाकी देखभाल उसकेआधीनकी और परीज़ादको बड़ेशाहज़ादे से ब्याहदिया यह मनोहरकहानी बादशाह शहरयार सुनकर अति प्रसन्नहुआ और क्रोध जो उसके हृदय पर जमाथा जातारहा और हृदय उसका निर्म्मल होगया और मलका के बध करने से हाथ उठाया और मन से प्रसन्न होकर उसे प्राणदानदिये और वह रीति कि हरदिन एक नई स्त्री से ब्याह करकेदूसरेदिन उसको बधकराता ये सबबातें बन्दकीं और राजमन्त्री जोमलकाकी पिताथा उसकी चिन्ता जातीरही और प्रजाभी आनन्दित हुई॥

इति श्रीपं०प्यारेलालकृतेसहस्ररजनीचरित्रेचतुर्थोभागःसमाप्तः॥

दो० प्यारीप्यारी वाणिसों प्यारे प्यारेलाल। प्यारीअति भाषाकरी बन्दिचरण गोपाल॥

तोमरछन्द। धन्य नवलकिशोर। जिनदियो द्रव्यअथोर॥ निज यन्त्र आलयमाहि। उल्थाकरायोचाहि॥ द्विजसकल अतिचितवाहि। पुनि देहिं आशिषताहि॥ शुभ चहत सब द्विजराज। सब होहिं पूरण काज॥ उपकार हित संसार। छपवायो अति हितकार॥ इति॥